प्रकाशक की ओर से

मानव जाति पर अल्लाह तआला का यह सबसे बड़ा उपकार है कि उसने उनको अपने पवित्र शब्द क़ुरआन मजीद द्वारा सम्बोधित किया और इतना बड़ा पुरस्कार उन्हें प्रदान किया जिस पर वे जितना भी गर्व करें कम है। परन्तु ईश्वर के इस वाणी और संदेश को वही समझ सकता है जो अपने प्रभु के इस महान संदेश की मूल आत्मा को जानता हो, इस की मिठास को महसूस करता और इसके अर्थ एवं उद्देश्य को समझकर अपना कर्तव्य, व्यवहार और जीवन को सुधार सके।

अपने ईश्वर की सच्ची और पवित्र वाणी को समझने के लिये क़ुरआन को समझने का गुण होना अत्यन्त आवश्यक है। अत: बहुत समय से यह जरूरत महसूस हो रही थी कि क़ुरआन मजीद की एक ऐसी प्रतिष्ठित व्याख्या (तफ़सीर), टीका और अनुवाद तैयार किया जाये जो नि:संदेह सदाचारी पूर्वजों के क़ुरआन को समझने के आधार पर आधारित हो। जिसमें आयात की व्याख्या (तफ़सीर) हदीस पाक और सहाबा رضي الله عنهم के विचारों के अनुरूप हो जिसे पढ़कर पाठक अस्पष्टीकरण (तावीलात) के फंदों से निकल जाये।

उपर्युक्त उद्देश्य के लिये दारूस्सलाम ने उर्दू भाषा में "**अहसनुल बयान**" के नाम से एक व्याख्या प्रस्तुत किया जो अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुआ और अब तक उसके अनेक एडीशन प्रकाशित हो चुके हैं। ولله الحمد والفضل على ذلك

हिन्दी भाषा में किताब व सुन्नत पर आधारित और सदाचारी पूर्वजों के विचार पर निर्भर क़ुरआन मजीद का कोई अनुवाद और टीका उपलब्ध नहीं। अत: पाठकों के अनुरोध पर उपर्युक्त तफ़सीर "**अहसनुल बयान**" का हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें हमारे सहयोगी मौलाना मोहम्मद ताहिर सलफ़ी, डा॰ सैय्यद जाहिद अली, मौलाना अज़ीज़ुल हक़ उमरी और मौलाना अबुल्लैस सलफ़ी हैं। टाईप सेटिंग का कार्य सैयद अली हैदर ने पूरे लगन एवं परिश्रम से किया है। इन सबके अंथक प्रयास एवं परिश्रम द्वारा हमने इसे आप तक पहुँचाया है। हम इनके अतिरिक्त उन सभी भाईयों के भी आभारी हैं जिन्होंने इस शुभ कार्य में हमारा सहयोग किया। अल्लाह से हमारी प्रार्थना है कि वह हमारे इस प्रयास और कार्य को स्वीकृति प्रदान करे और इससे लोग जहां ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठा सकें वहीं उसे हम सबके कर्मपत्र में लिखे। आमीन

अब्दुल मालिक मुजाहिद
प्रमुख प्रबन्धक

अहसनुल बयान की प्रमुख विशेषताएँ

यह क़ुरआन करीम की टीका या संक्षिप्त व्याख्या "**अहसनुल बयान**" इस समय जो आपके हाथों में है। इसमें यद्यपि जगह के अभाव के कारण अधिक विस्तार से काम नहीं लिया गया है, फिर भी यह चेष्टा की गयी है कि जन साधारण को क़ुरआन समझने के लिये और इसके कठिन स्थान (अवस्था) के लिये जितनी व्याख्या की आवश्यकता है, उसे संक्षिप्त मगर पूर्ण भावार्थ के साथ अवश्य प्रस्तुत किया जाये। इसमें हमें कहाँ तक सफलता मिली है, पाठक और बुद्धिजीवी वर्ग पढ़कर ही इसका पता कर सकते हैं। इसकी अन्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं : –

o इस्राईली, मनगढ़त और अप्रमाणित रिवायतों को व्यक्त करने से परहेज़ किया गया है। और सिर्फ प्रमाणित रिवायतों का ही प्रयोजन किया गया है।

o आयतों के अवतरण के कारण और उनकी श्रेष्ठता के लिए अत्यधिक रिवायतें उदघृत हैं। परन्तु उसमें पूर्ण प्रमाणित और सहीह रिवायतें बहुत कम हैं। अभाव के कारण प्रसिद्ध और अप्रमाणित रिवायतों का खंडन सम्भव नहीं, अत: यह प्रयास किया गया है कि केवल शुद्ध और पूर्ण प्रमाणित रवायतों का ही वर्णन किया जाये। इसका अर्थ यह है कि जो रिवायतें इसमें वर्णित नहीं हुई हैं वह चाहे कितनी भी प्रसिद्ध क्यों न हों, अपूर्ण प्रमाणित हैं।

o शास्त्रीय समस्याओं और तत्सम्बन्धी तर्क-वितर्क करके इसे कठिन नहीं बनाया गया है, क्योंकि उसका स्थान विस्तृत व्याख्या (तफ़सीर) है। केवल क़ुरआन करीम के सीधे सादे भावार्थों को बोधगम्य और स्पष्ट किया गया है।

o कुछ स्थानों के अतिरिक्त पूरी व्याख्या में हदीसों के सम्पूर्ण साक्ष्यों (मुकम्मल हवालों) का प्रयोजन किया गया है। ताकि विस्तृत ज्ञान चाहने वाले विद्या प्रेमियों को उसे ढूंढ़ने में सुविधा हो।

o तफ़सीर इब्ने कसीर, तफ़सीर फ़तहुल क़दीर, तफ़सीर इब्ने जरीर तबरी, ऐसरूत्तफ़ासीर आदि जैसी सलफ़ी तफ़ासीर इसके मूल स्रोत हैं। अधिकतर उन्हीं को सामने रखा गया है। अन्य अरबी और उर्दू व्याख्याओं से बहुत कम प्रयोजन किये गये हैं।

o स्पष्टीकरण और व्याख्याओं में पूवर्जों (नबी के सहचरों और उनके बाद की पीढ़ी के सदाचारी लोग) के आशय और उनके पथ (सिद्धान्त) को आधार बनाया गया है। इस दृष्टिकोण से यह सलफ़ी व्याख्याओं का संक्षेप, समाविष्ट पूर्वजनों के दृष्टिकोण और पथ का दर्पण तथा उपर्युक्त स्पष्ट और प्रमाणित हदीसों का सुन्दर नमूना है।

o क़ुरआन करीम ने विगत की जातियों और समुदायों का वर्णन किया है परन्तु ऐतिहासिक भाव में नहीं, बल्कि उपदेश के दृष्टि कोण से। अत: क़ुरआन करीम के इस उद्देश्य (भाव) को सामने रख कर विगत जातियों और सम्प्रदायों (समुदायों) के जन साधारण के इस आचरण और कर्मों के कारण, जो उनकी विनाश का कारण बने, मुसलमान जन साधारण के आचरण और शिष्टाचार की तुलना की गई है

ताकि इस उम्मत (सम्प्रदाय) के प्रत्येक वर्ग (विद्वान, बुद्धिजीवी और जन साधारण) के लोग इस पतन से निकलने का प्रयत्न करें, जिसमें वह विगत सम्प्रदायों और जातियों के आचरण अपनाने की वजह से फंसे हुए हैं।

अल्लाह तआला को किसी विशेष मानव जाति के सम्प्रदाय से प्रेम या घृणा नहीं है, उसको विशेष जाति या व्यक्ति से प्रेम (आशवित) और घृणा सिर्फ उनके कर्मों और आचरण के आधार पर होती है। अगर कोई जाति विशेष या व्यक्ति विशेष अच्छे कर्म करता है, ईमान (विश्वास) और उसके प्रावधानों को ठीक ढंग से पूरा करता है, तो वह उसका प्रिय होता है। और उसका सहायक होता है। और इसके प्रतिकूल विश्वास (ईमान) और उसके अनुरूप कर्मों से अनभिज्ञ जाति या व्यक्ति है जो अल्लाह को अप्रिय है, लोक-परलोक का तिरस्कार और अनादर उसका भाग्य है।

यह तो सम्भव ही नहीं है कि विगत मानव जातियाँ और सम्प्रदाय अपने स्वाभिमान और सत्य से विमुखता द्वारा अल्लाह और उसके रसूल को झुठलायें जिसके परिणाम स्वरूप विनष्ट हों (जैसाकि क़ुरआन ने उनके सम्पर्क में वर्णन किया है) और मुस्लिम सम्प्रदाय वही झुठलाने और विमुखता का ढंग अपनाये, तो उसे उन्नति, प्रगति और सौभाग्य प्राप्त हो। यह तो अल्लाह की सुन्नत के विपरीत है।

इन बिगड़े हुए प्रत्येक वर्ग के लिए यह संक्षिप्त व्याख्या एक दर्पण है जिसमें वह अपने आचरण और कर्मों के पतन को और अपने गुण को स्पष्टरूप से अगर देखना चाहें तो देख सकते हैं। जब तक यह सम्प्रदाय (समुदाय) क़ुरआन पर सच्चे मन से विश्वास न करे। और उसके प्रकाश में अपनी धारणाओं (अकीदा) और कर्मों के आधार को सशक्त न करेगी लोक परलोक में सफलता प्राप्त नहीं कर पायगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस कथन का भी यही भावार्थ है, जिसमें आपने कहा है।

إن الله يرفع بهذا الكتاب أقواماً ويضع به آخرين (صحيح مسلم)

"अल्लाह तआला इस किताब के द्वारा बहुत से लोगों को उन्नति प्रदान करता है, और इसी के कारण दूसरों को पतन की ओर ढकेल देता है।"

क़ुरआन के अनुरूप कर्मों का बदला (प्रतिफल) उन्नति (प्रगति) और उससे विमुखता और आलस्य का परिणाम तिरस्कार और पतन है।

अल्लाह करे कि इस पुस्तक (व्याख्या) का जो मुख्य उद्देश्य है वह प्राप्त हो, और इसके द्वारा धारणओं, मतों (अक़ायद) और कर्मों में ऐसा सुधार हो जिसके कारण यह समुदाय (उम्मत) अल्लाह की विशेष दया और कृपा का पात्र हो सके।

अन्त में परमप्रिय मित्र श्रीमान अब्दुल मालिक मुजाहिद को धन्यवाद देना जरूरी है जिनके विशेष सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ।

व्याख्या कारक

अपनी बात

सब प्रशंसायें एवं शुक्र व उपकार उस अल्लाह महान के लिए है जिसने हम सबको अपनी तमाम सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ बनाया तथा हमारे मार्गदर्शन के लिए केवल अम्बिया केराम को ही नहीं भेजा बल्कि आकाश से पवित्र धर्मग्रन्थ भी अवतरित किये ताकि मानव जीति उसके आधार पर अपने जीवन का संविधान व्यवस्थापित कर सके। ईश्वरीय वाणी के अवतरित होने का यह क्रम क़ुरआन मजीद के उतरने के पश्चात समाप्त हो गया, इस प्रकार यह अध्यादेश जिसके श्लोक सुदृढ़ और सविस्तार हैं प्रलय (क़यामत) तक के लिए समस्त मानव और जिन्नात का अन्तिम संविधान क़रार पाया।

इस पवित्र ग्रन्थ के साथ जो मानव जीवन के प्रत्येक पहलू के लिए समानान्तर मार्गदर्शक एवं पथ पदर्शक है, विद्वानों एवं जन साधारण की रूचि उसके अवतरित होने के समय से ही रही है और जितनी विद्यायें, शास्त्र, विज्ञान एवं रिसर्च इस किताब से संकलित किये गये हैं अथवा किये जा रहे हें वह किसी अन्य पुस्तक से नहीं किये गये। चूँकि यह अध्यादेश अल्लाह तआला की ओर लोगों को आमन्त्रित करने और मानव समाज के सुधार की आधारशिला है, इसलिए विश्व की अन्य एवं अधिक भाषाओं में उसके अनुवाद किये गये। बल्कि एक-एक भाषा में कई-कई सौ अनुवाद एवं व्याख्यायें मौजूद हैं। मुस्लिम समुदाय के विद्धानों ने पुण्य एवं सत्कार स्वरूप इसकी सेवा करके बाद में आने वालों के लिए एक महान कार्य एवं पूँजी उपलब्ध कर दिया है।

हिन्दी भाषा चूँकि इस्लामी संस्कृति और इस्लामी विद्याओं से काफ़ी दूर रही इसलिए उसमें इस्लाम से सम्बन्धित विद्यायें बहुत कम लिखी गयीं, इसके विपरीत उर्दू भाषा इस्लामी विद्याओं और विज्ञान से मालामाल है।

वर्तमान काल के कुछ वर्षों में इस्लामी दावत (शुभ आमन्त्रण) का कार्य विश्व की अनेक भाषाओं में पर्याप्त सीमाओं तक फैल गया है, मानव जाति का एक महान समूह केवल हिन्दी भाषा प्रयोग करता है, बहुत से मुस्लिम युवा और विद्यार्थी हिन्दी भाषा लिखने पढ़ने पर विवश हो गये हैं और कुछ क्षेत्रों में केवल हिन्दी बोली और पढ़ी जाती है। इसी प्रकार इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाले बहुत सारे साथी हिन्दी के अतिरिक्त दूसरी भाषा नहीं जानते, इसलिए अत्यन्त आवश्यकता महसूस की जा रही थी कि क़ुरआन करीम का एक ऐसा अनुवाद संक्षिप्त टीका के साथ हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया जाये, जिसकी व्याख्या और अनुवाद सहीह अहादीस और सदाचारी पूर्वजों के क़ुरआन को समझने के सिद्धान्त पर आधारित हो। इस आवश्यकता के लिए "दारूस्सलाम-रियाद" ने एक व्याख्या "अहसनुल बयान" के नाम से प्रस्तुत किया जो अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हाा। यह उर्दू भाषा में एक संक्षिप्त और विस्तृत व्याख्या है जिसकी विस्तृता एवं शुद्धता को देखते हुए क़ुरआन मजीद की विश्व विख्यात संस्था "किंग फ़हद फ़ाउन्डेशन मदीना मुनव्वरा" ने भी उसे प्रकाशित किया। पाठकों एवं विद्वानों के अनुरोध पर इस तफ़सीर का हिन्दी रूपान्तर हम आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं।

यद्यपि इस हिन्दी अनूदित क़ुरआन मजीद की आधार शिला उर्दू है। परन्तु आयात का अनुवाद अरबी से हिन्दी में प्रत्यक्ष रूप से किया गया है। भाषा के प्रयोग में सामान्य रूप से जन साधारण की शैली और वार्तालाप को ध्यान में रखा गया है ताकि अनुवाद एवं टीका को समझने में कठिनाई न हो। टीका में मौजूद आयात के हवालों और सहीह, शुद्ध अहादीस पाक के वर्णन का ही परियोजन किया गया है। आयात के अर्थ के विषय में श्रेष्ठतम अर्थ को बयान किया गया है।

पवित्र क़ुरआन की इस विशुद्ध सेवा को पाठकों तक पहुँचाने में जिन सज्जनों ने हमारे साथ सहयोग किया है हम उनके अत्यन्त आभारी और धन्य हैं। विशेष रूप से आदरणीय मौलाना अब्दुल मालिक मुजाहिद साहब, प्रमुख प्रबन्धक मक्तबा दारूस्सलाम-रियाद के, जिन्होंने पूरे चार वर्ष तक इस परियोजना के सम्पूर्ण व्यय का भार बर्दाश्त किया और किताब व सुन्नत की सेवा तथा सदाचारी पूर्वजों के विचार धारा से अपने अथाह प्रेम के कारण इस अध्यादेश को आप तक पहुँचाया। हम आभारी हैं डा॰ सैय्यद ज़ाहिल अली और मौलाना अज़ीज़ुल हक़ उमरी के जिन्होंने पूरी मेहनत और लगन से अनुवाद एवं जाँच का कार्य पूरा किया। मौलाना अबुल्लैस सलफ़ी के भी हम धन्यवादी हैं जिन्होंने इस शुभ कार्य के कुछ भागों की जाँच पड़ताल और शोधन किया। इसी प्रकार हम सैयद अली हैदर तथा मोहम्मद नदीम का भी शुकिया अदा करते हैं जिन्होंने पूर्ण लगन एवं परिश्रम द्वारा टाइप सेटिंग और पेस्टिंग का कार्य पूरा किया। इसके अतिरिक्त हम उन सभी भाईयों के आभारी हैं जिन्होंने इस परियोजना में, जो विशेष रूप से शुभ आमन्त्रण एवं सुधार के उद्देश्य से तैयार की गयी है, हमारे साथ सहयोग किया। अल्लाह तआला हम सबकी इस विशुद्ध एवं विनम्र सेवा को स्वीकृति प्रदान करे, इसे हमारे अच्छे कर्मपत्र में लिखे और इससे जन साधारण को फ़ायदा पहुँचाये। आमीन

हमारे इस प्रयास में जो कुछ गुण हैं वह अल्लाह की कृपा और उसकी अपरमपार दया से है तथा जो कमी है वह हमारी स्वयं की कमी का परिणाम है।

यह स्पष्ट है कि ईश्वरीय वाणी (क़ुरआन मजीद) के अतिरिक्त संसार का कोई भी संकलन, पुस्तक, शास्त्र एवं लेख मानव भूल-चूक से ख़ाली नहीं, हमने पूर्ण प्रयास किया है कि क़ुरआन मजीद के अर्थ को हिन्दी भाषा में विदित करने में कोई त्रुटि अथवा कमी न हो, परन्तु मानव भूल-चूक के आधार पर यदि उसमें कोई दोष या ग़लती रह गई हो तो विद्वानों और पाठक महोदय से निवेदन है कि उससे सूचित करेंगे।

पृष्ठ की अधिकता को देखते हुए इस पूर्ण व्याख्या को हम दो भागों में विभाजित कर रहे हैं। हर भाग पन्द्रह पारों पर आधारित है।

अल्लाह तआला हम सबको अपने पाक एवं पवित्र अध्यादेश की सेवा करने का सौभाग्य दे, हमारी त्रुटियों को क्षमा करे तथा हमें इख़्लास (विशुद्धता) के साथ इस्लाम के शुभ आमान्त्रण को जन साधारण तक पहुँचाने का शौभाग्य प्रदान करे। आमीन

मोहम्मद ताहिर सलफ़ी

रियाद, १७-३-१४२० हिजरी

सूरतुल फ़ातिहा-१

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ

सूर: *फ़ातिहा*[1] मक्का में अवतरित हुई[2] इस में सात आयतें हैं ।[3]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

(१) अल्लाह दयावान करूणामयी के नाम से प्रारम्भ करता हूँ ।[4]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ②

(२) सब प्रशंसा[5] अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है[6]

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ③

(३) बड़ा दयावान अति करूणामयी है[7]

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ④

(४) बदले के दिन (क़यामत) का स्वामी है[8]

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ⑤

(५) हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते तथा तुझही से सहायता मांगते हैं[9]

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ⑥

(६) हमें सीधा (सत्य) मार्ग दिखा[10]

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ⑦

(७) उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने उपकार किया[11] उनका नहीं जिन पर प्रकोप हुआ तथा न गुमराहों का ।[12]

---

(1) सूर: *फ़ातिहा* पवित्र क़ुरआन की प्रथम सूर: है । जिसका हदीसों में बड़ा महत्व है । فاتحة *फ़ातिहा* का अर्थ आरम्भ है इसलिए इसे الفاتحة *अलफ़ातिहा* अर्थात *फ़ातिहतुल* किताब कहा जाता है इसके अन्य भी अनेक नाम हदीसों से प्रमाणित हैं – जैसे *उम्मुल क़ुरआन, अस्सबउल मसानी, अल क़ुरआनुल अज़ीम,* अर्रुकिय: الرقية (मंत्र) जैसे एक सहाबी ने एक विच्छू के डसे हुए को इससे मंत्र किया तो वह स्वस्थ हो गया । नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया तुझे कैसे ज्ञान हुआ कि यह मंत्र है ! तथा अन्य नाम हैं । इसका एक महत्वपूर्ण नाम الصلاة *(अस्सलात)* भी है, जैसा कि एक हदीस क़ुदसी में है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

«قَسَمْتُ الصَّلَاةَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي».

मैंने सलात (नमाज़) को अपने तथा अपने बंदे के बीच विभाजित कर दिया है।

(अलहदीस, सहीह मुस्लिम, किताबुस सलात)

अभिप्राय सूर: *फ़ातिहा* है। जिसका आधा भाग अल्लाह की स्तुति - प्रशंसा तथा उसकी दयालुता, पालन-पोषण एवं न्याय तथा राज्य के वर्णन में है। तथा आधे भाग में प्रार्थना, विनय है जो बन्दा अल्लाह से करता है। इस हदीस में सूर: *फ़ातिहा* को "नमाज़" से व्यंजित किया है। जिससे विदित होता है कि नमाज़ में इसका पढ़ना अनिवार्य है। जैसा कि नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के कथनो में इसे भलि-भांति स्पष्ट कर दिया गया है। फ़रमाया :

«لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ».

उस व्यक्ति की नमाज़ नहीं जिसने सूर: फ़ातिहा नहीं पढ़ी।

(सहीह बुखारी-सहीह मुस्लिम)

इस हदीस में مـن (जो व्यक्ति) शब्द साधारण है जो प्रत्येक नमाज़ी को समिलित है। अकेला हो अथवा इमाम के पीछे *मुक्तदी* (अनुयायी) *सिर्री* (धीमें स्वर से) नमाज़ हो अथवा *जहरी* (उच्च स्वर की) नमाज़। अनिवार्य (फ़र्ज) नमाज़ हो अथवा नफ्ल (स्वच्छो से) प्रत्येक नमाज़ी के लिये सूर: *फ़ातिहा* पढ़ना अनिवार्य है। इसकी साधारणता का समर्थन उस हदीस से होता है जिसमें आता है कि एक बार फ़ज्र की नमाज़ में कुछ सहाबा भी रसूलल्लाह *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के साथ कुरआन पढ़ते रहे जिसके कारण आप का पढ़ना बोझल हो गया। नमाज़ समाप्त होने पर आपने प्रश्न किया कि तुम भी साथ में पढ़ते रहे हो ? उन्होंने स्वीकार किया, तो आपने फ़रमाया :

«لَا تَفْعَلُوْا إِلَّا بِأُمِّ الْقُرْآنِ؛ فَإِنَّهُ لَا صَلوٰةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِهَا».

तुम ऐसा न करो (अर्थात साथ-साथ मत पढ़ा करो) हां सूर: *फ़ातिहा* अवश्य पढ़ा करो, क्योंकि उसके पढ़े बिना नमाज़ नहीं होती (अबूदाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी)

इस प्रकार अबू हुरैरा ने कहा कि नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

«مَنْ صَلَّى صَلوٰةً لَمْ يَقْرَأْ فِيْهَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ، فَهِيَ خِدَاجٌ - ثَلَاثًا - غَيْرُ تَمَامٍ».

जिसने बिना सूर: फ़ातिहा के नमाज़ पढ़ी वह अधूरी है तीन बार आप ने फ़रमाया।

अबु हुरैरा से कहा गया :

(إِنَّا نَكُوْنُ وَرَآءَ الإِمَامِ).

इमाम के पीछे भी हम नमाज़ पढ़ते हैं,

उस समय हम क्या करें ? अबुहुरैरा ने कहा :

(اِقْرَأْ بِهَا فِيْ نَفْسِكَ).

इमाम के पीछे तुम सूरः फ़ातिहा अपने मन में पढ़ो। (सहीह मुस्लिम)

उपरोक्त दोनों हदीसों से स्पष्ट हुआ कि क़ुरआन मजीद में जो आता है।

﴿وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْءَانُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا﴾

जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो सुनो तथा चुप रहो,

(अल आराफ़, २०४)

तथा हदीस «وَإِذَا قَرَأَ فَأَنْصِتُوا». (यदि सहीह हो) जब इमाम पढ़े तो चुप रहो, का अभिप्राय यह है कि जहरी नमाज़ों में *मुक्तदी* सूरः *फ़ातिहा* के सिवा शेष *किराअत* चुप होकर सुने, इमाम के साथ न पढ़े। अथवा इमाम सूरः *फ़ातिहा* की आयतें रूक-रूक कर पढ़े ताकि *मुक्तदी* भी सहीह हदीसों के अनुसार सूरः *फ़ातिहा* पढ़ ले, अथवा इमाम सूरः *फ़ातिहा* के बाद इतना रूके कि *मुक्तदी* भी सूरः *फ़ातिहा* पढ़ ले। इस प्रकार आयत तथा हदीसों में الحمد لله कोई प्रतिकूलता नहीं रहती, दोनों का पालन हो जाता है, जब की सूरः *फ़ातिहा* से रोकने से यह बात सिद्ध होती है कि क़ुरआन तथा सहीह हदीसों में प्रतिकूलता है। तथा दोनों में से एक ही का पालन हो सकता है एक समय में दोनों का पालन संभव नहीं इस विषय में विवरण के लिये देखिए, *तहकीकुल कलाम,* संकलन मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारक पूरी, *तौज़ीहुल कलाम* मौलाना इरशादुल हक़ असरी आदि। तथा देखिये सूरः *आराफ़* आयत न॰ २०४ का भाष्य।

(2) यह सूरः मक्की है। मक्की या मदनी का अभिप्राय है जो सूरतें हिज्रत (१३ *नबूवत*) से पहले अवतरित हुई वह मक्की हैं चाहे उनका अवतरण मक्का में हुआ अथवा उनके आसपास। मदनी वह सूरतें हैं जो हिज्रत के बाद अवतरित हुई चाहे मदीना अथवा उसके सीमावर्ती क्षेत्रों में अवतरित हुई अथवा उनसे दूर। यहां तक कि मक्का तथा उसके आसपास ही क्यों न अवतरित हुई हो।

(3) بسم الله के विषय में मतभेद है कि यह प्रत्येक सूरः की आयत है अथवा प्रत्येक सूरः की आयत का अंश अथवा सूरः *फ़ातिहा* की एक आयत है अथवा किसी भी सूरः की स्थाई आयत नही है। इसे मात्र प्रत्येक सूरः को अलग करने के लिये सूरतों के आरम्भ में

लिखा जाता है। मक्का तथा कूफ़ा के क़ारियों ने इसे सूर: *फ़ातिहा* सहित प्रत्येक सूर: की आयत माना है। जबकि मदीना, बसरा तथा शाम के क़ारियों ने इसे किसी भी आयत की सूरत नहीं माना है, सिवाय सूर: नमल आयत ३० के, कि इसमें सर्वसम्मति से بسم الله उसका अंश है। इसी प्रकार *जहरी* नमाज़ों में इसके उच्च स्वर में पढ़नें में भी मतभेद है कुछ उच्च स्वर में पढ़नें को मानते हैं तथा कुछ धीमें स्वर में (फ़तहुल कदीर) अधिकतर विद्वानों ने धीमी आवाज़ से पढ़नें को प्रधानता दी है फिर भी उच्च स्वर से पढ़ना भी उचित (जायज़) है।

(4) بسم الله के आरम्भ में اقرأ अथवा ابدأ अथवा اتلو लुप्त है अर्थात अल्लाह के नाम से पढ़ता अथवा आरम्भ करता अथवा पाठ करता हूँ, प्रत्येक महत्वपूर्ण काम के करते समय بسم الله पढ़नें पर बल दिया गया है। इसलिये आदेश दिया गया कि खाने - वध, *वज़ू* तथा संभोग से पहले *बिस्मिल्लाह* पढ़ो फिर भी पवित्र क़ुरआन पढ़नें के समय أعوذ بالله من الشيطان الرجيم भी पढ़ना अनिवार्य है।

﴿ فَإِذَا قَرَأْتَ ٱلْقُرْءَانَ فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ ٱلرَّجِيمِ ﴾

जब पवित्र क़ुरआन पढ़नें लगो तो धिक्कारे शैतान से अल्लाह की शरण माँगो।

(*अन्नहल,* ९८)

(5) الحمد में ال (*अल*) सर्व अथवा विशेष के अर्थ में है, अर्थात सभी प्रशंसाऐं अल्लाह के लिये हैं अथवा उसके लिये विशेष हैं, क्योंकि प्रशंसा का वास्तव में पात्र तथा योग्य मात्र अल्लाह तआला ही है। किसी में कोई अच्छाई एवं अर्हता है तो वह भी अल्लाह की पैदा की हुई है। अत: स्तुति तथा प्रशंसा का पात्र भी वही है। अल्लाह (الله) यह अल्लाह की वाचक संज्ञा है इस का प्रयोग किसी अन्य के लिये वैध नहीं। الحمد لله (*अलहम्दु लिल्लाहे*) यह कृतज्ञता व्यक्त करनें का शब्द है जिसकी बड़ी प्रधानता हदीसों में आई है, एक हदीस में لا إله إلا الله (*ला ईलाहा इल्लल्लाह*) को सर्वोतम स्मरण तथा الحمد لله (*अलहमदुलिल्लाह*) को सर्वोतम प्रार्थना कहा गया है (त्रिमिज़ी, नसाई आदि) सही मुस्लिम तथा नसाई की हदीस में है। الحمد لله تملأ الميزان - الحمد मीज़ान (तुला) को भर देता है इसीलिए एक हदीस में आता है अल्लाह इसको पसद करता है कि प्रत्येक खाने तथा पीने पर बंदा अल्लाह की हम्द (कृतज्ञता व्यक्त) करे।

(6) رب (*रब्ब,*) अल्लाह के शुभ नामों में से एक नाम है। जिसका अर्थ है प्रत्येक वस्तु को पैदा करके उसकी आवश्यकताओं को सुलभ कराने वाला तथा उसे पूर्ति तक पहुँचाने वाला। इसका प्रयोग बिना संबंध के किसी के लिये वैध (जायज़) नही عالمين *आलमीन* عالم *आलम* (लोक) का बहुबचन है वैसे तो पूरी सृष्टि के संयोग को *आलम* कहा जाता है, इसलिए इसका बहुबचन नहीं लाया जाता, किन्तु उसके पूर्ण पालनहार होनें को प्रकाशित

करने के लिये *आलम* का भी बहुवचन लाया गया है। जिससे अभिप्रेत सृष्टि की अलग-अलग जातियां हैं जैसे जिन्न का *आलम*, मानव जाति का *आलम*, फ़रिश्तों का *आलम*, जीव-जन्तु का *आलम*, पक्षियों का आलम आदि। इन सब की आवश्यकताऐं एक-दूसरे से भिन्न हैं किन्तु رب العالمين (समस्त जगत का प्रभु) सबकी आवश्यकताऐं उनकी स्थिति, स्थान, उनकी प्रकृति तथा शरीर के अनुसार उपलब्ध कराता है।

(7) رحمن *(रहमान)* फ़ालान के वज़न पर तथा رحيم *(रहीम)* फ़ईल के वज़न पर है दोनों अत्युक्ति के रूप हैं। जिनमें अधिकता तथा नित्यता का अर्थ पाया जाता है, अर्थात अल्लाह तआला अति दयानिधि है। उसका यह गुण उसके अन्य शुभगुणों की भांति नित्य है कुछ विद्वान कहतें हैं कि *रहमान* में *रहीम* की अपेक्षा अधिक अत्युक्ति है इसीलिए رحمن الدنيا والآخرة कहा जाता है। दुनियां में उसकी दया सर्वसाधारण के लिये है। जिससे विना विशेषता के काफ़िर तथा मुसलमान सब लाभान्वित हो रहे हैं। तथा परलोक में वह केवल *रहीम* होगा अर्थात उसकी दया मात्र ईमानवालों के लिये विशेष होगी।

(8) दुनिया में भी यद्यपि कर्म दण्ड का क्रम एक सीमा तक प्रचलित रहता है फिर भी इसका पूर्ण अविर्भाव परलोक में होगा तथा अल्लाह तआला प्रत्येक को उसके अच्छे तथा बुरे कर्म का पूरा बदला अथवा दण्ड देगा इसी प्रकार संसार में कई लोगों के पास साधनों के आधीन अधिकार होते हैं परन्तु परलोक में सभी अधिकार का स्वामी मात्र तथा मात्र परमेश्वर (अल्लाह तआला) ही होगा। अल्लाह उस दिन फ़रमायेगा :

لمن الملك اليوم (आज किस का राज्य है?) फिर वही उत्तर देगा। لله الواحد القهار (केवल एक प्रभुत्वशाली अल्लाह के लिये)

﴿ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ﴾

उस दिन कोई व्यक्ति किसी के लिये अधिकार नहीं रखेगा सारा मामला अल्लाह के हाथों में होगा। *(अल इंफ़तार)*

(9) इबादत का अर्थ है किसी की प्रसन्नता के लिये अति विनम्रता विवशता तथा विनय का प्रदर्शन, तथा इब्ने कसीर के कथानुसार धर्म में पूर्ण प्रेम, विनम्रता तथा भय के संग्रह का नाम है अर्थात जिसके साथ प्रेम भी हो तथा उसकी शक्ति के आगे लाचारी तथा विवशता का प्रदर्शन भी हो, तथा साधनों अथवा अप्रत्यक्ष साधन के उसकी पकड़ का भय भी हो। सीधा वाक्य نعبدك و نستعينك है (हम तेरी इबादत करते हैं तथा तुझसे सहायता मांगते हैं) परन्तु अल्लाह ने यहां दूसरे कारक को क्रिया से पहले करके ﴿ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴾ फ़रमाया। उद्देश्य विशेषता पैदा करना है, अर्थात हम तेरी ही इबादत करते तथा तुझही से सहायता चाहते है। न अराधना अल्लाह के सिवा किसी और

की वैध है न सहायता ही किसी से मांगनी जायेज़ (मान्य) है। इन शब्दोसे *शिर्क* का द्वार वन्द कर दिया गया है, परन्तु जिन के दिल में *शिर्क* का रोग घुस गया है वह बिना साधन तथा साधना हानि सहायता चाहने के अंतर की अंदेखी करके जनता को भ्रम में डाल देते हैं तथा कहते हैं देखो हम रोगी होते हैं तो डाक्टर से सहायता लेते हैं, पत्नी से सहायता चाहते हैं, ड्राईवर (चालक) तथा अन्य लोगों से सहायता लेते हैं। इस प्रकार वह यह विश्वास दिलाते हैं कि अल्लाह के सिवा दूसरों से सहायता मांगना वैध है हालांकि साधना हानि एक-दूसरे से सहायता चाहना और करना *शिर्क* नहीं है। यह तो अल्लाह की बनाई व्यस्था है। जिसमें सारे काम प्रत्यक्ष साधनों के अनुकूल ही होते हैं। यहां तक की अम्बिया भी इंसानों की सहायता प्राप्त करते हैं, ईशदूत ईसा *(अलैहिस्सलाम)* ने फ़रमाया :

﴿مَنْ أَنصَارِيٓ إِلَى ٱللَّهِ﴾

"अल्लाह के धर्म के लिये कौन मेरा सहायक है" *(अस् सफ्फ)*

तथा अल्लाह ने ईमान वालों से फ़रमाया :

﴿وَتَعَاوَنُوا۟ عَلَى ٱلْبِرِّ وَٱلتَّقْوَىٰ﴾

"पुण्य तथा सयंम के कामों पर एक-दूसरे की सहायता करो" *(अल-मायेदा, २)*

प्रत्यक्ष है कि यह परस्पर सहायता न निषेध है, न *शिर्क* बल्कि अभीष्ट एवं प्रशंसीय है। इसका परिभाषित शिर्क से क्या सम्बन्ध ? *शिर्क* तो यह है कि ऐसे व्यक्ति से सहायता मांगी जाये जो ज़ाहिरी साधनों को देखते हुए सहायता नहीं कर सकता जैसे किसी मरे को सहायता के लिये पुकारना उसे दु:ख हारी तथा कार्यक्षम समझना, उसे हानि कर तथा लाभदायक मानना, दूर तथा समीपस्थ प्रत्येक की गुहार सुनने की क्षमता से युक्त स्वीकार करना। इस का नाम है बिना (उपरी) साधनों द्वारा सहायता चाहना, तथा जैसे दैवी गुणों से युक्त मानना, इसी का नाम *शिर्क* है जो अवलिया (धर्मात्माओं) के प्रेम के नाम पर मुसलमान देशों में व्याप्त है। أعاذنا الله منه

तौहीद के तीन भेद

इस अवसर पर उचित लगता है कि तौहीद के तीन भेदों का भी संक्षेप में वर्णन कर दिया जाये। यह भेद हैं (१) *तौहीद रूबूबियत* (२) *तौहीद उलूहियत* (३) *तौहीद अस्मा व सिफात*

१- ***"तौहीद रूबूबियत"*** का अभिप्राय है कि इस विश्व का विधाता, स्वामी, अन्नदाता तथा व्यवस्थापक केवल अल्लाह है। इस *तौहीद* (एकेश्वरवाद) को नास्तिकों, अनीश्वर वादियों के सिवा सभी मानते हैं। यहाँ तक कि मिश्रण वादी (मुशरिकीन) भी इसे स्वीकार करते हैं तथा कह रहे हैं, जैसे कि पवित्र क़ुरआन ने वहुदेव वादियों के स्वीकार को ब्यान किया है जैसे फ़रमाया :

﴿ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ وَمَن يُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَىِّ وَمَن يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ ٱللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴾

हे (पैग़म्बर) इन से प्रश्न करें कि तुमको आकाश तथा धरती में जीविका कौन प्रदान करता है अथवा (तुम्हारे) कानों तथा आखों का कौन मालिक है तथा निर्जीव से जीव को एवं जीव से निर्जीव को कौन पैदा करता है तथा संसारिक कार्यों की व्यवस्था कौन करता है ? तुरंत कह देंगे कि अल्लाह। (अर्थात इन सब का कर्ता अल्लाह है) (सूरः *यूनुस*, ३१)

अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ ٱللَّهُ ﴾

यदि आप उनसे प्रश्न करेंगे कि आकाश तथा धरती का रचयिता कौन है ?तो अवश्य कहेंगे कि अल्लाह (*अज़् ज़ुमरः*, ३८)

एक और स्थान पर फ़रमाया :

﴿ قُل لِّمَنِ ٱلْأَرْضُ وَمَن فِيهَآ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴾

यदि आप उनसे प्रश्न करें कि धरती तथा धरती में जो कुछ है, यह सब किसका माल है ?

﴿ قُلْ مَن رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ ٱلسَّبْعِ وَرَبُّ ٱلْعَرْشِ ٱلْعَظِيمِ ﴾

सातों आकाश तथा महासिंहासन (अर्श) का स्वामी कौन है ?

﴿ قُلْ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴾

प्रत्येक वस्तु का राज्य किसके हाथ में है तथा वह सबको शरण देता है, उसके मुकाबिल कोई शरण देनें वाला नहीं।

﴿ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴾

उन सबके उत्तर में यही कहेंगे कि अल्लाह अर्थात यह सभी कार्य अल्लाह के हैं (*अल-मूमिनून*, ८४-८९) आदि आयतें।

२- ***"तौहीद उलूहियत"*** का अभिप्राय है कि इबादत की सभी प्रकार के योग्य, मात्र अल्लाह तआला है, तथा इबादत प्रत्येक वह कार्य है जो किसी विशेष व्यक्ति को प्रसन्न करने अथवा उसकी अप्रसन्नता के भय से किया जाये। इसमें नमाज़, रोजा (व्रत) हज, ज़कात केवल यही उपासना नहीं अपितु किसी व्यक्ति विशेष से प्रार्थना विनय करना उसके नाम के प्रसाद तथा चढ़ावे चढ़ाना उसके आगे हाँथ बाँधकर खड़ा होना उसकी परिक्रमा करना, उससे आशा, भय रखना आदि भी उपासना है। *तौहीद उलूहियत* यह है कि वह सभी कार्य अल्लाह ही के लिये किये जायें। (परन्तु ऊपरी साधनों के अनुसार जिवित लोगों से लाभ अथवा भय *तौहीद* के विपरीत नहीं है !) क़ब्र की पूजा में तत्पर साधारण तथा विशेष लोग इस *तौहीद उलूहियत* में शिर्क करते हैं तथा उपरोक्त इबादतों की बहुत सी प्रकार वे क़ब्रों में गड़े लोगों तथा मृत धर्मात्माओं के लिये भी करते हैं।

३- ***"तौहीद अस्मा व सिफ़ात"*** का अभिप्राय है कि अल्लाह के जो जो संज्ञा विशेष्य क़ुरआन तथा हदीस में वर्णित हुए हैं उन्हें बिना कष्ट कल्पना तथा हेरफेर के स्वीकार करें, तथा वह गुण उस रूप में किसी में न मानें, जैसे उसका गुण परोक्ष का ज्ञान है अथवा वह दूर एवं समीप से प्रत्येक की गुहार सुनता है। विश्व में प्रत्येक रूप से अधिकार करता है, यह अथवा इस प्रकार की अन्य दैवी गुणों में से किसी भी गुण में अल्लाह के सिवा किसी नबी, वली अथवा किसी भी व्यक्ति को सम्मिलित न करना, यदि ऐसा किया जाये तो यह *शिर्क* होगा।

खेद की बात है कि क़ब्रों के पुजारियों में यह *शिर्क* साधारण है उन्होंने अल्लाह के उपरोक्त गुणों में भी बहुत से बंदों को भी सम्मिलित कर रखा है।

(10) هداية *(हिदायत)* के कई अर्थ हैं। मार्ग दिखाना, मार्ग पर चला देना, लक्ष्य तक पहुँचा देना, इसे अरबी में *इरशाद, तौफ़ीक़, इलहाम* तथा *दलालत* से व्यांजित किया जाता है, अर्थात हमें संमार्ग दर्शा दे। इस पर चलनें की *तौफ़ीक़* दे इस पर अडिग कर दे ताकि हमें तेरी प्रसन्नता प्राप्त हो जाये। यह सीधा मार्ग केवल बुद्धि से प्राप्त नहीं हो सकता। यह सीधा मार्ग वही *"इस्लाम"* है जिसे नबी *सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम* नें दुनियाँ के सामनें प्रस्तुत किया, तथा अब जो क़ुरआन तथा सहीह हदीस में सुरक्षित है।

(11) यह صراط مستقيم (सीधा मार्ग) की व्याख्या है कि सीधा मार्ग वह है जिस पर वह लोग चलें जिन पर तेरी अनुकम्पा हुई। यह منعم عليه गरोह है अम्बिया, शहीदों, सिद्दीकों, तथा (महानुभावों) का जैसा कि सूर: निसाअ में है।

﴿وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ فَأُوْلَٰٓئِكَ مَعَ ٱلَّذِينَ أَنْعَمَ ٱللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ وَٱلصِّدِّيقِينَ وَٱلشُّهَدَآءِ وَٱلصَّٰلِحِينَ وَحَسُنَ أُوْلَٰٓئِكَ رَفِيقًا﴾

तथा जो अल्लाह तथा उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं वे (क़यामत के दिन) उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने उपकार किया, अर्थात अम्बिया, सिद्दीकों, शहीदों तथा सदाचारियों के साथ तथा इनकी सगत अति उत्तम है। *(अन्निसाअ, ६९)*

इस आयत में स्पष्ट कर दिया गया कि पुरस्कृत लोगों का यह मार्ग अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा पालन का मार्ग है, न कि कोई और मार्ग।

(12) कुछ हदीसों से प्रमाणित है कि مغضوب عليهم (जिन पर अल्लाह का प्रकोप उतरा) से अभिप्राय यहूदी हैं, तथा ضالين (पथभ्रष्ट) से तात्पर्य नसारा (ईसाई) हैं। इब्ने अबू हातिम कहते हैं कि भाष्यकारों में इस में कोई मतभेद नहीं لا أعلم خلافا بين المفسرين في تفسير المغضوب عليهم باليهود والضالين بالنصارى (फ़तहुल क़दीर) अत: सीधे मार्ग पर अग्रसर रहने वालों के लिए आवश्यक है कि वे यहूदियों तथा ईसाइयों की पथभ्रष्टता से बचकर रहें। यहूद की बड़ी पथभ्रष्टता यह थी कि वे जानबूझ कर सीधे मार्ग पर नहीं चलते थे अल्लाह की आयतों में हेर-फेर तथा छल करने से नहीं बचते थे। आदरणीय उज़ैर को अल्लाह का पुत्र कहा अपने धर्मचारियों तथा विद्वानों को हलाल तथा हराम करने का अधिकारी समझते थे। ईसाइयों का बड़ा दोष यह था कि ईशदूत ईसा ने विषय में अति किया तथा उन्हें अल्लाह का पुत्र, तीन में तीसरा बना दिया। खेद का विषय है कि मुसलमानों में भी यह पथभ्रष्टता व्याप्त है इसी कारण वह संसार में अपमानित तथा निरादर के पात्र हैं। अल्लाह तआला उन्हें पथभ्रष्टता के गढ़हे से निकाले ताकि निरादर तथा पतन के बढ़ते साये से वह सुरक्षित रह सकें।

सूर: *फ़ातिहा* के अन्त में *आमीन* آمين कहनें पर नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* नें बड़ा बल दिया है तथा उसकी प्रतिष्ठा का वर्णन किया है। अत: इमाम तथा मुक्तदी दोनों को آمين *(आमीन)* कहना चाहिए। नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जहरी* (उच्च स्वर की) नमाज़ों में उच्च स्वर से آمين *(आमीन)* कहा करते थे तथा सहाबा भी यहाँ तक कि मस्जिद गूंज जाती थी। (इब्ने माजा, इब्ने कसीर) इसीलिये उच्च स्वर से آمين *(आमीन)* कहना सुन्नत तथा सहाबा का कर्म रहा है। آمين *(आमीन)* के विभिन्न अर्थ वर्णन किये गये हैं। كذلك فليكن (ऐसा ही हो) لاتخيب رجاءنا हमें विफल न करना हे اللهم استجب لنا अल्लाह हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ले।

सूरतुल बक़र:-२

سُورَةُ الْبَقَرَةِ

(*सूर: बक़र:*[1] मदीने में अवतरित हुई इसमें दो सौ छयासी आयतें और चालीस रुकुऊ हैं)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अत्यंत कृपालु एवं दयालु है।

الٓمٓ ①

(१) *अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰*[2]।

ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ ۛ فِيهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ②

(२) इस किताब (के अल्लाह की किताब होने) में कोई सन्देह नही,[3] पवित्र व्यक्तियों को मार्ग दर्शन करने वाली हैं।[4]

---

[1]इस *सूर:* में आगे चलकर गाय की घटना का वर्णन हुआ है, इसलिए इसे *बकर:*गाय की घटना वाली *सूर:* (अरबी में "*बकर:*" गाय को कहते हैं) कहा जाता है। हदीस में इसका विशेष महत्व है यह भी वर्णित किया गया है कि जिस घर में यह पढ़ी जाये उसमें शैतान प्रवेश नहीं करता है। फ़रमाया:

«لَا تَجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قُبُوراً، فَإِنَّ الْبَيْتَ الَّذِي تُقْرَأُ فِيهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ لَا يَدْخُلُهُ الشَّيْطَانُ».

अवतरण के आधार पर यह मदीने के प्राथमिक समय की सूरतों (सूर: का बहुवचन) में से है, परन्तु इसकी कुछ आयतें *हज्जतुल-विदाअ* (रसूल अल्लाह *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* द्वारा किया गया हज्ज जो आपने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष में किया) के समय अवतरित हुई। इस्लाम धर्म के कुछ ज्ञानियों के निकट इसमें एक हज़ार संदेश, एक हज़ार नियम और एक हज़ार मनहियात (निषेधाज्ञ) हैं। (इब्ने कसीर द्वारा सहीह मुस्लिम आदि से उदघृत) (इब्ने कसीर)

[2]इन्हे अरबी में *हरफ़े-मुक्त्ता* (अलग-अलग अक्षर) कहा जाता है। अर्थात अलग-अलग पढ़े जाने वाले अक्षर। इनके अर्थ के विषय में कोई प्रमाणित कथन नहीं है। परन्तु नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने यह अवश्य फ़रमाया कि मैं नहीं कहता कि الٓمٓ एक अक्षर है, बल्कि **'अलिफ़'** एक अक्षर **'लाम'** एक अक्षर और **'मीम'** एक अक्षर है और हर अक्षर पर एक नेकी और प्रत्येक नेकी (पुण्य) का फल दस गुना है। (त्रिमज़ी व अल-हाकिम, फ़तहुल क़दीर)

[3.4] देखिये पृष्ठ संख्या 18

(३) जो लोग *ग़ैब* (परलोक) पर ईमान लाते हैं ।[1] और नमाज़ को स्थापित करते है[2] एवं हमारे द्वारा प्रदान किये हुए (माल) में से खर्च करते हैं ।[3]

ٱلَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِٱلْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣﴾

पृष्ठ सख्या 17 का शेष

[3]इसका उद्‌गम स्थल अल्लाह के द्वारा होने में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। जैसा कि अन्य स्थान पर क़ुरआन में है ﴿ تَنزِيلُ ٱلْكِتَٰبِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِن رَّبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴾ (अलिफ लाम मीम सजदः) कुछ आलिमों (इस्लाम धर्म के ज्ञानी गुरुओं) ने कहा है कि यह सन्देश नकारात्मक है (इसमें सन्देह न करो) इसके अतिरिक्त जो घटनाएं वर्णित की गयी हैं, उनकी सत्यापन में, जो नियम व सिद्धान्त वर्णन किए गए हैं, उनसे मानवता की सफलता व मोक्ष सम्बन्धित होने में और जिन सिद्धान्त (*तौहीद*, व *रिसालत* और परलोक के विषय में) का वर्णन किया गया है, उनके सत्य होने में कोई सन्देह नहीं -

[4]वैसे तो यह पवित्र ईश पुस्तक अखिल मानव जाति के लिए शुभ सन्देश एवं मार्ग दर्शन करने के लिए ही अवतरित हुई है। परन्तु इस पवित्र स्रोत से वही लोग लाभान्वित होते हैं जो इस अमृत के खोजी और अल्लाह के डर से परिपूर्ण होंगे जिसके हृदय में मरणोपरान्त अल्लाह के समक्ष उपस्थित होकर अपने कर्मों के उत्तरदायित्व का विश्वास, और इसकी केवल चिन्ता ही नहीं, उसके अन्दर सत्यमार्ग की खोज एवं पथभ्रष्टता से बचने का प्रयास नहीं होगा, तो उसे सन्मार्ग कहां से और क्यों कर प्राप्त हो सकेगा।

[1]*ग़ैब* का अर्थ वे चीज़ें हैं जिनका हल मस्तिष्क एवं बुद्धी द्वारा नहीं। जैसे अल्लाह तआला का होना, *वहय* (प्रकाशनायें) *इलाही*, स्वर्ग, नरक, *मलायेका* (*फरिश्ते*,ईशदूत), कब्र की यातना *हश्र* का होना आदि। इससे उदित हुआ कि अल्लाह और रसूल की बतायी हुई सूचनाओं पर बुद्धी, आभास के अतिरिक्त पर विश्वास करना ईमान का भाग है और इनका इंकार *कुफ़्र* व गुमराही है।

[2]नमाज़ स्थापित करने का भावार्थ है कि नियमित रुप से *सुन्नत-ए-नबवी* के अनुसार नमाज़ पढ़ना, वरन् नमाज तो मुनाफ़िक (जो ऊपर से मुसलमान अन्दर से कुछ और) भी पढ़ते थे।

[3]اِنفاق का शब्द प्रमुख रूप से दान के लिए प्रयोग होता है जो *वाजिब* (आवश्यक) और *नफ़िल* (ऐच्छिक) दोनों प्रकार के दान के लिए होता है। ईमानवाले लोग अपनी शक्ति के अनुसार दोनों प्रकार के दान देने में देर नहीं करते, बल्कि माता-पिता और सन्तान एवं परिवार पर उचित रुप से व्यय करना भी इसमें सम्मिलित है, और यह पुण्य और फल प्राप्ति का कारण बनता है।

(४) और जो लोग ईमान लाते हैं उस पर जो आपकी ओर उतारा गया और जो आपसे पहले उतारा गया ।[1] और वह आख़िरत पर भी विश्वास रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝

(५) यही लोग अपने प्रभु की ओर से सत्य मार्ग पर हैं और यही लोग सफलता एवं मोक्ष प्राप्त करने वाले हैं ।[2]

اُولٰۤىِٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰۤىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

(६) काफ़िरों को आपका डराना या न डराना समान है, यह लोग ईमान न लायेंगे ।[3]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

---

[1]पिछली किताबों पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि जो किताबें *नबियों* पर अवतरित हुई, वे सभी सच्ची हैं, यद्यपि अब उनके अनुसार कर्म नहीं किया जा सकता, अब कर्म केवल क़ुरआन और नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की व्याख्या, एवं हदीस के अनुसार ही किया जाएगा। इससे यह भी विदित हुआ कि *वहय* एवं *रिसालत* की श्रृंखला मोहम्मद *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर समाप्त हो गयी, वरन् इस पर भी ईमान लाने का वर्णन अल्लाह तआला अवश्य करता।

[2]यह उन ईमानवालों के फल प्राप्त होने का वर्णन है, जो ईमान लाने के उपरान्त *तक़वा* (दिल से अल्लाह का डर), कर्म एवं शुद्ध विश्वास का प्रायोजन करते हैं। मात्र जीभ से ईमान की घोषणा को उपयुक्त नहीं मानते। सफलता का तात्पर्य *आख़िरत* में अल्लाह को ख़ुश करना और उसकी दया एवं मोक्ष (*मग़फिरत*) की प्राप्ति है। इसके साथ धरती पर भी प्रसन्नता एवं मान-सम्मान एवं सफलता प्राप्त हो जाए, तो *सुब्हान अल्लाह,* वरन् सच्ची सफलता तो आख़िरत की सफलता है।

इसके बाद अल्लाह दूसरे गुट का वर्णन कर रहा है, जो मात्र काफ़िर ही नहीं, अपितु उसका *कुफ़्र* एवं अहंकार इस सीमा तक पहुँचा हुआ है, जिसके बाद उससे परोपकार एवं इस्लाम को स्वीकार करने की कामना ही नहीं।

[3]नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की तीव्र इच्छा थी कि सभी लोग मुस्लमान हो जायें, और उसी के अनुसार आप प्रयत्न करते, परन्तु अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ईमान उनके भाग्य में ही नही है। यह वह कुछ प्रमुख लोग हैं, जिनके दिलों पर ठप्पा लग चुका था ।(जैसे अबु जहल और अबु लहब आदि) वरन् आपके आमंत्रण एवं निर्देश से

(७) अल्लाह तआला ने उनके हृदय एवं कानों पर ठप्पा लगा दिया है और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उनके लिए बड़ा प्रकोप है ।[1]

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۡ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۷

(८) और लोगों में से कुछ कहते हैं, हम अल्लाह (परमेश्वर) पर एवं अन्तिम दिन पर

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

अनगिनत लोग मुस्लमान हुए, यहाँ तक की पूरा अरब क्षेत्र इस्लाम की छत्र-छाया में आ गया ।

[1]यह उनके ईमान न लाने का कारण बताया गया है कि चूँकि *कुफ्र* एवं पाप के लगातार करने के कारण उनके दिलों से सत्य को स्वीकार करनें की शक्ति समाप्त हो चुकी है । उनके कान सत्य सुनने को तैयार नहीं और उनकी आँखें सृष्टि में फैली हुई प्रभु की निशानियों को देखने योग्य नहीं हैं, तो वह ईमान किस प्रकार ला सकते हैं ? ईमान तो उनके भाग में आता है, जो अल्लाह तआला द्वारा प्रदान की गयी शक्तियों का उचित प्रयोग करते हैं, एवं उनके द्वारा सफलता प्राप्त करते हैं । इसके विपरीत लोग, तो उस हदीस का उदाहरण बनते हैं, जिसमें वर्णित किया गया है कि, "मोमिन जब पाप कर बैठता है, तो उसके हृदय पटल पर छोटा सा काला बिन्दु पड़ जाता है । यदि वह पाप से क्षमा माँगकर पाप नहीं करता है, तो उसका हृदय पहले की भाँति श्वेत एवं उज्जवल हो जाता है, और यदि वह पाप पर पाप किये जाता है तो वह काला बिन्दु फैलकर सारे हृदय पटल पर छा जाता है ।" नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया "यही वह मुर्चा है जिसे अल्लाह तआला ने वर्णित किया है ।

﴿ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴾ [المطففين : ١٤]

"अर्थात उनके कर्मों के कारण उनके दिलों पर मुर्चा चढ़ गया है ।"

(अल-मुतफ़्फ़ेफ़ीन-१४) (तबरी व फ़तहुल क़दीर)

इस स्थिति को क़ुरआन ने ختم (ठप्पा लग जाने) से तुलना की है, जो उनके लगातार कुकर्मों के करने का तर्क पूर्ण परिणाम है ।

ईमान लाये हैं, परन्तु वास्तव में वे ईमान वाले नहीं हैं ।[1]	وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ⑧
(९) वह अल्लाह को और ईमान लाने वालों को धोखा दे रहे हैं, परन्तु वास्तव में वह स्वयं अपने आपको धोखा दे रहे हैं, और उनको ज्ञान नहीं है ।	يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ⑨
(१०) उनके दिलों में रोग है, अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया[2] और उनके झूठ बोलने के कारण उनके लिए दुखदायी यातनाएं हैं ।	فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ ۙ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ⑩
(११) और जब उनसे कहा जाता है कि धरती पर बिगाड़ मत उत्पन्न करो, तो उत्तर देते हैं कि हम तो मात्र सुधारक हैं ।	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ⑪
(१२) सावधान ! वास्तव में यही लोग बिगाड़ उत्पन्न करने वाले हैं,[3] परन्तु ज्ञान नहीं रखते ।	اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ⑫

---

[1]यहां से तीसरे गुट मुनाफिकों का वर्णन आरंभ होता है, जिनके दिल ईमान से शून्य थे परन्तु ईमानवालों को धोखा देने के लिए मुख से ईमान का प्रदर्शन करते थे । अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह न तो अल्लाह को धोखा देने में सफल हो सकते हैं (क्योंकि वह सब कुछ जानता है) और न मुसलमानों को सदैव धोखा दे सकते हैं, क्योंकि अल्लाह तआला *वहय* (प्रकाशना) के द्वारा उनके छल-कपट की सूचना मुसलमानों को देता था । इस प्रकार उनके छल-कपट की पूर्ण हानि उन्हीं को उठानी पड़ी, इस तरह उन्होंने अपना परलोक तो बरबाद किया और धरती पर भी अपमानित हुए ।

[2]रोग से तात्पर्य वही *कुफ़्र* एवं बिगाड़ का रोग है, जिसके सुधार का प्रयत्न न किया जाए तो बढता ही जाता है । इसी प्रकार झूठ बोलना *मुनाफ़िकों* की निशानी में से है, जिससे बचाव आवश्यक है ।

[3]बिगाड़, सुधार का विलोम है । *कुफ़्र* और पाप से धरती पर बिगांड़ फैलता है और अल्लाह की आज्ञा के पालन से शांति प्राप्त होती है । हर युग के *मुनाफ़िकों* का यही कार्य

(१३) और जब उनसे कहा जाता है कि अन्य लोगों (अर्थात सहाबा) की तरह तुम भी ईमान लाओ, तो उत्तर देते हैं कि क्या हम ऐसा ईमान लायें जैसा मूर्ख लाये हैं ।[1] सावधान ! वास्तव में यही मूर्ख हैं, परन्तु यह नहीं जानते ।[2]

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ءَامِنُوا كَمَآ ءَامَنَ النَّاسُ قَالُوٓا أَنُؤْمِنُ كَمَآ ءَامَنَ السُّفَهَآءُ ۗ أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

(१४) और जब ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम भी ईमानवाले हैं, और जब एकान्त में अपने बड़ों (शैतान कृत्य लोग) के पास जाते हैं ।[3] तो कहते हैं कि हम तो

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ ءَامَنُوا قَالُوٓا ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَٰطِينِهِمْ قَالُوٓا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُونَ ﴿١٤﴾

रहा है कि, पाप का प्रचार वे करते हैं और प्रभु की शक्ति की सीमा को समाप्त करते हैं और समझते अथवा दावा यह करते हैं कि वह सुधार एवं उन्नति के लिए प्रयत्न कर रहे हैं ।

[1]इन *मुनाफ़िकों* ने उन सहाबा (رضی الله عنهم) को मूर्ख कहा, जो अल्लाह की राह में तन-मन-धन किसी प्रकार के बलिदान से पीछे नहीं हटे और आजकल के मुनाफ़िक यह सिद्ध करते हैं कि نعوذ بالله सहाबा किराम (رضی الله عنهم) ईमान की दौलत से शून्य थे । अल्लाह तआला ने प्राचीन एवं आधुनिक दोंनो प्रकार के *मुनाफ़िको* का खण्डन किया है । फ़रमाया : किसी महान लक्ष्य के लिए सांसारिक लाभ का बलिदान देना मूर्खता नहीं, पूर्ण बुद्धिमत्ता तथा फलदायक है । सहाबा (رضی الله عنهم) ने इसी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया इसलिए वे मात्र पक्के *मोमिन* ही नहीं अपितु ईमान के लिए एक माप एवं कसौटी है, अब ईमान उन्हीं का उचित होगा, जो सहाबा किराम (رضی الله عنهم) की तरह ईमान लायेंगे ।

﴿فَإِنْ ءَامَنُوا بِمِثْلِ مَآ ءَامَنتُم بِهِۦ فَقَدِ اهْتَدَوا﴾ (अल-बक़रः-१३७)

[2]स्पष्ट बात है कि अस्थाई लाभ के लिए स्थाई लाभ को ठुकराना और *आख़िरत* के स्थाई जीवन के आपेक्ष सांसारिक क्षणिक जीवन को महत्व देना और अल्लाह के अतिरिक्त मनुष्य से भय खाना अतिमूर्खता है, जिसको इन *मुनाफ़िको* ने किया । इस प्रकार वे एक पूर्ण सत्य से अज्ञान रहे ।

[3]शैतानों से तात्पर्य क़ुरैश और यहूदी नेतागण हैं, जिनके निर्देश पर वे इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध चाल चलते थे । अथवा *मुनाफ़िकों* के अपने नेता ।

तुम्हारे साथ हैं, हम तो केवल उनसे परिहास करते हैं।

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾

(१५) अल्लाह तआला भी उनसे परिहास करता है।[1] और उनको धूर्तता एवं बहकावे में और बढ़ा देता है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾

(१६) यह वे लोग हैं जिन्होंने पथ भ्रष्टता को मार्ग दर्शन के बदले में क्रय कर लिया है। परन्तु इनका व्यापार[2] न लाभकारी हुआ, न वह समार्ग प्राप्त कर सके।

---

[1] "अल्लाह तआला भी उनसे परिहास करता है।" इसका एक अर्थ तो यह है कि जिस प्रकार वे मुसलमानों के साथ परिहास और अनादर का मामला करते हैं, अल्लाह तआला भी उनसे ऐसा ही मामला करते हुए उन्हें अपमानित करता है। इसको परिहास से सबोधित करना भाषा का नियम है, वरन् यह वास्तव में परिहास नहीं है, उनके परिहासिक कर्मों का दण्ड है। जैसे

﴿وَجَزَٰٓؤُاْ سَيِّئَةٖ سَيِّئَةٞ مِّثۡلُهَاۖ﴾ [الشورى: ٤٠]

"बुराई का बदला उसी के समान बुराई है।"

(अश-शूरा)

इसमें बुराई के बदले को बुराई कहा गया है। यद्यपि वह बुराई नहीं है। एक उचित कर्म है। इसी प्रकार ﴿يُخَٰدِعُونَ ٱللَّهَ وَهُوَ خَٰدِعُهُمۡ﴾ ﴿وَمَكَرُواْ وَمَكَرَ ٱللَّهُۖ﴾ आदि आयतों में है। दूसरा अर्थ है कि प्रलय के दिन अल्लाह तआला भी उनसे परिहास करेगा। जैसा कि सूर: हदीद की आयत ﴿يَوۡمَ يَقُولُ ٱلۡمُنَٰفِقُونَ﴾ में वर्णन है।

[2] इस आयत में व्यापार का तात्पर्य सत्य मार्ग को छोड़कर पथ भ्रष्टता में पड़ जाना है जो स्पष्ट हानि का सौदा है। *मुनाफ़िको* ने *निफ़ाक़* का रूप धारण कर यही घाटे वाला व्यापार किया-परन्तु यह घाटा प्रलय का घाटा है। यह निश्चित नहीं कि दुनियाँ में उन्हें इस घाटे का ज्ञान हो जाये अपितु दुनियाँ में तो उन्हें इस निफ़ाक़ द्वारा जो लाभ प्राप्त होता था उस पर वे बड़े प्रसन्न होते थे तथा इसी कारण वे स्वय को बुद्धिमान और मुसलमानों को मूर्ख समझते थे।

(१७) इन लोगों का उदाहरण उस व्यक्ति जैसा है जिसने आग जलाई परन्तु जब आग ने उसके आस-पास को प्रकाशमान कर दिया, तो अल्लाह ने उनका प्रकाश छीन लिया और उन्हें अन्धकार में छोड़ दिया, जो नहीं देखते ।[1]

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾

(१८) ये बधिर-मूक एवं अन्धे हैं, अब ये लौटने वाले नहीं हैं ।

صُمٌّ ۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾

(१९) अथवा आकाश की वर्षा की तरह, जिसमें अंधकार, गरज और बिजली हो। बिजली की गरज के कारण मौत से डरकर वे कानों में उंगलियाँ डाल लेते हैं, और अल्लाह तआला काफ़िरों को घेरने वाला है ।

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾

(२०) लगता है कि बिजली उनकी आँखें झपट लेगी, जब उनके लिए प्रकाश करती है तो चलते हैं तथा जब अंधेरा करती है तो खड़े हो जाते हैं[2] और यदि अल्लाह चाहे तो

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ

[1]माननीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنـــه और अन्य सहाबा ने इसका अर्थ यह बताया है कि *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* जब मदीना आए, तो कुछ लोग मुसलमान हो गए लेकिन फिर शीघ्र ही *मुनाफ़िक़* हो गए। उनका उदाहरण उस व्यक्ति की तरह है जो अंधकार में था, उसने प्रकाश के लिए आग जलाई जिससे वातावरण प्रकाशमान हो गया और लाभकारी एवं हानिकारक वस्तुएं उसको स्पष्ट हो गयीं, सहसा वह प्रकाश समाप्त हो गया और वह पूर्व की अंधकारमय स्थिति में घिर गया। यही हाल मुनाफ़िकों का था। वे पहले शिर्क के अंधकार में थे, मुसलमान हुए, तो प्रकाश में आ गये। वैध-अवैध और लाभ-हानि को पहचान गए, फिर पुन: वह *कुफ़्र* और बिगाड़ की ओर पलट गये तो सारा प्रकाश समाप्त हो गया। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यह मुनाफ़िकों के एक दूसरे गुट का वर्णन है। जिस पर सत्य कभी स्पष्ट हो जाता है और कभी वे असमंजस्य एवं सन्देह में पड़ जाते हैं। उनके दिल सन्देह और असमंजस्य में उस वर्षा के समान है, जो अंधकार (सन्देह, *कुफ़्र*, बिगाड़) में उतरती है, गरज-चमक

إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٖ قَدِيرٞ ٢٠

उनके कानों एवं आँखों को छीन ले,[1] वस्तुत: अल्लाह सर्व शक्तिमान है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعْبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمْ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ٢١

(२१) हे मानव ! अपने उस पालनहार की उपासना करो जिसने तुमको तथा तुमसे पूर्व लोगों को पैदा किया ताकि तुम सदाचारी हो जाओ।

ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ فِرَٰشٗا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخْرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزْقٗا لَّكُمْۖ فَلَا تَجْعَلُواْ لِلَّهِ أَندَادٗا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ٢٢

(२२) जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछावन तथा आकाश को छत बनाया, और आकाश से वर्षा की तथा उससे फल पैदा करके तुम्हें जीविका प्रदान की, अत: यह जानते हुए किसी को अल्लाह का समवर्ती न बनाओ।[2]

से उनके दिल काँपने लगते हैं, यहाँ तक की डर से अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लेते हैं। परन्तु यह प्रयास उन्हें अल्लाह की पकड़ से बचा नहीं सकेंगे, क्योंकि वे अल्लाह के घेरे से नहीं निकल सकते। कभी सत्य की किरणों को देखकर सत्य की ओर झुक जाते हैं, लेकिन जब इस्लाम तथा मुसलमानों पर कठिनाई का समय आता है तो स्तब्ध खड़े हो जाते हैं। (इब्ने कसीर) *मुनाफ़िक़ों* का यह गुट अन्तिम समय तक असमंजस्य और टालमटोल का शिकार होकर सत्य (*इस्लाम*) से हट जाता है।

[1]इसमें इस बात की सतर्कता की ओर संकेत है कि यदि अल्लाह तआला चाहे तो अपनी प्रदान की हुई शक्ति को छीन ले। इसलिए मनुष्यों को अल्लाह तआला आज्ञापालन से अलग एवं उसके प्रकोप एवं न्याय से कभी भी निडर नहीं होना चाहिए।

[2]सत्यमार्ग एवं पथभ्रष्टता के अनुसार मनुष्य के तीन गुटों के वर्णन के पश्चात अल्लाह तआला का एक होने और उसकी उपासना *(इबादत)* का निमन्त्रण सभी लोगों को दिया जा रहा है। फ़रमाया, जब तुम्हारा और तुम्हारी सृष्टि का सृष्टा अल्लाह है। तुम्हारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने वाला वही है, तो फिर तुम उसे छोड़कर दूसरों की *इबादत* क्यों करते हो ? दूसरों को उसके समवर्ती क्यों ठहराते हो ? यदि तुम अल्लाह की यातना से बचना चाहते हो तो उसका एक ही मार्ग है, कि अल्लाह को एक मानो और मात्र उसकी ही *इबादत* करो। किसी दूसरे को उसका समवर्ती करने का कर्म न करो।

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِنْ مِثْلِهِ ۖ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾

(२३) और यदि तुम्हें उसमें संदेह हो जिसे हमने अपने भक्त पर अवतरित किया है, तथा तुम सत्यवादि हो तो इसी जैसी एक सूर: बना लाओ । तुम्हें छूट है कि अल्लाह के सिवाय अपने सहयोगियों को भी बुला लो ।[1]

فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٢٤﴾

(२४) फिर यदि तुमने नहीं किया और तुम कदापि नहीं कर सकते,[2] तो (उसे सत्य स्वीकार कर) उस अग्नि से डरो, जिसका इंधन मनुष्य और पत्थर हैं ।[3] जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है ।[4]

---

[1] *तौहीद* (अल्लाह को एक मानना) के उपरान्त अब *रिसालत* (ईशदूत) के विषय में बताया जा रहा है, हमने अपने बन्दे पर जो किताब उतारी उसका अल्लाह की ओर से अवतरित होने में तुम्हें यदि सन्देह है तो तुम अपने सभी सहायता करने वालों को मिलाकर इस जैसी एक *सूर:* ही बनाकर दिखाओ और यदि तुम ऐसा नही कर सकते तो तुम्हें समझ लेना चाहिए कि वास्तव में यह कथन किसी मनुष्य की उत्पत्ति नहीं है बल्कि अल्लाह का ही कथन है। और हम पर और मोहम्मद *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की रिसालत पर ईमान लाकर नरक की अग्नि से बचने का प्रयत्न करो । नरक की अग्नि जो काफ़िरों के लिए ही तैयार की गई है ।

[2] यह *क़ुरआन करीम* की सत्यता का एक स्पष्ट प्रमाण हे कि अरब व अन्य क्षेत्र के सभी काफ़िरों को ललकारा गया, परन्तु वह आज तक इसका उत्तर नही दे सके और अवश्य प्रलय आने तक ऐसा नहीं कर सकेंगे ।

[3] इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) के अनुसार पत्थर का तात्पर्य गन्धक के पत्थर हैं, और कुछ ज्ञानियों के अनुसार पत्थर के वे देवता (मूर्तियाँ) भी नरक के ईंधन होंगे, जिनकी ससार में लोग पूजा करते रहे होंगे । (पवित्र) क़ुरआन में भी है ।

﴿ إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ﴾ [الأنبياء: ٩٨]

"तुम और जिनकी तुम पूजा करते हो, नरक के ईंधन होंगे ।"

(अल-अम्बिया-९८)

[4] इससे एक बात तो यह मालूम हुई कि नरक वास्तव में काफ़िरों एवं *मुशरिकों* के लिए बनायी गयी है और दूसरी बात यह मालूम हुई कि स्वर्ग एवं नरक का अस्तित्व है, जो

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِن ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوا هَٰذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ

(२५) और ईमानवालों और सत्य कर्म करने वालों को,[1] उन स्वर्गों की शुभ सूचना दो जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जब उन्हें उनसे फल खाने के लिए दिए जाएंगे तो कहेंगे कि इससे पूर्व हमें खाने को यही दिया गया, वह समारुपी फल होंगे ।[2] तथा उनके

इस समय भी प्रमाणित है। यही *सलफ-ए-उम्मत* (इस्लाम के मार्ग पर पूर्ण रुप से चलने वाले) का भी विश्वास है। यह उपमा मात्र नही है, जैसा कि आधुनिक युग के कुछ अवज्ञाकरी एवं तर्कशास्त्री हदीस बताते हैं।

[1]पवित्र क़ुरआन में हर स्थान पर ईमान के साथ सत्यकर्म का वर्णन करके इस बात को स्पष्ट कर दिया गया है कि ईमान और सत्कर्म का चोली-दामन का साथ है। सत्कर्म के विना ईमान का कोई लाभ नही और ईमान के बिना सत्कर्म का अल्लाह के पास कोई मूल्य नही। और सत्कर्म क्या है ? जो *सुन्नत* के अनुसार हो और शुद्ध रुप से अल्लाह की प्रसन्नता के लिए किया जाए। *सुन्नत* के विपरीत कर्म भी अस्वीकार है और दिखावे और आडम्बर के लिए किये गये कार्य भी व्यर्थ एवं निष्फल हैं।

[2] "متشابها" का अर्थ या तो स्वर्ग के सभी फलों का रुप एक जैसा होना है अथवा दुनिया के फलों के रुप का होना है। परन्तु यह समानता केवल रुप एवं नाम की सीमा तक ही होगी, वरन् स्वर्ग के फलों के स्वाद से सांसारिक फलों का कोई सम्बन्ध ही नही है। स्वर्ग के सुखों के विषय में हदीस में है

«مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ، وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلَا خَطَرَ عَلَىٰ قَلْبِ بَشَرٍ».

"न किसी आंख ने उन्हें देखा, न किसी कान ने उनके विषय में सुना, देखना और सुनना तो दूर की बात किसी मनुष्य के दिल में इसका विचार भी नही आया होगा।"

(सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अस सजद:)

مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾

लिए उसमें पवित्र पत्नियाँ होंगी[1] और वे उसमें सदैव रहेंगे ।[2]

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ أَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۭ فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَأَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ۭ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ إِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) वास्तव में अल्लाह तआला किसी उपमा का वर्णन करने से लज्जित नहीं होता, चाहे वह मच्छर की हो या उससे भी तुच्छ चीज की ।[3] ईमानवाले उसे अपने प्रभु की ओर से सत्य समझते हैं और काफ़िर कहते हैं कि ऐसी उपमा देने से अल्लाह का अभिप्राय क्या है ? इसी के साथ अधिकतर को पथभ्रष्ट करता है और प्राय: लोगों को सत्य मार्ग पर

---

[1]अर्थात मासिक धर्म व मल-मूत्र और अन्य प्रकार की अपवित्रता से शुद्ध होंगी ।

[2] خلـود का अर्थ सदैव है । स्वर्गवासी सदैव ही स्वर्ग में रहेंगे और प्रसन्न रहेंगे । और नरकवासी सदैव नरक में ही रहेंगे और यातना सहन करते रहेंगे । स्वर्ग और नरक में जाने के उपरान्त एक फ़रिश्ता पुकार करेगा,

«يأَهْلَ النَّارِ لا موت، ويا أَهْلَ الجَنَّةِ لا مَوتَ، خُلُودٌ»

"ऐ, नरकवासियों ! अब मृत्यु नही है और ऐ स्वर्गवासियों अब मृत्यु नही है । जो लोग जिस स्थिति में हैं उसी स्थिति में सदैव रहेंगे ।" (बुख़ारी,अर-रक़ाक़) (मुस्लिम किताब अल-जन्ना)

[3]जब अल्लाह तआला ने तर्कपूर्ण प्रमाणों से *क़ुरआन* को चमत्कार सिद्ध कर दिया तो काफ़िरों ने एक दूसरे प्रकार से प्रतिवाद कर दिया । वह यह कि यदि यह कथन प्रभु का होता तो इतनी महान शक्ति के अवतरित कथन में तुच्छ चीजों का उदाहरण अथवा उपमायें न होतीं । अल्लाह तआला ने इसके उत्तर में फ़रमाया कि बात की पुष्टि और किसी तर्क को सिद्ध करने के लिए उपमाओं का वर्णन करने में कोई अनुपयोगिता नहीं, इसमें कोई लज्जा और पर्दे की भी आवश्यकता नहीं فوقها जो मच्छर के ऊपर हो अर्थात उसके पंख अथवा बाज़ू, तात्पर्य मच्छर से भी तुच्छ चीज । अथवा فوق का अर्थ 'उससे बढ़कर' भी हो सकता है । इस स्थिति में अर्थ "मच्छर अथवा उससे बढ़कर किसी वस्तु" होगा । शब्द فوقها में दोनों अर्थों को स्थान प्राप्त है ।

लाता है ।[1] और पथभ्रष्ट वह केवल अवज्ञाकारियों (*फ़ासिकों*) को ही करता है ।

(२७) जो लोग अल्लाह तआला के साथ की गयी सुदृढ़ प्रतिज्ञा[2] को तोड़ देते हैं। और अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों को जोड़ने का आदेश दिया है, उसे काटते हैं। और धरती

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ

---

[1]अल्लाह के वर्णन द्वारा उदाहरणों से ईमानवालों के ईमान में बढ़ोतरी होती है और काफ़िरों के *कुफ़्र* में बढ़ोतरी होती है। और यह सब अल्लाह के आज्ञा और निर्देश एवं नियमों के अन्दर ही होता । जिसे क़ुरआन ने

﴿ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى ﴾

"जिस ओर कोई फिरता है, हम उसी ओर उसको फेर देते हैं।"

(*अन-निसा*-११५)

और हदीस में . «كُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ» (सहीह बुख़ारी व्याख्या सूर: *अल-लैल*) से तुलना की गयी है। फ़िस्क़ (अवज्ञाकारिता) अल्लाह के अनुकरण से निष्कासित होने को कहते हैं । जो अस्थाई एवं सामायिक स्थितियों के कारण एवं ईमान वाले से भी हो सकता है। परन्तु इस आयत में अवज्ञाकरिता का तात्पर्य अनुकरण से पूर्णरुपण निष्कासित अर्थात *कुफ़्र* लिया गया है। जैसा कि अगली आयत में स्पष्ट रुप से है कि इसमें ईमान वालों के सापेक्ष काफ़िरों वाली विशेषताओं का वर्णन है।

[2]टीकाकरों ने عهد के विभिन्न भावार्थ वर्णित किये हैं। उदाहरणत: १- अल्लाह का वह निर्देश जो उसने अपने नियमों को पूरा करने और उनको नकारने से *अंबिया अलैहिस्सलाम* के द्वारा मनुष्यों तक पहुँचाए। २- वह प्रतिज्ञा जो पूर्व अवतरित किताबों पर विश्वास रखने वालों से "*तौरात*" में ली गई कि संसार के लिए अन्तिम नबी के आ जाने के उपरान्त तुम्हारे लिए उनका समर्थन करना और उनकी *नबूवत* पर ईमान लाना आवश्यक है । ३- वह "अलस्त" की प्रतिज्ञा जो आदम के शरीर से निकालने के बाद आदम के परिवार वालों से ली गयी, जिसका वर्णन क़ुरआन मजीद में किया गया ।

﴿ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ﴾ (अल-आराफ़-१७२)

प्रतिज्ञा तोड़ने का अर्थ प्रतिज्ञा की अवहेलना करना है (इब्ने कसीर)

पर आतंक फैलाते हैं। यही लोग हानि उठाने वाले हैं।[1]

(२८) तुम अल्लाह को कैसे नहीं मानते, तुम निर्जीव थे तो उसने तुम्हें जीवन दिया, पुन: तुम्हें मृत्यु देगा, फिर पुर्नजीवित करेगा,[2] फिर तुमको उसी के पास जाना है।

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾

(२९) उसी ने तुम्हारे लिए, जो कुछ धरती में है सब पैदा किया,[3] फिर आकाश का इरादा किया[4] तथा उसने सात समतल आकाश बना दिये,[5] और वह सर्वज्ञ है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾

---

[1]स्पष्ट बात है कि हानि अल्लाह के आदेशों का पालन न करने वालों ही को होगी, अल्लाह का अथवा उसके ईशदूतों एवं उसकी ओर आमन्त्रित करने वालों का कुछ न बिगड़ेगा।

[2]आयत में दो मृत्यु और दो जीवन का वर्णन है। पहली मृत्यु का अर्थ अनस्तित्व (अर्थात न होना) है और पहला जीवन माता के गर्भ से जन्म लेने के पश्चात से मृत्यु तक है। फिर मृत्यु आ जाएगी और फिर *आख़िरत* का जीवन दूसरा जीवन होगा। जिसको प्रलय पर विश्वास न रखने वाले अस्वीकार करते हैं। इसी अनुसार क़ब्र का जीवन (लगभग) सांसारिक जीवन में ही सम्मिलित होगा (फ़तहुल क़दीर) कुछ *आलिमों* (इस्लाम धर्म का ज्ञान रखने वाले विद्वान) के निकट *बर्ज़ख* का जीवन, *आख़िरत* के जीवन से पूर्वकाल का है और उसका आरम्भिक परिणाम भी, इसलिए इसका सम्बन्ध *आख़िरत* के जीवन से है।

[3]इससे यह सिद्ध किया गया है कि धरती की सभी वस्तुओं के लिये वास्तविक "*हिल्लत*" (*हलाल* अथवा प्रयोग करने योग्य) है, अतिरिक्त इसके कि उसका *हराम* (प्रयोग न करना) होना *किताब* व *सुन्नत* से सिद्ध हो। (फ़तहुल क़दीर)

[4]इस्लाम धर्म के कुछ अनुयायियों ने इसका अनुवाद

﴿ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ﴾

"फिर आकाश की ओर चढ़ गया।" किया है। (सहीह बुख़ारी)

अल्लाह तआला का आकाशों के ऊपर *अर्श* पर चढ़ना और मुख्य-मुख्य अवसरों पर दुनिया के समीप आकाश पर उतरना अल्लाह की विशेषताओं में से है। जिस पर इसी

(३०) और जब तुम्हारे प्रभु ने फरिश्तों से कहा[1] कि, मैं धरती में एक ख़लीफा[2] (ऐसा

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوٓا۟ أَتَجْعَلُ فِيهَا

प्रकार ईमान रखना आवश्यक है, जिस प्रकार से *क़ुरआन* और *हदीस* में वर्णन किया गया है।

[5]इससे तो एक यह विदित हुआ कि "आकाश" का वास्तविक अस्तित्व है। मात्र ऊंचाई अथवा दूरी का नाम नही है। दूसरी बात यह मालूम हुई कि इनके सात तल हैं। और हदीस के अनुसार दोआकाश तलो की दूरी ५०० वर्ष है। और धरती के विषय में क़ुरआन करीम में है।

«وَمِنَ الأرض مثْلُهُنَّ»

(और धरती भी आकाश के समान है)

(अत-तलाक-१२)

इससे धरती की संख्या भी सात ही मालूम होती है। इसकी अन्य प्रमाणिकता हदीस से हो जाती है।

«مَنْ أَخَذَ شِبراً مِنَ الأرضِ ظُلْمًا فَإنهُ يُطَوَّقه يومَ القِيامَةِ مِنْ سَبعِ أرضِينَ»

(जिसने अत्याचार से किसी की एक बालिश्त (अंगूठे के सिरे से तर्जनी के अन्तिम सिरे तक की नाप) धरती ले लेती तो अल्लाह तआला उसे सातों धरती का तौक़ पहनाएगा)।

(सहीह बुख़ारी)

इस आयत से यह भी मालूम होता है कि आकाश से पहले धरती की सृष्टि हुई है , परन्तु सूर: नाज़िआत में आकाश के वर्णन के पश्चात फ़रमाया गया है,

﴿وَٱلْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَىٰهَآ﴾

(धरती को उसके पश्चात बिछाया)

इससे यह भावार्थ निकाला गया है कि पहले सृष्टि धरती की हुई है और दहू (साफ और ठीक करके बिछाना) सृष्टि से भिन्न वस्तु है जो आकाश की सृष्टि के बाद अस्तित्व में आया। (फ़तहुल क़दीर)

[1]*मलायेका* (*फ़रिश्ते*) अल्लाह की प्रकाश से पैदा की गई सृष्टि है जिनका निवास आकाश पर है, जो अपने प्रभु के आदेश का पालन करते हैं एव उसकी प्रशसा और

مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

गरोह जो एक-दूसरे के पश्चात आयेगा)[1] बनाने जा रहा हूँ, तो उन्होंने कहा क्या तू उसमें ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो उसमें आतंक एवं रक्तपात करे, और हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरा महिमागान करते एवं तेरी पवित्रता का वर्णन करते हैं। उसने कहा- जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।[2]

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِيْ بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾

(३१) और अल्लाह तआला ने आदम को सभी नाम सिखा कर उन चीज़ों को फ़रिश्तों के सामने पेश कर दिया और फ़रमाया कि यदि तुम सच्चे हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٢﴾

(३२) उन सभी ने कहा, हे अल्लाह! तू महिमावान है, हमें तो बस उतना ही ज्ञान है,

---

पवित्रता के गुणगान में व्यस्त रहते हैं और उसके किसी आदेश की अवहेलना नही करते।

[1] *खलीफ़ा* का अर्थ ऐसा प्राणी है जो एक दूसरे के पश्चात आयेगा। (इब्ने कसीर)

[2] *फ़रिश्तो* का यह कहना किसी ईर्ष्या अथवा परिवाद के रुप में नहीं था, बल्कि उसकी वास्तविकता एवं कारण जानने के लिए था कि ऐ प्रभु उस (प्राणि) सृष्टि को पैदा करने का कारण क्या है? जबकि उनमें से कुछ ऐसे लोग भी होंगे जो आतंक फैलायेंगे, रक्तपात करेंगे। यदि इसका कारण *इबादत* करना है तो इस कार्य के लिए हम लोग तो हैं, हमसे वे भय भी नहीं हैं, जो नयी सृष्टि से सम्भावित है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं उन कारणों को जानता हूँ, जिनके कारण इन वर्णित बुराईयों के होते हुए भी मैं उसे पैदा कर रहा हूँ, जो तुम नहीं जानते। क्योंकि उनमें *अंबिया,* शहीद और सत्कर्मी और पवित्र लोग एवं *औलिया* भी होंगे। (इब्ने कसीर)

आदम के परिवार के विषय में *फ़रिश्तो* को कैसे ज्ञान हुआ कि वे आतंक फैलायेंगे। इसको उन्होंने मनुष्य से पहले की सृष्टि के कर्मों के आधार पर समझ लिया होगा अथवा किसी अन्य प्रकार से जान लिया होगा। कुछ ने कहा है कि अल्लाह ने स्वयं बता दिया था कि वह ऐसे-ऐसे कर्म करेंगे। इस प्रकार वह कथन में कमी मानते हैं कि

إنّي جَاعِلٌ فِي الأَرضِ خَلِيفَةً يَفْعَلُ كَذَا وَكَذَا. (फ़तहुल-क़दीर)

जितना तूने हमें सिखाया है, पूर्ण ज्ञान एवं तत्वदर्शी तू ही है।

(३३) अल्लाह तआला ने आदम (अलैहिस्सलाम) से फ़रमाया, "तुम इनके नाम बता दो।"[1] जब उन्होंने बता दिये, तो फ़रमाया क्या मैंने तुम्हें पूर्व नहीं कहा था कि मैं आकाशों एवं धरती का परोक्षज्ञ हूँ तथा जो तुम करते एवं छुपाते हो जानता हूँ।

قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ أَنۢبِئْهُم بِأَسْمَآئِهِمْ ۖ فَلَمَّآ أَنۢبَأَهُم بِأَسْمَآئِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّىٓ أَعْلَمُ غَيْبَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾

(३४) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजद: करो,[2] तो इबलीस के

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰ وَٱسْتَكْبَرَ

---

[1] أسماء (नाम) से तात्पर्य مسمّيات (व्यक्ति और वस्तुओं के नाम एवं उनकी विशेषताएं और लाभ का ज्ञान है) है, जो अल्लाह तआला ने माननीय आदम के मन में अथवा बुद्धि में अपनी अन्तर्यामी शक्ति से डाल दिया था। फिर जब उनसे कहा गया कि आदम इनके नाम (एवं लाभ) बतलाओ, तो उन्होंने तुरन्त सब कुछ बता दिया, जो *फ़रिश्ते* नहीं बता सके। इस प्रकार अल्लाह तआला ने आदम को पैदा करने का कारण स्पष्ट कर दिया। दूसरा, दुनिया को चलाने के लिए ज्ञान की आवश्यकता एवं विशेषता का वर्णन कर दिया। जब यह कारण और ज्ञान की आवश्यकता *फ़रिश्तो* को स्पष्ट हुई, तो उन्होंने अपनी अज्ञानता को स्वीकार कर लिया। *फ़रिश्तो* के यह स्वीकार कर लेने से यह भी स्पष्ट हुआ कि अन्तर्यामी केवल अल्लाह ही है। अल्लाह के पुण्यात्मा भक्तों को भी उतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह तआला उनको प्रदान करता है।

[2] ज्ञान की सर्वपरिता के उपरान्त माननीय आदम का दूसरा सम्मान हुआ। *सजदा:* का अर्थ है विनय एवं नम्रता के और उसकी अंतिम सीमा है "धरती पर माथा टेकना"। अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी के समक्ष *सजदा:* करने का आदेश इस्लामी क़ानून नहीं देता है। नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का मशहूर फ़रमान है कि

«لَو كُنتُ آمِرًا أحَدًا أنْ يَسْجُدَ لأحدٍ لأمَرْتُ المَرأةَ أنْ تَسْجُدَ لِزَوجِها»

यदि किसी अन्य कि लिए सजदा: किया जा सकता तो मैं पत्नी को आदेश देता कि वह अपने पति के समक्ष *सजदा:* करे।

लेकिन अल्लाह के आदेश पर *फ़रिश्तो* ने माननीय आदम के समक्ष *सजदा:* किया। यह *सजदा:* सम्मान के लिए था न कि *इबादत* के रुप में। अब किसी को सम्मान स्वरुप भी *सजदा:* नहीं कर सकते।

وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

अतिरिक्त सभी ने सजद: किया। उसने नकारा और घमंड किया[1] और वह था ही काफिरों में।[2]

وَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

(३५) और हमने कह दिया, हे आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो,[3] और जहाँ से चाहो जी भर कर खाओ-पियो, परन्तु इस वृक्ष[4] के निकट न जाना, अन्यथा अत्याचारी हो जाओगे।

فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا

(३६) परन्तु शैतान ने उन्हें भटका कर वहाँ से निष्कासित करा ही दिया,[5] और हमने कह

---

[1]*इब्लीस* ने *सजदा:* से इन्कार किया और अपमानित हुआ। *कुरआन* के अनुसार *इब्लीस* जिन्नातों में से था, परन्तु अल्लाह तआला ने उसे सम्मानस्वरुप *फरिश्तों* में सम्मिलित कर लिया था, इसलिए अल्लाह के आदेशानुसार उसको भी *सजदा:* करना आवश्यक था, परन्तु उसने *हसद* एव घमड के कारण *सजदा:* करने से इंकार कर दिया। अर्थात *हसद* एव घमड वह पाप है जिनको मानवता की दुनियाँ में सबसे पहले किया गया और इसका करने वाला *इब्लीस* था।

[2]अर्थात अल्लाह तआला के पूर्व ज्ञान में था।

[3]यह माननीय आदम का तीसरा सम्मान था, कि स्वर्ग को उनके निवास स्थान के रुप में प्रदान किया गया।

[4]यह वृक्ष किस चीज का था ? इसके विषय में क़ुरआन और हदीस में स्पष्ट रुप से कुछ नहीं मिलता। इसको गेहूँ का पौधा मशहूर कर दिया गया है, जो अवास्तविक है। हमें उसके नाम को मालूम करने की अवश्यकता नही है और न उसका कोई लाभ है।

[5]शैतान, स्वर्ग में प्रवेश करके उन्हें बहकाने एवं भटकाने लगा अथवा भ्रम पैदा करने लगा। इस विषय में कोई विस्तृत जानकारी नहीं है। फिर भी यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार से *सजदा:* के आदेश के समय उसने अल्लाह के आदेश के समक्ष तर्क से काम लेकर (कि मैं आदम से उच्च हूँ) *सजदा:* से इंकार किया, उसी प्रकार इस समय भी अल्लाह तआला के आदेश ولا تقربا के विपरीत तर्क प्रस्तुत करके माननीय आदम *अलैहिस्सलाम* को फुसलाने में सफल हो गया। जिसका सविस्तार वर्णन *सूर: आराफ़* में

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾

दिया कि "उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो।[1] और एक निश्चित समय तक तुम्हें धरती पर ठहरना एवं लाभ उठाना है।"

فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾

(३७) आदम (*अलैहिस्सलाम*) ने अपने पालनहार से कुछ बातें सीख ली[2] (और अल्लाह से क्षमायाचना की) उसने उनकी याचना स्वीकार कर ली, नि:सन्देह वही क्षमा करने वाला दयावान है।

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾

(३८) हमने कहा तुम सभी यहाँ से उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से सत्यपथ आये तो जो मेरे संमार्ग का अनुसरण करेगा उन पर कोई भय नहीं होगा न वे उदासीन होंगे।

आयेगा। इस प्रकार अल्लाह के आदेश के समक्ष तक-वितर्क प्रस्तुत करने वाला भी सबसे प्रथम शैतान ही है। فنعوذ بالله منه

[1]इसका तात्पर्य आदम और शैतान अथवा आदम के पुत्र आपस में एक-दूसरे के शत्रु हैं।

[2]माननीय आदम *अलैहिस्सलाम* ग्लानि एवं दुखों से प्रेरित होकर, धरती पर आए, तो क्षमा-याचना में लीन हो गये। उस समय भी अल्लाह तआला ने मार्गदर्शन एवं दयालुता की, और क्षमा के वे शब्द सिखा दिये जो सूर: *आराफ़* में वर्णित हैं ﴿رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا﴾ कुछ लोग यहाँ एक बनावटी हदीस का सहारा लेते हुए कहते हैं कि माननीय आदम *अलैहिस्सलाम* ने *अर्श-ए-इलाही* पर (لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللهِ) लिखा हुआ देखा और मोहम्मद *रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के माध्यम से दुआ माँगी, तो अल्लाह तआला ने उन्हें क्षमा कर दिया। यह हदीस अप्रमाणित है और क़ुरआन के भी विपरीत है। इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला के बताए हुए तरीके के भी विपरीत है। सभी *नबियो* ने सदैव सीधे अल्लाह से दुआएं की हैं, किसी *नबी*, *वली*, पुण्यात्मा, महात्मा के माध्यम को नहीं पकड़ा, इसलिए *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के साथ-साथ सभी नबियों की दुआ माँगने की विधि यही रही है कि बिना किसी माध्यम के अल्लाह के दरबार में दुआ की जाए।

(३९) और जो कुफ़्र एवं झूठ के द्वारा हमारी आयतों को झुठलायें, वे नरक में रहनेवाले हैं, और सदैव उसी में रहेंगे ।[1]

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾

(४०) हे इस्राईल के पुत्रों ![2] मेरी उस कृपा को याद करो जो मैंने तुम पर की, तथा

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي

---

[1]प्रार्थना स्वीकार करने के उपरान्त अल्लाह तआला ने उन्हें पुन: स्वर्ग में प्रवेश कराने के वजाए धरती पर ही रहकर स्वर्ग प्राप्त करने का उपदेश दिया और माननीय आदम *अलैहिस्सलाम* को इंगित करके समस्त आदम की संतान को स्वर्ग में प्रवेश प्राप्त करने का मार्ग बताया जा रहा है कि *नबियों* के द्वारा मेरे निर्देश (जीवन व्यतीत करने का आदेश एवं नियम) तुम तक पहुंचेंगे, जो उसको स्वीकार करेगा वह स्वर्ग का अधिकारी होगा, अन्यथा वह अल्लाह की यातना का अधिकारी होगा । **"उन पर भय नहीं होगा"** का सम्वन्ध परलोक से है । أى فيما يستقبلونه من أمور الدنيا तथा **"दुख नहीं होगा"** का सम्बन्ध धरती से है । على ما فاتهم من أمور الدنيا (जो मर गया, धरती के कर्म अपने पीछे धरती पर छोड़ आए) जिस प्रकार दूसरे स्थान पर है ।

﴿فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ﴾

"जिसने मेरे आदेशों का पालन किया, फिर वह न (धरती पर) भटकेगा और न *आख़िरत* मे" (ता॰हा॰-१२४) (इब्ने कसीर)

इस प्रकार ﴿لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ का स्थान प्रत्येक *मोमिन* को प्राप्त है । यह कोई इस प्रकार का स्थान नहीं जो मात्र कुछ *औलिया* ही को प्राप्त हो। और इस स्थान का भावार्थ कुछ का कुछ वर्णित किया जाता है । हालांकि समस्त *मोमिन* और अल्लाह से डरने वाले भी *औलिया* हैं । "*औलिया*" कोई पृथक सृष्टि नहीं है ।

[2] إسرائيل (इस्राईल का अर्थ *अब्दुल्लाह* से लिया जाता है) जो आदरणीय याक़ूब *अलैहिस्सलाम* की उपाधि था । यहूदियों को इस्राईल के पुत्र कहा जाता है अर्थात याक़ूब *अलैहिस्सलाम* के पुत्र । क्योंकि याक़ूब *अलैहिस्सलाम* के बारह पुत्र थे । जिनसे यहूदियों के वारह क़बीले बने और उनमें बहुत से नबी और रसूल हुए । यहूदियों को अरब में उनके प्राचीन इतिहास, ज्ञान एवं धर्म से सम्बन्ध होने के कारण एक विशेष स्थान प्राप्त था । इसलिए उनके पिछले सम्मान एवं आदर जो अल्लाह ने प्रदान किये थे, याद कराकर कहा जा रहा है कि तुम मेरी प्रतिज्ञा पूरी करो जो तुमसे अन्तिम नबी की *नबूवत* के लिए और

اُوۡفِ بِعَهۡدِكُمۡ‌ۚ وَاِيَّاىَ فَارۡهَبُوۡنِ ۝٤٠

मुझसे किया वचन पूरा करो, मैं तुम से किया वचन पूरा करुँगा, तथा मात्र मुझसे ही डरो।

وَاٰمِنُوۡا بِمَآ اَنۡزَلۡتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمۡ وَلَا تَكُوۡنُوۡٓا اَوَّلَ كَافِرٍ ۢ بِهٖ‌ۖ وَلَا تَشۡتَرُوۡا بِاٰيٰتِىۡ ثَمَنًا قَلِيۡلًا وَّاِيَّاىَ فَاتَّقُوۡنِ ۝٤١

(४१) तथा उस (शास्त्र) के प्रति विश्वास करो जिसे मैंने उस को प्रमाणित करने के लिए उतारा जो (तौरात) तुम्हारे साथ है और तुम इसके[1] प्रथम निर्वती न बनो, और मेरी आयतों को थोड़े मूल्य पर न बेचो,[2] और मात्र मुझ से डरो।

उन पर ईमान लाने के लिए ली गई थी। यदि तुम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करोगे तो मैं भी अपनी प्रतिज्ञा पूरी करुँगा, कि तुम पर से वह भार उतार दिये जायंगे जो तुम्हारी अपनी त्रुटियों और आलस्य के कारण दण्ड के रुप में तुम पर लादे गए थे। और तुम्हें पुनः सम्मान प्रदान किया जाएगा। मुझसे डरो अन्यथा यह अपमानित भार सदैव के लिए तुम पर लाद दिये जाएंगे, जिनसे तुम्हारे पूर्वज भी पीड़ित रहे।

[1] بـ का तात्पर्य *क़ुरआन* अथवा अन्तिम *ईशदूत मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से है। दोनों ही कथन सत्य है क्योंकि दोनों का सम्बन्ध जल और थल की भांति है, जिसने *क़ुरआन* नहीं माना उसने *मोहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को नकार दिया। (इब्ने कसीर) "**पहले काफ़िर न बनो**"।

इसका अर्थ यह है कि प्रथम तो तुम्हें जो ज्ञान है दूसरे उससे अनजान हैं, इसलिए तुम्हारा उत्तरदायित्व सबसे अधिक है। द्वितीय मदीने में यहूदियों को सबसे पहले ईमान का निमन्त्रण दिया गया था, वरन् *हिजरत* से पहले बहुत से लोग इस्लाम धर्म स्वीकर कर चुके थे। इसलिए उन्हें सावधान किया जा रहा है कि यहूदियों में तुम पहले काफ़िर न वनो। यदि तुम ऐसा करोगे तो समस्त यहूदियों के *कुफ़्र* एवं न मानने का पाप तुम पर पड़ेगा।

[2] "**थोड़े मूल्य पर मत बेचो**"। इसका तात्पर्य यह कदापि नही कि अधिक क़ीमत मिल जाये तो अल्लाह के आदेश का सौदा कर लो, बल्कि इसका तात्पर्य यह है कि अल्लाह के आदेश की तुलना में सांसारिक लाभ को महत्व न दो। अल्लाह के आदेश तो इतने वहुमूल्य हैं कि समस्त सांसारिक वैभव और वस्तुएं उनकी तुलना में तुच्छ हैं। आयत में यद्यपि *इस्राईल* के पुत्रों की ओर इंगित किया गया है परन्तु यह आदेश प्रलय तक समस्त मानवगण के लिए है। जो कोई भी सत्य को छोड असत्य का पक्ष करे अथवा अज्ञानता

(४२) और सत्य का असत्य के साथ मिश्रण मत करो । और न सत्य को छुपाओ, तुम्हें तो स्वयं इसका ज्ञान है।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

(४३) और नमाज़ स्थापित करो, एवं ज़कात दो, और रुकुउ करने (झुकने) वालों के साथ रुकुउ करो (झुक जाओ)।

وَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ وَآتُوا الزَّكَوٰةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿٤٣﴾

(४४) क्या लोगों को सत्कर्म का उपदेश देते हो ? और स्वयं अपने आपको भूल जाते हो, यद्यपि तुम किताब पढ़ते हो। क्या इतनी भी तुममें बुद्धि नहीं ?

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾

(४५) और धैर्य एवं नमाज़ के द्वारा सहायता प्राप्त करो ।[1] और यह बड़ी चीज़ है, परन्तु अल्लाह से डरने वालों के लिए नहीं है।[2]

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَوٰةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ﴿٤٥﴾

को प्रदर्शित कर सत्य से मात्र सांसारिक फल प्राप्ति के लिए मुँह मोड़ेगा। वह इस आदेश में सम्मिलित है। (फ़तहुल क़दीर)

[1]धैर्य और नमाज़ प्रत्येक अल्लाह वालों के दो बड़े हथियार हैं। नमाज़ के द्वारा एक *मोमिन* को अल्लाह से सम्बन्ध सरलता पूर्वक होता है, जिससे उसे अल्लाह तआला की सहमति एवं सहायता प्राप्त होती है। धैर्य के द्वारा उसके चरित्र में दृढ़ता और धर्म में परिपक्वता पैदा होती है। हदीस में आता है

«إِذَا حَزَبَهُ أَمْرٌ فَزِعَ إِلَى الصَّلَوٰةِ».

"*नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को जब भी कोई समस्या उत्पन्न होती तो आप तुरन्त नमाज़ का प्रयोजन करते।" (फ़तहुल क़दीर से उदघृत अहमद व अबू दाऊद में संकलित)

[2]नमाज़ में निरन्तरता सामान्य लोगों को कठिन प्रतीत होती है। परन्तु सन्तुलित एवं स्थिर (*ख़ुशऊ* और *ख़ज़ुऊ*) रहने वालों के लिए यह सरल, बल्कि शान्ति एवं सुख का कारण है । यह कौन लोग हैं? वह जो *क़ियामत* पर पूरा विश्वास रखते हैं। अर्थात *क़ियामत* पर विश्वास सत्कर्म को सरल कर देता है। और *आख़िरत* से निश्चिन्तता व्यक्ति को अकर्मी, बल्कि कुकर्मी बना देती है।

الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَٰجِعُونَ ﴿٤٦﴾

(४६) जो जानते हैं कि अपने प्रभु से मिलना है और उसकी ओर पलट कर जाने वाले हैं।

يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتِىَ ٱلَّتِىٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّى فَضَّلْتُكُمْ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٤٧﴾

(४७) हे (याकूब) इस्राईल की सन्तानों! मेरी उस कृपा को याद करो, जो मैंने तुम पर उपकार किया और मैंने तुम्हें समस्त संसार पर श्रेष्ठता दी।[1]

وَٱتَّقُوا۟ يَوْمًا لَّا تَجْزِى نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَٰعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ

(४८) तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के काम नहीं आएगा, न उसकी कोई सिफारिश स्वीकार की जाएगी, न उससे कोई

---

[1]यहाँ से *इस्राईल* की संतान को पुन: वे कृपा याद दिलायी जा रही है, जो उन पर की गयी और उनको *क़ियामत* के दिन से डराया जा रहा है, जिस दिन किसी के कोई काम नहीं आएगा, न सिफ़ारिश स्वीकार की जाएगी, न बदला देकर छुटकारा मिलेगा, न कोई सहायक होगा। एक उस कृपा का वर्णन किया जा रहा है कि समस्त संसार में श्रेष्ठता *इस्राईल* की संतान को प्राप्त थी, जो उन्होंने अल्लाह के आदेश का उल्लंघन करके खो दी और मुसलमानों को خير أمة की उपाधि से विभूषित किया गया। इसमें इस बात पर चेतावनी है कि अल्लाह की कृपा किसी विशेष जाति के प्रति सम्बन्धित नहीं है, बल्कि यह ईमान और कर्म के आधार पर प्राप्त होती है। यदि ईमान और कर्म अच्छे न हों तो छीन लिया जाता है। जिस प्रकार मुसलमान भी आज-कल अपने कुकर्मों और *शिर्क* एवं *बिदअत* के कारण خير أمة से شرّ أمة बनी हुई हैं।

यहूदियों को यह भ्रम था कि वे अल्लाह के प्रिय हैं, इसलिए *आखिरत* की पूछ से सुरक्षित रहेंगे। अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया कि वहाँ अल्लाह के आदेशों को न मानने वालों को कोई सहायता नहीं दे सकेगा। इसी भ्रम में मुसलमान भी पड़े हैं। और *शिफ़ाअत* के प्रश्न को (जो *अहले सुन्नत* के यहाँ सत्य है) अपने कुकर्मों को छुपाने की आड़ बना रहे हैं। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* अवश्य *शिफ़ाअत* करेंगे, अल्लाह तआला उनकी *शिफ़ाअत* भी स्वीकार करेंगे (सहीह हदीसों से प्रमाणित है) परन्तु यह भी हदीस में आता है कि *बिदअत* के कर्म करने वाले इस को प्राप्त न कर सकेंगे। परन्तु बहुत से पापियों को नरक में दण्ड देने के उपरान्त आपकी *शिफ़ाअत* से नरक से निकाला जाएगा। क्या नरक की यह कुछ दिनों का दण्ड सहनीय है? कि हम *शिफ़ाअत* पर विश्वास करके कुकर्म करते रहें।

بदला अथवा निस्तार स्वीकार किया जाएगा और न उन्हें सहायता दी जाएगी।

وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٨﴾

(४९) और जब हमनें तुम्हें *फ़िरऔन* के आदमियों[1] से छुटकारा दिलाया, जो तुम्हें बुरी यातनाएं देते रहे, तुम्हारे पुत्रों की हत्या करते रहे, और तुम्हारी पुत्रियाँ जीवित छोड़ते रहे, इससे छुटकारा दिलाने में तुम्हारे स्वामी का अत्यधिक उपकार था।

وَإِذْ نَجَّيْنَٰكُم مِّنْ ءَالِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ ٱلْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِى ذَٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾

(५०) और जब हमने तुम्हारे लिए सागर को फाड़ दिया[2] और उससे तुम्हें पार कर दिया और *फ़िरऔन* के साथियों को तुम्हारी आंखों के सामने डुबो दिया।

وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ ٱلْبَحْرَ فَأَنجَيْنَٰكُمْ وَأَغْرَقْنَآ ءَالَ فِرْعَوْنَ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ﴿٥٠﴾

(५१) और हमने (आदरणीय) *मूसा* *(अलैहिस्सलाम)* को चालीस रातों का वचन

وَإِذْ وَٰعَدْنَا مُوسَىٰٓ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ ٱتَّخَذْتُمُ ٱلْعِجْلَ مِنۢ بَعْدِهِۦ

---

[1]*आले फ़िरऔन* से तात्पर्य केवल *फ़िरऔन* और उसके परिवार ही से नहीं, बल्कि *फ़िरऔन* के समस्त साथी हैं। जैसा कि आगे है।

﴿وَأَغْرَقْنَآ ءَالَ فِرْعَوْنَ﴾

"हमने फ़िरऔन के परिवार को डुबो दिया" यह डूबने वाले *फ़िरऔन* के परिवार वाले नहीं थे, उसकी सेना एवं अन्य कर्मचारी थे। अर्थात क़ुरआन में आल, अनुयायी (भक्त) के अर्थों में प्रयोग हुआ है। इसकी विस्तृत जानकारी सूर: *अल-अहज़ाब* में है।

[2]सागर का फाड़ना और उसमें मार्ग बना देना। यह एक चमत्कार था, जिसका विस्तृत वर्णन सूर: "*शोआरा*" में किया गया है। यह समुद्र का ज्वार-भाटा नहीं था, जैसा कि सर सैय्यद अहमद खां और अन्य, चमत्कार का इंकार करने वालों का विचार है।

وَاَنۡتُمۡ ظٰلِمُوۡنَ﴿۵۱﴾

दिया, फिर तुमने बछड़े कोपूज्य बना लिया |[1] और अत्याचारी बन गए |

ثُمَّ عَفَوۡنَا عَنۡكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ﴿۵۲﴾

(५२) परन्तु हमने इसके उपरान्त भी तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ रहो |

وَاِذۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ وَالۡفُرۡقَانَ لَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ﴿۵۳﴾

(५३) और हमने मूसा (*अलैहिस्सलाम*) को धर्मशास्त्र (तौरात) और चमत्कार प्रदान किये |[2]

وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهٖ يٰقَوۡمِ اِنَّكُمۡ ظَلَمۡتُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ بِاتِّخَاذِكُمُ الۡعِجۡلَ فَتُوۡبُوۡٓا اِلٰى بَارِئِكُمۡ فَاقۡتُلُوۡٓا اَنۡفُسَكُمۡؕ ذٰلِكُمۡ خَيۡرٌ لَّكُمۡ

(५४) और जब मूसा (*अलैहिस्सलाम*) ने अपनी जाति वालों से कहा कि "हे मेरी जाति वालों ! तुमने बछड़े को देवता बनाकर स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया है | अब तुम अपने पैदा करने वाले की ओर ध्यान केन्द्रित करो, अपने आपको को (अपराधी को) अपने हाथों हत्या करो | तुम्हारे लिए भलाई

---

[1] यह गौ पूजा की घटना उस समय हुई जब *फ़िरऔन* और उसके साथियों से छुटकारा मिलने के पश्चात *इस्राईल* की सन्तान द्वीप समान स्थान सीना पहुँचे वहाँ अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* को तौरात देने के लिए चालीस रातों के लिए तूर पर्वत पर बुलाया | आदरणीय *मूसा* के जाने के बाद *इस्राईल* की सन्तान ने सामरी के पीछे होकर बछड़े की पूजा प्रारम्भ कर दी | मनुष्य कितना भौतिकीय है कि अल्लाह तआला की शक्ति का महान चिन्ह देखने के पश्चात और नबियों (आदरणीय *हारुन* और *मूसा*) की उपस्थिति के बाद भी बछड़े को अपना देवता समझ लिया | आज का मुसलमान भी *शिर्क* से लिप्त विश्वास और कर्मों में लीन होते हुए भी वह समझता है कि मुसलमान किस प्रकार *मुशरिक* होसकता है ? इन मुसलमानों ने *शिर्क* को पत्थर की मूर्तियों के पुजारियों के लिए ही विशेष कर दिया है कि केवल वही *मुशरिक* हैं, जबकि यह नाम के मुसलमान भी क़ब्रों और गुम्बदों के साथ वही कुछ कर रहे हैं, जो पत्थर के पुजारी अपनी मूर्तियों के साथ करते हैं |

[2] यह भी भूमध्य सागर पार करने के उपरान्त कि घटना है | (इब्ने कसीर) संभव है कि किताब अर्थात *तौरात* को ही कसौटी से सम्बोधित किया गया हो क्योंकि हर आसमानी (दैवी) पुस्तक सत्य और असत्य को विवेक करती होती है अथवा चमत्कार को कसौटी कहा गया है क्योंकि दैव चमत्कार भी सत्य व असत्य की पहचान में विशेष योगदान देते हैं|

عِندَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾

अल्लाह तआला के निकट इसी में है |" तो उसने तुम्हारी *तौबा* (क्षमा-याचना) स्वीकार की | नि:सन्देह वही *तौबा* स्वीकार करने वाला और दयालु है |[1]

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ الصَّاعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ﴿٥٥﴾

(५५) और (तुम उसे भी याद करो) तुमने मूसा (*अलैहिस्सलाम*) से कहा था कि – जब तक हम अपने प्रभु को सामने न देख लेंगे कदापि ईमान न लाएंगे (जिस अवज्ञा के दण्ड स्वरुप) तुम पर तुम्हारे देखते हुए तड़ित गिर पड़ी |[2]

ثُمَّ بَعَثْنَاكُم مِّن بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٦﴾

(५६) परन्तु फिर हमने तुम्हें मृत्यु के बाद जीवन इसलिए दिया ताकि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो |

---

[1]जब आदरणीय *मूसा* ने *शिर्क* से सावधान किया तो फिर उन्हें क्षमा का आभास हुआ | क्षमा की विधि हत्या बताया गया |

﴿ فَاقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ ﴾ (अपने को आपस में क़त्ल करो) की दो व्याख्या हैं | एक यह कि सभी को दो भागों में विभाजित किया गया और उन्होंने एक-दूसरे को क़त्ल किया | दूसरी यह कि *शिर्क* करने वालो को खड़ा कर दिया गया और जो उससे सुरक्षित रहे उन्हें क़त्ल करने का आदेश दिया गया | अत: उन्होंने क़त्ल किया | वधितो की संख्या सत्तर हज़ार बतायी गयी है | (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

[2]आदरणीय *मूसा अलैहिस्सलाम* सत्तर आदमियों को तूर पर्वत पर *तौरात* लेने के लिए साथ लेकर गये, जब आदरणीय *मूसा अलैहिस्सलाम* वापस आने लगे तो उन्होंने कहा कि जब तक हम अपनी आँखों से अल्लाह तआला को न देख लेंगे तब तक तेरी बातों का विश्वास करने को तैयार नहीं हैं | जिसके कारण उन पर तड़ित गिरी और वे सभी मर गए | आदरणीय *मूसा अलैहिस्सलाम* बहुत परेशान हो गए और उनके पुर्नजीविन के लिए अल्लाह से प्रार्थना की | इस कारण अल्लाह ने उन्हें पुर्नजीवित किया | देखते हुए तड़ित गिरने का अर्थ यह है कि प्रथम जिस पर तड़ित गिरी दूसरे व्यक्ति उसको देख रहे थे, यहाँ तक कि सभी मर गए |

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥٧﴾

(५७) और हमने तुम्हारे ऊपर बादलों की छाया की और तुम पर *मन्न* व *सलवा* उतारा[1] (और कह दिया) हमारी प्रदान की हुई पवित्र वस्तुएँ खाओ। और उन्होंने हम पर अत्याचार नहीं किया अपितु स्वयं अपने आप पर अत्याचार करते थे।

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ

(५८) और हमने तुमसे कहा कि इस बस्ती में जाओ।[2] और जो कुछ जहाँ कहीं से भी चाहो जी भर कर खाओ-पियो और द्वार में से

---

[1]अधिकतर व्याख्याकारों के निकट यह इजिप्ट और सीरिया के मध्य तीह के मैदान की धटना का वर्णन है। जब वे अल्लाह के आदेश की अवज्ञा करके अमालक: की बस्ती में प्रवेश करने से रुक गए, तो दण्ड स्वरुप इस्राईल की संतान चालीस वर्षों तक तीह के मैदान में भटकती रही। कुछ के निकट यह निश्चित करना उचित नहीं है। सागर पार करने के पश्चात सीना नामक मरुस्थल में उतरने पर जब सबसे प्रथम खाने-पीने की समस्या उत्पन्न हुई तो उस समय यह प्रबन्ध किया गया।

(मन्न) कुछ के निकट तुरंजबीन है, या ओस, जो वृक्ष अथवा पत्थर पर गिरती तो मधु के समान मीठी हो जाती और सूख कर गोंद के समान हो जाती। कुछ के निकट मधु के समान मीठा जल है। हदीस है कि

«الْكَمأَةُ نَوعٌ مِنَ الْمَنِّ»

"कुम्भी मन्न की वह प्रकार है जो आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* पर उतारी गई।" (बुख़ारी-मुस्लिम)

इसका अर्थ यह है कि जिस प्रकार से इस्राईल की संतान को वह भोजन बिना किसी कष्ट के उपलब्ध कराया गया था, उसी प्रकार कुम्भी भी बिना बोये पैदा हो जाती है। (व्याख्या अहसनुल तफासीर) *सलवा* बटेर अथवा एक प्रकार का पक्षी था जो चिड़िया की भाँति होता खा लेते थे। (फ़तहुल क़दीर)

[2]उस बस्ती से तात्पर्य अधिकतर व्याख्याकरों के निकट *बैतुल मुक़द्दस* है।

نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطَٰيَٰكُمْ ۚ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾

सिर झुकाए हुए प्रवेश करो ।[1] और मुख से कहो कि "हम क्षमा चाहते हैं ।"[2] हम तुम्हारी ग़लतियों को क्षमा कर देंगे और अहसान प्रकट करने वालों को और अधिक प्रदान करेंगे ।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٩﴾

(५९) फिर उन अत्याचारियों ने यह बात जो उनसे कही गई, बदल डाली ।[3] हमने भी उन अत्याचारियों पर उनकी अवज्ञा के कारण आकाश से प्रकोप उतारा ।[4]

---

[1] *सजद:* से तात्पर्य कुछ लोगों ने झुकते हुए प्रवेश होने से लिया है और कुछ ने कृतज्ञता का *सजद:* ही माना है । तात्पर्य यह है कि अल्लाह के समक्ष कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, तुच्छता प्रकट करते हुए और कृतज्ञता को स्वीकार करते हुए प्रवेश करो ।

[2] حطة का अर्थ है "हमारे पापों को क्षमा कर दे ।"

[3] इसको स्पष्ट रुप से एक हदीस से समझाया गया है, जो सहीह बुख़ारी एवं मुस्लिम आदि में है । *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

«قِيلَ لِبَنِي إِسرائيل ادخُلوا البابَ سُجَّدا وقولوا حِطَّةٌ - فَدخَلوا يَزْحَفُونَ عَلَىٰ أَسْتَاهِهِم فَبَدَّلُوا وَقَالُوا حَبَّةٌ فِي شَعرة»

"उनको आदेश हुआ कि सजद: करते हुए प्रवेश करो, परन्तु वे कमरों को धरती पर घिसटते हुए प्रवेश हुए और حطة के स्थान पर حبة في شعرة (अर्थात गेहूँ बाली में) कहते रहे ।

इस कारण उनकी इस अवज्ञाकारिता का जो उनके अन्दर उत्पन्न हो गयी थी और अल्लाह के आदेशों को बदल कर मज़ाक करनें का जिस प्रकार से उन्होने कुकर्म किया, अनुमान लगाया जा सकता है । सत्यता यह है कि जब कोई समुदाय चरित्र और कर्म से पतन की ओर जाने लगे तो उसका व्यवहार फिर अल्लाह के आदेशों के प्रति इसी प्रकार होता है ।

[4] ये आकाश से प्रकोप क्या था? कुछ के निकट अल्लाह का क्रोध, अधिक धुन्ध, प्लेग था । इस अन्तिम अर्थ का पक्ष हदीस से प्राप्त होता है । *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फरमाया :

(६०) और जब मूसा (*अलैहिस्सलाम*) ने अपनी जाति के लिए पानी माँगा तो हमने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो, जिससे बारह जल स्रोत फूट पड़े।[1] प्रत्येक गिरोह ने अपना स्रोत पहचान लिया (और हमने कह दिया कि) अल्लाह तआ़ला का प्रदान किया हुआ अन्न खाओ-पियो और धरती पर आतक फैलाते न फिरो।

وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِن رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٦٠﴾

(६१) और जब तुमने कहा कि "हे मूसा (अलैहिस्सलाम) !" हमसे एक ही प्रकार का भोजन करने पर संतोष नहीं हो सकेगा। इसलिए अपने प्रभु से प्रार्थना कीजिए कि वह हमें धरती पर पैदा साग, ककड़ी, गेहूँ, मसूर, और प्याज़ दे। आपने कहा कि उत्तम चीज़

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ مِن بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا

«الطاعوَنُ رجزٌ أو عذابٌ أُرْسِلَ عَلَى بَنِي إسرائيل أَو عَلىٰ مَنْ كَانَ قَبلكمْ. فإذا سمعتم به بأرضٍ فَلَا تقدَمُوا عَلَيه وإذَا وَقَعَ بأرضٍ وَأنتم بها فَلَا تخرجُوا فرارًا منه»

"यह प्लेग उसी प्रकोप और यातना का भाग है जो तुमसे पहले के लोगों पर उतारी गयी। यदि तुम्हारी उपस्थिति में किसी स्थान पर प्लेग फैल जाए, तो तुम उस स्थान से न भागो और यदि तुम्हें किसी स्थान के विषय में मालूम हो जाए कि वहाँ प्लेग फैला है तो वहाँ मत जाओ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, अध्याय अत्ताऊन व अत्तीरः व अल-किहाना- हदीस संख्या २२१८)

[1]यह धटना कुछ के निकट तीह की और कुछ के निकट सीना नामक मरुभूमि की है। वहाँ पानी की आवश्यकता हुई तो अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* से कहा अपनी लाठी पत्थर पर मार। फलस्वरुप पत्थर से बारह जल स्रोत फूट गये। गिरोह भी बारह थे। प्रत्येक गिरोह अपने-अपने जल स्रोत से लाभान्वित हुआ। यह भी एक चमत्कार था, जोअल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* के द्वारा दिखाया।

مِصْرًا فَإِنَّ لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُو بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾

के बदले तुच्छ चीज़ क्यों माँगते हो ? अच्छा शहर में जाओ और वहाँ पर तुम्हें तुम्हारी पसद की यह सभी चीजें मिलेंगी।[1] उन पर अपमान एवं दरिद्रता डाल दी गई तथा वे अल्लाह का प्रकोप लेकर लौटे।[2] यह इसलिए कि वे अल्लाह की *आयतो* को नहीं मानते थे। और नबियो की अकारण हत्या करते थे।[3] यह उनकी सीमा उलंघन का परिणाम है।[4]

---

[1]यह धटना भी उसी तीह के मैदान की है। *मिस्र* से तात्पर्य इजिप्ट, देश नहीं अपितु कोई शहर है। तात्पर्य यह है कि यहाँ से किसी भी शहर में चले जाओ और वहाँ कृषि करो। अपनी पसन्द की तरकारियाँ एवं दालें उगाओ और खाओ। उनकी यह माँग चूँकि उपकार का अनादर था इसलिए वक्रोक्ति के रुप में कहा गया कि "तुम्हारे लिए वहाँ तुम्हार मन पसन्द चीज़ें हैं।"

[2]कहाँ वे उपकार और कृपा, जिसका विस्तार पूर्वक वर्णन हो चुका है और कहाँ वह अपमान और दरिद्रता जो बाद में उन पर थोप दी गयी और वह अल्लाह के प्रकोप के कारण बने। प्रकोप भी कृपा की भाँति अल्लाह की विशेषता है, जिसकी व्याख्या यातना के विचार एवं स्वयं यातना से नहीं करनी चाहिए। अल्लाह तआला उन पर क्रोधित हुआ। كما هو شانه

[3]यह अपमान व अल्लाह के प्रकोप के कारण का वर्णन है। अर्थात अल्लाह तआला की आयतों का इंकार और अल्लाह की ओर आमन्त्रित करने वाले *नबियों* एवं आमन्त्रण देने वालों की हत्या और उनको अपमानित करना अल्लाह के प्रकोप के कारण है। प्राचीन काल में यहूदी यह कुकर्म करके अपमानित एवं दण्डित हुए, तो आज इस कुकर्म के करने वाले किस प्रकार सम्मानित हो सकते हैं। أين ما كانوا و حيث ما كانوا "वह कोई भी हों और कहीं भी हों।"

[4]यह अपमान एवं दरिद्रता का दूसरा कारण है। عصوا "अवज्ञा की" का अर्थ है कि जिन कर्मों से उन्हें रोका गया था, उनको किया और يعتدون का अर्थ है कि सीमित कर्मों में सीमा उल्लंधन करते थे। अनुकरण एवं अनुपालन यह है कि منهيات से दूर रहें और مأمورات को इस प्रकार से करें जिस प्रकार से करने का आदेश हो। अपनी ओर से कमी अथवा अधिकता यह अवज्ञा اعتداء है, जो अल्लाह को अप्रिय है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

(६२) अवश्य जो मुसलमान हो, यहूदी हो,[1] नसारा[2] (इसाई) हो अथवा साबी हो,[3] जो कोई भी अल्लाह तआला एवं *क़यामत* के दिन पर ईमान लाएगा और सत्कर्म करेगा उसका प्रतिदान उसके प्रभु के पास है, और उनको न कोई भय है और न कोई क्षोभ होगा।[4]

---

[1]यहूदी هوادة "अर्थात प्रेम" से अथवा هَوْد "अर्थात पश्चाताप" से बना है। अर्थात इनका यह नाम वास्तव में प्रायश्चित करने अथवा परस्पर प्रेम करने के कारण पड़ा। परन्तु मूसा *अलैहिस्सलाम* के अनुयायियों को यहूदी कहा जाने लगा।

[2] نصارى _ نصران का बहुवचन है, जिस प्रकार से سكارى - سكران का बहुवचन है इसका उद्‌गम نصرت से है। आपस में एक-दूसरे की सहायता करने के कारण उनका यह नाम पड़ा। उनके अनुसार भी कहा जाता है। जैसा कि उन्होंने ईसा *अलैहिस्सलाम* से कहा था-﴿نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ﴾ ईसा *अलैहिस्सलाम* के अनुयायियों को 'नसारा' कहा जाता है। जिनको इसाई भी कहते हैं।

[3] صابئي _ صابئين का बहुवचन है। यह वे लोग हैं जो अवश्य ही प्रारम्भिक काल में किसी सत्य धर्म के अनुयायी रहे होंगे (इसलिए क़ुरआन में यहूदी, इसाई धर्म के साथ वर्णन किया गया है) परन्तु बाद में उनके अन्दर फरिश्तों की पूजा का प्रचलन हो गया अथवा यह किसी भी धर्म के अनुयायी न रहे। इसी कारण अधर्मियों को साबी कहा जाने लगा।

[4]कुछ आधुनिक व्याख्याकरों ने इस आयत का भावार्थ गलत समझा है और उससे उन्होंन "एकधर्मवाद" के विचार को संकुचित करने का अर्थ निकाला है। अर्थात *रिसालत-ए-मोहम्मदिया* पर ईमान लाना आवश्यक नहीं मानते, अत: जो भी जिस धर्म पर विश्वास करता है और सत्कर्म करता है उसको मोक्ष प्राप्त हो जाएग। यह तर्क अति भ्रमित है। आयत की उचित व्याख्या यह है कि जब अल्लाह तआला ने इस *आयत* की पूर्व की आयतों में यहूदियों के कुकर्मो और सीमा उल्लघंन और उसके आधार पर प्रकोप का अधिकारी होने का वर्णन किया, तो यह भ्रम उत्पन्न हो सकता था कि यहूदियों में जो लोग सही, अल्लाह की किताब के अनुयायी थे और अपने *पैग़म्बर* के निर्देश के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले थे, उनके साथ अल्लाह तआला ने क्या किया ? अथवा क्या निर्णय लेगा ? अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल यहूदी ही नहीं, इसाई और साबी भी अपने-अपने समय में जिन्होंने भी अल्लाह पर, *आख़िरत* के दिन पर ईमान रखा और सत्कर्म करते रहे, उन सभी को मोक्ष प्राप्त होगी और अब इसी प्रकार मोहम्मद (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) की *रिसालत* पर ईमान लाने वाले मुसलमान भी

यदि उचित रुप से अल्लाह पर और *आख़िरत* के दिन पर ईमान लायें और सत्कर्म करें तो यह भी अवश्य परलोक के असीम सुखों के अधिकारी होंगे। मोक्ष के विषय में किसी के साथ पक्षपात नहीं किया जाएगा। वहाँ उचित निर्णय होगा। चाहे मुसलमान हों अथवा अन्तिम *रसूल* से पहले के यहूदी, इसाई और साबी आदि हों। इसका समर्थन कुछ मुरसल हदीसों से भी होताहै। उदाहरणत: मुजाहिद आदरणीय सलमान फारसी (رضی الله عنه) से उदघृत करते हैं, जिस में वह कहते हैं कि "मैंने *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से उन धार्मिक व्यक्तियों के विषय में पूछा, जो मेरे साथी थे, *इबादत* करने वाले और नमाजी थे (अर्थात *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की *रिसालत* के पूर्व अपने धर्म पर दृढ़ थे)" तो उस अवसर पर यह *आयत* उतरी ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَٱلَّذِينَ هَادُوا۟﴾ (इब्ने कसीर)। क़ुरआन करीम के दूसरे स्थानों से भी और समर्थन प्राप्त होता है। उदाहरणत:

﴿إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلْإِسْلَٰمُ﴾

"अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम ही है"

(आले इमरान)

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ﴾

"जो इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म का अनुयायी होगा, यह कदापि स्वीकृत नहीं होगा।" (आले इमरान-८५)

और हदीसों में भी *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने स्पष्ट कर दिया कि अब मेरी *रिसालत* पर ईमान लाये बिना किसी भी व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए फरमाया :

«وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهِ! لَا يَسْمَعُ بِيْ رَجُلٌ مِّنْ هٰذِهِ الْأُمَّةِ يَهُوْدِيٌّ وَّلَا نَصْرَانِيٌّ ثُمَّ لَا يُؤْمِنُ بِيْ إِلَّا دَخَلَ النَّارَ».

"सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथ में मेरा प्राण है, मेरी इस उम्मत (अनुयायी) में जो व्यक्ति मेरे विषय में सुन ले, वह यहूदी हो अथवा इसाई, फिर वह मुझ पर ईमान न लाये तो वह नरक में जायेगा"। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, अध्याय वजूबुलईमान बिरिसाल: नबीय्यीना मोहम्मद (صلی الله علیه وسلم))

इसका अर्थ यह है कि एकधर्मवाद का सिद्धान्त और उसकी पथभ्रष्टता का कारण जहाँ अन्य क़ुरआन की *आयतो* को छोड़ देने का नतीजा है वहीं अहादीस के बिना *क़ुरआन* को समझने का गलत तरीका भी है। इसलिए यह कहना पूर्णतय: सत्य है कि हदीस के बिना क़ुरआन को नहीं समझा जा सकता।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

(६३) और जब हमने तुमसे वचन लिया और तुम्हारे ऊपर तूर पर्वत ला खड़ा कर दिया।[1] और कहा-जो हमने तुम्हें दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़े रहो। और जो कुछ उसमें है उसे याद करो, ताकि तुम बच सको।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ ۖ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنتُم مِّنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾

(६४) परन्तु तुम उसके पश्चात भी फिर गए। फिर यदि अल्लाह तआला की कृपा और दया तुम पर न होती, तो तुम हानि उठाने वाले होते।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾

(६५) और अवश्य ही तुम्हें उन लोगों के विषय में ज्ञान भी है, जो तुममें से शनिवार[2] के विषय में सीमा उल्लंघन कर गए और और हमने (भी) कह दिया कि तुम अपमानित बन्दर बन जाओ।

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾

(६६) इसे हमने अगले-पिछलों के लिए सावधान रहने का कारण बना दिया, और डरने वालों के लिए शिक्षा है।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۖ قَالُوا

(६७) और मूसा (*अलैहिस्सलाम*) ने जब अपनी जाति से कहा कि - अल्लाह तआला

---

[1]जब *तौरात* के आदेशों के लिए यहूदीयों ने दुष्टतापूर्वक कहा कि - हमसे तो इन आदेशों का पालन नहीं हो सकेगा तो अल्लाह तआला ने तूर पर्वत को छत की भाँति उनके ऊपर उठा दिया, जिससे डर कर उन्होंने पालन करने का वचन दिया।

[2] السبت (शनिवार) के दिन यहूदीयों को मछली का शिकार, अपितु कोई भी कार्य करने से रोका गया था, लेकिन उन्होंने एक बहाना निकालकर अल्लाह के आदेश की सीमा उल्लंघन की। शनिवार के दिन (परीक्षा के लिए) मछलियां अधिक आतीं, उन्होंने गडढे खोद लिए ताकि मछलियां उसमें फंसी रहें और फिर रविवार के दिन उनको पकड़ लेते।

أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾

तुम्हें एक गाय[1] *ज़िब्ह* करने का आदेश देता है, तो उन्होंने कहा कि "हमसे क्यों उपहास करते हो ?" आपने उत्तर दिया कि "मैं ऐसी मूर्खता से अल्लाह तआला की शरण लेता हूँ।"

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾

(६८) उन्हों ने कहा-हे मूसा अलैहिस्सलाम ! अल्लाह .से प्रार्थना कीजिए की हमें उसके विषय में बता दे। आपने फ़रमाया, सुनो! वह गाय न तो बूढ़ी हो और न बछिया, बल्कि मध्यम आयु की हो। अब तुम्हें जो आदेश दिया गया है उसका पालन करो।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾

(६९) वे फिर कहने लगे कि अल्लाह से निवेदन कीजिए की वह हमें बता दे कि उसका रंग कैसा हो ? फ़रमाया वह कहता है कि गाय सुनहरे तीखे रंग की हो, और देखने वालों को प्रसन्न कर देती हो।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) वे कहने लगे कि अपने प्रभु से निवेदन कीजिए कि वह हमें खोलकर बता दे कि वह कैसी हो ? इस प्रकार की बहुत-सी गायें हैं पता नहीं चलता, अगर अल्लाह ने चाहा तो हमें मार्ग दर्शन प्राप्त हो जाएगा।

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ

(७१) उसने कहा कि अल्लाह का आदेश है कि वह गाय कृषि योग्य भूमि में हल जोतने

---

[1] *इस्राईल* की सन्तान में बिना किसी सन्तान के एक आदमी था। उसका एक ही उत्तराधिकारी उसका भतीजा था। एक रात उस भतीजे ने अपने चाचा की हत्या करके लाश किसी दूसरे आदमी के द्वार पर डाल दी, असली हत्यारे की खोज में वे एक-दूसरे को कहने लगे। अन्ततः बात मूसा *अलैहिस्सलाम* तक पहुँची, तो उन्हें एक गाय वध करने का आदेश हुआ। गाय के माँस का एक टुकड़ा लाश पर मारा गया, जिससे वह जीवित हो गया और हत्यारे को पहचान कराते ही मर गया। (फतहुल क़दीर)

تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾

वाली तथा खेतों को पानी पिलाने वाली नहीं, वह स्वस्थ तथा बेदाग है। उन्होंने कहा अब आप ने स्पष्ट कर दिया, फिर भी वह आदेशों का पालन करने वाले नहीं थे, परन्तु उसे माना तथा गाय की बलि दी।[1]

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा जब तुमने एक जीव की हत्या कर दी,[2] फिर परस्पर आरोप लगाने लगे, तथा अल्लाह को तुम्हारी छुपाई बात प्रकट करनी थी।

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ

(७३) हमने कहा कि उस गाय का एक टुकड़ा मृतक के शरीर पर मारो (वह जीवित हो जाएगा) उसी प्रकार अल्लाह तआला

---

[1]उनसे कहा गया था कि एक गाय की वध करो। वह कोई भी गाय का वध कर देते तो अल्लाह के आदेश का पालन हो जाता, परन्तु उन्होंने अल्लाह के आदेश का पालन करने के बजाए उसमें सूक्षमता खोजने लगे तथा विभिन्न प्रकार के प्रशन करने लगे, जिस पर अल्लाह तआला भी उन पर कठोरता करता चला गया। इसलिए धर्म में गहराई और कठोरता का मार्ग अपनाना मना है।

[2]यह हत्या की वही घटना है जिसके कारण *इस्राईल* की सन्तान को गाय की बलि चढ़ाने का आदेश दिया गया था तथा इस प्रकार अल्लाह तआला ने उस हत्या के षडयन्त्र को प्रदर्शित कर दिया। हालांकि वह हत्या रात के अंधकार में लोगों से छिपकर की गयी थी। इसका अर्थ यह हुआ कि तुम पुण्य तथा कुकर्म चाहे जितना छिपकर करो, अल्लाह के ज्ञान में है तथा अल्लाह तआला उसे लोगों पर प्रदर्शित करने का सामर्थ्य रखता है। इसीलिए एकान्त हो अथवा प्रदर्शन, हर समय और प्रत्येक स्थान पर अच्छे ही कर्म किया करो, ताकि वह किसी समय लोगों पर प्रकट हो जाये तो अपमान न हो, अर्थात उसके आदर तथा सम्मान में बढ़ोत्तरी हो तथा कुकर्म चाहे कितने ही छुपकर किये जायें, उसके प्रकट होने की सम्भावना है, जिससे मनुष्य का अपमान तथा अनादर होता है।

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾

मृतक को जीवित करके तुम्हारी बुद्धिमानी के लिए निशानियाँ दिखाता है।[1]

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ

(७४) फिर उसके पश्चात तुम्हारे दिल पत्थर जैसे बल्कि उससे भी अधिक कठोर हो गए,[2] कुछ पत्थरों से तो नहरें बह निकलती हैं तथा कुछ फट जाते हैं एवं उनसे पानी

---

[1]मृतक के पुनः जीवित होने के आधार पर अल्लाह तआला *क़ियामत* के दिन सभी मनुष्यो को पुर्नजीवित करने के सामर्थ्य llobl3 कर रहा है। *क़ियामत* वाले दिन मृतकों का पुनः जीवित होना, *क़ियामत* को अस्वीकार करने वालों को सदैव आश्चर्य का कारण रहा है। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने *क़ुराने करीम* में विभन्न स्थानों तथा प्रकार एवं दृष्टिकोण के आधार पर वर्णन किया है। *सूरः* अल-बकरः में ही अल्लाह तआला ने इसके पाँच उदाहरण दिये हैं। एक उदाहरण ﴿ثُمَّ بَعَثْنَاكُم مِّن بَعْدِ مَوْتِكُمْ﴾ (*सूरः* अल-बकर :-५६) मे गुज़र चुकी है। दूसरा उदाहरण यही घटना है। तीसरा उदाहरण भाग-२ की आयत संख्या २४३ ﴿مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ﴾ चौथा उदाहरण आयत संख्या २५९ ﴿فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ﴾ तथा पाँचवा उदाहरण इसके पश्चात वाली *आयत* में आदरणीय *इब्राहीम* की चार पक्षियों का है।

[2]अर्थात पूर्व के चमत्कार तथा वर्तमान की घटना कि मृतक जीवित हो गया, को देखकर भी तुम्हारे दिलों के अन्दर अल्लाह की ओर लौटनें की भावना तथा *तोबा* एवं दोषमुक्ति से क्षमा कि भावना जागृति नहीं हुई। बल्कि इसके विपरीत तुम्हारे दिल पत्थर के समान कठोर, बल्कि उससे भी अधिक कठोर हो गये। दिलों का कठोर हो जाना व्यक्ति तथा समाज के लिए सर्वनाश, तथा इस बात का लक्षण होता है कि दिलों पर प्रभाव डालने का गुण समाप्त हो गया तथा सत्य को स्वीकार करने की शक्ति समाप्त हो गयी है। इसके पश्चात उसके सुधार की संभावना कम हो जाती है तथा पूर्ण सर्वनाश की संभावना अधिक हो जाती है। इसीलिए ईमान वालो को विशेष रुप से चेतावनी दी गयी है।

﴿وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ﴾ [الحديد: ١٦]

ईमानवाले उन लोगों की भाँति न हो जायें जिनको उन से पूर्व किताब प्रदान की गयी, परन्तु समय व्यतीत होने पर उनके हृदय कठोर हो गये।

(सूरः अल-हदीद-१६)

فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾

निकलता है,[1] तथा कुछ अल्लाह तआला के भय से गिर पड़ते हैं, तथा तुम अल्लाह तआला को अपने कर्मों से अनजान न जानो।

أَفَتَطْمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

(७५) (हे मुसलमानों !) क्या तुम चाहते हो कि वह (यहूदी) तुम्हारा विश्वास कर लें - जबकि उनमें ऐसे भी हैं जो अल्लाह का कथन सुनते हैं फिर उसे समझने के बाद उसे फेर-बदल कर देते हैं, और ऐसा वे जानकर करते हैं।[2]

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ

(७६) तथा जब ईमान वालों से मिलते हैं तो अपनी ईमानदारी प्रदर्शित करते हैं,[3] तथा जब

---

[1]पत्थरों की कठोरता के उपरान्त, उनसे जो-जो लाभ प्राप्त होते हैं जो-जो अवस्था उन पर व्यतीत होती है, उसका वर्णन है। इससे ज्ञात होता है कि पत्थर के अन्दर एक प्रकार का गुण तथा भावना उपस्थिति है, जिस प्रकार कि अल्लाह तआला का आदेश है।

﴿ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ﴾

(सूर: बनी इस्राईल, ४४)

[2]ईमानवालों को सम्बोधित करके यहूदियों के विषय में कहा जा रहा है कि क्या तुम्हें उनके ईमान लाने की आशा है। जबकि वास्तव में उनके पूर्वजों में एक गुट ऐसा था जो अल्लाह के कथन में जानबूझकर परिवर्तन (अर्थों में तथा शब्दों में) करता था। यह नकारात्मक प्रश्न है अर्थात ऐसे लोगों के ईमान लाने की तनिक भी संभावना नहीं। इसका अर्थ यह हुआ कि जो लोग सांसारिक लाभ तथा गुटीय द्वेष के कारण अल्लाह के कथन में परिवर्तन कर डालते हैं, वे लोग भटकाव के मार्ग के दलदल में इस प्रकार फँस जाते हैं कि उससे निकल नहीं पाते। मुसलमानों में बहुत से ज्ञानी आलिम भी दुर्भाग्य से क़ुरआन तथा हदीस में परिवर्तन कर डालते हैं। अल्लाह तआला सबको इस अपराध से सुरक्षित रखे।

[3]यह कुछ यहूदियों के पाखण्डी व्यवहार पर से पटल उठाया जा रहा है कि वे मुसलमानों में तो अपने ईमान का प्रदर्शन करते हैं, परन्तु जब आपस में मिलते हैं तो एक-दूसरे पर इस बात का दोषारोपण करते हैं कि तुम मुसलमानों को अपनी किताब की ऐसी बातें क्यों बताते हो जिससे *रसूले अरबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* की

قَالُوٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ
عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ
عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾

आपस में मिलते हैं तो कहते हैं कि मुसलमानों तक क्यों वह बातें पहुँचाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखायी हैं, क्या जानते नहीं कि ये तो अल्लाह के समक्ष तुम पर उनका प्रमाण हो जाएगा।

اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ
مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾

(७७) क्या ये नहीं जानते कि अल्लाह तआला उनकी गुप्त एवं व्यक्त सभी बातें जानता है।[1]

وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ
اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٧٨﴾

(७८) तथा उनमें से कुछ अनपढ़ ऐसे भी हैं जो आशाओं के सिवाय शास्त्र नहीं जानते तथा मात्र आकलन करते हैं।[2]

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ
بِاَيْدِيْهِمْ ۗ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ
فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ

(७९) उन लोगों के लिए सर्वनाश है, जो स्वयं अपने हाथों लिखी पुस्तक को अल्लाह का शास्त्र कहते हैं, तथा इस प्रकार दुनियाँ (धन) कमाते हैं, अपने हाथों लिखने के

सत्यता की पुष्टि होती है। इस प्रकार तुम स्वयं ही उनके हाथ में इस बात का प्रमाण दे रहे हो, जो वे तुम्हारे विरुद्ध अल्लाह के दरबार में प्रस्तुत करेंगे।

[1]अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम बताओ अथवा न बताओ, अल्लाह को तो हर बात का ज्ञान है तथा वह इन बातों को तुम्हारे बताए बिना भी मुसलमानों पर प्रकट कर सकता है।

[2]यह तो उनके पढ़े लिखे लोगों की बातें थीं। रहे उनके अनपढ़ लोग, वे किताब (*तौरात*) से तो अनजान हैं, परन्तु वे आशाएं अवश्य रखते हैं, तथा अनुमान पर उनका गुज़ारा है, जिसमें उन्हें उनके *आलिमो* (पादरियों) ने लिप्त कर दिया है। उदाहरण स्वरुप हम तो अल्लाह के चहीते हैं। हम नरक में गए भी तो कुछ समय के लिए, हमें हमारे पूर्वज दोषमुक्ति प्रदान करवा देंगे आदि-आदि। जैसे आजकल के अनपढ़ मुसलमानों को भी कुछ *आलिमों* तथा *मशायेख* (महात्माओं) ने ऐसे ही आकर्षित जाल में फंसा रखा है।

وَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾

कारण उनका नाश है तथा अपनी इस कमाई के कारण उनका विनाश है ।[1]

وَقَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ۚ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِندَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ ۖ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा ये लोग कहते हैं कि हम तो कुछ ही दिन नरक में रहेंगे, (उनसे) कहो कि क्या तुमने अल्लाह तआला से कोई वचन लिया है[2]? यदि है तो नि:संदेह अल्लाह तआला अपना वचन भंग नहीं करेगा, अथवा तुम अल्लाह के ऊपर वह बातें लगाते हो जिन्हें तुम नहीं जानते ।[3]

---

[1]ये यहूदियों के *आलिमों* का दुस्साहस तथा अल्लाह के भय से वंचित होने का स्पष्टीकरण है कि अपने हाथों से नियम बनाते हैं तथा बलपूर्वक यह सिद्ध करते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है । हदीस के आधार पर ويل नरक में एक घाटी का भी नाम है जिसकी गहराई इतनी है कि एक काफ़िर को उसमें गिरने में चालीस वर्ष लगेंगे । (अहमद,त्रिमज़ी, इब्ने हिब्बान तथा अल-हाकिम सह संदर्भ फ़तहुल क़दीर) । कुछ *आलिमों* ने इस आयत से क़ुरआन मजीद की बिक्री को उचित नहीं बताया है । परन्तु यह अर्थ सहीह नहीं है । *आयत* का उद्देश्य केवल उन्हीं लोगों को बताना है, जो दुनियाँ कमाने के लिए अल्लाह के कलाम में परिवर्तन करते तथा लोगों को धर्म के नाम पर धोखा देते हैं ।

[2]यहूदी कहते थे कि दुनियाँ का अस्तित्व केवल सात हज़ार वर्ष के लिए है तथा हम हज़ार वर्ष के बदले एक दिन नरक में रहेंगे, इस प्रकार मात्र सात दिन नरक में रहेंगे । कुछ कहते थे कि हमने चालीस दिन बछड़े की *इबादत* की थी, चालीस दिन नरक में रहेंगे । अल्लाह तआला फ़रमाता है कि क्या तुमने अल्लाह से सन्धि की है ? यह भी प्रश्न अस्वीकृत ही है । अर्थात यह ग़लत कहते हैं । अल्लाह तआला के साथ इस प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं है ।

[3]अर्थात तुम्हारा यह दावा कि यदि हम नरक में गये भी तो मात्र कुछ दिनों के लिए जाएंगे, तुम्हारे अपनी ओर से है, तथा इस प्रकार तुम अल्लाह के ऊपर ऐसी बातें लगाते हो, जिनका तुम्हें स्वयं ज्ञान नहीं है । आगे अल्लाह तआला अपना वह नियम वर्णन कर रहा है जिसके आधार पर *क़ियामत* के दिन वह पुनीतों वाले तथा बुरों को उनके पुण्य तथा कुकर्मों का दण्ड देगा ।

(८१) नि:संदेह जिसने भी पाप किया तथा उसके पाप ने उसे घेर लिया । वह सदैव नरक में रहेगा ।

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾

(८२) तथा जो लोग ईमान लाए एवं सदाचार किये वे स्वर्गवासी हैं, जो सदैव स्वर्ग में रहेंगे ।[1]

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८३) तथा जब हमने इस्राईल के पुत्रों से वचन लिया कि – तुम अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की इबादत न करना तथा माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना, तथा उसी प्रकार निकट सम्बन्धियों एवं अनाथों एवं निर्धनों के साथ, तथा लोगों को अच्छी बातें बताना, नमाज़ स्थापित करना तथा ज़कात देते रहना, परन्तु थोड़े से लोगों के अतिरिक्त तुम सभी मुकर गये तथा मुँह मोड़ लिये ।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۚ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۗ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٣﴾

(८४) तथा जब हमने तुमसे वचन लिया कि आपस में खून न बहाना (हत्या न करना)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَاۤءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ

---

[1]यह यहूदियों के दावे का खण्डन करते हुए स्वर्ग तथा नरक के नियम का वर्णन हो रहा है । जिसके कर्मों के खाता में बुराईयाँ ही बुराईयाँ होंगी अर्थात *कुफ़्र* तथा *शिर्क* (कि उनके करने के कारण यदि कुछ अच्छे कर्म भी किये होंगे तो उनका भी महत्व न होगा) तो वे सदैव नरक में रहेंगे तथा जो ईमान तथा पुण्य के कार्यों से सुशोभित होगें वह स्वर्ग में निवास करेंगे तथा जो ईमान वाले पाप करेंगे उनका मामला अल्लाह के समक्ष होगा, वह चाहेगा तो अपनी कृपा तथा दया से उनके पापों को क्षमा कर देगा अथवा दण्डस्वरुप कुछ समय के लिए नरक में रखने के पश्चात अथवा *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सिफ़ारिश के कारण उनको स्वर्ग में प्रवेश कर देगा, जैसाकि इन बातों की पुष्टि सहीह हदीसों से होती है तथा अहले *सुन्नत* का विश्वास है ।

مِّنۡ دِيَارِكُمۡ ثُمَّ أَقۡرَرۡتُمۡ وَأَنتُمۡ تَشۡهَدُونَ ﴿٨٤﴾

तथा अपनों को देश से न निकालना, तुमने स्वीकार किया तथा तुम उसके गवाह बने ।[1]

ثُمَّ أَنتُمۡ هَٰٓؤُلَآءِ تَقۡتُلُونَ أَنفُسَكُمۡ وَتُخۡرِجُونَ فَرِيقٗا مِّنكُم مِّن دِيَٰرِهِمۡ تَظَٰهَرُونَ عَلَيۡهِم بِٱلۡإِثۡمِ وَٱلۡعُدۡوَٰنِ وَإِن يَأۡتُوكُمۡ أُسَٰرَىٰ تُفَٰدُوهُمۡ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيۡكُمۡ إِخۡرَاجُهُمۡۚ أَفَتُؤۡمِنُونَ بِبَعۡضِ ٱلۡكِتَٰبِ وَتَكۡفُرُونَ بِبَعۡضٖۚ فَمَا جَزَآءُ مَن يَفۡعَلُ ذَٰلِكَ

(८५) फिर भी तुमने अपनों की हत्याएं की तथा अपने एक गुट को देश से निकाला तथा पाप एवं कठोरता करने के कार्यों में उनके विरुद्ध अन्य का पक्ष लिया। हाँ जब वे बन्दी बनकर तुम्हारे पास आए तो तुमने उनके बदले में धन दिया (जिसे फ़िदया कहते हैं), परन्तु उनका निकालना जो तुम पर *हराम* था (उसकी कुछ चिन्ता न की)। क्या तुम शास्त्र की कुछ बातें मानते हो तथा कुछ को

---

[1]इन *आयतो* में फिर उस वचन का वर्णन किया जा रहा है, जो *इस्राईल* के पुत्रों से लिया गया परन्तु इससे भी उन्होंने मुंह फेरा। इस वचन में प्रथम तो एक अल्लाह की *इबादत* के लिए बल दिया गया है जो प्रत्येक नबी की आधार शिला तथा प्रारम्भिक आमंत्रण रहा है। (जैसाकि *सूर:- अल-अम्बिया आयत* सख्या २५ तथा अन्य *आयतो* से स्पष्ट है) इसके पश्चात माता-पिता से सदव्यवहार का आदेश है। अल्लाह की *इबादत* के पश्चात माता-पिता की आज्ञापालन तथा उनके साथ सदव्यवहार से स्पष्ट कर दिया गया कि जिस प्रकार अल्लाह की *इबादत* आवश्यक है, उसी प्रकार इसके पश्चात माता-पिता की आज्ञापालन तथा सेवा भी अति आवश्यक है तथा इसमें आलस्य करने का कोई स्थान नहीं है। क़ुरान में विभिन्न स्थानों पर अल्लाह तआला ने अपनी *इबादत* के पश्चात द्वितीय स्थान पर माता-पिता की आज्ञापालन का वर्णन करके उनके महत्व को स्पष्ट कर दिया है, उसके पश्चात निकट सम्बन्धियो अनाथ तथा निर्धनों के साथ सदव्यवहार पर बल दिया गया तथा कोमल वचन का आदेश है। इस्लाम में भी इन बातों पर बड़ा बल दिया गया है जैसाकि *रसूल अल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम* की हदीस से स्पष्ट है। इस वचन में *नमाज़* स्थापित करना तथा *ज़कात* देने का भी आदेश है। जिससे ज्ञात होता है कि दोनों *इबादतें* पूर्व के धर्मों के नियमों में सम्मिलित रही हैं, जिनसे इनकी विशेषता परिलक्षित होती है। इस्लाम में भी यह दोनो इबादतें अति महत्वपूर्ण हैं, यहाँ तक कि उनमें से किसी एक का अस्वीकार करना अथवा उससे मुँह चुराना कुफ़्र के समतुल्य समझा गया है, जैसाकि आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ (رضی اللہ عنہ) के *खिलाफ़त* काल में *ज़कात* अदा न करने वालों के विरुद्ध धर्मयुद्ध से स्पष्ट है।

नकारते हो ?[1] तुममें से जो भी ऐसा करे उसका दण्ड इसके अतिरिक्त क्या हो कि संसार में अपमान एवं क़ियामत के दिन कठोर यातनाओं की मार। तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों से अनजान नहीं है।

مِنكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا ۖ وَيَوْمَ الْقِيَٰمَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰٓ أَشَدِّ الْعَذَابِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٨٥﴾

(८६) ये वे लोग हैं जिन्होंने सांसारिक जीवन को परलोक के बदले ख़रीद लिया है, उनकी न यातनाएं कम होंगी न उनकी सहायता की जाएगी।[2]

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَوٰةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۖ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٨٦﴾

---

[1] *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के समय में *अन्सार* (जो इस्लाम से पूर्व मूर्तिपूजक थे) के दो क़बीले थे- *औस* तथा *ख़ज़रज*। उनका आपस में समय-समय पर युद्ध होता रहता था। इसी प्रकार मदीने में यहूदियों के तीन कबीले थे- बनू कैनुकाअ, बनू नज़ीर तथा बनू कुरैज़: ये भी आपस में लड़ा करते थे। बनू कुरैज़ा औस के मित्र थे तथा बनू कैनुकाअ, बनू नज़ीर *ख़ज़रज* के मित्र थे। युद्ध में ये अपने-अपने मित्र की सहायता करते तथा अपने ही सधर्मी यहूदियों की हत्या करते, उनके घरों को लूटते, तथा उन्हें देश से निकाल देते थे। जबकि *तौरात* के अनुसार ऐसा करना उनके लिए हराम था। परन्तु फिर उन्हीं यहूदियों को जब वे पराजित हो जाने के कारण बन्दी बन जाते तो *फ़िदया* (बदले में अर्थ दण्ड अदा करना) देकर छुड़ा लेते तथा कहते कि *तौरात* में हमें यह आदेश दिया गया है। इन *आयतो* में यहूदियों के इसी कर्म का वर्णन है कि उन्होंने धार्मिक नियमों को मोम की नाक के समान बना लिया हैं। किसी आदेश का पालन करते हैं तथा किसी समय धार्मिक नियमों के आदेशो को कोई महत्व नहीं देते। हत्या, देश निकाला तथा एक-दूसरे के विरूद्ध सहायता करना,उनके धार्मिक नियमों में भी *हराम* था, इन आदेशों की उन्होंने अवहेलना की तथा *फ़िदया* देकर छुड़ा लेने का जो आदेश था, उसका पालन किया। यद्यपि प्रथम तीन नियमों का वे पालन करते, तो *फ़िदया* देकर छुड़ाने का अवसर ही न आता।

[2] यह धार्मिक नियमों में से किसी के पालन करने तथा किसी के पालन न करने के कारण मिलने वाले दण्ड का वर्णन हो रहा है। इसका दण्ड संसार में मान-मर्यादा के स्थान पर (जो पूर्ण धार्मिक नियमों पर पालन करने के कारण प्राप्त होता है) अपमान तथा अनादर से परिवर्तित हो जाता है तथा *आख़िरत* में स्थाई सुख के बजाय कठोर यातना है। इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह के यहाँ वह आज्ञापालन स्वीकार है जो पूर्णरूप से हो। कुछ बात का मान लेना अथवा उनका पालन करना अल्लाह तआला के यहाँ उसकी

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِن بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ ۖ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ

(८७) हमने मूसा (*अलैहिस्सलाम*) को धर्मशास्त्र प्रदान की तथा उनके पश्चात लगातार रसूल भी भेजे[1] तथा हमने ईसा (*अलैहिस्सलाम*) बिन मरियम को स्पष्ट निशानियाँ प्रदान कीं तथा पवित्र आत्मा (आदरणीय जिब्रील) से उनका समर्थन कराया, परन्तु जब कभी भी तुम्हारे पास

कोई महत्व नहीं। यह आयत हम मुसलमानों को भी विचार के लिए आमन्त्रित कर रही है कि कहीं मुसलमानों के अपमान तथा अनादर का कारण भी मुसलमानों का वही व्यवहार तो नहीं जो प्रस्तुत *आयत* में यहूदियों का वर्णन किया गया है ?

﴿وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ﴾[1] का अर्थ है कि मूसा *अलैहिस्सलाम* के पश्चात निरन्तर ईशदूत आते रहे यहाँ तक कि *इस्राईल* के वंश में *नबीयों* की यह श्रृंखला आदरणीय ईसा *अलैहिस्सलाम* पर समाप्त हो गयी بينات से चमत्कार का तात्पर्य है, जो आदरणीय ईसा *अलैहिस्सलाम* को प्रदान किये गये, जैसे मृतक को जीवित करना, कुष्ठ रोगी तथा अंधे को स्वस्थ करना आदि, जिनका वर्णन *सूरः आले इमरान*-४९ में है। *'रुहुल कुदुस'* अर्थात पवित्र आत्मा से तात्पर्य आदरणीय *जिब्रील* हैं। इनको *'रुहुल कुदस'* इसलिए कहा गया है कि उनकी सृष्टि अल्लाह द्वारा *'कुन'* (كن) शब्द कहने से हुई थी, जैसाकि स्वंय आदरणीय ईसा को *'रुह'* कहा गया है, तथा القدس (*अल-कुदस*) से अल्लाह तआला से तात्पर्य है तथा उसके साथ 'रुह' शब्द की अधिकता आदर सूचक है। इब्ने जरीर ने इसी को उचित माना है क्योंकि *सूरः अल-मायदः* की *आयत* संख्या १० में *'रुहुल कुदस'* तथा *'इंजील'* दोनों अलग-अलग वर्णित हैं। (इसलिए *'रुहुल कुदस'* से *'इंजील'* का तात्पर्य सहीह नहीं हो सकता) एक अन्य *आयत* में आदरणीय जिब्रील को *"रुहुल अमीन"* कहा गया है तथा *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने आदरणीय हस्सान (رضی اللہ عنہ) के सम्बन्ध में फरमाया :

«اللَّهُمَّ أَيِّدْهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ» .

(ऐ अल्लाह रुहुल कुदस से इसका समर्थ करा।

एक अन्य हदीस में है।

و جبريل معك

(जिब्रील तुम्हारे साथ हैं)

इससे ज्ञात हुआ कि 'रुहुल कुदस' से तात्पर्य आदरणीय जिब्रील ही हैं। (फतहुल बयान,इब्ने कसीर, सन्दर्भ अशरफुल हवाशी से)

فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ﴿٨٧﴾

रसूल वह चीज़ लाए, जो तुम्हारे विचारों के विरुद्ध थीं, तुमने तुरंत अभिमान किया, फिर कुछ को तुमने झुठला दिया तथा कुछ की हत्या कर दी ।[1]

وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۚ بَل لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा उन्होंने कहा कि हमारे दिल ढंके हुए हैं,[2] (नहीं, नहीं) बल्कि उनके अधर्म के कारण उन्हें अल्लाह ने धित्कार दिया है, उनका ईमान किंचिर मात्र है ।[3]

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِن قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا جَاءَهُم مَّا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ ۚ

(८९) तथा जब उनके पास उनका ग्रन्थ (तौरात) को प्रमाणित करने के लिए एक शास्त्र (पवित्र क़ुरआन) आ गया, यद्यपि इससे पूर्व ये स्वयं इसके साथ काफ़िरो पर विजय चाहते थे ।[4] तो आ जाने के उपरान्त तथा

---

[1]जैसे परम आदरणीय *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* तथा आदरणीय ईसा को झुठलाया एंव आदरणीय *ज़करिया* की हत्या की ।

[2]अर्थात हम पर ऐ *मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* तेरी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जिस प्रकार अन्य स्थान पर है ।

﴿ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ ۚ وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ﴾

"हमारे दिल इस आमन्त्रण से पट में है जिसकी ओर तू हमें बुलाता है"

(फुस्सिलत -५)

[3]दिलों पर सत्य बातों का प्रभाव न पड़ना, कोई गर्व की बात नहीं । अपितु यह निन्दनीय होने के लक्षण हैं । अत: उनका ईमान भी तनिक है (जो अल्लाह के यहाँ अस्वीकार्य है) अथवा उनमें ईमान लाने वाले भी थोड़े ही लोग होंगे ।

[4] يستفتحون का एक अर्थ यह है, प्रभावशाली तथा विजय की प्रार्थन करते थे अर्थात जब ये यहूदी मूर्तिपूजकों से पराजित हो जाते तो अल्लाह से प्रार्थाना करते ऐ अल्लाह अन्तिम नबी शीघ्र भेज कि उसके साथ सम्मिलित होकर हम इन मूर्तिपूजकों पर विजय प्राप्त करें । अर्थात استفتاح का अर्थ استنصار है । दूसरा अर्थ सूचना देने के हैं । أى يخبرونهم بأنه سيبعث

فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

पहचान लेने के उपरान्त उन्हें नकार दिया, अल्लाह (तआला) की धिक्कार हो काफिरों पर।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾

(९०) बहुत बुरी है वह चीज़ जिसके बदले उन्होंने अपने को बेच डाला, वह उनका कुफ्र करना है अल्लाह तआला की ओर से अवतरित शास्त्र को। मात्र इस बात[1] से जल कर कि अल्लाह ने अपनी कृपा अपने जिस भक्त पर चाहा उतारा, इस कारण वे क्रोध पर क्रोध के भागी हो गए[2] और उन काफ़िरों के लिये अपमान जनक यातनायें हैं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۤ

(९१) तथा जब उनसे कहा गया कि उस पर ईमान लाओ जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो उन्होंने कह दिया कि जो हम पर (तौरात)

अर्थात यहूदी काफ़िरों को सूचना देते थे कि शीघ्र नबी आयेंगे। (फ़तहुल क़दीर) परन्तु आने के पश्चात ज्ञान रखने के उपरान्त भी *महेम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की *नबूवत* पर मात्र द्वेष की भावना के कारण ईमान नहीं लाये, जैसा कि अगली *आयत* में है।

[1]अर्थात इस बात के ज्ञान के पश्चात भी कि परम आदरणीय *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* वही अन्तिम *पैग़म्बर* हैं जिनकी विशेषताएं *तौरात* तथा *इंजील* में वर्णित हैं तथा जिनके कारण ही अहले किताब उनकी एक मुक्ति दाता के रुप में प्रतीक्षा भी कर रहे थे। परन्तु उन पर मात्र ईर्ष्या तथा द्वेष के कारण ईमान नहीं लाए कि यह नबी हमारे वंश में से क्यों न हुए, जैसा कि हमारा अनुमान था। अर्थात उनका इकार तर्कपूर्ण नहीं, वंशीय द्वेष, ईर्ष्या तथा कपट पर आधारित है।

[2]क्रोध पर क्रोध का अर्थ होता है, अत्यधिक क्रोध। क्योंकि बार-बार वे क्रोध का कार्य करते रहे, जैसा कि विस्तृत वर्णन गुज़र चुका है तथा अब मात्र द्वेष के कारण क़ुरआन तथा परम आदरणीय *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का इंकार किया।

وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنبِيَاءَ اللَّهِ مِن قَبْلُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٩١﴾

अवतरित हुई उस पर हमारा ईमान है,[1] और वह उसके सिवाय (पवित्र क़ुरआन) का इन्कार करते हैं, जब कि वह सत्य है,उनके धर्मग्रन्थ की पुष्टि कर रहा है। (हे ! नराशंस:) उनसे कहो कि यदि तुम अपने ग्रन्थ पर विश्वास रखते हो तो इससे पहले अल्लाह के दूतों की हत्याएँ क्यों की।[2]

وَلَقَدْ جَاءَكُم مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٩٢﴾

(९२) तथा तुम्हारे पास मूसा (अलैहिस्सलाम) यही निशानियाँ लेकर आए, परन्तु फिर भी तुमने बछड़े की पूजा की,[3] तुम हो ही अत्याचारी।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ

(९३) तथा जब हमने तुमसे वचन लिया और तुम पर तूर पर्वत खड़ा कर दिया (और कह दिया) कि हमारी प्रदान की हुई चीज़ों को सुदृढ़ता से पकड़ो, तथा सुनो, तो उन्होंने कहा हमने सुना तथा अवज्ञा की,[4] तथा

---

[1]अर्थात तौरात पर हम ईमान रखते हैं अत: उसके पश्चात हमें क़ुरआन पर ईमान लानें की आवश्यकता नहीं है।

[2]अर्थात *तौरात* पर ईमान का दावा भी सही नहीं है। यदि *तौरात* पर तुम्हारा ईमान होता तो *नबियों* की तुम हत्या न करते, इससे ज्ञात हुआ कि अब भी तुम्हारा इंकार मात्र द्वेष तथा ईर्ष्या पर आधारित है।

[3]यह उनके ईर्ष्या तथा द्वेष का एक अन्य प्रमाण है कि आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* स्पष्ट निशानियाँ तथा अकाटय प्रमाण लेकर आये कि वह अल्लाह के *रसूल* हैं तथा इबादत के योग्य केवल अल्लाह तआला ही है, परन्तु तुमने इसके उपरान्त आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* को भी दुखी किया तथा एक अल्लाह को छोड़कर बछड़े को पूज्य बना लिया।

[4]ये न मानने तथा अस्वीकार करने की अन्तिम सीमा है कि मुख से तो स्वीकारा कि सुन लिया अर्थात पालन करेंगे तथा दिल में यह विचार कि हमें कौन-सा ऐसा कर्म करना है ?

بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُم بِهِ إِيمَانُكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾

उनके दिलों में बछड़े का प्रेम (जैसा कि) पिला दिया गया,[1] उनकी अवज्ञता के कारण ।[2] (उनसे) कह दीजिए की तुम्हारा ईमान तुम्हें बुरे आदेश दे रहा है, यदि तुम ईमान वाले हो ।

قُلْ إِن كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِندَ اللَّهِ خَالِصَةً مِّن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾

(९४) (आप) कह दीजिए कि यदि अल्लाह के पास आख़िरत का घर तुम्हारे ही लिए है अन्य किसी के लिए नहीं, तो आओ अपनी सत्यता की पुष्टि के लिए मृत्यु माँगो ।

وَلَن يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾

(९५) परन्तु अपने कर्मों को देखते हुए वे कभी भी मृत्यु नहीं माँगेंगे ।[3] और अल्लाह (तआला) अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है ।

---

[1]एक तो प्रेम स्वयं ही ऐसा भाव है कि मनुष्य को अंधा तथा बधिर बना देता है । दूसरे, इसको أشربــوا (पिला दी गई) से तुलना की गई है क्योंकि पानी मनुष्य के नस-नस तथा शरीर के तन्तुओं में दौड़ता है जबकि भोज्य पदार्थ इस प्रकार नहीं होता । (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात अवज्ञा तथा बछड़े का प्रेम तथा पूजा का कारण वह कुफ़्र था, जो उनके दिलों में घर कर चुका था ।

[3]आदरणीय इब्ने अब्बास (رضی اللہ عنھما) ने इसकी व्याख्या *मुबाहला* का आमन्त्रण से की है अर्थात यहूदियों से कहा गया कि यदि तुम *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की नबूवत को अस्वीकार तथा अल्लाह के प्रिय होने के दावे में सच्चे हो तो *मुबाहला* कर लो अर्थात अल्लाह के दरबार में मुसलमान तथा यहूदी दोंनो मिलकर यह प्रार्थना करें कि -हे अल्लाह ! दोंनो में से जो झूठा है उसे मृत्यु प्रदान कर दे, यही *मुबाहला* उन्हें *सूर: जुमा* में भी दिया गया है । *नजरान* क्षेत्र के ईसाईयों को भी यही आमन्त्रण दिया गया था, जैसा कि *सूर: आले इमरान* में है । चूँकि यहूदी भी इसाईयों की तरह झूठे थे इसलिए इसाईयों की तरह ही यहूदीयों के विषय में भी अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह कदापि मृत्यु की कामना (अर्थात *मुबाहला*) नहीं करेंगे । हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसी व्याख्या को प्राथमिकता दी है । (तफसीर इब्ने कसीर)

وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ حَيَوٰةٍ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِۦ مِنَ الْعَذَابِ أَن يُعَمَّرَ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

(९६) बल्कि सबसे अधिक दुनियां के जीवन को प्रेम करने वाला (ऐ नबी !) आप उन्हीं को पाएंगे, ये जीवन की लालच में मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों) से भी अधिक हैं।[1] उनमें से प्रत्येक व्यक्ति एक-एक हज़ार वर्ष की आयु चाहता है, यद्यपि ये आयु दिया जाना भी उन्हें यातनाओं से नहीं बचा सकता, अल्लाह (तआला) उनके कर्मों को भली भांति देख रहा है।

قُلْ مَن كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيلَ فَإِنَّهُۥ نَزَّلَهُۥ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٧﴾

(९७) (ऐ नबी !) आप कह दीजिए कि जो जिब्रील के शत्रु हों, जिसने आप के दिल पर अल्लाह का संदेश उतारा है, जो संदेश उनके पास की किताब की पुष्टि करने वाला तथा ईमानवालों को मार्ग दर्शन तथा शुभ सूचना देने वाला है। (तो अल्लाह भी उनका शत्रु है)[2]

---

[1]मृत्यु की कामना तो दूर, यह तो सांसारिक जीवन के, सभी लोगों यहां तक कि मूर्तिपूजकों से भी अधिक प्रेमी है, परन्तु यह दीर्घ आयु भी उन्हें अल्लाह की यातना से नहीं बचा सकेगी। इन *आयतो* से ज्ञात हुआ कि यहूदी अपने उन दावों में आधार से ही झूठे थे कि वह अल्लाह के प्रिय तथा निकटवर्ती हैं अथवा स्वर्ग के मात्र वही अधिकारी हैं तथा अन्य नरकवासी, क्योंकि वास्तव में यदि ऐसा होता अथवा कम से कम उन्हें अपने दावों की सत्यता पर पूर्ण विश्वास होता तो अवश्य वह *मुबाहला* करने को तैयार हो जाते, ताकि उनकी सत्यता स्पष्ट तथा मुसलमानों की असत्यता प्रदर्शित हो जाती। मुबाहले से पूर्व यहूदियों का मुंह फेरना तथा अस्वीकार करना इस बात को व्यक्त करता है कि यद्यपि वह मुख से अपने विषय में प्रसन्नता सूचक बातें कर लिया करते थे, परन्तु उनके दिल वास्तविकता से परिचित थे तथा जानते थे कि अल्लाह के दरबार में जाने के पश्चात उनका परिणाम वही होगा, जो अल्लाह ने अपने अवज्ञाकारियों के लिए निर्धारित कर रखा है।

[2]*हदीसों* में है कि यहूदियों के कुछ आलिम *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के पास आए तथा कहा कि यदि आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने उनका ठीक उत्तर दे दिया तो हम ईमान ले आयेंगे क्योंकि नबी के अतिरिक्त उनका उत्तर कोई नहीं दे सकता। जब आप

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾

(९८) जो व्यक्ति अल्लाह का तथा उसके फ़रिश्तो तथा उसके रसूलों तथा जिब्रील एवं मीकाईल का शत्रु हो ऐसे काफिरों (अधर्मियों) का शत्रु स्वयं अल्लाह है।[1]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके प्रश्नों का उत्तर ठीक-ठीक दे दिया तो उन्होंने कहा कि आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर प्रकाशना (वह्यी) कौन लाता है ? आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया "जिब्रील" यहूदी कहने लगे: जिब्रील तो हमारा शत्रु है, वही तो युद्ध, हत्या तथा यातना लेकर उतरता रहा है। तथा इस बहाने से आप (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) को मानने से इंकार कर दिया। (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर)

[1]यहूदी कहते थे कि *मीकाईल* हमारा मित्र है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह सभी मेरे परम भक्त हैं जो उनका अथवा उनमें से किसी एक का भी शत्रु है, वह अल्लाह का शत्रु है। हदीस में आता है।

«مَنْ عَادَىٰ لِي وَلِيًّا فَقَدْ بَارَزَنِي بِالْحَرْبِ».

जिसने मेरे किसी मित्र से शत्रुता रखी, उसने मेरे साथ युद्ध की घोषणा कर दी। (सहीह बुख़ारी किताबुल रिकाक़ बाबुल तवादु)

अर्थात अल्लाह के किसी वली से शत्रुता सारे *औलिया अल्लाह* से, बल्कि अल्लाह तआला से भी शत्रुता है। इससे स्पष्ट हुआ कि *औलिया अल्लाह* से प्रेम तथा उनका सम्मान करना अति आवश्यक है तथा उनसे ईर्ष्या तथा द्वेष घोर अपराध है कि अल्लाह तआला उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर रहा है। *औलिया अल्लाह* कौन हैं ? इसके लिए देखिए *सूर: यूनुस आयत* संख्या ६२ तथा ६३ परन्तु प्रेम तथा सम्मान का यह कदापि अर्थ नहीं है कि उनके मरने के पश्चात उनकी क़ब्रों पर गुम्बद बनायें जाएं, उनकी क़ब्रों पर सालाना (वार्षिक) उर्स के नाम पर मेलों का आयोजन किया जाये - उनके नाम पर नज़र नियाज़ (भेंट) तथा क़ब्रों को गुस्ल (स्नान) तथा उन पर चादरें चढ़ाई जाएं तथा उन्हें कष्ट निवारक, चिन्ताहरण, लाभ-हानि पहुँचाने वाला समझा जाए। उनकी क़ब्रों पर हाथ बाँधकर खड़े होना तथा उनकी चौखट पर माथा टेका जाए आदि, जैसा कि दुर्भाग्य से '*औलिया अल्लाह* के प्रेम ' के नाम पर लात व मनात का व्यापार उन्नति कर रहा है। हालाँकि यह 'प्रेम नहीं है उनकी इबादत है।' जो *शिर्क* तथा क्रूर अत्याचार है। अल्लाह तआला इस *क़ब्र* की *इबादत* के षड़यंत्र से सबको सुरक्षित रखे।

(९९) तथा नि:सन्देह हमने आप की ओर स्पष्ट निशानियाँ भेजी हैं, जिनको कुकर्मियों के अतिरिक्त अन्य कोई इन्कार नहीं करता।

وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ﴿٩٩﴾

(१००) ये लोग जब कभी भी वचन देते हैं तो उनका एक न एक गुट उसे तोड़ देता है। अपितु उनमें से अधिकतर ईमान से वंचित हैं।

أَوَكُلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَّبَذَهُ فَرِيقٌ مِّنْهُم ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾

(१०१) तथा जब कभी इनके पास अल्लाह का कोई रसूल उनकी किताब की पुष्टि करने आया, तो इन *अहले किताब* के एक गुट ने अल्लाह की किताब को इस प्रकार पीछे डाल दिया जैसे जानते नहीं थे।[1]

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

(१०२) तथा उसके पीछे लग गये जिसे शैतान, (आदरणीय) *सुलेमान* के राज्य में पढ़ते थे। सुलेमान ने तो कुफ़्र न किया था बल्कि यह कुफ़्र शैतानों का था, वे लोगों को जादू सिखाते थे।[2] और बाबुल में हारुत तथा

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُو الشَّيَاطِينُ عَلَىٰ مُلْكِ سُلَيْمَانَ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَٰكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا أُنزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ

---

[1]अल्लाह तआला नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को सम्बोधित करते हुए फ़रमा रहा है कि हमने आप (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) को बहुत सी स्पष्ट निशानियाँ प्रदान की हैं, जिनको देखकर यहूदियों को भी ईमान ले आना चाहिए था। इसके अतिरिक्त स्वंय उनकी किताब *तौरात* में भी आप (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) की विशेषताओं का वर्णन तथा आप (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) पर ईमान लाने का वचन विद्यमान है, परन्तु उन्होंने पहले भी किस वचन की कब चिन्ता की है, जो इस वचन की करेंगे ? वचन तोड़ना उनके एक गुट का सदैव का आचरण रहा है। यहाँ तक कि अल्लाह की किताब को भी इस प्रकार पीछे डाल दिया, जैसे वे उसे जानते ही नहीं।

[2]अर्थात इन यहूदियों ने अल्लाह की किताब तथा वचन की कोई चिन्ता नहीं की, परन्तु शैतानों के अनुयाई बनकर न केवल जादू-टोने का कार्य करते रहे, बल्कि यह दावा भी किया कि आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* भी (نعوذ بالله) अल्लाह के पैग़म्बर नहीं थे, बल्कि एक जादूगर थे तथा जादू की शक्ति से ही राज्य करते रहे। अल्लाह तआला ने

मारुत दो फरिश्तों पर जो उतारा गया था ।[1] वह दोनों भी किसी व्यक्ति को उस समय

وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَاۤ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ

फ़रमाया : आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* जादू का कार्य नहीं किया करते थे क्योंकि जादू का कार्य तो कुफ़्र है, इस कुफ़्र का कार्य आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* क्यों कर सकते थे ? कहते हैं कि आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* के समय में जादूगरी का कार्य अत्यधिक सामान्य रुप से व्याप्त था, आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* ने इसको समाप्त करने के लिए जादू की किताबें लेकर अपनी कुर्सी अथवा तख़्त के नीचे गाड़ दिया था । आदरणीय सुलैमान अलैहिस्सलाम के मृत्यु के पश्चात उन शैतानों (राक्षसों) तथा जादूगरों ने इन किताबों को निकालकर न केवल लोगों को दिखाया बल्कि लोगों को यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* की शक्ति तथा राज्य की गुप्त बात यही जादू का कार्य था तथा इसी आधार पर उन अत्याचारियों ने आदरणीय सुलैमान अलैहिस्सलाम को भी काफ़िर सिद्ध कर दिया, जिसका खण्डन अल्लाह तआला ने किया । (इब्ने कसीर आदि) والله أعلم

[1]कुछ व्याख्याकारों ने وما أنـــزل में ما नकारात्मक माना है तथा हारुत एवं मारुत पर किसी चीज के उतरने को नकारा है । (इब्ने कसीर) इसी प्रकार हारुत एवं मारुत के विषय में व्याख्या में इस्राईली कथाओं की भरमार है । परन्तु कोई सहीह प्रमाणित कथन उस विषय में नहीं । अल्लाह तआला ने बिना किसी विस्तारपूर्वक जानकारी के अत्यधिक संक्षिप्तरुप से इस घटना का वर्णन किया है । हमें केवल उस पर तथा उसी सीमा तक ईमान रखना चाहिए । (तफसीर इब्ने कसीर) क़ुरआन के शब्दों से यह अवश्य ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला ने बाबुल में हारुत एवं मारुत फ़रिश्तों पर जादू का ज्ञान उतारा था तथा इसका उद्देश्य (والله أعلم بالصواب) यह ज्ञात होता है, ताकि वह लोगों को बतायें कि *नबियों* के हाथों पर प्रदर्शित होने वाले चमत्कार, जादू से भिन्न चीज़ हैं तथा जादू यह चीज़ है जिसका ज्ञान अल्लाह तआला की ओर से हमें प्रदान किया गया है (उस काल में जादू समान्य रुप से होने के कारण लोग नबियों को भी نعوذ بالله जादूगर तथा कलाकार समझने लगे थे) उसी संभावना से लोगों को बचाने के लिए परीक्षा स्वरुप फ़रिश्तों को उतारा गया ।

दूसरा उद्धेश्य *इस्राईल* की सन्तान की चारित्रिक गिरावट की ओर संकेत करना प्रतीत होता है कि *इस्राईल* की संतान किस प्रकार जादू सीखने के लिए इन फ़रिश्तों के पीछे पड़े तथा यह बताने के उपरान्त कि जादू कुफ़्र है तथा हम परीक्षा के लिए आये हैं, वह जादू की शिक्षा प्राप्त करने के लिए टूटे पड़ रहे थे, जिससे उनका उद्देश्य हँसते-बसते घरों को उजाड़ना तथा पति-पत्नी के मध्य द्वेष की दीवारें खड़ी करनी थी । अर्थात यह उनकी गिरावट, बिगाड़ तथा उपद्रव के लिए एक विशेष श्रृंखला थी और इस प्रकार के

فَلَا تَكْفُرْ ۖ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ۚ وَمَا هُم بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾

तक न सिखाते[1] थे जब तक वे यह न कह दें कि हम तो एक परीक्षा हैं,[2] तू कुफ़्र न कर, फिर लोग उनसे वह सीखते जिससे पति-पत्नी में भेद डाल दें। वास्तव में वे बिना अल्लाह की इच्छा के किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते।[3] ये लोग वह सीखते हैं जो इन्हें न हानि पहुँचाए तथा न लाभ पहुँचा सके, तथा वह निश्चित रुप से जानते हैं कि इसके लेने वाले का आख़िरत में कोई भाग नहीं है। तथा वह बहुत ही बुरी चीज़ है जिसके बदले वे अपने आप को विक्रय कर रहे हैं, यदि ये जानते होते।

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ خَيْرٌ ۖ

(१०३) और यदि ये लोग ईमान लाते तथा अल्लाह से भय रखते तो अल्लाह (तआला)

अंधविश्वास तथा चरित्र की गिरावट किसी समुदाय के अत्यधिक बिगाड़ के लक्षण हैं। أعاذنا الله منه

[1]यह ऐसे ही है जैसे असत्य का खण्डन करने के लिए असत्य धर्म का ज्ञान किसी गुरू से प्राप्त किया जाये। गुरू शिष्य को इस विश्वास के साथ असत्य धर्म का ज्ञान सिखाये की वह उसका खण्डन करेगा। परन्तु ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात वह स्वंय अधर्मी हो जाये अथवा उसका दुरुपयोग करे तो गुरु उसमें दोषी नहीं होगा।

[2] أى إنما نحن ابتلاء واختبار من الله لعباده हम अल्लाह की ओर से भक्तो के लिए परीक्षा हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह जादू भी उस समय तक किसी को हानि नहीं पहुँचा सकता, जब तक अल्लाह का आदेश तथा इच्छा न हो। इसलिए उसके सीखने का क्या लाभ है ? यही कारण है कि इस्लाम ने जादू सीखने तथा करने को कुफ़्र कहा है। हर प्रकार की भलाई की कामना तथा हानि से सुरक्षा के किए केवल अल्लाह तआला से ही प्रार्थना की जाय क्योंकि वही प्रत्येक चीज़ का करने वाला है तथा सृष्टि का प्रत्येक कार्य उसी की इच्छानुसार होता है।

لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٣﴾

की ओर से अच्छा प्रतिकार प्राप्त होता, यदि ये जानते होते।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾

(१०४) ऐ ईमानवालो! तुम (*नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को) راعنـا (हमारा ध्यान दीजिए अथवा हमारा विचार कीजिए) न कहा करो, अपितु انظرنا (हमारी ओर देखिये) कहो।[1] तथा सुनते रहा करो एवं काफ़िरों के लिए दुखदायी यातना है।

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿١٠٥﴾

(१०५) न तो अहले किताब के काफ़िर तथा न मूर्तिपूजक चाहते हैं कि तुम पर तुम्हारे पालक की ओर से भलाई उतरे (उनके इस ईर्ष्या से क्या हुआ ?) अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपनी कृपा विशेष रुप से प्रदान कर दे। और अल्लाह अत्यधिक कृपा वाला है।

---

[1] راعِنـــا का अर्थ है, हमारा विचार कीजिये। बात समझ में न आए तो सुनने वाला इस शब्द का प्रयोग करके वक्ता को अपनी ओर आकर्षित करता था, परन्तु यहूदी अपने द्वेष तथा ईर्ष्या के कारण इस शब्द को थोड़ा-सा बिगाड़ कर प्रयोग करते थे, जिससे उसका अर्थ बदल जाता था। तथा उनके द्वेष भाव को संतोष होता था, उदाहरणार्थ वे कहते थे, راعينا जिसका अर्थ 'हमारे चरवाहे। अथवा رَاعِنًا का अर्थ है 'मूर्ख' आदि, जैसे वह السـلام عليكـم के बजाए السام عليكم कहा करते थे जिसका अर्थ है, 'तुम पर मौत आये।' अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम اُنظرنا कहा करो। इससे एक तो यह बात ज्ञात हुई कि ऐसे शब्द जिनमें अनादर तथा अपमान की किंचित मात्र भी आभास हो तो सम्मान तथा आदर स्वरुप उनको प्रयोग करना उचित नहीं। दूसरी यह बात सिद्ध हुई कि काफ़िरों के साथ कर्म तथा कथनों में समता करने से बचा जाये, ताकि मुसलमान

«مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ»

(जो किसी समुदाय की समानता करेगा, वह उन्हीं में सम्मिलित होगा) (अबु दाऊद किताबुलिबास)

की चेतावनी में सम्मिलित न हों।

(१०६) जिस आयत को हम निरस्त कर दें अथवा भुला दें उससे अच्छी अथवा उस जैसी अन्य लाते हैं,[1] क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है।

مَا نَنسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَا أَوْ مِثْلِهَا ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٦﴾

---

[1] نسخ के शाब्दिक अर्थ तो "नक़्ल" करने के हैं, लेकिन धार्मिक परिभाषा में एक आदेश को निरस्त करके दूसरा आदेश उतारने के हैं। यह परिवर्तन अल्लाह तआला की ओर से हुआ है जैसे आदम *अलैहिस्सलाम* के समय में सगे बहन-भाई में विवाह मान्य था, बाद में इसे अवैध कर दिया गया आदि, इसी प्रकार क़ुरआन में भी अल्लाह तआला ने कुछ आदेश निरस्त करके उनके स्थान पर नये नियम उतारे हैं। नस्ख़ (निरस्त) तीन प्रकार का होता है। पहला प्रकार यह है कि एक आदेश को बदलकर दूसरा आदेश उतारा गया। दूसरा है نسخ مع التلاوة अर्थात पहले आदेशों के शब्द क़ुरआन मजीद में विद्यमान हैं, उनको पढ़ा जाता है, परन्तु दूसरा आदेश जो बाद में उतारा गया, वह भी क़ुरआन मजीद में विद्यमान हैं अर्थात निरस्त तथा उसको निरस्त करने वाली दोनों आयतें विद्यमान हैं। निरस्त का एक तीसरा प्रकार यह है कि इनको पढ़ना निरस्त कर दिया गया। अर्थात क़ुरआन में *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने उसे सम्मिलित नहीं किया, परन्तु उनका आदेश शेष रखा गया है। जैसे

«الشَّيْخُ والشَّيخَةُ إِذَا زَنَيَا فَارْجُمُوهُمَا الْبَتَّةَ».

"विवाहित पुरुष तथा स्त्री यदि व्यभिचार करें, तो निस्सन्देह उन्हें पत्थरों से मारकर मृत्यु दण्ड दिया जाय।" (मुअत्ता ईमाम मलिक)

इस *आयत* में निरस्त करने की प्रथम दो प्रकार का वर्णन है। ﴿مَا نَنسَخْ مِنْ آيَةٍ﴾ में दूसरा प्रकार तथा ﴿أَوْ نُنسِهَا﴾ में पहला प्रकार। نُنسِهَا "हम भुलवा देते हैं।" का अर्थ है कि उसका आदेश तथा पढ़ना दोनो उठा लेते हैं। अर्थात हमने उसे भुला दिया तथा नया आदेश उतार दिया। अथवा नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के हृदय पटल से ही हमने उसे मिटा दिया तथा वह पूर्ण रुप से भुला दिया गया।

यहूदी *तौरात* को अपरिवर्तनीय कहते थे तथा क़ुरआन पर भी उन्होंने कुछ आदेशों के निरस्त होने के कारण आलोचना की थी। अल्लाह तआला ने उनका खण्डन किया है तथा कहा है कि धरती तथा आकाश का राज्य केवल उसी के हाथ में है, वह जो उचित समझे करे, जिस समय जो आदेश अपने ज्ञान तथा विवेक के आधार पर ही पारित करे तथा जिसे चाहे निरस्त करे। यह उसके सामर्थ्य का एक प्रदर्शन है। कुछ प्राचीन परम्पराओं के भटके हुए (जैसे अबू मुस्लिम असफाहानी मुतज़ली) तथा आजकल के भी

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٧﴾

(१०७) क्या तुझे ज्ञात नहीं कि धरती तथा आकाशों का राज्य अल्लाह ही के लिए है। तथा अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई संरक्षक तथा सहायक नहीं।

أَمْ تُرِيْدُوْنَ أَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾

(१०८) क्या तुम अपने रसूल से वैसे प्रश्न करना चाहते हो जैसे इससे पूर्व मूसा (*अलैहिस्सलाम*) से पूछा गया।[1] (सुनो!) जो ईमान को कुफ़्र से बदलता है वह सीधे मार्ग से भटक जाता है।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْ بَعْدِ إِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهٖ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾

(१०९) इन अहले किताब के अधिकतर लोग सत्य स्पष्ट हो जाने के उपरान्त मात्र ईर्ष्या तथा द्वेष के कारण तुम्हें भी ईमान से हटा देना चाहते हैं तुम भी क्षमा करो तथा छोड़ दो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला लागू कर दे। अवश्य अल्लाह (तआला) प्रत्येक कार्य करने का सामर्थ्य रखता है।

وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ ۗ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِأَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللَّهِ ۗ

(११०) तुम नमाज़ की स्थापना करो तथा ज़कात (धर्मदान) देते रहो तथा जो भलाई तुम अपने लिये आगे भेजोगे सब कुछ

कुछ नवीनीकरण करने वालो ने यहूदियों की तरह क़ुरआन में आदेशों के परिवर्तन को नहीं मानते। परन्तु ठीक बात वही है जो उपरोक्त पंक्तियो में वर्णन की गयी हैं, सदाचार पूर्वजों का विश्वास भी आदेशों के परिवर्तित किये जाने के पक्ष में ही रहा हैं।

[1] मुसलमानों (सहावा) को चेतावनी दी जा रही है कि तुम यहूदियों की तरह अपने ईश-दूत से अपनी मनमानी अनावश्यक प्रश्न मत किया करो। इसमें अधर्म की संभावना है।

إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾

अल्लाह के पास पा लोगे निःसन्देह अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है ।[1]

وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١١١﴾

(१११) तथा ये कहते हैं कि स्वर्ग में यहूदी तथा इसाई के अतिरिक्त कोई न जायेगा। ये केवल उनकी आशायें हैं। उनसे कहो कि यदि तुम सच्चे हो तो कोई प्रमाण तो प्रस्तुत करो ।[2]

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِندَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾

(११२) सुनो ! जिस ने स्वयं कोअल्लाह के लिये समर्पित कर दिया[3] तथा सदाचारी है उसी के लिये उस के पोषक के यहाँ प्रतिफल है। तथा न उन पर कोई भय होगा न कोई क्षोभ।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصَارَىٰ لَيْسَتِ

(११३) यहूदी कहते हैं इसाई सत्य मार्ग पर नहीं,[4] तथा इसाई कहते हैं कि यहूदी सत्य

---

[1]यहूदियों को इस्लाम धर्म तथा नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से जो ईर्ष्या तथा द्वेष था, उसके कारण वह मुसलमानों को इस्लाम धर्म से मुँह मोड़ने का भरपूर प्रयत्न करते रहते थे। मुसलमानों को कहा जा रहा है कि तुम धैर्य तथा क्षमा से काम लेते रहो, इन आदेश तथा इस्लाम धर्म द्वारा अनिवार्य किये गये कर्मों को करते रहो, जिनका तुम्हें आदेश दिया गया है।

[2]यहाँ अहले किताब के उस गर्व तथा मायाजाल में फंसे रहने को पुनः वर्णित किया जा रहा है, जिसमें वे लिप्त थे अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मात्र उनकी आशायें है, जिनके लिए उनके पास कोई प्रमाण नहीं है।

[3]﴿أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ﴾ का अर्थ है, मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए काम करे तथा ﴿وَهُوَ مُحْسِنٌ﴾ का अर्थ है अन्तिम *ईशदूत* की *सुन्नत* के अनुसार। कर्मों के स्वीकार होने के यह दो आधारभूत है तथा अन्तिम मोक्ष इन्हीं नियमों के अनुसार किये गये सत्कर्म पर आधारित हैं न कि मात्र आशाओं पर।

[4]यहूदी *तौरात* पढ़ते हैं जिसमें आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* के मुख से आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम की पुष्टि विद्यमान है परन्तु इसके उपरान्त यहूदी आदरणीय ईसा का अनुकरण नहीं करते थे। इसाईयों के पास *इंजील* है, जिसमें आदरणीय मूसा तथा *तौरात* के अल्लाह की ओर से होनें की पुष्टि है। इसके उपरान्त वे यहूदियों को झुठलाते हैं,

मार्ग पर नहीं । यद्यपि ये तौरात पढ़ते हैं, इसी प्रकार इन ही जैसी बात अशिक्षित भी कहते हैं ।[1] क़ियामत के दिन अल्लाह इनके इस मतभेद का निर्णय कर देगा ।

الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾

(११४) तथा उससे बड़ा अत्याचारी कौन है ? जो अल्लाह (तआला) की मस्जिदों में अल्लाह का वर्णन करने से रोके,[2] तथा उनको नष्ट करने का प्रयत्न करे,[3] ऐसे लोगों को भयभीत होते हुए उसमें प्रवेश करना

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسَاجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۚ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۚ

यहाँ अहले किताब के दोनो गुटों के *कुफ़्र*, तथा ईर्ष्या एवं अपने-अपने विषय मे शुभ आशाओं में लिप्त होने को प्रदर्शित किया जा रहा है ।

[1]अहले किताब की अपेक्षा अरब के मूर्तिपूजक अशिक्षित थे । इसलिए उन्हें अज्ञानी कहा गया परन्तु वे भी मूर्तिपूजक होने के उपरान्त यहूदी तथा ईसाईयों कि तरह इस असत्य आशाओं में लिप्त थे कि वही सत्यता पर हैं । इसीलिए वे नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को अधर्मी कहते थे ।

[2]जिन लोगों ने मस्जिदों में अल्लाह का वर्णन करने से रोका ये कौन हैं ? इनके विषय में व्याख्याकारों के दो मत हैं । एक मत यह है कि इससे तात्पर्य इसाई हैं । जिन्होने रोम के राजा से मिलकर *बैतुल मुक़द्दस* में यहूदियों को *नमाज़* पढ़ने से रोका तथा उसके विनाश में भाग लिया । इब्ने जरीर तब्री ने इसी मत को आरण किया है । परन्तु हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इससे असहमत हो कर इसका लक्ष्य मक्का के मूर्तिपूजकों को बताया है, जिन्होंने एक तो नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* तथा आप के सहाबा को मक्का से निकलने पर बाध्य किया तथा मुसलमानों को अल्लाह के घर में *इबादत* करने से रोका । फिर *हुदैबिया* की सन्धि के समय इसी व्यवहार की पुनरावृति की तथा कहा कि हम अपने पूर्वजों के हत्यारों को मक्का में प्रवेश न करने देंगे, यद्यपि अल्लाह के घर में किसी को *इबादत* से रोकने की आज्ञा तथा रीति नहीं थी ।

[3]आतंक तथा विनाश केवल यही नहीं है कि उसे ढा दिया जाये तथा इमारत को हानि पँहुचाया जाये, अपितु उनमें अल्लाह की *इबादत* एंव वर्णन करने से रोकना, धार्मिक नियमों की स्थापना तथा *शिर्क* के प्रदर्शन से पवित्र करने से मना करना भी आतंक तथा अल्लाह के घरों को बरबाद करना है।

لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾

चाहिए,[1] उनके लिए संसार में भी अपमान है तथा परलोक में भी बड़ी-बड़ी यातनाएँ हैं।

وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा पूर्व एवं पश्चिम का मालिक अल्लाह ही है। तुम जिधर भी मुख करो उधर ही अल्लाह का मुख है,[2] अल्लाह (तआला) परम शक्तिशाली सर्वज्ञ है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ بَل لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُ قَانِتُونَ ﴿١١٦﴾

(११६) तथा ये कहते हैं कि अल्लाह (तआला) की संतान है (नहीं बल्कि) वह पवित्र है। धरती एवं आकाशों की सारी सृष्टि पर

---

[1]ये शब्द सूचना के हैं परन्तु तात्पर्य इससे यह इच्छा है कि जब अल्लाह तआला तुम्हें प्रभावशाली तथा विजयी बनाये, तो तुम इन मूर्तिपूजकों को इसमें सन्धि तथा सुरक्षा कर के बिना रहने की आज्ञा न देना। अत: जब ८ हिजरी में मक्का विजयी हुआ तो नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने घोषणा की कि अगले वर्ष *काअ़बा* में किसी मूर्तिपूजक को *हज* करने तथा नंगी परिक्रमा करने की आज्ञा नहीं होगी तथा जिससे जो सन्धि है, सन्धि की अवधि तक उसे यहाँ रहने की आज्ञा है। कुछ ने कहा है कि इसमें शुभ सूचना तथा भविष्यवाणी है कि निकट भविष्य में मुसलमानों को विजय प्राप्त होगी तथा ये मूर्तिपूजक ख़ाने काअ़बा में भयभीत होकर प्रवेश करेंगे कि हमने जो मुसलमानों पर पूर्व में अत्याचार किये हैं, उनके बदले में हमें दण्ड अवश्य मिलेगा अथवा हत्या न कर दी जाय। अत: शीघ्र ही यह शुभ सूचना पूरी हो गई।

[2]*हिजरत* के पश्चात जब मुसलमान *'बैतुल मुकद्दस'* की ओर मुख करके *नमाज़* पढ़ा करते थे, तो मुसलमानों को इसका दुख था, इस अवसर पर यह *आयत* उतरी। कुछ कहते हैं कि यह *आयत* उस समय उतरी जब *'बैतुल मुकद्दस'* से फिर खाने *काअ़बा* की ओर मुख करने का आदेश हुआ तो यहूदियों ने नानाप्रकार की बातें गढ़ीं, कुछ के निकट इसके उतरने का कारण यात्रा में सवारी पर ऐच्छिक (*नफिल*) *नमाज़ों* को पढ़ने की आज्ञा प्रदान हुई कि सवारी का मुख किधर भी हो, *नमाज़* पढ़ सकते हो। कभी कुछ कारण एकत्रित हो जाते हैं तथा उन सभी के आदेश के लिए एक ही *आयत* उतरती है। ऐसी *आयतों* के लिए विभिन्न कथन एकत्रित होते हैं, किसी कथन में एक उतरने का कारण का वर्णन होता है तथा किसी में अन्य। ये *आयत* भी इसी प्रकार की है। (अहसनुल तफ़ासीर)

उसका अधिपत्य है तथा प्रत्येक उसका आज्ञाकारी है।

(११७) वह आकाशों एवं धरती का स्रष्टा है, तथा वह जिस कार्य का निर्णय करता है कह देता है कि हो जा, वह हो जाता है।[1]

بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾

(११८) तथा इसी प्रकार अज्ञानी लोगों ने भी कहा कि स्वयं अल्लाह (तआला) हमसे बातें क्यों नही करता अथवा हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती, इसी प्रकार ऐसी ही बात[2] उनके पूर्वजों ने भी की थी, उनके तथा इनके दिल एक जैसे हो गये,[3] हमने तो

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ۭ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ۭ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ۭ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾

[1]अर्थात वह अल्लाह तो वह है कि आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु का मालिक है। प्रत्येक वस्तु उसकी आज्ञाकारी है। बल्कि आकाश तथा धरती का बिना किसी नमूने के बनाने वाला भी वही है। उसके अतिरिक्त वह जो काम चाहे उसके लिए उसे केवल शब्द 'हो जा' कहना काफ़ी है। ऐसी शक्ति को भला सन्तान की क्या आवश्यकता हो सकती है।

[2]इससे तात्पर्य अरब के मूर्तिपूजक हैं, जिन्होंने यहूदियों की भाँति माँग की कि अल्लाह तआला हमसे सीधे बात क्यों नहीं करता अथवा कोई बड़ी निशानी क्यों नहीं दिखाता ? जिसे देखकर हम मुसलमान हो जाएं। जिस प्रकार *सूर: बनी इस्राईल आयत* संख्या ९० से ९३ तक तथा अन्य स्थानों पर भी वर्णन किया गया है।

[3]अर्थात अरब के मूर्तिपूजकों के दिल कृतघ्नता, ईर्ष्या, द्वेष, विरोध तथा हठ में अपने पूर्व के लोगों के दिलों समान हो गये। जैसे *सूर: तूर* में फ़रमाया :

﴿ كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۞ اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴾

"इनसे पूर्व जो भी रसूल आया उसको लोगों ने जादूगर तथा दीवाना ही कहा। क्या ये उस बात की एक-दूसरे को वसीयत कर जाते थे ? नहीं यह सब लोग उद्दण्ड हैं।"

विश्वास करने वालों के लिए निशानियों का वर्णन कर दिया।

(११९) हमने आपको सत्य के साथ शुभ सूचना देने वाला तथा सावधान कराने वाला बनाकर भेजा है तथा नरकवासियों के विषय में आप से नही पूछा जायेगा।

إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۖ وَلَا تُسْـَٔلُ عَنْ أَصْحَٰبِ ٱلْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾

(१२०) तथा आपसे यहूदी एवं इसाई कदापि प्रसन्न न होंगे। जब तक कि आप उनके धर्म का अनुकरण न कर लें,[1] (आप) कह दीजिए कि अल्लाह का मार्गदर्शन ही मार्गदर्शन होता है,[2] तथा यदि आपने अपने पास ज्ञान आ जाने के उपरान्त फिर भी उनकी इच्छाओं का अनुकरण किया, तो अल्लाह के पास न तो आपका कोई संरक्षक होगा न कोई सहायक।[3]

وَلَن تَرْضَىٰ عَنكَ ٱلْيَهُودُ وَلَا ٱلنَّصَٰرَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى ٱللَّهِ هُوَ ٱلْهُدَىٰ ۗ وَلَئِنِ ٱتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُم بَعْدَ ٱلَّذِى جَآءَكَ مِنَ ٱلْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ ٱللَّهِ مِن وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٢٠﴾

अर्थात लगभग उन सब में समान रुप से उद्दण्डता थी, इसलिए सत्य की ओर आमन्त्रित करने वालों के समक्ष नई-नई माँगें रखते हैं अथवा उन्हें दीवाना बताते हैं।

[1]अर्थात यहूदी अथवा इसाई धर्म स्वीकार कर ले।

[2]जो अब इस्लाम धर्म के रुप में है जिसका आमन्त्रण नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* दे रहे हैं, न कि परिवर्तित रुप में यहूदी तथा इसाई धर्म।

[3]यह इस बात पर चेतावनी है कि ज्ञान आ जाने के पश्चात भी यदि मात्र उन स्वंय गलत लोगों को प्रसन्न करने के लिए उनका अनुकरण किया, तो तेरी कोई सहायता करने वाला न होगा। यह वास्तव में मुसलमानों को शिक्षा दी जा रही है कि आधुनिकीकरण करने वाले तथा ग़लत लोगों को प्रसन्न करने के लिए वह भी ऐसा काम न करें, न धर्म में वाकपटुता तथा त्रुटिपूर्ण तर्क का कार्य करें।

(१२१) जिन्हें हमने किताब दी,[1] तथा वे उसे पढ़ने के हक़ के साथ पढ़ते हैं,[2] वे इस किताब पर भी ईमान रखते हैं तथा जो इसके प्रति विश्वास नहीं रखते वह स्वयं अपना घाटा करते हैं।[3]

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢١﴾

(१२२) ऐ याक़ूब के पुत्रों ! मैंने तुम पर जो अनुकम्पायें की उन्हें याद करो तथा यह कि मैंने तुम्हें सारे समुदायों में श्रेष्ठता प्रदान कर रखी थी।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾

(१२३) तथा उस दिन से डरो जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को कोई लाभ न पहुँचा सकेगा, न किसी व्यक्ति से कोई अर्थदण्ड

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ

---

[1]अहले किताब के दुष्ट लोगों के दुषचरित्र एवं व्यवहार का आवश्यक वर्णन करने के पश्चात उनमें जो कुछ लोग पुण्य कार्य करने वाले तथा सदाचारी थे, इस आयत में उनके गुणों तथा उनको ईमानवाले होने की सूचना दी जा रही है। इनमें अब्दुल्लाह बिन सलाम तथा उन जैसे अन्य व्यक्ति हैं जिनको यहूदियों में से इस्लाम धर्म स्वीकार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

[2]"वह इस प्रकार पढ़ते हैं, जिस प्रकार पढ़ने का अधिकार है।" के कई अर्थ वर्णित किये गये हैं। जैसे। १- "ध्यानपूर्वक पढ़ते है।" स्वर्ग का वर्णन आता है तो स्वर्ग की कामना करते है तथा नरक का वर्णन आता है तो उससे सुरक्षित रहने की प्रार्थना करते हैं। (२) इसके हलाल को हलाल, हराम को हराम समझते तथा अल्लाह के कथन को परिवर्तित नहीं करते। जैसे अन्य यहूदी करते थे। (३) उसमें जो कुछ लिखा है लोगों को बताते है, उसकी कोई बात नहीं छिपाते। (४) इसकी स्पष्ट आदेशित बातों के अनुसार कर्म करते है, अस्पष्ट बातों पर ईमान रखते हैं तथा जो बाते समझ में नहीं आतीं उन्हें आलिमों से हल करवाते हैं। (५) इसकी एक - एक बात का पालन करते हैं। (फ़तहुल क़दीर) वास्तविकता यह है कि पढ़ने के अधिकार क्षेत्र में इन सारे ही भावार्थों का समावेश है तथा मार्गदर्शन ऐसे ही लोगों के भाग में आता है जो वर्णित बातों का प्रयोजन करते हैं।

[3]अहले किताब में से जो नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर ईमान नहीं लायेगा, वह नरक में जायेगा। जैसा कि बुख़ारी तथा मुस्लिम में है। (इब्ने कसीर)

وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

स्वीकार किया जायेगा, न उसे कोई सिफ़ारिश लाभ पहुँचा सकेगी, न उसकी सहायता की जाएगी।

وَاِذِ ابْتَلٰۤى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) तथा जब इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) की उनके प्रभु ने कई-कई बातों से परीक्षा ली,[1] तथा उन्होंने सभी को पूरा कर दिखाया तो (अल्लाह ने) फ़रमाया कि मैं तुम्हें लोगों का नायक बना दूँगा। पूछा – तथा मेरी संतान को,[2] उत्तर दिया कि मेरा वायदा अत्याचारियों से नहीं।

---

[1]शब्द से तात्पर्य धार्मिक आदेश, हज के नियम, पुत्र की बलि, हिजरत, नमरुद की अग्नि, आदि वह सभी परीक्षायें हैं जिनसे आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम* गुज़ारे गये, तथा वह हर परीक्षा में सफल रहे जिसके परिणाम स्वरुप मनुष्यों के मुखिया पद से सम्मानित किये गये। अतः मुसलमान ही नहीं यहूदी, इसाई यहाँ तक कि अरब के मूर्तिपूजकों, सब ही में उनके व्यक्तित्व का सम्मान है तथा उनको अगुवा माना एवं समझा जाता है।

[2]अल्लाह तआला ने आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम* की उस इच्छा को पूर्ण किया, जिसका वर्णन क़ुरआन मजीद में ही है।

﴿ وَجَعَلْنَا فِىْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ ﴾ [العنكبوت: ٢٧]

"हमने नबूवत तथा किताब उसकी सन्तान को प्रदान की।"

(*सूरः अल-अनकबुत*-२७)

अतः प्रत्येक नबी जिसे अल्लाह ने भेजा तथा प्रत्येक किताब जो आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम* के पश्चात उतरी, इब्राहिम की सन्तान में ही यह श्रृंखला रही। (इब्ने कसीर) उसके साथ ही यह भी फ़रमाया कि "**मेरा वायदा अत्याचारियों से नही**" इस बात का स्पष्टीकरण कर दिया कि इब्राहिम को उतना उच्च सम्मान तथा अल्लाह के द्वारा समर्पित पद के उपरान्त इब्राहिम की सन्तान में जो उद्दण्ड तथा अत्याचारी एंव मूर्तिपूजक होंगे, उनकी सिफ़ारिश तथा सहायता करने वाला कोई न होगा। अल्लाह तआला ने यहाँ पैगम्बर की सन्तान की महिमा महान कहने वालों की जड़ काट दी है। यदि ईमान तथा सत्कर्म नहीं तो महात्मा की सन्तान होना तथा महान व्यक्ति की

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا ط وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ط وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾

(१२५) हमने *बैतुल्लाह* (काअबा) को मनुष्यों के लिए पुण्य तथा शान्ति का स्थान बनाया,[1] तुम *"मुक़ामे इब्राहीम"* (इब्राहीम का स्थान-मस्जिद हराम में एक निर्धारित स्थान का नाम है जो काअबा के द्वार के सामने थोड़ी बायें हटकर है) को "मुसल्ला" (नमाज़ पढ़ने का स्थान) निर्धारित कर लो [2], तथा हमने इब्राहीम और इस्माईल (*अलैहिमुस्सलाम*) से वचन लिया कि मेरे घर को परिक्रमा और एतिकाफ़

सन्तान होनें का अल्लाह के दरबार में क्या महत्व होगा ? नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का कहना है।

«مَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ».

जिसको उसका कर्म पीछे छोड़ गया, उसको उसका वंश आगे न बढ़ा सकेगा। (सहीह मुस्लिम)

[1]आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम* के सम्बन्ध से जो इसके प्रथम निर्माता हैं, *बैतुल्लाह* की दो विशेषतायें अल्लाह तआला ने यहाँ वर्णन की। प्रथम ﴿مَثَابَةً لِّلنَّاسِ﴾ (लोगों के लिए पुण्य का स्थान) दूसरा अर्थ है बार-बार लौटकर आने का स्थान। जो एक बार *बैतुल्लाह* के दर्शन का सौभाग्य पा गया, वह दुबारा बारम्बार आने के लिए व्याकुल रहता है। यह ऐसी कामना है जिसकी तृप्ति नहीं होती अपितु दिन-प्रतिदिन व्याकुलता में वृद्धि ही होती है। दूसरी विशेषता 'शान्तिस्थली' अर्थात यहाँ किसी शत्रु का भी भय नहीं रहता। अत: अज्ञान काल में भी लोग किसी शत्रु से "*हरम*" की सीमा में प्राणघातक बदला नहीं लेते थे। इस्लाम ने इसके इस सम्मान को शेष रखा तथा इसको विस्तृत करके इसके पालन पर बल दिया।

[2]'**इब्राहिम का स्थान**' से तात्पर्य वह पत्थर है, जिस पर खड़े होकर आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम काअ़बा* का निर्माण करते थे। इस पत्थर पर आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम* के पद चिन्ह हैं। अब इस पत्थर को एक शीशे में सुरक्षित कर दिया गया है। जिसे प्रत्येक हाजी तथा उमरा करने वाला व्यक्ति *बैतुल्लाह* के दर्शन के समय देख सकता है। इस स्थान पर परिक्रमा पूर्ण करने के पश्चात दो *रकाअत नमाज़* पढ़ना *सुन्नत* है।

करने वालों तथा रुकुउ करने एवं सजद: करने वालों के लिए पवित्र एवं शुध्द रखो।

(१२६) तथा जब इब्राहीम ने कहा, हे प्रभु ! तू इस स्थान को शान्तिमय नगर बना तथा यहाँ के निवासियों को जो अल्लाह तथा क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हों, फलों की वृद्धि प्रदान कर ।[1] अल्लाह (तआला) ने कहा कि मैं काफ़िरों को भी थोड़ा लाभ दूँगा, फिर उन्हें आग की यातना की ओर विवश कर दूँगा। यह पहुँचने का बुरा स्थान है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّ ٱجْعَلْ هَـٰذَا بَلَدًا ءَامِنًا وَٱرْزُقْ أَهْلَهُۥ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ مَنْ ءَامَنَ مِنْهُم بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْـَٔاخِرِ ۖ قَالَ وَمَن كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُۥ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُۥٓ إِلَىٰ عَذَابِ ٱلنَّارِ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿١٢٦﴾

(१२७) इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) तथा इस्माईल (*अलैहिस्सलाम*) काअ़बा की बुनियाद (तथा दीवारें) उठाते जाते थे तथा कहते जाते थे कि ऐ हमारे पालनहार ! तू हमसे स्वीकार कर तू ही सुनने वाला तथा जानने वाला है।

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَٰهِـۧمُ ٱلْقَوَاعِدَ مِنَ ٱلْبَيْتِ وَإِسْمَـٰعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾

(१२८) हे हमारे पोषक ! हमें अपना आज्ञाकारी बना तथा हमारी संतान में से एक समूह को अपना आज्ञाकारी बना तथा हमें अपनी इबादतें सिखा एवं हमारी याचना स्वीकार कर। तू क्षमावान, दयानिधि है।

رَبَّنَا وَٱجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَآ أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾

[1] अल्लाह तआला ने आदरणीय इब्राहिम की ये प्रार्थनायें स्वीकार कीं, यह नगर शान्ति कि नगरी भी है, तथा अकृष्ट भूमि होने के उपरान्त भी संसार के सभी फल तथा हर प्रकार के अनाज की अधिकता को देख कर मनुष्य आश्चर्यचकित हो जाता है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾

(१२९) हे हमारे पोषक ! उन में, उन्हीं में से एक रसूल (ईशदूत) भेज,[1] जो उनके पास तेरी आयतें पढ़ें तथा उन्हें धर्मशास्त्र एवं विज्ञान सिखाऐं[2] तथा उन्हें शुद्ध करें ।[3] निःसन्देह तू प्रभावशाली एवं विवेकी है ।

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ إِبْرٰهٖمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ ۚ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) इब्राहीम के धर्म से वही विमुख होगा जो स्वयं मूर्ख हो, हमने तो उसे संसार में भी अपना लिया तथा परलोक में भी वह सत्कर्मियों में से है ।[4]

---

[1]यह आदरणीय इब्राहीम तथा इस्माईल की अन्तिम प्रार्थना है। यह भी अल्लाह तआला ने स्वीकार किया तथा आदरणीय इस्माईल *अलैहिस्सलाम* की संतान में से परम आदरणीय *मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को *रसूल* बनाया। इसीलिए नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

«أَنَا دَعوةُ أَبي إبراهيم ، وَبَشَارةُ عِيسىٰ ورُؤْيَا أُمي التي رَأَت»

"मैं अपने पिता आदरणीय इब्राहीम *अलैहिस्सलाम* की प्रार्थना, आदरणीय ईसा की शुभ सूचना तथा अपनी माता का स्वप्न हूँ।" (मुसनद अहमद ससंदर्भ इब्ने कसीर)

अरब के समाज में परम पितामह को भी पिता से ही सम्मान स्वरुप सम्बोधित करते हैं।

[2]किताब से तात्पर्य क़ुरआन करीम तथा विज्ञान से तात्पर्य हदीस है। *आयतों* को पढ़ने के पश्चात किताब तथा *सुन्नत* की शिक्षा के वर्णन से ज्ञात होता है कि क़ुरआन मजीद का मात्र पढ़ना भी प्रिय तथा नेकी एवं पुण्य का कारण है। यदि उनका भावार्थ भी समझ में आता जाए तो *सुब्हानल्लाह*, सोने पर सोहागा है। परन्तु यदि क़ुरआन का अनुवाद तथा भावार्थ समझ में नहीं आता तब भी उसके पढ़नें में अलस्य उचित नहीं है क़ुरआन का पढ़ना स्वयं एक अलग पुण्य का कार्य है।

[3]क़ुरआन के पढ़ने एवं किताब की शिक्षा एवं बुद्धिमत्ता पूर्ण शिक्षा के पश्चात आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के दूत कर्म का यह चौथा उद्देश्य है कि उन्हें बहुदेववाद तथा अंधविश्वास की गन्दगी से तथा चरित्र एवं व्यवहार के दुर्गुणों से पवित्र करें।

[4]अरबी भाषा में رغب का सम्बन्ध عن से हो तो, उसका अर्थ अनिच्छा होता है। यहाँ अल्लाह तआला, आदरणीय इब्राहीम *अलैहिस्सलाम* के उन मान-सम्मान का वर्णन कर रहा है जो अल्लाह तआला ने उन्हें संसार तथा परलोक में प्रदान किए हैं तथा यह भी

(१३१) जब (भी) उनके पोषक ने कहा कि आत्मसर्मपण कर दो तो कहा कि मैंने विश्व के स्वामी के लिए आत्मसर्मपण कर दिया ।[1]	إِذْ قَالَ لَهُۥ رَبُّهُۥٓ أَسْلِمْ ۖ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٣١﴾
(१३२) इसी की वसीयत इब्राहीम तथा याकुब ने अपनी संतान को की, कि हमारे बच्चों ! अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए इस धर्म को निर्धारित कर दिया है, सावधान ! तुम मुसलमान ही मरना ।[2]	وَوَصَّىٰ بِهَآ إِبْرَٰهِۦمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يَٰبَنِىَّ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰ لَكُمُ ٱلدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٢﴾
(१३३) क्या तुम (आदरणीय) याकूब की मृत्यु के समय उपस्थित थे ?[3] जब उन्होंने अपनी	أَمْ كُنتُمْ شُهَدَآءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ ٱلْمَوْتُ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ

स्पष्ट कर दिया कि इब्राहीम के समुदाय से मुख मोड़ना तथा अनिच्छा व्यक्त करना मूर्खों का कार्य है, किसी बुद्धिमान से यह कल्पना भी नहीं की जा सकती।

[1]यह सम्मान तथा महत्व इसलिए प्राप्त हुआ कि उन्होंने आज्ञापालन तथा अनुकरण का अद्वितीय नमूना पेश किया।

[2]आदरणीय इब्राहीम *अलैहिस्सलाम* तथा आदरणीय याक़ूब *अलैहिस्सलाम* ने الدين (सत्य धर्म) की वसीयत अपनी संतान को किया जो यहूदी धर्म नही इस्लाम धर्म ही है। जैसा कि यहां भी इसका स्पष्टीकरण विद्यमान है तथा क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर भी इसका विस्तृत वर्णन है।

[3]यहूदियों को चेतावनी तथा सावधान किया जा रहा है कि तुम जो यह दावा करते हो कि इब्राहीम तथा याक़ूब ने अपनी संतान को यहूदी धर्म पर दृढ़ रहने की वसीयत की थी, तो क्या तुम *वसीयत* के समय उपस्थित थे ? यदि वे कहें कि वे उपस्थित थे, तो वे झूठे तथा पाखण्डी हुए तथा यदि कहें कि उपस्थित नहीं थे तो उनका वर्णित दावा असत्य सिद्ध हुआ क्योंकि उन्होंने जो वसीयत की थी वह इस्लाम की थी न कि यहूदी धर्म की, न इसाई धर्म की, न मूर्तिपूजा की। सभी *नबियों* का धर्म इस्लाम धर्म था। यद्यपि नियमों तथा विषयों में थोड़ा अन्तर रहा है। इसको नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने इन शब्दों में वर्णन किया है।

«الأَنْبِيَاءُ أَوْلَادُ عَلَّاتٍ، أُمَّهَاتُهُمْ شَتَّى، وَدِينُهُمْ وَاحِدٌ».

"नबियों का गिरोह" 'अल्लात' संतान की भाँति हैं, इनकी माताएं भिन्न (तथा पिता एक) हैं तथा उनका धर्म एक ही हैं। (सहीह बुख़ारी किताबुल अम्बिया)

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِيْ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾

संतान से कहा कि तुम मेरी मृत्यु के पश्चात किस की इबादत करोगे, तो सभी ने उत्तर दिया था कि आपके प्रभु की तथा आपके पूर्वज इब्राहीम तथा इस्माईल एवं इसहाक के ईष्टदेव की, जो एक ही है। तथा हम उसी के आज्ञापालक रहेंगे।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾

(१३४) यह समुदाय तो गुज़र चुका, जो उन्होंने किया वो उनके लिए है तथा जो तुम करोगे वह तुम्हारे लिए है। उनके कर्मों के विषय में तुमसे नहीं पूछा जाएगा।[1]

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾

(१३५) ये कहते हैं कि यहूदी तथा इसाई बन जाओ तो मार्गदर्शन पाओगे, तुम कहो कि सही मार्ग पर तो इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) के अनुयायी हैं, तथा इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) मात्र अल्लाह के आज्ञाकारी थे वे मूर्तिपूजक नहीं थे।[2]

---

[1]यह भी यहूदियों को कहा जा रहा है कि तुम्हारे पूर्वजों में जो नबी तथा सत्कर्मी हो चुके हैं। उनसे सम्बन्ध का कोई लाभ नहीं। उन्होंने जो कुछ भी किया उसका बदला उन्हीं को मिलेगा, तुम्हें नहीं, तुम्हें तो वही कुछ मिलेगा, जैसा तुम कर्म करोगे। इससे ज्ञात हुआ कि पूर्वजों के पुण्यात्मक कार्यों पर भरोसा तथा आश्रित होना ग़लत है। वास्तविक चीज़ ईमान तथा पुण्य कार्य ही हैं। यह पूर्व के पुण्यकर्ताओं का भी धर्म था तथा *क़ियामत* तक आने वाले लोगों के मोक्ष का एक मात्र साधन है।

[2]यहूदी, मुसलमानों को यहूदी धर्म की तथा इसाई, इसाई धर्म की आमन्त्रण देते तथा कहते कि मार्गदर्शन का प्रकाश इसी में है। अल्लाह तआला ने कहा कि उनसे कहो कि प्रकाश इब्राहीम के धर्म के अनुकरण में है, जो *हनीफ* था (अर्थात एक मात्र अल्लाह ही का अनुयायी तथा उसकी *इबादत* करने वाला) वह मूर्तिपूजक नहीं था, जबकि यहूदी धर्म तथा इसाई धर्म दोनों में मूर्तिपूजा का समावेश है। अब दुर्भाग्य से मुसलमानों में भी मूर्तिपूजन के प्रदर्शन सामान्य रुप से हो रहे हैं, इस्लाम की शिक्षा بحمد الله क़ुरआन तथा हदीस में सुरक्षित हैं, जिनमें एकेश्वरवाद की आधारशिला एवं शिक्षा किसी प्रकार से धूमिल

(१३६) (ऐ मुसलमानों !) तुम सब कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये तथा उस पर भी जो हमारी ओर उतारी गई तथा जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक तथा याकूब एवं उनकी संतान पर उतारी गई तथा जो कुछ अल्लाह की ओर से मूसा, ईसा तथा अन्य नबियों को दिये गए। हम उनमें से किसी के मध्य अन्तर नहीं करते, हम अल्लाह के आज्ञाकारी हैं।[1]

قُولُوٓا ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْنَا
وَمَآ أُنزِلَ إِلَىٰٓ إِبْرَٰهِۦمَ وَإِسْمَٰعِيلَ
وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ وَٱلْأَسْبَاطِ
وَمَآ أُوتِىَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ
وَمَآ أُوتِىَ ٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ
وَنَحْنُ لَهُۥ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾

(१३७) यदि वह तुम जैसा ईमान लाए तो मार्गदर्शन पाएंगे, तथा यदि मुँह मोड़े तो विरोध में हैं, अल्लाह (तआला) उनसे निकट भविष्य में तुम्हारी सहायता करेगा।[2] वह उचित रुप से सुनने तथा जानने वाला है।

فَإِنْ ءَامَنُوا بِمِثْلِ مَآ ءَامَنتُم بِهِۦ فَقَدِ
ٱهْتَدَوا ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ
فِى شِقَاقٍ ۖ فَسَيَكْفِيكَهُمُ ٱللَّهُ ۚ
وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾

न होकर अतिस्पष्ट रुप में है, जिससे यहूदी, इसाई तथा मूर्तिपूजक धर्मों (दो देवताओं में आस्था रखने वाले) से इस्लाम की भिन्नता स्पष्ट है, परन्तु मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या के कर्म तथा विश्वास में जो मूर्तिपूजन प्रक्रिया की कल्पनाओं ने प्रवेश कर लिया है, उसने इस्लाम की छवि को संसार की दृष्टि से धूमिल तथा ओझल कर दिया है। क्योंकि अन्य धर्म के अनुयायियों की पहुँच सीधे क़ुरआन तथा हदीस तक तो नहीं हो सकती। वह मुसलमानों के कर्मों को देखकर ही अनुमान करेंगे कि इस्लाम में तथा अन्य मूर्तिपूजा से प्रदूषित धर्म के मध्य कोई अन्तर ही नही प्रकट हो रहा है। अगली *आयात* में ईमान का सिद्धान्त बताया जा रहा है।

[1]अर्थात ईमान यह है कि सभी *नबियों* को अल्लाह तआला की ओर से जो कुछ मिला अथवा उन पर उतरा, सभी पर ईमान लाया जाए, किसी भी किताब अथवा *रसूल* को अस्वीकार न किया जाए। किसी एक किताब अथवा नबी को मानना, किसी को न मानना, यह *नबियों* में अन्तर व्यक्त करता है जिसे इस्लाम ने उचित नही कहा है। परन्तु अब कर्म केवल क़ुरआन करीम के नियमों तथा आदेशानुसार होंगे, पूर्व किताबों में लिखी हुई के अनुसार नहीं, क्योंकि प्रथम तो वे अपने मूलरुप में नहीं है, परिवर्तित हैं, दूसरे क़ुरआन ने उन सभी के आदेशों को निरस्त कर दिया है।

[2]सहाबा किराम (رضي الله عنهم) भी इसी वर्णित नियमानुसार ईमान लाये थे, इसीलिए सहाबा का उदाहरण देते हुए कहा जारहा है कि, यदि वे इसी प्रकार ईमान लायें, जिस

(१३८) अल्लाह का रंग अपनाओ तथा अल्लाह (तआला) से अच्छा रंग किसका होगा ?[1] हम तो उसी की इबादत करने वाले हैं।

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾

(१३९) (आप) कह दीजिए क्या तुम हमसे अल्लाह के विषय में झगड़ते हो, जो हमारा तथा तुम्हारा प्रभु है, हमारे लिए हमारे कर्म हैं, तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म, हम तो उसी के लिए शुद्धरुप से हैं।[2]

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾

प्रकार ऐ सहाबा (رضی الله عنهم) तुम ईमान लाए हो तो अवश्य उन्हें मार्गदर्शन प्राप्त हो जाएगा। यदि वे द्वेष तथा मतभेद के कारण मुँह मोड़ लेंगे तो घबराने की आवश्यकता नहीं है, उनके षडयन्त्र आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे क्योंकि अल्लाह तआला आपका संरक्षण करने वाला है। अत: कुछ वर्षों पश्चात ही यह वायदा पूरा हुआ तथा बनू क़ेनुक़ाअ एवं बनू नदीर कोदेश निष्कासन कर दिया गया तथा बनू कुरैज़ा मार डाले गये। इतिहासिक कथन में है कि आदरणीय उस्मान (رضی الله عنه) की *शहादत* के समय क़ुरआन उनकी गोद में था तथा इस *आयत* के वाक्य فسيكفيكهم الله पर उनके शरीर के रक्त के छींटे गिरे बल्कि रक्त की धार भी। यह क़ुरआन आज भी तुर्की के पुरातत्व विभाग में सुरक्षित रखा हुआ है।

[1]इसाईयों ने एक पीले रंग का पानी निर्धारित कर रखा है, जो प्रत्येक इसाई बालक को तथा प्रत्येक उस व्यक्ति को भी दिया जाता है जिसका उद्देश्य इसाई धर्म स्वीकार करना होता है। इस रीति का नाम उनके यहाँ "बैप्टिज़्म" है। यह उनके यहाँ अति आवश्यक है इसके बिना वे किसी के पवित्र होने की कल्पना नहीं करते। अल्लाह तआला ने उनका खण्डन किया है तथा कहा है कि वास्तविक रंग तो अल्लाह का रंग है। उससे श्रेष्ठ कोई रंग नहीं। अल्लाह के रंग का तात्पर्य वह प्राकृतिक धर्म है, अर्थात इस्लाम धर्म है, जिसकी ओर प्रत्येक नबी ने अपने-अपने काल में अपने-अपने समुदाय कोआमंत्रण दिया। अर्थात 'एकेश्वरवाद' का आमंत्रण।

[2]क्या तुम हमसे इसलिए झगड़ते हो कि हम एक अल्लाह की *इबादत* करते हैं, उसी के लिए शुद्धरूप से पक्षधर की भावना रखते हैं तथा उसके द्वारा वैधता का पालन तथा निषेध से बचाव करते हैं, यद्यपि वह हमारा ही प्रभु नहीं तुम्हारा भी है तथा तुम्हें भी उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा हम करते हैं। यदि तुम ऐसा नहीं करते तो तुम्हारा कर्म तुम्हारे साथ, हमारा कर्म हमारे साथ। हम तो उसी के लिए शुद्ध रुप से कार्य करते हैं।

(१४०) क्या तुम कहते हो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़ तथा याक़ूब एवं उनकी संतान यहूदी अथवा इसाई थी ? कह दो क्या तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह (तआला) ?[1] अल्लाह के पास प्रमाण छुपाने वालों से अधिक अत्याचारी अन्य कौन है ? तथा अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों से अचेत नहीं ।[2]

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَٰهِـۧمَ وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ وَٱلْأَسْبَاطَ كَانُوا۟ هُودًا أَوْ نَصَٰرَىٰ ۗ قُلْ ءَأَنتُمْ أَعْلَمُ أَمِ ٱللَّهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَتَمَ شَهَٰدَةً عِندَهُۥ مِنَ ٱللَّهِ ۗ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾

(१४१) यह समुदाय है जो गुज़र चुका, जो उन्होंने किया उनके लिए है तथा जो तुमने किया तुम्हारे लिये, तुमसे उनके कर्मों के विषय में प्रश्न नहीं किया जाएगा ।[3]

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْـَٔلُونَ عَمَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

---

[1]तुम कहते हो ये *नबियों* का गिरोह तथा उसकी संतानें यहूदी अथवा इसाई थीं, जबकि अल्लाह तआला उसका खण्डन कर रहा है । अब तुम्हीं बताओ कि अधिक ज्ञान अल्लाह को है या तुम्हें ?

[2]तुम्हें ज्ञात है कि ये नबी, यहूदी अथवा इसाई नहीं थे, इसी प्रकार तुम्हारी किताबों में परम आदरणीय *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की निशानियाँ हैं, परन्तु उन प्रमाणों को लोगों से छिपाकर एक बड़ा अत्याचार कर रहे हो, जो अल्लाह तआला से छिपा नहीं है ।

[3]इस *आयत* में पुन: लाभ तथा कर्म की विशेषता का वर्णन करके पर्वजों तथा महात्माओं से सम्बन्ध अथवा उन पर भरोसे को निरर्थक बताया गया है । क्योंकि

«مَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ».

"जिसको उसका कर्म पीछे छोड़ गया, उसका वंश उसे आगे नही बढ़ाएगा ।"

(सहीह मुस्लिम)

अर्थ है कि पूर्वजों के पुण्य से तुम्हें कोई लाभ तथा उनके पापों पर तुम से कोई पूछताछ न होगी , अपितु उनके कर्मों के विषय में तुम से अथवा तुम्हारे कर्मों के विषय में उनसे नहीं पूछा जाएगा ।

﴿ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴾ [فاطر: ١٨]

"कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा" (सूर: फातिर-१८)

﴿ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَٰنِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴾ [النجم: ٣٩]

मनुष्य के लिए वही कुछ है जिसके लिए उसने प्रयत्न किया । (सूर: अल-नजम -३९)

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَن قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُل لِّلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٤٢﴾

(१४२) निकट ही मूर्ख लोग कहेंगे कि जिस क़िबला (जिस दिशा की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ी जाती है) पर यह थे उससे इन्हें किस विषय ने फेर दिया ? (आप) कह दीजिए कि पूर्व तथा पश्चिम का मालिक अल्लाह (तआला) है वह जिसे चाहे सीधा मार्ग दर्शाता है ।[1]

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ

(१४३) तथा हमने इसी प्रकार तुम्हें माध्यम (संतुलित) समुदाय बनाया है ।[2] ताकि तुम

---

[1]जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का से हिजरत करके मदीना पधारे तो १६-१७ महीने तक बैतुल मक़दिस की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ते रहे । जबकि हार्दिक इच्छा थी कि ख़ानये काअबा की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ी जाये । जो आदरणीय इब्राहीम का क़िबला था । इसके लिए आप प्रार्थना भी करते तथा बार-बार आप आकाश की ओर दृष्टि करते । अन्त में अल्लाह तआला ने क़िबले के परिवर्तन का आदेश दे ही दिया जिस पर यहूदी तथा भ्रष्टाचारियों ने शोर मचाया । यद्यपि नमाज़ अल्लाह की इबादत है तथा इबादत में उपासक (इबादत करने वाला) को जिस प्रकार का आदेश होता है, उस प्रकार करने के लिए वह बाध्य होता है इसलिए जिस ओर अल्लाह ने मुख फेर दिया उस ओर फिर जाना अनिवार्य था । इसके अतिरिक्त जिस अल्लाह की इबादत करनी है पूर्व, पश्चिम दिशायें उसी की हैं, इसलिए दिशाओं का कोई महत्व नहीं, प्रत्येक दिशा में अल्लाह की इबादत हो सकती है, यदि उस दिशा को अपनाने का अल्लाह ने आदेश दिया हो । क़िबला परिवर्तन का यह आदेश "असर" की नमाज़ के समय आया तथा असर की नमाज़ ख़ानये काअ़बा की ओर मुख करके पढ़ी गयी ।

[2] وسط का शब्दार्थ है, 'मध्य', परन्तु यह महानता तथा श्रेष्ठता के लिए भी प्रयुक्त होता है, यहां इसी अर्थ में प्रयोग हुआ है अर्थात जिस प्रकार तुम्हें सर्वश्रेष्ठ क़िबला प्रदान किया गया है, उसी प्रकार तुम्हें सर्वश्रेष्ठ समुदाय भी बनाया गया है । उद्देश्य यह है कि तुम लोगों पर गवाही दो । जैसा कि अन्य स्थान पर है[الحج: ٧٨]﴿ لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ﴾ (सूर: *अल-हज्ज,७८*) रसूल तुम पर और तुम लोगों पर गवाह हो । इसका स्पष्टीकरण कुछ हदीसों मे इस प्रकार आया है कि जब अल्लाह तआला पैग़म्बरों (ईशदूतों) से क़ियामत के दिन पूछेगा कि तुमने मेरा संदेश लोगों तक पहुँचाया था वह सकारात्मक उत्तर देगें अल्लाह तआला पूछेगा कि तुम्हारा कोई गवाह है ? वह कहेंगे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा उनके अनुयायी । अत: यह अनुयायी गवाही देंगे इसलिए

وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّن يَنقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ ۚ وَإِن كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤٣﴾

लोगों पर साक्षी हो जाओ तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम पर साक्षी हो जाएं जिस क़िबले पर तुम पूर्व से थे, उसे हमने केवल इसलिए निर्धारित किया था कि हम जान लें कि रसूल के सच्चे अनुयायी कौन-कौन हैं तथा कौन है जो अपनी एड़ियों के बल पलट जाता है,[1] यद्यपि यह कार्य कठिन है, परन्तु जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दर्शन प्रदान किया है (उन पर कोई कठिनाई नहीं) अल्लाह (तआला) तुम्हारा ईमान नष्ट नही करेगा,[2] अल्लाह (तआला) लोगों के साथ प्रेम तथा कृपा करने वाला है।

इसका अनुवाद न्यायकर्त्ता भी किया गया है। (इब्ने कसीर) एक अर्थ وسط, के मध्यम के भी किये गये हैं, अर्थात मध्यम समुदाय-अर्थात अधिकता अथवा कमी करने से शुद्ध। यह इस्लाम की शिक्षाओं के आधार पर है कि इसमें मध्यमता है, न अधिकता न कमी।

[1]यह क़िबला परिवर्तन का एक कारण बताया गया है। ईमानवाले, सच्चे लोग तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों के इशारे की प्रतीक्षा में रहा करते थे, इसलिए उनके लिए इधर से उधर फिर जाना कोई कठिन कार्य न था बल्कि एक स्थान पर तो नमाज की स्थिति में जबकि वे रूकूअ में थे यह आदेश पहुँचा तो उन्होंने रूकूअ में ही अपना मुख ख़ानये काअ़बा की ओर कर लिया। यह मस्जिदे क़िबलतैन (अर्थात वह मस्जिद जिसमें एक नमाज़ दो क़िबलों की ओर मुख करके पढ़ी गयी हो) कहलाती है। ऐसी ही घटना मस्जिदे क़ुबा में भी हुई। لنعلم (कि हम जान लें) अल्लाह को तो पूर्व ही ज्ञान था, इसका अर्थ है कि हम विश्वासी लोगों में से सन्देह करने वालों को अलग कर दें ताकि लोगों के समक्ष दोनों प्रकार के लोग स्पष्ट हो जायें। (फ़तहुल क़दीर)

[2]कुछ सहाबा की वुद्धि में यह शंका उत्पन्न हुई कि जिन सहाबियों की बैतुल मक़दिस की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ने के समय में मृत्यु हो गयी अथवा हम जितने समय तक उस ओर मुख करके नमाज़ पढ़ते रहे हैं, ये व्यर्थ हो गईं, अथवा शायद उनका पुण्य नहीं प्राप्त होगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ये नमाज़ें नष्ट नहीं होंगी, तुम्हें पूरा पुण्य प्राप्त होगा। यहाँ नमाज़ को ईमान से वर्णन करके यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि नमाज़ के

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ
فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۖ فَوَلِّ
وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَحَيْثُ
مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۗ
وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۗ
وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٤﴾

(१४४) हम आपके मुख को आकाश की ओर,वार-बार उठते हुए देख रहे हैं। अब हम आपको उस क़िबले की ओर फेर देंगे, जिससे आप प्रसन्न हो जाएं। आप अपना मुख मस्जिद हराम (कअ़बा) की ओर फेर लें तथा आप जहां कहीं भी हों आप अपना मुख उसी ओर फेरा करें। अहले किताब को इस बात के अल्लाह की ओर से सत्य होने का वास्तविक ज्ञान है।[1] तथा अल्लाह तआला उन कर्मों से अचेत नहीं, जो ये करते हैं।

وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ
وَمَا اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا
بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ

(१४५) तथा आप यदि अहले किताब को सभी प्रमाण प्रस्तुत कर दें परन्तु वे आपके क़िबले का अनुकरण नहीं करेंगे[2] तथा न आप उनके क़िबले को मानने वाले,[3] न ये आपस में एक दूसरे के क़िबले को मानने

विना ईमान का कोई महत्व नहीं है। ईमान का तभी महत्व है जब नमाज़ तथा अन्य अल्लाह के आदेशों का पालन होगा।

[1]अहले किताब की विभिन्न धार्मिक पुस्तकों में ख़ानये काअ़बा के अन्तिम नबी का क़िवला होने के स्पष्ट संकेत विद्यमान हैं। इसलिए इसका सत्य होना उन्हें निश्चित रूप से ज्ञात था। परन्तु उनका वंशीय घमण्ड तथा ईर्ष्या, सत्य कोस्वीकारने में बाधित बन गया।

[2]क्योंकि यहूदियों के विरोध का आधार ईर्ष्या तथा द्वेष है, इसलिए उन पर प्रमाण का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अर्थात किसी बात से प्रभावित होने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य का हृदय स्वच्छ हो।

[3]क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की वह्‌यी (प्रकाशनाओं) के पालन करने वाले हैं, जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह की ओर से ऐसा आदेश न मिले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके क़िबले को क्यों अपना सकते हैं।

اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٥﴾

वाले हैं ।[1] यदि आप इसके उपरान्त कि आपके पास ज्ञान आ चुका फिर भी उनकी इच्छाओं की तृप्ति के लए अनुकरण करने लगें तो नि:सन्देह आप भी अत्याचारी हो जाएंगे ।[2]

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾

(१४६) जिन्हें हमने किताब प्रदान की है वे तो इसे ऐसा पहचानते हैं, जैसे कोई अपने पुत्रों को पहचानता है, उनका एक गुट सत्य को पहचान कर फिर छुपाता है ।[3]

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١٤٧﴾

(१४७) आपके प्रभु की ओर से साक्षात सत्य है, सावधान ! आप सन्देह करने वालों में से न हों ।[4]

وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ

(१४८) तथा प्रत्येक व्यक्ति एक न एक ओर आकृष्ट हो रहा है ।[5] तुम पुण्य की ओर

---

[1]यहूदियों का क़िबला शिला बैतुल मक़दिस तथा इसाईयों का बैतुल मक़दिस का पूर्वी भाग है । जब अहले किताब के यह दो गुट भी एक क़िबले पर सहमत नहीं तो मुसलमानों से क्यों आशा करते हैं कि वह इस विषय में उनका पक्ष करेंगे ।

[2]यह चेतावनी पहले गुज़र चुकी है, उद्देश्य समुदाय को सर्तक करना है कि क़ुरआन तथा हदीस के ज्ञान के उपरान्त अहले बिदअत (आधुनीकीकरण करने वाले) के पीछे लगना, अत्याचार तथा भटकाव है ।

[3]यहाँ अहले किताब के एक गुट को सत्य के छुपाने का अपराधी बताया गया है, क्योंकि उनमें एक गुट अब्दुल्लाह बिन सलाम जैसे लोगों का भी था जिन्होंने अपने सत्य एवं शुद्ध हृदय के कारण इस्लाम धर्म धारण किया ।

[4]पैग़म्बर पर अल्लाह की ओर से जो भी आदेश उतरता है, नि:संदेह सत्य है, उसमें शंका व सन्देह का कोई लेश मात्र भी स्थान नहीं ।

[5]अर्थात प्रत्येक धर्मवालों ने अपना प्रिय क़िबला बना रखा है, जिसकी ओर वह मुख करता है । एक अन्य भावार्थ यह है कि प्रत्येक धर्म के लोगों ने अपना एक संविधान तथा विधि बना रखी है, जैसे क़ुरआन मजीद के अन्य स्थान पर है ।

أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤٨﴾

दौड़ो। जहाँ कहीं भी तुम रहोगे, अल्लाह तुम्हें ले आयेगा। अल्लाह (तआला) को हर वस्तु का सामर्थ्य है।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٩﴾

(१४९) तथा आप जहाँ से निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर कर लिया करें, यही सत्य है आप के प्रभु की ओर से। जो कुछ तुम कर रहे हो उससे अल्लाह (तआला) अनजान नहीं।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ

(१५०) तथा जिस स्थान से आप निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेर लें[1] तथा जहाँ कहीं तुम रहो अपना मुख उसी

﴿ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ﴾

(*सूरः अल-मायदः-४८*) अर्थात अल्लाह तआला ने मार्ग दर्शन तथा मार्गभ्रंश दोनों के स्पष्टीकरण के पश्चात, मनुष्य को उन दोनों में से किसी को अपनाने की जो स्वतंत्रता प्रदान की है, उसके कारण विभिन्न विधियाँ तथा नियम लोगों ने बना लिये हैं, जो एक दूसरे से भिन्न हैं। अल्लाह तआला चाहता तो सभी को एक ही मार्ग पर सहमत कर देता परन्तु यह अधिकारों से वंचित किये बिना संभव न था तथा अधिकार देने का तात्पर्य उनकी परीक्षा लेना है। इसलिए हे मुसलमानों ! तुम भलाईयों की ओर आगे रहो अर्थात पुण्य तथा भलाई के मार्ग पर अग्रसर रहो तथा यह अल्लाह की वह्‌यी तथा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग का अनुकरण करो, यही सत्य मार्ग है जिससे अन्य धर्मावलम्बी वंचित हैं।

[1]क़िबले की ओर मुख फेर लेने के आदेश को तीन बार दोहराया गया है। या तो इस पर बल देने तथा महत्व दिखाने के लिए अथवा यह चूँकि आदेश निरस्तीकरण का प्रथम अनुभव था, इसलिए मानसिक संशय को दूर करने के लिए आवश्यक था कि इसे बार-बार दोहरा कर मस्तिष्क में बसा दिया जाए। अथवा विभिन्न कारणों से ऐसा किया गया। एक कारण नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईच्छा तथा प्रसन्नता थी, वहाँ इसे वर्णित किया। दूसरा कारण प्रत्येक समुदाय के व्यक्ति तथा आमन्त्रित करने वाले के लिए एक स्थाई केन्द्र की स्थापना है, वहाँ इसे दुहराया, तीसरा कारण विरोधियों के आरोपों का खण्डन करने के लिए वर्णन किया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٠﴾

ओर कर लिया करो, ताकि लोगों को कोई आपत्ति तुम पर शेष न रह जाए।[1] उनके सिवाय जिन्होंने उनमें से अत्याचार किये हैं।[2] तुम उनसे मत डरो।[3] मुझसे ही डरो। ताकि मैं अपनी अनुकम्पा तुम पर पूरी कर दूँ तथा इसलिए भी कि तुम मार्ग दर्शन प्राप्त कर सको।

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ

(१५१) जिस प्रकार[4] हमने तुममें तुम्हीं में से रसूल (ईशदूत-मोहम्मद स॰अ॰व॰) को भेजा, जो हमारी आयतें (पवित्र क़ुरआन के सूत्र) तुम्हारे समक्ष पाठ करता है तथा तुम्हें शुद्ध

---

[1]अर्थात अहले किताब यह न कह सकें कि हमारी किताबों में तो उनका क़िबला ख़ानये काअ़बा है तथा नमाज़ यह बैतुल मक़दिस की ओर मुख करके पढ़ते हैं।

[2]यहां ظلموا से तात्पर्य द्वेष तथा ईर्ष्या रखने वाले लोग हैं। अर्थात अहले किताब में से जो द्वेष रखने वाले हैं वह यह जानने के उपरान्त कि अन्तिम पैग़म्बर का क़िबला ख़ानये काअ़बा ही होगा, ईर्ष्या तथा द्वेष के कारण कहेंगे कि बैतुल मक़दिस के बजाए ख़ानये काअ़बा को अपना क़िबला बनाकर यह पैग़म्बर अन्ततः अपने पूर्वजों के धर्म ही की ओर आकर्षित हो गया है तथा कुछ के निकट इससे तात्पर्य मक्का के मूर्तिपूजक हैं।

[3]अत्याचारियों से न डरो, अर्थात मूर्तिपूजकों की बातों की चिन्ता न करो। उन्होंने कहा था कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हमारा क़िबला अपना लिया है, निकट भविष्य में हमारा धर्म भी अपना लेंगे। "मुझसे ही डरते रहो।" जो आदेश देता रहूँ उस पर निर्भीक होकर बिना किसी प्रकार की चिन्ता किये कर्म करते रहो। क़िबले के परिवर्तन को मार्गदर्शन प्राप्त करने से तुलना की गई है। कहा गया है कि अल्लाह के आदेश के अनुसार कर्म करने से निःसन्देह मनुष्य समृद्धि तथा पुरस्कार का अधिकारी भी बनता है तथा उसे मार्गदर्शन प्राप्त होने का सौभाग्य भी प्राप्त होता है।

[4] كما (जिस प्रकार) का सम्बन्ध पूर्व कथन से है अर्थात यह सभी सुख-समृद्धि तथा मार्ग दर्शन का सौभाग्य तुम्हें इस प्रकार प्राप्त हुआ जिस प्रकार इससे पूर्व तुम्हारे अन्दर तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुम्हारा शुद्धिकरण करता है, किताब तथा बुद्धिमत्ता की शिक्षा देता तथा जिनका तुम्हें ज्ञान नहीं वह सिखाता है।

وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾

करता है एवं तुम्हें पुस्तक तथा बुद्धि एवं उन बातों का जिनसे तुम अज्ञान थे ज्ञान दे रहा है।

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٢﴾

(१५२) इसलिए तुम मुझे स्मरण करो मैं भी तुम्हें याद करूँगा तथा मेरे कृतज्ञ रहो एवं कृतघ्नता से बचो।[1]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٣﴾

(१५३) हे ईमान वालो ! धैर्य तथा नमाज़ के द्वारा सहायता चाहो, अल्लाह (तआला) धैर्य रखने वालों का साथ देता है।[2]

---

[1]अतएव तुम इन सुख-समृद्धियों के फलस्वरुप मेरा वर्णन तथा कृतज्ञता व्यक्त करते रहो। सुख-समृद्धियों पर कृतघ्नता न करो। वर्णन का अर्थ है हर क्षण अल्लाह को याद करना, अर्थात उसकी तस्बीह (पवित्रता), तहलील (एकता) तथा तकबीर (महिमा) के शब्दों का उच्चारण करना तथा कृतज्ञता का अर्थ है अल्लाह की प्रदान की हुई शक्ति तथा स्फूर्ति को उसकी आज्ञा पालन में ख़र्च करना है। अल्लाह की प्रदान की हुई शक्ति को अल्लाह के आदेशों की अवहेलना में ख़र्च करना यह अल्लाह की कृतघ्नता है। कृतज्ञता व्यक्त करने पर अन्य उपकारों की शुभ सूचना तथा कृतघ्नता पर कठोर यातना की चेतावनी है। ﴿لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ﴾ (सूर: इब्राहीम -७)

[2]मनुष्य की दो ही परिस्थितियाँ होती हैं। सुख-सुविधा (समृद्धि) अथवा दुख एवं विपदा। सुख में अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करने पर बल तथा दुख में धैर्य तथा अल्लाह से सहायता प्राप्त करने पर बल है। हदीस में है "ईमान वालों की समस्या विचित्र है, उसे प्रसन्नता प्राप्त होती है तो अल्लाह को कृतज्ञता व्यक्त करता है तथा दुख पहुँचता है तो धैर्य करता है। दोनों ही परिस्थितियाँ उसके लिए पुण्यकारी हैं।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ोहद व अर-रकाएक बाब-अल-मोमिन अम्रुहु कुल्लुहु ख़ैर, हदीस संख्या-२९९९) धैर्य दो प्रकार का होता है। एक निषेध तथा पाप का परित्याग तथा उससे सुरक्षित रहने के कारण जिन से स्वाद का बलिदान तथा अस्थाई लाभों की हानि होती है, उन पर धैर्य। दूसरा अल्लाह के आदेशों के पालन करने पर जो कठिनाई आए उन्हें धैर्य के साथ सहन करना। कुछ लोगों ने इसकी तुलना इस प्रकार की है। अल्लाह की प्रिय बातों का पालन करना, चाहे इन्द्रीय अथवा शारीरिक रुप से कितनी ही कष्टदायक क्यों न हो तथा अल्लाह को अप्रिय लगने वाली बातों से बचना चाहिए। इच्छाएं तथा स्वाद उसको चाहे कितना ही खींचे। (इब्ने क़सीर)

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾

(१५४) तथा अल्लाह (तआला) के मार्ग में शहीद होने वालों को मृतक न कहो,[1]- वे जीवित हैं, परन्तु तुम नहीं समझते।

وَلَنَبْلُوَنَّكُم بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾

(१५५) तथा हम किसी न किसी प्रकार तुम्हारी परीक्षा अवश्य लेंगे, शत्रु के भय से, भूख-प्यास से धन तथा प्राण एवं फलों की कमी से तथा उन धैर्य रखने वालों को शुभ सूचना दे दीजिए।

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٦﴾

(१५६) उन्हें जब कभी भी कोई कठिनाई आती है, तो कह किया करते हैं कि हम तो स्वयं अल्लाह (तआला) की धरोहर हैं तथा हम उसी की ओर लौटने वाले हैं।

أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾

(१५७) उन पर उनके पोषक की दया एवं कृपा है तथा यही लोग मार्ग प्रदर्शित हैं (सत्य मार्ग पर हैं)[2]

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ

(१५८) अवश्य सफ़ा (पर्वत) एवं मरवह (पर्वत) अल्लाह (तआला) की निशानियों में से

[1] शहीदों को मरा हुआ न कहना उनके मान-सम्मान के लिए है। यह जीवन बरज़ख (आलोक-परलोक के मध्यम का जीवन है) जिसे हमारी बुद्धि समझने में असमर्थ है। यह जीवन सम्मान के अनुसार नबियों, ईमानवालों यहाँ तक कि काफ़िरों को भी प्राप्त है। शहीद की आत्मा तथा कुछ कथनों के अनुसार ईमान वालों की आत्मायें भी एक पक्षी के वक्ष में स्वर्ग में जहाँ चाहती है फिरती है। (इब्ने कसीर तथा *सूरः आले-इमरान*-१६९ देखें)

[2] इन आयतों में धैर्य रखने वालो के लिए शुभ सूचनाएं हैं। हदीस में विपदा के समय ﴿إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ﴾ के साथ «اللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا» पढ़ने की भी विशेषता पर बल दिया गया है। (सहीह मुस्लिम किताबुल जनायज़ बाब मा युकाल इन्दल मुसीबः हदीस संख्या ९१८)

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾

हैं,[1] इसलिए अल्लाह के घर का हज तथा उमरा करने वाले पर इनकी परिक्रमा कर लेने में भी कोई पाप नहीं।[2] अपनी प्रसन्नता से पुण्य करने वालों का अल्लाह सम्मान करता है तथा उन्हें भलीभाँति जानने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ

(१५९) जो लोग हमारी उतारी हुई निशानियों एवं निर्देशों को छुपाते हैं इसके उपरान्त कि हम उसे अपनी किताब (पवित्र क़ुरआन) में लोगों के लिए वर्णन कर चुके हैं उन लोगों

---

[1] شعائر बहुवचन شعيرة का है, जिसका अर्थ चिन्ह के है, यहाँ हज के नियम (जैसे अरफ़ात में रुकना, सअई करना, सफ़ा-मरवह पर्वतों के मध्य निर्धारित मार्ग की परिक्रमा करना, कंकरियाँ मारना, बलि देना से तात्पर्य है जो अल्लाह तआला ने निर्धारित किये हैं।

[2]सफ़ा तथा मरवह के मध्य सअई करना, हज का एक स्तम्भ है। परन्तु क़ुरआन के शब्दों में (कोई पाप नहीं) से कुछ सहाबा को शंका हुई कि शायद यह आवश्यक नही है। आदरणीया आयशा (रज़ी अल्लाह अन्हा) के ज्ञान में जब यह बात आयी तो उन्होंने कहा कि यदि इसका अर्थ यह होता तो अल्लाह तआला इस प्रकार फ़रमाता (فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ لَا يَطَّوَّفَ بِهِمَا) यदि उनकी परिक्रमा न करें तो कोई पाप नहीं। फिर उसके उतरने की विशेषता का वर्णन किया कि मदीना निवासी अंसार, इस्लाम धर्म धारण करने से पूर्व झूठी मूर्ति मनात के नाम का उच्चारण करते, जिसकी पूजा वे मुशल्ल पर्वत पर करते थे। तथा फिर मक्का पहुँचकर ऐसे लोग सफ़ा मरवह के मध्य सअई (परिक्रमा) करना पाप समझते थे। मुसलमान होने के पश्चात उन्होंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके विषय में पूछा तो यह आयत उतरी, जिसमें कहा गया है कि सफ़ा-मरवह के मध्य सअई (परिक्रमा) करना कोई पाप नहीं। (सहीह बुख़ारी किताबुल हज व वजूब अलस्सफ़ा वल मरवह) कुछ लोगों ने इसकी पृष्ठ भूमि यह बतायी है कि अज्ञान काल में कुछ लोगों ने सफ़ा पर्वत पर एक मूर्ति (इसाफ़) तथा मरवह पर्वत पर नायला नाम की मूर्ति रखी हुई थी जिनका वे सअई के मध्य चुम्बन करते थे अथवा स्पर्श करते थे। जब लोग मुसलमान हुए तो उन्होंने समझा कि शायद सफ़ा-मरवह के मध्य सअई पाप हों क्योंकि इस्लाम के पूर्व दो मूर्तियों ही के कारण सफ़ा-मरवह के मध्य सअई करते थे। अल्लाह तआला ने इस आयत में उनकी इस चिन्ता तथा शंका को दूर कर दिया। अब यह सअई आवश्यक है। सफ़ा से प्रारम्भ होकर मरवह पर समाप्त होती है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

اللّٰعِنُوْنَ ﴿١٥٩﴾

पर अल्लाह की तथा सभी धिक्कारने वालों की धिक्कार है।[1]

إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَأَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَأُولٰٓئِكَ أَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾

(१६०) परन्तु वह लोग जो तौबा (क्षमा-याचना) कर लें तथा सुधार कर लें एवं वर्णन करें तो मैं उनकी तौबा स्वीकार कर लेता हूँ, तथा मैं क्षमा-याचना स्वीकार करने वाला तथा कृपा करने वाला हूँ।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾

(१६१) नि:सन्देह जो काफ़िर कुफ़्र की स्थिति में मर जाएं उन पर अल्लाह की तथा फ़रिश्तों की एवं सभी लोगों की धिक्कार है।[2]

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾

(१६२) जिसमें वे सदैव रहेंगे न उनसे यातना हल्की की जाएगी तथा न उन्हें ढील दी जायेगी।

---

[1]अल्लाह तआला ने जो बातें अपनी किताब में उतारी हैं उन्हें छिपाना इतना बड़ा अपराध है कि अल्लाह के धिक्कारने के अतिरिक्त अन्य धिक्कारने वालों द्वारा भी धिक्कारा जाता है। हदीस में है «مَنْ سُئِلَ عَنْ عِلْمٍ فَكَتَمَه، أُلْجِمَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ بِلِجَامٍ مِنْ نَارٍ» (अबू दाऊद किताबुल इल्म बाब कराहिय: मनइल इल्मे,त्रिमिज़ी-हदीस संख्या ६५१, तथा कहते हैं हदीस हसन है) जिससे कोई ऐसी बात पूछी गयी जिसका ज्ञान उसको था तथा उसने उसको छिपाया तो क़ियामत के दिन आग की लगाम उसके मुख में दी जायेगी।

[2]इससे विदित हुआ कि जिस के विषय में सुनिश्चित ज्ञान हो कि उसका निधन कुफ़्र पर हुआ है उस पर धिक्कार की जा सकती है, परन्तु उसके अतिरिक्त किसी घोर पापी मुसलमान पर धिक्कार उचित नहीं है क्योंकि संभव है कि उसने निधन से पूर्व क्षमा याचना कर ली हो अथवा अल्लाह ने उसके अन्य पुण्य कर्मों के कारण उसके पाप क्षमा कर दिये हों जिसका ज्ञान हमें नहीं हो सकता। हाँ जिन कुकर्मों पर धिक्कार का शब्द आया है, उन कुकर्मियों के विषय में यह कहा जा सकता है कि धिक्कार योग्य कर्म कर रहे हैं यदि उन्होंने इसकी क्षमा-याचना न की तो अल्लाह के सदन में तिरष्कृत हो सकते हैं।

وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾

(१६३) तथा तुम सबका ईष्टदेव एक अल्लाह ही है उसके अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं,[1] वह अति कृपालु तथा अति दयालु है।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا

(१६४) आकाश तथा धरती की रचना, रात दिन का फेर बदल, नावों का लोगों को लाभ देनेवाली वस्तुओं को लेकर समुद्र में चलना, आकाश से वर्षा उतार कर मृत धरती को जीवित कर देना,[2] इसमें प्रत्येक प्रकार के जीव को फैला देना, वायु की दिशा परिवर्तन

---

[1]इस आयत में पुन: एकेश्वरवाद का आमन्त्रण दिया गया है। यह एकेश्वरवाद का आमन्त्रण मक्का के मूर्तिपूजकों की समझ में न आने वाला था। उन्होंने कहा ﴿أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ﴾ [ص:٥] (सूर:स्वाद) क्या उसने इतने देवताओं के स्थान पर एक ईष्टदेव बना दिया, यह तो आश्चर्यजनक बात है। इसलिए अगली आयत में उसके एक होने के प्रमाण तथा तर्क वर्णन किये जा रहें हैं।

[2]यह आयत इस आधार पर अति परिपूर्ण है कि सृष्टि की रचना तथा उसके नियन्त्रण एवं संचालन के सम्बन्ध में सात विशेष बातों का एकत्रित वर्णन है जो किसी अन्य आयत में नहीं। १- आकाश तथा धरती की उत्पत्ति, जिसके विस्तार तथा प्रसार के वर्णन की कोई आवश्यकता नहीं। २- रात तथा दिन, एक के बाद दूसरे का आना, दिन को प्रकाश तथा रात को अंधकार करना ताकि जीवन यापन के लिए व्यापार भी हो सके तथा विश्राम भी। फिर रात का लम्बा तथा दिन का छोटा होना फिर उसके विपरीत दिन का लम्बा तथा रात का छोटा होना। ३- समुद्र में नाव तथा जहाज का चलना, जिसके कारण व्यापारिक यात्रा भी होती है तथा अधिक मात्रा में खाद्य सामग्री भी एक स्थान से दूसरे स्थान को स्थानान्तरित होती है। ४- वर्षा जो धरती की उपज तथा सिंचाई के लिए अति आवश्यक है। ५- हर प्रकार के जीव-जन्तुओं का जन्म जो यातायात, कृषि तथा युद्ध में प्रयोग होते हैं तथा मनुष्य के भोजन के लिए एक बड़ा भाग इनसे पूरा होता है। ६- हर प्रकार की वायु, ठंडी भी गर्म भी प्रयोग योग्य भी तथा निष्प्रयोग भी, पूर्वी-पश्चिमी भी तथा उत्तर-दक्षिणी भी। मनुष्य के जीवन तथा उनकी आवश्यकतानुसार। ७- मेघ जिन्हें अल्लाह तआला जहाँ चाहता है बरसाता है। ये सभी बातें क्या अल्लाह तआला के एक होने का प्रमाण नहीं हैं? अवश्य प्रमाण हैं। क्या उसके इस नियन्त्रण तथा संचालन में उसका कोई साझीदार है? नहीं, कदापि नहीं। तो फिर इसको छोड़कर अन्य को ईष्टदेव तथा कष्ट निवारक समझना कहाँ कि बुद्धिमानी है।

مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ وَّتَصْرِيفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٦٤﴾

करना, तथा बादल जो आकाश तथा धरती के मध्य वशवति हैं, इसमें बुद्धिमानों के लिए अल्लाह के सामर्थ्य के चिन्ह हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ۭ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾

(१६५) तथा कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार अन्यों को ठहरा कर उनसे ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिए[1] तथा ईमानवाले अल्लाह से प्रेम में दृढ़ होते हैं,[2] काश कि मूर्तिपूजक जानते जबकि अल्लाह की यातनाओं को देखकर (जान लेंगे) कि सभी सामर्थ्य अल्लाह ही को

---

[1]उपरोक्त प्रत्यक्ष प्रमाणों तथा अकाटय तर्कों के उपरान्त ऐसे लोग हैं जो अल्लाह के साथ अन्य दूसरों को उसका साझीदार बना लेते हैं। तथा उनसे उसी प्रकार प्रेम करते हैं, जिस प्रकार अल्लाह से करना चाहिए। मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय ही ऐसा नहीं था शिर्क के यह प्रदर्शक आज भी हैं, बल्कि इस्लाम के नाम लेवाओं के दिलों में भी यह रोग घर कर गया है। उन्होंने भी अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को तथा महात्माओं, पीरों, फ़कीरों तथा सज्जादा नशीनों को अपना संकटमोचन, कष्टनिवारक तथा चिन्ताहरण बना रखा है। बल्कि उनको उनसे प्रेम अल्लाह से भी अधिक है। एकेश्वरवाद का भाषण उन्हें भी इसी प्रकार कष्टदायक प्रतीत होता है। जिसका दृश्य अल्लाह तआला ने इस आयत में खीचा है।

﴿وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ﴾

तथा जब अकेले अल्लाह का वर्णन किया जाता है तो जो लोग आख़िरत पर विश्वास नहीं रखते, उनके हृदय बंध जाते हैं तथा जब उसके अतिरिक्त अन्य का वर्णन होता है तो प्रसन्न हो जाते हैं। (*सूर: अल्-ज़ुमर ४५*)

[2]परन्तु ईमानवालों को मूर्तिपूजकों के विपरीत अल्लाह तआला से ही अधिक प्रेम होता है। क्योंकि जब मूर्तिपूजक समुद्र के तूफ़ान में फंस जाते हैं तो अपने देवी देवता भूल जाते हैं। वहाँ केवल अल्लाह तआला को पुकारते हैं ﴿فَاِذَا رَكِبُوْا فِى الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ﴾ (*सूर: अनकबूत-६५*) ﴿وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ﴾ (*सूर: लुक़मान-32*) ﴿وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ﴾ (*सूर: यूनुस-२२*)

है तथा अल्लाह (तआला) कठोर यातना देने वाला है। (तो कदापि मूर्तिपूजा न करते)

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾

(१६६) जिस समय मुखिया लोग अपने अनुयायियों से अलग हो जायेंगे तथा यातना को अपनी आँखों से देख लेंगे तथा सभी सम्बन्ध विच्छेदित हो जायेंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾

(१६७) तथा अनुयायी कहने लगेंगे, काश हम दुनियां की ओर पुन: जायें तो हम भी उनसे इसी प्रकार अलग हो जाएं, जैसे ये हमसे हैं। इसी प्रकार अल्लाह तआला उन्हें उनके कर्म दिखाएगा उनको पछतावे के लिए, ये कदापि नरक से न निकल पाएंगे।[1]

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿١٦٨﴾

(१६८) लोगों ! धरती में जितनी भी वैध तथा पवित्र वस्तुएं हैं, उन्हें खाओ-पियो। तथा शैतान के मार्ग पर न चलो,[2] वह तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है।

---

[1]मिश्रणवादी परलोक में धर्मगुरु तथा धर्माचारियों की विवशता तथा विश्वासघात पर पश्चाताप करेंगे, परन्तु इस पश्चाताप का कोई लाभ न होगा। काश संसार में ही मिश्रणवाद से क्षमायाचना कर लें।

[2]अर्थात शैतान के अनुगामी बनकर अल्लाह की अवर्जित की हुई चीज़ों को हराम न कहो जिस प्रकार से मूर्तिपूजकों ने किया कि अपनी मूर्तियों के नाम से समर्पित पशुओं को अपने लिए हराम कर लेते थे। जिसका विस्तृत वर्णन सूर: *अल-अन्आम* में आयेगा। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला फ़रमाता है, मैंने अपने भक्तों को एकेश्वर का मानने वाला बना कर पैदा किया, परन्तु शैतानों ने उनको उनके धर्म से भटका दिया तथा जो वस्तुएं मैंने उनके लिए हलाल की थीं वे उसने उन पर हराम कर दीं। (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्न: व सिफ़त नईमिहा व अहलेहा, बाबुस सिफ़ातिल्लती योरफ़ो बिहा फ़िददुन्या अहलुल: जन्न: व अहलुन्नार संख्या-२८६५)।

(१६९) वह तुम्हें केवल बुराई तथा अश्लीलता का तथा अल्लाह (तआला) पर उन बातों के कहने का आदेश देता है जिनका तुम्हें ज्ञान नहीं।

إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٦٩﴾

(१७०) तथा उनसे जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) की उतारी हुई किताब (धर्मशास्त्र) का पालन करो तो उत्तर देते हैं कि हम तो उस मार्ग का पालन करेंगे जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया, यद्यपि उनके पूर्वज मूर्ख तथा भटके हुए हों।[1]

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۗ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٧٠﴾

(१७१) और काफ़िर उन पशुओं के समान हैं जो अपने चरवाहे की केवल पुकार और स्वर ही को सुनते हैं (समझते नहीं) वह बहरे गूंगे और अंधे हैं, उन्हें बुद्धि नहीं है।[2]

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٧١﴾

---

[1]आज भी अहले बिदअत को समझाया जाए कि इन नई वार्ता का धर्म में कोई मूल नहीं तो वह यही उत्तर देंगे कि ये रीति-रिवाज़ हमारे पूर्वजों से चला आ रहा है। यद्यपि पूर्वज भी धर्म के ज्ञान से अनभिज्ञ तथा मार्गदर्शन से वंचित हो सकते हैं। इसलिए धार्मिक नियमों के प्रमाण के समक्ष पूर्वजों के आज्ञा पालन, इमामों का अनुकरण (बिना प्रमाण के उनकी बात माने जाना) पूर्णतया भटकाव है, अल्लाह तआला मुसलमानों को भटकाव के दलदल से निकाले।

[2]इन काफ़िरों का उदाहरण, जिन्होंने अपने पूर्वजों के अनुसरण में अपनी बुध्दि और ज्ञान को छोड़ दिया है, उन पशुओं के समान है, जिनको चरवाह बुलाता और पुकारता है, तो वह जानवर आवाज़ तो सुनते हैं, परन्तु यह नहीं समझते कि उन्हें क्यों बुलाया एवं पुकारा जा रहा है ? इसी प्रकार यह अनुयायी भी बहरे है कि सत्य की आवाज़ नहीं सुनते, गूंगे है कि सत्य बात मुंह से नहीं निकालते, अंधे है कि सत्य देख नहीं सकते और बुध्दिहीन हैं कि सत्य के आमंत्रण और एकेश्वरवाद और सुन्नत के आमंत्रण के समझने योग्य नहीं हैं। यहाँ दुआ से निकट की आवाज़ और निदाअ से दूर की आवाज़ का अर्थ है।

(१७२) ऐ ईमानवालो ! जो (पवित्र) वस्तुएं हमने तुम्हें प्रदान की हैं, उन्हें खाओ-पियो और अल्लाह (तआला) के कृतज्ञ रहो, यदि तुम मात्र उसी की अराधना करते हो ।[1]

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١٧٢﴾

(१७३) तुम पर मृत एवं रक्त (बहा हुआ), सूअर का माँस और वह प्रत्येक पदार्थ जिस पर अल्लाह के नाम के अतिरिक्त दूसरों के नाम पुकारे जायें निषेध हैं ।[2] परन्तु जो

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ ۖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ

---

[1]इसमें ईमानवालों को उन सभी पदार्थों के खाने का आदेश है, जिन्हें अल्लाह ने हलाल की हैं और उस पर अल्लाह का कृतज्ञ होने की बात कही गयी है । उससे तो एक बात यह ज्ञात हुई कि अल्लाह की वैध की हुई वस्तु ही शुध्द एवं पवित्र हैं । निषेध की हुई वस्तु पवित्र नहीं चाहे वे इन्द्रियों को कितनी ही पसंद क्यों न हो (जैसे पाश्चात्य देशों को सूअर का मांस अत्यधिक रुचिकर है । दूसरी यह कि मूर्तियों के नामों समर्पित पशुओं एवं चीजों को मूर्तिपूजक अपने ऊपर वर्जित कर लेते थे (जिसका विवरण *सूर: अनआम* में है) मूर्तिपूजकों का यह कर्म ग़लत है और इस प्रकार एक उचित वस्तु वर्जित नहीं होती, तुम उनकी तरह वर्जित मत करो (निषेध केवल वही है, जिसका विवरण अगली आयत में है) तीसरी यह कि अगर तुम केवल एक अल्लाह की आराधना करने वाले हो, तो कृतज्ञता की ओर ध्यान दो ।

[2]इस आयत में चार निषेद्धि पदार्थों का वर्णन है, परन्तु इसे संक्षिप्त वाक्य (إِنَّمَا) के साथ वर्णित किया गया है, जिससे मस्तिष्क में भ्रम पैदा होता है कि शायद वर्जित केवल चार यही चीजें हैं, जबकि इनके अतिरिक्त भी वर्जित कई पदार्थ हैं । इसलिए प्रथम तो यह समझ लेना चाहिए कि यह संक्षेप एक विशेष विषय में आया है अर्थात मूर्तिपूजकों के इस कर्म के सम्बन्ध में कि वह वैध पशुओं को भी अवैध कर लेते थे । अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया वह अवैध नहीं, निषेध तो केवल यह हैं । इसलिए इस संक्षिप्त को बढ़ाया गया है अर्थात इसके अतिरिक्त भी अन्य वर्जित हैं जो यहाँ वर्णित नहीं । दूसरी हदीस में दो नियम हैं जो पशुओं के हलाल एवं हराम के लिए वर्णित कर दिये गये हैं । वह आयत की सहीह तफ़सीर (भाष्य) के रूप में सामने रहने चाहिए हिंसक पशुओं में ذوناب (वह नर भक्षी पशु जो कुचलियों से शिकार करें) और पक्षियों में ذو مخلب (जो पंजों से शिकार करें) वर्जित हैं । तीसरे जिन पशुओं का वर्णन हदीस से सिद्ध है, उदाहरणत: गधा, कुत्ता आदि वह भी निषेध हैं, जिससे इस बात का संकेत मिलता है कि हदीस भी क़ुरआन करीम की तरह धर्म का स्रोत है और धर्म के लिए प्रमाण है और धर्म दोनों के मानने से

ही पूर्ण होता है, न कि हदीस को छोड़कर मात्र क़ुरआन से। मृत से तात्पर्य हर प्रकार के वह उचित पशु-पक्षी हैं, जो धर्म विधि के बिना वध किये गये हों अपनी मौत अथवा किसी दुर्घटना से (जिनकी विस्तृत जानकारी अल-मायद: में है) मर गया हो। अथवा धार्मिक नियमों के विरूद्ध उसका वध किया गया हो, उदाहरणत: गला घोंट दिया जाये अथवा पत्थर या लकड़ी से मारा जाये अथवा जिस प्रकार से आजकल मशीन से वध किया जाता है, जिसमें झटके से मारा जाता है, परन्तु हदीस में दो प्रकार के मृत जानवर उचित किये गये हैं, एक मछली, दूसरी टिड्डी, वह इस नियम मृत से अलग हैं। रक्त से तात्पर्य वध के समय बहने वाला ख़ून है। माँस के साथ जो ख़ून लगा रह जाता है वह वैध है। यहाँ भी दो ख़ून हदीस के अनुसार वैध हैं। कलेजी और तिल्ली। सूअर का माँस, यह निर्लज्जता में बदतरीन जानवर है, अल्लाह ने इसे अवैध किया है। وما أهل वह जानवर अथवा कोई और वस्तु जिसे अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे के नाम पर पुकारा जाये। इसका तात्पर्य वह जानवर है जिनका वध अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के नाम पर किया जाये। जैसे अरब के मूर्तिपूजक लात तथा उज़्ज़ा आदि के नाम पर चढ़ाते थे, अथवा आग के नाम पर, जैसे अग्निपूजक करते हैं। और उसी में वह जानवर भी आ गये, जो अज्ञान मुसलमान मरे हुए धर्मात्माओं के सम्मान, प्रेम उनकी प्रशंसा पात्र तथा निकटता प्राप्त करने के लिए अथवा उनसे डरते और आशा रखते हुए, क़ब्रों एवं आस्तानों पर चढ़ाते हैं, अथवा मुजाविरों को बुर्ज़गों के नाम पर दे आते हैं (जैसे बहुत से बुज़र्ग की क़ब्रों पर बोर्ड लगे हुए हैं, उदाहरणत: "दाता" साहब की नियाज़ के लिए बक़रे यहाँ जमा किये जायें) इन जानवरों को चाहे काटते समय अल्लाह ही का नाम लिया जाये, यह निषेध ही होंगे। क्योंकि इसका धेय अल्लाह को राज़ी करना नहीं, क़ब्र वाले को राज़ी करने के लिए, और अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे का सम्मान करना अथवा अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का भय है, जो शिर्क है। इसी प्रकार से जानवरों के अतिरिक्त जो भी वस्तु नज़र-नियाज़ और चढ़ावे की अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के नाम पर होगी. वर्जित होगी, जैसे क़ब्रों पर ले जाकर अथवा वहाँ से ख़रीद कर, क़ब्रों के आसपास भिक्षुकों एवं निर्धनों पर देगों और लंगरों की अथवा मिठाई और पैसों आदि का वितरण और वहाँ के कोषों में नज़र-नियाज़ के पैसे डालना, अथवा उर्स के अवसर पर वहाँ दूध पहुँचाना यह सभी कार्य वर्जित तथा अनुचित हैं, क्योंकि यह सब अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की नज़र-नियाज़ की परिस्थितियाँ हैं। और नज़र भी नमाज़ रोज़ा आदि इबादत (अर्चना) की तरह, एक इबादत है और इबादत (वंदना) की हर प्रकार एक अल्लाह से सम्बन्धित है। इसीलिए हदीस में हैं ملعون من ذبح لغير الله (सहीह अल जामेअ अस्सग़ीर व ज्यादत:, अलबानी भाग२, पृष्ठ १०२४) जिसने अल्लाह के अतिरिक्त के नाम पर जानवर काटा, वह मलऊन (तिरस्कृत) है।

तफ़सीर अज़ीज़ी में निशापुरी की तफ़सीर से उदघृत है।

विवश हो जायें और वह सीमा उल्लंघन करने वाला और अत्याचारी न हो, उसको उनको खाने में कोई पाप नहीं। अल्लाह (तआला) क्षमाशील कृपाशील है।	وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾
(१७४) नि:सन्देह जो लोग अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब छिपाते हैं, और उसे थोड़े-थोड़े मूल्य पर बेचते हैं। विश्वास करो वे अपने पेट में आग भर रहे हैं, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उनसे बात भी नहीं करेगा, न उन्हें पवित्र करेगा, उनके लिए कठोर यातनायें हैं।	اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾
(१७५) यही वह लोग है जिन्होंने कुमार्ग को संमार्ग के बदले और यातना को क्षमा के बदले क्रय कर लिया है। यह लोग आग की यातना कितना सहन करने वाले हैं।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾
(१७६) इन यातनाओं का कारण यही है कि अल्लाह तआला ने सच्ची किताब उतारी, और इस किताब में भेद रखने वाले अवश्य दूर के विभेद में हैं।	ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى الْكِتٰبِ لَفِىْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾

أجمع العلماء لو أن مسلما ذبح ذبيحة يريد بذبحها التقرب إلى غير الله صار مرتدا و ذبيحته ذبيحة مرتد

(तफ़सीर अज़ीज़ी पृष्ठ ६११, अशरफ़ुल हवाशी से उद्‌घत) आलिमों की इस बात पर सहमत है कि यदि मुसलमान ने कोई जानवर अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की निकटता प्राप्त करने के उद्देश्य से काटा तो वह मुर्तद हो जायेगा और उसका वध एक मुर्तद का वध होगा।

وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

रखे, यही सत्यवादी लोग हैं और यही परहेज़गार (बुराई से बचने वाले) हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ

(१७८) हे, ईमान वालों। तुम पर हत्या किये गये व्यक्ति का बदला लेना फर्ज़ (अनिवार्य) किया गया है, आज़ाद, आज़ाद के बदले, ग़ुलाम, ग़ुलाम के बदले, नारी, नारी के बदले,[1] हाँ यदि जिस किसी को उसके भाई की ओर से क्षमा प्रदान कर दी जाये, उसे भलाई का सम्मान करना चाहिए और

[1]अंधकार काल में कोई नियम अथवा विधि तो थी नहीं, इसलिए शक्तिशाली समुदाय के लोग, शक्तिहीन समुदाय पर जिस प्रकार का अत्याचार करना चाहते, करते थे। अत्याचार करने की एक विधि यह थी कि किसी शक्तिशाली समुदाय के पुरुष की हत्या हो जाती, तो वह केवल हत्यारे को वध करने के वजाय हत्यारे के पूरे समुदाय के कई लोगों की हत्या करते, बल्कि कभी कभी पूरे समुदाय को नष्ट करने का प्रयत्न करते और स्त्री के वदले पुरुष की और बन्धुआ के बदले स्वतन्त्र पुरुष की हत्या करते। अल्लाह तआला ने इस अन्तर एवं विशेषता को समाप्त करते हुए फ़रमाया कि जिसकी हत्या होगी वदले में उसके ही समान वध किया जायेगा। हत्यारा स्वतन्त्र है तो बदले में वही स्वतन्त्र पुरुष, बंधुआ है तो बदले में वही बंधुआ तथा स्त्री है तो बदले में उसी स्त्री का वध किया जायेगा, न कि बंधुआ के स्थान पर स्वतन्त्र, स्त्री के स्थान पर पुरुष अथवा पुरुष के स्थान पर कई पुरुषों का वध किय जाये। इसका अर्थ कदापि यह नहीं है कि यदि पुरुष ने किसी स्त्री की हत्या की है, तो बदले में कोई स्त्री की हत्या कर दी जाये अथवा स्त्री पुरुष की हत्या कर दे, तो किसी पुरुष की हत्या कर दी जाय (जैसा कि स्पष्ट शब्दों से भावार्थ निकलता है), वल्कि ये शब्द अवतरण की विशेषता है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस हत्यारे ने हत्या की है, उसी का वध किया जायेगा, चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री,शक्तिशाली हो अथवा निर्वल «اَلْمُسْلِمُوْنَ تَتَكَافَأُ دِمَاؤُهُمْ»(अल-हदीस अबू दाऊद किताबुल जिहाद) "सभी मुसलमानों के रक्त (पुरुष हों अथवा स्त्री) समान है।" अर्थात आयत का भावार्थ वही है, जो क़ुरआन करीम की दूसरी आयत النفس بالنفس (*अल-मायेदा-४५*) का है। हनफ़ी आलिमों ने इससे तर्क निकालते हुए कहा है कि मुसलमान को काफ़िर के वदले वध किया जायेगा, परन्तु अधिकतर आलिमों का इससे मतभेद है, क्योंकि हदीस में स्पष्ट है «لَا يُقْتَلُ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ» (सहीह बुख़ारी, संख्या ६९१५, तथा अस्सुनन) "मुसलमान काफ़िर के बदले वध नहीं किया जायेगा।" (फ़तहुल क़दीर)

مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٨﴾

आसानी के साथ देयत (धन जो हत्या के बदले लिया जाये अर्थदण्ड) अदा करना चाहिए ।[1] तुम्हारे प्रभु की ओर से यह छूट और कृपा है ।[2] उसके बाद भी जो उल्लघंन करे, उसे अति यातना का सामना करना पड़ेगा ।[3]

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧٩﴾

(१७९) बुद्धिमानो । क़िसास (प्रतिहत्या, हत्यादण्ड) में तुम्हारे लिए जीवन है इस कारण तुम (हत्या करने से) रुकोगे ।[4]

---

[1]क्षमा की दो स्थितियाँ हैं, एक तोबिना कोई धन बदले में लिए अर्थात देयत लिए बिना ही मात्र अल्लाह की प्रशंसापात्र बनने के लिए क्षमा करना, दूसरी स्थिति वध के बजाये देयत स्वीकार कर लेना । यदि यह दूसरी परिस्थिति अपनायी जाये, तोकहा जा रहा है कि देयत लेने वाला भलाई का पालन करे ﴿وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ﴾ में हत्यारे से कहा जा रहा है कि बिना किसी कष्ट दिये अच्छे प्रकार से देयत को अदा करे । हत्या हुये व्यक्ति के निकट सम्बन्धियों ने उस पर कृपा की है उसके बदले में कृतज्ञता ही के साथ दे ﴿هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ﴾ (अर्रहमान)

[2]यह छूट और दया (अर्थात बदला, क्षमा अथवा देयत तीनों स्थितियाँ) अल्लाह तआला की ओर से तुम पर हुई हैं, वरन् इससे पूर्व तौरात वालों के लिए बदला अथवा क्षमा था, परन्तु देयत नहीं थी तथा इंजील वालों (इसाईयों) में केवल क्षमा ही थी, बदला था न देयत । (इब्ने कसीर)

[3]दैयत, (धन जो मृतक के उत्तराधिकारी हत्यारे से हत्या के बदले में मृत्यु दण्ड क्षमा करने के लिए माँगे) स्वीकारने अथवा ले लेने के पश्चात भी उसकी हत्या कर दे, तो यह अत्याचार की अधिकता है, जिसका दण्ड उसको संसार और परलोक दोनो में भुगतना पड़ेगा ।

[4]जब हत्यारे को यह भय होगा कि हत्या के बदले में उसे भी मार डाला जायेगा, तो वह किसी की भी हत्या करने का साहस नही करेगा । और जिस समाज में हत्या के बदले में यह नियम लागू हो जाता है, वहाँ यह भय समाज को हत्या और रक्तपान से सुरक्षित रखता है, जिससे समाज में अत्यन्त सुख-शान्ति रहती है । इसका अवलोकन सऊदी अरब के समाज में किया जा सकता है, जहाँ इस्लामी नियमों के पालन के ही कारण ईश्वर की कृपा से सुख शान्ति का वातावरण है ।

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِن تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿١٨٠﴾

(१८०) तुम पर अनिवार्य कर दिया गया है कि जब तुम में से कोई मरने लगे और धन छोड़ जाता हो, तो अपने माता-पिता और सम्बन्धियो के लिए अच्छाई के साथ उत्तरदान कर जाये।[1] सदाचारियों पर यह अनिवार्य स्पष्ट है।

فَمَن بَدَّلَهُ بَعْدَمَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٨١﴾

(१८१) अब जो व्यक्ति उसे सुनने के बाद बदल दे, तो उसका पाप बदलने वाले पर ही होगा। नि:सन्देह अल्लाह तआला सुनने वाला एवं जानने वाला है।

فَمَنْ خَافَ مِن مُّوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٨٢﴾

(१८२) हाँ जो उत्तरदान कर्ता के पक्षपात तथा पाप से डरे[2] और यदि वह उनमें परस्पर सुधार करा दे, तो उस पर पाप नहीं, अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला दयालु है।

---

[1] वसीयत करने का यह आदेश उत्तराधिकारी की आयत उतरने से पहले दिया गया था। अब यह निलंबित है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है।

«إِنَّ اللهَ قَدْ أَعْطَى كُلَّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ فَلَا وَصِيَّةَ لِوَارِثٍ» (उदघृत अस्सुनन-इब्ने कसीर से लिखित) अल्लाह तआला ने प्रत्येक अधिकारी को उसका अधिकार दे दिया है (अर्थात उत्तराधिकारी के भाग निर्धारित कर दिये हैं) अब किसी उत्तराधिकारी को वसीयत करना उचित नहीं। हाँ अब ऐसे सम्बन्धियों के लिए वसीयत की जा सकती है, जो उत्तराधिकारी न हो अथवा भलाई के मार्ग में ख़र्च करने के लिए भी की जा सकती है, और उसका अधिक से अधिक भाग एक तिहाई माल है, उससे अधिक वसीयत नही की जा सकती। (सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़राइद)

[2] جنفا (आकृष्ट होना) का अर्थ है कि ग़लती अथवा भूल से किसी एक सम्बन्धी की ओर अधिक आकृष्ट होकर दूसरों का अधिकार मारना, और إثما से तात्पर्य है कि जान-बूझ कर ऐसा करे (ऐसरूत्तफ़ासीर) अथवा إثما का तात्पर्य पाप की वसीयत है, जिसका बदलना और वैसा न करना आवश्यक है। इसका अर्थ है वसीयत में न्याय का होना आवश्यक है, वरन् जो संसार से जाते-जाते अत्याचारी बने, उसके परलोक में बच सकने की कम आशा है।

(१८३) ऐ ईमानवालो तुम पर रोज़े (व्रत जो रमज़ान के महीने में रखे जाते है) अनिवार्य किये गये, जिस प्रकार से तुम से पहले लोगों पर अनिवार्य किये गये थे, ताकि तुम तक़्वा (अल्लाह से भय रखो) का मार्ग अपनाओ ।[1]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٨٣﴾

(१८४) गणना में कुछ ही दिन हैं, परन्तु यदि तुम में से जो व्यक्ति बीमार हो अथवा यात्रा में हो, तो वह अन्य दिनों में गणना पूरी कर ले ।[2] और जो इसकी सामर्थ्य रखता हो फ़िदया (प्रतिशोध) में एक निर्धन को भोजन दे,[3] फिर जो व्यक्ति सत्कर्म में बढ़ जाये वह

أَيَّامًا مَّعْدُودَٰتٍ ۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى ٱلَّذِينَ يُطِيقُونَهُۥ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُۥ ۚ وَأَن تَصُومُوا۟

---

[1] صيام-صوم (रोज़ा, व्रत) उद्‌गम है, जिसका इस्लामी धार्मिक नियमों के अनुसार अर्थ है प्रातः सूर्य निकलने से पहले रात्रि के अंधकार के बाद जो सफेद प्रकाश वातावरण में होता है, के समय से लेकर सूर्यास्त तक खाने-पीने पत्नी से सम्भोग करने से, अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए रुके रहना, यह इबादत इन्द्रियों की पवित्रता एवं शुद्धता के लिए अति विशेष है, इसलिए इसे तुमसे पहले के समुदायों पर भी अनिवार्य किया गया था । इसका सबसे बड़ा तात्पर्य अल्लाह तआला का दिल में भय उत्पन्न करना है । और दिल से अल्लाह तआला का भय मनुष्य के चरित्र और कर्मों को सुधारने में मूल भूमिका प्रदान करता है ।

[2] यह रोगी और यात्री को छूट दी गयी है कि वह रोग अथवा यात्रा के कारण रमज़ान के महीने के जितने रोज़े न रख सका हो, वह बाद में रखकर गणना पूरी कर दे ।

[3] يطيقونه का एक अनुवाद يتجشمونه अति कठिनता से रोज़ा रख सके। किया गया है (यह आदरणीय इब्ने अब्बास से उदघृत है, ईमाम बुख़ारी ने भी इसे पंसद किया है) अर्थात जो अति बुढ़ापे एवं ऐसे रोग के कारण से, जिसका उपचार से स्वास्थ की आशा न हो, रोज़ा रखने में कठिनाई अनुभव करे, वह एक निर्धन को भोजन फ़िदया (प्रतिशोध) रूप में दे, परन्तु अधिकतर टीकाकार ने इसका अनुवाद, शक्ति रखते हैं । ही किया है, जिसका अर्थ है इस्लाम के प्रारम्भिक काल में रोज़े की आदत न होने के कारण शक्ति रखने वालों को भी छूट दे दी गयी थी कि यदि वह रोज़ा न रखे, तो बदले में एक निर्धन को भोजन कराये परन्तु बाद में ﴿فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ ٱلشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ﴾ के द्वारा इसे निरस्त करके प्रत्येक शक्ति रखने वाले के लिए रोज़ा अनिवार्य कर दिया गया, परन्तु अतिवृद्ध एवं सदैव रोगी के लिए अब

خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٤﴾

उसी के लिए श्रेष्ठ है।[1] परन्तु तुम्हारे पक्ष में उचित कर्म रोज़े (व्रत) रखना ही है यदि तुम अवगत हो।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ

(१८५) रमज़ान का महीना वह है, जिस में क़ुरआन उतारा गया।[2] जो लोगों का

भी यही आदेश है कि वह फ़िदया दे दें और حاملة (गर्भवती) और مرضعة (दूध पिलाने वाली) स्त्रियाँ यदि कठिनाई का आभास करें, तो वह भी रोगी के आदेश में होंगी अर्थात वह रोज़ा न रखें और बाद में छूटे रोज़े रखें। (तोहफ़तुल अहवज़ी शरह त्रिमिज़ी)

[1]जो खुशी से एक निर्धन के अतिरिक्त दो अथवा तीन को भोजन कराये, तो उसके लिए अधिक श्रेयस्कर है।

[2]रमज़ान में क़ुरआन उतरने का अर्थ यह नहीं कि पूरा क़ुरआन किसी एक रमज़ान में उतरा, वरन् यह है कि रमज़ान की शबे क़द्र (आदर वाली रात्रि) में लौह महफ़ूज़ (अल्लाह की वह किताब जिसमें आदि से अन्त तक सभी कुछ लिखा है) से दुनिया के आकाश में उतार दिया गया और वहाँ बैतुल इज़्ज़त (आदर वाला घर) में रख दिया गया। वहाँ से परिस्थितियों के अनुसार लगभग २३ वर्ष तक उतरता रहा। (इब्ने कसीर) इसलिए यह कहना कि क़ुरआन रमज़ान में अथवा लैलतुल क़द्र अथवा लैलतुल मुबारक में उतरा यह सब सत्य है, क्योंकि लौह महफ़ूज़ से तो रमज़ान में ही उतरा है और लैलतुल क़द्र एवं लैलतुल मुबारक यह एक ही रात है अर्थात शुभरात्रि जो रमज़ान में ही आती है। कुछ के निकट इसका तात्पर्य यह है कि क़ुरआन का उतरना रमज़ान के महीने में प्रारम्भ हुआ, और पहली (ईशवाणी) जो हिरा की गुफ़ा (जो मक्के के नूर पर्वत पर है) में रमज़ान के महीने में आयी। इस आधार पर क़ुरआन मजीद और रमज़ानुल मुबारक का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसी कारण नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस पवित्र महीने में आदरणीय जिब्रील से क़ुरआन सुनते और सुनाया करते थे और जिस वर्ष आपका देहान्त हुआ उस वर्ष आपने रमज़ान में जिब्रील से दो बार सुना और सुनाया। रमज़ान की तीन रातों (२३, २५ और २७) में आपने अपने मित्रों की जमाअत के साथ क़ियामुल्लैल (रात की नमाज़ के लिए खड़ा होना) भी करवाया, जिसको अब तरावीह कहा जाता है। (सहीह त्रिमज़ी एवं सहीह इब्ने माजा, अलबानी) यह तरावीह आठ रकआत और वितर के साथ ग्यारह रकआत थीं जिसका विवरण जाबिर "रज़ी अल्लाह अन्ह" की हदीस में है और इमाम मिरवज़ी ने इसको क़ियामुल्लैल में ब्यान किया है। और आदरणीय आयशा "रज़ी अल्लाह अन्हा" का कथन (सहीह बुख़ारी) में उपस्थित है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का २० रकआत तरावीह पढ़ना किसी भी सहीह हदीस से सिद्ध नहीं है।

مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَن
شَهِدَ مِنكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن
كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ
أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ
وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا
الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾

मार्गदर्शक है, और जो मार्गदर्शन एवं सत्यासत्य के मध्य निर्णायक है, तुममें जो भी इस महीने को पाये, उसे रोज़ा रखना चाहिए, हाँ जो रोगी हो अथवा यात्रा में हो, तो उसे दूसरे दिन में यह गणना पूरी करनी चाहिए। अल्लाह (तआला) की इच्छा तुम्हारे साथ सरलता की है, कठोरता की नहीं, वह चाहता है कि तुम गणना पूरी कर लो, और अल्लाह (तआला) के प्रदान किये गये मार्गदर्शन के अनुसार उसकी महिमा का वर्णन करो एवं उसके कृतज्ञ रहो।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي
قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ
إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا
بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾

(१८६) और जब मेरे बन्दे (भक्त) मेरे विषय में आप से प्रश्न करें तो कह दें कि मैं बहुत ही निकट हूँ, हर प्रार्थी की पुकार को जब कभी भी वह मुझे पुकारे मैं स्वीकार करता हूँ।[1] इसलिए लोगों को भी चाहिए कि वह मेरी बात मानें और मुझ में आस्था रखें यही उनकी भलाई का कारण है।

[1]रमज़ान मुबारक के नियम एवं आदेश के मध्य दुआ के नियम का वर्णन करके यह स्पष्ट कर दिया गया कि रमज़ान में प्रार्थना (दुआ) का भी बड़ा महत्व है, जिसका अत्यधिक प्रयोजन करना चाहिए, विशेष रुप से इफ़्तार (जब रोज़े के खोलने का समय निकट हो) के समय प्रार्थना के स्वीकार होने का विशेष समय बताया गया है। (मुसनद अहमद, त्रिमिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, इब्ने कसीर से लिया गया) फिर भी प्रार्थना के स्वीकार होने के लिए यह भी आवश्यक है कि उन नियमों और आदर को विचार में रखा जाये जो क़ुरआन और हदीस में वर्णित हैं जिसमें से दो को यहाँ वर्णन कर दिया गया है। एक अल्लाह पर किस प्रकार से दृढ़ विश्वास और दूसरा उसके आदेश का पालन एवं अनुसरण। इसी प्रकार से हदीस में हराम भोजन से बचने एवं एकाग्र मन व चित के होने पर बल दिया गया है।

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ
إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ
وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ
أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ
فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ ۖ فَالْآنَ
بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ
وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ
الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ
الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا
الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ
وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۗ
تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ

(१८७) रोज़े की रातों में अपनी पत्नियों से मिलने की तुम्हें अनुमति है, वह तुम्हारा वस्त्र हैं और तुम उनके वस्त्र हो। तुम्हारे अपभोग का अल्लाह को ज्ञान है, उसने तुम्हारे पश्चाताप को स्वीकार कर तुम्हें क्षमा कर दिया, अब तुम्हें उनसे सम्भोग की और अल्लाह (तआला) की लिखी हुई चीज़ को ढूंढ़ने की आज्ञा है, तुम खाते-पीते रहो, यहाँ तक की प्रात:काल की सफेदी का धागा अंधकार के काले धागे से स्पष्ट हो जाये।[1] फिर रात तक रोज़े को पूरा करो।[2] और स्त्रियों से उस समय सम्भोग न करो जब कि तुम मस्जिदों में ऐतेकाफ़ (एक निश्चित समय के लिए अल्लाह की इबादत के उद्देश्य से

---

[1]इस्लाम के प्रारम्भिक काल में एक आदेश यह था कि रोज़ा खोल लेने के पश्चात ईशा (रात्रि) की नमाज अथवा सोने तक खाने-पीने और पत्नी से सम्भोग करने की आज्ञा थी, सोने के पश्चात इनमें से कोई कार्य नहीं किया जा सकता था। स्पष्ट है यह निषेधाज्ञा कठिन थी और इसके अनुसार कार्य करना कठिन था। अल्लाह तआला ने इस आयत में यह दोनों निषेधाज्ञा निरस्त कर दी और इफ़्तार (रोज़ा खोलने के समय) से लेकर प्रात:काल कालिमा छटने तक खाने-पीने तथा पत्नी के साथ सम्भोग करने की आज्ञा प्रदान कर दी। الرفث का अर्थ है पत्नी के साथ सम्भोग करना। الخيط الأبيض से प्रात:कालीन प्रकाश और الخيط الأسود काली धारी से तात्पर्य रात है। (इब्ने कसीर)

प्रश्न: इससे यह भी विदित हुआ कि सम्भोग करने के पश्चात स्थिति में रोज़ा रखा जा सकता है, क्योंकि फ़ज्र (प्रात:काल) तक अल्लाह ने उपरोक्त कार्य की आज्ञा प्रदान की है और सहीह बुखारी और मुस्लिम के वर्णन से भी इसका समर्थन होता है। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात रात्रि होते ही (सूर्यास्त के तुरन्त पश्चात) रोज़ा खोल लो। देर न करो, जैसा कि हदीस में भी रोज़ा शीघ्र खोलने-इफ़्तार करने पर बल दिया गया है और विशेषता बताई गयी है। दूसरा यह कि विसाल न करो, विसाल का अर्थ है कि एक रोज़ा खोले, बिना दूसरा रोज़ा रख लेना। इससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अति कठोरता के साथ मना किया है। (विवरण के लिए देखें हदीस की किताबें)

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٨٧﴾

अपने आपको मस्जिद तक ही सीमित कर लेना) में हो ।[1] यह अल्लाह (तआला) की सीमाएं हैं । तुम इनके निकट भी न जाओ । इसी प्रकार अल्लाह तआला अपनी निशानियाँ लोगों पर वर्णित करता है, ताकि वे बचें ।

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾

(१८८) और एक-दूसरे का माल अनाधिकारिक रुप से ना खाया करो, न अधिकारी व्यक्तियों को रिश्वत पहुँचाकर किसी का कुछ माल अत्याचार से हड़प कर लिया करो । यद्यपि कि तुम जानते हो ।[2]

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ۭ قُلْ هِىَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۭ

(१८९) लोग आपसे नये चन्द्रमा के विषय में प्रश्न करते हैं, आप कह दीजिए कि यह

---

[1]ऐतेकाफ़ (रमजान के महीनों में मस्जिद में इबादत के उद्देश्य से अलग थलग रहना) के समय पत्नी से सम्भोग, चुम्बन एवं इसी प्रकार के अन्य कर्मों की आज्ञा नहीं है । परन्तु मिलने के समय बातचीत की जा सकती है । ﴿عٰكِفُوْنَ فِى الْمَسٰجِدِ﴾ से यह भावार्थ लिया गया है कि ऐतेकाफ़ के लिए मस्जिद आवश्यक है । चाहे स्त्री हो या पुरुष । पवित्र पत्नियों (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियाँ) ने भी मस्जिद में ऐतेकाफ़ किया है, इसलिए स्त्रियों का अपने घरों में ऐतेकाफ़ में बैठना ठीक नहीं । परन्तु मस्जिद में उनके लिए हर चीज का पुरुषों से अलग प्रबन्ध करना आवश्यक है, ताकि पुरुष के साथ किसी प्रकार का मिलन न हो, जब तक मस्जिद में उचित एवं सुरक्षित तथा पुरुषों से बिलकुल अलग प्रबन्ध न हो, स्त्रियों को मस्जिद में ऐतेकाफ़ में बैठने की आज्ञा नही देनी चाहिए और स्त्रियों को भी इसके लिए हठ नहीं करना चाहिए । यह एक नफ़्ली (स्वेच्छात्मक) इबादत ही है, जब तक पूरी सुरक्षा न हो तब तक स्वेच्छात्मक इबादत से अलग रहना श्रेष्ठ है । फ़िकह (इस्लामी धर्मशास्त्र) का नियम है (درء المفاسد أولى من جلب المصالح) भलाईयों की प्राप्ति की अपेक्षा बुराईयों को दूर करना उत्तम है ।

[2]यह ऐसे व्यक्ति के विषय में है जिसके पास किसी का स्वत्व हो तथा स्वामी के पास कोई प्रमाण न हो । जिसका लाभ उठाकर वह व्यक्ति न्यायालय अथवा अधिकृत अधिकारी से अपने पक्ष में निर्णय करा ले इस प्रकार दूसरे का स्वत्व अपहरण कर ले । यह अत्याचार है और हराम है । अदालत का निर्णय अत्याचार और हराम को उचित नहीं कर सकता । यह अत्याचारी अल्लाह तआला के समक्ष अपराधी होगा । (इब्ने कसीर)

وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾

लोगों (की इबादत) के समय एवं हज के मौसम के लिए है (एहराम की स्थिति में) और घरों के पीछे से तुम्हारा आना कोई सत्कर्म नहीं, बल्कि सत्कर्मी वह है जो अल्लाह (तआला) से डरता हो। घरों में उनके द्वार से आया करो।[1] तथा अल्लाह से डरते रहा करो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾

(१९०) लड़ो अल्लाह के मार्ग में उनसे जो तुम से लड़ते हैं और अत्याचार न करो।[2] अल्लाह (तआला) अत्याचारी को पंसद नहीं करता है।

وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

(१९१) और उन्हें मारो जहाँ भी पाओ एवं उन्हें निकालो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है और (सुनो) फ़ित्ना (लड़ाई-झगड़ा, फ़साद) हत्या से अधिक बुरा है।[3] और मस्जिद-ए-हराम के

---

[1] अन्सार अज्ञान काल में जब हज्ज अथवा उमर: का एहराम (हज और उमर: के लिए एक विशेष स्थिति जिसमें पुरूष एक लुंगी और एक ओढ़ने कि चादर जो धार्मिक नियमानुसार लपेटी जाये, बांधता है) बांध लेते, और फिर उसके पश्चात किसी चीज की आवश्यकता पड़ती, तो अपने घरों में मुख्य द्वार से न प्रवेश करते, बल्कि पीछे की दीवार लांघ कर प्रवेश करते, इसको वह पुण्य समझते। अल्लाह तआला ने कहा कि यह पुण्य नहीं है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2] इस आयत में प्रथम बार उन लोगों से लड़ने की आज्ञा दी गयी है, जो सदैव मुसलमानों की हत्या करने के विचार में रहते थे। फिर भी ज़्यादती से रोका गया है, जिसका अर्थ यह है कि कुचलो नहीं स्त्रियों, बच्चों, बूढ़ों को जिनका युद्ध में योगदान न हो हत्या मत करो, वृक्ष आदि को जला देना, पशुओं को अकारण मार डालना भी ज्यादती है, इनसे बचा जाये। (इब्ने कसीर)

[3] इस्लाम धर्म के प्रारम्भिक काल में मक्का शहर में चूँकि मुसलमान निर्बल और बिखरे हुए थे इसलिए काफ़िरों से लड़ना मना था, जब मुसलमान मक्का शहर से स्थानान्तरण करके मदीने आये (जिसे इस्लाम धर्म की परिभाषा में हिजरत कहते हैं) तो मुसलमान की सारी शक्ति एकत्रित हो गयी, फिर उनको धर्म युद्ध (जिहाद) करने की आज्ञा प्रदान की गयी। प्रारम्भ में आप केवल उन्हीं से लड़ते, जो मुसलमानों से लड़ते, परन्तु इसके

حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ۗ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾

पास उनसे लड़ाई न करो, जब तक कि वे स्वयं तुमसे न लड़े। यदि वे तुमसे लड़ें, तो तुम भी उन्हें मारो।[1] काफ़िरों का बदला यही है।

فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾

(१९२) यदि वे मान जायें, तो अल्लाह (तआला) अति क्षमाशील एवं दयालु है।

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۖ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾

(१९३) और उनसे लड़ो, जब तक कि उपद्रव न मिट जाये और अल्लाह (तआला) का धर्म विधान रह जाये, यदि वह रुक जायें (तो तुम भी रुक जाओ) अत्याचार तो केवल अत्याचारियों पर है।

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدٰى

(१९४) प्रतिष्ठित मास के बदले प्रतिष्ठित मास हैं और प्रतिष्ठायें आदान-प्रदान की हैं[2] जो

पश्चात इसको और विस्तृत किया गया, और मुसलमानों ने आवश्यकता अनुसार काफ़िरों के क्षेत्र में भी जाकर युद्ध किया। कुरआन करीम ने اعتداء (ज़्यादती से) से मना किया है, इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी सेना को विशेष रुप से निर्देश देते कि अपभाग तथा विश्वासघात न करना किसी लाश को कुचलना नहीं, बच्चों, स्त्रियों, गिरजाघरों में पूजा में लीन व्यक्तियों, उस धर्म के संतों की हत्या न करना। इसी प्रकार वृक्षों को जलाने से और पशुओं को अनावश्यक रुप से मारने से मना किया। (इब्ने कसीर-उदघृत सहीह मुस्लिम आदि) फ़ितना से तात्पर्य कुफ़्र और शिर्क अनिश्वरवाद एवं मिश्रणवाद है, जो हत्या से बड़ा पाप है, अतएव इसको समाप्त करने के लिए जिहाद करने में पीछे नहीं हटना चाहिए।

[1]हरम की सीमा में लड़ना मना है, परन्तु यदि काफ़िर इसका आदर न करें, और तुमसे लड़े, तो तुम्हें भी उनसे लड़ने की आज्ञा है।

[2] ६ हिजरी में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने चौदह सौ साथियों के साथ उमर: के लिए निकले थे, परन्तु मक्का के काफ़िरों ने उन्हें मक्का नहीं जाने दिया और अन्त में यह सन्धि हुई कि अगले वर्ष मुसलमान तीन दिन के लिए उमर: के विचार से मक्का आ सकेंगे। यह ज़ीकादा का महीना था, जो आदरणीय महीनों में से एक है। जब दूसरे वर्ष सन्धि के अनुसार मुसलमान उमर: के विचार से निकलने लगे तो अल्लाह तआला

عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

तुम पर अत्याचार करे तुम भी उस पर उसी प्रकार का अत्याचार करो, जो तुम पर किया है और अल्लाह तआला से डरते रहा करो और जान रखो कि अल्लाह (तआला) संयमियों के साथ है।

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾

(१९५) और अल्लाह (तआला) के मार्ग में ख़र्च करो और अपने हाथों कष्ट में न पड़ो[1] उपकार करो अल्लाह परोपकारियों से प्रेम करता है।

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۭ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى

(१९६) और हज एवं उमरे को अल्लाह तआला के लिए पूरा करो।[2] और यदि तुम रोक दिये जाओ, तो जो भी बलि उपलब्ध हो उसे कर डालो।[3] और अपने सिर न मुँडवाओ जब

ने यह आयत उतारी। इसका अर्थ यह है कि इस बार भी यदि मक्का के मिश्रणवादी इस महीने के आदर और सम्मान को किनारे रख (पिछले वर्ष की भाँति) और तुम्हें मक्का में प्रवेश करने से रोकें, तो तुम भी उसके आदर और सम्मान की चिन्ता न करना, उनसे पूरी तरह से सामना करना। आदर और सम्मान रखने में बदला है, अर्थात वह आदर व सम्मान का ख़्याल रखें तो तुम भी आदर और सम्मान करो। यदि वह ऐसा न करें तो तुम भी इसकी चिन्ता छोड़ कर काफ़िरों को कठोर एवं असहनीय पाठ पढ़ाओ। (इब्ने कसीर)

[1]इससे कुछ लोगों ने धन व्यय का त्याग, कुछ ने धर्म युद्ध त्याग, तथा कुछ ने पाप पर पाप किये जाना भावार्थ लिया है। और यह सारी परिस्थितियाँ नाश की हैं, जिहाद छोड़ दोगे अथवा जिहाद के लिए माल दान न करोगे, तो शत्रु शक्तिशाली होगा, और तुम कमजोर होगे, परिणाम तुम्हारा विनाश।

[2]अर्थात हज्ज अथवा उमरे का "एहराम" बाँध लो, तो उसको पूरा करना आवश्यक है, चाहे स्वेच्छात्मक हज्ज व उमर: ही हो। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3]यदि मार्ग में शत्रु अथवा भयंकर रोग के कारण रुकावट आ जाये, तो एक जानवर (हदी)। बकरी, गाय अथवा ऊंट जो भी उपलब्ध हो, वहीं बलि देकर सिर मुँडा लो और एहराम खोल दो, जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा ने हुदैबिया के स्थान पर कुर्बानियों की बलि दी थी, हुदैबिया का स्थान "हरम" की सीमा से बाहर है।

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ فَمَن كَانَ
مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِّن
رَّأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِّن صِيَامٍ أَوْ
صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنتُمْ
فَمَن تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَن لَّمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ
وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ
كَامِلَةٌ ۗ ذَٰلِكَ لِمَن لَّمْ يَكُنْ أَهْلُهُ
حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ

तक कि बलि, बलि स्थल तक न पहुँच जाये [1] तुममें से जो रोगी हो अथवा उसके सिर में कोई पीड़ा हो जिसके कारण वह सिर मुँडवा ले तो उस पर फ़िदया है कि चाहे तो वह व्रत (रोज़ा) रख ले, अथवा चाहे तो दान दे, अथवा बलि करे[2] परन्तु जैसे ही शान्ति की स्थिति हो जाये, तो जो उमरे से लेकर हज तक तमत्तुअ़ (लाभान्वित) करे, बस उसे जो भी बलि उपलब्ध हो उसे कर डाले। जिसमें सामर्थ्य न हो वह तीन रोज़े (व्रत) तो हज के दिनों में रख ले और सात वापसी में यह पूरे दस हो गये।[3] यह आदेश उनके लिए है जो

(फ़तहुल क़दीर) और अगले वर्ष उसकी क़ज़ा (बदला) दो जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ६ हिजरी वाले उमरे की क़ज़ा (बदला) ७ हिजरी में दी।

[1]इसका प्रभाव﴿وَلَا تَحْلِقُوا﴾पर है और इसका सम्बन्ध शान्ति की स्थिति से है अर्थात शान्ति की स्थिति में उस समय तक सिर न मुँडवाओ (एहराम खोल कर हलाल न हो) जब तक हज्ज अथवा उमरे के सभी कार्य पूरे न कर लो।

[2]अर्थात उसको कोई ऐसा रोग हो जाये कि उसको सिर मुँडवाना पड़ जाये, तो उसका फ़िदया (प्रतिशोध) आवश्यक है। हदीस के अनुसार ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि वह ६ भूखे लोगों को भोजन कराये अथवा एक बकरी की बलि दे अथवा तीन रोज़े (व्रत) रखे। रोज़ों के अतिरिक्त शेष दो प्रतिशोध के स्थान के विषय में मतभेद है। कुछ कहते है कि भोजन अथवा बलि मक्का में ही दें, कुछ कहते हैं कि रोज़े की भाँति इसके लिए भी स्थान निर्धारित नहीं है। शौकानी ने इसी मत का समर्थन किया है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]हज्ज तीन प्रकार से किया जा सकता है, जिनके तीन नाम हैं, (१) इफ़राद - केवल हज्ज के विचार से एहराम बाँधना, (२) क़िरान - हज्ज और उमर: दोनो का विचार एक साथ करके एहराम बाँधना। इन दोनो परिस्थितयों में हज्ज के सभी कर्म पूरा किये बिना एहराम खोलना जायज़ (उचित) नहीं है। (३) हज्ज-ए-तमत्तुअ - इसमें भी हज्ज और उमर: दोनो का विचार होता है, परन्तु पहले केवल उमर: का विचार करके एहराम बाँधा जाता है, और फिर उमर: करके एहराम खोल दिया जाता है और फिर ८ ज़िलहिज्जा को ही हज्ज के लिए मक्का ही से दोबारा एहराम बाँधा जाता है, तमत्तुअ का अर्थ है, लाभ

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾

मस्जिद-ए-हराम (मक्का) के रहने वाले न हों।[1] (लोगों) ! अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह (तआला) कठोर यातनायें देने वाला है।

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ

(१९७) हज के महीने निर्धारित हैं।[2] इसलिए जो इनमें हज निर्धारित करे वह अपनी पत्नी

उठाना। अर्थात एहराम उतारकर उमर: और हज्ज के मध्य लाभ उठा लिया जाता है। हज्ज-क़िरान और हज्ज-तमत्तुअ दोनो में ही एक हदी (एक जानवर की बलि) देनी है। इस आयत में इसी हज्ज तमत्तुअ के आदेशों का वर्णन है। तमत्तुअ करने वाला शक्ति अनुसार १० जिलहिज्जा को एक जानवर की वलि दे, यदि वलि देनें की शक्ति न हो, तो तीन रोज़े हज्ज के दिनों में और सात घर जाकर पूरा करे। हज्ज के दिन, जिनमें रोज़े रखने है ९ जिलहिज्जा (अरफ़ात का दिन) से पहले अथवा तशरीक के दिन हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[1]अर्थात तमत्तुअ और उसके कारण हदी अथवा रोज़े केवल उन लोगों के लिए है जो मक्कावासी न हों, तात्पर्य हरम की सीमा में अथवा इतनी दूरी पर हो जिस पर क़स्र (नमाज में छूट) का नियम न लगता हो। (इब्ने कसीर कथानुसार इब्ने जरीर)

[2]और यह हैं शव्वाल, ज़ीक़ाद, और जिलहज्ज के दस दिन। तात्पर्य यह है कि उमर: तो वर्ष के दिनों में भी हो सकता है, परन्तु हज्ज तो कुछ निर्धारित दिनों में ही होता है, इसलिए उसका एहराम हज्ज के महीनों के अतिरिक्त बांधना उचित नहीं। (इब्ने कसीर)

प्रश्न: हज्ज-क़िरान और इफ़राद का एहराम मक्कावासी मक्के से ही बांधेगें, परन्तु तमत्तुअ के लिए उमर: का एहराम बांधने के लिए हरम की सीमा के बाहर (जिसे हिल्ल कहते है), उनको जाना आवश्यक है। (फ़तहुल क़दीर, किताबुल हज्ज व बाबुल उमर: तथा मुअता इमाम मलिक) इसी प्रकार मक्का के शहर से बाहर से आये हुए लोग (जिन्हें आफ़ाकी कहते है) हज्ज तमत्तुअ में ८ ज़िलहिज्जा को मक्का ही से एहराम बांधेगे। परन्तु कुछ विद्वानों का कथन है कि मक्कावासियों को भी हरम की सीमा से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए वह हर प्रकार के हज्ज के लिए एहराम अपने स्थान से बांध सकते हैं।

सूचना : हाफ़िज इब्ने क़य्यिम ने लिखा है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनी व करनी से केवल दो प्रकार के उमरों की पुष्टि होती है। एक वह जो हज्ज तमत्तुअ के साथ किया जाये और दूसरा उमर: मात्र जो हज्ज के दिनों के अतिरिक्त केवल उमरे कि

وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۗ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾

से सहवास करने, पाप करने, और लड़ाई-झगड़ा करने से बचता रहे।[1] तुम जो पुण्य का कार्य करोगे, उसे अल्लाह (तआला) जानने वाला है, और अपने साथ यात्रा व्यय ले लिया करो, सर्वश्रेष्ठ मार्ग व्यय तो अल्लाह का भय है[2] और ऐ बुद्धिमानो मुझसे डरते रहा करो।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ﴿١٩٨﴾

(१९८) तुम पर अपने प्रभु की कृपा ढूंढ़ने में कोई पाप नहीं।[3] जब तुम अरफ़ात से लौटो तो मशअरे हराम (मुज़्दलिफ़ा) के निकट अल्लाह की महिमागान करो और उसकी महिमा का वर्णन उस प्रकार करो, जैसे कि उसने तुम्हें निर्देश दिये हैं, हालांकि तुम उससे पहले गुमराहों में थे।[4]

विचार से ही यात्रा की जाये शेष हरम से जाकर किसी निकटवर्ती हिल्ल (हरम सीमा से बाहर) से उमरे के लिए एहराम बाँधना बिना पुष्टि के है। (ज़ादुल मआद, भाग-,२नया प्रकाशन)

[1]सहीह बुख़ारी और मुस्लिम में हदीस है।
«مَنْ حَجَّ هٰذَا الْبَيْتَ، فَلَمْ يَرْفُثْ، وَلَمْ يَفْسُقْ، خَرَجَ مِنْ ذُنُوبِهِ كَيَوْمَ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ». (बुख़ारी, किताबुल मोहसर)
"जिसने हज्ज किया और बुरी, लड़ाई-झगड़े की बातों से बचा, वह पाप से इस प्रकार पवित्र हो गया, जैसे उस दिन पवित्र था जिस दिन उसकी माँ ने जन्म दिया था।"

[2]तक़वा (अल्लाह तआला का भय) से तात्पर्य यहाँ भीख माँगने से बचना है। कुछ लोग बिना कोई मार्ग व्यय लिए ही हज्ज के लिए निकल पड़ते हैं और कहते है कि हमारा तो अल्लाह पर पूर्ण भरोसा है, अल्लाह ने भरोसे के इस भावार्थ को त्रुटिपूर्ण बताया है, और मार्ग व्यय साथ लेने पर बल दिया है।

[3]कृपा का अर्थ व्यापार एवं व्यवसाय है अर्थात हज्ज की यात्रा करते समय व्यापार करने में कोई प्रतिबंध नहीं।

[4] ९ ज़िलहिज्जा को सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक अरफ़ात के मैदान में रुकना हज्ज का सर्वश्रेष्ठ स्तम्भ है, जिसके विषय में हदीस में कहा गया है. «الْحَجُّ عَرَفَةُ» (अरफ़ात में रुकना ही हज्ज है) यहाँ मग़रिब (सायंकालीन) की नमाज़ नहीं पढ़नी है, बल्कि मुज़्दलिफ़ा के

(१९९) फिर तुम उस स्थान से लौटो जिस स्थान से सभी लोग लौटते हैं ।[1] और अल्लाह (तआला) से क्षमा-याचना करते रहो, नि:सन्देह अल्लाह (तआला) क्षमाशील अति कृपालु है ।

ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٩٩﴾

(२००) फिर जब तुम हज के प्रत्येक कार्य पूरे कर लो, तो अल्लाह (तआला) को याद करो, जिस प्रकार से तुम अपने पूर्वजों को याद करते थे, बल्कि उससे अधिक[2] कुछ लोग वह भी हैं, जो कहते है, "हमारे प्रभु ! हमें इस संसार में प्रदान कर दे, ऐसे लोगों का परलोक में कोई भाग नहीं है ।"

فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿٢٠٠﴾

स्थान पर पहुंचकर मग़रिब (सायंकालीन) की नमाज तीन रकात और ईशा (रात्रिकालीन) की नमाज दो रकाअत एक अजान और दो इक़ामत के साथ पढ़नी है, मुज़्दलिफ़ा को "मशअरुल हराम" कहा गया है, क्योंकि यह हरम की सीमा के भीतर है । यहां अल्लाह की याद के लिए बल दिया गया है । यहां रात्रि व्यतीत करनी है, फ़ज्र की नमाज़ ग़लस (अंधेरे) में अर्थात प्रथम समय में पढ़कर सूर्योदय तक अल्लाह की याद में लीन रहा जाये और सूर्योदय के उपरान्त "मिना" के स्थान के लिए प्रस्थान किया जाये ।

[1]उपरोक्त वर्णित विधिपूर्वक श्रेणी के अनुसार "अरफ़ात" जाना और वहां विराम करके वापस आना आवश्यक बताया गया है, परन्तु अरफ़ात हरम से बाहर होने के कारण मक्का के कुरैश अरफ़ात तक नहीं जाते थे, बल्कि मुज़्दलिफ़ा से ही लौट आते थे, अतएव आदेश दिया जा रहा है कि जहां से सब लोग लौट कर आते हैं, वहीं से लौटकर आओ अर्थात अरफ़ात से ।

[2]अरब के लोग हज्ज के पश्चात मिना के स्थान पर मेला लगाते और अपने-अपने पूर्वजों का गुणगान करते । मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब १० ज़िलहिज्जा को कंकरियां मारकर, बलि देकर, सिर मुंडवाकर, काअबा की परिक्रमा करके और सफ़ा और मरवा के मध्य सअई करके छुटकारा पाओ, तो उसके पश्चात तीन दिन मिना में रुकना है, और वहां अल्लाह की बहुत याद करो, जैसे कि अज्ञानता के समय तुम अपने पूवर्जों की चर्चा करते थे ।

(२०१) और कुछ लोग वह भी हैं, जो कहते हैं, "ऐ हमारे पालनहार ! हमें इस संसार में भलाई प्रदान कर ।[1] और परलोक में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से बचा दे ।"

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

(२०२) ये वे लोग हैं जिनके लिए उनके कर्मों का भाग है और अल्लाह (तआला) शीघ्र हिसाब लेने वाला है ।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ۭ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

(२०३) और अल्लाह (तआला) की याद उन गणना के कुछ दिनों (तशरीक़ के दिन) में करो ।[2] दो दिन की जल्दी करने वाले पर कोई पाप नहीं, और जो पीछे रह जाये उस पर भी कोई पाप नहीं[3] यह परहेज़गार (महान व्यक्ति) के लिए है, एवं अल्लाह (तआला) से

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

---

[1]अर्थात पुण्य के कार्य करने का अवसर प्राप्त होना, अर्थात ईमानवाले संसार में रहकर सांसारिक वैभव की कामना नहीं करते, बल्कि पुण्य करने के अवसर प्राप्त करने की कामना करते हैं । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अत्यधिक इस दुआ को पढ़ा करते थे । काअबा की परिक्रमा करते समय लोग प्रत्येक चक्कर में भिन्न- भिन्न दुआऐ पढ़ते हैं, जो वनावटी है । परिक्रमा करते समय यही दुआ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً यमानी कोने से हजरे अस्वद (काले पत्थर) के मध्य पढ़ना सुन्नत के अनुसार कर्म है ।

[2]तात्पर्य तशरीक़ के दिन हैं, अर्थात ११,१२ तथा १३ ज़िलहिज्जा । इन दिनों में अल्लाह तआला के वर्णन से तात्पर्य यह है कि उच्च स्वर के साथ सुन्नत के अनुसार निर्धारित तकबीर कहे । केवल अनिवार्य (फ़र्ज़) नमाज़ों के बाद ही नहीं (जैसा कि एक अस्पष्ट हदीस के आधार पर प्रसिद्ध है), वल्कि हर समय यह तकबीर पढ़ी जाये (अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला ईलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिलहम्द) जमरात को कंकरियाँ मारते समय ही कंकरी के साथ तकबीर पढ़नी सुन्नत के अनुरुप है । (नैलुल अवतार भाग ५ पृ० ८६)

[3]जमरात को कंकरियाँ मारना, तीन दिन श्रेष्ठ हैं, परन्तु यदि कोई दो दिन के बाद मिना से वापस आ जाये तो उसकी भी आज्ञा है ।

डरते रहो, और जान रखो, कि तुम सब उसी की ओर एकत्रित किये जाओगे।

(२०४) और कुछ लोगों की सांसारिक बातें आपको प्रसन्न कर देती हैं और वह अपने दिल की बातों पर अल्लाह को साक्षी करता है, हालांकि वास्तव में वह अति झगड़ालू है।[1]

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِي قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾

(२०५) और जब वह लौट कर जाता है, तो धरती में उपद्रव फैलाने और खेती एवं मानव संतति के विनाश के प्रयत्न में लगा रहता है और अल्लाह (तआला) उपद्रव को पसंद नहीं करता है।

وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾

(२०६) और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो घमण्ड उसे पाप पर पारित कर देता है। ऐसे के लिए केवल नरक ही है, और नि:सन्देह वह बहुत बुरा स्थान है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

(२०७) और कुछ लोग वह भी हैं जो कि अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए अपनी जान तक बेच डालते हैं।[2] और

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ

[1] कुछ अस्पष्ट कथा के अनुसार यह आयत एक मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) अखनस पुत्र शुरैक सक़फ़ी के लिए उतरी, परन्तु सहीह बात यह है कि इसका तात्पर्य सभी मुनाफ़िक़ों एवं घमण्डियों से है, जिनमें यह घृणित बुराईयाँ पाई जाये, जो क़ुरआन में उनके विषय में वर्णित किया गया है।

[2] यह आयत, कहते हैं कि आदरणीय सुहैब रुमी के लिए उतरी है, जब वह हिजरत करने लगे, तो काफ़िरों ने कहा कि यह माल तो यहाँ का कमाया हुआ है, इसे हम साथ नहीं ले जाने देंगे, आदरणीय सुहैब रुमी ने यह सारा माल उनके हवाले कर दिया और धर्म साथ लेकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हो गये। आपने सुनकर कहा "सुहैब ने लाभदायक व्यापार किया है" दो बार कहा। (फ़तहुल क़दीर) परन्तु यह आयत भी सामान्य रुप से प्रसिद्ध है और उन सभी ईमानवालों और अल्लाह तआला से डरने

अल्लाह (तआला) अपने बन्दों (भक्तों) पर बड़ा स्नेह करने वाला है।

رَءُوفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾

(२०८) ऐ ईमानवालो, इस्लाम में पूर्ण रुप से प्रवेश करो और शैतान के पद चिन्हों का अनुकरण न करो।[1] वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً ص وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ط إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٠٨﴾

(२०९) यदि तुम निशानियों के आ जाने के उपरान्त भी विचलित हो जाओ, तो जान लो

فَإِن زَلَلْتُم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمُ الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

वालों एवं दुनिया की अपेक्षा धर्म और परलोक को श्रेष्ठता देने वालों को भी सम्मिलित करती है। क्योंकि इस प्रकार की सभी आयतों के विषय में, जो किसी व्यक्ति विशेष के लिए उतरी, यही नियम है (العبرة بعموم اللفظ لا بخصوص السبب). अर्थात शब्द का सामान्य अर्थ लिया जायेगा विशेष कारण नहीं जिस प्रकार से अखननस बिन शुरैक (जिसका वर्णन पिछली आयत में हो चुका है)। कुकर्मो का एक उदाहरण है, जो हर उस व्यक्ति के लिए उसके अनुरुप होगा जिसका कर्म उसके अनुरुप होगा। और सुहैब रज़ी अल्लाह अन्हु सत्कर्म और पूर्ण ईमान का एक उदाहरण हैं, यह हर उस व्यक्ति के लिए है, जो उनके अनुरुप सत्कर्मों से अलंकृत होगा।

[1]ईमानवालों को कहा जा रहा है कि पूर्णरुप से इस्लाम में प्रवेश कर लो। इस प्रकार न करो कि जो बातें तुम्हारे अपने लाभ तथा आकांक्षानुसार हैं, तो उन्हें अपना लो, शेष को छोड़ दो। इसी प्रकार जो बातें तुम छोड़ आये हो उसे इस्लाम धर्म में मिश्रित करने का प्रयत्न न करो, बल्कि केवल इस्लाम धर्म के नियमों को पूर्णरुप से अपनाओ। इससे धर्म में नयी प्रथाओं के सम्मिलित करने से नकारा गया है, और आधुनिक धर्मनिरपेक्ष विचार जो इस्लाम धर्म को पूर्ण रुप से अपनाने के लिए तैयार नही है उनका भी खण्डन किया गया है। बल्कि जो धर्म को मस्जिदों की इबादतों तक सीमित करना चाहता और राजनीति और राजकीय विधायिकाओं से अलग रखना चाहता है। इसी प्रकार जनता को भी समझाया जा रहा है जो प्रथा और रीति-रिवाज और क्षेत्रीय संस्कृत लोक कथाओं को पसन्द करते हैं और उन्हें छोड़ने के लिए प्रयत्न भी नहीं करते, जैसे मृत्यु और विवाह के समय अनावश्यक धन ख़र्च करना, जैसाकि अन्य धर्म की रीति और प्रथा से होता है। और कहा जा रहा है कि शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। जो तुम्हें इस्लाम धर्म के विपरीत उपरोक्त वर्णित बातों के लिए बड़े सुन्दर तर्क प्रस्तुत करता है, बुराईयों पर मन लुभावन चादरें चढ़ाकर और नई रीतियों को भी पुण्य सिद्ध करता है, ताकि उसके मन भावन जाल में फंसे रहें।

عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ कि अल्लाह (तआला) सर्वशक्तिशाली और विधाता है।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝

(२१०) क्या लोगों को इस बात की प्रतिक्षा है कि अल्लाह (तआला) स्वयं बादलों के झुरमुट में आ जाये, एवं फ़रिश्ते भी, और काम का अन्त कर दिया जाये,[1] अल्लाह ही की ओर सभी कार्य लौटाये जाते हैं।

سَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَمْ آتَيْنَاهُم مِّنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَن يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

(२११) इस्राईल की सन्तान से पूछो कि हमने उन्हें कितनी स्पष्ट निशानियाँ प्रदान कीं।[2] और जो अल्लाह (तआला) के पुरस्कार को अपने पास पहुँच जाने के उपरान्त बदल डाले [3](वह जान ले) कि अल्लाह (तआला) भी कठोर यातनाओं का देने वाला है।

زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا ۘ

(२१२) काफ़िरो के लिए सांसारिक जीवन सुशोभित कर दिया गया है, और वह ईमानवालों

---

[1]यह या तो प्रलय (क़ियामत) का दृश्य है (जैसाकि कुछ टीकारों के वर्णित हैं। (इब्ने कसीर) अर्थात क्या यह क़ियामत आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ? या फिर उसका यह अर्थ है कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों के जलूस में और बादलों की छाया में उनके सामने आये और निर्णय कर दे, तब वह ईमान लायेंगे, परन्तु ऐसा इस्लाम स्वीकार करने योग्य ही नहीं, इसलिए इस्लाम धर्म स्वीकार करने में देर न करो और शीघ्र इस्लाम धर्म स्वीकार करके अपना परलोक सुधार लो।

[2]उदाहरणत: मूसा की छड़ी, जिसके द्वारा हमने जादूगरों के जादू को तोड़ा, समुद्र में मार्ग बनाया, पत्थर से बारह स्रोत निकाले, बादलों की छाया, मन्न व सलवा का उतरना आदि जो अल्लाह तआला की शक्ति और हमारे पैगम्बरों की सच्चाई के प्रमाण थे, परन्तु उसके पश्चात भी उन्होंने अल्लाह तआला के आदेशों की अवेहलना की।

[3]अनुकम्पा में परिवर्तन करने से तात्पर्य यही है कि विश्वास के बदले अविश्वास किया तथा विमुखता का मार्ग अपनाया।

وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾

से हँसी मज़ाक करते हैं ।[1] यद्यपि जिन्होंने धर्म परायणता के गुण किये प्रलय (क़ियामत) के दिन उनसे उच्चतम होंगे । अल्लाह (तआला) जिसे चाहता है अंगणित प्रदान करता है ।[2]

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۗ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۖ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ

(२१३) वास्तव में लोग एक ही मत थे ।[3] फिर अल्लाह (तआला) ने नबियों को शुभ सन्देश देने और सचेत करने को भेजा और उनके साथ सत्यशास्त्र उतारी, ताकि लोगों के प्रत्येक मतभेद का निर्णय हो जाये । और केवल उन्हीं लोगों ने जो उसे दिये गये थे अपने पास तर्क आ चुकने के उपरान्त आपसी द्वेष एवं घमण्ड के कारण से उसमें

---

[1]चूंकि मुसलमानों का बहुमत निर्धनों पर आधारित था, जो सांसारिक वैभव और आराम से मुक्त थे, इसलिए काफ़िर अर्थात मक्का के कुरैश उनका उपहास उड़ाते थे, जैसाकि धनवानों का हर समय यही कर्म रहा है ।

[2]अधर्मी जिन निर्धन एवं सीधे सादे मुसलमानों का उपहास तथा परिहास करते थे, उसका वर्णन करके कहा जा रहा है कि क़ियामत के दिन यह निर्धन लोग अपने अल्लाह तआला की आज्ञा पालन के कारण उच्च पदों पर आसीन होंगे "अत्याधिक वृत्ति" का सम्बन्ध आख़िरत के अतिरिक्त दुनिया से भी हो सकता है, कि कुछ ही वर्षों पश्चात इन निर्धनों के लिए विजय का द्वार खोल दिया गया, जिसके कारण वृत्ति की अधिकता हो गयी ।

[3]अर्थात एकेश्वरवाद, यह आदरणीय आदम से आदरणीय नूह, अर्थात दस शताब्दियों तक लोग मात्र एकेश्वरवादी थे, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहचर व्याख्याकारों ने आयत में فاختلفوا को लिप्त माना है, अर्थात इसके बाद शैतान के शंका पैदा करने से उनके मध्य मतभेद पैदा हो गया और मूर्तियो एवं प्राकृतिक दृश्यों की पूजा की साधारण चलन हो गयी فَبَعَثَ इसका आधार فاختلفوا (जो लिप्त है) पर है । परन्तु अल्लाह तआला ने नबियों को किताबों के साथ भेजा ताकि वे इसके आधार पर लोगों के मध्य मतभेद का निर्णय और सत्य एवं एकेश्वरवाद को स्थापित तथा स्पष्ट करे । (इब्ने कसीर)

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾

विभेद किया ।[1] इसलिए अल्लाह (तआला) ने ईमानवालों के इस मतभेद में भी सत्य की ओर अपनी अनुमति द्वारा मार्गदर्शन किया ।[2] और अल्लाह जिसको चाहे सीधे मार्ग की ओर अग्रसर करता है ।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَ الضَّرَّآءُ وَ زُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ

(२१४) क्या तुम यह विचार कर बैठे हो कि स्वर्ग में चले जाओगे ? यद्यपि अब तक तुम पर वह स्थिति नहीं आयी, जो तुमसे अगलों पर आयी[3] उन्हें निर्धनता एवं रोग पहुँचा, और

---

[1]मतभेद सदैव सतमार्ग से विचलित होने के कारण ही होता है, इस विचलन का आधार अहंकार, घमण्ड, पक्षपात एवं वैमनस्य ही बनता है । मुस्लिम समुदाय में जब तक यह विचलन नहीं आया, यह समुदाय अपने शुद्ध रुप में स्थित एवं मतभेद से सुरक्षित रही, परन्तु अनुकरणवाद तथा तर्क-विर्तक ने सत्य मार्ग को छोड़ने का जो मार्ग खोला, उससे मतभेद की परिधि फैलती एवं बढ़ती गयी, यहाँ तक कि समुदाय की एकता एक असम्भव चीज़ बनकर रह गयी है ।

[2]अतएव उदाहरणतः किताब वालों ने जुमे में मतभेद किया यहूदियों ने शनिवार को और ईसाईयों ने रविवार को अपना पवित्र दिन माना तो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को "जुमे" का दिन प्रयोग करने का सौभाग्य प्रदान किया, उन्होंने आदरणीय ईसा के विषय में मतभेद किया और यहूदियों ने उनको झुठलाया और उनकी माता आदरणीया मरियम पर आरोप लगाया, इसके विपरीत ईसाईयों ने उन्हें अल्लाह का बेटा और पूज्य बना दिया । अल्लाह ने मुसलमानों को उनके विषय में सत्य पक्ष अपनाने की शक्ति प्रदान की, कि वह अल्लाह के पैग़म्बर (दूत) और उसके आज्ञाकारी भक्त थे । आदरणीय इब्राहीम के विषय में भी उन्होंने मतभेद किया, एक ने यहूदी और दूसरे ने ईसाई कहा, मुसलमानों को अल्लाह तआला ने सच बात बतायी कि वह अल्लाह के आज्ञाकारी और एकाग्र थे और इस प्रकार कई प्रश्न पर अल्लाह तआला ने अपनी कृपा अर्थात अपनी दया से मुसलमानों को सीधी राह दिखायी ।

[3]मदीना की ओर हिजरत (मक्का से मदीना इस्लाम धर्म स्वीकार करने के कारण जो हिजरत हुई है) के पश्चात जब मुसलमानों को यहूदियों, अवसरवादियों तथा अरब के मूर्तिपूजकों के द्वारा विभिन्न प्रकार के कष्ट एवं कठिनाईयाँ पँहुचने के बाद कुछ मुसलमानों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शिकायत की जिस पर मुसलमानों को अल्लाह तआला ने यह आयत उतारकर सांत्वना दी और स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾

वह यहां तक झिझोड़े गये कि रसूल और उनके साथ के ईमान वाले लोग कहने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी ? सुन रखो कि अल्लाह की सहायता निकट ही है ।[1]

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾

(२१५) आपसे पूछते हैं कि वह क्या ख़र्च करें, आप कह दिजिए कि जो धन तुम ख़र्च करो वह माता-पिता के लिए, तथा सम्बन्धियों, एवं अनाथों और निर्धनों, तथा यात्रियों के लिए है ।[2] और तुम जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह (तआला) को उसका ज्ञान है ।

तुमसे पहले लोगों को उनके सिर से लेकर पैर तक आरे से चीरा गया और लोहे की कंघी के द्वारा उनका मांस खुर्चा गया, लेकिन यह अत्याचार और यातनायें भी उनको अपने धर्म से नही फिरा सकीं । फिर फ़रमाया "अल्लाह की क़सम ! अल्लाह तआला इस मामले को पूर्ण (अर्थात इस्लाम को विजयी) करेगा । यहां तक कि एक सवार सन्आ से (यमन की राजधानी है) हज़र मूत तक अकेला यात्रा करेगा और उसे अल्लाह के अतिरिक्त किसी का भय न होगा ।"(अल हदीस सहीह बुख़ारी ६९४३, किताब अल-इकराह) तात्पर्य नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुसलमानों के अन्दर साहस और स्थाइत्व तथा शौर्य पैदा करना था ।

[1]इसलिए कि "كُلُّ مَا هُوَ آتٍ فَهُوَ قَرِيْبٌ" (हर आने वाली वस्तु निकट है) और ईमानवालों के लिए अल्लाह की स्थाई आवश्यक है, इसलिए वह निकट ही है ।

[2]कुछ सहावा के प्रश्न करने पर धन व्यय करने के लिए उसके प्राथमिक पात्रों का वर्णन किया जा रहा है । अर्थात यह सबसे अधिक तुम्हारे धनरुपी सहायता के अधिकारी हैं । इससे ज्ञात हुआ कि माल का यह आदेश स्वेच्छात्मक दान से सम्बन्धित है, ज़कात से सम्बन्धित नहीं । क्योंकि माता-पिता पर ज़कात का धन ख़र्च करना उचित नहीं । आदरणीय मैमून बिन मेहरान ने इस आयत की तिलावत (क़ुरआन पढ़ना) करके फ़रमाया माल ख़र्च करने के इन स्थानों पर न तबला-सांरगी का वर्णन है और न सुन्दर चित्रों और दीवारों पर लटकाये जाने वाले मनमोहक पर्दों का वर्णन है । भावार्थ यह है कि इन चीजों पर माल ख़र्च करना अल्लाह को पसन्द नहीं है और व्यर्थ है । अफ़सोस है कि आज यह व्यर्थ के ख़र्च और अल्लाह को न पसन्द आने वाले ख़र्च हमारे जीवन के इस प्रकार एक आवश्यक अंग बन गये हैं, कि इसके करने में हमें तनिक भी बुरा नहीं लगता ।

(२१६) तुम पर धर्म युद्ध (जिहाद) अनिवार्य किया गया, यद्यपि कि वह तुम्हारे लिए कठिन प्रतीत होता हो, हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को बुरी जानो, और वास्तव में वही तुम्हारे लिए भली हो और यह भी हो सकता है कि तुम जिस चीज़ को अच्छी समझो, और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। वास्तविक ज्ञान अल्लाह ही को है, तुम मात्र अनजान हो।[1]

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ
وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ
خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا
شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾

(२१७) लोग आप से हुरमत वाले (आदरणीय) महीनों में युद्ध के विषय में प्रश्न करते हैं, आप कह दीजिए उनमें युद्ध करना महा पाप है। परन्तु अल्लाह के मार्ग से रोकना, उनके साथ कुफ़्र करना और मस्जिद-ए-हराम से रोकना, एवं वहाँ के निवासियों को वहाँ से निकालना अल्लाह के निकट उससे भी बड़ा पाप है और फ़ित्ना (उपद्रव) हत्या से भी बड़ा पाप है।[2] यह लोग तुमसे लड़ाई-झगड़ा करते

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ
فِيْهِ ۗ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۗ وَصَدٌّ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ
مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ
اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُوْنَ
يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ

---

[1]धर्म युद्ध (जिहाद) के आदेश कोएक उदाहरण बनाकर ईमानवालों को समझाया जा रहा है कि अल्लाह तआला के प्रत्येक आदेशानुसार कर्म करो, चाहे तुम्हें कठिन लगे और अच्छा न लगे इसलिए कि उसके परिणाम और फल को तुम नहीं जानते, केवल अल्लाह तआला ही जानता है। हो सकता है इसमें तुम्हारे लिए अच्छाई हो। जैसे धर्मयुद्ध (जिहाद) के बदले में तुम्हें विजय या सम्मान और माल आदि सब मिल सकता है। इसी प्रकार जिसे तुम पसन्द करो धर्मयुद्ध के बदले घर बैठे रहना, उसका परिणाम तुम्हारे लिए भयानक हो सकता है, अर्थात शत्रु की तुम पर विजय प्राप्त हो जाये और तुम्हें अपमान एवं अनादर का सामना करना पड़े।

[2]रजब, ज़ुलक़ादा, जिलहिज्जा, और मोहर्रम, यह चार महीने अज्ञान काल में भी आदरणीय महींने माने जाते थे, जिनमे हत्या और युद्ध करना अच्छा नहीं समझा जाता था। इस्लाम ने भी इनके आदर को उसी प्रकार रखा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में मुसलमान सैनिक दस्ते के हाथों रजब के महीने में एक काफ़िर की हत्या हो गयी और कुछ

دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾

ही रहेगें, यहाँ तक की यदि उनसे हो सके तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें ।[1] और तुममें से जो लोग अपने धर्म से पलट जायें और उसी अधर्म की स्थिति में मरें, उनके कर्मलोक एवं परलोक के कर्म सभी नष्ट हो गये । यह लोग नरकवासी होंगे और नित्य नरक में ही रहेंगे ।[2]

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

(२१८) हाँ जिन्होंने विश्वास किया तथा प्रवास किये एवं अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया (धर्म की रक्षा के लिए अल्लाह के मार्ग में लड़े)

काफ़िर बन्दी बना लिए गये । मुसलमानों को यह नहीं मालूम था कि रजब का महीना प्रारम्भ हो गया है । काफ़िरों ने मुसलमानो को दोष दिया कि देखो यह आदरणीय महीनों का भी आदर नहीं करते, जिस पर यह आयत उतरी कि नि:सन्देह सम्मानित महीनों में हत्या करना महापाप है, परन्तु आदर की दुहाई देने वालों को अपने कर्म नहीं दिखाई देते ? यह स्वयं उससे भी बड़ा अपराध करते हैं कि अल्लाह के मार्ग से तथा मस्जिद-ए-हराम (खाना-ए-काअबा) से लोगों को रोकते हैं और वहाँ से मुसलमानों को निकलने पर उन्होंने वाध्य किया । इसके अतिरिक्त अधर्म और शिर्क स्वयं हत्या से भी बड़ा पाप है । इसलिए मुसलमानो से ग़लती से आदर वाले महीनों में एक-आध हत्या हो भी गयी, तो क्या हुआ ? उस पर कोलाहल के बजाय अपने कुकर्मों को भी देख लेना चाहिए ।

[1]जब यह अपनी चालों और षड़यंत्रों और तुम्हें मुर्तद्द (इस्लाम धर्म से फिरने वाला) बनाने के प्रयत्न से रुकने वाले नहीं, तो फिर तुम उनसे सामना करने में आदरणीय महीने के कारण क्यों रुके रहो ?

[2]जो इस्लाम धर्म से पलट जाये अर्थात मुर्तद्द हो जाये (यदि वह क्षमा न माँगे) तो उसका सांसारिक दण्ड हत्या है हदीस में है «مَنْ بَدَّلَ دِيْنَهُ فَاقْتُلُوْهُ». (सहीह बुख़ारी हदीस ३०१७, कितावुल जिहाद) इस आयत में उसके परलोक के दण्डों का वर्णन है । जिससे ज्ञात हुआ कि ईमान की स्थिति में किये पुण्य के कर्म भी अविश्वास और इस्लाम से पलटने पर नष्ट हो जायेंगे और जिस प्रकार से ईमान स्वीकार कर लेने में पिछले पाप समाप्त हो जाते हैं, उसी प्रकार अधर्म और इस्लाम से पलटने की स्थिति में सारे पुण्य निष्फल हो जाते हैं । फिर भी क़ुरआन के शब्दों से यह स्पष्ट होता है कि कर्मों को नष्ट उसी समय किया जायेगा जब मृत्यु कुफ़्र की स्थिति में हो, यदि मृत्यु से पहले क्षमा माँग ली तो ऐसा न होगा, अर्थात मुर्तद्द की क्षमा स्वीकार्य है ।

أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٨﴾

वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं। और अल्लाह (तआला) अति क्षमाशील एवं अति कृपालु है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾

(२१९) लोग आपसे मदिरा और जुआ के विषय में प्रश्न करते हैं, आप कह दीजिए इन दोनों में महापाप है।[1] और लोगों को इससे सांसारिक लाभ भी होता है, परन्तु उनका पाप उनके लाभ से कहीं अधिक है।[2] आप से यह भी पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें, आप कह दीजिए आवश्यकता से अधिक को।[3] अल्लाह (तआला)

---

[1] महापाप तो धर्मानुसार है।

[2]लाभ का सम्बन्ध दुनिया से है। जैसे शराब पीने से सामायिक रुप से स्फूर्ति और कुछ बुद्धियों में तीव्रता आ जाती है, काम वेग बढ़ जाता है। जिसके लिए इसका प्रयोग सामान्य रुप से होता है। इसी प्रकार इसका क्रय-विक्रय भी लाभप्रद व्यापार है। जुए से भी कुछ आदमी एक-आध बार जीत जाता है और कुछ माल उसके हाथ लग जाता है, लेकिन यह लाभ उन हानियों के आपेक्ष कोई गणना नहीं रखते, जो व्यक्ति की बुद्धि और उसके धर्म को इनसे पंहुचते हैं। इसीलिए फ़रमाया, "उनका पाप उनके लाभ से बहुत बड़ा है।" इस प्रकार इस आयत में शराब और जुए को निषेध नहीं किया गया, फिर भी इसके लिए पृष्ठभूमि तैयार की गयी है। इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि हर चीज़ में चाहे कितनी बुराई क्यों न हो कुछ न कुछ लाभ अवश्य होगा। जैसे रेडियो टी० वी० और अन्य इसी प्रकार के आधुनिक अविष्कारों के कुछ लाभ बताकर लोग अपने आप को धोखा दे रहे हैं। देखना यह है कि लाभ-हानि का अनुपात क्या है ? विशेष रुप से धर्म, ईमान, स्वभाव एवं चरित्र के लिए यदि धार्मिक हानियाँ अधिक हैं, तो थोड़े से सांसारिक लाभ के लिए उसे उचित सिद्ध नही किया जा सकता।

[3]इस अर्थ के अनुसार यह नैतिक मार्ग दर्शन है अथवा यह आदेश इस्लाम के प्रारम्भिक समय में दिया गया है, जिस पर ज़कात के अनिवार्य होने के पश्चात कर्म करना आवश्यक नहीं रहा, लेकिन श्रेष्ठ अवश्य है अथवा इसके अर्थ हैं ما سهل وتيسّر ولم يشق على القلب (फ़तहुल क़दीर) "जो सरलता एवं आसानी से हो जाये और दिल पर बोझ न लगे।" इस्लाम धर्म ने नि:सन्देह धन दान करने पर बल दिया है परन्तु इसमें यह ध्यान रहे कि अपने संरक्षण में रहने वाले लोगों की आवश्यकता एवं संरक्षण में किसी प्रकार की कमी न आये तथा

इसी तरह अपने आदेश स्पष्ट रुप से तुम्हारे लिए वर्णित कर रहा है। कि तुम सोच समझ सको।

(२२०) सांसारिक और धार्मिक कर्मों को, और आप से अनाथों के विषय में भी प्रश्न करते हैं[1] आप कह दीजिए कि उनकी भलाई करना ही अच्छा है, तुम यदि अपने माल उनके माल में मिला भी लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, कुविचार और सुविचार प्रत्येक को अल्लाह पूर्ण रुप से जानता है, और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हे कठिनाई में डाल देता।[2] नि:सन्देह अल्लाह (तआ़ला) सर्वशक्तिशाली एवं विधाता है।

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَيَسْــَٔـلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰي ۭ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّھُمْ خَيْرٌ ۭ وَاِنْ تُخَالِطُوْھُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٠﴾

(२२१) और मुशरिक (बहुदेववादी) स्त्रियों से उस समय तक विवाह न करो जब तक कि वह ईमान न ले आयें।[3] ईमानवाली लौंडी

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۭ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ

उनको प्राथमिकता देने का आदेश आया है। दूसरे इस प्रकार खर्च करने से रोका गया है कि कल तुम्हारे परिवार वालों को दूसरों के आगे हाथ फैलाना पड़े।

[1]जब अनाथों के माल अत्याचार करके खाने वालों के लिए कठोर दण्ड का आदेश आया, तो सहाबा डर गये और अनाथों की हर चीज़ अलग कर दी, यहाँ तक की खाना-पीना अलग कर दिया, यदि उनके खाने-पीने की चीज़ बच जाती, तोउसको उपयोग में न लाते, जिससे वह चीज़ ख़राब हो जाती, इस भय से कि कहीं इस दण्ड के अधिकारी न बना दिये जायें, इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात त्रुटि दूर करने तथा अच्छाई के लिए भी, उनके माल को अपने माल में मिलाने की आज्ञा नहीं प्रदान करता।

[3]मुशरिक स्त्रियों से तात्पर्य मूर्तिपूजक अथवा बहुदेववादी स्त्रियाँ हैं, क्योंकि किताब वालों (यहूदी और ईसाई) स्त्रियों से विवाह करने की आज्ञा क़ुरआन ने प्रदान की है, परन्तु किसी मुसलमान स्त्री का विवाह अहले किताब पुरुषों से नहीं हो सकता। फिर भी आदरणीय उमर रज़ी अल्लाह अन्हु ने कारण वश यहूदी ईसाई स्त्रियों से विवाह करना अच्छा नही समझा

وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۭ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ښ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢١﴾

(दासी) भी मुशरिक (बहुदेववादी) स्वतंत्र स्त्री से श्रेष्ठ है, यद्यपि की तुम्हें मुशरिक (बहुदेववादी) ही अच्छी लगती हो और न मुशरिक (बहुदेववादी) पुरुषों को अपनी स्त्रियों से विवाह करने दो, जब तक की वह ईमान न ले आयें। ईमानदार गुलाम (मुसलमान दास) स्वतन्त्र मुशरिक (बहुदेववादी) से श्रेष्ठकर है, यद्यपि की तुम्हें मुशरिक (बहुदेववादी) अच्छा लगे। ये लोग नरक की ओर बुलाते हैं और अल्लाह स्वर्ग की ओर और मोक्ष की ओर अपने आदेश से बुलाता है, वह अपनी निशानियाँ लोगों के लिए वर्णित कर रहा है, ताकि वह शिक्षा प्राप्त करें।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۭ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَاۗءَ

(२२२) और आपसे मासिक धर्म के विषय में प्रश्न करते हैं, कह दीजिए वह गंदगी है, मासिक धर्म के समय स्त्रियों से अलग रहो[1]

है। (इब्ने कसीर) इस आयत में ईमानवालों को ईमानदार स्त्री-पुरुष में विवाह करने पर बल दिया गया है। और धर्म को किनारे रख केवल सुन्दरता के कारण विवाह करने को परलोक के विनाशता का कारण बताया है। जिस प्रकार हदीस में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "स्त्री से चार कारणों से विवाह किया जाता है। माल, जाति, सुन्दरता अथवा धर्म के कारण से, तुम धार्मिक स्त्री का चयन करो।" (सहीह बुख़ारी, किताबुन निकाह, बाबुलकफ़ाअ फ़िद-दीन तथा मुस्लिम किताबुल रिदाआ) इसी प्रकार सुशील स्त्री को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ दौलत कहा है। «خَيرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا الْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ» (सहीह मुस्लिम, किताबुल रिदाआ।

[1]अपने यौवन पर पहुँचने पर प्रत्येक स्त्री को जो मासिक धर्म का रक्त आता है, उसे हैज़ कहते हैं और कई बार अप्राकृतिक रुप से रोग के कारण जो रक्त आता है, उसे इस्तेहाज़ा कहते हैं, जिसका आदेश व नियम हैज़ से भिन्न है। हैज़ के दिनो में स्त्री को नमाज माफ है, और रोजा रखने से रोका गया है, परन्तु उनके बदले दूसरे दिनो में रखना अनिवार्य है। पुरुष के लिए केवल सम्भोग प्रक्रिया से रोका गया है, परन्तु चुम्बन अथवा साथ लेटने को उचित कहा गया है। इसी प्रकार स्त्री इन दिनों में घर का कार्य एवं खाना पका

और जब तक वह पवित्र न हो जायें उनके निकट न जाओ, हां जब वह पवित्र हो जायें,[1] तो उनके पास जाओ जहां से अल्लाह ने तुम्हें आज्ञा प्रदान की है[2] अल्लाह क्षमा माँगने वाले को पवित्र रहने वाले को पसंद करता है।

فِي الْمَحِيضِ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿٢٢٢﴾

(२२३) तुम्हारी पत्नियां तुम्हारी खेतियां है, अपनी खेतियों में जिस प्रकार चाहो आओ।[3]

نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ وَقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ

सकती है, परन्तु यहूदियों में इस स्थिति में स्त्री को बिलकुल अपवित्र समझा जाता था। उसके साथ मिलना तथा खाना पकाना भी ठीक नहीं समझते थे। सहाबा ने इसके विषय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा तो आयत उतरी, जिसमें मात्र यौनि प्रक्रिया से रोका गया है, अलग रहने तथा निकट न जाने का अर्थ मात्र यौनि प्रक्रिया से मना किया गया है। (इब्ने कसीर आदि)

[1]जब वह पवित्र हो जायें। इसके दो अर्थ बताये गये हैं, एक तो यह है कि जब रक्त रुक जाये, तो बिना स्नान किये भी वे पवित्र हैं। पुरुष के लिए उनसे यौनि सम्बन्ध करना उचित है। इब्ने हज़्म तथा कुछ इमाम इसके पक्ष में है। अल्लामा अलबानी ने भी इसकी पुष्टि की है। (आदाबु ज़्जेफ़ाफ़ पृ० ४७) दूसरे अर्थ हैं, रक्त बंद होने के पश्चात स्नान करके पवित्र हो जायें, इस दूसरे अर्थ के अनुसार रक्त बंद होने के पश्चात स्त्री स्नान करके पवित्र न हो जाये, तब तक उससे सम्भोग हराम है। ईमाम शौकानी ने इसे श्रेष्ठ बताया है। (फ़तहुल क़दीर) हमारे निकट दोनों ही नियामानुसार कर्म किये जा सकते हैं परन्तु दूसरा श्रेष्ठ है।

[2]जहां से आज्ञा प्रदान की है। अर्थात यौनियों से क्योंकि हैज के समय इन्ही के प्रयोग से रोका गया था, और अब पवित्र होने के पश्चात जो आज्ञा प्रदान की जा रही है, तो इसका अर्थ है उसी (यौनि) की आज्ञा है, न कि किसी अन्य भाग अथवा अंग से। इससे यह भावार्थ निकाला गया कि स्त्री के मलद्वार का प्रयोग हराम है, जैसाकि हदीसों में इसकी विस्तृत जानकारी दी गयी है।

[3]यहूदियों का विचार था कि यदि स्त्री को पेट के बल लिटाकर उनके पीछे से सम्भोग किया जाये, तो बच्चा भिंगा जन्म लेगा। इसके खण्डन में कहा जा रहा है कि सम्भोग आगे से करो (चित लेटाकर) अथवा पीछे से (पेट के बल लिटाकर) अथवा करवट से, जिस प्रकार चाहो उचित है, परन्तु यह आवश्यक है कि प्रत्येक स्थिति में स्त्री की यौनि का ही प्रयोग हो। कुछ लोग इससे यह अर्थ लेते हैं (जिस प्रकार चाहो) में मलद्वार भी आ जाता है, इसलिए मलद्वार का प्रयोग भी उचित है, परन्तु यह बिलकुल गलत है। जब

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوٓا أَنَّكُم مُّلَٰقُوهُ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

और अपने लिए (पुण्य) आगे भेजो, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, और जान रखो, कि तुम उससे मिलने वाले हो, और ईमानवालों को शुभ सन्देश सुना दीजिए।

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِّأَيْمَٰنِكُمْ أَن تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

(२२४) और अल्लाह (तआला) को अपनी शपथों का (इस प्रकार) चिन्ह न बनाओ कि भलाई और परहेजगारी और लोगों के मध्य त्रुटियों को दूर करने को छोड़ बैठो।[1] और अल्लाह (तआला) सुनने वाला जानने वाला है।

لَّا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِيٓ أَيْمَٰنِكُمْ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝

(२२५) अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी उन शपथों पर न पकड़ेगा, जो दृढ़ न हों।[2] हाँ तुम्हारी पकड़ उस चीज़ पर है, जो तुम्हारे दिलों का कर्म है, अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला साहिष्णु है।

لِّلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِن نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ ۖ فَإِن فَآءُو

(२२६) जो लोग अपनी पत्नियों से (न मिलने की) शपथ खायें उनके लिए चार महीने की

कुरआन में स्त्री को खेती कहा है, तो इसका स्पष्ट यह अर्थ है कि केवल खेती के प्रयोग के लिए कहा जा रहा है कि "अपनी खेतियों में जिस प्रकार चाहो आओ।" और यह खेती (बच्चा पैदा होने का मार्ग) केवल स्त्री की यौनि है न कि उसका मलद्वार। अन्ततः यह एक अप्राकृतिक यौनि सम्बन्ध है, ऐसे व्यक्ति को जो अपनी पत्नी के साथ गुदा मैथुन करे। उसको (मलऊन) बुरा कहा जाने वाला व्यक्ति कहा गया है। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)।

[1]अर्थात क्रोध में ऐसी शपथ मत उठाओ कि मैं अमुक व्यक्ति के ऊपर उपकार नहीं करूंगा, अमुक व्यक्ति से नहीं बोलूंगा, अमुक व्यक्ति के मध्य सन्धि नहीं कराऊंगा। इस प्रकार की शपथों के विषय में हदीस शरीफ़ में आया है कि यदि इस प्रकार की शपथ खा भी लो, तो उसे तोड़ दो, और शपथ का कफ़्फ़ार: (शपथ खाने के बाद यदि तोड़ दी जाये, तो उसका दण्ड) अदा करो। (शपथ के कफ़्फ़ारे के लिए देखिए सूर: अल-मायदा:, आयत ८९)

[2]अर्थात जो बिना सोचे समझे और आदत के तौर पर हो, परन्तु जान बूझकर शपथ खाना महापाप है।

فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾

अवधि है ।[1] फिर यदि वह लौट आयें, तो अल्लाह (तआला) क्षमावान कृपालु है ।

وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾

(२२७) और यदि तलाक़ का प्रयत्न कर ले तो अल्लाह (तआला) अति सुनने वाला जानने वाला है ।[2]

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ

(२२८) तलाक़ प्राप्त स्त्रियाँ अपने आपको तीन मासिक धर्म तक रोके रखें ।[3] उनके लिये उचित नहीं कि अल्लाह ने उनके गर्भाशय में

---

[1]إيلاء का अर्थ शपथ खाने के हैं यदि कोई पति शपथ खा ले कि मैं अपनी पत्नी के साथ एक माह अथवा दो माह (उदाहरणत:) सम्बन्ध नहीं रखूंगा। फिर शपथ की अवधि पूरी करके कोई सम्बन्ध स्थापित करता है, तो कोई दण्ड नहीं है, और यदि शपथ की अवधि पूरी होने के पूर्व सम्बन्ध स्थापित कर ले तो शपथ तोड़ने का दण्ड अदा करना होगा। और यदि चार माह की अवधि से अधिक अथवा बिना अवधि के शपथ खायी गयी है, तो उनके लिए इस आयत में अवधि निर्धारित कर दी गयी है, कि वह चार माह पश्चात यदि चाहे तो सम्बन्ध स्थापित कर ले अथवा उन्हें तलाक़ दे दे (उसे चार माह से अधिक लटकाये रहने की आज्ञा नहीं है) पहली स्थिती में उसे शपथ तोड़ने का दण्ड भुगतना पड़ेगा और यदि दोनों में से कोई स्थिति नहीं अपनायेगा, तो न्यायालय उसको दोनों में से किसी एक को अपनाने पर प्रतिबन्ध करेगा कि वह उससे सम्बन्ध स्थापित कर ले अथवा तलाक़ दे दे ताकि उस स्त्री पर अत्याचार न हो। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2]इन शब्दों से प्रतीत होता है कि चार माह व्यतीत होते ही स्वयं तलाक नहीं हो जाती है। (जैसा कि कुछ विद्वानों के नियम में है), बल्कि पति के तलाक़ देने पर तलाक़ होगी, जिस पर उसे न्यायालय भी बाध्य करेगा। जैसाकि प्राय: विद्वानो का मत है। (इब्ने कसीर)

[3]इससे तात्पर्य वह तलाक़ प्राप्त स्त्री है जो गर्भवती भी न हो (क्योंकि गर्भवती स्त्री के लिए प्रसव की अवधि निर्धारित है) जिसे समागम से पहले ही तलाक हो गयी हो वह भी न हो (क्योंकि उसकी कोई इद्दत ही नहीं है) बूढ़ी भी न हो जिसको मासिक धर्म आना बंद हो गया हो (क्योंकि उनकी इद्दत तीन माह है) अर्थात इस आयत में उपरोक्त वर्णित स्त्रियों के अतिरिक्त समागम प्राप्त स्त्रियों की इद्दत वर्णित की जा रही है। और वह तीन मासिक धर्म के हैं। इसका अर्थ यह है कि तीन मासिक धर्म व्यतीत हो जाने के उपरान्त उन्हें अपना विवाह दूसरी जगह करने का अधिकार है। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

أَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ إِنْ أَرَادُوْٓا إِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۸﴾

जो पैदा किया हो उसे छिपायें ।[1] यदि उन्हें अल्लाह (तआला) पर और प्रलय के दिन पर ईमान हो । उनके पति को इस अवधि में उन्हें लौटा लेने का पूर्ण अधिकार हैं, यदि उनका विचार सुधार का हो ।[2] स्त्रियों के भी वैसे ही अधिकार हैं, जैसे उन पर पुरुषों के हैं अच्छाई के साथ ।[3] हाँ, पुरुषों की स्त्रियों पर श्रेष्ठता है, और अल्लाह (तआला) सर्वोच्च, एवं विधाता है ।

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَإِمْسَاكٌۢ

(२२९) ये तलाक़ दो बार हैं [4] फिर या तो

---

[1]इससे मासिक धर्म एवं गर्भ दोनों तात्पर्य हैं । मासिक धर्म न छिपायें, जैसे कि कहे कि मुझे तलाक के बाद एक अथवा दो बार मासिक हुआ है, जबकि उसे तीन मासिक धर्म हो चुके हों, (उसका उद्देश्य पहले पति से सम्बन्ध स्थापित करना हो, यदि वह सम्बन्ध स्थापित करना चाहता हो) अथवा सम्बन्ध स्थापित न करना चाहती हो, तो कह दे कि मुझे तीन मासिक धर्म हो चुके हैं, जबकि वास्तव में ऐसा न हुआ हो, ताकि पति का सम्बन्ध स्थापित करने का अधिकार सिद्ध न हो सके । इसी प्रकार गर्भ को न छिपायें क्योंकि इस प्रकार दूसरे स्थान पर विवाह करने की दशा में उसके वंश में मिश्रण होगा । वीर्य वह पहले पति का होगा और सम्बन्धित दूसरे पति से हो जायेगा । यह अति महापाप है ।

[2]सम्बन्ध स्थापित करने से पति का उद्देश्य यदि परेशान करना न हो, तो पति को इद्दत के अन्दर सम्बन्ध स्थापित करने का पूरा अधिकार है । स्त्री के संरक्षक को इसमें रुकावट डालने की कोई अनुमति नहीं है ।

[3]अर्थात दोनों के अधिकार एक-दूसरे से मिलते जुलते हैं, जिनको पूरा करने के दोनों धार्मिक नियमों से प्रतिबन्धित है । परन्तु पुरुष को स्त्री पर श्रेष्ठता प्राकृतिक शक्ति में, जिहाद (धर्मयुद्ध) की आज्ञा में, जायदाद के बँटवारे में स्त्री से दुगना पुरुष को, जाति एवं अधिकार में, तलाक-एवं सम्बन्ध स्थापित करने के अधिकार (आदि) में प्राप्त हैं ।

[4]अर्थात वह तलाक़ जिसमें पति को प्रत्यागमन का अधिकार है, वह दो बार है । पहली बार तलाक़ के बाद भी और दूसरी बार तलाक़ के बाद भी पति अपनी पत्नी से सम्बन्ध पुनः स्थापित कर सकता है । तीसरी बार तलाक़ देने के बाद यह सम्बन्ध स्थापित करने

بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ۗ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَن يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۚ وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ

अच्छाई से रोकना ।[1] अथवा उचित रुप से छोड़ देना है ।[2] और तुम्हें उचित नहीं कि तुमने उन्हें जो दिया है, उसमें से कुछ भी लो, हाँ, यह और बात है कि दोनों को अल्लाह की सीमायें स्थापित न रखने का भय हो, इसलिए यदि तुम्हें भय हो कि यह दोनों अल्लाह की सीमायें स्थापित न रख सकेंगे, तो स्त्री स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए कुछ दे डाले, इसमें दोनो पर कोई पाप नहीं[3] यह अल्लाह

का अधिकार नहीं । अनाज्ञा काल में यह तलाक़ और सम्बन्ध स्थापित करने का अधिकार असीमित था, जिससे स्त्रियों पर अत्याचार होते थे, पति बार-बार तलाक़ देकर सम्वन्ध स्थापित करता था, इस प्रकार न वह रखता था और न स्वतन्त्र करता था। अल्लाह तआला ने इस अत्याचार का द्वार बन्द कर दिया। पहली और दूसरी बार सोचने विचारने का समय दिया जाता है। यदि पहली बार में सदैव के लिए अलग कर दिया जाता, तो समाज में इससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता । इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने طلقتان (दो तलाक़) नहीं कहा, बल्कि फ़रमाया । ﴿الطَّلَاقُ مَرَّتَانِ﴾ (तलाक़ दो बार), इससे यह अर्थ निकला कि एक समय में दो अथवा तीन तलाकें देना और उन्हे उसी समय लागू कर देना अल्लाह तआला के आदेश के विपरीत है । अल्लाह तआला का विवेक इस प्रकार का न्याय करता है कि एक बार के तलाक़ के बाद (चाहे एक हो या कई एक) और इस प्रकार दूसरी बार तलाक के बाद (चाहे एक हो अथवा कई एक) पुरुष को सोचने-समझने और शीघ्रता अथवा क्रोध में किये गये कार्य को ठीक करने का समय दिया जाये। यह तर्क एक बैठक में तीन तलाकों को एक तलाक़ मानना ही उचित सिद्ध करता है, न कि तीनों को एक ही समय में लागू करके सोचने और अपनी ग़लतियों को सुधारने की छूट से वंचित कर देने की दशा में ।

[1]अर्थात सम्बन्ध स्थापति करके उसे अच्छी प्रकार से बसाना ।

[2]अर्थात तीसरी बार तलाक़ देकर ।

[3]इसमें "खुलअ" का वर्णन है, जिसके अनुसार पत्नी अपने पति से सम्बन्ध विच्छेद करना चाहे तो उस स्थिति में पति को अधिकार है कि वह अपना महर वापस ले ले। पति यदि सम्वन्ध विच्छेद न स्वीकार करे, तो न्यायालय पति को तलाक़ देने का आदेश करेगी, यदि वह उसे न माने तो न्यायालय विवाह समाप्त करेगी । अर्थात यह खुलअ, तलाक़ द्वारा भी हो सकता है और विच्छेद द्वारा भी दोनो स्थितियों में इद्दत एक मासिक धर्म है। (अबूदाऊद

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

की सीमायें हैं, सावधान। इनसे आगे न बढ़ना और जो लोग अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन कर जायें, वह अत्याचारी हैं।

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾

(२३०) फिर यदि उसको (तीसरी बार) तलाक़ दे दे, तो अब वह उसके लिए वैध नहीं जब तक कि वह स्त्री उसके अतिरिक्त दूसरे से विवाह न करे, फिर यदि वह तलाक दे दे, तो उन दोनों को मेलजोल कर लेने में कोई पाप नहीं।[1] जबकि वे जान लें कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख सकेंगे, यह अल्लाह (तआला) की सीमायें है, जिन्हें वह जानने वाले के लिए वर्णित कर रहा है।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ

(२३१) और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और वह अपनी इद्दत (तीमासिक धर्म की अवधि को कहते हैं) समाप्त करने के निकट हों, तो अब उन्हें अच्छी प्रकार से बसाओ अथवा

तिर्मिज़ी, नसाई व अल-हाकिम, फ़तहुल क़दीर) पत्नी को यह अधिकार देने के साथ-साथ उसे इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि पत्नी बिना किसी विशेष कारण के पति से सम्बन्ध विच्छेद अर्थात तलाक़ की माँग न करे। यदि ऐसा करेगी, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसी स्त्रियों के विषय में कठोर दण्ड की सूचना दी है कि वह स्वर्ग की सुगन्ध तक न पा सकेगी। (इब्ने कसीर आदि)

[1]इस तलाक़ से तात्पर्य तीसरी तलाक़ है और इसके बाद पति को न तो सम्बन्ध स्थापित करने का अधिकार है और न विवाह करने का। अब यह स्त्री किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह करे और वह अपनी इच्छा से तलाक़ दे अथवा उसकी मृत्यु हो जाये, तो उसके बाद वह अपने पहले पति से विवाह कर सकती है। परन्तु हमारे देश में जो इस प्रकार का "हलाला" करने और कराने की कुप्रथा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे "हलाला" करने और कराने वाले पर धिक्कार की है। हलाला के कारण किया गया विवाह, विवाह नहीं होता, यह व्यभिचार है। इस विवाह से स्त्री अपने पति के लिए वैध नहीं होगी।

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ؗ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾

भलाई के साथ अलग कर दो।[1] और उन्हें यातना पहुँचाने के उद्देश्य से अत्याचार व निर्दयता करने के लिए न रोको। जो व्यक्ति ऐसा करे, उसने अपनी आत्मा पर अत्याचार किया। तुम अल्लाह के आदेशों का उपहास न बनाओ।[2] और अल्लाह का उपकार जो तुम पर है याद करो और जो कुछ किताब व विद्या उसने उतारी है, जिससे तुम्हें शिक्षा दे रहा है, उसे भी। और अल्लाह (तआला) से डरते रहा करो और याद रखो कि अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु को जानता है।

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ

(२३२) और जब तुम अपनी स्त्रियों को तलाक़ दो और वह अपनी इद्दत पूरी कर लें, तो उन्हें उनके पतियों से विवाह करने से न रोको, जबकि वह आपस में नियमानुसार सहमत हो।[3] यह शिक्षा उन्हें दी जाती है, जिन्हें तुममें

﴿اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ﴾ में बताया गया था कि दो तलाक़ तक सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। इस आयत में बताया जा रहा है कि सम्बन्ध स्थापित इद्दत के भीतर हो सकता है, इद्दत की अवधि समाप्त होने के बाद नही। इसलिए यह पुनरावृति नहीं है, जिस प्रकार से स्पष्ट प्रतीत होती है।

[2]कुछ लोग मज़ाक़ में तलाक़ दे देते अथवा विवाह कर लेते अथवा स्वतन्त्र कर देते। फिर कहते कि मैंने तो मज़ाक़ किया था। अल्लाह तआला ने इसे अपनी आयत में उपहास कहा है जिसका उद्देश्य इस प्रकार के कर्मों से रोकना है। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उपहास से भी यदि उपरोक्त वर्णित कार्य करेगा तो वह वास्तविक माना जायेगा। और मज़ाक़ का तलाक़, विवाह एंव स्वतन्त्रता लागू हो जायेगी। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3]इसमें तलाक़ प्राप्त स्त्री के विषय में एक तीसरा आदेश दिया जा रहा है। वह यह कि यदि इद्दत समाप्त होने के पश्चात (पहली अथवा दूसरी तलाक़ के बाद) यदि भूतपूर्व पति-पत्नी अपनी सहमती से पुन: निकाह करें, तो तुम उनको न रोको। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾

से अल्लाह (तआला) पर और प्रलय के दिन पर विश्वास एवं ईमान हो, इसमें तुम्हारी अच्छी स्वच्छता एवं पवित्रता है। और अल्लाह (तआला) जानता है, तुम नहीं जानते।

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ ۖ لِمَنْ أَرَادَ أَن يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۚ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ

(२३३) माताऐं अपनी सन्तानों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें, जिनका विचार दूध पिलाने की पूरी अवधि का हो।[1] और जिनकी सन्तान हैं उनका कर्तव्य है उनको रोटी कपड़ा दे, जो नियमानुसार हो।[2] प्रत्येक व्यक्ति को इतनी

के समय में एक ऐसी घटना घटी और स्त्री के भाई ने मना कर दिया, तो यह आयत उतरी (सहीह बुख़ारी) एक तो इससे यह ज्ञात हुआ कि स्त्री अपना विवाह स्वयं नहीं कर सकती, वल्कि उसके संरक्षक की आज्ञा तथा सहमति विवाह के लिए आवश्यक है तभी तो अल्लाह तआला ने संरक्षकों को अपने संरक्षण के अधिकार के अनुचित प्रयोग से रोका है। इसकी और पुष्टि हदीस नववी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से होती है لا نكاح إلاّ بولّي (संरक्षक की आज्ञा के विना विवाह नही) (अन-निसाई) दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि स्त्री के संरक्षकों को भी स्त्री पर अत्याचार करने का अधिकार नहीं है। बल्कि उनके लिए आवश्यक है कि वह स्त्री की सहमत की भी अवश्य आदर करें।

[1]इस आयत में दूध पिलाने की समस्या के समाधान का वर्णन है। इसमें सर्वप्रथम बात कही गयी है। वह यह है कि जो पूर्ण अवधि तक दूध पिलाना चाहे, तो यह अवधि दो वर्ष की है। इन शब्दों से इससे कम अवधि तक दूध पिलाने का प्रविधान निकलता है। दूसरी बात यह कि दूध पिलाने की अधिक से अधिक अवधि दो वर्ष है। जैसाकि त्रिमज़ी में उम्मे सलमा के द्वारा वर्णित कथन है«لاَ يُحَرِّمُ مِنَ الرَّضَاعِ إلاَّ مَا فَتَقَ الأَمْعَاءَ فِي الثَّدْيِ وَكَانَ قَبْلَ الْفِطَامِ»(त्रिमज़ी, किताबुल रिदाआ) वही रिदाआ (दूध पिलाना) पवित्रता (हुरमत) सिद्ध करता है, जो छाती से निकलकर आँतो को फाड़े यह दूध छुड़ाने (की अवधि) से पहले हो। अतः यदि कोई वच्चा किसी औरत का इस प्रकार से दूध पीयेगा, जिससे दूध पिलाना सिद्ध होता है, तो उनके मध्य दूध का सम्बन्ध स्थापित हो जायेगा, जिसके बाद दूध पिये हुए भाई वहनों में विवाह उसी प्रकार नहीं हो सकता, जिस प्रकार से सगे भाई-बहनो में वर्जित है। «يَحْرُمُ مِنَ الرَّضَاعِ مَا يَحْرُمُ مِنَ النَّسَبِ». (सहीह बुख़ारी, किताबुश शहदात) दूध पीने से भी वह सम्बन्ध निषेध हो जायेगे, जो वंश से अवैध होते है।

[2] مولودلـه से तात्पर्य पिता है। तलाक़ होने के पश्चात नवजात शिशु और उसकी माँ के भरण-पोषण की समस्या हमारे समाज में जटिल होती जा रही है, इसका कारण धार्मिक

لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ۚ
لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا
مَوْلُودٌ لَّهُ بِوَلَدِهِ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ
مِثْلُ ذَٰلِكَ ۗ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَن
تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدتُّمْ أَن
تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
إِذَا سَلَّمْتُم مَّا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ ۗ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾

ही कठिनाई दी जाती है, जितनी उसकी शक्ति हो। माता को उसकी सन्तान के कारण, अथवा पिता को उसकी सन्तान के कारण उसे कोई हानि नहीं पहुँचाई जाये।[1] उत्तराधिकारी पर भी उसी जैसा कर्तव्य है।[2] फिर यदि दोनों (अर्थात माता-पिता) अपनी सहमति एवं आपसी विचार से दूध छुड़ाना चाहें, तोदोनों पर कोई पाप नहीं, और यदि तुम अपनी सन्तानों को दूध पिलाना चाहते हो, तो भी तुम पर कोई पाप नहीं, जबकि तुम उनके सांसारिक नियम के अनुसार उनको दे दो।[3] अल्लाह तआला से डरते रहो और जानते रहो कि अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ
وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ

(२३४) तुम में से जो लोग मर जायें, और पत्नियाँ छोड़ जायें, वह स्त्रियाँ अपने आपको

नियमों का अवहेलना है। यदि अल्लाह के आदेशनुसार पति अपनी यथासंभव तलाक़ दी हुई स्त्री के रोटी-कपड़े का उत्तरदायी हो, जिस प्रकार से इस आयत में कहा जा रहा है, तो अति सरलता से समस्या का समाधान हो जाता है।

[1]माता को कष्ट पहुँचाने का तात्पर्य यह है कि जैसे माता अपने बच्चे को अपने पास रखना चाहे, परन्तु ममता को ठुकराकर उसका बच्चा उससे बलपूर्वक छीन लिया जाये। अथवा यह कि बिना ख़र्च की जिम्मेदारी लिए उसको दूध पिलाने पर मजबूर किया जाये। पिता को कष्ट पहुँचाने से तात्पर्य यह है कि माता दूध पिलाने से इंकार कर दे अथवा उसकी शक्ति से अधिक उससे धन की माँग करे।

[2]पिता की मृत्यु के पश्चात ऐसी स्थिति में यह कर्तव्य उत्तराधिकारियों का है कि वह बच्चे की माता के अधिकार उचित रुप से अदा करें, ताकि न तो स्त्री को कष्ट हो और न बच्चे के पालन-पोषण पर प्रभाव पड़े।

[3]यह माता के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री से दूध पिलाने की आज्ञा है। परन्तु उसका देय नियमानुसार कर दिया जाये।

بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۚ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٤﴾

चार महीने और दस (दिन) इद्दत में रखें ।[1] फिर जब अवधि समाप्त कर लें, तो जो अच्छाई के साथ अपने लिए करे उसमें तुम पर कोई पाप नहीं [2] और अल्लाह (तआला) तुम्हारे प्रत्येक कर्मों को जानने वाला है ।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِنْ لَا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ

(२३५) और तुम पर इसमें कोई पाप नहीं कि तुम संकेत रुप अथवा अस्पष्ट रुप से इन स्त्रियों से विवाह के सम्बन्ध में कहो अथवा अपने दिल में विचार छिपाओ, अल्लाह (तआला) को ज्ञान है कि तुम अवश्य उनको याद करोगे, परन्तु तुम उनसे छिपाकर वायदा न कर लो ।[3] हाँ, यह बात और है कि

---

[1]मृत्यु की यह इद्दत प्रत्येक पत्नी के लिए है पति ने उससे समागम किया हो अथवा न किया हो । गर्भहीन पत्नी के लिए यह नियम नहीं क्योंकि उसकी इद्दत प्रसव हो जाना है । ﴿وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ﴾ (*अल-तलाक़*) गर्भवती स्त्रियों की अवधि प्रसव है । इस मृत्यु की इद्दत में स्त्री को बनाव सिंगार (यहाँ तक कि सुर्मा लगाने की भी) और पति के घर से किसी अन्य स्थान पर जाने की आज्ञा नहीं है । परन्तु प्रत्यागम्य तलाक़ प्राप्त पत्नी के लिए बनाव सिंगार करने पर प्रतिबन्ध नहीं है । परन्तु विच्छेदनीय तलाक़ प्राप्ति के लिए मतभेद है, कुछ उचित और कुछ अनुचित के पक्ष में है । (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात इद्दत के पश्चात बनाव सिंगार करे और अपने संरक्षकों की सहमति एवं परामर्श से किसी अन्य से विवाह का प्रबन्ध करे, तोइसमें कोई आपत्ति की बात नहीं है । इसलिए तुम पर भी (हे स्त्रियों के संरक्षको) कोई पाप नहीं । इससे ज्ञात हुआ कि विधवा के दूसरे विवाह को न बुरा समझना चाहिए, और न उसमें कोई रुकावट डालनी चाहिए । जैसा कि हिन्दू धर्म के प्रभाव से हमारे समाज में यह चीज़ पाई जाती है ।

[3]यह विधवा अथवा वह स्त्री जिसको तीन बार तलाक़ मिल चुकी हो अर्थात विच्छेदनीय तलाक़ उसके विषय में कहा जा रहा है कि इद्दत की अवधि में तुम उनकी मंगनी के संकेत दे सकते हो (जैसे मेरा विचार विवाह करने का है, अथवा मैं सुशील स्त्री की खोज में हूँ, आदि) परन्तु उनसे गुप्त रुप से न वचन लो और न इद्दत की अवधि समाप्त हुए विना मंगनी का संदेश दो । परन्तु वह स्त्री जिसके पति ने एक अथवा दो तलाक़ दी हो, तो उससे किसी भी प्रकार से इद्दत की अवधि के अन्दर विवाह का संदेश देना उचित नहीं

يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۳۵﴾

तुम अच्छी बात बोला करो[1]। और जब तक इद्दत की अवधि पूरी नहीं हो विवाह का बन्धन दृढ़ न करो। जान लो, कि अल्लाह (तआला) को तुम्हारे दिलों की बातों का भी ज्ञान है, तुम उससे डरते रहा करो और यह भी जान रखो, कि अल्लाह (तआला) क्षमाशील और कृपा निधान है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًۢا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۲۳۶﴾

(२३६) यदि तुम स्त्रियों को बिना हाथ लगाये और बिना महर निर्धारित किये तलाक़ दे दो, तो भी तुम पर कोई पाप नहीं, हाँ उन्हें कुछ न कुछ लाभ दो। धनवान अपने अनुसार और निर्धन अपनी शक्ति के के हिसाब से नियम के अनुसार अच्छा लाभ दें। भलाई करने वालों के लिए यह अनिवार्य है।[2]

है, क्योंकि जब तक इद्दत नहीं समाप्त हो जाती, उस पर उसके पति का अधिकार है। हो सकता है कि (उसका प्रत्यागमन कर ले) पति उससे सम्बन्ध स्थापित कर ले।

समस्या : कई बार ऐसा भी होता है कि अशिक्षित लोग इद्दत की अवधि में ही विवाह कर लेते है। उनके विषय में यह है कि यदि उनके मध्य सम्भोग नहीं हुआ है, तो उन्हें तुरन्त अलग करा दे, यदि सम्भोग हो भी गया हो, तब भी अलग करना आवश्यक है, इसके बाद पुन: उनके मध्य (इद्दत समाप्त होने के पश्चात) विवाह हो सकता है अथवा नहीं ? इसमें मतभेद है। कुछ आलिमों का मत है कि अब उनके मध्य कभी विवाह नहीं हो सकता, यह एक-दूसरे के लिए सदैव के लिए हराम हैं, परन्तु अधिकतर आलिम उनके मध्य विवाह होने के पक्ष में है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1]इससे भी वही नम्रतापूर्वक इंगित है जिसका आदेश पहले दिया जा चुका है। जैसे: मैं तुम्हारी चाह रखता हूँ अथवा संरक्षक से कहे कि यदि इसके विवाह का निर्णय करने से पूर्व मुझे अवश्य बताना आदि। (इब्ने कसीर)

[2]यह उस स्त्री के विषय में आदेश है कि विवाह के समय महर (स्त्री धन) निर्धारित नहीं की गयी थी और पति सम्भोग करने के पूर्व तलाक़ भी दे दे, तो उसे कुछ न कुछ लाभ देकर विदा करो। यह लाभ (तलाक़ का लाभ) पुरूष की शक्ति के अनुसार होना चाहिए

(२३७) और यदि तुम स्त्रियों को इससे पहले तलाक़ दे दो कि तुमने उन्हें हाथ लगाया हो और तुमने उनका महर भी निर्धारित किया हो, तो निर्धारित महर का आधा (महर) दे दो, यह बात और है कि वह स्वयं माफ कर दें,[1] अथवा वह व्यक्ति माफ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गाँठ है ।[2] तुम्हारा माफ

وَإِن طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِن قَبْلِ أَن تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَن يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَا الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ وَأَن تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَلَا تَنسَوُا

अर्थात धनवान अपने अनुसार और निर्धन अपनी शक्ति भर दे । फिर भी अच्छे व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है । इस लाभ (मुतआ) का निर्धारण भी किया गया है, किसी ने कहा दास, किसी ने कहा ५०० (पांच सौ) दिरहम, किसी ने कहा एक अथवा कुछ सूट आदि । परन्तु यह निर्धारण धार्मिक नियमों के ओर से नहीं है । प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शक्ति के अनुसार देने का अधिकार एवं आदेश है । इसमें भी मतभेद है कि यह तलाक़ का लाभ हर तलाक पाने वाली स्त्री के लिए है अथवा विशेष रुप से उसी स्त्री को मिलेगा, जिसके विषय में इस आयत में आदेश का वर्णन है । कुरआन करीम की कुछ अन्य आयतों से यह प्रतीत होता है कि यह हर प्रकार की तलाक़ पाने वाली स्त्री के लिए है । इस मुतआ के आदेश में जो बुद्धमता और लाभ है, उनको स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है । कटुता, तनाव, और मतभेद के कारण जो तलाक़ होती है, उपकार करना, स्त्री का दिल रखना, खुले दिल का प्रदर्शन करना, भविष्य की सम्भावित कटुताओं को दूर करने का अति सुन्दर तरीका है । परन्तु हमारे समाज में इस उपकार एवं वर्ताव के वदले, तलाक़ दी हुई स्त्री को इस प्रकार विदा किया जाता है कि दोनों परिवारों के सम्बन्ध सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं ।

[1]यह दूसरी स्थिति है कि सम्भोग से पूर्व ही तलाक़ दे दी जाये और महर निर्धारित थी । इसलिए पति के लिए आवश्यक है कि आधा महर अदा करे । सिवाय इसके कि स्त्री अपना यह अधिकार क्षमा कर दे इस स्थिति में पति को कुछ भी नहीं देना पड़ेगा ।

[2]इससे तात्पर्य पति है क्योंकि विवाह की गाँठ (इसका तोड़ना अथवा स्थापित रखना) उसके हाथ में है । यह आधा महर क्षमा कर दे अर्थात अदा की हुई महर में से आधा महर वापस लेने के बजाय अपना यह अधिकार (आधा महर) क्षमा कर दे और पूरा महर स्त्री को दे दे । इससे कृपा और उपकार को आपस में न भूलने पर भी बल दिया गया है तथा महर में भी इसी कृपा और उपकार के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गयी है ।

टिप्पणी : कुछ ने بيده عقدة النكاح से स्त्री का संरक्षक अर्थ लिया है अर्थात स्त्री क्षमा कर दे अथवा उसका संरक्षक क्षमा कर दे । परन्तु यह ठीक नहीं है । एक तो स्त्री के संरक्षक

الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝٢٣٧

कर देना संयम से अतिनिकट है तथा परस्पर परोपकार को न भूलो। नि:सन्देह अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ۝٢٣٨

(२३८) नमाज़ों की सुरक्षा करो विशेषकर मध्यवाली नमाज़ की।[1] और अल्लाह (तआला) के लिए नम्रता पूर्वक खड़े रहा करो।

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنتُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا

(२३९) यदि तुम्हें भय हो तो पैदल ही अथवा सवार ही सहीह, और यदि शान्ति हो जाये तो अल्लाह (तआला) की महिमा का वर्णन करो

के हाथ में विवाह की गाँठ नहीं दूसरे महर का अधिकार स्त्री को है, और उसका माल है। उसको क्षमा करने का अधिकार उसके संरक्षक को नहीं है। इसलिए वही व्याख्या उचित है, जो पहले की जा चुकी है। (फ़तहुल क़दीर)

विशेष स्पष्टीकरण : तलाक़ प्राप्त स्त्रियाँ चार प्रकार की होती हैं।

(१) जिनका महर भी निर्धारित है, पति ने सम्भोग भी किया है, उनको पूरा महर दिया जायेगा, जैसाकि आयत संख्या २२९ में इसका विस्तृत विवरण है।

(२) जिनका महर भी निर्धारित नहीं और पति के द्वारा सम्भोग भी नहीं किया गया, उनको केवल तलाक़ का लाभ दिया जायेगा।

(३) जिनका महर निर्धारित है, परन्तु सम्भोग नहीं किया गया, उनको आधा महर देना अनिवार्य है (इन दोनों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत आयत में है)

(४) सम्भोग तो किया गया, परन्तु महर निर्धारित नहीं है, उनके लिए समान महर है। समान महर का अर्थ है उस स्त्री के समुदाय में जो सामान्य प्रचलन हो अथवा उस जैसी स्त्री के लिए सामान्य रुप से जो महर निर्धारित किया जाता है (नैलुल अवतार व औनुल माबूद)

[1]मध्य वाली नमाज़ से तात्पर्य अस्र (अपरान्ह की) नमाज़ है, जिसको इस हदीस रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आधार पर निर्धारित कर दिया गया है, जो ख़न्दक युद्ध वाले दिन अस्र की नमाज को صلوۃ وسطی कहा है। (सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद संख्या ४५२२, मुस्लिम ४३७)

عَلَّمَكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٩﴾

जिस प्रकार कि उसने तुम्हें उस बात की शिक्षा दी है, जिसे तुम नहीं जानते थे।[1]

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِم مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾

(२४०) और जो तुम में से मर जायें और पत्नियाँ छोड़ जाये, वह वसीयत कर जायें कि उनकी पत्नियाँ वर्ष भर लाभ उठायें।[2] उन्हें कोई न निकाले, और यदि वे स्वयं निकल जायें तो तुम पर इसमें कोई पाप नहीं जो वह अपने लिए अच्छाई से करें अल्लाह (तआला) प्रभावी और विज्ञानी है।

وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾

(२४१) तलाक़ दी हुई (विवाह विच्छेदित) स्त्रियों को भली प्रकार लाभ पहुँचाना सदाचारियों पर अनिवार्य है।[3]

---

[1]अर्थात शत्रु से भय के कारण जिस प्रकार भी संभव हो, पैदल चलते हुए, सवारी पर बैठे हुए नमाज़ पढ़ लो, परन्तु जब भय की स्थिति समाप्त हो जाये तो उसी प्रकार नमाज़ पढ़ो, जिस प्रकार सिखलाया गया है।

[2]यह आयत यद्यपि क्रमानुसार पश्चात की है परन्तु निरस्त है इसकी निरस्तकारी आयत प्रथम आ चुकी है जिसमें मृत्यु की इद्दत (गर्णा अवधि) चार महीना दस दिन बताई गई है, इस के सिवाय उत्तराधिकार की आयत (निर्देश) ने पत्नी का भाग निर्धारित कर दिया है अत: अब पति को पत्नी के लिए वसीयत (उत्तरदान) करने की कोई आवश्यकता नहीं रही न आवास तथा न पालन पोषण की।

[3]यह साधारण आदेश है जिसमें प्रत्येक तलाक़ प्राप्त नारी सम्मिलित है। अलगाव के समय जिस प्रकार के शुभ व्यवहार एवं सन्तावना पर बल दिया गया है, उसके अंगणित समाजिक लाभ हैं। काश मुसलमान इस अति महत्वपूर्ण शिक्षा का पालन करते, जिसे उन्होने बिल्कुल भुला दिया है। आधुनिक (धर्मगुरुओं) ने مَتَاع और مَتعوهُنّ से यह अर्थ निकाला है कि तलाक़ दी हुई स्त्री को जायदाद में से भाग दो अथवा आजीवन उसका पालन पोषण करो। यह दोनो बातें निर्धार हैं, भला जिस स्त्री को पुरुष ने अपने जीवन से पसंद न होने के कारण निकाल दिया, वह उसे आजीवन पोषण को किस प्रकार अदा करने को तैयार होगा।

(२४२) इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) का वर्णन करता है ताकि तुम समझो।

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ

(२४३) क्या तुमने उन्हें नहीं देखा जो हजारों की संख्या में मरणमय के कारण अपने घरों से निकल पड़े अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ फिर उन्हें जीवित कर दिया।[1] नि:सन्देह अल्लाह लोगों पर अतिकृपालु है किन्तु प्राय: लोग कृतज्ञता नहीं करते।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ثُمَّ اَحْيَاهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ

(२४४) तथा अल्लाह के मार्ग में लड़ो तथा यह जान लो कि अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ

(२४५) कौन अल्लाह को अच्छा उधार देगा[2] जिसे वह फिर उसे कई गुना अधिक प्रदान

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ اَضْعَافًا

---

[1]यह घटना किसी विगत समुदाय की है, जिसका विवरण किसी हदीस में नहीं मिलता भाष्यकारों के अनुसार इसे इस्राईल की पुत्रों के समय की घटना और पैग़म्बर का नाम, जिसकी प्रार्थना से अल्लाह तआला ने उन्हें पुर्नजीवित किया 'हिजक़ील' वतलाया गया है। यह जिहाद में हत्या के भय से अथवा प्लेग की महामारी के भय से अपने घरों से निकल भागे थे, ताकि मरने से बच जायें। अल्लाह तआला ने उन्हें मार कर यह सिद्ध कर दिया कि तुम अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकते, दूसरे यह कि मनुष्यों की अन्तिम शरणागार अल्लाह तआला की ओर है, तीसरे यह कि अल्लाह तआला पुर्नजीवित करने का सामर्थ्य रखता है और वह इसी प्रकार एक बार पुन: सभी मनुष्यों को जीवित करेगा, जिस प्रकार अल्लाह तआला ने मारकर उनको पुन: जीवित किया। अगली आयत में मुसलमानों को धर्मयुद्ध का आदेश दिया जा रहा है, इससे पहले इस आयत में इस घटना का वर्णन करने की यह बुद्धिमत्ता है कि धर्मयुद्ध से मत भागो क्योंकि मृत्यु और जीवन अल्लाह के अधिकार में है और उसका समय भी निर्धारित है, जिसे धर्मयुद्ध से मुँह मोड़ कर भी तुम टाल नहीं सकते।

[2]अच्छे उधार से तात्पर्य अल्लाह के मार्ग में तथा धर्मयुद्ध में धन दान करना है अर्थात प्राण की भाँति धन देने में भी संकोच न करो। धन में वढ़ोत्तरी एवं कमी भी अल्लाह के

كَثِيْرَةً ۭ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۠ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾

करेगा तथा अल्लाह ही कमी एवं अधिकता करता है तथा तुम उसी की ओर पुन: जाओगे।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ

(२४६) क्या आपने इस्राईल के वंश की "मूसा" के पश्चात के समुदायों को नहीं देखा[1] जब उन्होंने अपने नबी (ईशदूत) से कहा कि हमारा एक राजा बना दीजिये[2] ताकि

अधिकार में है। और वह दोनों तरह से तुम्हारी परीक्षा लेता है। कभी धन में बढ़ोत्तरी करके और कभी धन में कमी करके। फिर अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने से कमी भी नहीं होती है, अल्लाह तआला इसमें कई-कई गुना बढ़ोत्तरी करता है। कभी प्रत्यक्ष रुप से कभी आंत्रिक एवं अध्यात्मिक रुप से, तथा परलोक में तो निश्चय उसमें अधिकता आश्चर्य चकित होगी।

[1] مَلَأ किसी समुदाय के उन सम्मानित व्यक्ति, सरदार और सरपंच लोगों को कहा जाता है, जो विशेष सलाहकार एवं दूत होते हैं, जिनके देखने से आँखें और दिल प्रभावित होते हैं (مَلَأ का शाब्दिक अर्थ भरने के हैं) (ऐसरूत्तफ़ासीर) जिस पैग़म्बर का वर्णन यहाँ है, उसे शमुऐल बताया जाता है। इब्ने कसीर आदि व्याख्याकारों ने जिस घटना का वर्णन किया है उसका सारांश यह है कि इस्राईल की सन्तान आदरणीय मूसा के पश्चात कुछ समय तक तो ठीक रही फिर वे भटक गयीं, धर्म में नई-नई बातों को प्रविष्ट करने लगी, यहाँ तक कि मूर्तिपूजा प्रारम्भ कर दी। नबियों ने उनको रोका, परन्तु यह पाप और मूर्तिपूजा से नही रुके। इसके परिणाम स्वरुप उनके शत्रु को उनके ऊपर आसीन कर दिया, जिन्होंने उनके क्षेत्र भी छीन लिए और उनकी बड़ी संख्या को बन्दी भी बना लिया, इनमें नबियों की श्रृंखला भी टूट गयी, अन्तत: कुछ लोगों की प्रार्थना से शमुऐल पैदा हुए, जिन्होंने धर्म का आमन्त्रण एवं प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने पैग़म्बर से माँग की कि हमारे लिए एक राजा पदासीन करा दे, जिसके नेतृत्व में हम अपने शत्रुओं से लड़ें। पैग़म्बर ने उनके भूत के कर्मों के आधार पर कहा कि तुम माँग तो कर रहे हो, परन्तु मेरा अनुमान है कि तुम अपनी बात पर अटल नहीं रहोगे, अत: ऐसा ही हुआ जैसाकि क़ुरआन में वर्णन है।

[2] ईशदूत की उपस्थिति में राजा पदासीन करने की माँग राज के उचित होने का प्रमाण है। क्योंकि यदि राज शासन उचित न होता तो अल्लाह तआला इस माँग को रद्द कर देता। अपितु उनके लिए तालूत को राजा पदासीन किया जैसाकि अगली आयत में है।

فِي سَبِيلِ اللهِ ۗ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۗ قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۗ وَاللهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٦﴾

हम अल्लाह के मार्ग में लड़ें उन्होंने कहा कि हो सकता है कि धर्मयुद्ध (जिहाद) अनिवार्य हो जाने के पश्चात, तुम धर्मयुद्ध (जिहाद) न करो । उन्होंने कहा कि भला हम अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध (जिहाद) क्यों न करेंगे ? हम तो अपने घरों से उजाड़े गये हैं और सन्तानों से दूर कर दिये गये हैं। फिर जब उन पर धर्मयुद्ध अनिवार्य हुआ, तो सिवाय थोड़े से व्यक्तियों के सब फिर गये और अल्लाह (तआला) अत्याचारियों को अच्छी तरह से जानता है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾

(२४७) और उनसे उनके नबी ने कहा कि अल्लाह (तआला) ने तालूत (यह एक नाम है) को तुम्हारा सम्राट बना दिया है, तो कहने लगे भला उसका हम पर राज्य कैसे हो सकता है, उससे बहुत अधिक राज्य के अधिकारी हम हैं, उसको तो धन की अधिकता भी नहीं प्रदान की गयी है। उस (नबी) ने कहा सुनो। अल्लाह (तआला) ने उसको तुम पर प्रधानता दी है। और उसे ज्ञान एवं शारीरिक बल भी अत्यधिक प्रदान किया है।[1]

---

[1]आदरणीय तालूत उस वंश से नहीं थे, जिससे इस्राईल की सन्तानों के बादशाहों की श्रृंखला चली आ रही थी । यह निर्धन और एक सामान्य सेनानी थे, जिस पर उन्होने आपत्ति उठायी थी । पैग़म्बर ने कहा कि यह मेरा चुनाव नहीं है। अल्लाह तआला ने उन्हें नियुक्त किया है । फिर भी नेतृत्व के लिए धन से अधिक बुद्धिमता, ज्ञान एवं शारीरिक शक्ति की आवश्यकता है। और तालूत इसमें तुम सभी से श्रेष्ठ हैं, इसलिए अल्लाह ने उन्हें इस पद के लिए चुन लिया है। वह अत्यधिक कृपालु है, जिसको चाहता है अपनी कृपा प्रदान करता है । عليم है अर्थात वह जानता है कि राजाधिकार का अधिकारी कौन है और कौन नहीं है। प्रतीत होता है कि जब उन्हें ज्ञात हुआ कि यह

वास्तविक बात यह है कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना राज्य दे, अल्लाह (तआला) विशाल धन-धान्य से परिपूर्ण एवं ज्ञान वाला है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ ءَايَةَ مُلْكِهِۦٓ أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلتَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ

(२४८) तथा उनके नबी ने फिर उनसे कहा, उसकी राज्य की स्पष्ट निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक आ जायेगा[1] जिसमें

नियुक्ति अल्लाह तआला की ओर से है, तो इसके लिए उन्होंने कोई अन्य चिन्ह की माँग की कि उनके दिलों को संतोष हो जाये। इसी कारण अगली आयत में एक और अन्य लक्षण का वर्णन है।

[1]सन्दूक अर्थात तावूत, जो तोव से है, जिसके अर्थ पलटने के हैं, क्योंकि इस्राईल की सन्तान प्रसाद के लिए इसकी ओर पलटते थे। (फ़तहुल क़दीर) इस तावूत में आदरणीय मूसा व हारुन अलैहिस्सलाम की पवित्र वस्तुऐं थीं, यह तावूत भी उनके शत्रु उनसे छीन कर ले गये थे। यह ताबूत अल्लाह तआला ने निशानी के रुप में फ़रिश्तों के द्वारा आदरणीय तालूत के घर के द्वार पर रखवा दिया। इसे देखकर इस्राईल की सन्तानें प्रसन्न भी हुईं और इसे अल्लाह तआला की ओर से निशानी मानकर आदरणीय तालूत को अपना राजा मान लिया और अल्लाह तआला ने भी इसे उनके लिए एक चमत्कार (आयत) एवं विजय तथा संतोष का कारण बना दिया سَكِينَةٌ का अर्थ ही अल्लाह तआला की ओर से विशेष सहायता का उतरना जिसे वह अपने विशेष भक्तों पर उतारता है जिसके कारण भयंकर रण में जब बड़े-बड़े योद्धाओं के दिल कांप जाते हैं तो ईमानवालों के दिल शत्रु के भय एवं धाक से शून्य और विजय तथा सफलता की आशा से परिपूर्ण होते हैं। इससे ज्ञात हुआ कि नबियों और महात्माओं की अवशेष अल्लाह की आज्ञा से अवश्य विशेषता और उपयोगिता रखती हैं, परन्तु यह आवश्यक है कि वह सही रुप से उनकी (तबर्रूकात) हो। जिस प्रकार इस ताबूत में वास्तव में आदरणीय मूसा एवं हारुन की पवित्र वस्तुएँ थी। परन्तु जिस प्रकार आजकल विभिन्न स्थानों पर पवित्र अवशेष कहकर कई वस्तुएँ हैं, जिनका कोई इतिहासिक प्रमाण पूर्ण रुप से सिद्ध नहीं होता। इसी प्रकार स्वंय बनायी गयी वस्तुओं से भी कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। जिस प्रकार से कुछ लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जूते के समान बनाकर अपने पास रखने को अथवा घरों में लटकाने को अथवा विशेष रुप से बनाकर कष्ट निवारण तथा मनोकामना पूरी करने वाला समझते हैं। इसी प्रकार क़ब्रों पर महात्माओं के नामों के चढ़ावे को पवित्र वस्तु और वहां के सामान्य भोज को पवित्र वस्तु समझते हैं। जबकि यह अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पर चढ़ावा हैं, जो शिर्क की परिधि में आता है। इसको खाना

مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۴۸﴾

तुम्हारे प्रभु की ओर से दिल की स्थिरता की सामग्री है और मूसा की सन्तान, एवं हारुन की सन्तान का शेष छोड़ा हुआ सामान है, फ़रिश्ते उसे उठाकर लायेंगे। निःसन्देह यह तो तुम्हारे लिए स्पष्ट निशानी है, यदि तुम ईमानदार हो।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۭ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ

(२४९) फिर जब तालूत सेना लेकर निकले तो कहा सुनो एक नदी[1] द्वारा अल्लाह को तुम्हारी परीक्षा लेनी है तो जो उससे जल पियेगा वह मेरा नहीं तथा जो उसमें से न चखे वह मेरा है यह और बात है कि अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले तो कुछ के सिवाय शेष सभी ने जल पी लिया,[2] (आदरणीय) तालूत जब नदी से पार हो गये तथा जो उनके साथ ईमानदार थे तो उन्होंने कहा कि

विशेषरुप से हराम है, क़ब्रों को स्नान कराया जाता है और उसका पानी पवित्र समझा जाता है, हालांकि क़ब्रों को स्नान कराना खाना-ए-काअबा के स्नान की नक़ल है, जो किसी प्रकार से उचित नहीं है, और यह अशुद्ध पानी पवित्र कैसे हो सकता है, यह सभी बातें अनुचित हैं, इनका धार्मिक नियमों में कोई प्रविधान नहीं है।

[1]यह नदी जार्डन और फ़िलस्तीन के मध्य है। (इब्ने कसीर)

[2]नायक के आदेशों का पालन आवश्यक है, और जब शत्रु के साथ युद्ध हो, तो उसकी यह विशेषता दो गुनी होती है, बल्कि सौ गुनी हो जाती है। दूसरे युद्ध के समय सेना को आवश्यक है कि अपनी भूख प्यास तथा अन्य कठिनाइयों पर धैर्य रखे। इसलिए इन दोनों बातों की शिक्षा एवं परीक्षा के लिए तालूत ने कहा कि तुम्हारी पहली परीक्षा नदी में होगी, जिसने पानी पी लिया उसका मेरे साथ कोई सम्बन्ध नहीं होगा, परन्तु इस चेतावनी के बाद भी अधिकतर लोगों ने पानी पी लिया। इनकी संख्या के विषय में व्याख्याकारों में मतभेद है। इस प्रकार न पीने वालों की संख्या ३१३ बतायी गई है, जो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा (साथियों) की संख्या बद्र नामक स्थान पर हुए युद्ध के समय थी। والله أعلم

وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

आज तो हममें बल नहीं की जालूत तथा उसकी सेनाओं से लड़ें,[1] किन्तु जिन्हे अल्लाह से मिलने पर विश्वास था उन्होंने कहा, कि बहुत से अल्प समूह अल्लाह की आज्ञा से भारी समूहों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं तथा अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

(२५०) और जब उनका जालूत तथा उसकी सेनाओं से मुक़ाबला हुआ, तो उन्होंने प्रार्थना की, हे हमारे पालनहार ! हमें धैर्य प्रदान कर एवं अडिग बना दे तथा काफ़िर वर्ग पर हमारी सहायता कर।[2]

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ

(२५१) अत: उन्हें अल्लाह की आज्ञा से पराजित कर दिया तथा दाऊद ने जालूत का

---

[1]इन ईमान वालों ने भी जब प्रारम्भ में शत्रु की बहुत बड़ी संख्या देखी, तो अपनी कम संख्या को देखते हुए इस बात को स्पष्ट किया। जिस पर उनके ज्ञानियों और उनसे अधिक ईमान रखने वालों ने कहा कि सफलता, संख्या में अधिकता तथा हथियार के आधार पर नहीं मिलती, बल्कि अल्लाह तआला की इच्छा पर आधारित है और अल्लाह तआला का समर्थन प्राप्त करने के लिए धैर्य का होना आवश्यक है।

[2]जालूत उस शत्रु समुदाय का सेना नायक था, जिससे तालूत और साथियों का मुक़ाबला था, यह अमालक़ा की जाति थी, जो अपने समय में योद्धा एवं वीर लोग समझे जाते थे। उनकी इसी प्रसिद्धता के कारण ठीक युद्ध के समय में ईमानवालों ने अल्लाह के दरबार में धैर्य एवं दृढ़ता के लिए और कुफ़्र के सामने ईमानवालों को विजय एवं सफलता की प्रार्थना की। अर्थात भौतिक कारणों के साथ-साथ ईमानवालों के लिए आवश्यक है कि वह अल्लाह की ओर से सफलता तथा विजय के लिए विशेष रुप से प्रार्थना करें, जिस प्रकार बद्र के युद्ध के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के दरबार में बड़ी आग्रहता एवं विनम्रता से विजय एवं सफलता के लिए प्रार्थना की थी, जिसे अल्लाह तआला ने स्वीकार किया जिसके कारण मुसलमानों की छोटी सी संख्या ने काफ़िरों की बहुत बड़ी संख्या पर विजय प्राप्त किया।

الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ مِمَّا يَشَاءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٢٥١﴾

वध कर दिया[1] तथा अल्लाह ने उसे राज्य एवं विधान[2] तथा जितना चाहा ज्ञान भी प्रदान किया। तथा यदि अल्लाह कुछ लोगों को दूसरे गरोह से हटाता न रहता तो धरती में विकार फैल जाता, किन्तु अल्लाह संसार के लोगों पर बड़ा दया निधि है।[3]

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾

(२५२) यह अल्लाह की आयतें (सूत्र) हैं जिन्हें हम आप पर सत्य के साथ पढ़ते हैं और निश्चय ही आप रसूलों (ईशदूतों) में से हैं।[4]

---

[1]आदरणीय दाऊद जो अभी न पैग़म्बर थे और न बादशाह, इस तालूत की सेना में एक साधारण फ़ौजी थे। उनके हाथों जालूत मारा गया और इस थोड़े से ईमानवालों को बड़ी क़ुरवीर एवं योद्धा जाति पर विजय दिलवाई।

[2]इसके बाद अल्लाह तआला ने आदरणीय दाऊद को बादशाहत और नबूवत दोनों प्रदान किया।

[3]इसमें अल्लाह के एक नियम की चर्चा है कि वह मानवगण ही के एक समुदाय द्वारा दूसरे समुदाय के अत्याचार तथा प्रभुत्व को समाप्त करता रहता है यदि वह ऐसा न करता और किसी एक ही समुदाय को सदा बल एवं अधिकार का सौभाग्य दिये रहता तो यह धरती अत्याचार तथा विकार से भर जाती अत: अल्लाह का यह नियम संसार वासियों के लिए अल्लाह की दया का विशेष सूचक है, इसकी चर्चा *सूर:हज* की आयत न० ३० तथा ४० में भी की है।

[4]यह विगत घटनायें जिनका ज्ञान आप पर अवतरित धर्मशास्त्र (पवित्र क़ुरआन) द्वारा संसार को हो रहा है, हे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) निश्चय आपकी नबूअत और सत्यता का प्रमाण हैं, इनका अध्ययन न किसी पुस्तक में किया है न किसी से सुना है, जिससे स्पष्ट है कि यह परोक्ष की सूचनायें हैं जो प्रकाशना (ईशवाणी) द्वारा अल्लाह आप पर उतार रहा है, पवित्र ईशवाणी क़ुरआन के कई स्थानों पर समुदायों की घटनाओं के वर्णन को आप की सत्यता के प्रमाण स्वरुप प्रस्तुत किया गया है।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۘ مِّنْهُم مَّن كَلَّمَ اللَّهُ ۖ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ ۚ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِن بَعْدِهِم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَٰكِنِ اخْتَلَفُوا فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ وَمِنْهُم مَّن كَفَرَ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا

(२५३) यह रसूल हैं, जिनमें से हमने कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता दी है।[1] उनमें से कुछ हैं जिनसे अल्लाह (तआला) ने बात की है और कुछ की श्रेणी उच्च की है। और हमने ईसा पुत्र मरियम को चमत्कार प्रदान किये और पवित्र आत्मा से उनका समर्थन कराया।[2] यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो उनके बाद वाले अपने पास निशानियाँ आ जाने के पश्चात आपस में कदापि लड़ाई-भिड़ाई न करते, परन्तु उन लोगों ने मतभेद किया, उनमें से कुछ ने विश्वास किया और कुछ विश्वासहीन हुए, और यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो

---

[1]क़ुरआन ने एक दूसरे स्थान पर भी इसे वर्णित किया है।

﴿وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَىٰ بَعْضٍ﴾ (बनी इस्राईल-५५)

इसलिये इस वास्तविकता में तो कोई शंका नहीं। परन्तु *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया है।

«لا تخيروني من بين الأنبياء»

"तुम मुझे नबियों पर श्रेष्ठता मत दो।" (सहीह बुख़ारी एवं मुस्लिम)

तो इससे एक की दूसरे पर श्रेष्ठता का इंकार आवश्यक नहीं, बल्कि इस उम्मत को नबियों के प्रति आदर-सम्मान की शिक्षा दी गई है। और यह कि तुम्हें चूँकि उन विशेषताओं का, जिनके आधार पर श्रेष्ठता दी गयी है, उनका पूरा ज्ञान नहीं है, इसलिए तुम मेरी भी विशेषताओं की तुलनात्मक व्याख्या न करो, जिससे उन नबियों के सम्मान में कमी हो। वरन् कुछ नबियों की कुछ पर श्रेष्ठता और सभी पैग़म्बरों पर *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की श्रेष्ठता और महानता अहले सुन्नत का विश्वास है, जिनकी सुन्नत की किताबों से पुष्टि होती है। (विस्तृत जानकारी के लिए फ़तहुल क़दीर लिल शौकानी देखिये)

[2]तात्पर्य वह चमत्कार हैं, जो आदरणीय ईसा को प्रदान किये गये थे। जैसे मरे हुए को जिलाना आदि जिसका विवरण सूर: *आले इमरान* में आयेगा। पवित्र आत्मा से तात्पर्य जिब्रील है, जैसाकि पहले भी गुज़र चुका है।

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾

यह आपस में न लड़ते।[1] परन्तु अल्लाह (तआला) जो चाहता है, करता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۭ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾

(२५४) हे ईमानवालो ! जो हमने तुम्हें दे रखा है, उसमें से ख़र्च करते रहो। इससे पहले कि वह दिन आये जिस दिन न व्यापार है, न मित्रता और न शिफ़ाअत,[2] और विश्वासहीन ही अत्याचारी हैं।

---

[1]इस विषय को अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में कई स्थान पर वर्णित किया है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि अल्लाह तआला के द्वारा उतारे हुए धर्म में अल्लाह की पसन्द मतभेद है। यह अल्लाह को कदापि प्रिय नहीं है। उसकी पसन्द (प्रसन्नता) तो यह है कि सभी मनुष्य उसके द्वारा उतारे गये नियमों का पालन करके नरक की अग्नि से अपने आपको बचायें। इसीलिये उसने किताबें उतारीं और नबियों की श्रृंखला स्थापित की। यहाँ तक कि *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर रिसालत समाप्त कर दी)। फिर भी अपने धर्मराजों, ज्ञानियों तथा धर्म के प्रचारकों के द्वारा सत्य की ओर निमन्त्रण के लिये एवं पुण्य के आदेश एवं पाप के कार्यों से रोकने के लिये एक श्रृंखला अब भी जारी है। इसकी अति आवश्यकता कोवर्णित किया गया। किसलिए ? इसलिये कि लोग अल्लाह के प्रिय मार्ग को अपनायें, किन्तु उसने संमार्ग और कुमार्ग बताकर मनुष्य को किसी एक मार्ग पर चलने के लिये बाध्य नहीं किया है, वरन् परीक्षा के लिये उसे अधिकार एवं विचारों की स्वतन्त्रता दी है, इसलिये कोई इस अधिकार का सही प्रयोग करके मुसलमान बन जाता है और कोई इस अधिकार एवं आधीनता का दुरूपयोग करके विश्वासहीन बन जाता है, यह उसकी इच्छा एवं चाहत है, जो उसकी प्रसन्नता से विभिन्न विषय है।

[2]यहूदी और इसाई कृतघ्न और मिश्रणवादी अपने-अपने प्रमुखों ऋषियों, पुण्यात्माओं, नबियों, महात्माओं, गुरूओं के बारे में यही विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला पर उनका इतना प्रभाव है कि वह अपने अनुयायियों के लिये जो बात चाहें अल्लाह तआला से मनवा सकते हैं और मनवा लेते हैं। इसी को वह शिफ़ाअत (अभिस्ताव) कहते हैं। अर्थात उनका लगभग वही विश्वास है, जो आजकल के अशिक्षितों का है कि हमारे महात्मा अल्लाह तआला के सामने अड़कर बैठ जायेंगे और क्षमा कराके उठेंगे। इस आयत में बताया गया है कि इस प्रकार के अभिस्ताव का अल्लाह के यहाँ कोई अस्तित्व नहीं है। फिर इसके बाद आयतुल कुर्सी और दूसरी अन्य आयतों एवं हदीसों में बताया गया कि अल्लाह तआला के यहाँ एक दूसरी प्रकार का (क्षमादान) सिफ़ारिश होगी, परन्तु यह सिफ़ारिश वही लोग करा सकेंगे, जिन्हें अल्लाह तआला अनुमति देगा और केवल उस भक्त के

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۭ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَاۗءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـــــُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَھُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾

(२५५) अल्लाह (तआला) ही सत्य पूज्य है, जिसके सिवाये कोई अराध्य नहीं, जो जीवित है, एवं सबका सहायक आधार है, जिसे न ऊँघ आये न निद्रा उसके आधीन धरती और आकाश की सभी चीज़ें हैं, कौन है, जो उसकी आज्ञा के बिना उसके सामने शिफ़ाअत कर सके, वह जानता है, जो उनके सामने हैं, जो उनके पीछे हैं। और वह उसके ज्ञान में से किसी चीज़ का घेरा नहीं कर सकते, परन्तु वह जितना चाहे।[1] उसकी कुर्सी की परिधि ने धरती और आकाश को घेर रखा है। वह

लिए कर सकेंगे, जिसके लिये अल्लाह तआला आज्ञा प्रदान करेगा और अल्लाह तआला केवल मात्र एकेश्वरवादियों के लिए ही आज्ञा देगा। यह सिफ़ारिश फ़रिश्ते भी करेंगे नबी और रसूल भी, शहीद और पुण्य आत्मा भी, परन्तु अल्लाह पर उन सभी में से किसी का भी, प्रभाव न होगा। इसके विपरीत वह स्वयं अल्लाह तआला के भय से इतने भयभीत होंगे कि उनके चेहरे के रंग उड़े होंगे।

﴿ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴾

"वे उसी के लिये सिफ़ारिश करेंगे जिससे वह प्रसन्न हो, और वह उसके भय से भयभीत रहेंगे।" (सूरह अल-अम्बिया: २८)

[1]यह आयतुल कुर्सी है। सहीह हदीसों में इसका बहुत महत्व वर्णन किया गया है। जैसे यह क़ुरआन की सबसे उच्च आयत है। इसको रात्रि को पढ़ने से शैतान से सुरक्षा रहती है। इसको प्रत्येक नमाज़ के पश्चात पढ़ना चाहिए। (इब्ने कसीर)

कुर्सी से कुछ ने पैर रखने का स्थान, कुछ ने सामर्थ्य, कुछ ने राज्य, और कुछ ने अर्श अर्थ लिया है। परन्तु अल्लाह तआला की महानता एवं विशेषताओं के विषय में मोहद्दिसों (हदीस के ज्ञानी) और पूर्वजों का यही मत है कि अल्लाह तआला की जो विशेषतायें, जिस प्रकार से क़ुरआन और हदीस में वर्णित हैं, उनको बिना किसी तर्क-वितर्क के, उन पर ईमान रखा जाये, इसलिए यही ईमान रखना चाहिए कि वास्तव में कुर्सी है, जोअर्श से भिन्न है। यह किस प्रकार की है, इस पर वह किस प्रकार बैठता है ? इसका वर्णन हम नहीं कर सकते क्योंकि इसकी भौतिकता एवं वास्तविकता के विषय में हमें ज्ञान नहीं है।

अल्लाह (तआला) उनकी सुरक्षा से न थकता है और न ऊबता है। वह तो बहुत महान और बहुत बड़ा है।

(२५६) धर्म के विषय में कोई दबाव नहीं, सत्य-असत्य से अलग हो गया,[1] इसलिये जो

لَآ إِكْرَاهَ فِى ٱلدِّينِ ۖ قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشْدُ مِنَ ٱلْغَىِّ ۚ فَمَن يَكْفُرْ

[1]इस आयत के उतरने के कारणों को बताया गया कि अंसार के कुछ युवक यहूदी और इसाई हो गये थे, जब यह अंसार मुसलमान हुए, तो उन्होंने अपने युवकों पर (जो उनकी संतानें थीं) जो इसाई अथवा यहूदी हो चुके थे, बल दिया कि वह मुसलमान हो जायें। जिस पर यह आयत उतरी। कुछ व्याख्याकारों ने इसे अहले किताब के लिये विशेष माना है, अर्थात यदि मुसलमानों के राज्य में अहले किताब रहते हैं, यदि वह जिज़्या (शरणागत कर) देते हैं, तो उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता। परन्तु यह आयत आदेश के अनुसार सामान्य है, अर्थात किसी को भी इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता। क्योंकि अल्लाह तआला ने संमार्ग और कुमार्ग दोनों को स्पष्ट कर दिया है। परन्तु कुफ़्र और शिर्क के प्रभाव को कम करने के लिये युद्ध तथा बाध्य करना भिन्न बात है। उद्देश्य यह है कि समाज से उस शक्ति को क्षीण और प्रभाव को समाप्त करना है जो अल्लाह के धर्मानुसार कर्म और उसके प्रचार में रूकावट बनती है। ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार चाहे तो कुफ़्र के मार्ग पर चले अथवा इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले। चूँकि रूकावट बनने वाली शक्तियाँ समय-समय पर उभरती रहेंगी इसलिये धर्मयुद्ध का आदेश और उसकी आवश्यकता प्रलय तक पड़ती रहेगी। जैसाकि हदीस में है «الجِهَادُ مَاضٍ إِلىٰ يَومِ القِيٰمَةِ» (धर्मयुद्ध क़ियामत तक जारी रहेगा) स्वयं *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने काफ़िरों और मूर्तिपूजकों से धर्मयुद्ध किया है और फ़रमाया :

«أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَشْهَدُوا».

"मुझे आदेश दिया गया है कि मैं लोगों के साथ उस समय तक धर्मयद्ध करूँ, जब तक वह لا إلـه إلا الله और محمد رسول الله को स्वीकार न कर लें।" अल-हदीस (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाँब फ़इन ताबू अव अक़ामुस्सलात)

इसी प्रकार इस्लाम से फिर जाने के दण्ड (हत्या) से भी इस आयत का टकराव नहीं है (जैसाकि कुछ लोग सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं) क्योंकि इस्लाम धर्म से लौटनें पर जो मृत्युदण्ड दिया गया है वह बाध्य करना नहीं है। बल्कि इस्लामी राज्य के विचारों की स्थिति की सुरक्षा है, एक इस्लामी राज्य में काफ़िर को अपने कुफ़्र पर रहने का अधिकार तो अवश्य है, परन्तु यदि वह एक बार इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले तो उसे विद्रोह एवं

بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾

व्यक्ति अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त अन्य देवों को नकार कर अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये, उसने मज़बूत कड़े को थाम लिया, जो कभी भी न टूटेगा और अल्लाह (तआला) सुननेवाला, जाननेवाला है।

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥٧﴾

(२५७) ईमानवालों का संरक्षक अल्लाह तआला स्वयं है, वह उन्हें अंधेरे से प्रकाश की ओर निकाल ले जाता है, और काफ़िरों के मित्र शैतान हैं, वह उन्हें प्रकाश से अंधकार की ओर ले जाते हैं। यह लोग नरक के वासी हैं, जो सदैव नित्य उसी में पड़े रहेंगे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا أُحْيِي وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ

(२५८) क्या तूने उसे नहीं देखा, जिसने राज्य पाकर इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) से उसके पालनहार के विषय में विवाद किया जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा पोषक तो वह है जो जीवित करता एवं मारता है, वह कहने लगा, मैं भी जिलाता और मारता हूँ, इब्राहीम

विमुखता तथा अवहेलना की आज्ञा नहीं दी जा सकती, अतएव ख़ूब सोच-विचार करके इस्लाम धर्म स्वीकार करे, क्योंकि यदि इसकी आज्ञा दे दी जाती, तो मूल विचारों का यह महल गिर जाता और दुरविचारों की बाढ़ आ जाती जो इस्लामी समाज में शान्ति को तथा राज्य के स्थाईत्व को ख़तरे में डाल सकती थी तथा जिस प्रकार मानवधिकार के नाम पर हत्या, चोरी, बलात्कार तथा डाका डालने की आज्ञा प्रदान नही की जा सकती। उसी प्रकार विचारों की स्वतन्त्रता के नाम पर इस्लामी राज्य में वैचारिक बग़ावत की आज्ञा नहीं दी जा सकती। यह बाध्यता अथवा दबाव नहीं है। बल्कि फिर जाने वाले (मूर्तिद) की हत्या उसी प्रकार न्याय संगत है, जिस प्रकार हत्या तथा चारित्रिक अपराध के करने वालों को कठोर दण्ड देना भी न्याय है। एक का उद्देश्य राज्य की वैचारिक सुरक्षा और दूसरे का उद्देश्य देश की अशान्ति से सुरक्षा है और दोनों उद्देश्य एक राज्य के लिये अति आवश्यक हैं। आज इस्लामी देश इन दोनों उद्देश्यों से विचलित होकर, जिन समस्याओं, अशान्ति और कठिनाईयों में घिरे हुए हैं, उनको बताने की आवश्यकता नहीं।

مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾

(अलैहिस्सलाम) ने कहा अल्लाह (तआला) सूर्य को पूर्व की ओर से ले आता है, तू उसे पश्चिम से ले आ। अब वह काफ़िर आश्चर्य चकित हो गया और अल्लाह (तआला) अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۖ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ

(२५९) अथवा उस व्यक्ति के समान जिसका गमन उस बस्ती पर हुआ, जो छत के बल औंधी पड़ी हुई थी, कहने लगा उसकी मृत्यु के बाद अल्लाह (तआला) उसे किस प्रकार जीवित करेगा।[1] तो अल्लाह (तआला) ने उसे सौ वर्ष के लिये मार दिया, फिर उसे (जीवित) उठाया, पूछा, "कितनी अवधि तुझ पर व्यतीत हुई ?" उत्तर दिया कि, "एक दिन अथवा दिन का कुछ भाग।"[2] कहा कि "तू बल्कि सौ वर्ष तक रहा, फिर अब तू अपने भोजन पदार्थ को

---

[1] أو كالذي का सम्बन्ध प्रथम घटना से है और अर्थ है कि आपने (पहली घटना की तरह) उस व्यक्ति की कथा पर विचार नहीं किया, जो एक बस्ती से गुज़रा। यह व्यक्ति कौन था ? इसके विषय में विभिन्न मत व्यक्त किये गये हैं। अधिक प्रसिद्ध नाम आदरणीय उजैर का है। जिसके कुछ सहाबा और ताबईन पक्षधर हैं। والله أعلم इससे पहले की घटना (आदरणीय इब्राहीम व नमरूद) में प्रतिबन्ध अल्लाह तआला का प्रमाण था और इस दूसरी घटना ने उस व्यक्ति को और उसके गधे को सौ वर्ष बाद पुर्नजीवित कर दिया यहाँ तक कि उसकी खाने-पीने की वस्तुओं को भी नष्ट नहीं होने दिया। वही अल्लाह तआला क़ियामत के दिन सभी मनुष्यों को पुर्नजीवित करेगा। जब वह सौ वर्ष पश्चात जीवित कर सकता है, तो फिर हज़ारों वर्ष पश्चात उसके लिये क्या कठिनाई है ? हमारा पूर्ण विश्वास है कि उसे कोई कठिनाई नहीं।

[2] कहा जाता है कि जब वह व्यक्ति मरा था तो थोड़ा दिन चढ़ा था, और जब वह जीवित हुआ तो भी सन्ध्या नहीं हुई थी। तो उसने अनुमान लगाया था कि यदि मैं कल आया था, तो एक दिन बीता अन्यथा दिन का कुछ भाग व्यतीत हुआ है। जबकि वास्तविकता यह है कि इसकी इस घटना की अवधि सौ वर्ष की थी।

وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ ۙ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾

देख कि कदापि नष्ट नहीं हुआ, और अपने गधे को भी देख, हम तुझे लोगों के लिये लक्षण बनाते हैं। तू देख कि हम अस्थियों को किस प्रकार खड़ी करते हैं, फिर उन पर माँस चढ़ाते हैं।" जब यह सब स्पष्ट हो चुका, तो कहने लगा, "मैं जानता हूँ कि अल्लाह (तआला) सर्वशक्तिमान है।"[1]

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۖ

(२६०) और जब इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) ने कहा, "हे मेरे प्रभु ! मुझे दिखा कि तू मृतक को किस प्रकार जीवित करेगा ?"[2] अल्लाह (तआला)

---

[1]अर्थात विश्वास तो मुझे पहले भी था, परन्तु अब आंखों से देखकर विश्वास एवं ज्ञान में और दृढ़ता आ गयी है।

[2]यह जीवन-मृत्यु की दूसरी घटना है, जो एक परम आदरणीय पैग़म्बर माननीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इच्छा और उनके दिल की सन्तुष्टि के लिये दिखायी गयी। चार पक्षी कौन-कौन थें ? व्याख्याकारों ने विभिन्न नाम बताये हैं, परन्तु नामों के निर्धारण से कोई लाभ नहीं इसलिये अल्लाह ने भी उनके नामों का वर्णन नहीं किया। बस यह चार विभिन्न पक्षी थे فصرهن का एक अर्थ أملهن किया गया है, अर्थात उनको "*हिलाले*" (परिचित करा लें) ताकि जीवित होने के बाद उनको सरलता से पहचान सकें कि यह वही पक्षी हैं और किसी प्रकार की शंका शेष न रह जाये। इस अर्थ के आधार पर यह मानना पड़ेगा कि ثم قطعهن (फिर उनके टुकड़े-टुकड़े कर लो) छिपा हुआ है दूसरा अर्थ قطعهن (टुकड़े-टुकड़े कर ले) किया गया है। इस स्थिति में बिना छिपा हुआ मान कर अर्थ स्पष्ट हो जाता है। अर्थ यह है कि टुकड़े-टुकड़े करके विभिन्न पहाड़ों पर इनके भाग मिलाकर रख दे, फिर तुम आवाज़ दोगे तो वह जीवित होकर तुम्हारे पास आ जायेंगे। अत: ऐसा ही हुआ। कुछ आधुनिक एवं प्राचीन व्याख्याकार जो सहाबा और ताबईन की व्याख्या तथा महात्माओं (सलफ़) के विचार और नियमों को विशेषता नहीं देते فصرهن का अनुवाद "परिचित करा ले" का किया है। और उनके टुकड़े-टुकड़े करने और पहाड़ों पर उनके भाग बिखेरने को और फिर अल्लाह की शक्ति से उनको जुड़ने को वह स्वीकार नहीं करते। परन्तु यह व्याख्या सही नहीं है। इससे घटना का सारा सम्मान समाप्त हो जाता है। और मरे को जीवित करने का प्रश्न ज्यों का त्यों बना रहता है। यद्यपि इस घटना के वर्णन का उद्देश्य अल्लाह तआला की महान शक्ति जीवन-मरण पर उसका पूर्णरूप से

قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِىْ ۗ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ۗ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦٠﴾

ने कहा "क्या तुम्हें ईमान नहीं ?" उत्तर दिया, "ईमान तो है, परन्तु मेरे दिल को संतोष हो जायेगा ।" कहा, "चार पक्षी लो, उनके टुकड़े कर डालो, फिर हर पर्वत पर उनका एक-एक भाग रख दो, फिर उन्हें पुकारो तुम्हारे पास दौड़ते हुए आ जायेंगे ।" और जान रखो, कि अल्लाह (तआला) सर्वशक्तिशाली एवं सर्वज्ञानी है ।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِىْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾

(२६१) जो लोग अल्लाह (तआला) के मार्ग में अपना माल ख़र्च करते हैं, उनकी समानता उस दाने जैसी है, जिसमें से सात बालियाँ निकलें और हर बाली में सौ दाने हों, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे कई गुना दे ।[1]

प्रभाव का प्रमाण है एक हदीस में है कि *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने आदरणीय इब्राहीम की इस घटना का वर्णन करके फ़रमाया :

«نَحْنُ أَحَقُّ بِالشَّكِّ مِنْ إِبْرَاهِيمَ»

"हम इब्राहीम से अधिक शंका के अधिकारी हैं ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल तफ़सीर)

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि इब्राहीम ने शंका की अत: हमें उनसे और अधिक शंका का अधिकार पहुँचता है । बल्कि अर्थ यह है कि आदरणीय इब्राहीम से शंका का निस्तारण है अर्थात इब्राहीम ने जीवन-मृत्यु की समस्या पर शंका नहीं की, यदि उन्होंने शंका का प्रदर्शन किया होता, तो हम अवश्य शंका करनें में उनसे अधिक अधिकारी होते । (और जानकारी के लिये देखिये फ़तहुल क़दीर, अल-शौकानी)

[1]यह अल्लाह के मार्ग में दान देने की श्रेष्ठता है । इससे तात्पर्य यदि धर्मयुद्ध है, तो इसके अर्थ यह होंगे कि धर्मयुद्ध में व्यय किये गये धन का पुण्य यह होगा । और यदि इससे तात्पर्य सभी पुण्य के लिये व्यय किया गया धन है, तो यह श्रेष्ठता व्यय तथा दान जो स्वेच्छा से अल्लाह के मार्ग में किया गया होगा और अन्य पुण्य . «الحسنة بعشر أمثالها»(एक पुण्य का बदला दस गुना है) की परिधि में आयेगी । (फ़तहुल क़दीर) अर्थात अल्लाह के मार्ग में व्यय किये गये धन की महत्ता एवं विशेषता का कारण स्पष्ट है कि जब तक सामान और

और अल्लाह (तआला) महान व्यापक एवं ज्ञाता है।

ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَآ أَنفَقُوا۟ مَنًّا وَلَآ أَذًى ۙ لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾

(२६२) जो लोग अपना धन अल्लाह (तआला) के मार्ग में ख़र्च करते हैं, फिर उसके पश्चात उपकार नहीं जताते और न कष्ट देते हों ।[1] उनका फल उनके प्रभु के पास है, उन पर न तो कोई भय है न वह उदास होंगे।

قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّن صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَآ أَذًى ۗ وَٱللَّهُ غَنِىٌّ حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾

(२६३) कोमल वचन कहना और क्षमा करना उस दान से उत्तम है, जिसके पश्चात दुख दिया जाये ।[2] और अल्लाह (तआला) निस्पृह एवं सहनशील है।

हथियार का युद्ध के लिये प्रबन्ध न होगा, सेना का कार्य भी शून्य होगा। सामान और हथियार बिना धन के एकत्रित नहीं किये जा सकते।

[1]अल्लाह के मार्ग मे धन व्यय करने की श्रेष्ठता का जो वर्णन गुज़र चुका है, केवल उस व्यक्ति को प्राप्त हो सकेगा, जो माल व्यय करने के पश्चात उपकार न जताये, और मुख से ऐसे शब्द न कहे जिससे किसी निर्धन के सम्मान को ठेस पहुँचे और उसको कष्ट का आभास हो। यह इतना बड़ा अपराध है कि *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

"क़ियामत के दिन अल्लाह तआला तीन प्रकार के व्यक्तियों से बात नहीं करेगा उनमें एक उपकार जताने वाला है।" (मुस्लिम, किताबुल ईमान)

[2]भिक्षुक से कोमल वचन में बोलना तथा प्रार्थना रूपी वाक्य (अल्लाह तुम को भी और मुझे भी अन्य कृपा और दया प्रदान करे आदि) से उत्तर देना उचित कथन है। مغفرة का अर्थ है कि भिखारी और उसकी आवश्यकता को लोगों के समक्ष प्रदर्शित करने से रूकना तथा उसको छुपाना है। और यदि भिखारी के मुख से कोई अनुचित शब्द निकल भी जाये, तब भी उसके अनसुनी करना भी इसमें सम्मिलित है। अर्थात भिखारी को दान देने के बजाय उससे कोमल वचन बोलना, उसकी बात का अनसुनी करना तथा उसको छिपाना अच्छा है, जिसके बाद उसे लोगों के सामने अपमान का सामना न करना पड़े तथा उसके दिल को कष्ट न हो। इसलिये हदीस में कहा गया है «الْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ صَدَقَةٌ» (कोमल वचन भी दान है) और अपने भाई से नम्रता से मिलना उचित अर्थात भलाई है। «وَإِنَّ مِنَ الْمَعْرُوفِ أَنْ تَلْقَىٰ أَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلْقٍ» (सहीह मुस्लिम उदघृत फ़तहुल क़दीर)

(२६४) हे ईमानवालो ! अपने दान को उपकार जताकर और दुख पहुँचाकर व्यर्थ न करो, जिस प्रकार से वह व्यक्ति जो अपना धन दिखावे के लिये ख़र्च करे और न अल्लाह (तआला) पर ईमान रखे और न प्रलय पर, उसकी उपमा उस चिकने पत्थर की है, जिस पर थोड़ी सी मिट्टी हो, फिर उसपर ज़ोरदार वर्षा हो और वह उसे बिल्कुल स्वच्छ और कठोर छोड़ दे ।[1] इन पाखण्डियों को अपनी कमाई से कोई चीज़ हाथ नहीं लगती और अल्लाह (तआला) काफ़िरों के समुदाय को मार्गदर्शन नहीं देता ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تُبْطِلُوا۟ صَدَقَٰتِكُم بِٱلْمَنِّ وَٱلْأَذَىٰ كَٱلَّذِى يُنفِقُ مَالَهُۥ رِئَآءَ ٱلنَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ ۖ فَمَثَلُهُۥ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُۥ وَابِلٌ فَتَرَكَهُۥ صَلْدًا ۖ لَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَىْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا۟ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٢٦٤﴾

(२६५) उन लोगों की उपमा जो अपना माल अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए ख़ुशी दिल से और विश्वास के साथ ख़र्च करते हैं, उस बाग़ जैसी है जो ऊँची धरती पर हो ।[2] और ज़ोरदार वर्षा से अपना फल

وَمَثَلُ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمُ ٱبْتِغَآءَ مَرْضَاتِ ٱللَّهِ وَتَثْبِيتًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَـَٔاتَتْ أُكُلَهَا

---

[1]इस आयत में यह कहा गया है कि, दान व पुण्य करके, उपकार करके, जताना और कष्टदायक बातें करना ईमानवालों को शोभा नहीं देते, बल्कि उन लोगों की आदत है, जो मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हैं वह देखावे के लिये ख़र्च करते हैं । दूसरे ऐसे व्यय करने की तुलना ऐसी है कि जैसे पत्थर की चट्टान पर मिट्टी जम जाये और कोई उसमें बीज बो दे और उसके पश्चात वर्षा का एक झोंका आये, तो सब कुछ बह जाये और वह पत्थर मिट्टी से बिल्कुल साफ़ हो जाये । अर्थात जिस प्रकार वह वर्षा उस पत्थर के लिये लाभप्रद नहीं हुई उसी प्रकार दिखावे का दान भी उसको कोई लाभ नहीं पहुँचा सकेगा ।

[2]यह उन ईमानवालों की शोभा है, जो अल्लाह तआला को प्रसन्न करने के लिये व्यय करते हैं । इनका ख़र्च उस बाग़ के समान है, जोअत्यधिक ऊँचाई पर हो, कि यदि अधिक वर्षा हो, तो अपने फल दुगने कर सके और यदि वर्षा न हो, तो फुहार तथा ओस ही उसके लिये पर्याप्त है । इस प्रकार के दान भी, चाहे कितने कम क्यों न हों, परन्तु अल्लाह के यहाँ कई-कई गुना उनका बदला तथा पुण्य होगा । جنة उस धरती को कहते हैं, जिस पर इतनी अधिकता में वृक्ष हों कि वह धरती को ढाक लें अथवा बाग़ जिनके चारों ओर इतनी घनी झाड़ हो कि बाग़ दृष्टि से ओझल हो जाये । यह जिन्न शब्द से

ضِعْفَيْنِ ۚ فَإِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٦٥﴾

दुगना लादे और यदि उस पर वर्षा न भी हो, तो फुहार ही काफ़ी है, और अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيلٍ وَّأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءُ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ

(२६६) क्या तुममें से कोई भी यह चाहता है कि उसके खजूरों और अंगूरों के बाग़ हों, जिसमें नहरें बह रही हों और हर प्रकार के फल व्याप्त हों, उस व्यक्ति की वृद्धावस्था आ गयी हो, उसके नन्हें-नन्हें बच्चे भी हों और अचानक बाग़ को बगुला लग जाये जिसमें अग्नि भी हो। जिससे बाग़ जल जाये।[1] इसी प्रकार अल्लाह (तआला) तुम्हारे लिए निशानियाँ

लिया गया है। जिन्न उस सृष्टि को कहते हैं, जोआँखों को नहीं दिखाई देती। गर्भ में बच्चे को जनीन कहा जाता है क्योंकि वह भी दिखाई नहीं देता। उन्माद को जुनून कहा गया है क्योंकि इसमें भी बुद्धि पर पर्दा पड़ जाता है और जन्नत (स्वर्ग) को जन्नत कहते हैं कि यह दृष्टिगोचर नहीं है। ربوة ऊँची धरती को कहते हैं। وابل तेज वर्षा को कहते हैं।

[1]इसी आडम्बर की हानि को स्पष्ट करने और उससे बचने के लिये और उदाहरण दिया जा रहा है कि एक व्यक्ति का बाग़ हो, जिसमें हर प्रकार के फल हों (अर्थात उससे अधिक लाभ की आशा हो) वह व्यक्ति बूढ़ा हो जाये और उसके छोटे-छोटे बच्चे हों (अर्थात वह अपनी वृद्धावस्था के कारण मेहनत न कर सके और उसकी संतान भी उसके बुढ़ापे की सहारा तो क्या, स्वयं अपना बोझ न उठाने के योग्य हो) इस स्थिति में तेज गति की आँधी आये और उसका बाग़ जल जाये। अब तो न वह स्वयं पुन: बाग़ लगाने की स्थिति में रहा और न उसकी संतान। यही स्थिति आडम्बर के लिये ख़र्च करने वालों का क़ियामत वाले दिन होगी। पाखण्ड एवं आडम्बर के कारण उनके सारे कर्म व्यर्थ चले जायेंगे। जबकि वहाँ पुण्य की अति आवश्यकता होगी। और पुन: सत्कर्म करने का समय नहीं मिलेगा अल्लाह तआला फ़रमाता है कि क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारा यही हाल हो ? आदरणीय इब्ने अब्बास ने इस उदाहरण का लक्ष्य उन लोगों को भी बताया है, जोजीवन भर पुण्य का कार्य करते रहे, परन्तु वृद्धावस्था में शैतान के जाल में फँसकर अल्लाह के अवज्ञाकारी बन जाते हैं, जिससे जीवन भरके पुण्य बर्बाद हो जाते हैं। (सहीह बुख़ारी उदघृत फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٦﴾

का वर्णन करता है, ताकि तुम विचार कर सको।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَنفِقُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا۟ ٱلْخَبِيثَ مِنْهُ تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِـَٔاخِذِيهِ إِلَّآ أَن تُغْمِضُوا۟ فِيهِ ۚ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾

(२६७) हे ईमानवालो ! अपनी पवित्र आय में से और धरती में से तुम्हारे लिये हमारी निकाली हुई चीजों में से ख़र्च करो।[1] उनमें से बुरी चीजो कोख़र्च करने का विचार न करना, जिसे तुम स्वयं लेने वाले नहीं हो, हाँ, यदि आँखें बन्द कर लो तो।[2] और जान लो अल्लाह (तआला) निस्पृह और प्रशंसित है।

ٱلشَّيْطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم

(२६८) शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, और अशिष्टता का आदेश देता है।[3] और

---

[1]दान को स्वीकार करने के लिए आवश्यक है कि उपकार और आडम्बर से शुद्ध हो (जैसाकि पिछली आयतों में बताया जा चुका है) उसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि वह उचित एवं शुद्ध कमाई से हो। चाहे वह कारोबार (व्यापार अथवा उद्योग) के द्वारा हो अथवा कृषि और बाग़ों की पैदावार से। और यह फ़रमाया कि "अपवित्र चीजों को दान करने की चेष्टा न करो।" तो अपवित्र चीज़ों से तात्पर्य उन चीजों से है जो अवैध कमाई से हों। अल्लाह तआला उसे स्वीकार नहीं करता। हदीस में है «إِنَّ اللهَ طَيِّبٌ لَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا» (अल्लाह तआला पवित्र है और वह पवित्र चीज़ों को स्वीकार करता है)। दूसरे अपवित्र के अर्थ बेकार और प्रयोग में न आने वाली चीज़ों के है। बेकार चीज़ें भी अल्लाह के मार्ग में न ख़र्च करो। जैसाकि आयत ﴿لَن تَنَالُوا۟ ٱلْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا۟ مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ का भी लाभ है। इसके उतरने के कारण में बताया गया है कि मदीना के कुछ अंसार ख़राब, न प्रयोग में न आने वाली खजूरों को दान स्वरूप मस्जिद में दे जाते, जिस पर यह आयत उतरी। (फ़तहुल क़दीर उदघृत त्रिमिजी व इब्ने माजा आदि)

[2]अर्थात जिस प्रकार से तुम स्वयं बेकार चीजे लेना अच्छा नहीं समझते, उसी प्रकार अल्लाह के मार्ग में अच्छी चीज ही ख़र्च करो।

[3]अर्थात यदि पुण्य के कार्य में धन व्यय करना हो, तो शैतान यह भय उत्पन्न कराता है कि इससे तुम निर्धन एवं भिखारी हो जाओगे। परन्तु बुरे कार्यों में व्यर्थ करने में ऐसे विचारों को निकट नहीं आने देता बल्कि उन बुरे कार्यों को इस प्रकार बना-सँवार के प्रस्तुत करता है कि उनके लिए छिपी हुई इच्छायें इस प्रकार जाग जाती हैं कि उन पर मनुष्य बड़े से बड़ा धन व्यय कर डालता है। इसलिए देखा गया है कि मस्जिद, मदरसे और

अल्लाह (तआला) तुमको अपनी क्षमा और कृपा का वचन देता है। अल्लाह (तआला) अति दयालु एवं सर्वज्ञ है।	مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٨﴾
(२६९) वह जिसे चाहे ज्ञान, बुद्धि देता है। और जिसे बुद्धिमता दे दिया गया। उसे बहुत सारी भलाई दी गयी।[1] और शिक्षा केवल बुद्धिमान ही प्राप्त करते हैं।	يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾
(२७०) तुम चाहे जितना ख़र्च करो (अर्थात दान करो) और जो कुछ मनौती मानो,[2] उसे अल्लाह (तआला) जानता है और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।	وَمَا أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿٢٧٠﴾

किसी अन्य पुण्य के कार्य के लिये यदि कोई अनुदान के लिये पहुँच जाये तो, धनवान लोग सौ, दो सौ के लिये कई बार अपने लेखा-जोखा की देख पड़ताल करते हैं, और माँगने वाले लम्बे समय तक प्रतीक्षा करके कभी-कभी कई-कई बार दौड़ते हैं। परन्तु यही व्यक्ति सिनेमा, टेलीविजन, शराब, कुकर्मों, मुक़दमें आदि पर तो अपना धन बिना सोचे समझे ख़र्च करता है और इससे किसी प्रकार का संकोच व हिचकिचाहट का प्रदर्शन नहीं होता।

[1]बुद्धिमत्ता कुछ के निकट समझ-बूझ व ज्ञान, कुछ के निकट अच्छी सलाह, क़ुरआन द्वारा रोकी गई बातों का ज्ञान व समझ, निर्णायक शक्ति और कुछ के निकट केवल किताब व सुन्नत का ज्ञान व समझ है अथवा यह सभी मत उसकी परिधि में सम्मिलित हो सकते हैं। सहीहैन कि.एक हदीस में है कि दो व्यक्तियों पर प्रतिस्पर्धा उचित है, एक वह जिसको अल्लाह ने धन दिया और वह उसे अल्लाह के मार्ग में व्यय करता है। दूसरा वह जिसे अल्लाह ने बुद्धिमत्ता प्रदान की, जिससे वह निर्णय करता है और लोगों को उसकी शिक्षा देता है। (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म)

[2]मनौती का अर्थ है कि मेरा अमुक कार्य हो गया अथवा अमुक दुःख निवारण हो जायेगा, तो मैं अल्लाह के मार्ग में इतना दान करूँगा। इस मनौती को पूरा करना आवश्यक है। यदि किसी अवैज्ञा अथवा अनुचित कार्य की मनौती मानी है, तोउसे पूरी करना आवश्यक नहीं है। मनौती भी नमाज़ और रोज़े की तरह वंदना है। इसलिये अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की मनौती मानना उसकी पूजा है, जो शिर्क है, जैसाकि आजकल प्रसिद्ध मज़ारों पर मनौती और चढ़ाव का यह कार्य सामान्य है। अल्लाह तआला इस शिर्क से बचाये।

(२७१) यदि तुम दान-पुण्य को प्रकट करो, तो वह भी अच्छा है, और यदि तुम उसे छिपा कर निर्धनों को दे दो, यह तुम्हारे लिये श्रेष्ठकर है।[1] अल्लाह (तआला) तुम्हारे पापों को समाप्त कर देगा और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सभी कर्मों से सूचित है।

إِن تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۖ وَإِن تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن سَيِّئَاتِكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٧١﴾

(२७२) उन्हें सत्यमार्ग पर ला खड़ा करना तुम्हारे अधिकार में नहीं, बल्कि मार्गदर्शन अल्लाह (तआला) देता है, जिसे चाहता है, और तुम जो भली वस्तु अल्लाह के मार्ग में दोगे उसका लाभ स्वयं पाओगे। तुम्हें मात्र अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ख़र्च करना चाहिये। तुम जो कुछ माल ख़र्च करोगे उसका पूरा-पूरा बदला तुम्हें दिया जायेगा।[2] और तुम्हारा अधिकार न मारा जायेगा।

لَّيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۗ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنفُسِكُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٢﴾

---

[1] इससे ज्ञात हुआ कि सामान्य स्थिति से छिपाकर दान करना श्रेष्ठ है, सिवाय इसके कि किसी विशेष परिस्थिति में बताकर दान करने से अन्य व्यक्तियों को शिक्षा देना है। यदि आडम्बर की सम्भावना न हो, तो इस कार्य में प्राथमिकता दिखाने वाले जो श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं। वह हदीसों से स्पष्ट है। इस प्रकार के विशिष्ट परिस्थितियों के अतिरिक्त गुप्तदान ही श्रेष्ठ है। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया : कि जिन व्यक्तियों को क़ियामत के दिन अर्श-ए-इलाही की छाया का सौभाग्य प्राप्त होगा, उनमें एक व्यक्ति वह भी होगा जिसने इस प्रकार से गुप्तदान किया होगा कि उसके बायें हाथ को ख़बर न होगी कि उसके दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया है। दान में गुप्त रखने की श्रेष्ठता को कुछ आलिमों ने स्वेच्छात्मक दान तक सीमित रखा है, परन्तु ज़कात (निर्धारित दान) को स्पष्ट करने को श्रेष्ठ समझा है। परन्तु क़ुरआन की मान्यता अनिवार्य तथा स्वेच्छात्मक दोनों दान को सम्मिलित है। (इब्ने कसीर) और हदीस का भावार्थ भी इसका पक्षधर है।

[2] व्याख्या के वृतान्त में इसके उतरने का कारण यह वर्णित किया गया है कि मुसलमान अपने मूर्तिपूजक सम्बन्धियों की सहायता करना उचित नहीं समझते थे और वह चाहते

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُم بِسِيمَاهُمْ لَا يَسْـَٔلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢٧٣﴾

(२७३) दान के पात्र केवल वह निर्धन हैं, जो अल्लाह के मार्ग में रोक दिये गये, जो देश में चल-फिर नहीं सकते ।[1] मूर्ख लोग उनके प्रश्न न करने के कारण उन्हें धनवान समझते हैं, आप उनके मुख को देखकर, ज्ञान से उन्हें पहचान लेंगे, वह लोगों से चिमटकर भीख नहीं माँगते ।[2] तुम जो कुछ धन ख़र्च करो अल्लाह (तआला) उसका जाननेवाला है ।

थे कि वह भी मुसलमान हो जायें । अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मार्गदर्शन देना यह केवल अल्लाह के अधिकार में है । दूसरी बात यह फ़रमायी कि तुम अल्लाह की प्रसन्नता के लिये जो कुछ भी ख़र्च करोगे उसका पूरा बदला तुम्हें मिलेगा । इससे यह ज्ञात हुआ कि जो सम्बन्धी मुसलमान नहीं हैं उनके साथ भी नम्रता का बर्ताव करना पुण्य का कार्य है । परन्तु ज़कात केवल मुसलमान का अधिकार है, इसे किसी भी अन्य व्यक्ति को नहीं दिया जा सकता, जो मुसलमान न हो ।

[1]इससे तात्पर्य वह मुहाजिर हैं, जो मक्का से मदीना आये और अल्लाह के मार्ग में आने के कारण उनकी प्रत्येक चीज़ छूट गयी । इस परिधि में धर्म की शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी और आलिम (धार्मिक शिक्षक) भी आते हैं ।

[2]अर्थात जो ईमानवाले हैं, उनकी विशेषता यह है कि वह निर्धनता एवं गरीबी की परिस्थिति में किसी के समक्ष हाथ फैलाकर भिक्षा माँगने से कतराते हैं । तथा किसी से चिमट कर कदापि प्रश्न नहीं करते । (चूँकि इसकी पहली विशेषता प्रश्न करने से कतराना है । (फ़तहुल क़दीर) और कुछ ने कहा कि वह भिक्षा के समय रोना-धोना नही करते और जिन वस्तुओं की उन्हें आवश्यकता नहीं होती उसकी माँग नहीं करते । इसलिये कि إلحاف का अर्थ यह है कि आवश्यकता न होने पर भी (व्यवसाय के रूप में) लोगों से माँगे, इस भावार्थ की पुष्टि हदीसों से होती है । जिनमें कहा गया है कि "गरीब वह नहीं है, जो एक-एक, दो-दो खजूर अथवा एक-एक, दो-दो निवाले के लिए दर-दर जाकर प्रश्न करता है । गरीब तो वह है, जो प्रश्न करने से बचता है ।" फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आयत ﴿لَا يَسْـَٔلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا﴾ का उदाहरण दिया (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर व अल-ज़कात) इसलिये व्यवसायिक भिक्षुकों के अतिरिक्त धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिये हिजरत करने वाले, विद्यार्थियों, आलिमों तथा सफेद पोश लोगों की खोज करके जिन्हें आवश्यकता तो है, पर किसी के सामने हाथ नहीं फैलाते, सहायता करनी चाहिये । इसके अतिरिक्त हदीस में आया है कि जिसके पास इतना माल हो जो उसके

(२७४) जो लोग अपने माल को रात-दिन छुपा कर अथवा खुल्लम-खुल्ला ख़र्च करते हैं, उनके लिये उनके प्रभु के पास फल है, न उन्हें कोई भय है और न कोई शोक।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

(२७५) ब्याज खाने वाले[1] लोग न खड़े होंगे, परन्तु उसी प्रकार, जिस प्रकार वह खड़ा होता

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ

जीवन यापन के लिये काफ़ी हो, परन्तु इसके उपरान्त वह लोगों के सामने हाथ फैलाता है, तो क़ियामत के दिन उसका चेहरा खून से लथपथ होगा। (विवरण अहलुस-सुनन, अल-अरवा, त्रिमिजी, किताबुल ज़कात)

[1] ربوا का शब्दकोष में अर्थ अधिकता तथा बढ़ोत्तरी है। और धार्मिक नियमों में इसे ब्याज कहते हैं। इसके दो भाग इस प्रकार हैं। एक रिबाफ़ज़्ल और दूसरा रिबानसिय:।
प्रथम जो छ: वस्तुओं में कमी अथवा अधिकता अथवा नगद ऋण के कारण से होता है। जिसका विवरण हदीस में है। जैसे गेंहूँ का बदला गेहूँ से करना है, इसके लिये कहा गया है कि बराबर-बराबर हो। दूसरे हाथों-हाथ हो। इसमें कमी अथवा अधिकता होगी, तो भी और हाथों-हाथ होने के अतिरिक्त एक नगद और दूसरा उधार अथवा दोनों ही उधार हों, तव भी ब्याज है। रिबा *"नसिया"* का अर्थ है किसी को जैसे ६ महीने के लिये सौ रूपये इस शर्त पर देना कि वापसी १२५ रूपया होगी। २५ रूपये ६ महीने की छूट के लिये लिए जायें। अली رضي الله عنه से सम्बन्धित वाक्य में इसे इस प्रकार वर्णित किया गया है। «كُلُّ قَرْضٍ جَرَّ مَنْفَعَةً فَهُوَ رِبًا» (ऋण पर लिया गया लाभ ब्याज है) यह ऋण अपनी आवश्यकता के लिये लिया गया हो अथवा व्यवसाय के लिये दोनों प्रकार के ऋण पर लाभ (ब्याज) हराम है। अशिक्षित काल में भी इस प्रकार के दोनों ऋणों का प्रचलन था। धार्मिक नियम ने दोनों में किसी प्रकार का भेद किये बिना दोनों प्रकार से प्राप्त ब्याज को कठोरता के साथ हराम कहा है। इसलिये कुछ लोगों का यह कहना कि व्यवसाय के लिये लिया गया ऋण (जो सामान्यत: बैंकों से लिया जाता है) इस पर लिया गया अधिक धन ब्याज नहीं है। इसलिये कि ऋण लेने वाला इससे लाभ उठाता है। उसका कुछ भाग वह बैंक को अथवा ऋण देने वाले को लौटा देता है तो इसमें क्या अनुचित है ? इसमें कठिनाई उन नये विचारकों को नज़र नहीं आती जो ब्याज को उचित सिद्ध करना चाहते हैं, वरना धार्मिक नियम में तो इसमें बड़ी कठिनाई है। जैसे ऋण लेकर व्यवसाय करने वाले को उस व्यवसाय से लाभ होना आवश्यक नहीं है। कई बार व्यवसाय में लगाया गया सारा धन डूब जाता है। जबकि इसके विपरीत ऋण देने वाला (चाहे बैंक हो अथवा कोई साहूकार) उसका लाभ निर्धारित है, जिसकी अदायगी प्रत्येक स्थिति में अनिवार्य है। यह अत्याचार का स्पष्ट प्रमाण है, तो फिर इस्लामी धार्मिक नियम किस प्रकार उसे उचित कह सकते

يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾

है, जिसे शैतान लग कर पागल बना देता है ।[1] यह इसलिये कि यह कहा करते थे कि व्यापार भी तो ब्याज ही के समान है ।[2] जबकि अल्लाह (तआला) ने व्यापार को हलाल किया और ब्याज को हराम । और जो व्यक्ति अपने पास आयी हुई अल्लाह (तआला) की शिक्षा सुन कर रूक गया उसके लिये वह है जो व्यतीत हो गया ।[3] और उसका मामला अल्लाह (तआला) के पास है ।[4] और जो फिर (हराम की ओर) पलटा वह नरकवासी है, वे सदैव उसी में रहेंगे ।

हैं । वल्कि धर्मिक नियम तो ईमानवालों को समाज के वह व्यक्ति जिनको सहायता की आवश्यकता है, बिना किसी प्रकार के सांसारिक लाभ की कामना किये, इस प्रकार के लोगों की सहायता करने पर बल देता है। जिससे समाज में भाईचारा, प्रेम, सहायता, आदर एवं सम्मान की भावना उत्पन्न हो । इसके विपरीत ब्याज के इस नियम से कठोरता और स्वार्थ को बढ़ावा मिलता है। एक धनवान को अपने धन से लाभ की इच्छा होती है, चाहे समाज के वह लोग, रोग, भूख, निर्धनता से पीड़ित ही क्यों न हों अथवा बेरोज़गार होने के कारण अपने जीवन से मोह न हो। धर्मिक नियम इस कठोरता तथा अत्याचार को किस प्रकार पसन्द कर सकता है ? इसकी बहुत सी अन्य हानियाँ हैं, विस्तार की यहाँ आवश्यकता नहीं है। अत: ब्याज कदापि हराम है, चाहे ब्याज व्यक्तिगत (अपनी आवश्यकता के लिये गये ऋण पर ब्याज) हो अथवा संस्थागत ब्याज (व्यावसायिक कार्य के लिए लिये गये ऋण पर ब्याज) हो ।

[1]ब्याज लेने वाले की यह स्थिति क़ब्र से उठते समय अथवा प्रलय के मैदान में होगी।

[2]हालाँकि व्यापार में तोधन-सामग्री का परस्पर लेन देन होता रहता है। दूसरे इसमें लाभ-हानि की सम्भावना रहती है, जबकि ब्याज में यह दोनों बातें नहीं होती हैं। अत: अल्लाह ने बेचने को वैध और ब्याज को अवैध कहा है। फिर यह दोनों एक कैसे हो सकते हैं ?

[3]ईमान लाने तथा क्षमा माँग लेने के पश्चात पिछले ब्याज लेने पर पकड़ नहीं होगी।

[4] कि वह क्षमा माँगने के पश्चात अडिग रहता है अथवा फिर से कुकर्म और कुविचार के कारण उसको उसकी स्थिति पर छोड़ देते हैं। इसलिये पुन: ब्याज लेने वाले को कठोर दण्ड की धमकी है ।

(२७६) अल्लाह (तआला) ब्याज को मिटाता है और दान को बढ़ाता है।[1] और अल्लाह (तआला) किसी कृतघ्न एवं पापी को मित्र नहीं बनाता।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾

(२७७) जो लोग ईमान के साथ (सुन्नत के अनुसार) काम करते, नमाज़ों को स्थापित करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, उनका फल उनके पालनहार के पास है। उन पर न तो कोई भय है और न कोई दुख।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾

(२७८) हे ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) से डरो और जो ब्याज शेष रह गया है, वह छोड़ दो यदि तुम सचमुच ईमानवाले हो।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾

(२७९) यदि ऐसा नहीं करते तो अल्लाह (तआला) और उसके रसूल से लड़ने के लिये तैयार हो जाओ।[2] और यदि क्षमा माँग लो तो तुम्हारा मूलधन तुम्हारा ही है न तुम अत्याचार करो और न तुम पर अत्याचार किया जाये।[3]

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾

---

[1]यह ब्याज के वास्तविक एवं आत्मिक हानि के पश्चात दान के लाभों का विवरण है। ब्याज से देखने में तो बढ़ोत्तरी होती है, परन्तु उसके अध्यात्मिक अर्थ के अनुसार परिणाम स्वरूप ब्याज का धन उसकी बरबादी एवं ख़राबी का कारण बनता है। इस बात का समर्थन अब पाश्चात्य देश के अर्थशास्त्री भी करने लगे हैं।

[2]यह ऐसी कड़ी चेतावनी है जो किसी अन्य अपराध के करने पर नहीं आई है। इसलिये आदरणीय अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कहा कि जो व्यक्ति इस्लामी राज्य में ब्याज त्यागने के लिये तैयार न हो तो समय के राज्य प्रमुख का दायित्व है कि उससे क्षमा-याचना कराये (क्योंकि वह अल्लाह तथा रसूल से युद्ध की घोषणा कर रहा है) तथा न रूकने की दशा में उसकी गर्दन मार दे। (इब्ने कसीर)

[3]तुम यदि मूलधन से अधिक धन वसूल करोगे, तो यह तुम्हारा अत्याचार होगा और यदि तुम्हें मूलधन न दिया जाये, तो यह तुम पर अत्याचार होगा।

وَإِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَنْ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾

(२८०) और यदि कोई निर्धन हो, तो उसे सुविधा तक समय देना चाहिये, तथा दान कर दो तो तुम्हारे लिये अति श्रेष्ठ है ।[1] यदि तुम में ज्ञान हो ।

وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾

(२८१) और उस दिन से डरो, जिसमें तुम सब (अल्लाह तआला) की ओर लौटाये जाओगे और प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा । और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा ।[2]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَىٰ أَجَلٍ

(२८२) हे ईमानवालो ! जब तुम आपस में निर्धारित अवधि के लिए एक-दूसरे से उधार का लेन-देन करो तो लिख लिया करो ।[3] और

---

[1]अज्ञान काल में ऋण को अदा न करने के कारण ब्याज पर ब्याज से मूलधन में इतनी वृद्धि हो जाती थी, कि एक छोटा सा मूलधन एक पर्वत बन जाता था, जिनका अदा करना असम्भव हो जाता । अल्लाह तआला ने आदेश दिया कि यदि कोई निर्धन है तो (ब्याज लेना ही नहीं चाहिये, तथा मूलधन लेने में भी) सरलता से उसे अदा करने का समय देना चाहिये । और यदि ऋण क्षमा कर दो तो यह और भी श्रेष्ठ है । हदीस में भी इसकी श्रेष्ठता का वर्णन किया गया है । कितना अन्तर है दोनों नियमों में ? एक पूर्णरूप से कठोरता, अत्याचार और स्वार्थी नियम और दूसरा प्रेम, सहानुभूति और एक-दूसरे की सहायता का नियम । मुसलमान यदि स्वयं इस कृपालु और कल्याणकारी अल्लाह के नियमों पर न चले, तो इसमें इस्लाम का क्या दोष ? और अल्लाह पर क्या आक्षेप ? काश, मुसलमान अपने धर्म के महत्व और सार्थकता को समझ सके और उस पर अपनी जीवन-धारा का प्रवाहित कर सकें ।

[2]कुछ कथनानुसार यह *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर अवतरित अन्तिम आयत (श्लोक) है जिसके पश्चात ही आप का निधन हो गया ।

[3]जब ब्याज के नियमों का कठोरता से निषेध किया गया और दान देने पर बल दिया गया, तो फिर ऐसे समाज में ऋण की आवश्यकता विशेष रूप से हुई । क्योंकि ब्याज तो वैसे ही वर्जित है, और प्रत्येक व्यक्ति इतना दान नहीं कर सकता । तथा हर व्यक्ति अपने सम्मान के कारण दान लेना पसन्द नहीं करता तो ऐसे में केवल ऋण लेना पड़ता है । इसीलिये हदीस में ऋण देने पर बड़े पुण्य वर्णित किये गये हैं । इसके देने में आनाकानी और आलस्य के कारण झगड़ा भी हो सकता है । इसलिये इस आयत में जिसे आयत दैन कहा जाता है और जो क़ुरआन

مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ ۚ وَلْيَكْتُب بَّيْنَكُمْ
كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ
كَاتِبٌ أَن يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ ۚ
فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ
الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ
مِنْهُ شَيْئًا ۚ فَإِن كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ
الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا
أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَن يُمِلَّ هُوَ
فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ ۚ
وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِن
رِّجَالِكُمْ ۖ فَإِن لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ
فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّن تَرْضَوْنَ
مِنَ الشُّهَدَاءِ أَن تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا

लेखक को चाहिये कि आपस का विषय न्याय के साथ लिखे, लेखक को चाहिये कि लिखने से इंकार न करे, जैसे अल्लाह (तआला) ने उसे सिखाया है, उसी प्रकार उसे भी लिख देना चाहिये और जिसके ऊपर अधिकार हो वह लिखवाये ।[1] और अपने अल्लाह (तआला) से डरे जो उसका प्रभु है और अधिकार में से कुछ घटाये नहीं, यदि जिस व्यक्ति पर अधिकार हो और वह अशिक्षित हो अथवा दुर्बल हो अथवा लिखवाने की शक्ति न रखता हो, तो उसका संरक्षक न्याय के साथ लिखवा दे और अपने में से दो पुरूषों को साक्षी रख लो, यदि दो पुरूष न हों, तो एक पुरूष और दो स्त्रियाँ जिन्हें तुम साक्षी के रूप में पसन्द कर लो ।[2]

की सबसे लम्बी आयत है। अल्लाह तआला ने ऋण के लिये आवश्यक निर्देश दिये हैं। ताकि अनिवार्य आवश्यकता झगड़े का कारण न बने। इसके लिये एक आदेश यह दिया कि अवधि निर्धारित कर लो। दूसरा यह कि इसे लिख लो तीसरा यह कि इस पर दो मुसलमान पुरूष अथवा एक पुरूष और दो स्त्रियों को साक्षी बना लो।

[1]इससे तात्पर्य ऋणी है अर्थात वह अल्लाह से डरता हुआ धन को लिखवाये, इसमें कमी न करे। आगे चलकर कहा जा रहा है कि यदि यह ऋणी मन्दबुद्धि अथवा कमज़ोर बच्चा अथवा पागल है, तो उसके संरक्षक को चाहिये कि न्याय के साथ लिखवा ले ताकि ऋणी (ऋण देने वाला) को हानि न हो।

[2]अर्थात जिनकी धार्मिकता तथा न्याय प्रियता पर तुम्हें विश्वास हो। इसके अतिरिक्त क़ुरआन करीम के इन सूत्रों से ज्ञात हुआ कि दो स्त्रियों का साक्ष्य एक पुरूष के समान है। तथा बिन पुरूष के स्त्रियों का साक्ष्य उचित नहीं है, उन समस्याओं के अतिरिक्त जिसमें स्त्री के अतिरिक्त किसी को ज्ञान नहीं हो सकता, इस मत में मतभेद है कि वादी (मुद्दई) की एक प्रतिज्ञा के साथ दो स्त्रियों के साक्ष्य पर निर्णय करना उचित है, अथवा नहीं ? जिस प्रकार एक पुरूष के साक्ष्य के पश्चात निर्णय करना उचित है, जबकि दूसरे साक्ष्य के स्थान पर वादी शपथ लेकर कहे। परन्तु हनफ़ी धर्माचार्यों के निकट यह उचित नहीं। जबकि हदीस के जानने वाले इसके पक्ष में हैं, क्योंकि हदीस से एक साक्ष्य और शपथ के

فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ ۚ
وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا ۚ
وَلَا تَسْأَمُوا أَن تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا
إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ
عِندَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ
وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۖ إِلَّا أَن
تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً
تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهِدُوا
إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۚ وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ
وَلَا شَهِيدٌ ۚ وَإِن تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ

ताकि एक की भूल-चूक को दूसरी याद दिला दे।[1] और साक्षियों को चाहिये कि वे जब बुलाये जायें, तो इंकार न करें, और ऋण को जिसकी अवधि निर्धारित है, चाहे छोटा हो या बड़ा हो लिखने में आलस्य न करो। अल्लाह तआला के निकट यह बात बहुत न्यायोचित है। और साक्ष्य को ठीक रखने वाली और शंका से भी अधिक बचाने वाली है।[2] और यह बात अलग है कि वह मामला नगद व्यापार के रूप में हो जो आपस में लेन-देन कर रहे हो, तो तुम पर उसके न लिखने में कोई पाप नहीं। क्रय-विक्रय के समय भी साक्षी निर्धारित कर लिया करो।[3] और (याद रखो) न तो लिखने

साथ निर्णय करने की पुष्टि होती है, और जब दो स्त्रियाँ एक पुरूष के साक्ष्य के बराबर हैं तो दो स्त्रियों और शपथ के साथ निर्णय करना उचित होगा। (फ़तहुल क़दीर)

[1]यह एक पुरूष के सापेक्ष दो स्त्रियों को निर्धारित करने की विशेषता एवं बुद्धिमत्ता है। अर्थात स्त्री बुद्धि और याद रखने में पुरूष से कमज़ोर है। (जैसाकि सहीह मुस्लिम की एक हदीस में स्त्री को मन्दबुद्धि कहा गया है) यह स्त्री के अधिकारों का हनन तथा अपमान का सूचक नहीं है, (जैसाकि कुछ लोग कहते हैं) बल्कि उनके प्राकृतिक क्षीणता का वर्णन है, जो अल्लाह तआला का ज्ञान एवं इच्छा पर आधारित है। अहंकार के कारण कोई इसको स्वीकार न करे, तो और बात है, परन्तु वास्तविकता एवं घटनाओं के आधार पर इसका खण्डन नहीं किया जा सकता।

[2] लिखने का लाभ है कि इससे न्याय की माँग पूरी होगा। साक्ष्य भी सही होगा (कि साक्षी के उपस्थिति न होने अथवा मृत्यु के उपरान्त उनका लिखा हुआ लेख साक्ष्य बन जायेगा) और किसी प्रकार की शंका से दोनों पक्ष सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि शंका होने की स्थिति में लेख देख लेने पर शंका दूर कर ली जायेगी।

[3]यह वह क्रय-विक्रय है जिसमें ऋण हो अथवा सौदा तय हो जाने के पश्चात भी विचलन की संभावना हो, वरन् इससे पूर्व नगद सौदे को लिखने से अलग किया जा चुका है। कुछ ने इस विक्रय से मकान व दूकान, बाग़ अथवा पशु का विक्रय अर्थ लिया है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

فُسُوقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٢﴾

वाले को हानि पहुँचाई जाये और न साक्षियों को,[1] और यदि तुम ऐसा करो, तो यह तुम्हारी खुली अवज्ञा है। अल्लाह (तआला) से डरो।[2] अल्लाह (तआला) तुम्हें शिक्षा दे रहा है, और अल्लाह (तआला) सर्वज्ञ है।

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ

(२८३) और यदि तुम यात्रा में हो और लिखने वाला न पाओ, तो गिरवी अपने पास रख लिया करो।[3] और यदि आपस में एक-दूसरे पर विश्वास हो, तो जिसे धरोहर दी गयी है वह उसे अदा कर दे, और अल्लाह (तआला) से डरता रहे, जो उसका स्वामी है।[4] और साक्ष्य को न छुपाओ और जो उसे छिपा ले वह

---

[1]इनको हानि पहुँचाने से तात्पर्य यह है कि बहुत दूर से उन्हें बुलाया जाये, जिससे उनकी व्यस्तता में अड़चन तथा व्यापार में हानि हो अथवा उनको झूठी बात लिखने अथवा उसका साक्षी बनने के लिए बाध्य किया जाये।

[2]अर्थात जिन बातों पर बल दिया गया है उन्हें करो तथा जिनसे रोका गया है रूक जाओ।

[3]यदि यात्रा में ऋण लेने की आवश्यकता पड़ जाये और वहाँ लेखक अथवा काग़ज, कलम न मिले ऐसी स्थिति में उसका समरूप कार्य करने को बताया जा रहा है। कि ऋणी व्यक्ति कोई वस्तु ऋण देने वाले के पास गिरवी रख दे। इससे गिरवी रखने का औचित्य सिद्ध होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी कवच एक यहूदी के पास गिरवी रखी थी। (सहीहैन) परन्तु यदि गिरवी रखी हुई वस्तु से किसी प्रकार का लाभ होता है, तो उससे लाभान्वित उसका मालिक (ऋणी) होगा, न कि ऋण देने वाला। परन्तु यदि ऋण देने वाले का उस पर कुछ व्यय होता है, तो वह ऋणी से प्राप्त कर सकता है। शेष लाभ मालिक को देना आवश्यक होगा।

[4]यदि एक-दूसरे पर भरोसा हो, तो बिना गिरवी रखे भी ऋण का सौदा कर सकते हो। अमानत से तात्पर्य यहाँ ऋण है। अल्लाह से डरते हुए उसे उचित रूप से अदा कर दो।

وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾

मन का पापी है।[1] और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) उसे भली भाँति जानता है।

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِن تُبْدُوا مَا فِي أَنفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُم بِهِ اللَّهُ ۖ فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ

(२८४) आकाशों और धरती की प्रत्येक वस्तु अल्लाह (तआला) के अधिकार में है। तुम्हारे दिलों में जो कुछ है, उसे चाहे प्रकट करो अथवा छुपाओ, अल्लाह (तआला) उसका हिसाब लेगा।[2] फिर जिसे चाहे क्षमा कर दे

---

[1]साक्ष्य को छिपाना महापाप है। इसलिये इसकी अति भर्त्सना यहाँ क़ुरआन में तथा हदीस में की गयी है। इसलिये सही साक्ष्य की बड़ी श्रेष्ठता भी है। सहीह मुस्लिम की हदीस है। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

«أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ الشُّهَدَاءِ؟ الَّذِيْ يَأْتِي بِشَهَادَتِهِ قَبْلَ أَنْ يُسْأَلَهَا».

वह सबसे श्रेष्ठ साक्षी है, जो बिना साक्ष्य की माँग के, स्वयं साक्ष्य के लिये उपस्थिति हो जाये। (सहीह मुस्लिम, उदघृत इब्ने कसीर)

एक दूसरे कथन में बुरे साक्षी की ओर इंगित किया गया है।

«أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِشَرِّ الشُّهَدَاءِ؟ الَّذِيْنَ يَشْهَدُونَ قَبْلَ أَنْ يُسْتَشْهَدُوا».

"क्या मैं तुम्हें वह साक्षी न बतला दूँ, जो बहुत बुरा साक्षी हो ? यह वह लोग हैं जो साक्ष्य की माँग किये बिना उससे पूर्व ही साक्ष्य देते हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल रिक़ाक़ तथा मुस्लिम, किताबु फ़ज़ाएल अल-सहाबा)

अर्थात झूठी साक्ष्य देकर महापाप करने के भागी बनते हैं। शेष आयत में दिल का विशेष रूप से वर्णन किया गया है, इसलिए कि गोपनीयता दिल का ही कर्म है। इसके अतिरिक्त दिल सम्पूर्ण शरीर का प्रमुख एवं विशेष भाग है। और ऐसा विशेष माँस का टुकड़ा है, यदि यह ठीक रहे, तो सम्पूर्ण शरीर ठीक रहता है और यदि इसमें कोई ख़राबी उत्पन्न हो जाये, तो सम्पूर्ण शरीर में ख़राबी उत्पन्न हो जाती है। (हदीस के भाँति)

[2]हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो सहाबा किराम (*रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के सहचर) चिन्तित हुए। वे *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सेवा में उपस्थिति हुए और कहा, हे *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*। नमाज़, रोज़ा, ज़कात तथा धर्मयुद्ध आदि जिनका भी आदेश दिया गया है, हम उसे करते हैं। क्योंकि यह हमारी शक्ति से अधिक नहीं, परन्तु मनोगत विचार एवं शंकाओं पर हमारी कोई पकड़ नहीं है। और यह मनुष्य की शक्ति के बाहर है। परन्तु अल्लाह तआला ने

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝٢٨٤

और जिसे चाहे दण्ड दे। और अल्लाह (तआला) सर्वशक्तिमान है।

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ

(२८५) रसूल उस चीज़ पर ईमान लाये जो उसकी ओर अल्लाह (तआला) की ओर से उतारी गयी और मुसलमान भी ईमान लाये। यह सब अल्लाह (तआला) और उसके फ़रिश्ते पर, और उसकी किताबों पर, और उसके

उस पर भी पकड़ करने की घोषणा की है। *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया : "अभी तो तुम سمعنا و أطعنا (हमने सुना और हमने पालन किया) ही कहो।" अत: सहाबा के इस सुनने तथा पालन करने की भावना को देखकर अल्लाह तआला ने यह आयत ﴿لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا﴾ (अल्लाह तआला किसी भी जीव पर उसके सामर्थ्य से अधिक भार नहीं रखता) से निरस्त कर दिया। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर) सहीहैन तथा सुनन की यह हदीस भी इसकी पुष्टि करती है।

«إِنَّ اللهَ تَجَاوَزَ عَنْ أُمَّتِي مَا حَدَّثَتْ بِهِ أَنْفُسُهَا، مَا لَمْ تَتَكَلَّمْ أَوْ تَعْمَلْ بِهِ»

(अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत (अनुयायी लोगों को कहते हैं) के मनोगत विचारों को क्षमा कर दिया है। परन्तु उन बातों पर पकड़ होगी, जिनको मुख से व्यक्त कर दिया हो अथवा उनके अनुसार कर्म किया जाये)

इससे ज्ञात हुआ कि दिल में उत्पन्न होने वाले कुविचारों पर तब तक पकड़ न होगी, जब तक वह संकल्प अथवा कर्म न बन जायें। इसके विपरीत इमाम इब्ने जरीर तबरी का विचार है कि आयत निरस्त नहीं है, क्योंकि पकड़ करने पर दण्ड देना आवश्यक नहीं है अर्थात ऐसा नहीं है कि अल्लाह तआला जिस बात पर पकड़ करे, तो उस पर दण्ड भी अवश्य दे। बल्कि अल्लाह तआला पकड़ तो हर एक बात की करेगा, परन्तु बहुत से लोग ऐसे होंगे कि उनकी पकड़ करने के पश्चात उन्हें क्षमा कर देगा, बल्कि कुछ के साथ ऐसा भी करेगा कि उसके एक-एक पाप याद करा के उनको उसे स्वीकार करायेगा और फिर कहेगा कि संसार में मैंने उन पर पर्दा डाल रखा था, जा आज मैने उन्हें क्षमा किया। (यह हदीस सहीह बुख़ारी व मुस्लिम आदि में है, उदघृत इब्ने कसीर) और कुछ विद्वानों ने कहा कि यह परिभाषिक अर्थ में निरस्त नहीं है, बल्कि कई बार इसे प्रकाशित करने के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। अतएव सहाबा किराम के दिल में जो शंका इस आयत के कारण उत्पन्न हुई उसे आयत ﴿لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ﴾ और हदीस إن الله تجاوز आदि से दूर कर दिया। इस प्रकार आयत के निरस्त मानने की आवश्यकता शेष नहीं रही।

مِّنۡ رُّسُلِهٖ‌ قف وَقَالُوۡا سَمِعۡنَا
وَاَطَعۡنَا‌ غُفۡرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيۡكَ
الۡمَصِيۡرُ ﴿۲۸۵﴾

रसूलोपर ईमान लाये, उसके रसूलों में से किसी के मध्य हम मतभेद नहीं करते।[1] उन्होंने कहा कि हमने सुना और अनुकरण किया, हम तुझसे क्षमा चाहते हैं। हे, हमारे प्रभु ! और हमें तेरी ही ओर लौटना है।

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفۡسًا اِلَّا وُسۡعَهَا ؕ
لَهَا مَا كَسَبَتۡ وَعَلَيۡهَا
مَا اكۡتَسَبَتۡ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذۡنَاۤ
اِنۡ نَّسِيۡنَاۤ اَوۡ اَخۡطَاۡنَا ۚ رَبَّنَا
وَلَا تَحۡمِلۡ عَلَيۡنَاۤ اِصۡرًا كَمَا حَمَلۡتَهٗ
عَلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تُحَمِّلۡنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ
وَاعۡفُ عَنَّا وَاغۡفِرۡ لَنَا

(२८६) अल्लाह किसी भी आत्मा पर उसके सामर्थ्य से अधिक बोझ नहीं डालता जो पुण्य वह करे वह उसके लिए है और जो बुराई वह करे वह उसी पर है। हे हमारे प्रभु ! यदि हम भूल गये हों अथवा ग़लती की हो, तो हमें न पकड़ना। हे हमारे प्रभु ! हम पर वह बोझ न डाल, जो हमसे पहले लोगों पर डाला था। हे हमारे प्रभु ! हम पर वह बोझ न डाल, जो हमारे सामर्थ्य में न हो और हमें क्षमा कर दे,

---

[1]इस आयत में ईमान से सम्बन्धित विषयों का वर्णन है, जिन पर ईमानवालों को आस्था रखने का आदेश दिया गया है। और इससे पूर्व आयत لا يكلف الله में अल्लाह तआला की कृपा, दया, स्नेह और प्रेम का वर्णन है कि अल्लाह तआला ने मनुष्यों को कोई ऐसा कर्म करने पर बल नहीं दिया जो उसकी शक्ति से अधिक हो। इन दोनों आयतों की हदीसों में बड़ी प्रशंसा की गयी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

> "जो व्यक्ति *सूर: अल-बकर:* की अन्तिम दो आयतें रात्रि में पढ़ लेता है, तो यह काफ़ी हो जाती है।" (सहीह बुख़ारी, इब्ने कसीर)

अर्थात इस कर्म के कारण उसकी अल्लाह तआला सुरक्षा करता है। दूसरी हदीस में है *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को मेराज की रात जो तीन चीजे मिली। उनमें से एक *सूर: अल-बकर:* की अन्तिम दो आयतें भी हैं। (सहीह मुस्लिम, बाब फ़ी ज़िक्रे सिदर: तुल मुनतहा) कई कथनों में ऐसा भी कहा गया है कि इस सूर: की अन्तिम आयतें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक कोष से प्रदान की गईं जो अर्श इलाही के नीचे है। और यह आयतें किसी नबी को आप के अतिरिक्त नहीं प्रदान की गयीं। (अहमद, निसाई, तबरानी, बैहक़ी, हाकिम दारमी, आदि दुर्रेमंसूर) आदरणीय मआज़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हु इस सूर: के अन्त में आमीन कहा करते थे। (इब्ने कसीर)

وَارْحَمْنَا ۚ أَنتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾

और हमें मोक्ष प्रदान कर, और हम पर दया कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफ़िर समुदाय पर विजय प्रदान कर।

सूरतु आले इमरान-३

سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ

सूरः *आले इमरान* मदीना में उतरी[1] इसमें दो सौ आयतें हैं और बीस रूकुऊ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

الم ﴿١﴾

(१) अलिफ॰लाम॰मीम

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ﴿٢﴾

(२) अल्लाह (तआला) वह है, जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, जो जीवित है और सभी का रक्षक है।[2]

---

[1]यह सूरः मदनी है। इसकी सभी आयतें विभिन्न समय पर मदीने में ही उतरीं और इसका प्रारम्भिक भाग अर्थात ८३ आयतों तक इसाईयों के नजरान के प्रतिनिधि मंडल (यह नगर अब सऊदी अरब में स्थिति है) के विषय में उतरा हुआ है, जो ९ हिजरी में *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सेवा में उपस्थिति हुआ था। इसाईयों ने आकर *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से अपने इसाई विश्वास और इस्लाम के विषय में वाद-प्रतिवाद किया, जिसका खण्डन करते हुए उन्हें मुबाहिला (एक विधि है, जिसके अनुसार सौगन्ध खाकर अपनी बात कही जाती है) का आमन्त्रण भी दिया गया, जिसका विस्तार पूर्वक विवरण आगे आयेगा। उसी पृष्ठभूमि में क़ुरआन करीम की इन आयतों का अध्ययन किया जायेगा।

[2] حي और قيوم अल्लाह तआला की अति विशेष गुण हैं, हई का अर्थ है कि वह आदि से है और अन्त तक रहेगा, उसे मरण तथा विनाश नहीं। क़य्यूम का अर्थ वह सारी सृष्टि का आधार, रक्षक एवं संरक्षक है, सारी सृष्टि को उसकी आवश्यकता है उसे किसी की आवश्यकता नहीं। इसाई आदरणीय ईसा को अल्लाह अथवा अल्लाह का पुत्र अथवा तीन में से एक मानते थे। अर्थात उनको कहा जा रहा है कि जब आदरणीय ईसा भी अल्लाह की सृष्टि हैं, उन्होंने माँ के गर्भ से जन्म लिया, और उनका जन्म भी सृष्टि की उत्पत्ति के बहुत बाद का है, तो फिर वह अल्लाह अथवा अल्लाह के पुत्र किस प्रकार हो सकते हैं। यदि तुम्हारा विश्वास

(३) जिसने सत्य के साथ इस किताब (पवित्र क़ुरआन) को उतारा,[1] जो अपने से पूर्व के (धर्मशास्त्रों) को प्रमाणित करती है, और उसी ने इससे पूर्व (धर्मग्रन्थ) तौरात और इंजील को लोगों के मार्ग दर्शन के लिये उतारा ।[2]

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٣﴾

(४) और क़ुरआन भी उसी ने उतारा ।[3] जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों से कुफ़्र करते हैं, उनके लिये कठोर यातनायें हैं। और अल्लाह (तआला) प्रभावशाली है, प्रत्यप्कारी है।

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤﴾

(५) निःसंदेह अल्लाह (तआला) से धरती और आकाश की कोई वस्तु छिपी नहीं है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ﴿٥﴾

सही होता, तो उन्हें सृष्टि के बजाये अल्लाह की विशेषताओं से युक्त एवं आदि से होना चाहिए था । इसके अतिरिक्त उनकी मृत्यु भी नहीं होनी चाहिये थी, परन्तु एक दिन आयेगा कि उन्हें भी मौत का मज़ा चखना पड़ेगा। और इसाईयों के कथानुसार वह मृत्यु को प्राप्त कर चुके। हदीसों में आता है कि तीन आयतों में अल्लाह के श्रेष्ठ नाम हैं, जिसके द्वारा प्रार्थना की जाये तो रद्द नहीं होती। एक यही आले इमरान की आयत, दूसरी आयतुल कुर्सी में ﴿اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ﴾ तीसरी सूरः *ताहा* में ﴿وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ﴾ (इब्ने कसीर तफ़सीर आयतुल कुर्सी)

[1]अर्थात इसके अल्लाह की ओर से अवतरित होने में कोई संशय नहीं।

[2]इससे पहले अन्य नबियों पर जो किताबें उतरीं, यह किताब इसकी पुष्टि करती है। अर्थात जो बातें उनमें लिखी थीं, उनकी यर्थाथता और उनमें वर्णित भविषय वाणी को स्वीकार करती है । जिसका स्पष्ट अर्थ है कि यह क़ुरआन करीम भी उसी की ओर से उतरा है, जिसने इससे पूर्व अनेक धर्मशास्त्र उतारे हैं। यदि यह किसी अन्य की ओर से अथवा मानवीय प्रयासों का प्रतिफल होता, तो इनमें परस्पर अनुकूलता के बजाये प्रतिकूलता होती।

[3]अर्थात अपने-अपने समय में तौरात और इंजील भी अवश्य लोगों के मार्गदर्शन का स्रोत थीं, इसलिये कि उनके उतारने का उद्देश्य ही यही था। फिर भी उसके पश्चात ﴿وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ﴾ पुनः कह कर स्पष्ट कर दिया कि, तौरात और इंजील का युग समाप्त हो गया। अब क़ुरआन उतर चुका, वह फ़ुरक़ान है और अब केवल वही सत्य-असत्य की पहचान है, इसको सत्य माने बिना अल्लाह के निकट कोई आज्ञाकारी एवं निष्ठावादी नहीं।

(६) वही माता के गर्भ में तुम्हारा रूप जिस प्रकार चाहता है, बनाता है[1] उसके अतिरिक्त कोई भी वास्तविक रूप से पूजने योग्य नहीं है, वह शक्तिशाली और ज्ञाता है।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑥

(७) वही अल्लाह (तआला) है जिसने तुझ पर किताब उतारी, जिसमें स्पष्ट ठोस आयतें हैं, जो मूल किताब हैं और कुछ समान आयतें हैं,[2] यदि जिनके दिलों में खराबी है, तो वह

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ

---

[1]सुरूप अथवा कुरूप नर अथवा नारी, सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य, अपूर्ण अथवा पूर्ण। ज़ब माता के गर्भ में यह सारी अवस्थायें देने वाला मात्र अल्लाह तआला ही है, तोआदरणीय ईसा पूज्य किस प्रकार हो सकते हैं ? जबकि वह स्वयं भी सृष्टि की इन अवस्थाओं से गुज़र कर दुनियां में आये हैं, जिसका उद्‌गम अल्लाह ने माँ के गर्भ में स्थापित किया है।

[2] 'मुहकमात' से तात्पर्य वह आयतें हैं जिनमें आदेश, निषेध, समस्यायें एवं कथायें हैं, जिनका भावार्थ स्पष्ट एवं अटल है, उनके समझने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं आती। इसके विपरीत "*आयात मुताशाबिहात*" है। जैसे अल्लाह का अस्तित्व न्याय, तथा भाग्य की समस्यायें, स्वर्ग, नरक तथा मलायका (सुरों) स्वर्गदूतों आदि अर्थात परबोध का तथ्य हैं जिन की यर्थाथता एवं वास्तविकता को समझने में मानव असक्त है अथवा उनमें दुविधा अथवा द्वैत का अवकाश हो। अथवा कम से कम ऐसा अस्पष्टता हो जिससे मनुष्यों को भ्रमित किया जा सके। इसी कारण आगे कहा जा रहा है कि जिनके दिलों में ख़राबी होती है वह "*आयात मुताशाबिहात*" के पीछे पड़ जाते हैं और उनके द्वारा अशान्ति फैलाते हैं। जैसे इसाई हैं। क़ुरआन ने आदरणीय ईसा को अल्लाह का भक्त तथा नबी कहा है। यह एक स्पष्ट एवं दृढ़ (मोहकम) आयत है। लेकिन इसे छोड़कर क़ुरआन करीम में आदरणीय ईसा को "*रूहुल्लाह*" और "*कलिमतुल्लाह*" जो कहा गया है, उससे अपने भ्रामक विश्वास पर ग़लत अर्थ निकालते हैं। यही स्थिति अहले बिदअत की है। क़ुरआन करीम के स्पष्ट विश्वास के विपरीत बिदअत करने वालों ने जो भ्रमिक विश्वास गढ लिये हैं। यह उन्ही 'मुताशाबिहात' को आधार बनाते हैं। तथा प्राय: अपने तर्कों के द्वारा 'मुहकमात' को 'मुताशाबिहात' बना देते हैं أعاذنا الله منه इनके विपरीत दृढ़ विश्वासी मुसलमान 'मुहकमात' आयतों के अनुसार कर्म करते हैं और 'मुताशाबिहात' के अर्थ को भी (यदि इसमें अस्पष्टता हो) 'मुहकमात' की रोशनी में समझने का प्रयत्न करते हैं क्योंकि क़ुरआन ने इन्हीं को "*मूल किताब*" माना है। जिससे वह अशान्ति से भी सुरक्षित रहते हैं। और विश्वास से भटकने से भी सुरक्षित रहते हैं।

فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ
فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ
الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا
يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۘ
وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ
آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۗ
وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ⑦

समान आयतों के पीछे लग जाते हैं। अशान्ति उत्पन्न करने के लिये एवं उनकी कष्ट कल्पना के लिये, परन्तु उनके वास्तविक उद्देश्य को अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।[1] और पूर्ण एवं दृढ़ ज्ञान वाले यही कहते हैं कि हम तो उन पर ईमान ला चुके यह सब हमारे प्रभु की ओर से है, शिक्षा तो मात्र बुद्धिमान ही प्राप्त करते हैं।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ
إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ
لَدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ
الْوَهَّابُ ⑧

(८) हे हमारे प्रभु ! हमें मार्गदर्शन के उपरान्त हमारे दिल टेढ़े न कर दे और हमें अपने पास से कृपा प्रदान कर, नि:संदेह तू ही परम दाता है।

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ
لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ⑨

(९) हे हमारे प्रभु ! तू नि:संदेह लोगों को एक दिन एकत्रित करने वाला है, जिसके आने में कोई शंका नहीं। नि:संदेह अल्लाह (तआला) वचन के विपरीत नहीं करता।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ
أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ
اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ
وَقُودُ النَّارِ ⑩

(१०) काफ़िरों को उनके धन तथा उनकी संतान अल्लाह (तआला) की यातनाओं से छुड़ाने में कुछ काम न आ सकेगी, यह तो नरक का ईंधन ही हैं।

[1]तावील का एक अर्थ है किसी वस्तु के तत्व का ज्ञान। इस अर्थानुसार إلا الله पर रूकना आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक विषय की यर्थाथता की वास्तविक ज्ञान मात्र अल्लाह ही को है, दूसरा अर्थ किसी विषय की व्याख्या, भाष्य, वर्णन तथा स्पष्टीकरण है, इस अर्थानुसार والراسخون पर रुका जा सकता है, क्योंकि ज्ञानी लोग भी सहीह व्याख्या एवं भाष्य का ज्ञान रखते हैं। (इब्ने कसीर)

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ⑪

(११) जैसाकि फ़िरऔन की संतान का हाल हुआ, और उनका जो उनसे पूर्व थे, उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया, फिर अल्लाह (तआला) ने उन्हें उनके पापों पर पकड़ लिया और अल्लाह (तआला) कठोर यातनाओं वाला है।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ⑫

(१२) काफ़िरों से कह दीजिये कि तुम लोग निकट भविष्य में पराजित किये जाओगे।[1] और नरक की ओर एकत्रित किये जाओगे और वह बुरा बिछौना है।

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ؕ

(१३) निःसंदेह तुम्हारे लिये शिक्षाप्रद निशानी थी, उन दो गुटों में जो गुथ गये थे, एक गुट अल्लाह के मार्ग में लड़ रहा था, और दूसरा गुट काफ़िरों का था, वह उन्हें आँखों की दृष्टि से अपने से दुगना देखते थे।[2] और

---

[1]यहाँ काफ़िरों (कृतघ्ना) से तात्पर्य यहूदी हैं, और यह भविष्यवाणी शीघ्र ही पूरी हो गयी। अतएव बनू क़ैनुक़ाअ और बनू नदीर को देश से निकाल दिया गया, बनू क़ुरैजा की हत्या की गयी। फिर ख़ैबर विजयी हुआ और सभी यहूदियों पर जिज़या (सुरक्षा कर) लागू कर दिया गया। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात प्रत्येक पक्ष दूसरे पक्ष को अपने से दुगुना देखता था। काफ़िर की संख्या एक हज़ार के निकट थी, उन्हें मुसलमान दो हज़ार के लगभग दिखाई दे रहे थे। उद्देश्य उनके दिलों में मुसलमानों की धाक बिठाना था। और मुसलमानों की संख्या तीन सौ से कुछ ऊपर अर्थात (३१३) थी, उन्हें काफ़िर ६०० और ७०० के मध्य दिखाई पड़ते थे। वास्ताविकता यह थी कि वास्तविक संख्या हज़ार के निकट (तीन गुनी) थी। इसका उद्देश्य मुसलमानों के साहस एवं शौर्य को बढ़ाना था। अपने से तीन गुना देखकर सम्भव था कि मुसलमान भयभीत हो जाते, इसके बजाय अपने से दुगना दिखने के कारण उनका साहस कम नहीं हुआ। परन्तु यह दुगुना दिखने की स्थिति प्रारम्भ में थी, फिर जब दोनों गुट आमने-सामने खड़े हो गये तो अल्लाह तआला ने इसके विपरीत दोनों को एक दूसरे की दृष्टि कम करके दिखाया ताकि कोई भी पक्ष लड़ाई से पीछे न हटे, बल्कि प्रत्येक आगे बढ़ने का प्रयत्न करे। (इब्ने कसीर) यह विवरण *सूरः अल-अंफ़ाल* की आयत संख्या ४४ में वर्णित की गयी है। यह बद्र के युद्ध की घटना है, जो हिजरत के पश्चात

وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ⑬

अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपनी सहायता से सुदृढ़ कर देता है। निःसंदेह इसमें आँखों वालों के लिये बड़ी शिक्षा है।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ

(१४) प्रिय वस्तुओं का प्रेम लोगों के लिये सौन्दर्यपूर्ण कर दिया गया है, जैसे स्त्रियाँ और पुत्र, और सोना, चाँदी के एकत्रित किये हुए ख़ज़ाने और निशानदार घोड़े और चौपाये और खेती।[1] यह साँसारिक जीवन का सामान

दूसरे वर्ष मुसलमानों और काफ़िरों के मध्य हुआ। यह कई प्रकार से अत्यन्त महत्वपूर्ण युद्ध था। प्रथम तो यह कि यह प्रथम युद्ध था। द्वितीय यह युद्ध योजनाओं के बिना हुआ। मुसलमान अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले के लिये निकले थे, जो सीरिया से व्यापारिक सामग्री लेकर मक्का आ रहा था, परन्तु सूचना मिल जाने के कारण वह अपने क़ाफ़िले को तो बचाकर ले गये, परन्तु मक्का के काफ़िर अपनी शक्ति और संख्या के घमंड में मुसलमानों पर चढ़ दौड़े और बद्र नामक स्थान पर यह युद्ध हुआ। तृतीय इसमें मुसलमानों को अल्लाह तआला की विशेष सहायता प्राप्त हुई। चतुर्थ इसमें काफ़िरों को अपमान जनक पराजय हुई, जिससे काफ़िरों के साहस क्षीण पड़ गये।

[1] شـــــهوات से यहाँ तात्पर्य مشتبهات है अर्थात वह चीज़ें जो मनुष्य को प्राकृतिक रूप से प्रिय हैं। इसलिये इनसे अभिलाषा और उनसे प्रेम अनुचित नहीं है। परन्तु यह प्रेम इस्लामी धार्मिक नियमों के परिधि में तथा संतुलित हो। उनका सौन्दर्य भी अल्लाह तआला की ओर से परीक्षा है।

﴿ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ ﴾

"हमने धरती पर जो कुछ बनाया है इसे धरती की सुन्दरता के लिये बनाया है, ताकि लोगों की हम परीक्षा लें।" *(अल-कहफ़-७)*

सर्वप्रथम स्त्री का वर्णन है क्योंकि प्रत्येक वयस्क पुरूष की सबसे बड़ी आवश्यकता भी है और सबसे अधिक प्रिय भी। स्वयं *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का कथन है «حُبِّبَ إِلَيَّ النِّسَاءُ والطِّيبُ» (मुसनद अहमद) "स्त्री और सुगन्ध मुझे प्रिय है।" इसी प्रकार *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने सुशील स्त्री को "दुनियाँ की सर्वश्रेष्ठ चीज़" कहा है «خَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا الْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ» इसलिये इससे धार्मिक नियमों के अन्तर्गत प्रेम करने को, जो धार्मिक नियमों के बाहर न हों, तो यह श्रेष्ठ जीवनसाथी भी है और आख़िरत का सामान

है, और लौटने का अच्छा ठिकाना तो अल्लाह (तआला) ही के पास है ।

الدُّنْيَاۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ۝١٤

(१५) आप कह दीजिये कि क्या मैं तुम्हें इससे उत्तम वस्तु बताऊँ ? अल्लाह संयमी लोगों के लिये, उनके प्रभु के पास स्वर्ग हैं, जिनके नीचें

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

भी । वरन् यही स्त्री, पुरूष के लिये सबसे बड़ी आशान्ति है । *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का कथन है ।

«مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِتْنَةً أَضَرَّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ».

"मेरे पश्चात जो अशान्ति उत्पन्न होगी, उनमें पुरूषों के लिये सबसे बड़ी अशान्ति स्त्री है ।" (सहीह बुख़ारी)

इसी प्रकार पुत्रों का प्रेम है । यदि इससे तात्पर्य मुसलमानों की शक्ति बढ़ाना और अस्तित्व तथा वंश को बढ़ाना है, तो प्रशंसनीय है, वरन् अप्रशंसनीय । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है ।

«تَزَوَّجُوا الْوَدُودَ الْوَلُودَ؛ فَإِنِّي مُكَاثِرٌ بِكُمُ الْأُمَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ».

(अत्यधिक प्रेम करने वाली और अधिक बच्चों को जन्म देने वाली स्त्री से विवाह करो, इसलिये कि मैं क़ियामत के दिन दूसरी उम्मतों (समुदायों) के सापेक्ष अपनी उम्मत की संख्या पर गर्व करूँगा)

इस आयत से ब्रह्मचारी रहने का खंडन और परिवार नियोजन का अनुचित होना सिद्ध होता है क्योंकि بنين वहुवचन है । धन से भी आर्थिक व्यवस्था स्थापित करना, दया करना, दान व पुण्य और पुण्य के कार्यों में व्यय करना और किसी के सामने हाथ फैलाने से वचना है ताकि अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करें, तो इसका भी प्रेम परम आवश्यक है, तथापि अप्रशंसनीय । घोड़ों से तात्पर्य धर्मयुद्ध की तैयारी, अन्य पशुओं से कृषि कार्य तथा यातायात का कार्य लेना और धरती से उसकी उपज प्राप्त करना हो, तो यह सब प्रिय हैं, और यदि उद्देश्य केवल दुनियाँ कमाना और उस पर गर्व तथा घमंड व्यक्त करना और अल्लाह की याद से मुँह मोड़ कर ऐश्वर्य जीवन व्यतीत करना है, तो यह सबसे लाभकारी चीज़ें उसके लिये हानिकारक सिद्ध होंगी । "*क़नातीर*" *क़िनतार* (ख़ज़ाना) का वहुवचन है । तात्पर्य है ख़ज़ाने अर्थात सोने, चाँदी, धन-धान्य की अधिकता एवं परिपूर्णता । المسومة वह घोड़े जो चारागाह में चरने के लिए छोड़े गये हों अथवा धर्मयुद्ध के लिये तैयार किये गये हों अथवा चिन्हित जिन पर विभेंद के लिये कोई चिन्ह अथवा अंक लगा दिया गया हो । (फ़तहुल क़दीर व इब्ने कसीर)

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾

नहरें बह रही हैं, जिनमें वे सदैव निवास करेंगे।[1] और पवित्र पत्नियाँ[2] और अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता है। और सभी भक्त अल्लाह (तआला) की दृष्टि में हैं।

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾

(१६) जो कहते हैं कि हे प्रभु। हम ईमान ला चुके, इसलिये हमारे पाप क्षमा कर दे और हमें अग्नि की यातना से बचा।

اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾

(१७) जो धैर्य रखने वाले, और सत्यवादी और आज्ञाकारी, तथा अल्लाह के मार्ग में धन व्यय करने वाले हैं और पिछली रात को मोक्ष प्राप्त करने की कामना के लिये प्रार्थना करने वाले हैं।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ۗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

(१८) अल्लाह उसके फ़रिश्तों तथा ज्ञानियों ने न्याय पर स्थिर रहकर गवाही दी है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई आराध्य नहीं[3]

---

[1]इस आयत में ईमानवालों को बताया जा रहा है, कि दुनियाँ की उपरोक्त वर्णित चीज़ों में ही न खो जाना, बल्कि उनसे श्रेष्ठ तो वह जीवन तथा उसकी कृपा है, जो प्रभु के पास है, जिसके अधिकारी अल्लाह के भय से भयभीत होने वाले हैं। इसलिये अल्लाह से डरो। यदि यह तुम्हारे अन्दर उत्पन्न हो गया, तो नि:संदेह दुनियाँ और परलोक की सारी भलाईयाँ अपने दामन में बटोर लोगे।

[2]पवित्र का अर्थ है कि वह साँसारिक अपवित्रता अर्थात मैल-कुचैल, मासिक धर्म, और अन्य दूषण से पवित्र होंगी और सुशील एवं सुचरित्र होंगी। इसलिये अगली दो आयतों में अल्लाह के भय से भयभीत होने वालों की विशेषताओं का वर्णन है।

[3]शहादत का अर्थ वर्णन करना तथा सूचित करना है। अर्थात अल्लाह तआला ने जो कुछ उत्पन्न तथा वर्णित किया, उसके द्वारा उसने अपने एक होने की ओर हमारा मार्गदर्शन किया। (फ़तहुल क़दीर) फ़रिश्ते तथा ज्ञानी भी उसके एक होने की गवाही देते हैं। इसमें ज्ञानियों की विशेषता तथा श्रेष्ठता है कि अल्लाह तआला ने अपने फ़रिश्तों के नाम के साथ उनका वर्णन किया है, परन्तु इससे तात्पर्य मात्र वही ज्ञानी हैं जो क़ुरआन तथा हदीस का ज्ञान रखते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

वही सर्व शक्तिमान निर्णय करता, उसके अतिरिक्त कोई आराधना के योग्य नहीं।

إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا

(१९) निश्चय अल्लाह के पास धर्म इस्लाम ही है[1] (अल्लाह के प्रति पूर्ण आत्म समर्पण)

---

[1]इस्लाम वही धर्म है जिसका प्रचार एवं शिक्षा प्रत्येक ईशदूत अपने युग में देते रहे तथा अब यह उस का पूर्ण स्वरूप है जिसे अन्तिम ईशदूत *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* संसार के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। जिसमें एकेश्वरवाद, दूतत्व तथा परलोक के प्रति इस प्रकार विश्वास रखना है जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया है, अब मात्र यह विश्वास रख लेना कि अल्लाह (परमेश्वर) एक है अथवा कुछ सत्कर्म कर लेना इस्लाम नहीं न इससे परलोक में मोक्ष प्राप्त होगा। विश्वास तथा धर्म यह है कि अल्लाह को एक माना जाये मात्र उसी एक पूज्य की उपासना की जाये मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समेत सभी ईशदूतों के प्रति विश्वास रखा जाये तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दूतत्व का समापन माना जाये तथा आस्था के साथ वह विश्वास एवं कर्म ग्रहण किये जायें जो क़ुरआन तथा ईशदूत के कथन (हदीस) में वर्णित हैं अब इस धर्म इस्लाम के सिवाय कोई अन्य धर्म अल्लाह के यहाँ स्वीकृत न होगा।

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾ [آل عمران: ٨٥]

"और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म की खोज करे उसका धर्म मान्य नहीं होगा और परलोक में वह क्षतिग्रस्तों में होगा"।

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾

"कह दीजिये कि हे लोगो ! मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का दूत हूँ"। (सूरः *आराफ़*-१५८)

﴿تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا﴾

"शुभ है वह जिसने अपने भक्त पर फ़ुरक़ान (विवेकारी शास्त्र) उतारा ताकि वह जगतों को सावधान करे"। (*अल-फ़ुरक़ान*-१)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उस अल्लाह की सौगन्ध जिसके हाथ में मेरा प्राण है जो यहूदी अथवा इसाई मुझ पर विश्वास किये बिना मर जाये वह नरकीय है। (सहीह मुस्लिम) यह भी कहा कि मैं लाल-काले (सभी मानव) के लिये भेजा गया हूँ इसी कारण आपने अपने युग के सभी राजाओं को पत्र लिखकर उनको इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आमन्त्रण दिया। (सहीहैन, माध्यम इब्ने कसीर)

مِنۢ بَعۡدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلۡعِلۡمُ بَغۡيَۢا بَيۡنَهُمۡۗ وَمَن يَكۡفُرۡ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ فَإِنَّ ٱللَّهَ سَرِيعُ ٱلۡحِسَابِ ١٩

तथा जो धर्मशास्त्र दिये गये उन्होंने ज्ञान आने के पश्चात परस्पर द्वेष के कारण मतभेद किये।[1] तथा जो अल्लाह की आयतों (पवित्र क़ुरआन) को न माने[2] तो अल्लाह शीघ्र हिसाब लेगा।

فَإِنۡ حَآجُّوكَ فَقُلۡ أَسۡلَمۡتُ وَجۡهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ ٱتَّبَعَنِۗ وَقُل لِّلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡأُمِّيِّـۧنَ ءَأَسۡلَمۡتُمۡۚ فَإِنۡ أَسۡلَمُواْ فَقَدِ ٱهۡتَدَواْۖ وَّإِن تَوَلَّوۡاْ فَإِنَّمَا عَلَيۡكَ ٱلۡبَلَٰغُۗ وَٱللَّهُ بَصِيرُۢ بِٱلۡعِبَادِ ٢٠

(२०) यदि वह आप से विवाद करें तो आप कह दें कि मैंने तथा मेरे अनुयाईयों ने स्वयं को अल्लाह के प्रति समर्पित कर दिया तथा आप शास्त्रधारियों एवं अशिक्षित लोगों[3] को कहें कि क्या तुम इस्लाम लाये। यदि वह इस्लाम को स्वीकार कर लें तो सीधा रास्ता पा गये और यदि मुँह फेरें तो आप को मात्र पहुँचाना है और अल्लाह भक्तों को देख रहा है।

---

[1]उनके इस आपसी मतभेद से तात्पर्य वह मतभेद है, जो एक ही धर्म के मानने वालों ने आपस में उत्पन्न कर रखा था। जैसे : यहूदियों के आपसी मतभेद तथा गुटबन्दी, इसी प्रकार इसाईयों के आपसी मतभेद तथा गुटबन्दी। फिर उन मतभेदों का अर्थ भी है जो किताब वालों में आपस में थे। जिसके आधार पर यहूदी, इसाईयों को और इसाई यहूदियों को कहा करते थे कि "तुम किसी धर्म पर नहीं हो।" नबूअत मोहम्मदी तथा नबूअत ईसा भी इसी के अन्तर्गत आता है। परन्तु यह सभी मतभेद तर्कहीन थे, मात्र द्वेष, ईर्ष्या तथा घृणा के कारण थे अर्थात वह लोग सत्यता जानते हुए भी मात्र अपने विचारों तथा सांसारिक लाभ के कारण गलत बात पर अड़े रहे, और इसको धर्म बताते थे। ताकि उनकी नाक भी ऊँची रहे और उनका जनता का साथ भी बना रहे। अफ़सोस आज मुसलमानों के आलिमों की एक बड़ी संख्या ठीक उन्हीं गलत उद्देश्यों के लिये उसी ग़लत मार्ग पर चल रही है।

[2] यहाँ आयतों से तात्पर्य, वह प्रतीक हैं जो इस्लाम के ईश्वरीय धर्म को सिद्ध करती हैं।

[3]अशिक्षित लोगों से तात्पर्य अरब के मूर्तिपूजक हैं, जो किताब वालों की तुलना में सामान्यत: अशिक्षित थे।

(२१) नि:संदेह जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों से इंकार करते हैं, और ईशदूतों (अम्बिया) को अवैध हत करते हैं, तथा जो लोग न्याय की बात करें, उन्हें भी हत करते हैं ।[1] तो (हे नबी) आप उन्हें घोर यातनाओं से सूचित कर दीजिये ।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢١﴾

(२२) उन्हीं के (पुण्य) कर्म लोक तथा परलोक में व्यर्थ हो गये तथा इनका कोई सहायक नहीं ।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٢٢﴾

(२३) क्या आपने उन्हें नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक भाग दिया गया है, वह अपने आपस के निर्णय के लिये अल्लाह (तआला) की किताब की ओर बुलाये जाते हैं, फिर भी उनका एक गिरोह मुँह फेर कर लौट जाता है ।[2]

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

(२४) इसका कारण उनका यह कहना है कि उन्हें गिनती के कुछ दिन ही आग स्पर्श करेगी, यह उनकी मन गढ़न्त बातों ने उन्हें

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ وَغَرَّهُم

---

[1]अर्थात उनकी दुष्टता एवं विद्रोह इतना बढ़ चुका था कि वे केवल नबियों की ही अनुचित रूप से हत्या नहीं किया करते बल्कि उन तक की भी हत्या कर देते, जो न्याय की बात कहते । अर्थात वह ईमानवाले, नि:स्वार्थी, सत्य का आमन्त्रण देने वालों की जो सत्कर्म करने को कहते और कुकर्म से रोकते थे, हत्या कर देते । नबियों के साथ उनका वर्णन करके अल्लाह तआला ने उनकी श्रेष्ठता तथा विशेषता भी स्पष्ट कर दी ।

[2]इन किताब वालों से तात्पर्य वह मदीने के रहने वाले यहूदी हैं, जिनका बहुमत इस्लाम धर्म स्वीकार करने योग्य ही नहीं थे, और इस्लाम, मुसलमानों और *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के विरोध में कुचक्रों को उत्पन्न करने में व्यस्त रहे, यहाँ तक कि उनके दो गिरोहों को देश निकाला तथा एक गिरोह की हत्या कर दी गयी ।

فِي دِينِهِم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾ उनके धर्म के विषय में उन्हें धोखे में डाल रखा है ।[1]

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَاهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) फिर क्या दशा होगी जब उन्हें हम उस दिन एकत्रित करेंगे, जिसके आने में कोई शंका नहीं, और प्रत्येक व्यक्ति को अपने किये का पूर्ण प्रतिकार दिया जायेगा। और उन पर अत्याचार न किया जायेगा ।[2]

قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾

(२६) आप कह दीजिए, ऐ अल्लाह ! हे सम्पूर्ण जगत के स्वामी ! तू जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे राज्य छीन ले और तू जिसे चाहे सम्मान दे और जिसे चाहे अपमानित कर दे तेरे ही हाथों में सारी भलाईयाँ हैं ।[3] निःसंदेह तू प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

---

[1] अल्लाह की किताब (धर्मशास्त्र) को न मानने एवं उससे विमुखता के कारण उनका यह मिथ्यापूर्ण विचार था कि वह नरक में जायेंगे ही नहीं तथा यदि गये भी तो कुछ दिनों के लिये जायेंगे। और इन्हीं काल्पनिक बातों ने उन्हें धोखे एवं भ्रान्ति में डाल रखा है।

[2] प्रलय के दिन उनके यह दावे तथा भ्रम कुछ काम नहीं आयेंगे एवं अल्लाह स्पष्ट रूप से न्याय करेगा तथा प्रत्येक प्राणी को पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करेगा, किसी पर अत्याचार नहीं होगा।

[3] इस आयत में अल्लाह के अपार सामर्थ्य तथा शक्ति का वर्णन है राजा को रंक तथा रंक को राजा बना देने का अधिकार उसी को है الخير بيدك के स्थान पर بيدك الخير (सूचना की प्रथमिकता के साथ) से तात्पर्य विशेषता दिखाना है, अर्थात भलाईयाँ मात्र तेरे ही हाथ में हैं, तेरे सिवाय कोई भलाई नहीं दे सकता। शर (बुराई) का (उत्पत्ति कर्ता) भी यद्यपि अल्लाह ही है परन्तु यहाँ मात्र ख़ैर (भलाई) का वर्णन किया गया। शर (बुराई) का नहीं इसलिये कि भलाई मात्र अल्लाह की कृपा है इसके विपरीत बुराई इन्सान के अपने कर्म का प्रतिफल है जो उसे मिलता है अथवा इसलिये कि बुराई भी उसके भाग्य लेख का एक अंश है जिसमें भलाई इस प्रकार है कि अल्लाह के सभी कार्य भले हैं। (फ़तहुल क़दीर)

(२७) तू ही रात को दिन में प्रवेशित करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है ।[1] तू ही निर्जीव से जीव पैदा करता है,[2] तू ही है कि जिसे चाहता है अंगणित जीविका प्रदान करता है ।

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

(२८) मोमिनों को चाहिए कि ईमानवालों को छोड़कर काफ़िरों कोअपना मित्र न बनायें ।[3]

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ

---

[1]रात को दिन में और दिन को रात में प्रवेश देने का अर्थ मौसम का बदलना है । एक मौसम में रात लम्बी होती है, तो दिन छोटा है और दूसरे मौसम में इसके विपरीत दिन लम्बा होता है और रात छोटी हो जाती है । अर्थात कभी रात का भाग दिन में और दिन का भाग रात में प्रविष्ट कर देता है । जिससे रात और दिन छोटे बड़े हो जाते हैं ।

[2]जैसे वीर्य (निर्जीव) पहले जीवित व्यक्ति से निकलता है और फिर उस निर्जीव (वीर्य) से मनुष्य । इसी प्रकार निर्जीव अण्डे से जीवित मुर्गी और फिर जीवित मुर्गी से निर्जीव अण्डा अथवा काफ़िर से मोमिन और मोमिन से काफ़िर पैदा करता है । कुछ कथनों में है कि आदरणीय मुआज रज़ी अल्लाह अन्हु ने *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से अपने ऊपर ऋण की शिकायत की तो आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फरमाया : कि तुम आयत قل اللهم إلخ पढ़कर यह दुआ करो ।

«رَحْمنَ الدُّنْيا وَرَحِيمَهُمَا! تُعْطِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمَا وتَمْنَعُ مَنْ تَشَاءُ، اِرْحَمْنِي رَحْمَةً تُغْنِينِي بِهَا عَنْ رَحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ، اللَّهُمَّ أَغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ، وَاقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ».

एक दूसरे कथन में है कि "यह ऐसी दुआ है कि तुम पर ओहद (पर्वत जो मदीने के उत्तर दिशा में पर्वतीय श्रृंखला है) जितना भी ऋण हो तो अल्लाह तआला उसको अदा करने का प्रवन्ध तुम्हारे लिये कर देगा ।" (मजमउज्जवायेद १०/१८६)

[3]औलिया, वली का बहुवचन है । वली ऐसे मित्र को कहते हैं जिससे हार्दिक प्रेम तथा विशेष सम्बन्ध हो । जैसे अल्लाह तआला ने अपने आपको ईमानवालों का वली कहा है ।

﴿اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ ءَامَنُوا﴾

"अल्लाह ईमानवालों का वली है ।" (*अल-बकर:*-२५७)

अर्थात ईमानवालों को एक-दूसरे से प्रेम तथा विशेष सम्बन्ध है और वे आपस में एक-दूसरे के वली (मित्र) हैं । अल्लाह तआला ने यहाँ पर ईमानवालों को इस बात से कठोरता से मना किया है कि वह काफ़िरों को अपना मित्र न बनायें । क्योंकि काफ़िर अल्लाह तआला के भी शत्रु हैं और ईमानवालों के भी शत्रु हैं । तो उनको मित्र बनाने का प्रश्न भी किस प्रकार से उठ सकता है ? इसीलिए अल्लाह तआला ने इस विषय को क़ुरआन करीम में कई स्थान पर स्पष्टरूप से वर्णित किया है । ताकि ईमानवाले काफ़िर से मित्रता और विशेष सम्बन्ध स्थापित न करें । परन्तु आवश्यकतानुसार उनसे सन्धि हो सकती है और व्यापारिक लेन-देन भी । इसी प्रकार जो काफ़िर मुसलमानों के शत्रु न हों, उनसे अच्छा

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۗ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾

और जो ऐसा करेगा वह अल्लाह (तआला) की किसी पक्ष में नहीं, परन्तु यह कि उनके (आतंक से) किसी प्रकार की रक्षा का लक्ष्य हो ।[1] और अल्लाह (तआला) स्वयं तुम्हें अपने आप से डरा रहा है और अल्लाह (तआला) ही की ओर लौटकर जाना है ।

قُلْ إِنْ تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾

(२९) कह दीजिए कि चाहे तुम अपने हृदय की बातें छिपाओ अथवा स्पष्ट करो, अल्लाह (तआला) सबको जानता है, आकाशों और धरती में जो कुछ है सब उसे मालूम है, अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्वशाली है ।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُحْضَرًا وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾

(३०) जिस दिन प्रत्येक प्राणी (व्यक्ति) अपने किये सुकर्म तथा कुकर्म को उपस्थिति पायेगा, कामना करेगा कि काश ! उसके और पाप के बीच बहुत दूरी होती । अल्लाह (तआला) अपने आप से डरा रहा है और अल्लाह (तआला) अपने भक्तों पर अत्याधिक कृपालु है ।

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي

(३१) कह दीजिए ! यदि तुम अल्लाह (तआला) से प्रेम करते हो, तो मेरा अनुसरण करो ।[2]

व्यवहार व शिष्टाचार उचित भी है । (जिसका सविस्तार वर्णन सूरः *मुमतहिनः* में है) क्योंकि यह सभी बातें मित्रता तथा प्रेम से भिन्न हैं ।

[1]यह आज्ञा उन मुसलमानों के लिए है, जो किसी काफ़िर राज्य में रहते हों और उनसे मित्रता व्यक्त किये बिना उनके आतंक से बचना असम्भव न हो, तो वह उनसे मौखिक मित्रता कर सकते हैं ।

[2]यहूदियों और इसाईयों दोनों का यह दावा था कि हम अल्लाह तआला से और अल्लाह तआला हमसे प्रेम करता है । विशेष रूप से इसाईयों ने आदरणीय ईसा और मरियम *अलैहिमास्सलाम* के आदर तथा प्रेम में इतना अतिश्योक्ति कर दिया कि उन्हें पूज्य देव के

يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

स्वयं अल्लाह (तआला) तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा।[1] और अल्लाह (तआला) अत्यधिक क्षमाशील कृपालु है।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) कह दीजिये कि अल्लाह (तआला) और रसूल की आज्ञा का पालन करो, यदि वह मुँह फेर लें, तो नि:संदेह अल्लाह (तआला) काफ़िरों को मित्र नहीं रखता।[2]

स्थान पर पदासीन कर दिया इसके विषय में भी उनका विचार था कि इसके द्वारा हम अल्लाह की निकटता तथा प्रसन्नता के अधिकारी बनना चाहते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया : कि उनके दावों तथा स्वयं गढ़ी गयी विधियों से अल्लाह की प्रसन्नता तथा प्रेम नहीं प्राप्त किया जा सकता। उसका मात्र एक मार्ग यह है कि मेरे अन्तिम पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उसका अनुसरण करो। इस आयत ने उन सभी प्रेम के दावेदारों के लिए एक कसौटी और माप उपलब्ध करा दिया है कि अल्लाह के प्रेम का अर्थ यदि *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के अनुसरण द्वारा यह फल प्राप्त करना चाहा है, तो फिर सफल है और अपने दावे का सच्चा है वरन् वह झूठा भी है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल भी। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का कथन है।

«مَنْ عَمِلَ عَمَلًا لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ»

"जिसने ऐसा काम किया जिससे हमारा सम्बन्ध नहीं है अर्थात हमारे मार्ग से भिन्न है, तो वह बेकार है।" (मुत्तफ़क अलैह)

[1]अर्थात *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का अनुकरण करने के कारण केवल तुम्हारे पाप को ही नहीं क्षमा किया जायेगा बल्कि तुम अपने प्रेमी के प्रेमी बन जाओगे। तो यह कितना श्रेष्ठ स्थान है कि अल्लाह के समक्ष एक मनुष्य अल्लाह के प्रेमी का स्थान प्राप्त कर ले।

[2]इस आयत में अल्लाह के आज्ञा पालन के साथ-साथ *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का अनुकरण करने की फिर से पुनर्रावृत्ति करके यह स्पष्ट किया गया है कि अब बिना *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का अनुकरण किये मोक्ष नहीं प्राप्त हो सकता। और इसका नकारना कुफ़्र है। और ऐसे काफ़िरों को अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता। चाहे वह अल्लाह के प्रेम और निकटता के कितने ही दावेदार हों। इस आयत में हदीस के न मानने वालों और *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का

(३३) नि:संदेह अल्लाह (तआला) ने सभी लोगों में से आदम को और नूह को और इब्राहीम के परिवार और इमरान के परिवार को चुन लिया ।[1]

إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰٓ ءَادَمَ وَنُوحًا وَءَالَ إِبْرَٰهِيمَ وَءَالَ عِمْرَٰنَ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٣٣﴾

(३४) कि ये सभी आपस में एक-दूसरे के वंश से हैं ।[2] और अल्लाह (तआला) सुनता और जानता है ।

ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنۢ بَعْضٍ ۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

अनुकरण न करने वालों की कटु आलोचना की गयी है क्योंकि दोनों ही ने अपने-अपने रूप से ऐसा कर्म करते हैं, जिसे यहाँ कुफ़्र के समान बताया गया है ।

[1]नबियों के परिवार में दो इमरान हुए हैं । एक आदरणीय मूसा और हारून के पिता और दूसरे आदरणीय मरियम के पिता । इस आयत में अधिकतर व्याख्याकारों के अनुसार दूसरे इमरान से तात्पर्य है, और इस परिवार को यह सर्वश्रेष्ठ सम्मानित स्थान आदरणीय मरियम और उनके पुत्र आदरणीय ईसा के कारण प्राप्त हुआ । और आदरणीय मरियम की माता का नाम व्याख्याकारों ने "*हन्ना पुत्री फाक़ूज़*" लिखा है । (तफ़सीर कुर्तबी तथा इब्ने कसीर) इस आयत में अल्लाह तआला ने इमरान के परिवार के अतिरिक्त अन्य दो परिवारों का वर्णन किया है । जिनको अल्लाह तआला ने उनके समय में अन्य परिवारों से श्रेष्ठता प्रदान की है । इनमें से सर्वप्रथम आदरणीय आदम हैं, जिन्हें अल्लाह ने अपने हाथों से बनाया और उनमें अपनी ओर से आत्मा फूँकी, उनके समक्ष फ़रिश्तों से दण्डवत (सजदा) कराया, सभी चीज़ों का ज्ञान उन्हें प्रदान किया और उनका निवास स्वर्ग में बनाया, जहाँ से उन्हें धरती पर भेजा गया, जिसमें उसकी बहुत-सी बुद्धिमतायें थीं । द्वितीय आदरणीय नूह *अलैहिस्सलाम* हैं, उन्हें उस समय रसूल बनाकर भेजा गया, जब लोग अल्लाह को छोड़कर मूर्तिपूजक बन गये थे, उन्हें दीर्घ आयु प्रदान की गयी, उन्होंने अपने समाज के लोगों को साढ़े नौ सौ वर्ष चेतावनी दी, परन्तु कुछ लोगों को छोड़कर आप पर कोई ईमान नहीं लाया । अन्ततः आपकी प्रार्थना के कारण ईमानवालों को छोड़कर शेष सभी को डुबो दिया गया । इब्राहीम की सन्तान को यह श्रेष्टता प्रदान की गयी कि उनमें ही सभी नबियों की श्रृंखला स्थापित किया और अधिकतर पैग़म्बर आपके वंश से थे । अन्त में सर्वश्रेष्ठ और आदरणीय *मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* भी आदरणीय इब्राहीम के पुत्र इस्माईल की वंश श्रृंखला में हुए ।

[2] अथवा दूसरे अर्थ हैं धर्म में एक-दूसरे के सहायक ।

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾

(३५) जब इमरान की पत्नी ने कहा कि हे मेरे पालनहार ! मेरे गर्भ में जो कुछ भी है उसे तेरे नाम से स्वतन्त्र करने[1] की मनौती मान ली, तो तू इसे स्वीकार कर, नि:संदेह तू अच्छी प्रकार से सुनने वाला तथा जानने वाला है।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾

(३६) जब शिशु को जन्म दिया, तो कहने लगी प्रभु ! मुझे तो पुत्री हुई है, अल्लाह (तआला) अच्छी प्रकार से जानता है कि क्या जन्म दिया है, और पुत्र, पुत्री के समान नहीं।[2] मैंने उसका नाम मरियम रखा है।[3] मैं उसे और उसकी सन्तान को धिक्कारे शैतान से तेरी शरण में देती हूँ।[4]

---

[1] محررا (तेरे नाम स्वतन्त्र) का अर्थ तेरी धर्मस्थली की सेवा के लिये अर्पित करती हूँ।

[2] इस वाक्य में निराशा का स्पष्टीकरण है और याचना भी। निराशा इस प्रकार कि मेरी आशा के विपरीत पुत्री हुई है। और याचना इस प्रकार कि मनौती के अनुसार मैं तेरी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये एक सेवक अर्पण करना चाहती थी, जिस कार्य के लिए एक पुरूष ही उचित था, परन्तु अब जो कुछ है, तू उसे जानता ही है, उसे स्वीकार कर ले। (फ़तहुल क़दीर)

[3] हाफ़िज इब्ने कसीर ने इससे और *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की हदीसों से यह भावार्थ निकालते हुए लिखा है कि सन्तान का नाम जन्म के प्रथम दिन ही रखना चाहिये और सातवें दिन नाम रखने वाली हदीस जीर्ण सिद्ध किया है। परन्तु हाफ़िज इब्ने क़य्यिम ने सभी हदीसों पर विवाद करते हुए अन्त में लिखा है कि पहले दिन, तीसरे दिन और सातवें दिन नाम रखा जा सकता है। इसमें गुंजाईश है। (तोहफ़तुल मोदूद)

[4] अल्लाह तआला ने यह प्रार्थना स्वीकार की जैसाकि सहीह हदीसों में है कि जब बच्चा जन्म लेता है, तो शैतान उसे छूता है, जिससे वह चीख़ता है। परन्तु अल्लाह तआला ने आदरणीय मरियम तथा उनके पुत्र ईसा को इससे सुरक्षित रखा है।

«مَا مِنْ مَوْلُودٍ يُولَدُ إِلَّا مَسَّهُ الشَّيْطَانُ حِينَ يُولَدُ، فَيَسْتَهِلُّ صَارِخاً مِنْ مَسِّهِ إِيَّاهُ، إِلَّا مَرْيَمَ وَابْنَهَا».

(सहीह बुख़ारी, किताबुल तफ़सीर, मुस्लिम किताबुल फ़ज़ायल)

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

(३७) उसे उसके प्रभु ने अच्छी प्रकार से स्वीकार किया और उसका सर्वश्रेष्ठ पालन-पोषण कराया। उसका संरक्षक ज़करिया को नियुक्त किया[1] जब कभी ज़करिया उनके कमरे में जाते तो उनके पास जीविका रखी हुई पाते थे।[2] वह पूछते थे कि हे मरियम! तुम्हारे पास यह रोज़ी (जीविका) कहाँ से आयी? वह उत्तर देती कि यह अल्लाह (तआला) के पास से है नि:संदेह अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अनगिनत जीविका प्रदान करे।

---

[1]आदरणीय ज़करिया मरियम के मौसा भी थे, इसलिए भी। इसके अतिरिक्त अपने समय में पैग़म्बर होने के कारण सर्वश्रेष्ठ संरक्षक बन सकते थे, जो कि आदरणीय मरियम की आर्थिक आवश्यकताओं, तथा शैक्षिक एवं नैतिक प्रशिक्षण का उचित प्रबन्ध कर सकते थे।

[2] मेहराव से तात्पर्य वह कमरा है जिसमें आदरणीय मरियम रहा करती थीं। रिज़क़ से तात्पर्य फल आदि हैं। यह फल बिना मौसम के हुआ करते थे अर्थात गर्मी के फल सर्दियों में और सर्दियों के फल गर्मियों में उनके कमरे में होते थे। दूसरी आवश्यक बात इन चीज़ को भौतिक रूप से आदरणीय ज़करिया के अतिरिक्त कोई इस प्रकार के फल उनके कमरे में नहीं ला सकता था, और वह इन फलों को लायें नहीं होते, इस कारण चकित होकर यह पूछते कि यह कहाँ से आये? आदरणीय मरियम ने उन्हें उत्तर दिया अल्लाह की ओर से अर्थात यह आदरणीय मरियम का चमत्कार था। मोजज़: और करामत अप्राकृतिक अथवा असम्भव कार्य के होने को कहते हैं। अर्थात जो प्रत्यक्ष एवं सामान्य संसाधन के विपरीत हों। यह चमत्कार किसी नबी के हाथ पर प्रकाशित हो तो मोजज़: महात्मा (वली) के हाथ से हो, तो करामत कहा जाता है। यह दोनों सत्य हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है। परन्तु यह दोनों अल्लाह के आदेश और उसके चाहने से होते हैं। नवी अथवा महात्मा (वली)के अधिकार में नहीं कि वह स्वयं अपनी इच्छा से कोई मोजज़ा अथवा करामत कर दिखावें। इसलिये कि मोजज़ा अथवा करामत इस बात को सिद्ध करते हैं कि यह आदरणीय व्यक्ति अल्लाह तआला के समक्ष एक विशेष स्थान रखते हैं। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि इन महानुभावों को यह अधिकार है कि अपनी इच्छानुसार संसार में जो चाहें करें। जैसाकि अहले बिदअत महात्माओं (औलिया) के करामतों से जनता को यही धोखा दे कर उन्हें शिर्क पर विश्वास करने को बाध्य कर रहे हैं, इसका अन्य विस्तार पूर्वक विवरण अन्य स्थानों पर मोजेज़ात के विषय में आयेगा।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُۥ قَالَ رَبِّ هَبْ لِى مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾

(३८) उसी स्थान पर ज़करिया (अलैहिस्सलाम) ने अपने पालनहार से प्रार्थना की, कहा कि ऐ मेरे पालनहार। मुझे अपने पास से पवित्र सन्तान प्रदान कर, नि:संदेह तू प्रार्थना सुनने वाला है।

فَنَادَتْهُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُصَلِّى فِى ٱلْمِحْرَابِ أَنَّ ٱللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٣٩﴾

(३९) फिर फ़रिश्तों ने पुकारा जब कि वह कमरे में खड़े नमाज पढ़ रहे थे कि अल्लाह (तआला) तुझे यहिया की अवश्य सम्भावी शुभ सूचना देता है।[1] जो अल्लाह (तआला) के कलमे की पुष्टि करने वाला,[2] मुखिया परहेज़गार और पूर्ण संयम और नबी होगा सत्कर्मियों में से।

قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِى غُلَٰمٌ وَقَدْ بَلَغَنِىَ ٱلْكِبَرُ وَٱمْرَأَتِى عَاقِرٌ قَالَ كَذَٰلِكَ ٱللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾

(४०) कहने लगे हे मेरे प्रभु! मेरे यहाँ पुत्र कैसे होगा मैं अत्यन्त बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी पत्नी बाँझ है, कहा, इसी प्रकार अल्लाह (तआला) जो चाहे करता है।

---

[1]बिना मौसम के फल देखकर आदरणीय ज़करिया के दिल में (अपने बुढ़ापे तथा अपनी पत्नी के बाँझ होने पर भी) यह आशा पैदा हुई कि काश अल्लाह तआला उन्हें भी इसी प्रकार सन्तान प्रदान कर दे। इसी कारण उनके हाथ प्रार्थना के लिये उठ गये, जिसे अल्लाह तआला ने स्वीकार भी कर लिया और प्रदान भी किया।

[2]अल्लाह के कलमें की पुष्टि से तात्पर्य आदरणीय ईसा का अनुमोदन करेगा। अर्थात आदरणीय यहिया आदरणीय ईसा से बड़े हुए। दोनों आपस में मौसेरे भाई थे। दोनों ने एक-दूसरे का अनुमोदन किया। سيدا का अर्थ है सरदार, حصورا का अर्थ है पाप से विशुद्ध अर्थात पाप के निकट न गये हों, इसका तात्पर्य यह कि उनको पाप से रोक दिया गया हो। अर्थात हसूर, महसूर के अर्थ में लिया गया है। कुछ ने इसका अर्थ नपुंसक किया है। परन्तु यह ठीक नहीं है। क्योंकि यह एक त्रुटि है, जबकि यहाँ उनकी विशेषता, सम्मान के रूप में प्रयोग हुआ है।

(४१) कहने लगे प्रभु ! मेरे लिए इसका कोई चिन्ह बना दे, कहा, चिन्ह यह है कि तीन दिन तक तू लोगों से बात न कर सकेगा, केवल इशारे से समझायेगा, तू अपने प्रभु का जप अधिक कर और प्रातः, संध्या उसी की महिमा का वर्णन कर ।[1]

قَالَ رَبِّ اجْعَل لِّيٓ ءَايَةً ۖ قَالَ ءَايَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ ٱلنَّاسَ ثَلَٰثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۗ وَٱذْكُر رَّبَّكَ كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِٱلْعَشِيِّ وَٱلْإِبْكَٰرِ ﴿٤١﴾

(४२) और जब फ़रिश्तों ने कहा, हे मरियम! अल्लाह (तआला) ने तुझे निर्वाचित कर लिया और तुझे पवित्र कर दिया, और सारे संसार की स्त्रियों में तेरा चुनाव कर लिया ।[2]

وَإِذْ قَالَتِ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ يَٰمَرْيَمُ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰكِ وَطَهَّرَكِ وَٱصْطَفَىٰكِ عَلَىٰ نِسَآءِ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٤٢﴾

(४३) हे मरियम ! तू अपने पोषक के आदेशों का पालन और दण्डवत (सजदा) कर और

يَٰمَرْيَمُ ٱقْنُتِى لِرَبِّكِ وَٱسْجُدِى

---

[1]बुढ़ापे में चमत्कारिक रूप से पुत्र के जन्म लेने की शुभ सूचना सुनकर उनकी उत्सुकता में वृद्धि के कारण लक्षण मालूम करना चाहा । अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तीन दिन के लिए तेरी आवाज़ बन्द हो जायेगी, जो मेरी ओर से लक्षण होगा । परन्तु तू इस मौन की स्थिति में अधिकता से सुबह-शाम अल्लाह की महिमागान कर, ताकि वह वरदान जो तुझे अपने प्रभु से मिलने वाला है, उसकी कृतज्ञता व्यक्त कर सके । इसका अर्थ यह हुआ कि अल्लाह तआला तुम्हारी आवश्यकतानुसार चीज़ें प्रदान करे, तो उसकी कृतज्ञता व्यक्त करते रहो ।

[2]आदरणीय मरियम का यह सम्मान और मान उनकी अपनी विशेषता और उनके युग के एतबार से है । क्योंकि सहीह हदीसों में आदरणीय मरियम के साथ आदरणीय ख़दीजा को भी خير نسائها (सभी स्त्रियों में श्रेष्ठ) कहा गया है । और कुछ हदीसों में चार स्त्रियों को पूर्ण कहा गया है । आदरणीय मरियम, आदरणीय आसिया (फ़िरऔन की पत्नी), आदरणीय ख़दीजा तथा आदरणीय आयशा, एवं आदरणीय आयशा के विषय में कहा गया है कि उनकी श्रेष्ठता स्त्रियों में वैसे ही है, जैसे सरीद (हलुवा अथवा खीर) को सभी खानों में श्रेष्ठता है । (इब्ने कसीर) और त्रिमजी में आदरणीय फ़ातिमा पुत्री *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को भी श्रेष्ठ स्त्रियों में सम्मिलित लिया गया है । (इब्ने कसीर) इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि उपरोक्त वर्णित स्त्रियों को अन्य स्त्रियों में श्रेष्ठता तथा महानता प्रदान की गयी है कि वे अपने-अपने युग में श्रेष्ठता रखती हैं ।

وَارْكَعِي مَعَ الرّٰكِعِينَ ﴿٤٣﴾

झुकने वालों (रूकुऊ करने वालों) के साथ झुका कर (रूकुऊ कर)।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ص وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) यह परोक्ष की सूचनाओं में से है, जिसे हम आपको उपदेश कर रहे हैं तब आप उस समय उनके पास न थे जब वह अपने क़लम डाल रहे थे कि उनमें से मरियम की परवरिश कौन करेगा ? और न आप उनके झगड़ों के समय उनके पास थे।[1]

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

(४५) जब फ़रिश्तों ने कहा, हे मरियम ! तुझे अल्लाह (तआला) अपने एक शब्द[2] की शुभ सूचना देता है कि जिसका नाम मसीह[3]

---

[1]आजकल अहले बिदअत ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मान-मर्यादा में अतिश्योक्ति करते हुए, उन्हें अल्लाह तआला के समान परोक्ष का ज्ञानी और सर्वव्यापी मानने का विश्वास गढ़ लिया है। इस आयत में इन दोनों बातों का स्पष्ट खण्डन हो रहा है। यदि आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को परोक्ष का ज्ञान होता, तो अल्लाह तआला यह न फ़रमाता कि हम परोक्ष की सूचनायें आपको दे रहे हैं क्योंकि जिसको पहले ही से यह ज्ञान हो, उससे ऐसे नहीं कहा जाता, और इसी प्रकार सर्वव्यापी होता है, उससे यह नहीं कहा जाता कि आप उस समय वहाँ नहीं थे। लोग नाम लाटरी की भाँति निकाल रहे थे। लाटरी से नाम निकालने की आवश्यकता इसलिये और भी हुई कि आदरणीय मरियम के संरक्षक वनने के कुछ अन्य लोग भी इच्छुक थे। ﴿ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ﴾ से *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की रिसालत तथा आप की सत्यता का प्रमाणित करना भी है। क्योंकि ईशवाणी (वह्यी) केवल पैग़म्बर पर आती है किसी अन्य व्यक्ति पर नहीं आती है।

[2]आदरणीय ईसा को कलमा अर्थात अल्लाह का कलमा इस लिये कहा गया है कि उनका जन्म एक चमत्कारिक रूप से सामान्य मानव जन्म विधि के प्रतिकूल बिना पिता के अल्लाह की विशेष सामर्थ्य और उसके कथन كُنْ (हो जा) की उत्पत्ति है।

[3]मसीह, "*मसह*" धातु से बना है और مَسَحَ الأرض का अर्थ धरती पर अधिक भ्रमण कर्ता है अथवा इसका अर्थ हाथ फेरने वाला है, क्योंकि आप हाथ फेर कर रोगियों को अल्लाह की आज्ञा से स्वस्थ कर देते थे। तथा प्रलय के निकट प्रकट होने वाले दज्जाल को मसीह इसलिये कहा जाता है उसकी एक आँख कानी होगी अथवा वह भी जगत में अधिक

وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٥﴾

पुत्र मरियम है। जो दुनियाँ और परलोक में सम्मानित है। और वह मेरे निकटवर्तियों में से है।

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) वह लोगों से पालने में बात करेगा और अधेड़ आयु में भी।[1] और वह सदाचारियों में से होगा।

قَالَتْ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكِ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ إِذَا قَضَىٰ

(४७) कहने लगी, "प्रभु ! मुझे पुत्र कैसे होगा ? यद्यपि मुझे किसी पुरूष ने स्पर्श भी नहीं किया है।" फ़रिश्ते ने कहा, "इसी प्रकार अल्लाह

भ्रमण करेगा तथा मक्का-मदीना एवं बैतुल मोकद्दस के अतिरिक्त दुनियाँ के प्रत्येक स्थान पर जायेगा। इसलिये उसे मसीह दज्जाल कहा जाता है। (फ़तहुल क़दीर) सामान्य व्याख्याकारों ने सामान्यत: यही बात लिखी है। कुछ अन्य शोधकर्त्ताओं के अनुसार मसीह यहूदी तथा इसाईयों के विचार से पैग़म्बर को कहते हैं अर्थात उनकी यह परिभाषा प्रथम युग के पैग़म्बरों के लिए प्रयोग हुई है। दज्जाल को मसीह इस लिये कहा गया है क्योंकि यहूदियों को जिस अन्तिम क्रान्तिकारी मसीह की शुभ सूचना दी गई है। और जिसकी प्रतीक्षा अनुचित रूप से अब भी कर रहे हैं, वह दज्जाल इसी मसीह के नाम पर आयेगा अर्थात अपने आपको वही मसीह सिद्ध करेगा। परन्तु वह अपने इस दावे के अतिरिक्त अन्य दावों में धोखा-धड़ी का इतना बड़ा नमूना होगा कि आदि से अन्त तक उसकी कोई तुलना नहीं मिलेगी। इसलिये दज्जाल कहलायेगा। ईसा अजमी भाषा का शब्द है। कुछ के निकट यह अरबी और عــــاس और يعوس का विकृत रूप है। जिसका अर्थ राजनीतिक नेतृत्व के हैं। (कुर्तबी तथा फ़तहुल क़दीर)

[1]आद्दरणीय ईसा के (पालने) माँ की गोद में बातचीत करने का वर्णन स्वयं क़ुरआन करीम की सूर: मरियम में है। इसके अतिरिक्त सहीह हदीस में दो अन्य बच्चों के माँ की गोद्द में बात करने का वर्णन है। एक साहबे जुरैज और एक इस्राईली स्त्री का बच्चा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया, बाबु मरियम)

अधेड़ आयु में बात करने का अभिप्राय कुछ ने यह लिया है कि जब बड़े होकर प्रकाशना एवं दूतत्व से सुशोभित किये जायेंगे, तथा कुछ ने कहा है कि आप प्रलय के निकट जब आकाश से उतरेंगे जैसाकि अहले सुन्नत का विश्वास है जो सही निरन्तर हदीसों से तर्क संगत है तो उस समय जो इस्लाम का प्रचार करेंगे वह बातें अभिप्राय हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर तथा क़ुर्तबी)

أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾

(तआला) जो चाहे उत्पन्न करता है। जब कभी वह किसी कार्य को करना चाहता है। तो केवल कह देता है "हो जा," तो वह हो जाता है।"[1]

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ ﴿٤٨﴾

(४८) और अल्लाह (तआला) उसे लिखना[2] और बुद्धिमत्ता तथा तौरात एवं इंजील सिखायेगा।

وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُم مِّنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ ۚ

(४९) और वह इस्राईल की सन्तान का रसूल होगा, कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की निशानी लाया हूँ, मैं तुम्हारे लिए पक्षी के रूप के ही प्रकार का मिट्टी का पक्षी बनाता हूँ[3]। फिर उसमें फूँक मारता हूँ, तो वह अल्लाह (तआला) के आदेश से पक्षी बन जाता है और मैं अल्लाह (तआला) के आदेश से जन्म से अंधे को और कोढ़ी को स्वस्थ कर देता हूँ और मृतक को जीवित कर देता हूँ[4] और जो कुछ तुम खाओ और जो कुछ भी

---

[1]तुम्हारा आश्चर्य चकित होना उचित है, परन्तु अल्लाह तआला के सामर्थ्य के लिये यह कोई कठिन कार्य नहीं है। वह तो जब चाहे स्वाभाविक एवं प्रत्यक्ष साधना समाप्त करके, केवल كن (कुन) आदेश से क्षणभर में जो चाहे कर डाले।

[2]किताब (लेख) से तात्पर्य किताबत (लिखना) है, जैसाकि अनुवाद में लिया गया है अथवा इंजील एवं तौरात के अतिरिक्त कोई और किताब है, जिसका ज्ञान अल्लाह तआला ने उन्हें दिया।

[3] أخلق لكم أي أصور و أقدر لكم (क़ुर्तबी) यहाँ उत्पत्ति का अर्थ पैदा करना नहीं इस पर तो सामर्थ्य मात्र अल्लाह को है क्योंकि वही रचयिता है। यहाँ इसका अर्थ ऊपरी रूप रेखा वनाने के हैं।

[4] पुन: अल्लाह के आदेश से कहने से यही अर्थ है कि कोई व्यक्ति यह समझ वैठे कि मैं सृष्टा की विशेषताओं एवं गुणों को प्राप्त कर चुका हूँ। कदापि ऐसा नहीं, मैं तो उसका भक्त और रसूल हूँ। यह जो कुछ मेरे हाथ से हो रहा है, चमत्कार (मोजेजा) है, जो मात्र

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٤٩﴾

तुम अपनें घरों में एकत्रित करो, मैं तुम्हें बता देता हूँ। इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है। यदि तुम ईमानवाले हो।

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ ۚ وَجِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٥٠﴾

(५०) और मैं तौरात की पुष्टि करने वाला हूँ, जो मेरे समक्ष है और मैं इसलिये आया हूँ कि तुम पर कुछ उन चीज़ों को हलाल करूँ, जो तुम पर हराम कर दी गयी हैं।[1] और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की निशानी लाया हूँ, इसलिये तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरा ही अनुकरण करो।

अल्लाह के आदेश से हो रहा है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने प्रत्येक नबी को उसके समय और परिस्थितियों के अनुसार मोजज़े प्रदान किये, ताकि उसकी सत्यता और श्रेष्ठता स्पष्ट हो सके। आदरणीय मूसा के समय में जादू का बहुत ज़ोर था, उन्हें ऐसा मोजेज़ा प्रदान किया गया जिसके समक्ष बड़े-बड़े जादूगर अपना कार्यक्रम दिखानें में असफल रहे, जिससे उनके ऊपर आदरणीय मूसा की सत्यता स्पष्ट हो गयी, और वह ईमान ले आये। आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम के समय में औषधि और चिकित्सा का अधिक प्रचार हो रहा था, अतएव उन्हें मृतक को जीवित जन्मजात अंधे और कोढ़ी को स्वस्थ कर देने का मोजेजा प्रदान किया गया, जो कोई भी बड़े से बड़ा चिकित्सक अपनी कला के द्वारा करने की शक्ति नहीं रखता था। हमारे पैग़म्बर *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के समय में कविता एवं साहित्य तथा भाषा और भाषण का जोर था, अतएव उन्हें क़ुरआन जैसा भाषा-भाष्य और सर्वश्रेष्ठ साहित्य प्रदान किया गया। जिसकी तुलना दुनियाँ भर के साहित्यकार एवं कवि आज तक प्रस्तुत नहीं कर सकें और चुनौती देने पर भी नहीं प्रस्तुत कर सके और क़यामत (प्रलय) तक प्रस्तुत न कर सकेंगे। (इब्ने कसीर)

[1]इससे तात्पर्य या तो वह चीज़ें हैं, जो अल्लाह तआला ने दण्ड स्वरूप उनपर निषेध (हराम) कर दी थी अथवा फिर वह चीज़ें जो उनके धर्मज्ञानियों (आलिमों) ने स्वयं अपने ऊपर निषेध कर ली थी अल्लाह का आदेश नहीं था। (क़ुर्तुबी) अथवा ऐसी चीज़ भी हो सकती है, जो उनके धर्म ज्ञानियों ने अपने सोच-विचार से वर्जित कर रखी थीं। और सोंच-विचार में उनसे त्रुटि हुई और आदरणीय ईसा ने इन त्रुटियों को दूर करके उन्हें हलाल कर दिया। (इब्ने कसीर)

(५१) विश्वास करो ! मेरा और तुम्हारा स्वामी अल्लाह ही है, तुम सब उसी की अराधना करो। यही सीधी राह है।[1]

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٥١﴾

(५२) परन्तु जब (आदरणीय) ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उनका इंकार का आभास कर लिया।[2] तो कहने लगे अल्लाह (तआला) के मार्ग में मेंरी सहायता करने वाला कौन-कौन है।[3] हवारियों ने उत्तर दिया कि हम अल्लाह (तआला) के मार्ग में सहायक हैं।[4]

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾

---

[1]अर्थात अल्लाह की अराधना (इबादत) करने में और उसके समक्ष तुक्षता एवं विनती करने में मैं और तुम दोनों बराबर हैं। इसलिए सीधा मार्ग यह है कि एक अल्लाह की इवादत (अर्चना) की जाये और उसके प्रभुत्व में किसी को भी सम्मिलित न किया जाये।

[2]अर्थात ऐसी चालें और योजनायें एवं संशकित कार्य जो कुफ्र अर्थात आदरणीय मसीह की रिसालत के इंकार का द्योतक थीं।

[3]वहुत से नवियों ने अपनी कौम के लोगों से तंग आकर वाह्य साधन स्वरूप अपनी कौम के शिष्ट व्यक्तियों से सहायता माँगी है। जैसाकि स्वयं *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने प्रारम्भिक काल में, जब कुरैश आप के आमन्त्रण कार्य में रूकावट डाल रहे थे, तो आप हज के समय में लोगों को अपना साथी तथा सहायक बनाने का प्रयत्न करते थे, ताकि *आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* प्रभु का आदेश लोगों तक पहुँचा सकें, जिस पर अंसार ने आगे बढ़कर साथ दिया और आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की उन्होंने हिजरत से पूर्व तथा हिजरत के पश्चात सहायता की। इसी प्रकार यहाँ पर आदरणीय ईसा ने सहायता माँगी। यह उस प्रकार की सहायता नहीं थी जो मनुष्य के शक्ति के परे हो, क्योंकि यह शिर्क है। और प्रत्येक नबी शिर्क उन्मूलन (उखाड़ फेंकने) के लिए ही आते रहे हैं, फिर वह स्वयं किस प्रकार शिर्क कर सकते थे ? परन्तु समाधि पूजकों के अन्तकरण की अन्धता पर मातम करने की आवश्यकता है कि वह मृत लोगों से सहायता माँगने का औचित्य दिखाने के लिए आदरणीय ईसा के कथन ﴿مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ﴾ से तर्क निकालते हैं ? अल्लाह तआला उन्हें मार्ग दर्शन दे।

[4]हवारियों, हवारी का वहुवचन है जिसका अर्थ أنصار (अन्सार) सहायक। जिस प्रकार *नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का कथन है।

हम अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये और आप गवाह रहिये कि हम मुसलमान हैं।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾

(५३) हे हमारे पालनहार ! हम तेरी उतारी हुई वह्यी (ईशवाणी) पर ईमान लाये और हमने तेरे रसूल का अनुकरण किया। बस अब तू हमें गवाहों में लिख ले।

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾

(५४) और काफ़िरों ने चाल चली और अल्लाह (तआला) ने भी योजना बनायी और अल्लाह (तआला) सभी योजना कारों से श्रेष्ठ है।[1]

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ

(५५) जब अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया, हे ईसा ! मैं तुझे पूर्णरूप से लेने वाला हूँ।[2]

«إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَحَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ». "प्रत्येक नबी का कोई विशेष सहायक होता है और मेरा सहायक ज़ुबैर है।" (सहीह बुख़ारी)

[1] आदरणीय ईसा के समय में सीरिया का क्षेत्र रूमियों के आधीन था, यहाँ उनके द्वारा जो अधिकारी पदासीन था, वह काफ़िर था। यहूदियों ने आदरणीय ईसा के विरूद्ध उस अधिकारी के कान भरे कि यह संकर نعوذ بالله और विद्रोही हैं आदि आदि। अधिकारी ने उनकी माँग के अनुसार उन्हें फाँसी पर चढ़ाने का निर्णय कर लिया। परन्तु अल्लाह ने आदरणीय ईसा को सुरक्षित आसमान पर उठा लिया और उनके समरूप एक आदमी को उन्होंने फाँसी दे दी और समझते रहे कि हमने ईसा को फाँसी दी है।

مكر (मक्र) अरबी भाषा में सूक्ष्म तथा गुप्त उपाय को कहते हैं। तथा इसी अर्थ में यहाँ अल्लाह को خير الماكرين कहा गया है, मानो यह उपाय, बुरी भी हो सकता अच्छा भी। यदि बुरे प्रयोजन के लिये हो तो बुरा अच्छे प्रयोजन के लिये हो तो अच्छा है।

[2] المتوفى यह توفى से बना जिसका धातु وفى इसका मूल अर्थ सम्पूर्णरूप से लेना है। इंसान की मौत पर 'वफ़ात' शब्द इसलिये बोला जाता है, कि उसके शरीरिक अधिकार पूणर्तः छीन लिये जाते हैं। अतः इस शब्दार्थ के विभिन्न रूपों में से मौत मात्र एक रूप है। निंद्रा में भी साम्यिक रूप से मानवी अधिकार निलम्बित कर दिये जाते हैं, इस कारण निंद्रा के लिये भी पवित्र क़ुरआन ने 'वफ़ात' के शब्द का प्रयोग किया है। जिससे विदित हुआ कि कि इसका मूल अर्थ पूर्णरूप से लेना ही हैं। إني متوفيك में यहाँ

مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾

तथा तुझे अपनी ओर उठाने वाला हूँ और तुझे काफ़िरों से पवित्र करने वाला हूँ।[1] और तुम्हारे अनुयायियों को काफ़िरों से क़यामत के दिन तक ऊपर रखने वाला हूँ।[2] फिर तुम सब का लौटना मेरी ही ओर है, मैं ही तुम्हारे मध्य सभी मतभेदों का निर्णय करूँगा।

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٥٦﴾

(५६) फिर काफ़िरों को तो मैं इस लोक तथा परलोक में कड़ी यातनायें दूँगा। और उनका कोई सहायक न होगा।

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٥٧﴾

(५७) परन्तु ईमानवालों और सत्कर्म करने वालों को अल्लाह (तआला) उनका पूरा-पूरा प्रत्युपकार देगा और अल्लाह तआला अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

ذَٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾

(५८) यह जिसे हम तेरे समक्ष पढ़ रहे हैं, आयतें हैं और दृढ़ उपदेश है।

अपने मूल अर्थ में प्रयोग हुआ है। अर्थात हे ईसा मैं तुझे यहूदियों, इसाईयों से बचाकर पूर्णत: अपनी ओर आकाश पर उठा लूँगा। तथा ऐसा ही हुआ। कुछ ने अवस्तिविक अर्थ मृत्यु लिया है जो साधारणत: प्रयोग में आता है किन्तु इस वाक्य में رافعك का पहले तथा متوفيك का अर्थ बाद में लिया हे अर्थात प्रथम तुझे आकाश पर उठा लूँगा तथा पुन: संसार में उतरने पर मौत दूँगा अर्थात यहूदियों के हाथों तुम्हारी हत्या नहीं होगी तुम्हें स्वभाविक मौत ही आयेगी।

[1]इससे तात्पर्य वे आक्षेप से शुद्धता अथवा पवित्रता है, जिनसे आपको यहूदी कलंकित करते थे। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के द्वारा आपकी सफ़ाई दुनियाँ के समक्ष प्रस्तुत कर दी गयी।

[2]इससे तात्पर्य या तो इसाईयों की सांसारिक विजय यहूदियों पर है जो प्रलय तक रहेगी, यद्यपि कि वह अपने ग़लत विश्वास के कारण अन्तिम मोक्ष प्राप्त करने में असफल ही रहेंगे अथवा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों की विजय है।

(५९) अल्लाह (तआला) के निकट ईसा की दशा यथावत आदम के समान है, जिसे मिट्टी से पैदा करके कह दिया कि हो जा बस वह हो गया।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾

(६०) तेरे प्रभु की ओर से सत्य यही है, सावधान ! शंका करने वालों में से न होना।

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾

(६१) इसलिए जो भी आपके पास इस ज्ञान के आ जाने के पश्चात भी आप से इसमें झगड़े, तो आप कह दीजिए कि आओ हम तुम अपने-अपने पुत्रों को और हम-तुम अपनी स्त्रियों को और हम तथा तुम अपने आप को बुला लें फिर हम विलीन होकर प्रार्थना करें। और झूठों पर अल्लाह की फिटकार (धिक्कार) भेजें।[1]

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ﴿٦١﴾

---

[1]यह मोबाहला की आयत कहलाती है, मोबाहला का अर्थ है दो पक्ष का एक-दूसरे पर धिक्कार अर्थात शाप देना, तात्पर्य यह है कि जब दो पक्षों में किसी विषय में विवाद तथा विभेद हो जाये एवं तर्क-वितर्क से उसका अन्त होता न दिखाई दे, तो दोनों अल्लाह से यह प्रार्थना करें कि हममें जो मिथ्यावादी हो उस पर धिक्कार कर। इसकी संक्षिप्त भूमिका यह है कि इसाईयों का एक प्रतिनिधि मंडल *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सेवा में उपस्थिति हुआ तथा आदरणीय ईसा के संदर्भ में वह जो अत्युक्ति मिश्रित आस्थायें रखते थे उस पर वाद-विवाद करने लगे। अन्ततः यह आयत उतरी तथा आप ने उन्हें मुवाहला पर आमंत्रण दिया। आदरणीय अली व फ़ातिमा तथा हसन एवं हुसैन को भी साथ लिया तथा इसाईयों से कहा कि तुम भी अपने परिवार को बुला लो फिर हम मिलकर झूठे पर धिक्कार की प्रार्थना करें, इसाई परस्पर परामर्श के पश्चात इसके लिए तैयार न हुए तथा यह प्रस्ताव रखा कि आप जो चाहे हम देने को तैयार हैं। आपने उन पर सुरक्षा कर (जिज़या) निर्धारित कर दिया जिसे लेने के लिये आप अबू उबैदा बिन जर्राह को जिन्हें आपने "*अमीने उम्मत*" की उपाधि से अलंकृत किया था उनके साथ भेजा (तफ़सीर इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर आदि से संक्षिप्त) आगामी आयत में अहले किताव (यहूदियों तथा इसाईयों) को एकेश्वरवाद की ओर बुलाये जा रहे हैं।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾

(६२) नि:संदेह केवल यही सत्य वर्णन है और अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई अन्य पूजने योग्य नहीं, और नि:संदेह अल्लाह शक्तिशाली बुद्धिमान है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾

(६३) फिर भी यदि वे स्वीकार न करें, तो अल्लाह (तआला) भी भली भाँति विद्रोहियों को जानने वाला है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾

(६४) आप कह दीजिए कि हे अहले किताब ! ऐसी न्यायपूर्ण बात की ओर आओ जो हम में तुम में समान है कि हम अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त किसी की वंदना (इबादत) न करें और न उसके साथ किसी को सम्मिलित करें।[1] न अल्लाह (तआला) को छोड़कर आपस में एक-दूसरे को स्वामी ही बना लें।[2] यदि वह मुँह मोड़ लें, तो कह दो कि साक्षी रहना कि हम तो मुसलमान हैं।[3]

---

[1]किसी मूर्ति को न किसी क्रास को, न अग्नि को और न किसी अन्य वस्तु को, बल्कि केवल एक अल्लाह की वंदना (इबादत) करें, जैसाकि सभी नबियों ने आमंत्रण दिया।

[2]यह एक तो उस बात की ओर संकेत है कि तुमने आदरणीय मसीह और आदरणीय उज़ैर के अराध्य होने (प्रभु होना) का जो विश्वास गढ़ रखा है यह ग़लत है, वह प्रभु नहीं हैं वे मनुष्य ही हैं दूसरा इस ओर संकेत है कि तुमने अपने विद्वानों धर्मात्मा को उचित-अनुचित करने का अधिकार दे रखा है, यह भी उनको प्रभु बनाना है। जैसाकि आयत اتخذوا أحبارهم इस पर साक्षी है, यह भी उचित नहीं है, हलाल व हराम करने का अधिकार भी केवल अल्लाह ही को है। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

[3]सहीह बुख़ारी में है कि क़ुरआन करीम के इस आदेशानुसार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिरक़ल राजाधिराज रोम को पत्र भेजा उसमें इस आयत के हवाले से इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आमंत्रण दिया और उसे कहा कि तू मुसलमान हो जायेगा, तो दुगुना पुण्य मिलेगा, वरन तेरी सम्पूर्ण प्रजा का भी पाप तेरे सिर पर होगा।

(६५) ऐ अहले किताब ! तुम इब्राहीम के विषय में क्यों झगड़ते हो ? जबकि तौरात और इंजील तो उनके पश्चात उतारी गयी, क्या तुम फिर भी नहीं समझते ?[1]

يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ لِمَ تُحَآجُّونَ فِيٓ إِبۡرَٰهِيمَ وَمَآ أُنزِلَتِ ٱلتَّوۡرَىٰةُ وَٱلۡإِنجِيلُ إِلَّا مِنۢ بَعۡدِهِۦٓۚ أَفَلَا تَعۡقِلُونَ ۝٦٥

(६६) सुनो, तुम लोग उसमें झगड़ चुके, जिसका तुम्हें ज्ञान था, अब इसमें क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान ही नहीं है ।[2]

هَٰٓأَنتُمۡ هَٰٓؤُلَآءِ حَٰجَجۡتُمۡ فِيمَا لَكُم بِهِۦ عِلۡمٞ فَلِمَ تُحَآجُّونَ فِيمَا لَيۡسَ لَكُم بِهِۦ عِلۡمٞۚ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ

«فَأَسْلِمْ تَسْلَمْ، أَسْلِمْ يُؤْتِكَ اللهُ أَجْرَكَ مَرَّتَيْنِ، فَإِنْ تَوَلَّيْتَ، فَإِنَّ عَلَيْكَ إِثْمَ الأَرِيسِيِّينَ».

"इस्लाम स्वीकार कर ले, सुरक्षित रहेगा । इस्लाम ले आ, अल्लाह तआला दुगुना पुण्य देगा, परन्तु यदि तूने इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इंकार किया, तो प्रजा का पाप भी तुझ पर होगा । क्योंकि प्रजा के इस्लाम धर्म न स्वीकार करने का कारण भी तू ही बनेगा ।" (बुख़ारी, किताब बदउल वह्यी)

इस आयत में तीन बातों का वर्णन है अर्थात १- मात्र अल्लाह की इबादत करना २- उसके साथ किसी का भी मिश्रण न करना ३- और किसी को भी धार्मिक नियमावली बनाने का अल्लाह का अधिकार अथवा स्थान न देना वह समानता के शब्द हैं जिस पर अहले किताब को एकता का आमंत्रण दिया गया है । अतएव इस उम्मत के बिखराव को एकत्रित करने का भी इन तीन बिन्दुओं और इस समानता की बात को सर्वप्रथम आधारशिला बनानी चाहिए ।

[1]आदरणीय इब्राहीम के विषय में झगड़े का अर्थ है कि यहूदी और इसाई दोनों यह दावा करते थे कि आदरणीय इब्राहीम उनके धर्म के मानने वाले थे, यद्यपि तौरात जिस पर यहूदी विश्वास करते हैं और इंजील जिसे इसाई पवित्र पुस्तक मानते हैं, दोनों आदरणीय इब्राहीम के सैकड़ों वर्ष बाद उतरी, फिर आदरणीय इब्राहीम यहूदी अथवा इसाई किस प्रकार हो सकते थे ? कहते हैं कि आदरणीय इब्राहीम और आदरणीय मूसा के मध्य एक हजार वर्ष की अवधि का अन्तर है और आदरणीय मूसा तथा आदरणीय ईसा के मध्य दो हजार वर्ष का अन्तर था । (कुर्तबी)

[2]तुम्हारे ज्ञान व धर्म की तो यह दशा है कि जिन बातों का तुम्हें ज्ञान है अर्थात अपने धर्म तथा अपनी किताब का इसके विषय में तुम्हारे झगड़े (जिसका वर्णन पिछली आयत में आ चुका है) सत्यता पर नहीं हैं तथा अज्ञानता के द्योतक भी । तो फिर तुम उस बात पर क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें तनिक भी ज्ञान नहीं है ? अर्थात आदरणीय इब्राहीम

وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

और अल्लाह (तआला) जानता है, तुम नहीं जानते।

مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) इब्राहीम न तो यहूदी थे न इसाई, बल्कि वह शुद्ध रूप से मात्र मुसलमान थे।[1] वह मूर्तिपूजक (मिश्रणवादी) भी न थे।

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) सब लोगों से अधिक इब्राहीम के निकटतम वह लोग हैं, जिन्होंने उनका कहना माना और यह नबी, और जो लोग ईमान लाये।[2] ईमान वालों का संरक्षक तथा सहायक अल्लाह है।

की श्रेष्ठता एवं विशेषता तथा उनके मिल्लत हनीफ़ा (सीधे राह पर चलने वाली क़ौम), जिसका आधार एकेश्वरवाद तथा मात्र एक अल्लाह की इबादत पर है।

[1] حنيفا مسلما (शुद्ध रूप मात्र मुसलमान) अर्थात मिश्रण से नफ़रत करने वाला और मात्र एक अल्लाह की उपासना करने वाला।

[2] तात्पर्य नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सच्चे मुसलमान हैं क्योंकि इस्लाम धर्म के नियम मिल्लत हनीफ़ा से सबसे निकटतम है, इसीलिये क़ुरआन करीम में *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को मिल्लते इब्राहीम के पालन करने का आदेश दिया गया है। ﴿أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا﴾ (*अन-नम्ल*-१२३) इसके अतिरिक्त हदीस में है।*रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

«إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ وُلَاةً مِنَ النَّبِيِّينَ، وَإِنَّ وَلِيِّي مِنْهُمْ أَبِي وَخَلِيلُ رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ».

"(प्रत्येक नवी के नबियों में से कुछ मित्र होते हैं, मेरे मित्र उनमें से मेरे पिता और मेरे प्रभु के मित्र (इब्राहीम) हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत पढ़ी"। (त्रिमिज़ी) उदघृत इब्ने कसीर)

وَدَّت طَّآئِفَةٌ مِّنۡ أَهۡلِ ٱلۡكِتَٰبِ لَوۡ يُضِلُّونَكُمۡ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمۡ وَمَا يَشۡعُرُونَ ﴿٦٩﴾

(६९) अहले किताब का एक गुट चाहता है कि तुम्हें भटका दे, वास्तव में वे स्वयं अपने आपको भटका रहे हैं और समझते नहीं ।[1]

يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ لِمَ تَكۡفُرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَأَنتُمۡ تَشۡهَدُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) ऐ अहले किताब ! तुम स्वयं साक्षी होने के उपरान्त भी अल्लाह की आयतों को क्यों नहीं मानते ।[2]

يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ لِمَ تَلۡبِسُونَ ٱلۡحَقَّ بِٱلۡبَٰطِلِ وَتَكۡتُمُونَ ٱلۡحَقَّ وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ﴿٧١﴾

(७१) ऐ अहले किताब ! जानने के उपरान्त भी सच और झूठ को क्यों मिला रहे हो ? और सच्चाई को क्यों छिपा रहे हो ?[3]

---

[1]यह यहूदियों के द्वेष और ईर्ष्या का स्पष्टीकरण है, जो वह ईमानवालों से रखते थे और इसी द्वेष के कारण मुसलमानों को भटकाने का प्रयत्न करते थे । अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इस प्रकार वह स्वयं ही अनजाने में अपने आपको भटका रहे हैं ।

[2]साक्षी हीन का अर्थ है कि तुम्हें *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सत्यता एवं वास्तविकता का ज्ञान है ।

[3]इसमें यहूदियों के दो बड़े अपराधों की ओर संकेत करके उनको छोड़ देने को कहा जा रहा है । प्रथम अपराध यह कि सच और झूठ को मिलाना, जिससे लोग सच और झूठ के बीच अंतर न जान सकें अर्थात सत्य को छिपाना । अर्थात *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के जो गुण और विशेषताएं तौरात में लिखे हुए थे, उन्हें लोगों से छिपाना, ताकि आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सच्चाई कम से कम इस रूप में स्पष्ट न हो सके । और यह दोनों अपराध जान बूझकर करते थे जिससे उनको समझ पाना असम्भव हो गया था । उनके अपराधों की ओर *सूरः अल-बक़रः* में भी संकेत किया गया ।

﴿ وَلَا تَلۡبِسُواْ ٱلۡحَقَّ بِٱلۡبَٰطِلِ وَتَكۡتُمُواْ ٱلۡحَقَّ وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ﴾ [البقرة: ٤٢]

"सच को झूठ के साथ मत मिलाओ और सच मत छिपाओ और तुम जानते हो ।"

अहले किताब के शब्द को कुछ व्याख्याकारों ने सामान्य रखा है, जिसमें यहूदी और इसाई दोनों सम्मिलित हैं । अर्थात दोनों को इन अपराधों से रूक जाने के लिए सावधान किया गया है । और कुछ के निकट इससे तात्पर्य केवल वह यहूदी क़बीले जो मदीने में निवास करते थे, बनू क़ुरैज़ा, बनू नदीर, तथा बनू कैनुकाअ । अधिक उचित बात यही लगती है

(७२) और अहले किताब के एक गुट ने कहा कि जो कुछ भी ईमानवालों पर उतारा गया है । उस पर दिन चढ़े तो ईमान लाओ और और संध्या के समय इंकार कर दो ताकि यह लोग भी पलट जायें ।[1]

وَقَالَت طَّآئِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَٰبِ ءَامِنُوا۟ بِالَّذِىٓ أُنزِلَ عَلَى الَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوٓا۟ ءَاخِرَهُۥ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾

(७३) और सिवाय तुम्हारे धर्म पर चलने वालों के और किसी पर विश्वास न करो ।[2] आप कह दीजिए ! निःसंदेह मार्गदर्शन तो अल्लाह ही का मार्ग दर्शन है ।[3] (और यह भी कहते हैं कि इस बात पर भी विश्वास न करो) कि कोई उस जैसा दिया जाये जैसा तुम दिये गये हो ।[4] अथवा यह कि यह तुम से

وَلَا تُؤْمِنُوٓا۟ إِلَّا لِمَن تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَى اللَّهِ أَن يُؤْتَىٰٓ أَحَدٌ مِّثْلَ مَآ أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَآجُّوكُمْ عِندَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ وَاللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

क्योंकि मुसलमानों का सीधा सम्बन्ध उन्हीं से था और यही *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के विरोध में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे ।

[1]यह यहूदियों की एक और चाल का वर्णन है । जिससे वह मुसलमानों को भटकाना चाहते थे कि उन्होंने आपस में यह विचार किया कि प्रातः मुसलमान हो जायें और संध्या के समय इंकार कर दें ताकि मुसलमानों को भी अपने इस्लाम के विषय में शंका उत्पन्न हो कि यह लोग इस्लाम स्वीकार करने के उपरान्त अपने धर्म में पुनः लौट गये हैं, तो सम्भव है कि इस्लाम में ऐसे अवगुण और त्रुटियाँ हों, जो उनके ज्ञान में आयीं हों ।

[2]यह आपस में निर्णय लिया कि दिखावे के लिए मुसलमान हो जाओ, परन्तु अपने धर्म (यहूदी) के अतिरिक्त किसी बात पर विश्वास न करना ।

[3]यह स्वयं एक वाक्य है जिसका न तो प्रारम्भ से और न बाद के वाक्यों से कोई सम्बन्ध है । केवल उनकी चालों की असली बात इससे स्पष्ट करना था, कि उनकी चालों से कुछ न होगा क्योंकि मार्गदर्शन देना तो अल्लाह के हाथ में है । वह जिसको मार्गदर्शन प्रदान कर दे अथवा देना चाहे, तो तुम्हारी चालें उसमें रूकावट नहीं बन सकतीं ।

[4]यह भी यहूदियों का कथन है इसका पक्ष ولا تؤمنوا, पर है । अर्थात यह भी स्वीकार मत करो जिस प्रकार तुम्हारे यहाँ नबूअत आदि रही है, यह किसी और को भी मिल सकती है और इस प्रकार यहूदियत के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म भी सत्य हो सकता है ।

तुम्हारे प्रभु के पास झगड़ा करेंगे, आप कह दीजिए कि कृपा तो अल्लाह (तआला) के हाथ में है । वह जिसे चाहे उसे प्रदान करे, अल्लाह (तआला) महान और सर्वज्ञ है ।

(७४) वह अपनी कृपा से जिसे चाहे विशेष कर ले, और अल्लाह (तआला) परम कृपालु है ।[1]

يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾

(७५) और कुछ अहले किताब ऐसे भी हैं कि तू कोष का न्यासधारी उन्हें बना दे, तो भी तुझे वापस कर दें, और उनमें कुछ ऐसे भी हैं कि यदि तू उन्हें एक दीनार भी अमानत

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ

---

[1]इस आयत के दो अर्थ वर्णित किये जाते हैं। एक यह कि यहूदियों के बड़े-बड़े आलिम (विद्वान) अपने शिष्यों से कहते कि दिन चढ़ते ईमान लाओ और दिन उतरते काफ़िर हो जाओ, ताकि इस समय जो मुसलमान भी हैं, वह भ्रम में पड़ जायें और मुर्तदद हो जायें। अपने-अपने शिष्यों को यह भी शिक्षा देते कि केवल दिखावे के लिए मुसलमान होना। सचमुच मुसलमान न हो जाना, बल्कि यहूदी ही रहना। और यह न समझ बैठना कि जैसा धर्म जैसी ईशवाणी (वह्यी), धार्मिक नियम और जैसा ज्ञान और कृपा तुम्हें दिया गया है, वैसी किसी और को भी दी जा सकती है। अथवा तुम्हारे अतिरिक्त कोई अन्य भी सत्यता पर है, जो तुम्हारे विरूद्ध अल्लाह के समक्ष तर्क प्रस्तुत कर सकता है। और तुम्हें ग़लत ठहरा सकता है। इस अर्थ के आधार पर अल्लाह तआला की विशेषताओं के वर्णन वाले वाक्य को छोड़कर अन्य पूरा का पूरा वाक्य यहूदियों का कथन है। दूसरा अर्थ है कि ऐ यहूदियो ! तुम सच्चाई को दबाने की यह जो चालें तथा योजनायें इसलिए बना रहे हो कि तुम्हें दु:ख तथा ईर्ष्या है कि जैसा ज्ञान, कृपा, ईशवाणी (वह्यी) धार्मिक नियम तथा धर्म तुम्हें दिया गया था। अब वैसा ही ज्ञान, कृपा और धर्म किसी अन्य को क्यों प्रदान किया गया ? दूसरे तुम्हें यह शंका तथा भय है कि यदि सत्य का यह आमंत्रण बढ़ गया और उन्होंने अपनी जड़ें सुदृढ़ कर लीं, तो न केवल दुनियाँ में जो मान-सम्मान तुमको प्राप्त है, वह चला जायेगा। बल्कि तुमने जो सच्चाई छिपा रखी है, उसका पर्दा फ़ाश हो जायेगा । और इस आधार पर यह लोग अल्लाह के निकट भी तुम्हारे विरूद्ध तर्क स्थापित कर देंगे परन्तु तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि धार्मिक नियम अल्लाह की कृपा है । और यह किसी का उत्तराधिकार नहीं। बल्कि वह अपनी कृपा जिसे चाहता है प्रदान करता है। और उसे मालूम है कि यह कृपा किसको प्रदान करनी है।

के रूप में दे तो तुझे अदा न करें। हाँ यह और बात है कि तू उनके सिर पर ही खड़ा रहे, यह इसलिए कि उन्होंने कह रखा है कि हम पर इन अशिक्षितों के अधिकार का कोई पाप नहीं, यह लोग जानने के उपरान्त भी अल्लाह पर झूठ बोलते हैं।[1]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

(७६) क्यों नहीं (पकड़ होगी) परन्तु जो व्यक्ति अपना वचन पूरा करे और अल्लाह तआला से डरे, तो अल्लाह तआला भी ऐसे डरने वालों को अपना मित्र रखता है।[2]

بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧٦﴾

(७७) नि:संदेह जो अल्लाह (तआला) के वचन और अपनी शपथों को थोड़े से मूल्य पर बेच डालते हैं, उनके लिए आख़िरत में

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا

---

[1] امّيين (अशिक्षित अनपढ़) से तात्पर्य अरब के मूर्तिपूजक हैं। यहूदियों के अपभोगी लोग यह दावा करते थे कि चूँकि यह मूर्तिपूजक हैं इसलिए इनका माल हड़प कर जाना उचित है। इसमें कोई पाप नहीं है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह लोग अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। अल्लाह तआला किस प्रकार से दूसरों का माल हड़प कर जाने की आज्ञा प्रदान कर सकता है ? और कुछ व्याख्याओं में वर्णन है कि *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने भी यह सुन कर कहा "अल्लाह के शत्रुओं ने झूठ कहा, अज्ञानता काल की सभी चीजें मैं अपने पैरों तले कुचलता हूँ, सिवाय अमानत के कि वह प्रत्येक परिस्थिति में लौटानी है, चाहे वह किसी सत्कर्मी की हो अथवा कुकर्मी की हो।" (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर) अफ़सोस है कि यहूदियों की तरह आज कुछ मुसलमान भी मूर्तिपूजकों का माल हड़पने की बात कहते हैं कि युद्धस्थली का ब्याज उचित है, और लड़ाकू के माल का कोई आदर नहीं।

[2] "वचन पूरा करे।" का अर्थ है वह वचन पूरा करे, जो अहले किताब से अथवा प्रत्येक नबी के वास्ते से उनकी उम्मतों से *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर ईमान लाने के विषय में लिया गया है। "और अल्लाह से डरे" अल्लाह तआला द्वारा रोके गये कर्मों से रूके और उन बातों के अनुसार कर्म करें जो *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* वर्णित करें। ऐसे लोग नि:संदेह अल्लाह की पकड़ से बचे रहेंगे, बल्कि अल्लाह के प्यारे होंगे।

يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٧﴾

कोई भाग नहीं है। अल्लाह (तआला) न तो उनसे बातचीत करेगा, और न क़ियामत के दिन उनकी ओर देखेगा, न उन्हें पवित्र करेगा, और उनके लिए दुखद यातनायें हैं।[1]

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾

(७८) अवश्य उनमें ऐसा गिरोह भी है जो किताब पढ़ते हुए अपनी जीभ मरोड़ लेता है, ताकि तुम उसे किताब ही का लेख समझो, हालाँकि वास्तव में वह किताब में से नहीं और यह कहते भी है कि वह अल्लाह (तआला) की ओर से हैं, हालाँकि वास्तव में वह अल्लाह तआला की ओर से नहीं वह तो जान बूझ कर अल्लाह (तआला) पर झूठ बोलते हैं।[2]

---

[1]उपरोक्त वर्णित लोगों के विपरीत दूसरे लोगों का वर्णन किया गया और यह दो प्रकार के लोग हैं जिनमें से एक तो वह लोग हैं जो अल्लाह तआला से किये गये वचन तथा शपथ को पीछे छोड़कर थोड़े से आर्थिक लाभ के लिए *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर ईमान नहीं लाते। दूसरे वह लोग हैं जो झूठी शपथ ग्राहण करके अपना माल बेचते अथवा दूसरे का माल हड़प कर जाते हैं। जैसाकि हदीस में आप ने फ़रमाया :

"जो व्यक्ति किसी का माल हड़पने के लिये झूठी कसमें खाये, वह अल्लाह से इस दशा में मिलेगा कि अल्लाह उस पर बहुत क्रोधित होगा।" (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम आदि) और यह भी फ़रमाया : "तीन आदमियों से अल्लाह तआला न बात करेगा, न उनकी ओर देखेगा और न पवित्र करेगा और उनके लिये दुखद यातना होगी, उनमें से एक वह व्यक्ति है, जो झूठी शपथ के द्वारा अपना माल बेचता है।" (सहीह मुस्लिम) बहुत-सी हदीसों में इन बातों का वर्णन है। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

[2]यह उन यहूदियों का वर्णन है जिन्होंने अल्लाह की किताब (तौरात) में न केवल परिवर्तन किया वरन दो अपराध और किये, एक तो जीभ को मरोड़कर किताब के शब्दों को पढ़ते, जिससे जनता को कथानक के विपरीत प्रभाव देने में वह सफल हो जाते। दूसरे अपनी मन-गढ़न्त बातों को अल्लाह की बातें कहते। दुर्भाग्य से मुसलमानों के धार्मिक अगुआओं में भी, *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की भविष्यवाणी «لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ». (तुम अपने से पहली उम्मतों के पग-पग अनुसरण करोगे) के अनुसार ऐसे बहुत से लोग हैं जो भौतिक स्वार्थ अथवा गिरोही संकीर्णता अथवा वैचारिक अवरोध के कारण से क़ुरआन करीम के

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِّي مِن دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِن كُونُوا رَبَّٰنِيِّينَ بِمَا كُنتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَٰبَ وَبِمَا كُنتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿٧٩﴾

(७९) किसी ऐसे पुरूष को अल्लाह (तआला) किताब विज्ञान और नबूअत प्रदान करे, यह उचित नहीं कि फिर भी लोगों से कहे कि अल्लाह (तआला) को छोड़कर मेरे भक्त बन जाओ बल्कि वह तो कहेगा कि तुम सब लोग प्रभु के हो जाओ ।[1] तुम्हें किताब सिखाने और तुमको पढ़ाने के कारण ।[2]

وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَن تَتَّخِذُوا الْمَلَٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُم بِالْكُفْرِ

(८०) और वह तुम्हें यह आज्ञा नहीं देगा कि फ़रिश्तों (स्वर्गदूतों) तथा नबियों (ईशदूतों) को अराध्य बना लो । क्या आज्ञाकारी होने

साथ भी यही व्यवहार करते हैं । पढ़ते क़ुरआन की आयत हैं और विषय स्वयं गढ़ते हैं । जनता समझती है कि मोलवी साहब ने समस्या का हल क़ुरआन से निकाला है । वास्तव में इस हल का क़ुरआन से कोई सम्बन्ध नहीं होता अथवा आयत के अर्थों में बदलाव अथवा बनावट से काम लिया जाता है ताकि सिद्ध किया जा सके कि यह अल्लाह की ओर से है ।

[1]यह इसाईयों के विषय में कहा जा रहा है कि उन्होंने आदरणीय ईसा को पूज्य बना दिया है यद्यपि वह एक मनुष्य थे जिन्हें किताब, प्रबोध और नुबूअत से सुशोभित किया गया था । और ऐसा कोई व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि अल्लाह को छोड़कर मेरे पुजारी और भक्त बन जाओ, बल्कि वह यह कहता है कि प्रभु वाले बन जाओ । ربانی अल्लाह से सम्बन्धित है नून और अलिफ़ की अधिकता अतिश्योक्ति के लिए है ।

[2]अर्थात अल्लाह की किताब की शिक्षा-दीक्षा के परिणाम स्वरूप प्रभु की पहचान और प्रभु से विशेष सम्बन्ध स्थापित होना चाहिए । इसी प्रकार अल्लाह की किताब का ज्ञान रखने वाले को यह आवश्यक है कि लोगों को भी क़ुरआन की शिक्षा दे । इस आयत से यह स्पष्ट है कि जब अल्लाह के पैग़म्बरों को यह अधिकार नहीं है कि वह लोगों को अपनी वंदना (इबादत) करने का आदेश दें, तो यह अधिकार किसी अन्य को किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ?

بَعۡدَ إِذۡ أَنتُم مُّسۡلِمُونَ ۝٨٠

के बाद तुम्हें अवज्ञाकारी बन जाने का आदेश देगा ।[1]

وَإِذۡ أَخَذَ ٱللَّهُ مِيثَٰقَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ لَمَآ ءَاتَيۡتُكُم مِّن كِتَٰبٖ وَحِكۡمَةٖ ثُمَّ جَآءَكُمۡ رَسُولٞ مُّصَدِّقٞ لِّمَا مَعَكُمۡ لَتُؤۡمِنُنَّ بِهِۦ وَلَتَنصُرُنَّهُۥۚ قَالَ ءَأَقۡرَرۡتُمۡ وَأَخَذۡتُمۡ عَلَىٰ ذَٰلِكُمۡ إِصۡرِيۖ قَالُوٓاْ أَقۡرَرۡنَاۚ

(८१) और जब अल्लाह (तआला) ने नबियों से वचन लिया कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब तथा विज्ञान प्रदान करूँ, फिर तुम्हारे पास वह रसूल आये जो तुम्हारे पास की वस्तु को सच बताये तो तुम्हारे लिए उस पर ईमान लाना तथा उसकी सहायता करना आवश्यक है ।[2] फ़रमाया कि तुम क्या इसको स्वीकार

---

[1]अर्थात नबियों, फ़रिश्तों (अथवा किसी अन्य को) प्रभु की विशेषताओं से युक्त समझना अधर्म है। तुम्हारे मुसलमान हो जाने के पश्चात एक नबी भला इस प्रकार का काम कैसे कर सकता है ? क्योंकि उनका कार्य तो ईमान का आमंत्रण देना है जो एक अल्लाह जिसका कोई साझी नहीं की वंदना (इबादत) ही का नाम है। कुछ व्याख्याकारों ने इस आयत के उतरने का कारण बताया है कि कुछ मुसलमानों ने *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से यह आज्ञा प्राप्त करनी चाही की सम्मान स्वरूप वह उनको दण्डवत (सजदा) करें । जिस पर यह आयत उतरी। (फ़तहुल क़दीर) और कुछ ने इसके उतरने का कारण यह बताया है कि यहूदियों और इसाईयों ने मिलकर *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से कहा क्या आप यह चाहते हैं कि हम आपकी उस प्रकार अराधना करें जिस प्रकार इसाई आदरणीय ईसा की करते हैं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह हमारी रक्षा करे इस बात से कि हम अल्लाह को छोड़कर किसी अन्य की वंदना करें अथवा किसी को इसका आदेश दें। अल्लाह ने न मुझे इसलिए भेजा है और न इसका आदेश ही दिया है।" इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर उदघृत सीरत इब्ने हिशाम)

[2]अर्थात प्रत्येक नबी से यह वचन लिया गया कि यदि उसके समय में कोई अन्य नबी आया, तो उस पर ईमान लाना तथा उसकी सहायता करना आवश्यक है। जब नबी की उपस्थिति में आने वाले नये नबी पर स्वयं उस नबी को ईमान लाना आवश्यक है, तो उसके अनुयायियों को तो इस नये नबी पर इस आदेशानुसार ईमान लाना अति आवश्यक है, कुछ व्याख्याकारों ने ﴿رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ﴾ से الرسول का भावार्थ लिया है अर्थात आदरणीय मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में सभी नबियों से वचन लिया गया कि यदि उनके समय में वह आ जायें, तो अपना दूतत्व (नबूअत) समाप्त करके उन पर ईमान लाना होगा । परन्तु वास्तविकता यह है कि पहले अर्थ में यह भावार्थ स्वयं आ जाता है। इसलिये क़ुरआन के शब्दों के अनुसार पहला अर्थ ही अधिक उचित है और इस भावार्थ से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नबूअत मोहम्मदी

قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾

करते हो और उस पर मेरा संकल्प ले रहे हो सब ने कहा हमें स्वीकार है, फ़रमाया तो गवाह रहो और मैं स्वयं भी तुम्हारे साथ साक्षी हूँ।

فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) अब इसके बाद भी जो पलट जायें, वह अवश्य अवज्ञाकारी हैं।[1]

اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ

(८३) क्या वह अल्लाह (तआला) के धर्म के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म की खोज में हैं ?

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जवलंत सूर्य के उपरान्त किसी भी नबी का दिया नहीं जल सकता। जैसाकि हदीस में आता है कि एक बार आदरणीय उमर तौरात का एक पन्ना पढ़ रहे थे, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह देखकर बहुत क्रोधित हुए और फ़रमाया :

"والذي نفسي بيده لو أصبح فيكم موسى عليه السلام ثم اتبعتموه و تركتموني لضللتم"

"क़सम है उस शक्ति की जिसके हाथ में मोहम्मद का प्राण है कि यदि मूसा *अलैहिस्सलाम* भी जीवित होकर आ जायें और तुम मुझे छोड़कर उनके अनुयायी वन जाओ तो अवश्य भटक जाओगे।" (मुसनद अहमद उदघृत इब्ने कसीर)

कुछ भी हो अब प्रलय (क़ियामत) तक अनुसरणीय केवल *मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* हैं और मोक्ष उन्हीं के अनुसरण में निर्धारित है। न किसी इमाम का अनुयायी अथवा किसी महात्मा के वचन में। जब अब किसी पैग़म्बर का सिक्का नहीं चल सकता तो किसी अन्य का अनुकरण किस प्रकार हो सकता है ?

[1]यह अहले किताब (यहूदी और ईसाई) तथा अन्य धर्मावलम्बियों को चेतावनी है कि *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के आ जाने के बाद भी उन पर ईमान लाने के वजाये अपने-अपने धर्म का पालन करना इस वचन के विरूद्ध है। जो अल्लाह तआला ने प्रत्येक नबी के द्वारा प्रत्येक उम्मत (समुदायों) से लिया है और इस वचन को तोड़ देना अधर्म है। फ़िसक यहाँ कुफ़्र के अर्थ में है क्योंकि नबूअते मोहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इंकार केवल फ़िसक नही कुफ़्र है।

أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّإِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

जब कि सभी आसमानों वाले और धरती वाले अल्लाह (तआला) के अवज्ञाकारी हैं। स्वेच्छा से हों तो और दबाव से हों तो[1] सभी को उसकी ओर लौटाया जायेगा।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾

(८४) आप कह दीजिए कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हम पर उतारा गया है और जो इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) और इस्माईल (*अलैहिस्सलाम*) और याक़ूब (*अलैहिस्सलाम*) और उनकी संतान पर उतारा गया, और जो कुछ मूसा (*अलैहिस्सलाम*) और ईसा (*अलैहिस्सलाम*) और दूसरे नबियों को अल्लाह (तआला) की ओर से प्रदान किये गये उन सब पर ईमान लाये।[2] हम उनमें से किसी के मध्य अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह (तआला) के आज्ञाकारी हैं।

---

[1]जब आकाश और धरती की कोई वस्तु अल्लाह तआला के सामर्थ्य तथा शक्ति से बाहर नहीं है, चाहे प्रसन्नता से अथवा अप्रसन्नता से, तो तुम उसके समक्ष सिर झुकाने (अर्थात इस्लाम स्वीकारने से) कहाँ भाग रहे हो ? अगली आयत में ईमान लाने की विधि बताकर फिर कहा जा रहा है कि प्रत्येक नबी को प्रत्येक आसमान से उतरी किताब पर बिना किसी विभेद के ईमान लाना आवश्यक है। पुन: कहा जा रहा है कि इस्लाम धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्म स्वीकृत नहीं होगा। किसी अन्य धर्म के अनुयायियों के भाग्य में केवल हानि के और कुछ न होगा।

[2]अर्थात सभी नबियों पर ईमान लाना कि वह अपने-अपने समय में अल्लाह की ओर से भेजे गये थे। तथा उन पर जो किताबें और सूचनात्मक पृष्ठ जो धार्मिक नियमों के लिए उतारे गये, उनके विषय में यह विश्वास रखना कि वह आसमानी किताबें थीं, जो वास्तव में अल्लाह की ओर से उतारी हुई थीं आवश्यक है परन्तु अब पालन केवल क़ुरआन के आदेशानुसार होगा। क्योंकि क़ुरआन ने पिछली किताबों को निरस्त कर दिया है।

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

(८५) और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म की खोज करे उसका धर्म मान्य नहीं होगा और वह परलोक (आख़िरत) में क्षति ग्रस्ताओं में होगा।

كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾

(८६) अल्लाह (तआला) किस प्रकार से उन लोगों को मार्गदर्शन देगा, जो अपने ईमान लाने, रसूल की सत्यता जानने की गवाही देने और अपने पास स्पष्ट तर्क आ जाने के बाद भी अधर्मी हो जायें। अल्लाह (तआला) ऐसे अत्याचारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾

(८७) उनका दण्ड यह है कि उन पर अल्लाह की धिक्कार है एवं फ़रिश्तों (स्वर्गदूतों) की तथा सब लोगों की।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) वह उसमें नित्य रहेंगे न उनसे यातना हलकी की जायेगी तथा न अवकाश दिया जायेगा।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾

(८९) परन्तु जो लोग इसके पश्चात क्षमा याचना एवं सुधार कर लें तो, निश्चय अल्लाह क्षमावान दयावान है।[1]

---

[1]अन्सार में से एक मुसलमान धर्मभ्रष्ट हो गया और मूर्तिपूजकों से जा मिला, परन्तु शीघ्र ही उसे पश्चाताप हुआ और उसने लोगों के द्वारा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक सूचना भिजवायी कि هل لي من توبة (क्या मेरी क्षमा स्वीकार हो सकती है) उस पर यह आयत उतरी। इससे ज्ञात हुआ कि मुर्तदद का दण्ड यद्यपि कठोर है, क्योंकि उसने सत्य को पहचान लेने के पश्चात ईर्ष्या, द्वेष एवं द्रोह से सत्यता से मुँह फेरा और इंकार किया। परन्तु यदि कोई स्वच्छ दिल से क्षमा माँगे और अपना सुधार कर ले, तो अल्लाह तआला क्षमा करने वाला और कृपालु है, उसकी पश्चाताप मान्य है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَّن تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ﴿٩٠﴾

(९०) नि:संदेह जो लोग अपने ईमान (विश्वास) के पश्चात कुफ़्र (अविश्वास) करें फिर अविश्वास में बढ़ जायें[1] उनकी क्षमा-याचना कदापि स्वीकार न की जायेगी [2] तथा यही कुमार्ग हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم مِّلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ بِهِ

(९१) नि:संदेह जो लोग क़ाफ़िर हों और मरते समय तक विश्वास रहित रहे उनमें से यदि कोई धरती भर सोना (स्वर्ण) दे यद्यपि प्रतिशोध में हो तो भी कदापि स्वीकार्य न होगा

[1]इस आयत में उनके दण्ड का वर्णन हो रहा है, जो मुर्तदद होने के बाद, क्षमा न माँगे तथा इंकार की स्थिति में मर जाये।

[2]इससे वह क्षमा का तात्पर्य है, जो मृत्यु के समय माँगी जाये। वरन् क्षमा का द्वार प्रत्येक व्यक्ति के लिए हर समय खुला हुआ है। इससे पहली आयत में क्षमा की स्वीकृति का वर्णन है। इसके अतिरिक्त क़ुरआन में अल्लाह तआला ने बार-बार क्षमा के महत्व तथा स्वीकार किये जाने का वर्णन किया है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

و هو الذي يقبل التوبة عن عباده

"वह (अल्लाह) ही है जो अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता है।"

(*अश्-शूरा-२५*)

ألم يعلموا ان الله هو يقبل التوبة عن عباده

"क्या उन्होंने नहीं जाना कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता है।"

(*अत्तौबा-१०४*)

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ۝٩١

इन्हीं के लिए दुखद यातना है और उनका कोई सहायक नहीं ।[1]

---

[1]हदीस में आता है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन एक नरकवासी से कहेगा कि यदि तेरे पास दुनियाँ भर का सामान हो तो क्या तू इस आग की यातना के बदले देना पसन्द करेगा ? वह कहेगा 'हाँ' अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि दुनियाँ में मैंने तो इससे सरल बात की माँग की थी कि मेरे साथ किसी को सम्मिलित न करना, परन्तु तू सम्मिलित करने से नहीं रूका । (मुसनद अहमद, अल-बुख़ारी और मुस्लिम व इब्ने कसीर) इससे ज्ञात हुआ कि काफ़िर के लिए नरक की स्थायी यातना है। दुनियाँ में यदि उसने कोई पुण्य का कार्य किया तो अविश्वास के कारण वह भी व्यर्थ हो गया। जैसाकि हदीस में है कि अब्दुल्लाह बिन जदआन के विषय में पूछा गया कि वह अतिथियों का स्वागत करता, गरीबों की सहायता करता था और बन्धुआ लोगों को आज़ाद करता था, क्या उसके यह कर्म उनके लिए हितकारी होंगे ? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया 'नहीं' क्योंकि उसने एक दिन भी अपने प्रभु से अपने पापों के लिए क्षमा नहीं माँगी (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान) इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति वहाँ धरती भर सोना किसी बन्दी को मुक्त कराने के लिए मूल्य स्वरूप (फ़िदया कहते हैं) दे और चाहे कि वह नरक की यातना से बच जाये, तो यह सम्भव नहीं होगा प्रथम तो वहाँ किसी के पास होगा क्या ? और यदि मान भी लिया जाये कि उसके पास दुनियाँ भर के कोषों का धन उपलब्ध हो और वह उन्हें देकर यातना से छूट जाये, तो यह भी नहीं होगा। क्योंकि उससे वह प्रतिशोध अथवा फ़िदया स्वीकार ही न किया जायेगा। जिस प्रकार से दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ﴾

उससे कोई बदला स्वीकार नहीं किया जायेगा और न कोई सिफ़ारिश उसे लाभ पहुँचायेगी। (*अल-बक़र:-१२३*)

﴿لَا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ﴾

"वहाँ न क्रय-विक्रय होगा न कोई मित्रता।" (*सूर: इब्राहीम-३१*)

(९२) जब तक तुम अपनी प्रिय धन से अल्लाह (तआला) के मार्ग में न व्यय करोगे, कदापि भलाई न पाओगे।[1] और जो कुछ तुम व्यय करो उसे अल्लाह (तआला) भली-भाँति जानता है।[2]

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٩٢﴾

(९३) तौरात उतरने से पूर्व ही (आदरणीय) याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने जिस चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लिया था उसके अतिरिक्त सभी खाने इस्राईल की सन्तान के

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ۗ قُلْ فَأْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَا

1 بِر (बिर्र) का अर्थ है पुण्य व भलाई। परन्तु यहाँ पर अर्थ है सत्कार्य अथवा स्वर्ग (फ़तहुल क़दीर)। हदीस के अनुसार जब यह आयत उतरी, उस समय मदीनाँ में आदरणीय अबू तलहा अंसारी एक धनवान व्यक्ति थे, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और कहा कि ऐ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! वेरोहा बाग़ (एक बाग का नाम है) मुझे अत्यधिक प्रिय है, मैं उसे अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दान करता हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "वह तो अत्याधिक लाभदायक माल है, मेरा विचार यह है कि तुम उसे अपने सम्बन्धियों में बाँट दो।" अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परामर्श से उन्होंने अपने सम्बन्धियों और चचेरे भाईयों में बाँट दिया। (मुसनद अहमद) इस प्रकार अन्य कई सहाबा ने अपनी रूचिकर चीज़े अल्लाह के मार्ग में बाँटीं। مِمَّا تُحِبُّونَ में (مِنْ) कुछ के अर्थ में प्रयोग हुआ है। अर्थात सभी प्रियवर धन को बाँटने का आदेश नहीं हुआ है। वल्कि प्रियवर चीज़ों में कुछ। इसलिए प्रयत्न यही करना चाहिए कि अच्छी वस्तु दान किया जाये। यह श्रेष्ठता एवं पूर्ण पद प्राप्त करने की विधि है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि कुछ कम अच्छी, अथवा अपनी आवश्यकता से अधिक अथवा प्रयोग की हुई पुरानी चीज़ का दान नहीं किया जा सकता अथवा उसका बदला नहीं मिलेगा। इस प्रकार की चीज़ों का दान करना भी उचित है तथा अल्लाह तआला के यहाँ बदला भी मिलेगा। परन्तु विशेषता तथा श्रेष्ठता प्रिय चीज़ के दान करने में है।

2 तुम जो कुछ भी व्यय करोगे अच्छी अथवा बुरी चीज़ अल्लाह उसे जानता है। उसके अनुसार बदला प्रदान करेगा।

إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٩٣﴾

लिए हलाल थे। आप कह दीजिए कि यदि तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और पढ़ सुनाओ।[1]

فَمَنِ ٱفْتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٩٤﴾

(९४) उसके बाद भी जोलोग अल्लाह (तआला) पर झूठा लांछन लगायें वही अत्याचारी हैं।

قُلْ صَدَقَ ٱللَّهُ ۗ فَٱتَّبِعُوا۟ مِلَّةَ إِبْرَٰهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿٩٥﴾

(९५) कह दीजिए कि अल्लाह (तआला) सच्चा है। तुम सभी इब्राहीम हनीफ़ की मिल्लत का अनुकरण करो, जो मूर्तिपूजक न थे।

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِى بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿٩٦﴾

(९६) निःसंदेह (अल्लाह तआला) का पहला घर जो मानव के लिये बनाया गया वही है, जो मक्का (नगरी) में है।[2] जो पूरे विश्व के लिये शुभ एवं मार्ग दर्शक है।

---

[1]यह और इस आयत के बाद की दो आयतें यहूदियों के इस विरोध पर उतरीं कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि आप इब्राहीम के धर्म के अनुयायी होने का दावा करते हैं और ऊँट का माँस भी खाते हैं, जबकि ऊँट का माँस और दूध दोनों इब्राहीम के धर्म में हराम था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यहूदियों का दावा ग़लत है। आदरणीय इब्राहीम के धर्म में यह चीज़ें हराम नहीं थीं परन्तु कुछ चीज़ें इस्राईल (आदरणीय याक़ूब) ने अपने ऊपर हराम कर ली थीं। और वह यही ऊँट का माँस तथा दूध था (इसका कारण एक मन्नत अथवा रोग था) और आदरणीय याक़ूब का यह कर्म भी तौरात उतरने के बहुत पहले का है। इसलिए कि तौरात तो आदरणीय इब्राहीम तथा आदरणीय याक़ूब के बहुत बाद उतरी है, फिर तुम किस प्रकार उपरोक्त सवाल कर सकते हो? इसके अतिरिक्त तौरात में तुम पर (यहूदियों पर) तुम्हारे अत्याचारों के कारण कुछ खाद्य हराम किया गया था (*सूरः अल- अनाम*-१४६ तथा *अल-निसा*-१६०) यदि तुम्हें विश्वास नहीं है, तो तौरात लाओ और उसे पढ़कर सुनाओ। जिससे स्पष्ट हो जायेगा कि आदरणीय इब्राहीम के समय में यह खाद्य निषेध नहीं थे और तुम पर भी कुछ चीज़ें हराम की गयी थीं, वह तुम्हारे अत्याचारों अथवा कुकर्मों के कारण हुई थीं अर्थात उनको हराम करने का कारण भी तुम्हारे कुकर्मों का दण्ड था। (ऐसरुत्तफ़ासीर)

[2]यह यहूदियों के दूसरे विरोध का उत्तर है, वह कहते थे कि बैतुल मक़दिस सबसे पहला इबादत का घर धरती पर बना। मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा उनके साथियों ने अपना क़िबला क्यों बदल डाला? इसके उत्तर में कहा गया कि तुम्हारा यह दावा भी ग़लत

فِيهِ ءَايَٰتٌۢ بَيِّنَٰتٌ مَّقَامُ إِبْرَٰهِيمَ ۖ وَمَن دَخَلَهُۥ كَانَ ءَامِنًا ۗ وَلِلَّهِ عَلَى ٱلنَّاسِ حِجُّ ٱلْبَيْتِ مَنِ ٱسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ عَنِ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٩٧﴾

(९७) जिसमें स्पष्ट निशानियाँ हैं, "मुक़ामे इब्राहीम" (एक पत्थर है जिस पर ख़ाना काअबा के निर्माण के समय आदरणीय इब्राहीम खड़े होते थे और वह पत्थर आवश्यकतानुसार ऊपर उठता और नीचे आता) है, इसमें जो आ जाये निर्भय हो जाता है।[1] अल्लाह (तआला) ने उन लोगों पर जो उसकी ओर मार्ग पा सकते हों, उस घर का हज्ज अनिवार्य कर दिया है।[2] और जो कोई कुफ़्र करे, तो अल्लाह (तआला) पूरे विश्व से निस्पृह है।[3]

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَٱللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾

(९८) आप कह दीजिए कि ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों का इंकार क्यों करते हो? और जो कुछ करते हो, अल्लाह (तआला) उस पर गवाह है।

है। पहला घर जो सर्वप्रथम अल्लाह की इबादत के लिए धरती पर निर्मित किया गया है, वह मक्का में है।

[1]इसमें हत्या, रक्तपात, शिकार यहाँ तक कि पेड़ों को काटना भी निषेध कर दिया गया है। (सहीहैन)

[2]"मार्ग पा सकते हों।" का अर्थ यह है कि मार्ग व्यय का प्रबन्ध हो, अर्थात इतना धन हो कि मार्ग व्यय सुविधापूर्वक पूरा हो जाये। इसके अतिरिक्त प्रबन्ध से अर्थ यह भी है कि मार्ग में शांति हो। और जान व माल सुरक्षित हो। इसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि स्वास्थ्य यात्रा योग्य हो। इसके अतिरिक्त स्त्री के लिए उसका महरम आवश्यक है। (फ़तहुल क़दीर) यह आयत हर उस व्यक्ति के लिए जो इस प्रकार का प्रबन्ध करे उसके लिए हज अनिवार्य होने का तर्क है। और हदीसों से इस विषय का स्पष्टीकरण होता है कि जीवन में एक बार हज अनिवार्य है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3]हज का प्रबन्ध होने के बाद भी हज न करना क़ुरआन ने इसे अधर्म से सम्बोधित किया है। जिससे हज के अनिवार्य होने को और भी बल मिलता है, हदीसों में भी ऐसे व्यक्ति को कठोर चेतावनी दी गयी हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ تَبْغُونَهَا عِوَجًا وَأَنتُمْ شُهَدَآءُ ۗ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٩﴾

(९९) उन अहले किताब से कह दीजिए कि तुम अल्लाह (तआला) के मार्ग (धर्म) से जो ईमान लाये हैं उन्हें क्यों रोकते हो और उसमें दोष ढूँढ़ते हो, जबकि तुम स्वयं गवाह हो ?[1] और अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों से अनजान नहीं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِن تُطِيعُوا۟ فَرِيقًا مِّنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ يَرُدُّوكُم بَعْدَ إِيمَٰنِكُمْ كَٰفِرِينَ ﴿١٠٠﴾

(१००) ऐ ईमानवालो ! यदि तुम अहले किताब की किसी गिरोह की बातें मानोगे, तो वह तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात तुम्हें कुफ़्र की ओर फेर देंगे।[2]

---

[1]अर्थात तुम जानते हो कि यह इस्लाम धर्म सत्य है। इसके प्रचारक अल्लाह के सच्चे संदेशवाहक हैं, क्योंकि यह बातें उन किताबों में लिखी हैं, जो तुम्हारे नबियों पर उतारी गयीं, और जिन्हें तुम पढ़ते हो।

[2]यहूदियों की चालबाज़ी और धोखबाज़ी और उनकी ओर से मुसलमानों को भटकाने की योजनाओं को बताने के बाद, मुसलमानों को चेतावनी दी जा रही है कि तुम भी उनके हथकंडों से सावधान रहो और क़ुरआन की तिलावत करने और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपस्थिति होने के बाद भी तुम लोग यहूदियों के जाल में न फँस जाओ। इसकी पृष्ठभूमि तफ़सीर के कथन पर इस प्रकार से वर्णन हुआ है कि अन्सार के दोनों क़बीले औस तथा ख़ज़रज एक संघ में बैठे आपस में बात कर रहे थे कि शास बिन क़ैस यहूदी वहाँ से गुज़रा और उनको प्रेमपूर्वक बात करते देखकर जल गया कि यह पहले एक-दूसरे के कट्टर शत्रु थे और इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद एक-दूसरे के साथ सौहार्द पूर्ण वातावरण में रह रहे हैं। उसने एक यहूदी नवयुवक को यह काम दिया कि वह औस और ख़जरज को उनके बुऑस युद्ध की याद दिलाये, जो उनके मध्य हिजरत से कुछ दिन पूर्व हुआ था और उन्होंने जो एक-दूसरे के विरुद्ध गीत और कवितायें बनायीं थी, वह उनको सुनाये। अत: उसने ऐसा ही किया जिस से दोनों क़बीलों के मध्य पुराना वैमनस्य फिर से जागृत हो गया और वे एक-दूसरे को बुरा-भला कहने लगे, और यहाँ तक कि एक-दूसरे के विरुद्ध हथियार उठाने के लिए तैयार हो गये, निकट था कि वह एक-दूसरे की हत्या करना प्रारम्भ कर देते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आ गये और उन्हें समझाया और वह रुक गये, इस पर यह आयतें भी और आगामी आयतें भी उतरीं। (तफ़सीर इब्ने कसीर, व फ़तहुल क़दीर आदि)

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَ اَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝١٠١

(१०१) और (अर्थात यह स्पष्ट है) तुम किस प्रकार कुफ़्र कर सकते हो ? जबकि तुम पर अल्लाह (तआला) की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुममें रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उपस्थित हैं। जो अल्लाह (तआला) के धर्म को मजबूती से पकड़ ले।[1] निःसंदेह उसे सीधा मार्ग दिखा दिया गया है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝١٠٢

(१०२) ऐ ईमानवालों ! अल्लाह से उतना डरो जितना उससे डरना चाहिए।[2] और (देखो) मरते दम तक मुसलमान ही रहना।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ

(१०३) और अल्लाह (तआला) की रस्सी को सब मिलकर बलपूर्वक थाम लो।[3] और गुटबन्दी न करो।[4] और अल्लाह (तआला) की

---

[1]एतिसाम बिल्लाह (اعتصام بالله) का अर्थ है अल्लाह के धर्म को मज़बूती से पकड़ लेना, और इसका पालन करने में आलस्य न करना।

[2]इसका अर्थ यह कि इस्लाम धर्म के आदेश एवं अनिवार्य कर्म पूर्णरूप से किये जायें और मना किये गये काम के निकट भी न जायें। कुछ लोग कहते हैं कि इस आयत के उतरने से सहावा व्याकुल हुए, तो अल्लाह तआला ने आयत ﴿فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ﴾ (अल्लाह से यथा सम्भव डरो) उतारी। परन्तु इसे निरस्त करने के बजाय स्पष्टकारी कहा जाये तो अधिक उचित होगा, क्योंकि निरस्त वहीं मानना चाहिए जहाँ दोनो आयतों की समानता अथवा अनुकूलता असम्भव हो। और यहाँ समानता सम्भव है। अर्थ यह होगा कि اتقو الله حق تقاته ما استطعتم (अल्लाह से इस प्रकार डरो, जिस प्रकार अपनी शक्ति के अनुसार डर सकते हो) (फ़तहुल क़दीर)

[3]अल्लाह के भय के वाद (सब मिलकर अल्लाह कि रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो) की शिक्षा देकर यह स्पष्ट किया जा रहा है कि मोक्ष भी इन्हीं दो नियमों में है और एकता भी इन्हीं नियमों पर आधारित हो सकती है तथा शेष रह सकती है।

[4] ولا تفرقوا (और गुटबन्दी न करो) के द्वारा गुटों में बंटने से रोक लगा दी गयी है। इसका अर्थ यह है कि उन दो नियमों से जिनका वर्णन हो चुका है मुँह फेर लेने के कारण आपस में फूट पड़ सकती है और तुम अलग-अलग गुटों में बंट जाओगे। अतः गुटबन्दी

قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِنْهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾

उस समय की कृपा को याद करो जब तुम लोग आपस में एक-दूसरे के शत्रु थे। उसने तुम्हारे हृदय में प्रेम डाल दिया और तुम उसकी कृपा से भाई-भाई हो गये। और तुम आग के गड्ढे के किनारे तक पहुँच चुके थे, तो उसने तुम्हें बचा लिया। अल्लाह (तआला) इसी प्रकार अपनी निशानियों का वर्णन करता है, ताकि तुम मार्ग पा सको।

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾

(१०४) और तुममें से एक गिरोह ऐसा होना चाहिए, जो भलाई की ओर बुलाये और सत्कर्मों का आदेश दे और कुकर्मों से रोके और यही लोग सफल होने वाले हैं।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٥﴾

(१०५) और तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने अपने पास स्पष्ट तर्क आ जाने के उपरान्त भी फूट और भेद डाला।[1] इन्हीं के लिए कठोर यातना है।

का इतिहास देख लीजिए यही कारण स्पष्ट होकर सामने आयेंगे। क़ुरआन और हदीस को समझने और उसके भाष्य तथा व्याख्या में कुछ मतभेद, यह गुटबन्दी का कारण नहीं है, यह मतभेद तो सहाबा तथा ताबईन के समय में भी था, परन्तु मुसलमान गुटों में नहीं बँटे थे। क्योंकि आपसी मतभेद के बाद भी सभी के पालन का केन्द्र और विश्वास का बिन्दु एक ही था और वह है क़ुरआन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस, परन्तु जब व्यक्तित्व के नाम पर विचारों का प्रदर्शन होने लगा, तो पालन और विश्वास के यह केन्द्र तथा बिन्दु बदल गये। अपने-अपने व्यक्तियों और उनके कथन तथा विचार प्रथम स्थान पर तथा अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन तथा आदेश द्वितीय स्थान पर कर दिये गये। और यहीं से उम्मते मुसलिमा में गुटबन्दी आरम्भ हुई। जो दिन प्रतिदिन बढ़ती ही गयी और अति सुदृढ़ हो गयी।

[1]ज्वलंत तर्क आ जाने के बाद भेद डाला। इससे ज्ञात हुआ कि यहूदी और ईसाईयों के मध्य भेद का यह कारण न था कि उन्हें सत्य का पता न था। और उसके तर्क से अनजान थे। बल्कि वास्तव में उन्होंने सब कुछ जानते बूझते हुए अपने सांसारिक लाभ और स्वार्थ के

(१०६) जिस दिन कुछ मुख उज्जवल होंगे और कुछ काले।[1] काले मुख वालों (से कहा जायेगा) कि तुमने ईमान लाने के बाद अविश्वास क्यों किया ? अपने इंकार की यातना चखो।

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۣ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾

(१०७) और उज्जवल मुख वाले अल्लाह (तआला) की रहमत में होंगे और उसमें सदैव रहेंगे।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ۭ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٧﴾

(१०८) (हे नबी) ! हम इन सत्य आयतों का पाठ (तिलावत) आप पर कर रहे हैं और अल्लाह (तआला) का विचार लोगों पर अत्याचार करने का नहीं है।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٨﴾

(१०९) और अल्लाह (तआला) के लिए है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है और अल्लाह (तआला) की ओर सभी कर्मों को लौटना है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١٠٩﴾

(११०) तुम सर्वश्रेष्ठ उम्मत (समुदाय) हो जो लोगों के लिए पैदा की गयी है कि तुम सत्कर्मों का आदेश देते हो और कुकर्मों से रोकते हो, और अल्लाह (तआला) पर ईमान

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۭ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ

लिये मतभेद तथा भेद का मार्ग पकड़ा था और उस पर डटे हुए थे। क़ुरआन करीम ने विभिन्न शैली और पध्वता से बार-बार इस वास्तविकता की ओर संकेत किया है। और इससे दूर रहने पर बल दिया है। परन्तु खेद है कि इस उम्मत के भेदुत्पादकों ने भी ठीक वही रीति पकड़ रखा है कि सत्य और उसके स्पष्ट तर्क उन्हें ठीक प्रकार से ज्ञात हैं, परन्तु वह अपने भेद-भाव पर जमे हुए हैं और अपनी पूरी मांसिक अर्हता पूर्व के समुदायों की भांति कल्पना एवं हेर-फेर के घृणित कार्य में व्यर्थ कर रहे हैं।

[1]आदरणीय इब्ने अब्बास (رضى الله عنهما) ने इससे अहले सुन्नत वल जमाअत और अहले बिदअत तात्पर्य लिया है। (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर) इससे ज्ञात हुआ कि इस्लाम वही है जिस पर अहले सुन्नत वल जमाअत कार्यरत हैं। और अहले बिदअत एवं विरोधुत्पादक लोग इस्लाम के उस वरदान से वंचित हैं, जो मोक्ष का कारण है।

خَيْرًا لَّهُمْ ۚ مِّنْهُمُ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١١٠﴾

रखते हो ।[1] यदि अहले किताब ईमान लाते तो उनके लिए उत्तम होता । उनमें ईमानवाले भी हैं ।[2] परन्तु अधिकतर लोग फ़ासिक़ हैं ।

لَن يَضُرُّوكُمْ إِلَّا أَذًى ۖ وَإِن يُقَاتِلُوكُمْ يُوَلُّوكُمُ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنصَرُونَ ﴿١١١﴾

(१११) यह लोग तुम्हें सताने के अतिरिक्त और अधिक कुछ हानि नहीं पहुँचा सकते । और यदि तुमसे लड़ाई हो तो पीठ फेर लेंगे । फिर वे सहायता नहीं दिये जायेंगे ।[3]

---

[1]इस आयत मे मुस्लिम उम्मत को सर्वश्रेष्ठ समुदय कहा गया है । और उसका कारण भी बताया गया है कि जो अच्छे कर्मों का आदेश करते हैं और बुरे कर्मो से रोकते हैं और अल्लाह पर ईमान रखते हैं अर्थात यह समुदाय यदि इन श्रेष्ठ विशेषताओं से विभूषित रहेगा, तो सर्वश्रेष्ठ समुदाय है अन्यथा इस अलंकरण से वंचित कर दिया जा सकता है । उसके उपरान्त अहले किताब की आलोचना से भी इस बिन्दु का स्पष्टीकरण ज्ञात होता है कि जो भी सत्कर्म का आदेश और कुकर्म का अवरोध नहीं करेगा, वह भी अहले किताब के समान होगा । उनकी विशेषता का वर्णन किया गया है ।

﴿كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَن مُّنكَرٍ فَعَلُوهُ﴾

"वह एक-दूसरे को बुराई से नहीं रोकते थे ।" (*अल-मायदा*-७९)

और यहाँ इसी आयत में उनमें से अधिकतर को धर्महीन कहा गया है । सत्कर्मो का आदेश देना यह सामान्य लोगों के लिए अनिवार्य है अथवा विद्वानों का दायित्व है । अधिकतर विद्वानों (आलिमों) का विचार है कि यह विशिष्ठ व्यक्तियों के लिए अनिवार्य है अर्थात विद्वानों का कर्त्तव्य है कि इस दायित्व को पूरा करते रहें । क्योंकि सत्कर्म और कुकर्म धार्मिक नियम के अन्तर्गत अच्छाई-बुराई का ज्ञान उन्हीं को है । उनके द्वारा प्रचार-प्रसार एवं आमन्त्रण के कर्त्तव्य के अदा करने के कारण उम्मत के अन्य सभी व्यक्तियों की ओर से यह कर्त्तव्य समाप्त हो जायेगा । जैसे जिहाद (धर्मयुद्ध) भी सामान्य परिस्थितियों में साधारण कर्त्तव्य है अर्थात एक गिरोह की ओर सें अदायगी से शेष सभी का कर्त्तव्य समाप्त हो जायेगा ।

[2]जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि जो मुसलमान हो गये थे । परन्तु उनकी संख्या कम थी अत: مِنهم में مِن कुछ के अर्थ के लिए प्रयोग हुआ है ।

[3] أذى (सताने) से तात्पर्य मौखिक रूप से कलंकित करना तथा मिथ्यावाद एवं आरोप है जिससे दिल को सामयिक दु:ख अवश्य होता है, परन्तु यह रणक्षेत्र में तुम्हें पराजित नहीं

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا ثُقِفُوٓا إِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللَّهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُو بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿١١٢﴾

(११२) यह प्रत्येक स्थान पर अपमानित हैं, यह और बात है कि अल्लाह (तआला) की अथवा लोगों की शरण में हों ।[1] यह अल्लाह के क्रोध के अधिकारी हो गये । और उन पर निर्धनता थोप दी गयी । यह इसलिए कि यह लोग अल्लाह (तआला) की आयतों को नहीं मानते थे और अकारण नबियों की हत्या करते थे । यह बदला इनकी अवज्ञता और सीमा लांघने का है ।[2]

कर सकते । अतएव ऐसा ही हुआ । मदीने से भी यहूदियों को निकलना पड़ा और फिर ख़ैबर भी विजयी हुआ । और वह वहाँ से भी निकाले गये । इसी प्रकार सीरिया के क्षेत्र में ईसाईयों को भी मुसलमानों से पराजित होना पड़ा । यहाँ तक कि ईसाईयों ने क्रुसुएड (ईसाई-मुस्लिम युद्ध) के द्वारा बदला लेने का प्रयत्न किया और बैतुल मक़दिस पर अधिकार कर लिया । परन्तु उसे सुल्तान सलाहुउद्दीन अय्यूबी ने ९० वर्ष बाद स्वतन्त्र कर लिया । परन्तु अब मुसलमानों के ईमान की कमज़ोरी के कारण यहूदी और ईसाईयों की सहभागी योजनाओं के कारण बैतुल मक़दिस फिर मुसलमानों के हाथ से निकल गया । परन्तु एक समय ऐसा आयेगा कि यह परिस्थिति बदल जायेगी । विशेष रूप से आदरणीय ईसा के आने के बाद ईसाई धर्म की समाप्ति तथा मुसलमानों की विजय श्री आवश्यक है । जैसाकि सहीह हदीस में है । (इब्ने कसीर)

[1]यहूदियों का जो अपमान अथवा गत्यवरोध अल्लाह के क्रोध के कारण उन पर है, उससे कुछ समय के लिए बचाओ के दो रास्ते बताये गये हैं । एक तो वह अल्लाह की शरण में आ जायें अर्थात इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें । अथवा किसी इस्लामी राज्य में शरणार्थी कर दे कर शरणार्थी के रूप में निवास करें । दूसरे यह कि लोगों की शरण प्राप्त हो जाये इसके दो भावार्थ वर्णित किये गये हैं । एक यह कि इस्लामी राज्य के अतिरिक्त एक सामान्य मुसलमान उनको शरण दे दे, जैसे कि प्रत्येक मुसलमान को यह अधिकार प्राप्त है और इस्लामी राज्य के राज्याधिकारियों को यह चेतावनी दी गयी है कि वह किसी छोटे से छोटे मुसलमान व्यक्ति द्वारा दी गयी शरण को रद्द न करें । दूसरा यह कि किसी बडी ग़ैर मुस्लिम शक्ति की सहायता उनको प्राप्त हो जाये । क्योंकि الناس सामान्य है, इसमें मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम दोनों सम्मिलित हैं ।

[2]यह उनके कुकर्म हैं जिनके कारण उन पर यह अपमान थोपा गया है ।

(११३) यह सारे के सारे एक जैसे नहीं, बल्कि इन अहले किताब में एक स्थिर गिरोह (सत्य पर) भी है। जो रात्रि में अल्लाह की आयत पढ़ते एवं सजद: करते हैं।	لَيْسُوا سَوَاءً ۗ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ﴿١١٣﴾
(११४) यह अल्लाह तथा प्रलय के प्रति विश्वास रखते हैं। भलाईयों का आदेश करते और बुराईयों से रोकते हैं। और भलाई के कार्यों में शीघ्रता करते हैं। यह सदाचारियों में से हैं।	يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ ۖ وَأُولَٰئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٤﴾
(११५) और यह जो कुछ भी भलाई करें उसका अनादर न किया जायेगा और अल्लाह (तआला) परहेज़गारों को अच्छी तरह जानता है।[1]	وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿١١٥﴾
(११६) नि:संदेह विश्वासहीनों को उनके धन और उनकी सन्तान अल्लाह के यहाँ कुछ काम न आयेंगी, यह तो नरकीय हैं जिसमें वे सदा वास करेंगे।	إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾

---

[1]यह सारे अहले किताब नहीं हैं जिनका अपमान पिछली आयत में किया गया। बल्कि उनमें कुछ अच्छे लोग भी हैं। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, असद बिन उबैद, सालबा बिन साय: और उसैद बिन साय: आदि जिन्हें अल्लाह तआला ने इस्लाम स्वीकार करने का सुअवसर प्रदान किया और उनमें ईमान और अल्लाह के डर की विशेषतायें भी पायी जाती हैं। वह अल्लाह से प्रसन्न हुए और अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ। قَائِمَةٌ का अर्थ है धार्मिक नियम का पालन तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण करने वाले। يَسْجُدُون का अर्थ है रातों को खड़े होते हैं अर्थात तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते हैं और नमाज़ों में तिलावत (पाठ) करते हैं। इस स्थान पर أمر بالمعروف का अर्थ कुछ ने यह किये हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का आदेश देते हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विरोध करने से रोकते हैं। इसी गिरोह का वर्णन आगे भी किया गया है।

﴿وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ﴾ (आले-इमरान-१९९)

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

(११७) वह जो भी इस संसारिक जीवन में ख़र्च करते हैं उस वायु के समान है जिसमें पाला हो जो किसी अत्याचारी क़ौम के खेत को लगकर उसका नाश कर दे ।[1] अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु वह स्वतः अत्याचार कर रहे थे ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ

(११८) ऐ ईमानवालो ! तुम अपना हार्दिक मित्र ईमानवालों के अतिरिक्त किसी अन्य को न बनाओ ।[2] (तुम नहीं देखते दूसरे लोग तो)

---

[1]क़ियामत के दिन काफ़िरों के धन काम आयेंगे न सन्तान, यहाँ तक कि भलाई के कामों में व्यय किया हुआ धन भी व्यर्थ हो जायेगा । और उनकी तुलना उस पाले की जैसी है जो हरी-भरी खेती को जलाकर नष्ट कर देता है । अत्याचारी इन खेतियों को देखकर प्रसन्न हो रहे होते हैं और लाभ की आशा करते हैं कि सहसा उनकी आशायें मिट्टी में मिल जाती हैं । इससे ज्ञात हुआ कि जब तक ईमान नहीं होगा तब तक हितकर्मों में धन व्यय करने वालों की दुनियाँ में चाहे जितनी प्रसिद्धि क्यों न हो । परलोक में उन्हें उसका बदला कुछ न प्राप्त होगा । वहाँ तो उनके लिए नित्य नरक वास की यातना ही है ।

[2]यह विषय पहले भी व्यतीत हो चुका है, यहाँ उसकी विशेषता के कारण पुर्नावृत्ति हो रही है । بطانة अरबी शब्दकोष के अनुसार हार्दिक मित्र अर्थात भेदी को कहा जाता है । काफ़िर और मूर्तिपूजक मुसलमानों के लिए जो भावना और प्रयत्न रखते हैं, उनमें से जिनको स्पष्ट रूप से कहते हैं और जो अपने दिलों में छिपाकर रखते हैं । अल्लाह तआला ने उन सभी की ओर संकेत दे दिया है । यह और इस प्रकार की अन्य आयतों के आधार पर आलिमों और विचारकों ने लिखा है कि एक इस्लामी राज्य में ग़ैर मुस्लिम को महत्तवपूर्ण पदों पर रखना उचित नहीं है । कहा जाता कि आदरणीय अबू मूसा अशअरी रज़ी अल्लाह अन्हु ने एक ज़िम्मी (ग़ैर मुस्लिम) को लिपिक (क्लर्क) रख लिया, आदरणीय उमर (रज़ी अल्लाह अन्हु) को जब यह मालूम हुआ, तो आपने उन्हें बहुत डाँटा और कहा कि "तुम उन्हे निकट न करो, जबकि अल्लाह ने उन्हें दूर किया है, उनको सम्मानित न करो, जबकि अल्लाह ने उनको अपमानित किया है और उन्हें विश्वस्त तथा मर्मज्ञ मत बनाओ, जबकि अल्लाह ने उन्हें अविश्वस्त कहा है ।" आदरणीय उमर (रज़ी अल्लाह अन्हु) ने इसी आयत से यह भावार्थ निकालते हुए कहा था । इमाम क़ुर्तबी कहते हैं, "इस समय अहले किताब को सचिव और न्यासिक बनाने के कारण ही परिस्थितियाँ बदल गयी हैं, इसी कारण मूर्ख लोग प्रमुख तथा मन्त्री बन गये हैं ।" (तफ़सीर क़ुर्तबी) दुर्भाग्य से आज

قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾

तुम्हारी तबाही में कोई कसर उठा नहीं रखते, वह तो चाहते यह हैं कि तुम दुख में पड़ो।[1] उनकी शत्रुता तो स्वयं उनके मुख से भी स्पष्ट हो चुकी है और वह जो उनके सीनों में छिपा है। वह बहुत अधिक है। हमने तुम्हारे लिए आयतों का वर्णन कर दिया तुम बुद्धिमान हो (तो विचार करो)

هَا أَنتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾

(११९) हाँ, तुम तो उनसे प्रेम करते हो।[2] और वह तुमसे प्रेम नही करते, तुम पूरी किताब को मानते हो और (वह नहीं मानते फिर प्रेम कैसा ?) यह तुम्हारे समक्ष तो अपने ईमान को स्वीकार करते हैं, परन्तु एकान्त में क्रोध में ऊँगलियाँ चबाते हैं।[3] कह दो अपने क्रोध में ही मर जाओगे। अल्लाह तआला सीनों की छुपी बातों को अच्छी तरह जानता है।

के इस्लामी राज्य में क़ुरआन करीम के इस अत्यधिक महत्तवपूर्ण आदेश को प्रमुखता नहीं दी जा रही है और इसके विपरीत ग़ैर मुस्लिम बड़े-बड़े और महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं। जिनकी हानियाँ प्रत्यक्ष हैं। यदि इस्लामी राज्य अपनी आन्तरिक और निर्देश दोनों नीतियों में इस आदेश का पालन करें तो अवश्य बहुत सी अशान्ति तथा हानियों से सुरक्षित रह सकते हैं।

[1] لا يألون का अर्थ है आलस्य तथा कमी नहीं करेंगे। خبالا के अर्थ हैं उपद्रव और विनाश। مَا عَنِتُّمْ का अर्थ है जिससे तुम कठिनाई में पड़ो। عنت का अर्थ कठिनाई है।

[2] तुम इन मुनाफ़िक़ों की नमाज़ और दिखावे के ईमान के कारण उनके विषय में धोखे में पड़ जाते हो और उनसे प्रेम करते हो।

[3] عَضَّ يعض का अर्थ दाँत से काटने के हैं। यह उनके क्रोध की अधिकता व तीव्रता का वर्णन है, जैसाकि अगली आयत ﴿إِن تَمْسَسْكُمْ﴾ में भी उनकी इसी दशा को स्पष्ट किया जा रहा है।

(१२०) तुम्हें यदि भलाई मिले तो उन्हें बुरा लगता है। (हाँ), यदि बुराई पहुँचे तो प्रसन्न होते हैं।[1] यदि तुम धैर्य रखो और परहेज़गारी करो, तो उनकी चाल तुम्हे हानि नहीं पहुँचायेगी।[2] अल्लाह (तआला) ने उनके कर्मों को घेर रखा है।

إِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ز
وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا
بِهَا ۖ وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا
يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ
بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾ ع

(१२१) (ऐ नबी ! उस समय को भी याद करो) जब प्रात: ही आप अपने घर से निकल कर मुसलमानों को रणक्षेत्र में लड़ाई के मोर्चे पर

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ
الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ط

---

[1]इस आयत में मुनाफ़िक़ों की उस घोर शत्रुता का वर्णन है, जो उन्हें मुसलमानों से थी और वह यह कि जब मुसलमानों को सुख-शान्ति प्राप्त होती, अल्लाह तआला की ओर से सहायता और विजय प्राप्त होती और मुसलमानों की संख्या बढ़ती, तो मुनाफ़िक़ों को बुरा लगता। और यदि मुसलमानों को कंगाल और निर्धन देखते अथवा अल्लाह तआला की इच्छा तथा किसी कारणवश शत्रु कुछ समय के लिए मुसलमानों पर प्रभावी हो जाते (जैसाकि ओहद के युद्ध में हुआ) तो अति प्रसन्न होते। इस बात को बताने का उद्देश्य तथा तात्पर्य यह है कि जिन लोगों का यह हाल है क्या मुसलमानों को उचित है कि उनसे प्रेम करें, और उन्हें अपना सलाहकार तथा मित्र बनायें ? इसीलिए अल्लाह तआला ने यहूदियों और ईसाईयों से भी मित्रता रखने से मना किया है। (जैसाकि क़ुरआन करीम में दूसरे स्थान पर है) इसीलिए कि वह भी मुसलमानों से घृणा तथा शत्रुता रखते, उनकी सफलता से अप्रसन्न और उनकी असफलता से प्रसन्न होते हैं।

[2]यह उनके छल तथा कपट से बचने का उपचार है। अर्थात द्रयवादियों तथा इस्लाम और मुसलमानों के शत्रुओं की चालों से बचने के लिए धैर्य तथा संयम अत्यधिक आवश्यक है। इस धैर्य और संयम की कमी ने ग़ैर मुस्लिमों की चालों को सफल बना रखा है। लोग समझते हैं कि काफ़िरों की यह सफलता भौतिक संसाधनों की अधिकता तथा विज्ञान तथा प्रौद्योगिक में उनकी उन्नति का परिणाम है। हालांकि वास्तविकता यह है कि मुसलमानों के पतन का मूल कारण यही है कि वह अपने धर्म पर स्थिरता (जो धैर्य चाहता है) से वंचित तथा संयम से दूर हो गये हैं। जो मुसलमानों की सफलता का आधार तथा अल्लाह का पक्ष प्राप्त करने का मार्ग है।

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢١﴾

ठीक प्रकार से[1] बिठा रहे थे, अल्लाह तआला सुनने जानने वाला है।

اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ

(१२२) जब तुम्हारे दो गिरोह ने साहस खो दिया।[2]

---

[1]अधिकतर व्याख्याकारों के निकट यह ओहद के युद्ध की घटना है, जो शव्वाल (रमज़ान के बाद का महीना जिसे ईद का महीना भी कहते हैं परन्तु वास्तविक अरबी नाम यह है) ३ हिजरी में हुई। संक्षिप्त रूप से घटना इस प्रकार है कि जब बद्र के युद्ध में २ हिजरी में मूर्तिपूजकों को अपमानजनक पराजय का सामना करना पड़ा क्योंकि उनके ७० वीर योद्धा मारे गये और ७० बन्दी बना लिये गये, तो उन मूर्तिपूजकों के लिये अपमान तथा डूब मरने का स्थान था। अतएव उन्होंने मुसलमानों के विरूद्ध बदला लेने के लिए एक बहुत बड़े युद्ध की ठानी, जिसकी तैयारी में मूर्तिपूजकों की स्त्रियों ने भी भाग लिया। इधर जब मुसलमानों को यह सूचना मिली कि ओहद पहाड़ के निकट तीन हज़ार मूर्तिपूजक मुसलमानों से युद्ध करने लिए पड़ाव डाले हुए हैं, तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से विचार-विमर्श किया कि मदीना शहर के अन्दर लड़ा जाये अथवा बाहर निकलकर मुक़ाबला करें। कुछ सहाबा ने मदीना के अन्दर रहकर ही मुक़ाबिला करने का परामर्श दिया और मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैय ने भी इस विचार से सहमत किया, लेकिन इसके विपरीत कुछ साहसी सहाबा ने जिन्हें बद्र के युद्ध में भाग लेने का अवसर नहीं मिला था, उन्होंने मदीने के बाहर मुक़ाबिला करने की राय दी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कमरे में गये और हथियार तथा कवच पहनकर बाहर आये, दूसरी राय वालों को क्षोभ हुआ कि शायद हम लोगों ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इच्छा के विरूद्ध बाहर निकलने पर मजबूर करके ठीक नहीं किया। अत: उन्होंने कहा हे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! यदि आप अन्दर रहकर मुक़ाबिला करना उचित समझें, तो अन्दर ही रहें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि युद्ध की पोशाक पहन लेने के पश्चात किसी नबी को उचित नहीं कि अल्लाह के निर्णय के बिना वापस हो अथवा पोशाक उतारे। अत: एक हज़ार मुसलमान युद्ध के लिए निकल पड़े, परन्तु जब यह सेना की टुकड़ी शोत नामक स्थान पर पहुँची उस समय अब्दुल्लाह बिन उबैय अपने तीन सौ साथियों के साथ यह कहकर वापस हो गया कि उसकी राय नहीं मानी गयी तो अनर्थ जान देने से क्या लाभ ? उसके इस निर्णय से सामयिक रूप से कुछ मुसलमान भी प्रभावित हो गये और उन्होंने भी कमज़ोरी का प्रदर्शन किया। (इब्ने कसीर)

[2]यह औस और खजरज के दो क़बीले (बनू हारिसा तथा बनू सलमा) थे।

उनका संरक्षक अल्लाह है।[1] और उसी अल्लाह पर मुसलमानों को विश्वास करना चाहिए।

أَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾

(१२३) और अल्लाह ने बद्र के युद्ध में तुम्हारी उस समय सहायता की जबकि तुम गिरी हुई स्थिति में थे,[2] अतः अल्लाह से डरो ताकि कृतज्ञ बनो।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾

(१२४) जब आप मुसलमानों को सांत्वना दे रहे थे, क्या तुम्हें यह काफ़ी नहीं होगा कि अल्लाह तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी सहायता करे।

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ ﴿١٢٤﴾

(१२५) क्यों नहीं ? यदि तुम धैर्य और परहेज़गारी करो और यह लोग इसी दम तुम्हारे पास आ जायें तो तुम्हारा प्रभु तुम्हारी सहायता पाँच हज़ार फ़रिश्तों से करेगा।[3] जो

بَلَىٰ ۚ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُمْ مِنْ فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾

---

[1]इससे ज्ञात हुआ के अल्लाह ने उनकी सहायता की और उनकी दुर्बलता को दूर करके उनको साहस दिया।

[2]संख्या और सामान की कमी के आधार पर, क्योंकि बद्र के युद्ध में मुसलमानों की संख्या ३१३ थी और वह भी बिना सामान के, केवल दो घोड़े और सत्तर ऊँट थे, शेष सभी पैदल थे। (इब्ने कसीर)

[3]मुसलमान बद्र की ओर क़ुरैश के क़ाफ़िले पर जो लगभग निहत्था था छापा मारने निकले थे। परन्तु बद्र तक पहुँचते-पहुँचते यह ज्ञात हुआ कि मक्का के मूर्तिपूजकों की एक बड़ी सेना अपने क्रोध और दुस्साहस के साथ चली आ रही है। यह सुनकर मुसलमानों में घबराहट और युद्ध करने के साहस का मिला जुला प्रभाव हुआ और उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की। इस पर अल्लाह तआला ने पहले एक हज़ार फिर तीन हज़ार फ़रिश्ते उतारने की शुभ सूचना दी और इसके अतिरिक्त यह वचन भी दिया कि यदि तुम धैर्य और परहेज़गारी पर दृढ़ रहे और मूर्तिपूजक उसी क्रोध की स्थिति में आ धमके तो यह संख्या पाँच हज़ार कर दी जायेगी। कहा जाता है कि मूर्तिपूजकों का वह साहस व क्रोध दृढ़ न रह सका। (बद्र पहुँचने से पूर्व ही उनमें फूट पड़ गयी और एक गिरोह मार्ग

निशानदार होंगे ।[1]

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ إِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾

(१२६) तथा हमने इसे तुम्हारे लिये मात्र शुभ सूचना एवं तुम्हारे दिलों के संतोष के लिए बनाया अन्यथा सहायता तो सर्वशक्तिमान ज्ञानी अल्लाह की ओर से ही होती है ।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنقَلِبُوا خَائِبِينَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) (इस अल्लाह की सहायता का उद्देश्य यह था कि अल्लाह) मूर्तिपूजकों के एक गिरोह को काट दे अथवा अपमानित कर दे । और वह असफल होकर लौटें ।[2]

ही से मक्का लौट गया, और शेष जो बद्र तक आये उनमें से अधिकतर सरदारों की राय थी कि युद्ध न किया जाये) । इसलिए शुभ सूचना के अनुसार तीन हज़ार फ़रिश्ते उतारे गये । और पाँच हज़ार की संख्या पूरी करने की आवश्यकता न रही । और कहा जाता है कि बल्कि यह संख्या पूरी की गयी ।

[1] अर्थात पहचान के लिए विशेष चिन्ह होंगे ।

[2]यह अजेय एवं प्रभावशाली अल्लाह की सहायता का परिणाम बताया जा रहा है । सूर: *अल-अंफ़ाल* में फ़रिश्तों की संख्या एक हज़ार बतायी गयी है ।

﴿ إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ ﴾

"जब तुम अपने प्रभु से गुहार कर रहे थे, अल्लाह तआला ने तुम्हारी विनती सुनते हुए कहा कि एक हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करूँगा ।" (*अल-अंफ़ाल*-९)

इससे ज्ञात हुआ कि वास्तव में फ़रिश्ते एक हज़ार ही उतरे । और मुसलमानों से तीन हज़ार और पाँच हज़ार का प्रतिबन्धित वायदा किया गया । फिर परिस्थितियों के कारण मुसलमानों को सांत्वना की दृष्टी से भी उनकी आवश्यकता नहीं समझी गयी इसलिए कुछ व्याख्याकारों के निकट यह तीन हज़ार और पाँच हज़ार फ़रिश्ते नहीं उतरे उद्देश्य तो साहस को बढ़ाना था, वरन वास्तविक सहायक तो अल्लाह तआला ही था और वह अपनी सहायता के लिए फ़रिश्तों अथवा किसी का आधीन नहीं है । अत: उसने मुसलमानों की सहायता की और बद्र के युद्ध में मुसलमानों को ऐतिहासिक विजय प्राप्त हुई । कुफ़्र की शक्ति क्षीण हुई और काफ़िरों का गौरव मिट्टी में मिल गया । (ऐसरुत्तफ़ासीर)

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٢٨﴾

(१२८) (हे पैग़म्बर) आप के वश में कुछ नहीं[1] अल्लाह (तआला) चाहे तो उनकी क्षमा स्वीकार कर ले ।[2] अथवा यातना दे, क्योंकि वे अत्याचारी हैं ।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢٩﴾

(१२९) आसमानों और धरती में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है । वह जिसे चाहे क्षमा करे और जिसे चाहे यातना दे । और अल्लाह (तआला) क्षमी कृपालु है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) ऐ ईमानवालो ! दुगुना तिगुना कर ब्याज न खाओ ।[3] और अल्लाह (तआला) से डरो ताकि तुम्हें मोक्ष मिले ।

---

[1]अर्थात उन काफ़िरों को मार्गदर्शन देना अथवा उनके विषय में किसी प्रकार का निर्णय करना अल्लाह के वश में है । हदीस में आता है कि ओहद के युद्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दाँत भी शहीद हुए और चेहरा भी ज़ख़्मी हुआ तो आप ने कहा कि, "वह क़ौम किस प्रकार सफल होगी जिसने अपने नबी को घायल कर दिया ।" अर्थात आपने उनके मार्गदर्शन से निराशा व्यक्त की । इस पर यह आयत उतरी । इस प्रकार कुछ कथनों में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ काफ़िरों के लिए क़ुनूते नाज़िल: का प्रबन्ध किया जिसमें उनके लिये अभिशाप दिया । जिस पर यह आयत अल्लाह तआला ने उतारी । अत: आपने अभिशाप बन्द कर दिया । (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

इस आयत से उन लोगों को शिक्षा लेनी चाहिए जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सर्वाधिकारी मानते हैं कि उनको इतना भी अधिकार नहीं था कि किसी को सत्य मार्ग पर लगा दें । यद्यपि कि आप मार्ग की ओर बुलाने के लिये भेजे गये थे ।

[2]यह जाति जिनके लिए अभिशाप करते रहे अल्लाह ने उन्हें मुसलमान कर दिया । जिससे विदित हुआ कि सभी एकाधिपति और परोक्षज्ञ अल्लाह है ।

[3]चूँकि ओहद के युद्ध में असफलता रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन न करने और सांसारिक धन से लोभ कें कारण हुई थी । इसलिए अब दुनिया के लोभ की सबसे अधिक भयानक और स्थाई रूप ब्याज से मना किया जा रहा है । और आज्ञा पालन पर बल दिया जा रहा है । और बढ़ा-चढ़ा कर ब्याज न खाओ का यह कदापि अर्थ नहीं है कि यदि साधारण ब्याज है तो उचित है । बल्कि ब्याज थोड़ा हो अथवा अधिक

(१३१) और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾

(१३२) और अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन करो। ताकि तुम पर कृपा की जाये।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

(१३३) और अपने प्रभु की क्षमा की ओर और उस स्वर्ग की ओर दौड़ो[1] जिसकी चौड़ाई आसमानों और धरती के बराबर है, जो परहेज़गारों के लिए तैयार की गयी है।

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾

(१३४) जो लोग सुविधा में और कठिनाई में (भी अल्लाह के मार्ग में) व्यय करते हैं।[2] क्रोध को पी जाते हैं, और लोगों को क्षमा

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ

अकेला हो अथवा मिश्रित कदापि अनुचित है जैसा कि पहले गुज़र चुका है। यह वर्जित की सीमा के लिए अनुबन्धन नहीं बल्कि परिस्थिति के कारण है जो उस समय प्रचलित थी उसका वर्णन और स्पष्टीकरण है। अज्ञान काल में ब्याज का यह रिवाज सामान्य था कि जब भुगतान का समय आ जाता और भुगतान सम्भव न होता तो समय बढ़ाने के लिए ब्याज की दर में वृद्धि होती चली जाती, जिससे छोटा सा मूलधन बढ़-चढ़ कर कहीं से कहीं पहुँच जाता और एक सामान्य आदमी के लिए चुकता करना असम्भव हो जाता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अल्लाह से डरो और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है। जिससे यह चेतावनी भी है कि यदि ब्याज लेने से न रुके तो यह कर्म तुम्हें कुफ़्र तक पहुँचा सकता है क्योंकि ऐसा करना अल्लाह तथा उसके रसूल से संघर्ष की घोषणा है।

[1]धन-दौलत और दुनिया के पीछे लगकर आख़िरत (परलोक) नष्ट करने के बजाय अल्लाह और रसूल के आदेशों का पालन करो और अल्लाह की क्षमा और उसके स्वर्ग का मार्ग अपनाओ जो आज्ञापालकों के लिए बनायी गयी है। इसलिए आगे आज्ञापालकों की कुछ विशेषतायें बतायी गयीं हैं।

[2]अर्थात मात्र सुख में ही नहीं, अपितु दुःख के समय में भी व्यय करते हैं। तात्पर्य यह है कि हर दशा और परिस्थिति में अल्लाह के मार्ग में व्यय करते हैं।

يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾

करने वाले हैं।[1] अल्लाह उन सत्कर्मियों को मित्र रखता है।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۠ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

(१३५) जब उनसे कोई असभ्य कार्य हो जाये अथवा कोई पाप कर बैठें, तो शीघ्र ही अल्लाह की उपासना और अपने पापों के लिए क्षमा-याचना करते हैं।[2] और वास्तव में अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त पापों को कौन क्षमा कर सकता है, तथा वे जानते हुये अपने कृत्य पर दुराग्रह नहीं करते।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾

(१३६) इन्हीं का प्रत्युपकार उन के पालनहार की ओर से क्षमा एवं बाग़ है जिनके नीचे नहरें प्रवाहित रहती हैं जिसमें वह सदा निवास करेंगे तथा सदाचारियों का यह कितना उत्तम प्रतिफल हैं।

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾

(१३७) तुमसे पहले से नियम चला आ रहा है, तुम धरती में यात्रा करो तथा देखो कि जो अल्लाह की आयतों को नहीं माने उनका अन्त कैसा हुआ।[3]

---

[1]अर्थात जब उन्हें क्रोध आता है, तो उसे पी जाते हैं अर्थात क्रोधानुसार काम नहीं करते और उन्हें क्षमा कर देते हैं, जो उनके साथ बुराई करते हैं।

[2]अर्थात उनके मनुष्य होने के कारण जब उनसे कोई पाप अथवा ग़लती हो जाती है, तो तुरन्त क्षमा-याचना करने लगते हैं।

[3]ओहद के युद्ध में मुसलमानों की सेना की संख्या ७ सौ थी, जिनमें पचास धनुषधरों का एक दल था, आप ने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की अगुवाई में उसे एक पर्वत पर नियुक्त कर दिया तथा सावधान कर दिया कि चाहे हमारी विजय हो अथवा पराजय तुम यहाँ से न हिलना तथा तुम्हारा काम यह है कि जो घोड़ा सवार तुम्हारी ओर आये उसे वाण से पीछे ढ़केल देना किन्तु जब मुसलमान विजयी हो गये तथा धन सामान एकत्र करने लगे तो इस दल

هَٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٨﴾

(१३८) यह मानव जाति के लिये एक वर्णन तथा संयमीजनों के लिये मार्ग दर्शन एवं शिक्षा है।

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

(१३९) तुम साहस न खोओ, न चिन्ता करो, यदि तुम ईमानदार हो तो तुम्हीं विजयी होगे।[1]

إِن يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنكُمْ شُهَدَاءَ ۗ

(१४०) (इस युद्ध में) यदि तुम आहत हुये हो तो वह भी (बद्र के युद्ध में) इसी प्रकार आहत हुये हैं तथा इन दिनों को हम लोगों के बीच अदलते-बदलते रहते हैं,[2] ताकि अल्लाह ईमान वालों को (अलग करके) देख ले, तथा तुममें

में विभेद हो गया कुछ लोग कहने लगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश का प्रयोजन यह था कि लड़ाई होती रहे तो यहाँ अडिग रहना किन्तु जब लड़ाई समाप्त हो गई तथा मिश्रणवादी भाग रहे हैं तो यहाँ रहना अनिवार्य नही है और उन्होंने भी वहाँ से हटकर धन सामग्री एकत्रित करना आरम्भ कर दिया तथा वहाँ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा पालन में केवल दस लोग शेष रह गये। जिसका लाभ काफिरों ने उठाया और उनके घुड़सवारों नें पलट कर यहीं से मुसलमानों के पीछे से प्रहार कर दिया। जिससे विखराव हो गया तथा इस अकस्मात कड़े प्रहार से मुसलमान अति व्याकुल हो गये। परिणाम स्वरूप यह हुआ कि सत्तर मुसलमान मारे गये, तथा बहुत से आहत हो गये। जिससे मुसलमानों को स्वभाविक रूप से बड़ा दुःख हुआ। इन आयात में अल्लाह (परमेश्वर) मुसलमानों को सांत्वना दे रहा है कि तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ कोई नई बात नहीं, पहले के रसूल (ईशदूत) के निवर्तियों का भी ऐसा ही हाल हुआ है।

[1]विगत युद्ध में तुम्हें जो हानि हुई है न उसके कारण आलस्य करो न उस पर क्षोभ करो क्योंकि यदि तुममें विश्वास की भावना जागृत रही तो विजयी एवं सफल तुम्हीं होगे इसमें अल्लाह ने मुसलमानों के वल का मूल भेद तथा उनकी सफलता का आधार बता दिया है और वास्तविकता यह है कि इसके बाद मुसलमान प्रत्येक रण क्षेत्र में सफल रहे।

[2]एक और प्रकार से मुसलमानों को तसल्ली दी जा रही है कि यदि ओहद में तुम्हारे कुछ लोग घायल हुये हैं तो क्या हुआ ? तुम्हारे विरोधी भी तो बद्र के रण में तथा ओहद के आरम्भ में इसी प्रकार आहत हो चुके हैं तथा यह अल्लाह की रीति है कि वह विजय पराजय के दिनों को बदलता रहता है। कभी विजित को पराजित कभी पराजित को विजित कर देता है।

وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّٰلِمِينَ ﴿١٤٠﴾

से कुछ को शहीद बना दे, तथा अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَٰفِرِينَ ﴿١٤١﴾

(१४१) और ताकि अल्लाह मोमिनों को अलग कर ले तथा अविश्वासियों का सत्यानाश कर दे।[1]

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَٰهَدُوا مِنكُمْ

(१४२) क्या तुमने सोचा है कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे[2] हालाँकि अभी अल्लाह ने यह नहीं

---

[1]ओहद में मुसलमानों को जो सामयिक पराजय हुई वह उनके अपने आलस्य के कारण हुई इसमें भी भविष्य के लिये कई अच्छाईयाँ हैं जिनका वर्णन आगे अल्लाह तआला कर रहा है। एक यह कि अल्लाह ईमानवालों को जान ले (क्योंकि धैर्य तथा स्थिरता ईमान का अभियावन है) युद्ध की कठिनाईयों एवं आपदाओं में जिसने धैर्य एवं स्थिरता दिखाई वह सब मोमिन (विश्वासयुक्त) हैं। दूसरी यह कि कुछ लोगों को शहादत पद पर पदासीन कर दे, तीसरी यह कि ईमानवालों को पापों से स्वच्छ कर दे। تَمْحِيص (तम्हीस) का एक अर्थ निर्वाचित कर लेना लिया गया है तथा एक अर्थ पवित्र करना एवं एक अर्थ मुक्त करना है। अन्तिम दोनों का अभिप्राय पापों से शुद्धि एवं मुक्ति है (फ़तहुल क़दीर) अनुवादक ने प्रथम अर्थ लिया है चौथी यह कि काफ़िरों (अधर्मियों) को मिटा दे, क्योंकि इसी प्रकार सामयिक विजय से उनकी दुष्टता एवं अहंकार बढ़ेगा जो उनके विनाश का हेतु बनेगा।

[2]अर्थात बिना लड़े तथा बिना कड़ी परीक्षा के तुम स्वर्ग में चले जाओगे ? नहीं स्वर्ग उनको मिलेगी जो परीक्षा में पूरे उतरेंगे जैसा कि अन्य स्थान पर कहा है।

﴿ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُم مَّثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُم مَّسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا ﴾

"क्या तुम ने सोचा है कि तुम स्वर्ग में चले जाओगे और अभी तुम पर वह दशा नहीं आई जो पूर्व के लोगों पर आई उन्हें दरिद्रता एवं दुःख पहुँचे तथा वे ख़ूब झिंझोड़े गये"। (*सूरः बक़रः-२१४*)

यह भी कहा।

﴿ أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوا أَن يَقُولُوا ءَامَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ﴾

"क्या लोग इस भ्रम में हैं कि मात्र यह कहने पर त्याग दिये जायेंगे कि हम ईमान लाये तथा उनकी परीक्षा नहीं ली जायेगी। (*अल-अन्कबूत-२*)

وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾

देखा है कि कौन तुममें धर्मयुद्ध (जिहाद) करते हैं और कौन धैर्य रखते हैं।[1]

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ
قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ
وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾

(१४३) तुम इससे पूर्व मौत की कामना करते थे[2] अब तो तुमने उसे आँखों से देख लिया।[3]

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ اَفَا۟ىِٕنْ مَّاتَ
اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۭ
وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰي عَقِبَيْهِ فَلَنْ

(१४४) तथा मुहम्मद तो मात्र एक ईशदूत हैं,[4] इससे पूर्व बहुत से ईशदूत गुज़रे हैं तो यदि वह मर जायें अथवा मार दिये जायें तो क्या तुम (इस्लाम) से एड़ीयों के बल फिर जाओगे और जो कोई अपनी एड़ी के बल

---

[1]यह विषय सूरः बक़रः में आ चुका है किन्तु प्रसंग से लगाव के कारण यहाँ फिर बताया जा रहा है कि स्वर्ग में प्रवेश यूँ ही नहीं मिल जायेगा इसके लिए तुम्हें परीक्षा अग्नि से पार कराई तथा रण क्षेत्र में परीक्षा ली जायेगी कि वहाँ तुम शत्रुओं के समूह में घिर कर साहस एवं सहन तथा स्थिरता दिखाते हो अथवा नहीं ?

[2]यह संकेत उन सहाबा (सहचरों) की ओर है जो बद्र के रण में भाग न ले सके इस कारण वह वंचना का एक संवेदन रखते थे तथा चाहते थे कि लड़ाई हो तो वह भी काफ़िरों से लड़कर धर्मयुद्ध की प्रधानता प्राप्त करें। इन्हीं सहचरों ने ओहद के युद्ध में धर्मयुद्ध की उत्तेजना में मदीने से बाहर निकलकर लड़ने का परामर्श दिया था, किन्तु जब मुसलमानों की विजय काफ़िरों के सहसा प्रहार से पराजय में बदल गई तो यह उत्तेजित मुजाहिदीन व्याकुल हो गये तथा भागने लगे जैसाकि इसका विवरण आगे आ रहा है तथा बहुत थोड़े ही लोग अडिग रह गये, (फ़तहुल क़दीर) इसी कारण हदीस में आता है कि "शत्रु से मुठभेड़" की कामना न करो तथा अल्लाह से शान्ति की प्रार्थना करो फिर भी यदि स्वयं परिस्थिति ऐसी वन जाये कि तुम्हें शत्रु से लड़ना पड़े तो फिर अडिग रहो तथा यह बात जान लो कि स्वर्ग तलवारों की छाया तले है। (सहीहैन, उदघृत इब्ने कसीर)

[3] رأيتموه तथा تنظرون प्रयायवाची हैं जो बल देने के लिए दो शब्द लाये गये हैं अर्थात तलवारों की चमक तीरों की वर्षा तथा वीरों की पंक्तियों में तुमने मौत को भली-भाँति देख लिया (इब्ने कसीर व फ़तहुल कदीर)

[4]मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मात्र रसूल (ईशदूत) ही हैं अर्थात उनकी विशेषता भी दूतत्व है यह नहीं कि वह मानवीय विशेषताओं से उच्च एवं ईश्वरीय गुणों से युक्त हैं कि उन्हें मृत्यु से पाला न पड़े।

يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

फिर जाये वह अल्लाह को कोई क्षति नहीं पहुंचा सकेगा,[1] तथा अल्लाह कृतज्ञों को शीघ्र प्रतिकार देगा ।[2]

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ۗ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۗ وَسَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

(१४५) और बिना अल्लाह तआला के आदेश के कोई जीव नहीं मर सकता । निर्धारित समय लिखा हुआ है । दुनिया से प्रेम करने वालों को हम कुछ दुनिया प्रदान कर देते हैं और आख़िरत का पुण्य चाहने वालों को हम वह भी प्रदान करेंगे ।[3] और कृतज्ञता व्यक्त करने वालों को हम शीघ्र ही अच्छा बदला देंगे ।

---

[1]ओहद की पराजय का एक कारण यह भी था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संदर्भ में काफ़िरों ने यह गप उड़ा दिया था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हत कर दिये गये, मुसलमानों में जब यह ख़बर फैली तो इससे कुछ मुसलमान साहस हीन हो गये तथा लड़ाई से पीछे हट गये उस पर यह आयत उतरी कि नबी का हत हो जाना अथवा उस पर मौत आ जाना कोई नई बात तो नहीं है अतीत में भी अम्बिया हत एवं मौत से आलिंगित हुये हैं । यदि मान भी लें कि आप इससे दो चार हो जायें तो क्या तुम उस धर्म ही से फिर जाओगे याद रखो कि जो फिर जायेगा वह स्वयं अपनी हानि करेगा अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा । नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के निधन की घटना के समय जब आदरणीय उमर (रज़ी अल्लाह अन्हु) अति भावुक हो कर नबी के निधन को नकार रहे थे तो आदरणीय अबू बक्र (रज़ी अल्लाह अन्हु) अति सावधानी से काम लेते हुये रसूल (ईशदूत) के धर्म मंच की एक ओर खड़े हो गये तथा यही आयत पढ़ी, जिससे आदरणीय उमर भी प्रभावित हुये एवं उन्हें लगा कि यह आयत तत्काल उतरी हैं ।

[2]अर्थात युद्ध में डटे रहने वालों को जिन्होंने धैर्य और बहादुरी का प्रदर्शन कर अल्लाह का शुक्र अदा किया ।

[3]यह क्षीणता और कायरता का प्रदर्शन करने वालों के साहस को बढ़ाने के लिए कहा जा रहा है कि मृत्यु तो अपने समय पर आकर रहेगी । फिर भागने तथा कायरता दिखाने से क्या लाभ है ? इसी प्रकार केवल दुनिया माँगने से कुछ दुनिया तो मिल जाती है, परन्तु आख़िरत में कुछ न मिलेगा । परन्तु इसके विपरीत आख़िरत के माँगने वालों को आख़िरत की सभी चीज़े प्राप्त होंगी ही, दुनिया भी अल्लाह तआला उन्हें प्रदान करता है । आगे कुछ

وَكَأَيِّن مِّن نَّبِيٍّ قَٰتَلَ مَعَهُۥ رِبِّيُّونَ كَثِيرٌ فَمَا وَهَنُوا۟ لِمَآ أَصَابَهُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا۟ وَمَا ٱسْتَكَانُوا۟ ۗ وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿١٤٦﴾

(१४६) और बहुत से नबियों के साथ बहुत से अल्लाह वाले धर्म युद्ध कर चुके हैं, उन्हें भी अल्लाह के मार्ग में दुख पहुंचे, परन्तु न तो उन्होंने साहस खोया न आलसी रहे और न प्रभावित हुए और अल्लाह धैर्य रखने वालों को ही चाहता है।[1]

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ إِلَّآ أَن قَالُوا۟ رَبَّنَا ٱغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِىٓ أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَٱنصُرْنَا عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿١٤٧﴾

(१४७) और वह यही कहते रहे कि हे प्रभु हमारे पापों कोक्षमा कर दे और हमसे हमारे कामों में अकारण ज्यादती हुई हो, उसे माफ़ कर और हमें दृढ़ता प्रदान कर और हमें काफ़िरों की क़ौम पर सहायता प्रदान कर।

فَـَٔاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ ثَوَابَ ٱلدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ ٱلْءَاخِرَةِ ۗ وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿١٤٨﴾

(१४८) अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया का पुण्य प्रदान किया और आख़िरत के पुण्य की विशेषता भी प्रदान की और अल्लाह तआला सत्कर्मियों को मित्र रखता है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِن تُطِيعُوا۟ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ يَرُدُّوكُمْ عَلَىٰٓ أَعْقَٰبِكُمْ فَتَنقَلِبُوا۟ خَٰسِرِينَ ﴿١٤٩﴾

(१४९) हे ईमानवालो ! यदि तुम काफ़िरों की बातें मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ी के बल पलटा देंगे (अर्थात तुम्हें मुर्तद्द(धर्मभ्रष्ट) बना देंगे) फिर तुम हानि में हो जाओगे।

بَلِ ٱللَّهُ مَوْلَىٰكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ ٱلنَّٰصِرِينَ ﴿١٥٠﴾

(१५०) बल्कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा मालिक है और वही श्रेष्ठ सहायक है।[2]

और साहस बढ़ाने और सांत्वना के लिए पिछले नबियों और उनके अनुयायियों के धैर्य और दृढ़ता का उदाहरण दिया जा रहा है।

[1]अर्थात उनको जो युद्ध की तीव्रता में साहस नहीं खोते और दुर्बलता एवं क्षीणता का प्रदर्शन नहीं करते।

[2]यह विषय पहले भी गुज़र चुका है। यहाँ फिर पुनरावृत्ति हो रही है क्योंकि ओहद में पराजय से लाभ उठाकर कुछ काफ़िर अथवा मुनाफ़िक़ मुसलमानों को यह परामर्श दे

سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا ۖ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۚ وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ﴿١٥١﴾

(१५१) हम निकट भविष्य में काफ़िरों के दिलों में भय डाल देंगे, इस कारण से कि वे अल्लाह के साथ उन चीज़ों को साझी करते हैं, जिसका कोई तर्क अल्लाह ने नहीं उतारा ।[1] उनका ठिकाना नरक है, और उन अत्याचारियों का बुरा स्थान है ।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ تَحُسُّونَهُم بِإِذْنِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ

(१५२) और अल्लाह (तआला) ने अपना वायदा सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उसके आदेश से उन्हें काट रहे थे ।[2] यहाँ तक कि जब तुम

रहे थे कि तुम अपने पूर्वजों के धर्म पर लौट आओ । ऐसे में मुसलमानों को कहा जा रहा है कि काफ़िरों के परामर्श का पालन करना भी तुम्हारी बरबादी और हानि का कारण है । सफलता अल्लाह के आदेशों के पालन में ही है । और उससे श्रेष्ठ कोई सहायक नहीं है ।

[1]मुसलमानों की पराजय देखते हुए कुछ काफ़िरों के दिलों में यह विचार आया कि यह मुसलमानों के धर्म भ्रष्ट करने का अच्छा अवसर है । इस अवसर पर अल्लाह तआला ने उनके दिलों में मुसलमानों का भय डाल दिया, फिर उन्हें अपने इस विचार को क्रियान्वित करने का साहस न रहा । (फ़तहुल क़दीर) सहीहैन की हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे पाँच चीज़ें ऐसी प्रदान की गयी हैं, जो मुझसे पूर्व किसी नबी को नहीं प्रदान की गयी उनमें एक यह है कि نُصِرتُ بالرعب مسيرة شهر "शत्रु के दिल में एक माह की दूरी तक मेरा भय डालकर, मेरी सहायता की गयी है ।"

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भय स्थाई रूप से शत्रुओं के दिलों में डाल दिया गया । इस आयत से ज्ञात होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आप की उम्मत अर्थात मुसलमानों का भी भय मूर्तिपूजकों के दिलों में डाल दिया गया है, इसका कारण उनका शिर्क है । अर्थात मूर्तिपूजकों का दिल दूसरों के भय से काँपता रहता है शायद यही कारण है कि मुसलमानों की एक बड़ी संख्या मूर्तिपूजकों की तरह के विश्वास और कर्म के कारण ही शत्रु उनसे भयभीत होने के बजाय वह शत्रुओं से भयभीत हैं ।

[2]इस वायदे से कुछ व्याख्याकारों ने तीन हज़ार और पाँच हज़ार फ़रिश्तों का उतरना भावार्थ लिया है । लेकिन यह विचार उचित नहीं है, बल्कि सहीह यह है कि फ़रिश्तों का उतरना केवल बद्र के युद्ध के साथ विशेषरूप से सम्बन्धित था । शेष रहा वह वायदा जो इस आयत में वर्णित किया गया है, उससे तात्पर्य विजय का वह सामान्य वायदा है जो

وَعَصَيْتُم مِّنۢ بَعْدِ مَآ أَرَىٰكُم مَّا تُحِبُّونَ ۚ مِنكُم مَّن يُرِيدُ ٱلدُّنْيَا وَمِنكُم مَّن يُرِيدُ ٱلْءَاخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۖ وَلَقَدْ عَفَا عَنكُمْ ۗ وَٱللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥٢﴾

अपना साहस खो रहे थे और काम में झगड़ने लगे । और अवज्ञा की[1] उसके बाद कि उसने तुम्हारी प्रिय चीज़ें तुम्हें दिखा दीं ।[2] तुममें से कुछ दुनिया चाहते थे ।[3] और कुछ का आख़िरत का विचार था ।[4] तो फिर उसने तुम्हें उनसे फेर दिया ताकि तुम्हारी परीक्षा ले ।[5] और अवश्य उसने तुम्हारे विचलन को क्षमा कर दिया और ईमानवालों पर अल्लाह (तआला) अति कृपालु है ।[6]

मुसलमानों के लिए और उसके रसूल की ओर से बहुत पहले किया जा चुका था । यहाँ तक कि कुछ आयतें मक्का में उतर चुकी थीं और उसके अनुसार प्रारम्भ में मुसलमान प्रभावशाली तथा विजयी रहे । जिसकी ओर ﴿إِذْ تَحُسُّونَهُم بِإِذْنِهِۦ﴾ से संकेत किया गया है ।

[1]इस तनाव तथा अवज्ञाकारिता से तात्पर्य ५० धनुर्धारियों का वह मतभेद है, जो विजय तथा प्रभाव देखकर उनके अन्दर उत्पन्न हुआ और जिसके कारण काफ़िरों को पुनः पलट कर हमला करने का समय मिल गया ।

[2]इससे तात्पर्य वह विजय है जो प्रारम्भ में मुसलमानों को प्राप्त हुई ।

[3]अर्थात युद्ध का परिहार, जिसके लिए उन्होंने पहाड़ी छोड़ दी, जिसके न छोड़ने की उन्हें विशेषरूप से कहा गया था ।

[4]यह वह लोग हैं, जिन्होंने मोर्चा छोड़ने से मना किया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार उसी स्थान पर दृढ़ता से डटे रहने का प्रयत्न किया ।

[5]अर्थात विजय देने के बाद फिर तुम्हें पराजय देकर उन काफ़िरों से फेर दिया ताकि तुम्हारी परीक्षा ली जा सके ।

[6]इसमें सहाबा किराम रिजवानुल्लाह अलैहिम अजमईन की उस विशेषता तथा श्रेष्ठता का वर्णन है, जो उनकी कमियों के बाद भी अल्लाह ने उन पर फ़रमाया अर्थात उनकी ग़लतियों का स्पष्टीकरण करके कि भविष्य में ऐसा न करें, अल्लाह ने उनके लिए क्षमा घोषित कर दिया ताकि कोई दुर्भाषी उन पर लांछन न लगा सके । जब अल्लाह तआला ने ही क़ुरआन करीम में उनके लिए सामान्य क्षमा घोषित कर दिया, तो अब किसी को कलंकित अथवा लांछन लगाने का कोई अवसर कहाँ रह गया ? सहीह बुख़ारी में एक

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُنَ عَلَىٰٓ أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِيٓ أُخْرَىٰكُمْ فَأَثَٰبَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا۟ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ أَصَٰبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾

(१५३) जबकि तुम चढ़े चले जा रहे थे[1] कसी की ओर ध्यान तक नहीं करते थे और अल्लाह के रसूल तुमको पीछे से पुकार रहे थे ।[2] बस तुम्हें दुख पर दुख पहुँचा[3] ताकि तुम अपनी खोयी (विजय) पर शोक न करो और न उस (आघात) पर जो तुम्हें पहुँचा[4] और अल्लाह

घटना का वर्णन है कि एक हज के अवसर पर एक व्यक्ति ने आदरणीय उस्मान (रजी अल्लाह अन्हु) पर कुछ आक्षेप लगाये कि वह बद्र के युद्ध में तथा बैएत-रिज़वाँ में सम्मिलित नहीं हुए । और ओहद के युद्ध के दिन भाग लिये थे । आदरणीय इब्ने उमर (रज़ी अल्लाह अन्हुमा) ने कहा कि बद्र के युद्ध में उनकी पत्नी (रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुत्री) बीमार थीं, बैएत-रिज़वाँ के अवसर पर आप रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूत बन कर मक्का गये थे (उन्हीं की मृत्यु की सम्भावित सूचना पाकर ही तो मुसलमानों ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की थी, जिसका नाम बैएत-रिज़वाँ है) और ओहद वाले दिन की भगदड़ को अल्लाह ने क्षमा कर दिया है (संक्षिप्त रूप से सहीह बुख़ारी, ग़ज़वः ओहद)

[1]काफ़िरों के असम्भावित सहसा हमले के कारण मुसलमानों में जो भगदड़ मच गयी और मुसलमानों का बहुमत जो भाग खड़ा हुआ यह उसक चित्रण किया जा रहा है تُصعدون शब्द إِصْعَاد से उत्पन्न है, जिसका अर्थ अपनी गति भाग जाने अथवा घाटी की ओर चढ़ जाने अथवा भागने के हैं । (तबरी)

[2]नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कुछ साथियों के साथ पीछे रह गये और मुसलमानों को पुकारते रहे ! إِلَيَّ عباد الله ! إِلَيَّ عباد الله "अल्लाह के भक्तों ! मेरी ओर लौट कर आओ, अल्लाह के भक्तों ! मेरी ओर पलट कर आओ ।" लेकिन भगदड़ की इस अवस्था में यह पुकार कौन सुनता है ?

[3] فَأَثَـابَكُم तुम्हारे आलस्य के बदले में तुम्हें दुख पर दुख दिये । इब्ने जरीर और इब्ने कसीर द्वारा प्रयुक्त कथनानुसार पहले दुख से तात्पर्य युद्ध में एकत्रित धन और काफ़िरों पर प्राप्त विजय से वंचित होना और दूसरे दुख से तात्पर्य है मुसलमानों की शहादत, उनका घायल होना, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों की अवहेलना तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत का समाचार मिलने पर दुख ।

[4]अर्थात यह दुख पर दुख इसलिए दिया ताकि तुम्हारे अन्दर दुःख सहन करने की शक्ति और दृढ़ निश्चय तथा साहस पैदा हो । जब यह शक्ति और साहस पैदा हो जाता है, तो

(तआला) तुम्हारे सारे कर्मो को जानता है।

ثُمَّ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِّنكُمْ ۖ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِن شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ ۗ يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِم مَّا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۖ

(१५४) फिर उस दुख के बाद तुम्हें शान्ति उतारी और तुममें से एक गिरोह को शान्ति की निद्रा आने लगी।[1] और हाँ, कुछ वह लोग भी थे जिन्हें अपनी जानों की पड़ी थी।[2] वह अल्लाह तआला के प्रति अनुचित मुर्खता जैसा कुविचार करने लगे।[3] और कहते थे कि हमें भी कुछ अधिकार है[4] आप कह दीजिए काम तो कुल का कुल अल्लाह के वश में है।[5] यह

फिर मनुष्य को खोई वस्तु पर दुख नहीं होता, कठिनाई पर किसी प्रकार की आधीरता नहीं होती है।

[1]वर्णित व्यग्रता के पश्चात अल्लाह तआला ने फिर मुसलमानों पर अपनी कृपा की और रणक्षेत्र के शेष बचे डटे रहे मुसलमान पर ऊँघ आच्छादित कर दी। यह ऊँघ अल्लाह तआला की ओर से शान्ति और विजय का लक्षण थी। आदरणीय अबू तलहा (रज़ी अल्लाह अन्ह) फ़रमाते हैं कि मैं भी उन लोगों में था जिन पर ओहद के दिन ऊँघ छाई जा रही थी, यहाँ तक कि मेरे हाथ से मेरी तलवार कई बार गिर गयी। मैं उसे पकड़ता, वह फिर गिर जाती, फिर पकड़ता, फिर गिर जाती। (सहीह बुख़ारी)

[2]इससे तात्पर्य अवसरवादी हैं। स्पष्ट है कि ऐसी परिस्थिति में उनको, तो अपनी जानों की ही पड़ी थी।

[3]वह यह थीं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन असत्य है, यह जिस धर्म का निमन्त्रण दे रहे हैं, उसका भविष्य ठीक नहीं है, उन्हें अल्लाह की सहायता प्राप्त नहीं है, आदि।

[4]अर्थात क्या अब हमारे लिए अल्लाह तआला की ओर से किसी प्रकार विजय की सम्भावना है? अथवा यह कि क्या हमारी भी कोई बात चल सकती है? और मानी जा सकती है?

[5]तुम्हारे अथवा शत्रु के वश में नहीं है, सहायता भी उसकी ओर से आयेगी और सफ़लता भी उसके आदेश से होगी, आदेश और निषेधाज्ञा भी उसी का होगा।

يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هَٰهُنَا ۗ قُل لَّوْ كُنتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٥٤﴾

लोग अपने दिलों के भेद आपको नहीं बताते ।[1] कहते हैं कि यदि हमें कुछ भी अधिकार होता तो यहाँ हत न किये जाते ।[2] आप कह दीजिए कि यदि तुम अपने घरों में होते तो भी जिनके भाग्य में हत होना था वह हत्या के स्थान की ओर चल खड़े होते ।[3] अल्लाह (तआला) को तुम्हारे अन्त:करण की परीक्षा करनी थी और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उससे पवित्र करना था ।[4] और अल्लाह (तआला) अन्तर्यामी है (दिलों के भेद भली-भाँति जानता है) ।[5]

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۖ

(१५५) तुममें से जिन लोगों ने उस दिन पीठ दिखाई जिस दिन दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई थी । यह लोग अपने कुछ कर्मों के कारण शैतान

---

[1]अपने दिलों में द्वयवाद छिपाये हुए हैं । स्पष्ट यह करते हैं कि वह सत्य पथ की इच्छा करते हैं ।

[2]यह वह आपस में कहते हैं, अथवा दिल में कहते हैं ।

[3]अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "इस प्रकार की बातों का क्या लाभ ? मृत्यु हर दशा में आनी है । जहाँ अल्लाह की ओर से लिख दी गयी है । यदि तुम घरों में बैठे हुए होते और तुम्हारी मृत्यु किसी हत्या के स्थान पर लिखी होती, तो तुम्हें तुम्हारी मृत्यु वहाँ खींच ले जाती ।"

[4]यह जो कुछ भी हुआ उसका एक उद्देश्य यह भी था कि तुम्हारे सीनों में जो कुछ है अर्थात ईमान, उसकी परीक्षा ले (ताकि अवसरवादी अलग हो जायें) और फिर तुम्हारे दिलों को शैतानी शंका से पवित्र कर दे ।

[5]अर्थात उसको तो ज्ञान है कि नि:स्वार्थी मुसलमान कौन है ? और अवसरवाद का पर्दा किसने डाल रखा है ? धर्मयुद्ध के अनेक विशेषताओ में से एक विशेषता यह है कि इससे मुनाफ़िक़ और मुसलमान खुलकर सामने आ जाते हैं, जिन्हें आम जनता भी फिर देख और पहचान लेती है ।

के बहकावे में आ गये,[1] परन्तु विश्वास करो कि अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया ।[2] अल्लाह तआला क्षमा करने वाला धैर्य वाला है ।

وَلَقَدۡ عَفَا ٱللَّهُ عَنۡهُمۡۗ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٥٥﴾

(१५६) हे मुसलमानों ! तुम उनके भाँति न बनो जो कृतघ्न हो गये तथा उनके भाईयों ने जब धरती में यात्रा की अथवा धर्मयुद्ध के लिये निकले तो कहा कि यदि वह हमारे पास रहते तो उन्हें मौत न आती न उनकी हत्या होती.[3] (उनके इस विचार का कारण यह है कि) अल्लाह इसे उनके दिलों के शोक का कारण बना दे[4] तथा

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَكُونُواْ كَٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَقَالُواْ لِإِخۡوَٰنِهِمۡ إِذَا ضَرَبُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ أَوۡ كَانُواْ غُزّٗى لَّوۡ كَانُواْ عِندَنَا مَا مَاتُواْ وَمَا قُتِلُواْ لِيَجۡعَلَ ٱللَّهُ ذَٰلِكَ حَسۡرَةٗ

---

[1]अर्थात ओहद में मुसलमानों से जो चूक और कमी हुई । उसका कारण उनकी पिछली कुछ निर्बलतायें थीं जिसके कारण उस दिन शैतान उन्हें फिसलाने में सफल हो गया । जिस प्रकार कुछ सलफ़ (पूर्वजनों) का कथन है कि पुण्य का फल यह भी है कि उसके पश्चात और पुण्य करने का बल मिलता है और बुराई का कुफल यह है कि उसके बाद और बुराई करने के द्वार खुल जाते हैं अर्थात पुंण्य से पुण्य का और पाप से पाप का मार्ग खुलता और सरल होता है ।

[2]अल्लाह तआला सहाबा की चूकों के परिणाम और कारणों के पश्चात अपनी ओर से क्षमा की घोषणा कर रहा है । जिससे एक तो उनका अल्लाह तआला के सदन में प्रिय होना स्पष्ट होता है, और दूसरे यह सामान्य मुसलमानों को चेतावनी है कि जब उनको सत्य विश्वासी अल्लाह तआला ने कह दिया है, तो अब किसी को यह अधिकार नहीं कि उनको अपमानित करे अथवा उनकी आलोचना करे ।

[3]ईमानवालों को अधर्मियों एवं अवसरवादियों जैसे के विश्वास से रोका जा रहा है । क्योंकि यह विश्वास कायरता का आधार है । इसके विपरीत जब विश्वास हो कि जीवन मरण अल्लाह तआला के हाथ में है, फिर यह कि मरण का समय निर्धारित है, तो इससे मनुष्य के अन्दर संकल्प तथा साहस एवं अल्लाह के मार्ग में लड़ने की भावना पैदा होती है ।

[4]उपरोक्त कुविश्वास हार्दिक पश्चाताप का ही हेतु बनता है कि यदि वह यात्रा पर अथवा रणभूमि में न जाते, और घर पर रहते तो मौत से बच जाते । जब कि मृत्यु तो सुदृढ़ दुर्गों में भी आती है ।

فِيْ قُلُوْبِهِمْ ط وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾	जीवन और मौत अल्लाह ही देता है तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।
وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾	(१५७) यदि तुम अल्लाह के मार्ग में शहीद (बलिदान) हो जाओ अथवा मर जाओ तो अल्लाह की क्षमा उस (धन) से उत्तम है जो वे एकत्रित कर रहे हैं।[1]
وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِالَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾	(१५८) तुम मरो अथवा मारे जाओतुम्हें अल्लाह के पास ही एकत्रित होना है।
فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ج وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ص فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ	(१५९) अल्लाह तआला की कृपा के कारण आप उनके लिये कोमल बन गये हैं और यदि आप कटु वचन तथा कठोर हृदय होते, तो यह सब आपके पास से भाग खड़े होते, इसलिए आप उन्हें क्षमा करें।[2] और उनके लिए क्षमा-याचना

﴿ اَيْنَمَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ﴾

"तुम जहाँ कही भी रहो मृत्यु तुम्हें पा लेगी, यदि तुम सुदृढ़ किलों में हो (अल-निसा-७८)

इसलिए पश्चाताप से मुसलमान ही बच सकते हैं। जिनका विश्वास सही है।

[1]मृत्यु तो निश्चय आनी है, परन्तु यदि मृत्यु ऐसी आये जिसके बाद मनुष्य अल्लाह की क्षमा और कृपा का पात्र हो जाये, तो यह दुनिया की धन-सम्पत्ति से उत्तम है, जिसको एकत्रित करने में मनुष्य जीवन खपा देता है। इसलिए अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करने से पीछे नहीं हटना चाहिए इससे लगाव तथा प्रेम होना चाहिए क्योंकि इससे अल्लाह की क्षमा और कृपा निश्चित हो जाती है। परन्तु इसके साथ शर्त है कि मन की स्वच्छता के साथ हो।

[2]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो सर्वोच्च व्यवहार से युक्त थे। अल्लाह तआला अपने इस पैग़म्बर पर एक परोपकार का वर्णन कर रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अन्दर जो कोमलता है यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा का परिणाम है। यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अन्दर यह न होती इसके विपरीत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुर्व्यवहारी और कठोर हृदय के होते, तो लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकट होने के के बजाय दूर भागते। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्षमा से ही काम लें।

فِي الْأَمْرِ ۚ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾

करें और काम का परामर्श उनसे किया करें ।[1] फिर जब आप का दृढ़ निश्चय हो जाये तो अल्लाह (तआला) पर भरोसा करें ।[2] और अल्लाह (तआला) भरोसा करने वालों को मित्र रखता है ।

إِن يَنصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۖ وَإِن يَخْذُلْكُمْ فَمَن ذَا الَّذِي يَنصُرُكُم مِّن بَعْدِهِ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦٠﴾

(१६०) यदि अल्लाह तआला तुम्हारी सहायता करे, तो तुम पर कोई प्रभावी नहीं हो सकता, और यदि वह तुम्हें छोड़ दे, तो कौन है जो तुम्हारी सहायता करे ? और ईमान वालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए ।

---

[1]अर्थात मुसलमानों की सांत्वना के लिए परामर्श कर लिया करें । इस आयत से परामर्श का महत्व, विशेषता तथा लाभ और उसकी आवश्यकता एवं औचित्य सिद्ध होता है । परामर्श लेने का यह आदेश कुछ विद्वानों के निकट अनिवार्य है और कुछ के विचार में समुचित । (इब्ने कसीर) इमाम शौकानी लिखते हैं कि, "राज्याधिकारियों को आलिमों से ऐसी समस्याओं में परामर्श करना चाहिए, जिनका उन्हें ज्ञान नहीं है अथवा उनके विषय में उन्हें शंका है । सेना के उच्च अधिकारियों से सेना की समस्या में, समाज के प्रमुखों से जनता की समस्याओं के विषय में तथा अधिनस्थ अधिकारियों से उनके क्षेत्र की आवश्यकता तथा प्रमुखता के विषय में परामर्श करें ।" इब्ने अतिया कहते हैं, "ऐसे शासकों को पद से हटाने में कोई मतभेद नही है, जो ज्ञानियों और धार्मिक व्यक्ति से परामर्श नहीं करते ।" यह परामर्श केवल उन समस्या तक सीमित है, जिनके विषय में धार्मिक नियम मौन है अथवा जिनका सम्बन्ध व्यवस्था के विषय से है । (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात परामर्श के बाद जिस पर आप का विचार पक्का हो जाये, फिर अल्लाह पर भरोसा करके कर डालें । इससे तो एक बात यह ज्ञात हुई कि परामर्श के बाद अन्तिम निर्णय शासक ही का होगा, न कि परामर्शदाता अथवा उनके बहुमत का जैसाकि लोकतन्त्र में है । दूसरी यह कि सारा भरोसा अल्लाह पर ही होगा । न कि परामर्श देने वालों की बुद्धि अथवा समझ पर । अगली आयत में भी अल्लाह पर भरोसा करने पर और बल दिया जा रहा है ।

(१६१) और यह असम्भव है कि नबी के द्वारा विश्वासघात हो जाये ।[1] प्रत्येक विश्वासघाती क़ियामत के दिन विश्वासघात को लेकर उपस्थित होगा, फिर प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार न किया जायेगा ।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ ۚ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦١﴾

(१६२) क्या वह व्यक्ति जिसने अल्लाह की प्रसन्नता का अनुसरण किया उसके समान है जो अल्लाह के क्रोध के साथ लौटा ? तथा उसका स्थान नरक है और वह बहुत बुरा स्थान है ।

أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخَطٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦٢﴾

(१६३) अल्लाह तआला के पास उनके अलग-अलग पद हैं और उनके सभी कर्मों को अल्लाह भली-भाँति देख रहा है ।

هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٣﴾

(१६४) नि:संदेह मुसलमानों पर अल्लाह का उपकार है कि उसने उन्हीं में से एक रसूल

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ

---

[1]ओहद के युद्ध में जो लोग मोर्चा छोड़ कर परिहार एकत्र करने दौड़ पड़े थे, उनका विचार था कि यदि हम न पहुँचे, तो सारा परिहार दूसरे ले जायेंगे, इस पर चेतावनी दी जा रही है कि तुमने ऐसा क्यों सोचा कि तुम्हारा भाग तुम्हें नहीं मिलेगा ? क्या तुम्हें ओहद के सेनापति मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईमानदारी पर सन्तोष नहीं ? याद रखो कि एक ईशदूत के द्वारा विश्वासघात नहीं किया जा सकता क्योंकि विश्वासघात नबूवत के विपरीत है यदि नबी विश्वासघाती है, तो उसकी नबूवत पर विश्वास क्यों किया जाये ? विश्वासघात महापाप है, हदीस में इसकी कटु आलोचना की गयी है ।

उनमें भेजा ।[1] जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है और उन्हें शुद्ध करता है और उन्हें किताब तथा सूझ-बूझ सिखाता है ।[2] और

يَتْلُوا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ

---

[1]नबी के मानव तथा मानव जाति में से होने का वर्णन अल्लाह एक उपकार स्वरूप कर रहा है और वास्तव में यह परोपकार है कि इस प्रकार एक तो वह अपने वर्ग की भाषा और शैली में ही अल्लाह का संदेश पहुँचायेगा। जिसे समझने में किसी व्यक्ति को कोई कठिनाई न होगी। दूसरे लोग समान जाति के होने के कारण उससे निकट होंगे। तीसरे मनुष्य के लिए मनुष्य अर्थात आदमी का अनुसरण करना तो सम्भव है, परन्तु फ़रिश्ते का अनुसरण उसके वश में नहीं है और न फ़रिश्ता मनुष्य की चेतना तथा ज्ञान की गहराईयों और सूक्ष्मता का प्रबोध कर सकता है। इसलिए यदि पैग़म्बर फ़रिश्तों में से होते तो वह इन सभी गुणों से वंचित होते जो धर्म प्रचार के लिए अति आवश्यक है। इसलिए जितने भी नबी आये हैं सभी मानव थे क़ुरआन ने उनकी मानवता को अति स्पष्ट करके वर्णन किया है। जैसे फ़रमाया :

﴿ وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِىٓ إِلَيْهِم ﴾

"हमने आप से पहले जितने भी रसूल भेजें वह पुरुष थे, जिन पर हम आदेश करते थे।" (*यूसुफ़*-१०९)

﴿ وَمَآ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ إِلَّآ إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ ٱلطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِى ٱلْأَسْوَاقِ ﴾

"हमने आप से पहले जितने भी रसूल भेजे सभी भोजन करते और बाज़ारों में चलते थे।" (सूर: *अल-फ़ुरकान*, २०)

और स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुखार बिन्दु से कहलवाया गया।

﴿ قُلْ إِنَّمَآ أَنَا۠ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَىَّ ﴾

"आप कह दीजिए कि मैं भी तुम्हारी तरह मनुष्य हूँ, परन्तु मुझ पर वह्यी उतरती है।" (*हा॰मीम॰ अस्-सजद:*-६)

आज बहुत से मन के अंधे लोग इस बात को नहीं समझते और कुमार्ग पर हैं।

[2]इस आयत में दूतत्व के तीन मुख्य उद्देश्य का वर्णन है। (१) आयतों की तिलावत (२) शुद्धिकरण (३) किताब और सूझ-बूझ की शिक्षा। किताब की शिक्षा में तिलावत स्वयं आ जाती है। तिलावत के साथ ही शिक्षा सम्भव है। तिलावत के बिना शिक्षा का अस्तित्व नहीं। इसके अतिरिक्त तिलावत को एक उद्देश्य के रूप में वर्णन किया गया है। इससे

كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٦٤﴾

अवश्य[1] यह सब उससे पूर्व स्पष्ट रूप से भटके हुए थे।

أَوَلَمَّا أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ هُوَ مِنْ عِندِ أَنفُسِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾

(१६५) (क्या बात है) कि जब तुम पर एक आपत्ति आई जिसके दुगना तुमने उन्हें पहुँचाई है,[2] तो तुमने कहा कि यह कहाँ से आयी। (हे ईशदूत) आप कह दें कि यह तुमने स्वयं अपने ऊपर डाली है,[3] निश्चय प्रत्येक विषय पर अल्लाह का सामर्थ्य है।

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾

(१६६) तथा दोनों गिरोहों की मुठभेड़ के दिन तुम्हें जो कुछ पहुँचा तो यह अल्लाह की आज्ञा से पहुंचा और ताकि अल्लाह मुसलमानों को प्रत्यक्ष रूप से जान ले।

इस बिन्दु का स्पष्टीकरण होता है कि तिलावत स्वयं भी पवित्र एवं पुण्य का कार्य है। चाहे पढ़ने वाला उसका अर्थ समझे अथवा न समझे। क़ुरआन का अर्थ तथा उद्देश्य समझने का प्रयत्न करना प्रत्येक मुसलमान के लिए आवश्यक है, परन्तु जब तक यह उद्देश्य प्राप्त न हो अथवा इतनी समझ व योग्यता न प्राप्त हो क़ुरआन की तिलावत में अलस्य अथवा रूके रहना उचित नहीं। शुद्धि का अर्थ है विश्वास कर्म और चरित्र का सुधार। जिस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें मूर्तिपूजा से हटाकर एकेश्वरवाद की ओर लगाया। इसी प्रकार अति असभ्य और कुकर्मी समाज को सभ्य और चरित्र के मार्ग पर चलाया। विज्ञान (समझ-बूझ) व्याख्याकारों के निकट हदीस है।

[1]यहाँ إن का अर्थ आवश्य, नि:सन्देह तथा नि:शंका है।

[2]अर्थात ओहद में तुम्हारे सत्तर आदमी शहीद (बलिदान) हुए, तो बद्र में तुमने सत्तर आदमियों को मारा था और सत्तर बन्दी बनाये थे।

[3]अर्थात तुम्हारी उस ग़लती के कारण जो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बलपूर्वक आदेश के उपरान्त तुमने जो पहाड़ी मोर्चा छोड़ कर की। जिसका विवरण पहले आ चुका है कि तुम्हारी उस ग़लती के कारण काफ़िरों को फिर से आक्रमण करने का अवसर मिल गया।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا ۖ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَاكُمْ ۗ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾

(१६७) तथा द्वयवादियों को जान ले[1] जिनसे कहा गया कि आओ अल्लाह के मार्ग में लड़ो अथवा हमले से बचाव करो तो उन्होंने कहा कि यदि हम जानते की लड़ाई होगी तो अवश्य तुम्हारा साथ देते.[2] वह उस दिन ईमान की अपेक्षा कुफ़्र (अविश्वास) से निकटतम थे,[3] अपने मुख से वह बात कर रहे थे जो उनके दिलों में न थी[4] तथा अल्लाह उसे अवगत है जिसे वे छुपाते हैं।

الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۗ

(१६८) जिन्होंने अपने भाईयों के लिये कहा और स्वयं भी बैठे रहे कि यदि वह हमारी बात

---

[1]अर्थात ओहद में जो कुछ हानि तुमको पहुँची वह अल्लाह के आदेश से पहुँची (ताकि फिर तुम रसूल के आदेशों का पालन करो) इसके अतिरिक्त उद्देश्य यह था कि ईमानवालों और मुनाफ़िक़ों को अलग कर ईमानवालों को श्रेष्ठता प्रदान करें।

[2]युद्ध जानने का अर्थ है कि यदि वास्तव में आप लोग युद्ध के लिए चल रहे होते तो हम भी साथ देते परन्तु आप लोग युद्ध के बजाय अपने आप को काल के मुख में झोंक रहे हैं, ऐसे ग़लत कार्य में हम आपका साथ क्यो दें ? यह बात अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों ने इसलिए कही थी कि उनकी बात नहीं मानी गयी थी। और उस समय कहा जब वह शौत नामक स्थान पर पहुँचकर लौट रहे थे। अब्दुल्लाह बिन हराम अन्सारी उन्हें समझा बुझाकर युद्ध में सम्मिलित करने का प्रयास कर रहे थे। (इसका कुछ वर्णन गुजर चुका है)

[3]अपने इस विभेद तथा इन बातों के कारण जो उन्होंने की।

[4]अर्थात मुख से वह कहा, जो वर्णन हुआ, परन्तु दिल में यह था कि हमारे अलग होने के कारण मुसलमान निर्बल हो जायेंगे। दूसरे काफ़िरों को लाभ पहुँचेगा। उद्देश्य इस्लाम, मुसलमान और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हानि पहुँचाना था।

قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾

मानते तो हत न किये जाते। कह दो कि यदि तुम सच्चे हो तो अपनी मौत को टाल दो।[1]

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾

(१६९) और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये उन्हें मृत न समझो बल्कि वे जीवित हैं, अपने पोषक के पास जीविका दिये जा रहे हैं।[2]

فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾

(१७०) अल्लाह तआला ने अपनी कृपा जो उनको दे रखी है, उससे वह अति प्रसन्न हैं और प्रसन्नता मना रहे हैं उन लोगों के विषय में जो अब तक उनसे नहीं मिले, उनके पीछे हैं।[3] इस बात पर कि उनको न कोई भय है और न कोई क्षोभ।

---

[1]यह मुनाफ़िक़ों के उस कथन का खण्डन है कि "यदि वह हमारी बात मान लेते तो मारे न जाते।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया यदि तुम सच्चे हो तो तुम अपने ऊपर से मृत्यु को टाल दो। तात्पर्य यह है कि भाग्य से किसी को विलग नही किया गया, मृत्यु भी जहाँ और जिस प्रकार भाग्य में है। उसी स्थान पर और उसी प्रकार आकर रहेगी। इसलिए धर्मयुद्ध तथा अल्लाह के मार्ग में लड़ने से रुकने अथवा भागने से, कोई मृत्यु के पंजे से नहीं बच सकता।

[2]शहीदों का यह जीवन वास्तविक है अथवा काल्पनिक ? निःसन्देह वास्तविक है, परन्तु इसका ज्ञान दुनिया वालों को नहीं है। जैसाकि क़ुरआन ने स्पष्ट कर दिया है। कृपया देखें *सूरः अल-बक़रः-१५४*। फिर इस जीवन का अर्थ क्या है ? कुछ कहते हैं कि क़ब्रों में उनकी आत्मायें लौटा दी जाती हैं और वह अल्लाह की प्रदान की गयी सामग्रियों को प्रयोग करके आनन्दित होते हैं। कुछ कहते हैं कि स्वर्ग के फलों की सुगन्ध उन्हें आती रहती है, जिससे उनकी पवित्र आत्मा प्रफुल्लित रहती है। परन्तु हदीस से एक तीसरी परिस्थिति सामने आती है, इसलिए वही सही है वह यह कि उनकी आत्मायें हरे पंक्षियों के शरीर में अथवा सीने में प्रवेश कर दी जाती हैं और वह स्वर्ग में खाती पीती फिरती हैं और अपना प्रदत्त सामग्रियों से लाभान्वित होती रहती हैं। (फ़तहुल क़दीर निर्देशित सहीह मुस्लिम किताबुल ईमारः)

[3]अर्थात वह मुसलमान जो उनके पीछे दुनिया में जीवित हैं अथवा धर्मयुद्ध में व्यस्त हैं, इनके लिए यह कामना करते हैं कि काश उन्हें भी शहादत मिलती और उन्हें हमारी तरह यहाँ

(१७१) वह अल्लाह की कृपा और दया से प्रसन्न होते हैं और उससे भी कि अल्लाह तआला ईमानवालों के प्रतिफल को नष्ट नहीं करता ।[1]

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾

आनन्दित जीवन प्राप्त होता। ओहद के शहीदों ने अल्लाह के दरबार में प्रार्थना की कि क्या हमारे वह मुसलमान भाई जो हमारे पीछे दुनिया में जीवित हैं उन्हें हमारे हालात और आनन्दपूर्ण जीवन की सूचना देने वाला कोई है ? ताकि वह युद्ध और धर्मयुद्ध से पीछे न हटें । अल्लाह ने यह आयत फ़रमाया, "मैं तुम्हारी बात उन तक पहुँचा देता हूँ ।" इस कारण अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। (मुसनद अहमद ३६५-३६६, सुनन अबू दाऊद किताबुल जिहाद) इसके अतिरिक्त कई हदीसों से शहादत की श्रेष्ठता सिद्ध होती है। जैसाकि एक हदीस में है ।

«مَا مِنْ نَفْسٍ تَمُوتُ، لَهَا عِندَ اللهِ خَيرٌ، يَسُرُّهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَى الدُّنيَا إِلَّا الشَّهِيدُ، فَإِنَّه يَسُرُّهُ أن يَرْجِعَ إِلى الدُّنيَا فيُقتَلَ مَرَّةً أُخرىٰ لِمَا يَرَىٰ مِنْ فَضْلِ الشَّهَادَةِ».

"कोई मरने वाली आत्मा जिसे अल्लाह के यहाँ उच्च स्थान प्राप्त है, दुनिया में लौटने की चेष्टा नहीं करती परन्तु शहीद दुनिया में पुनः आने की चेष्टा करता है, ताकि वह पुनः अल्लाह के मार्ग में शहीद हो, यह कामना वह इसलिए करता है कि शहादत की श्रेष्ठता को वह देख लेता है।" (मुसनद अहमद ३/१२६, सहीह मुस्लिम किताबुल इमार :, बाँब फ़जलुशशहाद:)

आदरणीय जाबिर (रज़ी अल्लाह अन्हु) कहते हैं कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु असैहि वसल्लम ने मुझसे कहा कि तुझे ज्ञात है कि अल्लाह तआला ने तेरे पिता को जीवित किया और कहा कि मुझसे अपनी किसी कामना का प्रदर्शन कर (ताकि मैं उसे पूरा करूँ) तेरे पिता ने उत्तर दिया कि मेरी तो यह कामना है कि मुझे पुनः दुनिया में भेज दिया जाये ताकि पुनः तेरी राह में मारा जाऊँ, अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह तो असम्भव है क्योंकि मेरा निर्णय है कि मेरे पास आने के बाद कोई दुनिया में वापस नहीं जा सकता। (मुसनद अहमद ३/३६१)

[1]यह आनन्दमयी बात पहली आनन्दायक बात की पुनरावृत्ति है और इस बात का वर्णन है कि उनकी प्रसन्नता केवल भय और दुख से वंचित होने के कारण नहीं है। बल्कि अल्लाह की कृपा और उसकी अनमोल दया तथा कृपा के कारण है। और कुछ व्याख्याकारों के अनुसार पहली प्रसन्नता का सम्बन्ध संसार में रह जाने वाले भाईयों के कारण है, और यह दूसरी प्रसन्नता उस उपहार व कृपा की है, जो अल्लाह तआला की ओर से स्वयं उन पर हुई। (फ़तहुल क़दीर)

(१७२) जिन लोगों ने घायल होने के बाद (भी) अल्लाह एवं रसूल का आदेश मान लिया उनमें से जो सत्कार किये तथा परहेजगार रहे उनके लिए बड़ा प्रतिफल है।[1]

ٱلَّذِينَ ٱسْتَجَابُوا۟ لِلَّهِ وَٱلرَّسُولِ مِنۢ بَعْدِ مَآ أَصَابَهُمُ ٱلْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا۟ مِنْهُمْ وَٱتَّقَوْا۟ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٢﴾

(१७३) जिनसे लोगों ने कहा कि लोग तुम्हारे लिये एकत्रित हो चुके हैं, अतः उनसे डरो, तो उनका ईमान बढ़ गया और कहा कि अल्लाह हमारे लिये बस है तथा वह उत्तम संरक्षक है।[2]

ٱلَّذِينَ قَالَ لَهُمُ ٱلنَّاسُ إِنَّ ٱلنَّاسَ قَدْ جَمَعُوا۟ لَكُمْ فَٱخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَـٰنًا وَقَالُوا۟ حَسْبُنَا ٱللَّهُ وَنِعْمَ ٱلْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾

---

[1]जब मूर्तिपूजक ओहद के युद्ध से लौटे तो उन्हें मार्ग में याद आया कि उन्होंने एक अच्छा अवसर खो दिया। मुसलमान पराजय के कारण साहस खो बैठे थे और भयभीत थे। हमें इससे लाभ उठाकर मदीना पर भरपूर हमला कर देना चाहिए था, ताकि इस्लाम का यह पौधा अपनी धरती (मदीना) से ही नष्ट हो जाता। इधर मदीना पहुँच कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विचार आया कि कहीं मूर्तिपूजक फिर पलट कर न आयें। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को लड़ने के लिए तैयार किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने पर सहाबा दुखी होने के पश्चात भी तैयार हो गये। मुसलमानों का यह क़ाफ़िला जब मदीने से ८ मील दूर स्थित "हमरॉउल असद" नामक स्थान पर पहुँचा तो मूर्तिपूजकों को भय प्रतीत हुआ, अतएव उन्होने अपना विचार बदल दिया। और वह मदीना पर आक्रमण करने के बजाय मक्का वापस चले गये। उसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथी मदीना वापस आ गये। इस आयत में मुसलमानों के इसी अल्लाह और रसूल की आज्ञापालन की भावना की प्रशंसा की गयी है। कुछ ने इस आयत के उतरने का कारण अबू सुफ़ियान (जो अभी ईमान नही लाये थे) की उस धमकी को बतलाया है, "कि अगले वर्ष छूटे बद्र में हमारा तुम्हारा मुक़ाबिला होगा।" इस पर मुसलमानों ने भी अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञापालन करते हुए इस साहस का प्रदर्शन किया था कि धर्मयुद्ध में भरपूर भाग लेने का दृढ़ विचार कर लिया है। (उदघृत फ़तहुल क़दीर व इब्ने कसीर) परन्तु यह अन्तिम कथन पूर्व के विषय से मेल नही खाता।

[2]"हमराउल असद" और कहा जाता है कि छोटे बद्र के स्थान पर अबू सुफ़ियान ने कुछ लोगों की सेवा धन देकर प्राप्त की और उनके द्वारा मुसलमानों में यह अफ़वाह फैला दी कि मक्का के मूर्तिपूजक युद्ध के लिए भरपूर तैयारी कर रहे हैं। ताकि यह सुनकर मुसलमानों की हिम्मत टूट जाये। कुछ कथनों में यह है कि यह काम शैतान ने अपने शिष्यों से लिया। परन्तु मुसलमान यह अफ़वाह सुनकर और भी सुदृढ़ इरादे और साहस से तैयार

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٤﴾

(१७४) (प्रणाम यह हुआ कि) वह अल्लाह की कृपा के साथ वापस हुए [1] उन्हें कोई दुख नहीं पहुंचा। उन्होंने अल्लाह की अनुग्रह का मार्ग अपनाया। तथा अल्लाह विशाल अनुकम्पा वाला है।

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۖ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾

(१७५) यह शैतान (राक्षस) ही है जो अपने मित्रों से डराता है[2] अत:उनसे न डरो मुझसे ही डरो यदि तुम ईमान वाले हो।[3]

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا

(१७६) जो शीघ्रता से कुफ्र में जा रहे हैं, उनसे आप उदासीन न हों वह अल्लाह तआला का

हो गये। जिसको यहाँ ईमान की अधिकता से तुलना की गयी है क्योंकि ईमान जितना दृढ़ होगा धर्मयुद्ध का साहस तथा संकल्प भी उतना ही अधिक होगा। यह आयत इस बात की साक्षी है कि ईमान कोई अटल विषय नहीं है। बल्कि इसमें कमी और अधिकता होती रहती है जैसाकि मोहद्दिसीन का विचार है। यह भी ज्ञात हुआ कि दुख में ईमान वाले अल्लाह पर विश्वास और भरोसा करते हैं इसीलिए हदीस में ﴿حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ﴾ पढ़ने पर बल दिया गया है। इसी प्रकार सहीह बुख़ारी आदि में है आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब आग में डाला गया तो आपकी ज़बान पर यही शब्द थे। (फ़तहुल क़दीर)

[1]कृपा से तात्पर्य सुरक्षा है और दया से तात्पर्य लाभ है। जो छोटे बद्र में व्यापार द्वारा प्राप्त हुआ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छोटे बद्र में एक गुजरने वाले क़ाफ़िले से व्यापार की सामग्री क्रय करके बेच दी, जिससे लाभ प्राप्त हुआ और लाभ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों में विभाजित कर दिया। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात वह तुम्हें शंका तथा भ्रम में डालता है कि वह बहुत वीर और बलवान हैं।

[3]अर्थात यदि वह तुम्हें इस प्रकार के भ्रम में डाले तो तुम केवल मुझ पर ही भरोसा करो और मेरी ओर ही पलटो! मै तुम्हारे लिए काफी हो जाऊँगा और तुम्हारा रक्षक रहूँगा। जैसाकि दूसरे स्थान पर बताया गया है।

﴿اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ﴾

"क्या अल्लाह तआला अपने भक्तों के लिए काफी नहीं ?"(अल-ज़ुमर-३६)

थोड़ा और देखिए। ﴿كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ﴾ आदि आयत हैं।

اللهَ شَيْـًٔا ۗ يُرِيدُ اللهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٦﴾

कुछ न बिगाड़ सकेंगे। अल्लाह परलोक में उन्हें कोई भाग नहीं देना चाहता।[1] और उनके लिए घोर यातना है।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَن يَضُرُّوا اللهَ شَيْـًٔا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾

(१७७) कुफ्र को ईमान के बदले क्रय करने वाले लोग कदापि-कदापि अल्लाह (तआला) को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते और उन्हीं के लिए दु:खदायी यातना है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِّأَنفُسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٧٨﴾

(१७८) काफ़िर लोग यह न सोचें कि हमारा उन्हें अवसर देना उनके लिये अच्छा है। हम यह अवसर इसलिये दे रहे है कि वह और अधिक पाप कर लें, तथा उन्हीं के लिये अपमानित यातना है।[2]

---

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आन्तरिक इच्छा थी कि सभी लोग मुसलमान हो जायें, इसी कारण उनके इंकार और झुठलाने से आपको दुख होता था। अल्लाह तआला ने इस आयत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी है कि आप दुखी न हों यह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, अपनी ही आख़िरत नाश कर रहे हैं।

[2]इस आयत में अल्लाह तआला के समय देने के नियम का वर्णन है। अर्थात अल्लाह तआला अपनी नियम तथा इच्छा से काफ़िरों को समय प्रदान करता है। सामायिक रूप से उन्हें सांसारिक ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि, विजय तथा धन और सन्तान प्रदान करता है। लोग समझते हैं कि उन पर अल्लाह की कृपा हो रही है। परन्तु यदि अल्लाह की प्रदान की हुई सुख-समृद्धि से लाभान्वित होने वाले पुण्य और अल्लाह के आदेशों का पालन करने का मार्ग नहीं अपनाते तो यह सांसारिक सुख अल्लाह तआला की कृपा नहीं, अल्लाह कि ओर से समय प्रदान करना है। जिससे उनके अधर्म और अवज्ञा में बढ़ोत्तरी ही होती है। अन्ततः वह नरक की स्थाई यातना के अधिकारी हो जाते हैं। इस विषय में अल्लाह तआला ने कई स्थान पर वर्णन किया है। जैसे-

﴿ أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ ۝ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ ﴾

(१७९) जिस हाल पर तुम हो उसी पर अल्लाह ईमानवालों को छोड़ नहीं देगा जब तक कि पवित्र और अपवित्र को अलग-अलग न कर दे।[1] और न अल्लाह ऐसा है कि तुम्हें परोक्ष से सूचित कर दे,[2] परन्तु अल्लाह अपने रसूलों में से जिसको चाहे चुन लेता है।[3] इसलिए तुम

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَي الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۠

"क्या वह यह समझते हैं कि हम जो उनके धन और सन्तान में वृद्धि करते हैं, यह हम उनके लिए भलाईयों में शीघ्रता कर रहे हैं नहीं, बल्कि यह वह समझते ही नहीं।" *(अल- मोमिनून- ५५-५६)*

[1]इसलिए अल्लाह तआला परीक्षा कुंड से गुजारता है, ताकि उसके मित्र स्पष्ट हो जायें और शत्रु अपमानित हो जायें। ईमानवाला, धैर्यवान, मुनाफ़िक़ से पृथक हो जाये, जिस प्रकार ओहद में अल्लाह तआला ने ईमानवालों की परीक्षा ली जिससे उनके ईमान धैर्य तथा दृढ़ता और आज्ञापालन करने के साहस का प्रदर्शन हुआ और मुनाफ़िक़ों के चेहरे पर जो निफ़ाक़ (फूट) का पर्दा था वह गिर गया।

[2]अर्थात यदि अल्लाह तआला इस प्रकार के दुखों से परीक्षा लेकर लोगों के हालात और उनके बाहरी और भीतरी विचार को स्पष्ट नहीं करे तो तुम्हारे पास कोई अन्तर्यामी तो है नहीं, जिससे तुमको यह चीजे स्पष्ट हो सके और तुम जान सको कि कौन मुनाफ़िक़ है और कौन शुद्ध ईमानवाला।

[3]परन्तु कुछ परिस्थितियों में अल्लाह तआला अपने रसूलों में से जिसे चाहता परोक्ष का ज्ञान दे देता है। जिससे कई बार उन पर अवसरवादियों और उनकी दशा तथा उनकी चालों का भेद खुल जाता है। परन्तु सामान्य रूप से नबी भी (यदि अल्लाह तआला न चाहे) मुनाफ़िक़ों के आन्तरिक निफ़ाक़ (द्वयवाद) और उनकी धोखेबाजी से अनजान ही रहता है (जिस प्रकार *सूरः तौबः* की आयत संख्या १०१ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि गँवारों और मदीने वालों में जो द्वयवादी हैं हे पैग़म्बर! आप उनको नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं।) इसका दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि परोक्ष का ज्ञान हम केवल अपने रसूलों को ही प्रदान करते हैं क्योंकि यह उनके पद की आवश्यकता है। इसी अल्लाह की प्रकाशना तथा परोक्ष के द्वारा ही वह लोगों को अल्लाह ताअला की ओर बुलाते हैं और अपने को अल्लाह का रसूल सिद्ध करते हैं। इस विषय को दूसरे स्थान पर इस प्रकार वर्णित किया गया है

﴿ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰي غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ ﴾

فَآمِنُوا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٩﴾

अल्लाह (तआला) पर और उसके रसूलों पर ईमान रखो, यदि तुम ईमान लाओ और अल्लाह से परहेज़गारी करो, तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ा बदला है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۖ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهٖ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَلِلّٰهِ مِيرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٨٠﴾

(१८०) तथा जिनको अल्लाह ने अपनी कृपा से (धन) दिया है और वह उसमें कंजूसी (कृपण) करते हैं तो इसे अच्छा न समझें बल्कि वह उनके लिए अति बुरा है। उन्होंने जिस (धन) में कंजूसी की है प्रलय के दिन उनका (गले का) तौक़ होगी,[1] तथा आसमानों एवं धरती का उत्तराधिकार मात्र अल्लाह के लिये है, तथा वह तुम्हारी कृतियों से सूचित है।

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللّٰهَ فَقِيرٌ وَّنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۘ

(१८१) अवश्य अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह निर्धन

"परोक्ष का ज्ञान (अल्लाह तआला को है) और अपने परोक्ष से प्रिय रसूलों को ही अवगत कराता है।" (*सूर: अल-जिन्न-२६-२७*)

स्पष्ट बात है यह परोक्ष की बातें वही हैं, जिनका सम्बन्ध दूतत्व के पद तथा कर्तव्य को पूरा करने से होता है। न कि ما كان وما يكون (जो कुछ हो चुका और आगे क़ियामत तक जो होने वाला है) का ज्ञान। जैसाकि कुछ ग़लत लोग इस प्रकार के परोक्ष का ज्ञान नबियों के लिए और कुछ लोग अपने "पुण्यात्मा इमामों" के लिए कहते हैं।

[1]इसमें उस कंजूस का वर्णन किया गया है, जो अल्लाह के प्रदान किये हुए धन को अल्लाह के मार्ग में व्यय नहीं करता यहाँ तक कि उनमें से अनिवार्य ज़कात भी नहीं निकालता। सहीह बुख़ारी की हदीस में आता है कि क़ियामत के दिन उसके धन को एक विषाक्त सर्प बनाकर जंजीर की तरह गले में डाल दिया जायेगा, वह सर्प उसकी बाँछें पकड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा धन हूँ। तेरा कोष हूँ।

«مَنْ آتَاهُ اللهُ مَالًا فَلَمْ يُؤَدِّ زَكَاتَهُ، مُثِّلَ لَهُ شُجَاعًا أَقْرَعَ، لَهُ زَبِيبَتَانِ، يُطَوَّقُهُ يَومَ القِيَامَةِ»

(सहीह बुख़ारी किताब अल तफ़सीर)

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾

है तथा हम धनी हैं।[1] हम उनकी यह बात लिख लेंगे तथा इनके द्वारा ईशदूतों की अवैध हत्या को भी,[2] तथा हम कहेंगे कि जलने की यातना चखो।

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿١٨٢﴾

(१८२) यह तुम्हारे करतूत हैं तथा निश्चय अल्लाह अपने भक्तों पर तनिक अत्याचार नहीं करता।

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨٣﴾

(१८३) इन्होंने कहा कि हम से अल्लाह ने वचन लिया है कि हम किसी ईशदूत को न मानें जब तक कि वह हमारे समक्ष ऐसी बलि न लाये जिसे आग खा जाये, आप कहिये कि तुम्हारे पास मुझसे पूर्व ईशदूत तर्कें एवं उसके सहित वह भी लाये जो तुमने कहा तो तुमने उन्हें क्यों हत किया[3] यदि तुम सत्यवादी हो।

---

[1]जब अल्लाह तआला ने ईमानवालों को अल्लाह तआला के मार्ग में व्यय करने का प्रलोभन दिया और फ़रमाया :

﴿مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا﴾

"कौन है जो अल्लाह को अच्छा ॠण दे।" *(अल-बक़र:-२४५)*

तो यहूदियों ने कहा ऐ! मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम !) तेरा प्रभु निर्धन हो गया है कि अपने भक्तों से ॠण माँग रहा है। जिस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात वर्णित कथन जिसमें अल्लाह तआला को अपमान जनक शब्द कहे गये हैं। और इसी प्रकार उनके (पूर्वजों का) नबियों की अकारण हत्या करना, उनके ये सभी अपराध अल्लाह के सदन में लिखे हुए हैं। जिनके कारण वह नरक की अग्नि में डाले जायेंगे।

[3]इसमें भी यहूदियों की एक और बात को झुठलाया जा रहा है। वह कहते थे कि अल्लाह तआला ने हमसे वचन लिया है कि तुम केवल उस रसूल पर विश्वास करना जिसकी प्रार्थना से आकाश से आग उतरे और बलि तथा दान को जला डाले। उनका तात्पर्य यह

(१८४) फिर भी यदि यह लोग आप को झुठलायें, तो आप से पूर्व बहुत से रसूल झुठलाये गये, जो अपने साथ स्पष्ट प्रमाण, पत्रक तथा प्रकाशमान पुस्तकें लेकर आये।[1]

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ جَآءُو بِٱلْبَيِّنَٰتِ وَٱلزُّبُرِ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلْمُنِيرِ ﴿١٨٤﴾

(१८५) प्रत्येक जीव को मृत्यु का स्वाद चखना ही है और क़ियामत के दिन तुम अपने प्रतिकार पूरे-पूरे दिये जाओगे, परन्तु जो व्यक्ति आग से हटा दिया जाये और स्वर्ग में प्रवेश करा दिया जाये, निःसन्देह वह सफल हो गया। और दुनिया का जीवन केवल धोखे का सामान है।[2]

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ ٱلْمَوْتِ ۗ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۖ فَمَن زُحْزِحَ عَنِ ٱلنَّارِ وَأُدْخِلَ ٱلْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَآ إِلَّا مَتَٰعُ ٱلْغُرُورِ ﴿١٨٥﴾

था कि ऐ मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप के द्वारा इस प्रकार का चमत्कार प्रकट नहीं हुआ है। इसलिए अल्लाह के आदेशानुसार आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रिसालत पर हमें ईमानलाना आवश्यक नहीं है यद्यपि पूर्व के नबियों में से कुछ नबियों की प्रार्थना पर आकाश से आग आती और ईमानवालों के दान और बलि को खा जाती जो एक ओर इस बात का प्रमाण होता कि अल्लाह के मार्ग में प्रस्तुत किया हुआ दान अथवा बलि अल्लाह तआला के दरबार में स्वीकार हो गयी। दूसरी ओर यह सिद्ध करती कि यह नबी सत्य हैं। परन्तु इन यहूदियों ने उन नबियों और रसूलों को भी झुठलाया इसलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यदि तुम अपने दावे में सच्चे हो, तो फिर तुमने ऐसे पैग़म्बर को क्यों झुठलाया और उनकी हत्या की, जो तुम्हारे द्वारा माँगी गयी निशानियाँ लेकर आये थे।

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि आप यहूदियों के तर्क-वितर्क से उदास न हों। इस प्रकार का व्यवहार केवल अपके साथ नहीं किया जा रहा है, बल्कि आप से पूर्व आने वाले पैग़म्बरों के साथ भी यही किया जा चुका है।

[2]इस आयत में एक अटल तथ्य का वर्णन है कि मौत से कोई भाग नहीं सकता। दूसरा यह कि दुनिया में जिसने भी अच्छा या बुरा जो कुछ किया है, उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा। तीसरा, सफलता की सीमा बतायी गयी है, कि सफल वास्तव में वह है जिसने दुनिया में रहकर अपने प्रभु को प्रसन्न कर लिया जिसके परिणामस्वरूप वह नरक से मुक्त कर दिया गया और स्वर्ग में प्रवेशित कर दिया गया। चौथा यह कि दुनिया का जीवन धोखे की सामग्री है, जो उससे अपना दामन बचाकर निकल गया, वह सौभाग्यशाली है और जो उसमें फंस गया, असफल और हतभागा है।

(१८६) अवश्य तुम्हारे धन और आत्माओं में तुम्हारी परीक्षा ली जायेगी।[1] और अवश्य तुम्हें उन लोगों की जो तुम से पूर्व किताब दिये गये और मूर्तिपूजकों की बहुत सी दुख देने वाली बातें सुननी पड़ेगीं और यदि तुम धैर्य रखो और आज्ञा का पालन करो, तो अवश्य यह बहुत बड़े साहस का कार्य है।[2]

لَتُبْلَوُنَّ فِيٓ أَمْوَٰلِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَمِنَ ٱلَّذِينَ أَشْرَكُوٓا۟ أَذًى كَثِيرًا ۚ وَإِن تَصْبِرُوا۟ وَتَتَّقُوا۟ فَإِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ ٱلْأُمُورِ ﴿١٨٦﴾

---

[1]ईमानवालों के ईमान अनुसार परीक्षा लेने का वर्णन है। जैसाकि सूरः *अल-बक़रः* की आयत संख्या १५५ में गुज़र चुका है। इस आयत की व्याख्या में एक घटना का वर्णन आता है कि मुनाफ़िक़ों के मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबैय्य ने अभी इस्लाम स्वीकार करने की घोषणा नहीं की थी और बद्र का युद्ध भी नहीं हुआ था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आदरणीय साद बिन उबादः की बीमारी के समय मिलने के लिए बनी हारिस बिन ख़ज़रज में पधारे। मार्ग में एक स्थान पर यहूदी, मूर्तिपूजक और अब्दुल्लाह बिन उबैय्य आदि बैठे हुए थे। आपकी सवारी से जो धूल उड़ी थी, उसने उससे भी अप्रसन्नता का प्रदर्शन किया। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ठहर कर उनको इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आमन्त्रण भी दिया। जिस पर अब्दुल्लाह बिन उबैय्य ने अपशब्द भी कहे। वहाँ कुछ मुसलमान भी थे। उन्होंने इसके विपरीत आपकी प्रशंसा की, निकट था कि उनके मध्य झगड़ा हो जाये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन सबको शान्त कराया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आदरणीय साद के पास पहुँचे तो यह घटना सुनायी, जिस पर उन्होंने यह कहा कि अब्दुल्लाह बिन उबैय्य यह बातें इसलिए करता है कि आपके मदीना आने के पूर्व, यहाँ के निवासियों को उसका राजतिलक करना था, आप के आने के कारण उसकी सरदारी का यह सुन्दर स्वप्न अधूरा रह गया, जिसका उसे अति दुख है और उसकी यह बातें उसकी इसी कटुता तथा शत्रुता का प्रदर्शन हैं इसलिए उसे क्षमा करने से ही काम लें। (सहीह बुख़ारी किताबुल तफ़सीर संक्षिप्त)

[2]अहले किताब से तात्पर्य यहूदी तथा ईसाई हैं। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध अपशब्द तथा दुष्प्रचार करते थे। यही दशा अरब के मूर्तिपूजकों की थी। इनके अतिरिक्त मदीने में आने के पश्चात मुनाफ़िक़ विशेषरूप से उनका मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबैय्य भी आप की मान-मर्यादा पर प्रहार करता था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना आने से पूर्व मदीनावासी उसे अपना सरदार बनाने वाले थे, और उसके राजतिलक की तैयारी पूर्ण हो चुकी थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से उसका यह स्वप्न टूट गया, जिसका उसे अत्यधिक दुख था अतएव प्रतिशोध की भावना के कारण वह आप के विरुद्ध अपमान और निन्दा करने का कोई अवसर हाथ से

(१८७) और जब अल्लाह (तआला) ने अहले किताब से वचन लिया कि तुम उसे सभी लोगों से अवश्य वर्णन करोगे और उसे छिपाओगे नहीं, तो फिर भी उन लोगों ने उस वचन को पीठ पीछे डाल दिया और उसे बहुत कम मूल्य पर बेच डाला। उनका यह व्यापार बहुत बुरा है।[1]

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٧﴾

(१८८) वह लोग जो अपने करतूतों पर प्रसन्न हैं और चाहते हैं कि जो उन्होंने नहीं किया उस पर भी उनकी प्रशंसा की जाये। आप उन्हें यातना से मुक्त न समझिये। उनके लिए तो कष्टदायी यातनायें हैं।[2]

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوا وَّيُحِبُّونَ أَن يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُم بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨٨﴾

नहीं जाने देता था (जैसाकि बुख़ारी के संदर्भ से इसकी आवश्यक विवरण पिछले स्तम्भ में गुजर चुका है)। इस स्थिति में मुसलमानों को क्षमा करने तथा धैर्य रखने की शिक्षा दी जा रही है। जिससे ज्ञात हुआ कि इस्लाम का आमन्त्रण देने वालों को दुखों और कठिनाई का होना इस सत्यमार्ग के अटल परिस्थिति में से है और इसका इलाज धैर्य अल्लाह के लिए, दृढ़ता के लिए अल्लाह की सहायता की कामना और अल्लाह की ओर सम्बोधित होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। (इब्ने कसीर)

[1]इसमें अहले किताब को रोका तथा निन्दा की जा रही है कि उनसे अल्लाह तआला ने जो वचन लिया था कि अल्लाह की किताब (तौरात और इंजील) में जो बातें लिखी हैं और अन्तिम नबी के जिन गुणों का वर्णन है, उन्हें लोगों के समक्ष वर्णन करें और छिपायेंगे नहीं परन्तु उन्होंने थोड़े से सांसारिक लाभ के लिये अल्लाह तआला को दिये गये वचन भंग कर दिया अर्थात यह ज्ञानियों को चेतावनी दी जा रही है कि उनके पास जो लाभदायक ज्ञान हैं, जिससे लोगों के विश्वास तथा कर्मों का सुधार हो सकता है, वह लोगों तक अवश्य पहुँचाना चाहिए। सांसारिक लोभ और लाभ के लिये उनको छिपाना बहुत बड़ा अपराध है। प्रलय के दिन ऐसे लोगों को आग की लगाम पहनायी जायेगी। (जैसाकि हदीस में है)

[2]इसमें ऐसे लोगों को कठोर चेतावनी दी जा रही है जो अपने सामायिक पराक्रमों पर ही प्रसन्न नहीं होते, बल्कि यह भी चाहते हैं कि उनके खाते में वह कारनामे भी लिखे अथवा प्रकाशित किये जायें जो उन्होंने नहीं किये हैं। यह रोग आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग के कुछ लोगों में था जिसके कारण यह आयत उतरी। उसी जैसा रोग वर्तमान

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٨٩﴾

(१८९) और आकाशों और धरती का मालिक अल्लाह (तआला) ही है और अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾

(१९०) नि:संदेह आकाशों और धरती के बनाने में और रात-दिन के हेर-फेर में अवश्य बुद्धिमानों के लिए निशानियाँ हैं।[1]

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾

(१९१) जो अल्लाह (तआला) की याद खड़े और बैठे तथा अपनी करवटों पर लेटे हुए करते हैं और आकाशों तथा धरती की सृष्टि पर विचार करते हैं (और कहते हैं) कि हे हमारे प्रभु ! तूने यह सब बिना लाभ के नहीं बनाया।

युग के खुशामद पसन्द लोगों तथा प्रचार एवं हथकंडों द्वारा बने नेताओं में भी सामान्य है। ब्यान के आगामी क्रम से यह भी विदित होता है कि यहूदी अल्लाह की किताब के बदलने तथा घटाने-बढ़ाने के अपराधी थे। परन्तु वह अपने इन करतूतों से प्रसन्न होते थे। यही दशा आजकल के भूठे गिरोहों का भी है। वह भी लोगों को कुपथ करके तथा भटका कर अल्लाह की आयतों के अर्थ में परिवर्तन करके एवं धोखा देकर प्रसन्न होते हैं और दावा यह करते हैं कि वही सत्य पर हैं और यह कि उनकी धूर्तता एवं छलावे पर उनकी वाह वाह की जाये।

[1]अर्थात जो लोग धरती और आकाश की रचना, विश्व के अन्य भेदों एवं रहस्य पर विचार करते हैं उन्हें जगत के रचयिता एवं वास्तविक शासक का ज्ञान हो जाता है। और वह समभ जाते है कि इतने विशाल जगत की व्यवस्था में तनिक भी बाधा उत्पन्न नहीं होती, निश्चय उसके पीछे कोई एक चालक तथा व्यवस्थापक है और वह अल्लाह है। आगे इन्हीं बुद्धिमानों का वर्णन है कि वे उठते-बैठते और करवट लेटे अल्लाह को याद करते हैं। हदीस में आता है कि ﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَٰوَٰتِ﴾ से लेकर सूरह के अन्त तक यह आयतें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को जब तहज्जुद की नमाज के लिए उठते, तो पढ़ते और उसके बाद वज़ू करते। (सहीह बुख़ारी, किताबुत तफ़सीर सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात ३/१८२)

तू पवित्र है, बस तू हमें आग की यातना से बचा ले ।[1]

(१९२) ऐ हमारे पालनहार ! तू जिसे नरक में डाले निःसन्देह तूने उसे अपमानित किया और अत्याचारियों का सहायक कोई नहीं है ।

رَبَّنَآ إِنَّكَ مَن تُدْخِلِ ٱلنَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُۥ ۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿١٩٢﴾

(१९३) हे हमारे प्रभु ! हमने सुना कि उद्घोषक ईमान की ओर पुकार रहा है कि लोगो ! अपने प्रभु पर ईमान लाओ, और हम ईमान लाये । हे हमारे प्रभु ! अब तो हमारे पाप क्षमा कर दे और हमारी बुराईयाँ हम से दूर कर दे और हमारी मृत्यु सदाचारियों के साथ कर ।

رَّبَّنَآ إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِى لِلْإِيمَٰنِ أَنْ ءَامِنُوا۟ بِرَبِّكُمْ فَـَٔامَنَّا ۚ رَبَّنَا فَٱغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّـَٔاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ ٱلْأَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾

---

[1]इन दस आतयों में से पहली आयत में अल्लाह तआला ने अपने बल एवं सामर्थ्य के कुछ लक्षणों की चर्चा की है और फ़रमाया कि यह निशानियाँ अवश्य हैं, परन्तु किनके लिए ? बुद्धिमान और ज्ञानियों के लिए अर्थात इसका तात्पर्य यह हुआ कि रचना के चमत्कार तथा उसके सामर्थ्य को देखकर भी जिसे ईश्वर (अल्लाह) का ज्ञान न हो वह ज्ञानहीन है परन्तु यह खेद का विषय है कि इस्लामी दुनिया में उसी को ज्ञानी माना जाता है, जो अल्लाह तआला के विषय में शंका का शिकार हो فإنا لله و إنا إليه راجعون दूसरी आयत में ज्ञानियों को अल्लाह की याद से अभिरूचि तथा आकाश एवं पृथ्वी क़ी रचना में सोच-विचार का वर्णन है, जैसाकि हदीस में भी आया है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया खड़े होकर नमाज़ पढ़ो यदि खड़े नही हो सकते, तो बैठकर पढ़ो, यदि बैठकर नहीं पढ़ सकते, तो लेट कर नमाज़ पढ़ो। (सहीह बुख़ारी किताबुस्सलात) ऐसे लोग जो अल्लाह की हर समय याद करते और रखते हैं और आकाश और धरती की रचना पर ध्यान-विचार करते हैं, जिनसे रचयिता की महिमा, शक्ति, उसका ज्ञान तथा उसकी कृपा एवं प्रभुत्व की सही दिशा उन्हें प्राप्त होती है । तो वह पुकार उठते हैं कि सृष्टि के प्रभु ने यह सृष्टि यूँ ही अकारण नहीं बनायी है, बल्कि इसका उद्देश्य भक्तों की परीक्षा लेना है । जो सफल हो गया उसके लिए अनन्तकाल तक के लिए स्वर्ग की सुख-सुविधा है और जो असफल हो गया उसे अग्नि की यातना है । इसलिए वह आग की यातना से बचने की प्रार्थना भी करते हैं । इसके बाद वाली तीन आयतों में भी क्षमा-याचना तथा प्रलय के दिन के अपमान से बचने की प्रार्थनायें हैं ।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ﴿۱۹۴﴾

(१९४) हे हमारे प्रभु ! हमें वह प्रदान कर जिसका वायदा तूने हमसे अपने रसूलों के मुख से किया है और हमें क़ियामत के दिन अपमानित न कर, नि:सन्देह तू वायदा के विपरीत नहीं करता।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّیْ لَاۤ اُضِیْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰی ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِیْ سَبِیْلِیْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَیِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾

(१९५) अत:उनके पालनहार ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की।[1] कि तुममें से किसी कार्यकर्त्ता के कर्मों को चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री में कदापि विफल नहीं करता।[2] तुम आपस में एक-दूसरे से हो।[3] इसलिए वह लोग जिन्होंने हिजरत (धर्म के कारण स्थानान्तरण) किया और अपने घरों से निकाल दिये गये और जिन्हें मेरे मार्ग में कष्ट दिया गया और जिन्होंने धर्मयुद्ध किया और शहीद किये गये अवश्य मैं उनकी बुराईयाँ उनसे दूर कर दूँगा और अवश्य उनको उस स्वर्ग में ले जाऊँगा, जिनके नीचे

---

[1] فاستجاب यहाँ أجاب अर्थात स्वीकार किया के अर्थ में प्रयोग हुआ है।

[2]पुरुष हो अथवा स्त्री का वर्णन इसलिये कर दिया गया है कि इस्लाम ने कुछ कर्मों में पुरुष-स्त्री के मध्य उनके एक-दूसरे से प्राकृतिक भिन्नता और गुणों के आधार पर जो अन्तर किया है। जैसे संरक्षण तथा अधिपत्य में, जीविका उपार्जन में धर्मयुद्ध में भाग लेने में और उत्तराधिकार में आधा भाग मिलने में। इससे यह अर्थ न निकाल लिया जाये कि पुण्य कर्मों के प्रत्युपकार में भी शायद पुरुष स्त्री में कुछ अन्तर किया जायेगा। नहीं, ऐसा नहीं होगा। प्रत्येक का समान बदला मिलेगा, वही पुण्य यदि एक स्त्री करेगी तो उसको भी वही बदला मिलेगा।

[3]यह वाक्य अलग है और इसका अभिप्राय उपरोक्त बिन्दु का वर्णन है अर्थात बदला एवं आज्ञापालन में तुम नर-नारी एक ही हो अर्थात एक समान हो, कुछ हदीसो में है कि आदरणीया उम्मे सलमा ने एक बार कहा कि हे अल्लाह के रसूल अल्लाह ने हिजरत (धर्म के लिये प्रवास) के विषय में नारियों का नाम नहीं लिया, उस पर यह आयत उतरी (तफ़सीर तबरी, इब्ने कसीर, तथा फ़तहुल क़दीर)

नहरें बह रही हैं, यह है पुण्य अल्लाह (तआला) की ओर से और अल्लाह (तआला) ही के पास श्रेष्ठ प्रत्युपकार है।

(१९६) नगरों में काफ़िरों की यातायात तुझे धोखे में न डाल दे।[1]

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾

(१९७) यह तो बहुत ही थोड़ा लाभ है।[2] उसके पश्चात उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरा स्थान है।

مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾

---

[1]यद्यपि सम्बोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किया गया है, परन्तु सम्बोधित पूरी उम्मत है। शहरों में यातायात से तात्पर्य व्यापार के लिए एक शहर से दूसरे शहर अथवा एक देश से दूसरे देश जाना है। यह व्यापारिक यात्रा सांसारिक साधनों की अधिकता तथा व्यापारिक क्षेत्र के विस्तार का प्रमाण है अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह सब अस्थाई तथा कुछ दिनों का लाभ है। इससे ईमानवालों को धोखे में नहीं पड़ना चाहिए। वास्तविक परिणाम को दृष्टि में रखना चाहिए, जो ईमान के न होने के कारण नरक की स्थाई यातना है। जिसमें यह सांसारिक धन-साधन से परिपूर्ण काफ़िर पड़े होंगे। इस विषय को अन्य कई स्थानों पर भी वर्णन किया गया है। जैसे-

﴿ مَا يُجَٰدِلُ فِيٓ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ فَلَا يَغۡرُرۡكَ تَقَلُّبُهُمۡ فِي ٱلۡبِلَٰدِ ﴾

"अल्लाह की आयतों में वही झगड़ते हैं जो काफ़िर हैं, परन्तु उनका शहरों में चलना-फिरना आपको धोखे में न डाल दे।" (*अल-मोमिन-४*)

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَفۡتَرُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلۡكَذِبَ لَا يُفۡلِحُونَ ۞ مَتَٰعٞ فِي ٱلدُّنۡيَا ثُمَّ إِلَيۡنَا مَرۡجِعُهُمۡ ﴾

"नि:संदेह जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोपण करते हैं वे सफल नहीं होंगे। यह संसार में थोड़ा सा सुख है फिर हमारे पास उनको आना है।" (*यूनुस-६९,७०*)

﴿ نُمَتِّعُهُمۡ قَلِيلٗا ثُمَّ نَضۡطَرُّهُمۡ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٖ ﴾ (सूर: *लुकमान-२४*)

"हम उन्हें अल्प लाभ यहाँ पहुँचायेंगे फिर कठोर यातना की ओर विवश कर देंगे।"

[2]यह दुनिया के साधन ऐश्वर्य तथा सुविधायें प्रत्यक्ष रूप से चाहे जितने अधिक क्यों न हों, वास्तव में थोड़ी सी सामग्री है क्योंकि अन्त में उनको नाश होना है और उनके विनाश से पूर्व वह लोग स्वयं भी नाश हो जायेंगे, जो उनको प्राप्त करने के कारण अल्लाह तआला

لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّٰتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۗ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾

(१९८) परन्तु जो लोग अपने प्रभु से डरते रहे उनके लिए स्वर्ग हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें वे सदैव रहेंगे। यह अल्लाह की ओर से अतिथि हैं। और पुण्य कार्य करने वालों के लिए अल्लाह (तआला) के पास जो कुछ भी है वह सर्वश्रेष्ठ एवं उत्तम है।[1]

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَٰبِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَٰشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِـَٔايَٰتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۗ أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾

(१९९) और अवश्य अहले किताब में से भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो अल्लाह (तआला) पर ईमान लाते हैं और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है और जो उनकी ओर उतारा गया उस पर भी। अल्लाह तआला से डर करते हैं, और अल्लाह (तआला) की आयतों को छोटे-छोटे मूल्यों पर नहीं बेचते।[2] उनका बदला उनके

को भी भूल जाते हैं और हर प्रकार के सामाजिक बन्धनों और अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करते हैं।

[1]उनके विपरीत जो परहेज़गारी तथा अल्लाह के भय से जीवन व्यतीत करके अल्लाह के सदन में उपस्थित होंगे यद्यपि उनके पास अल्लाह को भूल जाने वालों की तरह धन की अधिकता तथा जीवन सामग्री उस प्रकार उपलब्ध न होंगी, परन्तु वह अल्लाह के अतिथि होंगे जो सम्पूर्ण सृष्टि का स्रष्टा तथा स्वामी है। और वहाँ उन को जो बदला मिलेगा, वह उससे अत्यधिक होगा जो संसार में काफ़िरों को सामायिक रूप से प्राप्त हुआ था।

[2]इस आयत में अहले किताब के उस गिरोह का वर्णन है, जिन्हें रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके ईमान और ईमान के गुणों का वर्णन करके अल्लाह तआला ने अन्य अहले किताब से उन्हें श्रेष्ठ कर दिया। जिनकी योजना ही इस्लाम, तथा इस्लाम के पैग़म्बर तथा मुसलमानों का विरोध करना था। अल्लाह की आयतों को बदलना तथा छिपाना तथा संसार के आंशिक लाभ के कारण ज्ञान को छुपाना था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह ईमानवाले अहले किताब ऐसे नहीं हैं, बल्कि यह अल्लाह तआला से डरने वाले हैं। और अल्लाह की आयतों को थोड़े-थोड़े मूल्य पर बेचने वाले नहीं हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जो विद्वान और ज्ञानी सांसारिक आकांक्षा के कारण अल्लाह की आयतों को बदलते हैं अथवा उनके भावार्थ का वर्णन करने में झूठ बोलते हैं अथवा छिपाते हैं, वह ईमान और अल्लाह के भय से वंचित हैं।

प्रभु के पास है। नि:सन्देह अल्लाह (तआला) शीघ्र ही हिसाब लेने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

(२००) ऐ ईमानवालो ! तुम धैर्य रखो ।[1]और एक-दूसरे को थामे रखो और धर्मयुद्ध के लिए तैयार रहो ताकि तुम लक्ष्य को पहुँचो।

سُورَةُ النِّسَاءِ

सूरतुन निसा-४

सूर: ***निसा*** मदीना में उतरी और इसमें एक सौ छिहत्तर आयतें तथा चौबीस रूकूउ हैं।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने लिखा है कि इस आयत में जिन ईमानवालों का वर्णन है उनकी संख्या यहूदियों में दस तक नहीं पहुँचती है परन्तु इसाई बड़ी संख्या में मुसलमान हुए और उन्होंने सत्य धर्म को अपनाया। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1]धैर्य रखो अर्थात आज्ञाकारियों का पथ अपनाओ और मोह तथा स्वाद को छोड़ने में अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखो और इस पर दृढ़ता से स्थाई रखो। مصابرة (صابروا) युद्ध की तीव्रता में शत्रु के सामने डटे रहना, यह धैर्य की अत्याधिक कठिन सीमा है। इसीलिए इसे अलग से वर्णित किया गया है। رابطوا युद्ध के मैदान अथवा युद्ध के मोर्चे पर हर समय चौकन्ना और धर्मयुद्ध के लिए तैयार रहना मुराबत: है। यह भी बड़े साहस और निष्ठा का कार्य है। इसीलिए हदीस में इसकी यह विशेषता वर्णित की गयी है।

«رِبَاطُ يَوْمٍ فِي سَبِيلِ اللهِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا».

(सहीह बुख़ारी बाब फ़जले रबाते यौमिन फ़ी सबीलिल्लाह)

"अल्लाह के मार्ग (धर्मयुद्ध) में एक दिन पड़ाव डालना (मोर्चा बन्द होना) दुनिया और उसके सुख से श्रेष्ठ है।"

इसके अतिरिक्त हदीस में है। मकारिह (अर्थात अप्रियता की स्थिति) में पूर्ण वज़ू करने, मस्जिद में अधिक दूर से चलकर जाने और नमाज़ के पश्चात दूसरी नमाज़ की प्रतीक्षा को भी رباط (रबात) कहा गया है। (सहीह मुस्लिम किताबुल तहार:)

सूरतुन-निसा

निसाँ का अर्थ "स्त्रियाँ" है। इस सूर: में स्त्रियों की बहुत सी समस्याओं का वर्णन है इसलिए *सूर: निसाँ* कहा जाता है।

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अति कृपालु तथा अति दयालु है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ①

(१) हे लोगों ! अपने उस पालनहार से डरो जिसने तुमको एक जीव से तथा उसी से उसकी पत्नी को रचा[1] और दोनों से बहुत से नर-नारी फैला दिये और उस अल्लाह से डरो जिस नाम पर परस्पर माँगते हो तथा सम्बन्ध विच्छेद[2] से, वस्तुत: अल्लाह तुम पर संरक्षक है।

وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ ۖ وَلَا تَأْكُلُوا

(२) तथा अनाथों को उनका धन दे दो एवं पवित्र के बदले अपवित्र न लो तथा अपने धन में

---

[1] "एक जीव" से तात्पर्य मनुष्य जाति के परम पिता आदरणीय आदम अलैहिस्सलाम हैं। और ﴿وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا﴾ में منها से वही जीव। अर्थात आदम और उनसे उनकी पत्नी आदरणीया हौवा को पैदा किया। आदरणीया हौवा आदरणीया आदम से किस प्रकार पैदा हुई इसमें मतभेद है। आदरणीय इब्ने अब्बास के कथनानुसार आदरणीया हौवा पुरुष (अर्थात आदम) से पैदा हुई अर्थात उनकी बायीं पसली से। एक हदीस में भी कहा गया है।

«إِنَّ الْمَرْأَةَ خُلِقَتْ مِنْ ضِلَعٍ وَإِنَّ أَعْوَجَ شَيْءٍ فِي الضِّلَعِ أَعْلَاهُ».

"स्त्री पसली से पैदा की गयी है और पसली में सबसे टेढ़ी ऊपरी है। यदि तू उसे सीधा करना चाहे, तो तोड़ बैठेगा और यदि तू उससे लाभ उठाना चाहे, टेढ़ेपन से ही लाभ उठा सकता है।"

(सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, सहीह मुस्लिम, किताबुल रिदाआ)

कुछ आलिमों ने इस हदीस से अर्थ निकालते हुए आदरणीय इब्ने अब्बास से सम्बन्धित विचार का समर्थन किया है। क़ुरआन करीम के शब्द خلق منها से इसी विचार का समर्थन होता है। आदरणीया हौवा का जन्म इसी एक जीव से हुआ जिसे आदम कहा जाता है।

[2] والأرحام का अर्थ है सम्बन्धों को तोड़ने से बचो। رحم-أرحام का बहुवचन है। तात्पर्य सम्बन्ध है, जो मातृ गर्भाशय के आधार पर बनते हैं इससे विवाह योग्य तथा विवाह के अयोग्य (निकट सम्बन्धी) दोनों सम्बन्ध तात्पर्य है। सम्बन्धों का तोड़ना महापाप है। हदीस में निकट सम्बन्धियों को हर अवस्था में सम्बन्ध स्थापित करने तथा उनके अधिकारों को अदा करने पर विशेष बल दिया गया है। जिसे संबन्ध जोड़ना कहा जाता है।

أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ②

मिलाकर उनका धन न खाओ, वस्तुतः यह घोर पाप है ।[1]

وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانكِحُوا مَا طَابَ لَكُم مِّنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ③

(३) यदि तुम्हें भय हो कि अनाथ लड़कियों से विवाह करके तुम न्याय न कर सकोगे तो और स्त्रियों में जो तुम्हें अच्छी लगें, तुम उनसे विवाह कर लो, दो-दो, तीन-तीन, चार-चार परन्तु यदि समानता न रखने का भय है, तो एक ही काफ़ी है अथवा तुम्हारे स्वामित्व की दासियाँ[2] यह अधिक निकट है कि (ऐसा करने

---

[1]ये अनाथ जब युवा तथा वयस्क हो जायें, तो उनका धन उन्हें वापस कर दो। अपवित्र से घटिया तथा पवित्र से अच्छी चीज़ों का अर्थ है। अर्थात ऐसा न करो कि उनके माल से अच्छी चीज़े ले लो। और मात्र गणना पूरा करने कि लिए घटिया चीज़े इनके बदले रख दो। इन घटिया चीज़ों को अपवित्र और अच्छी चीज़ों को पवित्र कह कर इस ओर संकेत किया गया है कि इस प्रकार बदला गया माल वास्तव में पवित्र और उचित है, परन्तु मात्र तुम्हारी बेईमानी के कारण अपवित्र हो गया और अब पवित्र नहीं रहा तुम्हारे लिये अपवित्र और वर्जित हो गया। इस प्रकार बेईमानी से उनके माल में अपना माल मिलाकर खाना भी मना है, परन्तु यदि उद्देश्य भलाई है तो उनके माल को अपने माल में मिलाना उचित है।

[2]इसकी व्याख्या के लिए आदरणीय आयशा (रज़ी अल्लाह अन्हा) का कथन है कि धनवान एवं सुन्दर अनाथ बालिका यदि किसी संरक्षक के संरक्षण में होती और वह उसके धन तथा सुन्दरता के कारण उससे विवाह कर लेता परन्तु उसकी दूसरी पत्नियों की अपेक्षा उसको पूर्ण महर का अधिकार नहीं देता। अल्लाह तआला ने इस अत्याचार से रोका है कि यदि तुम अनाथ बालिकायों के साथ न्याय न कर सको तो तुम उनसे विवाह ही न करो तुम्हारे लिए अन्य स्त्रियों से विवाह करने का मार्ग खुला है। (सहीह बुख़ारी किताबुत तफ़सीर) बल्कि एक के अतिरिक्त दो से, तीन से, यहाँ तक कि चार स्त्रियों तक से तुम विवाह कर सकते हो, परन्तु इस अनुबन्ध के साथ कि उनके मध्य न्याय कर सकोगे। अथवा एक ही से विवाह करो अथवा उसके अतिरिक्त दासी पर ही निर्वाह करो। इस आयत से ज्ञात हुआ कि एक पुरुष (यदि उसे आवश्यकता है) तो एक ही समय में चार स्त्रियों से विवाह कर सकता है परन्तु इससे अधिक नहीं, जैसाकि सहीह हदीस में इसको और अधिक विस्तार तथा स्पष्ट कर दिया गया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो चार से अधिक विवाह किये, वह

से अन्याय तथा) एक ओर झुक जाने से बचो ।[1]

وَءَاتُوا النِّسَآءَ صَدُقَٰتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِن طِبْنَ لَكُمْ عَن شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيٓـًٔا مَّرِيٓـًٔا ④

(४) और स्त्रियों को उनके महर (जो राशि विवाह के लिए मान्य हो) इच्छानुसार दे दो । और यदि वह स्वयं अपनी इच्छा से कुछ महर छोड़ दें, तो उसे अपनी इच्छानुसार खाओ पिओ ।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ أَمْوَٰلَكُمُ الَّتِى جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَٰمًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ⑤

(५) बुद्धिहीनों को अपना धन जिसे अल्लाह ने तुम्हारा सहारा बनाया है न दो और उनमें से उन्हें खिलाओ और पहनाओ तथा उनसे कोमल बचन बोलो ।

وَابْتَلُوا الْيَتَٰمَىٰ حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ ءَانَسْتُم مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوٓا إِلَيْهِمْ أَمْوَٰلَهُمْ ۖ وَلَا تَأْكُلُوهَآ إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَن يَكْبَرُوا ۚ وَمَن كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ

(६) और अनाथों को उनके वयस्क हो जाने तक सुधारते और परीक्षण करते रहो, फिर यदि तुम उनमें सुधार देखो तो उन्हें उनके माल सौंप दो, और उनके बड़े हो जाने के भय से उनके माल को शीघ्र-अतिशीघ्र व्यर्थ न खाओ,

---

आप की विशेषताओं में से है, जिस पर किसी उम्मती को अनुकरण करना उचित नहीं (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात एक ही स्त्री से विवाह करने में भलाई है क्योंकि एक से अधिक पत्नियाँ रखने की अवस्था में सभी के साथ न्याय करना कठिन है । जिसकी ओर हार्दिक प्रेम अधिक होगा उसी की ओर जीवन-सामग्री उपलब्ध करने में अधिक ध्यान होगा, इस प्रकार पत्नियों के मध्य न्याय करने में असक्षम होगा और अल्लाह के यहाँ अपराधी होगा । क़ुरआन ने इस वास्तविकता को दूसरे स्थान पर अति स्पष्ट रूप से इस प्रकार वर्णन किया है ।

﴿ وَلَن تَسْتَطِيعُوٓا أَن تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ ۖ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ﴾

"और तुम कदापि इस बात की शक्ति न रखोगे कि पत्नियों के मध्य न्याय रख सको, यद्यपि तुम इच्छा रखो (तो यह अवश्य करो) कि एक ओर न झुक जाओ और अन्य पत्नियों को अधर पर लटका दो ।" (*सूर: निसा-*१२९)

इससे ज्ञात हुआ कि एक से अधिक विवाह और पत्नियों के साथ न्याय न करना ग़लत है और अत्यन्त भयानक भी ।

وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ⑥

धनवानों को चाहिए कि उनके माल से बचते रहें, यदि निर्धन हों तोनियमानुसार खा लो, फिर जब उन्हें उनके माल सौंपो तोसाक्षी बना लो, तथा लेखा-जोखा के लिये अल्लाह काफ़ी है ।[1]

لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ⑦

(७) माता-पिता तथा समीपवर्ती संबन्धियों की सम्पत्ति में पुरुषों का भाग है और स्त्रियों का भी (जो धन-सम्पत्ति माता-पिता और समीपवर्ती सम्बन्धी छोड़ कर मरें) चाहे वह धन कम हो अथवा अधिक (उसमें) भाग निर्धारित किया हुआ है ।[2]

---

[1]अनाथों के माल के विषय में आवश्यक निर्देश देने के पश्चात यह फ़रमाने से तात्पर्य यह है कि जब अनाथ का माल तुम्हारे पास रहा, तुमने उसकी किस प्रकार रक्षा की और जब उनका माल उनको सौंप दिया, तो उसमें किसी प्रकार कमी अथवा अधिकता अथवा किसी प्रकार का परिवर्तन तो नहीं किया। सामान्य लोगों को तुम्हारी ईमानदारी अथवा बेईमानी का शायद पता न चले परन्तु अल्लाह तआला से कोई बात छुपी नहीं हुई है। वह नि:संदेह जब तुम उसके दरबार में जाओगे तो तुमसे हिसाब ले लेगा। इसीलिए हदीस में आता है कि यह बहुत ज़िम्मेदारी का कार्य है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू ज़र से फ़रमाया, अबू ज़र ! मै तुम्हें क्षीण देखता हूँ, और तुम्हारे लिए वह चीज़ पसन्द करता हूँ जो अपने लिए पसन्द करता हूँ। तुम दो आदमियों पर भी अमीर (नायक) न बनना और किसी अनाथ के माल का संरक्षक न बनना। (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारः)

[2]इस्लाम से पूर्व यह भी अत्याचार था कि स्त्रियों और छोटे बच्चों को उत्तराधिकार के रूप में कुछ भी भाग नहीं दिया जाता था, केवल बड़े पुत्र जो लड़ने योग्य होते थे, वही सारी सम्पत्ति के उत्तराधिकारी माने जाते थे। इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि पुरुषों की तरह स्त्रियाँ, और बच्चे-बच्चियाँ भी अपने माता-पिता और सम्बन्धियों के उत्तराधिकारी होंगी । उन्हें वंचित नहीं किया जायेगा। परन्तु यह अलग बात है कि लड़की का भाग लड़के के भाग का आधा है (जैसा कि तीन आयतों के बाद वर्णन है) यह स्त्रियों पर अत्याचार नहीं है, न उसका अपमान है, बल्कि इस्लाम का यह उत्तराधिकार का नियम न्यायपूर्ण तथा तर्क संगत है क्योंकि इस्लाम ने स्त्री को जीविका उपार्जन के कर्त्तव्य से अलग रखा है। और पुरुषों को उसका संरक्षक बनाया है। इसके अतिरिक्त स्त्री के पास महर (स्त्री धन) के रूप में धन आता है, जिसको एक पुरुष ही अदा करता है। इस प्रकार पुरुष पर स्त्री के अपेक्षा कई आर्थिक प्रभार आते हैं, इसलिए यदि स्त्री का भाग आधा के

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُوا الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ فَارْزُقُوهُم مِّنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ⑧

(८) और जब बँटवारे के समय सम्बन्धी तथा अनाथ एवं निर्धन आ जायें, तो तुम उसमें से थोड़ा बहुत उन्हें भी दे दो और उनसे कोमलता से बोलो।[1]

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ⑨

(९) और चाहिए कि वह इस बात से डरें कि यदि वह अपने पीछे (नन्हें-नन्हें) नवजात शिशु छोड़ जाते, जिनके नष्ट हो जाने का भय रहता है (तो उनका प्रेम क्या होता), तो बस अल्लाह तआला से डर कर सन्तुलित बात कहा करें।[2]

बजाय पुरुष के बराबर होता, तो यह पुरुष पर अत्याचार होता। परन्तु अल्लाह तआला ने किसी पर अत्याचार नहीं किया है। क्योंकि वह न्याय करने वाला है और बुद्धिमत्तापूर्ण भी है।

[1]इसे कुछ विद्वानों ने उत्तराधिकार की आयत से निरस्त कहा है, परन्तु उचित बात यह है कि यह निरस्त आदेश नहीं है। बल्कि एक विशेष नैतिक निर्देश है कि सहायता योग्य सम्बन्धी जिनका उत्तराधिकार में कोई भाग न हो, उन्हें भी बँटवारे के समय कुछ दे दो। इसके अतिरिक्त उनसे प्रेम पूर्वक कोमल बात कहो। धन को आते देख कर कारून और फ़िरऔन न बनो।

[2]कुछ व्याख्याकारों के निकट इसका संकेत उन लोगों की ओर किया जा रहा है, जिनके लिए वसीयत की गयी है। उनको शिक्षा दी जा रही है कि उनके संरक्षण के अधीन जो अनाथ हैं, उनके साथ ऐसा व्यवहार करें जैसा वह अपने मरने के बाद अपने बच्चों के साथ पसन्द करते हैं कुछ के निकट इससे साधारण लोगों को सम्बोधित करके कहा गया है कि वह अनाथों और अन्य छोटे बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करें। यह न देखें कि वह उनकी संरक्षण में हैं अथवा नहीं। कुछ के निकट उनको सम्बोधित किया गया है, जो मृत्यु के निकट व्यक्ति के पास बैठे हों उनका कर्त्तव्य है कि वह मरने वाले को समझायें ताकि वह अल्लाह के अधिकार और आदमियों के अधिकार में आलस्य न करे और वसीयत में वह इन दोनों बातों को ध्यान में रखे। यदि वह अधिक धनवान हो, तो एक तिहाई की वसीयत ऐसे लोगों के लिए करे, जो उसके निकट सम्बन्धियों में निर्धन और सहायता के पात्र हों अथवा किसी धार्मिक कार्य अथवा संस्था पर व्यय करने की वसीयत करे, ताकि यह माल उसके परलोक का अच्छा साथी बन सके। और यदि वह धनवान न हो तो उसे एक तिहाई माल में वसीयत करने से रोका जाये ताकि उसके घर वाले उसके बाद निर्धनता के कगार पर न पहुंच जायें। इसी प्रकार कोई अपने उत्तराधिकारियों में से किसी को वंचित करना

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ⑩

(१०) जो लोग अनर्थ अत्याचार से अनाथों का माल खा जाते हैं, वह अपने पेट में आग ही भर रहे है और वह नरक में जायेंगे।

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ فَإِن كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِن كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ

(११) अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी सन्तान के विषय में आदेश देता है कि एक पुत्र का भाग दो पुत्रियों के समान है।[1] यदि केवल पुत्रियाँ हों और दो से अधिक हों, तो उन्हें उत्तराधिकार के माल में से दो तिहाई मिलेगा।[2] और यदि एक ही लड़की हो तो उसके लिए आधा है और मृतक के माता-पिता में से प्रत्येक के लिए

चाहे तो उसे रोका जाये और यह ध्यान रखा जाये कि यदि उनके बाद उनके बच्चे भूख व निर्धनता को पहुँचें तो उससे उस पर क्या गुज़रेगी। इस व्याख्या की परिधि में सभी वह सम्बोधित लोग आ गये जिनका वर्णन ऊपर हो चुका है। (तफ़सीर क़ुर्तुबी तथा फ़तहुल क़दीर)

[1]इसके गुण तथा तर्क संगत होने का वर्णन हम पहले कर आये हैं उत्तराधिकारी बालक, बालिका दोनों हों तो फिर विधिवत विभाजन होंगा। बालक, बालिका छोटे हों अथवा बड़े सब उत्तराधिकारी होंगे। यहाँ तक कि भ्रुण भी उत्तराधिकारी होगा। हाँ काफ़िर संतान उत्तराधिकारी नहीं होगी।

[2]अर्थात पुत्र न हो तो धन का दो तिहाई (२/३) दो से अधिक पुत्रियों को दिये जायेंगे और यदि दो ही पुत्रियाँ हों तो भी उन्हें दो तिहाई (२/३) भाग दिया जायेगा जैसाकि हदीस में आता है कि साद बिन रबीअ "ओहद" मे शहीद हो गये। उनकी दो पुत्रियाँ थीं, किन्तु साद के पूरे धन पर उनके एक भाई ने अधिकार कर लिया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके चचा से दो तिहाई (२/३) उनको दिलाया (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, किताबुल फ़राईद) इसके सिवाये *सूर: निसा* के अन्त में बताया गया है कि यदि मृत की उत्तराधिकारी दो बहनें हों तो दो तिहाई (२/३) धन की उत्तराधिकरी होंगी तो फिर दो पुत्रियाँ दो तिहाई (२\३) धन की अधिक उत्तराधिकारी होंगी। जिस प्रकार दो बहनों से अधिक होने की दशा में उन्हें दो से अधिक पुत्रियों के नियमाधीन रख गया है, (फ़तहुल क़दीर) सारांश यह हुआ कि दो या दो से अधिक पुत्रिंयाँ हों तो तरका (छोड़े धन) में दो तिहाई पुत्रियों का भाग होगा, शेष धन असबा (वह उत्तराधिकारी जिसका भाग निर्धारित नहीं है) में विभाजित होगा।

إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ فَرِيضَةً مِنَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ⑪

उसके छोड़े हुये माल का छठाँ भाग है, यदि उस (मृतक) की सन्तान हो ।[1] यदि सन्तान न हो, और माता-पिता उत्तराधिकारी हों, तो फिर उसकी माँ के लिए तीसरा भाग है ।[2] हाँ, यदि मृतक के कई भाई हों, तो फिर उसकी माँ का छठाँ भाग है ।[3] यह भाग उस वसीयत (की पूर्णता) के बाद है जो मरने वाला कर गया हो अथवा ऋृण अदा करने के बाद। तुम्हारे पिता हों अथवा तुम्हारे पुत्र तुम्हें नहीं मालूम

---

[1]माता-पिता के भाग की तीन दशाऐं वर्णित की गई हैं, प्रथम यह कि मृत की संतान हों तो माँ-बाप प्रत्येक को मात्र छठवाँ (१/६) भाग मिलेगा, शेष दो तिहाई धन संतान पर वितरित होगा, हाँ यदि मृत की संतान में एक पुत्री हो तो उसमें से मात्र आधा धन (अर्थात छ: भागों में से तीन भाग) पुत्री के होंगे और छठाँ भाग (१/६) माँ को तथा १/६ पिता को देने पश्चात (१/६) शेष रह जायेगा और यह शेष (१/६) असबा होकर बाप के भाग में जायेगा अर्थात उसे दो (१/६) मिलेगा एक पिता के रूप में दूसरा अस्बा के रूप में।

[2]यह दूसरी दशा है कि मृत के संतान नहीं है (स्मरणीय है कि पौत्र-पौत्री संतान में सर्वसम्मति से सम्मिलित हैं) इस दशा में माँ के लिये तीसरा भाग (१/३) तथा शेष दो भाग (२/३) पिता को अस्बा स्वरूप मिलेंगे, तथा यदि माता-पिता के साथ मृत की पत्नी अथवा मृत स्त्री का पति भी जीवित हो तो उत्तम कथनानुसार पति अथवा पत्नी का भाग (जिसका विवरण आगे आ रहा है) निकाल कर शेष धन में से माँ के लिये एक तिहाई (१/३) एवं शेष (२/३) पिता का होगा।

[3]तीसरी अवस्था यह है कि मृत के भाई-बहिन जीवित हों तो वे भाई-बहिन सगे (ऐनी) अर्थात एक ही माता-पिता की संतान हों अथवा अल्लाती अर्थात पिता एक मातायें विभिन्न हों अथवा पिता विभिन्न माता एक हो अर्थात अख्याफ़ी भाई-बहिन हों। यद्यपि ये भाई-बहिन मृत के पिता के रहते उत्तराधिकार के भागी नहीं होंगे किन्तु माँ के लिये "हजब" भाग कम करने का कारण बन जायेंगे अर्थात यदि एक से अधिक होंगे तो माँ के तिहाई भाग (१/३) को छठवें भाग (१/६) में परिवर्तित कर देंगे, शेष पूरा धन (५/६) पिता के भाग में चला जायेगा परन्तु कोई अन्य उत्तराधिकारी न हो तब, हाफ़िज़ इब्ने कसीर लिखते हैं कि प्राय: धर्म विशेषज्ञों के समीप दो भाई का वही नियम है जो दो से अधिक का वर्णित हुआ है इसका अभिप्राय यह हुआ कि यदि एक भाई-बहिन हो तो माँ का तिहाई भाग रह जायेगा, वह (१/६) में परिवर्तित नहीं होगा। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

कि उनमें से कौन तुम्हें लाभ पहुँचाने में अधिक निकट है ।[1] यह भाग अल्लाह (तआला) की ओर से निर्धारित किये हुए हैं। नि:सन्देह अल्लाह तआला ज्ञाता बुद्धिमान है।

(१२) और तुम्हारी पत्नियाँ जो कुछ छोड़ कर मरें और उनकी सन्तान न हो तो आधा तुम्हारा है और यदि उनकी सन्तान हो,तो उनके छोड़े हुए माल में से तुम्हारे लिए चौथाई है ।[2] इस वसीयत को अदा करने के बाद जो वह कर गयीं हों अथवा ॠण को अदा करने के बाद और जो (छोड़ा) तुम छोड़ जाओ उसमें से उनके लिए चौथाई है, यदि तुम्हारी सन्तान न हो, और यदि तुम्हारी सन्तान हो, तो फिर उन्हें तुम्हारे छोड़े हुए धन में से आठवाँ भाग मिलेगा ।[3] उस वसीयत के पश्चात जो तुम कर गये हो और ॠण को अदा करने के बाद । और जिनका उत्तराधिकार लिया जाता है, पुरुष अथवा स्त्री कलाल: हो (अर्थात

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ ۚ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُم ۚ مِّن بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ وَإِن كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَإِن كَانُوا أَكْثَرَ مِن

---

[1]अत: तुम अपने प्रबोधानुसार उत्तराधिकार का विभाजन न करो वरन अल्लाह के आदेशानुसार जिसका जितना भाग निर्धारित है वह उन्हें दो।

[2]संतान के न होने की दशा में पुत्र की संतान अर्थात पौत्र भी संतान के समतुल्य हैं इस पर मुसलमान समुदाय की सहमति है, (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर) इसी प्रकार मृत पति की संतान चाहे वह उसकी उत्तराधिकारी वर्तमान पत्नी से हो अथवा किसी अन्य पत्नी से, इसी प्रकार मृत पत्नी की संतान चाहे उसके वर्तमान पति से हो अथवा पूर्व के किसी पति से।

[3]पत्नी यदि एक हो अथवा अनेक हों चौथा या आठवाँ भाग मिलेगा यही भाग उनमें विभाजित होगा प्रत्येक को चौथाई (१/४) अथवा आठवाँ (१/८) भाग नहीं मिलेगा यह सर्वसम्मति नियम है।

ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِى الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ؕ ﴿۱۲﴾

उसका पिता अथवा पुत्र न हो) [1] तथा उसका एक भाई अथवा एक बहन हो ।[2] तो उनमें से प्रत्येक का छठाँ भाग है तथा उससे अधिक हो तो एक तिहाई में सभी सम्मिलित हैं ।[3]

---

[1]कलाल: से तात्पर्य वह मृत है जिसका पिता न हो न पुत्र-पुत्री । यह इक्लील से बना है जिसका अर्थ ऐसी वस्तु है जो सिर को उसके किनारों से घेर ले, कलाल: को भी कलाल: इसीलिए कहते हैं कि जिसके मूल तथा शाखा में कोई उत्तराधिकारी न हो तथा किनारे एवं आस-पास के उत्तराधिकरी बनें (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर) यह भी कहा जाता है कि कलाल: का मूल धातु कलल है जिसका अर्थ थक जाना है, मानो उस मृत तक जाते-जाते वंश का क्रम थक गया, तथा अग्रसर न हो सका।

[2]इससे तात्पर्य माँ जाये भाई-बहिन हैं अर्थात जिनकी माँ एक हो पिता अलग-अलग । क्योंकि सगे भाई-बहिन अथवा अल्लाती (विभिन्न माँ तथा एक पिता से) भाई-बहन का भाग उत्तराधिकार में इस प्रकार नहीं है तथा इस का वर्णन इसी सूर: में अन्त में आ रहा है, और यह प्रविधान भी सर्वसम्मति से है (फ़तहुल क़दीर) वास्तव में वंश के लिये "للذكر مثل حظ الانثيين" का नियम चलता है यही कारण है कि पुत्र-पुत्रियों के लिये यहाँ तथा बहन-भाईयों के लिए इस सूर: की अन्तिम आयत प्रत्येक दो में यही नियम है, परन्तु माँ की संतान में चूँकि वंशज भाग नहीं होता इसलिये वहाँ प्रत्येक भाई-बहन को समान भाग दिया जाता है। जो भी स्थिति हो एक भाई को अथवा एक बहन को प्रत्येक को छठवाँ (१/६) भाग मिलेगा ।

[3]एक से अधिक होने पर यह सब एक तिहाई (१/३) भाग में साझी होंगे पुरुष-स्त्री में कोई अन्तर नहीं किया जायेगा बिना अन्तर सभी को समान भाग मिलेगा पुरुष हों अथवा स्त्री ।

विचारणीय- माँजाये अर्थात अख्याफ़ी भाई कुछ आदेशों में अन्य उत्तराधिकारियों से विभिन्न हैं (१) यह मात्र अपनी माँ के कारण उत्तराधिकारी होते हैं (२) इनके नर-नारी का भाग समान होता है, (३) यह उस समय उत्तराधिकारी होंगे जब मृत कलाल: हो, अत: पिता, दादा, पुत्र तथा पौत्र आदि की उपस्थिति में उत्तराधिकारी नहीं होंगे (४) उनके नर-नारी कितने ही अधिक हों उनका भाग एक तिहाई (१/३) से अधिक नहीं होगा तथा जैसाकि पहले कहा गया है उनको अपने मृत अख्याफ़ी भाई से जो भाग मिलगा उसमें नर-नारी का भाग बराबर होगा यह नहीं कि नर को नारी के दुगुना दिया जाये, आदर्णीय उमर ने अपने शासनकाल में यही निर्णय किया था और इमाम ज़ुहरी कहते हैं कि आदरणीय उमर ने यह निर्णय यथावत उसी समय किया होगा जब उनके पास नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई हदीस (कथन) होगी ।

उस वसीयत के पश्चात जो कि गयी हो और ऋृण के अदा होने के बाद[1] जबकि दूसरों को हानि न पहुँचाई गयी हो।[2] यह निर्धारित किया हुआ अल्लाह (तआला) की ओर से है और अल्लाह (तआला) प्रत्येक बात का जानने वाला और सहनशील है।

(१३) यह सीमायें अल्लाह तआला की निर्धारित सीमायें हैं और जो अल्लाह (तआला) तथा उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आज्ञा का पालन करेगा, उसे अल्लाह (तआला) स्वर्ग में ले जायेगा जिनके नीचे नहरें बह रही

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٣﴾

---

[1]उत्तराधिकार आदेशों के वर्णन के साथ यह तीसरी बार कहा जा रहा है कि उत्तराधिकार का विभाजन वसीयत (उत्तरदान) पूरा करने तथा ऋण चुकाने के बाद किया जाये, जिससे विदित होता है कि इन दोनों को पूरा करना कितना आवश्यक है, फिर इस पर भी सहमति है कि सर्वप्रथम ऋण चुकता किया जायेगा तथा वसीयत उसके बाद पूरी की जायेगी किन्तु अल्लाह तआला ने तीनों स्थानों पर उत्तरदान की चर्चा ऋण से पहले की है जब कि क्रमानुसार ऋण की चर्चा प्रथम होनी चहिये। इसमें गुण यह है कि ऋण को तो लोग महत्व देते हैं न दें तो भी और जोड़ देते हैं और बलपूर्वक वसूल कर लेते हैं लेकिन उत्तरदान को आवश्यक नहीं समझा जाता और अधिकांश लोग इस विषय में आलस्य से काम लेते हैं अत: उत्तरदान की चर्चा प्रथम करके उसके महत्व का वर्णन कर दिया गया। (रूहुल मआनी)

विचारणीय- यदि पत्नी का स्त्री धन (महर) न दिया गया हो तो वह भी ऋण होगा और उसका भी भुगतान उत्तराधिकार के वितरण से पहले अनिवार्य है और स्त्री का धार्मिक विधि का भाग उसके अतिरिक्त होगा।

[2]इस प्रकार कि वसीयत द्वारा किसी उत्तराधिकारी को वंचित कर दिया जाये अथवा किसी का भाग घटा दिया जाये या यूँ हीं उत्तराधिकारियों को हानि पहुँचाने कि लिये कह दे कि अमुक व्यक्ति से मैंने इतना ऋण लिया है जब कि कुछ भी न लिया हो। मानो हानि पहुँचाने का संबन्ध उत्तराधिकार तथा ऋण दोनों से है तथा दोनों के द्वारा हानि पहुँचाना निषेध एवं महापाप है और ऐसी वसीयत भी अनृत होगी।

हैं, जिनमें वह सदैव निवास करेंगे और यह बहुत बड़ी सफलता है।

(१४) और जो व्यक्ति अल्लाह (तआला) की और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अवज्ञा करे और उसकी निर्धारित सीमाओं को लाँघ जाये उसे वह नरक में डाल देगा, जिसमें वह सदैव रहेगा। ऐसों के लिए ही अपमानित यातना है।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٤﴾

(१५) तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्यभिचार कार्य करें उन पर अपने में से चार साक्षी उपलब्ध करो, यदि वह गवाही दें तो उन स्त्रियों को घर में बन्दी बना दो, यहाँ तक कि मृत्यु उनकी आयु को पूर्ण कर दे।[1] अथवा अल्लाह तआला उनके लिए कोई अन्य मार्ग निकाले।[2]

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰىهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٥﴾

[1]यह व्यभिचारी नारियों का वह दंड है जो इस्लाम के प्रारम्भिक युग में जब व्यभिचार का दंड निर्धारित नहीं हुआ था सामायिक रूप से निर्धारित की गई थी यहाँ यह भी स्मरणीय है कि अरबी भाषा में एक से दस की गिनती में यह प्रमाणित नियम है कि गिनती पुलिंग होगी तो गणित स्त्रीलिंग या गिनती स्त्रीलिंग हो तो गणित पुलिंग, यहाँ أربعة चार की गिनती स्त्रीलिंग है इसलिये इसका गणित जो यहाँ विचर्चित नहीं तथा लिप्त है निश्चय पुलिंग होगा और वह (पुरुष है) जिससे स्पष्ट रूप से यह विदित होता है कि व्यभिचार के प्रमाण के लिए चार पुरुष गवाहों का होना आवश्यक है। मानो जैसे व्यभिचार का दंड कड़ा निर्धारित किया गया है इसके प्रमाण के लिये भी कड़ा प्रतिबंध लगाया गया है अर्थात चार मुसलमान पुरुष गवाही के बिना जिन्होंने आंखों से देखा है धार्मिक दंड को प्रमाणित करना असंभव है।

[2]इससे व्यभिचार की वह यातना अभिप्राय है जो बाद में निर्धारित की गई अर्थात विवाहित व्यभिचारी पुरुष-स्त्री के लिये रजम अर्थात पत्थरों से मार डालना तथा अविवाहित व्यभिचारी पुरुष-स्त्री के लिये सौ-सौ कोड़े का दंड जिसकी व्याख्या सूरः नूर तथा सहीह हदीसों में वर्णित है।

(१६) और तुममें से जो दो व्यक्ति ऐसा काम कर लें।[1] उन्हें कष्ट दो।[2] यदि वह क्षमा माँग लें तथा सुधार कर लें, तो उनसे मुहँ फेर लो। नि:सन्देह अल्लाह तआला क्षमा स्वीकार करने वाला तथा दया करने वाला है।

وَالَّذٰنِ يَأْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَإِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿١٦﴾

(१७) अल्लाह तआला केवल उन्हीं लोगों की क्षमा स्वीकार करता है जो अंजान होने के कारण बुराई करें और शीघ्र ही उससे रुक जायें और क्षमा मागें तोअल्लाह (तआला) भी उनकी क्षमा स्वीकार करता है। अल्लाह (तआला) बड़ा ज्ञानी बुद्धिमान है।

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧﴾

(१८) और उनकी क्षमा स्वीकार नहीं, जो बुराईयाँ करते चले जायें यहाँ तक कि उनमें से किसी की मृत्यु निकट आ जाये, तो कह दें कि मैंने अब क्षमा माँगी।[3] उनकी क्षमा भी स्वीकार नहीं होती जो कुफ़्र की स्थिति में मर जायें। यही लोग हैं जिनके लिए हमने कठोर यातना तैयार कर रखी है।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى إِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٨﴾

---

[1]कुछ ने इससे बाल मैथुन अर्थ लिया है अर्थात दो पुरुषों का परस्पर संभोग तथा कुछ ने इससे कुँआरी स्त्री-पुरुष अर्थ लिया है और इससे पूर्व की आयत को विवाहित के साथ विशेष किया है तथा कुछ ने इस वचन से तात्पर्य पुरुष-स्त्री लिया है वह कुंआरे हों अथवा विवाहित इब्ने जरीर ने दूसरे अर्थ को प्रधानता दी है। तथा प्रथम आयत में वर्णित दंड को सूरः नूर में वर्णित दंड से निरस्त माना है, (तफ़सीर तबरी)

[2]अर्थात मुख से डाँटना, फटकारना और धिक्कारना अथवा हाथ से कुछ मार पीट देना और अब यह निरस्त है।

[3]इससे स्पष्ट है कि मौत के समय की क्षमा-याचना अस्वीकृत है, जैसा कि हदीस में भी आता है जिसका विवरण *आले इमरान* की आयत ९ में व्यतीत हो चुका।

(१९) ऐ ईमानवालो ! तुम्हारे लिये निषेध है कि बलपूर्वक स्त्रियों को उत्तराधिकार के रूप में ले बैठो ।[1] उन्हें इसलिए न रोक रखो कि जो तुम ने उन्हें दे रखा है उसमें से कुछ ले लो ।[2] हाँ, यह और बात है कि वह कोई खुली बुराई तथा व्यभिचार का व्यवहार करें ।[3] उनके साथ अच्छा व्यवहार करो, यद्यपि कि तुम उन्हें पसन्द न करो, परन्तु अति सम्भव है कि तुम एक चीज़ को बुरा जानो, और अल्लाह (तआला) उसमें बहुत सी भलाई कर दे ।[4]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَرِثُوا۟ ٱلنِّسَآءَ كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا۟ بِبَعْضِ مَآ ءَاتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّآ أَن يَأْتِينَ بِفَٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِٱلْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰٓ أَن تَكْرَهُوا۟ شَيْـًٔا وَيَجْعَلَ ٱللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿١٩﴾

---

[1]इस्लाम से पूर्व नारी पर यह अत्याचार भी होता था कि किसी के निधन के उपरान्त उसके घर के लोग उसके धन के समान उसकी पत्नी के भी बलपूर्वक उत्तराधिकारी बन जाते थे तथा स्वयं अपनी इच्छा से उसकी प्रसन्नता के बिना उससे विवाह कर लेते, अथवा अपने भाई, भतीजे से उसका विवाह कर देते यहाँ तक की सौतेला पुत्र अपने मृत पिता की पत्नी से विवाह कर लेता अथवा यदि चाहते तो उसे किसी से विवाह करने की अनुमति न देते और वह पूरी आयू यूँ ही निर्वाह करने के लिये बाध्य होती । इस्लाम ने अत्याचार के इन सभी रूपों को वर्जित कर दिया ।

[2]नारी पर एक अत्याचार यह भी किया जाता था कि यदि पति-पत्नी में रूचि नहीं रखता था और उससे मुक्ति चाहता था तो स्वयं विवाह-विच्छेद नहीं करता था (जिस प्रकार इस्लाम ने तलाक़ (विवाह-विच्छेद) की अनुमति दी है) अपितु उसे अति आतंकित करता ताकि वह बाध्य होकर महर (स्त्री धन) अथवा जो भी उसे पति ने दिया है स्वयं वापस करके उससे मुक्ति प्राप्त करने को प्राथमिकता दे ।

[3]खुली बुराई से तात्पर्य व्यभिचार अथवा अपवाद एवं अवज्ञा है, इन दोनों ही दशा में पति को यह अनुमति दी गई है कि उसके साथ ऐसा व्यवहार करे कि वह उसका दिया हुआ धन अथवा स्त्री धन (महर) वापस करके खुलाअ कराने पर बाध्य हो जाये (जैसाकि खुलाअ में पति को महर वापस लेने का अधिकार दिया गया है । (देखिये सूर: *बक़र:*-२२९)

[4]यह पत्नी के साथ सद्‌व्यवहार का वह आदेश है जिस पर क़ुरआन ने बहुत बल दिया है । तथा हदीस में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको अति महत्व दिया है, एक हदीस में आयत के उसी भावार्थ को इस प्रकार वर्णित किया गया है ।

(२०) और यदि तुम एक पत्नी के स्थान पर दूसरी पत्नी करना ही चाहो और उनमें से किसी को तुमने धन का कोष दे रखा हो, तो भी उसमें से कुछ न लो।[1] क्या तुम उसे बदनाम करके खुले पाप से ले लोगे।

وَإِنْ أَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا ۚ أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٢٠﴾

(२१) और तुम उसे कैसे ले लोगे ? यद्यपि तुम एक-दूसरे से मिल चुके हो।[2] और उन स्त्रियों

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ

«لَا يَفْرَكْ مُؤْمِنٌ مُؤْمِنَةً إِنْ سَخِطَ مِنْهَا خُلُقًا، رَضِيَ مِنْهَا آخَرَ».

"मोमिन पति मोमिन पत्नी से बैर न रखे यदि उसका एक व्यहार अप्रिय है तो उसका अन्य व्यवहार प्रिय भी होगा।"(सहीह मुस्लिम किताबुल रिदाअ:)

अभिप्राय यह है कि निर्लज्जा तथा अवज्ञा के अतिरिक्त यदि पत्नी में कुछ और कमी हो जिसके कारण पति उसे अप्रिय मानता हो तो उसे तुरंत तलाक़ न दे बल्कि धैर्य तथा सहन से काम ले। संभव है कि अल्लाह उसमें उसके लिये बड़ी भलाई पैदा कर दे अर्थात अच्छी संतान प्रदान कर दे अथवा उसके कारण व्यवसाय में विभूति पैदा कर दे इत्यादि। खेद का विषय है कि मुसलमान क़ुरआन व हदीस के इन निर्देशों के विपरीत तनिक बातों पर अपनी पत्नियों को तलाक़ दे डालते हैं तथा इस प्रकार इस्लाम के प्रदत्त तलाक़ अधिकार का निर्दयता से प्रयोग करते हैं। जबकि यह अधिकार अति आवश्यक दशा में प्रयोग के लिये दिया गया था न कि घर उजाड़ने, पत्नियों पर अत्याचार करने एवं बच्चों का जीवन नाश करने के लिये। इसके अतिरिक्त यह इस्लाम के अपमान का भी हेतु बनते हैं कि इस्लाम ने पुरूषों को तलाक़ का अधिकार देकर नारियों पर अत्याचार करने का अधिकार दे दिया इस प्रकार इस्लाम की एक बड़ी खूबी को बुराई सिद्ध किया जाता है।

[1]स्वयं तलाक़ देने की स्थिति में महर वापस लेने को कठोरता से रोक दिया गया है, قنطار धन के कोष तथा अत्यधिक धन को कहते हैं। अर्थात कितना भी महर दे दिया हो, वापस नहीं ले सकते। यदि ऐस करोगे तो यह अत्याचार स्पष्ट पाप होगा।

[2]एक-दूसरे से मिल चुके हो का अर्थ सहवाद है। जिसे अल्लाह तआला ने सांकेतिक रूप से वर्णन किया है।

مِنكُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾ ने तुम से घनिष्ठ वचन ले रखा है ।[1]

وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم مِّنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾

(२२) और उन स्त्रियों से विवाह न करो, जिनसे तुम्हारे पिताओं ने विवाह किया हो ।[2] परन्तु जो हो चुका, यह निर्लज्जा का कार्य और द्वेष के कारण हैं और बड़ा बुरा मार्ग है ।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ

(२३) तुम पर हराम की गयीं[3] तुम्हारी माताऐं तथा तुम्हारी पुत्रियाँ तथा तुम्हारी बहनें तथा

---

[1]सुदृढ़ वचन से उस वचन का तात्पर्य है जो विवाह के समय पुरुष से लिया जाता है कि तुम इसे अच्छे प्रकार से रखना अथवा नम्रता के साथ छोड़ देना ।

[2]अज्ञान युग में सौतेला पुत्र अपने पिता की पत्नी से विवाह कर लेता था उससे रोका जा रहा है कि यह बड़ी निर्लज्जा का काम है । ﴿وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم﴾ साधारण आदेश है ज़ो ऐसी स्त्री से विवाह को भी वर्जित घोषित कर रहा है जिससे उसके पिता ने विवाह किया किन्तु समागम से पहले तलाक़ दे दिया, यह बात आदरणीय इब्ने अब्बास से उदघृत है, तथा धर्म विशेषज्ञ इसी को मानते हैं । (तफ़सीर तबरी)

[3]जिन स्त्रियों से विवाह निषेध है उनका विवरण दिया जा रहा है । इनमें सात निषेधित स्त्रियाँ वंशज हैं, सात दुग्ध कर्म से तथा चार ससुराली, इनके सिवा हदीस से प्रमाणित है कि भतीजी तथा फूफी एवं भगिनी तथा ख़ाला को एक साथ विवाह करके रखना वर्जित है । सात वंशज निषेधित स्त्रियाँ हैं मातायें, पुत्रियाँ, बहनें, फूफियाँ, ख़ालायें, भतीजी एवं भगिनी, दुग्ध कर्म से निषेधित सात दुग्ध कर्म से माँ, उसकी पुत्रियां, बहनें, फूफियाँ, ख़ालायें । दुग्ध कर्म से भतीजियाँ, भगिनियां, हैं । ससुराली निषेधित स्त्रियां सास, संभोगित पत्नी की पहले पति से पुत्रियाँ, पुत्रवधु तथा दो सगी बहनों को एक साथ विवाह करके रखना, इनके सिवा पिता की विवाहिता जिसकी चर्चा इससे पहले की आयत में हो चुकी है तथा हदीस के अनुसार स्त्री जब तक विवाह में है उसकी फूफी तथा ख़ाला एवं उसकी भतीजी एवं भांजी से भी विवाह वर्जित है, वंशज निषेधित स्त्रीयों की सूची में माँ की माँ (नानियां) उनकी दादियां, तथा पिता की माताऐं नीचे तक सम्मिलित हैं, व्यभिचार से जन्मी पुत्री, पुत्री है या नहीं इसमें मतभेद है तीनों इमाम धर्म विशेषज्ञ उसे पुत्री मानते हैं तथा उससे विवाह निषेध समझते हैं । इमाम शाफ़ई कहते हैं कि वह धर्म विधानानुसार पुत्री नहीं अत: वह जिस प्रकार ﴿يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ﴾ (अल्लाह तुम्हें संतान में त्यक्त धन विभाजित करने का आदेश करता है) के अन्तर्गत नहीं तथा सर्वसम्मति से उत्तराधिकारी नहीं इसी प्रकार इस आयत के भी अन्तर्गत नहीं । والله أعلم, "बहनें" सगी हों अथवा माँ से अथवा पिता से, "फूफियां" में पिता की और सभी मूल पुरुष (अर्थात नाना, दादा) की

तीनों प्रकार की बहनें आती हैं "ख़ालायें" इसके अन्तर्गत मां की तथा सभी मूल स्त्री (अर्थात दादी, नानी) की तीनों प्रकार की बहनें आती हैं, "भतीजियों" में तीनों प्रकार के भाइयों की संतान सीधे हों अथवा माध्यम से ऐसे ही "भगनियों" में तीनों प्रकार की बहनों की संतान स्वयं उनकी हों अथवा उनकी संतान की संतान सम्मिलित हैं।

दूसरी प्रकार दुग्ध कर्म से निषेधित स्त्रियां-दूध पिलाने वाली माता, जिसका दूध स्तनपान की अवधि में पिया हो (अर्थात दो वर्ष के भीतर) दुग्ध से बहन जिसे तुम्हारी सगी माता अथवा दूध पिलाने वाली माता ने दूध पिलाया, तुम्हारे साथ पिलाया अथवा तुमसे पहले या बाद तुम्हारे अन्य भाई-बहन के साथ पिलाया अथवा जिस स्त्री की सगी मां अथवा दूध वाली मां ने तुम्हें दुग्धपान कराया, चाहे विभिन्न समय में पिलाया हो, दुग्ध से भी वह सभी वर्जित हो जायेंगे जोवंश से वर्जित होते हैं, इसका विवरण यह है कि दूध पिलाने वाली माता की स्वयं अपनी संतान, तथा जिनको स्तनपान कराया है स्तनपान करने वाले शिशु के भाई-बहन, दूध पिलाने वाली माता का पति, उसका पिता तथा उस पुरुष की बहनें उसकी फूफियां, उस स्त्री की बहनें, ख़ालायें और उस स्त्री के ज्येष्ठ देवर उसके चचा, ताया बन जायेंगे। और इस स्तनपायी शिशु के सगे भाई-बहन आदि इस घराने पर स्तनपान के कारण वर्जित न होंगे।

तीसरी प्रकार, स्वसुराली निषेधित स्त्रियां- पत्नी की माता अर्थात सास (पत्नी की नानी, दादी भी इसमें सम्मिलित हैं) यदि किसी ने स्त्री से विवाह करके बिना समागम कि विवाह विच्छेद कर लिया तब भी उसकी मां (सास) से विवाह वर्जित होगा। किन्तु किसी स्त्री से विवाह कर के बिना संभोग "तलाक़" दे दी हो तोउसकी पुत्री से उसका विवाह वैध होगा। (फ़तहुल क़दीर)

रबीब: पत्नी की पहले पति से पुत्री इसका निषेध प्रतिबन्धित है अर्थात उसकी माता से संभोग कर लिया होगा तो, "रबीबा" से विवाह वर्जित अन्यथा अवर्जित होगा, في حجوركم (वह रबीब: जिनका पालन, पोषण तुम्हारी गोद में हुआ) यह बंधन साधारण अवस्था के कारण है प्रतिबन्ध के रूप में नहीं यदि वह पुत्री किसी अन्य स्थान में पाली जायेगी, अथवा निवास करेगी तब भी विवाह वर्जित होगा, पत्नी को हलील: कहा जाता है क्योंकि अरबी में उसका अर्थ उतरने का स्थान है और पत्नी पति के साथ निवास तथा प्रस्थान करती है, पुत्रों में पौत्र और नवासे भी आते हैं अर्थात उनकी पत्नियों से भी विवाह वर्जित होगा, इसी प्रकार दुग्ध पिलाई संतान के जोड़े भी निषेध होंगे من أصلابكم (तुम्हारे सगे पुत्रों की पत्नियां) के बन्धन से यह प्रकाशित हो गया कि लेपालक की पत्नियों से विवाह निषेध नहीं, दो बहनें सगी हों अथवा दुग्ध की उनसे एक समय में विवाह निषेध है। किन्तु एक के निधन अथवा तलाक़ की दशा में इद्दत पूरी होने के पश्चात दूसरी से विवाह उचित है। इसी प्रकार चार पत्नियों में से एक को तलाक़ देने के बाद पांचवीं से विवाह की अनुमति नहीं जब तक तलाक़ प्राप्त स्त्री इद्दत न पूरी कर ले।

وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَ
اُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ
مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ
وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ
مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ز
فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ
فَلَاجُنَاحَ عَلَيْكُمْ ز وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ
الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا
بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ط
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۙ ﴿٢٣﴾

तुम्हारी फूफियाँ तथा तुम्हारी मौसियाँ एवं भाई की पुत्रियाँ एवं बहन की पुत्रियाँ और तुम्हारी वह माताऐं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो। तथा तुम्हारी दूध में भागीदार बहनें एवं तुम्हारी सास तथा तुम्हारी वह पालन-पोषण की गयीं लड़कियाँ जो तुम्हारी गोद में हैं, तुम्हारी उन स्त्रियों से जिनसे तुम सहवास कर चुके हो। हाँ, यदि तुम ने उनसे सम्भोग न किया हो, तो तुम पर कोई पाप नहीं और तुम्हारे अपने सगे पुत्रों की पत्नियाँ और तुम्हारा दो सगी बहनों को एक साथ विवाह करना। हाँ, जो हो चुका सो हो चुका, नि:सन्देह अल्लाह तआला क्षमा करने वाला दयालु है।

विचारणीय : व्यभिचार से निषेध सिद्ध होगा अथवा नहीं इसमें विद्वानों का मतभेद है। अधिकतर का विचार है कि, यदि किसी ने किसी स्त्री के साथ व्यभिचार किया तो इसके कारण वह स्त्री उस पर वर्जित न होगी। इसी प्रकार यदि अपनी पत्नी की माता (सास) से अथवा उसकी पुत्री से (जो दूसरे पति से हो) व्यभिचार कर लेगा तो उसकी पत्नी उस पर वर्जित नहीं होगी (तर्कों के लिये फ़तहुल क़दीर भाग, १ देखिये) अहनाफ़ तथा अन्य विद्वानों के विचार में व्यभिचार से भी निषेध सिद्ध हो जायेगा। प्रथम मत को कुछ हदीसों से सहयोग मिलता है।

(२४) और (तुम्हारे लिए) विवाहित नारियाँ (निषेध की गई हैं) परन्तु जो (दासी) तुम्हारे स्वामित्व में हों,[1] यह आदेश तुम पर अल्लाह ने अनिवार्य कर दिये हैं तथा इनके सिवाय अन्य स्त्रियाँ तुम्हारे लिए उचित की गईं कि अपने धन (महर) से उन से विवाह करो,

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ

---

[1]क़ुरआन करीम में احصان। चार अर्थों में प्रयोग हुआ है (१) विवाह (२) स्वतंत्रता (३) पवित्रता (४) तथा इस्लाम, इस आधार पर محصنات के चार अर्थ हैं (१) विवाहित स्त्रियाँ (२) स्वतंत्र स्त्रियाँ (३) चरित्रवान स्त्रियाँ (४) तथा मुसलमान स्त्रियाँ। यहाँ पहला अर्थ तात्पर्य है। इसके उतरने की विशेषता यह है कि जब कुछ युद्धों में काफ़िरों की स्त्रियाँ भी मुसलमानों की बंदी हुईं तो मुसलमान उनसे सहवास करने में अच्छा नहीं आभास कर रहे थे, क्योंकि वह विवाहित थीं। सहाबा ने नबी सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम से पूछा, जिस पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर) जिससे यह ज्ञात हुआ कि युद्ध में प्राप्त होने वाली काफ़िर स्त्रियाँ जब मुसलमानों की दासियाँ वन जायें, तो विवाहित होने के उपरान्त भी उनसे सहवास करना उचित है। परन्तु गर्भाशय की स्वच्छता आवश्यक है अर्थात एक मासिक धर्म के पश्चात अथवा यदि गर्भवती है तो प्रसव के पश्चात सम्भोग करें।

दासता की समस्या : क़ुरआन के उतरने के समय दास-दासी का प्रचलन सामान्य था जिसे क़ुरआन ने बंद नहीं किया, परन्तु उनके लिए वह कार्य प्रणाली निर्धारित की जिससे दास तथा दासियों को अधिक से अधिक सुविधा प्राप्त हो सके ताकि दासता की अवहेलना हो। इसके दो माध्यम थे। एक तो कुछ परिवार के पुरुष-स्त्री सदियों से बेच दिये जाते थे, यही खरीदे हुए पुरुष-स्त्री दास तथा दासियाँ कहलाते थे। मालिक को उनसे हर प्रकार का लाभ उठाने का अधिकार था। दूसरा माध्यम युद्ध में बन्दियों वाला था। काफ़िरों की बंदी स्त्रियों को मुसलमानों में बाँट दिया जाता था, वह उनकी दासी वन कर उनके पाँस रहती थीं। उस काल में बंदियों के लिए कोई अन्तर्राष्ट्रीय नियम नहीं था, इसलिए यह उस समय का श्रेष्ठ हल था। क्योंकि यदि उन्हें समाज में यूँ ही स्वतंत्र छोड़ दिया जाता, तो समाज में उनके द्वारा कई बुराईयाँ उत्पन्न होतीं (विस्तार के लिए देखें किताबुल रिक्क फ़िल इस्लाम "इस्लाम में दासता की वास्तविकता" लेखक मौलाना सईद अकबराबादी) वस्तुत: मुसलमान विवाहित स्त्रियाँ तो वैसे ही अवैध हैं, फिर भी काफ़िर स्त्रियाँ भी निषेध हैं जब तक कि उनके स्वामित्व में न आयें। इस स्थिति में गर्भाशय स्वच्छता के उपरान्त ही वह उनके लिए वैध हैं।

व्यभिचार के लिए नहीं, पवित्रा के लिए[1] अत: जिन से तुम लाभ उठाओ उन्हें उनका महर दो,[2] तथा तुम निर्धारित महर के बाद परस्पर सहमती से जो चाहो तय कर लो तुम पर कोई दोष नहीं,[3] वस्तुत: अल्लाह ज्ञाता बुद्धिमान है।

فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾

(२५) तथा तुम में से जो स्वतंत्र मुसलमान नारी से विवाह की योग्यता न रखता हो वह उस मुसलमान दासी से (विवाह करे) जो तुम्हारे स्वामित्व में हो। अल्लाह तुम्हारे कर्मों

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ

---

[1]अर्थात वर्णित क़ुरआन और हदीस के द्वारा वर्जित स्त्रियों के अतिरिक्त शेष सभी से विवाह करना उचित है। परन्तु उसमें चार विशेषतायें हों। प्रथम यह कि मंगनी करो اَنْ تبتغوا अर्थात दोंनो पक्षों द्वारा ग्रहण तथा स्वीकार हो। द्वितीय यह कि माल अथात महर अदा करना स्वीकार हो, तृतीय यह कि उन को विवाह बंधन (स्थाई अधिपत्य) में बांधना. उद्देश्य हो, केवल सम्भोग का विचार न हो (जैसे व्यभिचार अथवा उस मुतआ में होता है, जो शियों में प्रचलित है अर्थात लिंगीय इच्छाओं की सन्तुष्टि के लिए कुछ दिन अथवा कुछ घंटे के लिए विवाह) तथा चतुर्थ यह कि गुप्त प्रेम न हो बल्कि साक्षियों की उपस्थिति में विवाह हो। यह चार शर्तें इस आयत से उपलब्ध होती हैं। इससे जहाँ मुतआ का खण्डन होता है, वहीं प्रचलित हलाला का प्रचलन भी अनुचित सिद्ध होता है क्योंकि इसका उद्देश्य भी स्त्री को स्थाई विवाह के बंधन में बांधना नहीं होता है यह केवल एक रात के लिए निर्धारित तथा प्रचलित है।

[2]यह इस बात पर बल है कि जिन स्त्रियों से तुम विवाह धार्मिक रूप से करके लाभान्वित तथा सुख प्राप्त करो, उन्हें उनका निर्धारित महर अवश्य अदा कर दो।

[3]इसमें आपस की सहमती से महर में कमी-बेशी का अधिकार दिया गया है।

नोट: استمتاع के शब्द से शिया लोग "मुतआविवाह" का भाव लेते हैं, जबकि इसका तात्पर्य विवाह के पश्चात सहवास तथा सम्भोग का लाभ है, जैसाकि हमने लिखा है। अवश्य मुतआ इस्लाम के आरम्भिक काल में प्रचलित रहा है और उसका औचित्य इस आयत के आधार पर नहीं था, बल्कि इस्लाम के पहले से चला आ रहा था, फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में इसको क़ियामत तक के लिए अवैध कर दिया। जैसा कि सहीह हदीस में इसका विस्तृत विवरण विद्यमान है।

الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَ اٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَاۤ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾

से पूर्णत: अवगत है, तुम परस्पर एक ही हो, अत: तुम उनके संरक्षकों की अनुमती से उन से विवाह करो[1] तथा रीति अनुसार उनका महर दे दो, वह पवित्र हों व्यभिचारिणी न हों, न गुप्त प्रेमी रखने वालियाँ, तो जब यह विवाह में हो जायें फिर कुकर्म करें तो उन पर स्वतंत्र नारियों के आधा दण्ड है[2] यह विवाह का आदेश उसके लिये है जिसे व्यभिचार का भय हो तथा सहन करना तुम्हारे लिये उत्तम है और अल्लाह क्षमाशील कृपानिधि है ।[3]

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾

(२६) अल्लाह (तआला) तुम्हारे लिये स्पष्ट करना एवं तुम्हें तुम से पूर्व के (सदाचारियों का) मार्ग दर्शाना तथा तुम्हारी क्षमा-याचना स्वीकार करना चहता है और अल्लाह ज्ञाता बुद्धिमान है ।

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۫ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ

(२७) और अल्लाह तआला चाहता है कि तुम्हारी क्षमा स्वीकार करे और जो लोग

---

[1]इससे ज्ञात हुआ कि दासी का मालिक ही दासी का संरक्षक है, दासी का विवाह किसी से उसकी आज्ञा के बिना नहीं किया जा सकता । इसी प्रकार दास भी मालिक की आज्ञा के बिना किसी से विवाह नहीं कर सकता ।

[2]अर्थात दासियों को सौ के बजाय (आधे अर्थात) पचास कोड़े का दंड दिया जायेगा । अर्थात उनके लिए पत्थर मारकर मार डालने का दंड नहीं हो सकता, क्योंकि वह आधा नहीं होसकता, तथा अविवाहित दासी को निन्दनीय दंड होगा । (विस्तृत जानकारी के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर देखें)

[3]अर्थात दासी के साथ विवाह वही लोग कर सकते हैं, जो अपनी जवानी के आवेग पर नियंत्रण रखने की शक्ति न रखते हों, और कुकर्म में पड़ने का भय हो, यदि ऐसा भय न हो तो उस समय तक धैर्य रखना श्रेष्ठ है जब तक किसी स्वतन्त्र पारिवारिक स्त्री से विवाह करने योग्य न हों ।

कामवासना के अधीन हैं वह चाहते हैं कि तुम उस से बहुत दूर हट जाओ ।[1]

أَن تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ﴿٢٧﴾

(२८) अल्लाह तुम्हारा बोझ हलका करना चाहता है तथा मनुष्य निर्बल पैदा किया गया है ।[2]

يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخَفِّفَ عَنكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنسَانُ ضَعِيفًا ﴿٢٨﴾

(२९) हे मुसलमानो, अपना माल परस्पर अनीति से न खाओ,[3] परन्तु यह कि तुम्हारी आपस की सहमती से व्यापार हो ।[4] और अपने

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَن تَكُونَ تِجَارَةً عَن تَرَاضٍ مِّنكُمْ ۚ

---

[1] أن تميلوا अर्थात सत्य से असत्य की ओर झुक जाना ।

[2] इस क्षीणता के कारण उसके पाप में पड़ने की अधिक सम्भावना है । इसलिए अल्लाह तआला ने उसे यथा-संभव सुविधा प्रदान की है । उन्हीं में से दासी से विवाह करने की आज्ञा भी है । कुछ ने इस क्षीणता का सम्बन्ध स्त्रियों से बताया है अर्थात स्त्री के विषय में क्षीण है, इसी कारण स्त्री भी अपनी मन्द बुद्धि के उपरान्त भी पुरुषों को अपने जाल में फंसा लेती है ।

[3] بالباطل में धोखा छल-कपट तथा मिलावट के अतिरिक्त वह सभी व्यापार भी सम्मिलित हैं, जिनको करने से धार्मिक नियमों ने निषेध किया है जैसे जुआ, ब्याज आदि । इसी प्रकार निषेध तथा हराम चीजों का व्यापार करना भी सम्मिलित है । जैसे- फ़ोटोग्राफी, रेडियो, टी० वी०, वी० सी० आर०, विडिओ तथा असभ्य कैसेट आदि । इनका बनाना, मरम्मत करना तथा बेचना सब अनुचित है ।

[4] इसके लिए यह शर्त है कि लेन-देन वैध पदार्थों का हो । निषेध का व्यापार परस्पर सहमति से भी अनुचित ही रहेगा । इसके अतिरिक्त सहमती में खियार-ए-मजलिस की भी समस्या आती है अर्थात जब तक एक-दूसरे से विदा न हो, सौदा निरस्त करने का अधिकार रहेगा । जैसा कि हदीस में है :

«الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا».

"दोनों आपस में सौदा करने वाले को, जब तक जुदा न हों अधिकार है ।" (सहीह बुखारी व मुस्लिम किताबुल बोयुअ)

وَلَا تَقْتُلُوٓا أَنفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٩﴾

आप की हत्या न करो,[1] अवश्य अल्लाह तआला तुम पर कृपालु है।

وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾

(३०) और जो व्यक्ति यह (अवज्ञा) सीमा लांघ कर तथा अत्याचार से करेगा[2] तो निकट भविष्य में हम उसे अग्नि में डालेगें, और यह अल्लाह के लिए सरलतम है।

إِن تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُم

(३१) यदि तुम इन महापापों से बचते रहोगे जिनसे तुम को मना किया जाता है[3] तो हम

---

[1]इसका तात्पर्य आत्महत्या भी हो सकता है जो महापाप है और पाप करना भी जो विनाश का कारण है, और किसी मुसलमान की हत्या करना भी, क्योंकि सभी मुसलमान एक शरीर की भाँति हैं, इसलिए उसकी हत्या करना भी ऐसा ही है जैसे अपने आपकी स्वयं हत्या कर ली हो।

[2]अर्थात निषेधाज्ञा का उल्लंघन जान-बूझकर, अत्याचार और अवज्ञाकारिता से ही करेगा।

[3]महापाप की परिभाषा में मतभेद है, कुछ के निकट वह पाप है, जिन पर दंड निर्धारित है, कुछ के निकट वह पाप जिन पर क़ुरआन और हदीस में तीव्र चेतावनी अथवा शाप दिया गया हो, कुछ के निकट प्रत्येक वह कार्य जिससे अल्लाह ने अथवा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निषेध (हराम) होने के कारण रोका है और वास्तविकता यह है कि इनमें से कोई एक बात भी किसी पाप में पायी जाये तो वह महापाप है। हदीसों में विभिन्न महापापों का वर्णन है, जिन्हें कुछ आलिमों ने एक किताब में संकलित किया है। जैसे अल-कबाएर लिज़्हबी, अल-ज़वाजिर अन इक़तिराफ़ अल कबाएर लिल हैत्मी आदि। यहाँ इस नियम का वर्णन है कि जो मुसलमान महापाप (शिर्क, माता-पिता के अधिकार की अवहेलना, झूठ आदि) से रूका रहेगा, तो हम उस के तुच्छ पाप क्षमा कर देंगे। सूर: नज्म में इस विषय का वर्णन है, परन्तु वहाँ महापाप के साथ असभ्य (अनैतिक कार्य) से रुकने को भी तुच्छ पापों की क्षमा के लिए आवश्यक कहा गया है। परन्तु इसके अतिरिक्त तुच्छ पापों की पुनरावृति उनको महापाप बना देती है। इसी प्रकार महापाप से रुकने के साथ-साथ इस्लाम धर्म के नियम तथा अनिवार्य कार्यों को निश्चित रूप से करना और सत्कर्म करना भी अति आवश्यक है। सहाबा कराम (رضي الله عنهم) ने इस्लाम धर्म के इस रूप को समझ लिया था, इसलिए उन्होंने केवल क्षमा के वचन पर ही भरोसा नही किया, बल्कि अल्लाह तआला की कृपा प्राप्ति के लिए वर्णित सभी बातों का प्रयोजन किया। जबकि हमारा

أَن تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ﴿٢٧﴾

कामवासना के अधीन हैं वह चाहते हैं कि तुम उस से बहुत दूर हट जाओ ।[1]

يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخَفِّفَ عَنكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنسَانُ ضَعِيفًا ﴿٢٨﴾

(२८) अल्लाह तुम्हारा बोझ हलका करना चाहता है तथा मनुष्य निर्बल पैदा किया गया है ।[2]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَن تَكُونَ تِجَارَةً عَن تَرَاضٍ مِّنكُمْ ۚ

(२९) हे मुसलमानो, अपना माल परस्पर अनीति से न खाओ,[3] परन्तु यह कि तुम्हारी आपस की सहमती से व्यापार हो ।[4] और अपने

---

[1] أن تميلوا अर्थात सत्य से असत्य की ओर झुक जाना ।

[2] इस क्षीणता के कारण उसके पाप में पड़ने की अधिक सम्भावना है । इसलिए अल्लाह तआला ने उसे यथा-संभव सुविधा प्रदान की है । उन्हीं में से दासी से विवाह करने की आज्ञा भी है । कुछ ने इस क्षीणता का सम्बन्ध स्त्रियों से बताया है अर्थात स्त्री के विषय में क्षीण है, इसी कारण स्त्री भी अपनी मन्द बुद्धि के उपरान्त भी पुरुषों को अपने जाल में फंसा लेती है ।

[3] بالباطل में धोखा छल-कपट तथा मिलावट के अतिरिक्त वह सभी व्यापार भी सम्मिलित हैं, जिनको करने से धार्मिक नियमों ने निषेध किया है जैसे जुआ, ब्याज आदि । इसी प्रकार निषेध तथा हराम चीजों का व्यापार करना भी सम्मिलित है । जैसे- फ़ोटोग्राफी, रेडियो, टी० वी०, वी० सी० आर०, विडिओ तथा असभ्य कैसेट आदि । इनका बनाना, मरम्मत करना तथा बेचना सब अनुचित है ।

[4] इसके लिए यह शर्त है कि लेन-देन वैध पदार्थों का हो । निषेध का व्यापार परस्पर सहमति से भी अनुचित ही रहेगा । इसके अतिरिक्त सहमती में खियार-ए-मजलिस की भी समस्या आती है अर्थात जब तक एक-दूसरे से विदा न हो, सौदा निरस्त करने का अधिकार रहेगा । जैसा कि हदीस में है :

«الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا».

"दोनों आपस में सौदा करने वाले को, जब तक जुदा न हों अधिकार है ।" (सहीह बुखारी व मुस्लिम किताबुल बोयुअ)

وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٣٣﴾

प्रत्येक व्यक्ति के निर्धारित कर रखे हैं।[1] और जिनसे तुम ने अपने हाथों सन्धि की है उन्हें उनका भाग दो,[2] वास्तव में अल्लाह तआला प्रत्येक चीज़ को देख रहा है।

---

[1] مـوالى बहुवचन है مولى का। और مولى के कई अर्थ हैं मित्र, मुक्त किया गया दास, चचेरा भाई, पड़ोसी। परन्तु यहाँ पर इससे तात्पर्य उत्तराधिकारी हैं। अर्थ यह है कि प्रत्येक पुरुष-स्त्री जो कुछ छोड़ कर मर जायेंगे उसके उत्तराधिकारी माता-पिता तथा अन्य निकटवर्ती सम्बन्धी होंगे।

[2] इस आयत के प्रचलित अथवा निरस्त होने में व्याख्याकारों का मत भेद है। इब्ने जरीर तबरी आदि इसे निरस्त नहीं (आदेशित) मानते हैं तथा أيمانكم (सन्धि) से तात्पर्य वह प्रतिज्ञा तथा सन्धि मानते हैं जो एक-दूसरे की सहायता के लिए इस्लाम से पूर्व दो व्यक्तियों अथवा दो क़बीले के मध्य हुयी और इस्लाम के पश्चात भी चली आ रही थी। نصيبهم (भाग) से तात्पर्य उसी प्रतिज्ञा तथा संधि के पालन के अनुसार सहायता तथा सहयोग का भाग है। तथा इब्ने कसीर एवं अन्य व्याख्याकारों के निकट यह आयत निरस्त है। क्योंकि أيمانكم उनके निकट वह संधि है जो हिजरत के पश्चात एक अंसारी तथा मुहाजिर के मध्य भाई चारे के रूप में हुई थी। इसमें एक मुहाजिर, अन्सारी के माल का उसके सम्बन्धियों की जगह उत्तराधिकारी होता था। परन्तु चूँकि यह एक अस्थाई व्यवस्था थी, इसलिए फिर

﴿وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾

"सम्बंधी अल्लाह के आदेशानुसार एक-दूसरे के अधिक अधिकारी हैं।" (अल-अन्फ़ाल-७५)

को उतारकर इसको निरस्त कर दिया। अब فأتوهم نصيبهم का तात्पर्य मित्रता प्रेम तथा एक-दूसरे की सहायता है। और वसीयत के अनुसार कुछ दे देना भी सम्मिलित है। संधि के अनुसार, प्रतिज्ञा के अनुसार अथवा भाईचारे के अनुसार अब उत्तराधिकार का विचार नहीं होता है। ज्ञानियों के एक गिरोह ने इससे ऐसे दो व्यक्ति को लिया, जिसमें कम से कम एक व्यक्ति निरुत्तराधिकारी हो और एक-दूसरे से यह तय करता है कि मैं तुम्हारा उत्तराधिकारी हूँ। यदि कोई बड़ा अपराध करूँ तो मेरी सहायता करना और यदि मैं मर जाऊँ तो मेरी देयत (ख़ून के बदले धन) ले लेना। इस निरुत्तराधिकारी के मरने के बाद उसके मालका वह उपरोक्त व्यक्ति उत्तराधिकारी होगा बशर्ते कि वास्तव में उस का कोई उत्तराधिकारी न हो। कुछ दूसरे ज्ञानी इस आयत का एक अन्य अर्थ वर्णित करते हैं। वह कहते हैं والذين عقدت أيمانكم से तात्पर्य पति-पत्नी हैं। इसका

ٱلرِّجَالُ قَوَّٰمُونَ عَلَى ٱلنِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ ٱللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِمَآ أَنفَقُوا۟ مِنْ أَمْوَٰلِهِمْ ۚ فَٱلصَّٰلِحَٰتُ قَٰنِتَٰتٌ حَٰفِظَٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ ٱللَّهُ ۚ وَٱلَّٰتِى تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَٱهْجُرُوهُنَّ فِى ٱلْمَضَاجِعِ وَٱضْرِبُوهُنَّ ۖ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا۟ عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا ﴿٣٤﴾

(३४) पुरुष स्त्रियों पर अधिपति हैं इस कारण कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर श्रेष्ठता दिया है तथा इस कारण कि पुरूषों ने अपने धन ख़र्च किये हैं,[1] अत: सुशील आज्ञाकारी स्त्रियां पति की अनुपस्थिति में अल्लाह की रक्षा द्वारा (मर्यादा एवं धन) की रक्षक नारियाँ हैं और जिन स्त्रियों से तुम्हें दुराचार का भय हो उन्हें सचेत करो, तथा उनका बिस्तर अलग कर दो (फिर भी न मानें) तो मारो और यदि तुम्हारा कहना मान लें तो उन पर मार्ग की खोज न करो ।[2] निश्चय अल्लाह परम महान है ।

सम्बन्ध الأقربون से है । अर्थ यह है कि "माता-पिता ने, निकटवर्ती सम्बंधी ने और जिनकी तुम्हारी संधि आपस में हो चुकी है (अर्थात पति अथवा पत्नी) उन्होंने जो कुछ छोड़ा उसके उत्तराधिकारी अर्थात भागीदार हमने निर्धारित कर दिये हैं । अतएव उन उत्तराधिकारियों को उनका अधिकार दे दो ।" अर्थात पिछली आयतों में उत्तराधिकारियों के भाग का जो विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया उसको संक्षेप में यहाँ अदा करने पर बल दिया गया है ।

[1]इसमें पुरुष के अधिपत्य तथा श्रेष्ठता के दो कारण बताये गये हैं । एक दैवी है जो उस की शारीरिक शक्ति तथा तीव्र बुद्धि है, जिस में पुरुष स्त्री से निश्चितरूप से श्रेष्ठ है । दूसरा कारण अर्जित है, जिसको प्राप्त करने का अधिकार इस्लाम धर्म ने पुरुष को दिया है और स्त्री कोउसकी प्राकृतिक कमजोरी तथा विशेष शिक्षा के कारण जो इस्लाम ने स्त्री को चारित्रिक सामर्थ्य और उसकी पवित्रता की रक्षा के लिए आवश्यक बतलायी है, स्त्री को आर्थिक उलझनों से दूर रखा है । स्त्री के नेतृत्व के विरुद्ध क़ुरआन करीम का यह अत्यन्त स्पष्ट दृढ़ तर्क है जिसकी अत्यन्त दृढ़ता बुख़ारी की उस हदीस से होती है कि "वह समुदाय कभी सफल नहीं हो सकता जिसका नेतृत्व एक महिला कर रही हो ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी, बाब किताबुन्नबी इला किसरा व क़ैसर, किताबुल फ़ेतन, बाब १८)

[2]अवज्ञाकारिता की स्थिति में सर्वप्रथम स्त्री को समझाना-बुझाना है, फिर अस्थाई रूप से अलग हो जाना है, जो एक बुद्धिमान स्त्री के लिए बहुत बड़ी चेतावनी है । जब इससे

(३५) यदि तुमको (पति-पत्नी के) मध्य अनबन होने का भय हो तो एक पंच पति के परीवार से और एक पत्नी के परिवार से नियुक्त करो,[1] यदि ये दोनों परस्पर संधि कराना चाहें तो अल्लाह उन दोनों को मिला देगा, निश्चय अल्लाह ज्ञाता सूचित है।

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِن يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ﴿٣٥﴾

(३६) तथा अल्लाह की आराधना करो, उसके साथ किसी को मिश्रण न करो, तथा माता-पिता एवं संवन्धियों, अनाथों, निर्धनों तथा करीव के पड़ोसी एवं दूर के पड़ोसी[2] तथा

وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ

भी न माने तो थोड़ी मार मारने की आज्ञा है, परन्तु यह मार पशुतावाली या अत्याचारी न हो जैसाकि अशिक्षित लोगों की आदत है। अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस अत्याचार की आज्ञा किसी पुरुष को नहीं दी है। यदि वह सुधार करले तो मार्ग न खोजो अर्थात मारपीट न करो, तंग न करो, तलाक़ न दो अर्थात तलाक़ अन्तिम सीमा है जब अन्य कोई मार्ग न रह जाये। परन्तु पुरुष इस अधिकार को भी अधिक अनुचित रूप से प्रयोग करते हैं और छोटी-छोटी वात पर तुरन्त तलाक़ दे डालते हैं और अपना जीवन नष्ट करते हैं और साथ ही साथ यदि बच्चे हों तो उनका जीवन भी नष्ट करते हैं।

[1]घर के अन्दर उपरोक्त तीनों प्रयत्न विफल हो जाये तो चौथा उपाय दो मध्यस्थ हैं। यदि सद्भावक होंगे तो निश्चय उनकी सुधारने की कोशिश सफल होगी फिर विफलता की दशा में मध्यस्थों को पति-पत्नी में विलगाव अर्थात तलाक़ (विवाह विच्छेद) का अधिकार है अथवा नहीं ? इस में विद्वानों में मतभेद है। कुछ इसे अस्थाई न्यायधीश के निर्णय अथवा पति-पत्नी के विलगाव का अधिकार देने से प्रबंधित करते है, परन्तु साधारण ज्ञानी लोग इसके बिना उस अधिकार को मानते हैं। (विस्तृत जानकारी के लिये तफ़सीर तब्री, फ़तहुल कदीर, तफ़सीर इब्ने कसीर देखिये)

[2] الجار الجنب सम्बन्धी पड़ोसी की तुलना में प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है ऐसा पड़ोसी जो सम्बन्धी न हो अर्थात यह कि पड़ोसी से पडोसी के रूप में प्रेम व्यवहार किया जाय वह सम्बन्धी हो अथवा सम्बन्धी न हो। जिस प्रकार से हदीस में भी इस बात पर वड़ा वल देकर वर्णन किया गया है।

وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ﴿٣٦﴾

साथ के यात्री[1] के साथ उपकार करो तथा यात्री और जो तुम्हारे अधीन हैं[2] (उनके साथ), नि:संदेह अल्लाह अहंकारी, अभिमानी से प्रेम नहीं करता ।[3]

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ﴿٣٧﴾

(३७) जो लोग (स्वंय) कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी करने को कहते हैं और अल्लाह तआला ने जो अपनी कृपा से उन्हें प्रदान कर रखी है, उसे छिपाते हैं । हम ने उन कृतघ्नों के लिए अपमानकारी यातना तैयार कर रखी है ।

وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَمَنْ يَكُنِ

(३८) और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए व्यय करते हैं और अल्लाह (तआला) पर तथा क़ियामत के दिन पर

---

[1]इससे तात्पर्य यह है यात्रा के साथी, साझीदार, पत्नी तथा वह व्यक्ति जो लाभ की आशा में किसी की निकटता तथा साथ करे । बल्कि इसकी परिभाषा में वह लोग भी आ सकते हैं, जिन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए अथवा प्रशिक्षण प्राप्त करने लिए अथवा किसी व्यापारिक उद्देश्य से आपके निकट बैठने का अवसर प्राप्त हो । (फ़तहुल क़दीर)

[2]इसमें घर, दूकान, उद्योग, मिलों के कर्मचारी भी आ जाते हैं । दासों के साथ सदव्यवहार पर हदीसों में बड़ा बल दिया गया है ।

[3]घमण्ड, गर्व तथा अभिमान अल्लाह तआला को कदापि प्रिय नहीं है । बल्कि एक हदीस में यहाँ तक आता है "वह व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जायेगा जिसके दिल में राई के एक दाने के समान भी घमण्ड होगा ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब तहरीमिल किब्रे व बयानिहि हदीस संख्या ९१) यहाँ पर घमंड की विशेष रुप से आलोचना करने से यह उद्देश्य है कि अल्लाह तआला की आराधना और जिन-जिन व्यक्तियों से सदव्यवहार करने पर बल दिया गया है, इसके अनुसार कर्म वही कर सकता है, जिसके दिल में घमंड न हो, घमंड से शून्य हो । अभिमानी और अहंकारी व्यक्ति सही अर्थों में न तो इबादत उचित रुप से कर सकता और न अपनों और परायों से सद्व्यवहार ही कर सकता है ।

ईमान नहीं रखते, और जिसका संगी-साथी शैतान हो ।[1] वह बहुत बुरा साथी है ।

الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ۝٣٨

(३९) और भला उन की क्या हानि थी यदि यह अल्लाह (तआला) पर और प्रलय (क़ियामत) के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह (तआला) ने जो उन्हें प्रदान कर रखा है, उसमें से ख़र्च करते, अल्लाह (तआला) उन्हें अच्छी प्रकार से जानने वाला है ।

وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ۝٣٩

(४०) नि:संदेह, अल्लाह (तआला) एक कण के बराबर अत्याचार नहीं करता और यदि पुण्य हो तो उसे दुगुना कर देता है एवं विशेष रूप से अपने पास से बहुत बड़ा प्रत्युपकार प्रदान करता है ।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٤٠

(४१) तो क्या हाल होगा जिस समय प्रत्येक समुदाय (उम्मत) में से एक गवाह हम लायेंगे और आप को उन लोगों पर गवाह बनाकर लायेंगे ।[2]

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰي هٰٓؤُلَاۗءِ شَهِيْدًا ۝٤١ۭ

---

[1]कंजूसी (अर्थात अल्लाह के मार्ग में व्यय न करना) अथवा व्यय तो करना परन्तु प्रदर्शन और दिखावे के लिए करना । यह दोनों बातें अल्लाह को अति अप्रिय हैं । और उनकी निन्दा के लिए यह बात ही काफ़ी है कि यहाँ क़ुरआन करीम में इन दोनों बातों को काफ़िरों का आचरण बताया गया है जो अल्लाह और अन्त दिवस के प्रति विश्वास नहीं रखते और शैतान उनका साथी है ।

[2]प्रत्येक समुदाय (उम्मत) का पैग़म्बर (सन्देष्टा) अल्लाह के सदन में गवाही देगा "हे अल्लाह ! हमने तो तेरा संदेश अपनी कौम तक पहुँचा दिया था । अब उन्होंने नहीं माना तो इसमें हमारा क्या अपराध है ?" फिर उन पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गवाही देंगे "हे अल्लाह ! यह सत्य कहते हैं ।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह गवाही उस क़ुरआन के कारण देंगे जो आप पर उतरा और जिसमें पूर्व के नबियों और उनकी कौम की घटनायें आवश्यकतानुसार वर्णित हैं । यह एक कठिन

(४२) जिस दिन काफ़िर और रसूल के अवज्ञा-कारी यह कामना करेंगे कि काश उन्हें धरती के साथ समतल कर दिया जाता और अल्लाह (तआला) से कोई बात न छिपा सकेंगे।

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ﴿٤٢﴾

(४३) हे ईमानवालो ! यदि तुम नशे में धुत हो तो नमाज़ के निकट न जाओ[1] जब तक

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا

अवस्था होगी, इसका विचार ही शरीर में कँपकँपी उत्पन्न कर देता है। हदीस में आता है कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद से क़ुरआन सुनने की इच्छा व्यक्त की वह सुनाते हुए जब इस आयत पर पहुँचे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "बस अब काफ़ी है।" आदरणीय इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं "मैंने देखा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से अश्रु प्रवाहित थे।" (सहीह बुख़ारी फ़ज़ाएले क़ुरआन) कुछ लोग कहते हैं कि गवाही तभी दी जा सकती है जब सभी कुछ गवाह अपनी आँखों से देखे। इसलिए वह शहीद का अर्थ "सर्वव्यापी" सिद्ध करते हैं और इस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रत्येक स्थान पर विद्यमान सिद्ध करते हैं, परन्तु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रत्येक स्थान पर उपस्थित समझना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह के गुणों में सम्मिलित करना है, जो शिर्क है। क्योंकि प्रत्येक स्थान पर अल्लाह तआला ही का अपने ज्ञान के द्वारा उपस्थित होने का गुण है। "शहीद" के शब्द से यह भाव निकालना अपने अन्दर कोई शक्ति नहीं रखता, इसलिए कि गवाही निश्चित ज्ञान के आधार पर भी होती है और क़ुरआन करीम में वर्णित सत्य घटनाओं से अधिक निश्चित ज्ञान किसका हो सकता है ? इसी निश्चित ज्ञान के आधार पर स्वयं मुसलमानों को भी "شهداء على الناس" (सृष्टि के लोगों पर गवाह) कहा है। यदि गवाही के लिए उपस्थिति आवश्यक है, तो प्रत्येक मुसलमान व्यक्ति को सर्वव्यापी मानना पड़ेगा। अन्ततः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में यह विश्वास मिश्रणवाद एवं निराधार है।

[1]यह आदेश उस समय दिया गया था, जब तक मदिरा निषेध नहीं की गयी थी। अतः एक भोज में मदिरापान के पश्चात जब नमाज़ के लिए खड़े हुए, तो नशे में क़ुरआन के शब्द भी इमाम साहब ग़लत पढ़ गये। (विस्तार के लिए देखिए त्रिमज़ी, तफ़सीर सूरः अल निसा) जिस पर यह आयत उतरी कि नशे की अवस्था में नमाज़ न पढ़ा करो। अर्थात उस समय तक नमाज़ के समय मदिरापान निषेध किया गया था पूर्ण निषेधाज्ञा और वर्जित होने का आदेश बाद में उतरा।

الصَّلٰوةَ وَاَنۡتُمۡ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعۡلَمُوۡا مَا تَقُوۡلُوۡنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِىۡ سَبِيۡلٍ حَتّٰى تَغۡتَسِلُوۡا‌ؕ وَاِنۡ كُنۡتُمۡ مَّرۡضٰۤى اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ اَوۡ جَآءَ اَحَدٌ مِّنۡكُمۡ مِّنَ الۡغَآئِطِ اَوۡ لٰمَسۡتُمُ النِّسَآءَ فَلَمۡ تَجِدُوۡا مَآءً فَتَيَمَّمُوۡا صَعِيۡدًا طَيِّبًا فَامۡسَحُوۡا بِوُجُوۡهِكُمۡ وَاَيۡدِيۡكُمۡ‌ؕ

कि अपनी बात समझने न लगो, और जनाबत (अशुद्धि) की अवस्था में जब तक स्नान न कर लो[1] हाँ, यदि राह चलते गुजर जाने वाले हो तो और बात है।[2] और यदि तुम रोगी हो, अथवा यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई शौच से आया हो अथवा तुमने स्त्रियों के साथ संभोग किया हो और तुम्हें पानी न मिले, तो पवित्र मिट्टी का संकल्प करो और अपने मुँह और अपने हाथ मल लो।[3] नि:संदेह अल्लाह

---

[1]अर्थात अपवित्रता की अवस्था में भी नमाज़ न पढ़ो क्योंकि नमाज़ के लिए पवित्रता आवश्यक है।

[2]इसका अर्थ यह नहीं है कि यात्रा की अवस्था में यदि पानी न मिले तो अपवित्रता की अवस्था में ही नमाज़ पढ़ लो (जैसा कि कुछ ने कहा है) बल्कि अधिक आलिमों का मत है कि अपवित्रता की अवस्था में तुम मस्जिद में न बैठो, परन्तु यदि मस्जिद के अन्दर से जाना पड़ जाये तो जा सकते हो। कुछ सहाबा के घर ऐसे थे कि उनको हर परिस्थिति में मस्जिद-ए-नबवी के अन्दर से गुज़र कर जाना पड़ता था यह छूट उन्हीं के कारण प्रदान की गयी। (इब्ने कसीर) वरन् यात्री का आदेश आगे आ रहा है।

[3]रोगी से तात्पर्य वह रोगी है जिसे पानी के प्रयोग से हानि अथवा रोग के बढ़ जाने का भय हो (२) सामान्य यात्री, लम्बी यात्रा हो अथवा लघु, यदि पानी उपलब्ध न हो तो तयम्मुम करने की आज्ञा है। पानी न मिलने की स्थिति में यह आज्ञा निवासी को भी है, परन्तु रोगी तथा यात्री को चूँकि इस प्रकार की आवश्यकता सामान्यतय: आती थी इसलिए विशेषरुप से उनके लिए आज्ञा का वर्णन कर दिया गया है (३) शौच से आने वाला (४) तथा पत्नी के साथ सम्भोग करने वाला, उनको भी पानी न मिलने की स्थिति में तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ने की आज्ञा है।

तयम्मुम की विधि : यह है कि एक ही बार हाथ पवित्र ज़मीन पर मारकर कलाई तक दोनों हाथ एक-दूसरे पर फेर लें (कोहनियों तक आवश्यक नहीं) और मुँह पर भी फेर ले قال فى التيمم «ضَرْبَةٌ لِلْوَجْهِ وَالْكَفَّيْنِ» (मुसनद अहमद, भाग ४ पृष्ठ २६३) अम्मार (رضي الله عنه) ने कहा, "नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तयम्मुम के विषय में फ़रमाया कि यह दोनों हथेलियों तथा चेहरे के लिए एक ही बार है﴿صَعِيدًا طَيِّبًا﴾से तात्पर्य पवित्र मिट्टी है। ज़मीन से निकलने वाली प्रत्येक चीज़ नहीं जैसा कि कुछ का विचार है। हदीस में विशेषरूप से स्पष्ट कर दिया गया है«جُعِلَتْ تُرْبَتُهَا لَنَا طَهُورًا إِذَا لَمْ نَجِدِ الْمَاءَ»

إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٤٣﴾

(तआला) अति क्षमा (माफ़) करने वाला बख़्शने वाला है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا
مِّنَ الْكِتَابِ يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ
وَيُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا السَّبِيلَ ﴿٤٤﴾

(४४) क्या तुम ने उन्हें नही देखा जिन्हें किताब का कुछ भाग दिया गया ? वह पथ-भ्रष्टता खरीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी विपथ हो जाओ।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ
وَلِيًّا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا ﴿٤٥﴾

(४५) और अल्लाह (तआला) तुम्हारे शत्रुओं को भली प्रकार से जानने वाला है और अल्लाह (तआला) का मित्र होना ही पर्याप्त है तथा अल्लाह (तआला) का सहायक होना बस है।

مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ
الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ
سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ
وَرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا
فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا
سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ
وَانظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ

(४६) कुछ यहूदी कथनों को उनके उचित स्थान से फेर बदल कर देते हैं और कहते हैं कि हमने सुना और अवज्ञा की और सुन उस के बिना कि तो सुना जाये[1] और हमारी अधीनता स्वीकार करो (परन्तु इसके कहने में) अपनी जीभ मरोड़ लेते हैं और धर्म को कलंकित करते हैं, और यदि यह लोग कहते कि हमने सुना और हमने मान लिया और आप सुनिये और हमें देखिये तो यह उनके

"जब हमें पानी न मिले तो ज़मीन की मिट्टी हमारे लिए पवित्र बना दी गयी है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद)"

[1]यहूदियों के दुराचरणों तथा कुकर्मों में से यह भी एक था कि "हमने सुना के साथ ही कह देते परन्तु हम पालन नहीं करेंगे" "अर्थात अनुसरण नहीं करेंगे।" यह दिल में कहते अथवा अपने साथियों से कहते अथवा निर्भयता का प्रदर्शन करके मुंह पर कहते। इसी प्रकार غير مسمع (तेरी बात न सुनी जाये) यह शाप के रूप में कहते अर्थात तेरी बात स्वीकार न हो। راعنا के विषय में सूर: बक़र: आयत १०४ की व्याख्या में वर्णन हो चुका है।

وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝

लिए अति श्रेष्ठ था और अत्यधिक उचित था, परन्तु अल्लाह (तआला) ने उनके कुफ़्र के कारण से उन्हें धिक्कारा है, तो यह बहुत कम ईमान लाते हैं ।[1]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى اَدْبَارِهَآ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ۭ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝

(४७) हे अहले किताब ! जो कुछ हमने उतारा है, जो उसका प्रमाणकारी है जो तुम्हारे पास है, इस पर उससे पहले ईमान लाओ कि हम चेहरे बिगाड़ दें और उन्हें घुमा कर पीठ की ओर कर दें[2] अथवा उन पर धिक्कार भेजें जैसाकि हमने शनिवार वाले दिन के लोगों पर धिक्कार की है ।[3] और अल्लाह (तआला) का निर्णय अवश्य पूरा किया हुआ है ।[4]

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۚ

(४८) अवश्य अल्लाह (तआला) अपने साथ मिश्रण किये जाने को क्षमा नहीं करता और इसके अतिरिक्त जिसे चाहे क्षमा कर दे ।[5]

---

[1]अर्थात ईमान लाने वाले बहुत थोड़े हैं, जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है कि यहूदियों में से ईमान लाने वालों की संख्या दस तक भी नहीं पहुँची अथवा यह अर्थ है कि बहुत कम बातों पर ईमान लाते हैं, जब कि लाभकारी ईमान यह है कि सब बातों पर ईमान लाया जाये ।

[2]अर्थात यदि अल्लाह तआला चाहे तो तुम्हें तम्हारे कुकर्मों के बदले में यह दंड दे सकता है ।

[3]यह घटना सूर: अल-आराफ़ में आयेगी, कुछ संकेत पहले भी गुजर चुके हैं । अर्थात तुम भी उन्हीं के समान तिरस्कृत हो सकते हो ।

[4]अर्थात जब वह किसी बात का आदेश कर दे तो न कोई उसका विरोध कर सकता है और न उसे रोक सकता है ।

[5]अर्थात ऐसे पाप जिनसे ईमान वाले क्षमा मागें बिना मर जायें, अल्लाह तआला यदि किसी को चाहे तो बिना दंड दिये क्षमा कर देगा, बहुत से लोगों को दंड देने के बाद और बहुत से लोगों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिफ़ाअत (सिफ़ारिश) पर

وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾

और जो अल्लाह (तआला) के साथ मिश्रण करे उसने अल्लाह पर भारी आरोप घड़ा ।[1]

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنفُسَهُم ۚ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٤٩﴾

(४९) क्या आपने उन्हें नहीं देखा जो अपनी पवित्रता (और प्रशंसा) स्वयं करते हैं ? बल्कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे पवित्र करता है, तथा वे एक धागे बराबर भी अत्याचार न किये जायेंगे ।[2]

انظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٠﴾

(५०) देखो यह लोग अल्लाह (तआला) पर किस प्रकार मिथ्यारोपण करते हैं[3] तथा यह घोर पाप के लिये बहुत है ।[4]

क्षमा कर देगा, परन्तु शिर्क किसी भी परिस्थिति में क्षमा नहीं होगा क्योंकि मुशरिक पर अल्लाह तआला ने स्वर्ग (हराम) निषेध कर दिया है ।

[1]दूसरे स्थान पर फ़रमाया ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ (लुकमान) "शिर्क बहुत बड़ा अत्याचार है ।" हदीस में इसे महापाप कहा गया है "أكبر الكبائر الشرك بالله" ।

[2]यहूदी अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते थे । जैसे "हम अल्लाह के बेटे तथा उसके चहीते हैं" आदि । अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "पवित्रता का अधिकार भी अल्लाह को है और उसका ज्ञान भी उसी को है ।" "फ़तील" खजूर की गुठली के कटाव पर जो धागा अथवा सूत के समान निकलता हुआ दिखायी देता है, उसको कहा जाता है । अर्थात इतना-सा भी अत्याचार नहीं किया जायेगा ।

[3]अर्थात उपरोक्त पवित्रता का दावा करके ।

[4]अर्थात उनका यह व्यवहार (अपनी पवित्रता का दावा) उनके झूठ और बनावट के लिए पर्याप्त है । क़ुरआन करीम की इस आयत और उसके उतरने की विशेषताओं के कथनों से यह ज्ञात होता है कि एक-दूसरे की प्रशंसा तथा गुणगान विशेष कर दिलों की पवित्रता का दावा करना ठीक एवं उचित नहीं । इस बात को क़ुरआन करीम में दूसरे स्थान पर इस प्रकार फ़रमाया गया है :

﴿فَلَا تُزَكُّوا أَنفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ﴾

"स्वयं अपनी पवित्रता और प्रशंसा न करो, अल्लाह तआला ही जानता है कि तुम में संयमी कौन है ।" (*अल-नजम-३२*)

(५१) क्या आपने उन्हें नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ भाग मिला है, जो मूर्तियों पर तथा झूठे देवों पर विश्वास रखते हैं, और काफ़िरों के पक्ष में कहते हैं कि यह लोग ईमानवालों से अधिक सत्यमार्ग पर हैं ?[1]

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَٰؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا ﴿٥١﴾

(५२) यही वह लोग हैं जिनको अल्लाह (तआला) ने धिक्कारा है और जिसे अल्लाह (तआला) धिक्कार दे तो तू किसी को उसका सहायता करने वाला नहीं पायेगा।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَمَن يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ﴿٥٢﴾

हदीस में है आदरणीय मिकदाद (رضي الله عنه) कहते हैं "नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें आदेश दिया कि प्रशंसा करने वालों के मुख पर मिट्टी डाल दें।" «أَنْ نَحْثُوَ فِي وُجُوهِ الْمَدَّاحِينَ التُّرَابَ» (सहीह मुस्लिम किताबुज़ ज़ुहद)

एक अन्य हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को दूसरे आदमी की प्रशंसा करते सुना तो फ़रमाया :

«وَيْحَكَ قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ». "अफ़सोस है तुझ पर कि तूने अपने साथी की गर्दन काट दी।"

फिर फ़रमाया कि यदि तुम में से किसी को किसी की विवश होकर प्रशंसा करनी है, तो इस प्रकार कहा करे «أَحْسِبُهُ كَذَا» "मैं उसे इस प्रकार समझता हूँ, अल्लाह पर किसी की स्वच्छता न वर्णित करे।" (सहीह बुखारी किताबुश शहादात वल अदब, मुस्लिम किताबुज़ ज़ुहद)

[1]इस आयत में यहूदियों के एक और कर्म पर आश्चर्य व्यक्त किया गया है कि अहले किताब होने के उपरान्त यह "जिब्त" (मूर्ति, ज्योतिषी अथवा जादूगर) तथा ताग़ूत (झूठे देवों) पर ईमान रखते हैं और मक्का के काफ़िरों को मुसलमानों से अधिक सत्य मार्ग पर समझते हैं। जिब्त के यह सभी वर्णित अर्थ किय गये हैं। एक हदीस मे आता है।

«إِنَّ الْعِيَافَةَ وَالطَّرْقَ وَالطِّيَرَةَ مِنَ الْجِبْتِ».

"पक्षी उड़ा कर, रेखा खींचकर भाग्य जानना एवं अपशगुन लेना जिब्त से हैं।" (सुनन अबी दाऊद किताबुत तिब)

अर्थात यह शैतानी काम हैं। यहूदियों में यह बातें सामान्य रूप में पायी जाती थीं। ताग़ूत का एक अर्थ शैतान भी किया गया है। वास्तव में झूठे देवों की पूजा शैतान ही का अनुसरण है, इसलिए शैतान भी अवश्य ताग़ूत में सम्मिलित है।

(५३) क्या उनका कोई भाग राज्य में है ? यदि ऐसा हो तो फिर यह किसी को एक खजूर की गुठली की फाँक के समान भी कुछ न देंगे ।[1]

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴿٥٣﴾

(५४) अथवा यह लोगों से ईर्ष्या रखते हैं, उस पर जो अल्लाह (तआला) ने अपनी कृपा से उन्हें प्रदान किया है ।[2] तो हमने तो इब्राहीम की संतान को किताब तथा विवेक भी प्रदान किया है और बड़ा राज्य भी प्रदान किया है ।

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۖ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُم مُّلْكًا عَظِيمًا ﴿٥٤﴾

(५५) फिर उनमें से कुछ ने तो उस किताब को माना और कुछ उससे रुक गये ।[3] और नरक का जलाना पर्याप्त है ।

فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُم مَّن صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ﴿٥٥﴾

---

[1]यह नकारात्मक प्रश्न है अर्थात राज्य में इनका कोई भाग नहीं है । यदि इसमें थोड़ा सा भी भाग होता तो यह यहूदी लोग इतने कंजूस हैं कि लोगों को विशेष रूप से परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इतना भी न देते, जिससे खजूर की गुठली की फाँक वाला भाग भर जाये । نقیر नक़ीर उस विन्दु को कहते हैं जो खजूर की गुठली के ऊपर होता है । (इब्ने कसीर)

[2] أم (अम्), بل (बल्) के अर्थों में भी हो सकता है अर्थात वल्कि यह इस बात पर जलते हैं कि अल्लाह तआला ने इस्राईल की सन्तान को छोड़ कर दूसरों में नबी (अर्थात अन्तिम नबी) क्यों वनाया ? नबूवत अल्लाह की सबसे बड़ी कृपा है ।

[3]अर्थात इस्राईल की संतान को जो आदरणीय इब्राहीम के परिवार एवं वंश में से हैं, हमने नबूवत भी दी और बड़ा राज्य तथा राज्याधिकार भी । फिर भी यह सभी यहूदी उन पर ईमान नहीं लाये कुछ ईमान लाये और कुछ रुक गये । तात्पर्य यह है कि हे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, यदि यह आप पर ईमान नहीं ला रहे हैं तो यह कोई अनोखी बात नहीं है, इनका तो इतिहास ही नबियों को झुठलाने से भरा पड़ा है । यहाँ तक कि यह तो अपने वंश के नबियों पर भी ईमान नहीं लाये । कुछ ने آمن به में (ही) सर्वनाम से तात्पर्य नबी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को वताया है । अर्थात उन यहूदियों में कुछ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये और कुछ ने नकारा । इन इंकार करने वालों का अन्त नरक है ।

(५६) जिन लोगों ने हमारी आयतों का इंकार किया उन्हें हम अवश्य अग्नि में ड़ाल देंगे ।[1] जब उन की खालें (चर्म) पक जायेंगी, हम उनके अतिरिक्त और खालें बदल देंगे, ताकि वह यातना का स्वाद चखते रहें ।[2] अवश्य अल्लाह तआला प्रभुत्वशाली बुद्धिमान है ।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾

(५७) और जो लोग ईमान लाये और सभ्य कर्म किये ।[3] हम निकट भविष्य में उन्हें उन

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ

---

[1]अर्थात नरक में अहले किताब के नकारने वाले ही नहीं जायंगे, बल्कि अन्य काफ़िरों का ठिकाना भी नरक ही है ।

[2]यहं नरक की यातना की कठोरता, निरन्तरता तथा नित्यता का वर्णन है । सहाबा केराम (رضي الله عنهم) द्वारा कथित कुछ वक्यों में बताया गया है कि खालों का यह बदलना दिन में बिसियों बल्कि सैकड़ों बार होगा और मुसनद अहमद के अनुसार "नरकवासी नरक में इतने फूल जायेंगे कि उनके कानों की लौ से पीछे गर्दन तक की दूरी सात सौ वर्ष की यात्रा के समान होगी, उनकी खाल की मोटाई सत्तर बालिश्त और जबड़े ओहद पर्वत जितने होंगे ।"

[3]काफ़िरों की अपेक्षा ईमानवालों के लिए जो चिरस्थाई सुख-सुविधा प्राप्त होंगी, उनका वर्णन है, परंतु वह ईमानवाले जो सत्कर्मों से परिपूर्ण होंगे جعلنا الله منهم । अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में ईमान के साथ सत्कर्म की महत्ता को स्पष्ट कर दिया है कि उनका आपस में तल-जल का सम्बन्ध है । ईमान सत्कर्म के बिना उसी प्रकार है जैसे बिना सुगंध के फूल और बिना फल के वृक्ष । सहाबा केराम (رضي الله عنهم) तथा सत्यकाल के अन्य मुसलमानों ने इस बिन्दु को जान लिया था । अत: उनके जीवन ईमान के फल, सत्कर्म से प्रफुल्लित थे । उस काल में अकर्म अथवा कुकर्म के साथ ईमान की कल्पना ही नहीं थी । इसके विपरीत आजकल ईमान खाली ज़बानी जमा ख़र्च का नाम रह गया है । ईमान के दावेदारों के दामन सत्कर्म से शून्य हैं । هدانا الله تعالى इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति ऐसे कर्म करता है जो सत्कर्म की सीमा में आते हैं । जैसे ईमानदारी, सच्चाई, परोपकार, नि:स्वार्थ सेवा, सहानुभूति आदि अन्य सभ्यतापूर्ण विशेषतायें । परन्तु यह ईमान के गुण से वंचित हैं, तो उसके यह कर्म दुनिया में प्रसिद्ध तथा सम्मान का कारण तो बन सकते हैं, परन्तु अल्लाह के दरबार में उनका कोई स्थान नहीं है । इसलिए कि उनका स्रोत ईमान नहीं है जो अच्छे कर्म को अल्लाह

स्वर्गों मे ले जायेंगे, जिनके नीचे नहरें प्रवाहित हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे। उनके लिए वहाँ पवित्र पत्नियाँ होंगी और हम उन्हें घनी छाँव (पूर्ण सुविधाजनक स्थान) में ले जायेंगे।[1]

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِیْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ؗ وَّ نُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِیْلًا ﴿۵۷﴾

(५८) अल्लाह (तआला) तुम्हें आदेश देता है कि अमानत (धरोहर) उन के मालिकों को पहुँचा दो।[2] और जब लोगों के मध्य निर्णय

اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤی اَهْلِهَا ۙ وَ اِذَا حَكَمْتُمْ بَیْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا

तआला की ओर सम्बन्धित करता है। बल्कि केवल मात्र सांसारिक लाभ तथा समाजिक सभ्यता के बंधन के आधार पर है।

[1]घनी, गहरी, ठंढ तथा पवित्र छाया। जिसका अनुवाद "पूर्ण सुविधा" किया गया है। एक हदीस में हैं "स्वर्ग में एक वृक्ष है जिसकी छाया इतनी है कि एक सवार सौ वर्ष में भी उसे तय नहीं कर सकेगा। इस वृक्ष का नाम अलखुल्द है।" (मुसनद अहमद, भाग २ पृष्ठ ४५५, व असलुह फ़ी अल-बुखारी किताब (वदउल ख़ल्क) अध्याय (बाब) संख्या ८, माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्न: व अन्नहा मख़लूक़:)।

[2]अधिकतर व्याख्याकारों का यह मत है कि यह आयत आदरणीय उस्मान बिन तल्हा के सम्मान में उतरी है, जो अपने पूर्वजों से पारम्परिक रूप से ख़ाना-ए-काआबा के संतरी तथा उसके कुंजी धारक चले आ रहे थे। मक्का विजय के समय जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ाना-ए-कआबा में परिक्रमा के लिए पधारे, तो परिक्रमा आदि के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय उस्मान बिन तल्हा को, जो हुदैबिया की संधि के समय मुसलमान हो चुके थे, बुलाया और उन्हें ख़ाना-ए-कआबा की चाभियाँ प्रदान करते हुए फ़रमाया, "यह तुम्हारी चाभियाँ हैं, और आज का दिन प्रतिज्ञा पालन तथा पुण्य का दिन है।" (इब्ने कसीर) यह आयत एक विशेष कारण से उतरी परन्तु इसका भावार्थ सार्वजनिक तथा अधिकारियों दोनों के लिए है। दोनों के लिए आदेश है कि धरोहर उन्हें लौटा दो, जो धरोहर के अधिकारी हैं। इसमें एक प्रकार की वह धरोहर है, जो किसी के पास रखवायी जाती है। उसमें अपभोग न किया जाये, बल्कि यह उसी प्रकार से धरोहर रखने वाले को लौटा दिया जाये। दूसरे यह कि पद और सम्मान योग्य व्यक्तियों को ही प्रदान किये जायें केवल राजनीतिक आधार पर, वंश अथवा राष्ट्रीयता के आधार अथवा निकटवर्ती अथवा सम्बन्ध के आधार अथवा पद सुरक्षित के आधार पर पद तथा सम्मान देना इस आयत के विपरीत है।

करो तो न्याय के साथ निर्णय करो ।[1] नि:संदेह वह अच्छी बात है जिसकी शिक्षा अल्लाह (तआला) तुम्हें दे रहा है ।[2] नि:संदेह अल्लाह (तआला) सुनता देखता है ।

بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُم بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾

(५९) हे ईमान वालो ! अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा ईशदूत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की और अपने में से अधिकारियों की आज्ञा का पालन करो ।[3] फिर यदि किसी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ

---

[1]इसमें अधिकारियों को विशेषरूप से न्याय करने का आदेश दिया गया है । एक हदीस में है अधिकारी जब तक अत्याचार न करे, अल्लाह तआला उसके साथ होता है, जब वह अत्याचार करना प्रारम्भ कर देता है, अल्लाह उसको उसकी इन्द्रियों को सौंप देता है । (सुनन इब्ने माजा, किताबुल अहकाम)

[2]अर्थात धरोहर उसके योग्य लोगों को सौंपना तथा न्याय करना ।

[3]"अपने में से अधिकारी से तात्पर्य" कुछ के निकट राज्य अधिकारी और कुछ के निकट धर्माधिकारी तथा ज्ञानी हैं भावार्थ के आधार पर दोनों ही हो सकते हैं । तात्पर्य यह है कि वास्तविक आज्ञापालन तो अल्लाह तआला ही का है । क्योंकि

﴿أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ﴾

"सावधान ! सृष्टि भी उसी की है, आदेश भी उसी का है ।" (*अल-आराफ़-५४*)

परन्तु रसूल केवल अल्लाह की इच्छाओं के प्रतिनिधि हैं और उसके दूत हैं, इसलिए अल्लाह तआला ने अपने साथ रसूल के आदेश का भी स्थाई रूप से पालन आवश्यक बताया है । और फ़रमाया कि वास्तव में रसूल के आदेशों का पालन अल्लाह की आज्ञा का पालन है ।

﴿مَّن يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾

"जिसने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आज्ञा का पालन किया उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया ।" (अन-निसा-८०)

जिससे यह बात स्पष्ट हुई कि हदीस भी उसी प्रकार धर्म का श्रोत है, जिस प्रकार कुरआन करीम है, फिर राजाधिकारियों की आज्ञा पालन भी आवश्यक है । क्योंकि वह या तो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों को लागू

فَرُدُّوْهُ إِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ أَحْسَنُ تَأْوِيْلًا ۝

बात में मतभेद करो तो उसे लौटाओ अल्लाह (तआला) तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर, यदि तुम्हें अल्लाह तथा क़ियामत के दिन पर ईमान है। यह सर्वश्रेष्ठ है और परिणाम अनुसार बहुत अच्छा है।[1]

करते हैं अथवा उम्मत (क़ौम अथवा समुदाय) की सामाजिक समस्याओं का समाधान तथा रक्षा करते हैं। इससे ज्ञात होता है कि राजाधिकारियों के आदेशों का पालन यद्यपि आवश्यक है, परन्तु वह पूर्ण रूप से लागू नहीं होता बल्कि प्रतिबन्धित है अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन के साथ। इसलिए अल्लाह की आज्ञा पालन के पश्चात ही रसूल की आज्ञा पालन को तो कहा गया है। क्योंकि यह दोनों आज्ञापालन स्थाई और आवश्यक हैं। "परन्तु राजाधिकारी की आज्ञापालन करो" नहीं कहा गया है, क्योंकि राजाधिकारियों का आज्ञापालन स्थाई नहीं है। और हदीस में भी कहा गया है, «لَا طَاعَةَ لِمَخْلُوقٍ فِي مَعْصِيَةِ الخَالِقِ» (इसे अलबानी ने हदीस सहीह कहा है मिशकात संख्या ३६९६- मुस्लिम हदीस संख्या १८४०)

और «إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي المَعْرُوفِ» सहीह बुख़ारी किताबुल अहकाम बाब-४)

«السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ لِلإِمَامِ مَا لَمْ تَكُنْ مَعْصِيَةً» "पाप में पालन नहीं, पालन केवल पुण्यों में है।"

यही बात आलिमों तथा धर्मशास्त्रियों के विषय में भी है (यदि अधिकारियों में इन्हें भी मान लिया जाये) अर्थात उनकी आज्ञा का पालन इसलिए करना होगा क्योंकि वह अल्लाह और उसके रसूल के आदेश तथा कथनों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हैं तथा उसके धर्म की ओर संदेश तथा मार्ग दर्शन का कार्य करते हैं। इससे ज्ञात हुआ कि आलिम तथा धर्माधिकारी भी धार्मिक विषयों में अधिकारियों के समान आवश्य जनता के लिए आज्ञापालन के अधिकारी हैं। परन्तु उनकी आज्ञा का पालन भी उस समय तक किया जायेगा, जब तक वह जनता को केवल अल्लाह और उसके रसूल की बात बतायें, परन्तु यदि वह इससे मुख मोड़ लें तो जनता के लिए उनका आज्ञापालन करना भी आवश्यक नहीं है। बल्कि उनके मुख मोड़ने की स्थिति में जान-बूझकर उनका आज्ञापालन बड़ा पाप है।

[1]अल्लाह की ओर लौटाने से तात्पर्य क़ुरआन करीम तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तात्पर्य अब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है। यह आपसी मतभेद समाप्त करने के लिए एक सर्वश्रेष्ठ नियम बताया गया है। इस नियम से भी स्पष्ट होता है कि तीसरे व्यक्ति का आज्ञापालन आवश्यक नहीं है। जिस प्रकार से

(६०) क्या आपने उन्हें नही देखा जिसका विचार है कि जो कुछ आप पर तथा जो कुछ आप से पूर्व उतारा गया है, उस पर उनका ईमान है, परन्तु वह अपने निर्णय अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के पास ले जाना चाहते हैं यद्यपि उन्हें आदेश दिया गया है कि वह उनका (शैतान का) इंकार करें ? शैतान तो यह चाहता है कि उन्हें भटका कर दूर डाल दे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ ءَامَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَن يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾

(६१) और उन से जब कभी कहा जाये कि अल्लाह (तआला) ने जो (पवित्र शास्त्र) उतारा है उसकी ओर तथा रसूल की ओर आओ तो आप देखेंगे कि यह मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) आपसे मुँह फेर कर रुक जाते हैं।[1]

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾

अनुकरणवाद अथवा एक विशेष व्यक्ति का आज्ञापालन करने पर विश्वास करने वाले एक तीसरे व्यक्ति की आज्ञापालन को उचित ठहराते हैं और इसी तीसरी आज्ञापालन-कारिता ने, जो क़ुरआन की इस आयत का स्पष्ट विरोध है मुसलमानों को एक उम्मत के विपरीत अनेक बना रखा है तथा उनकी एकता को असंभव बना दिया है।

[1]यह आयत ऐसे लोगों के बारे में उतरी है, जो अपना निर्णय कराने के लिए मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के न्यायालय में ले जाने के बजाय यहूदियों के मुखिया अथवा क़ुरैश के मुखिया के पास ले जाना चाहते थे परन्तु यह आदेश जन-सामान्य के लिए है और इसमें सभी वह लोग सम्मिलित हैं जो क़ुरआन और सुन्नत के विपरीत अपने निर्णय के लिए इन दोनों को छोड़ कर अन्य की ओर जाते हैं। वरन् मुसलमान का हाल तो यह होता है कि,

﴿ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ﴾

"जब उन्हें अल्लाह और रसूल की ओर बुलाया जाता है ताकि उनके मध्य निर्णय कर दें, तो वह कहते हैं हमने सुना और हमने पालन किया।" (*अल-नूर* ५१)

ऐसे ही लोगों के लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

"و أولئك هم المفلحون" "यही लोग सफल हैं।"

فَكَيْفَ إِذَآ أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَآءُوكَ يَحْلِفُونَ بِٱللَّهِ إِنْ أَرَدْنَآ إِلَّآ إِحْسَٰنًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾

(६२) फिर क्या कारण है कि जब उन पर उनके कर्मों के कारण कोई आपत्ति आ पड़ती है, तो फिर यह आपके पास आकर अल्लाह (तआला) की शपथ लेते हैं कि हमारा विचार तो केवल भलाई तथा मधुर सम्बन्ध ही का था ।[1]

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ يَعْلَمُ ٱللَّهُ مَا فِى قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُل لَّهُمْ فِىٓ أَنفُسِهِمْ قَوْلًۢا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾

(६३) यह वह लोग हैं जिनके दिलों का भेद अल्लाह (तआला) को भली-भाँति स्पष्ट है, आप उनसे अनसुनी कीजिये, तथा उन्हें शिक्षा देते रहिए एवं उन्हें वह बात कहिए जो उनके दिलों में घर करने वाली हो ।[2]

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ جَآءُوكَ فَٱسْتَغْفَرُوا۟ ٱللَّهَ وَٱسْتَغْفَرَ لَهُمُ

(६४) और हमने प्रत्येक रसूल को केवल इसीलिए भेजा कि अल्लाह (तआला) के आदेश से उसकी आज्ञा का पालन किया जाये और यदि यह लोग जब उन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किया तेरे पास आ जाते, और अल्लाह (तआला) से क्षमा-याचना करते और

---

[1]अर्थात जब अपने इस करतूत के कारण अल्लाह की यातना के शिकार बन कर विपदा में फंसते हैं, तो फिर आकर यह कहते हैं कि किसी अन्य स्थान पर जाने का उद्देश्य यह नहीं था कि हम वहाँ से निर्णय करायें अथवा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अधिक न्याय मिलेगा, बल्कि हमारा उद्देश्य तो संधि तथा मिलाप कराना था ।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यद्यपि हम उनके दिलों के सभी भेदों से अवगत हैं (जिनका फल हम उन्हें देंगे) परन्तु हे पैग़म्बर ! आप उनके प्रत्यक्ष को सामने रखते हुए क्षमा ही कीजिए और शिक्षा-दीक्षा तथा ऐसी बातें कहिए जो उनके दिलों में घर कर लें, और इससे उनके अन्दर के सुधार का प्रयत्न निरन्तर करते रहें । इससे ज्ञात हुआ कि शत्रु के षडयन्त्रों को क्षमा तथा अनसुनी करके शिक्षा-दीक्षा तथा हृदय स्पर्शी भाषण के द्वारा ही निष्काम बनाने का प्रयत्न करना चाहिए ।

الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾

रसूल भी उनके लिए क्षमा-याचना करते,[1] तो नि:संदेह यह लोग अल्लाह तआला को क्षमा करने वाला कृपालु पाते।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾

(६५) तो सौगन्ध है तेरे प्रभु की ! यह (तब तक) ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि सभी आपस के मतभेद में आपको न्यायिक न स्वीकार कर लें, फिर जो निर्णय आप कर दें उनसे अपने दिलों में तनिक भी कलुपता तथा अप्रसन्नता न पायें और आज्ञाकारी के भांति स्वीकार कर लें।[2]

---

[1]मोक्ष के लिए अल्लाह तआला के सदन में क्षमा-याचना करना आवश्यक एवं पर्याप्त है। परन्तु यहाँ पर कहा गया है कि हे पैग़म्बर ! वह तेरे पास आते और अल्लाह से क्षमा-याचना करते और तू भी उनके के लिए क्षमा-याचना करता। यह इसलिए कि उन्होंने अपने मतभेदों के निर्णय के लिए दूसरों के पास जाकर आपकी अवहेलना की थी। इसलिए उसके निवारण के लिए आपके पास आने के लिए विशेष बल दिया गया।

[2]इस आयत के उतरने के विषय में एक यहूदी और मुसलमान की घटना का सामान्यत: वर्णन होता है, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदन में निर्णय के उपरान्त आदरणीय उमर (رضي الله عنه) से निर्णय करवाने गया, जिस पर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने उस मुसलमान का सिर धड़ से अलग कर दिया। परन्तु यह वाक्य प्रमाणयुक्त नहीं है जैसा कि हाफ़िज इब्ने कसीर ने भी स्पष्ट किया है। सही घटना यह है जो इस आयत के उतरने का कारण है कि आदरणीय ज़ुबैर (رضي الله عنه) जो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी के पुत्र थे, और एक आदमी के खेत की सिंचाई करने के लिए नाली के पानी पर झगड़ा था। यह विवाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विवाद के घटना स्थल का निरीक्षण किया, न्याय के अनुसार निर्णय आदरणीय ज़ुबैर (رضي الله عنه) के पक्ष में हुआ, जिस पर दूसरे आदमी ने यह कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह निर्णय इसलिए किया है कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फूफी के पुत्र हैं। इस पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: *अल-निसा*) आयत का अर्थ यह हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किसी बात अथवा निर्णय का विरोध तो अलग दिल में संकीर्णता भी ईमान के विपरीत है। यह आयत भी हदीस के इंकार करने वालों के लिए है ही, अन्य लोगों के लिये भी विचारणीय है, जो इमाम के कथन के

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوٓا أَنفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا مِن دِيَٰرِكُم مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِۦ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ﴿٦٦﴾

(६६) और यदि हम उन पर यह अनिवार्य कर देते कि अपने आप की हत्या कर लो अथवा अपने घरों से निकल जाओ, तो उसे उनमें से बहुत ही कम लोग पालन करते। और यदि यह वही करें जिसकी उन्हें शिक्षा दी जाती है, तो अवश्य ही उनके लिए श्रेष्ठकर हो और अत्यधिक सुदृढ़ हो।[1]

وَإِذًا لَّءَاتَيْنَٰهُم مِّن لَّدُنَّآ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٦٧﴾

(६७) और तब तो हम उन्हें अपने पास से बहुत पुण्य प्रदान करें।

وَلَهَدَيْنَٰهُمْ صِرَٰطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٦٨﴾

(६८) और निःसंदेह उन्हें सत्य मार्गदर्शन प्रदान कर दें।

وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ مَعَ ٱلَّذِينَ أَنْعَمَ ٱللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ وَٱلصِّدِّيقِينَ وَٱلشُّهَدَآءِ وَٱلصَّٰلِحِينَ ۚ وَحَسُنَ أُو۟لَٰٓئِكَ رَفِيقًا ﴿٦٩﴾

(६९) और जो भी अल्लाह (तआला) तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आज्ञा का पालन करे, वह उन लोगों के साथ होगा, जिन पर अल्लाह (तआला) ने अपनी कृपा की है, जैसे नबियों और सत्यवादियों तथा शहीदों एवं

सापेक्ष सहीह हदीस को मानने से संकुचित ही नहीं होते, अपितु वह स्पष्ट शब्दों में उसे मानने से इंकार करते हैं अथवा उसके कहने वालों की मान्य श्रृंखला को अथवा अन्य कुछ कारणों को बता कर अनुचित रुप से उसे असत्य कथन सिद्ध करते हैं।

[1]आयत में उन्हीं अवज्ञाकारी लोगों के दुर्व्यवहार की ओर संकेत करके कहा जा रहा है कि यदि उन्हें आदेश दिया जाता कि एक-दूसरे की हत्या करो अथवा अपने घरों से निकल जाओ तो जब यह सरल से सरल बातों का पालन नहीं कर सके, तो इस के अनुसार कैसे कर्म कर सकते थे? यह अल्लाह तआला ने अपने ज्ञान से उनके विषय में बताया है जो निःसंदेह घटनाओं के अनुसार है। तात्पर्य यह है कि कठोर आदेशों का पालन तो निश्चय कठिन है, परन्तु अल्लाह तआला अति दयालु तथा अति कृपालु है, उसके आदेश भी सरल हैं। इसलिए यदि यह इन आदेशों पर चलें जिनकी उन्हें शिक्षा दी जा रही है, तो यह उनके लिए श्रेष्ठता तथा स्थिरता का हेतु हो, क्योंकि ईमान आज्ञापालन से बढ़ता है और पाप से घटता है। पुण्य से पुण्य का मार्ग खुलता है और पाप से पाप जन्म लेता है।

पुण्य सदाचारियों के (साथ), यह अच्छे साथी हैं ।[1]

(७०) यह अल्लाह (तआला) की ओर से कृपा है और अल्लाह (तआला) ही पर्याप्त जानकार है ।

ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا

[1]अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन का प्रतिकार बताया जा रहा है । इसलिए हदीस में आता है, «الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ» (सहीह बुखारी किताबुल आदाब, बाब संख्या ९७ अलामतु हुब्बिल्लाह अज़्ज व जल्ल, मुस्लिम किताबुल बिर्र वल सिल:वल आदाब, बाब अल-मरउ मन अहब्ब, हदीस संख्या १६४०) "आदमी उसी के साथ होगा, जिनसे उसको प्रेम होगा ।" आदरणीय अनस (رضي الله عنه) फरमाते हैं "सहाबा को इतनी प्रसन्नता रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस कथन को सुनकर हुई, कि इतनी प्रसन्नता कभी नहीं हुई ।" क्योंकि वह स्वर्ग में भी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथ चाहते थे । इसके उतरने की विशेषता का कथन इस प्रकार है कि कुछ सहाबा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में कहा कि अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वर्ग में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्रदान करेगा और हमें उससे नीचा स्थान ही मिलेगा और इस प्रकार हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ तथा निकटता एवं दर्शन से वंचित रहेंगे, जो हमें दुनिया में प्राप्त है । अत: अल्लाह तआला ने यह आयत उतार कर उनके दिल को सन्तोष प्रदान किया । (इब्ने कसीर) कुछ सहाबा ने विशेष रूप से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से स्वर्ग में साथ होने की प्रार्थना की «أَسْأَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِي الْجَنَّةِ» जिस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अधिकता से ऐच्छिक (नफ़िल) नमाज पढ़ने पर बल दिया «فَأَعِنِّي عَلَىٰ نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُودِ» (सहीह मुस्लिम, किताबुल सलात, बाब फ़ज़लिस्सुजूद वल हस्से अलैहि, हदीस संख्या ४८८) "बस, तुम सजदों की अधिकता से मेरी सहायता करो ।" इसके अतिरिक्त एक अन्य हदीस है ।

«التَّاجِرُ الصَّدُوقُ الأَمِينُ مَعَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ»

"उचित सत्यवादी ईमानदार व्यापारी नबियों सत्यवादियों तथा शहीदों के साथ होगें ।" (त्रिमिज किताबुल बुयुअ)

सिद्दीक़ियत पूर्ण विश्वास तथा सम्पूर्ण आज्ञापालन का नाम है, नबूवत के पश्चात इस का स्थान है । मुसलमानों में उस स्थान के लिए आदरणीय अबूबक्र सिद्दीक सर्वश्रेष्ठ हैं और इसीलिए सर्वसम्मति से नबियों के अतिरिक्त उनका नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात सर्वश्रेष्ठ स्थान है । सत्यकर्मी वह है जो अल्लाह के अधिकार और व्यक्तियों के अधिकार पूर्ण रूप से अदा करे और उन में आलस्य न करे ।

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ خُذُوا۟ حِذْرَكُمْ فَٱنفِرُوا۟ ثُبَاتٍ أَوِ ٱنفِرُوا۟ جَمِيعًا ﴿٧١﴾

(७१) हे मुसलमानो ! अपनी रक्षा सामग्री ले लो,[1] फिर गिरोह-गिरोह बनकर प्रस्थान करो अथवा सब के सब एक साथ प्रस्थान करो ।

وَإِنَّ مِنكُمْ لَمَن لَّيُبَطِّئَنَّ فَإِنْ أَصَـٰبَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ ٱللَّهُ عَلَىَّ إِذْ لَمْ أَكُن مَّعَهُمْ شَهِيدًا ﴿٧٢﴾

(७२) और नि:संदेह तुम में कुछ ऐसे भी हैं जो संकोच करते हैं ।[2] फिर यदि तुम्हें कोई हानि होती है तो कहते हैं कि अल्लाह (तआला) ने मुझ पर बड़ी कृपा की कि मैं उनके साथ उपस्थित नहीं था ।

وَلَئِنْ أَصَـٰبَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ ٱللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَن لَّمْ تَكُنۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُۥ مَوَدَّةٌ يَـٰلَيْتَنِى كُنتُ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧٣﴾

(७३) और यदि तुम को अल्लाह (तआला) की कोई कृपा प्राप्त हो जाये[3] तो जैसे कि तुम में और उन में संबन्ध था ही नहीं[4] कहते हैं कि काश ! मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी सफलता को पहुँच जाता ।[5]

فَلْيُقَـٰتِلْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ٱلَّذِينَ يَشْرُونَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا بِٱلْـَٔاخِرَةِ ۚ

(७४) परन्तु जो लोग दुनिया के जीवन परलोक (आख़िरत) के बदले बेच चुके हैं,[6] उन्हें अल्लाह

---

[1]अपना बचाव करो, अस्त्र-शस्त्र तथा युद्ध की सामग्री और अन्य साधन से ।

[2]यह अवसरवादियों का वर्णन है । संकोच का अर्थ धर्मयुद्ध में जाने से कतराते और पीछे रह जाते हैं ।

[3]अर्थात युद्ध में विजय, प्रभावशाली तथा प्राप्त सामान ।

[4]अर्थात मानो वे तुम्हारे धर्म के लोगों में से है ही नहीं, अपितु अन्य हैं ।

[5]अर्थात युद्ध से प्राप्त सामग्री में भागीदार होता जो स्वार्थ साधकों का सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य है ।

[6]شرى يشـــرى के अर्थ बेचने के भी आते हैं और ख़रीदने के भी । मूल में पहले अनुवाद को लिया गया है । इस आधार पर فليقاتل का कर्त्ता الذين يشرون الحيٰوة होगा, परन्तु इसका अर्थ ख़रीदने के लिये जायें तो इस अवस्था में الذين कर्म कारक बनेगा और فليقـــاتلका कर्त्ता المؤمن النافر (धर्मयुद्ध में प्रस्थान करने वाले मुसलमान) लुप्त होगा । अर्थ यह होगा कि "मुसलमान उन लोगों से लड़ें जिन्होंने परलोक (आख़िरत) बेच कर

(तआला) के मार्ग में धर्मयुद्ध करना चाहिए और जो अल्लाह (तआला) के मार्ग में धर्म युद्ध करते हुए शहीद हो जाये अथवा विजयी हो जाये तो, नि:संदेह हम उसे सर्वश्रेष्ठ प्रतिफल प्रदान करेंगे।

وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٧٤

(७५) भला क्या कारण है कि तुम अल्लाह के मार्ग में और उन शक्तिहीन पुरुषों, स्त्रियों तथा नन्हे-नन्हे बच्चों के छुटकारे के लिए धर्मयुद्ध न करो ? जो इस प्रकार से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे हमारे प्रभु ! इन अत्याचारियों की बस्ती से हमें निकाल दे और हमारे लिए स्वयं अपने पास से पक्षधर निर्धारित कर और हमारे लिए विशेष रूप से अपने पास से सहायक बना।[1]

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚۙ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝٧٥

(७६) जो लोग ईमान लाये हैं, वह तो अल्लाह (तआला) के मार्ग में धर्मयुद्ध करते हैं और जिन

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ

दुनिया ख़रीद ली।" अर्थात जिन्होंने दुनिया के थोड़े से धन के लोभ में अपने धर्म को बेच डाला। तात्पर्य अवसरवदी तथा काफ़िर होंगे। (इब्ने कसीर ने इसी भावार्थ का वर्णन किया है)

[1]अत्याचारियों की बस्ती से (आयत के उतरने के आधार पर) तात्पर्य मक्का है। हिजरत के बाद वहाँ शेष रह जाने वाले मुसलमान विशेषरूप से वृद्ध पुरूष, स्त्री, और बच्चे काफ़िरों के अत्याचार से तंग आकर अल्लाह के दरबार में सहायता की दुआ करते थे। अल्लाह तआला ने मुसलमानों को चेतावनी दी कि तुम مستضعفين (उपरोक्त वर्णित कमजोर व्यक्तियों) को काफ़िरों से मुक्त कराने के लिए धर्मयुद्ध क्यों नहीं करते ? इस आयत से भाव निकालकर विद्वानों ने कहा है कि जिस क्षेत्र में भी मुसलमान काफ़िरों के अत्याचारों के शिकार हो रहे हों तो दूसरे मुसलमानों को अनिवार्य है कि काफ़िरों के अत्याचार से मुक्त कराने के लिए धर्मयुद्ध करें। यह धर्मयुद्ध का दूसरा रूप है पहला रूप अल्लाह के आदेश अर्थात उसके धर्म के प्रचार-प्रसार तथा अल्लाह तआला के आदेशों के प्रभाव के लिए लड़ना, जिसका वर्णन इससे पहली आयत तथा आगामी आयत में है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾

लोगों ने कुफ़्र किया है वह तो राक्षस के मार्ग में लड़ते हैं[1] बस, तुम शैतान के मित्रों से युद्ध करो, विश्वास करो कि शैतान की चाल (बिल्कुल क्षीण तथा) अत्यधिक शक्तिहीन है।[2]

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ

(७७) क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें आदेश दिया गया कि अपने हाथों को रोके रखो और नमाज़ें पढ़ते रहो और ज़कात अदा करते रहो। फिर जब उन्हें धर्म युद्ध का आदेश दिया गया, तो उसी समय उनका एक गिरोह लोगों से इस प्रकार भयभीत था, जैसे अल्लाह (तआला) का भय हो, बल्कि इससे भी अधिक। और कहने लगे, हे हमारे प्रभु ! तूने हम पर धर्मयुद्ध क्यों अनिवार्य किया ?[3] क्यों हमें थोड़ा जीवन

---

[1]मुसलमान और काफ़िर दोनों को युद्ध की आवश्यकता होती है। परन्तु दोनों के युद्ध के उद्देश्य में बड़ा अन्तर है। मुसलमान अल्लाह के लिए लड़ता है, मात्र दुनिया अथवा राज्य विस्तार के लिए नहीं। जब कि काफिर का उद्देश्य यही दुनिया और उसके लाभ होते हैं।

[2]मुसलमानों को प्रलोभन दिया गया है कि शैतानी उद्देश्यों के लिए बहाने तथा चाल क्षीण होते हैं, प्रत्यक्ष साधनों के पराचुर्य एवं अधिक संख्या से न डरो तुम्हारा विश्वास बल तथा तुम्हारे धर्म युद्ध के संकल्प के आगे शैतान के शिष्य नही ठहर सकते।

[3]मक्के में मुसलमान चूँकि संख्या तथा संसाधन की कमी के कारण लड़ने योग्य नहीं थे। इसलिए उनकी इच्छा के विपरीत उन्हें युद्ध से रोके रखा गया। और दो बातों पर बल दिया जाता रहा, एक यह कि काफ़िरों के अत्याचार को धैर्य तथा साहस से सहन करें और क्षमा तथा सहिष्णुता से ही काम लें। दूसरे यह कि नमाज़, ज़कात तथा अन्य अर्चना तथा शिक्षाओं के अनुरूप कार्य करें ताकि अल्लाह तआला से सम्बन्ध दृढ़ आधारों पर स्थित हो। परन्तु हिजरत के बाद मदीने में जब मुसलमानों की शक्ति एकत्रित हो गयी तो फिर उन्हें लड़ने की अनुमति दी गयी। और जब अनुमति दे दी गयी, तो कुछ लोगों ने निर्बलता तथा साहस विहीनता का प्रदर्शन किया। इस आयत में मक्के के समय में उनकी आकांक्षाओं को याद दिलाकर कहा जा रहा है कि अब यह

أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ ۚ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧٧﴾

और न व्यतीत करने दिया ?[1] आप कह दीजिए कि दुनिया का लाभ तो बहुत कम है और परहेज़गारों के लिए आख़िरत (परलोक) श्रेष्ठ है, और तुम एक धागे के समान भी अत्याचार न किये जाओगे।

أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِككُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَإِن

(७८) तुम जहाँ कहीं भी होगे मृत्यु तुम्हें आ पकड़ेगी, चाहे तुम सुदृढ़ दुर्गों में हो।[2] और

मुसलमान धर्म युद्ध का आदेश सुन कर भयभीत क्यों हो रहे हैं ? जबकि यह धर्मयुद्ध तो स्वयं उनकी कामना के अनुरूप है।

क़ुरआन की आयत बदलना : आयत का पहला भाग जिसमें लड़ाई से हाथ रोके रखने का आदेश है इससे कुछ लोगों ने यह भाव निकाला है कि नमाज़ में रूकुअ में जाते और रूकुअ से उठते समय हाथों को कानों तक नहीं उठाना चाहिए (जिसे रफ़उल यदैन कहते हैं) क्योंकि अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में नमाज़ की अवस्था में हाथों को रोके रखने का आदेश दिया है यह एक अनुचित और बेकार तर्क है। इसके लिए उन साहब ने आयत के शब्दों को भी बदला है और अर्थ भी। अर्थात शाब्दिक एवं भावार्थ दोनों में परिवर्तन कर डाला है।

[1]इसका दूसरा अनुवाद यह भी किया गया है कि इस धर्मयुद्ध के आदेश को कुछ समय के लिए स्थगित क्यों न कर दिया ? अर्थात أَجَلٍ قَرِيبٍ से तात्पर्य मृत्यु अथवा धर्मयुद्ध का समय है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2]ऐसे कमज़ोर मुसलमानों को समझाने के लिए कहा जा रहा है कि यह दुनिया क्षणभंगुर है तथा इसका लाभ अस्थाई है, जिसके लिए तुम समय माँग रहे हो। जिसकी अपेक्षा परलोक (आख़िरत) सर्वश्रेष्ठ है, जिसको तुम अल्लाह तआला के आज्ञाकारी हो कर प्राप्त कर सकोगे। दूसरे यह कि तुम धर्मयुद्ध करो अथवा न करो मृत्यु तो अपने समय पर आकर ही रहेगी, चाहे तुम सुदृढ़ दुर्गों में ही जाकर क्यों न छुप जाओ। फिर धर्म युद्ध से जान बचाने का क्या लाभ ? "सुदृढ़ दुर्गों" से तात्पर्य सुदृढ़ तथा उच्च दीवारों से घिरे दुर्ग हैं।

टिप्पणी : कुछ मुसलमानों को प्राकृतिक रूप से यह भय था। इसी प्रकार विलम्ब करने की कामना भी आपत्ति अथवा इंकार के लिए न था, बल्कि प्राकृतिक भय का एक तार्किक परिणाम था। इसलिए अल्लाह तआला ने उसे क्षमा कर दिया और अत्यधिक सुदृढ़ तर्क से उन्हें सहारा तथा साहस दिया।

تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِۦ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِۦ مِنْ عِندِكَ ۚ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ ۖ فَمَالِ هَٰٓؤُلَآءِ ٱلْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۝

यदि इन्हें कोई भलाई मिलती है तो कहते हैं कि यह अल्लाह (तआला) की ओर से है और यदि कोई बुराई पहुँचती है, तो कह उठते हैं कि यह तेरी ओर से है।[1] उन्हें कह दो, यह सब कुछ अल्लाह (तआला) की ओर से हैं। उन्हें क्या हो गया है कि कोई बात समझने के निकट भी नहीं ?[2]

مَّآ أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ ٱللَّهِ ۖ وَمَآ أَصَابَكَ مِن سَيِّئَةٍ فَمِن

(७९) तुझे जो भलाई मिलती है वह अल्लाह (तआला) की ओर से है।[3] और जो बुराई

---

[1]यहाँ से पुनः अवसरवादियों की बातों का वर्णन हो रहा है। विगत समुदाय के अवसरवादियों की भाँति इन्होंने भी कहा कि भलाई (सम्पन्नता, अन्न की उपज, धन तथा सन्तान की अधिकता आदि) अल्लाह की ओर से है और बुराई (सूखा, धन-धान्य में कमी आदि) हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरी ओर से अर्थात तेरा धर्म स्वीकार करने के कारण यह विपदा आयी है। जिस प्रकार से (आदरणीय) मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन के अनुयायियों के विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है, "जब उनको कोई भलाई पहुँचती है तो कहते हैं, यह हमारे लिए है (हम इसके पात्र हैं) और जब उनको बुराई पहुँचती है, तो (आदरणीय) मूसा और उनके अनुयायियों से अपशगुन लेते हैं।" (अर्थात अल्लाह की शरण, अशुभ का कारण उन्हीं को बताते हैं) *(अल-आराफ़-१३१)*

[2]अर्थात शुभ-अशुभ दोनों अल्लाह कीं ओर से है। परन्तु यह ज्ञान की कमी तथा मुर्खता के कारण इस बात को नहीं समझ पाते।

[3]अर्थात मात्र उसकी कृपा एवं दया से है। अर्थात किसी पुण्य अथवा आज्ञा पालन का प्रतिफल नहीं है। क्योंकि पुण्य का सामर्थ्य भी अल्लाह तआला ही देता है। इसके अतिरिक्त उसकी कृपा इतनी असीम है कि एक मनुष्य की वंदना तथा आज्ञा पालन उसकी अपेक्षा कोई मूल्य नहीं रखता है। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "स्वर्ग में जो भी जायेगा, मात्र अल्लाह की कृपा से जायेगा (अपने कर्मों के कारण नहीं)।" सहचरों ने कहा, "हे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप भी अल्लाह की कृपा के बिना स्वर्ग में नहीं जायेगें ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ, जब तक अल्लाह तआला मुझे भी अपनी कृपा की छाया में नही ढाँक लेगा स्वर्ग में नहीं जाऊंगा। (सहीह बुख़ारी किताबुल रिक़ाक़ अध्याय संख्या १८)

نَفْسِكَ ۚ وَ أَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾

पहुँचती है वह तेरे अपने स्वयं की ओर से है।[1] हमने तुझे मानव जाति के लिए सन्देश-वाहक बनाकर भेजा है तथा अल्लाह (तआला) पर्याप्त साक्षी है।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿٨٠﴾

(८०) इस रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जो अनुसरण करे उसी ने अल्लाह (तआला) की आज्ञाकारिता की और जो मुँह फेर ले तो हमने आपको कोई उन पर रक्षक बना कर नहीं भेजा।

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۡ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ۚ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾

(८१) और यह कहते तो हैं कि अनुकरण है, फिर जब आपके पास से उठ कर बाहर निकलते हैं, तो उनमें का एक गुट जो बात आपने अथवा उसने कही है उसके विपरीत रातों को विचार-विमर्श करता है।[2] उनकी रातों की बातचीत अल्लाह (तआला) लिख रहा है। आप उनसे मुँह फेर लें और अल्लाह

---

[1]यह बुराई भी यद्यपि अल्लाह की इच्छा से ही आती है। जैसा कि 'प्रत्येक विषय अल्लाह की ओर से है' से स्पष्ट होता है, परन्तु यह बुराई किसी पाप के परिणाम स्वरूप होती है। इसलिए फ़रमाया कि यह तुम्हारी अपनी स्वयं की करनी है अर्थात तुम्हारी ग़लतियों, आलस्य तथा पाप का परिणाम है। जिस प्रकार फ़रमाया :

﴿ وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴾

"तुम्हें जो कठनाई पहुँचती है, वह तुम्हारे अपने कर्मों का फल है और बहुत से पाप तो क्षमा ही कर देता है।"(*अश्शूरा-३०*)

[2]यह अवसरवादी आप के पास जो बातें व्यक्त करते हैं, रातों को इसके विपरीत बातें करते हैं और षड़यन्त्र रचा करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे बचें और अल्लाह पर भरोसा करें। इनके षड़यन्त्र आप को हानि नहीं पहुँचा सकते क्योंकि आपका संरक्षक तथा कामों को बनाने वाला अल्लाह है।

तआला पर भरोसा रखें, अल्लाह तआला पर्याप्त व्यवस्थापक है।

(८२) क्या यह लोग क़ुरआन पर विचार नहीं करते ? यदि यह अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त किसी अन्य की ओर से होता तो अवश्य इस में बहुत कुछ विभिन्नता पाते।[1]

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ﴿٨٢﴾

(८३) और जहाँ उनको कोई सूचना शांति अथवा भय की मिली कि उन्होंने उसका प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया, यद्यपि ये लोग उसे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के तथा अपने में से ऐसी बातों के स्रोत तक पहुचने वालों के हवाले कर देते, तो इस की वास्तविकता वह लोग ज्ञात कर लेते जो

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ

---

[1]क़ुरआन करीम से मार्गदर्शन ग्रहण करने के लिए उसमें विचार करने पर बल दिया जा रहा है और उसकी सत्यता जाँचने के लिए एक स्तर भी बताया जा रहा है कि यदि यह किसी पुरुष द्वारा लिखित होता (जैसा कि काफ़िरों का विचार है) तो इसके विषय तथा वर्णित घटनाओं में टकराव तथा मतभेद होता। क्योंकि यह एक छोटी पुस्तक नहीं है। एक स्थूल तथा विस्तृत किताब है, जिसका प्रत्येक भाग चमत्कार तथा साहित्य में अनुपम है। जबकि मानव द्वारा रचित स्थूल पुस्तक में भाषा का स्तर और उसकी कोमलता तथा सरलता स्थिर नहीं रहती। दूसरे इसमें पूर्व के समुदायों की घटनाओं का वर्णन है, जिसे केवल अल्लाह परोक्षज्ञ के अतिरिक्त अन्य कोई भी वर्णन नहीं कर सकता। तीसरे इनके बयान तथा कथाओं में न आपसी विभेद है और न उनका छोटे से छोटा अंश भी क़ुरआन की किसी वास्तविकता से टकराता है। यदि एक मनुष्य विगत की घटनाओं का वर्णन करे तो उसकी श्रृंखला की कड़ियाँ टूट जाती हैं और उनके विवरण में विपरीतता उत्पन्न हो ही जाती है। क़ुरआन करीम के इन सभी मानवी दोषों से स्वच्छ होने का स्पष्ट अर्थ यह है कि यह वास्तव में अल्लाह का कथन है, जो उसके फ़रिश्तों द्वारा अपने अन्तिम संदेशवाहक परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा।

وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾

अनुसंधान की बुद्धि रखते हैं ।[1] और यदि अल्लाह (तआला) की कृपा और उसकी दया तुम पर न होती, तो कुछ व्यक्तियों के अतिरिक्त तुम सभी शैतान के अनुयायी बन जाते ।

فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾

(८४) तू अल्लाह तआला के मार्ग में धर्मयुद्ध करता रह, तुझे केवल तेरे प्रति ही आदेश दिया जाता है। हाँ, ईमानवालों को आकर्षित करता रह, अति सम्भव है कि अल्लाह (तआला) काफ़िरों के आक्रमण को रोक दे। और अल्लाह (तआला) अत्यधिक शक्तिशाली है एवं दंड देने में भी अति कठोर है ।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً

(८५) जो व्यक्ति किसी पुण्य तथा भले कार्य करने की सिफ़ारिश करे, उसे भी उसका कुछ भाग मिलेगा और जो बुराई तथा कुकर्म करने

---

[1]यह कुछ निर्बल तथा व्यग्र मुसलमानों का आचरण, उनके सुधार के लिए वर्णित किया जा रहा है। शान्ति की सूचना से तात्पर्य मुसलमानों की सफलता एवं शत्रु का विनाश तथा पराजय की सूचना है। जिसे सुन कर शान्ति की लहर दौड़ जाती है और जिसके कारण कई बार आवश्यकता से अधिक भरोसा उत्पन्न हो जाता है जो हानि का कारण बन सकता है। और भय की सूचना से तात्पर्य मुसलमानों की पराजय और उनकी हत्या तथा हानि की सूचना है (जिससे मुसलमानों में निराशा फैलने तथा साहस हीनता की संभावना है) इसलिए उनसे कहा जा रहा है कि इस प्रकार की सूचना चाहे शान्ति की हो अथवा भय की उन्हें सुन कर जनसामान्य में फैलाने के बजाय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा दो, अथवा ज्ञानियों और जो शोधकर्ता हों उन्हें पहुँचा दो, ताकि वह विचार करें कि यह सूचना सही है अथवा ग़लत यदि सही है तो उस समय उससे मुसलमानों का अवगत होना लाभकारी है अथवा अनभिज्ञ रहना लाभकारी है ? यह नियम वैसे तो सामान्य अवस्था के लिए भी बड़ा महत्व तथा अधिक लाभकारी है । परन्तु युद्ध काल में तो इसकी विशेषता और आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है ।

سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ مُّقِیْتًا ﴿۸۵﴾

की सिफ़ारिश करे, उसके लिए भी उसमें से एक भाग है और अल्लाह (तआला) हर वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है।

وَاِذَا حُیِّیْتُمْ بِتَحِیَّةٍ فَحَیُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ حَسِیْبًا ﴿۸۶﴾

(८६) और जब तुम्हें सलाम (अभिवादन) किया जाये तो उससे अच्छा उत्तर दो अथवा उन्हीं शब्दों को पलट दो।[1] निःसंदेह, अल्लाह (तआला) हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَیَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا رَیْبَ فِیْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِیْثًا ﴿۸۷﴾

(८७) अल्लाह वह है, जिसके अतिरिक्त कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, वह तुम सब को अवश्य क़ियामत के दिन एकत्रित करेगा जिसके (आने) में कोई शंका नहीं, अल्लाह (तआला) से अधिक सत्य किस की बात होगी।

[1] تحية वास्तव में تحيية है। يا के يا में संधि के पश्चात تحية हो गया। इसका अर्थ दीर्घ आयु का आशिर्वाद है, यहाँ यह सलाम करने के अर्थ में है। (फ़तहुल क़दीर) अधिक अच्छा उत्तर देने की व्याख्या हदीस में इस प्रकार आयी है कि "अस्सलामु अलैकुम" के उत्तर में "व रहमतुल्लाह" की अधिकता और "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" के उत्तर में "व बर्कातुहू" की अधिकता कर दी जाये। परन्तु यदि कोई "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बर्कातुहू" कहे तो फिर अधिक किये बिना उन्हीं शब्दों में उत्तर दिया जाये। (इब्ने कसीर) और हदीस में है कि केवल "अस्सलामु अलैकुम" कहने से दस पुण्य, उसके साथ "व रहमतुल्लाह" कहने से बीस पुण्य और "व बर्कातुहू" कहने से तीस पुण्य मिलते हैं। (मुसनद अहमद भाग ४, पृष्ठ ४३९ तथा ४४०) ध्यान रहे कि यह आदेश मुसलमानों के लिए है, अर्थात एक मुसलमान जब दूसरे मुसलमान को सलाम करे। शरणार्थी अर्थात यहूदी तथा ईसाईयों को सलाम करना हो तो एक तो उनको सलाम करने में पहल न की जाये। दूसरे बढ़ोत्तरी न की जाये बल्कि केवल व अलैकुम के साथ उत्तर दिया जाये। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिज़ान, मुस्लिम, किताबुस्सलाम)

(८८) तुम्हें क्या हो गया है कि अवसरवादियों के विषय में दो गुट हो रहे हो ?[1] उन्हें तो उनके कर्मों के कारण अल्लाह (महान) ने औंधा कर दिया है ।[2] अब क्या तुम यह चाहते हो कि उसे मार्ग दिखाओ, जिसे अल्लाह ने विपथ कर दिया है, तो जिसे अल्लाह विपथ कर दे कदापि तुम उसके लिए कोई मार्ग न पाओगे ।[3]

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾

(८९) वह इच्छा करते हैं कि जैसे काफ़िर वे हैं तुम भी उनकी भाँति ईमान का इंकार करने लगो तथा तुम सभी समान बन जाओ, अत: उनमें से किसी को वास्तविक मित्र न बनाओ[4] जब तक वह अल्लाह के मार्ग में हिजरत (प्रवास) न करें, फिर यदि (इससे) मुँह फेरें तो

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ص

---

[1]यह प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात तुम्हारे मध्य इन अवसरवादियों के विषय में मतभेद नहीं होना चाहिए था। इन अवसरवादियों से तात्पर्य वह लोग हैं जो ओहद के युद्ध के समय मदीना शहर के बाहर कुछ दूर जाने के बाद वापस आ गये थे कि हमारी बात नहीं मानी गयी। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अन-निसा, सहीह मुस्लिम किताबुल मुनाफ़िक़ीन) जैसाकि विस्तार से पूर्व में ग़ुजर चुका है इन अवसरवादियों के लिए मुसलमानों में दो गुट बन गये थे। एक गुट का कहना था कि इन अवसरवादियों से हमें अभी निपटना चहिए, दूसरा गुट इसे अवसर तथा परिस्थिति के विपरीत समझता था।

[2] كسبوا (कर्म) से तात्पर्य रसूल का विरोध तथा धर्मयुद्ध से मुँह फेरना है। اركسهم औंधा कर दिया अर्थात जिस अविश्वास और विपदा से निकले थे, उसी में ले जाकर फँसा दिया अथवा इसके कारण नष्ट कर दिया।

[3]जिसको अल्लाह भटका दे अर्थात निरन्तर अधर्म तथा कटुता के कारण उनके दिलों पर मुहर लगा दे उन्हें कोई मार्ग पर नहीं ले जा सकता।

[4]हिजरत (इस्लाम के लिए देश त्याग) इस बात का प्रमाण है कि अब यह शुद्ध मुसलमान बन गये हैं। इस अवस्था में मित्रता तथा प्रेम उचित होगा।

وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٨٩﴾

उन्हें पकड़ो[1] तथा हत करो जहाँ पाओ। सावधान ! उनमें से किसी को मित्र एवं सहायक न समझ बैठो।

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَن يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ۚ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا

(९०) परन्तु जो उस समुदाय से संबन्ध रखते हों जिनके तथा तुम्हारे बीच संधि हो चुकी हो अथवा जो तुम्हारे पास आयें तो उनके दिल संकुचित हो रहे हों कि तुमसे लड़ें,[2] तथा अपने समुदाय से लड़ें, और यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर शक्ति प्रदान कर देता तथा वह अवश्य तुम से लड़ते[3] तो यदि वह तुमसे अलग रहें और लड़ाई न करें और तुम्हारी ओर शांति का संदेश प्रस्तुत[4]

---

[1]अर्थात जब तुम्हें उन पर वश तथा अधिकार प्राप्त हो जाये।

[2]अर्थात जिनसे लड़ने का आदेश दिया जा रहा है। इससे दो प्रकार के लोग अलग हैं। एक वह लोग, जो ऐसे समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं अर्थात ऐसे समुदाय के लोग हैं अथवा उसकी शरण में हैं, जिस समुदाय से तुम्हारी संधि है। दूसरे वह जो तुम्हारे पास इस अवस्था में आते हैं कि अपने समुदाय से मिलकर तुमसे अथवा तुमसे मिलकर अपने समुदाय से युद्ध करने से कतराते हैं। अर्थात तुम्हरे पक्ष में लड़ना पसन्द करते हैं और न तुम्हारे विपक्ष में।

[3]अर्थात यह अल्लाह का उपकार है कि उन्हें लड़ाई से अलग कर दिया वरन् यदि अल्लाह तआला उनके दिल में भी अपने समुदाय के पक्ष में लड़ने का विचार डाल देता, तो अवश्य वह भी तुम से लड़ते इसलिए यदि वास्तव में यह युद्ध से अलग रहें, तो तुम भी इनके विरोध में कोई प्रगति न करो।

[4]अलग रहें, न लड़ें, तुम्हारी ओर सन्धि का हाथ बढ़ायें, सभी का भावार्थ एक ही है। स्पष्टीकरण तथा विवरण के लिए यह तीन शब्द प्रयोग किये गये हैं ताकि मुसलमान उनके विषय में सावधान रहें। क्योंकि जो युद्ध तथा घटना से पूर्व ही अलग हो गये हैं और उनका यह अलग होना मुसलमानों के पक्ष में लाभकारी भी है। इसीलिए अल्लाह तआला ने इसे उपकार के रूप में वर्णन किया है तो उनके विषय में छेड़छाड़ की उपाय अथवा असावधानी कार्य उनके अन्दर भी विरोध तथा लड़ाई की भावना जागृत

جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾

करें, तो (फिर) अल्लाह ने तुम्हारे लिये उन पर कोई मार्ग युद्ध का नहीं बनाया है।

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَ يَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ط كُلَّمَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ج فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ط

(९१) तुम कुछ दुसरों को पाओगे जो तुम से तथा अपने वर्ग से सुरक्षित[1] रहना चाहते हैं, तथा जब कभी वह उपद्रव[2] की ओर फेरे जाते हैं तो उसमें औंधे मुहँ पड़ जाते हैं, यदि वह तुम से विलग न रहें तथा तुम से संधि न करें और अपने हाथ न रोकें[3] तो उन्हें पकडो

कर सकता है जो मुसलमानों के लिए हानिकारक है। इसलिए जब तक वह वर्णित अवस्था में स्थिर रहें उनसे न लड़ो। जिसका उदाहरण उस गुट से है जिसका सम्बन्ध बनी हाशिम से था, यह बद्र के युद्ध के दिन मक्का के मूर्तिपूजकों के साथ युद्धस्थल में तो आये परन्तु यह उनके साथ सम्मिलित होकर मुसलमानों से युद्ध नहीं करना चाहते थे। जैसे आदरणीय अब्बास (رضي الله عنه) रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा) आदि, जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे। इसीलिए दिखाने के लिए काफ़िरों के कैम्प में थे। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अब्बास (رضي الله عنه) को हत्या करने से रोक दिया था और उन्हें केवल बंदी बनाने पर ही बस किया। سِلْمٌ यहाँ مُسَالمة अर्थात संधि के अर्थों में है।

[1]यह एक तीसरे गुट का वर्णन है, जो अवसरवादी था। यह मुसलमानों के पास आते तो इस्लाम का प्रदर्शन करते, ताकि मुसलमानों से सुरक्षित रहें। अपनी जाति के लोगों के पास जाते तो शिर्क तथा मूर्तिपूजा करते, ताकि वह उन्हें अपने ही धर्म का अनुयायी समझें और इस प्रकार दोनों से लाभ प्राप्त कर सकें।

[2]उपद्रव से तात्पर्य मिश्रणवाद भी हो सकता है। أُركسوا فيها उसी शिर्क में लौटा दिये जाते। अथवा उपद्रव से तात्पर्य लड़ाई है कि जब उन्हें मुसलमानों के साथ लड़ने के लिए बुलाया अर्थात लौटाया जाता है, तो वह उस पर तैयार हो जाते हैं।

[3]يُلقوا और يكفوا का संबन्ध يعتزلوكم से है अर्थात सभी नकारात्मक अर्थ में हैं, सभी में لم (नकार) लगेगा।

وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝٩١

और जहाँ पाओ हत करो, यही वह हैं जिन पर हमने तुम को खुला तर्क दिया है।[1]

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ۭ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَھُوَ مُؤْمِنٌ

(९२) किसी मुसलमान के लिये उचित नहीं कि किसी मुसलमान की हत्या कर दे परन्तु चूक[2] से हो जाये (तो और बात है) तथा जो व्यक्ति किसी मुसलमान की हत्या चूक से कर दे [3] तो उस पर एक मुसलमान दास (अथवा दासी) मुक्त करना और हत के संबन्धियों को खून का मूल्य देना है।[4] परन्तु यह और

---

[1]इस बात पर कि वास्तव में उनके दिलों में द्वयवाद तथा उनके मनों में तुम्हारे प्रति ईर्ष्या तथा कटुता है। तभी तो वह तनिक प्रयास से पुन: उपद्रव (मिश्रणवाद अथवा तुम्हारे विरुद्ध लड़ने को तैयार होने) में लिप्त हो गये।

[2]यह नकार निषेध के अर्थो में है जो निषेध अभियाचक है अर्थात एक मुसलमान के लिये दूसरे मुसलमान की हत्या करना निषेध तथा अवैध है। जैसे

﴿ وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﴾

"तुम्हारे योग्य नहीं है कि तुम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) को कष्ट पहुँचाओ" (*अल-अहजाब-५३*) अर्थात हराम है।

[3]ग़लती के कारण तथा परिस्थितियाँ कई एक हो सकती हैं। उद्देश्य है कि विचार तथा इरादा हत्या करने का न हो। परन्तु किसी कारणवश हत्या हो जाये।

[4]यह ग़लती से हत्या के अपराध के दंड का वर्णन हो रहा है, जो दो रूप में है। एक प्रायश्चित एवं क्षमा-याचना के रूप में है। अर्थात एक मुसलमान दास को स्वतन्त्र करना तथा दूसरी मानव अधिकार के रूप में है। और वह है देयत (रक्त का मूल्य) मृतक के रक्त के बदले मृतक के उत्तराधिकारियों को जो कुछ भी दिया जाये, वह देयत है। और देयत की मात्रा हदीसों के आधार पर सौ ऊँट अथवा उसके समतुल्य नगद स्वर्ण, चाँदी अथवा मुद्रा के रूप में होगी।

टिप्पणी : ध्यान रहे कि जान बूझ कर हत्या में ख़ून का बदला ख़ून है (जिसे क़सास कहते हैं) अथवा दंड रूप में देयत है। और दंड स्वरूप देयत की सीमा सौ ऊँट है। जो आयु तथा स्वास्थ्य के अनुसार तीन प्रकार के होने चाहिए। जबकि भूल-चूक में हत्या होने से केवल देयत है, प्रतिहत्या नहीं है। इस देयत में मात्रा सौ ऊँट हैं परन्तु स्तर

فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۫ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ

बात है कि वह क्षमा कर दें,[1] और यदि वह हत तुम्हारे शत्रु वर्ग से हो और मुसलमान हो तो एक मुसलमान दास मुक्त करना आवश्यक है,[2] और यदि हत उस समुदाय से है जिसके तथा तुम्हारे (मुसलमानों के) बीच संधि है तो रक्त का मुल्य उसके संबन्धियों को अदा करना है और एक मुसलमान दास मुक्त करना भी है,[3] और जिसे उपलब्ध न हो उसको दो

इतना कड़ा नहीं है। इसके अतिरिक्त इसका मूल्य सुनन अबू दाऊद की हदीस में आठ सौ दीनार अथवा आठ हज़ार दिरहम और त्रिमिज़ी के कथनानुसार बारह हज़ार दिरहम बताया गया है। इसी प्रकार आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने अपने शासन काल में देयत के मूल्य में कमी तथा अधिकता तथा विभिन्न व्यवसाय वालों के अनुकूल उनके विभिन्न मूल्य रखे थे। (इरवाउल ग़लील भाग: ८) (सौ ऊँट के) आधार पर उसका मूल्य हर काल में उसके मूल्य के अनूसार निर्धारित किया जायेगा। (विस्तार से जानकारी के लिए धार्मिक नियमों, हदीस तथा विद्वानों की पुस्तकें देखें।

[1]क्षमा कर देने को दान के रूप में वर्णन करने का उद्देश्य क्षमा करने का प्रलोभन देना है।

[2]अर्थात इस अवस्था में देयत नहीं होगी। इस का कारण कुछ ने इस प्रकार वर्णन किया है कि क्योंकि उसके सम्बन्धी शत्रुता के आधार पर लड़ने वाले काफ़िर हैं, इस लिए वह मुसलमान के देयत लेने के अधिकारी नही हैं। कुछ ने यह कारण वर्णित किये हैं कि इस मुसलमान ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेने के पश्चात हिजरत नहीं की जबकि उस समय हिजरत पर बड़ा बल दिया गया था। इस आलस्य के कारण उसके ख़ून की निषेधता कम है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह एक तीसरी अवस्था है। इसमें भी वह दंड तथा देयत है जो पहली अवस्था में है। कुछ ने कहा यदि हत संरक्षण में है, तो उसकी देयत मुसलमान की देयत की आधी होगी क्योंकि हदीस में काफ़िर की देयत मुसलमान की देयत से आधी वर्णित की गयी है (इरवाउल ग़लील भाग४, पृष्ठ ३०) लेकिन अधिक उचित बात यही प्रतीत होती है कि इस तीसरी अवस्था में भी हत मुसलमान ही का आदेश वर्णित किया जा रहा है।

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيۡمًا حَكِيۡمًا ﴿٩٢﴾

महीने लगातार रोज़ा (व्रत) रखना [1] है अल्लाह से क्षमा करवाने के लिए, तथा अल्लाह ज्ञानी व विवेकवाला है।

وَمَنۡ يَّقۡتُلۡ مُؤۡمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيۡهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيۡمًا ﴿٩٣﴾

(९३) और जो कोई किसी मुसलमान की जान-बूझ कर हत्या कर डाले उसका दंड नरक है, जिसमें वह सदैव रहेगा, उस पर अल्लाह (तआला) का क्रोध है।[2] उसे अल्लाह (तआला) ने धिक्कारा है, और उसके लिए बहुत बड़ी यातना तैयार कर रखी है।[3]

---

[1]अर्थात यदि दास स्वतन्त्र करने की शक्ति न हो तो, पहली अवस्था तथा इस अन्तिम अवस्था में देयत के साथ निरन्तर (बिना अन्तर) के दो माह व्रत (रोज़े) हैं यदि मध्य में अन्तर हो गया, तो पुन: नये सिरे से व्रत रखने आवश्यक होंगे। परन्तु धार्मिक कारणों से अन्तर हो जाने पर नये सिरे से व्रत रखने की आवश्यकता नहीं है। जैसे मासिक धर्म, प्रसव रक्त अथवा कठिन रोग के कारण व्रत रखने में बाधक हो, यात्रा को धार्मिक कारण मानने में मत भेद है। (इब्ने कसीर)

[2]यह जान बूझकर की गयी हत्या का दंड है। हत्या तीन प्रकार की होती है : (१) अनजाने में हत्या (जिसका वर्णन इस आयत के पूर्व आयत में है) (२) शंका निश्चय पूर्वक हत्या के समान (जो हदीस से सिद्ध है) (३) जान बूझकर हत्या, जिसका अर्थ है किसी की निश्चय पूर्वक हत्या की गयी हो, और इसके लिए उस साधन तंत्र का प्रयोग करना जिससे साधारणत: हत्या की जाती है, जैसे तलवार, भाला आदि। इस आयत में मुसलमान की हत्या पर अति कठोर चेतावनी दी गयी है जैसे : इसका दंड नरक है, जिसमें सदैव रहना होगा, इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का क्रोध और उसकी धिक्कार और बहुत बड़ी यातना भी होगी। इतने कठोर दंड एक ही समय में किसी अन्य पाप में वर्णित नहीं किये गये हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है कि एक मुसलमान की हत्या अल्लाह तआला के यहाँ कितना घोर अपराध है। हदीस में भी इसकी कटु आलोचना तथा इस पर कठोर चेतावनी का वर्णन है।

[3]मुसलमान के हत्यारे की क्षमा स्वीकार है अथवा नहीं ? कुछ विद्वान इस अपराध के कठोर दंड की चेतावनी के आधार पर क्षमा स्वीकार न होने के पक्ष में हैं। परन्तु क़ुरआन तथा हदीस के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि स्वच्छ मन से माँगी गयी क्षमा से प्रत्येक पाप क्षमा हो सकता है। ﴿إِلَّا مَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَٰلِحًا﴾ (अल-फ़ुरक़ान-७०) तथा

(९४) हे ईमानवालो ! जब तुम अल्लाह की राह में जा रहे हो तो जाँच-पड़ताल कर लो और जो तुम से सलाम अलैक कहे तुम उसे यह न कहो कि तू ईमानवाला नहीं ।[1] तुम सांसारिक जीवन सामग्री की खोज में हो तो अल्लाह (तआला) के पास बहुत सी सुख सामग्रियाँ हैं ।[2] पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह (तआला) ने तुम पर उपकार

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا ضَرَبۡتُمۡ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ فَتَبَيَّنُواْ وَلَا تَقُولُواْ لِمَنۡ أَلۡقَىٰٓ إِلَيۡكُمُ ٱلسَّلَٰمَ لَسۡتَ مُؤۡمِنٗا تَبۡتَغُونَ عَرَضَ ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا فَعِندَ ٱللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٞۚ كَذَٰلِكَ كُنتُم مِّن قَبۡلُ فَمَنَّ ٱللَّهُ عَلَيۡكُمۡ فَتَبَيَّنُوٓاْۚ

अन्य क्षमा की आयतें सामान्य हैं । प्रत्येक पाप चाहे छोटा हो या बड़ा अथवा बहुत बड़ा, स्वच्छ हृदय से माँगी गयी क्षमा द्वारा उसकी क्षमा सम्भव है । यहाँ इसका दंड नरक जो कहा गया है, इसका अर्थ यह है कि यदि उसने क्षमा न माँगी तो उसका दंड नरक है, जो अल्लाह तआला उसके इस अपराध पर दे सकता है । इसी प्रकार क्षमा न माँगने पर नरक में सदैव रहने का अर्थ भी लम्बे समय के लिए है क्योंकि नरक में सदैव रहने का दंड केवल काफ़िरों और मूर्तिपूजकों के लिए ही है । इसके अतिरिक्त हत्या का सम्बन्ध यद्यपि भक्तों के अधिकार से है, जो क्षमा से समाप्त नहीं होते, परन्तु अल्लाह तआला अपनी कृपा से उसकी पूर्ति करके समाप्त कर सकता है । इस प्रकार हत को भी बदला मिल जायेगा और हत्यारे की भी क्षमा स्वीकार हो जायेगी । (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

[1]हदीसों में आता है कि कुछ सहाबा एक स्थान से गुजरे जहाँ एक गड़ेरिया बकरियाँ चरा रहा था, मुसलमानों को देखकर गड़ेरिये ने सलाम किया, कुछ सहाबा ने समझा कि शायद वह अपनी प्राण रक्षा के लिए मुसलमान बता रहा है, अतः उन्होंने बिना छान बीन किये उसकी हत्या कर दी और बकरियाँ युद्ध में प्राप्त सामग्री के रूप में लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, जिस पर यह आयत उतरी । (सहीह बुख़ारी, त्रिमिज़ी तफ़सीर सूर: अन-निसा) कुछ कथनों में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी कहा कि मक्के में तुम भी इस गड़ेरिया की भाँति ईमान छिपाने पर विवश थे । (सहीह बुख़ारी, किताबुल देयात) (तात्पर्य यह था कि उसकी हत्या का कोई औचित्य नहीं था)

[2]अर्थात तुम्हें कुछ बकरियाँ उस हत से प्राप्त हो गईं, यह कुछ भी नहीं है । अल्लाह तआला के पास इससे कहीं अधिक श्रेष्ठ पुरस्कार हैं, जो अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञापालन करके तुम्हें दुनिया में भी प्राप्त हो सकता है, और आख़िरत (परलोक) में उनका मिलना निश्चत ही है ।

إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٩٤﴾

किया, अतएव तुम अवश्य खोज (छानबीन) कर लिया करो, नि:संदेह अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है।

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۚ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٩٥﴾

(९५) जो मुसलमान अकारण बैठ रहें तथा जो अल्लाह के मार्ग में अपने तन-धन के साथ धर्मयुद्ध करते हों बराबर न होंगे[1] अल्लाह ने उन्हें जो अपने धनों तथा प्राणों के साथ धर्मयुद्ध करते हैं उन पर जो बैठे रहते हैं दर्जों में अधिक प्रधानता दी है तथा वैसे तो प्रत्येक को शुभवचन[2] दिया है, किन्तु अल्लाह ने जो धर्मयुद्ध करने वाले हैं उनको बैठे रहने वालों पर महा प्रतिकार की प्रधानता दी है।

---

[1]जब यह आयत उतरी कि अल्लाह की राह में धर्मयुद्ध करने वाले तथा घरों में बैठे रहने वाले समान नहीं तो आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम (अंधे सहाबी) आदि ने निवेदन किया कि हम तो अपंग हैं, जिस के कारण हम धर्मयुद्ध में भाग नहीं ले सकते। तात्पर्य यह था कि घर में बैठे रहने के कारण धर्मयुद्ध में भाग लेने वालों के समान हम बदला तथा पुण्य नहीं प्राप्त कर सकेंगे, जबकि हम किसी आनन्द अथवा जान बचाने के भय से घरों में नहीं बैठें हुए हैं, बल्कि हमारा धार्मिक नियमों के आधार पर रुकना उचित है। इस पर अल्लाह तआला ने "अकारण" का अपवाद उतारा अर्थात अकारण बैठने वाले धर्म योद्धाओं के समान नहीं। जिसका अर्थ हुआ कि धार्मिक नियमों के आधार पर घर पर बैठने वालों को इस आधार पर धर्म योद्धाओं के समान बदला मिलेगा। जैसा कि हदीस में आता है कि मदीने में बैठे हुए अपंग तथा अपाहिज धर्म योद्धाओं के साथ बदले में समान हैं क्योंकि उनको कारणों से रुकना पड़ा है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद)

[2]अर्थात तन, मन और धन से धर्मयुद्ध करने वालों को जो स्थान प्राप्त होगा, धर्मयुद्ध में भाग न लेने वाले यद्यपि इससे वंचित रहेंगे, फिर भी अल्लाह तआला ने दोनों को भलाई का वचन दिया है। इससे आलिमों ने यह अर्थ निकाला है कि सामान्य परिस्थितियों में धर्मयुद्ध अनिवार्य नहीं, आवश्यकता अनुसार अनिवार्य है अर्थात यदि आवश्यकतानुसार लोग धर्मयुद्ध में भाग ले लें तो उस क्षेत्र के दूसरे लोगों की ओर से अनिवार्यता की पूर्ति समझी जायेगी।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾

(९६) अपनी ओर से दर्जे की भी तथा क्षमा की भी एवं दया की भी और अल्लाह क्षमाशील कृपालु है।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾

(९७) जो लोग अपने आप पर अत्याचार करने वाले हैं, जब फ़रिश्ते उनके प्राण निकालते हैं तो कहते हैं कि तुम किस दशा में थे ?[1] वह कहते हैं कि हम धरती में निर्बल थे,[2] तो प्रश्न करते हैं कि क्या अल्लाह की भूमि विस्तृत न थी कि तुम उसमें प्रवास कर जाते ? इन्हीं लोगों का स्थान नरक है तथा वह बुरा स्थान है।

---

[1]यह आयत उन लोगों के विषय में उतरी है जो मक्का और उसके निकटवर्ती क्षेत्र में रहते थे और मुसलमान हो चुके थे, परन्तु उन्होंने अपने पूर्वजों के देश तथा परिवार को छोड़ कर हिजरत करने को महत्व नहीं दिया। जबकि मुसलमानों की शक्ति को एक स्थान पर एकत्रित करने के लिए हिजरत का अति बलपूर्वक आदेश दिया जा चुका था। इसलिए जिन्होंने इस हिजरत के आदेश का पालन नहीं किया, उनको यहाँ अत्याचारी बताया गया है और उनका स्थान नरक बताया गया है। जिससे यह ज्ञात हुआ कि परिस्थिति तथा समय के आधार पर इस्लाम के कुछ आदेश कुफ़्र अथवा इस्लाम के पर्यायवाची बन जाते हैं। जैसे इस अवसर पर हिजरत इस्लाम तथा इसकी अवहेलना कुफ़्र के पर्यायवाची हो गयी। इससे यह विदित हुआ कि काफ़िरों के देश से हिजरत करना अनिवार्य है, जहाँ इस्लाम की शिक्षा के अनुसार कार्यरत होना कठिन हो और वहाँ रहना काफ़िरों के साहस को बढ़ाने का कारण बने।

[2]यहाँ "स्थान" से तात्पर्य आयत के उतरने की विशेषता के आधार पर मक्का और उसका समीपवर्ती क्षेत्र है और अल्लाह की धरती से तात्पर्य मदीना है। परन्तु आदेश के आधार पर सामान्य धरती है अर्थात पहला स्थान काफ़िरों का क्षेत्र होगा, जहाँ इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार कार्य करना कठिन हो जाये। और अल्लाह की धरती से तात्पर्य वह प्रत्येक क्षेत्र होगा जहाँ मनुष्य अल्लाह के धर्म के पालन के उद्देश्य से हिजरत करके जाते हैं।

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿٩٨﴾

(९८) परन्तु जो पुरुष तथा स्त्रियाँ एवं बालक विवश हैं जो कोई उपाय नहीं कर सकते और न मार्ग जानते हैं ।[1]

فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٩٩﴾

(९९) अति सम्भव है कि अल्लाह (तआला) उन्हें क्षमा कर दे, और अल्लाह सहिष्णु क्षमाशील है ।

وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۚ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٠٠﴾

(१००) और जो कोई अल्लाह की राह में प्रवास करेगा, वह धरती पर बहुत से निवास स्थान भी पायेगा तथा सम्पन्नता भी ।[2] और जो कोई अपने घर से अल्लाह (तआला) तथा उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर निकल पड़ा फिर उसे मृत्यु ने पकड़ लिया हो तो भी अवश्य उसका फल अल्लाह (तआला) के ऊपर होगा ।[3] तथा अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला कृपालु है ।

---

[1]यह उन पुरुषों-स्त्रियों तथा बालकों को इस आदेश से अलग किया है, जो संसाधन से वंचित तथा जो मार्ग से भी अनजान थे । बालक यद्यपि धार्मिक नियमों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं हैं, परन्तु यहाँ उनका वर्णन करके हिजरत की विशेषता को और स्पष्ट किया गया है कि बालक भी हिजरत करें अथवा फिर यहाँ पर व्यस्क आयु के निकट पहुँचने वाले बालक होगें ।

[2]इसमें हिजरत का प्रलोभन तथा मूर्तिपूजकों से विलग रहने पर बल दिया जा रहा है । मुराग़मन مراغماً का अर्थ स्थान, निवास स्थान अथवा शरण स्थल है । और सअतन् سعةً का अर्थ जीविका स्थान तथा देशों का विस्तार तथा धन-धान्य की अधिकता है ।

[3]इसमें नियत (ध्यान) के आधार पर प्रतिकार तथा पुण्य मिलने का विश्वास दिलाया गया है चाहे मृत्यु के कारण वह उस कार्य को पूर्ण न कर सका हो । जैसाकि हदीस में पूर्व के समुदाय में एक व्यक्ति के द्वारा की गयी सौ हत्याओं का वर्णन है, जो क्षमा के लिए सत्कर्मियों की वस्ती की ओर जा रहा था कि मार्ग ही में उसकी मृत्यु हो गयी । अल्लाह तआला ने सत्कर्मियों की वस्ती दूसरी वस्ती की अपेक्षा निकटतम कर दिया । जिसके कारण उसे दया के फ़रिश्ते उसे अपने साथ ले गये (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया अध्याय संख्या ५४ व मुस्लिम, किताबुत तौबा बाब क़ूबूलित्तौ-बतिल क़ातिल व इन

(१०१) और जब धरती में यात्रा करो तो तुम पर नमाज़ क़स्र करने (चार रकअत की नमाज़ दो रकअत पढ़ने में कोई दोष नहीं), यदि तुम्हें यह भय हो कि काफ़िर (विश्वासहीन) तुम्हें कष्ट देंगे,[1] नि:संदेह विश्वासहीन तुम्हारे खुले शत्रु हैं।

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَوٰةِ ۖ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكَٰفِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُبِينًا ﴿١٠١﴾

कथुर क़त्लुहू) इसी प्रकार जो व्यक्ति हिजरत के विचार से घर से निकले, परन्तु मार्ग में ही उसकी मृत्यु हो जाये तो अल्लाह तआला की ओर से हिजरत का पुण्य अवश्य मिलेगा यद्यपि वह हिजरत के उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सका। जैसाकि हदीस में भी हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ» «وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَىٰ» (कर्म विचारों पर निर्भर हैं) "मनुष्य के लिए वही है, जिसका उसने विचार किया।" जिसने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हिजरत किया, तो उसकी हिजरत उन ही के लिए है, और जिसने दुनिया प्राप्त करने अथवा किसी स्त्री से विवाह करने के उद्देश्य से हिजरत की तो उसकी हिजरत उसी के लिए है, जिस उद्देश्य से उसने हिजरत की (सहीह बुख़ारी बाब वदइल वह्य, मुस्लिम किताबुल इमार:)

यह आदेश सामान्य है, जो धर्म के प्रत्येक कार्य में सम्मिलित है अर्थात उसको करते समय अल्लाह की प्रसन्नता ध्यान में रहेगी तो वह श्रेष्ठ स्वीकार्य है अन्यथा रद्द होगा।

[1]इसमें यात्रा की स्थिति में नमाज क़स्र करना (चार रकआत वाली नमाज को दो रकअत ही पढ़ने) की अनुमति प्रदान की जा रही है। "यदि तुम्हें भय हो" सामयिक परिस्थितियों के आधार पर है। क्योंकि उस समय समस्त अरब युद्ध क्षेत्र बना हुआ था। किसी ओर की यात्रा ख़तरे से ख़ाली नहीं थी। अर्थात यह प्रतिबन्ध नहीं है कि यदि मार्ग में भय हो तो क़स्र की आज्ञा है। क्योंकि क़ुरआन करीम के अन्य स्थानों पर इसी प्रकार के प्रतिबन्धों का वर्णन है जो सामयिक रूप से ऐसा सम्भव हो सकता है। जैसे "तुम अपनी दासियों को व्याभिचार के लिए बाध्य न करो, यदि वह इससे बचना चाहें" चूँकि वह बचना चाहती थीं इसलिए अल्लाह तआला ने वर्णन किया अन्यथा इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि यदि वह तैयार हों, तो तुम्हारे लिए उचित है कि तुम उनसे कुकर्म करवा लिया करो। इसी प्रकार पूर्व में सूर: आले इमरान की आयत संख्या १३० तथा इसके पश्चात इसी सूर: अन-निसा की आयत संख्या २३ तथा सूर: अन-नूर की आयत संख्या ३३ आदि आयतों में आया है। कुछ सहाबा के विचार में आया कि अब तो शान्ति

(१०२) और जब आप उनमें हों और उनके लिए नमाज़ की स्थापना करें तो चाहिए कि उनका एक गुट आप के साथ हथियार लिए खड़ा हो, फिर जब यह सजदा कर चुकें तो यह हट कर तुम्हारे पीछे आ जायें और दूसरा गुट जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी है, वह आ जाये और तेरे साथ नमाज़ अदा करे और अपना बचाव तथा अपने हथियार लिए रहे, काफ़िर चाहते हैं कि तुम किसी प्रकार अपने हथियार तथा अपनी सामग्रियों से असावधान हो जाओ, तो वह तुम पर सहसा आक्रमण कर दें ।[1] और हाँ, अपने हथियार उतार रखने में

وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَوٰةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُم مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوٓا۟ أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا۟ فَلْيَكُونُوا۟ مِن وَرَآئِكُمْ وَلْتَأْتِ طَآئِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا۟ فَلْيُصَلُّوا۟ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا۟ حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَدَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُم مَّيْلَةً وَٰحِدَةً وَلَا جُنَاحَ

है अब यात्रा में क़स्र नमाज़ नहीं पढ़नी चहिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यह अल्लाह की ओर से तुम लोगों के लिए दान है, उसके दान को स्वीकार करो ।" (मुसनद अहमद, भाग १ पृष्ठ २५-३६, सहीह मुस्लिम किताबुल मुसाफ़िरीन तथा अन्य हदीस की पुस्तकों में)।

टिप्पणी : यात्रा की दूरी तथा कस्र के दिनों के निर्धारण में मतभेद है। इमाम शौकानी ने तीन फ़रसख़ अर्थात ९ कोस वाले कथन को प्राथमिकता दी है। (नैलुल औतार, भाग ३, पृष्ठ २२०)। इसी प्रकार अन्य विशेषज्ञों का विचार है कि यह आवश्यक है कि किसी स्थान पर यात्रा के समय तीन या चार दिन से अधिक निवास करने का विचार न करे अथवा यदि इससे अधिक दिन निवास करने का विचार हो तो क़स्र नमाज़ न पढ़नी चाहिए। (विस्तार पूर्वक जानकारी के लिए देखें मिर्आतुल मफ़ातीह)

[1]इस आयत में सलातुल ख़ौफ़ (भय के समय की नमाज) की आज्ञा, अपितु आदेश दिया जा रहा है । सलातुल ख़ौफ़ का अर्थ है भय की नमाज़। यह उस समय का धार्मिक नियम है, जब मुसलमान तथा काफिरों की सेनायें आमने-सामने युद्ध के लिए तैयार खड़ी हों तथा एक क्षण की भी उपेक्षा मुसलमानों के लिए अत्यधिक हानिकारक सिद्ध हो सकती है । ऐसे समय में यदि नमाज़ का समय आ जाये तो सलातुल ख़ौफ़ का आदेश है । जिसके विभिन्न रूपों का वर्णन हदीस में है जैसे : सेना दो भागों में विभाजित हो गयी, एक भाग शत्रु का सामना करने के लिए खड़ा रहा, ताकि काफ़िरों को आक्रमण करने का साहस न हो, और दूसरे भाग ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, जब यह भाग नमाज़ पढ़ चुका तो पहले के स्थान पर

عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِّنْ مَّطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَّرْضَى أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٠٢﴾

उस समय तुम पर कोई दोष नहीं, जबकि तुम कष्ट में हो अथवा वर्षा के कारण अथवा रोग होने के कारण एवं अपनी बचाव सामग्री साथ में लिये रखो। निःसंदेह अल्लाह तआला ने नकारने वालों के लिए अपमान का दण्ड तैयार कर रखा है।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ

(१०३) फिर जब तुम नमाज पढ़ चुको तो उठते तथा बैठते एवं लेटते अल्लाह (तआला) का वर्णन करते रहो,[1] और शांति प्राप्त हो तो नमाज स्थापित करो, अवश्य[2] नमाज

मोर्चा लेने के लिए आ खड़ा हुआ। कुछ कथनों में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों भागों को एक-एक रकअत नमाज पढ़ायी, इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो रकआतें और शेष सैनिकों की एक-एक रकअत हुई। कुछ में आता है कि दो-दो रकआतें पढ़ायीं, इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार रकआत तथा शेष सैनिकों की दो-दो रकआतें हुईं और कुछ में आता है कि आप एक रकअत के पश्चात तहीयात की तरह बैठे रहे, सैनिकों ने खड़े होकर एक रकअत और पढ़ कर दो रकआतें पूरी कीं और शत्रु के समक्ष जाकर डट गये, दूसरे भाग ने आकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज पढ़ी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें भी एक रकअत नमाज पढ़ायी और तहीयात में बैठ गये और उस समय तक बैठे रहे जब तक सैनिकों ने दूसरी रकअत पूरी न कर ली। फिर उनके साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलाम फेर दिया। इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी दो रकआत तथा सेना के दोनों भागों की भी दो रकआतें हुईं। (देखिये हदीस की किताबें)

[1]तात्पर्य यही भय की नमाज है, इसमें चूँकि सुविधा दी गयी है। इसलिए इसको पूर्ति के लिए कहा जा रहा है कि खड़े, बैठे, लेटे अल्लाह का वर्णन करते रहो।

[2]इसका तात्पर्य यह है कि जब युद्ध के बादल छँट जायें तो फिर नमाज को उसके उसी विधि के अनुसार पढ़ना है, जो सामान्य अवस्था में पढ़ी जाती है।

मुसलमानों पर निश्चित तथा निर्धारित समय पर अनिवार्य की गयी है ।[1]

إِنَّ الصَّلَوٰةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَٰبًا مَّوْقُوتًا ﴿١٠٣﴾

(१०४) और उन लोगों का पीछा करने से आलस्य न करो,[2] यदि तुम्हें कष्ट होता है, तो उन्हें भी कष्ट होता है, और तुम अल्लाह (तआला) से वह आशायें रखते हो जो उन्हें नहीं,[3] और अल्लाह (तआला) ज्ञाता-विज्ञाता है ।

وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۖ إِن تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۖ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٠٤﴾

(१०५) निःसंदेह, हमने तुम्हारी ओर सत्य शास्त्र उतारा है, ताकि तुम लोगों के बीच उसके अनुसार न्याय करो जिससे अल्लाह (तआला) ने तुम्हें अवगत कराया ।[4] और विश्वासघात

إِنَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَاكَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَكُن لِّلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ﴿١٠٥﴾

---

[1]इसमें नमाज़ को निर्धारित समय से पढ़ने पर बल दिया जा रहा है, जिससे ज्ञात होता है कि धार्मिक कारणों के बिना दो नमाज़ों को एकत्रित करना सही नहीं है, क्योंकि इस प्रकार कम से कम एक नमाज़ अपने निर्धारित समय पर नहीं पढ़ी जायेगी, जो इस आयत के विपरीत है ।

[2]अर्थात अपने शत्रु का पीछा करने में कमज़ोरी मत दिखाओ, अपितु उनके विरोध में कठोर प्रयत्न करो और घात लगाकर बैठो ।

[3]अर्थात घाव तो तुम्हें भी और उन्हें भी दोनों को लगे हैं परन्तु इन घावों के प्रतिफल में तुम्हें तो अल्लाह से आशायें हैं, परन्तु वह उसकी आशा नहीं रखते । इसलिए आख़िरत (परलोक) के प्रतिकार को प्राप्त करने के लिए जो प्रयास तुम कर सकते हो, वह काफ़िर नहीं कर सकते ।

[4]इन आयतों (१०४ से ११३ तक) के उतरने की विशेषता में बतलाया गया है कि अन्सार के क़बीले बनी ज़ुफर में एक व्यक्ति तोअमः अथवा बशीर बिन उबैरिक़ ने एक अंसारी का कवच चुरा लिया, जब इसकी चर्चा हुई और उसको अपनी चोरी खुलने का भय हुआ तो उसने वह कवच एक यहूदी के घर में फेंक दी और बनी ज़ुफर के कुछ व्यक्तियों को लेकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और

करने वालों के पक्षधर न बनो ।[1]

(१०६) और अल्लाह (तआला) से क्षमा माँगो,[2] निःसंदेह अल्लाह तआला क्षमाशील कृपानिधि है ।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۚ

उन सभी ने कहा कि कवच का चोर अमुक यहूदी है । यहूदी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने कहा कि बनी उबैरिक ने कवच चोरी करके मेरे घर में फेंक दिया है । बनी जुफर तथा बनी उबैरिक (तुअमः अथवा बशीर आदि) चतुर थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह विश्वास दिलाते रहे कि चोर यहूदी ही है । और वह तोअमः पर अभियोग लगाने में झूठा है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनकी चिकनी बातों से प्रभावित हो गये और निकट था कि अन्सारी को चोरी के अभियोग से निर्दोष और यहूदी को चोरी का अपराधी घोषित कर देते कि अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी । जिससे एक बात यह ज्ञात हुई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मनुष्य होने के कारण भ्रम में पड़ सकते हैं । दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम परोक्षज्ञ नहीं थे अन्यथा आप तुरंत वास्तविकता जान लेते । तीसरी बात यह ज्ञात हुई कि अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर की रक्षा करता है, और यदि कभी भी सत्य के छिपे रह जाने तथा उससे भटकने की स्थिति आ जाये, तो तुरन्त अल्लाह तआला उसे सावधान कर देता और उसकी सुधार कर देता है । जैसाकि नबियों के चरित्र की विशेषता है । यह निर्दोषता का वह सर्वोच्च स्थान है, जो नबियों के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं है ।

[1]इसका अर्थ भी वही बनी उबैरिक हैं । जिन्होंने चोरी स्वयं की, परन्तु अपनी वाक्पटुता के कारण यहूदी को चोर सिद्ध करने पर अड़े हुए थे । अगली आयत में भी उनके तथा उनके पक्षधरों के कुचक्र को और स्पष्ट करके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सावधान किया जा रहा है ।

[2]अर्थात बिना तहक़ीक़ के आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो विश्वासघातियों का समर्थन किया है उस पर अल्लाह तआला से क्षमा माँगें । इससे ज्ञात हुआ कि दोनों पक्षों के विषय में जब तक पूर्ण विश्वास न हो कि सत्य पर कौन है, उसका पक्षपात तथा समर्थन उचित नहीं । इसके अतिरिक्त यदि कोई व्यक्ति अपने वाक्पटुता से तथा धोखा देकर न्यायालय अथवा सामयिक न्यायाधीश से अपने पक्ष में निर्णय करा ले, यद्यपि वह सत्य पर नहीं था तो ऐसे निर्णय का अल्लाह के समक्ष कोई महत्व नहीं है । इस बात को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार वर्णित किया है "सावधान" ! मैं एक मनुष्य ही हूँ और जिस प्रकार सुनता हूँ, उसी के प्रकाश में निर्णय करता हूँ । सम्भव है कि एक व्यक्ति अपने तर्क-वितर्क प्रस्तुत करने में निपुण तथा चालाक हो

(१०७) और उनकी ओर से झगड़ा न करो जो स्वयं अपना ही विश्वासघात करते हैं। निःसंदेह धोखेबाज़ पापी अल्लाह (तआला) को अच्छा नहीं लगता।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنفُسَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا ﴿١٠٧﴾

(१०८) वह लोगों से तो छुप जाते हैं, परन्तु अल्लाह से नहीं छुप सकते, वह उनके साथ है जब कि वे रात्रि में अप्रिय कथन की योजना बनाते हैं तथा अल्लाह उनकी कृतियों को घेरे हुये है।

يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ﴿١٠٨﴾

(१०९) हाँ, यह तुम लोग हो जो उनके पक्ष में दुनिया में लड़े, किन्तु प्रलय के दिन उन की ओर से अल्लाह से कौन बहस करेगा तथा कौन उनका वकील बनकर खड़ा होगा।[1]

هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَن يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَم مَّن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿١٠٩﴾

(११०) तथा जो भी कोई बुराई करे अथवा स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करे फिर अल्लाह से क्षमा माँगे तो अल्लाह को क्षमाशील दयानिधि पायेगा।

وَمَن يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١١٠﴾

(१११) और जो पाप करता है उसका बोझ उसी पर है,[2] तथा अल्लाह सर्वज्ञ विज्ञाता है।

وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١١﴾

और मैं उसके वार्तालाप से प्रभावित होकर उसके पक्ष में निर्णय कर दूँ, यद्यपि वह सत्य पर नहीं हो और इस प्रकार किसी दूसरे मुसलमान का अधिकार उसे दे दूँ, तो उसे याद रखना चाहिए कि यह आग का टुकड़ा है। यह उसकी इच्छा है कि उसे ले अथवा त्याग दे। (सहीह बुख़ारी, किताबुश शहादः वल हेयल वल अहकाम, सहीह मुस्लिम किताबुल अक़्ज़ी य:)

[1]अर्थात जब इस पाप के कारण उसकी पकड़ होगी, तो कौन अल्लाह की पकड़ से उसे बचा सकेगा ?

[2]इस विषय की दूसरी आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

وَمَن يَكْسِبْ خَطِيٓـَٔةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِۦ بَرِيٓـًٔا فَقَدِ ٱحْتَمَلَ بُهْتَٰنًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿١١٢﴾

(११२) तथा जो कोई दोष अथवा पाप करता है फिर किसी निर्दोष पर थोप देता है, उस ने खुला आरोप तथा घोर पाप किया।[1]

وَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُۥ لَهَمَّت طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ أَن يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ ۖ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِن شَىْءٍ ۚ وَأَنزَلَ ٱللَّهُ عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ ۚ وَكَانَ فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ﴿١١٣﴾

(११३) और यदि आप पर अल्लाह की दया एवं कृपा न होती तो उनके एक गुट ने आपको विपथ करने का षड़यन्त्र रच लिया था[2] किन्तु वह स्वयं को विपथ करते हैं तथा वह आपको कोई हानि नहीं पहुंचा सकते और अल्लाह ने आप पर किताब तथा ज्ञान उतारा है और आप जिसको नहीं जानते थे उसका ज्ञान[3] दिया है तथा आप पर अल्लाह की भारी अनुकम्पा है।

﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ﴾

"कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा।" (सूरः *बनी इस्राईल-१५*)

अर्थात कोई किसी का उत्तरदायी नहीं होगा, प्रत्येक व्यक्ति को वही कुछ मिलेगा, जो कमा कर साथ ले गया होगा।

[1]जिस प्रसार बनू उबैरिक ने किया कि चोरी तो स्वयं की और आरोप किसी अन्य पर लगा दिया। यह डांट फटकार सामान्य है, जिसमें बनू उबैरिक भी सम्मिलित है और उनको भी जो इस प्रकार के दुराचरणों में लीन होंगे।

[2]यह अल्लाह तआला की उस विशेष रक्षा का वर्णन है जिसका प्रबन्ध नबियों के लिए किया जाता है जो नबियों पर अल्लाह की विशेष कृपा तथा विशेष दया का दर्पण है। طائفة (तायफः) (गुट) से तात्पर्य वह लोग हैं जो बनू उबैरिक के समर्थन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उनकी सफाई प्रस्तुत कर रहे थे, जिससे यह अनुमान हो चला था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस व्यक्ति को चोरी के अपराध से मुक्त कर देंगे, जो वास्तव में चोर था।

[3]यह दूसरी अनुकम्पा तथा अनुग्रह का वर्णन है, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर धर्मशास्त्र (पवित्र क़ुरआन) तथा हदीस (सुन्नत) उतारकर आवश्यक बातों का ज्ञान देकर बताया गया। जिस प्रकार दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

(११४) उनकी अधिकांश कानाफूसी में कोई भलाई नहीं, [1] परन्तु जिसने उपकार अथवा भलाई अथवा लोगों के बीच सुधार के लिये आदेश दिया[2] तथा जो यह कार्य अल्लाह की प्रसन्नता की खोज हेतु करेगा[3] हम उसे वास्तव में बहुत बड़ा प्रतिकार (बदला) देंगे ।[4]

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾

﴿ وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ ﴾

"इसी प्रकार भेजा हमने तेरी ओर (क़ुरआन लेकर) एक फ़रिश्ते को अपने आदेश से, तू नहीं जानता था कि किताब क्या है और ईमान क्या है ?" (सूरः *अल-शूराः-५२*)

﴿ وَمَا كُنتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ﴾

"और तुझे यह आशा नहीं थी कि तुझ पर किताब उतारी जायेगी, परन्तु तेरे प्रभु की कृपा से (यह किताब उतारी गयी)" (सूरः *अल-क़सस-८६*)

इन सभी आयतों (पवित्र क़ुरआन के सूत्रों) से यह ज्ञात हुआ कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कृपा तथा उपकार किया तथा किताब एवं विवेक दिया, इनके अतिरिक्त अन्य बहुत सी बातों का ज्ञान आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया गया, जिनसे आप सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम अनभिज्ञ थे । यह भी एक प्रकार से आपके परोक्षज्ञ (अन्तर्यामी) होने का इंकार है, क्योंकि यदि आपको परोक्ष का ज्ञान होता, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी अन्य से विद्या ग्रहण की क्या आवश्यकता थी । और जिसे दूसरों से ज्ञान प्राप्त हो, वह्यी (ईशवाणी) के द्वारा अथवा अन्य किसी साधन द्वारा, तो वह परोक्ष का ज्ञानी नहीं हो सकता ।

[1] نجوى (नजवा) (गुप्त मंत्रणा) से तात्पर्य वह बातें हैं जो अवसरवादी आपस में मुसलमानों के विरूद्ध अथवा एक-दूसरे के विरूद्ध करते थे ।

[2]अर्थात दान-पुण्य, भलाई (जो हर प्रकार के पुण्य को सम्मिलित है) तथा लोगों के बीच सुधार करने के विषय में परामर्श, पुण्य पर आधारित हैं । जैसाकि इन कार्यों की विशेषता तथा महत्व पर हदीस में भी बल दिया गया है ।

[3]क्योंकि यदि निःस्वार्थता (अर्थात अल्लाह की प्रसन्नता का उद्देश्य) नहीं होगा, तो बड़े से बड़ा कर्म भी व्यर्थ जायेगा, बल्कि आपत्ति बन जायेगा । परमेश्वर हमें पाखण्ड तथा दिखावे के काम से बचाये ।

[4]हदीसों में वर्णित कर्मों का बड़ा महत्व है । अल्लाह के मार्ग में उचित की कमाई से एक खजूर दान करने का पुण्य ओहद पर्वत की मात्रा में होगा । (सहीह मुस्लिम

وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾

(११५) और जो सत्य मार्ग के स्पष्ट होने के पश्चात रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का विरोध करेगा तथा मुसलमानों के मार्ग के सिवाय खोज करेगा, हम उसे उसी ओर जिस ओर वह फिरता हो फेर देंगे, फिर हम उसे नरक में झोंक[1] देंगे तथा वह अति बुरा स्थान है।

किताबुल ज़कात) सत्य बात के प्रचार करने का भी बहुत बड़ा महत्व है। इसी प्रकार सम्बन्धियों, मित्रों तथा अपसी कटुता के कारण अलग हुए लोगों में सन्धि करा देना बहुत बड़ा कर्म है। एक हदीस में इसे ऐच्छिक व्रत (रोजों), ऐच्छिक नमाज़ों तथा ऐच्छिक दान से भी श्रेष्ठ बताया गया है। फ़रमाया :

«أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِأَفْضَلَ مِنْ دَرَجَةِ الصِّيَامِ وَالصَّلَاةِ وَالصَّدَقَةِ؟» قَالُوا بَلَىٰ: قال: «إِصْلَاحُ ذَاتِ الْبَيْنِ، قالَ -: وفسادُ ذاتِ الْبَيْنِ هِيَ الْحَالِقَةُ».

"क्या मैं तुमको नमाज़, रोज़ा और दान से श्रेष्ठ कार्य न बता दूँ। उन्होंने कहा, अवश्य। आपने कहा आपसी कटुता के कारण अलग हुए लोगों में सन्धि करा देना।" (अबू दाऊद, किताबुल अदब, त्रिमिज़ी किताबुल बिर्र तथा मुसनद अहमद ६/४४४ से४४५ तक)

यहाँ तक कि संधि कराने वाले को झूठ बोलने तक की आज्ञा प्रदान की गयी है। ताकि उसे एक-दूसरे को निकट लाने के लिए किसी कारणवश इसकी आवश्यकता पड़े, तो वह इसे भी प्रयोग करे।

«لَيْسَ الْكَذَّابُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ، فَيَنْمِي خَيْراً أَوْ يَقُولُ خَيْراً».

"वह मिथ्यावादी नहीं जो एक कराने के लिये अच्छी बात फैलाता अथवा अच्छी बात करता है।" (अल-बुख़ारी किताबुल सुलह, मुस्लिम तथा अल-त्रिमिज़ी किताबुल बिर्र, अबूदाऊद किताबुल अदब)

[1]मार्गदर्शन के प्रकाशित हो जाने के पश्चात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विरोध तथा मुसलमानों का मार्ग छोड़ कर किसी अन्य के मार्ग का अनुसरण इस्लाम में से निकलना है। जिस पर यहाँ नरक की धमकी दी गयी है। मुसलमानों से तात्पर्य नबी के सहचर (رضي الله عنهم) हैं, जो इस्लाम धर्म के प्रथम अनुयायी और उसकी शिक्षाओं के पूर्णरूपण आदर्श थे। और इन आयतों के उतरने के समय कोई अन्य मुसलमानों का गुट नहीं था कि उनका आशय हो। इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

(११६) अल्लाह अपने साथ मिश्रण किये जाने को कदापि क्षमा नहीं करेगा और इसके सिवाय (पापों) को जिसके लिये चाहे क्षमा कर देगा तथा जिसने अल्लाह के साथ मिश्रण (शिर्क) किया वह बहुत दूर बहक गया।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِۦ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَٰلًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾

(११७) यह तो अल्लाह (तआला) को छोड़कर केवल देवियों को पुकारते हैं।[1] और वास्तव में यह दुष्ट शैतान को पुकारते हैं।[2]

إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦٓ إِلَّآ إِنَٰثًا وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَٰنًا مَّرِيدًا ﴿١١٧﴾

अलैहि वसल्लम का विरोध तथा नि:स्वार्थी मुसलमानों के मार्ग के अन्य का अनुगमन दोनों वास्तव में एक ही वस्तु के नाम हैं। इसलिए सहाबा कराम (رضي الله عنهم) के मार्ग तथा विधि का विरोध ही अविश्वास तथा विपथ है। कुछ विद्वानों ने ईमानवालों के रास्ते से तात्पर्य सम्पूर्ण उम्मत लिया है अर्थात सम्पूर्ण उम्मत से विरोध भी अधर्म है। सम्पूर्ण उम्मत से तात्पर्य है कि किसी समस्या पर उम्मत के सभी विद्वानों तथा ज्ञानियों की सहमति। अथवा किसी समस्या पर सहाबा कराम (رضي الله عنهم) की सहमति यह दोनों परस्थितियाँ उम्मत की सहमती के रूप हैं तथा दोनों से इंकार अथवा उनमें से किसी एक का इंकार अधर्म है। फिर भी सहाबा कराम (رضي الله عنهم) की सहमति बहुत सी समस्यायों पर मिलती है, अर्थात सहमति की यह स्थिति तो मिलती है। परन्तु सहाबा की सर्वसम्मति के पश्चात किसी समस्या पर सम्पूर्ण उम्मत के एकमत तथा सहमती के दावे बहुत सी समस्याओं में किये गये हैं, परन्तु वास्तव में सर्वसम्मत समस्यायें बहुत ही कम हैं, जिनमें वास्तव में उम्मत के सभी आलिमों तथा ज्ञानियों की सहमति हो। फिर भी इस प्रकार की जो समस्यायें भी हैं, उनका इंकार भी सहाबा की सहमति की इंकार की तरह कुफ्र है। इसलिए कि सहीह हदीसों में है, "अल्लाह तआला मेरी उम्मत को भटकावे पर एकमत नहीं करेगा और सहमत पर अल्लाह का हाथ है।" (सहीह त्रिमिज़ी, लिल अलबानी भाग २, संख्या १७५९)

[1] إناث (इनास) (स्त्रियों) से तात्पर्य या तो मूर्तियाँ हैं, जिनके नाम स्त्रीलिंग में थे। जैसे لات(लात), عزى (उज़्ज़ा), مناة (मनात) तथा نائلة (नायेल:) आदि। अथवा तात्पर्य फ़रिश्ते हैं, क्योंकि अरब के मूर्तिपूजक फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ समझते थे और उनकी पूजा करते थे।

[2]मूर्ति, फ़रिश्तों तथा अन्य लोगों की पूजा वास्तव में शैतान की पूजा है क्योंकि शैतान ही मनुष्य को अल्लाह के द्वार से बहका कर अन्य के दरबार में तथा चौखट पर झुकाता है, जैसा कि अगली आयत में है।

(११८) जिसे अल्लाह (तआला) ने धिक्कारा है । और उसने कहा है कि तेरे भक्तों में से मैं निर्धारित भाग ले कर रहूँगा ।[1]

لَّعَنَهُ اللَّهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿١١٨﴾

(११९) और उन्हें राह से भटकाता रहूँगा और झूठी आशायें दिलाता रहूँगा[2] और उन्हें शिक्षा दूँगा कि पशुओं के कान चीरें[3] और उनसे कहूँगा कि अल्लाह का बनाया रूप बिगाड़ दें ।[4] सुनो, जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान

وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَن يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِّن دُونِ اللَّهِ فَقَدْ

---

[1]"निर्धारित भाग" से तात्पर्य भोग-प्रसाद (नज़र-नियाज़) भी हो सकता है, जो मूर्तिपूजक, क़ब्रों (समाधियों) में दफ़न (गड़े) व्यक्ति के नाम पर निकालते हैं तथा नरकवासियों का वह भाग भी हो सकता है, जिन्हें शैतान भटका कर अपने साथ नरक में ले जायेगा ।

[2]यह वह झूठी आशायें हैं, जो शैतान के प्रलोभन तथा हस्तक्षेप से उत्पन्न होती हैं और मनुष्यों के भटकावे का कारण बनती हैं ।

[3]यह بحيرة (बहीर:) तथा سائبة (सायब:) पशुओं के चिन्ह तथा रूप हैं । मिश्रणवादी उनको मूर्तियों के नाम से दान कर देते थे, तो पहचान के लिए कान आदि चीर दिया करते थे ।

[4]अल्लाह की सृष्टि में परिवर्त्तन के कई रूप वर्णन किये गये हैं । एक तो यही, जिसका वर्णन यहाँ हुआ अर्थात कान आदि काटना, चीरना, छेदना, इनके अतिरिक्त अन्य प्रकार के रूप हैं । जैसे अल्लाह तआला ने चाँद, सूरज, पत्थर तथा अग्नि आदि पदार्थ विभिन्न उद्देश्य से बनाये हैं, परन्तु मूर्तिपूजकों ने उनके उत्पत्ति के उद्देश्य को बदलकर उनको पूज्य बना लिया । अथवा बदलाव का अर्थ प्रकृति को बदल देना है, अथवा वर्जित तथा अवर्जित में बदलाव आदि हैं । इसी प्रकार बदलाव में पुरूषों की नसबन्दी करना, और उसी प्रकार स्त्रियों के आप्रेशन करके उन्हें जन्म देने से रोकना, सौन्दर्यता के नाम पर भौहों के बाल उखड़वाकर अपनी शक्ल बदलना और गोदने गुदवाना आदि भी सम्मिलित हैं । यह सब शैतानी कार्य हैं इनसे बचाव आवश्यक है । परन्तु पशुओं को वधिया करना कि अधिक लाभ मिले अथवा उनका माँस अधिक अच्छा हो सके अथवा इसी प्रकार का कोई उचित प्रयोजन हो तो ठीक है । इसका समर्थन इससे भी होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बधिया पशु बलि (क़ुर्बानी) में बलि दिये

خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا ﴿١١٩﴾

को अपना मित्र बनायेगा वह खुले घाटे में होगा।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾

(१२०) वह उनसे (मौखिक) वायदे करता रहेगा और हरे बाग़ दिखाता रहेगा (परन्तु याद रखो) शैतान के जो वायदे उनसे हैं वह पूर्ण रूप से धोखा हैं।

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿١٢١﴾

(१२१) यह वह लोग हैं जिन का स्थान नरक है, जहाँ से उन्हें छुटकारा नहीं मिलेगा।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾

(१२२) और जो ईमान लायें तथा भले कार्य करें, हम उन्हें उन स्वर्गों में ले जायेंगे,जिनके नीचे नदियाँ बह रही हैं, जहाँ वह सदैव रहेंगे। यह है अल्लाह का वचन जो वस्तुत: सत्य है और अल्लाह से अधिक सत्य अपनी बात में कौन हो सकता है ?[1]

لَّيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَابِ ۗ مَن يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ

(१२३) तुम्हारी आकाँक्षाओं तथा अहले किताब की आकांक्षाओं से कुछ नहीं होना है, जो

हैं। यदि पशुओं का बधिया करना उचित न होता तो आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम उनकी वलि न देते।

[1]शैतानी वायदे तो खुला धोखा हैं, लेकिन इसके सापेक्ष अल्लाह तआला ने जो वचन ईमानवालों को दिये हैं सच्चे तथा यथार्थ हैं। और अल्लाह तआला से अधिक सच्चा कौन हो सकता है ? परन्तु मनुष्य की बात ही विचित्र है, यह सत्यवादियों की बात कम मानता है और झूठों के पीछे अधिक चलता है। अत: आप देख लीजिए शैतानी प्रचलन अधिक हैं और अल्लाह के आदेशों के अनुगामी प्रत्येक काल तथा स्थान पर कम ही रहे हैं।

"و قليل من عبادى الشكور"

"तथा मेरे कृतज्ञ भक्त अति अल्प हैं।" (सूर: *सबा*-१३)

بِهٖ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾

बुरा करेगा उसका दंड पायेगा और अल्लाह के सिवाय अपना कोई संरक्षक एवं सहायक नहीं पायेगा।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾

(१२४) और जो ईमानवाला हो पुरुष हो अथवा स्त्री और वह सत्कर्म करे, नि:संदेह इस प्रकार के लोग स्वर्ग में जायेंगे और खजूर की गुठली की फांक के समान भी उसका अधिकार नहीं मारा जायेगा।[1]

وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۭ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾

(१२५) और उस से उत्तम धर्म वाला कौन हो सकता है जो अल्लाह के प्रति पूर्ण आत्म-समर्पण कर दे और वह सदाचारी भी हो, और इब्राहीम के धर्म का अनुसरण किया हो जो एकाग्रचित्त थे तथा इब्राहीम को अल्लाह ने अपना मित्र बना लिया है।[2]

---

[1]जैसाकि पहले गुज़र चुका है कि अहले किताब अपने विषय में बड़ी शुभ आशाओं में मग्न थे। यहाँ अल्लाह तआला ने उनकी शुभ आशाओं पर से पर्दा उठाते हुए पुन: फ़रमाया कि आख़िरत की सफलतायें मात्र आशाओं तथा आकांक्षाओं से प्राप्त नही होंगी। इसके लिए ईमान तथा सत्कर्म का कोष होना आवश्यक है। यदि इसके विपरीत कर्मों की सूची में बुराईयाँ होंगी तो उसका दंड भुगतना ही पड़ेगा। वहाँ कोई मित्र तथा सहायक नही होगा, जो बुराई के दण्ड से बचा सके। आयत में अहले किताब के साथ-साथ ईमानवालों को भी अल्लाह तआला ने सम्बोधित किया है, ताकि वह भी यहूदियों तथा ईसाईयों की भाँति शुभ आशाओं, भ्रम तथा कर्मविहीन आशाओं तथा आकांक्षाओं से अपना दामन बचा सकें। परन्तु अफ़सोस, मुसलमान इन चेतावनियों के पश्चात भी उन्हीं कुविचारों में विलीन हो गये जिनमें पूर्व के समुदाय डूब गये थे। और आज अकर्म तथा कुकर्म मुसलमान का भी प्रतीक बना हुआ है और इसके उपरान्त वह "उम्मते मरहूमा" कहलाने का पुनराग्रह कर रहा है। هدانا الله تعالى

[2]यहाँ सफलता का एक स्तर तथा उसके एक आदर्श का वर्णन किया जा रहा है। पैमाना यह है कि स्वयं को अल्लाह को अर्पण कर दे, परोपकारी बन जाये और इब्राहीम के धर्म का अनुसरण करे। और आदर्श आदरणीय इब्राहीम हैं, जिनको अल्लाह

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾

(१२६) और जो कुछ भी आकाशों तथा पृथ्वी में है अल्लाह का है तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु को घेरने वाला है।

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ

(१२७) वे नारियों के विषय में आप से प्रश्न करते हैं,[1] आप कह दें कि स्वयं अल्लाह तुम्हें उन के विषय में आदेश देता है और जो कुछ किताब (क़ुरआन) में तुम्हारे समक्ष पढ़ा जाता है, उन अनाथ नारियों (लड़कियों) के संदर्भ में जिनको तुम उनका अनिवार्य अधिकार नहीं देते[2] तथा उनसे विवाह करना चाहते हो[3]

तआला ने अपना ख़लील बनाया। ख़लील का अर्थ यह है कि जिसके दिल में अल्लाह तआला का प्रेम इस प्रकार बस जाये कि किसी अन्य के लिए उसमें स्थान न रहे। ख़लील (कर्म का रूप है) तथा अर्थ के आधार पर कर्ता है। जैसे अलीम का अर्थ ज्ञानी और कुछ कहते हैं कि कर्म ही के अर्थ में है। जैसे हबीब का अर्थ है महबूब। और आदरणीय इब्राहीम नि:सन्देह अल्लाह के प्रिय भी थे और प्रेमी भी (अलैहिस्सलात वस्सलाम)। (फ़तहुल क़दीर) और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है, "अल्लाह ने मुझे भी ख़लील बनाया है, जिस प्रकार उसने आदरणीय इब्राहीम को ख़लील बनाया।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद)

[1]स्त्रियों के विषय में जो प्रश्न होते रहते थे यहाँ से उनके उत्तर दिये जा रहे हैं।

[2] وما يتلى عليكم इसका प्रभाव الله يفتيكم पर है अर्थात अल्लाह तआला उनके विषय में स्पष्टीकरण कर रहा है और अल्लाह की किताब की वह आयात उसको स्पष्ट करती हैं जो इससे पूर्व अनाथ बालिकाओं के विषय में उतर चुकी हैं। तात्पर्य सूर: अन-निसा की आयत संख्या ३ है, जिसमें उन लोगों को इस अन्याय से रोका गया है कि वह अनाथ बालिकाओं से उनकी सुन्दरता के कारण विवाह तो कर लेते थे, परन्तु महर देने में आनाकानी करते थे।

[3]इसके दो अनुवाद किये गये हैं। एक तो यही है जो अनुवादक ने किया है, इसमें في (फ़ी) अरबी का शब्द है, (मूल कथन में) इस शब्द को लोप मान कर अनुवाद किया है। इसका दूसरा अनुवाद عن शब्द को लोप मान कर किया गया है अर्थात "तुम्हें उनसे विवाह करने की कोई इच्छा न हो।" अत: यह दूसरी अवस्था का वर्णन है कि अनाथ

تَقُومُوا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ﴿١٢٧﴾

तथा निर्बल बालकों के बिषय में[1] और यह कि तुम. अनाथों के विषय में न्याय करो।[2] तथा तुम जो भी सत्य कार्य करोगे अल्लाह उसे भली-भाँति जानने वाला है।

وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۗ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ

(१२८) और यदि किसी पत्नी को अपने पति के वियोग अथवा विमुखता का भय हो तो दोनों पर परस्पर संधि कर लेने में कोई दोष नहीं।[3] तथा संधि उत्तम है, और लालसा हर

बालिका कई बार कुरूप होती है तो उसके संरक्षक अथवा उसके साथ के उत्तराधिकारी में सम्मिलित अन्य सगे सम्बन्धी स्वयं भी उसके साथ विवाह करना पसन्द नहीं करते और किसी अन्य स्थान पर भी उसका विवाह न करते ··· ताकि कोई अन्य उसकी जायदाद में भागीदार न बने। अल्लाह तआला ने पहली अवस्था की भाँति अत्याचार की इस दूसरी विधि को भी मना किया है

[1]इसका संकेत अनाथ स्त्रियों की ओर है। अर्थात (وَمَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فِي يَتَامَى النِّسَاءِ وَفِي الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ) अनाथ बालिकाओं के विषय में तुम पर जो पढ़ा जाता है। (सूर: *अन-निसा* आयत संख्या ३) (और निर्बल बालकों के विषय में जो पढ़ा जाता है) इससे तात्पर्य क़ुरआन का आदेश ﴿يُوصِيكُمُ اللّٰهُ فِي أَوْلَادِكُمْ﴾ है जिसमें पुत्रों के साथ पुत्रियों को भी उत्तराधिकार में भागीदार बनाया गया है। जब कि अज्ञान काल में केवल बड़े पुत्रों को ही उत्तराधिकारी समझा जाता था, छोटे निर्बल बालक तथा स्त्रियाँ उत्तराधिकार से वंचित थीं। इस्लामी धार्मिक नियमों ने सभी को उत्तराधिकारी बनाया।

[2]इसका संकेत भी अनाथ स्त्रियों की ओर है। अर्थात अल्लाह की किताब (क़ुरआन करीम) का यह आदेश भी तुम पर पढ़ा जाता है कि अनाथों के साथ न्याय करो, अनाथ बालिका चाहे सुन्दर हो तब भी अथवा कुरूप हो तब भी। दोनों अवस्थाओं में न्याय करो। (जैसाकि सविस्तार गुज़र चुका है)

[3]पति यदि किसी कारणवश अपनी पत्नी को पसन्द न करे और उससे दूरी तथा विमुखता और इंकार नित्य का कर्म बना ले अथवा एक से अधिक पत्नियाँ होने की अवस्था में किसी कम सुन्दर पत्नी से दूर रहे तो पत्नी अपना कुछ अधिकार त्याग कर (महर से अथवा भरण पोषण अथवा संभोग क्रम से) पति से संन्धि कर ले, तो इस सन्धि से पति-पत्नी पर कोई पाप न होगा, क्योंकि सन्धि प्रत्येक स्थिति में श्रेष्ठ है। मोमिनों की माँ आदरणीया

الشُّحَّ ۚ وَإِن تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٢٨﴾

मन में स्थित कर दी गई है, और यदि तुम उपकार करो[1] तथा संयम करो, तो अल्लाह तुम्हारे कृतियों से सूचित है।

وَلَن تَسْتَطِيعُوا أَن تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ ۖ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۚ وَإِن تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ

(१२९) तथा तुम पत्नियों के बीच कदापि न्याय न कर सकोगे यद्यपि इसकी आकांक्षा रखो, अतः तुम (एक की ओर) पूर्णतः न झुक जाओ कि दूसरी को अधर में लटकती हुई छोड़ दो,[2] और यदि तुम सुधार कर लो और (अन्याय

सौदः (رضي الله عنها) ने भी अपनी वृद्धावस्था में अपना क्रम आदरणीया आयशा को दे दिया था, जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वीकार किया था। (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम किताबुन निकाह)

[1] شُحّ कंजूसी तथा लालच को कहते हैं। यहाँ तात्पर्य अपना-अपना स्वार्थ है, जो प्रत्येक व्यक्ति को प्रिय है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ में कंजूसी तथा लालच से काम लेता है।

[2] यह एक दूसरी परिस्थिति है कि यदि एक व्यक्ति की एक से अधिक पत्नियाँ हों, तो वह हार्दिक सम्बन्ध तथा प्रेम सभी के साथ एक प्रकार से नहीं रख सकता क्योंकि प्रेम हृदय से उत्पन्न होता है जिस पर कोई भी प्रतिबन्ध नहीं लगा सकता। स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी सभी पत्नियों में सबसे अधिक प्रेम आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) से था। इच्छा के उपरान्त न्याय न करने का तात्पर्य यही हार्दिक भावना तथा प्रेम में सामंजस्य न होना है। यदि यह हार्दिक प्रेम सामान्य (वाह्य) अधिकार की समता में रुकावट न बने, तो अल्लाह के यहाँ पकड़ नहीं होगी। जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अत्यधिक सुन्दर नमूना प्रस्तुत किया है। परन्तु अधिकतर लोग इस हार्दिक प्रेम के कारण दूसरी पत्नियों के अधिकार को अदा नहीं करते और उन्हें अधर में लटका देते हैं, न उन्हें तलाक़ देते हैं और न पत्नी के अधिकार देते हैं। यह अत्यधिक अत्याचार है, जिससे यहाँ रोका गया है। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया है, जिस व्यक्ति की दो पत्नियाँ हों और वह एक की ओर आकर्षित हो (अर्थात दूसरी को अनदेखी करे) तो क़ियामत के दिन इस प्रकार आयेगा कि इसके शरीर का एक भाग (अर्थात आधा) नहीं होगा। (त्रिमिज़ी किताबुन निकाह)

كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٢٩﴾

से) बचो तो नि:संदेह अल्लाह क्षमाशील कृपालु है।

وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ۭوَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿١٣٠﴾

(१३०) और यदि दोनों जुदा हो जायें तो अल्लाह अपनी कृपा से दोनों को अनीह (परिपूर्ण) कर देगा,[1] और अल्लाह उदार सर्वज्ञानी है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭوَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣١﴾

(१३१) और आकाशों एवं पृथ्वी का सब कुछ अल्लाह ही का है तथा हमने तुम से पूर्व के लोग जो किताब (धर्मशास्त्र) दिये गये थे, उनको और तुम को यही आदेश दिया है कि अल्लाह से डरो और यदि तुम न मानो तो वस्तुत: जो आकाशों में तथा पृथ्वी में है सब अल्लाह ही का है तथा अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾

(१३२) और जो भी आकाशों में एवं पृथ्वी में है सभी अल्लाह का है तथा अल्लाह काम बनाने वाला बस है।

---

[1]यह तीसरी अवस्था है कि प्रयत्न के उपरान्त यदि निर्वाह की कोई स्थिति न बन पाये, तो फिर तलाक़ के द्वारा विच्छेद का अधिकार है। सम्भव है कि तलाक़ के पश्चात पुरुष को इच्छित गुणों वाली पत्नी तथा स्त्री को उसकी आवश्यकतानुसार गुणों वाला पुरुष मिल जाये। इस्लाम में तलाक़ को अत्यधिक अप्रिय किया गया है। एक हदीस में है।

«اَبْغَضُ الْحَلَالِ إِلَى اللهِ الطَّلَاقُ» (तलाक़ वैध तो है परन्तु यह ऐसा वैध है जो अल्लाह को अति अप्रिय है) (अबू दाऊद, मिशकात)

इसके उपरान्त अल्लाह ने इसकी आज्ञा दी है। इसलिए कि कई बार परिस्थितियाँ ऐसे मोड़ पर ले जाती हैं कि इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं होता और दोनों पक्ष के लिए अच्छाई इसी में होती है कि वह एक-दूसरे से विच्छेद कर लें। फिर भी वर्णित हदीस से यह स्पष्ट होता है कि यह अधिकार उसी समय प्रयोग करना चाहिए जब निर्वाह का कोई उपाय किसी भी प्रकार से न बन सके।

(१३३) हे लोगो ! यदि वह चाहे तो तुम सब को ले जाये और दूसरों को ले आये, और अल्लाह इस पर पूर्ण सामर्थ्य रखने वाला है ।[1]

إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ قَدِيرًا ﴿١٣٣﴾

(१३४) जो व्यक्ति सांसारिक प्रतिकार चाहता हो, तो (याद रखो कि) अल्लाह के पास लोक-परलोक (दोनों का) प्रतिकार उपलब्ध है[2] तथा अल्लाह सुनता देखता है ।

مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿١٣٤﴾

(१३५) हे ईमानवालो ! न्याय पर दृढ़ रहने वाले तथा अल्लाह के लिये सत्य साक्षी देने वाले बन जाओ, यद्यपि वह स्वयं तुम्हारे अपने तथा माता-पिता एवं संबन्धियों के[3] विरुद्ध हो, यदि वह व्यक्ति धनी हो तो अथवा निर्धन हो तो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ ۚ إِنْ يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا

(उपरोक्त हदीस को अल्लामः अलबानी ने छीन बताया है देखिये, इरवाउल ग़लील न॰ २०४०)

[1]यह अल्लाह तआला का पूर्ण प्रभावी सामर्थ्य का प्रदर्शन है, जबकि एक अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَإِن تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُم ﴾

"यदि तुम मुँह फेरोगे तो वह तुम्हारे स्थान पर अन्यों को ले आयेगा और वह तुम्हारी तरह के नहीं होगें ।" (सूर: *मोहम्मद-३८*)

[2]जैसे कोई व्यक्ति धर्मयुद्ध केवल युद्ध में प्राप्त माल के लिए ही करे तो कितनी नासमझी की बात है, जब कि अल्लाह तआला दुनिया और परलोक दोनों का पुण्य प्रदान करने में सक्षम है तो फिर उससे एक ही चीज़ क्यों माँगी जाये ? मनुष्य दोनों को प्राप्त करने वाला क्यों न बने?

[3]इसमें अल्लाह तआला ने ईमानवालों को न्याय स्थापित करने तथा यथार्थ गवाही देने पर बल दिया है । चाहे उसके कारण उनको स्वयं अथवा माता-पिता तथा सम्बन्धियों को हानि ही क्यों न उठानी पड़े, इसलिए कि सत्य सर्वोच्च है तथा प्रभावशाली है ।

उन दोनों से अल्लाह का सम्बन्ध अधिक है[1] अतः न्याय करने में मनमानी न करो[2] और यदि त्रुटिपूर्ण बयान दोगे अथवा न मानोगे[3] तो अल्लाह तुम्हारी कृतियों से सूचित है।

فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَن تَعْدِلُوا ۚ وَإِن تَلْوُوا أَوْ تُعْرِضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ⑬٥

---

[1]अर्थात किसी धनवान के धन के कारण छूट दी जाये, और न किसी निर्धन की निर्धनता का भय तुम्हें सच बात कहने से रोके, बल्कि अल्लाह इन दोनों से तुम्हारे अधिक निकट तथा श्रेष्ठ है।

[2]अर्थात मनोकांक्षा धर्मांधता अथवा शत्रुता तुम्हें न्याय करने से न रोक दे। जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया

﴿ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا ﴾

"तुम्हें किसी क़ौम की शत्रुता इस बात पर तैयार न कर दे कि तुम न्याय न करो।" (सूर: अल-मायद:-८)

[3] تلووا शब्द لَيٌّ से है, जो बदलने तथा जान-बूझ कर झूठ बोलने को कहा जाता है। अर्थ गवाही में परिवर्तन है। और إعراض (इंकार) से तात्पर्य गवाही छुपाना और न देना है। इन दोनों बातों से भी रोका गया है। इस आयत में न्याय पर बल और उसके लिए जिन बातों की आवश्यकता है, उनका प्रबन्ध करने का आदेश दिया गया है। जैसे (१) प्रत्येक अवस्था में न्याय करो, इससे किसी प्रकार से बचने की चेष्टा न करो, किसी अपमान अथवा हानि के कारण इसमें रूकावट न आये, बल्कि इसको स्थापित करने के लिए एक-दूसरे के सहायक तथा दाहिना हाथ बनो। (२) केवल अल्लाह की प्रसन्नता ही तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिए क्योंकि इस अवस्था में तुम परिवर्तन, कमी अथवा दबाव से बचोगे और तुम्हारा निर्णय न्याय के तराजू पर पूरा उतरेगा। (३) न्याय का प्रभाव यदि तुम्हारे माता-पिता अथवा अन्य किस सम्बन्धी पर भी पड़े, तब भी तुम चिन्ता न करो। और अपनी तथा उनकी छूट के सापेक्ष न्याय को प्रमुखता दो। (४) किसी धनवान के धन के कारण पक्षपात न करो और किसी निर्धन की निर्धनता से तरस न खाओ। क्योंकि वही जानता है कि इन दोनों की भलाई किस में है? (५) न्याय में मनोकांक्षा, क़ौमी पक्ष तथा शत्रुता आड़े नहीं आनी चाहिए, बल्कि इन सब को किनारे रखकर निष्पक्ष रूप से न्याय करो।

न्याय का यह प्रबन्ध जिस समाज में होगा, वहाँ शान्ति होगी और अल्लाह की ओर से धन-धान्य और कृपा प्रदान होगी। सहाबा कराम (رضي الله عنهم) ने इस बिन्दु को भली प्रकार समझ लिया था। अतःआदरणीय अब्दुल्लाह बिन रवाह: (رضي الله عنه)के विषय में

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝

(१३६) हे ईमानवालो ! अल्लाह तथा उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तथा उस किताब (पवित्र क़ुरआन) के प्रति जिसे अपने दूत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उतारी है तथा उन धर्म शास्त्रों के प्रति विश्वास करो जो इससे पूर्व उतारे गये,[1] और जो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों तथा उसके धर्म-शास्त्रों एवं उसके रसूलों तथा प्रलय दिवस को नहीं माने वह बहुत दूर बहक गया।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ۝

(१३७) नि:संदेह जो विश्वास किये फिर नकार दिये, फिर विश्वास किये फिर इंकार किये तथा इंकार में बढ़ गये, अल्लाह वास्तव में उन्हें क्षमा नहीं करेगा और न सीधा रस्ता दिखायेगा।[2]

आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें ख़ैबर के यहूदियों के पास भेजा कि वह वहाँ जाकर फलों तथा फसलों का अनुमान लगा कर आयें। यहूदियों ने उन्हें रिश्वत प्रस्तुत करनी चाही ताकि वह कुछ कोमलता से काम लें। उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की सौगन्ध, मैं उसकी ओर से दूत बन कर आया हूँ, जो दुनिया में मुझे सबसे अधिक प्रिय है, और तुम मेरे निकट सबसे अधिक अप्रिय हो, परन्तु मेरे प्रिय का प्रेम तथा तुम्हारी शत्रुता मुझे इस बात पर नहीं उकसा सकती कि मैं तुम्हारे मामले में न्याय न करूँ। यह सुन कर उन्होंने कहा इसी न्याय के कारण आकाश और धरती का प्रबन्ध स्थापित है (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1] ईमानवालों के लिये ईमान लाने पर बल, प्राप्त किये हुए को प्राप्त करने की बात नहीं है, बल्कि ईमान की पूर्ति तथा उस पर स्थिर रहने का आदेश है। जैसे اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ का अर्थ है।

[2] कुछ व्याख्याकारों ने इसका तात्पर्य यहूदियों से लिया है। यहूदी आदरणीय मूसा पर ईमान लाये और आदरणीय उज़ैर का इंकार किया, फिर आदरणीय उज़ैर पर ईमान लाये, तो आदरणीय ईसा का इंकार किया। फिर इंकार में बढ़ते चले गये। यहाँ तक कि परम

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝

(१३८) अवसरवादियों को सूचित कर दो कि उन के लिये दु:खद यातना आवश्यक है ।

الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۤءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۝

(१३९) जो मुसलमानों को छोड़ कर काफ़िरों को मित्र बनाते हैं,[1] क्या वह उन के पास मान-मर्यादा की खोज करते हैं ? (तो स्मरणीय रहे कि) सभी मान-सम्मान अल्लाह के अधिकार में है ।[2]

आदरणीय . मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत का भी इंकार किया । और कुछ ने इसका तात्पर्य अवसरवादियों से लिया है, क्योंकि उनका उद्देश्य मुसलमानों को हानि पहुंचाना था, इसलिए बार-बार अपने को मुसलमान होने का ढोंग रचाते थे । अन्तत: इंकार तथा बुराई में इतने पड़ गये कि उनके मार्गदर्शन की आशा ही समाप्त हो गई ।

[1]जिस प्रकार सूर: अल-बकर: के प्रारम्भ में गुज़र चुका है कि अवसरवादी काफ़िरों के पास जाकर यही कहते कि हम तो वास्तव में तुम्हारे ही साथ हैं, और मुसलमानों से तो हम यूँ ही उपहास करते हैं ।

[2]अर्थात सम्मान काफ़िरों के साथ मित्रता तथा प्रेम से नहीं मिलेगा, क्योंकि यह तो अल्लाह तआला के अधिकार में है । और वह सम्मान अपने भक्तों को ही प्रदान करता है । अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ مَن كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ﴾

"जो सम्मान की कामना करता है,(तो उसे समझ लेना चहिए) कि सम्मान सब का सब अल्लाह ही के लिए है ।"(सूर: *अल-फ़ातिर-१०*)

और फ़रमाया:

﴿ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴾

"सम्मान अल्लाह के लिए है, उसके रसूल के लिए है और ईमानवालों के लिए है, परन्तु अवसरवादी नहीं जानते ।" (सूर: *अल-मुनाफ़िकून -८*)

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَ يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا ۙ﴿١٤٠﴾

(१४०) और अल्लाह (तआला) ने तुम पर अपनी किताब (पवित्र क़ुरआन) में यह आदेश उतारा है कि जब तुम अल्लाह की आयतों के साथ इंकार एवं उपहास होते सुनो तो उनके साथ उस सभा में न बैठो, जब तक कि दूसरी बात में न लग जायें, क्योंकि इस समय तुम उन्हीं के समान होगे,[1] निश्चय अल्लाह द्वयवादियों एवं काफ़िरों (विश्वासहीनों) को नरक में एकत्र करने वाला है।

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ

(१४१) जो तुम्हारे विषय में प्रतिक्षा करते हैं, पुन: यदि तुम्हारी विजय अल्लाह की ओर हो तो ये कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे तथा यदि काफ़िरों (विश्वासहीनों) को तनिक-सी सफलता मिले तो कहते हैं कि क्या हमने तुम्हें घेर नहीं लिया और मुसलमानों

अर्थात वह द्वयवाद के द्वारा तथा काफ़िरों से मित्रता के द्वारा सम्मान प्राप्त करना चाहते हैं। वास्तव में यह चरित्र अपमान तथा अनादर का है, सम्मान का नहीं।

[1]अर्थात मना करने के उपरान्त यदि तुम ऐसी सभाओं में जहाँ अल्लाह की आयतों का उपहास उड़ाया जा रहा हो बैठोगे और उसे रोकोगे नहीं, तो फिर तुम भी उनके समान पाप के भागीदार बनोगे। जैसाकि एक हदीस में आता है, "जो व्यक्ति अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, वह उस भोज में सम्मिलित न हो जिसमें मदिरा का दौर चले।" (मुसनद अहमद, भाग १, पृष्ठ २०, भाग ३ पृष्ठ ३३९) इससे विदित हुआ कि ऐसी सभाओं तथा समारोह में सम्मिलित होना, जिसमें अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का मौखिक अथवा कर्मों द्वारा उपहास उड़ाया जा रहा हो, जैसे आज कल के सुसभ्य तथा पाश्चात्य देशों से प्रभावित धनवान की सभा में साधारणत: ऐसा होता है अथवा विवाह एवं जन्म दिवस आदि समारोह में किया जाता है। अत: इस प्रकार की सभी वर्णित सभाओं में सम्मिलित होना महापाप है। ﴿اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ﴾ की चेतावनी ईमानवाले के अन्दर कंपन उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त है, यदि दिल के अन्दर ईमान हो।

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾

से नहीं बचाया था ? तो प्रलय के दिन [1] अल्लाह ही तुम्हारे बीच निर्णय करेगा [2] तथा अल्लाह कदापि काफ़िरो को मुसलमानों पर कोई मार्ग (प्रभाव) नहीं देगा ।[3]

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ

(१४२) नि:संदेह अवसरवादी अल्लाह (तआला) से छल कर रहे हैं, और वह उन्हें उस छल

---

[1]अर्थात हम तुम पर प्रभावशाली होने लगे थे, परन्तु तुम्हें अपना साथी समझकर छोड़ दिया और मुसलमानों का साथ छोड़ कर हमने तुम्हें मुसलमानों के चंगुल से बचाया। अर्थात यह कि तुम्हें प्रभाव हमारी दोहरी नीति के कारण प्राप्त हुआ। जो हमने मुसलमानों में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित होकर अपना रखी, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें हानि पहुँचाने में हमने कोई आलस्य तथा कमी नहीं की यहाँ तक कि तुम उन पर प्रभावशाली हो गये।

[2]अर्थात दुनिया में तो तुमने छल-कपट से सामयिक रूप से कुछ सफलता प्राप्त कर ली, परन्तु क़ियामत के दिन अल्लाह तआला का निर्णय उन आन्तरिक विचारों तथा स्थिति के प्रकाश में होगा जिन्हें तुम दिल में छिपाये थे, इसलिए अल्लाह तआला तो दिल के भेदों को भली-भाँति जानता है । फिर उस पर जो दंड वह देगा, तो ज्ञात होगा कि दुनिया में अवसरवादी नीति अपनाने के कारण अत्यधिक हानि का व्यापार किया था, जिस पर नरक की स्थाई यातना भुगतनी पड़ेगी। أعاذنا الله منه

[3]अर्थात प्रभुत्व न देगा। इसके विभिन्न भावार्थ वर्णित किये गये हैं। (१) मुसलमानों का प्रभाव प्रलय के दिन होगा (२) तर्क-वितर्क के आधार पर काफ़िर मुसलमानों पर प्रभावशाली नहीं हो सकते । (३) काफ़िरों का प्रभाव इस प्रकार का नहीं होगा कि मुसलमानों के धन-धान्य का बिल्कुल अन्त हो जाये तथा वह दुनिया के नक्शे से ही लुप्त हो जायें । एक हदीस से भी इस भावार्थ की पुष्टि होती है। (४) जब तक मुसलमान अल्लाह की अप्रसन्नता तथा उसके निषेध किये हुये कर्मों से रोकते रहेंगे काफ़िर उन पर प्रभावशाली न हो सकेंगे। इमाम इब्नुल अरबी फ़रमाते हैं कि "यह सर्वश्रेष्ठ अर्थ है।" क्योंकि अल्लाह तआला का कथन है।

﴿ وَمَآ أَصَٰبَكُم مِّن مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ ﴾

"और जो कठिनाई तुम पर आती है, वह तुम्हारे कर्मों के कारण से।" (सूर: अल-शूरा-३०) (फ़तहुल क़दीर)

قَامُوا كُسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا

का बदला देने वाला है।[1] और जब नमाज़ को खड़े होते हैं, तो बडे आलस्य की स्थिति में खड़े होते हैं[2] केवल लोगों को दिखाते हैं।[3] और अल्लाह की याद बस नाम मात्र करते हैं।[4]

مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَٰلِكَ لَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ

(१४३) वह मध्य में ही असमंजस्य में हैं, न पूर्णरूप से उनकी ओर न उचित रूप से इन

---

[1]इसका संक्षिप्त विवरण सूर: अल-बक़र: के आरम्भ में हो चुका है।

[2]नमाज़ इस्लाम का विशेष स्तम्भ है और सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य है तथा इसमें भी वह आलस्य तथा सुस्ती का प्रदर्शन करते थे, क्योंकि उनका हृदय ईमान एवं अल्लाह के भय तथा शुद्धता से वंचित था। यही कारण था कि ईशा (रात्रि) तथा फ़ज्र (प्रात:काल) की नमाज़ें विशेष रूप से उन पर भारी थीं। जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है।

«أَثْقَلُ الصَّلٰوةِ عَلَى الْمُنَافِقِينَ صَلٰوةُ الْعِشَاءِ وَصَلٰوةُ الْفَجْرِ...».

"द्वयवादियों के ऊपर ईशा तथा फज्र की नमाज़ सबसे भारी है।" (सहीह बुख़ारी मवाक़ीतुसस्लात, सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

[3]यह नमाज़ भी वह मक्कारी तथा दिखावे के लिए पढ़ते थे ताकि मुसलमानों को धोखा दे सकें।

[4]अल्लाह की याद नाम मात्र करते हैं अथवा नमाज़ संक्षिप्त पढ़ते हैं لا يصلون إلا صلاة قليلة जब नमाज़ शुद्धता एवं अल्लाह के डर, तथा एकाग्रता से शून्य हो तो संतोष से नमाज़ पढ़ने में कठिनाई होती है। जैसाकि و إنها لكبيرة إلا على الخشعين (सूर:अल-बक़र:-४५) से स्पष्ट है। हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यह अवसरवादी की नमाज़ है, यह अवसरवादी की नमाज़ है, यह अवसरवादी की नमाज़ है कि बैठा हुआ सूर्य की प्रतिक्षा करता रहता है, यहाँ तक कि जब सूर्य शैतान की दो सींघों के बीच (अर्थात सूर्यास्त के निकट) हो जाता है, तो उठता है और चार चोंचें मार लेता है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद, मुअत्ता किताबुल क़ुरआन)

وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ﴿١٤٣﴾

की ओर[1] और जिसे अल्लाहे (तआला) भटका दे, तो तू उसके लिए कोई मार्ग नहीं पायेगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَتُرِيدُونَ أَن تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿١٤٤﴾

(१४४) हे ईमानवालो ! ईमानवालों को छोड़-कर काफ़िरों को मित्र न बनाओ, क्या तुम यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह (तआला) का खुला तर्क स्थापित कर लो।[2]

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَن تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ﴿١٤٥﴾

(१४५) अवसरवादी तो अवश्य नरक की सब से निचली श्रेणी में जायेंगे।[3] असम्भव है कि तू उनका कोई सहायता करने वाला पा ले।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَسَوْفَ

(१४६) हाँ, यदि क्षमा माँग लें और सुधार कर लें और अल्लाह (तआला) पर पूर्ण विश्वास करें और शुद्धरूप से अल्लाह ही के लिए धार्मिक कार्य करें, तो यह लोग ईमानवालों के साथ

---

[1]काफ़िरों के पास जाते हैं तो उनके साथ और जब मुसलमानों के पास आते हैं तो उनके साथ मित्रता तथा सम्बन्ध का प्रदर्शन करते हैं। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से वह न मुसलमानों के साथ हैं और न काफ़िरों के साथ और कुछ अवसरवादी अविश्वास तथा ईमान के मध्य असमंजस्य में पड़े रहते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है, "अवसरवादी की तुलना उस बकरी के समान है जो जोड़ा खाने के लिए दो रेवड़ों के बीच असमंजस्य में पड़ी रहती है (बकरे की खोज में) कभी एक रेवड़ की ओर जाती है, कभी दूसरे की ओर।" (सहीह मुस्लिम किताबुल मुनाफ़िक़ीन)

[2]अर्थात अल्लाह तआला ने तुम्हें काफ़िरों की मित्रता से मना किया है। अब यदि तुम मित्रता करोगे तो इसका अर्थ यह होगा कि तुम अल्लाह को यह दलील उपलब्ध करा रहे हो कि वह तुम्हें भी दण्ड दे सके। (अर्थात अल्लाह के आदेशों की अवज्ञा तथा विरोध के कारण)

[3]नरक की सबसे निम्न श्रेणी هاوية (हाविय:) कहलाती है। أعاذنا الله منها अवसरवादियों की वर्णित कर्मों तथा अवगुणों से हम सभी मुसलमानों की अल्लाह तआला रक्षा करे।

हैं ।[1] अल्लाह (तआला) ईमानवालों को बहुत बड़ा बदला देगा ।

يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا

(१४७) अल्लाह (तआला) तुम्हें दंड देकर क्या करेगा यदि तुम कृतज्ञ रहो तथा ईमान के साथ रहो ?[2] और अल्लाह (तआला) अति सम्मान करने वाला पूर्ण ज्ञाता है ।[3]

مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا

---

[1]अर्थात अवसरवादियों में से जो इन चार बातों का स्वच्छ मन से प्रयोजन करेगा, वह नरक में जाने के बजाय स्वर्ग में ईमानवालों के साथ होगा ।

[2]कृतज्ञता का अर्थ है कि अल्लाह के आदेशानुसार बुराईयों से बचना तथा सत्कर्म का प्रयोजन करना । यह अल्लाह की कृपा की कर्मों द्वारा कृतज्ञता व्यक्त करना है । और ईमान से तात्पर्य अल्लाह के एक होने तथा उसके प्रभुत्व पर तथा संसार के लिए अन्तिम नबी परम आदरणीय मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान है ।

[3]अर्थात जो उसका कृतज्ञ होगा वह सम्मान करेगा, जो दिल से ईमान लायेगा, वह इसको जान लेगा और उसके अनुसार सर्वश्रेष्ठ बदला प्रदान करेगा ।

(१४८) अल्लाह उच्च स्वर के साथ अपवाद से प्रेम नहीं करता, परन्तु नृशंसित को इसकी अनुमति है[1] तथा अल्लाह सुनता जानता है।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿۱۴۸﴾

(१४९) यदि तुम कोई पुण्य कार्य स्पष्ट करके करो अथवा छिपाकर अथवा किसी बुराई को क्षमा करते हो,[2] निःसंदेह अल्लाह (तआला) क्षमाशील सर्वशक्तिमान है।

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿۱۴۹﴾

---

[1]इस्लाम धर्म ने इस पर बल दिया है कि यदि किसी में बुराई देखो, तो उसकी चर्चा न करो बल्कि एकान्त में उसको समझा दो, यदि कोई धार्मिक हित हो। इसी प्रकार स्पष्ट रूप से सभी को दिखाकर बुराई करना अति अप्रिय है। एक तो बुराई का करना वैसे ही मना है चाहे वह पर्दे के भीतर क्यों न हो। दूसरे यह कि खुले रूप से की जाये यह एक और अधिक अपराध है। और इसके कारण इस बुराई का अपराध दुगुना, बल्कि दस गुना भी हो सकता है। कुरआन के उपरोक्त शब्द दोनों प्रकार की बुराई के प्रदर्शन से मना को सम्मिलित हैं। और उसी में यह भी सम्मिलित है कि किसी की की हुई अथवा न की हुई बुराई पर बुरा-भला कहा जाये। परन्तु इससे अलग यह है कि किसी अत्याचारी के अत्याचार को लोगों के समक्ष तुम प्रदर्शित कर सकते हो। उससे एक यह लाभ है कि संभवतः वह अत्याचार से रुक जाये अथवा उसकी क्षतिपूर्ति का प्रयास करे। दूसरा लाभ यह है कि लोग उससे बच कर रहें। हदीस में आता है कि एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा कि मेरा पड़ोसी मुझे कष्ट देता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "तुम अपना सामान निकाल कर मार्ग में रख दो।" उसने ऐसा ही किया। फिर जो भी गुज़रता पूछता और वह अपने पड़ोसी के अत्याचार की चर्चा करता, यह सुनकर हर राही उसके पड़ोसी को धिक्कारता और बुरा-भला कहता। पड़ोसी ने यह देख कर क्षमा माँग लिया और भविष्य में ऐसा न करने का निश्चय कर लिया और उससे अपना सामान अन्दर रख लेने की प्रार्थना की। (सुनन अबू दाऊद किताबुल अदब)

[2]कोई व्यक्ति किसी के साथ अत्याचार अथवा त्रिस्कार करे तो उसको उसी सीमा तक प्रतिकार की आज्ञा इस्लाम धर्म ने दी है जिस सीमा तक उस पर अत्याचार हुआ है।

«الْمُسْتَبَّانِ مَا قَالاَ، فَعَلَى الْبَادِیءِ، مَا لَمْ يَعْتَدِ الْمَظْلُومُ»

"गाली-गलोज आपस में करने वाले दो व्यक्ति जो कुछ कहें उसका पाप पहले करने वाले पर है (यदि) जिस पर अत्याचार किया गया (अर्थात जिसे पहले गाली

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَن يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١٥٠﴾

(१५०) जो लोग अल्लाह तथा उसके रसूलों (दूतों) के प्रति अविश्वास रखते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उसके रसूलों (दूतों) के मध्य अलगाव करें तथा कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते तथा इसके बीच रास्ता बनाना चाहते हैं।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٥١﴾

(१५१) विश्वास करो, कि यह सभी लोग असली काफ़िर हैं।[1] और काफ़िरों के लिये हम ने अत्यधिक कठोर यातनायें तैयार कर रखी हैं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَكَانَ

(१५२) तथा जो अल्लाह और उसके रसूलों के प्रति विश्वास किये तथा उनमें से किसी के मध्य विभेद नहीं किये उन्हीं को अल्लाह उनका पूरा

दी गयी और उसने उत्तर में गाली दी) अधिकता न करे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल विर्र वस्सिला वल अदब, हदीस संख्या ४५८७)

परन्तु बदला लेने की आज्ञा के साथ-साथ क्षमा करने को श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि अल्लाह तआला पूर्ण बदला लेने में सक्षम होने के उपरान्त क्षमा और माफ़ी से काम लेता है। इसलिए फ़रमाया :

﴿وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۖ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ﴾

"त्रिस्कार का बदला (प्रतिकार) उसके समतुल्य त्रिस्कार है परन्तु जो क्षमा कर दे और सुधार कर ले, तो उसका प्रत्युपकार अल्लाह के ऊपर है।" (सूरः *अल-शूरः*-४०)

और हदीस में भी है, क्षमा कर देने से अल्लाह तआला सम्मान ही बढ़ाता है। (सहीह मुस्लिम किताबुल विर्र वससिला वल अदब,)

[1]अहले किताब के विषय में पूर्व वर्णित हो चुका है कि वह कुछ नबियों को मानते और कुछ को नहीं मानते। जैसे यहूदी आदरणीय ईसा तथा परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं मानते तथा ईसाई परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अस्वीकार करते जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि नबियों के मध्य अन्तर करने वाले पक्के अधर्मी हैं

اللهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾

प्रतिफल देगा[1] और अल्लाह क्षमाशील कृपानिधि है ।

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾

(१५३) आप से अहले किताब यह प्रश्न करते हैं कि आप उन पर आसमान से कोई किताब उतारें[2] तो उन्होंने मूसा से इस से बड़ी माँग की थी और कहा कि हमें प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह को दिखाओ फिर उन्हें बिजली ने घेर लिया उनके अत्याचार के कारण फिर उन्होंने स्पष्ट तर्कों के आ जाने के पश्चात बछड़े को (पूज्य) बना लिया और हमने उन्हें क्षमा कर दिया तथा मूसा (नबी) को खुला तर्क दिया ।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ

(१५४) और उनसे वचन लेने के लिए तूर (पर्वत) हम उनके ऊपर ले आये और उन्हें आदेश दिया कि सजदः करते हुए द्वार में प्रवेश करो और यह भी आदेश किया कि शनिवार

---

[1]यह ईमानवालों के गुण बताये कि वह सभी नबियों पर ईमान रखते हैं । जिस प्रकार से मुसलमान । इस आयत से भी "सर्वधर्म संभाव" का खण्डन होता है, उस विचार वालों के निकट मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना आवश्यक नहीं और वे उन ग़ैर मुसलमानों को भी मोक्ष प्राप्त करने वाला समझते हैं, जो अपनी कल्पना के अनुसार अल्लाह पर ईमान रखते हैं । परन्तु क़ुरआन की इस आयत ने स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह पर ईमान के साथ-साथ मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना भी आवश्यक है । यदि इस अन्तिम रिसालत पर ईमान न होगा, तो इस इंकार के साथ अल्लाह पर ईमान अमान्य तथा अस्वीकार्य है (देखिए *सूर: अल-बक़र:*- आयत ६२ की टिप्पणी)

[2]अर्थात जिस प्रकार आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम तूर पर्वत पर गये और तख़्तियों पर लिखी हुई तौरात लेकर आये, उसी प्रकार आप आकाश पर जाकर लिखा हुआ क़ुरआन मजीद लेकर आइये । यह माँग मात्र उपद्रव, इंकार करने तथा ईर्ष्या के आधार पर थी ।

وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

के दिन उल्लंघन न करना और हमने उनसें कठोर से कठोरतम वचन तथा स्वीकृत ली।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾

(१५५) ऐसा उनके वचन भंग करने तथा अल्लाह की आयतों के इंकार एवं अकारण रसूलों (ईशदूतों) की हत्या करने[1] तथा उनके इस कथन के कारण हुआ कि हमारे दिल ढँके हुये हैं (नहीं) अल्लाह ने उनके कुफ्र के कारण उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, इसलिये यह थोड़े ही ईमान रखते हैं।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿١٥٦﴾

(१५६) और उनके कुफ्र के कारण तथा मरियम पर घोर आरोप लगाने के कारण।[2]

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا

(१५७) और उनके यह कहने के कारण कि हमने मसीह, मरियम के पुत्र ईसा, अल्लाह के रसूल (दूत) की हत्या कर दी, हालाँकि न तो उन्हें वध किया न उन्हें फांसी दी[3] परन्तु उनके लिये सरूप बना दिया गया।[4] विश्वास

---

[1]लिप्त सूत्र इस प्रकार होगा ﴿فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ﴾ अर्थात हमने उनकी प्रतिज्ञा भंजन तथा अल्लाह तआला की आयतों के प्रति अविश्वास और नबियों की हत्या आदि के कारण से उन पर धिक्कार अथवा दंडित किया।

[2]इससे तात्पर्य युसूफ बढ़ई के साथ आदरणीय मरियम के कुकर्म का आरोप है। आज कल भी कुछ शोधकर्ता इस घोर पाप आरोप को एक "प्रमाणित तथ्य" सिद्ध करने पर तुले हुए हैं और कहते हैं कि यूसुफ बढ़ई (अल्लाह की शरण) आदरणीय ईसा के पिता थे। और इस प्रकार (आदरणीय) ईसा के बिना पिता के चमत्कारी जन्म का इंकार करते हैं।

[3]इससे स्पष्ट हुआ कि यहूदी आदरणीय ईसा की हत्या अथवा फाँसी देने में सफल नहीं हुए। जैसेकि *सूरः आले इमरान* की आयत संख्या ५५ की टिप्पणी में संक्षिप्त वर्णन आ चुका है।

[4]इसका अर्थ यह है कि जब आदरणीय ईसा को यहूदियों की योजना का पता चला तो उन्होंने अपने अनुयायियों को, जिनकी संख्या १२ अथवा १७ थी एकत्रित किया। और फरमाया कि तुममें से कौन मेरे स्थान पर बलि देने को तैयार है ? ताकि अल्लाह तआला

करो कि ईसा के विषय में मतभेद करने वाले उनके विषय में शंका में हैं। उन्हें इसका कोई विश्वास नहीं सिवाय अनुमानित बातों पर कार्य करने के।[1] इतना निश्चित है कि उन्होंने उनकी हत्या नहीं की।

فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ۭ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًۢا ١٥٧

(१५८) बल्कि अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपनी ओर उठा लिया।[2] और अल्लाह बलपूर्वक

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ١٥٨

उसकी रूप-रेखा मेरी जैसी बना दे। एक नवयुवक इसके लिए तैयार हो गया। अत: आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम को वहाँ से आकाश पर उठा लिया गया, उसके पश्चात यहूदी आये और उन्होंने उस नवयुवक को फाँसी पर चढ़ा दिया, जिसे ईसा के समरूप वना दिया गया था। यहूदी यही समझते रहे कि हमने आदरणीय ईसा को फाँसी पर चढ़ा दिया। वास्तविकता यह है कि आदरणीय ईसा वहाँ उपस्थित ही नहीं थे, वह जीवित अपने शरीर के साथ आकाश पर उठाये जा चुके थे। (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर)

[1]आदरणीय ईसा के समरूप को फाँसी देने के पश्चात एक गुट यह कहता रहा कि आदरणीय ईसा की हत्या कर दी गयी, दूसरा गुट वह जिसे यह अनुमान हो गया था कि फाँसी पर चढ़ाया गया व्यक्ति आदरणीय ईसा नहीं हैं, कोई अन्य है, वह आदरणीय ईसा को फाँसी पर चढ़ाने और हत्या करने से इंकार करता रहा। कुछ कहते हैं कि उन्होंने आदरणीय ईसा को आकाश पर जाते भी देखा था। कुछ कहते हैं कि इस मतभेद का तात्पर्य वह मतभेद है जो स्वयं ईसाइयों के मध्य उत्पन्न हुआ। ईसाइयों के नस्तूरी गुट ने कहा कि ईसा अलैहिस्सलाम को शारीरिक रूप से फाँसी दे दी गयी परन्तु आत्मिक रूप से नहीं। मलकानिया गुट ने कहा कि यह हत्या अथवा फाँसी शारीरिक तथा आत्मिक दोनों के रूप से पूर्ण हो गयी। (फ़तहुल क़दीर) अत: वह मतभेद, असमंजस्य तथा शंका के शिकार रहे।

[2]यह तथ्य है कि अल्लाह तआला ने अपनी अनन्त सामर्थ्य से अदरणीय ईसा को जीवित आकाश पर उठा लिया और निरन्तर सहीह हदीस से भी इस बात की तर्क संगत पुष्टि होती है। यह हदीसें, हदीस की सभी पुस्तकों के अतिरिक्त सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम में लिखी हुई हैं। इन हदीसों से आकाश पर उठा लिए जाने के अतिरिक्त क़ियामत से पूर्व उनके धरती पर उतरने तथा अन्य बातों का वर्णन है। इमाम इब्ने कसीर इन बातों का वर्णन करके अन्त में लिखते हैं यद्यपि यह हदीसें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निरन्तर हैं। इनके कथाकार आदरणीय अबू हुरैरा, आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद, उस्मान बिन अबुल ऑस, अबू ओमामः, नवास बिन

पूर्ण ज्ञानी है ।[1]

(१५९) अहले किताब में से कोई ऐसा न शेष बचेगा जो (आदरणीय) ईसा (अलैहिस्सलाम) की मृत्यु से पूर्व उन पर ईमान न लाये ।[2] और प्रलय

وَاِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ‌ ۚ وَيَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ يَكُوۡنُ عَلَيۡهِمۡ شَهِيۡدًا ۚ‏

समआन, अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अल-ऑस, मुज्जमआ बिन जरिया:, अवी सरिया: तथा हुज़ैफ़ा बिन उसीद (रज़ी अल्लाह अनहुम) हैं इन हदीसों में आपके उतरने के गुण तथा स्थान का वर्णन है। आप सीरिया देश की वर्तमान राजधानी दमिश्क़ में पूर्व मिनार: के पास उस समय उतरेंगे, जब फ़ज्र की नमाज़ की इक़ामत हो रही होगी। आप सूअर की हत्या करेंगे, क्रॉस तोड़ेंगे, दज्जाल का वध भी अपने हाथों करेंगे तथा याजूज व माजूज प्रकट होकर उपद्रव भी आप के युग में करेंगे तथा अन्ततः उनका विनाश भी आप ही के शाप से होगा।

[1]वह शक्तिशाली तथा प्रभुत्व वाला है और उसके विचार तथा इच्छा को कोई टाल नहीं सकता, और जो उसकी शरण में आ जाये, उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। और वह ज्ञानी भी है, वह जो भी निर्णय करता है, वह निति व सिद्धान्त पर आधारित होते हैं।

[2] قبل موته में ـه सर्वनाम कुछ व्याख्याकारों के निकट अहले किताब (ईसाईयों) की तरफ फिरता है। और अर्थ यह कि प्रत्येक ईसाई मृत्यु के समय आदरणीय ईसा पर ईमान तो लाता है। यद्यपि मृत्यु के पहले ईमान का समय लाभकारी नहीं। परन्तु पूर्वजों (सहाबा) या अधिकतर व्याख्याकारों के निकट आदरणीय ईसा की तरफ फिरता है और अर्थ यह है कि जब उनका पुन: संसार में आना होगा और वह दज्जाल का वध करके इस्लाम धर्म का प्रभाव क्षेत्र बढ़ायेंगे, तो उस समय जितने भी यहूदी और ईसाई होंगे उनका भी वध करेंगे। और इस धरती पर मुसलमानों के अतिरिक्त कोई शेष न बचेगा। इस प्रकार दुनिया में जितने भी अहले किताब आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वाले हैं, वह आदरणीय ईसा की मृत्यु के पूर्व ही उन पर ईमान लाकर गुजर चुकेंगे। चाहे उनका ईमान किसी भी ढंग का हो। हदीस सहीह से भी यही सिद्ध है। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथ में मेरा प्राण है, अवश्य एक समय आयेगा कि तुममें इब्ने मरियम अधिपत्य तथा न्यायिक बन कर उतरेंगे वह क्रॉस को तोड़ेंगे, सूअर का वध करेंगे, रक्षा कर समाप्त कर देंगे, और माल की इतनी अधिकता हो जायेगी कि कोई उसका लेने वाला न होगा (अर्थात दान लेने वाला कोई न होगा) यहाँ तक कि एक सजद: दुनिया तथा उसके ऐश्वर्य से श्रेष्ठ होगा। फिर आदरणीय अबुहुरैरा (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं यदि तुम चाहो तो क़ुरआन करीम की यह आयत पढ़ लो। ﴿وَاِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ﴾ (सहीह बुख़ारी

के दिन वह उन पर साक्षी होंगे ।[1]

(१६०) यहूदियों के अत्याचार के कारण हम ने उन पर वैध पदार्थ निषेध कर दिये तथा उनके अल्लाह के मार्ग से अधिक (लोगों) को रोकने के कारण ।[2]

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَٰتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ﴿١٦٠﴾

(१६१) और उनके ब्याज लेने के कारण जिससे उन्हें रोक दिया गया था। तथा लोगों का धन अहित से लेने हेतु, और हमने उनमें से काफ़िरों के लिये दु:खद यातना तैयार की है।

وَأَخْذِهِمُ الرِّبَوٰا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦١﴾

(१६२) परन्तु उनमें जो दक्ष तथा प्रयज्ञ हैं[3] और ईमानवाले हैं, जो उस पर ईमान लाते हैं, जो आपकी ओर उतारा गया, और जो आप से

لَّٰكِنِ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ

किताबुल अम्बिया) । यह हदीस इतनी अधिकता से आयी है कि इसे निरन्तर की श्रेणी प्राप्त है और इन्हीं निरन्तर हदीसों के आधार पर अहले सुन्नत के सभी सम्प्रदाय का सर्वमान्य विश्वास है कि आदरणीय ईसा आकाश पर जीवित हैं और प्रलय के निकट वह दुनिया में आयेंगे और दज्जाल तथा अन्य सभी धर्मों को समाप्त करेंगे और इस्लाम धर्म को प्रभावशाली बनायेंगे। याजूज व माजूज का निकलना भी आदरणीय ईसा की उपस्थिति में ही होगा और आदरणीय ईसा की प्रार्थना के प्रभाव से ही इस अशान्ति की भी समाप्ति होगी। जैसाकि हदीस से स्पष्ट है।

[1]यह गवाही अपनी पहले के जीवन तक की अवस्था के विषय में होगी, जैसाकि सूर: *अल-मायद:* के अन्त में स्पष्टतम रूप से है।

﴿ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ﴾

"मैं जब तक उनमें उपस्थिति रहा, उनके विषय में जानता रहा।"

[2]अर्थात उनके अपराधों तथा कुकर्मों के कारण दंड स्वरूप बहुत-सी अवर्जित वस्तु उन पर वर्जित कर दी थीं। (जिनकी प्रधानता *सूर:अल-अनआम*-१४६ में है)

[3]इनसे तात्पर्य आदरणीय अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि हैं, जो यहूदियों में से मुसलमान हुए थे।

وَالْمُقِيمِينَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٦٢﴾

पूर्व उतारा गया और नमाज़ को स्थापित करने वाले हैं।[1] और ज़कात को अदा करने वाले हैं।[2] और अल्लाह पर तथा क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं।[3] यह वह हैं जिन्हें हम बहुत बड़ा प्रतिकार प्रदान करेंगे।

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿١٦٣﴾

(१६३) नि:सन्देह हमने आपकी ओर उसी प्रकार प्रकाशनायें (वह्यी) की हैं, जैसे कि नूह (अलैहिस्सलाम) और उनके पश्चात के नबियों की ओर हमने प्रकाशना (वह्यी) की, तथा इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ तथा याक़ूब एवं उनकी सन्तानों पर तथा ईसा और अय्यूब तथा यूनुस एवं हारून तथा सुलैमान की ओर।[4] और हमने दाऊद (अलैहिस्सलाम) को ज़बूर प्रदान की।

---

[1]इनसे तात्पर्य भी वही ईमानवाले हैं जो अहले किताब से मुसलमान हुए अथवा फिर मुहाजिरीन (मक्का शहर छोड़कर आये हुए मुसलमान) तथा अंसार (मदीने के निवासी मुसलमान) से तात्पर्य हैं। अर्थात इस्लामी नियम के दृढ़ ज्ञान रखने वाले और उत्तम ईमान से अलंकृत होने वाले लोग उन कुकर्मों के करने से बचते हैं, जिन्हें अल्लाह तआला अप्रिय समझता है।

[2]इसका प्रयोजन धन का दान अथवा प्राण का दान अर्थात अपने आचरण एवं स्वभाव को पवित्र तथा स्वच्छ करना है अथवा दोनों अभिप्रेत हैं।

[3]अर्थात इस पर विश्वास रखते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं तथा मौत के पश्चात पुनर्जीवित होने एवं कर्मानुसार प्रतिफल मिलने पर विश्वास रखते हैं।

[4]आदरणीय इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) से उदधृत है कि कुछ लोगों ने कहा कि आदरणीय मूसा के पश्चात अल्लाह तआला ने किसी पर कुछ नहीं उतारा और इस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत को अस्वीकार किया, जिस पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर) जिसमें उपरोक्त कथन का खंडन करते हुए मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रिसालत को प्रमाणित किया गया है।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَٰهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ ٱللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾

(१६४) और आप से पूर्व के बहुत से रसूलों की घटनायें हमने आप से वर्णन की हैं।[1] और बहुत से रसूलों की नहीं भी कीं हैं[2] और मूसा से अल्लाह ने सीधे बात की।[3]

رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةٌۢ

(१६५) (हमने इन्हें) शुभसूचक एवं सचेतकर्ता रसूल बनाया।[4] ताकि लोगों को कोई बहाना तथा अभियोग रसूलों को भेजने के पश्चात

---

[1]जिन रसूलों के नाम तथा उनकी घटनायें क़ुरआन में वर्णन की गयीं हैं, उनकी संख्या २५ है। (१) आदम (२) इदरीस (३) नूह (४) हूद (५) स्वालेह (६) इब्राहीम (७) लूत (८) इस्माईल (९) इसहाक़ (१०) याक़ूब (११) यूसुफ़ (१२) अय्यूब (१३) शुऐब (१४) मूसा (१५) हारून (१६) यूनुस (१७) दाऊद (१८) सुलैमान (१९) इलियास (२०) अल-यसअ (२१) ज़करिया (२२) यहिया (२३) ईसा (२४) ज़ुलकिफ़्ल अधिकतर व्याख्याकारों के निकट (२५) आदरणीय मोहम्मद सलवातुल्लाह व सलामुहू अलैहि व अलैहिम अजमईन।

[2]जिन नबियों और रसूलों के नाम तथा घटनायें क़ुरआन में वर्णन नहीं हैं, उनकी संख्या कितनी है ? अल्लाह तआला ही भली प्रकार से जानता है। एक हदीस में जो बहुत प्रसिद्ध है एक लाख चौबीस हजार तथा एक हदीस में आठ हजार बतायी गयी है। लेकिन यह कथन अत्यधिक कमज़ोर हैं क़ुरआन और हदीस से सिर्फ़ यही ज्ञात होता है कि विभिन्न समय तथा अवस्थाओं में शूभ सूचना देने वाले तथा सतर्क करने वाले (नबी) आते रहे हैं। अन्ततः यह नबूवत का क्रम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर समाप्त हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले कितने नबी आये उनकी उचित संख्या का ज्ञान सिर्फ़ अल्लाह को है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात जितने भी लोग नबूअत का दावा करें वह दज्जाल तथा झूठे हैं और उन पर ईमान लाने वाले इस्लाम से वाहर हैं। और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत से अलग एक प्रतिकूल समुदाय हैं। जैसे-बहाई, बाबिया तथा मिर्जाई समुदाय।

[3]यह मूसा अलैहिस्सलाम का विशेष गुण है, जिसमें वह दूसरे नबियों से श्रेष्ठ हैं। सहीह इब्ने हिब्बान में एक कथन के आधार पर इमाम इब्ने कसीर ने इस वार्तालाप की विशेषता में आदरणीय आदम तथा आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्मिलित माना है। तफ़सीर इब्ने कसीर व्याख्या आयत ﴿تِلْكَ ٱلرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ﴾

[4]ईमानवालों को स्वर्ग के सुख की शुभ सूचना देना तथा काफ़िरों को नरक की कठोर यातना से डराना।

بَعْدَ الرُّسُلِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾

अल्लाह (तआला) पर न रह जाये ।[1] और अल्लाह (तआला) बड़ा बलपूर्वक तथा बड़ा पूर्णज्ञानी है ।

لَٰكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنزَلَ إِلَيْكَ ۖ أَنزَلَهُ بِعِلْمِهِ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾

(१६६) जो कुछ आपकी ओर उतारा है, उस विषय में अल्लाह तआला स्वयं साक्षी है कि उसे अपने ज्ञान से उतारा है, और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह (तआला) का साक्ष्या बस है ।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾

(१६७) नि:संदेह जिन्होंने कुफ़्र किया तथा अल्लाह के मार्ग (धर्म) से रोका वह बहुत दूर भटक गये ।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾

(१६८) वस्तुत: जिन्होंने कुफ़्र किया तथा अत्याचार कर लिये अल्लाह उन्हें क्षमा नही करेगा न उन्हें किसी मार्ग का दर्शन करायेगा ।[2]

إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾

(१६९)परन्तु नरक का मार्ग, जिस में वह सदा निवास करेंगे तथा यह अल्लाह पर सरल है ।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ

(१७०) हे मानवगण, तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से सत्य लेकर रसूल

---

[1]अर्थात नबूवत अथवा सावधान करने तथा शुभ सूचना देने का यह क्रम हमने इस लिए स्थापित किया कि किसी के पास यह तर्क शेष न रहे कि हमें तो तेरा संदेश पहुँचा ही नहीं । जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ﴾

"यदि हम उनको पैग़म्बर के (भेजने से) पूर्व ही मार देते तो वह कहते कि ऐ हमारे प्रभु ! तूने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम अपमानित तथा लज्जित होने से पूर्व ही तेरी आयतों का अनुकरण कर लेते ।" (*सूर: ताहा*-१३४)

[2]क्योंकि निरन्तर अधर्म तथा अत्याचार करके उन्होंने अपने दिलों को काला कर लिया है, जिससे अब उनके मार्गदर्शन तथा मोक्ष की कोई आशा की किरण नहीं दिखायी देती ।

الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَكُمْ ۚ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧٠﴾

(मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आ गये उनके प्रति विश्वास करो तुम्हारे लिये उत्तम है और यदि तुमने नकार दिया तो आकाशों एवं पृथ्वी में जो भी है अल्लाह का है ।[1] तथा अल्लाह ज्ञानी पूर्ण परिचित है ।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ

(१७१) हे अहले किताब अपने धर्म में अतिश्योक्ति न करो[2] तथा अल्लाह के ऊपर

---

[1]अर्थात तुम्हारे अविश्वास से अल्लाह का क्या बिगड़ेगा जैसे आदरणीय मूसा ने अपनी जाति से कहा था ।

﴿إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ﴾

"यदि तुम तथा जगतवासी सभी कृतघ्नता करें (तो वे अल्लाह का क्या बिगाड़ लेगें) अल्लाह निस्पृह प्रशस्त है ।" (*सूरः इब्राहीम-८*)

तथा हदीस क़ुदसी में है । अल्लाह कहता है कि मेरे भक्तों ! यदि तुम्हारे प्रथम एवं अन्तिम तथा सभी मानव एवं दानव उस एक पुरुष के हृदय के समान हो जायें जो तुममें सबसे संयमी है तो इससे मेरे राज्य में अधिकता न होगी । तथा यदि तुम्हारे पूर्व एवं अन्तिम मानव तथा दानव उस एक पुरुष के हृदय के समान हो जायें जो तुम में सर्वाधिक अवज्ञ है तो इससे मेरे राज्य में कोई कमी नहीं होगी । हे मेरे भक्तों ! तुम सभी एक भूमि में एकत्र हो जाओ तथा मुझसे प्रश्न करो तथा मैं प्रत्येक पुरुष को उसके प्रश्नानुसार दूँ तो उससे मेरे कोष में इतनी ही क़मी होगी जितनी सूई को समुद्र में डुबा कर निकालने से समुद्र जल में होती है (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र)

[2] غلو का अर्थ अतिश्योक्ति (किसी चीज़ को बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करना) है । जैसे ईसाईयों ने आदरणीय ईसा तथा उनकी माता के विषय में किया कि उनको रिसालत तथा वन्दगी के स्थान से उठा कर पूज्य के पद पर आसीन कर दिया । और उनकी अल्लाह की तरह पूजा करने लगे । इसी प्रकार आदरणीय ईसा के अनुयायियों को भी अतिश्योक्ति का प्रदर्शन करके उन्हें निर्दोष (प्राकृतिक निष्पाप) बनाकर उन्हें निषेध अथवा वैध बनाने का अधिकार दे दिया । जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ﴾

"उन्होंने अपने ज्ञानियों तथा महात्माओं को अल्लाह के अतिरिक्त अराध्य बना लिया ।" (*सूरः अल-तौबा-३१*)

सत्य ही बोलो, वस्तुत: मरियम के पुत्र ईसा मसीह मात्र अल्लाह के दूत एवं शब्द हैं[1] जिसे मरियम की तरफ डाल दिया तथा उसकी ओर

إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ

यह अराध्य बनाना हदीस के अनुसार उनके मान्य किये हुये को उचित तथा वर्जित किये हुये को निषेध समझना था। जबकि वास्तव में यह अधिकार मात्र अल्लाह को है परन्तु अहले किताब ने यह अधिकार अपने ज्ञानियों आदि को दे दिया। अल्लाह तआला ने इस आयतों में अहले किताब को धर्म में इसी अतिश्योक्ति से मना किया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी ईसाईयों के इस अतिश्योक्ति को देखते हुये अपने विषय में अपने अनुयायियों को सचेत किया।

«لاَ تُطْرُونِي كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارَىٰ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ؛ فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ، فَقُولُوا: عَبْدُاللهِ وَرَسُولُه».

"तुम मुझे उस प्रकार सीमा से अधिक न बढ़ाना जिस प्रकार ईसाईयों ने ईसा पुत्र मरियम को बढ़ाया है, मैं तो केवल अल्लाह का भक्त हूँ, बस तुम मुझे उसका भक्त और रसूल ही कहना।" (सहीह बुख़ारी किताबुल अम्बिया, मुसनद अहमद, भाग १ पृष्ठ २३, तथा देखिये मुसनद अहमद भाग १ पृष्ठ १५३)

परन्तु अफ़सोस है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत भी इसके उपरान्त इस अतिश्योक्ति से सुरक्षित न रह सकी जिसमें ईसाई लीन हुए और मुसलमान भी अपने पैग़म्बर अपितु पुनीत भक्तों तक को ईश्वरीय गुणों से युक्त कर दिया, जो वास्तव में ईसाईयों का आचरण था। इसी प्रकार विद्वानों और धर्मशास्त्रियों (इस्लामी शोध कर्ताओं) को भी धर्म का भाष्यकार मानने के अतिरिक्त उनको धार्मिक नियमों को बनाने का अधिकार दे दिया है। (فَإِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ). सत्य कहा था नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने।

«لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حَذْوَ النَّعْلِ بِالنَّعْلِ».

"जिस प्रकार से एक जूता दूसरे जूते के बराबर होता है, बिल्कुल उसी प्रकार तुम विगत उम्मतों का अनुगमन करोगे।"

[1]अल्लाह के शब्द का अर्थ यह है कि शब्द كُنْ (हो जा) से पिता के बिना उनकी उत्पत्ति हुई। और यह शब्द आदरणीय जिब्रील के द्वारा आदरणीय मरियम तक पहुँचाया गया। अल्लाह की आत्मा का अर्थ वह फूंक है, जो आदरणीय जिब्रील ने अल्लाह के आदेश से आदरणीय मरियम के गरेबान में फूंका, जिसे अल्लाह तआला ने पिता के वीर्य के स्थान पर बना दिया। इस प्रकार ईसा अल्लाह के शब्द भी हैं जो फ़रिश्ते ने आदरणीय मरियम की ओर डाला और उसकी वह आत्मा हैं जिसे लेकर जिब्रील मरियम की ओर भेजे गये। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

وَلَا تَقُولُوا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۱۷۱﴾

से आत्मा हैं अतः अल्लाह तथा उसके रसूलों के प्रति विश्वास करो तथा न कहो कि अल्लाह तीन हैं,[1] रुक जाओ यह तुम्हारे लिये भला है। वस्तुतः तुम्हारा पूज्य मात्र एक अल्लाह है। वह पवित्र है कि उसकी कोई संतान हो उसी के अधिपत्य में है जो आकाशों एवं पृथ्वी में है तथा अल्लाह काम बनाने के लिये पर्याप्त है।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿۱۷۲﴾

(१७२) मसीह अल्लाह के दास होने से कदापि घृणा नहीं करते और न निकटवर्ती फ़रिश्ते।[2] और जो अल्लाह की इबादत से घृणा तथा अभिमान करेगा। वह उन सभी को अपनी ओर एकत्रित करेगा।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ

(१७३) परन्तु जो ईमान लाये एवं सत्कर्म किये उन्हें उनका पूरा प्रतिफल देगा तथा अपनी अनुकम्पा से और भी अधिक देगा[3]

---

[1]ईसाईयों के कई गुट हैं। कुछ आदरणीय ईसा को अल्लाह, कुछ अल्लाह के साझी और कुछ अल्लाह का पुत्र मानते हैं। फिर जो अल्लाह मानते हैं वह त्रिमूर्ति (तीन भगवान) के तथा आदरणीय ईसा को तीन में से एक होने पर विश्वास करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि तीन भगवान कहने से रुक जाओ, अल्लाह तआला मात्र एक है।

[2]आदरणीय ईसा की भाँति कुछ लोगों ने फ़रिश्तों को भी अल्लाह का साझी बना रखा था। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि यह सबके सब अल्लाह के भक्त हैं, और इससे उन्हें कदापि कोई इंकार नहीं है। तुम उनको अल्लाह अथवा उसकी अराध्यता में किस आधार पर मिश्रित करते हो।

[3]कुछ ने इस 'अधिक' से तात्पर्य यह लिया है कि अल्लाह तआला ईमानवालों को शफ़ाअत (अभिस्ताव) की अनुमति प्रदान करेगा, इस शफ़ाअत (अनुशंसा) की अनुमति पाकर जिनके लिए अल्लाह चाहेगा शफ़ाअत करेंगे।

किन्तु जो घृणा किये तथा घमन्ड किये[1] उन्हें दु:खद यातना देगा [2] तथा वे अल्लाह के सिवाय अपने लिए कोई संरक्षक और सहायक नहीं पायेंगे।

فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾

(१७४) हे मानव गण ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से तर्क आ चुका है[3] तथा हमने तुम्हारी ओर ज्वलंत प्रकाश (पवित्र क़ुरआन) उतार दिया है।[4]

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾

(१७५) फिर जो लोग अल्लाह के प्रति विश्वास कर लिये और उसे दृढ़ता से पकड़ लिये उन्हें अपनी कृपा एवं अनुकम्पा में प्रवेशित करेगा तथा उन्हें अपने ओर का सत्यमार्ग दर्शायेगा।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾

(१७६) वे आप से प्रश्न करते हैं। आप कह दें तुम्हें अल्लाह कलाल: के विषय में निर्देश

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِى الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ

---

[1]अर्थात अल्लाह की आराधना व आज्ञा पालन से रुके रहे और इससे इंकार तथा अहंकार करते रहे।

[2]इस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ﴾

"नि:सन्देह जो लोग मेरी वन्दना से इंकार तथा घमंड करते हैं, अवश्य अपमानित तथा लज्जित होकर नरक में प्रवेश करेंगे।" (सूर: *अल-मोमिन*-६०)

[3]बुरहान, का अर्थ है ऐसा अकाट्य तर्क, जिसके पश्चात किसी को बहाने का कोई अवसर न रहे, ऐसी युक्ति जिससे हर प्रकार की शंकायें समाप्त हो जायें, इसीलिए इसे आगे प्रकाश ज्योति कहा गया है।

[4]इससे तात्पर्य पवित्र क़ुरआन है जो अविश्वास तथा मिश्रण के अंधकार में प्रकाश है। अपमान की पगडंडियों पर सीधा मार्ग तथा अल्लाह तआला की सशक्त रस्सी है अत: इसके अनुसार विश्वास वाले अल्लाह की दया एवं कृपा के पात्र होंगे।

لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗٓ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَآ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانُوْٓا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ

करता है[1] कि यदि किसी पुरुष की मौत हो जाये तथा उसके उत्तराधिकारी में कोई संतान न हो और उसकी एक बहन हो तो उसके लिये छोड़े हुए (धन) का आधा है तथा वह उस (बहन) का उत्तराधिकारी है यदि उसके कोई संतान न हो,[2] यदि दो बहनें हों तो दोनों के लिये दो तिहाई है उसमें से जिसे

---

[1]कलाल: के विषय में पहले वर्णन हो चुका है कि उस मृत को कहते हैं, जिनका न पिता हो और न पुत्र। यहाँ पुन: उसके उत्तराधिकार की चर्चा हो रही है। कुछ लोगों ने कलाल: उस व्यक्ति को कहा है, जिसका केवल पुत्र न हो अर्थात पिता जीवित हो, परन्तु यह सही नहीं है। कलाल: की प्रथम परिभाषा ही ठीक है क्योंकि पिता की उपस्थिति में बहन उत्तराधिकारी नहीं होती है। पिता उसके विषय में बाधक बन जाता है। परन्तु यहाँ अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि यदि उसकी एक बहन हो तो वह उसके आधे धन की उत्तराधिकारी होगी, इससे यह संकेत मिलता है कि कलाल: वह व्यक्ति है, जिसकी मृत्यु के समय पुत्र के साथ-साथ पिता भी न हो। इस प्रकार पिता की अनुपस्थिति सांकेतिक से सिद्ध है।

टिप्पणी : पुत्र से तात्पर्य पुत्र तथा पौत्र दोनों हैं। इसी प्रकार बहन से तात्पर्य सगी बहन तथा सौतेली बहन (पिता की ओर से) है। (ऐसरुत्तफ़ासीर) हदीसों से सिद्ध होता है कि बहन के साथ-साथ पुत्री की उपस्थिति में बहन को आधा और पुत्री को आधा तथा पौत्री के उपस्थिति में पुत्री को आधा पौत्री को छठाँ भाग तथा बहन को शेष अर्थात एक तिहाई दिया गया। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर) इससे ज्ञात हुआ कि मृतक की संतान हो तो बहन को एक भागीदार के रूप में कुछ नहीं मिलेगा। यदि वह संतान पुत्र हो तो किसी प्रकार से कुछ नहीं मिलेगा। और यदि पुत्री हुई तो बहन अस्बा बनकर साझीदार हो जायेगी। और शेष ले लेगी। यह शेष एक पुत्री की उपस्थिति में आधा तथा एक से अधिक की उपस्थिति में एक तिहाई होगा। (अस्बा वह होता है जिसका भाग निर्धारित न हो किन्तु जिनका भाग निर्धारित है उनसे जो शेष बच जाये, उसे पा जाये तथा उनके न होने पर पूरे धन का अधिकारी बन जाये)

[2]इसी प्रकार पिता भी न हो। इसलिए कि पिता भाई की अपेक्षा निकट है। पिता की उपस्थिति में भाई उत्तराधिकारी नहीं होता। यदि उस कलाल: स्त्री के पति अथवा कोई माता से जन्म लिया भाई होगा, तो उनका भाग निकालने के पश्चात, शेष माल का उत्तराधिकारी भाई होगा। (इब्ने कसीर)

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوْا وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ

वह छोड़ गया[1] और यदि भाई बहन दोनों हों पुरूष भी और स्त्रियाँ भी, तो पुरुष के लिये दो स्त्रियों के बराबर (भाग) है [2] अल्लाह तुम्हारे लिये वर्णन कर रहा है ताकि तुम भटक न जाओ तथा अल्लाह सर्वज्ञ है।

सूरतुल मायेद:-५

سُوْرَةُ الْمَائِدَةِ

सूरतुल मायद: मदीने में उतरी, इसमें एक सौ बीस आयतें और सोलह रूकूउ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अति कृपालु तथा अति दयालु है।

يَآأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ أَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي

(१) हे ईमानवालो ! बंधनों (वचनों) को पूरा करो,[3] तुम्हारे लिये चौपाये पशु वैध कर दिये गये हैं[4] उनके सिवाये जो पढ़कर तुमको

---

[1]यही आदेश दो से अधिक बहनों की अवस्था में होगा। अर्थात यह अर्थ हुआ कि यदि कलाल: व्यक्ति की दो अथवा दो से अधिक बहनें होंगी तो उन्हें कुल माल का दो तिहाई मिलेगा।

[2]अर्थात कलाल: के उत्तराधिकारी मिले जुले हों स्त्री-पुरुष दोनों हों तो फिर एक पुरुष दो स्त्रियों के समान के नियम से त्यक्त धन का वितरण होगा।

[3] عقود बहुवचन है عقد का, जिसका अर्थ है गाँठ लगाना। इसका प्रयोग किसी वस्तु में गाँठ लगाने के लिये भी होता हो और पक्का दृढ़ वचन करने पर भी। यहाँ इससे तात्पर्य वह अल्लाह के आदेश हैं अल्लाह तआला ने जिनके पालन का भार मानव पर रखा है तथा वह वचन तथा सम्बन्ध भी हैं, जो मनुष्य आपस में करते हैं। दोनों को पूरा करना आवश्यक है।

[4] بَهِيمة चौपाये पशु को कहा जाता है। इसका मूल धातु بَهْم - إبهام है। कुछ का कहना है कि इनकी बातचीत तथा बुद्धि एवं समझ में चूँकि संदिग्धता है, इसलिए इनको بَهِيمة कहा जाता है। أنعام ऊँट, गाय, बकरी तथा भेड़ को कहा जाता है। क्योंकि इनकी चाल में कोमलता होती है। यह पालतू चौपाये पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग मिलाकर आठ प्रकार के हैं। जिनकी विस्तृत जानकारी *सूर: अल-अनआम* की आयत संख्या १२४ में आयेगी। इसके अतिरिक्त जो पशु जंगली कहलाते हैं। जैसे : हिरन नील गाय आदि, जिनका सामान्यत:

الصَّيْدِ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ①

सुनाये जाते हैं[1] परन्तु एहराम की स्थिति में शिकार न करो, नि:संदेह अल्लाह अपनी इच्छा से आदेश देता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِّينَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ

(२) हे ईमानवालो ! अल्लाह के धर्म अनुष्ठानों का निरादर न करो,[2] न आदरणीय महीने का,[3] न बलि के लिये हरम तक ले जाये जा रहे तथा पट्टा पहनाये पशु का,[4] न आदरणीय

शिकार किया जाता है। यह भी उचित हैं। जैसा कि *सूर: अल-बकर:* की आयत संख्या १७३ में विस्तार पूर्वक वर्णन हो चुका है। नुकीले दाँत वाले वह पशु जो अपने शिकार को पकड़ कर चीरता हो। जैसे : शेर, चीता, कुत्ता, बिल्ली, भेड़िया आदि नुकीले दाँत वाले पशु हैं। वह पक्षी जो अपना शिकार पंजे से झपट कर पकड़ता है। जैसे : शिकरा, बाज़, शाहीन, गिद्ध आदि।

[1]इसका विस्तार पूर्वक वर्णन आयत संख्या ३ में आ रहा है।

[2] شعـــائر बहुवचन है شعيرة का इससे तात्पर्य अल्लाह के द्वारा निषेधित आदर स्वरूप है (जिनका आदर तथा सम्मान अल्लाह ने निर्धारित किया है) । कुछ ने इसे सामान्य रूप रखा है, और कुछ के निकट यहाँ हज तथा उमर: की धार्मिक रीति से तात्पर्य है। अर्थात इनका अनादर तथा अपमान न करो इसी प्रकार हज तथा उमर: के पूर्ण करने में किसी के मध्य रुकावट भी न बनो क्योंकि यह भी अनादर है।

[3]शहरुल हराम से तात्पर्य आदरणीय चार महीने (रजब, ज़ुलक़ादा, ज़ुलहिज्जा, तथा मोहर्रम) हैं इन का आदर स्थापित रखो और उनमें हत्या न करो। कुछ ने इससे केवल एक महीना अर्थात ज़ुलहिज्जा का महीना (हज का महीना) लिया है। कुछ ने इस आदेश को ﴿فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ﴾ से निरस्त माना है । परन्तु इसकी आवश्यकता नहीं दोनों ही आदेश की अपनी-अपनी परिधि है जिनसे इंकार नहीं।

[4]हदी ऐसे पशु को कहा जाता है, जो हाजी हरम में बलि देने के लिए साथ ले जाते थे। قلائـد बहुवचन है قلادة का जो, गले के पट्टे को कहा जाता है, यहाँ हज के समय पर बलि दिये जाने वाले उन पशुओं से तात्पर्य लिया गया है। जिनके गलों में चिन्ह तथा पहचान के लिए पट्टे डाल दिये जाते हैं। परन्तु قلائد से उद्देश्य वही पशु हुए, जिन्हें हरम ले जाया जाता है । यहाँ हदी का विशेष रूप से वर्णन करके स्पष्ट कर दिया गया है। अर्थात इन पशुओं को किसी से छीना न जाये तथा उनके हरम तक पहुँचने में कोई रुकावट न डाली जाये।

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ أَنْ صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ تَعْتَدُوا ۘ وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢﴾

घर (काअ़बा) को जा रहे लोगों का, जो अल्लाह की दया एवं अनुग्रह की खोज कर रहे हैं,[1] तथा जब एहराम खोलो तो फिर शिकार कर सकते हो[2] तथा जिन्होंने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका उनकी शत्रुता तुम्हें सीमा लाँघ जाने पर तैयार न करे,[3] तथा स्वभाव एवं संयम पर परस्पर सहायता करो, पाप तथा अत्याचार में सहायता न करो[4] और अल्लाह से डरते रहो, निश्चय अल्लाह कठिन यातना देने वाला है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ

(३) तुम पर निषेध कर दिया गया है मुरदार, तथा रक्त, एवं सूअर का मांस तथा जिस पर

---

[1]अर्थात हज व उमर: के विचार से अथवा व्यापार के उद्देश्य से हरम जाने वाले लोगों को न रोको तथा न उन्हें कष्ट दो। कुछ व्याख्याकारों के निकट यह आदेश उस समय के हैं जब मुसलमान तथा मूर्तिपूजक एक साथ हज तथा उमर: करते थे। परन्तु जब यह आयत उतरी,

﴿إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَٰذَا﴾

"मूर्तिपूजक तो अपवित्र हैं, बस इस वर्ष के पश्चात ख़ाना काअ़बा के निकट न जाने पायें।" (*सूर: अल-तौबा-२८*)

तो मूर्तिपूजकों के विषय में यह आदेश निरस्त हो गया है और यह आदेश मुसलमानों के विषय में है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यहाँ आदेश कारण बताने अर्थात औचित्य बताने के लिये है। अर्थात जब एहराम खोल दो, तो शिकार करना तुम्हारे लिए उचित है।

[3]अर्थात यदि मक्का के मूर्तिपूजकों ने सन् ६ हिजरी में मस्जिदे-हराम में प्रवेश करने से रोक दिया था, परन्तु तुम उनके इस रोकने के कारण उनके साथ अत्याचार तथा दुर्व्यवहार का मार्ग न अपनाना। शत्रु के साथ भी ज्ञान तथा क्षमा का पाठ दिया जा रहा है।

[4]यह एक अति विशेष नियम का वर्णन है, जो मुसलमान का पग-पग पर मार्गदर्शन कर सकता है। काश, मुसलमान इस नियम को अपना सकें।

بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۣ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ۭ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ۭ اَلْيَوْمَ يَىِٕسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ

अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का नाम पुकारा गया हो[1] तथा गला घुट कर मरा,[2] तथा चोट से मरा,[3] एवं गिरकर मरा[4] तथा अन्य पशु के सींघ मारने से मरा[5] और जिसका कुछ अंश हिंसक जन्तु ने खा लिया हो[6] परन्तु जिसे तुमने वध कर दिया,[7] तथा जो थानों पर वध किया

---

[1]यहाँ से उन हराम (प्रतिवन्धित) वस्तुओं का वर्णन प्रारम्भ होता है, जिनका संकेत सूर: के आरम्भ में दिया गया है। आयत का इतना भाग सूर: *अल-बक़र:* में गुज़र चुका है। (देखिए आयत संख्या १७३)

[2]गला कोई व्यक्ति घोट दे अथवा किसी चीज़ से फंस कर स्वयं गला घुंट जाये। दोनों अवस्था में मृत जानवर हराम है

[3]किसी ने पत्थर, लाठी अथवा कोई अन्य चीज मारी जिससे वह बिना वध (इस्लामी विधि के अनुसार गले पर छुरी चलाना) किये ही मर गया। अज्ञान काल में ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था। इस्लामी धर्म नियम ने मना कर दिया।

बन्दूक़ का शिकार : बन्दूक़ से शिकार किए हुए जानवरों के विषय में आलिमों (इस्लामी धर्मगुरुओं) के मध्य मतभेद है। इमाम शौकानी ने एक हदीस से भावार्थ निकालते हुए, बन्दूक़ के शिकार को उचित माना है। (फ़तहुल क़दीर) अर्थात यदि बिस्मिल्लाह पढ़ कर गोली चलायी गयी और शिकार वध करने से पूर्व ही मर गया तो उसका खाना इस कथन के आधार पर उचित है।

[4]चाहे वह स्वयं गिरा हो अथवा किसी ने पहाड़ आदि से धक्का देकर गिराया हो।

[5] نطيحة शब्द منطوحة के अर्थ में है। अर्थात किसी ने उसे टक्कर मार दी तथा बिना वध किये वह मर गया।

[6]अर्थात शेर, चीता, तथा भेड़िया आदि जैसे हिंसक जन्तु ने उसे खाया हो तथा वह मर गया हो। अज्ञान काल में मर जाने के उपरान्त ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था।

[7]साधारण व्याख्याकारों के निकट यह छूट सभी वर्णित जानवरों के लिए है अर्थात गला घोंटने से चोट द्वारा घायल, ऊँचे स्थान से गिरने से अथवा टक्कर द्वारा अथवा किसी हिंसक जन्तु द्वारा घायल जानवर। यदि तुम इस अवस्था में पाओ कि उनमें जीवन की किरण पायी जाती हो और फिर तुम उसे इस्लामी नियम के अनुसार वध कर लो, तो फिर तुम्हारे लिए खाना उचित होगा।

فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ۚ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ③

जाये[1] तथा पाँसे (लाटरी) द्वारा बाँटना[2] यह सभी महापाप है। आज काफ़िर (मूर्तिपूजक) तुम्हारे धर्म की ओर से निराश हो गये। अत: उनसे न डरो मात्र मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिये धर्म को परिपूर्ण कर दिया तथा तुम पर अपनी अनुकम्पा पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम धर्म को पसन्द कर लिया।

जीवन के लक्षण ये हैं कि वध करते समय जानवर फड़के और टाँगें मारे। यदि छुरी फेरते समय यह लक्षण प्रदर्शित न हों तो समझ लो यह मृत है।

ज़िब्ह की धार्मिक विधि यह है कि बिस्मिल्लाह पढ़ कर तेज धार वस्तु से उसका गला इस प्रकार काटा जाये कि रगें कट जायें। वध के अतिरिक्त नहर भी मान्य है। जिसकी विधि यह है कि खड़े जानवर के गले पर छुरी मारी जाये (ऊँट का नहर किया जाता है) जिससे गले और रक्त की विशेष नसें कट जाती हैं और सारा रक्त बह जाता है।

[1]मूर्तिपूजक अपनी मूर्तियों के निकट पत्थर अथवा कोई वस्तु गाड़ करके विशेष स्थान बनाते थे। जिसे थान अथवा आसताना कहते थे। उसी पर मूर्तियों के नाम पर चढ़ाये गये जानवरों की बलि देते थे अर्थात यह ﴿وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ﴾ ही का एक रूप था। इससे ज्ञात हुआ कि आसतानों, मक़बरों तथा दरगाहों पर जहाँ लोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिये जाते हैं, और वहाँ पर गड़े व्यक्ति की प्रसन्नता के लिए जानवरों (मुर्ग़ा, बकरा आदि) की बलि देते हैं अथवा पके हुए खाने बाँटते हैं, उनका खाना वर्जित है यह وما ذبح على النصب में आता है।

[2] ﴿وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا﴾ के दो अर्थ किये गये हैं, एक तीरों के द्वारा बाँटना, दूसरे तीरों के द्वारा भाग्य मालूम करना। पहले अर्थ के विषय में कहा जाता है कि जूए आदि में बधित किये हुए जानवरों के बँटवारे के लिए यह तीर होते थे, जिसमें किसी को कुछ मिल जाता, कोई वंचित रह जाता। दूसरे अर्थ के अनुसार कहा गया है कि ازلام से तात्पर्य तीर हैं, जिनके द्वारा किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व भाग्य विचारते थे। उन्होंने तीन प्रकार के तीर बना रखे थे। एक (कर), दूसरे में (न कर) तथा तीसरे में कुछ नहीं होता था। (कर) वाला तीर निकल आता तो काम करते। (न कर) वाला तीर निकल आता तो न करते और तीसरा तीर निकल आता तो फिर दोबारा विचारते। यह भी एक ज्योतिष तथा अल्लाह के अतिरिक्त अन्य से माँगने के मार्ग का ही एक रूप है, इसलिए इसे भी वर्जित कर दिया गया। استقسام का अर्थ ही भाग्य का पता लगाना है। अर्थात तीरों के द्वारा भाग्य के विषय में जानने का प्रयत्न करते थे।

परन्तु जो भूख में आतुर हो जाये और कोई पाप न करना चाहता हो तो निश्चय अल्लाह क्षमानिधि कृपानिधि है ।[1]

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ۭ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۡ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ④

(४) वह आप (नराशंस) से प्रश्न करते हैं कि उनके लिये क्या (खाना) वैध है आप कह दें कि तुम्हारे लिये पवित्र वस्तुऐं उचित हैं[2] तथा वह शिकारी जानवर जो तुमने सधा रखे हों जिनको कुछ बातें सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखलाई[3] तो यदि तुम्हारे लिये वह (शिकार) को दबोच रखें और उसे छोड़ते समय अल्लाह का नाम उस पर लो तो उसे (शिकार को) खाओ[4] तथा अल्लाह से डरो, निःसन्देह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है ।

---

[1]यह भूख की व्याकुलता की परिस्थति में वर्जित खाने की अनुमति है, परन्तु इसके द्वारा अल्लाह की अवज्ञा तथा सीमा उल्लंघन का विचार न हो, केवल प्राण रक्षा ही अभिप्रेत हो ।

[2]इससे वे सभी चीजों का तात्पर्य है जो उचित हैं । प्रत्येक उचित पवित्र है और वर्जित अपवित्र है

[3] جارح का बहुवचन جوارح है, जो दूसरों के लिए शिकार करने के लिए हैं जिसका तात्पर्य शिकारी कुत्ता, बाज़, चीता, शिकंरा तथा अन्य शिकारी पक्षी तथा हिंसक पशु हैं । مکلبین का अर्थ है शिकार पर छोड़ने से पूर्व उनको शिकार के लिए सिखाया गया हो, सिखाने का अर्थ है कि जब उसे शिकार पर छोड़ा जाये, तो दौड़ता हुआ जाये, जब रोक दिया जाये तो रुक जाये, बुलाया जाये तो वापस आ जाये ।

[4]ऐसे सिखाये हुए जानवरों का शिकार किया हुआ जानवर दो प्रतिबन्धों के साथ वैध है एक यह कि उसे शिकार पर छोड़ते समय बिस्मिल्लाह पढ़ ली गयी हो । दूसरा यह कि शिकारी जानवर शिकार करके अपने मालिक के लिए रख छोड़े और उसकी प्रतीक्षा करे, स्वयं न खाये । यद्यपि उसने उसे मार भी डाला हो, तब भी वह मृतक शिकार किया हुआ जानवर उचित होगा, जबकि उसके शिकार के लिए सिखाये तथा छोड़े हुए जानवर के अतिरिक्त किसी अन्य जानवर का सम्मिलित न हो । (सहीह बुखारी, कितुज़्जबाएहे वस्सैदे-मुस्लिम किताबुस्सैदे)

(५) आज सभी पवित्र वस्तुऐं तुम्हारे लिए विधि अनुकूल कर दी गयीं तथा अहले किताब का खाद्य तुम्हारे लिये वैधानिक है[1] तथा तुम्हारा खाद्य उनके लिये विधि अनुकूल (जायज) है तथा सत्यव्रता मुसलमान नारियां और जो तुमसे पूर्व किताब (धर्मशास्त्र) दिये गये उनमें से सत्यव्रता नारियां[2] जब तुम उन्हें उनका विवाह मूल्य (महर) दे दो विवाह करके व्यभिचार के लिये नहीं और न गुप्त प्रेमिक बनाने के लिये, तथा जो ईमान को नकार दे उसका कर्म व्यर्थ हो गया तथा वह परलोक में घाटे में रहेगा।

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْۤ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ؗ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۟ ۧ

(६) हे ईमान वालों ! जब तुम नमाज के लिये उठो तो अपने मुँह, तथा कोहनियों सहित

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ

---

[1]अहले किताब का वही वध किया पशु उचित होगा, जिसमें रक्त बह गया होगा। अर्थात उनका मशीन द्वारा वध उचित नहीं है क्योंकि इस में रक्त का बहना जो आवश्यक है पाया नहीं जाता।

[2]अहले किताब की स्त्रियों के साथ विवाह की अनुमति के साथ एक तो सुचरित्रता सतीत्व आवश्यक है, जो आजकल अधिकतर अहले किताब स्त्रियों में नहीं मिलता है। दूसरे उसके पश्चात यह कहा गया है कि जो ईमान के साथ कुफ्र करे, उसके कर्म नष्ट हो गये। इस से यह चेतावनी देना है कि यदि ऐसी स्त्री से विवाह करने से ईमान के नष्ट होने का भय है, तो यह बहुत हानिकर व्यापार है। और आजकल अहले किताब की स्त्रियों से विवाह करने में ईमान को जो ख़तरा है, उसके वर्णन की आवश्यकता नहीं। अर्थात इस का उद्देश्य यह है कि ईमान का बचाना अनिवार्य है। एक अनुमति पूर्ण कार्य के लिए अनिवार्य को ख़तरे में नहीं डाला जा सकता। इसलिए इसका औचित्य उस समय तक अनुचित रहेगा, जब तक ये दोनों उपरोक्त कमियाँ उनसे दूर न होंगी। इसके अतिरिक्त आजकल के अहले किताब अपने धर्म से बिल्कुल अज्ञान अपितु विमुख एवं विद्रोही हैं। इन परिस्थितियों में क्या वास्तव में उनकी गणना अहले किताब में हो भी सकती है ? والله أعلم

अपने हाथों को धो लिया करो[1] और अपने सिर का मसह (दोनो हाथ तर करके सिर पर फेरना) कर लो[2] तथा अपने पाँव टखनों समेत धुल लो,[3] और यदि तुम अपवित्र हो तो स्नान कर लो[4] और यदि तुम रोगी अथवा यात्रा पर	وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ

---

[1]"मुहँ धोओ।" अर्थात एक-एक, दो-दो अथवा तीन-तीन बार दोनो हाथ कलाईयों तक धोने, कुल्ली करने, नाक में पानी डालकर छिनकने के पश्चात। जैसाकि हदीस से सिद्ध है। मुँह धोने के पश्चात हाथों को कोहनियों तक धोया जाये।

[2]मसह (अर्थात दोनों हाथ भींगा कर सर पर फेरना) पूरे सिर का किया जाये, जैसाकि हदीस से सिद्ध है "अपने हाथ आगे से पीछे (पश्चात मस्तक) तक ले जाये और फिर वापस वहाँ से आगे लाये जहाँ से प्रारम्भ किया था।" इसी के साथ कानों का मसह करले यदि सिर पर पगड़ी अथवा मुरेठा हो तो हदीस के अनुसार मोज़ों की भाँति उस पर भी मसह उचित है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल तहार:) इस प्रकार एक बार मसह कर लेना पर्याप्त है।

[3] أرجلكم का लगाव وجوهكم से है अर्थात अपने पैर टखनों तक धुलो, तथा यदि मोज़े अथवा इस प्रकार के अन्य वस्त्र पैरों पर चढ़े हों तो (जबकि वज़ू की अवस्था में पहना हो) सहीह हदीस के अनुसार पैर धोने के बजाय मोज़ों आदि पर मसह भी उचित है।

टिप्पणी : १. यदि पहले से वज़ू रहे तो नया वज़ू करना आवश्यक नहीं है परन्तु प्रत्येक नमाज़ के लिए नया वज़ू करना अच्छा है। २. वज़ू से पहले नीयत अनिवार्य है। ३. वज़ू से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना आवश्यक है ४. दाढ़ी घनी हो, तो उसका ख़िलाल (बालों में अंगूली फेरना कंघी की भाँति) किया जाये। ५. अंगों को क्रमानुसार धोया जाये ६.उनके मध्य देरी न की जाये। अर्थात एक अंग को धोने के पश्चात दूसरे अंग को धोने में देरी न की जाये। वल्कि सभी अंगों को कमानुसार एक के बाद दूसरे को धोया जाये ७. वज़ू करने वाले अंग के भागों में से कोई भी भाग सूखा रह जाये, तो वज़ू न होगा। ८. कोई भी अंग तीन बार से अधिक न धोया जाये। ऐसा करना सुन्नत के विपरीत है। (तफ़सीर इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर तथा ऐस रुत्तफ़ासीर)

[4]अपवित्रता से तात्पर्य वह अपवित्रता है जो स्वप्न दोष अथवा पत्नी से सम्भोग के कारण होती है। और इसी आदेशाधीन में मासिक धर्म तथा प्रसव रक्त भी है। मासिक धर्म तथा प्रसव रक्त रुक जाये तो पवित्रता के लिए स्नान करना अनिवार्य है। परन्तु पानी न मलने की स्थिति में तयम्मुम की अनुमति है। (फ़तहुल क़दीर तथा ऐसरुत्तफ़ासीर)

النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُم مِّنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُم مِّنْ حَرَجٍ وَلَٰكِن يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٦﴾

हो अथवा तुम में से कोई वर्चस्थान से आये अथवा तुम पत्नी से मिले हो और जल न मिले तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लो उसे अपने चेहरों तथा हाथों पर मलो[1] अल्लाह तुम पर तंगी नहीं चाहता[2] परन्तु तुम्हें पवित्र बनाना चाहता है और ताकि तुम पर अपनी पूरी कृपा करे[3] और ताकि तुम कृतज्ञ रहो।

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُم بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧﴾

(७) तथा अपने ऊपर अल्लाह की कृपा तथा उस प्रतिज्ञा को स्मरण करो जिसकी तुमसे पुष्टी कराई जब तुमने कहा कि हमने सुना और मान लिया तथा अल्लाह (तआला) से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह (तआला) दिलों की बातों का जानकार (अन्तर्यामी) है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۖ

(८) हे ईमानवालो ! अल्लाह के लिये सत्य पर दृढ़, न्याय पर साक्षी हो[4] जाओ तथा किसी क़ौम

---

[1]इसकी संक्षिप्त व्याख्या तथा तयम्मुम की विधि सूर: अल-निसा की आयत संख्या ४३ में आ चुकी है सहीह बुख़ारी में इसके उतरने के विषय में आता है कि एक यात्रा में बैयदा नामक स्थान पर आदरणीय आयशा का हार खो गया। जिसके कारण रुकना पड़ा अथवा रुके रहना पड़ा। भोर की नमाज़ के लिए लोगों के पास पानी नहीं था और खोजने पर पानी न मिला इस समय यह आयत उतरी, जिसमें तयम्मुम की आज्ञा दी गयी। आदरणीय उसैद बिन हुदैर ने आयत सुनकर कहा हे आले अबूबक्र ! तुम्हारे कारण अल्लाह ने लोगों के लिए सुविधायें उतारीं और यह तुम्हारे कारण कोई प्रथम सुविधा नहीं है। (तुम लोगों के लिए पूर्ण विभुति हो) (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: अल-मायद:*)

[2] इसीलिए तयम्मुम की अनुमति प्रदान कर दी है।

[3]इसीलिए हदीस में वज़ू करने के पश्चात दुआ करने पर बल दिया गया है। दुआओं (प्रार्थनाओं) की किताब से यह दुआ याद कर ली जाये।

[4]पहले वाक्य की व्याख्या सूर: अल-निसा आयत संख्या १३५ तथा दूसरे वाक्य की सूर: *अल-मायद:* के प्रारम्भ में आ चुकी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ۭ اِعْدِلُوْا ۣ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑧

की शत्रुता तुम्हें न्याय न करने पर तत्पर (तैयार) न करे, न्याय करो वह संयम से निकटतम है तथा अल्लाह से डरो वस्तुत: अल्लाह तुम्हारी कर्मों से सूचित है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ⑨

(९) जिन्होंने विश्वास किया तथा सदाचार किये अल्लाह ने उनको क्षमा एवं भारी प्रतिफल का वचन दिया है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ⑩

(१०) और जिन्होंने विश्वास नहीं किया तथा हमारे आदेशों को झुठलाया वही नरक के पात्र हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ

(११) ऐ ईमानवालों ! अल्लाह (तआला) ने जो उपकार तुम पर किये हैं, उसे याद करो जब कि एक जाति ने तुम पर अत्याचार करना चाहा, तो अल्लाह (तआला) ने उनके हाथों को तुम तक पहुँचने से रोक दिया।[1] और

न्यायिक गवाही का कितना महत्व है इसका आभास उस घटना से होता है जो हदीस में आती है, कि आदरणीय नौमान बिन बशीर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो गया) कहते हैं कि मेरे पिता ने मुझे कुछ अनुदान दिया तो मेरी माता ने कहा कि इस उपहार पर जब तक आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गवाही नहीं बनायेगें, मैं संतुष्ट नही हूँगी। अत: मेरे पिता नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, क्या तुमने अपनी सभी सन्तान को इसी प्रकार अनुदान दिया है ? तो उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह से डरो ! और सन्तान के मध्य न्याय करो। और फ़रमाया, मैं अत्याचार पर गवाह नहीं बनूँगा। (सहीह बुख़ारी तथा मस्लिम, किताबुल हिबा)

[1]इसके अवतरण की विशेषता के हेतु व्याख्याकारों ने विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया है। जैसे उस गंवार की घटना, कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक यात्रा से लौटते समय एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगे। तलवार वृक्ष पर लटक रही थी। उस गंवार ने वह तलवार पकड़ कर आप पर तान ली और कहने लगा, हे "मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप को मुझसे कौन बचायेगा ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

अल्लाह (तआला) से डरते रहो तथा ईमानवालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए।

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ

(१२) और अल्लाह तआला ने इस्राईल के पुत्रों से वचन लिया।[1] और उन्हीं में से बारह सरदार हम ने नियुक्त किये।[2] और अल्लाह (तआला) ने फ़रमा दिया, मैं निःसन्देह तुम्हारे

वसल्लम ने विना झिझक उत्तर दिया, अल्लाह (अर्थात अल्लाह बचायेगा) यह कहना था कि तलवार उसके हाथ से गिर गयी। कुछ कहते हैं कि काअब बिन अशरफ़ और उसके साथियों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के सहचरों के विरुद्ध, जब कि आप वहाँ पर विराजमान थे, धोखा तथा छल से हानि पहुँचाने का षडयन्त्र रचा था, जिससें अल्लाह तआला ने आप को बचाया। कुछ कहते हैं कि एक मुसलमान के हाथ से दो आमिरी व्यक्ति की हत्या भ्रान्ति के कारण हो गयी थी। उनकी देयत की आपूर्ति में यहूदियों के क़बीले बनू नदीर से सन्धि अनुसार जो सहयोग लेना था, उसकी आपूर्ति के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं अपने साथियों सहित वहाँ पधारे और एक दीवार से टेक लगाकर बैठ गये। उन्होंने यह षडयन्त्र रचा कि ऊपर से चक्की का पत्थर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर गिरा दिया जाये, जिसे अल्लाह तआला ने वह्यी (प्रकाशना) द्वारा आप को अवगत करा दिया। संभवतः इन सारी घटनाओं के पश्चात यह आयत उतरी हो। क्योंकि एक आयत के उतरने के कई कारण तथा परिस्थितियाँ हो सकती हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर, ऐसारूत्तफ़ासीर, फ़तहुल कदीर)

[1]जब अल्लाह तआला ने ईमानवालों को वह वचन पूरा करने के लिए कहा, जो उसने उनसे परम आदरणीय मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा लिया, और उन्हें सत्य की स्थापना तथा न्यायिक गवाही का आदेश दिया और उन्हें उन पुरस्कार को याद दिलाया जो उन पर प्रत्यक्ष और एवं गुप्त रूप से हुए तथा विशेष रूप से यह बात की उन्हें सत्य तथा सही मार्ग पर चलने का अवसर प्रदान किया, तो अब इस स्थान पर उस वचन का वर्णन किया जा रहा है, जो इस्राईल की सन्तान से लिया गया और जिसमें वे असफल रहे। यह मानो उनके माध्यम से मुसलमानों को चेतावनी दी जा रही है कि तुम भी कहीं इस्राईल की सन्तान की भाँति वचन भंग प्रारम्भ न कर देना।

[2]यह उस समय की घटना है, जब आदरणीय मूसा जबाबर: से युद्ध के लिए तैयार हुए, तो उन्होंने अपने समुदाय के बारह जातियों के बारह संरक्षक नियुक्त कर दिये ताकि वे उन्हें युद्ध के लिए तैयार भी करें, तथा अगुवाई भी करें एवं अन्य विषयों की व्यवस्था भी करें।

الزَّكٰوةَ وَ اٰمَنْتُمْ بِرُسُلِىْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۲﴾

साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ स्थापित रखोगे, और ज़कात देते रहोगे और मेरे रसूलों को मानते रहोगे और उनकी सहायता करते रहोगे और अल्लाह (तआला) को श्रेष्ठ ऋण देते रहोगे, तो नि:सन्देह मैं तुम्हारी बुराईयाँ तुमसे दूर रखूँगा और तुम्हें उन स्वर्गों में ले जाऊँगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। अब इस वचन के पश्चात भी तुममें से जो इंकार करे, वह नि:सन्देह सीधे मार्ग से भटक गया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ

(१३) फिर उनके वचन भंग करने के कारण हमने उन्हें धिक्कारा और उनके दिल कठोर कर दिये कि वह शब्दों को उनके उस स्थान से परिवर्तित कर देते हैं।[1] और जो कुछ शिक्षा उनको दी गयी उसका बहुत बड़ा भाग भुला

---

[1]अर्थात इतने प्रबन्ध तथा वचन के उपरान्त भी इस्राईल की सन्तान ने वचन भंग किया, जिसके कारण वे अल्लाह के धिक्कार के पात्र हुए। इस धिक्कार का सांसारिक परिणाम यह हुआ कि उनके हृदय कठोर कर दिये गये, जिससे उनके दिल प्रभावित होने से वंचित हो गये तथा नबियों के भाषण तथा शिक्षायें उनके लिए बेकार हो गये। दूसरे यह कि वे अल्लाह के धर्मशास्त्रों में परिवर्तन करने लगे। यह परिवर्तन शाब्दिक तथा भाष्य दोनों रूप में होते थे। जो इस बात का प्रमाण था कि उनकी बुद्धि में कमी आ गयी है। और उनकी अवज्ञा में भी अत्याधिक बढ़ोत्तरी हो गयी कि अल्लाह की आयतों में हस्तक्षेप करने में भी उन्हें संकोच न हुआ। दुर्भाग्य से इस हार्दिक कठोरता तथा अल्लाह के कथन में परिवर्तन करने से उम्मते मुस्लिमा भी सुरक्षित न रही। मुसलमान कहलाने वाले सामान्य जन ही नहीं विशिष्ठ व्यक्ति भी ऐसे स्थान पर पहुँच चुके हैं कि शिक्षा तथा अल्लाह के आदेशों को याद दिलाने का तनिक प्रभाव उनके दिलों पर नहीं पड़ता, सब कुछ उनके लिए बेकार है। तथा जिन आलस्य तथा कमियों के वह शिकार हैं, उनको स्वीकार भी नहीं करते हैं। इसी प्रकार अपनी मार्मिक धार्मिक नियमों में नई बातों का गढ़ लेना तथा अपने वैचारिक कथन के पक्ष के लिए उन्हें अल्लाह के कथन में परिवर्तन करने में भी कोई रोक नहीं है। वह आवश्यकतानुसार निर्भीकता से यह कार्य भी कर जाते हैं।

وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَىٰ خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ⑬

बैठे ।[1] उनके एक न एक विश्वासघात की सूचना तुझे मिलती रहेगी ।[2] परन्तु थोड़े से (लोग) ऐसे नहीं भी हैं ।[3] फिर भी उन्हे क्षमा करता जा और क्षमा करता जा ।[4] नि:सन्देह अल्लाह तआला उपकार करने वालों को मित्र रखता है ।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّا نَصَٰرَىٰٓ أَخَذْنَا مِيثَٰقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا

(१४) और जो अपने आपको ईसाई कहते हैं ।[5] हमने उनसे (भी) वचन लिया था, उन्होंने भी

---

[1]यह तीसरा परिणाम है और इसका अर्थ है कि अल्लाह के आदेश के अनुसार कार्य करने से उन्हें कोई रूचि तथा इच्छा नहीं रही, अपितु अकर्मण्य तथा कुकर्म उनकी विशेषता बन गयी थी एवं वह नीचता के उस स्थान पर पहुँच गये कि न तो उनके हृदय ही सही रहे और न प्रकृति ही ।

[2]अर्थात विद्रोह, विश्वासघात तथा पाखण्ड उनके चरित्र बन गये जिसके नमूने हर समय आपके समक्ष आते रहेंगे ।

[3]यह थोड़े से लोग वही हैं, जो यहूदियों में से मुसलमान हो गये थे और उनकी संख्या दस से भी कम थी ।

[4]क्षमा करना तथा अनदेखी करने का आदेश उस समय दिया गया था, जब लड़ने की आज्ञा नहीं थी । बाद में उसके स्थान पर आदेश दिया गया ।

﴿ قَٰتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ﴾

"उन लोगों से युद्ध करो जो अल्लाह पर तथा आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते ।" (*अल-तौबा* -२९)

कुछ के निकट क्षमा तथा त्याग का आदेश निरस्त नहीं हुआ है । यह स्वयं एक विशेष आदेश है, स्थिति तथा समय के अनुसार उसे भी अपनाया जा सकता है तथा उससे कई वार वह परिणाम प्राप्त हो जाते हैं, जिसके लिए युद्ध का आदेश है ।

[5] نصارى शब्द का उद्‌गम نُصْرَة से हुआ है, जिसका अर्थ है "सहायता करना ।" यह आदरणीय ईसा के प्रश्न . ﴿مَنْ أَنصَارِىٓ إِلَى اللَّهِ﴾ अल्लाह के धर्म में मेरा कौन सहायक है ? पर उनके कुछ नि:स्वार्थी अनुयायियों ने उत्तर दिया था ﴿نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ﴾ हम अल्लाह के लिये सहायता करने वाले हैं । इसी से यह लिया गया है । यह भी यहूदियों की भांति अहले

ذُكِّرُوا بِهِ ۚ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾

उसका बड़ा भाग भुला दिया, जो उन्हें शिक्षा दी गयी थी, तो हमने भी उनके मध्य शत्रुता और कटुता डाल दिया, जो क़ियामत तक रहेगी ।[1] और जो कुछ यह करते हैं शीघ्र ही अल्लाह तआला उन्हें सब बता देगा ।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَاءَكُم مِّنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

(१५) हे अहले किताब ! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आ गये जो बहुत सी वह बातें बता रहे हैं जो किताब (तौरात तथा इंजील) की बातें तुम छुपा रहे थे[2] तथा बहुत-सी बातों को छोड़ रहे हैं, तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से ज्योति तथा खुली किताब (पवित्र क़ुरआन) आ चुकी है ।[3]

किताब हैं । इनसे भी अल्लाह ने वचन लिया परन्तु उन्होंने भी इस पर ध्यान नहीं दिया, इसके परिणाम स्वरूप उनके हृदय भी प्रभावित होने से शून्य और उनके कर्म खोखले हो गये ।

[1]यह अल्लाह को दिये गये वचन के विपरीत कर्म करने का प्रतिकार दण्ड है, जो अल्लाह तआला की ओर से उन पर क़ियामत तक के लिए थोप दी गयी है । अत: ईसाईयों के कई गुट हैं जो एक-दूसरे से अत्यधिक घृणा तथा द्वेष रखते हैं, एक-दूसरे को अधर्मी कहते हैं तथा एक-दूसरे के पूजा स्थल पर उपासना नहीं करते । लगता है कि मुसलमानों पर भी यह दण्ड थोप दिया गया है । यह समुदाय भी कई गुटों में बंट गया है, जिनके मध्य अत्यधिक मतभेद हैं एवं घृणा तथा द्वेष की दीवार खड़ी है ।

[2]अर्थात उन्होंने तौरात तथा इंजील में जो परिवर्तन किये तथा उलट फेर किये उन्हें उजागर किया तथा जिनको छिपाते थे, उन्हे व्यक्त किया, जैसे पत्थर से मारने का दंड । जैसा कि हदीस में इसकी विस्तृत जानकारी मिलती है ।

[3]'प्रकाश तथा ज्वलंत किताब' दोनों से तात्पर्य एक ही 'क़ुरआन करीम' है । इनके मध्य अरबी शब्दकोष वॉव (و) अक्षरों की द्वन्दता के कारण है किन्तु दोनों से अभिप्रेत एक अर्थात पवित्र क़ुरआन ही है जिसका स्पष्ट प्रमाण क़ुरआन करीम की अगली आयत है जिसमें कहा जा रहा है يهدي به الله "कि इसके द्वारा अल्लाह तआला मार्ग दर्शन देता है । यदि प्रकाश तथा किताब दो होते तो शब्द इस प्रकार होते يهدي بهما الله अल्लाह तआला

يَّهْدِىْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾

(१६) जिसके द्वारा अल्लाह उन्हें शान्ति का पथ दिखाता है जो उसकी प्रसन्नता का अनुकरण करें तथा उन्हें अंधकार से अपनी कृपा से प्रकाश की ओर निकाल लाता है तथा उन्हें सीधा मार्ग दर्शाता हैं।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۭ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۭ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ يَخْلُقُ

(१७) नि:संदेह वह लोग काफ़िर (विश्वासहीन) हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का पुत्र मसीह अल्लाह है। कह दो कि यदि मरियम के पुत्र मसीह और उसकी माता एवं विश्व के सभी लोगों का वह विनाश करना चाहे तो कौन है जिसका अल्लाह के सामने तनिक भी अधिकार है ? तथा आकाशों एवं धरती और जो दोनों के मध्य है अल्लाह ही का राज्य है।

इन दोनों के द्वारा मार्ग दर्शन देता है।" परन्तु ऐसा नहीं है। इसलिए क़ुरआन करीम के इन शब्दों से यह स्पष्ट हो गया कि प्रकाश तथा ज्वलंत किताब दोनों का अर्थ एक ही अर्थात क़ुरआन करीम है। यह नहीं कि प्रकाश से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ज्वलंत किताब से पवित्र क़ुरआन का अभिप्रेत है। जैसाकि इस्लाम धर्म में नई बातें गढ़ने वालों ने गढ़ लिया है और यह सिद्ध करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रकाश हैं। तथा यह विश्वास गढ़ लिया कि "अल्लाह के प्रकाश के प्रकाश हैं।" इस प्रकार गढ़े गये विश्वास के लिए इसके पक्ष में एक हदीस भी वर्णन करते हैं कि अल्लाह ने सर्वप्रथम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रकाश पैदा किया और फिर उस प्रकाश से सारी दुनिया बनायी। यद्यपि कि यह हदीस किसी भी प्रमाणित हदीस की संकलित पुस्तक में नहीं है। इसके अतिरिक्त उस सहीह हदीस के विपरीत है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह ने सर्वप्रथम क़लम पैदा किया। «إِنَّ أَوَّلَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ الْقَلَمُ» यह कथन त्रिमिज़ी तथा अबू दाऊद में है। हदीस के प्रकांड विद्वान मोहद्दिस अलबानी लिखते हैं कि यह हदीस सही है जो स्पष्ट रूप से गढ़ी हदीस أوّل ما خلق الله نوري (कि सर्वप्रथम अल्लाह मेरे प्रकाश की रचना की) को निर्मूल सिद्ध कर रही है। (तअ्लीक़ातुल मिश्कात भाग १, पृष्ठ ३४)

مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۷﴾

वह जो (भी) चाहे पैदा करता है और अल्लाह सर्वशक्तिमान है ।[1]

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ
اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ
فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ
بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ

(१८) और यहूदी तथा ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के पुत्र तथा मित्र हैं ।[2] आप कह दीजिए कि फिर अल्लाह (तआला) तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें दण्ड क्यों देता है ?[3] नहीं बल्कि तुम उसके सृष्टि में एक मनुष्य हो। वह

---

[1]इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने सम्पूर्ण प्रभुत्व तथा सम्पूर्ण स्वामित्व का वर्णन किया है । उद्देश्य ईसाईयों के आदरणीय ईसा को पूज्य का स्थान देने के विश्वास का खण्डन करना है । आदरणीय ईसा के साक्षात भगवान होने को मानने वाले पहले तो कुछ ही लोग थे अर्थात एक .ही गुट याक़ूबिया गुट था। अब यह विश्वास लगभग सभी ईसाई गुटों में आदरणीय ईसा को भगवान मानने का किसी न किसी रूप में व्याप्त है। इसलिए ईसाईयों में अब त्रिमूर्ति के विश्वास की आधारशिला है। अतः क़ुरआन ने इस स्थान पर स्पष्ट कर दिया कि किसी पैग़म्बर, रसूल तथा नबी को भगवान का रूप दे देना स्पष्टरूप से कुफ्र है। इस कुफ्र को ईसाईयों ने किया कि आदरणीय ईसा को भगवान का पद दे दिया, यदि कोई गुट अथवा समुदाय किसी अन्य पैग़म्बर को मानवता तथा रिसालत के स्थान से उठाकर भगवान के पद पर आसीन करेगा, तो वह भी इसी कुफ्र को करेगा।

[2]यहूदियों ने आदरणीय उज़ैर को तथा ईसाईयों ने आदरणीय ईसा को अल्लाह का पुत्र कहा तथा स्वयं को भी अल्लाह का पुत्र और उसका प्रिय समझने लगे। कुछ कहते हैं कि यहाँ पर हालत लुप्त है अर्थात أتباع أبناء الله "हम अल्लाह के पुत्रों (उज़ैर तथा मसीह) के अनुयायी हैं ।" दोनों भावों में से कोई सा भी भाव लिया जाये, उससे उनके घमंड तथा अल्लाह तआला के विषय में अनुचित विश्वास का प्रदर्शन होता है। जिसका अल्लाह तआला के समक्ष कोई स्थान नहीं है।

[3]इसमें उनके उपरोक्त घमंड को निराधार सिद्ध किया है कि यदि तुम वास्तव में अल्लाह के प्रिय तथा लाडले होते अथवा प्रिय होने का यह अर्थ है कि तुम जो चाहो करो, अल्लाह तआला तुम्हारी पकड़ न करेगा तो फिर अल्लाह तआला तुम्हारे पापों पर दंड क्यों देता है ? इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि अल्लाह के दरबार में निर्णय दावों के आधार पर नहीं होता है तथा न क़ियामत के दिन होगा, वरन वह तो ईमान, संयम तथा कर्मों को देखता है एवं दुनियाँ में भी उसी के प्रकाश में निर्णय करता है तथा क़ियामत के दिन भी इसी नियमानुसार निर्णय करेगा।

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ز وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾

जिसे चाहता है क्षमा करता है तथा जिसे चाहता है यातना देता है।[1] तथा अल्लाह (तआला) का स्वामित्व आकाशों तथा धरती पर तथा उनके मध्य जो कुछ है प्रत्येक वस्तु पर है। एवं उसी की ओर पलट कर आना है।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ز فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ط وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٩﴾

(१९) हे अहले किताब ! रसूलों के आगमन में एक विलम्ब के पश्चात हमारा रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आ चुका है जो तुम्हारे लिये (धर्म विधानों) का वर्णन कर रहा है ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभसूचक तथा सतर्क करने वाला नहीं आया, तो तुम्हारे पास एक शुभसूचक एवं सतर्क करने वाला (अन्तिम ईशदूत) आ गया है,[2] निश्चय अल्लाह सर्वशक्तिमान है।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ

(२०) और याद करो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने वर्ग से कहा हे मेरे वर्ग के लोगो ! अल्लाह (तआला) के उस उपकार को याद करो कि उसने तुममें से ईशदूत (पैग़म्बर) बनाये

---

[1]इस प्रकार यह यातना तथा क्षमा का निर्णय अल्लाह तआला के उसी नियम के आधार पर होगा, जिसको उसने स्पष्ट कर दिया है कि ईमानवालों को क्षमा तथा काफ़िरों को यातना, सभी लोगों का निर्णय इसी आधार पर होगा। हे अहले किताब ! तुम भी उसकी रचना की उत्पत्ति अर्थात मनुष्य हो। तुम्हारे लिए निर्णय अन्य व्यक्तियों से भिन्न क्यों होगा ?

[2]आदरणीय ईसा तथा परम आदरणीय मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मध्य का काल में जो लगभग ५७० वर्ष का अन्तर है। यह अन्तर एक अवकाश कहलाता है। अहले किताब से कहा जा रहा है कि इस अवकाश के पश्चात हमने अपने अन्तिम रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेज दिया है। अब तुम यह भी न कह सकोगे कि हमारे पास कोई शुभसूचना देने वाला तथा सतर्क करने वाला ईशदूत (पैग़म्बर) ही नहीं आया।

مُلُوكًا وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ⑳

तथा तुम्हें राज्य प्रदान किया ।[1] तथा तुम्हें वह प्रदान किया जो अखिल जगत में किसी को प्रदान नहीं किया ।[2]

---

[1]अधिकतर नबी इस्राईल की सन्तानों में हुये हैं जिनका क्रम आदरणीय ईसा पर समाप्त कर दिया गया तथा अन्तिम पैग़म्बर (ईशदूत) इस्माईल की सन्तान से हुए -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम । इसी प्रकार कई बादशाह भी इस्राईल की सन्तान में हुए और और कुछ नबियों को भी अल्लाह तआला ने राज्य प्रदान किया, जैसे आदरणीय सुलेमान अलैहिस्सलाम । इसका यह अर्थ निकला कि नबूवत की भाँति राज्य भी अल्लाह तआला का पुरस्कार है । उसे किसी भी साधारणत: बुरा समझना बहुत बड़ी त्रुटि है यदि राज्य बुरा होता तो अल्लाह तआला किसी नबी को प्रदान न करता और न इसे अनुकम्पा के रूप में पवित्र क़ुरआन में उसकी चर्चा करता, जैसा कि आजकल पश्चिमी लोकतंत्र का उन्माद जन मानस पर आच्छादित है तथा पश्चिम चालबाज़ों ने यह मंत्र इस प्रकार फूँका है कि केवल पश्चिम राजनीति से प्रभावित राजनीतिज्ञ ही नहीं, अपितु पगड़ी और टोपी वाले भी इससे न बच सके । अन्ततः राज्य तथा वंशगत राज्य यदि शासक और राजा न्यायकारी एवं संयमी है तो लोकतंत्र से हज़ार गुना उत्तम है ।

[2]यह संकेत पुरस्कारों और चमत्कारों की ओर है जो अल्लाह ने इस्राईल के पुत्रों को प्रदान किये । जैसे मन तथा सलवा का उतरना, बादलों की छाया, फ़िरऔन से मुक्ति के लिए नदी में मार्ग बनाना आदि । इस प्रकार इस समुदाय को अपने समय में श्रेष्ठ तथा उच्च स्थान प्राप्त था । परन्तु अन्तिम ईशदूत (पैग़म्बर) परम आदरणीय मोहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत तथा उनके आगमन के पश्चात यह श्रेष्ठ स्थान मुसलमानों को प्राप्त हो गया ।

﴿ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ ﴾

"तुम श्रेष्ठ समुदाय हो जिसे मानव जाति के लिये बनाया गया है ।" (*सूर: आले इमरान*-११०)

परन्तु यह भी प्रतिबन्धित है, उस उद्देश्य की पूर्ति के साथ जिसका वर्णन इसी मंत्र में किया गया है ।

﴿ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ﴾

"तुम लोगों को सत्कर्म का आदेश देते हो तथा कुकर्मों से रोकते हो । एवं अल्लाह तआला पर ईमान रखते हो ।"

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢١﴾

(२१) मेरे वर्ग वालो ! उस पवित्र धरती में प्रवेश करो ।[1] जो अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे नाम लिख दी है ।[2] और अपनी पीठ न दिखाओ ।[3] कि हानि में पड़ जाओगे ।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) उन्होंने उत्तर दिया हे मूसा ! वहाँ तो शक्तिशाली लड़ाकू लोग हैं तथा जब तक वह वहाँ से निकल न जायें, हम तो कदापि नहीं जायेंगे । यदि वे वहाँ से निकल जायें तो हम (प्रसन्नता पूर्वक) वहाँ चले जायेंगे ।[4]

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ

(२३) परन्तु जो अल्लाह से डर रहे थे उनमें से दो पुरुषों ने कहा जिन पर अल्लाह ने कृपा

---

[1]इस्राईल की सन्तान के परम पूर्वज आदरणीय याक़ूब अलैहिस्सलाम का निवास स्थान बैतुल मक़दिस था । परन्तु आदरणीय यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मिश्र में राज्य के समय ये लोग मिश्र में जाकर बस गये । फिर तब से उस समय तक ये लोग वहीं रहे, जब तक आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम रातों-रात उन्हें फ़िरऔन के अत्याचार से बचाकर (फ़िरऔन से छिप कर) मिश्र से निकाल नहीं ले गये । उस समय बैतुल मक़दिस पर अमालक़ा का राज था, जो एक वीर जाति थी । जब आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम ने फिर बैतुल मक़दिस जाकर आबाद होने का निश्चय किया, तो इसके लिए वहाँ पर राज करने वालों अर्थात अमालक़ा जाति के लोगों से युद्ध अवश्य करना था, अत: आदरणीय मूसा ने अपने समुदाय के लोगों को पवित्र भूमि में प्रवेश करने का आदेश दिया और अल्लाह तआला की ओर से विजय की शुभ सूचना भी सुनाई । परन्तु इसके उपरान्त भी इस्राईल की सन्तान अमालिक़ा के साथ युद्ध करने को तैयार न हुई । (इब्ने कसीर)

[2]इससे तात्पर्य विजय है, जिसका वचन अल्लाह तआला ने धर्मयुद्ध के रूप में उनसे कर रखा था ।

[3]अर्थात धर्मयुद्ध से मुँह न मोड़ो ।

[4]इस्राईल की सन्तान अमालक़ा की वीरता से भयभीत हो गयी तथा प्रथम चरण में साहस खो दिया तथा धर्मयुद्ध से रुक गये, अल्लाह के रसूल आदरणीय मूसा के आदेश की कोई चिन्ता की न अल्लाह तआला के विजय प्रदान करने के वचन पर विश्वास किया । तथा वहाँ जाने से स्पष्ट रूप से इंकार कर दिया ।

فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غَٰلِبُونَ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَتَوَكَّلُوٓا۟ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾

की, कि तुम उन पर द्वार से प्रवेश कर जाओ जब प्रवेश कर जाओगे तो तुम्ही विजयी रहोगे तथा यदि ईमान रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो ।[1]

قَالُوا۟ يَٰمُوسَىٰٓ إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَآ أَبَدًا مَّا دَامُوا۟ فِيهَا ۖ فَٱذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَٰتِلَآ إِنَّا هَٰهُنَا قَٰعِدُونَ ﴿٢٤﴾

(२४) उन्होंने कहा कि हे मूसा ! हम कदापि वहाँ न जायेंगे जब तक वह उसमें रहेंगे, अत: तुम तथा तुम्हारा पोषक जाकर दोनों लड़ो हम यहीं बैठे हैं ।[2]

قَالَ رَبِّ إِنِّى لَآ أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِى وَأَخِى ۖ فَٱفْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ ٱلْقَوْمِ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) उस (मूसा) ने कहा मेरे पोषक ! मैं मात्र स्वयं पर तथा अपने भाई (हारून) पर अधिकार रखता हूँ अत: हमारे तथा अवज्ञाकारियों के बीच अलगाव कर दे ।[3]

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ ۛ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۛ يَتِيهُونَ فِى

(२६) उस (अल्लाह) ने कहा यह चालीस वर्ष तक उन पर निषेधित है वह धरती में भ्रमण

---

[1]मूसा की जाति में केवल यही दो व्यक्ति निकले जिन्हें अल्लाह तआला की ओर से सहायता पर विश्वास था, उन्होंने जाति को समझाया कि तुम साहस तो करो, तो फिर देखो कि अल्लाह तआला किस प्रकार विजय प्रदान करता है ।

[2]परन्तु इसके उपरान्त भी इस्राईल की सन्तान ने कायरता, दुराचार तथा दुष्टता का प्रदर्शन करते हुए कहा कि तू और तेरा पोषक जाकर लड़ें । इसके विपरीत बद्र के युद्ध के समय रसूल अल्लाह अलैहि वसल्लम ने सहाबा (رضي الله عنهم) से विचार-विमर्श किया तो उन्होंने अपनी अल्प संख्या तथा कम साधन के उपरान्त भी अपने उत्साह का प्रदर्शन किया और यह भी कहा, "हे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम आप से वैसे नहीं कहेंगे जैसे मूसा के समुदाय ने मूसा को उत्तर दिया ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी वल तफ़सीर)

[3]इसमें अवज्ञाकारी समुदाय के समक्ष अपनी विवशता का प्रदर्शन भी है तथा उनसे विलग होने की घोषणा भी ।

الْأَرْضِ ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

करते रहेंगे[1] अत: आप (मूसा) अवज्ञाकारियों पर खेद न करें ।[2]

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ

(२७) और आदम के दो पुत्रों कि सत्य कथा उन्हें पढ़कर सुना दो[3] जबकि दोनों ने एक-एक उपहार भेंट दिया तो एक से स्वीकार की गई तथा दूसरे से अस्वीकार कर दी गयी[4] तो

---

[1]यह तीह का मैदान कहलाता है। जिसमें चालीस वर्ष यह लोग अपनी अवज्ञा तथा धर्मयुद्ध से इंकार के कारण फिरते रहे, फिर भी इस मैदान में अल्लाह ने उन्हें खाने के लिये मन्न (एक प्रकार की मीठी गोंद) तथा सल्वा (एक प्रकार के पक्षी) उतारे, जिससे उकताकर उन्होंने अपने ईशदूत से कहा कि नित्य एक प्रकार के खाने से हमारा मन भर गया अत: अपने पोषक (अल्लाह) से प्रार्थना करो कि वह अनेक प्रकार वनस्पतियाँ तथा दालें हमारे लिये उपजाये । यहीं उन पर मेघों ने छाया की, पत्थर पर आदरणीय मूसा के लाठी मारने से वारह जातियों के लिये बारह स्रोत प्रवाहित हुये, ऐसे ही अन्य अनुकम्पायें भी होती रहीं। चालीस वर्ष बाद फिर ऐसी स्थिति उत्पन्न की गई कि यह बैतुल मक़दिस में प्रवेश किये।

[2]ईशदूत (पैग़म्बर) जब धर्म प्रचार-प्रसार के उपरान्त भी देखता है कि उसका समुदाय सीधे मार्ग को अपनाने के लिए तैयार नहीं है, जिसमें उसे दोनों लोक की भलाईयाँ हैं तो स्वभाविक रूप से उसे अत्यधिक दुख तथा चिन्ता होती है। यही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी दशा होती थी, जिसका वर्णन क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर है। परन्तु इस आयत में आदरणीय मूसा को सम्बोधित किया जा रहा है। कि जब तुमने अपना सतर्क करने तथा आमन्त्रण देने का कर्तव्य पूर्ण कर दिया तथा अल्लाह का संदेश लोगों तक पहुँचा दिया। और अपने समुदाय को एक विशाल सफलता के प्रारम्भिक बिन्दु पर ला खड़ा कर दिया, परन्तु वे अपने दुस्साहस तथा दुर्बोध के कारण तेरी बात मानने को तैयार नहीं हैं, तो तू अपने कर्तव्य को पूरा कर चुका तथा अब तुझे उनके विषय में दुखी एवं चिन्तित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे अवसर पर दुखी होना एक स्वभाविक वात है। परन्तु इस सन्तावना का यह तात्पर्य है कि आमन्त्रण देने तथा सतर्क करने के उपरान्त अव तुम अल्लाह के पास भार मुक्त हो गये।

[3]आदम के इन दो पुत्रों का नाम हाबील तथा क़ाबील था।

[4]यह चढ़ावा अथवा वलि किसलिए प्रस्तुत की गयी ? इसके विषय में कोई उचित कथन प्राप्त नहीं है । परन्तु यह अवश्य प्रसिद्ध है कि प्रारम्भ में आदरणीय आदम तथा हव्वा के मिलाप से एक समय में एक पुत्र तथा एक पुत्री का जन्म होता था। दूसरे गर्भ से पुन: इसी प्रकार एक पुत्र तथा एक पुत्री जन्म लेते। एक गर्भ के बहन भाई का विवाह दूसरे

قَالَ لَاَقۡتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۲۷﴾

उसने कहा कि मैं तुझे अवश्य मार डालूँगा तो उसने कहा कि अल्लाह परहेज़गारों के ही स्वीकार करता है।

لَئِنۡۢ بَسَطْتَّ اِلَىَّ يَدَكَ لِتَقۡتُلَنِىۡ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِىَ اِلَيۡكَ لِاَقۡتُلَكَ ۚ اِنِّىۡۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۲۸﴾

(२८) यदि तू मुझे हत करने के लिये हाथ बढ़ायेगा तो मैं तेरी हत्या करने हेतु हाथ नहीं बढ़ा सकता मैं अल्लाह अखिल जगत के पालन हार से डरता हूँ।

اِنِّىۡۤ اُرِيۡدُ اَنۡ تَبُوۡٓاَ بِاِثۡمِىۡ وَاِثۡمِكَ فَتَكُوۡنَ مِنۡ اَصۡحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۲۹﴾

(२९) मैं चाहता हूँ कि तू मेरा पाप तथा अपना पाप समेट ले[1] और नरकवासियों में हो जाये, तथा यही अत्याचारियों का कुफल है।

فَطَوَّعَتۡ لَهٗ نَفۡسُهٗ قَتۡلَ اَخِيۡهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصۡبَحَ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿۳۰﴾

(३०) बस उसकी इच्छाओं ने उसे भाई की हत्या करने के लिए तैयार कर दिया और

गर्भ के भाई बहन से होता। हबील के साथ पैदा होने वाली बहन कुरूप थी तथा क़ाबील के साथ पैदा होने वाली बहन सुन्दर थी। उस समय के नियमानुसार हाबील का विवाह क़ाबील की बहन से तथा क़ाबील का विवाह हाबील की बहन से होना था, परन्तु क़ाबील चाहता था कि वह अपना विवाह हाबील की बहन के बजाय अपनी ही बहन से कर ले, जो सुन्दर थी। आदरणीय आदम ने उसे समझाया परन्तु वह न माना, अन्त में आदरणीय आदम ने अल्लाह के लिए बलि चढ़ाने का आदेश दिया और कहा कि जिसकी बलि स्वीकार हो जायेगी क़ाबील की बहन का विवाह उसी के साथ कर दिया जायेगा। हाबील की बलि स्वीकार हुई आकाश से अग्नि आयी और उसे खाई जो उसके स्वीकार होने का प्रमाण था। कुछ व्याख्याकारों का कथन है कि वैसे ही दोनों भाईयों ने अपनी-अपनी ओर से अल्लाह तआला के लिये बलि चढ़ाई थी, हाबील ने एक अच्छे बकरे की बलि चढ़ाई तथा क़ाबील ने एक सिट्टे की। हाबील की बलि स्वीकार होने के कारण क़ाबील ईर्ष्या का शिकार हो गया।

[1]मेरे पाप का अर्थ, हत्या का वह पाप जो मुझे उस समय होता, जब मैं तेरी हत्या करता। जैसाकि हदीस में आता है कि हत एवं हत्यारा दोनों नरक में जायेंगें। सहाबा ने पूछा कि हत्यारे का नरक में जाना समझ में आता है, परन्तु जिसकी हत्या की गयी हो वह नरक में क्यों जायेगा ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि इसलिए कि वह भी हत्यारे की हत्या कर देना चाहता था। (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम, किताबुल फ़ितन)

उसने उसकी हत्या कर दी, जिससे वह हानि प्राप्त करने वालों में हो गया ।[1]

فَبَعَثَ اللهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يَا وَيْلَتَى أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ﴿٣١﴾

(३१) फिर अल्लाह (तआला) ने एक कौए को भेजा जो धरती खोद रहा था । कि उसे दिखाये कि वह अपने भाई की लाश (शव) को किस प्रकार छिपा दे । वह कहने लगा हाय अफ़सोस ! क्या मैं ऐसा करने के योग्य भी न रहा कि अपने भाई की लाश को इस कौए की भाँति गाड़ सकता ? फिर तो वह बड़ा दुखी एवं लज्जित हो गया ।

مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا

(३२) इसी कारण हमने इस्राईल की संतान पर लिख दिया कि जो व्यक्ति किसी को बिना

---

[1] इसलिए हदीस में आता है ।

« لا تُقْتَلُ نَفْسٌ ظُلْمًا إِلاَّ كانَ عَلَى ابنِ آدَمَ الأَوَّلِ كِفْلٌ مِنْ دَمِها؛ لأَنَّهُ كانَ أَوَّلَ مَنْ سَنَّ القَتْلَ ».

"जो भी हत्या अत्याचार स्वरूप होती है (हत्या के साथ) उसके अनर्थ ख़ून का बोझ आदम के उस पहले पुत्र पर भी होता है क्योंकि यह प्रथम व्यक्ति है जिसने हत्या का कार्य किया ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल अंबिया तथा मुस्लिम किताबुल क़िसाम:)

इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि "देखने से यह प्रतीत होता है कि क़ाबील को हाबील की अनर्थ हत्या करने का दंड दुनिया में प्राथमिक रूप से दे दिया गया था । हदीस में भी आता है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ।

« مَا مِنْ ذَنْبٍ أَجْدَرُ أَنْ يُعَجِّلَ اللهُ عُقُوبَتَهُ في الدُّنيا مَعَ مَا يَدَّخِرُ لِصاحِبِهِ فِي الآخِرَةِ؛ مِنَ الْبَغْيِ وقطيعَةِ الرَّحِمِ »

"अत्याचार एवं क्रूरता तथा संबन्ध भंग करना दो इस योग्य पाप है कि अल्लाह तुरंत इनका दंड संसार में दे दे, फिर भी परलोक का दंड इसके अतिरिक्त उसके लिये संचित होगा जो वहाँ भुगतना पड़ेगा ।" (अबू दाऊद किताबुल अदब, इब्ने माजा किताबुल ज़ुहद तथा मुसनद अहमद ५/३६-३८)

और क़ाबील में यह दोनों पाप एकत्रित हो गये थे । (इब्ने कसीर)

بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ز ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾

इसके कि वह किसी का हत्यारा हो अथवा धरती पर उपद्रव उत्पन्न करने वाला हो, हत्या कर डाले तो ऐसा है कि उसने सभी लोगों की हत्या कर दी। तथा जो व्यक्ति एक की जान बचाये, उसने मानो सभी को जीवत कर दिया।[1] और उनके पास हमारे रसूल बहुत-सी स्पष्ट निशानियाँ लेकर आये, परन्तु फिर भी उन में से अधिकतर लोग धरती पर अत्याचार (तथा कठोरता एवं क्रूरता) करने वाले ही रहे।[2]

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ

(३३) उनका दण्ड जो अल्लाह (तआला) से और उसके रसूल से लड़ें तथा धरती पर उपद्रव करें यही है कि वे मार दिये जायें अथवा फाँसी पर चढ़ा दिये जायें अथवा उलटी ओर से उनके हाथ पैर काट दिये जायें, अथवा उन्हें

---

[1]इस अवैध हत्या के बाद अल्लाह तआला ने मानव गण के मूल्य को व्यक्त करने के लिये इस्राईल की सन्तान को यह आदेश उतारा। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अल्लाह तआला के यहाँ मानवगण का कितना महत्व है तथा कितना आदर है तथा यह नियम केवल इस्राईल की सन्तान के लिये ही नहीं था इस्लाम धर्म की शिक्षाओं के अनुसार भी यह नियम चिरस्थाई है। सुलेमान बिन अली रिबअी कहते हैं कि मैंने आदरणीय हसन बसरी से पूछा, "यह नियम हम लोगों के लिये भी है, जिस प्रकार इस्राईल की सन्तान के लिए थी।" उन्होंने उत्तर दिया "हाँ, सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं। इस्राईल की सन्तान के ख़ून हमारे ख़ूनों से अधिक आदरणीय नहीं थे।"

[2]इसमें यहूदियों की निन्दा की गयी है कि उनके पास सभी नबी स्पष्ट लक्षण तथा शुभ सूचना लेकर आये, परन्तु उनका आचरण सदैव अवज्ञाकारिता तथा सीमा उल्लंघन करने वाला ही रहा। इसमें ऐसा प्रतीत होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सन्तावना दी जा रही है कि यह आप की हत्या करने तथा हानि पहुँचाने का जो षडयन्त्र करते रहे हैं, यह इनकी कोई नई बात नहीं है। इनका सम्पूर्ण इतिहास इनके छल तथा कपट से परिपूर्ण है आप हर स्थिति में अल्लाह पर भरोसा करें वह उनसे अच्छी उपाय जानता है, वह सभी षडयन्त्रों से बचाने में निपुण है।

لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾

देश से निकाल दिया जाये ।[1] यह तो हुई उनका सांसारिक अपमान तथा अनादर तथा आख़िरत में उनके लिए भारी यातना है ।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

(३४) परन्तु जो अपने ऊपर तुम्हारे नियन्त्रण से पूर्व क्षमा माँग लें ।[2] निःसंदेह अल्लाह तआला

---

[1]इसके उतरने की विशेषता के विषय में आता है कि उकल तथा ओरैना जाति के कुछ लोग मुसलमान होकर मदीना पधारे, उन्हें मदीने की जलवायु का उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा तो नबी . करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें मदीने से बाहर, जहाँ दान के ऊँट थे, भेज दिया कि उनका दूध-मूत्र, पियो, अल्लाह स्वस्थ करेगा । अतः कुछ दिनों बाद वे स्वस्थ हो गये, परन्तु उसके पश्चात उन्होंने ऊँटों के रखवाले चरवाहों की हत्या कर दी तथा ऊँट हँका कर ले गये । जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस विषय में सूचना प्राप्त हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके पीछे आदमी दौड़ाये, जो उन्हें ऊँटों सहित पकड़ लाये । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके हाथ-पैर उल्टी ओर से काट डाले, उनकी आँखों में गर्म सलाखें डलवायी (क्योंकि उन्होंने भी चरवाहे के साथ ऐसा ही किया था) फिर उन्हें धूप में डाल दिया गया, यहाँ तक कि वे वहीं मर गये । सहीह बुख़ारी में यह शब्द भी आते हैं कि उन्होंने चोरी भी की तथा हत्या भी की, ईमान लाने के पश्चात कुफ्र भी किया, तथा अल्लाह तथा रसूल से युद्ध भी । (सहीह बुख़ारी किताबुल दयात वल तिब्ब वल तफ़सीर, सहीह मुस्लिम किताबुल क़सामः) । यह आयत मुहारबा कहलाती है । यह सामान्य आदेश है अर्थात मुसलमान तथा काफ़िर दोनों के लिये हैं । मुहारबा का अर्थ है कि किसी संगठित तथा शस्त्रों से सुसज्जित जत्थे का इस्लामी राज्य के भीतर अथवा उसके निकट जंगल आदि में राह चलते क़ाफ़िलों अथवा व्यक्ति अथवा समूह पर हमला करना, हत्या तथा उपद्रव करना, चोरी-छिपे अपहरण करना, बलात्कार करना आदि । इसके जो चार दंड बताये गये हैं, इमाम (समय के शासक) को अधिकार है कि उसमें से जो दंड देना उचित समझे दे । कुछ लोग कहते है कि यदि मुहारिबों ने हत्या, चोरी तथा आतंक फैलाया हो तो उनको मृत्यु दंड (हत्या अथवा फाँसी) दिया जायेगा तथा जिसने केवल हत्या की तथा माल नहीं लिया, उसकी भी हत्या की जायेगी, तथा जिसने हत्या भी की और माल भी छीना उसका एक दाहिना हाथ तथा बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ तथा दाहिना पैर काट दिया जायेगा । तथा जिसने न हत्या की एवं न माल छीना उसने केवल आतंक फैलाया, उसे देश से निकाल दिया जायेगा । इमाम शौकानी का कथन है कि पहली बात उचित है कि दंड देने में इमाम को अधिकार है । (फ़तहुल क़दीर)

[2]यदि गिरफ़्तार होने से पूर्व वह क्षमा माँग कर इस्लामी राज्य की शरण में आने की घोषणा कर दे तो फिर उनको क्षमा कर दिया जायेगा, वर्णित दंड नहीं दिये जायेंगे ।

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾

अत्यधिक क्षमाशील तथा अत्याधिक कृपालु एवं दयालु है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱبْتَغُوٓا۟ إِلَيْهِ ٱلْوَسِيلَةَ وَجَٰهِدُوا۟ فِى سَبِيلِهِۦ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) हे मुसलमानों ! अल्लाह तआला से डरते रहो तथा उसकी ओर निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करो ।[1] तथा उसके मार्ग में धर्म युद्ध करो ताकि तुम्हारी भलाई हो ।

परन्तु फिर इस विषय में मतभेद है कि दंड की क्षमा के साथ उन्होंने हत्या करके अथवा माल लूट कर अथवा बलात्कार करके मनुष्यों को जो कष्ट दिये हैं यह अपराध भी क्षमा किये जायेंगे अथवा उनका बदला लिया जायेगा। कुछ आलिमों के निकट यह क्षमा नहीं किये जायेंगे अपितु इनका बदला लिया जायेगा। इमाम शौकानी तथा इमाम इब्ने कसीर का झुकाव इस ओर है कि उनको क्षमा किया जायेगा। और इसको प्रत्यक्ष आयत का उद्देश्य बताया है । परन्तु गिरफ़्तारी के पश्चात क्षमा माँगने से अपराध क्षमा न होंगे, वह दंड के अधिकारी होंगे। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

[1]वसीला (وسيلة) का अर्थ ऐसा विषय है जो किसी उद्देश्य की प्राप्ति तथा उसके सामिप्य का साधन बने। "अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने का कारण प्रयत्न करो" का अर्थ होगा कि ऐसे कर्म करो जिससे तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता तथा उसकी निकटता प्राप्त हो। इमाम शौकानी का कथन है "वसीला अर्थात सामिप्य संयम आदि वह सत्कर्म हैं जिनके माध्यम से भक्त अल्लाह की निकटता प्राप्त करते हैं।" इसी प्रकार प्रतिबंधित तथा निषेध वस्तुओं तथा कर्मों से बचने से भी अल्लाह की निकटता प्राप्त होती है, इसलिए प्रतिबंधित तथा निषेध वस्तुओं तथा कर्मों को छोड़ना भी अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का माध्यम है। परन्तु मूर्खों ने इस वास्तविक माध्यम को छोड़ कर क़ब्र में गड़े लोगों को अपना माध्यम बना लिया है। जिसका धार्मिक नियमों में कोई स्थान नहीं है। अपितु हदीस में उस मोक़ामे महमूद (उच्च स्थान) को भी वसीला कहा गया है जो स्वर्ग में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया जायेगा। इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो भी अज़ान के पश्चात मेरे लिये इस माध्यम की प्रार्थना करेगा, वह मेरी शिफ़ाअत का पात्र होगा। (सहीह बुख़ारी किताबुल अज़ान, सहीह मुस्लिम किताबुल सलात) दुआए वसीला :

« اللَّهُمَّ! رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، والصَّلٰوةِ القَائِمَةِ؛ آتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا الَّذِي وَعَدْتَهُ »

(३६) विश्वास करो, कि काफ़िरों के लिए यदि वह सब कुछ हो जो सारी धरती में है, तथा उसके समान और अधिक भी हो और वह उन सबको क़ियामत के दिन की यातना के बदले प्रतिशोध में देना चाहें तो भी असम्भव है कि उनसे स्वीकार कर लिया जाये, उनके लिए तो दुखदायी यातना है ।[1]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾

(३७) वे चाहेंगे की नरक से निकल जायें । परन्तु वे कदापि उसमें से न निकल सकेंगे उनके लिए तो स्थाई यातनायें हैं ।[2]

يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٧﴾

(३८) चोर तथा चोरनी का हाथ काट दो [3] यह उनके करतूत का बदला तथा अल्लाह की

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا

---

[1]हदीस मे आता है कि एक नरकवासी को नरक से निकाल कर अल्लाह तआला के समक्ष लाया जायेगा । अल्लाह तआला उससे पूछेगा कि "तूने अपना विश्राम स्थान कैसा पाया ?" वह कहेगा, "बहुत बुरा विश्राम स्थल ।" अल्लाह तआला फ़रमायेगा, "क्या तू धरती भर के स्वर्ण इससे छुटकारा प्राप्त करने के लिए बदला स्वरूप देना पसन्द करेगा ?" वह सकारात्मक उत्तर देगा । अल्लाह तआला फ़रमायेगा, मैंने तो दुनिया में इससे भी बहुत कम की माँग तुझसे की थी, तूने उसका कोई ध्यान नहीं दिया और उसे पुन: नरक में डाल दिया जायेगा । (सहीह मुस्लिम सिफ़तुल क़ियाम:, सहीह बुख़ारी अल-रिक़ाक़ वल अंबिया)

[2]यह आयत काफ़िरों (विश्वासहीन) के लिए है क्योंकि ईमानवालों को दण्ड के उपरान्त नरक से निकाल लिया जायेगा जैसाकि हदीस से इसकी पुष्टि होती है ।

[3]कुछ विचारकों के अनुसार चोरी का यह आदेश सामान्य है । चोरी थोड़ी सी वस्तु की हो या बहुत-सी वस्तु की । इसी प्रकार वह सुरक्षित स्थान पर रखी हो अथवा असुरक्षित स्थान पर रखी हो प्रत्येक अवस्था में चोरी का दण्ड दिया जायेगा । जब कि दूसरे विचारकों के निकट इसके लिए सुरक्षित तथा निर्धारित आवश्यक है । फिर मात्रा के निर्धारण में मतभेद हैं । हदीस के ज्ञाताओं के निकट कम से कम मात्रा चौथाई दीनार अथवा तीन दिरहम के अथवा उसके समुल्य की कोई चीज़ हो, इससे कम की चोरी पर हाथ नहीं काटा जायेगा । इसी प्रकार हाथ कलाईयों से काटे जायेंगे, कोहनी अथवा कधों से नहीं । जैसाकि कुछ का विचार है । (विस्तृत जानकारी के लिए हदीस, फ़िक्ह तथा तफ़सीर की पुस्तकों का अध्ययन किया जाये)

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ﴿٣٨﴾

ओर से दण्ड है, तथा अल्लाह तआला शक्तिशाली तथा पूर्ण वैज्ञानिक है।

فَمَنۡ تَابَ مِنۡۢ بَعۡدِ ظُلۡمِهٖ وَاَصۡلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوۡبُ عَلَيۡهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿٣٩﴾

(३९) जो अपने पाप के पश्चात क्षमा माँग ले तथा सुधार कर ले, तो अल्लाह (तआला) दया के रूप में उसकी ओर आकर्षित होता है।[1] निःसन्देह अल्लाह तआला क्षमाशील कृपानिधि है।

اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ وَيَغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿٤٠﴾

(४०) क्या तुझे ज्ञात नहीं कि अल्लाह (तआला) के लिए आकाशों तथा धरती का राज्य है ? जिसे चाहे दण्ड दे, जिसे चाहे क्षमा कर दे। अल्लाह तआला प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व रखने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوۡلُ لَا يَحۡزُنۡكَ الَّذِيۡنَ يُسَارِعُوۡنَ فِى الۡكُفۡرِ مِنَ الَّذِيۡنَ قَالُوۡۤا اٰمَنَّا بِاَفۡوَاهِهِمۡ وَلَمۡ تُؤۡمِنۡ قُلُوۡبُهُمۡ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيۡنَ هَادُوۡا ۛۚ سَمّٰعُوۡنَ لِلۡكَذِبِ سَمّٰعُوۡنَ لِقَوۡمٍ اٰخَرِيۡنَ ۙ لَمۡ يَاۡتُوۡكَ ؕ يُحَرِّفُوۡنَ الۡكَلِمَ

(४१) हे रसूल ! आप उनके लिये दुखी न हों जो अविश्वास में दौड़ लगा रहे हैं जिन्होंने अपने मुखों से कहा कि हमने विश्वास किया तथा उनके दिलों ने विश्वास नहीं किया[2] तथा जो यहूदी हो गये, उनमें कुछ झूठ सुनने के अभ्यासी तथा अन्य लोगों के गुप्तचर हैं, जो आप के पास नहीं आये। वह शब्दों को उनके स्थानों से फेर देते हैं, कहते हैं कि यदि तुम

---

[1]इस क्षमा से तात्पर्य अल्लाह के यहाँ क्षमा की स्वीकृति है, यह नहीं कि क्षमा माँग लेने से चोरी अथवा किसी दंडनीय अपराध का दंड क्षमा हो जायेगा। दंड संहितायें पश्चाताप से क्षमा नहीं की जायेंगी।

[2]नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कृतघ्नों तथा मिश्रणवादियों के ईमान न लाने के कारण तथा सीधे मार्ग न अपनाने के कारण जो दुख तथा खेद होता था, उस पर अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर को अधिक दुखी न होने का निर्देश दे रहा है ताकि इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह संतोष रहे कि ऐसे लोगों के विषय में अल्लाह तआला मुझसे न पूछेगा।

مِنۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهِۦ ۖ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَٰذَا فَخُذُوهُ وَإِن لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَٱحْذَرُوا۟ ۚ

यह दिये जाओ तो मान लो तथा यह (आदेश) न दिये जाओ तो अलग रहो।[1] और जिसे

---

[1]आयत संख्या ४१ से ४४ तक के उतरने के विषय में दो घटनाओं का वर्णन होता है। प्रथम दो विवाहित यहूदी बलात्कारों (पुरूष-स्त्री) का। उन्होंने तो अपनी किताब तौरात में परिवर्तन कर डाला था, इसके अतिरिक्त उसके कुछ आदेशों का पालन भी नहीं करते थे। इसी प्रकार पत्थरों से मारकर विवाहित बलात्कारियों को मार डालने के दण्ड का आदेश उनकी किताब में था तथा अब भी है। परन्तु वे इस दण्ड से बचना भी चाहते थे इसलिए आपस में निर्णय किया कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास चलते हैं, यदि वह हमारे बनाये हुए दण्ड कोड़ों की मार अथवा मुंह काला करने के निर्णय को मान लेते हैं, तो मान जायेंगे तथा यदि पत्थरों से मार कर मार डालने का निर्णय करेंगे तो नहीं मानेंगे। अत: आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर फरमाते हैं कि यहूदी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तौरात में पत्थरों से मारकर मार डालने के विषय में क्या है ? उन्होंने कहा तौरात में बलात्कार का दण्ड कोड़े मारना तथा अपमानित करना है अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा कि तुम झूठ बोलते हो, तौरात में पत्थरों से मारकर मार डालने का आदेश विद्यमान है, जाओ तौरात लाओ, तौरात लाकर वह पढ़ने लगे तो पत्थर से मारकर मार डालने वाली आयत (मंत्र) पर हाथ रख कर आगे-पीछे की आयतें पढ़ दीं। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा कि हाथ हटाओ, जब हाथ हटाया गया तो वहाँ पत्थरों से मारने की आयत विद्यमान थी। अन्तत: उन्हें स्वीकर करना पड़ा कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच कहते हैं। तौरात में पत्थरों से मारने का दण्ड विद्यमान है। अत: दोनों बलात्कारियों को पत्थरों से मारकर मार डाला गया। (देखें सहीहैन तथा अन्य हदीस की पुस्तकें) एक अन्य घटना का वर्णन इस प्रकार आता है कि यहूदियों का एक क़बीला अपने को दूसरे क़बीले से अधिक श्रेष्ठ तथा सम्मानित समझता था और इसके अनुसार अपने हत का आर्थिक दण्ड हत्यारे से लेने का मूल्य सौ (वस्क़) तथा दूसरे क़बीले का पचास वस्क़ निर्धारित कर रखा था। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने पधारे तो यहूदियों के दूसरे क़बीले को कुछ साहस हुआ, जिनके हत के रक्त का मूल्य हत्यारे से आधी लिया जाता था तथा उसने रक्त का मूल्य सौ वस्क देने से मना कर दिया। निकट था कि उनके मध्य लड़ाई छिड़ जाती, परन्तु उनके समझदार लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निर्णय कराने को तैयार हो गये। इस समय यह आयत उतरी। जिसमें एक आयत में रक्त के मूल्य में समानता का आदेश दिया गया। (यह कथन मुसनद अहमद में है, जिसके प्रमाण को शेख़ अहमद शाकिर ने सही कहा है। मुसनद अहमद भाग १, पृष्ठ हदीस संख्या २२१२) इमाम इब्ने कसीर का कथन है, सम्भव है कि दोनों घटनायें एक ही समय में घटित हों तथा उन सबके लिए ये आयतें उतरी हों। (इब्ने कसीर)

وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ ۚۖ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾

अल्लाह भटकाना चाहे उसके लिये अल्लाह पर आप का तनिक अधिकार नहीं है। इन्हीं के दिलों को अल्लाह पवित्र नहीं करना चाहता इन्हीं के लिये संसार में अपमान तथा आख़िरत (परलोक) में भारी दंड है।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) यह कान लगा-लगा कर झूठ सुनने वाले[1] तथा जी भर-भर कर हराम खाने वाले हैं। यदि यह तुम्हारे पास आयें तो तुम्हें अधिकार है चाहो तो उनके बीच निर्णय कर दो, चाहो तो न करो, यदि तुम उनसे मुहँ मोड़ भी लोगे, तो भी ये तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकते और यदि तुम निर्णय करो तो उनमें न्याय के साथ निर्णय करो, निःसन्देह न्याय करने वालों के साथ अल्लाह तआला प्रेम रखता है।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा (आश्चर्य की बात है कि) वह कैसे अपने पास तौरात होते हुए, जिसमें अल्लाह के आदेश हैं तुमको निर्णायक बनाते हैं। फिर उसके पश्चात पलट जाते हैं। वास्तव में ये ईमान तथा विश्वास वाले नहीं हैं।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ

(४४) हमने तौरात उतारी है जिसमें मार्गदर्शन तथा प्रकाश ज्योति है। यहूदियों में इसी तौरात

[1] سمّاعون (सम्माऊना) का अर्थ है "अत्यधिक सुनने वाला" इसके दो भावार्थ हो सकते हैं। भेद जानने के लिए बहुत अधिक सुनना अथवा दूसरों की बातें जानने के लिए सुनना। कुछ व्याख्याकारों ने पहला अर्थ लिया है और कुछ ने दूसरा।

الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝

द्वारा अल्लाह के मानने वाले,[1] अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) तथा अल्लाह वाले और ज्ञानी निर्णय किया करते थे क्योंकि उन्हें अल्लाह की इस किताब की सुरक्षा का आदेश दिया गया था ।[2] तथा वे इस पर स्वीकार करने वाले गवाह थे ।[3] अब तुम्हें चाहिए कि लोगों से न डरो। बल्कि मुझसे डरो, मेरी आयतों को थोड़े-थोड़े मूल्य पर न बेचो ।[4] और जो

---

[1] أَسْلَمُوا (असलमू) यह नबियों की विशेषता का वर्णन है कि वे सभी नबी इस्लाम धर्म के अनुयायी थे, जिसकी ओर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आमन्त्रण दे रहे हैं। अर्थात सभी नबियों का धर्म एक ही रहा है। इस्लाम जिसकी आधारशिला है कि एक अल्लाह की इबादत (उपासना) तथा उसकी इबादत में किसी को सम्मिलित न किया जाये। प्रत्येक नबी ने सर्वप्रथम एकेश्वर तथा उसके साथ किसी को भी सम्मिलित न करने का आमन्त्रण दिया।

﴿وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِىٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدُونِ﴾

"हमने आप से पूर्व जितने भी रसूल भेजे सभी को यही प्रकाशना (वह्यी) की कि मेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, बस तुम सब मेरी इबादत (वंदना) करो।" (सूर: अल-अंबिया-२५)

इसको क़ुरआन में الدين (अद्-दीन) भी कहा गया है। जैसाकि सूर: शूरा की आयत संख्या १३ में भी इसी विषय का वर्णन किया गया है।

﴿ شَرَعَ لَكُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِۦ نُوحًا﴾

"हमने आपके लिए वही धर्म निर्धारित किया है जो आप से पूर्व अन्य नबियों के लिए किया था।"

[2] अत: उन्होंने तौरात में कोई परिवर्तन नहीं किया, जिस प्रकार बाद में लोगों ने किया।

[3] कि यह किताब किसी कमी अथवा अधिकता से सुरक्षित है और अल्लाह की ओर से उतारी गयी है।

[4] अर्थात लोगों से डर कर तौरात के वास्तविक आदेश पर पर्दा न डालो, न दुनिया के थोड़े से लाभ के लिए उनमें परिवर्तन करो।

अल्लाह की उतारी हुई प्रकाशनाओं (वहयी) के आधार पर निर्णय न करें वे पूर्ण तथा परिपक्व काफ़िर हैं ।[1]

(४५) और हमने (तौरात) में यहूदियों के अधिकार में यह बात निर्धारित कर दी है कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख तथा नाक के बदले नाक एवं कान के बदले कान व दाँत के बदले दाँत तथा विशेष घावों का भी बदला है ।[2] फिर जो व्यक्ति उसको क्षमा कर दे तो वह उसके लिए प्रायश्चित है तथा जो लोग अल्लाह के आदेशों के अनुसार निर्णय न करें, वही लोग अत्याचारी हैं ।[3]

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٥﴾

---

[1] फिर किस प्रकार तुम ईमान के बदले कुफ्र (अविश्वास) के लिए तैयार हो गये ?

[2] जब तौरात में प्राण के बदले प्राण तथा घावों में बदले का आदेश दिया गया था तो यहूदियों के एक क़बीले (बनू नदीर) को दूसरे क़बीले (बनू क़ुरैज़ा) से इसके अतिरिक्त व्यवस्था करना तथा अपने हत द्वारा मृतक का बदला अन्य क़बीलों से दुगना लेने का क्या औचित्य है ? जैसाकि इसकी विस्तृत जानकारी पिछले पृष्ठों में आ चुकी है ।

[3] यह इस बात की ओर संकेत है कि जिस क़बीले ने उपरोक्त निर्णय किया था । यह अल्लाह के द्वारा उतारे गये आदेश के विपरीत था तथा इस प्रकार उन्होंने अत्याचार किया । अर्थात मनुषय इस बात के लिए प्रतिबंधित है कि वह अल्लाह के आदेशों को अपनाये तथा उसी के आधार पर निर्णय करे तथा जीवन की सभी समस्याओं में उसी के प्रकाश में समाधान निकाले । यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो अल्लाह तआला के समक्ष अत्याचारी तथा दुराचारी एवं काफ़िर माना जायेगा । ऐसे लोगों के लिए अल्लाह तआला ने तीनों शब्दों का प्रयोग करके अपने क्रोध का प्रदर्शन किया है । इसके उपरान्त भी मनुष्य अपने बनाये हुए नियमों तथा अपनी इच्छाओं को श्रेष्ठता दे तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा ?

टिप्पणी : धर्मशास्त्रियों ने लिखा है कि पिछले धर्मों के जिन नियमों का आदेश अल्लाह तआला ने निरन्तर रखा है, हमारे लिए भी उसके अनुसार कर्म करना आवश्यक है और इस आयत में वर्णित आदेश निरस्त नहीं हुए है । इसलिए यह भी इस्लाम धर्म के नियमों

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) और हमने उनके पीछे ईसा पुत्र मरियम को भेजा, जो अपने से पूर्व की किताब अर्थात तौरात की पुष्टि करने वाले थे।[1] तथा हमने उन्हें इंजील प्रदान की जिसमें प्रकाश तथा मार्गदर्शन था तथा वह अपने से पूर्व की किताब तौरात की पुष्टि करती थी तथा वह स्पष्ट मार्ग दर्शन तथा शिक्षा थी अल्लाह तआला से डरने वालों के लिए।[2]

के आदेश हैं। जैसाकि हदीस से इसकी पुष्टि होती है। इसी प्रकार हदीस में النفس با لنفس (जान के बदले जान) के सामान्य आदेश से दो अवस्थायें अलग हैं कि कोई मुसलमान अगर किसी काफ़िर की हत्या कर दे तो बदले में उस मुसलमान को उसी प्रकार ग़ुलाम (दास) के बदले स्वतन्त्र को हत नहीं किया जायेगा। (विस्तार के लिए देखें फ़तहुल बारी व नैलुल अवतार आदि)

[1]अर्थात विगत नबियों के तत्पश्चात ही आदरणीय ईसा को भेजा जो अपने पूर्व उतारी गयी किताब तौरात की पुष्टि करने वाले थे, उसको झुठलाने वाले नहीं, जो इस बात का प्रमाण है कि आदरणीय ईसा भी अल्लाह के सत्य रसूल हैं और उसी अल्लाह के भेजे हुए हैं जिसने आदरणीय मूसा पर तौरात उतारी थी, इसके उपरान्त भी यहूदियों ने आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम को झुठलाया, तथा उनके आदेशों का विरोध और अनादर एवं अपमान किया।

[2]अर्थात जिस प्रकार तौरात अपने समय में लोगों के मार्गदर्शन का साधन थी। इसी प्रकार इंजील के उतरने के उपरान्त यही स्थान इंजील को प्राप्त हो गयी तथा फिर क़ुरआन करीम के उतरने के बाद तौरात, तथा इंजील एवं अन्य आसमानी पुस्तकों के आदेशों के अनुसार कर्म करना निरस्त कर दिया गया तथा मार्गदर्शन एवं मोक्ष का मात्र एक साधन पवित्र क़ुरआन रह गया और इसी पर अल्लाह तआला ने आसमानी किताबों की श्रृंखला समाप्त कर दी। अतएव यह इस बात की घोषणा है कि क़ियामत तक जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों की भलाई तथा सफलता इसी क़ुरआन से सम्बन्धित है, जो इससे सम्बन्धित हो गया, सम्मानित हो गया, जो अलग हो गया असफलता तथा अपमान उसका भाग्य बन गया है। इससे ज्ञात हुआ कि सर्व धर्म संभाव: का विचार एकदम अनुचित है सत्य हर समय में एक ही रहा है, अनेक नहीं। सत्य के अतिरिक्त प्रत्येक असत्य है। तौरात अपने समय की सत्य थी, उसके पश्चात इंजील अपने समय की सत्य थी, इंजील के उतरने के पश्चात तौरात के अनुसार कार्य उचित नहीं था, तथा जब क़ुरआन उतरा, तो इंजील निरस्त

(४७) तथा इंजील वालों को भी चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ इंजील में उतारा है, उसी के अनुसार आदेश करें ।[1] तथा जो अल्लाह तआला के उतारे हुए से ही आदेश न करें वे कुकर्मी दुराचारी हैं।

وَلْيَحْكُمْ أَهْلُ الْإِنْجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤٧﴾

(४८) तथा हमने आप की ओर सत्य से परिपूर्ण यह किताब उतारी है, जो अपने से पूर्व की सभी किताबों की पुष्टि करती है तथा उनकी रक्षक है ।[2] इसलिए आप उनके बीच अल्लाह की उतारी हुई किताब के अनुसार निर्णय कीजिए[3] इस सत्य से हटकर उनकी

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ ۖ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ

हो गयी, इंजील के अनुसार कार्य उचित नहीं रहा तथा केवल क़ुरआन ही मात्र एक कार्यक्रम तथा मोक्ष के लिए कर्म काण्ड रह गया है। इस पर आस्था बिना अर्थात मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत (दूतत्व) को स्वीकार किये बीना मोक्ष सम्भव नहीं और जानकारी के लिए देखें *सूर: अल-बक़र:* की आयत संख्या ६२ की व्याख्या।

[1]इंजील के अनुपालकों को यह आदेश उस समय तक था, जब तक आदरणीय ईसा की नबूवत का काल था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन के पश्चात आदरणीय ईसा की नबूवत का काल भी समाप्त हो गया। तथा इंजील के आदेशों का पालन भी समाप्त हो गया। अब ईमानवाला वही समझा जायेगा जो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान लायेगा और क़ुरआन करीम के आदेशों का पालन करेगा।

[2]प्रत्येक आसमानी किताब अपने से पूर्व की आसमानी किताबों की पुष्टि करने वाली ही रही है, जिस प्रकार क़ुरआन भूतपूर्व आसमानी किताबों की पुष्टि करने वाला है। पुष्टि का अर्थ यह है कि ये सभी किताबें वास्तव में अल्लाह की उतारी हुई किताबें हैं। परन्तु क़ुरआन प्रमाण शास्त्र होने के साथ-साथ مُهيمن (रक्षक, विश्वास साक्षी तथा निर्णायक) भी है। अर्थात पूर्व की किताबों में चूँकि परिवर्तन भी हुआ है इसलिए क़ुरआन का निर्णय मान्य होगा, जिसको यह उचित कहेगा वह उचित शेष अनुचित तथा असत्य है।

[3]इससे पूर्व आयत संख्या ४६ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह अधिकार दिया गया था कि आप उनके विवाद में निर्णय करें अथवा न करें आपकी इच्छा है। परन्तु अब उसके स्थान पर यह आदेश दिया जा रहा है कि उनके आपसी विवादों का भी निर्णय क़ुरआन के आदेश के अनुसार ही करें।

شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝ ٤٨

इच्छाओं के अनुसार न जाईये।[1] तुम में से प्रत्येक के लिए हम ने एक विधान तथा मार्ग निर्धारित कर दिया है।[2] यदि अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही समुदाय बना देता, परन्तु वह चाहता है कि जो तुम्हें दिया है, उसमें तुम्हारी परीक्षा ले।[3] तुम पुण्य की ओर शीघ्रता करो, तुम सबको अल्लाह ही की ओर पलट कर जाना है, फिर वह तुम्हें हर वह चीज़ बता देगा जिसमें तुम मतभेद रखते हो।

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ

(४९) तथा आप उनके विवाद में अल्लाह की उतारी हुई प्रकाशनाओं (वह्यी) के अनुसार

---

[1]यह वास्तव में अनुयायियों को शिक्षा जा दी रही है कि अल्लाह की उतारी हुई किताब से हटकर लोगों की ईच्छाओं के तथा विचारों तथा उनके स्वयं अपने बनाये हुए नियम के अनुसार निर्णय करना भटकावा है, जिसकी आज्ञा पैग़म्बर (ईशदूत) को नहीं तो भला किसी अन्य को यह अधिकार किस प्रकार प्राप्त हो सकता है।

[2]इससे तात्पर्य पूर्व के धर्मिक नियम हैं, जिनमें कुछ आदेश एक-दूसरे से भिन्न थे। एक धर्म के नियम में कोई चीज़ अवैध तथा दूसरे धर्म के नियम में वही वैध थी कुछ में किसी समस्या में कड़ाई थी तो दूसरे में सुविधा थी। परन्तु धर्म सभी एक अर्थात एकेश्वरवाद पर आधारित था। इस प्रकार सभी का आमन्त्रण एक था। इस विषय को एक हदीस में इस प्रकार से वर्णन किया गया।

« نَحْنُ مَعَاشِرَ الأَنْبِيَاءِ إِخْوَةٌ لِعَلَّاتٍ ، دِينُنَا وَاحِدٌ ».

"हम नबियों का गुट अल्लाती भाई है हमारा धर्म एक है।" (सहीह बुख़ारी)

"अल्लाती भाई" वह होते हैं जिनकी मातायें भिन्न हों, परन्तु पिता एक हो। अत: इसका अर्थ यह हुआ कि इनका धर्म एक ही था, परन्तु धार्मिक नियम भिन्न थे। लेकिन इस्लामी नियम के उपरान्त अब सभी नियम निरस्त हो गये तथा अब धर्म भी एक है और नियम भी एक है।

[3]अर्थात क़ुरआन के उतरने के उपरान्त अब मोक्ष तो इसी से सम्बन्धित है। परन्तु हमें मोक्ष के मार्ग को अपनाने के लिए अल्लाह तआला ने कोई दबाव नहीं रखा है, वरन् वह चाहता तो वह ऐसा कर सकता था, परन्तु इस प्रकार तुम्हारी परीक्षा सम्भव न थी, जबकि वह तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है।

وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿۴۹﴾

निर्णय दीजिए। उनकी इच्छाओं का पालन न कीजिए तथा उनसे सावधान रहिये कि कहीं ये आपको अल्लाह के उतारे हुए किसी आदेश से विचलित न कर दें, यदि यह मुहँ मोड़ लें तो विश्वास करो कि अल्लाह का यही विचार है कि उन्हें उनके कुछ पापों का दण्ड दे ही दे तथा अधिकतर लोग अवज्ञाकारी होते हैं।

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۵۰﴾

(५०) क्या यह लोग पुन: अवज्ञानात्मक निर्णय चाहते हैं ?[1] और विश्वास रखने वालों के लिए अल्लाह (तआला) से श्रेष्ठ निर्णायक तथा आदेश करने वाला कौन हो सकता है।[2]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ؕ بَعْضُهُمْ

(५१) हे ईमान वालो ! तुम यहूदियों तथा ईसाईयों को मित्र न बनाओ।[3] यह तो आपस

---

[1]अब क़ुरआन तथा इस्लाम के अतिरिक्त सभी अज्ञान है तथा यह अब भी प्रकाश तथा मार्गदर्शन (इस्लाम) को छोड़ कर अज्ञानता ही की खोज में तथा उसके इच्छुक हैं ? यह प्रश्न इंकार एवं प्रतिकार के लिए है तथा ف लिप्त शब्द की ओर फिरता है तथा अर्थ है।

« يعرضون عن حكمك بما أنزل الله عليك و يتولون عنه، يبتغون حكم الجاهلية »

"तेरे इस निर्णय से जो अल्लाह ने तुझ पर उतारा है, यह इंकार करते हैं तथा पीठ फेरते हैं तथा अज्ञानता के मार्ग की खोज में हैं।" (फ़तहुल क़दीर)

[2]हदीस में आता है कि नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« أَبْغَضُ النَّاسِ إِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ ثَلَاثَةٌ: مُبْتَغٍ فِي الإِسْلَامِ سُنَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ، وطَالِبُ دَمِ امْرِىءٍ بِغَيرِ حَقٍّ لِيُرِيقَ دَمَهُ ».

"अल्लाह तआला को सबसे अधिक अप्रिय व्यक्ति वह है जो इस्लाम में अज्ञानता की रीति की खोज करे और जो अनर्थ किसी का ख़ून बहाने का प्रयत्न करे।" (सहीह वुख़ारी किताबुल दियात)

[3]इसमें यहूदियों तथा इसाईयों से मित्रता तथा प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने से मना किया गया है जो इस्लाम धर्म तथा मुसलमानों के शत्रु हैं और इस पर इतनी बड़ी चेतावनी दी गयी है कि जो उनसे मित्रता रखेगा, वह उन्हीं में से समझा जायेगा। (और देखिए *सूर: आले इमरान* आयत संख्या २८ तथा आयत संख्या ११८ की व्याख्या)

أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُۥ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥١﴾

में ही एक-दूसरे के मित्र हैं।[1] तुममें से जो कोई भी इनसे मित्रता करे तो वह उनमें से है, अत्याचारियों को अल्लाह तआला कदापि मार्गदर्शन नहीं देता।[2]

فَتَرَى ٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يُسَٰرِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰٓ أَن تُصِيبَنَا دَآئِرَةٌ ۚ فَعَسَى ٱللَّهُ أَن يَأْتِىَ بِٱلْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِۦ فَيُصْبِحُوا۟ عَلَىٰ مَآ أَسَرُّوا۟

(५२) आप देखेंगे कि जिनके दिलों में रोग है।[3] वह दौड़-दौड़ कर उनमें घुस रहे हैं तथा कहते हैं कि हमें भय है कि ऐसा न हो कि कोई घटना हम पर घटित हो जाये।[4] अधिक सम्भव है कि अल्लाह (तआला) विजय प्रदान कर दे[5] अथवा अपने पास से कोई अन्य निर्णय

---

[1]क़ुरआन के इस वर्णित सत्य का प्रत्यक्ष दर्शन प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है कि यहूदियों तथा इसाईयों में आपस में निष्ठा के आधार पर अत्यधिक मतभेद तथा आपसी ईर्ष्या तथा द्वेष है। परन्तु इसके उपरान्त भी इस्लाम तथा मुसलमानों के विरुद्ध ये आपस में एक-दूसरे के सहायक, मित्र तथा रक्षक हैं।

[2]इन आयतों के उतरने की विशेषता में वर्णन किया जाता है कि आदरणीय ओबादः बिन सावित अन्सारी तथा अवसरवादियों के प्रमुख अब्दुल्लाह बिन उबैय दोनों ही अज्ञानकाल में यहूदियों के मित्र चले आ रहे थे। जब बद्र के युद्ध में मुसलमानों की विजय हुई तो अब्दुल्लाह बिन उबैय ने इस्लाम धर्म का प्रदर्शन किया। इधर बनु केनुकाअ के यहूदियों ने थोड़े दिनों ही पश्चात् उपद्रव उत्पन्न किया और वे धर लिए गये जिस पर आदरणीय ओबादः ने अपने यहूदी मित्रों से सम्बन्ध तोड़ने की घोषणा कर दी, परन्तु इसके विपरीत अब्दुल्लाह बिन उबैय ने यहूदियों को हर प्रकार से बचाने का प्रयास किया। जिस पर यह आयत उतरी।

[3]इससे तात्पर्य द्वयवाद (निफ़ाक़) है। अर्थात अवसरवादी यहूदियों से प्रेम तथा मित्रता में शीघ्रता करते हैं।

[4]अर्थात मुसलमानों की.पराजय हो जाने के कारण हमें भी हानि उठानी पड़े। यहूदियों से मित्रता होगी तो हमें ऐसे अवसर पर काम आयेगी।

[5] अर्थात मुसलमानों को।

فِيٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿۵۲﴾

लाये ।[1] फिर तो यह अपने हृदय मे छिपाई हुई बात पर अत्यधिक लज्जित होंगे ।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۭ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۵۳﴾

(५३) तथा ईमानवाले कहेंगे कि क्या यही वे लोग हैं जो बड़े विश्वास से अल्लाह की सौगन्ध खा-खा कर कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं । उन के कर्म नष्ट हो गये तथा ये असफल हो गये ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ۡ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَاۗىِٕمٍ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ

(५४) हे ईमानवालो ! तुममें से जो अपने धर्म से पलट जाये ।[2] तो अल्लाह (तआला) बहुत शीघ्र ऐसे समुदाय के लोगों को लायेगा जो अल्लाह के प्रिय होंगे तथा वे भी अल्लाह से प्रेम करते होंगे[3] वह कोमल हृदय होंगें मुसलमानों पर, कठोर तथा निर्दय होंगें काफ़िरों पर, अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करेंगे किसी अपमानित करने वाले व्यक्ति के

---

[1]यहूदियों तथा ईसाईयों पर सुरक्षा कर (जिज़या) लगा दे अथवा इसकी ओर संकेत है कि वनू कुरैज़ा तथा उनके सन्तानों को वन्दी बनाने तथा बनू नदीर को देश निकाला देने आदि की ओर जो निकट भविष्य में घटित हुआ ।

[2]अल्लाह तआला की ओर से भविष्य वाणी है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त के पश्चात घटित हुई । इस उपद्रव को कुचलने का श्रेय आदरणीय अबू बक्र (رضي الله عنه) तथा उनके साथियों को प्राप्त हुआ ।

[3]मुर्तिद (धर्म के किसी नियम पर विश्वास न रखने वाले) के प्रतिकूल जिस समुदाय को अल्लाह तआला खड़ा करेगा, उनके चार गुणों को स्पष्ट करके वर्णन किया जा रहा है । १.अल्लाह से प्रेम करना तथा उसका प्रिय होना, २ईमानवालों के लिए कोमल तथा काफ़िरों के लिए कठोर होना, ३. अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करना, ४अल्लाह के विषय में किसी के अपमानित करने की चिन्ता न करना । सहाबा कराम (رضي الله عنهم) इन गुणों तथा विशेषताओं से सुशोभित थे । अत: अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया तथा आख़िरत के सभी सुखों से पुरस्कृत किया तथा दुनिया में ही अपनी प्रसन्नता का प्रमाण-पत्र उन्हें प्रदान कर दिया ।

يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾

अपमान करने की चिन्ता न करेंगें।[1] ये है अल्लाह (तआला) की कृपा जिसे चाहे प्रदान करे। अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है तथा अत्यधिक ज्ञानवाला है।

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾

(५५) (मुसलमानों)! तुम्हारा मित्र स्वयं अल्लाह तथा उसका रसूल है, एवं ईमानवाले हैं,[2] जो नमाजों को स्थापित करते हैं तथा ज़कात अदा करतें हैं तथा वे रूकूउ (दण्डवत) (श्रद्धायुक्त तथा ध्यानमग्न होकर) करने वाले हैं।

وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٦﴾

(५६) तथा जो व्यक्ति अल्लाह (तआला) से तथा उसके रसूल एवं मुसलमानों से मित्रता करे उसे विश्वास करना चाहिए कि अल्लाह (तआला) के भक्त ही प्रभावशाली होंगे।[3]

---

[1]यह ईमानवालों का चौथा गुण है। अर्थात अल्लाह तआला के आदेशों के पालन में किसी व्यक्ति द्वारा अपमानित करने की चिन्ता न करना। यह भी बड़ा विशेष गुण है। समाज में जिन बुराईयों का प्रचलन जनसमूह में सामान्य हो जाये उनके विरुद्ध पुण्य पर स्थिरता एवं अल्लाह तआला के आदेशों का पालन इस गुण के बिना सम्भव नहीं है। वरन् कितने लोग हैं जो बुराई, अल्लाह की अवज्ञाकारिता, तथा समाज में उत्पन्न बुराई से अपने आप को बचाना चाहते हैं, परन्तु बुरा-भला कहने वालों के भय से उनका मुक़ाबिला करने का साहस नहीं कर पाते। परिणाम स्वरूप उन बुराईयों के दलदल से निकल नहीं पाते तथा सत्य तथा असत्य से बचने के शक्ति से वंचित ही रहते हैं। इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जिनको यह गुण प्राप्त हो जाये उन पर अल्लाह तआला की विशेष कृपा है।

[2]जब यहूदियों तथा ईसाईयों की मित्रता से मना किया गया, तो अब इसका उत्तर दिया जा रहा है कि फिर वह मित्रता किससे करें? कहा कि ईमानवालों का सर्वप्रथम मित्र अल्लाह तआला स्वयं है तथा उसके रसूल हैं तथा फिर उसके अनुयायी ईमानवाले हैं आगे उनके कुछ एक गुण बताये गये हैं।

[3]यह अल्लाह तआला की पार्टी का लक्षण है तथा उसके विजय की सूचना दी जा रही है। अल्लाह तआला के भक्तों का गुट वही है जो मात्र अल्लाह, उसके रसूल तथा ईमानवालों से सम्बन्ध रखे तथा काफिरों, मूर्तिपूजकों, यहूदियों तथा ईसाईयों से मित्रता एवं पक्षपात का सम्बन्ध न रखे चाहे वे उनके सगे सम्बन्धी क्यों न हों। जैसाकि *सूर: मुजादिल:* के अन्त में

(५७) मुसलमानों ! उन लोगों को मित्र न बनाओ जो तुम्हारे धर्म को हँसी-खेल बनाये हुए हैं, (चाहे) वे उनमें से हों जो तुमसे पूर्व किताब दिये गये अथवा काफ़िर हों।[1] यदि तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह से डरते रहो।	يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِّنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَٱلْكُفَّارَ أَوْلِيَآءَ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾
(५८) तथा जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो, तो वह उसे हँसी-खेल ठहरा लेते हैं।[2] यह इसलिए कि यह बुद्धि नही रखते हैं।	وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى ٱلصَّلَوٰةِ ٱتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَلَعِبًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾

फ़रमाया गया है, "तुम अल्लाह तथा अन्त दिवस पर ईमान रखने वालों को ऐसा न पाओगे कि वे ऐसे लोगों से प्रेम रखें जो अल्लाह तथा उसके रसूल के शत्रु हों, चाहे वे उनके पिता हों, तथा उनके पुत्र हों, और उनके भाई हों, अथवा उनके परिवार तथा जाति के लोग हों।" फिर शुभ सूचना दी गयी, कि "ये वे लोग हैं जिनके दिलों में ईमान है तथा जिन्हें अल्लाह की सहायता प्राप्त है, उन्हें ही अल्लाह तआला स्वर्ग में प्रवेश करायेगा ...... तथा, यही अल्लाह के भक्तों का गुट है, सफलता जिनका सौभाग्य है।" (*सूर: मुजादिल:* अन्तिम आयत)

[1]अहले किताब से यहूदी तथा ईसाई एवं काफ़िरों से मूर्तिपूजकों का अर्थ है। यहाँ फिर यही बल दिया गया है कि धर्म को खेल तथा उपहास बनाने वाले चूँकि अल्लाह तथा उसके रसूल के शत्रु हैं, इसलिए उनके साथ ईमानवालों की मित्रता नहीं होनी चाहिए।

[2]हदीस में आता है कि जब शैतान अज़ान की आवाज़ सुनता है तो पादता (अपना वायु त्यागता) हुआ भागता है, जब अज़ान समाप्त हो जाती है तो फिर लौट आता है, तकबीर (नमाज़ खड़े होते समय की इक़ामत) के समय पुन: पीठ फेर कर चल देता है, जब तकबीर समाप्त हो जाती है, तो फिर आकर नमाज़ियों के दिलों में शंकायें उत्पन्न करता है। अल-हदीस-(सहीह बुख़ारी किताबुल अज़ान, सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात) शैतान की ही तरह शैतान के अनुयायियों को भी अज़ान का स्वर अच्छा नहीं लगता, इसलिए ये इसका उपहास उड़ाते हैं। इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस भी क़ुरआन की भाँति धर्म का स्रोत है तथा उसी प्रकार प्रमाण है क्योंकि क़ुरआन ने नमाज़ के लिए "निदा" (आमन्त्रण, घोषणा आदि) का वर्णन तो किया है, परन्तु यह "निदा" (घोषणा) किस प्रकार की जाये ? इसके शब्द क्या होंगे ? यह क़ुरआन करीम में नहीं हैं। यह चीज़ें हदीस से प्रमाणित हैं, जो इसका प्रमाण तथा धर्म के स्रोत होने का प्रमाण हैं।

(५९) आप कह दीजिए, हे यहूदियों तथा इसाईयो ! तुम हमसे केवल इसलिए शत्रुता रखते हो कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हमारी ओर उतारा गया है तथा जो कुछ इससे पूर्व उतारा गया है उस पर ईमान लाये हैं, और इसलिए भी कि तुममें अधिकतर दुराचारी हैं।

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ هَلْ تَنقِمُونَ مِنَّآ إِلَّآ أَنْ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنزِلَ مِن قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَٰسِقُونَ ﴿٥٩﴾

(६०) कह दीजिए कि क्या मैं तुम्हें बताऊँ? कि इससे भी अधिक बुरे बदले का पाने वाला अल्लाह तआला के निकट कौन है ? वह जिस पर अल्लाह तआला ने धिक्कार की हो तथा उस पर वह क्रोधित हुआ हो एवं उनमें से कुछ को बन्दर तथा सूअर बना दिया तथा जिन्होंने भूठे देवताओं की पूजा की यही लोग बुरे श्रेणी वाले हैं तथा यही सत्यमार्ग से बहुत अधिक भटके हुए हैं।[1]

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكَ مَثُوبَةً عِندَ ٱللَّهِ ۚ مَن لَّعَنَهُ ٱللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ ٱلْقِرَدَةَ وَٱلْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ ٱلطَّٰغُوتَ ۚ أُولَٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ عَن سَوَآءِ ٱلسَّبِيلِ ﴿٦٠﴾

हुज्जिते हदीस (हदीस के प्रमाण होने का अर्थ) यह है कि जिस प्रकार क़ुरआन के मंत्रों से प्रमाणित आदेशों तथा कर्तव्यों का पालन अनिवार्य है तथा उन का इंकार नास्तिकता है इसी प्रकार ईशदूत (रसूल) के कथनों से प्रमाणित आदेशों तथा कर्तव्यों का पालन भी आवश्यक है, फिर भी रसूल की हदीस का निरन्तर सिद्ध होना आवश्यक है, सही हदीस अनेक कथाकारों द्वारा हो अथवा एक से, वह कथित हो कर्मिक हो अथवा प्रमाणित सभी कर्म योग्य हैं। हदीस सहीह को एक की सूचना होने के कारण अथवा कथाकार के निर्बोध होने का दावा करके अथवा बुद्धि में न आने का बहाना करके अथवा इसी प्रकार के अन्य कारणों से अस्वीकार करना सही नहीं है यह सब हदीसों के इंकार के विभिन्न रूप हैं जो अनेक सम्प्रदायों ने इसे नकारने तथा अस्वीकार करने के लिये अपना रखे हैं।

[1]अर्थात तुम तो (हे अहले किताब !) (शास्त्रधारियों) हमसे अकारण खिन्न हो जबकि इसके सिवाय हमारा कोई दोष नहीं कि हम अल्लाह तथा पवित्र क़ुरआन पर विश्वास रखते है तथा इसके पूर्व जो धर्मशास्त्र उतारे गये। क्या वह भी कोई दोष अथवा कलंक है अर्थात यह कलंक तथा निन्दा का विषय नहीं जैसाकि तुमने समझ लिया है हम तुम्हें बताते हैं कि बुराई के योग्य तथा कुपथ जो घृणा तथा निन्दा के पात्र हैं, कौन हैं ? वह लोग हैं जिन पर

(६१) तथा जब वे आप के पास आते हैं कि हम ईमान लाये, यद्यपि वह कुफ्र लिये हुए आये थे तथा उसी कुफ्र के साथ गये भी एवं यह जो कुछ छिपा रहे हैं, उसे अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है ।[1]

وَإِذَا جَآءُوكُمْ قَالُوٓا۟ ءَامَنَّا وَقَد دَّخَلُوا۟ بِٱلْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا۟ بِهِۦ ۚ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا۟ يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾

(६२) तथा आप देखेंगे कि इन में से अधिकतर पाप के कार्यों की ओर, अत्याचार तथा क्रूरता की ओर एवं हराम माल खाने की ओर लपक रहे हैं, जो कुछ यह कर रहे हैं, वह अत्यधिक बुरे कर्म हैं ।

وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَٰرِعُونَ فِى ٱلْإِثْمِ وَٱلْعُدْوَٰنِ وَأَكْلِهِمُ ٱلسُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾

(६३) उन्हें उनके पुजारी तथा ज्ञानी उनको झूठ बोलने तथा अवैध खाने से क्यों नही रोकते ? निःसन्देह ये बुरे कर्म हैं, जो यह कर रहे हैं ।[2]

لَوْلَا يَنْهَىٰهُمُ ٱلرَّبَّٰنِيُّونَ وَٱلْأَحْبَارُ عَن قَوْلِهِمُ ٱلْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ ٱلسُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا۟ يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾

अल्लाह की धिक्कार तथा रोष हुआ और कुछ को अल्लाह ने बन्दर और सुअर बना दिया तथा जिन्होंने राक्षस की पूजा की, तथा इस दर्पण में तुम भी अपना मुख तथा कर्म देख लो कि यह किनका इतिहास है तथा कौन लोग हैं, क्या यह तुम ही तो नहीं हो ।

[1]यह द्वयवादियों (मुनाफ़िक़ों) का वर्णन है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में अविश्वास के साथ आते हैं तथा उसी के साथ वापस चले जाते हैं । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संगत तथा शिक्षा-दीक्षा का कोई प्रभाव उन पर कदाचित नहीं होता क्योंकि दिल में तो ईष्या छिपा होता है । तथा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमे की सेवा में उपस्थिति का उद्देश्य मार्गदर्शन प्राप्त करना नहीं, बल्कि धोखा, छल, कपट करना होता है । तो फिर इस उपस्थिति का लाभ क्या हो सकता है ?

[2]यह ज्ञानियों धर्मगुरुओं एवं साधु, संतों की निन्दा है कि साधारण लोगों में से अधिकांश तुम्हारे समक्ष अवज्ञा एवं कुकर्म करते हैं परन्तु तुम उन्हें रोकते नहीं ऐसी दशा में तुम्हारा मौन घोर अपराध है, इससे विदित होता है कि सत्कर्मों के प्रचार तथा दुष्कर्मों से रोकने का कितना महत्व है और इसे त्याग देने पर कितनी कड़ी धमकी है, जैसाकि अहादीस (रसूल के कथनों) में इस विषय को सविस्तार एवं स्पष्टरूप से वर्णित किया गया है ।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ۚ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۘ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ

(६४) तथा यहूदियों ने कहा कि अल्लाह (तआला) का हाथ बंधा हुआ है।[1] उन्हीं के हाथ बंधे हुए हैं तथा उनके इस कथन के कारण उन पर धिक्कार की गयी। अपितु अल्लाह तआला के दोनों हाथ खुले हुए हैं। जिस प्रकार चाहता है

---

[1]यह वही बात है जो *सूर: आले इमरान* की आयत संख्या १८१ में की गयी है कि जब अल्लाह तआला ने अपने मार्ग में व्यय करने की प्रेरणा दी तथा उसे अल्लाह को अच्छा ऋण देने के समान कहा गया तो इन यहूदियों ने कहा कि "अल्लाह तआला तो भिखारी है।" लोगों से ऋण मांग रहा है तथा वह उस उत्तम भाष्य शैली को न समझ सके जो उसके अन्दर निहित था। अर्थात सभी कुछ अल्लाह का दिया हुआ है। तथा अल्लाह के दिये हुए माल में से कुछ उसके मार्ग में व्यय कर देना, कोई ऋण नहीं है, परन्तु यह उसकी अति कृपा है कि वह उस पर भी अत्यधिक प्रतिफल प्रदान कर रहा है। यहाँ तक कि एक-एक दाने को सात-सात सौ दाने तक बढ़ा देता है। तथा उसको अच्छा ऋण इसलिए कहा गया है कि जितना तुम व्यय करोगे, अल्लाह तआला उससे कई गुना तुम्हें वापस लौटायेगा। مغلولة का अर्थ بخيلة किया गया है, जिसका अर्थ है कृपण। अर्थात यहूदियों का तात्पर्य यह नहीं था कि वास्तव में अल्लाह के हाथ बंधे हैं, अपितु उनका अर्थ यह था कि उसने अपने हाथ व्यय करने से रोके हुए हैं। (इब्ने कसीर) अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हाथ तो उन्हीं के बंधे हुए हैं। अर्थात कंजूसी तो उन्हीं का आचरण है। अल्लाह तआला के तो दोनों हाथ खुले हुए हैं, वह जिस प्रकार चाहता है व्यय करता है। वह अत्यधिक कृपालु तथा अत्यधिक प्रदान करने वाला है, सभी कोष उसी के पास हैं। इसके अतिरिक्त अपनी सृष्टि की सभी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं का प्रबन्ध कर रखा है। हमें रात अथवा दिन में, यात्रा अथवा निवास में तथा अन्य अवस्थाओं में जिन-जिन चीज़ों की आवश्यकता होती है अथवा हो सकती है, सब वही उपलब्ध कराता है।

﴿وَآتَاكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۚ وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ﴾

"तुमने जो कुछ उससे मांगा, वह उसने तुम्हें दिया, अल्लाह तआला की अनुग्रह इतनी है कि तुम गिन नहीं सकते मनुष्य ही मूर्ख है तथा अत्यधिक कृतघ्न है।" (*सूर: इब्राहीम*-३४)

हदीस में भी है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह का दाहिना हाथ भरा हुआ है, रात-दिन व्यय करता है परन्तु कोई कमी नहीं आती, ज़रा देखो जब से आकाश तथा धरती उसने बनाये हैं वह व्यय कर रहा है परन्तु उसके हाथ के कोष में कमी नहीं आयी ...... (अल-बुख़ारी किताबुल तौहीद, बॉब व काना अर्शुहु अलल मॉऐ मुस्लिम किताबुज्जकात बॉबुल हस्से अलन्नफक:)

وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِّلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٤﴾

व्यय करता है तथा जो कुछ तेरी ओर तेरे प्रभु की ओर से उतारा जाता है वह उनमें से अधिकतर को अवहेलना तथा कुफ्र में बढ़ा देता है, तथा हमने उनमें आपस में ही क़ियामत तक के लिए द्वेष तथा ईर्ष्या डाल दिया है, वह जब कभी भी युद्ध की आग को भड़काना चाहते हैं अल्लाह तआला उसको बुझा देता है।[1] यह देश भर में आतंक तथा उपद्रव मचाते फिरते हैं।[2] तथा अल्लाह तआला उपद्रवियों से प्रेम नहीं करता।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٦٥﴾

(६५) तथा यदि यह अहले किताब ईमान लाते तथा अल्लाह से डरते।[3] तो हम उनकी सभी बुराईयाँ मिटा देते तथा उन्हें अवश्य सुखद स्वर्ग में ले जाते।

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِم مِّن رَّبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِن فَوْقِهِمْ وَمِن

(६६) यदि वह तौरात तथा इंजील तथा उन धर्मशास्त्रों की स्थापना करते जो उनकी ओर उनके पालनहार की ओर से उतारी गई है[4]

---

[1]अर्थात यह जब भी आपके विरुद्ध कोई षडयन्त्र करते हैं अथवा लड़ाई के कारण उत्पन्न करते हैं, तो अल्लाह तआला उनको निष्काम कर देता तथा उनके षडयन्त्र को उन्हीं पर पलटा देता है। उन्हीं का जूता उन्हीं का सिर वाली बात पैदा कर देता।

[2]उनका दूसरा आचरण यह है कि धरती पर उपद्रव फैलाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला उपद्रवियों को प्रिय नहीं रखता।

[3]अर्थात वह ईमान जिसकी माँग अल्लाह तआला करता है उनमें सबसे विशेष मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना है, जैसाकि उनके ऊपर उतारी गयी किताबों में भी उनको इसका आदेश दिया गया है। तथा अल्लाह से डरो और अल्लाह के क्रोध से बचो, जिनमे में सबसे विशेष शिर्क है जिसमें वे लीन हैं तथा वह इंकार है जो अन्तिम रसूल के साथ वह कर रहे हैं।

[4]तौरात तथा इंजील के पालन करने का अर्थ उनके उन आदेशों का पालन है जो उनमें उन्हें दिये गये हैं तथा उन्हीं में एक आदेश अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान

تَحۡتِ أَرۡجُلِهِمۡۚ مِّنۡهُمۡ أُمَّةٞ مُّقۡتَصِدَةٞۖ وَكَثِيرٞ مِّنۡهُمۡ سَآءَ مَا يَعۡمَلُونَ ۝

तो अपने ऊपर तथा पैरों के नीचे से खाते ।[1] उनमें एक गिरोह संतुलित है तथा अधिकांश दुराचार कर रहे हैं ।[2]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغۡ مَآ أُنزِلَ إِلَيۡكَ مِن رَّبِّكَۖ وَإِن لَّمۡ تَفۡعَلۡ فَمَا بَلَّغۡتَ رِسَالَتَهُۥۚ وَٱللَّهُ يَعۡصِمُكَ مِنَ ٱلنَّاسِۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهۡدِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلۡكَٰفِرِينَ ۝

(६७) हे रसूल ! (सन्देशवाहक) आपकी ओर आपके पोषक के पास से जो (सन्देश) उतारा गया है उसे पहुँचा दें, यदि आप ने यह नहीं किया तो अपने पालनहार का सन्देश नहीं पहुँचाया[3] और अल्लाह लोगों से आप की

लाना भी था । مَا أُنـزِل का अर्थ सभी आसमानी किताबें हैं, जिनमें क़ुरआन करीम भी सम्मिलित है । तात्पर्य यह है कि यह इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें ।

[1]ऊपर-नीचे का अर्थ प्राचुर्ता के रूप में लिया गया है अथवा ऊपर से का अर्थ अवश्यकतानुसार आकाश से तथा नीचे से का अर्थ धरती से है जिसका परिणाम खाद्य पदार्थ की अधिकता है । जिस प्रकार से एक अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَلَوۡ أَنَّ أَهۡلَ ٱلۡقُرَىٰٓ ءَامَنُواْ وَٱتَّقَوۡاْ لَفَتَحۡنَا عَلَيۡهِم بَرَكَٰتٖ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِ﴾

"यदि बस्ती वाले ईमान लाये होते और उन्होंने अल्लाह का भय रखा होता तो हम उन पर 'आकाश तथा धरती की विभूतियों के (द्वार) खोल देते ।" (सूरः *अल-आराफ़*-९६)

[2]परन्तु उनके बहुमत ने ईमान का यह मार्ग नही अपनाया तथा वह अपने कुफ़्र पर अड़े रहे एवं मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूत्तव) के इंकार पर दृढ़ रहे । इसी मार्ग तथा इंकार को यहाँ दुराचार कहा गया है । मध्यम नीति को अपनाने वाले एक गुट से तात्पर्य यहाँ अब्दुल्लाह बिन सलाम जैसे आठ अथवा नौ अन्य व्यक्ति हैं जो मदीने के यहूदियों में से मुसलमान हुए ।

[3]इस आदेश का यह लाभ है कि जो भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा गया है उसे बिना किसी भय तथा विलम्ब के आप लोगों तक इसे पहुँचा दें । अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा ही किया । आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि "जो व्यक्ति यह शंका करे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ छिपा लिया, उसने अवश्य झूठ कहा ।" सहीह बुख़ारी ४८५५) तथा आदरणीय अली (رضي الله عنه) से भी पूछा गया कि तुम्हारे पास क़ुरआन के अतिरिक्त प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा उतारी गयी कोई बात है ? तो उन्होंने सौगन्ध खाकर नकारात्मक उत्तर दिया तथा कहा .(إلاَّ فَهمًا يُعطِيهُ اللهُ رَجُلًا) (अपितु क़ुरआन की समझ है जिसे चाहे अल्लाह तआला प्रदान कर दे) (सहीह बुख़ारी ६९०३) हज्जतुल विदाआ के अवसर पर आप

रक्षा करेगा ।[1] नि:संदेह अल्लाह विश्वासहीनों को मार्गदर्शन नहीं देता।

(६८) आप कह दें कि हे अहले किताब ! तुम्हारा कोई आधार नहीं जब तक कि तौरात तथा इंजील एवं जो भी (धर्मशास्त्र) तुम्हारे पालक की ओर से तुम्हारे पास उतारा गया है उसकी स्थापना (पालन) न करो तथा जो आपकी ओर (पवित्र क़ुरआन) आप के पोषक की

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لَسْتُمْ عَلَىٰ شَىْءٍ حَتَّىٰ تُقِيمُوا۟ ٱلتَّوْرَىٰةَ وَٱلْإِنجِيلَ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ ۗ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَٰنًا وَكُفْرًا ۖ

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लाख अथवा एक लाख चालीस हज़ार के जन समूह के समक्ष पूछा, "तुम मेरे विषय में क्या कहोगे ?" उन्होंने उत्तर दिया।

(نَشْهَدُ أَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ، وَأَدَّيْتَ، وَنَصَحْتَ).

"हम गवाही देंगे कि आपने अल्लाह तआला का संदेश पहुँचा दिया तथा दायित्व अदा कर दिया एवं भलाई कर दी।"

"आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकाश की ओर उंगली उठाकर संकेत करते हुए फ़रमाया (तीन बार) اللهم هل بلّغت अथवा اللهم فاشهد (तीन बार) (सहीह मुस्लिम किताबुल हज बाब हज्जतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अर्थात हे अल्लाह ! मैंने तेरा संदेश पहुँचा दिया तू गवाह रह, तू गवाह रह, तू गवाह रह।"

[1]यह रक्षा अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से भी की, तथा सांसारिक साधनों से भी। सांसारिक साधनों में इस आयत के उतरने से बहुत पूर्व अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम आप के चाचा अबू तालिब के दिल में आपका स्वभाविक प्रेम डाल दिया तथा वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा करते रहे। उनका कुफ़्र पर बना रहना भी इन कारणों का एक भाग प्रतीत होता है। क्योंकि यदि वह मुसलमान हो जाते तो शायद क़ुरैश के सरदारों के दिलों में उनका वह भय न रहता, जो उनके धर्म के अनुयायी होने के कारण उनके अन्तिम समय तक बना रहा। फिर उनके देहान्त के उपरान्त कुछ अन्य क़ुरैशी सरदारों द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा की, उसके पश्चात मदीने के अंसारों द्वारा आप की रक्षा की। फिर जब यह आयत उतरी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुरक्षा के प्रत्यक्ष प्रबन्धों को हटा दिया। उसके पश्चात अनेक बड़े ख़तरे पेश आये, परन्तु अल्लाह तआला ने रक्षा की। अत: वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला ने समय-समय पर यहूदियों के छल-षडयन्त्र से सूचित करके एक भयानक ख़तरे की घटना से बचा लिया तथा घमासान युद्ध के समय काफ़िरों के ख़तरनाक आक्रमणों से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुरक्षित रखा।

रक्षा करेगा ।[1] निःसंदेह अल्लाह विश्वासहीनों को मार्गदर्शन नहीं देता ।

قُلْ يَاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ

(६८) आप कह दें कि हे अहले किताब ! तुम्हारा कोई आधार नहीं जब तक कि तौरात तथा इंजील एवं जो भी (धर्मशास्त्र) तुम्हारे पालक की ओर से तुम्हारे पास उतारा गया है उसकी स्थापना (पालन) न करो तथा जो आपकी ओर (पवित्र क़ुरआन) आप के पोषक की

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लाख अथवा एक लाख चालीस हज़ार के जन समूह के समक्ष पूछा, "तुम मेरे विषय में क्या कहोगे ?" उन्होंने उत्तर दिया ।

(نَشْهَدُ أَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ، وَأَدَّيْتَ، وَنَصَحْتَ).

"हम गवाही देंगे कि आपने अल्लाह तआला का संदेश पहुँचा दिया तथा दायित्व अदा कर दिया एवं भलाई कर दी ।"

"आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकाश की ओर उंगली उठाकर संकेत करते हुए फ़रमाया (तीन बार) اللهم هل بلّغت अथवा اللهم فاشهد (तीन बार) (सहीह मुस्लिम किताबुल हज बाब हज्जतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अर्थात हे अल्लाह ! मैंने तेरा संदेश पहुँचा दिया तू गवाह रह, तू गवाह रह, तू गवाह रह ।"

[1]यह रक्षा अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से भी की, तथा सांसारिक साधनों से भी । सांसारिक साधनों में इस आयत के उतरने से बहुत पूर्व अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम आप के चाचा अबू तालिब के दिल में आपका स्वभाविक प्रेम डाल दिया तथा वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा करते रहे । उनका कुफ़्र पर बना रहना भी इन कारणों का एक भाग प्रतीत होता है । क्योंकि यदि वह मुसलमान हो जाते तो शायद क़ुरैश के सरदारों के दिलों में उनका वह भय न रहता, जो उनके धर्म के अनुयायी होने के कारण उनके अन्तिम समय तक बना रहा । फिर उनके देहान्त के उपरान्त कुछ अन्य क़ुरैशी सरदारों द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा की, उसके पश्चात मदीने के अंसारों द्वारा आप की रक्षा की । फिर जब यह आयत उतरी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुरक्षा के प्रत्यक्ष प्रबन्धों को हटा दिया । उसके पश्चात अनेक बड़े ख़तरे पेश आये, परन्तु अल्लाह तआला ने रक्षा की । अतः वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला ने समय-समय पर यहूदियों के छल-षडयन्त्र से सूचित करके एक भयानक ख़तरे की घटना से बचा लिया तथा घमासान युद्ध के समय काफ़िरों के ख़तरनाक आक्रमणों से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुरक्षित रखा ।

فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

ओर से उतारा गया है वह इनमें से अधिकतर की हठ तथा कुफ्र को बढ़ायेगा[1] अत: आप अविश्वासियों पर खेद न करें।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) मुसलमानों, यहूदियों, तारों के पुजारियों एवं ईसाईयों में से जो भी अल्लाह तथा अन्त दिवस (प्रलय) के प्रति विश्वास करेगा तथा सदाचार करेगा उन्हीं पर कोई भय नहीं न वह शोक करेंगे।[2]

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ۭ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا

(७०) हमने इस्राईल के पुत्रों (यहूदियों) से वचन लिया तथा उनके पास रसूलों को भेजा। जब कोई रसूल उनके पास ऐसा आदेश लाया जो उनका मन स्वीकार न करता था तो

---

[1]यह मार्गदर्शन तथा भटकाव उस नियमानुसार है जो अल्लाह तआला की विधि है। अर्थात जिस प्रकार कुछ कर्मों, तथा चीजों के कारण से ईमान, सत्कर्म तथा लाभकारी ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती है। उसी प्रकार इंकार तथा अवज्ञा के कारण कुफ्र में भी बढ़ोत्तरी होती है। इस विषय की चर्चा अल्लाह तआला ने क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर की है। जैसे :

﴿ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ۭ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۭ اُولٰۗىِٕكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴾

"कह दीजिए ! यह क़ुरआन ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन तथा रोग निवारक है तथा जोलोग ईमान नहीं लाते उनके कान बहरे हैं और यह उनके पक्ष में अंधापन है। बहरेपन के कारण उनको जैसे दूर स्थान से आवाज़ दी जाती हो।" (*सूर: हा मीम अल-सजद:-४४*)

﴿ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴾

"और हम क़ुरआन के द्वारा वह चीज़ उतारते हैं जो ईमानवालों के लिए स्वास्थ्य तथा कृपा है तथा अत्याचारी के लिए तो इससे हानि ही होती है।" (*सूर: बनी इस्राईल-८२*)

[2]यह वही विषय है जो *सूर: अल-बक़र:* की आयत संख्या ६२ में वर्णित हो चुका है, उसे देख लिया जाये।

وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾

उन्होंने एक गुट को झुठलाया तथा एक गुट की हत्या करते रहे।

وَحَسِبُوٓا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِّنْهُمْ ۚ وَٱللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾

(७१) तथा समझ बैठे कि कोई दण्ड न मिलेगा, इसलिये अंधे-बहरे हो गये। फिर अल्लाह (तआला) ने उनको क्षमा कर दिया उसके उपरान्त भी उनमें से अधिकतर लोग अंधे-बहरे हो गये।[1] और अल्लाह (तआला) उनके कर्मों को भली-भाँति देखने वाला है।

لَقَدْ كَفَرَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ ٱلْمَسِيحُ يَـٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱعْبُدُوا ٱللَّهَ رَبِّى وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُۥ مَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ

(७२) वह लोग काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है[2] जबकि मसीह ने (स्वयं) कहा कि हे इस्राईल के पुत्रो ! मेरे पोषक तथा अपने पोषक अल्लाह की पूजा करो[3] क्योंकि जो अल्लाह के साथ

---

[1]अथार्त समझते थे कि कोई दण्ड नहीं मिलेगा। परन्तु अल्लाह द्वारा वर्णित नियमों के आधार पर दण्ड निर्धारित हुआ कि यह सत्य को देखने से नेत्रहीन हो गये तथा सत्य को सुनने से वधिर हो गये तथा क्षमा माँग लेने के उपरान्त भी यही कर्म उन्होंने दोहराया है, तो इस का वही दण्ड भी पुन: दिया गया।

[2]यही विषय आयत संख्या १७ में आ चुका है यहाँ अहले किताब के कुपथा की चर्चा पुन: की जा रही है। इसमें उनके उस गुट की धर्म भ्रष्टता का वर्णन है जो आदरणीय मसीह के स्वयं अल्लाह होने पर विश्वास करता है।

[3]अर्थात आदरणीय ईसा अर्थात मसीह पुत्र मरियम ने माँ की गोद में (अल्लाह के आदेश से जबकि बच्चे उस अवस्था में बोलने की शक्ति नही रखते) सर्वप्रथम अपने मुख से अपने को भक्त ही कहा तथा कहा।

﴿ إِنِّى عَبْدُ ٱللَّهِ ءَاتَىٰنِىَ ٱلْكِتَـٰبَ وَجَعَلَنِى نَبِيًّا ﴾

"मैं अल्लाह का भक्त हूँ तथा उसका रसूल हूँ, मुझे उसने किताब भी प्रदान की है।" (*सूर: मरियम*-३०)

आदरणीय मसीह नें यह नहीं कहा कि मैं अल्लाह अथवा अल्लाह का पुत्र हूँ केवल यह कहा कि मैं, अल्लाह का दास हूँ। तथा व्यस्क अवस्था में भी उन्होंने यही आमन्त्रण दिया।

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ رَبِّى وَرَبُّكُمْ فَٱعْبُدُوهُ ۚ هَـٰذَا صِرَٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴾

اللّٰهُ عَلَيۡهِ الۡجَـنَّةَ وَمَاۡوٰٮهُ النَّارُ‌ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيۡنَ مِنۡ اَنۡصَارٍ۝

मिश्रण (शिर्क) करेगा अल्लाह ने उस पर स्वर्ग निषेध कर दी है तथा उसका ठिकाना नरक है एवं अत्याचारियों (मिश्रणवादियों) का कोई सहायक न होगा ।[1]

لَقَدۡ كَفَرَ الَّذِيۡنَ قَالُوۡۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ‌ ۘ وَمَا مِنۡ اِلٰهٍ اِلَّاۤ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ ‌ؕ وَاِنۡ

(७३) वह लोग भी पूर्ण रूप से काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है ।[2] वास्तव में अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई

"नि:संदेह मेरा और तुम्हारा प्रभु अल्लाह है, उसी की उपासना करो, यही सीधा मार्ग है ।" (*सूर: आले इमरान*-५१)

यह वही शब्द हैं जो माँ की गोद में कहे थे (देखिये *सूर: मरियम*-३६) तथा जब क़ियामत के निकट वह आकाश से उतरेंगे, जिसकी सूचना सहीह हदीस में दी गयी है तथा जिस पर अहले सुन्नत का विश्वास है, तब भी वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के अनुसार लोगों को अल्लाह की तौहीद (ऐकश्वरवाद) तथा उसकी भक्ति की ओर बुलायेंगें, न कि अपनी उपासना की ओर ।

[1]आदरणीय मसीह ने अपनी भक्ति तथा रिसालत का प्रदर्शन उस समय भी किया था जब वह माँ की गोद में स्तनपान की आयु में थे। पुन: व्यस्क अवस्था में भी यही घोषणा की तथा साथ ही साथ शिर्क की पहचान तथा बचावो की विधि एवं बुराईयाँ भी वर्णित कर दीं कि मूर्तिपूजक पर स्वर्ग निषेध है तथा उसका कोई सहायक भी न होगा, जो उसे नरक से निकाल लाये, जैसाकि मिश्रणवादियों का भ्रम है ।

[2]यह ईसाईयों के दूसरे गुट का वर्णन है, जो तीन के योग को ईश्वर मानता है तथा उसे त्रिमूर्ति कहता है । यद्यपि इसकी व्याख्या तथा वर्णन में उनके मध्य स्वयं मतभेद हैं। परन्तु उचित बात यह है कि उन्होंने आदरणीय ईसा तथा उनकी माता आदरणीया मरियम को भी पूज्य बना लिया है। जैसा कि क़ुरआन ने उसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया है अल्लाह तआला प्रलय के दिन आदरणीय ईसा से प्रश्न करेगा।

﴿ ءَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ ﴾

"क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे तथा मेरी माता को अल्लाह के अतिरिक्त (पूज्य) बना लेना ?" (*सूर: अल-मायद:*-११६)

इससे ज्ञात हुआ कि ईसा तथा मरियम, इन दोनों को ईसाईयों ने पूज्य बनाया, तथा अल्लाह तीसरा पूज्य हुआ, जो त्रिमूर्ति में तीसरा (तीन में का तीसरा) कहलाया। पहले विश्वास की तरह अल्लाह तआला ने इसे भी अधर्म कहा है ।

لَمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

पूज्य नहीं तथा यदि यह लोग अपने कथन से न रुके तो उनमें से जो कुफ्र में रहेंगे उन्हें कठोर यातनायें अवश्य पहुँचेंगी।

اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾

(७४) यह लोग अल्लाह (तआला) की ओर क्यों नहीं झुकते तथा क्यों नहीं क्षमा-याचना करते ? अल्लाह (तआला) अत्यधिक क्षमाशील तथा अत्यधिक कृपालु है।

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) मरियम के पुत्र मसीह मात्र पैग़म्बर होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। उससे पूर्व भी बहुत से पैग़म्बर हो चुके हैं। उसकी माता एक पवित्र एवं सत्यवती स्त्री थीं।[1] दोनो (माता-पुत्र) भोजन किया करते थे।[2] आप देखिये हम किस प्रकार तर्क उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं, फिर विचार कीजिए कि वे किस प्रकार पलटाये जाते हैं।

---

[1] صِدِّيْقَة का अर्थ है विश्वासी तथा पवित्र अर्थात उन्होंने भी आदरणीय ईसा के दूतत्व को माना तथा उस पर विश्वास किया। इसका अर्थ यह हुआ कि वह ईशदूत नहीं थीं जैसा कि कुछ लोगों को भ्रम हुआ है। तथा उन्होंने आदरणीया मरियम सहित आदरणीया सारह (इसहाक़ की माँ) तथा आदरणीया मूसा की माँ को ईशदूता बना दिया है। जिसका तर्क यह देते हैं कि प्रथम वर्णित दो स्त्रियों से स्वर्ग दूत ने बात की तथा आदरणीय मूसा की माता को स्वयं अल्लाह तआला ने वह्यी किया। यह बात करनी तथा उपदेश देना दूतत्व का तर्क है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के विचार से यह प्रमाण ऐसा नहीं जो क़ुरआन के स्पष्ट कथन की तुलना कर सके जो क़ुरआन ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है कि हमने जितने रसूल भी भेजे वह पुरुष थे। (*सूर: यूसुफ़-१०९*)

[2]इसमें आदरणीय मसीह तथा आदरणीया मरियम दोनों के पूज्य न होने तथा मनुष्य होने को प्रमाणित किया है। क्योंकि भोजन करना, यह मनुष्य की आवश्यकता तथा इच्छाओं के अनुरूप है। जो ईश हो, वह तो इन गुणों से तो रहित है, बल्कि हर प्रकार से रहित होता है। अर्थात दोनों साधारण मनुष्य थे तथा उनमें सभी मानवीय विशेषतायें पाई जाती थीं।

(७६) आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त उनको पूजते हो जो न तो तुम्हारी हानि के मालिक हैं तथा न किसी प्रकार के लाभ के, अल्लाह (तआला) ही भली-भाँति जानने वाला तथा पूर्णरूप से जानने वाला है ।[1]

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾

(७७) कह दीजिए, हे अहले किताब ! अपने धर्म में अनर्थ अतिश्योक्ति न करो ।[2] तथा उन लोगों की इन्द्रीय इच्छाओं का अनुकरण न करो, जो पहले से भटक चुके है[3] तथा बहुतों को भटका चुके हैं । तथा सीधे मार्ग से हट गये हैं ।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٧٧﴾

(७८) इस्राईल की सन्तान के काफ़िरों को (आदरणीय) दाऊद तथा (आदरणीय) ईसा पुत्र मरियम के मुख से धिक्कारा गया ।[4] इस

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ

---

[1]यह मूर्तिपूजकों की कुवुद्धि का स्पष्टीकरण किया जा रहा है कि उन्होंने ऐसों को पूज्य वना रखा है जो किसी को न लाभ पहुंचा सकते हैं तथा न हानि, वरन् लाभ-हानि तो दूर की वात, वह तो किसी वात को सुनने तथा किसी की दशा को जानने की ही शक्ति नहीं रखते हैं । यह शक्ति केवल अल्लाह ही की है । इसलिए कामद तथा संकट हरि मात्र वही है ।

[2]अर्थात सत्य का अनुसरण करने में सीमा उल्लंघन न करो तथा जिनके आदर करने का आदेश दिया गया है, उसमें अतिश्योक्ति करके नबूवत के पद से उठा कर पूज्य के स्थान पर आसीन न कर दो, जैसे कि आदरणीय मसीह के पक्ष में तुमने किया । अतिश्योक्ति प्रत्येक समय में शिर्क तथा भटकाव का साधन रही है । मुसलमान भी इस अतिश्योकित से सुरक्षित नहीं रह सके । उन्होंने कुछ धर्मविदों के विषय में अतिश्योक्ति किया तथा उनके विचार, कथन यहाँ तक कि उनसे सम्बन्धित धार्मिक निर्णय तथा विचारों को भी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस की अपेक्षा प्राथमिकता दी ।

[3]अर्थात अपने से पूर्व के लोगों के पीछे न लगो, जो एक नबी को पूज्य बनाकर स्वयं कुपथ हुए हैं तथा दूसरों को भी कुपथ बनाया है ।

[4]अर्थात जबूर में जो आदरणीय दाऊद पर तथा इंजील में जो आदरणीय ईसा पर उतरी तथा अव यही धिक्कार क़ुरआन करीम के द्वारा उन पर की जा रही है, जो परम आदरणीय मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरा है । धिक्कार का अर्थ है अल्लाह की कृपा तथा अनुग्रह से दूरी ।

ذٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّ كَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾

कारण कि वे अनुज्ञा करते थे तथा सीमा का उल्लंघन करते थे ।[1]

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ۭلَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

(७९) वे आपस में एक-दूसरे को बुरे कामों से जो वह करते थे रोकते न थे ।[2] जो कुछ यह करते थे अवश्य वह बहुत बुरा था ।

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭلَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

(८०) उनमें के अधिकतर लोगों को आप देखेंगें कि वे काफ़िरों से मित्रता करते हैं । जो कुछ उन्होंने अपने आगे भेज रखा है वह बहुत बुरा है, (यह) कि अल्लाह (तआला) उनसे अप्रसन्न हुआ तथा वे सदैव यातना में रहेंगे ।[3]

---

[1]यह धिक्कार के कारण हैं १. अवज्ञाकारिता, अर्थात कर्तव्य का त्याग तथा निषेध कर्मों का करना । उन्होंने अल्लाह की अवज्ञा की । २. अतिक्रम, अर्थात धर्म में अतिशय नवीन रीतियाँ बनाकर उन्होंने उल्लंघन किया ।

[2]इस पर अधिक यह कि वह एक-दूसरे को बुराई से नहीं रोकते थे, जो स्वयं एक बहुत बड़ा अपराध है । कुछ व्याख्याकारों ने इसी निषेध त्याग को अवज्ञता तथा अतिक्रम माना है, जो धिक्कार का कारण बना । अन्ततः दोनों अवस्थाओं में बुराई को देखते हुए बुराई से न रोकना, बहुत बड़ा अपराध तथा धिक्कार एवं अल्लाह के क्रोध का कारण है । हदीस में भी इस अपराध पर अत्यधिक घोर चेतावनियाँ आई हैं । एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "सर्वप्रथम कमी जो इस्राईल की सन्तान में आयी वह यह थी कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को बुराई करते हुए देखता तो कहता कि अल्लाह से डरो तथा यह बुराई छोड़ दो, यह तेरे लिए उचित नहीं । परन्तु दूसरे दिन फिर उसके साथ उसे खान-पान तथा उठने-बैठने में कोई संकोच अथवा लज्जा का आभास न होता (अर्थात उसके साथ एक प्राण दो शरीर तथा मित्र बन जाता) जबकि ईमान की अभियाचना यह थी कि उससे घृणा तथा सम्बन्ध विच्छेद करता जिसके कारण अल्लाह ने उनके मध्य आपस में कटुता डाल दी तथा वह अल्लाह के धिक्कार के पात्र हुए ।" पुनः फ़रमाया कि, "अल्लाह की सौगन्ध तुम अवश्य लोगों को पुण्य करने का आदेश दिया करो तथा बुराई से रोका करो, अत्याचारी का हाथ पकड़ लिया करो (वरन् तुम्हारी भी यही दशा होगी)" "अल-हदीस" (अबू दाऊद किताबुल मलाहिम संख्या ४३३६) एक दूसरे कथन में इस कर्तव्य के त्याग पर यह चेतावनी दी गयी है कि तुम अल्लाह की यातनाओं के योग्य बन जाओगे, तुम अल्लाह से प्रार्थना भी करोगे तो स्वीकार न होगी । (मुसनद अहमद भाग ५ पृ॰३८८)

[3]यह काफ़िरों से मित्रता का परिणाम है कि अल्लाह तआला उन पर क्रोधित हुआ तथा इसी क्रोध के कारण स्थाई रूप से नरक की यातना है ।

(८१) यदि उन्हें अल्लाह (तआला) पर, नबी पर, तथा जो उतारा गया है उस पर ईमान होता तो यह काफ़िरों से मित्रता न करते, परन्तु उनमें से अधिकतर लोग दुराचारी (ग़लतकार) हैं ।[1]

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلٰكِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُونَ ﴿٨١﴾

(८२) नि:सन्देह आप ईमानवालों का कटु शत्रु यहूदियों तथा मूर्तिपूजकों को पायेंगे ।[2] तथा ईमानवालों के सबसे अधिक निकटता की मित्रता आप अवश्य उनमें पायेंगें जो अपने आप का को ईसाई कहते हैं, यह इसलिए कि उनमें विद्वान तथा बैरागी हैं तथा इस कारण कि वे घमण्ड नहीं करते ।[3]

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾

---

[1]इसका अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति के अन्दर सत्य रूप में विश्वास होगा वह धर्मभ्रष्टों से कभी मित्रता नहीं करेगा ।

[2]इसलिए कि यहूदियों में शत्रुता तथा इंकार, सत्य से विमुखता तथा अहंकार, तथा ज्ञानियों एवं ईमानवालों की आलोचना की भावना बहुत पायी जाती है । यही कारण है कि नबियों की हत्या तथा उनको झुठलाना उनका आचरण रहा है । यहाँ तक कि उन्होंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या के कई बार षड्यन्त्र रचे । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू भी किया हर प्रकार से हानि पहुँचाने की घृणित योजना बनाई तथा इस सम्बन्ध में मूर्तिपूजकों की भी यही दशा रही है ।

[3] رُهبان से तात्पर्य पुनीत उपासक एवं बैरागी तथा قِسّيسين से तात्पर्य ज्ञानी तथा वक्ता है अर्थात इन ईसाईयों में ज्ञान एवं नम्रता है इसलिये उनमें यहूदियों की भांति इंकार तथा अहंकार नहीं । इसके अतिरिक्त ईसाई धर्म में क्षमा की शिक्षा की प्रधानता है । यहाँ तक की उनके ग्रन्थों में लिखा है कि कोई तुम्हारे दायें गाल पर मारे तो बायाँ गाल उसके सामने कर दो इन कारणों से यह यहूदियों की अपेक्षा मुसलमानों से निकट हैं । ईसाईयों के यह आचरण यहूदियों के सापेक्ष हैं फिर भी जहाँ तक इस्लाम से शत्रुता का सम्बन्ध है कुछ अन्तर के साथ ईसाईयों में भी विद्यमान है । जैसाकि ईसाईयों तथा मुसलमानों के बीच सदियों से जारी युद्ध से स्पष्ट है तथा जो वर्तमान में भी जारी है और अब तो इस्लाम के विरोध में दोनों मिलकर कार्यरत हैं इसलिये इस्लाम ने दोनों की मित्रता से मना किया है ।

(८३) तथा जब वह रसूल की ओर उतारे हुए (संदेश) सुनते हैं, तो आप उनकी आखों से बहते अश्रु की धारा को देखते हैं, इस कारण से कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया। वह कहते हैं हे हमारे प्रभु! हम मुसलमान हो गये। बस तू हमें भी साक्षियों में लिख ले।

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۖ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾

(८४) तथा हमें क्या है कि अल्लाह तथा उस सत्य के प्रति विश्वास न करें जो हमारे पास आया है तथा यह आशा न करें कि हमारा पोषक हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा।[1]

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَن يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾

---

[1]इथोपिया (हब्शा) में जहाँ मुसलमान अपने मक्की युग में दो बार हिजरत (प्रस्थान) करके गये। असहमा: नजाशी का राज्य था, यह ईसाई देश था। यह आयत इथोपिया के निवासी ईसाईयों के बारे में उतरी है परन्तु कथनों के आधार पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अम्र बिन उमैया जमरी को अपना पत्र देकर नजाशी के पास भेजा था, जो उन्होंने जाकर उसे सुनाया। नजाशी ने वह पत्र सुन कर इथोपिया में रह रहे प्रवासी मुसलमानों तथा आदरणीय जाफ़र पुत्र अबू तालिब को अपने पास बुलाया तथा अपने विद्वानों, पुजारियों, पादरियों आदि को भी एकत्रित कर लिया, फिर आदरणीय जाफ़र को क़ुरआन करीम पढ़ने का आदेश दिया। आदरणीय जाफ़र ने सूर: मरियम पढ़ी, जिसमें आदरणीय ईसा के चमत्कारिक जन्म तथा उनके भक्तत्व तथा रिसालत (दूतत्व) का वर्णन है, जिसे सुनकर वे बड़े प्रभावित हुए तथा आखों से अश्रु प्रवाहित हो गये एवं ईमान ले आये। कुछ लोग कहते हैं कि नजाशी ने अपने कुछ धर्मज्ञों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा था। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन सुनाया तो उनकी आंखों से अश्रु की धारा प्रवाहित हो गयी तथा ईमान ले आये। (फ़तहुल कदीर) इन आयतों में क़ुरआन करीम सुनकर उन पर जो प्रभाव हुआ, उसका चित्रण किया गया है। तथा उनके विश्वास करने का वर्णन है पवित्र क़ुरआन में अन्य स्थानों पर भी ईसाईयों के इस प्रकार ईमान लाने के वर्णन हैं। जैसे

﴿وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ﴾ [آل عمران: ١٩٩]

(८५) तोअल्लाह ने उनकी इस प्रार्थना के कारण ऐसे उद्यान दिये जिनके नीचे नहरें प्रवाहित हैं, जिसमें सदा निवास करेगें तथा यही सदाचारियों का प्रत्युपकार है।

فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۸۵﴾

(८६) तथा जो अविश्वासी हो गये एवं हमारी आयतों को झुठला दिये वही नरकवासी हैं।

وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ﴿۸۶﴾

(८७) हे ईमानवालो ! उन पवित्र वस्तुओं को अवैध न बनाओ जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे लिये वैध बना दिया[1] तथा अतिक्रमण न करो,

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَیِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ

"निःसन्देह अहले किताब में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह तथा उस किताब पर जो तुम पर उतारी गयी है तथा उस पर जो उन पर उतारी गयी थी ईमान रखते हैं तथा अल्लाह के समक्ष विनती करते हैं।" (*सूरः आले-इमरान-१९९*)

तथा हदीस में आता है कि जब नजाशी के निधन का समाचार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिला, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से कहा कि "(इथोपिया) हब्शा में तुम्हारे भाई का देहान्त हो गया है, उसकी नमाज़ पढ़ो।" अतः एक रेगिस्तान में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी नमाज़ जनाज़ः (गायबाना) अदा फ़रमायी। (सहीह बुख़ारी मनाकिबुल अन्सार व किताबुल जनाएज़, सहीह मुस्लिम किताबुल जनाएज़)। एक अन्य हदीस में ऐसे अहले किताब के विषय में जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत (दूतत्व) पर ईमान लाये, बताया गया है कि उन्हें दुगना प्रतिफल मिलेगा। (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म वल निकाह)

[1]हदीस में आता है कि एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा कहने लगा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! जब मैं मांस खाता हूँ तो सम्भोग की इच्छा प्रबल हो जाती है, इसलिए मैंने अपने ऊपर मांस हराम (निषेध) कर लिया है, जिस पर यह आयत उतरी। सहीह त्रिमिज़ी, अलवानी, भाग ३ पृष्ठ ४६) इसी प्रकार उतरने के कारण के अतिरिक्त अन्य कथनों से सिद्ध है कि कुछ सहचर संयम तथा आराधना के लिए कुछ वैध वस्तुओं से (जैसे स्त्रियों से विवाह करने, रात के समय सोने तथा दिन के समय खाने-पीने से) रुकना चाहते थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसकी सूचना मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने से रोका तथा मना किया। आदरणीय उस्मान बिन मज़ऊन भी अपनी पत्नी से अलग रहने लगे थे,

الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٧﴾

नि:सन्देह अल्लाह अतिकारियों से प्रेम नहीं करता।

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा अल्लाह (तआला) ने जो चीज़ें तुम्हें दी हैं उनमें से वैधानिक रूचिकर वस्तुऐं खाओ तथा अल्लाह तआला से डरो, जिस पर तुम ईमान रखते हो।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا عَقَّدتُّمُ الْأَيْمَانَ ۖ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ

(८९) अल्लाह तआला तुम्हारी सौगन्धों में बेकार सौगन्धों पर तुमको नहीं पकड़ता। परन्तु पकड़ उसकी करता है तुम जिन सौगन्धों को दृढ़ कर दो।[1] उसका प्रायश्चित दस गरीबों को

उनकी पत्नी की शिकायत (उलाहना) पर उन्हें भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोका। (हदीस की किताबें)

अत: इस आयत तथा हदीस से ज्ञात हुआ कि अल्लाह की उचित की हुई वस्तु को निषेध कर लेना अथवा उससे वैसे ही बचना उचित नहीं है, चाहे उसका सम्बन्ध खान, पान से हो अथवा वस्त्र से हो अथवा प्रिय अथवा उचित इच्छाओं से हो।

समस्या- इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति किसी चीज़ को अपने ऊपर निषेध कर लेगा तो वह निषेधित नहीं होगी, सिवाये पत्नी के। परन्तु इस अवस्था में कुछ विद्वानों का कथन है कि अपनी सौगन्ध का प्रायश्चित करना होगा तथा कुछ के निकट प्रायश्चित आवश्यक नहीं। इमाम शौकानी कहते हैं कि सहीह हदीस से इसी बात की पुष्टि होती है, क्योंकि नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस अवस्था में किसी को सौगन्ध का दण्ड अदा करने का आदेश नहीं दिया है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि इस आयत के पश्चात अल्लाह तआला ने सौगन्ध के प्रायश्चित का वर्णन किया है जिससे ज्ञात होता है कि किसी अवर्जित पदार्थ का वर्जित कर लेना यह सौगन्ध के समान है जो प्रायश्चित देने का कारण है। परन्तु यह तर्क सहीह हदीस की उपस्थिति में नगण्य है। वही उचित है जो इमाम शौकानी का कथन है।

[1]शपथ को अरवी भाषा में हलफ़ अथवा यमीन कहते हैं जिनका बहुवचन अहलाफ़ तथा ऐमान है। शपथ के तीन भेद होते हैं : (१) लग़्व (२) ग़मूस (३) मोअक़्क़द। (१) लग़्व वह सौगन्ध है जो मनुष्य बात-बात पर स्वाभाविक रूप से बिना किसी प्रयत्न तथा ध्येय के खाता रहता है। इसमें कोई पकड़ न होगी। (२) ग़मूस वह झूठी सौगन्ध है जो मनुष्य धोखा देने या छल के लिए खाता है। यह महापाप है, अपितु अति महापाप है परन्तु इस का कोई प्रायश्चित नहीं है। (३) मोअक़्क़द वह सौगन्ध है जो मनुष्य अपनी

عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٨٩

खाना देना है मध्यम श्रेणी का, जो अपने घरवालों को खिलाते हो ।[1] अथवा उनको वस्त्र देना ।[2] अथवा एक दास अथवा दासी स्वतन्त्र करना है ।[3] तथा जिससे यह न हो सके वह तीन दिन रोज़े रखे ।[4] यह तुम्हारी सौगन्धों का प्रायश्चित है जबकि तुम सौगन्ध खा लो तथा अपनी सौगन्धों को ध्यान में रखो। इस प्रकार अल्लाह तआला तुम्हारे लिए अपने आदेशों का वर्णन करता है, ताकि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो।

बात में बल तथा परिपक्वता के लिए जानबूझ कर खाये। इस प्रकार की सौगन्ध को यदि तोड़ेगा तो उसका वह प्रायश्चित अदा करेगा, जिसका आगे आयत में वर्णन है।

[1]इस खाने की मात्रा के लिए कोई एक सही कथन नहीं है। इसलिए मतभेद है। परन्तु इमाम शाफ़ई ने उस हदीस से तर्क देते हुए, जिसमें रमजान में रोज़े की स्थिति में पत्नी से सम्भोग करने का जो प्रायश्चित है, लगभग आधा किलो प्रति निर्धन का खाना निर्धारित किया है। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसललम ने उस व्यक्ति को पत्नी के साथ रोजे की अवस्था में सम्भोग करने के प्रायश्चित स्वरूप १५ साआ खजूरें दिलवायीं थीं । जिन्हें साठ निर्धनों में बाँटा गया था। एक साआ में चार मुद्द तथा एक मुद्द (लगभग छः सौ ग्राम होता है) इस आधार पर बिना शोरबे के सालन के दस ग़रीबों को देने के लिए दस मुद्द (अर्थात छः किलो) भोजन प्रायश्चित होगा। (इब्ने कसीर)

[2]वस्त्र के विषय में भी मतभेद है। प्रत्यक्ष रूप से तात्पर्य वस्त्र का जोड़ा है जिसमें मनुष्य नमाज़ पढ़ सके । कुछ विद्वान ने भोजन तथा वस्त्र दोनों के लिए प्रथा तथा प्रचलन को विश्वस्त माना है।

[3]कुछ विद्वानों ने चूक से हत्या के प्रायश्चित पर अनुमान करके दास तथा दासियों के लिए ईमान का प्रतिबन्ध लगाया है। इमाम शौकानी कहते हैं, आयत सामान्य है जिसके अन्तर्गत मोमिन एवं काफ़िर दोनों आते हैं।

[4]अर्थात जिस व्यक्ति को ऊपर के तीनों विषयों में से किसी की शक्ति न हो वह तीन दिन रोज़ा रखे। कुछ धर्मज्ञ निरन्तर रोज़े (व्रत) रखने के पक्ष में हैं तथा कुछ के विचार से दोनों प्रकार उचित हैं।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٩٠﴾

(९०) हे ईमानवालो ! मदिरा एवं जुआ तथा मूर्तियों के स्थान एवं पाँसे गन्दे शैतानी काम हैं, अत: तुम इससे अलग रहो ताकि सफल हो जाओ ।[1]

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهَلْ أَنتُم مُّنتَهُونَ ﴿٩١﴾

(९१) शैतान चाहता ही है कि मदिरा तथा जुआ द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता एवं द्वेष डाल दे तथा तुम्हें अल्लाह की याद तथा नमाज़ से रोक दे तो तुम रुकते हो या नहीं ।[2]

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٩٢﴾

(९२) अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा रसूल का अनुसरण करो और सतर्क रहो तथा यदि तुमने मुहँ फेरा तोजान लो कि हमारे रसूल पर खुला संदेश पहुँचा देना है ।

---

[1]यह मदिरा के सम्बन्ध में तीसरा आदेश है। प्रथम दो आदेशों में उसे स्पष्टरूप से निषेधित नहीं किया गया है। परन्तु यहाँ उसके साथ जुआ, पूजा स्थलों अथवा थानों तथा शगून के तीरों को दूषित एवं राक्षसी कार्य घोषित करके स्पष्ट शब्दों में इन सभी से सुरक्षित रहने का आदेश दे दिया गया है। इसके सिवाये इस आयत में मदिरा एवं जुआ के संदर्भ में कुछ अधिक क्षति का वर्णन करके प्रश्न किया गया है कि अभी भी रूकेंगे या नहीं मुसलमान इससे अल्लाह का उद्देश्य समझ गये तथा उसे नित्य के लिये अवैध मान लिया एवं कहा कि انتهينا ربنا हमारे पालनहार हम मान गये, (मुसनदे अहमद भाग २ पृष्ठ ३५१) परन्तु आधुनिक बुद्धिमान कहते हैं कि अल्लाह ने मदिरा को वर्जित कहाँ कहा है ? इस बुद्धि पर रोना चाहिए। अर्थात मदिरा को दूषित तथा राक्षसी कार्य बताकर उससे रुकने का आदेश देना तथा उसे सफलता का हेतु बताना बुद्धिमानों के विचार में निषेध के लिये प्रयाप्त नहीं । इसका अभिप्राय यह हुआ कि अल्लाह के समीप दूषित कार्य भी उचित है, राक्षसी कार्य भी उचित है। जिसके त्याग का आदेश दे वह भी उचित है तथा जिसके संदर्भ में कहे कि उसका करना असफलता तथा उसका त्याग सफलता का हेतु है वह भी उचित إنا لله و إنا إليه راجعون ऐसे बोध से हज़ार बार शरण, तथा थू है ऐसे बोध पर।

[2]यह जुआ तथा मदिरा की अन्य सामाजिक एवं धर्मिक हानियाँ हैं जिनके वर्णन की आवश्यकता नही, इसी कारण मदिरा को सभी कुकर्मों की जननी कहा जाता है तथा जुआ भी ऐसी ही बुरी लत है। यह मनुष्य को किसी काम का नहीं रखता तथा अधिकतर धनवानों एवं वंशगत जागीरदारों को भीखारी तथा दरिद्र बना देता है। हमें अल्लाह दोनों से सुरक्षित रखे।

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّٰلِحَٰتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوٓا
إِذَا مَا اتَّقَوا وَّآمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّٰلِحَٰتِ ثُمَّ اتَّقَوا وَّآمَنُوا ثُمَّ
اتَّقَوا وَّأَحْسَنُوا ط وَاللَّهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٣﴾

(९३) ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हों तथा पुण्य का कार्य करते हों, उस चीज में कोई पाप नहीं जिसको वह खाते-पीते हों, जबकि वह लोग अल्लाह से डरते हों तथा ईमान रखते हों तथा पुण्य का कार्य करते हों, फिर परहेजगारी करते हों तथा अत्यधिक पुण्य का कार्य करते हों, अल्लाह ऐसे पुण्यकर्ताओं से प्रेम करता है ।[1]

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمُ
اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهُٓ أَيْدِيكُمْ
وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ
بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ
فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٤﴾

(९४) हे ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) कुछ शिकार के द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेता है ।[2] जिन तक तुम्हारे हाथ तथा तुम्हारे भाले पहुँच सकेंगे ।[3] ताकि अल्लाह (तआला) मालूम कर ले कि कौन व्यक्ति उससे बिना देखे डरता है, जो व्यक्ति सीमा से बढ़ जायेगा उसे कठोर यातना है ।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ
وَأَنتُمْ حُرُمٌ ط وَمَن قَتَلَهُ مِنكُم

(९५) हे ईमानवालो ! जब तुम (हज अथवा उमरः का) एहराम बाँधे रहो तो शिकार न

[1]मदिरा के निषेध के पश्चात नबी के सहचरों के मन में यह बात आई कि हमारे कई साथी लड़ाईयों में मारे गये अथवा स्वभाविक मौत मरे जब कि वह मदिरा पान कर रहे थे । तो इस आयत में इस संशय का निवारण कर दिया गया, कि इनका अन्त विश्वास एवं संयम पर ही हुआ क्योंकि उस समय मदिरा पान वर्जित नहीं हुआ था ।

[2]शिकार अरबों के जीवन यापन का एक विशेष साधन था, इसलिए एहराम की अवस्था में इसे निषेध करके उनकी परीक्षा ली गयी । विशेष रूप से हुदैबिया में निवास के समय में शिकार अधिक रूप से सहाबा के निकट आते, किन्तु उन्हीं दिनों में यह चार आयतें उतरीं, जिसमें उससे सम्बन्धित आदेश दिये गये ।

[3]निकट के शिकार तथा छोटे जीव-जन्तु सामान्य रूप से हाथ ही से पकड़ लिए जाते हैं तथा दूर के अथवा बड़े पशुओं के लिए तीर तथा भाले प्रयोग किये जाते हैं । इसलिए केवल इन दोनों का यहाँ वर्णन किया गया है । परन्तु तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार से तथा जिस चीज से भी शिकार किया जाये, एहराम की अवस्था में निषेध है ।

مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِۦ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدْيًۢا بَٰلِغَ ٱلْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّٰرَةٌ طَعَامُ مَسَٰكِينَ أَوْ عَدْلُ ذَٰلِكَ صِيَامًا

करो[1] और तुममें से जो भी जान बूझ-कर उसे मारे[2] तो उसे क्षतिपूर्ति करना है उसी के समान[3] पालतू पशु से जिसका निर्णय तुम में से दो न्यायकारी करेंगे[4] जो बलि के लिये काअबा

---

[1]इमाम शाफ़ई ने इससे यह भाव लिये हैं कि इनसे केवल उन जानवरों की हत्या ली गई है, जिनका मांस खाया जाता है। धरती के अन्य पशुओं का शिकार वह उचित मानते हैं। परन्तु अधिक विद्वानों का विचार यह है कि इसमें खाने योग्य अथवा अयोग्य में कोई भेद नहीं है। इसमें दोनों प्रकार के जानवर सम्मिलित हैं। परन्तु उन हानिकारक जीवों की हत्या करना उचित है जिनका वर्णन हदीस में आया है तथा वे पांच हैं कौआ, चील, बिच्छू, चूहा तथा पागल कुत्ता। (सहीह मुस्लिम किताबुल हज, बाब मायनदुबो लिल मुहरिम व गैरेही कतलुहु मिन्-द्वाब्बे फ़िल हिल्ले वल हरमे, तथा मुअता इमाम मालिक) आदरणीय नाफेअ से सांप के विषय में पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि उसको मारने में कोई मतभेद नहीं है। इब्ने कसीर तथा इमाम अहमद एवं इमाम मालिक तथा अन्य आलिमों ने भेड़िये, हिंसक जन्तु, चीते, सिंह को बावले कुत्ते के समान एहराम की अवस्था में इनको मारने की आज्ञा दी है। (इब्ने कसीर)

[2]"जान-बूझ कर" के शब्द से कुछ विद्वानों ने यह तर्क निकाला है कि बिना प्रयत्न के यदि भूल से अंजाने में हत्या हो जाये तो उसमें प्रतिशोध नहीं है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के निकट इच्छित अथवा अनेच्छित दोनों अवस्थाओं में पशु हत्या करने पर फ़िदिया (प्रतिशोध) देना होगा। जान बूझ कर की बात परिस्थितियों के अनुसार है प्रतिबन्ध के रूप में नहीं है।

[3]समान पशु से तात्पर्य प्रकृति अर्थात शरीर तथा श्रेणी में समान होना है मूल्य में समान होना नहीं है जैसाकि हनफ़ी समुदाय में है। जैसाकि यदि हिरण की हत्या हुई तो उसके समान बकरी है। गाय के सामन नील गाय है आदि। परन्तु जिस जन्तु का समतुल्य नहीं मिल सकता हो, वहां उस मूल्य के रूप में प्रतिशोध लेकर मक्का पहुंचा दिया जायेगा। (इब्ने कसीर)

[4]कि हत (हत्या किये गये) जानवर के समान अमूक जानवर है तथा यदि उसके समान नहीं है अथवा उसके समान उपलब्ध नहीं है तो उसका उतना मूल्य है। उस मूल्य से अनाज ख़रीद कर मक्का के भिखारियों में बांट दिया जायेगा। प्रति भिखारी एक मुद्द अर्थात छः सौ ग्राम के हिसाब से से वितरण किया जायेगा। हनफ़ी समुदाय में दो मुद्द प्रति भिखारी है अर्थात एक किलो दो सौ ग्राम है।

لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِ ۗ عَفَا اللَّهُ عَمَّا سَلَفَ ۚ وَمَنْ عَادَ فَيَنتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

पहुँचाया जायेगा[1] अथवा प्रायश्चित स्वरूप कंगालों को भोजन देना है या उसके बराबर रोज़े (व्रत) रखना है[2] ताकि अपने किये का दण्ड चखो। जो पहले हो चुका अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया तथा जो इस (निषेधाज्ञा) के पश्चात् ऐसा फिर करेगा अल्लाह उससे बदला लेगा। अल्लाह शक्तिशाली बदला लेने वाला है।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۖ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي

(९६) तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार पकड़ना तथा खाना वैध किया गया है।[3] तुम्हारे प्रयोग के लिए तथा यात्रियों के लिए, एवं धरती का शिकार अवैध किया गया जब तक तुम एहराम

---

[1]यह प्रतिशोध जानवर अथवा उसका मूल्य काअबा पहुँचाया जायेगा तथा काअबा से तात्पर्य हरम है। (फ़तहुल क़दीर) अर्थात उनका वितरण हरम मक्का में रहने वाले निर्धन में होगा।

[2] او (अथवा) अधिकार देने के लिए आया है अर्थात निर्धनों को भोजन कराना अथवा उसके बराबर रोज़े रखना दोनों में से कोई एक कार्य करना उचित है। हत जानवर के अनुसार भोजन कराने में जिस प्रकार से कमी अथवा अधिकता होगी उसी प्रकार रोज़ों में भी कमी अथवा अधिकता होगी। जैसे एहराम पहने हुए व्यक्ति ने हिरन मारा तो उसके समान बकरी है, यह फ़िदिया हरम मक्का में बलि दिया जायेगा। यदि यह न मिले तो आदरणीय इब्ने अब्बास (रजी अल्लाह अन्हुमा) के अनुसार छः निर्धनों को भोजन अथवा तीन रोज़े रखने होंगे। यदि उसने बारहसिंगा, साँभर अथवा इस जैसा कोई पशु मारा होगा तो उसकी समतुल्य गाय है, यदि यह उपलब्ध न हो अथवा इसका मूल्य अदा करने की शक्ति न हो तो बीस निर्धनों को खाना खिलाना होगा अथवा बीस दिन रोज़े रखने होंगे अथवा शुतुरमुर्ग जैसा पशु मारा जाये तो उसका समतुल्य ऊंट है तो उसके उपलब्ध न होने में तीस निर्धनों को भोजन कराना अथवा तीस दिन के रोज़े रखना होंगे। (इब्ने कसीर)

[3] صيد (सैद) से तात्पर्य जीवित पशु तथा طعامه (तआमुहु) से तात्पर्य मृत (मछली आदि) है जिसे समुद्र अथवा नदी बाहर फेंक दे अथवा पानी पर उतर जाये। जिस प्रकार से हदीस में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि समुद्र का मृत जन्तु वैध है। (विस्तृत जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर, तथा नैलुल औतार आदि)

إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾

की हालत में हो। तथा अल्लाह (तआला) से डरो जिसके पास एकत्रित किये जाओगे।

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾

(९७) अल्लाह ने काअबा को जो सम्मानित गृह है, लोगों के लिये स्थिरता का कारण बनाया तथा सम्मानित महीने को तथा हरम में बलि दिये जाने वाले पशुओं को भी तथा उन पशुओं को भी जिनके गले में पट्टे हों।[1] यह इसलिए ताकि तुम इस बात पर विश्वास कर लो कि नि:सन्देह अल्लाह (तआला) आकाशों तथा धरती के अन्दर की चीज़ों का ज्ञान रखता है एवं नि:सन्देह अल्लाह सभी विषय को भली-भाँति जानता है।

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾

(९८) तुम विश्वास करो कि अल्लाह तआला दण्ड भी कठोर देने वाला है तथा अल्लाह (तआला) अति क्षमाशील एवं अति कृपालु भी है।

مَّا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾

(९९) रसूल का दायित्व तो मात्र पहुँचाना है। तथा अल्लाह (तआला) सभी कुछ जानता है जो कुछ तुम व्यक्त करते हो तथा जो कुछ छिपा रखते हो।

---

[1]काअबा को बैतुल हराम इसलिए कहा जाता है कि उसकी सीमा के अन्दर शिकार करना, वृक्ष काटना आदि निषेध है। इसी प्रकार यदि इसमें पिता के हत्यारे से भी सामना हो जाये, तो उसे छेड़ा नहीं जाता था। इसे قياما للناس (लोगों के खड़े होने तथा निर्वाह का कारण) कहा गया है। जिसका अर्थ है कि इसके द्वारा मक्का के निवासियों के प्रबन्ध भी ठीक हैं तथा उनके निर्वाह की आवश्यकताओं की उपलब्धि का साधन भी है। इसी प्रकार हराम महीने (रजब, जुलकाअद:, जुलहिज्जा तथा मोहर्रम) तथा हरम में जाने वाले पशु (हदी तथा कलायेद) भी लोगों के निर्वाह के साधन हैं क्योंकि इन सभी से मक्का निवासियों को वर्णित लाभ प्राप्त होते थे।

(१००) आप कह दीजिए कि अपवित्र तथा पवित्र समान नहीं यद्यपि आपको अपवित्र की अधिकता भली लगती हो ।[1] अल्लाह (तआला) से डरते रहो हे बुद्धिमानो, ताकि तुम सफल हो ।

قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾

(१०१) हे ईमानवालो ! ऐसे विषय में प्रश्न न करो जिसे व्यक्त कर दिया जाये तो तुम्हें बुरा लग जाये और यदि क़ुरआन उतारे जाने के समय प्रश्न करोगे तो तुम्हारे ऊपर व्यक्त कर दिया जायेगा,[2] जो हो चुका अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया तथा अल्लाह क्षमाशील सहनशील है ।

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ۗ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

(१०२) तुमसे पूर्व कुछ लोगों ने यही प्रश्न किया फिर उन्हें निभा न सके ।[3]

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

---

[1]अपवित्र से तात्पर्य अवैध अथवा अधर्मी अथवा पापी अथवा विकृत तथा पवित्र से तात्पर्य वैध विश्वासी अथवा आज्ञाकारी अथवा अच्छी वस्तु अथवा यह सभी हो सकती हैं । अभिप्राय यह है कि जिस वस्तु में अपवित्रता होगी, वह अविश्वास हो, अवज्ञा हो, दुष्कर्म हो अथवा चीज़ें अथवा कथन हों, अधिक संख्या के उपरान्त उन वस्तुओं का सामना नहीं कर सकतीं, जिनमें पवित्रता होगी । यह दोनों किसी भी अवस्था में समान नहीं हो सकते । इसलिए कि अपवित्रता के कारण उस वस्तु का लाभ तथा शुभ समाप्त हो जाता है जबकि जिस वस्तु में पवित्रता होगी, उससे उसके लाभ तथा शुभ में और बढ़ोत्तरी होगी ।

[2]यह निषेधाज्ञा क़ुरआन के उतरने के समय थी, स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी सहावा को अधिक प्रश्न करने से रोकते थे । एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मुसलमानों में सबसे बड़ा अपराधी वह है जिसके प्रश्न करने के कारण कोई चीज़ अवैध हो गयी, जबकि उससे पूर्व वह वैध थी ।" (सहीह बुख़ारी, संख्या ७२८९, सहीह मुस्लिम अल फ़ज़ायेल बाव तौक़ीरुहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व तरको इक्सारे सुवालिहि)

[3]कहीं उस आलस्य के शिकार तुम न हो जाओ, जिस प्रकार एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने तुम पर हज अनिवार्य किया है ।" एक व्यक्ति ने प्रश्न किया, "क्या प्रत्येक वर्ष ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौन रहे । उसने अपने प्रश्न की तीन बार पुनरावृत्ति की । फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنۢ بَحِيرَةٍ وَلَا سَآئِبَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ

(१०३) अल्लाह ने आज्ञा नहीं दी है बहीर: की न साइब: की न वसील: की न हाम की[1] किन्तु

फ़रमाया, "यदि मैं हाँ कर देता तो तुम्हारे लिए प्रत्येक वर्ष हज करना अनिवार्य हो जाता, तो प्रत्येक वर्ष हज करना तुम्हारे लिए सम्भव नहीं होता।" (सहीह मुस्लिम किताबुल हज हदीस संख्या ४१२, मुसनद अहमद, सुनने अबू दाऊद, नसाई तथा इब्ने माजा) इसीलिए कुछ व्याख्याकारों ने عفا الله عنها का एक अर्थ यह भी वर्णित किया है कि जिस वस्तु का वर्णन अल्लाह तआला ने अपनी किताब में नहीं किया है, तो यह जान लो वह उन चीज़ों में है जिनको अल्लाह तआला ने क्षमा कर दिया है। इसलिए तुम भी उनके विषय में मौन हो जाओ, जिस प्रकार वह मौन है। (इब्ने कसीर) एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका भाव इन शब्दों में समझाया है।

« ذَرُونِي مَا تَرَكْتُمْ؛ فَإِنَّمَا أَهْلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ كَثْرَةُ سُؤَالِهِمْ، وَاخْتِلَافُهُمْ عَلَىٰ أَنْبِيَآءِهِمْ ».

"तुम्हें जिन विषयों के बारे में नहीं बताया गया है, तुम मुझसे उनके विषय में प्रश्न न करो, इसलिए कि तुमसे पूर्व के समुदायों के पतन का कारण उनके प्रश्नों की अधिकता तथा नबियों से मतभेद था।" (सहीह मुस्लिम किताबुल हज्ज)

[1]यह उन पशुओं के प्रकार हैं जो अरबवासी अपनी मूर्तियों के नाम पर मुक्त करते थे। इनकी विभिन्न व्याख्यायें की गयी हैं। आदरणीय सईद बिन मुसय्यिब के कथनानुसार सहीह बुख़ारी में इसकी व्याख्या निम्न रूप से संकलित की गयी है। बहीर:- वह पशु जिसका दूध दोहना छोड़ दिया जाता था तथा कहा जाता था कि यह मूर्तियों के लिए है। अत: कोई भी व्यक्ति उसके थनों को हाथ नहीं लगाता। साएब: वह पशु जिन्हें वे मूर्तियों के नाम छोड़ देते उन पर न सवारी करते न माल लादते। जैसे छुट्टे साँड जिन्हें हिन्दू धर्म में नन्दी कहते हैं उसी प्रकार छोड़ते थे। वसीला- वह ऊँटनी जिससे सर्वप्रथम मादा पैदा होती तथा पुन: दूसरी बार भी मादा होती (अर्थात एक मादा के पश्चात दूसरी मादा हुई तथा किसी नर के पैदा न होने के कारण मध्य में भेद न हुआ तो ऐसी उँटनियों को भी मूर्तियों के नाम स्वतन्त्र छोड़ दिया करते थे तथा हाम- वह नर ऊँट है जिसके द्वारा उसकी नस्ल से कई ऊँट पैदा हो चुके होते हैं, तो उनको भी मूर्तियों के नाम पर छोड़ देते, उससे भी सवारी तथा भार वाहन का काम नहीं लेते तथा हामी पशु कहते। इस कथन में इस हदीस का भी वर्णन है कि सर्वप्रथम मूर्तियों के नाम पर पशु मुक्ति का काम अमर बिन आमिर खुज़ाई ने किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि, "मैंने उसे नरक में अंतड़ियाँ खींचते हुए देखा।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-मायद:) आयत में कहा गया है कि अल्लाह तआला ने इन पशुओं को इस प्रकार से मुक्त करने की अनुमति नहीं दी है, क्योंकि उसने प्रत्येक दान-दक्षिणा तथा मनौती अपने लिए विशेष किया है। मूर्तियों के लिए चढ़ावा अथवा मनौती यह मूर्तिपूजकों की अपनी उपज

وَلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۖ وَ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ

काफ़िर (विश्वास रहित) अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाते हैं तथा उनमें अधिकतर बुद्धि नहीं रखते।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ

(१०४) तथा जब उनसे कहा गया कि उस (पवित्र क़ुरआन) तथा रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर आओ तो उन्होंने कहा कि जिस (रीति) पर हमने अपने पूर्वजों को पाया है वह हमें बस है यद्यपि उनके पूर्वज कुछ न जान रहे हों तथा सही मार्ग पर न हों।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

(१०५) हे ईमानवालो ! अपनी चिन्ता करो, जब तुम सत्य मार्ग पर चल रहे हो, तो जो व्यक्ति भटक जाये उससे तुम्हारी कोई हानि नहीं।[1] अल्लाह ही के पास तुम सभी को

है तथा मूर्तियों तथा देवताओं के नाम से पशु मुक्ति, प्रसाद चढ़ावा आज भी मूर्तिपूजकों में व्याप्त है तथा कुछ नाम के मुसलमानों में भी यह प्रचलित है। أعاذنا الله منه

[1]कुछ लोगों के मस्तिष्क में प्रत्यक्ष शब्दों से यह शंका उत्पन्न हुई कि अपना सुधार कर लिया जाये तो बस है। सत्कर्मों का आदेश देना तथा कुकर्मों से रोकना आवश्यक नहीं है। परन्तु यह अर्थ सहीह नहीं है। सत्कर्म का आदेश देने का कर्त्तव्य भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि एक मुसलमान यह कर्त्तव्य ही छोड़ देगा, तो इसे त्याग करने वाला सत्यमार्ग पर कव रह जायेगा ? जबकि क़ुरआन ने إذا اهتديتم (जब तुम स्वयं मार्गदर्शन पर चल रहे हो) के प्रतिबन्ध से प्रतिबन्धित कर दिया है। इसलिये जब आदरणीय अबूबक्र सिद्दीक (रज़ी अल्लाह अन्हु) के ज्ञान में यह बात आयी तो उन्होंने कहा, लोगों ! तुम आयत को ग़लत स्थान पर प्रयोग कर रहे हो, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते सुना है कि "जब लोग बुराई होते हुए देख लें तथा उसके बदलने का प्रयत्न न करें तो निकट है कि अल्लाह तआला अपनी यातनाओं की पकड़ में ले ले।" (मुसनद अहमद भाग १, पृ॰ ५, त्रिमिज़ी संख्या २१७८ अबू दाऊद संख्या ४३३८) इसलिए आयत का सही अर्थ यह है कि तुम्हारे समझाने के उपरान्त यदि लोग पुण्य का मार्ग न अपनायें अथवा बुराई से न रुकें, तो तुम्हारे लिए यह हानिकारक नहीं है, जबकि तुम स्वयं पुण्य पर दृढ़ स्थिर तथा बुराई से दूर रहो। परन्तु एक अवस्था में अच्छाई का आदेश देने तथा बुराई से रोकने को त्याग देना उचित है जब कोई व्यक्ति अपने अन्दर वह शक्ति न पाये तथा उससे

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٠٥

जाना है। फिर वह तुम सब को बतला देगा जो कुछ तुम करते थे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ۭ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِيْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ۝١٠٦

(१०६) हे ईमानवालो! जब तुम में किसी के निधन का समय हो तो वसीयत (रिक्थदान) के समय तुममें से दो विश्वस्त व्यक्ति को गवाह होना चाहिये[1] अथवा तुम्हारे सिवाये दो अन्य को यदि तुम धरती में यात्रा कर रहे हो तथा तुम पर मौत की विपदा आ जाये,[2] (शंका की दशा में) तुम दोनों (गवाहों) को (अपरान्ह) की नमाज़ के पश्चात रोकोगे फिर दोनो अल्लाह की शपथ लेंगे कि हम इस (गवाही) के बदले कोई मूल्य नहीं लेना चाहते[3] यद्यपि वह निकटवर्ती हो तथा हम अल्लाह की गवाही

उसके जीवन को ख़तरा हो। इस अवस्था में « فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهِ وَذٰلِكَ أَضْعَفُ الإِيمَانِ » (जब तुम्हारी शक्ति यह आज्ञा न दे तो दिल में उसे बुरा जानो तथा यह कमज़ोर ईमान होने का प्रमाण है) के आधार पर इसका स्थान है। आयत भी इस अवस्था के लिए सर्मथन देती है।

[1]"तुममें से हों" का अभिप्राय कुछ ने यह लिया है कि मुसलमानों में से हों तथा कुछ ने कहा है कि موصي (उत्तरदान कर्त्ता) की जाति के हों। इसी प्रकार ﴿ءَاخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ﴾ में दोनों भाव होंगें अर्थात من غيركم से तात्पर्य जो मुसलमान न हों (अहले किताब) होंगें अथवा उत्तरदान कर्ता की जाति के अतिरिक्त अन्य जाति से।

[2]अर्थात यात्रा में ऐसा रोग हो जाये जिससे बचने की संभावना न हो तो वह यात्रा में दो न्यायकारी गवाह बनाकर जो वसीयत (प्ररिक्थ) करना चाहे कर दे।

[3]यदि मरने वाले के उत्तराधिकारी को यह संदेह हो जाये कि गवाहों ने विश्वासघात अथवा परिवर्तन किया है, तो वह नमाज़ के पश्चात अर्थात लोगों की उपस्थिति में उन से सौगन्ध लें तथा वह सौगन्ध खाकर कहें कि हम अपनी सौगन्ध के बदले दुनिया का कोई लाभ नहीं प्राप्त कर रहे हैं अर्थात झूठी सौगन्ध नहीं खा रहे हैं।

नहीं छुपा सकते यदि ऐसा करेंगे तो हम दोषी हैं।

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰٓ أَنَّهُمَا ٱسْتَحَقَّآ إِثْمًا فَـَٔاخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ ٱلْأَوْلَيَـٰنِ فَيُقْسِمَانِ بِٱللَّهِ لَشَهَـٰدَتُنَآ أَحَقُّ مِن شَهَـٰدَتِهِمَا وَمَا ٱعْتَدَيْنَآ ۚ إِنَّآ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّـٰلِمِينَ ﴿١٠٧﴾

(१०७) फिर यदि पता लग जाये कि वह दोनों (साक्षी) किसी पाप के पात्र हुये हैं [1] तो जिनके ऊपर पाप के पात्र हुए हैं उनमें से दो निकटतम सम्बंधी दोनों (साक्षियों) की जगह खड़े होगें[2] तथा अल्लाह की शपथ ग्रहण करेंगें कि हमारी गवाहियाँ इन दोनों की गवाहियों से अधिक सत्य है तथा हमने अनृत नहीं किया है, हम इस दशा में अत्याचारी होंगे।

ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِٱلشَّهَـٰدَةِ عَلَىٰ وَجْهِهَآ أَوْ يَخَافُوٓا۟ أَن تُرَدَّ أَيْمَـٰنٌۢ بَعْدَ أَيْمَـٰنِهِمْ ۗ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱسْمَعُوا۟ ۗ

(१०८) यह निकटतम माध्यम है कि वे लोग सत्य गवाही दें अथवा उन्हें यह भय हो कि शपथों के पश्चात् पुन: शपथ उल्टी पड़ जायेगी [3]

---

[1]अर्थात झूठी सौगन्ध खायीं है।

[2] اولیان यह اولى का द्विवचन है इस से तात्पर्य मृतक अर्थात रिक्थ दानकर्ता के समीप के दो सम्बंधी हैं। ﴿مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ﴾ का अभिप्राय जिन पर पाप किया गया अर्थात मिथ्या शपथ ग्रहण करने का पाप करके जिनके मिलने वाले धन को हड़प लिया गया। الأوليان या तो هما लुप्त विषय का विधेय है अथवा ﴿يَقُومَانِ﴾ अथवा آخران के सर्वनाम के बदले में है अर्थात दो निकटवर्ती संबन्धी उनकी मिथ्या शपथों के प्रतिरोध में अपनी शपथ देंगे।

[3]यह उस लाभ का वर्णन है जो उस आदेश में लुप्त है, जिसका वर्णन यहाँ किया गया है। वह यह कि इस विधि को अपनाने के कारण जिनके समक्ष वसीयत (उत्तरदान) की गयी थी सही गवाही देंगे क्योंकि उनको यह भय होगा कि यदि हमने इसमें किसी प्रकार का विश्वासघात अथवा परिवर्तन किया तो यह घटना स्वयं हमारे ऊपर आयेगी।

इस आयत के उतरने की घटना के विषय में बुदैल बिन अबू मरियम की घटना का वर्णन होता है कि वह सीरिया व्यापार के लिए गये थे, वहाँ बीमार तथा मरने के निकट हो गये, उनके पास सामान तथा चाँदी का एक प्याला था, जो उन्होंने दो ईसाईयों को सौंप कर अपने सम्बन्धियों तक पहुँचाने की वसीयत करके मर गये। यह दोनों वसीयत सुनने वाले जिनको सामान तथा प्याला सौंपा गया था, वापस आये तो प्याला बेचकर पैसे

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٨﴾

तथा अल्लाह से डरो और सुन लो कि अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ۭ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ۭ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾

(१०९) जिस (प्रलय) दिन अल्लाह (तआला) पैग़म्बरों (उपदेशकों) को एकत्रित करेगा, फिर पूछेगा कि तुमको क्या उत्तर मिला था ? वह उत्तर देंगें हमको कुछ नहीं मालूम,[1] मात्र तू ही परोक्षों का जानकार है।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى

(११०) जब अल्लाह कहेगा कि हे मरियम के पुत्र ईसा ! अपने तथा अपनी माँ के ऊपर मेरी

आपस में बाँट लिये तथा शेष सामान उत्तराधिकारियों को पहुँचा दिया। सामान में एक पत्र भी था जिसमें सामान की सूची थी, जिसके अनुसार एक चाँदी का प्याला नहीं था। उनसे जब कहा गया तो उन्होंने भूठी सौगन्ध खा ली, परन्तु बाद में पता चला कि उन्होंने अमुक सुनार के हाथ प्याला बेचा है। अतः उन्होंने उस ग़ैर मुस्लिमों के समक्ष सौगन्ध खाकर उनसे प्याले का मूल्य प्राप्त कर लिया। यह वर्णन प्रमाणतः क्षीण है। (त्रिमज़ी संख्या ३०५९ शोध अहमद शाकिर, मिस्र) परन्तु एक-दूसरे प्रमाण से आदरणीय इब्ने अब्बास से भी संक्षेप में यह कथित है जिसे हदीस के विशेषज्ञ अलवानी ने सही कहा है। (सहीह त्रिमिज़ी भाग ३, संख्या २४४९)

[1]नबियों के साथ उनके वर्ग ने जो कुछ किया होगा, वह अवश्य उन्हें याद होगा। परन्तु वह अपने ज्ञान का इंकार या तो प्रलय की प्रचंडता तथा अल्लाह तआला के भय तथा महानता के कारण कर देंगें अथवा इसका सम्बन्ध उनके मृत्यु के उपरान्त की अवस्था से होगा। इसके अतिरिक्त गुप्त बातों का ज्ञान केवल अल्लाह को ही है। इसलिए वह कहेंगें कि परोक्षज्ञ तू ही है। इससे ज्ञात हुआ कि नबी तथा रसूल को परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, परोक्ष का ज्ञान मात्र अल्लाह ही को है। नबियों को जितना कुछ भी ज्ञान होता है, प्रथम तो उसका सम्बन्ध उन नियमों से होता है जो रिसालत के दायित्व की पूर्ति के लिए आवश्यक होते हैं। द्वितीय उनसे भी उनको वह्यी के द्वारा ही सूचित किया जाता है। यद्यपि अन्तर्यामी वही होता है जिसको प्रत्येक वस्तु का ज्ञान स्वयं हो, न कि किसी के बतलाने पर किसी चीज़ का ज्ञान प्राप्त हो जाये, उसे अन्तर्यामी नहीं कहा जाता, न वह अन्तर्यामी होता ही है। فافهم و تدبر ولا تكن من الغافلين (इस पर विचार करो निर्बोध न बनो)

وَالِدَتِكَ مـ إِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ قف تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ج وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيْلَ ج وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِإِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِإِذْنِيْ ج وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِإِذْنِيْ ج وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِيْ إِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾

कृपा को याद करो जब मैंने पवित्रात्मा[1] (जिब्रील) द्वारा तुम्हारी सहायता की। तुम पालने में तथा अधेड़ आयु में लोगों से बात करते रहे तथा जब हमने किताब एवं विज्ञान तथा तौरात एवं इंजील का ज्ञान दिया।[2] तथा जब तुम मेरी आज्ञा से पक्षी की प्रतिमा मिट्टी से बनाते थे और उसमें फूँकते थे तो मेरी आज्ञा से पक्षी बन जाता था तथा तुम मेरी आज्ञा से जन्मजात अन्धे एवं कोढ़ी को स्वस्थ कर रहे थे तथा मेरी आज्ञा से मृतकों को निकालते थे[3] तथा जब मैंने इस्राईल के पुत्रों को तुमसे रोका जब तुम उनके पास चमत्कार लाये[4] तो उनमें से काफ़िरों (विश्वासहीनों) ने कहा कि यह मात्र खुला जादू है।[5]

---

[1]इससे तात्पर्य आदरणीय जिब्रील हैं, जैसाकि *सूर: अल-बकर:* की आयत संख्या ८७ में गुज़रा।

[2]इसका स्पष्टीकरण *सूर: आले इमरान* की आयत संख्या ४८ में गुज़र चुका है।

[3]इन चमत्कारों का वर्णन भी उपरोक्त सूर: की आयत संख्या ४९ में गुज़र चुका है।

[4]यह संकेत है उस षडयन्त्र की ओर जो यहूदियों ने आदरणीय ईसा की हत्या करने तथा फाँसी पर चढ़ाने के लिए बनाया था। जिससे सुरक्षित करके अल्लाह तआला ने उनको आकाश पर उठा लिया। देखिये व्याख्या *सूर: आले इमरान* आयत संख्या ५४।

[5]प्रत्येक नबी के विरोधी अल्लाह तआला की आयात तथा चमत्कार को देख कर उसे जादू ही बताते रहे हैं। यद्यपि जादू तो एक माया तन्त्र है, जिसका नबियों से क्या सम्बन्ध हो सकता है? बल्कि नबियों के हाथ से प्रकट चमत्कार सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला की शक्ति तथा सामर्थ्य का द्योतक होते थे क्योंकि वह अल्लाह ही के आदेश से उसकी इच्छा तथा शक्ति से होते थे। किसी नबी की शक्ति में यह न था कि अल्लाह तआला की इच्छा तथा शक्ति के बिना कोई चमत्कार प्रदर्शित कर सकें। इसीलिए देख लीजिए आदरणीय ईसा के प्रत्येक चमत्कार के साथ अल्लाह तआला ने चार बार कहा कि, "प्रत्येक चमत्कार मेरे आदेश से हुआ है।" यही कारण है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मक्का के

(१११) और जबकि मैंने भक्तों को प्रेरणा दी ।[1] कि तुम मुझ पर तथा मेरे रसूलों पर ईमान लाओ । उन्होंने कहा, हम ईमान लाये तथा आप गवाह रहिए कि हम पूर्णरूप से आज्ञाकारी हैं ।

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ﴿١١١﴾

(११२) याद करो जब अनुयायियों ने कहा कि हे ईसा मरियम के पुत्र ! क्या तुम्हारा स्वामी हम पर आकाश से एक थाल उतार सकता है ? [2]

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ ۖ قَالَ

मूर्तिपूजकों ने विभिन्न चमत्कार दिखाने की माँग की जिन का विवरण *सूर: बनी-इस्राईल* की आयत संख्या ९१ से ९३ तक में वर्णित हो चुका है, तो उसके उत्तर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ।

﴿ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ﴾

"मेरा प्रभु पवित्र है (अर्थात वह तो इस क्षीणता से विहीन है कि वह यह चमत्कार न दिखा सके, वह तो दिखा सकता है, परन्तु उसकी इच्छा उसके अनुरूप है अथवा कब अनुरूप होगी ? इसका ज्ञान उसी को है उसी के अनुसार निर्णय करता है) परन्तु मैं तो केवल मानव पुरुष तथा रसूल (संदेष्टा) हूँ ।"

अर्थात मेरे अन्दर यह चमत्कार दिखाने कि अपनी शक्ति नहीं है । अत: नबियों के चमत्कार का जादू से कोई सम्बन्ध नहीं है । यदि ऐसा होता तो जादूगर उसका तोड़ कर लेते । परन्तु आदरणीय मूसा की घटना से सिद्ध होता है कि दुनिया भर के एकत्रित बड़े-बड़े जादूगर मूसा के चमत्कार का काट नहीं कर सके तथा जब उन्हें जादू तथा चमत्कार का अन्तर स्पष्टरूप से ज्ञात हो गया तो वह मुसलमान हो गये ।

[1]"हवारी" से तात्पर्य आदरणीय ईसा के वह अनुयायी हैं, जो उनके प्रति विश्वास किये तथा उनके सहचर एवं सहायक बने । उनकी संख्या बारह बतायी जाती है, यहाँ "वह्यी" से तात्पर्य वह प्रकाशना नहीं जो स्वर्गदूत द्वारा ईशदूतों पर उतरती थी अपितु "मन में डालने" के अर्थ में है जो अल्लाह की ओर से कुछ लोगों के मन में उत्पन्न कर दी जाती है । जैसे आदरणीय मूसा की माँ तथा आदरणीय मरियम में इसी प्रकार की मनोभावना उत्पन्न की गई । इससे विदित हुआ कि जिन लोगों ने "वह्यी" के शब्द से मूसा की माँ तथा मरियम को ईशदूत माना है वह सही नहीं । इसलिए कि इसका अर्थ मन में भावना उत्पन्न करना है । इसी प्रकार यहाँ हवारियों के ईशदूत होने का अर्थ नहीं ।

[2]मायद: ऐसे बर्तन (तबक, सीनी, प्लेट अथवा ट्रे) को कहते हैं जिसमें खाना हो । इसलिए खाने के स्थान को भी अनुवाद किया जाता है क्योंकि उस पर भी खाना रखा जाता है ।

उसने (ईसा ने) कहा यदि तुम विश्वास रखते हो तो अल्लाह से डरो।[1]

اتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

(११३) उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि उसमें से खायें तथा हमारे दिलों को संतोष हो जाये तथा हमें विश्वास हो कि आप ने हमसे सत्य कहा और हम उस पर गवाह हो जायें।

قَالُوا نُرِيدُ أَن نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَن قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿١١٣﴾

(११४) मरियम के पुत्र ईसा ने कहा, हे अल्लाह! हम पर आकाश से एक थाल उतार दे जो हममें से प्रथम एवं अन्त के लिये प्रसन्नोत्सव हो जाये[2] तथा तेरी ओर से एक चिन्ह हो तथा हमें

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِّنكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنتَ

सूर: का नाम भी इसी कारण से है कि इसमें इसका वर्णन है। हवारियों ने अपने हृदय के सन्तोष के लिए यह माँग की थी, जिस प्रकार से आदरणीय इब्राहीम ने मृतकों को जिलाये जाने के के प्रदर्शन की माँग की थी।

[1]अर्थात यह प्रश्न न करो क्योंकि सम्भव है यही तुम्हारी परीक्षा का कारण बन जाये क्योंकि इच्छित चमत्कार के प्रदर्शन के पश्चात उससे इंकार उस समुदाय की ईमान की कमज़ोरी को प्रदर्शित कर देगा, जो यातना का कारण बन सकता है। इसलिए ईसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें इस माँग से रोका तथा अल्लाह से डराया।

[2]इस्लामी धर्म विधान में ईद का प्रयोजन यह नहीं कि वह राष्ट्रीय उत्सव का एक दिन है जिसमें नैतिक बंधनों तथा धर्म विधानों को तोड़ते हुये अनुचित प्रसन्नता एवं हर्षोल्लास का प्रदर्शन किया जाये, दीप जलाये जायें, रंगरलियाँ मनाई जायें, जैसाकि वर्तमान युग में इसका यही अर्थ समझा जाता है तथा तदानुसार उत्सव मनाया जाता है। अपितु आकाशीय धर्मविधान में यह एक धार्मिक उत्सव होता है जिसका महत्वपूर्ण उद्देश्य यह होता हैं कि पूरा समुदाय एक साथ मिलकर अल्लाह की कृतज्ञता व्यकत करे तथा उसकी महिमा एवं प्रशंसा का वर्णन करे। यहाँ भी आदरणीय ईसा ने इस दिन को उत्सव (ईद) बनाने की जो इच्छा की इससे उनका प्रयोजन यही है कि हम तेरी महिमा, प्रशंसा एवं बड़ाई का गुणगान करें। कुछ धर्म में मनमानी विचारों को धर्म सिद्ध करने वाले ईदे मायदा को ईदे मिलाद के औचित्य का तर्क बनाते हैं। यद्यपि यह घटना हमारे धार्मिक नियम से पूर्व की है। यदि इसे इस्लाम में स्थाई रखना होता तो इसको स्पष्ट किया जाता। दूसरे यह कि पैग़म्बर के मुख से ईद बनाने की इच्छा का प्रदर्शन हुआ था तथा पैग़म्बर भी अल्लाह के आदेश से धार्मिक नियमों का वर्णन करने का अधिकारी होता है। तीसरे ईद का भावार्थ

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾

जीविका प्रदान कर तू उत्तम जीविका देने वाला है ।

قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٥﴾

(११५) अल्लाह (तआला) ने कहा कि मैं वह भोजन तुम लोगों के लिए उतारने वाला हूँ, फिर तुममें से जो व्यक्ति उसके बाद कुफ्र करेगा तो मैं उसको ऐसा दंड दूंगा कि वह दंड मैं सम्पूर्ण संसार में किसी को न दूंगा ।[1]

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ

(११६) तथा वह समय भी स्मरणीय है जबकि अल्लाह (तआला) कहेगा कि हे ईसा पुत्र मरियम, क्या तुमने उन लोगों से कह दिया था कि मुझको और मेरी माता को अल्लाह के

तथा अर्थ भी वह होता जो उपरोक्त वर्णित पंक्तियों में वर्णित किया गया है । जबकि ईद मीलाद में इन सब बातों का कहीं भी समावेश नहीं है । इस्लाम में केवल दो ही ईदें हैं जिन्हें इस्लाम ने निर्धारित की हैं ईदुल फ़ितर तथा ईदे अज़्हा, इनके अतिरिक्त कोई तीसरी ईद नहीं ।

[1]यह मायद: भोजन के थाल) आकाश से उतरा अथवा नहीं इस संदर्भ में कोई निरन्तर स्पष्ट हदीस नहीं मिलती है । अधिकतर विद्वान (इमाम शौकानी तथ इमाम इब्ने जरीर तबरी सहित) इसके उतरने के पक्ष में हैं तथा उनका तर्क क़ुरआन के शब्द ﴿اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ﴾ से है कि अल्लाह का वचन है जो नि:संदेह सत्य है । परन्तु इसे अल्लाह तआला की ओर से पूर्ण विश्वास के साथ वचन कहना इसलिए उचित नहीं लगता कि अगले शब्द فمن يكفر इस वचन के प्रतिबन्धित होने को प्रदर्शित करते हैं । इसलिए अन्य विद्वान कहते हैं कि जब अल्लाह तआला के वचन के साथ यह प्रतिबन्ध सुना तो उन्होंने उत्तर दिया कि तो फिर हमें इस प्रकार आवश्यकता नहीं है । जिसके पश्चात वह नहीं उतरा । इमाम इब्ने कसीर ने इन तर्क के प्रमाण को जो इमाम मुजाहिद तथा हसन बसरी से संबन्धित है सही माना है । इसके अतिरिक्त यह कहा है कि इन तर्कों की पुष्टि इस बात से भी होती है कि मायद: के उतरने की कोई प्रसिद्धि ईसाईयों में है न उनकी पुस्तकों में लिखित है । क्योंकि यदि यह उतरा हुआ होता तो उसे उनके यहाँ अवश्य प्रसिद्ध किया जाता तथा किताबों में भी तो अधिक से अधिक अथवा कम से कम कुछ तो लिखित होना चाहिए था । والله أعلم بالصواب

مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾

अतिरिक्त माबूद (पूज्य- देव) बना लेना ?[1] ईसा निवेदन करेंगे कि मैं तो तुझे सर्वगुणों से युक्त (पवित्र) समझता हूँ, मुझको किस प्रकार से शोभा देती कि मैं ऐसी बात कहता जिसके कहने का मुझे कोई अधिकार नहीं, यदि मैंने कहा होगा तो तुझको उसका ज्ञान होगा। तू तो मेरे हृदय की बात जानता है। मैं तेरे स्वयं में जो कुछ है उसको नहीं जानता।[2] मात्र तू ही परोक्षों का जानकार है।

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ

(११७) मैंने उनसे मात्र वही कहा जिसकी तूने मुझे आज्ञा दी कि अपने पालक तथा मेरे पालक अल्लाह की आराधना करो[3] तथा जब तक मैं उनमें रहा उन पर साक्षी रहा तथा जब तूने

---

[1]यह प्रश्न क़ियामत के दिन होगा। उद्देश्य इससे अल्लाह को छोड़कर किसी अन्य को ईष्टदेव बनाने वालों को सतर्क करना है कि जिनको तुम ईष्टदेव तथा कष्ट निवारक समझते थे वह तो स्वयं अल्लाह के सदन में उत्तरदायी हैं।

दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि ईसाईयों ने आदरणीय मसीह के साथ आदरणीया मरियम को ईष्टदेव (पूज्य) बनाया है।

तीसरी बात यह ज्ञात हुई कि अल्लाह के अतिरिक्त ईष्टदेव वही नहीं जिन्हें मूर्तिपूजकों ने पत्थर अथवा लकड़ियों का कोई रूप बनाकर उनकी पूजा की, जिस प्रकार आजकल क़ब्र पूजक विद्वान अपनी जनता को यह बताकर धोखा दे रहे हैं। अपितु अल्लाह के वे भक्त भी अल्लाह के अतिरिक्त ईष्टदेव की परिधि में आते हैं जिनकी लोगों ने किसी भी रूप से इबादत की। जैसे आदरणीय ईसा तथा मरियम की ईसाईयों ने की।

[2]आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम कितने स्पष्ट शब्दों में अपने अन्तर्यामी होने का इंकार कर रहे हैं।

[3]आदरणीय ईसा ने एकेश्वरवाद तथा परमेश्वर की पूजा का आमन्त्रण दुग्धपान की आयु में दिया। जैसा *सूरः मरियम* में है तथा व्यस्क अवस्था में भी।

الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾

मुझे उठा लिया तो तू ही उनका संरक्षक था[1] तथा तू प्रत्येक विषयों पर साक्षी है।

إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾

(११८) तू यदि इनको दण्ड दे तो यह तेरे भक्त हैं तथा यदि तू इन्हें क्षमा कर दे तो तू प्रभावी विज्ञाता है।[2]

---

[1] توفيتنى का अर्थ है कि जब तूने मुझे दुनिया से उठा लिया जैसाकि इसका विस्तृत वर्णन *सूरः आले इमरान* की आयत संख्या ५५ में गुज़र चुका है। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि पैग़म्बरों (संदेष्टाओं) को मात्र उतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह की ओर से उन्हें प्रदान किया जाता है अथवा जिसका दर्शन वह अपने जीवनकाल में अपनी आँखों से करते हैं। इनके अतिरिक्त उन्हें किसी प्रकार का ज्ञान नहीं होता। जबकि अन्तर्यामी वह होता है जिसे बिना किसी के बताये हुए स्वयं प्रत्येक चीज़ का ज्ञान हो जाये तथा उसका ज्ञान आदि से अन्त तक को घेरे हो। यह ज्ञान की विशेषता अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं। इसलिए अन्तर्यामी केवल अल्लाह ही है। उसके अतिरिक्त कोई अन्तर्यामी नहीं। हदीस में आता है कि प्रलय स्थान में जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर आप के कुछ अनुयायी आने लगेंगे तो फ़रिश्ते पकड़ कर उनको दूसरी ओर ले जायेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमायेंगे कि उनको आने दो, यह हमारे अनुयायी हैं। फ़रिश्ते आप को बतलायेंगे।

« إِنَّكَ لَا تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ ».

"(ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम !) आप नहीं जानते कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात उन्होंने धर्म में क्या-क्या आधुनिकीकरण उत्पन्न किया"।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सुनेंगे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि मैं भी उस समय यही कहूँगा जो अल्लाह के भक्त (आदरणीय ईसा) ने कहा

﴿ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ﴾

(सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूरः अल-मायदः* व किताबुल अम्बिया, सहीह मुस्लिम बाब फनाईद्दुनिया व बयानुल हश्र यौमल क़ियामः)।

[2] अर्थ यह है कि हे अल्लाह इनका निर्णय अब तेरे ऊपर है। यह इसलिए कि तू فعال لما يريد है (जो चाहे कर सकता है) तथा तुझ से कोई पूछने वाला भी नहीं है।

﴿ لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴾

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾

(११९) अल्लाह (तआला) कहेगा कि यह वह दिन है कि सत्यवादियों का सत्य उनके लिए लाभप्रद होगा ।[1] उनको बाग़ मिलेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिसमें वह चिरस्थाई रूप से रहेंगे । अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न तथा ये अल्लाह से प्रसन्न हैं । यह बहुत भारी सफलता है ।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾

(१२०) अल्लाह ही का राज्य है आकाशों का तथा धरती का तथा उनका जो उनमें उपस्थित हैं तथा वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखता है ।

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ

सूरतुल अनआम-६

सूरः अनआम मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें एक सौ पैंसठ आयतें एवं बीस रुकूअ हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अति कृपालु तथा अति दयालु है ।

"अल्लाह जो भी करता है उसकी पकड़ न होगी, लोग की उनके कर्मों पर पकड़ होगी ।" (*सूरः अल-अम्बिया-२३*)

अर्थात आयत में अल्लाह के समक्ष भक्तों की शक्तिहीनता तथा असहाय होने का प्रदर्शन है, तथा अल्लाह की महिमा, विशेषता तथा गुणों का वर्णन है । तथा इन दोनों के माध्यम से क्षमा की प्रार्थना भी की जा रही है । अल्लाह ही महिमा योग्य है । कैसी विचित्र तथा प्रभावी आयत है । इसीलिए हदीस में आता है कि एक रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर स्वीच्छा नमाज़ में इस आयत को पढ़ते समय ऐसी अवस्था हुई कि बार-बार प्रत्येक रकअत में यही आयत पढ़ते रहे यहाँ तक कि प्रातः हो गयी । (मुसनद अहमद भाग-५, पृ॰१४९)

[1]आदरणीय इब्ने अब्बास ने इसके अर्थ यह बताये हैं । ينفع الموحدين توحيدهم "वह दिन ऐसा होगा कि केवल एकेश्वरवाद तथा एकेश्वरवादी को लाभ पहुँचेगा । अर्थात मूर्तिपूजकों की क्षमा तथा मोक्ष का प्रश्न ही नहीं होता ।"

(१) सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिस ने आकाशों एवं पृथ्वी की रचना की एवं अंधेरों तथा प्रकाश को बनाया[1] फिर भी जो विश्वास नहीं रखते (अन्य को) अपने प्रभु के समान मानते हैं ।[2]

ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَجَعَلَ ٱلظُّلُمَٰتِ وَٱلنُّورَ ۖ ثُمَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ①

(२) उसी ने तुम्हें मिट्टी से बनाया ।[3] फिर एक समय निर्धारित किया ।[4] तथा एक निर्धारित समय उसके पास है ।[5] फिर भी तुम संदेह करते हो ।[6]

هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰٓ أَجَلًا ۖ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُۥ ۖ ثُمَّ أَنتُمْ تَمْتَرُونَ ②

---

[1]ज़ुल्मात से रात का अंधकार तथा नूर से दिन का प्रकाश अथवा कुफ़्र (अविश्वास) का अंधकार तथा ईमान का प्रकाश तात्पर्य है। प्रकाश (नूर) के सापेक्ष अंधकार (ज़ुल्मात) को अरबी शब्द में बहुवचन प्रयोग किया गया है, इसलिए कि ज़ुल्मात के कई कारण हैं तथा वे कई प्रकार की होती हैं। तथा नूर (प्रकाश) का वर्णन एक सामान्य रूप में है, जो अपने सभी भागों के साथ सम्मिलित है। (फ़तहुल क़दीर) यह भी हो सकता है कि चूंकि मार्गदर्शन तथा ईमान का मार्ग एक ही है, चार पाँच अथवा कई नहीं हैं, इसलिए प्रकाश को एक वचन प्रयोग किया गया है।

[2]अर्थात उसके साथ दूसरों को सम्मिलित करते हैं।

[3]अर्थात तुम्हारे पिता आदम, जो तुम्हारी मूल वास्तविकता हैं, तथा जिनसे तुम सभी निकले हो। इसका एक अन्य अर्थ यह भी हो सकता है कि तुम जो भोजन व खाद्य पदार्थ खाते हो, सभी धरती से उगते हैं तथा उन्हीं खाद्य पदार्थों से वीर्य बनता है, जो माता के गर्भ में जाकर मनुष्य का रूप धारता है। इस प्रकार से तुन्हारा जन्म मिट्टी से है।

[4]अर्थात मृत्यु का समय।

[5]अर्थात अन्त दिवस के समय को मात्र अल्लाह जानता है। अर्थात पहला "अजल" शब्द प्रयोग किया गया है उसका अर्थ जन्म से मृत्यु तक का समय (आयु) है। दूसरे "अजलुममुस्सम्मा:" शब्द का अर्थ मृत्यु के बाद से क़ियामत (प्रलय) तक संसार की आयु है, जिसके पश्चात् वह पतन तथा विनाश से मिलकर समाप्त हो जायेगा तथा एक अन्य दुनिया अर्थात आख़िरत के जीवन का प्रारम्भ होगा।

[6]अर्थात क़ियामत (प्रलय) के आने के विषय में जिस प्रकार से काफ़िर (अधर्मी) तथा मूर्तिपूजक कहा करते थे कि जब हम मरकर मिट्टी में मिल जायेंगे तो उसके पश्चात

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ط يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ③

(३) तथा वही अल्लाह है आकाशों में एवं पृथ्वी में, वह तुम्हारे भेद एवं व्यक्त को जानता है तथा तुम्हारी कृतियों से अवगत है।[1]

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ④

(४) तथा उनके पास कोई निशानी उनके प्रभु की निशानियों में से नहीं आती अपितु वह उससे मुहँ फेरते हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ط فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑤

(५) उन्होंने उस सच्ची किताब को भी झूठा बताया जबकि वह उनके पास पहुँची, तो शीघ्र ही उन्हें सूचना मिल जायेगी उस चीज़ की जिसका यह लोग उपहास करते थे।[2]

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ

(६) क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम उनसे पूर्व कितने गुटों को नष्ट कर चुके हैं जिनको हमने दुनिया में इतनी शक्ति प्रदान की थी

पुन: हमें किस प्रकार जीवित किया जायेगा ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया जिसने तुम्हें पहली बार जन्म दिया, वही तुम्हें पुन: जीवित करेगा। (सूर: *यासीन*)

[1]अहले सुन्नत अर्थात विगत धर्मात्माओं का विश्वास है कि अल्लाह तआला स्वयं तो अर्श पर है जैसा कि वह महिमा योग्य है, परन्तु अपने ज्ञान के आधार पर प्रत्येक स्थान पर है अर्थात उसके ज्ञान तथा सूचना की परिधि से कोई भी चीज़ बाहर नहीं। परन्तु कुछ गुटों के लोग यह कहते हैं कि अल्लाह तआला अर्श पर नहीं अपितु हर स्थान पर है तथा वह इस आयत से अपने विश्वास की पुष्टि करते हैं। परन्तु यह विश्वास ठीक नहीं है, यह तर्क भी ठीक नहीं है। आयत का अर्थ यह है कि वह शक्ति जिसको आकाशों तथा धरती पर अल्लाह कहकर पुकारते हैं तथा आकाशों तथा धरती पर जिसका राज्य है तथा आकाशों एवं धरती पर जिसको ईष्टदेव समझा जाता है। वह अल्लाह तुम्हारे छिपे तथा स्पष्ट तथा जो कुछ कर्म तुम लोग करते हो, सबको जानता है। (फ़तहुल क़दीर) इसके अन्य तर्क भी प्रस्तुत किये गये हैं जिन्हें ज्ञानी लोगों की व्याख्या में देखा जा सकता है जैसे तफ़सीर तबरी तथा इब्ने कसीर आदि।

[2]अर्थात इस मुहँ मोड़ने तथा झुठलाने का पाप उन्हें मिलेगा, उस समय उन्हें आभास होगा कि काश हम उस सच्ची किताब को न झुठलाते तथा उपहास न करते।

عَلَيْهِم مِّدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٦﴾

जैसी तुम्हें भी नहीं प्रदान किया तथा हमने उन पर मूसलाधार वर्षा की तथा हमने उनके नीचे से नदियाँ बहायीं, फिर हमने उनको उनके पाप के कारण नष्ट कर दिया।[1] तथा उनके पश्चात अन्य समुदाय पैदा किये।[2]

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾

(७) तथा यदि हम कागज़ पर लिखा हुआ कोई पत्र भी आप पर उतारते फिर यह लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी यह काफ़िर लोग यही कहते कि यह कुछ भी नहीं मगर स्पष्ट जादू है।[3]

---

[1]अर्थात जब पाप के कारण तुमसे पूर्व के समुदायों को हम नष्ट कर चुके हैं, जबकि वे शक्ति में तुमसे कहीं अधिक थे तथा साधन तथा धन के बाहुल्य में भी तुम से अधिक थे तो तुम्हें नष्ट करना हमारे लिये क्या कठिन है ? इससे ज्ञात हुआ कि किसी समाज की भौतिक उन्नति तथा ख़ुशहाली से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वह सफल तथा विजयी है। यह अवसर तथा समय देने की वह अवस्थायें हैं जो परीक्षा लेने के लिए विभिन्न समुदायों को दी जाती हैं। परन्तु जब उनका समय पूरा हो जाता है, तो यह सारी उन्नति तथा ख़ुशहाली उन्हें अल्लाह के प्रकोप से बचाने में सफल नहीं होतीं।

[2]ताकि उनकी भी पिछली समुदायों की तरह परीक्षा लें।

[3]यह उनकी हठधर्मी, कपट, द्वेष, तथा ईर्ष्या का प्रदर्शन है कि यह स्पष्ट कागज़ अल्लाह का लिखा हुआ पत्र यदि वह उसे छू भी लेंगे तो भी मानने के लिए तैयार नहीं होंगे तथा वह इसे जादूगर का खेल बतायेंगे।

﴿وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۞ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ﴾

"यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल दें और यह उसमें चढ़ने भी लग जायें, तब भी कहेंगे कि हमारी आँखें मतवाली हो गयी हैं, अपितु हम पर जादू कर दिया गया है।" (सूरः *अल-हिजर*-१४ तथा १५)

﴿وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ﴾

(८) तथा उन्होंने कहा कि आप पर कोई फ़रिश्ता (सुर) क्यों नहीं उतारा गया और यदि हम फ़रिश्ता उतार देते तो विषय का निर्णय कर दिया जाता फिर उन्हें अवसर नहीं दिया जाता ।[1]

وَقَالُوا لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ﴿٨﴾

"तथा यदि वह आकाश से गिरता हुआ टुकड़ा भी देख लें तो कहेंगे कि तह पर तह बादल हैं ।" (*सूर: अल्-तूर-४४*)

अर्थात अल्लाह के प्रकोप की कोई न कोई कल्पना बना लेंगे कि जिसमें अल्लाह का अधिकार उन्हें स्वीकार न करना पड़े वास्तव में पूरे ब्रहमाण्ड में जो कुछ भी होता है, उसमें अल्लाह की इच्छा का समावेश होता है ।

[1]अल्लाह ने मानव जाति को मार्गदर्शन कराने के लिए, जितने भी अम्बिया और रसूल (संदेशवाहक) भेजे सभी मानव पुरुष ही थे तथा प्रत्येक समुदाय में उन्हीं में से एक को प्रकाशना तथा देववाणी से विभूषित किया । यह इसलिये कि उसके बिना संदेष्टा मार्ग दर्शाने का काम पूरा नहीं कर सकता था , उदाहरणार्थ यदि फ़रिश्ते (स्वर्गदूत) को रसूल (संदेष्टा) बनाकर भेजता तो मानवी भाषा में वार्तालाप करने में असमर्थ होते । दूसरे वह मानवीय भावनाओं से शून्य होने के कारण विभिन्न मानवीय परिस्थितियों एवं भावना के प्रबोध में असमर्थ होते । ऐसी दशा में मार्गदर्शन का कर्तव्य किस प्रकार पूरा कर सकते थे ? इसीलिए अल्लाह का मानव जाति पर एक बड़ा उपकार है कि उसने मानव ही को ईशदूत तथा संदेशवाहक बनाया । जैसाकि परमेश्वर (अल्लाह) पवित्र क़ुरआन में इसकी चर्चा एक उपकार के रूप में कर रहा है ।

﴿لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ﴾

"अल्लाह तआला ने ईमानवालों पर उपकार किया कि उन्हीं की जाति में से एक व्यक्ति को रसूल बनाकर भेजा ।" (*सूर: आले इमरान-१६४*)

लेकिन पैग़म्बरों का मनुष्य होना काफ़िरों के लिए आश्चर्यजनक है । वह समझते रहे कि रसूल मनुष्यों में से नहीं फ़रिश्तों में से होना चाहिए था । अर्थात उनके निकट मनुष्य के योग्य रिसालत की पदवी नहीं थी जैसाकि आधुनिक बिदअती लोग समझते हैं । تشابهت قلوبهم काफ़िर तथा मूर्तिपूजक रसूलों के मनुष्य होने का इंकार नहीं करते थे क्योंकि वह उनके पूरे परिवार से परिचित थे परन्तु रिसालत का इंकार कर देते रहे । जबकि आजकल के बिदअती लोग रिसालत का इंकार नही करते हैं परन्तु रिसालत के योग्य मनुष्यत्व को न समझने के कारण रसूलों के मनुष्य होने का इंकार करते हैं । अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि हम मनुष्य के स्थान पर फ़रिश्ता भी रसूल बनाकर भेज देते अथवा इस रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुष्टि के लिए हम कोई फ़रिश्ता भी भेज देते (जैसाकि

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ﴿٩﴾

(९) तथा यदि हम रसूल को फ़रिश्ता बनाते तो उसे पुरुष बनाते तथा उन पर वही संदेह उत्पन्न करते जो सन्देह कर रहे हैं ।[1]

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾

(१०)आप से पूर्व बहुत से रसूलों (ईशदूतों) का उपहास किया गया तो जो उपहास कर रहे थे उनके उपहास का दुष्परिणाम उन पर पलट पड़ा ।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

(११) (आप) कह दीजिए कि तनिक धरती पर घूम फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ ?

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْا اَنْفُسَهُمْ

(१२) (आप) कह दीजिए कि जो कुछ आकाशों तथा धरती में है इन सब पर किसका स्वामित्व है ? (आप) कह दीजिए सब पर अल्लाह का स्वामित्व है, अल्लाह ने कृपा करना अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है ।[2] तुमको

यहाँ इसी बात का वर्णन किया गया है) तथा फिर वह ईमान नहीं लाते तो बिना समय दिये ही उनका नाश कर दिया जाता।

[1]अर्थात यदि हम फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजने का निर्णय करते तो स्पष्ट बात है कि वह फ़रिश्ते के रूप में आ नहीं सकता था, क्योंकि इस प्रकार से मनुष्य उससे भयभीत हो जाते तथा निकटता तथा घनिष्टता पैदा करने के बजाय दूर भागते । इसलिए आवश्यक था कि उसे मनुष्य के रूप में भेजा जाता। परन्तु तुम्हारे यह नेता फिर यही संदेह करते कि मनुष्य ही है, जो इस समय भी रसूल को मनुष्य के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, तो फ़रिश्ते के भेजने का क्या लाभ ?

[2]जिस प्रकार हदीस में नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब अल्लाह तआला ने सृष्टि को पैदा किया तो अर्श पर यह लिख दिया। «إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي» सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद व बदउल ख़लक, मुस्लिम किताबुल तौबा) नि:संदेह मेरी दया मेरे क्रोध पर प्रभावी है । परन्तु यह दया प्रलय के दिन केवल ईमानवालों के लिए होगी, काफ़िरों पर प्रभु अत्यधिक क्रोधित होगा। इसका अर्थ यह है कि दुनिया में उसकी कृपा तथा दया सामान्यरूप से सभी के लिए है चाहे वे ईमानवाला तथा काफ़िर, सत्कर्मी तथा कुकर्मी,

فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾

अल्लाह (तआला) कियामत के दिन एकत्रित करेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं, जिन लोगों ने स्वयं को नष्ट कर लिया है, वही ईमान नहीं लायेंगे।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣﴾

(१३) तथा जो कुछ दिन रात में निवास करते हैं वह सभी कुछ अल्लाह के ही हैं तथा वह बहुत सुनने वाला एवं बड़ा जानने वाला है।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٤﴾

(१४)आप कहिये कि क्या मैं उस अल्लाह से अन्य को मित्र (स्वामी, ईष्टदेव) बना लूँ[1] जो आकाशों एवं पृथ्वी का रचयिता है तथा वह खिलाता है खिलाया नहीं जाता, आप कहिये कि मुझे आदेश किया गया है कि मैं उनमें सर्वप्रथम रहूँ जिसने (अल्लाह के प्रति) आत्म-समर्पण किया तथा मिश्रणवादियों में कदापि न रहूँ।

आज्ञाकारी तथा अवज्ञाकारी हों सभी उससे लाभान्वित हो रहे हैं। अल्लाह तआला किसी भी व्यक्ति के जीवन यापन की सामग्री को प्राप्त करने के साधन को उसकी अवहेलना एवं अवज्ञाकारिता के कारण बन्द नहीं करता, परन्तु उसकी दया का समानरूप केवल दुनिया तक ही सीमित है। आख़िरत (परलोक) में जो कि प्रतिफल का स्थान है, वहाँ अल्लाह के न्याय की विशेषता का पूर्ण प्रदर्शन होगा, जिसके परिणाम स्वरूप ईमान वाले उसकी कृपा तथा दया की छत्रछाया में स्थान पायेंगे तथा काफ़िर तथा उपद्रवी नरक की स्थाई यातना के भोगी होंगे। इसीलिए क़ुरआन में फ़रमाया गया।

﴿ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴾

"तथा हमारी कृपा प्रत्येक वस्तु पर विस्तृत है और हम शीघ्र उसे उनके लिये लिख देंगे जो अल्लाह से डरते हैं तथा ज़कात (धर्मदान) देते हैं तथा जो हमारी निशानियों (लक्षणों) के प्रति विश्वास रखते हैं।" (सूरः *अल-आराफ़*-१५६)

[1]वली से तात्पर्य यहाँ ईष्टदेव एवं स्वामी है, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है अपितु मित्र कहना तो उचित है।

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ⑮

(१५) (आप) कह दीजिए कि मैं यदि अपने प्रभु का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना से डराता हूँ ।[1]

مَّن يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُۥ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ⑯

(१६) जिससे उस दिन यातना समाप्त कर दी जायेगी, उस पर अल्लाह ने अति कृपा की तथा यह स्पष्ट सफलता है ।[2]

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑰

(१७) तथा यदि अल्लाह (तआला) तुझको कोई कष्ट दे तो उसको दूर करने वाला अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं है तथा यदि तुझको अल्लाह तआला लाभ प्रदान करे तो वह प्रत्येक चीज़ पर प्रभुत्व रखने वाला है ।[3]

---

[1]अर्थात यदि मैंने भी अपने पालनहार की अवज्ञा करते हुए उस के सिवाय अन्य को ईष्टदेव वना लिया तो अल्लाह की यातना (प्रकोप) से नहीं बच सकूँगा ।

[2] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर कहा गया है ।

﴿فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ﴾

"जो अग्नि (नरक) से दूर करके स्वर्ग में प्रवेश पा गया, वह सफल हो गया ।" *(सूर: आले- इमरान-१८५)*

इसलिए कि सफलता हानि से बच जाने तथा लाभ प्राप्त करने का नाम है । तथा स्वर्ग से वढ़कर लाभ क्या होगा ?

[3]अर्थात लाभ हानि का अधिकारी तथा समस्त विश्व की प्रत्येक वस्तु का स्वामी अल्लाह ही है । तथा बिना उसके आदेश एवं निर्णय के कोई खण्डन करने वाला नहीं है । एक हदीस में इस विषय को इस प्रकार वर्णन किया गया है ।

« اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ ».

"हे अल्लाह जो तू प्रदान करे उसे कोई रोक नहीं सकता, तथा जो तू रोक ले, उसे कोई दे नहीं सकता, तथा किसी की प्रतिष्ठा तेरी तुलना में उसे लाभ नहीं पहुँचा सकती ।" (सहीह बुखारी किताबुल एअतेसाम वल कद्र वद्दावात, मुस्लिम कितावुल सलात वल मसाजिद)

(१८) वही अपने भक्तों पर प्रभावशाली है तथा वही विज्ञाता सूचित है ।[1]

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ⑱

(१९) आप कहिये कि किस की गवाही महान है, कहिये कि हमारे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह (साक्षी) है ।[2] तथा यह क़ुरआन मेरी ओर प्रकाशना किया गया है तकि उसके द्वारा तुम्हें तथा जिस तक पहुँचे उन सभों को सचेत करूँ,[3] क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ अन्य पूज्य हैं ? आप कह दें कि मैं इस की गवाही नहीं देता, आप कहिये कि वह एक ही अराध्य है तथा मैं तुम्हारे मिश्रण से निर्दोष हूँ ।

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُم بِهِ وَمَن بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُل لَّا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ⑲

(२०) जिन्हें हमने किताब (तौरात तथा इंजील) दी है वह आप (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उसी प्रकार पहचानते हैं जैसे

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑳

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रत्येक नमाज़ के पश्चात इस प्रार्थना का जप करते थे ।

[1]अर्थात सभी माथे उसके आगे झुके हुए हैं, बड़े-बड़े शक्तिशाली व्यक्ति उसके समक्ष असहाय हैं, वह प्रत्येक चीज़ पर प्रभावशाली है तथा सम्पूर्ण सृष्टि उसकी आज्ञाकारी है, वह अपने प्रत्येक कार्य में सक्षम है तथा प्रत्येक वस्तु की उसे सूचना है, उसे यह भी ज्ञात है कि उसके कृपा के योग्य कौन है तथा कौन नहीं है ।

[2]अर्थात अल्लाह तआला ही अपने एक तथा पालनहार होने का स्वयं ही साक्षी है । उससे बढ़ कर कोई भी गवाह नहीं ।

[3]रबिअ बिन अनस कहते हैं कि अब जिसके पास भी यह क़ुरआन पहुँच जाये, यदि वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा अनुयायी है, तो उसका यह कर्तव्य है कि वह भी लोगों को अल्लाह की ओर उसी प्रकार आमन्त्रित करे जिस प्रकार रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को आमन्त्रित किया था तथा उसी प्रकार सतर्क करे जिस प्रकार से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सतर्क किया था । (इब्ने कसीर)

अपने पुत्रों को, जो अपना आपा खो दिये हैं वही विश्वास नहीं करेंगे ।[1]

(२१) तथा उस से बढ़कर अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये एवं उसकी निशानियों (चिन्हों) को मिथ्या माने[2] वस्तुतः अत्याचारी सफल नहीं होते ।[3]

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢١﴾

(२२) तथा जिस दिन हम सब को एकत्र करेंगे, फिर जिन्होंने मिश्रण किया उन से कहेंगे वे कहाँ हैं जिनको तुम (अल्लाह का) साझी समझ रहे थे वह दिन स्मरणीय है ।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٢٢﴾

[1] يعرفونه में सर्वनाम (उसको) है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर फिरता है, अर्थात अहले किताब (यहूदी एवं ईसाई) आपको अपने पुत्रों की भाँति पहचानते हैं, क्योंकि आप की विशेषताओं का वर्णन उनके धर्मशास्त्रों में विद्यमान है तथा इसके कारण अन्तिम ईशदूत की प्रतीक्षा कर रहे थे अब उनमें से जो आपके प्रति विश्वास न करें वह भारी क्षति में हैं, क्योंकि यह जानते हुये इंकार कर रहे हैं ।

[2]अर्थात जिस प्रकार से अल्लाह पर मिथ्याभियोगी सबसे बड़ा अत्याचारी है इसी प्रकार वह भी है जो अल्लाह की आयतों तथा सत्य ईशदूत को न मानता हो । मिथ्या दूतत्व के दावे पर इतनी कड़ी चेतावनी के उपरान्त भी अनेकों ने अनेक युग में नबी होने का मिथ्या दावा किया तथा ऐसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस भविष्यवाणी की पूर्ति हो गयी कि ३० बड़े मिथ्यावादी होंगे, प्रत्येक ईशदूत होने का दावा करेंगें, विगत शताब्दी में भी "कादियान" के एक वंचक ने नबी होने का दावा किया तथा आज उसके अनुयायी उसे इसलिए सत्यदूत तथा प्रतिज्ञात मसीह मानते हैं की उसे एक अति अल्प संख्या नबी मानती है जबकि किसी धूर्त को नबी मान लेना उसकी सच्चाई का प्रमाण नहीं बन सकता । सत्य तो क़ुरआन तथा हदीस से तर्क संगत होना चाहिए ।

[3]जब दोनों ही अत्याचारी हैं, तो न मिथ्यावादी ही सफल होगा और न निवर्ती । इसलिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने परिणाम पर भली-भाँति विचार कर ले ।

(२३) फिर उनके मिश्रण का सिवाये इसके कोई बहाना न होगा कि कहें कि अल्लाह की शपथ हम मिश्रणवादी नहीं थे ।[1]

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾

(२४) देखो कि वह कैसे अपने ऊपर झूठ बोल गये तथा उनका आरोप उनसे खो गया ।[2]

انْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾

(२५) उनमें से कुछ आप की ओर कान धरते हैं ।[3] तथा हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ

---

[1]फ़ित्न: का एक अर्थ मिश्रण तथा एक अर्थ क्षमा-याचना के किये गये हैं। अर्थात अन्त में यह तर्क तथा क्षमा-याचना को प्रस्तुत करके छुटकारा पाने का प्रयत्न करेंगे कि हम तो मूर्तिपूजक नहीं थे। तथा इमाम इब्ने जरीर ने इसका अर्थ वर्णित किया है।

ثم لم يكن قيلهم عند فتنتنا إياهم اعتذارا مما سلف منهم من الشرك بالله

"जब हम उन्हें प्रश्नों की भट्ठी में झोंक देंगे, तो दुनिया में उन्होंने जो मूर्तिपूजन किया, उसकी क्षमा के लिए यह कहे बिना उनके लिए कोई अन्य मार्ग न रह जायेगा कि हम तो मूर्तिपूजक ही न थे।"

यहाँ यह शंका न हो कि वहाँ तो मनुष्य के हाथ-पैर गवाही देंगे तथा मुख पर मोहर लगा दी जायेगी, फिर यह इंकार किस प्रकार करेंगे ? इसका उत्तर आदरणीय इब्ने अब्बास ने दिया है कि जब मूर्तिपूजक देखेंगे कि मुसलमान स्वर्ग में जा रहे हैं, तो वह आपस में विचार-विमर्श करके मूर्तिपूजन से ही इंकार कर देंगे। तब अल्लाह तआला उनके मुख पर मोहर लगा देगा। तथा उनके हाथ-पैर उन्होंने जो किया होगा उसकी गवाही देंगे, फिर वह अल्लाह तआला से कोई बात छुपाने की शक्ति न रख सकेंगे। (इब्ने कसीर)

[2]परन्तु वहाँ उन्हें इस स्पष्ट असत्य का कोई लाभ न होगा जिस प्रकार दुनिया में मनुष्य कभी-कभार ऐसा आभास करता है । इसी प्रकार उनके झूठे इष्टदेव भी, जिनकी वे अल्लाह के अतिरिक्त पूजा एवं उपासना करते थे तथा अपना कष्टनिवारक, सहायक, कृपा निधान तथा पक्षक समझते थे लुप्त हो जायेंगे तथा वहाँ उनपर अल्लाह के साथ अन्य को सम्मिलित करना स्पष्ट हो जायेगा, परन्तु वहाँ उनकी पूर्ति का कोई साधन न होगा।

[3]अर्थात यह मूर्तिपूजक आप के पास क़ुरआन तो आकर सुनते हैं, परन्तु चूँकि उद्देश्य मार्गदर्शन प्राप्त करना नहीं है, इसलिए इससे कोई लाभ नहीं प्राप्त करते।

وَفِيٓ اٰذَانِهِمۡ وَقۡرًا ؕ وَاِنۡ يَّرَوۡا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤۡمِنُوۡا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوۡكَ يُجَادِلُوۡنَكَ يَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡٓا اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝٢٥

रखे हैं कि उसे समझें तथा उनके कान बहरे हैं ।[1] और यदि वह सभी लक्षणों को देख लें तब भी उन पर विश्वास नहीं करेंगे यहाँ तक कि जब आप के पास आते हैं झगड़ा करते हैं, काफ़िर (विश्वासहीन) कहते हैं कि यह मात्र पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं ।[2]

وَهُمۡ يَنۡهَوۡنَ عَنۡهُ وَيَنۡــَٔوۡنَ عَنۡهُ ۚ وَاِنۡ يُّهۡلِكُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡفُسَهُمۡ وَمَا يَشۡعُرُوۡنَ ۝٢٦

(२६) और यह लोग इससे दूसरों को भी रोकते हैं तथा स्वयं भी दूर-दूर रहते हैं ।[3] तथा ये लोग अपने आप को नष्ट कर रहे हैं एवं कुछ नहीं जानते ।[4]

وَلَوۡ تَرٰٓى اِذۡ وُقِفُوۡا عَلَى النَّارِ فَقَالُوۡا يٰلَيۡتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوۡنَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝٢٧

(२७) तथा यदि आप उस समय देखें जब ये लोग नरक के निकट खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे ।[5] हाय ! क्या ही अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिये जायें (तथा यदि ऐसा हो

---

[1]इसके अतिरिक्त उनके अविश्वास प्रतिकार स्वरूप हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं तथा उनको कान से बधिर कर दिया है जिसके कारण उनके दिलों को सत्य समझने तथा कान सत्य सुनने योग्य नहीं रहे ।

[2]अब वह इतने भटक चुके हैं कि इस अज्ञान के अंधकार में यदि वे चमत्कार का प्रकाश भी देख लें तो भी यह संशय तथा संदेह में पड़े रहेंगे और ईमान नहीं लायेंगे, ये ईमान से वंचित ही रहेंगे तथा उनकी ईर्ष्या तथा द्वेष इतना बढ़ गया है कि क़ुरआन करीम को पूर्वजों की अप्रमाणित कहानियाँ कहते हैं ।

[3]अर्थात जन-सामान्य को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तथा क़ुरआन करीम से रोकते हैं ताकि वे ईमान न लायें तथा स्वयं भी दूर-दूर रहते हैं ।

[4]परन्तु लोगों को रोकना तथा स्वयं भी दूर रहना हमारा अथवा हमारे पैग़म्बर का क्या बिगाड़ लेगा ? इस प्रकार का कार्य करके अज्ञानता में अपने नाश का साधन स्वयं तैयार कर रहे हैं ।

[5]यहाँ पर यदि का उत्तर लुप्त है जो इस प्रकार होगा, "तो आप को भयानक दृश्य दिखायी देगा ।"

जाये) तो हम अपने प्रभु की निशानियों को न झुठलायें तथा हम ईमानवालों में से हो जायें ।[1]

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوا يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) अपितु जिस वस्तु को इसके पूर्व छुपाया करते थे, वह उनके समक्ष आ गयी है ।[2] तथा यदि यह लोग पुन: वापस भेज दिये जायें तब भी यह वही करेंगे जिससे इनको रोका गया था तथा नि:सन्देह वे लोग झूठे हैं ।[3]

---

[1]परन्तु वहाँ से पुन: दुनिया में आना सम्भव नहीं है कि वे अपनी इस इच्छा की पूर्ति कर सकें । काफ़िरों की इन इच्छाओं का वर्णन क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर हुआ है जैसे :

﴿رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۞ قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ﴾

"हे हमारे प्रभु ! हमें इस नरक से निकाल ले यदि हम पुन: अवज्ञाकारी हों तो अवश्य अत्याचारी हैं । अल्लाह तआला फ़रमायेगा इसी में दुष्टों पड़े रहो, मुझसे बात न करो।" (*सूर: अल-मोमिनून*- १०७-१०८)

﴿رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ﴾

"हे हमारे प्रभु ! हमने देख लिया तथा सुन लिया, अब हमें पुन: दुनिया में भेज दे ताकि हम पुण्य का कार्य करें, अब हमें विश्वास हो गया ।" (*सूर: अलिफ़ लाम मीम अल-सजद:*-१२)

[2]بَلْ शब्द अरबी भाषा में पहली बात को त्यागने के लिए आता है । इसके कई भावार्थ किये गये हैं १. उनके लिए वह अविश्वास, प्रतिरोध तथा झूठ व्यक्त हो जायेगा जो उससे पूर्व वे संसार अथवा परलोक में छुपाते थे । अर्थात जिसका इंकार करते थे, जैसे वहाँ भी प्रारम्भ में कहेंगे कि हम तो मूर्तिपूजक ही नहीं थे । २. अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा पवित्र क़ुरआन का ज्ञान जो उनके दिलों में था परन्तु अपने अनुयायियों से छिपाते थे, वहाँ प्रकाशित होंगे । ३. अथवा जो अवसरवादी थे वहाँ उनका अवसरवाद प्रकाश में आ जायेगा जिसे वे दुनिया में ईमानवालों से छिपाते थे । (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3]अर्थात पुन: संसार में आने की इच्छा, ईमान लाने के लिए नहीं केवल यातना से बचने के लिए है, जो उनको क़ियामत (प्रलय) के दिन सामने आयेगा तथा जिसका वे निरीक्षण कर लेंगे । यदि यह संसार में पुन: भेज भी दिये जायें तब भी यह वही कुछ करेंगे जो पूर्व में करते रहे थे ।

وَقَالُوٓا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा यह कहते हैं कि केवल यही सांसारिक जीवन हमारा जीवन है तथा हम पुन: जीवित नहीं किये जायेंगे ।[1]

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा यदि आप उस समय देखें जब ये अपने प्रभु के समक्ष खड़े किये जायेंगे । अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा कि क्या यह सत्य नहीं है ? वे कहेंगे नि:सन्देह प्रभु की सौगन्ध सत्य है । अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा तो अपने कुफ़्र (अविश्वास) की यातना सहन करो ।[2]

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَآءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَٰحَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣١﴾

(३१) नि:सन्देह हानि में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया । यहाँ तक कि जब वह निर्धारित समय उन पर सहसा आ पड़ेगा, कहेंगे कि हाय अफ़सोस हमारे आलस्य पर जो इसके विषय में हुई । तथा उनकी अवस्था यह होगी कि अपना बोझ अपनी कमर पर लादे हुए होंगे । सावधान वह बुरा बोझ लादेंगे ।[3]

---

[1]ये मरणोपरान्त पुनर्जीवन से इंकार धर्महीन लोग ही करते हैं तथा इस वास्तविकता से इंकार ही अधर्म तथा अवज्ञा का कारण है । वरन यदि वास्तव में मनुष्य के दिल में परलोक के प्रति सत्य विश्वास हो जाये, तो अधर्म तथा अवज्ञा के मार्ग से तुरन्त क्षमा-याचना कर लेगा ।

[2]अर्थात आँखों से दर्शन कर लेने के पश्चात तो वे स्वीकार कर लेंगे कि आख़िरत का जीवन वास्तव में सत्य है । परन्तु वहाँ इस स्वीकार का लाभ न होगा तथा अल्लाह तआला उनसे फ़रमायेगा कि अब तो अपने अविश्वास के प्रतिकार में यातना का स्वाद चखो ।

[3]अर्थात जो अल्लाह से मिलने का इंकार करते हैं वह जिस क्षति एवं असफलता में होंगे तथा अपने आलस्य पर जिस प्रकार लज्जित होंगे तथा पापों का भार लादे होंगे आयत में उसी का चित्रण किया गया है । فرطنا فيها में सर्वनाम الساعة (प्रलय) की ओर फिर रहा है, अर्थात प्रलय की तैयारी तथा उसकी स्वीकृति के विषय में जो त्रुटि हमसे हुई अथवा الصفقة (सौदा) की ओर फिर रहा है, यह शब्द यद्यपि वाक्य में नहीं किन्तु पूर्व के वर्णन से

(३२) तथा सांसारिक जीवन तो कुछ भी नहीं सिवाये खेल-तमाशा के तथा अंतिम घर (परलोक) अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा है। क्या तुम सोच-विचार नहीं करते हो ?

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

(३३) हम भली-भाँति जानते हैं कि उनके कथन आप को दुखी करते हैं, तो यह लोग आप को झूठा नहीं कहते, परन्तु यह अत्याचारी अल्लाह तआला की आयतों का इंकार करते हैं।[1]

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝

यह भावार्थ सांकेतिक होता है अथवा इस सौदे (क्रय-विक्रय) से तात्पर्य विश्वास के बदले अविश्वास करना है, अर्थात व्यापार करके हमने बड़ी तुच्छता की अथवा सर्वनाम حياة (जीवन) की ओर फिर रहा है, अर्थात हमने अपने जीवन में पाप तथा अधर्म एवं मिश्रण करके जो आलस्य किये (फ़तहुल क़दीर)

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों के झुठलाने पर जो कष्ट एवं दुख पहुँचता था, उसके निराकरण तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सान्त्वना के लिए फ़रमाया जा रहा है कि यह आप को नहीं झुठला रहे हैं (आप को तो सत्यवादी तथा ईमानदार मानते हैं) अपितु यह अल्लाह की आयतों को झुठलाया जा रहा है। तथा यह एक अत्याचार है जो वह कर रहे हैं। त्रिमज़ी आदि में एक कथन है कि अबू जहल ने एक बार रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि ऐ मोहम्मद ! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हम तुमको नहीं अपितु जो कुछ लेकर आये हो उसको झुठलाते हैं। इस पर यह आयत उतरी। त्रिमज़ी का यह कथन प्रमाण के अनुसार क्षीण है परन्तु अन्य सहीह कथन से इस घटना की पुष्टि होती है कि मक्का के काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यवादिता, ईमानदारी तथा स्पष्ट न्यायवादी होने को मानते थे, परन्तु इसके बावजूद वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाने से भागते थे। आज भी जो लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुचरित्रता, न्यायकारी, ईमानदारी तथा सत्यवादिता का ख़ूब झूम-झूम कर वर्णन करते हैं तथा इस विषय पर धारा प्रवाह भाषण देते हैं। परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन की तुलना में चिन्तन तथा विचार तथा अपने नेताओं के कथनों को महत्व देते हैं। उन्हें विचार करना चाहिए कि यह किसका आचरण है जिसे उन्होंने अपनाया है ?

وَلَقَدۡ كُذِّبَتۡ رُسُلٞ مِّن قَبۡلِكَ فَصَبَرُواْ عَلَىٰ مَا كُذِّبُواْ وَأُوذُواْ حَتَّىٰٓ أَتَىٰهُمۡ نَصۡرُنَاۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَٰتِ ٱللَّهِۚ وَلَقَدۡ جَآءَكَ مِن نَّبَإِيْ ٱلۡمُرۡسَلِينَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा आप से पूर्व रसूलों को झूठा कहा जा चुका है और उन्होंने उस पर धैर्य धारण किया तथा वे कष्ट दिये गये यहाँ तक कि उनके पास हमारी सहायता आ गई,[1] अल्लाह की बातें कोई बदलने वाला नहीं ।[2] तथा आप के पास पैग़म्बरों (उपदेशकों) की घटनायें आ चुकी हैं ।[3]

وَإِن كَانَ كَبُرَ عَلَيۡكَ إِعۡرَاضُهُمۡ فَإِنِ ٱسۡتَطَعۡتَ أَن تَبۡتَغِيَ نَفَقٗا فِي

(३५) और यदि उनका मुहँ फेरना आप पर भारी हो रहा है तो यदि आप से हो सके तो धरती

---

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पुन: सान्त्वना दी जा रही है कि यह प्रथम घटना नहीं है कि काफ़िर अल्लाह के पैग़म्बरों का इंकार कर रहे हैं, अपितु इससे पूर्व बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं जिनको झुठलाया जाता रहा। उसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनका अनुकरण करते हुए उसी प्रकार धैर्य तथा साहस से काम लें जिस प्रकार से उन्होंने झुठलाने तथा कष्ट पहुँचाने पर धैर्य से काम लिया यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए भी हमारी सहायता पहुँच जाये, जिस प्रकार हमने पूर्व के रसूलों की सहायता की, तथा हम अपना वचन भंग नहीं करते। हमने वचन दिया है।

﴿إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ﴾

"नि:सन्देह हम अपने पैग़म्बर तथा ईमानवालों की सहायता करेंगे।" (*सूर: अल-मोमिन*-५१)

﴿كَتَبَ ٱللَّهُ لَأَغۡلِبَنَّ أَنَا۠ وَرُسُلِيٓۚ﴾

"अल्लाह ने यह निर्णय कर दिया है कि मैं और मेरे रसूल प्रभावशाली रहेंगे।" (*सूर: अल-मुजादिल:*-२)

इत्यादि आयतों से (जैसे *सूर: अल-साफ़्फ़ात*-१७१ तथा १७२)

[2]अपितु उसका वचन पूर्ण होकर ही रहेगा कि आप काफ़िरों पर प्रभावशाली तथा विजयी रहेंगे। अतएव ऐसे ही हुआ।

[3]जिससे स्पष्ट हुआ कि प्रारम्भ में यद्यपि उनके समुदायों ने उन्हें झुठलाया, उन्हें कष्ट दिये तथा उनके जीवन का ख़तरा बन गये, परन्तु अन्तत: अल्लाह की कृपा से सफलता प्राप्त हुई तथा स्थाई मुक्ति उनका भाग्य बन गयी।

الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُم بِآيَةٍ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٥﴾

में कोई सुरंग अथवा आकाश में कोई सीढ़ी खोज लें और उनके पास कोई चमत्कार ला दें तथा यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें सत्य मार्ग पर एकत्रित कर देता ।[1] अत: मुर्खों में न बनिये ।[2]

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾

(३६) वही लोग स्वीकार करते हैं, जो सुनते है ।[3] तथा मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) जीवित करके उठायेगा, फिर सब अल्लाह ही की ओर लाये जायेंगे ।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَن يُنَزِّلَ

(३७) तथा उन्होंने कहा कि उन पर उनके पालनहार की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं

---

[1] नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विरोधियों तथा काफ़िरों के झुठलाने से जो कष्ट तथा दुख पहुँचता था उसके आधार पर अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि ये तो अल्लाह तआला की इच्छा तथा भाग्य से होना ही था तथा अल्लाह के आदेश के बिना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने लिए तैयार नहीं कर सकते, चाहे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम धरती में सुरंग खोदकर तथा आकाश पर सीढ़ी लगाकर कोई निशानी लाकर उन्हें दिखा भी दें । प्रथम तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ऐसा करना असम्भव है। तथा यदि ऐसा मान भी लिया जाये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा कर भी लें तो भी ये लोग ईमान न लायेंगे । क्योंकि उनका ईमान लाना अल्लाह तआला की इच्छा तथा आदेश के अधीन है जो पूर्ण रूप से मनुष्य की बौद्धिक सीमा से बाहर की बात है । अपितु उसका एक स्पष्ट प्रमाण यह है कि अल्लाह तआला उन्हें अधिकार तथा विचार की स्वतंत्रा देकर परीक्षा ले रहा है । वरन् अल्लाह तआला के लिए यह कठिन नहीं था कि सभी लोगों को सत्य कर्म में लगा दे । उसके लिए शब्द كن (कुन) से ही एक क्षण से भी कम में यह कार्य हो सकता है ।

[2]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके अविश्वास से दुखी एवं चिन्तित न हों क्योंकि इसका सम्बन्ध अल्लाह तआला की इच्छा से है, इसलिए इसे अल्लाह के लिए ही छोड़ें, वही इसके कारण तथा समस्या को भली-भाँति समझता है ।

[3]अर्थात उन काफ़िरों की अवस्था मृतकों के समान है जिस प्रकार से वह बोलने तथा सुनने की शक्ति से वंचित हैं, यह भी चूँकि अपनी बुद्धि तथा विचार से सत्य के समझने का काम नहीं लेते, इसलिए यह भी मृतक समान हैं ।

آيَةً وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

उतारा गया ? आप कह दें कि अल्लाह कोई चमत्कार उतारने का पूर्ण सामर्थ्य रखता है ।[1] किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।[2]

وَمَا مِن دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُم ۚ مَّا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِن شَيْءٍ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा जितने प्रकार के जीवधारी धरती पर चलने वाले हैं तथा जितने प्रकार के पंख से उड़ने वाले पक्षी हैं, उनमें से कोई भी प्रकार ऐसा नहीं जो कि तुम्हारी तरह के गुट न हों ।[3] हमने पुस्तिका में लिखने से कोई वस्तु न छोड़ी ।[4]

---

[1]अर्थात ऐसा चमत्कार जो उनको ईमान लाने पर बाध्य कर दे, जैसे कि उनकी आँखों के समक्ष फ़रिश्ता (स्वर्गदूत) उतरे, अथवा पर्वत को उठा कर उनके ऊपर कर दिया जाये, जिस प्रकार इस्राईल की सन्तान के साथ हुआ । कहा, अल्लाह तआला निःसन्देह ऐसा कर सकता है परन्तु उसने ऐसा इसलिए नहीं किया कि फिर तो मनुष्यों की परीक्षा की समस्या ही समाप्त हो जायेगी । इसके अतिरिक्त उनकी माँग पर यदि कोई चमत्कार दिखा भी दिया जाता, फिर भी ये लोग ईमान न लाते, तो तुरन्त उन्हें इस संसार में कठोर दण्ड दे दिया जाता । इस प्रकार अल्लाह के इस निर्णय से उनका ही सांसारिक लाभ है ।

[2]जो अल्लाह के आदेश तथा निर्णय का भेद नहीं समझ सकते ।

[3]अर्थात उन्हें भी अल्लाह तआला ने उसी प्रकार जन्म दिया जिस प्रकार तुम्हें जन्म दिया, इसी प्रकार उन्हें भी जीविका उपलब्ध कराता है जिस प्रकार तुम्हें उपलब्ध कराता है तथा तुम्हारी ही तरह वह भी उसकी शक्ति तथा ज्ञान की परिधि में हैं ।

[4]पुस्तिका से तात्पर्य लौह महफ़ूज़ है । (सुरक्षित पुस्तक है जिसमें सभी लोगों का भाग्य उन के कर्मानुसार अल्लाह के पूर्व ज्ञान के आधार पर सुरक्षित करके लिख दिया है) अर्थात वहाँ प्रत्येक चीज़ लिखी हुई है अथवा क़ुरआन है जिसमें संक्षिप्त तथा विस्तार पूर्वक धर्म के प्रत्येक नियम पर प्रकाश डाला गया है । जैसाकि अन्य स्थान पर फ़रमाया गया है ।

﴿ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ﴾

"हमने आप पर ऐसी किताब उतारी है जिसमें प्रत्येक चीज़ का वर्णन है ।" (*सूरः अल-नहल-८९*)

यहाँ पर विषय के आधार पर पहला अर्थ निकटतम है ।

फिर सब अपने प्रभु के पास एकत्रित किये जायेंगे ।[1]

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِى الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾

(३९) जिन लोगों ने हमारी आयतों को नहीं माना वह बहरे गुंगे अन्धकारों में हैं । अल्लाह जिसे चाहता है विपथ कर देता है तथा जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर लगा देता है ।[2]

---

[1]अर्थात सभी वर्णित गुट एकत्रित कर दिये जायेंगे । इससे विद्वानों के एक गुट ने यह अर्थ निकाला है कि जिस प्रकार मनुष्यों को मृत्यु के उपरान्त जीवित करके एकत्रित करके उनके कर्मों का हिसाब होगा उसी प्रकार अन्य जीवों तथा अन्य सृष्टि को भी जीवित करके हिसाब होगा । जिस प्रकार से एक हदीस में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यदि किसी सींग वाली बकरी ने बिना सींग वाली बकरी पर कोई अत्याचार किया होगा तो क़ियामत वाले दिन सींग वाली बकरी से बदला लिया जायेगा ।" (सहीह मुस्लिम संख्या १९९७) कुछ विद्वानों ने हश्र से तात्पर्य केवल मृत्यु लिया है अर्थात सभी को मृत्यु आयेगी । कुछ विद्वानों ने कहा है कि यहाँ हश्र से तात्पर्य अविश्वासियों का एकत्रित होना है । तथा मध्य में जो बाते आयीं हैं वे केवल एक मध्यावर्ती वाक्य है । तथा हदीस में जो बकरी से बदला लेने का वर्णन है यह उदाहरणार्थ प्रयोग हुआ है जिसका उद्देश्य क़ियामत के हिसाब-किताब की प्रबलता एवं विशेषता को स्पष्ट करना है । अथवा यह कि जीवधारियों में से केवल अत्याचारियों तथा जिन पर अत्याचार हुआ है दोनों को जीवित करके अत्याचारी से जिन पर अत्याचार हुआ है को बदला दिला कर पुनः मार दिया जायेगा । (फ़तहुल क़दीर आदि)

[2]अल्लाह की आयतों को झुठलाने वाले चूँकि अपने कानों से सत्य बात नहीं सुनते तथा अपने मुख से सत्य नहीं बोलते, इसलिए वह ऐसे हैं जैसे मूक तथा बधिर होते हैं । इसके अतिरिक्त यह कुफ़्र अपमान के अंधकार में घिरे हुए होते हैं इसलिए उन्हें कोई ऐसी वस्तु दिखायी नहीं देती जिससे वे अपना सुधार कर सकें । अर्थात जैसे उनकी चिन्तन शक्ति छीन ली गयी हो जिसके कारण वह परिस्थितियों से लाभ नहीं उठा सकते । फिर कहा, "सभी अधिकार अल्लाह के हाथ में है जिसे वह चाहे भटका दे जिसे चाहे सीधे मार्ग पर लगा दे ।" परन्तु उसका यह निर्णय निराधार नहीं है, अपितु न्याय तथा निर्णय के नियम के आधार पर होता है । भटकाता उसे ही है जो स्वयं भटकना चाहता है तथा उससे निकलने का न तो प्रयत्न करना चाहता है न प्रिय समझता है । (इसके अतिरिक्त देखिये सूरः *अल-बक़रः* आयत संख्या २६ की व्याख्या)

قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُ ٱللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ ٱلسَّاعَةُ أَغَيْرَ ٱللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) आप कह दीजिए कि अपना हाल तो बताओ कि यदि तुम पर अल्लाह की कोई यातना आ पड़े अथवा तुम पर क़ियामत ही आ पहुँचे तो क्या अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को पुकारोगे ? यदि तुम सच्चे हो।

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَآءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

(४१) अपितु विशेषरूप से उसी को पुकारोगे, फिर जिसके लिए तुम पुकारोगे यदि वह चाहे तो उसको हटा भी दे तथा जिनकोतुम साझीदार ठहराते हो उन सभी को भूल जाओगे।[1]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَآ إِلَىٰٓ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَٰهُم بِٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा हमने अन्य समुदायों की ओर भी जो कि आप से पूर्व गुज़र चुके हैं पैग़म्बर भेजे थे, उनको भी हमने निर्धनता तथा रोग से पकड़ा ताकि वे शिथिल पड़ जायें।

فَلَوْلَآ إِذْ جَآءَهُم بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا۟ وَلَٰكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) इस प्रकार जो उन्हें हमारा दण्ड मिला था, वे शिथिल क्यों न पड़े ? परन्तु उनके हृदय कठोर हो गये तथा शैतान ने उनके कर्मों को उनके विचारों में अलंकृत कर दिया।[2]

---

[1] أرءيتكم में काफ़, मीम, सम्बोधन के लिए है और इसका अर्थ यह है कि मुझे बताओ अथवा सूचित करो इस विषय कि चर्चा पवित्र क़ुरआन में कई स्थानों में की गई है, (देखिये सूरः बक़रः आयत १६५ का भाष्य) इसका भावार्थ यह हुआ कि एकेश्वरवाद मानव प्रकृति की ध्वनि है तथा वह समाज अथवा पूर्वजों की प्रथा के अनुसरण के कारण अनेकेश्वरवादी आस्था एवं कर्म में लिप्त हो जाता है। किन्तु जब किसी संकट में पड़ जाता है तो फिर यह सब भूल जाता है तथा सहसा उसी एक को पुकारता है जिसे पुकारना चाहिए। काश ! लोग इसी प्रकृति पर स्थिर रहें, क्योंकि मोक्ष इसी प्राकृतिक ध्वनि को अपनाने में है।

[2]जब समुदाय नैतिक तथा कर्मिक पतन के कारण अपने मनों को मलिन कर लेते हैं तो उस समय अल्लाह का प्रकोप भी उन्हें घोर अचेतना से सचेत करने में असफल हो जाता है तथा उनके हाथ क्षमा-याचना के लिए अल्लाह की ओर नहीं उठते तथा दिल अल्लाह

(४४) तथा जब वह उस प्रसंग को भूल गये जिसकी शिक्षा दी गई तो हमने उन पर प्रत्येक वस्तु के द्वार खोल दिये यहाँ तक कि वह जब अपनी प्राप्त वस्तुओं पर इतरा गये तो उन्हें हमने अकस्मात धर लिया और वह निराश हो कर रह गये।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾

(४५) फिर अत्याचारी लोगों की जड़ कट गयी तथा अल्लाह (तआला) की प्रशंसा है जो विश्व का पोषक है।[1]

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾

(४६) (आप) कहिए कि यह बताओ यदि अल्लाह (तआला) तुम्हारे सुनने तथा देखने की शक्ति पूर्णरूप से ले ले तथा तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तोअल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ ۗ انظُرْ

के लिये नहीं झुकते, न उनका ध्यान सुधार की ओर फिरता है, अपितु अपने दुष्कर्मों के परिकल्पना के सुन्दर पर्दे में अवृत्त करके अपने मन को संतोष दे लेते हैं, जिसे शैतान (राक्षस) ने उनके लिये अलंकृत बना दिया है।

[1]इसमें उस समुदाय का वर्णन है जो अल्लाह को भूल गये। कभी सामयिक रूप से ऐसे समुदायों पर सुख-सुविधा के सभी साधनों के द्वार खोल देते हैं। यहाँ तक कि वह उसमें अति मग्न हो जाते हैं तथा अपने भौतिक सुख तथा उन्नति पर इतराने लगते हैं तब हम अपने हिसाब के लिए पकड़ लेते हैं तथा उनका उन्मूलन कर देते हैं। हदीस में आता है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम देखो कि अल्लाह तआला अवज्ञा उपरान्त किसी को उसकी इच्छानुसार दुनिया प्रदान कर रहा है तो यह ढील देना है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत पढ़ी। (मुसनद अहमद भाग ४, पृष्ठ १४५) क़ुरआन करीम की इस आयत तथा हदीस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह ज्ञात हुआ कि सांसारिक सम्पन्नता तथा उन्नति इस बात का प्रमाण नहीं कि जिस व्यक्ति अथवा समुदाय को यह प्राप्त है वह अल्लाह तआला का प्रिय है तथा अल्लाह तआला उससे प्रसन्न है। जैसाकि कुछ लोग ऐसा समझते हैं अपितु कुछ तो उन्हें ﴿أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ﴾ का त्रताथ मानते तथा उन्हें पूनीत भक्त मानते हैं। ऐसा समझना तथा कहना ग़लत है। कुपथ समुदाय को सांसारिक खुशहाली, उन्नति तथा सुख परीक्षा एवं अवसर देने के लिए है न कि यह उनके अविश्वास का प्रतिफल है।

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾

पूज्य है कि यह तुम को पुन: दे दे ? आप देखिए कि हम किस प्रकार से तर्क को विभिन्न कोण से प्रस्तुत कर रहे हैं। फिर भी वह कतरा रहे हैं।[1]

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) (आप) कहिए कि यह बताओ यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप अकस्मात अथवा सावधानी में आ पड़े तो क्या सिवाये अत्याचारियों के अन्य कोई मारा जायेगा।[2]

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ

(४८) तथा हम पैग़म्बर को इसलिए भेजा करते हैं कि वे शुभ सूचना दें तथा डरायें।[3] फिर जो

---

[1]आँख कान तथा दिल मानव शरीर के प्रमुख अंग हैं, अल्लाह (परमेश्वर) कह रहा है कि यदि वह चाहे तो इन अंगों में जो विशेषतायें (योग्यतायें) रखी हैं उन्हें हर ले अर्थात सुनने देखने का सामर्थ्य। जिस प्रकार धर्मभ्रष्टों के अंग इन विशेषताओं से वंचित होते हैं अथवा वह चाहे तो इन अंगों ही को निरस्त कर दे वह दोनों बातों का सामर्थ्य रखता है, उस की पकड़ से कोई बच नहीं सकता है, परन्तु यह कि वह स्वयं किसी को बचाना चाहे। आयतों के विभिन्न रूप से प्रस्तुत करने का अभिप्राय यह है कि कभी डराने तथा शुभसूचना देने के द्वारा, कभी प्रलोभन तथा चेतावनी देने के द्वारा तथा कभी अन्य साधनों से।

[2]अकस्मात से तात्पर्य रात्रि तथा सावधानी से तात्पर्य दिन है जिसे *सूर: यूनुस* में ﴿بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا﴾ (सूर: यूनुस-५०) से वर्णित किया गया है अर्थात दिन में प्रकोप आ जाये या रात्रि को। بغتة फिर वह प्रकोप है जो बिना भूमिका एवं लक्षण के आ पड़े तथा جهرة वह प्रकोप है जो भूमिका एवं लक्षणों के उपरान्त आ पड़े। ये प्रकोप जो समुदायों के विनाश के लिए आता है। उन पर आता है जो अत्याचारी होते हैं अर्थात अविश्वास तथा अवज्ञा में अल्लाह के नियमों का अपार उल्लंघन करते हैं।

[3]वे आज्ञापालकों को उन पुरस्कारों तथा बड़ी प्रतिकार की शुभ सूचना देते हैं जो अल्लाह तआला ने स्वर्ग के रूप में उनके लिए तैयार कर रखी है, तथा अवज्ञाकारियों को उन यातनाओं से डराते हैं जो अल्लाह तआला ने उनके लिए नरक के रूप में तैयार कर रखी है।

وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾

ईमान ले आये तथा अपना सुधार कर ले उनको न कोई भय होगा ओर न वे दुखी होगें ।[1]

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा जो लोग हमारी आयतों को झुठलायें उनको प्रकोप पहुँचेगा क्योंकि वे अवज्ञाकारी हैं ।[2]

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) (आप) कह दीजिए कि न तो मैं तुम से यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह का कोष है तथा न मैं परोक्ष जानता हूँ तथा न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ । मैं तो केवल जो कुछ मेरे पास देववाणी आती है उसका अनुसरण करता हूँ ।[3] (आप) कहिए कि अंधा

---

[1]भविष्य अर्थात परलोक की आगामी परिस्थितियों का उन्हें भय नहीं तथा अपने पीछे दुनिया में जो कुछ वे छोड़ आये हैं अथवा संसार का जो सुख नहीं पा सके उस पर दुखी नहीं होंगे क्योंकि दोनों लोक में उनका संरक्षक तथा मित्र वह पालनहार है जो दोनो लोक का पोषक है ।

[2]अर्थात उन्हें यह यातना इसलिए होगी कि उन्होंने विश्वास नहीं किया न अल्लाह के वताये हुए मार्ग पर चले । अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया तथा उसके आदेशों का निरादर किया तथा अवैध एवं निषेध कार्य किये तथा उसका सम्मान कम करने का प्रयत्न किया ।

[3]"मेरे पास अल्लाह के कोष भी नही हैं" इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक प्रकार की शक्ति तथा सामर्थ्य मेरे पास नहीं है कि मै तुम्हें अल्लाह के आदेश तथा इच्छा के बिना कोई चमत्कार दिखा दूँ जैसाकि तुम चाहते हो, जिसे देखकर तुम्हें मेरी सत्यता पर विश्वास आ जाये । मेरे पास अप्रत्यक्ष का ज्ञान भी नहीं है जिससे मैं भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं से तुम्हें सतर्क कर सकूँ । मैं फ़रिश्ता (सुर) होने का दावा भी नहीं कर सकता कि तुम मुझे ऐसे कार्य करने के लिए बाध्य करो जो मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य से बाहर की बात हो । मैं तो केवल उस प्रकाशना (वह्यी) का पालनकर्ता हूँ जो मुझ पर उतारी गयी तथा इसमें हदीस भी है, जैसाकि आप ने फ़रमाया "मुझे क़ुरआन के साथ उसके सामान भी प्रदान किया गया ।" यह समान हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है ।

तथा आँख वाला किस प्रकार समान हो सकते हैं ?[1] तो क्या तुम विचार नहीं करते ।

وَاَنۡذِرۡ بِهِ الَّذِيۡنَ يَخَافُوۡنَ اَنۡ يُّحۡشَرُوۡۤا اِلٰى رَبِّهِمۡ لَـيۡسَ لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ وَلِىٌّ وَّلَا شَفِيۡعٌ لَّعَلَّهُمۡ يَتَّقُوۡنَ ۝٥١

(५१) तथा ऐसे लोगों को डराइए जो इस बात का भय रखते हैं कि अपने प्रभु के समक्ष इस अवस्था में एकत्रित किये जायेंगे कि जितने अल्लाह के अतिरिक्त हैं न उनकी सहायता करेंगे तथा न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा, इस आशा के साथ कि वे डर जायेंगे ।[2]

وَلَا تَطۡرُدِ الَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ رَبَّهُمۡ بِالۡغَدٰوةِ وَالۡعَشِىِّ يُرِيۡدُوۡنَ وَجۡهَهٗ ؕ مَا عَلَيۡكَ مِنۡ حِسَابِهِمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ وَّمَا مِنۡ حِسَابِكَ عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ فَتَطۡرُدَهُمۡ فَتَكُوۡنَ مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ ۝٥٢

(५२) तथा आप उन्हें न निकालिए जो प्रातः, संध्या अल्लाह की वंदना करते हैं, विशेष रूप से उसकी प्रसन्नता की चिन्ता करते हैं । उनका हिसाब तनिक भी आप से संबन्धित नहीं तथा आपका हिसाब तनिक भी उनसे संबन्धित नहीं कि आप उनको निकाल दें ।

---

[1]यह प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात अन्धा तथा द्रष्टा, कुमार्ग तथा पथगामी, विश्वासधारी तथा अनिष्ठ समान नहीं हो सकते ।

[2]अर्थात डराने का लाभ ऐसे ही लोगों को हो सकता है, अन्यथा जो पुनर्जीवन तथा प्रलय एवं एकत्रित किये जाने पर विश्वास नहीं रखते, वह अपने अविश्वास तथा अवज्ञा पर अडिग रहते हैं । इसके अतिरिक्त उन अहले किताब तथा काफ़िरों एवं मूर्तिपूजकों का खंडन भी है जो अपने पूर्वजों तथा अपनी मूर्तियों को अपना सिफ़ारिशी समझते हैं । "अर्थात वे कष्ट निवारक, सिफ़ारशी नहीं होंगे" का अर्थ उनके लिए है जो नरक की यातना के पात्र हो चुके हों । वरन् ईमानवालों के लिए तो अल्लाह के सत्कर्मी भक्त, अल्लाह के आदेश से सिफ़ारिश करेंगे अर्थात सिफ़ारिश अनिष्ठों तथा मूर्तिपूजकों के लिए नहीं होगी तथा यह सिफ़ारिश उन ईमान वालों के लिए होगी जिनसे कोई पाप हो गया, परन्तु वे अल्लाह के एक होने पर पूर्ण विश्वास करते होंगे । इस प्रकार दोनों आयतों में कोई मतभेद भी नहीं रहता है ।

अपितु आप अनर्थ कार्य करने वालों में से हो जायेंगे ।[1]

(५३) इसी प्रकार हमने उन्हें परस्पर परीक्षा में डाल दिया ताकि यह कहें कि क्या अल्लाह ने हमारे बीच से उन पर उपकार किया है[2] क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह कृतज्ञता व्यक्त करने वालों को खूब जानता है ।[3]

وَكَذَٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوٓا۟ أَهَٰٓؤُلَآءِ مَنَّ ٱللَّهُ عَلَيْهِم مِّنۢ بَيْنِنَآ ۗ أَلَيْسَ ٱللَّهُ بِأَعْلَمَ بِٱلشَّٰكِرِينَ ﴿٥٣﴾

[1]अर्थात ये असहाय, निर्धन मुसलमान जो बड़े नि:स्वार्थ भाव से रात-दिन अपने प्रभु को पुकारते हैं अर्थात उसकी इबादत (आराधना) करते हैं । आप मूर्तिपूजकों के इन बातों तथा माँगों पर कि हे मुहम्मद ! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे निकट तो निर्धन तथा भिखारियों की ही भीड़ लगी रहती है, यदि तुम उनको हटाओ तो हम भी तुम्हारे पास बैठें, इन निर्धनों को अपने से दूर न करना, विशेष रूप से जब कि आप के हिसाब का उनसे सम्बंध नहीं तथा उनका आप से सम्बन्धित नहीं । (यदि आप ऐसा करेंगे तो अत्याचार होगा जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मे मान-सम्मान के अनुरूप नहीं है । उद्देश्य समुदाय को समझाना था कि असहाय लोगों को तुच्छ समझना उनका साथ करने से बचना तथा उनसे सम्बन्ध न रखना, यह अज्ञानियों का कार्य है, ईमानवालों का नहीं । ईमानवाले तो इमानवालों से प्रेम करते हैं चाहे वे निर्धन अथवा भिखारी ही क्यों न हों ।

[2]प्रारम्भ में अधिकतर निर्धन अथवा दास लोग ही मुसलमान हुए थे, इसलिए यही बात धनवान काफ़िरों की परीक्षा का कारण बन गयी तथा वे इन निर्धनों का उपहास करते थे तथा जिन पर उनका नियन्त्रण था उन्हें वे कष्ट भी देते थे तथा कहते थे कि क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने उपकार किया है ? उनका तात्पर्य यह होता था कि ईमान तथा इस्लाम यदि वास्तव में अल्लाह का उपकार होता तो यह सर्वप्रथम हम पर होता जिस प्रकार अन्य स्थानों पर कहा है ।

﴿لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَآ إِلَيْهِ﴾

"यदि यह अच्छी चीज़ होती तो इसे स्वीकार करने में हमसे आगे न होते ।" (सूर: अल-अहक़ाफ़-११)

अर्थात हीनों के सापेक्ष हम पहले मुसलमान होते ।

[3]अर्थात अल्लाह तआला उपरी चमक-दमक, भेष-भूषा तथा वैभव को नहीं देखता । वह तो दिल की अवस्था को देखता तथा उसी से जानता है कि कृतज्ञ तथा सच्चे भक्त कौन हैं ?

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِن بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा आप के पास जब वह लोग आयें जो हमारी आयतों के प्रति विश्वास रखते हैं तो कह दीजिए, "तुम सुरक्षित रहो।"[1] तुम्हारे पालनहार ने अपने ऊपर कृपा अनिवार्य कर लिया है।[2] कि तुम में से जिसने मूर्खता से दुराचार कर लिया फिर तत्पश्चात क्षमा-याचना एवं सुधार कर लिया तो अल्लाह क्षमाशील कृपालु है।[3]

وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٥٥﴾

(५५) इसी प्रकार हम अपनी आयतों का विस्तृत वर्णन करते हैं ताकि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाये।

अत: उसने जिसके अन्दर कृतज्ञता देखी उसको ईमान के गुण से सुसज्जित कर दिया, जिस प्रकार से हदीस में आता है, "अल्लाह तआला तुम्हारे रूप तथा धन नहीं देखता, वह तो तुम्हारे कर्म देखता है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र बाब तहरीम ज़ुल्मिल मुस्लिमे व खजलेहि व एहतकारेहि व दमेहि व इर्देहि)

« إِنَّ اللهَ لَا يَنْظُرُ إِلَىٰ صُوَرِكُمْ وَلَا إِلَىٰ أَلْوَانِكُمْ، ولكِنْ يَنْظُرُ إِلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ ».

"अल्लाह तआला तुम्हारी शक्लें तथा रंगों को नहीं देखता है अपितु तुम्हारे दिलों तथा कर्मों को देखता है।" (सहीह मुस्लिम व मुसनद अहमद २८५ तथा ५३९, इब्ने माजा किताबुल जुहद, बॉबुल कनाआ :)

[1]अर्थात उनको सलाम करके अथवा उनके सलाम का उत्तर देकर उनको सम्मानित करें।

[2]तथा उन्हें शुभसूचना दे दीजिए कि अल्लाह ने अपनी दया एवं अनुग्रह से अपने कृतज्ञ भक्तों पर उपकार करने का निर्णय कर लिया है। जिस तरह हदीस में आता है कि जब अल्लाह तआला सृष्टि की रचना कर चुका तो उसने अर्श पर लिख दिया। « إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي ». "मेरी कृपा मेरे क्रोध पर प्रभावशाली है।" (सहीह मुस्लिम तथा बुखारी)

[3]इस में भी ईमानवालों के लिए शुभ सूचना है क्योंकि उन का ही यह गुण है कि यदि अज्ञानवश अथवा मानव अभियाचना से कोई पाप कर बैठें तो फिर तुरंत क्षमा माँगते हैं तथा अपना सुधार कर लेते हैं। पाप की पुनरावृत्ति नहीं करते।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ ۚ قُل لَّا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾

(५६) (आप) कह दीजिए कि मुझे रोका गया है कि उनकी पूजा करूँ जिनको अल्लाह के सिवाये तुम पुकारते हो, आप कहिए कि मैं तुम्हारी मनमानी का अनुसरण न करूँगा क्योंकि ऐसी दशा में मैं कुपथ हो जाऊँगा एवं संमार्ग पर नहीं रह जाऊँगा ।[1]

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ ۚ مَا عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ الْحَقَّ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ﴿٥٧﴾

(५७) (आप) कह दीजिए कि मेरे पास एक प्रमाण है मेरे प्रभु की ओर से [2] तथा तुम उसको झुठलाते हो, जिस वस्तु की तुम शीघ्रता कर रहे हो वह मेरे पास नहीं। आदेश किसी का नहीं सिवाये अल्लाह के ।[3] अल्लाह तआला वास्तविक बातों को बता देता है ।[4] तथा वही सर्वश्रेष्ठ निर्णायक है ।

---

[1]अर्थात यदि मैं भी तुम्हारी तरह अल्लाह की इबादत (आराधना) के बजाय, तुम्हारी इच्छाओं के अनुसार अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की इबादत करना प्रारम्भ कर दूँ तो अवश्य मैं भटक जाऊँगा अर्थ यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की पूजा तथा उपासना करना सबसे बड़ा भटकाव है, परन्तु दुर्भाग्य से यह भटकाव उतना ही सामान्य है, यहाँ तक कि मुसलमानों का एक गुट इसमें लिप्त है। هداهم الله تعالى

[2]तात्पर्य वह धार्मिक नियम हैं जो प्रकाशनाओं (ईशवाणी) द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारे गये, जिसमें एकेश्वरवाद को प्राथमिकता प्राप्त है।

[3]सम्पूर्ण सृष्टि पर अल्लाह ही का आदेश चलता है तथा सभी समस्याओं का समाधान उसी के हाथों में है। इसलिए तुम जो चाहते हो कि अल्लाह का प्रकोप शीघ्र ही आ जाये ताकि तुम्हें मेरी सत्यता अथवा झूठ का पता चल जाये, तो यह भी अल्लाह के वश में है, वह यदि चाहे तो तुम्हारी इच्छानुसार शीघ्र ही प्रकोप भेज कर तुम्हें सतर्क कर दे अथवा नष्ट कर दे तथा चाहे तो उस समय तक तुम्हें अवसर दे जब तक वह चाहे।

[4] يقص "क़सस" धातु से बना है जिसका अर्थ है वर्णन करना अथवा قص أثره किसी के पीछे लगना तथा अनुसरण करना से लिया गया है जिसका अर्थ यह है कि सत्य उस के निर्णय ही में निहित है।

قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِیَ الْاَمْرُ بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِیْنَ ۝

(५८) आप कह दीजिए कि यदि मेरे पास वह जिसकी तुम तुरंत माँग कर रहे हो, होती तो मेरे और तुम्हारे मध्य (विवाद का) निर्णय हो गया होता।[1] तथा अल्लाह पापियों को भली-भाँति जानता है।

وَ عِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَیْبِ لَا یَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَ یَعْلَمُ مَا فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ وَ مَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا یَعْلَمُهَا وَ لَا حَبَّةٍ فِیْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَ لَا رَطْبٍ وَّ لَا یَابِسٍ

(५९) तथा उसी (अल्लाह) के पास परोक्ष की कुंजियाँ हैं जिनको मात्र वही जानता है तथा जो थल एवं जल में हैं उन सभी को जानता है तथा जो पत्ता गिरता है उसे भी जानता है तथा धरती के अंधकारों में कोई भी अन्न नहीं

---

[1]अर्थात यदि अल्लाह तआला मेरे माँग करने पर तुरन्त प्रकोप भेज देता अथवा अल्लाह तआला मेरे वश में यह चीज दे देता तो फिर तुम्हारी इच्छा के अनुसार प्रकोप भेजकर निर्णय कर दिया जाता। परन्तु यह कार्य पूर्ण रूप से अल्लाह की इच्छा पर आधारित है, इसलिए यह अधिकार मुझे नहीं दिया है तथा न यह सम्भव है कि मेरी प्रार्थना पर तुरन्त प्रकोप डाल दे।

आवश्यक स्पष्टीकरण : हदीस में वर्णित है कि एक अवसर पर अल्लाह के आदेश पर पर्वतों का फ़रिश्ता नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा उसने कहा कि "यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे आदेश दें तो मैं पूरी अबादी को दोनों पर्वतों के बीच कुचल दूँ।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "नहीं, अपितु मुझे आशा है कि अल्लाह तआला उनके वंश में अल्लाह की इबादत करने वाले पैदा करे, जो उसके साथ किसी को भी सम्मिलित न करेंगे।" (सहीह बुख़ारी किताबु वदइल ख़लक़े, बाब इज़ा क़ाल अहदोकुम अमीन वल मलायेक: फ़िस्समा ए ; सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद, बाब मालकेयन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मिन अजल मुशरिकीन) यह हदीस प्रस्तुत आयत की व्याख्या के विरुद्ध नहीं है, जैसाकि प्रकट हो रहा है। इसलिए कि आयत में प्रकोप की माँग पर प्रकोप देने का प्रदर्शन हो रहा है। इस हदीस में मूर्तिपूजकों की माँग के बिना, केवल उनके कष्ट देने के कारण उन पर प्रकोप भेजने का विचार प्रदर्शित किया जा रहा है जिसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वीकार नहीं किया।

إِلَّا فِي كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ۝٥٩

पड़ता और न कोई तर तथा शुष्क वस्तु गिरती है परन्तु ये सब खुली किताब में है।[1]

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّىٰكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝٦٠

(६०) वही (अल्लाह) है जो रात्रि में तुम्हारी आत्मा को एक गुणा नियंत्रित करता है[2] तथा दिन में जो जो भी करते हो जानता है[3] फिर तुम्हें उसमें एक निर्धारित अवधि पूरी करने के लिये जागृत करता है।[4] फिर तुम्हें उसी की ओर लौट जाना है।[5] फिर जो तुम करते रहे उसे तुमको बता देगा।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ

(६१) वही अपने भक्तों पर प्रभावशाली है तथा तुम पर संरक्षक (फ़रिश्ते) भेजता है यहाँ तक कि जब तुम में किसी की मृत्यु (का समय) आ

---

[1]"किताब मोबीन" से तात्पर्य "सुरक्षित पुस्तक" है। इस आयत से भी ज्ञात हुआ कि परोक्ष का ज्ञान मात्र अल्लाह को ही है।सभी अप्रत्यक्ष का कोष उसी के पास है। इसलिए कृतघ्नों, मूर्तिपुजकों तथा विरोधियों पर कब प्रकोप डाला जाये इसका भी ज्ञान अल्लाह ही को है, तथा वही अपनी इच्छानुसार इसका निर्णय करने वाला है। हदीस में आता है कि भेद (परोक्ष) की बातें पांच हैं १. क़ियामत का ज्ञान, २. वर्षा का आना, ३. माता के गर्भ में पलने वाला बच्चा, ४. कल भविष्य में होने वाली घटना तथा ५. मृत्यु किस स्थान पर आयेगी। इन पाँचों बातों का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है। (सहीह/बुख़ारी तफ़सीर *सूर: अल-अनाम*)

[2]यहाँ निद्रा को मृत्यु कहा गया है, इसलिए इसे "छोटी मृत्यु" तथा मृत्यु को "बड़ी मृत्यु" कहा गया है। मृत्यु के स्पष्टीकरण के लिए देखें *सूर: आले इमरान* आयत संख्या ५५ की व्याख्या)

[3]अर्थात दिन के समय आत्मा वापस लौटा कर जीवित कर देता है।

[4]अर्थात यह रात्रि-दिवस का क्रम तथा लघु मृत्यु के पश्चात जीवित हो जाने का क्रम महा मृत्यु तक निरन्तर रहेगा।

[5]अर्थात फिर क़ियामत वाले दिन जीवित होकर सभी को अल्लाह के दरबार के समक्ष उपस्थित होना है।

لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾

जाये तो हमारे यमदूत उस के प्राण निकाल लेते हैं और वे तनिक आलस्य नहीं करते।[1]

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ قف وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾

(६२) फिर वे अपने सत्य स्वामी (अल्लाह) के पास लाये जायेंगे।[2] सावधान, उसी का आदेश चलेगा तथा वह अति शीघ्र हिसाब लेगा।

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) आप कहिये कि थल तथा जल के अंधकारों से जब उसे नम्रता और चुपके से पुकारते हो कि यदि हमें इससे मुक्त कर दे तो तेरे अवश्य कृतज्ञ हो जायेंगे तो तुम्हें कौन बचाता है?

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) आप स्वयं कहिये कि इससे तथा प्रत्येक विपदा से तुम्हें अल्लाह ही बचाता है, फिर भी तुम ही मिश्रण (शिर्क) करते हो।

[1] अर्थात अपने इस कर्तव्य के पालन तथा आत्मा की सुरक्षा में, अपितु यह फ़रिश्ता, मरने वाला यदि पुण्य करने वाला है तो उसकी आत्मा को श्रेष्ठ स्थान पर तथा यदि कुकर्मी है तो यातना के स्थान में भेज देता है।

[2] आयत (मंत्र) में رُدُّوْا (लौटाये जायेंगे) को कुछ ने यमदूतों से सम्बन्धित माना है अर्थात वह प्राण निकाल कर अल्लाह की ओर वापस जाते हैं। कुछ व्याख्याकारों ने साधारण लोगों की ओर सर्वनाम को फेर कर यह अर्थ लिया है कि जब लोग एकत्रित होकर अल्लाह के सदन में न्याय के लिये लाये जायेंगे फिर वह सब का निर्णय करेगा। आयत से विदित होता है कि यमदूत कई हैं क्योंकि उनके लिये बहुवचन का प्रयोग किया गया है। कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि यमदूत तो वास्तव में एक है किन्तु उनके सहायक बहुत से हैं। इसलिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है तथा जिस आयत में यमदूत एक कहा गया है वह इसलिये कि प्राण लेकर वही आकाशों में जाता है (तफ़सीर रूहुल मआनी) इमाम शौकानी एवं साधारणत: विद्वानों का कथन है कि यमदूत एक ही है तथा बहुवचन का प्रयोग उसके सहायकों के सहित किया गया है। कुछ कथनों में यमदूत का नाम इज़्राईल बताया गया है। (तफ़सीर इब्ने कसीर *अलिफ़ लाम मीम सजद:*)

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰٓ أَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيقَ بَعْضَكُم بَأْسَ بَعْضٍ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْأٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) आप कहिये कि वही तुम पर तुम्हारे ऊपर से कोई प्रकोप भेजने[1] अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे[2] से भेजने अथवा तुम्हें अनेक गिरोह बनाकर परस्पर लड़ाई का स्वाद चखाने का सामर्थ्य रखता है।[3] आप देखिये कि हम विभिन्न प्रकार से कैसे बातों (आयतों) का वर्णन कर रहे हैं ताकि वह समझ जायें।

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۗ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾

(६६) तथा आप के समुदाय ने उसे[4] झुठला दिया जब कि वह सत्य है। आप कह दीजिए कि

---

[1]आकाश से जैसे वर्षा की अधिकता अथवा वायु तथा पत्थर के द्वारा प्रकोप अथवा अधिकारियों की ओर से अत्याचार एवं क्रूरता।

[2]जैसे धंसाया जाना, तूफ़ान बाढ़, जिसमें सब कुछ डूब जाता है अथवा तात्पर्य है कि अधीनस्थ कर्मचारी, दासों तथा नौकरों की ओर से प्रकोप कि वे विश्वासघाती तथा अपभोगी हो जायें।

[3]तुम्हारी समस्यायों को मिला-जुला अथवा संदेहास्पद बना दे जिसके कारण तुम गुटों में बंट जाओ तथा तुम्हारा एक गुट दूसरे गुट की हत्या करे। इस प्रकार प्रत्येक गुट को लड़ाई का स्वाद चखाये। (ऐसरुत्तफ़ासीर) हदीस में आता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैने अल्लाह तआला से तीन प्रार्थनायें कीं १. मेरे अनुयायियों को डुबोकर न मारा जाये, २. सामान्य रूप से सूखा डाल कर उनको नष्ट न किया जाये ३. आपस में उन की लड़ाई न हो। अल्लाह ने प्रथम दो प्रार्थनाओं को स्वीकार किया परन्तु अन्तिम से मुझे रोक दिया। (सहीह मुस्लिम संख्या २२१६) अर्थात अल्लाह तआला को यह ज्ञान था कि मुसलमानों में मतभेद होगा तथा कई गुटों में बंट जायेंगे तथा उसका कारण अल्लाह की अवज्ञा तथा क़ुरआन व हदीस का इंकार होगा जिसके परिणाम स्वरूप प्रकोप से मुसलमान भी सुरक्षित न रह सकेंगे। अर्थात इसका सम्बन्ध अल्लाह के उस आदेश से है जो समुदाय के चरित्र तथा कर्म के विषय में सदैव रहा है जिसमें परिवर्तन सम्भव नहीं। ﴿فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا﴾ (सूर: फ़ातिर-४३)

[4] بِهٖ (अरबी शब्द) का संकेत क़ुरआन है अथवा प्रकोप। (फ़तहुल क़दीर)

मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ ।[1]

لِكُلِّ نَبَإٍ مُّسْتَقَرٌّ ۚ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٦٧

(६७) प्रत्येक भविष्यवाणी का एक निश्चित समय है तथा तुम शीघ्र ही जान लोगे ।

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۭ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٦٨

(६८) तथा जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में कुरेद कर रहे हैं, तोउन लोगों से अलग हो जायें, यहाँ तक कि वह अन्य कार्य में लग जायें तथा यदि आप को शैतान भुला भी दे, तो याद आने के पश्चात फिर ऐसे अत्याचारी लोगों के साथ मत बैठें ।[2]

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝٦٩

(६९) तथा जो लोग परहेज़गारी रखते हैं उन पर उनके पकड़ का कोई प्रभाव नहीं होगा ।[3]

---

[1]अर्थात मुझे इस कार्य के पूर्ण करने के लिए निर्धारित नहीं किया गया है कि मैं तुम्हें सीधे रास्ते पर लगाकर ही छोड़ूँ, अपितु मेरा कार्य केवल धर्म की ओर आमन्त्रित करना तथा सतर्क करना है ﴿فَمَن شَآءَ فَلْيُؤْمِن وَمَن شَآءَ فَلْيَكْفُرْ﴾ [الكهف:٢٩] अर्थात जो चाहे विश्वास करे जो चाहे अविश्वास करे । (*सूरः अल-कहफ़*)

[2]इस आयत में यद्यपि संबोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किया गया है किन्तु इससे सम्बोधित प्रत्येक मुसलमान है । यह अल्लाह का बलपूर्वक आदेश है जिसे पवित्र क़ुरआन में कई स्थानों में वर्णित किया गया है । सूरः निसा आयत नं॰ १४० में भी इस विषय की चर्चा आ चुकी है । इससे प्रत्येक ऐसी सभा तात्पर्य है जिसमें अल्लाह एवं रसूल के आदेशों का उपहास किया जाता हो अथवा व्यवहारिक रूप से उनकी अवहेलना की जाती॰ हो अथवा धर्मभ्रष्ट अपनी कष्ट कल्पनाओं के द्वारा आयात (पवित्र क़ुरआन के मंत्रों) के अर्थों को छिन्न-भिन्न कर रहे हों । ऐसी सभाओं में आलोचना एवं सत्य की सहायता के लिये जाना उचित है अन्यथा घोर पाप एवं अल्लाह के क्रोध का कारण है ।

[3] مِنْ حسابهم का सम्बन्ध उनसे है जो अल्लाह की आयतों का उपहास करते हैं, जो लोग ऐसी सभा से बचेंगे, वह अल्लाह की आयतों के उपहास के दंड से सुरक्षित रहेंगे ।

तथा परन्तु उनके अधिकार में शिक्षा देना है, शायद वे भी परहेज़गारी रखने लगें ।[1]

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝

(७०) तथा ऐसे लोगों से कदापि सम्बन्ध न रखें जिन्होंने अपने धर्म को खेल बना रखा है तथा सांसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा है तथा इस क़ुरआन के द्वारा शिक्षा भी देते रहें ताकि कोई व्यक्ति अपने कर्म के कारण इस प्रकार न फंस जाये ।[2] कि कोई अल्लाह के अतिरिक्त उसका न सहायता करने वाला हो तथा न सिफ़ारिश करने वाला तथा यह अवस्था हो कि यदि दुनिया भर के बदले दे डाले तब भी उसे न लिया जाये ।[3] ऐसे ही हैं कि अपने कर्मों के कारण फंस गये, उनके

---

[1]अर्थात बचाव तथा विलगाव के साथ ही यदि शिक्षा-दीक्षा एवं पुण्य का आदेश देने तथा कुकर्म से रोकने का कर्तव्य यथा सम्भव पूरा करते रहें तो सम्भव है कि वह इस दुष्कर्म से रुक जायें।

[2] بَسَلَ (बसल) का वास्तविक अर्थ "मना करना" है, परन्तु यहाँ पर इसके अनेक अर्थ किये गये हैं १. تُسَلَّمَ "सौंप दिये जायें ।" २. تُفْضَحَ (तुफ़दह) "अपमानित कर दिया जाये ।" ३. تُؤاخَذَ "पकड़ लिया जाये ।" तथा ४. تُجازَى (तुजाज़ा) "बदला दिय जाये ।" इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि सभी के अर्थ लगभग एक ही हैं सारांश यह है कि उन्हें इस क़ुरआन के द्वारा शिक्षा दें। ऐसा न हो कि अपने आप को जो उसने कमाया, उसके बदले विनाश में डाल दिया जाये अथवा अपमान उनका भाग्य बन जाये अथवा हिसाब में उनकी पकड़ हो जाये। इन सभी भावों को लेकर अनुवाद "फंस न जाये किया गया है ।"

[3]संसार में कोई व्यक्ति समान्यतया किसी मित्र की सहायता अथवा किसी सिफ़ारिश अथवा धन देने के कारण छूट जाता है। परन्तु आख़िरत में यह तीनों साधन काम नहीं आयेंगे । वहाँ काफ़िरों की सहायता करने वाला कोई नहीं होगा जो अल्लाह की पकड़ से बचा ले तथा न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा जो अल्लाह की यातना से उन्हें छुड़ा दे तथा न किसी के पास बदला देने के लिए कुछ होगा, यदि मान भी लिया जाये कि हो भी तो वह स्वीकार न किया जायेगा कि वह देकर छूट जायें।

लिए अत्यधिक गर्म पानी पीने के लिए होगा अपने कुफ़्र के कारण ।

قُلْ أَنَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾

(७१) आप कहिए कि क्या हम अल्लाह के सिवाये उसे पुकारें जो हमारा भला-बुरा न कर सकता हो तथा अल्लाह का मार्गदर्शन मिलने के पश्चात उसके समान एड़ियों के बल फेर दिये जायें जिसे शैतान ने बहका दिया हो और वह धरती में चकित फिर रहा हो, उसके साथी उसे सही मार्ग की ओर पुकार रहे हों कि हमारे पास आओ ।[1] आप कहिये कि अल्लाह का मार्गदर्शन ही वास्तव में मार्गदर्शन है[2] तथा हमें आदेश किया गया है कि विश्व के विधाता के प्रति आत्मसमर्पण कर दें ।

---

[1]यह उन लोगों का उदाहरण है जो विश्वास के बाद अविश्वास तथा एकेश्वरवाद के बाद अनेकेश्वरवाद की ओर फिर जायें । उनका उदाहरण ऐसा ही है कि वह अपने साथियों से बिछड़कर जंगलों में चकित हो कर परेशानी की अवस्था में भटकता फिर रहा हो, साथी उस को बुला रहे हों परन्तु चकित होने के कारण कुछ न दिखायी पड़ रहा हो अथवा जिन्नातों के पंजे में फंसने के कारण सही मार्ग पर आना असम्भव हो ।

[2]अर्थात जो विश्वास और अद्वैत का मार्ग अपनाने के पश्चात भटक गया हो, वह भटके हुए राही की भाँति सही मार्ग पर नहीं आ सकता । परन्तु यदि अल्लाह ने उस को राह पर आना भाग्य में लिख दिया हो तो अवश्य अल्लाह के आदेश के कारण मार्गदर्शन पा जायेगा । क्योंकि सच्चे मार्ग पर चलाना उसी का काम है । जैसाकि अन्य स्थान पर फ़रमाया गया है ।

﴿ إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴾

"यदि आप उनके मार्गदर्शन की इच्छा रखते हों तो अल्लाह जिसे विपथ कर दे उसे मार्गदर्शन नहीं देता तथा उसका कोई सहाय नहीं ।" (*सूर: अन्नहल*-३७)

परन्तु यह मार्ग दर्शन तथा भटकाव उसी नियम के आधार पर होता है, जो अल्लाह तआला ने उसके लिए बनाया है । यह नहीं कि यूँ ही जिसे चाहे भटका दे तथा जिसको चाहे मार्ग दर्शन दे ।

(७२) तथा नमाज़ की स्थापना करो एवं उस (अल्लाह) से डरो ।[1] वह वही है जिस की ओर तुम एकत्रित किये जाओगे ।

وَ اَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِیْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾

(७३) उसी ने आकाशों एवं पृथ्वी को यथार्थ के साथ पैदा किया ।[2] तथा जिस दिन[3] कहेगा "हो जा" तो हो जायेगा । उसका कथन सत्य है तथा जिस दिन नरसिन्घा फूँका जायेगा ।[4] राज्य

وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ؕ۬ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ؕ

---

[1]इस का अर्थ यह है कि हमें यह आदेश दिया गया है कि सर्वजगत के पालनहार के अधीन हो जायें तथा उससे डरें, अल्लाह के प्रति विश्वास एवं उसकी अधीनता स्वीकारने के पश्चात सर्व-प्रथम आदेश नमाज़ की स्थापना का है जिस से नमाज़ का महत्व स्पष्ट है तत्पश्चात संयम बरतने का आदेश है, क्योंकि संयम और नम्रता के बिना नमाज़ का पालन असम्भव है । ﴿وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ﴾ (सूर: अल-बकर:-४५)

[2]सत्यता के साथ अथवा लाभकारी उत्पन्न किया अर्थात उनको अकारण एवं व्यर्थ (आमोद-प्रमोद के लिए) नहीं पैदा किया, अपितु एक विशेष उद्देश्य से सृष्टि को पैदा किया तथा वह यह है कि अल्लाह को याद रखो, तथा कृतज्ञता व्यक्त करते रहो जिसने यह सब कुछ रचा है ।

[3] يَـوْمَ लुप्त क्रिया واذكر अथवा واتقوا से सम्बन्धित है । अर्थात उस दिन को याद करो अथवा उस दिन से डरो कि उसके शब्द (कुन) "हो जा" से जो चाहेगा हो जायेगा । यह संकेत है उस बात की ओर कि हिसाब-किताब की कठिन समस्या भी बड़ी सरलता से समाधान कर लिया जायेगा । परन्तु किन लोगों के लिए ऐसा होगा ? यह मात्र ईमानदारों के लिए ऐसा होगा । अन्य लोगों के लिए तो यह दिन हज़ार वर्ष अथवा पचास हजार वर्ष की तरह भारी लगेगा ।

[4] "صُـوْرْ" से तात्पर्य नरसिंगा अथवा बिगुल है जिसके विषय में हदीस में आता है कि इस्राफ़ील (एक फ़रिश्ता का नाम) उसे मुख में लिये माथा झुकाये खड़े अल्लाह की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे है कि आदेश मिलते ही उसमें फूंक दें । (इब्ने कसीर) हदीस की पुस्तक त्रिमिज़ी तथा अबू दाऊद में है कि सूर एक नरसिंगा है (क्रम संख्या, ४७४२, ४० ३०, ३२४४) कुछ विद्वानों का विचार है कि तीन बार फूंका जायेगा । एक जिस से सभी प्राणी अचेत हो जायेंगे दूसरा जिससे सब का विनाश हो जायेगा तीसरी बार फूँकने पर सभी प्राणी पुन: जीवित हो जायेंगे कुछ विद्वान अंत की दो ही फूंक मानते हैं ।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾

मात्र उसी का होगा, वह ज्ञाता है अदृश्य एवं दृश्य का तथा वह सर्वज्ञाता सर्व-सूचित है।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾

(७४) तथा स्मरण करो जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र[1] से कहा क्या आप मूर्तियों को पूज्य बना रहे हैं ? मैं आप को तथा आप के वर्ग को खुले कुपथ में देख रहा हूँ।

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) तथा इसी प्रकार हमने इब्राहीम को आकाशों एवं धरती का राज्य (सृष्टि) दिखायी ताकि वह पूर्ण विश्वास करने वालों में हो जायें।[2]

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾

(७६) फिर जब उन पर रात्रि आच्छादित हो गयी तो एक तारा देखा, कहा कि यह मेरा प्रभू है फिर जब वह डूब गया तो कहा कि मैं डूबने वाले से प्रेम नही करता।[3]

---

[1]इतिहासकार आदरणीय इब्राहीम के पिता के दो नाम बताते हैं। यह नाम आज़र तथा तारूख हैं। सम्भव है कि दूसरा नाम उपाधि हो। कुछ कहते हैं कि आज़र आप के चचा का नाम था, परन्तु यह सही नहीं है, इसलिए कि क़ुरआन ने आज़र की चर्चा आदरणीय इब्राहीम के पिता के रूप में की है। अतएव सही यही है।

[2] مَلَكُوتٌ यह रूप अतिशयवादी है जैसे رَغَبَةٌ से رَغَبُوت तथा رَهَبَةٌ से رَهَبُوت। अत: इससे तात्पर्य सृष्टि है। जैसाकि अनुवाद में इसी विषय को अपनाया गया है। अथवा ربوبيت तथा الوهيت है अर्थात हमने उसको वह दिखलायी तथा उसको जानने का सौभाग्य प्रदान किया। अथवा यह अर्थ है कि आकाश लोक से लेकर पाताल तक का हमने इब्राहीम को दर्शन कराया। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात डूबने वाले ईष्टदेवों से प्रेम नहीं रखता, इसलिए कि डूबना स्थिति के परिवर्तन को प्रदर्शित करता है, जो अनित्य है तथा अनादि होने का प्रमाण नहीं है और जो स्वयं अनित्य हो वह पूज्य नहीं हो सकता।

(७७) फिर जब चन्द्रमा को चमकते देखा तो कहा यह मेरा प्रभु है, फिर जब वह अस्त हो गया, तो कहा कि यदि मेरे स्वामी ने मुझे मार्ग नहीं दर्शाया तो मैं विपथों में हो जाऊँगा।

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّیْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَىِٕنْ لَّمْ يَهْدِنِیْ رَبِّیْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّاۤلِّيْنَ ﴿٧٧﴾

(७८) फिर सूर्य को चमकता हुआ देखा तो कहा कि यह मेरा प्रभु है।[1] यह तो सबसे बड़ा है, फिर जब वह अस्त हो गया तो कहा कि निःसंदेह मैं तुम्हारे मिश्रणवाद से निर्दोष हूँ।[2]

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّیْ هٰذَاۤ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّیْ بَرِیْۤءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

(७९) मैंने अपना मुख उसकी ओर फेर दिया।[3] जिसने आकाशों एवं धरती को पैदा किया एकाग्रचित होकर तथा मैं मिश्रणवादियों (अनेकेश्वरवादियों) में से नहीं हूँ।

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾

---

[1]सूर्य अरबी भाषा में स्त्रीलिंग है परन्तु सांकेतिक संज्ञा पुल्लिंग है। तात्पर्य उदय है अर्थात उदित सूर्य मेरा पोषक है, क्योंकि यह सबसे बड़ा है, जिस प्रकार से सूर्य के उपासकों को भ्रम है तथा वे उसकी उपासना करते हैं। आकाश में सात बड़े ग्रह है। सूर्य इन सभी में बड़ा तथा ज्योतिर्मय है तथा मनुष्य के जीवन के लिए इसकी विशेषता तथा उपयोगिता के विषय में बताने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिए प्रकृति के उपासकों में सूर्य की उपासना सामान्य रूप से रही है। आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बड़ी ही सुन्दर विधि से चन्द्रमा तथा सूर्य के उपासकों पर उनके देवताओं की विवशता को स्पष्ट किया है कि वे पूजने योग्य क्यों नहीं हैं ?

[2]अर्थात वह सभी वस्तुऐं जिन को अल्लाह का साझी बनाते अथवा जिन की पूजा करते हो, उस से मैं दुखी हूँ। इसलिए कि इन में परिवर्तनशीलता है, कभी उदय होते हैं कभी अस्त होते हैं जो इस बात का प्रमाण है कि इनकी रचना हुई है तथा उनका रचयिता कोई और है जिसके आदेशाधीन ये हैं, जब यह स्वयं किसी के आदेशाधीन हैं।

[3]मुख का वर्णन इसलिए किया गया है कि मेरी आराधना तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) का लक्ष्य अल्लाह तआला है, जो आकाश तथा धरती का स्रष्टा है।

(८०) तथा उनसे उनकी जाति वालों ने विवाद करना प्रारम्भ कर दिया ।[1] (आदरणीय इब्राहीम) ने कहा कि क्या तुम अल्लाह के विषय में मुझसे विवाद करते हो यद्यपि उसने मुझे विधि बता दी है तथा मैं उन चीज़ों से जिनको तुम अल्लाह के साथ सम्मिलित करते हो, नहीं डरता परन्तु यह कि मेरा प्रभु ही कारण वश चाहे । मेरा प्रभु प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की परिधि में घेरे हुए है । क्या तुम फिर भी विचार नहीं करते ?

وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ ۚ قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۚ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾

(८१) तथा मैं उस चीज से कैसे भय करूँ जिसे तुमने (अल्लाह का) साझीदार बना लिया जबकि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाने से नहीं डरते जिसका तुम्हारे पास अल्लाह ने कोई तर्क नहीं उतारा है । फिर इन दोनों पक्षों में कौन शान्ति के अधिक योग्य है ।[2] यदि तुम ज्ञान रखते हो ।

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾

---

[1]जब जाति वालों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) का यह भाषण सुना जिसमें उनके (स्वयं कृत) देवताओं का खण्डन भी किया गया था, तो उन्होंने भी अपने तर्क प्रस्तुत करने प्रारम्भ कर दिये । जिनसे ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजकों ने भी अपने विश्वास के लिए कुछ तर्क बना रखे थे । जिसका दर्शन आज भी किया जा सकता है । जितने भी शिर्क से लिप्त विश्वास करने वाले लोग हैं, सभी ने अपने-अपने अनुयायियों को सन्तुष्ट करने के लिए ऐसे मोहरे खोज रखे हैं जिन्हें वे तर्क समझते हैं अथवा जिनसे कम से कम उनके अनुयायियों को अपने जाल में फंसाये रख सकते हैं ।

[2]एकेश्वरवादियों एवं मिश्रणवादियों में, एकेश्वरवादियों के पास तो एकेश्वरवाद के स्पष्ट प्रमाण हैं जब कि द्वैतवादी के पास अल्लाह की ओर से अवतरित कोई तर्क नहीं, मात्र निर्मूल भ्रम है अथवा व्यर्थ कल्पनायें । इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि शान्ति एवं मुक्ति के योग्य कौन होगा ?

(८२) जो लोग ईमान लाये तथा अपने ईमान को किसी मिश्रणवाद से लिप्त नहीं किया उन्हीं के लिए शान्ति है तथा वही सीधे मार्ग पर हैं |[1]

ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَمْ يَلْبِسُوٓا۟ إِيمَٰنَهُم بِظُلْمٍ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾

(८३) तथा यह हमारा तर्क है जिसे हमने इब्राहीम को उनके समुदाय की तुलना में दिया |[2] हम जिसका पद चाहें बढ़ाते हैं | निश्चय तुम्हारा स्वामी विज्ञानी सर्वज्ञ है |

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ ءَاتَيْنَٰهَآ إِبْرَٰهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِۦ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَٰتٍ مَّن نَّشَآءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾

(८४) तथा हमने उन्हें (पुत्र) इसहाक़ एवं (पौत्र) याक़ूब प्रदान किया |[3] तथा प्रत्येक को सीधा

وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ

---

[1]आयत में यहाँ ज़ुल्म से अभिप्राय मिश्रण है | जब यह आयत उतरी तो अल्लाह के रसूल के सहचरों ने इसका साधारण अर्थ (आलस्य, त्रुटि, पाप, क्रूरता आदि) समझा तथा व्याकुल हो गये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में आ कर कहने लगे कि हम में कौन है जिसने अत्याचार न किया हो ? आप ने कहा कि इसका अर्थ वह अत्याचार नहीं जो तुम ने समझा है अपितु इससे तात्पर्य शिर्क (मिश्रण) है जैसे आदरणीय लुकमान ने अपने पुत्र से कहा था |

﴿إِنَّ ٱلشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

"नि:सन्देह बहुदेववाद सबसे बड़ा अत्याचार है"| (सूर: *लुकमान*-१३) (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: अल अनाम*)

[2]अर्थात अल्लाह तआला के एक होने का प्रमाण तथा तर्क जिस का कोई उत्तर इब्राहीम की जाति वाले न दे सके | तथा वह कुछ के निकट यह कथन था |

﴿وَكَيْفَ أَخَافُ مَآ أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِٱللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِۦ عَلَيْكُمْ سُلْطَٰنًا ۚ فَأَىُّ ٱلْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِٱلْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾

अल्लाह तआला ने आदरणीय इब्राहीम के इस कथन की पुष्टि की तथा कहा |

﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَمْ يَلْبِسُوٓا۟ إِيمَٰنَهُم بِظُلْمٍ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ﴾

[3]अर्थात वृद्धा अवस्था में जब वह सन्तान के जन्म से निराश हो गये थे, जैसाकि सूर: अल-हूद आयत संख्या ७२ में है, फिर पुत्र के साथ ऐसे पौत्र की शुभ सूचना दी जो याक़ूब होगा, जिसके अर्थ में यह भावार्थ निहित है कि उसके पश्चात उनकी सन्तान का वंश चलेगा, इसलिए कि यह अक़ब (पीछे) शब्द से उत्पन्न है |

وَمِن ذُرِّيَّتِهِۦ دَاوُۥدَ وَسُلَيْمَٰنَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾

रास्ता दिखाया। तथा इससे पूर्व नूह को मार्ग दिखाया तथा उनकी संतान[1] में दाऊद एवं सुलैमान तथा अय्यूब एवं यूसुफ तथा मूसा एवं हारून को, तथा इसी प्रकार हम उपकर्मियों को प्रत्युपकार प्रदान करते हैं।

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा ज़करिया एवं यहया तथा ईसा[2] एवं इलियास को, प्रत्येक सदाचारियों में थे।

وَإِسْمَٰعِيلَ وَٱلْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٨٦﴾

(८६) तथा इस्माईल और यसअ तथा यूनुस और लूत को, प्रत्येक को हम ने विश्ववासियों पर प्रधानता दी।

---

[1] ذرية अरबी भाषा के इस शब्द में सर्वनाम के समावेश को नूह की ओर संकेत कुछ विद्वानों ने स्वीकार किया है क्योंकि वही निकटवर्ती हैं। अर्थात आदरणीय नूह की सन्तान में से दाऊद तथा सुलैमान को तथा कुछ ने आदरणीय इब्राहीम को, क्योंकि सारा वर्णन उन्हीं के विषय में हो रहा है। परन्तु इस परिस्थिति में यह कठिनाई आती है कि फिर लूत का वर्णन इस सूची में नहीं आना चाहिए था क्योंकि वह इब्राहीम की सन्तान में नहीं हैं। वह उनके भाई हारान पुत्र आज़र के पुत्र अर्थात इब्राहीम के भतीजे थे। तथा इब्राहीम लूत के पिता नहीं, अपितु चाचा हैं। परन्तु सम्मान स्वरूप उन्हें इब्राहीम की संतान में सम्मिलित कर लिया गया है। इसका एक अन्य उदाहरण क़ुरआन करीम में है। जहाँ आदरणीय इस्माईल को याक़ूब की संतान के पूर्वज में सम्मिलित किया गया है, जबकि वह उनके चाचा थे। देखिये (*सूर: अल-बक़र:-१३३*)

[2]ईसा अलैहिस्सलाम का वर्णन आदरणीय नूह अथवा इब्राहीम की संतान में इसलिए किया गया है (यद्यपि उनके पिता नहीं थे) कि पुत्री की संतान भी पुरुष की संतान में सम्मिलित होती है। जिस प्रकार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय हसन (रज़ी अल्लाहु अन्हु) (अपनी पुत्री आदरणीया फ़ातिमा (रज़ी अल्लाह अन्हा) के पुत्र को अपना पुत्र बताया « إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ ولَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ، مِنَ الْمُسْلِمِينَ ». (सहीह बुख़ारी किताबुस सुलह बाब क़ौलु अन्नबी लिलहसन बिन अली इब्नी हाज़ा सैय्यद) विस्तार पूर्वक जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर)

وَمِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा उनके पिताओं तथा संतानों एवं भाईयों[1] में से, तथा हमने उनका निर्वाचन किया और उन्हें सीधा रास्ता दिखाया।

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) यही अल्लाह का मार्ग है अपने भक्तों में से जिसे वह चाहता है, उसे मार्ग दर्शाता है तथा यदि वे लोग भी शिर्क (मिश्रण) करते तो उनके कर्म व्यर्थ हो जाते।[2]

اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا

(८९) इन्हीं को हमने किताब (धर्मशास्त्र) तथा धर्म-विधान एवं दूतत्व प्रदान किया और यदि

---

[1]पूर्वज से मूल तथा सन्तान से शाखायें तात्पर्य है अर्थात उनके मूल तथा शाखा एवं भाईयों में से भी बहुतों को हमने उच्च पद तथा मार्गदर्शन प्रदान किया। اجتباء का अर्थ है निर्वाचित करना तथा अपने विशेष भक्तों में गणना कर लेना तथा उन में एकत्रित कर लेना। यह अर्थ جبيت الماء في الحوض (मैंने जलाशय से जल एकत्रित कर लिया) से लिया गया है, अतः اجتباء से तात्पर्य अपने विशेष भक्तों में सम्मिलित करना होगा। اصطفاء (इस्तेफ़ा), تخليص (तख़लीस), اختيار (इख़्तेयार) इसी अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं जिन के कारक का रूप मुस्तफ़ा, मुजतबा, मख़लिस तथा मुख़्तार हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अठ्ठारह नबियों के नामों का वर्णन कर के अल्लाह तआला कह रहा है, यदि वे लोग भी बहुदेववाद में फंस जाते तो उनके सारे कर्म नष्ट हो जाते। जिस प्रकार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूसरे स्थान पर सम्बोधित करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया।

﴿لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ﴾

"हे पैग़म्बर यदि तूने भी अल्लाह तआला के साथ किसी अन्य को मिश्रण किया, तो तेरे सारे कर्म नष्ट कर दिये जायेंगे।" (*सूरः अल-ज़ुमर-६५*)

यद्यपि पैग़म्बरों से शिर्क होना सम्भव नहीं। उद्देश्य अनुयायियों को शिर्क की भयानकता तथा विनाश से सतर्क करना है।

هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكَافِرِينَ ﴿٨٩﴾

यह लोग इसे न मानें[1] तो हमने ऐसे लोगों को तैयार कर रखा है जो इसका इंकार नहीं करेंगे ।[2]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ قُل لَّا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾

(९०) यही लोग है जिनको अल्लाह ने सत्य मार्ग दिखाया, अतः आप उनके मार्ग का अनुसरण करें,[3] आप कहिये कि मैं इस पर किसी प्रतिकार की माँग नहीं करता ।[4] यह विश्ववासियों के लिये मात्र स्मृति है ।[5]

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ

(९१) तथा उन्हें जिस प्रकार अल्लाह का सम्मान करना चाहिए था सम्मान नहीं किया, जब उन्होंने यह कहा कि अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कुछ नहीं उतारा ।[6] आप कहिये कि मूसा जो शास्त्र

---

[1]इससे तात्पर्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधी, मूर्तिपूजक तथा अधर्मी हैं।

[2]इससे तात्पर्य मक्का से जाकर मदीने बसने वाले तथा मदीने के वासी मुसलमान तथा प्रलय पर्यन्त आने वाले ईमानवाले हैं।

[3]इससे तात्पर्य उपरोक्त ईशदूत हैं। उनके अनुसरण का आदेश एकेश्वरवाद (तौहीद) के सम्बन्ध में तथा उन आदेशों एवं नियम में है जो निरस्त नहीं हुए। (फ़तहुल क़दीर) क्योंकि सभी धर्मों मे मूल विधान एक ही रहे हैं, यद्यपि कर्म तथा विधि में कुछ विभिन्नता रही। जैसाकि आयत ﴿شَرَعَ لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ نُوحًا﴾ (*सूरः अल-शूरा*-१३) से स्पष्ट है।

[4]अर्थात सतर्क करने तथा धर्म की ओर आमन्त्रित करने का, क्योंकि मुझे इसका वह वदला ही पर्याप्त है जो परलोक में अल्लाह तआला की ओर से मिलेगा।

[5]बुद्धि वाले इससे शिक्षा ग्रहण करें। यह क़ुरआन उनको अविश्वास तथा मिश्रण के अन्धकार से निकाल कर मार्गदर्शन का प्रकाश प्रदान करेगा तथा कुपथ की टेढ़ी राहों से बचाकर ईमान के सीधे मार्ग पर चलायेगा यदि कोई इससे शिक्षा प्राप्त करना चाहे, वरन "अंधे को अंधेरे में क्या दिखायी देगी" वाली बात होगी।

[6]قدر (क़दर) का अर्थ अनुमान लगाने के हैं तथा यह किसी वस्तु के यर्थाथ एवं ज्ञान प्राप्त करने के अर्थ में प्रयोग होता है। अर्थात यह मक्का के मूर्तिपूजक रसूल को भेजने तथा किताब के उतरने का इंकार करते हैं जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि उन्हें अल्लाह का सही ज्ञान नहीं अन्यथा तथ्य को अस्वीकार न करते। इसके अतिरिक्त आत्म ज्ञान न होने

मूसा नूरौं व हुदन लिन्नासि तज्अलूनहू क़रातीसा तुब्दूनहा व तुख़्फ़ून कसीरा व अुल्लिम्तुम मा लम तअ्लमू अन्तुम

مُوسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ

तुम्हारे पास लाये जो ज्योति तथा मार्गदर्शन है उसे किसने उतारा जिसे तुम विभिन्न पृष्ठों में रखते हो,[1] जिसमें से कुछ व्यक्त करते

के कारण दूतत्व तथा रिसालत से भी अनभिज्ञ रहे। तथा यह समझते रहे कि किसी मानव पुरुष पर अल्लाह की किताब किस प्रकार उतर सकती है ? जिस प्रकार अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया है।

﴿ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ ﴾

"क्या यह बात लोंगों के लिए आश्चर्यजनक है कि हमने उन्हीं में से एक आदमी पर वह्यी (आदेश) उतार कर उसे लोगों को डराने के लिए नियुक्त कर दिया है ?" (*सूरः -यूनुस*-२)

अन्य स्थान पर फ़रमाया।

﴿ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَاۗءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴾

"मार्गदर्शन आ जाने के पश्चात लोग उसे स्वीकार करने से इस लिए रुक गये कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है ?" (*सूरः बनी इस्राईल*-९४)

इसका कुछ विस्तार इससे पूर्व की आयत संख्या ८ की व्याख्या में गुज़र चुका है। व्याख्याधीन आयत में भी उन्होंने अपने इसी विचार के आधार पर इन बातों को नकारा है कि अल्लाह तआला ने किसी मनुष्य पर कोई किताब उतारी है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यदि ऐसी बात है तो पूछो कि मूसा पर तौरात किसने उतारी थी ? (जिसको ये मानते हैं)

[1]आयत की उपरोक्त व्याख्यानुसार अब यहूदियों को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि तुम इस किताब को विभिन्न पृष्ठों में रखते हो, जिनमें से जिनको चाहते हो प्रकाशित करते हो जिनको चाहते हो छिपा लेते हो। जैसे पत्थरों से मार कर दण्डित करने का नियम अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुणों की बात है। हाफ़िज इब्ने कसीर तथा इमाम इब्ने जरीर तबरी आदि ने يجعلونه و يبدونها वाक्य को प्राथमिकता दी है तथा तर्क यह दिया है कि यह मक्की आयत है, इसमें यहूदियों को सम्बोधित किस प्रकार किया जा सकता है ? तथा अन्य कुछ व्याख्याकारों ने सम्पूर्ण आयत को यहूदियों से सम्बन्धित माना है। इस में प्रारम्भ से ही दूतत्व तथा ऋषित्व का जो इंकार है, उसे यहूदियों की हठधर्मी, ईर्ष्या तथा द्वेष पर आधारित कथन सिद्ध किया है अर्थात इस आयत की व्याख्या में व्याख्याकारों के तीन मत हैं। एक गुट पूरी आयत यहूदियों से, दूसरे लोग पूरी आयत

وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾

तथा अधिकतर छुपाते हो तथा तुम्हें वह ज्ञान दिया गया जिसे तुम तथा तुम्हारे पूर्वज नहीं जानते थे ।[1] आप कहिए कि, अल्लाह,[2] फिर उन्हें उनके कुरेद में खेलते छोड़ दीजिए।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰي صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾

(९२) यह भी एक शुभशास्त्र है, जिसे हमने उतारा है, अपने से पूर्व के (धर्मशास्त्रों) की प्रमाणकारी है। ताकि आप मूल नगरी (मक्का) तथा उसके आस-पास (के नगरों अर्थात सम्पूर्ण मानव जगत) को सचेत करें, तथा जो परलोक के प्रति विश्वास रखते हैं वही लोग इसे मानेंगे तथा वही अपनी नमाज़ों कि रक्षा करेंगे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ تَرٰٓي اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ

(९३) उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये अथवा कहे कि मेरी ओर देववाणी आई है जबकि उसकी ओर कुछ नहीं आयी। तथा जिसने कहा कि जिस प्रकार अल्लाह ने उतारा मैं भी उतारूँगा, यदि आप अत्याचारियों को मौत की घोर यातना में देखेंगे ।[3] जब यमदूत अपने

का मक्का के मूर्तिपूजकों से तथा तीसरे गुट आयत के प्रारम्भिक भाग को मूर्तिपूजको से सम्बन्धित तथा تجعلونه से यहूदियों से सम्बन्धित सिद्ध करते हैं। والله أعلم

[1]यहूदियों के विषय में मानने की स्थिति में इसकी व्याख्या होगी कि तुम्हें तौरात द्वारा बताया गया तथा अन्य परिस्थिति में क़ुरआन द्वारा।

[2]यह من أنزل किसने उतारा का उत्तर है।

[3]अत्याचारों से तात्पर्य सभी प्रकार के अत्याचारी हैं। तथा इसके अन्तर्गत अल्लाह की किताब के निवर्ती तथा दूतत्व के भूठे दावेदार सभी आते हैं। غمرات से मृत्यु के संकट तात्पर्य है । "फ़रिश्ते (यमदूत) हाथ बढ़ा रहे होंगे।" अर्थात प्राण निकालने के लिए। اليـــوم (आज) से तात्पर्य प्राण निकालने का दिन है तथा यही यातना के प्रारम्भ होने का समय भी है, जिसका प्रारम्भ क़ब्र (समाधि) से है। इससे सिद्ध होता है कि क़ब्र में यातना

عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

हाथ लपकाये होते हैं कि अपने प्राण निकालो, आज तुम्हें अल्लाह पर अनुचित आरोप लगाने तथा अभिमान पूर्वक उसकी आयतों का इंकार करने के कारण अपमानकारी प्रतिकार दिया जायेगा ।[1]

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ۚ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गये ।[2] जैसे तुम्हें प्रथम बार पैदा किया तथा तुम्हें जो दिया उसे अपने पीछे छोड़ आये तथा तुम्हारे सिफ़ारिशी हमें नहीं दिख रहे हैं, जिन को तुम अपने कार्यों में हमारा साभी समभ रहे थे । निःसंदेह तुम्हारे संबन्ध कट गये तथा तुम्हारा विचार तुमसे खो गया ।

सत्य है । वरन् हाथ फैलाने तथा जान निकालने का आदेश देने के साथ इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं थी कि आज तुभ्हे अपमानित होने की यातना दी जायेगी । ध्यान रहे क़ब्र से तात्पर्य बर्ज़ख़ का जीवन है सांसारिक एवं परलोक के मध्य का जीवन जो मृत्यु से प्रलय होने तक का है । यह बर्ज़ख़ी जीवन कहलाता है । चाहे उसे नरभक्षी ने खा लिया हो अथवा उसका शव समुद्र की लहरों में समा गया हो अथवा उसे जला कर राख कर दिया हो अथवा क़ब्र में दफ़ना (गाड़) दिया हो यह बर्ज़ख़ का जीवन है जिसमें यातना देने में अल्लाह तआला सामर्थ्य रखता है ।

[1]अल्लाह पर भूठ बोलने में धर्मशास्त्रों तथा ईशदूतों के भेजे जाने का इंकार भी आता है । तथा दूतत्व का भूठा दावा भी । इसी प्रकार दूतत्व एवं ऋषित्व का इंकार तथा भूठलाना भी है । इन दोनों के कारण से उन्हें अपमान जनक दंड दिया जायेगा ।

[2] فرادی अरबी भाषा में فرد का बहुवचन है, जिस प्रकार سکاری बहुवचन है سکران का, तथा کسالی बहुवचन है کسلان का । इसका अर्थ यह है कि तुम अलग-अलग एक-एक कर के मेरे पास आओगे । तुम्हारे पास न धन होगा न संतान तथा न वह देवता, जिनको तुम ने अल्लाह का साभीदार तथा अपना सहायक समभा था । अर्थात इन में से कोई भी वस्तु तुम को वहां लाभ पहुचाने में असमर्थ है । अगले वाक्य में इन्हीं विषयों की अत्यधिक विवरण है ।

(९५) अल्लाह ही बीजों एवं गुठलियों को फाड़कर अंखुआ निकालता है।[1] वह सजीव को निर्जीव से[2] एवं निर्जीव को सजीव से निकलता है,[3] वही अल्लाह है, फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो ?

إِنَّ ٱللَّهَ فَالِقُ ٱلْحَبِّ وَٱلنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ ٱلْمَيِّتِ مِنَ ٱلْحَىِّ ۚ ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٩٥﴾

(९६) वह पौ फाड़ने वाला है[4] तथा उसने रात्रि को विश्राम के लिये[5] एवं सूर्य तथा चन्द्रमा को

فَالِقُ ٱلْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ ٱلَّيْلَ سَكَنًا وَٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ

[1]यहाँ से अल्लाह तआला की अतुलनीय शक्ति तथा सामर्थ्य का वर्णन प्रारम्भ हो रहा है। फ़रमाया, अल्लाह तआला दाने तथा गुठली को, जिसे किसान धरती के अन्दर दबा देता है, उसे फाड़कर अनेक रंग-रूप के वृक्ष उगाता है। धरती एक होती है, पानी भी जिससे खेतों की सिचाई होती है, एक ही प्रकार का होता है। परन्तु जिस-जिस चीज़ के वे दाने तथा गुठलियाँ होते हैं। उनके अनुसार अल्लाह तआला उनसे विभिन्न प्रकार के अनाज तथा फलों के वृक्ष उगाता है। क्या अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई है, जो इस कार्य को करता है अथवा कर सकता है ?

[2]अर्थात दाने अथवा गुठलियों से वृक्ष उगाता है, जिस में जीवन होता है तथा वह बढ़ाता, फुलाता तथा फल अथवा अनाज देता है। अथवा सुगन्धित रंग-बिरंगे फूल, जिनको देख कर सूंघ कर मनुष्य प्रफुल्लता तथा आनन्द का आभास करता है। अथवा वीर्य तथा अन्डे से मनुष्य तथा पक्षियाँ पैदा करता है।

[3]अर्थात पक्षियों के अण्डे जो मृतप्राय हैं। जीवित तथा मृत की तुलना ईमानवालों तथा काफ़िरों से भी की गयी है अर्थात ईमानवालों के घर काफ़िरों तथा काफ़िरों के घर में ईमान वाले पैदा करता है।

[4]अन्धकार तथा प्रकाश का उत्पन्न करने वाला भी वही है। वह रात के अंधेरे से उषा काल का प्रकाश पैदा करता है जिससे प्रत्येक वस्तु प्रकाशमान हो जाती है।

[5]अर्थात रात को अंधकार में बदल देता है, ताकि लोग प्रकाश की सभी व्यस्तता को समाप्त करके विश्राम कर सकें।

تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٩٦﴾

हिसाब लगाने के लिये बनाया।[1] यह निर्धारण है परम प्रभावी ज्ञाता (अल्लाह) का।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٩٧﴾

(९७) तथा उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये ताकि थल जल के अंधेरों में उनके द्वारा रास्ते का पता लगाओ,[2] हमने उन लोगों के लिए निशानियों का विवरण कर दिया है जो ज्ञान रखते हैं।

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَصَّلْنَا

(९८) तथा उसी ने तुम्हें एक प्राण से उत्पन्न किया फिर तुम्हारा एक स्थाई तथा एक समर्पण

---

[1]अर्थात दोनों के लिए एक माप का निर्धारण है, जिसमें वे किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं कर सकते। दोनो के अपने-अपने पथ हैं जिस पर वे सर्दी-गर्मी सभी परिस्थितियों में अग्रसर हैं, जिसके आधार पर सर्दी में दिन छोटे तथा रात्रि बड़ी तथा गर्मी में इसके विपरीत दिन लम्बे तथा रात्रि छोटी हो जाती हैं। जिसका विस्तृत वर्णन *सूरः यूनुस*-५, *सूरः यासीन*-४० तथा *सूरः आराफ़* -५४ में भी है। इसका यह अर्थ भी लिया गया है कि सूर्य एव चन्द्रमा से दिन-रात तथा महीने और वर्ष का हिसाब लगाया जाता है। उपरोक्त अनुवाद इसी अर्थ को लेकर किया गया है।

[2]यहाँ सितारों का एक लाभ तथा लक्ष्य बताया गया है तथा इस के अन्य और भी दो लक्ष्य हैं जो अन्य स्थान पर वर्णन किये गये हैं। आकाशों की शोभा तथा शैतानों के दण्ड। अर्थात यदि शैतान आकाश पर जाने का प्रयत्न करते हैं तो यह उन पर अंगारे बन कर गिरते हैं। कुछ सलफ़ का कथन है। "इन तीन बातों के अतिरिक्त इन सितारों के विषय में यदि कोई व्यक्ति विश्वास रखता हो तो वह त्रुटि पर है तथा अल्लाह पर भूठ बांधता है।"

इससे ज्ञात होता है कि हमारे देश में जो ज्योतिष विज्ञान की चर्चा है, जिसमें सितारों के द्वारा भविष्य की घटनाओं तथा मनुष्य के जीवन अथवा जगत में उनके प्रभाव का दावा किया जा रहा है, वह निराधार है तथा धार्मिक नियमों के विरुद्ध भी। अतः एक हदीस में इसे जादू का ही एक प्रभाग बताया गया है।

« مَنِ اقْتَبَسَ عِلْمًا مِنَ النُّجُومِ اقْتَبَسَ شُعْبَةً مِنَ السِّحْرِ زَادَ مَا زَادَ ».

"जो व्यक्ति ज्योतिष विज्ञान प्राप्त करता है। वह एक प्रकार का जादू सीखता है।" (हस्सनहु अलबानी सहीह अबू दाऊद संख्या ३९०५)

الْأٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ۝٩٨

स्थान है।[1] हमने उनके लिये निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर दिया है जो समझते हैं।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ

(९९) तथा वही है जिसने आकाश से वर्षा की फिर हमने उससे प्रत्येक प्रकार के पौधे उगाये[2] फिर उससे हरियाली निकाली[3] जिससे हम गुथे हुये अन्न [4] तथा खजूर के गाभ से लटकते हुये गुच्छे[5] एवं अंगूरों तथा जैतून और अनार के बाग़[6] (उद्यान) निकलते हैं जो समरूप एवं प्रारुप होते हैं।[7] उनके फलों को देखो जब फलें

---

[1]अधिकतर व्याख्याकारों के विचार से مُستقر (मुस्तकर) से गर्भाशय तथा مُستودع से पिता की पीठ तात्पर्य है। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

[2]यहाँ से उसकी आश्चर्यजनक कारीगरी का वर्णन हो रहा है अर्थात वर्षा का पानी, जिससे वह हर प्रकार की वनस्पति उगाता है।

[3]इससे तात्पर्य हरी शाखायें तथा अंकूर हैं जो धरती में दबे हुए दाने से अल्लाह तआला धरती के ऊपर उगाता है, फिर वह वृक्ष का आकार तथा प्रकार ग्रहण करता है।

[4]उन हरी शाखाओं से ऊपर तले चढ़े हुए दाने तथा बालियाँ निकलते हैं। जैसे जौ, जवार, बाजरा, मकई, गेहूँ तथा चावल आदि।

[5] قِنْـــوٌ का बहुवचन قِنْوانٌ है। तात्पर्य गुच्छे हैं। طلع खजूर का प्रारम्भिक रूप है, यही बढ़कर गुच्छा बनता है तथा फिर वह परिपक्व होकर खजूर तैयार होता है। دانيةٌ से तात्पर्य वह गुच्छे हैं जो निकट हों। तथा कुछ गुच्छे दूर भी होते हैं जिन तक हाथ नहीं पहुँचता है। अनुग्रह के रूप में निकटता का वर्णन कर दिया गया है कि कृतज्ञता व्यक्त करो इसके लिए तथा जिसका अर्थ है منها دانيةٌ و منها بعيدة "उनमें से कुछ निकट तथा कुछ दूर हैं।" بعيدة लोप है। (फ़तहुल क़दीर)

[6]बाग़, जैतून तथा अनार इन सभी का सम्बन्ध वनस्पति से है अर्थात فأخرجنا بِهٖ جنّات अर्थात वर्षा के जल से हम ने अंगूर के बाग़ तथा जैतून एवं अनार पैदा किये।

[7]अर्थात कुछ गुणों में एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं तथा कुछ में नहीं मिलते-जुलते। अथवा उनके पत्ते एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं, फल नहीं मिलते अथवा रंग रूप में मिलते-जुलते हैं परन्तु स्वाद में नहीं मिलते-जुलते।

إِذَآ أَثۡمَرَ وَيَنۡعِهِۦٓۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكُمۡ لَأٓيَٰتٖ لِّقَوۡمٖ يُؤۡمِنُونَ ﴿٩٩﴾

तथा उनका पकना, नि:संदेह इसमें उन लोगों के लिये चिन्ह (निशानियाँ) हैं[1] जो विश्वास रखते हैं।

وَجَعَلُواْ لِلَّهِ شُرَكَآءَ ٱلۡجِنَّ وَخَلَقَهُمۡۖ وَخَرَقُواْ لَهُۥ بَنِينَ وَبَنَٰتِۭ بِغَيۡرِ عِلۡمٖۚ سُبۡحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٠٠﴾

(१००) तथा लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी बना दिया है, जबकि उसी ने उनको पैदा किया है, तथा उस (अल्लाह) के लिये पुंत्र तथा पुत्रियाँ गढ़ लीं बिना किसी ज्ञान के, वह (अल्लाह) इनके वर्णित गुणों से पवित्र एवं (श्रेष्ठ) है।

بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُۥ وَلَدٞ وَلَمۡ تَكُن لَّهُۥ صَٰحِبَةٞۖ وَخَلَقَ كُلَّ شَيۡءٖۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٞ ﴿١٠١﴾

(१०१) यह आकाशों एवं धरती का अनुपम उत्पत्तिकर्त्ता है, उसके संतान कहाँ हो सकती है ? जबकि उसकी कोई पत्नी नहीं है वह प्रत्येक वस्तु का रचयिता[2] तथा सर्वज्ञ है।

ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمۡۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۖ خَٰلِقُ كُلِّ شَيۡءٖ فَٱعۡبُدُوهُۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ وَكِيلٞ ﴿١٠٢﴾

(१०२) वही अल्लाह तुम्हारा पोषक है, उसके सिवाये कोई पूज्य नहीं, प्रत्येक वस्तु का रचयिता है, अत: उसी को पूजो, तथा वह प्रत्येक वस्तु का व्यवस्थापक है।

---

[1]वर्णन की हुई सभी चीज़ों में अखिल जगत के स्रष्टा की असीम शक्ति तथा उसकी बुद्धिमत्ता एवं कृपा के प्रमाण हैं।

[2]अर्थात जैसे अल्लाह सभी उपरोक्त वस्तुयें उत्पन्न करने में अकेला है कोई उसका साझी नहीं उसी प्रकार वह इस योग्य है कि उस की अकेले वंदना की जाये किसी और को उसकी वंदना में मिश्रित न किया जाये। परन्तु लोगों ने एक अकेले को त्याग कर देवों को उसका साझी बना रखा है जब कि वह स्वयं अल्लाह की रचना हैं। मिश्रणवादी वन्दना तो मूर्तियों अथवा समाधियों में गड़े शव की करते हैं। किन्तु कहा गया है कि उन्होंने देवों को अल्लाह का साझी बना रखा है। वास्तव में देवों से तात्पर्य राक्षस हैं तथा उन्हीं के कहने पर मिश्रण किया जाता है अत: मानो कि उन्हीं की वंदना की जाती है। इस विषय को पवित्र क़ुरआन में अनेक स्थानों पर वर्णित किया गया है। (उदाहरणार्थ सूर: *निसा* -११७, सूर: *मरियम*-४४, सूर: *यासीन*-६०, सूर: *सबा*-४१)

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٠٣﴾

(१०३) आँखें उसे देख नहीं सकतीं[1] और वह सभी निगाहों को देखता है तथा वह सूक्ष्मदर्शी सर्वसूचित है।

قَدْ جَاءَكُم بَصَائِرُ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास तर्क आ गये हैं तो जो देखेगा वह अपने भले के लिये (देखेगा) तथा जो अंधा बन जायेगा वह अपना बुरा करेगा[2] तथा मैं तुम्हारा रक्षक

---

[1] بصر का बहुवचन أبصار (दृष्टियाँ) है अर्थात मानव दृष्टि अल्लाह की यथार्थता का अवलोकन नहीं कर सकता। यदि इससे तात्पर्य नेत्र दृष्टि है तो इसका सम्बन्ध संसार से होगा अर्थात भौतिक दृष्टि से कोई अल्लाह को नहीं देख सकता। परन्तु सहीह तथा निरन्तर हदीस के कथन से ज्ञात होता है कि परलोक में ईमान वाले अल्लाह तआला को देखेंगे तथा स्वर्ग में भी उसके दर्शन से सम्मानित होंगे। इसलिए मुतजिला का इस आयत से यह भाव लेना कि अल्लाह तआला को कोई भी नहीं देख सकता, दुनिया में न आख़िरत में उचित नहीं, क्योंकि इस नकार का सम्बन्ध मात्र दुनिया से है। इसीलिए आदरणीय आयशा (रज़ी अल्लाहु अन्हा) भी इस आयत से यह भाव निकाल कर कहा करती थीं, जिस व्यक्ति ने भी यह दावा किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (मेराज की रात्रि) अल्लाह तआला के दर्शन किये, उसने झूठ बोला है। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः *अल-अनाम*) क्योंकि इस आयत के आधार पर पैग़म्बर सहित कोई भी अल्लाह को देखने का सामर्थ्य नहीं रखता। परन्तु परलौकिक जीवन में यह दर्शन सम्भव होगा। जैसाकि अन्य स्थान पर क़ुरआन ने इसके पक्ष में फ़रमाया है।

﴿ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۞ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴾

"कई मुख उस दिन तरुण होंगें, अपने प्रभु की ओर देख रहे होंगे।" (सूरः *अल-क़ियामः*-२२,२३)

[2] بصيرة का बहुवचन بصائر है। जो वास्तव में दिल के प्रकाश का नाम है। यहाँ पर तात्पर्य वे तर्क तथा युक्तियाँ हैं जो क़ुरआन ने अनेक स्थान पर दुहराई हैं तथा जिनको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हदीसों में वर्णन की हैं। जो इन तर्कों को देख कर मार्गदर्शन पा लेते हैं, उसमें उन्हीं का लाभ है, नहीं अपनाता तो उसी की हानि है। जैसे फ़रमाया।

﴿ مَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ﴾

रक्षक नहीं हूँ ।[1]

(१०५) इसी प्रकार हम आयतों (पवित्र क़ुरआन की ऋचाओं) को फेर-फेर कर वर्णित कर रहें हैं ताकि वे कहें कि आपने पढ़ा है[2] और ताकि उन लोगों के लिये जो जानते हैं हम उसे भली-भाँति प्रकाशित कर दें।

وَكَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ وَلِيَقُولُوا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١٠٥﴾

(१०६) आप अपने पालनहार के आदेश (प्रकाशना) का अनुसरण करें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं तथा मिश्रण-वादियों से विमुख हो जायें।

اتَّبِعْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٦﴾

इसका भी भावार्थ वही है जो प्रस्तुत आयत का है।

[1]अपितु केवल संदेशवाहक, निवेदक, तथा शुभसूचक हूँ। मार्ग दिखलाना मेरा कार्य है पर मार्ग पर चला देना यह अल्लाह के वश में है।

[2]अर्थात हम तौहीद (एकेश्वरवाद) की युक्तियों को इस प्रकार स्पष्ट करके तथा विभिन्न रूप से वर्णन करते हैं कि मूर्तिपूजक यह कहने लगते हैं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहीं से पढ़ कर तथा सीख कर आये हैं। जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया।

﴿ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ افْتَرَاهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ ۖ فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا * وَقَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا ﴾

"काफ़िरों ने कहा, यह क़ुरआन तोउसका अपना गढ़ा हुआ है, जिस पर दूसरों ने भी इसकी सहायता की है। यह लोग ऐसा दावा करके अत्याचार तथा झूठ पर उतर आये हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि यह पूर्व के लोगों की कहानियाँ है जिसको उसने लिख रखा है।" (*सूर: अल-फ़ुरक़ान-४,५*)

यद्यपि बात यह नहीं, जिस प्रकार यह समझते अथवा दावा करते हैं, अपितु उद्देश्य इस विस्तार से समझदार लोगों के लिए स्पष्ट तथा व्याख्या करना है ताकि उन पर सत्यता पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाये।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾

(१०७) तथा यदि अल्लाह चाहता तोयह शिर्क (अल्लाह के साझीदार) न करते ।[1] तथा हम ने आपको इन लोगों का संरक्षक नहीं बनाया, तथा न आप उन पर अधिकार रखने वाले हैं ।[2]

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ص ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा जो अल्लाह से अन्य को पुकारते हैं उनकी निन्दा न करो अन्यथा असीम होकर अनजाने वे अल्लाह की निन्दा करेंगे,[3] इसी प्रकार हमने प्रत्येक समुदाय के लिये उनके कर्म को सुशोभित बना दिया है, फिर उन्हें अपने पालनहार की ओर ही लौटना है । अत: वह उन्हें उस से सूचित करेगा जो वे करते रहे ।

---

[1]इस बिन्दु का स्पष्टीकरण पहले किया जा चुका है कि अल्लाह की इच्छा अन्य चीज़ है तथा उसकी प्रसन्नता तो इसी में है कि उसके साथ किसी को सम्मिलित न किया जाये । फिर भी मनुष्य को इस पर बाध्य नहीं किया है क्योंकि बाध्यता से मनुष्य की परीक्षा न हो पाती, वरन् अल्लाह तआला के पास तो ऐसी शक्ति है कि वह चाहे तो कोई व्यक्ति शिर्क करने के सामर्थ्य ही नहीं रख सके । (पुन: देखिये *सूर: अल-बक़र:*-२५३ तथा *सूर:अल-अनाम* ३५ की व्याख्या)

[2]यह विषय भी क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है । उद्देश्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की धार्मिक नियन्त्रण तथा सतर्क करने वाली पदवी का स्पष्टीकरण है जो रिसालत की माँग है तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल इसी सीमा तक प्रभारी थे । इससे अधिक आप के पास यदि अधिकार होते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने प्रिय चाचा अबू तालिब को अवश्य मुसलमान कर लेते, जिन के इस्लाम धर्म को स्वीकार करने की आप तीव्र इच्छा रखते थे ।

[3]यह निषेध की विधि के इस नियम पर आधारित है कि यदि किसी उचित कार्य से उससे बड़ी खराबी उत्पन्न होती हो, तो वहाँ पर उचित को न करना ठीक तथा श्रेष्ठ है । इस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया है कि तुम किसी के माता-पिता को गाली मत दो कि इस प्रकार तुम स्वयं अपने माता-पिता के ग़ाली का कारण बन जाओगे । (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब बयानुल कबायर व अकबरिहा) इमाम शौकानी लिखते हैं कि निषेध विधि का यह मूलाधार है । (फ़तहुल क़दीर)

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) तथा उन्होंने बलपूर्वक अल्लाह की शपथ ली[1] कि उनके पास कोई निशानी आई[2] तो अवश्य मान लेंगे, आप कहिये कि आयतें अल्लाह के पास हैं[3] तथा आपको क्या पता कि वह (निशानियाँ) आ जायें तब भी वह नहीं मानेंगे।

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾

(११०) तथा हम उनके दिलों एवं आँखों को फेर देंगे जिस प्रकार उन्होंने प्रथम इसके प्रति विश्वास नहीं किया,[4] तथा उनको उनकी दुष्टता (के अंधकार) में चकित रहने देंगे।

---

[1] جهد أيمانهم أي حلفوا أيمانا مؤكدة बड़ा बल देकर सौगन्ध खायी।

[2] अर्थात कोई बड़ा चमत्कार, जो उनकी इच्छानुसार हो, जैसे मूसा की छड़ी, मृतक को जीवन तथा समूद की ऊंटनी जैसा।

[3] अर्थात उनकी चमत्कार सम्बन्धी माँगे मात्र शत्रुता एवं ईर्ष्या के कारण हैं, मार्गदर्शन प्राप्त करने की इच्छा से नहीं है। फिर भी इन लक्षणों को प्रकाशित करना अल्लाह तआला के वश में है, वह चाहे तो उनकी माँग पूरी कर दे। कुछ कथनों से ज्ञात होता है कि मक्का के मूर्तिपूजकों ने माँग की थी कि सफ़ा पर्वत (जो मक्का में हरम के निकट है) स्वर्ण का बना दिया जाये, तो वह ईमान ले आयेंगे। जिस पर जिब्रील ने आकर कहा कि यदि उसके पश्चात भी वह ईमान न लाये, तो उनका विनाश कर दिया जायेगा, जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पसन्द नहीं किया। (इब्ने कसीर)

[4] इसका अर्थ यह है कि जब पहली बार ईमान नहीं लाये, तो उसका प्रभाव यह हुआ कि उनके आगे भी ईमान लाने की सम्भावना समाप्त हो गई। दिलों तथा नेत्रों को फेर देने का भावार्थ यही है। (इब्ने कसीर)

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَآ إِلَيْهِمُ الْمَلَٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَىْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا۟ لِيُؤْمِنُوٓا۟ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿١١١﴾

(१११) तथा यदि हम उनके पास फ़रिश्ते उतार[1] दें तथा इनसे मृत बात[2] करें एवं उनके सम्मुख प्रत्येक वस्तु एकत्रित कर दें[3] तो (भी) अल्लाह के चाहे बिना यह लोग विश्वास नहीं करेंगे, परन्तु इन में से अधिकतर लोग मूर्खता कर रहे हैं ।[4]

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا شَيَٰطِينَ ٱلْإِنسِ وَٱلْجِنِّ يُوحِى

(११२) तथा इसी प्रकार हम ने प्रत्येक नबी (उपदेशक) के लिये जिन्नों तथा इन्सानों के शैतानों (राक्षसों) को शत्रु बनाया [5] जो परस्पर

---

[1]जैसा कि हमारे संदेशवाहक से वह निरन्तर इस की माँग करते हैं ।

[2]और वह अन्तिम ईशदूत मुहम्मद (صلى الله عليه وسلم) के दूतत्व (रिसालत) को मान लेते ।

[3]इस का दूसरा भावार्थ यह लिया गया है कि जो चिन्ह वह माँगते हैं वह उनके समक्ष पेश कर देते, तथा एक भावार्थ यह लिया गया है कि प्रत्येक वस्तु एकत्र होकर सामूहिक रूप से यह गवाही दे कि संदेशवाहकों की यह श्रृंखला सत्य है तो इन सभी लक्षणों तथा माँगों की पूर्ति कर देने पर भी विश्वास नहीं करेंगे, परन्तु जिसे अल्लाह चाहे । इसी अर्थ में यह आयत (मंत्र) भी है ।

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ ءَايَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا۟ ٱلْعَذَابَ ٱلْأَلِيمَ ﴾

"जिन पर तेरे पालनहार का वचन सिद्ध हो गया । वह दुखद दण्ड का दर्शन किये बिना विश्वास नहीं करेंगे यद्यपि उनके पास हर प्रकार के संकेत आ जाये ।" (सूर: *यूनुस* -९६,९७)

[4]तथा यह मूर्खता की बातें ही उनके एवं सत्य के प्रति विश्वास के बीच आवरण बनी हुई है । यदि अज्ञान का पर्दा उठ जाये तो संभवत: सत्य का प्रबोध कर लें तथा फिर अल्लाह की इच्छा से सत्य को स्वीकार कर लें ।

[5]यह वही बात है जो विभिन्न प्रकार से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सांत्वना के लिए कही गयी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूर्व जितने भी नबी आये, उन को भी झुठलाया गया, उन्हें यातनायें दी गई इत्यादि । उद्देश्य यह है कि जिस प्रकार से उन्होंने धैर्य तथा साहस से कार्य किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इन सत्य के शत्रुओं के समक्ष धैर्य तथा दृढ़ता का प्रदर्शन करें । इससे ज्ञात हुआ कि शैतान के अनुयायी मनुष्यों के अतिरिक्त जिन्नों में से भी हैं तथा ये वे हैं जो दोनों गुटों के दुष्ट, विद्रोही अत्याचारी, दुराचारी एवं अभिमानी हैं ।

بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٢﴾

धोखा देने के लिये रमणीक बात की प्रेरणा देते रहे[1] तथा यदि तेरा पोषक चाहता तो ऐसा न करते ।[2] अतः आप उन्हें तथा उनके षड़यन्त्र को त्याग दें (उनकी चिन्ता न करें)।

وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ﴿١١٣﴾

(११३) ताकि उनके दिल उसकी ओर प्रवृत्त हो जायें जो परलोक के प्रति विश्वास नहीं रखते तथा उससे प्रसन्न हो जायें और वही पाप कर लें जो वह लोग कर रहे थे ।[3]

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١١٤﴾

(११४) तो क्या मैं अल्लाह के सिवाय किसी अन्य शासक की खोज करूँ जब कि उसी ने तुम्हारी ओर एक सविस्तार शास्त्र (क़ुरआन) उतारा है। तथा हम ने जिनको धर्मशास्त्र दिया है वे जानते हैं कि वास्तव में वह तुम्हारे पालनहार की ओर से ससत्य अवतरित है। अतः आप शंसयी न बनें ।[4]

---

[1]अर्थात मनुष्यों तथा जिन्नों को भटकाने के लिए एक-दूसरे को चालबाज़ी तथा छल की शिक्षा देते हैं ।ताकि वे लोगों को धोखे तथा प्रलोभन में डाल सकें। यह बात सामान्य रूप से देखने में आयी है कि लोग शैतानी कार्यों में एक-दूसरे का बढ़-चढ़ कर साथ देते हैं। जिसके कारण बुराई का अतिशीघ्र प्रचार-प्रसार हो जाता है।

[2]अर्थात अल्लाह तआला इन शैतानी चालों को विफल बनाने का सामर्थ्य रखता है, परन्तु वह दबाव से यह कार्य नहीं करता क्योंकि ऐसा करना उसके व्यवस्था तथा नियम के विरुद्ध है, जो उसने अपनी इच्छानुसार अपना रखी है, जिसका भेद वह भली-भाँति जानता है।

[3]अर्थात शैतान के बुरे विचार के शिकार वही लोग होते हैं, तथा वही उसको प्रिय समझते हैं तथा उसके अनुसार कर्म करते है जो परलोक के प्रति विश्वास (आस्था) नहीं रखते, तथा यह सत्य है कि जिस प्रकार से लोगों के दिलों में आख़िरत का विश्वास क्षीण होता जा रहा है, उसी के अनुरूप लोग शैतानी जाल में फंस रहे हैं।

[4]आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके वास्तव में मुसलमानों को शिक्षा दी जा रही है।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा तुम्हारे पोषक के कथन सत्य एवं न्याय में पूर्ण[1] हो गये, उसके कथनों को कोई बदल नहीं सकता तथा वह भली-भाँति सुनने वाला जानने वाला है।

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾

(११६) यदि आप भूवासियों में अधिकतर का अनुसरण करेंगे तो वह आप को अल्लाह के मार्ग से बहका देंगे, वे मात्र निराधार कल्पना का अनुसरण करते तथा अनुमान लगाते हैं।[2]

---

[1]सूचनाओं तथा घटनाओं के आधार पर सत्य है तथा आदेश एवं समस्याओं के निराकरण के आधार पर न्यायिक है अर्थात इसका प्रत्येक आदेश तथा निषेध न्याय के नियमों पर आधारित है। यद्यपि मनुष्य अपनी अज्ञानता अथवा शैतान के बहकाने के कारण इस तथ्य का बोध न कर सके।

[2]क़ुरआन में वर्णित इस सत्यता का अवलोकन प्रत्येक काल में किया जा सकता है। अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴾

"आप की इच्छा के उपरान्त अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं।" *(सूरः यूसुफ़-१०३)*

इससे ज्ञात हुआ कि सत्य तथा सत्यता के मार्ग पर चलने वाले सदैव थोड़े ही होते हैं। जिससे यह बात भी सिद्ध होती है कि सत्य तथा असत्य का आधार तर्क तथा प्रमाण है, लोगों की अधिक अथवा अल्प संख्या नहीं। ऐसा नहीं कि जिस बात को बहुसंख्यक ने माना हो वह सत्य हो तथा अल्पसंख्यक असत्य पर हों। अपितु क़ुरआन द्वारा वर्णित इस सत्यता के आधार पर यह सम्भव है कि सत्यगामी अल्पसंख्यक होते हों तथा असत्यवादी बहुसंख्यक। जिसकी पुष्टि हदीस से होती है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरे अनुयायी ७३ गुटों में बंट जायेंगे, जिनमें से केवल एक ही गुट स्वर्ग में जायेगा, शेष सभी नरक में जायेंगे। तथा इस स्वर्गगामी गुट की निशानियाँ बतायीं कि जो « مَا أَنَا عَلَيْهِ وَأَصْحَابِي ». "मेरे तथा मेरे सहचरों के मार्ग पर चलने वाला होगा।"(अबू दाऊद, किताबुल सून्नः बाब शरह अल सुन्नः संख्या ४५९६, त्रिमज़ी किताबुल ईमान बाब माजाअ फ़ी इफ़्तराके हाज़ेहिल उम्मः

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِۦ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِٱلْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾

(११७) नि:संदेह आप का प्रभु उनको भली-भाँति जानता है, जो उसके मार्ग से भटक जाता है। तथा वह उस को भी भली-भाँति जानता है, जो उस के मार्ग पर चलते हैं।

فَكُلُوا۟ مِمَّا ذُكِرَ ٱسْمُ ٱللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِـَٔايَٰتِهِۦ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

(११८) तो(जिस जानवर) पर अल्लाह का नाम लिया जाये उसमें से खाओ यदि तुम उसके आदेशों पर ईमान रखते हो ।[1]

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا۟ مِمَّا ذُكِرَ ٱسْمُ ٱللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا ٱضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَآئِهِم

(११९) तथा तुम्हारे लिये कौन सी बात इस का कारण हो सकती है कि तुम ऐसे जानवरों में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो ? यद्यपि अल्लाह (तआला) ने उन सभी जानवरों का विवरण बता दिया है जिनको

---

[1]अर्थात जिस पशु को शिकार करते समय, अथवा बलि अथवा वध करते समय अल्लाह का नाम लिया जाये, उसे खा लो। यदि वे उन जानवरों में से हों जिन को खाने की अनुमति है। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस जानवर पर जानबूझ कर अल्लाह का नाम न लिया जाये, वे वैध तथा पवित्र नहीं हैं। परन्तु इससे ऐसी अवस्था अलग है कि जिसमें यह शंका हो कि काटने वाले ने काटते समय अल्लाह का नाम लिया अथवा नहीं ? इसमें आदेश यह है कि अल्लाह का नाम लेकर खा लो। हदीस में आता है आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि कुछ लोग हमारे पास मांस लेकर आते हैं (इससे तात्पर्य वे अशिक्षित अरब थे जो नये-नये मुसलमान हुए थे तथा इस्लामी शिक्षाओं तथा नियमों से परिचित नहीं हो पाये थे) हम नहीं जानते कि उन्होंने अल्लाह का नाम लिया है अथवा नहीं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«سَمُّوا عَلَيهِ أَنْتُمْ وَكُلُوا» (सहीह बुख़ारी बाब जबीहतुल आराब संख्या ५५०७) तुम अल्लाह का नाम लेकर खा लो। अर्थात शंका की अवस्था में यह छूट है। इसका यह अर्थ नहीं कि हर प्रकार के जानवरों का मांस बिस्मिल्लाह पढ़ लेने से उचित हो जायेगा। इससे अधिक से अधिक यह सिद्ध होता है कि मुसलमानों की मंडियों तथा दूकानों पर मिलने वाला मांस उचित है। यदि किसी को सन्देह अथवा शंका हो तो वह खाते समय बिस्मिल्लाह पढ़ ले।

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾

तुम पर निषेध किया गया है ।[1] परन्तु वह भी जब तुम को अत्यधिक आवश्यकता पड़ जाये (तो उचित है) तथा यह निश्चित बात है कि बहुत से मनुष्य अपने त्रुटिपूर्ण विचारों पर बिना किसी प्रमाण के भटकाते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं कि अल्लाह (तआला) अतिकारियों को भली-भाँति जानता है ।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) तुम खुले एवं गुप्त पापों को त्याग दो, निश्चय जो पाप कमाते हैं वे अपने पाप करने का बदला निकट में ही दिये जायेंगे ।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ

(१२१) तथा उसे न खाओ जिस पशु पर (वध के समय) अल्लाह का नाम न लिया गया हो तथा यह (कर्म) अवज्ञा का है ।[2] तथा शैतान अपने मित्रों को प्रेरणा देते हैं ताकि वह तुम से

---

[1]जिसका विवरण इस सूरः के आगे आ रहा है । इसके अतिरिक्त अन्य सूरतों तथा हदीसों में अवैध जानवरों का विवरण दिया गया है । इनके अतिरिक्त शेष वैध है तथा निषेधित के मांस भी जीवंन रक्षा तक ही प्रयोग करने की अनुमति है ।

[2]अर्थात जानबूझ कर अल्लाह का नाम जिस जानवर पर न लिया गया हो उसका खाना अवज्ञा तथा अनुचित है । आदरणीय इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) ने इसके यही अर्थ वर्णित किये हैं, वह कहते हैं कि "जो भूल जाये उसे अवज्ञाकारी नहीं कहते हैं ।" तथा इमाम बुख़ारी का भी वही विचार है तथा यही हनफ़ी समुदाय का भी विचार है । परन्तु इमाम शाफई का विचार यह है कि मुसलमान के द्वारा वध किया गया जानवर दोनों अवस्था में वैध है चाहे वह अल्लाह का नाम ले अथवा जानबूझ कर छोड़ दे तथा वह إنه لفسق को अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के नाम पर चढ़ाये गये बलि के जानवर के मांस के लिए मानते हैं ।

لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾

विवाद करें[1] तथा यदि तुमने उनका अनुसरण किया तो तुम नि:सन्देह मिश्रणवादी हो जाओगे।

أَوَمَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) तथा ऐसा व्यक्ति जो पहले मृत रहा फिर हमने उसे जीवित कर दिया और उसके लिये प्रकाश बना दिया जिस से लोगों में चलता है क्या उसके समान हो सकता है जो अंधेरों में हो जिनसे निकल न सकता हो ?[2] ऐसे ही काफ़िरों (अधर्मियों) के लिये जो वे कर्म करते हैं सुशोभित बना दिये गये हैं।

---

[1]शैतान ने अपने साथियों के द्वारा इस बात का प्रचार किया कि यह मुसलमान अल्लाह के मारे हुए जानवर (अर्थात मृत) को तो अनुचित तथा अपने हाथों से काटे गये को उचित कहते हैं तथा दावा करते हैं कि हम अल्लाह के मानने वाले हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि शैतान तथा उसके मित्रों के प्रचार के पीछे मत लगो, जो जानवर मर गये अर्थात बिना अल्लाह का नाम लेकर काटे मर गये (समुद्री मृत जानवर के अतिरिक्त कि वह मृत भी हलाल है), चूँकि उस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया, इसलिए उसका खाना वैध नहीं।

[2]इस आयत में अल्लाह तआला ने काफ़िर को मृतक (मरा हुआ) तथा ईमानवालों को जीवित कहा है। इसलिए कि काफ़िर कुफ़्र के अपमान के अंधकार में भटकता फिरता है तथा उस से निकल ही नहीं पाता जिसका परिणाम मृत्यु तथा विनाश है तथा ईमानवाले का दिल अल्लाह पर ईमान से जीवित रहता है, जिससे उसके जीवन के मार्ग प्रकाशमान हो जाते हैं। तथा वह ईमान तथा शुभ सूचना के मार्ग पर अग्रसर रहता है जिसका परिणाम सफलता व सम्मान है। यह वही विषय है जो निम्नलिखित आयतों में वर्णन किया गया है।

﴿ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴾ [البقرة: ٢٥٧]

﴿ ۞ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ﴾ [هود: ٢٤]

﴿ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ○ وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ○ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ○ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ ۖ وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ﴾ [فاطر: ١٩-٢٢]

(१२३) तथा इसी प्रकार हम ने प्रत्येक बस्ती के महापापियों को षड़यन्त्र रचने के लिये बनाया ताकि उसमें षड़यन्त्र रचे[1] तथा वह अपने विरुद्ध ही षड़यन्त्र रचते हैं तथा इस का संवेदन नहीं कर पाते।[2]

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ۭ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

(१२४) तथा जब उनके पास कोई आयत आई तो उन्होंने कहा कि हम कदापि विश्वास नहीं करेंगे जब तक हमें भी उसी के समान न दी जाये जो ईशदूतों को दी गई।[3] अल्लाह भली-भाँति जानता है कि वह अपना दूतत्व कहाँ रखे,[4] शीघ्र ही जो पाप किये हैं उन्हें अल्लाह के पास से अपमानित होना है तथा जो षड़यन्त्र करते रहे उस का प्रतिकार घोर यातना है।

وَاِذَا جَاۗءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ۭؔ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ۭ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

---

[1] اكابر (मुखिया) اكبر का बहुवचन है, इसका तात्पर्य अनिष्ठों एवं दुराचारियों के प्रमुख हैं, क्योंकि ईशदूतों तथा सत्य के प्रचारकों के विरोध में वही आगे होते हैं, तथा साधारण लोग उनके अनुगामी होते हैं। इसलिये उनकी चर्चा विशेष रूप से की गई है, इसके अतिरिक्त सामान्यतः ऐसे लोग धन एवं वंश में भी बड़े होते है एवं प्रतापी होते हैं इस लिये सत्य के विरोध में भी अग्रगामी होते हैं। (इसी विषय की चर्चा *सूरः सबा* की आयत ३१ से ३३ तक तथा *सूरः जुखरुफ* आयत २३ एवं *सूरः नूह* की आयत २२, इत्यदि में भी की गई है)

[2]अर्थात उनके अपने कुकर्मों का पाप तथा उसी प्रकार उनके पीछे लगने वालों का पाप, उन्हीं पर पड़ेगा (इसके अतिरिक्त देखिये *सूरः अनकबूत*-१३ तथा *सूरः नहल*-२५)

[3]अर्थात उनके पास भी फ़रिश्ते वह्यी (प्रकाशनायें) ले कर आयें तथा उनके सिरों पर भी नवूवत तथा रिसालत का मुकुट रखा जाये।

[4]अर्थात यह निर्णय करना कि किस को नबी बनाया जाये ? यह तो अल्लाह का कार्य है क्योंकि वही प्रत्येक बात के महत्व तथा विशेषता को जानता है तथा उसे ही ज्ञात है कि कौन इस पद का अधिकारी है ? मक्का का कोई चौधरी तथा धनवान अथवा आदरणीय अब्दुल्लाह तथा आदरणीया आमिना का अनाथ पुत्र ?

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) जिन को अल्लाह सत्य मार्ग दिखाना चाहता है उस के वक्ष को इस्लाम (धर्म) के लिये खोल देता है तथा जिसे विपथ करना चाहता है उस के वक्ष को संकीर्ण तथा संकुचित कर देता है जैसे कि वह आकाश में चढ़ रहा हो ।[1] इसी प्रकार अल्लाह उनको घृणित बना देता है जो विश्वास नहीं रखते ।[2]

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًاؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾

(१२६) यह तुम्हारे पालनहार का सीधा मार्ग है, हमने आयतों का विस्तृत वर्णन उस वर्ग के लिये कर दिया है जो शिक्षा प्राप्त करते हैं ।

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) इन्हीं के लिये उनके पोषक के यहाँ शान्तिगृह है तथा वही उन के सदाचारों के कारण उन का मित्र है ।[3]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًاۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِۚ وَقَالَ

(१२८) तथा जिस दिन अल्लाह इन सभी को एकत्र करेगा (तथा कहेगा) हे जिन्नों के समूह ! तुम ने इन्सानों में से बहुत अपना लिया[4] तथा

---

[1]अर्थात जिस प्रकार शक्ति लगाकर आकाश पर चढ़ना असम्भव है, उसी प्रकार से जिस व्यक्ति के सीने को अल्लाह तआला संकीर्ण कर दे उसमें तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा ईमान का प्रवेश सम्भव नहीं है उसके अतिरिक्त कि अल्लाह ही उसका सीना इसके लिए खोल दे ।

[2]अथवा शैतान को उनके ऊपर प्रभावशाली कर देता है ।

[3]अर्थात जिस प्रकार दुनिया में निष्ठावान लोग अविश्वास एवं गुमराही के टेढ़े मार्गों से वच कर निष्ठा तथा सीधे मार्ग पर अग्रसर रहते हैं, अब आख़िरत में भी उनके लिए सुरक्षा तथा शान्ति का घर है तथा अल्लाह तआला भी उनके पुण्य के कारण मित्र तथा सहायता करने वाला है ।

[4]अर्थात मनुष्यों की एक बहुत बड़ी संख्या को तुम ने भटका कर अपना अनुयायी बना लिया । जिस प्रकार अल्लाह तआला ने सूरः यासीन में फ़रमाया, उसका अनुवाद यह है ।

أَوْلِيَآؤُهُم مِّنَ الْإِنسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَآ أَجَلَنَا الَّذِىٓ أَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوَىٰكُمْ خَٰلِدِينَ فِيهَآ إِلَّا مَا شَآءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٨﴾

मानव में से उन के मित्र कहेंगे, हे हमारे पोषक हमें परस्पर लाभ पहुँचा ।[1] तथा हम तेरे निर्धारित समय को जो तूने हमारे लिये निर्धारित किया[2] जा पहुँचे। (अल्लाह) कहेगा कि तुम्हारा स्थान नरक है जिसमें तुम सदा वास करोगे, परन्तु जो अल्लाह चाहे,[3] निःसंदेह तुम्हारा स्वामी विज्ञानी ज्ञाता है।

"हे आदम की संतान ! क्या मैंने तुम्हें सतर्क नहीं कर दिया था कि तुम शैतान की पूजा न करो, वह तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है ? तथा यह कि तुम मेरी इबादत करना, यही सीधा मार्ग है। एवं इस शैतान ने तुम्हारी बहुत बड़ी संख्या को भटका दिया है। क्या फिर भी तुम नहीं समझते ?" (*सूर: यासीन* : ६०-६२)

[1]जिन्नों ने तथा मनुष्यों ने एक-दूसरे से क्या लाभ प्राप्त किया ? इसके दो भावार्थों का वर्णन है। जिन्नों का मनुष्यों से लाभान्वित होना उन्हें अनुयायी बना कर उनसे मज़ा प्राप्त करना है तथा मनुष्यों का जिन्नों से लाभान्वित होने का अर्थ है कि शैतानों ने पाप को उनके लिए सुन्दर बना दिया जिसे उन्होंने स्वीकार किया तथा पाप के स्वाद में फंसे रहे। दूसरा भावार्थ यह है कि मनुष्य उन दैवी सूचनाओं की पुष्टि करते रहे, जो शैतान तथा जिन्नात की ओर से भविष्यवाणी के रूप में फैलायी जाती थीं। अर्थात यह जिन्नातों ने मनुष्यों को मूर्ख बनाकर लाभ प्राप्त किया तथा मनुष्यों का लाभ प्राप्त करना यह है कि मनुष्य जिन्नातों के द्वारा बतायी गयी झूठी तथा निराधार बातों से आनन्द लेते रहे तथा भविष्यवाणी करने वाले लोग उनसे सांसारिक लाभ प्राप्त करते रहे।

[2]अर्थात क़ियामत घटित हो गयी, जिसे हम दुनिया में नहीं मानते थे। उसके उत्तर में अल्लाह तआला कहेगा कि अब नरक ही तुम्हारा स्थाई निवास स्थान है।

[3]तथा अल्लाह का निर्णय काफ़िरों के लिए नरक की स्थाई यातना ही है जिसको उसने निरन्तर क़ुरआन करीम में स्पष्ट रूप से वर्णित किया है। छूट से किसी प्रकार का ग़लत अनुमान नहीं लगा लेना चाहिए क्योंकि यह छूट अल्लाह तआला ने स्वयं अपनी इच्छा के आधार पर वर्णन किया है, इसे किसी अन्य चीज़ के साथ सम्मिलित नहीं किया जा सकता। इसलिए कि यदि वह काफ़िरों को नरक से निकालना चाहे तो निकाल सकता है, इससे वह विवश भी नहीं है तथा न कोई अन्य बाधक है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

(१२९) इसी प्रकार हम दुष्कर्मियों को उनके कुकर्मों के कारण परस्पर मित्र बना देते हैं ।[1]

وَكَذَٰلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝١٢٩

(१३०) हे जिन्नों तथा इन्सानों के समूह ! क्या तुम्हारे पास तुम में से ईशदूत नहीं आये,[2] जो तुम्हारे समक्ष हमारी आयतें पढ़ते रहे हों तथा तुम्हें इस (प्रलय) के दिन का सामना करने से सावधान करते रहे हों। वे कहेंगे कि हम अपने विरुद्ध साक्षी हैं, तथा साँसारिक जीवन ने उन्हें धोखा दिया एवं अपने विरुद्ध साक्षी होंगे कि वह विश्वासहीन थे ।[3]

يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا شَهِدْنَا عَلَىٰ أَنفُسِنَا ۖ وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝١٣٠

(१३१) (ईशदूत भेजे गये) क्योंकि तुम्हारा पालनहार किसी गाँव वालों को किसी अत्याचार के कारण विनाश नहीं करता जब कि उस के निवासी अचेत हों।

ذَٰلِكَ أَن لَّمْ يَكُن رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ ۝١٣١

---

[1]अर्थात नरक में, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है। दूसरा भावार्थ यह है कि जिस प्रकार से हम ने मनुष्यों तथा जिन्नों को एक-दूसरे का मित्र तथा सहायक बनाया (जैसाकि पूर्व की आयत में गुज़र चुका है) उसी प्रकार हम अत्याचारियों के साथ व्यवहार करते हैं। एक अत्याचारी को दूसरे अत्याचारी पर प्रभावशाली बना देते हैं, इस प्रकार एक अत्याचारी दूसरे अत्याचारी का विनाश कर देता हैं। तथा एक अत्याचारी का बदला दूसरे अत्याचारी के द्वारा ले लेते हैं।

[2]रिसालत तथा नबूवत के विषय में जिन्नात मनुष्यों के अधीन हैं, वरन् जिन्नातों में नबी नहीं आये हैं । परन्तु रसूलों के संदेशवाहक तथा शुभ सन्देश पहुँचाने वाले जिन्नातों में होते रहे हैं, जो अपने समुदाय के जिन्नों को अल्लाह की ओर आमन्त्रित करते रहे हैं।

[3]प्रलय क्षेत्र में मिश्रणवादी (मुशरिक़) अनेक पैंतरे बदलेंगे, कभी अपने मिश्रणवादी होने का इंकार करेंगे (अल अनाम,२३) और कभी स्वीकार किये बिना चारा नहीं होगा, जैसे यहाँ उनकी स्वीकृति का वर्णन किया गया है।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْاؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾

(१३२) प्रत्येक के लिये उस के कर्मानुसार विभिन्न श्रेणियाँ हैं तथा तुम्हारा स्वामी उन कर्मों से निश्चेत नहीं जो वह कर रहे हैं।

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَؕ ﴿١٣٣﴾

(१३३) तथा तुम्हारा पोषक निस्पृह दयानिधि है,[1] यदि चाहे तो तुम्हारा नाश कर दे तथा तुम्हारे पश्चात् जिसे चाहे तुम्हारे स्थान पर रख दे जैसे तुम्हें एक अन्य वर्ग के वंश में पैदा किया है।[2]

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾

(१३४) जिस वस्तु के लिए तुम को वचन दिया जाता है, वह निःसन्देह आने वाली वस्तु है, तथा तुम बाध्य नहीं कर सकते।[3]

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَۙ مَنْ تَكُوْنُ

(१३५) (आप) कहिये कि हे मेरे वर्ग! तुम अपने स्थान पर अपना कर्म करते रहो, मैं भी (अपने स्थान पर) कार्यरत हूँ।[4] तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान

---

[1]वह अपनी सृष्टि से निस्पृह है। उनका इच्छुक नहीं है तथा न उनकी अर्चना की उसको आवश्यकता है। उनकी निष्ठा न उसके लिए लाभकारी है न उनका अविश्वास उसके लिए हानिकारक है परन्तु अपनी इस निस्पृहता के गुण के साथ-साथ वह अपनी सृष्टि के लिए कृपालु है। उसकी निस्पृहता, अपनी सृष्टि पर कृपा करने में बाधक नहीं है।

[2]यह उसके अत्यधिक सामर्थ्य तथा असीम बल का प्रदर्शन है। जिस प्रकार से उसने पूर्व के समुदायों को मिटा कर दूसरे समुदायों को खड़ा किया, वह अब भी इस बात का सामर्थ्य रखता है कि तुम को नाश कर दे एवं तुम्हारे स्थान पर ऐसे समुदाय को पैदा कर दे जो तुम जैसा न हो। (अधिक जानकारी के लिए देखें *सूरः निसा*-१३३, *सूरः इब्राहीम*-२०, *सूरः फातिर*-१५ से १७, तथा *सूरः मोहम्मद*-३८)

[3]इससे तात्पर्य क़ियामत (प्रलय) है। "तथा तुम बाध्य नहीं कर सकते" का अर्थ है कि वह तुम्हें पुनः जीवित करने का सामर्थ्य रखता है, चाहे तुम मिट्टी के कण-कण में मिल जाओ।

[4]यह अविश्वास तथा अवज्ञा पर स्थिर रहने की आज्ञा नहीं है, अपितु कठोर चेतावनी है। जैसाकि अगले शब्दों से स्पष्ट है। जिस प्रकार से दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿١٣٥﴾

हो जायेगा कि किस का अन्त इस जगत के बाद (उत्तम) होता है। निःसन्देह दुराचारी कदापि सफल नहीं होंगे।[1]

وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَٰذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَٰذَا لِشُرَكَائِنَا ۖ فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ

(१३६) तथा अल्लाह ने जो कृषि एवं पशु उत्पन्न किये उन्होंने उन में से कुछ भाग अल्लाह का बना दिया तथा अपने विचारानुसार कहा कि यह अल्लाह का है और यह हमारे देवताओं का,[2] फिर जो हमारे देवताओं का (भाग) है वह अल्लाह तक नहीं पहुँचता[3] तथा जो अल्लाह

﴿ وَقُل لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَامِلُونَ ﴿١٢١﴾ وَانتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾ ﴾

"जो ईमान नहीं लाते उनसे कह दीजिए कि तुम अपने स्थान पर कर्म किये जाओ, हम भी कर्म कर रहे हैं तथा प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" (सूर: हूद-१२१,१२२)

[1]जैसाकि थोड़े समय पश्चात् अल्लाह तआला ने अपना वचन सत्य कर दिखाया। ८ हिजरी में मक्का विजय हो गया तथा उसकी विजय के पश्चात् अरब के गुट बहुत बड़ी संख्या में दिन प्रति दिन मुसलमान होना प्रारम्भ हो गये तथा पूरा अरब महाद्वीप मुसलमानों के अधीन आ गया। तथा यह सीमा फिर फैलती तथा बढ़ती ही गयी।

[2]इस आयत में मूर्तिपूजकों के उस विश्वास तथा कर्म का उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है, जो उन्होंने स्वयं गढ़ लिये थे। वह कृषि की पैदावार तथा पशुओं में से कुछ भाग अल्लाह के लिए तथा कुछ भाग स्वयंकृत तथा कथित देवताओं के नाम पर निकाल देते थे। अल्लाह के भाग को अतिथियों, भिक्षुकों एवं सम्बन्धियों पर व्यय करते। फिर यदि मूर्तियों के भाग में अनुमानित पैदावार न होती तो अल्लाह के भाग को निकाल कर उसमें सम्मिलित कर लेते तथा यदि उनके विपरीत घटित होता तो मूर्तियों के भाग से न निकालते तथा कहते कि अल्लाह तो निस्पृह है।

[3]अर्थात अल्लाह के भाग में कमी होने की परिस्थिति में मूर्तियों के भाग से निकाल कर दान तथा पुण्य का कार्य न करते।

إِلَىٰ شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٣٦﴾

का है वह उनके देवताओं तक पहुँचता है।[1] वे बुरा निर्णय दे रहे हैं।

وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَآءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾

(१३७) इसी प्रकार बहुत से मिश्रणवादियों (मूर्तिपूजकों) के लिये उनके देवताओं ने उनका विनाश करने एवं उन पर उनके धर्म को संदिग्ध[2] बनाने के लिये उन की संतान की हत्या को सुसज्जित बना दिया है।[3] तथा यदि अल्लाह चाहता तो वह यह नहीं करते।[4] अत: आप इन को तथा इन के मन गढंत को त्याग दीजिये।

وَقَالُوا هَٰذِهِۦٓ أَنْعَٰمٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَآ إِلَّا مَن نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَٰمٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا

(१३८) तथा उन्होंने कहा कि यह पशु एवं कृषि निषेध है। इसे वही खायेगा अपने विचार से हम जिसे चाहेंगे[5] तथा कुछ पशु की पीठ

---

[1]यदि मूर्तियों के निर्धारित भाग में कमी होती तो वह अल्लाह के निर्धारित भाग में से लेकर मूर्तियों की आवश्यकताओं पर व्यय कर लेते। अर्थात अल्लाह के सापेक्ष मूर्तियों का भय उनके दिलों में अधिक था जिस का दर्शन आज के मूर्तिपूजकों के व्यवहार से भी किया जा सकता है।

[2]अर्थात उनके धर्म में शिर्क को सम्मिलित कर दें।

[3]यह संकेत उनकी बच्चियों (बालिकाओं) को जीवित गाड़ देने अथवा मूर्तियों को बलि स्वरूप भेंट चढ़ाने की ओर है।

[4]अर्थात अल्लाह तआला अपने अधिकार शक्ति एवं सामर्थ्य के आधार पर उनके विचार तथा अधिकारों की स्वतन्त्रता को समाप्त कर देता, तो फिर नि:संदेह यह वह कार्य नहीं करते जो वर्णित हुए। परन्तु ऐसा करना चूंकि दबाव होता, जिसमें मनुष्य की परीक्षा नहीं हो सकती थी, जबकि अल्लाह तआला मनुष्य को विचार तथा अधिकार की स्वतन्त्रता प्रदान करके परीक्षा लेना चाहता है, इसलिए अल्लाह ने दबाव नहीं डाला।

[5]इस में उन के मूर्खता काल के विधान तथा अनृत के तीन अन्य रूपों का वर्णन किया गया है (अर्थात निषेध) यद्यपि धातु है किन्तु कर्म अर्थात निषेधित के अर्थ में है, यह प्रथम रूप है कि पशु अथवा किसी खेत की पैदावार का प्रयोग निषेधित बना लेते थे तथा कहते

وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾

(अर्थात सवारी) वर्जित है[1] तथा कुछ पशु पर (वध करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते अल्लाह पर झूठ बाँधने के लिये,[2] अल्लाह उन्हें उनके आरोप का प्रतिकार शीघ्र देगा।

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾

(१३९) तथा उन्होंने कहा कि इन पशुओं के गर्भ में जो है वह विशेष रूप से हमारे पुरुषों के लिये है तथा हमारी पत्नियों पर निषेध है तथा यदि मृत हो तो सभी उसमें भागीदार हैं[3] वह (अल्लाह) उन के इस कथन का बदला शीघ्र देगा,[4] यथावत वह निपुण ज्ञाता है।

थे कि इसे वही खायेगा जिसे हम अनुमति देंगे। यह अनुमति मूर्तियों के सेवकों तथा पुरोहितों के लिये ही होती थी।

[1]यह दूसरा रूप है कि वह विभिन्न पशुओं को मूर्तियों के नाम पर मुक्त कर देते जिन से भारवाहन अथवा सवारी का काम नहीं लेते जैसे कि "बहीरः "तथा "साइबा "आदि का सविस्तार विवरण पहले आ चुका है।

[2]यह तीसरा रूप है कि वह वध करते समय मात्र मूर्तियों का नाम लेते, अल्लाह का नाम नहीं लेते, कुछ ने इस का भावार्थ यह लिया है कि इन पशुओं पर सवार होकर वह "हज" के लिये नहीं जाते थे, जो भी हो यह सब उनकी स्वयं कृत बातें थीं जिन्हें वह अल्लाह का आदेश सिद्ध करना चाहते थे।

[3]यह एक अन्य रूप है कि जो पशु वह अपनी मूर्तियों के नाम दान कर देते थे, इन में से कुछ के विषय में कहते थे कि इनका दूध तथा उनके गर्भ से जो जन्म जात जीवित बच्चा हमारे पुरुषों के लिए उचित है, स्त्रियों के लिए वर्जित है। हाँ यदि बच्चा मरा हुआ पैदा होता है, तो उसके खाने में स्त्री-पुरुष समान हैं।

[4]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह मिथ्यालाप करते हैं तथा अल्लाह पर झूठ मढ़ते हैं, उन पर शीघ्र अल्लाह तआला उन्हें दण्ड देगा। वह अपने निर्णय में पूर्ण सक्षम है। तथा अपने भक्तों के विषय में भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है तथा अपने ज्ञान तथा सामर्थ्य के अनुसार वह बदला तथा दण्ड का प्रबन्ध करेगा।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوٓا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَآءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾

(१४०) वे हानि में पड़ गये जिन्होंने बिना ज्ञान के मूर्खता के कारण अपनी संतान को हत किया तथा अल्लाह ने जो जीविका प्रदान की उसे वर्जित कर लिया अल्लाह पर झूठ बांधने के कारण, वे विपथ हो गये तथा सत्य मार्ग पर नहीं रह गये।

وَهُوَ الَّذِيٓ أَنشَأَ جَنَّٰتٍ مَّعْرُوشَٰتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَٰتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُۥ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَٰبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَٰبِهٍ ۚ كُلُوا مِن ثَمَرِهِۦٓ إِذَآ أَثْمَرَ وَءَاتُوا حَقَّهُۥ يَوْمَ حَصَادِهِۦ ۖ وَلَا تُسْرِفُوٓا ۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٤١﴾

(१४१) वही है जिसने लताओं तथा बिन लताओं के बाग़ात पैदा किये [1] तथा खजूर एवं खेतियाँ जिन के स्वाद विभिन्न प्रकार के हैं। तथा ज़ैतून तथा अनार समरूप तथा असम।[2] जब फल लायें तो तुम इनको खाओ तथा उसकी कटिया के दिन उसका देय अदा करो[3] तथा अपव्यय न करो।[4] नि:सन्देह अल्लाह

---

[1] معروشات (मअरूशात) का धातु (अर्श) है, जिसका अर्थ उच्च करना तथा ऊपर उठाने के हैं तात्पर्य कुछ वृक्षों की लतायें हैं जो ऊपर (छप्पर छतों आदि) पर चढ़ाई जाती हैं। जैसे अंगूर तथा कुछ तरकारियों की लतायें हैं। परन्तु कुछ लतायें जो ऊपर नहीं चढ़ाई जाती हैं, अपितु धरती पर ही फलती-फूलती हैं। जैसे खरबूज़े तथा तरबूज़े आदि कि लतायें हैं। अथवा वह तने वाला वृक्ष है जो लता के रूप में नहीं होता। यह सभी लतायें, वृक्ष, तथा खजूर के वृक्ष एवं कृषि, जिनके स्वाद एक-दूसरे से भिन्न होते हैं तथा जैतून एवं अनार, सभी का पैदा करने वाला अल्लाह है।

[2] इसके लिए देखिए आयत संख्या ९९ की व्याख्या।

[3] अर्थात जब खेत से अनाज काट कर साफ कर लो, तथा वृक्ष से फल तोड़ लो, तो उसका देय अदा करो। इस से तात्पर्य कुछ विद्वानों के निकट स्वेच्छा दान है कुछ के निकट अनिवार्य दान अर्थात दसवाँ भाग (तराई की भूमी की उपज हो) अथवा बीसवाँ भाग (यदि धरती कुऐं, ट्यूब वेल अथवा नहर के पानी से सींची जाती हो)

[4] अर्थात दान-पुण्य भी शक्ति से अधिक न करो, ऐसा न हो कि कल तुम्हें आवश्यकता न पड़ जाये, कुछ कहते हैं कि इसका सम्बन्ध अधिकारियों से है अर्थात दान तथा अनिवार्य धर्मदान की वसूली में सीमा का उल्लंघन न करो तथा इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि आयत के शब्दों से स्पष्ट है तथा अधिक उचित यही है कि खाने में अधिक व्यय न करो

अपव्यय कारियों से प्रेम नहीं करता ।[1]

(१४२) तथा पशुओं में कुछ बोझ लादने योग्य तथा कुछ धरती से लगे हुये बनाया ।[2] खाओ, जो तुम्हें अल्लाह ने दिया है[3] तथा शैतान के पद् चिन्हों का अनुसरण न करो ।[4] वस्तुत: वह तुम्हारा शत्रु है ।

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ

(१४३) वह आठ प्रकार के जोड़े (बनाये)[5] भेंड़

ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ

क्योंकि अधिक खाना शरीर तथा बुद्धि दोनो के लिए हानिकारक है। व्यय के ये सभी भाव अपने-अपने स्थान पर उचित हैं, इसलिए ये सारे भावार्थ का तात्पर्य हो सकता है।

[1]इसलिए अपव्यय किसी भी चीज में प्रिय नहीं है, दान-पुण्य के कार्य में अथवा अन्य किसी कार्य में। प्रत्येक कार्य में मध्यम तथा सीमा के भीतर शक्ति अनुसार उचित तथा प्रिय है और इसी पर बल दिया गया है।

[2] حَمُولَة भारवाहक से तात्पर्य ऊँट, बैल, गधा तथा खच्चर आदि हैं। فرشا से तात्पर्य धरती से लगे पशु जैसे भेड़ बकरी, दुन्बा आदि है जिनके तुम दूध पीते हो अथवा माँस खाते हो।

[3]अर्थात फलों, अनाजों तथा पशुओं से, इन सभी को अल्लाह ने पैदा किया है और उनको तुम्हारे लिए भोजन बनाया है।

[4]जिस प्रकार से मूर्तिपूजक, इसके अनुगामी बन गये तथा अवर्जित पशु को भी अपने ऊपर वर्जित कर लिया अर्थात अल्लाह की उचित की हुई चीज़ को अनुचित तथा अनुचित को उचित करने में शैतान का अनुसरण कर रहे हैं।

[5]अर्थात 'उसी अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किये'। इस आयत में 'अज़वाज' शब्द का प्रयोग हुआ है जो 'ज़ौज' का बहुवचन है। एक ही जाति के नर तथा मादा को 'ज़ौज' कहते हैं तथा उन दोनों में से प्रत्येक को भी 'ज़ौज' कह लिया जाता है क्योंकि प्रत्येक एक-दूसरे का 'ज़ौज' होता है। क़ुरआन में इस स्थान पर भी 'अजवाज' प्रत्येक के लिए ही प्रयोग हुआ है अर्थात आठ पशु अल्लाह ने पैदा किये जो आपस में एक-दूसरे के जोड़े हैं। यह नहीं कि आठ जोड़े पैदा किये, इस प्रकार से उनकी संख्या १६ हो जायेगी जो आयत के अगले भाग के अनुसार ठीक नहीं है।

وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ط قُلْ ءَآلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ط نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾

में दो बकरी में दो,[1] कहिये कि अल्लाह ने दोनों के नर को वर्जित किया है अथवा दोंनो की मादा को ? अथवा उसको जो दोंनो मादा के गर्भाशय में सम्मिलित है ?[2] मुझे ज्ञान के साथ बताओ यदि सत्यवादी हो |[3]

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ط قُلْ ءَآلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ط اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ج فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ط اِنَّ

(१४४) तथा ऊँट में दो तथा गाय में दो, आप कहिए कि क्या अल्लाह ने दोनों मादा को अथवा दोनों नरों को ? अथवा उस को जिस पर दोनों मादा के गर्भाशय सम्मिलित हो | क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब अल्लाह ने इस का आदेश किया ?[4] फिर उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये [5] ताकि बिना किसी

---

[1]यह आठ का पूरक है तथा तात्पर्य दो प्रकार से नर तथा मादा है अर्थात भेड़ से नर और मादा तथा बकरी से नर-मादा पैदा किये | (भेड़ में दुम्बा भी सम्मिलित है)

[2]मूर्तिपूजक स्वयं ही कुछ पशुओं को अपने ऊपर हराम कर लेते थे, उसके आधार पर अल्लाह तआला पूछ रहा है कि अल्लाह तआला ने उनके नरों को हराम किया अथवा मादाओं को अथवा उस बच्चे को जो दोनों मादाओं के गर्भ में हैं ? अर्थ यह है कि अल्लाह ने तो किसी को हराम नहीं किया है |

[3]तुम्हारे पास हराम करने का कोई विश्वस्त प्रमाण है तो प्रस्तुत करो कि 'बहिर:', 'सायबा', 'बसील:', तथा 'हाम' आदि इस प्रमाण के अनुसार हराम हैं |

[4]अर्थात तुम जो कुछ पशुओं को हराम कह देते हो, क्या जब अल्लाह ने हराम का आदेश दिया था तो तुम उसके पास उपस्थित थे ? अर्थात अल्लाह ने इनको हराम करने का आदेश नहीं दिया | यह सब तुम्हारा झूठ है तथा अल्लाह पर मिथ्यारोपण करते हो |

[5]अर्थात यही सबसे बड़ा अत्याचार है | हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अम्र बिन लुही को नरक में आंत खींचते हुए देखा | उसने सर्वप्रथम मूर्तियों के नाम पर वसीला तथा 'हाम' आदि पशु छोड़ने की श्रृंखला आरम्भ की | (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: मायद:, मुस्लिम किताबुल जन्न:) इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं यह अम्र बिन लुही, ख़ुज़ाआ क़बीले के सरदारों में से था, जोजुरहम क़बीले के पश्चात ख़ाना-ए-कआबा

ज्ञान लोगों को कुपथ बना दे। निस्सन्देह अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्गदर्शन नहीं देता।

اللّٰهَ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِيۡنَ ۝

(१४५) आप कहिये कि मुझे जो आदेश किया गया है उस में किसी भक्षी के लिये कोई खाद्य वर्जित नहीं पाता, परन्तु यह कि वह मृत हो अथवा बहता रक्त अथवा सूअर का मांस, इसलिये कि वह घृणित अपवित्र है अथवा जो अधर्मी हो जिस पर अल्लाह से अन्य का नाम पुकारा गया हो,[1] फिर जो कोई

قُلْ لَّاۤ اَجِدُ فِىۡ مَاۤ اُوۡحِىَ اِلَىَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطۡعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنۡ يَّكُوۡنَ مَيۡتَةً اَوۡ دَمًا مَّسۡفُوۡحًا اَوۡ لَحۡمَ خِنۡزِيۡرٍ فَاِنَّهٗ رِجۡسٌ اَوۡ فِسۡقًا اُهِلَّ لِغَيۡرِ اللّٰهِ بِهٖ‌ ۚ فَمَنِ اضۡطُرَّ غَيۡرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝

का सरक्षक बना था। उसने सर्वप्रथम इब्राहीम के धर्म में परिवर्तन किया तथा हिजाज में मूर्तियाँ स्थापित करके लोगों को मूर्तिपूजा करने का आमन्त्रण दिया तथा मूर्ति के रीति-रीवाज को प्रचलित किया (इब्ने कसीर) अर्थात आयत का उद्देश्य यह है कि अल्लाह तआला ने वर्णित उपरोक्त आठ प्रकार के पशु पैदा करके भक्तों पर उपकार किया है, उन में से कुछ को स्वयं निषेध कर लेना, अल्लाह के उपकार को अस्वीकार करना तथा शिर्क का कार्य है तथा इसका कर्ता मिश्रणवादी कहलायेगा।

[1]इस आयत में जिन चार वर्जित का वर्णन है उसका वर्णन सूर: बक़र: की आयत-१७३ की व्याख्या में विस्तारपूर्वक हो चुका है। यहाँ पर यह बिन्दु स्पष्ट करने योग्य है कि यहाँ पर इन चार अवैध को सीमा के रूप में वर्णित किया गया अर्थात इनके अतिरिक्त सभी उचित हैं। जब कि वास्तविकता यह है कि धार्मिक नियमों में इन चार के अतिरिक्त भी कई वर्जित हैं। फिर यहाँ सीमित क्यों किया गया ? बात वास्तव में यह है कि इससे पूर्व मूर्तिपूजकों के मूर्खता काल की रीतियों तथा उनके खण्डन का वर्णन हो रहा था। उन्हीं में कुछ पशुओं का वर्णन आया है, जो उन्होंने स्वयं अपने ऊपर वर्जित कर रखे थे। इस विषय में यह कहा जा रहा है कि मुझ पर जो प्रकाशनायें (वह्यी) के द्वारा विदित हो रहा है, उसमें यह वर्जित तो उचित हैं अर्थात वह वर्जित नहीं हैं, क्योंकि अल्लाह ने जिन वर्जित का वर्णन किया है, उसमें ये सम्मिलित नहीं हैं। यदि वे निषेध होते तो अल्लाह तआला उनका वर्णन अवश्य करता। इमाम शौकानी ने इसको इस प्रकार स्पष्ट किया है कि यदि यह आयत मक्की (मक्के शहर में उतरी) न होती, तो अवश्य निषेध की यह सीमा स्वीकार की जा सकती थी, परन्तु चूँकि इसके पश्चात् स्वयं क़ुरआन ने *सूर: अल-मायद:* में कुछ अन्य अवैध का वर्णन किया है तो अब वह भी इनमें सम्मिलित होंगे। इसके अतिरिक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पशु-पक्षियों के हराम-हलाल का ज्ञान करने के दो

विवश हो, जब कि द्रोही तथा अतिक्रमणकारी न हो तो अल्लाह क्षमावान कृपा निधि है।

(१४६) तथा हम ने यहूदियों पर नाख़ून वाले जानवर वर्जित कर दिये[1] तथा गाय एवं बकरी की वसा उन पर वर्जित कर दी, परन्तु जो दोनों की पीठ एवं आँतों में हो अथवा जो किसी अस्थि से लिपटी हो,[2] हमने यह उन के (धर्म) द्रोह का प्रतिकार दिया,[3] तथा हम सत्यवादी हैं।[4]

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٤٦﴾

(१४७) यदि वह आप को झुठलायें तो कहिये कि तुम्हारे स्वामी (अल्लाह) की कृपा अति

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ

नियम बतायें हैं व जिनका स्पष्टीकरण भी उपरोक्त वर्णित आयात की व्याख्या में उपस्थित है। أو فسقا का संबन्ध لحم خنزير से है इसलिए अर्थ है أي ذبح على الأصنام "वह पशु जो मूर्तियों के नाम पर अथवा उनके थानों पर उनकी निकटता प्राप्त करने के लिए वलि चढ़ायें जायें।" अर्थात ऐसे पशुओं को यद्यपि बलि चढ़ाते समय अल्लाह ही का नाम क्यों न लिया गया हो, तब भी वर्जित हैं, क्योंकि उनसे अल्लाह की निकटता नहीं, अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की निकटता प्राप्त करने का उद्देश्य है। फिस्क़ (भ्रष्टता) अल्लाह की आज्ञा पालन से निकलने का नाम है। प्रभु ने आदेश दिया है कि उस के नाम पर जानवर बलिदान किया जाये तथा उसी की निकटता, प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये किया जाये, यदि ऐसा नहीं किया जायेगा, तो अवज्ञा तथा मिश्रणवाद है।

[1]नखधारी से तात्पर्य बिना खुर फटे पशु तथा वह पक्षी हैं जिन की उँगलियाँ अलग-अलग न हों जैसे ऊँट, शुर्तुमुर्ग, बत्तख क़ाज़ आदि। कुछ ने इस का अर्थ खुर वाले पशु एवं शिकारी पक्षी लिया है जो पंजे से शिकार करते हैं। (कुर्तबी)

[2]अर्थात जो वसा गाय अथवा बकरी की पीठ में हो अथवा दुम्बे की चक्की अथवा अंतड़ियों (अथवा ओझड़ी) या अस्थियों के साथ मिली हुई हो वसा की वह मात्रा उचित थी।

[3]यह चीजें हम ने दण्ड के रूप में उन पर वर्जित की थीं अर्थात यहूदियों का यह दावा कि यह आदरणीय याक़ूब ने अपने ऊपर निषेध कर ली थीं, तथा हम तो उनके अनुकरण में वर्जित समझते हैं, सही नहीं है।

[4]इसका अर्थ यह है कि यहूदी वस्तुतः अपने दावे में झूठे हैं।

عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾

विस्तृत है ।[1] तथा उस का कोप पापियों से फेरा नही जाता ।[2]

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾

(१४८) मिश्रणवादी कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज मिश्रण नहीं करते, न किसी वस्तु को वर्जित बनाते ।[3] इसी प्रकार इनसे पूर्व के लोग झुठलाये यहाँ तक की हमारा कोप चख लिये,[4] कहिये कि क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है तो उसे हमारे लिये निकालो (व्यक्त करो) ।[5] तुम कल्पना का अनुसरण करते हो तथा मात्र अनुमान लगाते हो ।

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٤٩﴾

(१४९) आप कहिये कि फिर अल्लाह ही का तर्क प्रभावशाली है, अत: अगर वह चाहे तो तुम सभी को मार्गदर्शन दे सकता है ।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَٰذَا ۖ فَإِنْ شَهِدُوا

(१५०) आप कहिये कि अपने उन साक्षियों को लाओ जो यह गवाही दें कि अल्लाह ने इसे

---

[1]इसलिए झुठलाने पर भी यातना देने में शीघ्रता नहीं करता ।

[2]अर्थात समय देने का अर्थ यह नहीं कि अल्लाह की यातना से सदैव सुरक्षित हैं, वह जब भी यातना देने का निर्णय ले लेगा, तो उसे कोई टाल नहीं सकेगा ।

[3]यह वही भ्रम है जो अल्लाह की इच्छा एवं प्रसन्नता को एकार्थ समझ लेने के कारण होता है । यद्यपि यह एक-दूसरे से भिन्न है जिसको पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है ।

[4]अल्लाह तआला ने इस भ्रम का निराकरण इस प्रकार किया है कि यह शिर्क अल्लाह की प्रसन्नता का द्योतक था, तो फिर उन पर प्रकोप क्यों आया ? अल्लाह का प्रकोप इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की इच्छा अन्य बात है तथा अल्लाह की प्रसन्नता अन्य बात ।

[5]अर्थात अपने दावे के लिए कोई प्रमाण है तो प्रस्तुत करो । परन्तु उन के पास प्रमाण कहाँ ? वहाँ तो केवल कल्पना तथा भ्रम है ।

فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُم بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٠﴾

निषेध किया है,[1] फिर यदि वह गवाही दें तो आप उनके साथ गवाही न दें [2] तथा उनकी मनमानी विचारों का अनुसरण न करें जिन्होंने हमारी आयतों को मिथ्या कहा तथा जो परलोक के प्रति विश्वास नहीं करते तथा (अन्य को) अपने पोषक के समान मानते हैं।[3]

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا

(१५१) आप कहिये कि आओ मैं पढ़कर सुनाऊँ कि तुम को अल्लाह ने किससे मना किया है।[4] वह ये कि उसके साथ किसी वस्तु का मिश्रण न करो।[5] तथा माता-पिता के साथ उपकार

---

[1]अर्थात वह पशु जिनको मूर्तिपूजकों ने वर्जित बना दिया था।

[2]क्योंकि उनके पास केवल झूठ तथा मिथ्यारोपण के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

[3]अर्थात उसके समान मान कर शिर्क (मिश्रण) करते हैं।

[4]अर्थात निषेध वह नहीं है जिन को तुम ने बिना धार्मिक प्रमाण के, मात्र अपने मिथ्या संदेह तथा शंका युक्त विचारों के आधार पर अवैध बना दिया है। अपितु अवैध तो वह वस्तु है जिस को तुम्हारे प्रभु ने वर्जित किया है, क्योंकि तुम्हारा जन्मदाता तो तुम्हारा पालनहार है तथा हर वस्तु का उसी को ही ज्ञान है। इसलिए उसी को यह अधिकार प्राप्त है कि वह जिस चीज को चाहे हलाल (उचित) तथा जिस वस्तु को चाहे हराम (अनुचित) करे। अत: मैं तुम्हें उन बातों की विस्तृत जानकारी देता हूँ, जिनकी चेतावनी तुम्हारे प्रभु ने दी है।

[5] لا تشركوا से पूर्व أوصاكم इसमें निहित है। अर्थात अल्लाह तआला ने तुम्हें इस बात का आदेश दिया है कि उसके साथ किसी वस्तु को तुम साझीदार मत बनाओ। शिर्क महापाप है, जिस के लिए क्षमा नहीं है, मुशरिक (मिश्रणवादी) पर स्वर्ग निषेध तथा नरक निश्चित है। क़ुरआन मजीद में सारी चीज़ों की विभिन्न रूप से पुनरावृति हुई है। तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हदीस में इसका सविस्तार वर्णन किया है, इसके उपरान्त वास्तविकता यह है कि लोग शैतान के बहकाने में आकर शिर्क का सामान्य रूप से कार्य करते हैं।

اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِیَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾

करो ।[1] तथा अपनी संतान को दरिद्रता के कारण हत न करो, हम तुम को तथा उनको जीविका प्रदान करते हैं ।[2] तथा व्यक्त एवं गुप्त अश्लीलता के निकट न जाओ तथा उस प्राण को जिससे अल्लाह ने मना किया है हत न करो परन्तु वैधानिक करण से ।[3] तुम को उसने इसी का निर्देश दिया है ताकि तुम समझो ।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْیَتِیْمِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ حَتّٰی یَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ

(१५२) तथा अनाथ के माल के निकट न जाओ किन्तु अति उचित ढंग से यहाँ तक कि वह तरुण अवस्था को पहुंचे,[4] तथा न्याय के साथ

---

[1]अल्लाह तआला के एक होने तथा उसके आदेशों के पालन करने के उपरान्त यहाँ भी (तथा क़ुरआन में अन्य स्थान पर भी) माता-पिता के साथ दया-भाव का व्यवहार करने का आदेश दिया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रभु के आदेशों के पालन के उपरान्त माता-पिता के आदेशों के पालन की बड़ी विशेषता है । यदि किसी ने इस उप-पालक (माता-पिता के आदेशों का पालन तथा उनसे दया भाव का व्यवहार करने) की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया तो वह महापोषक के आदेशों का पालन भी नहीं कर सकता अर्थात उसमें भी असफल रहेगा ।

[2]अज्ञानकाल का यह अत्यधिक कुरूप कार्य आज भी परिवार नियोजन के रूप में विद्यमान है तथा पूरे संसार में इस के प्रचार-प्रसार का कार्य हो रहा है । अल्लाह तआला इससे सुरक्षित रखे ।

[3]अर्थात बदले के रूप में न केवल उचित है, अपितु यदि मृतक के सम्बन्धी क्षमा न करें तो यह हत्या अति आवश्यक हो जाती है ।

﴿وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ﴾

"प्रति हिंसा में तुम्हारा जीवन है ।" (*सूरः अल-बक़रः-१७९*)

[4]जिस अनाथ का संरक्षण तुम्हारे अधिकार में आये, उसके लिए अच्छा सोचना तुम्हारा अनिवार्य कर्तव्य है । इसकी भलाई के लिए आवश्यक है कि यदि उसके पास माल है अर्थात उत्तराधिकार में से उसका भाग मिला है चाहे नगद हो अथवा ज़मीन-जायदाद के रूप में, यदि उस समय वह उसको सुरक्षित रखने में सक्षम न हों तो उसके माल की उस समय तक निःस्वार्थ भाव से रक्षा की जाये जब तक कि वह वयस्क अवस्था को न पहुँच

माप एवं तौल पूरा करो,[1] हम किसी पर उस की शक्ति से अधिक भार नहीं रखते,[2] तथा जब बोलो तो न्याय करो यद्यपि वह निकट संबंधी हो तथा अल्लाह से किया वचन पूरा करो, उसने तुम लोगों को इसी का आदेश दिया है ताकि तुम स्मरण करो।	وَ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٢﴾
(१५३) तथा यही मेरा सीधा मार्ग,[3] है अतः उसी का आचरण करो।[4] तथा अन्य पथों पर	وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ

जाये। यह न हो कि उसके वयस्क होने से पूर्व उसके माल, जमीन तथा जायदाद को ठिकाने लगा दिया जाये।

[1]माप-तौल में कमी करना, लेते समय तो पूरा माप-तौल से लेना, परन्तु देते समय ऐसा न करना, अपितु डंडी मारकर दूसरों को कम देना, यह अत्यधिक नीच तथा सभ्यता से गिरी हुई बात है। आदरणीय शुऐब के समुदाय में यही रोग था, जो उनके विनाश का कारण बना।

[2]यहाँ इस बात के वर्णन का यह उद्देश्य है कि जिन बातों से हम तुम्हें सावधान कर रहे हैं, यह नहीं कि इन को कार्यान्वित न किया जा सके अथवा कठिन हो। यदि ऐसा होता तो हम इसका आदेश ही न करते। इसलिए हम किसी को उसकी शक्ति से अधिक करने का आदेश ही नहीं देते। इसलिए यदि आख़िरत में मोक्ष तथा संसार में सम्मान चाहते हो तो, अल्लाह के इन आदेशों के अनुसार कर्म करो तथा उन से आनाकानी न करो।

[3]'यह' से तात्पर्य क़ुरआन मजीद है अथवा इस्लाम धर्म अथवा वे आदेश जो विशेषता से इस आयत में वर्णन किये गये हैं। तथा वह है एकेश्वरवाद, मरणोपरान्त के परिणाम तथा रिसालत। तथा यही इस्लाम धर्म के तीन मूलाधार हैं, जिसकी धुरी पर पूरे धार्मिक नियम घूमते हैं। इसलिए इसका जो भी अर्थ लिया जाये, एक ही भाव है।

[4]"सीधे मार्ग" को एकवचन के रूप में वर्णन किया गया है, क्योंकि अल्लाह का अथवा क़ुरआन का, तथा रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग एक ही है। एक से अधिक नहीं। इसलिए अनुकरण मात्र उसी एक मार्ग का करना है। किसी अन्य का नहीं। यही इस्लामी समुदाय की एकता तथा अखण्डता की आधारशिला है जिस से हटकर यह समुदाय विभिन्न गुटों में बँट गया है। यद्यपि इसको चेतावनी दी गयी थी कि "दूसरे मार्ग पर मत चलो कि वह मार्ग तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देंगे।" अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

न चलो अन्यथा तुम्हें उस के मार्ग से विचलित कर देंगे, उसने तुम को इसी का आदेश दिया है ताकि तुम सुरक्षित रहो।

فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِۦ ذَٰلِكُمْ وَصَّىٰكُم بِهِۦ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾

(१५४) फिर हम ने (ईशदूत) मूसा को उस पर कृपा पूरी करने के लिये जिस ने सदाचार किया तथा प्रत्येक विषय के विवरण एवं मार्गदर्शन तथा दया के लिये धर्मशास्त्र (तौरात) प्रदान किया[1] ताकि वे अपने पोषक से मिलने पर विश्वास करें।

ثُمَّ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ تَمَامًا عَلَى ٱلَّذِىٓ أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُم بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾

(१५५) तथा यह (पवित्र क़ुरआन) एक शुभ शास्त्र[2] है जिसे हम ने उतारा, अतः तुम इस

وَهَٰذَا كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ مُبَارَكٌ فَٱتَّبِعُوهُ وَٱتَّقُوا۟ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾

﴿أَنْ أَقِيمُوا۟ ٱلدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا۟ فِيهِ﴾

"धर्म को स्थापित करो तथा इसमें फूट न डालो।" (*सूरः अश-शूरा-१३*)

अर्थात फूट तथा भेद की कदापि आज्ञा नहीं है। इसी बात को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से हदीस में वर्णन किया कि अपने हाथ से एक सरल रेखा खींची तथा फ़रमाया कि "यह अल्लाह का सीधा मार्ग है।" तथा कुछ अन्य रेखायें उसके दाहिने तथा बायें खींची तथा फ़रमाया "ये मार्ग हैं जिन पर शैतान बैठा हुआ है तथा वह उनकी ओर लोगों को बुलाता है।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत पढ़ी जो व्याख्या के लिए प्रस्तुत है (मुसनद अहमद भाग १, पृष्ठ ४६५,४३५, अहमद शाकिर ने इसे सहीह कहा है। देखिये मुसनद अहमद बतालीक अहमद शाकिर संख्या ४१४२) अपितु इब्ने माजा के कथन में इससे अधिक स्पष्टीकरण होता है कि आप ने दाहिने-बायें दो-दो रेखायें खींची अर्थात कुल चार रेखायें खींची। तथा उन्हें शैतान का मार्ग बताया।

[1]यह पवित्र क़ुरआन की अपनी शैली है कि जिसे अनेक स्थानों पर दोहराया गया है, कि जहाँ पवित्र क़ुरआन की चर्चा होती है वहाँ (तौरात) की तथा जहाँ तौरात की चर्चा हो वहाँ पवित्र क़ुरआन की भी चर्चा कर दी जाती है। इसके अनेक उदाहरण, हाफ़िज इब्ने कसीर ने प्रस्तुत किये हैं, यहाँ इसी शैली के अनुसार तौरात तथा उसके इस गुण का वर्णन है कि वह भी अपने युग में एक परिपूर्ण धर्मग्रन्थ थी, जिसमें उनके धर्म की सभी आवश्यक बातें सविस्तार वर्णित थीं, तथा मार्गदर्शन एवं दया का स्रोत थी।

[2]इससे तात्पर्य पवित्र क़ुरआन है जिस में लोक-परलोक के शुभ तथा लाभ सीमित हैं।

का अनुसरण करो ताकि तुम पर दाया की जाये।

أَنْ تَقُولُوٓا إِنَّمَآ أُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ص وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِينَ ﴿١٥٦﴾

(१५६) ताकि यह न कहो[1] कि हम से पूर्व दो समुदायों पर धर्मशास्त्र (तौरात तथा इंजील) उतारी गई तथा हम उनके अध्ययन से अंजान रहे।[2]

أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّآ أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ أَهْدٰى مِنْهُمْ ج فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ج فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ط سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿١٥٧﴾

(१५७) अथवा तुम यह न कहो कि यदि हम पर धर्मशास्त्र अवतरित होता तो हम उन से अधिक सत्य मार्ग पर होते तो तुम्हारे पास तुम्हारे पोषक की ओर से स्पष्ट तर्क एवं मार्गदर्शन तथा दया आ चुकी है,[3] फिर उससे अधिक पापी कौन है जिसने अल्लाह की आयतों को मिथ्या कहा तथा उन से फिर गया,[4] हम घोर यातना अपनी आयतों से फिरने के कारण उन्हें देंगे जो फेर रहे हैं।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّآ أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ

(१५८) वह फ़रिश्तों (सुरों) के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं अथवा अपने स्वामी (अल्लाह) के आने की अथवा आप के पालनहार की कुछ

---

[1]अर्थात यह क़ुरआन इसलिए उतारा ताकि तुम यह न कहो। दो सम्प्रदायों से तात्पर्य यहूदी तथा इसाई हैं।

[2]इसलिए कि वह हमारी भाषा में न थी। अतएव इस बहाने को समाप्त करने के लिए क़ुरआन अरबी भाषा में उतार दिया।

[3]अर्थात यह बहाना भी तुम नहीं बना सकते।

[4]अर्थात मार्गदर्शक तथा कृपा फल धर्मशास्त्र के उतरने के पश्चात अब जो व्यक्ति मार्ग दर्शन (इस्लाम) का मार्ग अपना कर अल्लाह की कृपा का पात्र नहीं बनता अपितु झुठलाने तथा विमुखता को अपनाता है, तो उससे बड़ा अत्याचारी कौन है ? (सदफ़) का अर्थ विमुख होना तथा "दूसरों को रोकना" भी किया गया है।

بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِىْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِىْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا

निशानी (लक्षण) आने की ?[1] जिस दिन तुम्हारे पोषक की ओर से चिन्ह आ जायेंगे किसी प्राणी को उसका विश्वास काम न देगा जिस ने उससे पूर्व विश्वास न किया हो[2] अथवा अपने विश्वास में कोई शुभ कर्म न किया हो,[3]

---

[1]क़ुरआन मजीद को उतारकर तथा परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) के द्वारा तर्क प्रमाणित कर दिया है। परन्तु अब भी यह कुमार्ग से नहीं रुकते तो क्या ये इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि उनके पास फ़रिश्ते (यमदूत) आयें अर्थात उनके प्राण निकालने के लिए तो उस समय विश्वास करेंगे ? अथवा आप का प्रभु उनके पास आये अर्थात प्रलय हो जाये तथा ये अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत किये जायें। उस समय ईमान लायेंगे। अथवा आपके प्रभु की बड़ी निशानी आये। जैसे प्रलय के निकट सूर्य का पूर्व के बजाय पश्चिम से उदय होना। तो इस प्रकार की बड़ी निशानी देख कर विश्वास करेंगे ? अगले वाक्य में इसको स्पष्ट किया जा रहा है कि यदि वे इस प्रकार की प्रतीक्षा में हैं, तो बहुत बड़ी मूर्खता का प्रदर्शन कर रहे हैं। क्योंकि बड़े लक्षण के प्रकट होने के पश्चात अनिष्ठ की निष्ठा तथा कुकर्मी एवं अत्याचारी की क्षमा-याचना स्वीकार नहीं होगी। सहीह हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "प्रलय नहीं होगी, जब तक कि सूर्य (पूर्व के विपरीत) पश्चिम से उदय न हो, बस जब ऐसा होगा तथा लोग उसे पश्चिम से उदय होते देखेंगे, तो सब ईमान ले आयेंगे।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी।

﴿لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ﴾

"उस समय ईमान लाना किसी को लाभकारी नहीं होगा, जो इससे पूर्व ईमान न लाया होगा।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर अल-अनाम)

[2]अर्थात काफ़िरों का ईमान न लाभकारी होगा न स्वीकार होगा।

[3]इसका अर्थ है कि यदि कोई पापी ईमान वाला अपने पापों की क्षमा-याचना करेगा तो उसकी याचना स्वीकार न होगी तथा उसके पश्चात् पुण्य कार्य अस्वीकार होगा जैसाकि हदीस से भी इसकी पुष्टि होती है।

إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿١٥٨﴾

आप कहिये कि तुम प्रतीक्षा करो हम (भी) प्रतीक्षा कर रहे हैं ।[1]

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾

(१५९) निःसन्देह जिन्होंने अपना धर्म विभाजित कर दिया तथा अनेक धार्मिक सम्प्रदाय बन गये[2] आप का उन से कोई सम्बंध नहीं, उनका निर्णय अल्लाह के पास है फिर उन्हें उससे सूचित करेगा जो वह करते रहे हैं ।

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾

(१६०) जो व्यक्ति पुण्य कार्य करेगा उसे उसके दस गुना मिलेंगे ।[3] तथा जो कुकर्म करेगा उसे उसके समान दण्ड मिलगा ।[4] तथा उन लोगों पर अत्याचार न होगा ।

---

[1]यह ईमान न लाने वालों तथा याचना न करने वालों के लिए चेतावनी है तथा सावधान किया जा रहा है । क़ुरआन करीम में यही विषय *सूरः मोहम्मद*-१८ तथा *सूरः मोमिन*-८४ तथा ८५ में वर्णन किया गया है ।

[2]इससे कुछ लोग यहूदी तथा ईसाई तात्पर्य लेते हैं, जो विभिन्न गुटों में बँटे हुए थे । कुछ मूर्तिपूजकों को लेते हैं जिनमें कुछ फ़रिश्तों की, कुछ सितारों की, कुछ विभिन्न मूर्तियों की पूजा करते थे । परन्तु यह विषय सामान्य है जिनमें काफ़िर तथा मूर्तिपूजकों सहित वे सभी लोग भी सम्मिलित हैं जो अल्लाह के धर्म तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग को छोड़ कर दूसरे धर्म अपना कर अन्य मार्ग अपनाकर भेद तथा फूट का मार्ग अपनाते हैं । شيعا का अर्थ है गुट तथा गिरोह तथा यह बात सभी उन समुदायों पर सत्य होती है जो धर्म के विषय में एक मत थे, परन्तु बाद में उनके विभिन्न लोगों ने अपने किसी बड़े के विचार को अन्तिम शब्द सिद्ध करके अपना मार्ग अलग कर लिया, चाहे वह मार्ग सत्य तथा पुण्य से विहीन ही हो । (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह अल्लाह तआला की कृपा तथा उपकार का वर्णन है जो वह ईमानवालों (आस्तिकों) के साथ करेगा कि एक पुण्य का बदला दस पुण्य के समान प्रदान करेगा । यह कम से कम परिणाम है, वरन् क़ुरआन तथा हदीस दोनों से सिद्ध है कि कुछ पुण्यों का बदला कई सौ गुना, अपितु हज़ारों तथा लाखों गुना तक मिलेगा ।

[4]अर्थात जिन पापों का दण्ड निर्धारित नहीं है, तथा उसके करने के पश्चात् उससे क्षमा भी नहीं माँगी अथवा उसके पुण्य उसके पापों से अधिक न हों, अथवा अल्लाह तआला ने

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾

(१६१) (आप) कह दीजिए कि मुझे मेरे प्रभु ने एक सीधा मार्ग बता दिया है कि जो शाश्वत धर्म है इब्राहीम का (जो अल्लाह के अन्य से वियोगी थे) तथा वह मिश्रणवादियों में न थे।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

(१६२) (आप) कह दीजिए कि निःसन्देह मेरी नमाज़, तथा मेरी समस्त आराधनायें तथा समस्त जीवन तथा मृत्यु सर्वलोक के पोषक अल्लाह के लिए हैं।

لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

(१६३) उसका कोई साक्षी नहीं मुझे इसी का आदेश दिया गया है तथा मैं प्रथम हूँ जिन्होंने उस के प्रति आत्म समर्पण किये।[1]

अपनी विशेष कृपा से उसे क्षमा नहीं किया हो (क्योंकि इन सभी अवस्थाओं में सांकेतिक दण्ड की परिधि में नहीं आयेगा) तो फिर अल्लाह तआला ऐसी बुराई का दण्ड देगा, तथा उसके समान ही देगा।

[1]इस अद्वैत का आमन्त्रण सभी ईशदूतों ने दिया। जैसे यहाँ अन्तिम ईशदूत (नराशंस) के मुखारविन्द से कहलवाया गया कि मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं सर्वप्रथम इसे मानता हूँ। अन्य स्थान पर अल्लाह ने फ़रमाया कि हमने आप से पूर्व जितने भी अम्बिया (ईशदूत) भेजे उन्हें यही आदेश दिया कि मेरे सिवाय कोई पूज्य नहीं। अतः मेरी ही आराधना करो। (*अल-अम्बिया*-२५) इसी प्रकार ईशदूत नूह ने भी यही घोषणा की।

﴿وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾

"मुझे यह आदेश दिया गया है कि अल्लाह के प्रति आत्मसमर्पण कारियों में प्रथम बनूँ।" (*सूरः यूनुस*-७२)

आदरणीय इब्राहीम के विषय में आता है कि जब अल्लाह ने उनसे कहा कि स्वयं को मेरे प्रति समर्पित कर दो तोउन्होंने कहा कि मैंने विश्व विधाता के प्रति आत्म समर्पण कर दिया। (*सूरः बक़रः*-१३१) आदरणीय इब्राहीम तथा याक़ूब ने अपने पुत्रों को यही अन्तिम आदेश दिया कि तुम्हारा अन्त इस्लाम धर्म पर होना चाहिए। आदरणीय यूसुफ़ ने प्रार्थना की।

﴿تَوَفَّنِي مُسْلِمًا﴾

"मुझे इस्लाम की स्थिति में संसार से उठाना।" (*सूरः यूसुफ़*-१०१)

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾

(१६४) आप कहिये कि क्या मैं अल्लाह के सिवाये किसी अन्य स्वामी की खोज करूँ जब कि वही सब का स्वामी है [1] तथा कोई प्राणी जो भी कमायेगा उसी पर होगा कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा,[2] फिर तुम्हें तुम्हारे पोषक की ओर पुनः जाना है वह तुम्हारे विभेदों के विषय में तुम्हें बतायेगा।[3]

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ

(१६५) तथा उसी ने तुम को धरती में उत्तराधिकारी[4] बनाया तथा एक के पदों को

आदरणीय मूसा ने अपने समुदाय से कहा।

﴿فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ﴾

"यदि तुम मुसलमान हो तो उसी अल्लाह पर भरोसा करो।" (सूरः यूनुस-८४)

आदरणीय ईसा ने अपने साथियों से सूरः अल-मायदः-१११ में कहा ﴿وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ﴾ इसी प्रकार अन्य नबियों ने भी तथा उनके सद्भावक अनुयायियों ने भी उसी इस्लाम का अनुकरण किया जिसमें एक अल्लाह की उपासना को मूलाधार स्थिति प्राप्त है यद्यपि कि वह धार्मिक नियम एक-दूसरे से भिन्न थे।

[1]यहाँ पोषक से तात्पर्य पूज्य बनाना है जिसका मूर्तिपूजक इंकार करते रहे हैं, तथा जो उसके पोषक होने की माँग है। परन्तु मूर्तिपूजक उसके पोषक होने को तो मानते थे तथा उसमें किसी को भी साझीदार नहीं ठहराते थे, परन्तु पूजित होने में साझीदार ठहराते थे।

[2]अर्थात अल्लाह तआला न्याय का पूर्ण प्रबन्ध करेगा तथा जिसने अच्छा अथवा बुरा जैसा कर्म किया होगा उसकी उसी के अनुसार सम्मान तथा दण्ड देगा तथा एक का बोझ दूसरे पर नहीं डालेगा।

[3]अतः यदि तुम इस अद्वैत को नहीं मानते जो सभी ईशदूतों कि एक मात्र शिक्षा रही है तो फिर तुम अपना काम करो हम अपना कर रहे हैं। प्रलय के पश्चात अल्लाह के सदन में हमारे तुम्हारे बीच निर्णय होगा।

[4]अर्थात अधिकारी बनाकर अधिकारों से अलंकृत किया अथवा एक के पश्चात दूसरे को उसका उत्तराधिकारी बनाया।

لِّيَبۡلُوَكُمۡ فِي مَآ ءَاتَىٰكُمۡۗ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ ٱلۡعِقَابِ وَإِنَّهُۥ لَغَفُورٞ رَّحِيمُۢ ١٦٥

दूसरे पर बढ़ाया ताकि जो कुछ तुम्हें प्रदान किया उसमें तुम्हारी परीक्षा ले[1] निःसंदेह तुम्हारा स्वामी शीघ्र यातना देने वाला है तथा वस्तुतः वह क्षमाशील दयानिधि है।

सूरतुल आराफ़-७

سُورَةُ الأَعۡرَافِ

सूरः अल-आराफ़ मक्का में उतरी तथा इसकी दो सौ छः आयतें हैं तथा चौबीस रूकूअ हैं।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ जो अत्यधिक कृपालु तथा अति दयालु है।

الٓمٓصٓ ١

(१) अलिफ़॰ लाँम॰ मीम॰ स्वाद।

كِتَٰبٌ أُنزِلَ إِلَيۡكَ فَلَا يَكُن فِي صَدۡرِكَ حَرَجٞ مِّنۡهُ لِتُنذِرَ بِهِۦ وَذِكۡرَىٰ لِلۡمُؤۡمِنِينَ ٢

(२) एक धर्मशास्त्र आप की ओर उतारा गया ताकि इस के द्वारा सावधान करने से आप के दिल में संकीर्णता उत्पन्न न हो [2] तथा ईमान वालों के लिये शिक्षा है।

ٱتَّبِعُواْ مَآ أُنزِلَ إِلَيۡكُم مِّن رَّبِّكُمۡ

(३) जो (धर्म विधान) आप के पोषक की ओर से उतारा गया[3] उसका अनुसरण करो तथा

---

[1]अर्थात दरिद्रता, धन, ज्ञान, अज्ञानता तथा स्वास्थ एवं रोग जिसको जो कुछ प्रदान किया है उसी में उसका उत्तराधिकारी बनाया।

[2]अर्थात इसके प्रचार से आप का मन संकुचित न हो कि कहीं नास्तिक मुझ पर मिथ्यारोपण न करें तथा मुझे कष्ट न पहुंचायें। इसलिए कि अल्लाह आपका रक्षक तथा सहायक है। अथवा حرج (हर्जुन) शंका के अर्थ में है अर्थात इसके अल्लाह की ओर से उतरने में आप के मन में दुविधा नहीं होनी चाहिए। यह अन्योक्ति है तथा वास्तव में आप के अनुयायियों को संबोधित किया गया है कि संदेह न करें।

[3]जो अल्लाह की ओर से उतारा गया है अर्थात पवित्र क़ुरआन एवं जो अन्तिम ईशदूत का कथन है अर्थात (हदीस) क्योंकि आप ने कहा कि मैं पवित्र ईशवाणी क़ुरआन एवं उसके समान दिया गया हूँ, इन दोनों का अनुसरण अनिवार्य है। इनके सिवाय किसी अन्य का अनुसरण अनिवार्य नहीं अपितु उन का इंकार अनिवार्य है जैसाकि आगामी वाक्य में कहा

وَلَا تَتَّبِعُوا مِن دُونِهِۦٓ أَوۡلِيَآءَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ③

उसके सिवाये अन्य सहायकों का अनुसरण न करो तुम लोग बहुत कम शिक्षा ग्रहण करते हो।

وَكَم مِّن قَرۡيَةٍ أَهۡلَكۡنَٰهَا فَجَآءَهَا بَأۡسُنَا بَيَٰتًا أَوۡ هُمۡ قَآئِلُونَ ④

(४) तथा बहुत-सी बस्तियों को हमने नष्ट कर दिया तथा उन पर हमारा प्रकोप रात्रि समय पहुँचा अथवा ऐसी अवस्था में कि वे मध्यान्ह के समय विश्राम कर रहे थे।[1]

فَمَا كَانَ دَعۡوَىٰهُمۡ إِذۡ جَآءَهُم بَأۡسُنَآ إِلَّآ أَن قَالُوٓاْ إِنَّا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ⑤

(५) तो जब उनके पास हमारा प्रकोप आया तो उनकी पुकार मात्र यही रही कि उन्होंने कहा कि हम ही अत्याचारी (पापी) रहे हैं।[2]

فَلَنَسۡـَٔلَنَّ ٱلَّذِينَ أُرۡسِلَ إِلَيۡهِمۡ وَلَنَسۡـَٔلَنَّ ٱلۡمُرۡسَلِينَ ⑥

(६) फिर हम उन से अवश्य पूछ करेंगे जिन के पास उपदेश भेजा गया तथा उपदेशकों से अवश्य पूछ करेंगे।[3]

है कि अल्लाह को छोड़ अन्य किसी का अनुसरण न करो जिस प्रकार मूर्खता काल में प्रमुखों एवं ज्योतिषियों की बात को महत्व दिया जाता था यहाँ तक कि वैध-अवैध के विषय में उन्हीं की बात मानी जाती थी।

[1] قيلولة शब्द "मध्यान्ह के समय भोजन करके विश्राम करने को कहते हैं।" अर्थ यह है कि हमारा प्रकोप सहसा ऐसे समय में आया जब वे निश्चिन्त रूप से अपने बिस्तरों पर विश्राम कर रहे थे।

[2]परन्तु प्रकोप आ जाने पर ऐसे स्वीकार का कोई लाभ नहीं। जैसे कि पूर्व स्पष्ट किया जा चुका है।

﴿ فَلَمۡ يَكُ يَنفَعُهُمۡ إِيمَٰنُهُمۡ لَمَّا رَأَوۡاْ بَأۡسَنَا ﴾

"जब उन्होंने हमारा प्रकोप देख लिया तो उस समय उनका ईमान लाना उनके लिए लाभकारी नहीं हुआ।" (*सूर: अल-मोमिन-८५*)

[3]समुदायों से यह पूछा जायेगा कि क्या तुम्हारे पास पैग़म्बर (संदेशवाहक) आये थे ? उन्होंने हमारा संदेश पहुँचाया था ? वहाँ वे उत्तर देंगे, "हाँ, हे अल्लाह ! तेरे पैग़म्बर तो अवश्य हमारे पास आये थे परन्तु हमारा ही दुर्भाग्य था कि हमने उनकी चिन्ता नहीं की।" तथा

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِم بِعِلْمٍ وَمَا كُنَّا غَائِبِينَ ⑦

(७) फिर हम उनके समक्ष ज्ञान के साथ वर्णन कर देंगे[1] एवं हम अनभिज्ञ नहीं थे।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑧

(८) तथा उस दिन सत्य तुलना होगी फिर जिस का पलड़ा भारी होगा वही सफल होंगे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُم بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ⑨

(९) तथा जिस का पलड़ा हल्का होगा, तो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपनी हानि कर ली इस कारण कि हमारी निशानियों का हनन करते रहे थे।[2]

पैग़म्बरों से पूछा जायेगा कि तुमने हमारे संदेश अपने समुदाय को पहुँचा दिये तथा उन्होंने उसकी तुलना में क्या कर्म किये ? पैग़म्बर इस प्रश्न का उत्तर देंगे जिसका विस्तृत वर्णन पवित्र क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर विद्यमान है।

[1]हम सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष का ज्ञान रखते हैं। अत: हम दोनों (वर्गों एवं संदेशवाहकों) के सामने सभी बातें रख देंगे, तथा उन्होंने जो कुछ किया होगा उनके आगे प्रस्तुत कर देंगे।

[2]इन आयतों में कर्मों के तौलने का वर्णन किया गया है, जो प्रलय के दिन होगा, जिसे पवित्र क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर तथा हदीसों में वर्णन किया गया है। जिसका अर्थ यह है कि तुला में कर्म तौले जायेंगे, जिसके पुण्य का पलड़ा भारी होगा वह सफल तथा जिसकी बुराईयों का पलड़ा भारी होगा वह असफल होगा। ये कर्म किस प्रकार तौले जायेंगे जब कि वास्तव में इनका भौतिक स्वरूप नहीं है ? इसमें एक विचार यह है कि प्रलय के दिन अल्लाह तआला स्वयं कर्म-कर्ताओं को भौतिक स्वरूप में बदल देगा तथा उनकी तौल होगी। दूसरा विचार यह है कि कर्मपत्र तौला जायेगा जिन पर यह कर्म लिखे होंगे। तीसरा विचार यह है कि इन कर्मों के कर्ता को तौला जायेगा। तीनों विचारों वालों के पास अपने विचार के पक्ष में सहीह हदीस तथा कथन उपलब्ध हैं, इसलिए इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि तीनों विचार ही उचित हैं, सम्भव है कि कभी कर्म, कभी कर्मपत्र तथा कभी स्वयं कर्म के कर्ता को तौला जायेगा (तर्क के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर) तुला तथा कर्मों के तौल का विषय क़ुरआन तथा हदीस से तर्क संगत है। इसका इंकार अथवा कष्ट कल्पना भटकाव है, तथा वर्तमान युग में हम ने देख लिया कि अब तो बिना भार की वस्तुएं जिन्हें हम समझते थे तथा ऐसा विचार था कि इन का भार नहीं निकाला जा सकता उनका भी भार ज्ञात करने की विधि तथा साधन उपलब्ध हैं, तो अल्लाह तआला के लिए कर्मों को तौलना कदापि असम्भव नहीं है क्योंकि उसे हर प्रकार का सामर्थ्य है।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ط قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾

(१०) तथा हमने तुम को पृथ्वी में अधिकार सहित स्थान दिया तथा उस में तुम्हारे लिये जीवन सामग्री बनाई, तुम अति अल्प कृतज्ञ हो ।

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ط لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾

(११) तथा हमने तुमको पैदा किया फिर तुम्हारा रूप बनाया [1] फिर सुरों (फ़रिश्तों) से कहा कि आदम को सजदा करो तोसभी ने सजदा किया सिवाय इब्लीस के कि वह सजदा करने वालों में सम्मिलित नहीं हुआ ।

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ط قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ج خَلَقْتَنِىْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾

(१२) (अल्लाह ने) कहा कि जब मैंने तुझे सजदा करने का आदेश दिया तो किस कारण ने तुझे सजदा करने से रोक दिया,[2] उसने कहा मैं इससे उत्तम हूँ तूने मुझे अग्नि से उत्पन्न किया तथा इसे मिट्टी से पैदा किया है ।[3]

---

[1] خلقناكم का अर्थ है तुम सभी को पैदा किया । इसमें तुम सब सर्वनाम यद्यपि बहुवचन है किन्तु इस से तात्पर्य आदरणीय आदम हैं ।

[2] ألا تسجد में لا अधिक है अर्थात أن تسجد (तुझे सिजदा करने से किस ने रोका ?) अथवा यहाँ वाक्य का लोप है अर्थात "तुझे किस विषय ने वाध्य किया कि सिजदा न करे ।" (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर) । शैतान फ़रिश्तों में से नहीं था, अपितु क़ुरआन के स्वयं स्पष्टीकरण के अनुसार वह जिन्नात था । (सूर: *अल-कहफ़-५०*) परन्तु आकाश पर फ़रिश्तों के साथ रहने के कारण वह सिजदा के आदेश का पालन करने के लिए बाध्य था, जो अल्लाह ने फ़रिश्तों को दिया था । इसी कारण उस से पूछा भी गया तथा उस पर प्रकोप भी हुआ । यदि वह आदेश में सम्मिलित ही न होता, तो उससे पूछ न होती तथा वह धिक्कारा न जाता ।

[3] शैतान की यह क्षमा-याचना उसके पाप से भी गम्भीर पाप बन गई । एक तो उसका यह सोचना कि श्रेष्ठ को अपने से नीचे के आदर तथा सम्मान का आदेश नहीं दिया जा सकता, ग़लत है । इसलिए कि मूल विषय अल्लाह का आदेश है, उसके आदेश के आगे श्रेष्ठ अथवा निम्न की बात करना अल्लाह के आदेश की अवहेलना है । दूसरे उसने अपने श्रेष्ठ होने का तर्क यह दिया कि मैं अग्नि से हूँ तथा यह मिट्टी से है । परन्तु उसने उस श्रेष्ठता को अनदेखी कर दिया जो आदरणीय आदम को प्राप्त हुई अर्थात अल्लाह तआला ने स्वयं अपने हाथ से बनाया तथा अपनी ओर से आत्मा फूंकी । इस श्रेष्ठता के समान दुनिया का

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿١٣﴾

(१३) (अल्लाह तआला ने) आदेश दिया कि तू आकाश[1] से उतर तुझे कोई अधिकार नहीं कि आकाश में निवास करके घमंड करे। इसलिए निकल, नि:सन्देह तू अपमानितों में से है।[2]

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤﴾

(१४) उस (शैतान) ने कहा कि मुभे (प्रलय तक) अवसर प्रदान कर दें जब लोग पुनर्जीवित किये जायेंगे।

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿١٥﴾

(१५) (अल्लाह) ने कहा कि तुभे अवसर प्रदान कर दिया गया।[3]

कोई सम्मान हो सकता है ? तृतीय, उसने स्वयं आदेश के आगे अनुमान से काम लिया ? जो किसी भी अल्लाह के भक्त का आचरण नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त उसका अनुमान भी भ्रष्ट अनुमान था। अग्नि, मिट्टी से किस प्रकार श्रेष्ठ हो सकती है ? अग्नि में उत्तेजना, तथा भड़कने एवं जलने के सिवाय है क्या ? जबकि मिट्टी में शान्ति तथा स्थिरता है। इसमें फलने-फूलने अधिकता तथा सुधार की विशेषता है। ये गुण अग्नि से प्रत्येक प्रकार से श्रेष्ठ तथा अधिक लाभकारी है। इस आयत से यह ज्ञात हुआ कि शैतान की उत्पत्ति अग्नि से हुई। जैसाकि हदीस में भी आता है "फ़रिश्ते प्रकाश से, इब्लीस अग्नि की लौ से तथा आदम मिट्टी से पैदा किये गये हैं।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ुहद, बाब अहादीसे मुतफ़र्रिक़ः)

[1]अधिकांश व्याख्याकारों ने "इससे" का अर्थ यह किया है कि उससे अर्थात स्वर्ग से निकल जाओ और कुछ ने "इस" से का अर्थ यह लिया है कि आकाश लोक से नीचे उतरो। आदरणीय अनुवादक ने यही दूसरा अर्थ लेकर उसका अनुवाद "आकाश से उतरो" किया है।

[2]अल्लाह के आदेश के समक्ष घमण्ड करने वाला आदर तथा सम्मान का नहीं अपितु अनादर तथा अपमान का अधिकारी होता है।

[3]अल्लाह ने उसकी आग्रह पर यह अवसर दे दिया जो उसके ज्ञान तथा इच्छानुसार था, फिर भी इससे बात समभ में आती है कि उसने ऐसा इसलिए किया कि अपने भक्तों की परीक्षा ले सके कि कौन उसका भक्त बनता है और कौन शैतान का पुजारी।

قَالَ فَبِمَآ أَغْوَيْتَنِى لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَٰطَكَ ٱلْمُسْتَقِيمَ ﴿١٦﴾

(१६) उस (शैतान) ने कहा तेरे मुझ को धिक्कारने के कारण[1] मैं उन के लिये तेरे सत्यमार्ग पर बैठूँगा।

ثُمَّ لَءَاتِيَنَّهُم مِّنۢ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَٰنِهِمْ وَعَن شَمَآئِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَٰكِرِينَ ﴿١٧﴾

(१७) फिर उनके सामने तथा पीछे से एवं दायें तथा बायें से आक्रमण करूँगा।[2] तथा आप इनमें अधिकतर को कृतज्ञ नहीं पायेंगे।[3]

قَالَ ٱخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا ۖ لَّمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾

(१८) (अल्लाह) ने कहा, तू इससे (यहाँ से) अपमानित बहिष्कृत होकर निकल जा, जो उनमें से तेरा अनुसरण करेगा मैं तुम सभी से नरक कोअवश्य भर दूँगा।

وَيَٰٓـَٔادَمُ ٱسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ ٱلْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا

(१९) तथा (हम ने कहा कि) हे आदम ! तुम तथा तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में निवास करो, फिर

---

[1]कुमार्ग तो वह अल्लाह की सृष्टि उत्पत्ति की इच्छा के अनुसार हुआ, परन्तु उसने भी मूर्तिपूजकों की भांति लांक्षन बना लिया, जिस प्रकार वह कहते थे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते।

[2]अर्थ यह है कि प्रत्येक पुण्य तथा पाप के मार्ग पर मैं बैठूँगा। पुण्य से उन्हें रोकूँगा तथा पाप को उनके समक्ष सुन्दर तथा आकर्षित बना कर प्रस्तुत करूँगा तथा उनको अपनाने के लिए शिक्षा दूँगा।

[3]शाकेरीन का दूसरा अनुवाद एक अल्लाह के मानने वाले भी किया गया है। अर्थात अधिकतर लोगों को मैं शिर्क में लिप्त कर दूँगा। शैतान ने अपना यह विचार वास्तव में सत्य कर दिखाया।

﴿ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُۥ فَٱتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴾

"शैतान ने अपना विचार सत्य कर दिखाया, मोमिनों के एक गुट को छोड़ कर सभी लोग उस के पीछे लग गये।" (*सूरः सबा*-२०)

इसीलिए हदीस में शैतान से बचने के लिए तथा क़ुरआन में उसके छल, कपट तथा जाल से बचने के लिए बड़ी चेतावनी दी गयी है।

هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظّٰلِمِينَ ۝١٩

जिस स्थान से इच्छा हो खाओ एवं इस वृक्ष के निकट न जाओ अन्यथा अत्याचारी हो जाओगे ।[1]

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُونَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُونَا مِنَ الْخٰلِدِينَ ۝٢٠

(२०) फिर शैतान ने दोनों में शंका[2] उत्पन्न की ताकि दोनों के लिये उन के गुप्तांगों[3] को प्रकट कर दे तथा कहा कि तुम दोनों के पोषक ने तुम्हें इस वृक्ष से इसीलिए रोका है कि तुम दोनों फ़रिश्ता हो जाओगे अथवा अमर हो जाओगे ।

وَقَاسَمَهُمَا اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِينَ ۝٢١

(२१) उसने उन दोनों के समक्ष शपथ ली कि वह उनका शुभ चिन्तक है ।[4]

---

[1]अर्थात मात्र इस वृक्ष के सिवाये जहाँ से तथा जितना चाहो खाओ । इस वृक्ष का फल खाने पर प्रतिबन्ध मात्र परीक्षा के रूप में था ।

[2]वसवसा का अर्थ है धीमा स्वर तथा वह बुरी बात जो शैतान मन में उत्पन्न करता है ।

[3]अर्थात इस बहकाने से शैतान का लक्ष्य आदम तथा हव्वा को स्वर्ग के वस्त्र से वंचित करके उन्हें लज्जित करना था जो उन्हें स्वर्ग में पहनने को मिले थे । سوأت बहुवचन है जिस का अर्थ बुरा लगना है तथा उस का अर्थ गुप्तांग इसलिये लिया जाता है कि इसके खुल जाने को बुरा माना जाता है ।

[4]स्वर्ग में जो सुख सुविधायें आदरणीय आदम तथा हव्वा को उपलब्ध थीं उसके द्वारा शैतान ने दोनों को प्रलोभन दिया तथा यह झूठ बोला कि अल्लाह तुम्हें सदा स्वर्ग में रखना नहीं चाहता है, इसीलिए इस वृक्ष का फल खाने से मना किया है क्योंकि इसका प्रभाव ही यही है कि जो उसे खा लेता है, वह फ़रिश्ता बन जाता है अथवा उसे स्थाई जीवन प्राप्त हो जाता है । फिर सौगन्ध खाकर अपने को शुभचिन्तक सिद्ध किया, जिससे आदरणीय आदम तथा हव्वा प्रभावित हो गये, इस लिए कि अल्लाह वाले अल्लाह के नाम पर धोखा खा जाते हैं ।

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾

(२२) इस प्रकार धोखे से दोनों को नीचे लाया,[1] जैसे ही दोनों ने वृक्ष का स्वाद लिया दोनों के लिये उन के गुप्तांग प्रकट हो गये तथा वे अपने ऊपर स्वर्ग के पत्ते चिपकाने लगे [2] तथा उन के स्वामी ने दोनों को पुकारा कि क्या मैंने तुम दोनों को इस वृक्ष से नहीं रोका ? तथा तुम से नहीं कहा कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रु है।[3]

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) दोनों ने कहा, हमारे पोषक ! हम ने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया तथा यदि तूने हमें क्षमा नहीं किया तथा हम पर दया न की तो हम क्षतिग्रस्तों में से हो जायेंगे।[4]

---

[1] تدلية و إدلاء अरबी शब्द का अर्थ है किसी वस्तु को ऊपर से नीचे ले जाना। अत: शैतान उनको उच्च पद से उतार कर निषेधित वृक्ष का फल खाने तक ले गया।

[2] यह उस अवज्ञा का प्रभाव हुआ जो आदम तथा हव्वा से अनजान तथा बिना सोच-विचार के हुई। फिर दोनों लज्जित होकर स्वर्ग के पत्ते जोड़-जोड़ कर अपने गुप्तांगों को ढांकने लगे। वहब बिन मुनब्बा कहते हैं कि उससे पूर्व उनको अल्लाह तआला की ओर से एक ऐसा प्रकाशमान वस्त्र मिला था जो यद्यपि अदृश्य था फिर भी एक-दूसरे के गुप्तांगों के लिये आवरण (पर्दे) का काम देता था। (इब्ने कसीर)

[3] अर्थात इस चेतावनी के पश्चात् भी तुम शैतान के वसवसों (शंका) के शिकार हो गये। इससे ज्ञात हुआ कि शैतान के जाल भी बड़े आकर्षित होते हैं, तथा उनसे बचने के लिए बड़े प्रयत्न तथा हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है।

[4] क्षमा-याचना के यह वही वाक्य हैं जो आदरणीय आदम ने अल्लाह तआला से सीखे, जैसाकि सूर: अल-बक़र: आयत संख्या ३७ में स्पष्टरूप से आया है (देखिए वर्णित आयत की व्याख्या)। ऐसा प्रतीत होता है कि शैतान ने अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना ही नहीं की, अपितु वह अड़ भी गया तथा अपने काल्पनिक तथा अनुमानित तर्कों के द्वारा उसको उचित भी ठहराता रहा। परिणाम स्वरूप तिरस्कृत किया गया तथा सदा के लिए धिक्कारा गया तथा आदरणीय आदम अपनी भूल को स्वीकार कर क्षमा-याचना करने लगे, तो अल्लाह की कृपा तथा क्षमा के अधिकारी हो गये। इस प्रकार दोनों प्रकार के

(२४) अल्लाह (तआला) ने कहा, तुम नीचे उतरो, तुम परस्पर शत्रु हो तथा तुम्हें एक समय तक धरती में निवास करना एवं लाभान्वित होना है।

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾

(२५) कहा कि तुम उसी में जीवन यापन करोगे तथा उसी में मरोगे और उसी से निकाले जाओगे।

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾

(२६) हे आदम के पुत्रो ! हम ने तुम्हें ऐसा वस्त्र प्रदान किया जो तुम्हारे गुप्तांग को ढांके तथा शोभा दे[1] एवं संयम (परहेजगारी) का वस्त्र [2] ही उत्तम है[3] यह अल्लाह के लक्षण हैं ताकि वह स्मरण करें।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۗ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۗ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾

मार्गों का स्पष्टीकरण हो गया। अर्थात शैतान के मार्ग का भी तथा अल्लाह वालों के मार्ग का भी। पाप करके घमण्ड करना उनकी पुनरावृत्ति करके उसको उचित सिद्ध करने के लिए तर्कों का ढेर लगाना शैतानी मार्ग है। तथा पाप के पश्चात् लज्जित होकर अल्लाह के दरबार में झुक जाना तथा क्षमा-याचना करना अल्लाह के भक्तों का मार्ग है। اللهم اجعلنا منهم

[1] سـوآت शरीर के वह अंग हैं जिनको ढांकना आवश्यक है, जैसे गुप्तांग तथा ریشا वह वस्त्र है जो शोभा एवं सुन्दरता के लिये पहना जाये मानो प्रथम आवश्यक वस्त्र है एवं दूसरा पूर्ति एवं अधिकता के लिये होता है, अल्लाह ने इन दोनों प्रकार के लिये संसाधन उत्पन्न कर दिये।

[2]इससे तात्पर्य कुछ लोगों के विचार से वह वस्त्र है जो संयमी प्रलय के दिन ग्रहण करेंगे, तथा कुछ के निकट निष्ठा एवं कुछ के विचार से सत्कर्म तथा अल्लाह का भय है, सब का भावार्थ लगभग एक ही है कि ऐसा वस्त्र जिसे धारण करके मनुष्य अहंकार के बजाय अल्लाह से डरे तथा विश्वास एवं सत्कर्म की माँगों को पूरा करे।

[3]इससे यह भाव निकलता है कि यद्यिप शोभा तथा सौंदर्य के लिय वस्त्र पहनना उचित है फिर भी वस्त्र में ऐसी सादगी अतिप्रिय है जो पवित्रता तथा संयम का द्योतक हो। इसके सिवाये नया वस्त्र धारण करते समय, यह प्रार्थना की जाये।

(२७) हे आदम के पुत्रो ! तुम्हें शैतान बहका न दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकलवा दिया, वह उन का वस्त्र उतरवा दिया ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखाये, नि:सन्देह वह तथा उस की जन जाति तुम्हें ऐसी जगह से देखती है कि तुम उन्हें देख नहीं सकते,[1] हमने शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया जो ईमान (विश्वास)[2] नहीं रखते।

يٰبَنِيٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾

(२८) तथा वे जब कोई दुराचार करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को इसी पर पाया तथा अल्लाह ने हमें इसका आदेश दिया है। आप कह दीजिये कि अल्लाह दुराचार का

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ

«اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي كَسَانِي مَا أُوَارِي بِهِ عَوْرَتِي، وَأَتَجَمَّلُ بِهِ فِي حَيَاتِي».

"सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिसने मुझे ऐसा वस्त्र पहनाया जिससे मैं अपना गुप्तांग छुपाऊँ और अपने जीवन में उस से शोभा प्राप्त करूँ।"

(त्रिमज़ी, प्रार्थना अध्याय-इब्ने माजा, वस्त्र अध्याय, मनुष्य नया वस्त्र धारण करते समय क्या प्रार्थना करे)

[1]इसमें ईमानवालों को शैतान तथा उसकी जाति अर्थात उसके शिष्यों से सावधान किया गया है कि कहीं तुम्हारी असावधानी तथा आलस्य से लाभ उठा कर तुम्हें भी उसी प्रकार परीक्षा तथा कुमार्ग में न डाल दे, जिस प्रकार तुम्हारे माता-पिता (आदम तथा हव्वा) को उसने स्वर्ग से निकलवाया तथा स्वर्ग के वस्त्र उतरवा दिये। विशेषरूप से जब वह दृष्टि गोचर नहीं होते तो उनसे बचने की व्यवस्था तथा चिन्ता अधिक होनी चाहिए।

[2]अर्थात जिनमें ईमान नहीं है वही उसके मित्र हैं तथा विशेषरूप से उसके शिकार होते हैं। फिर भी वह ईमानवालों पर भी डोरे डालता रहता है। कुछ और नहीं तो गुप्त शिर्क (दिखावे के पुण्य) तथा प्रत्यक्ष शिर्क (मिश्रणवाद) में लीन कर देता है तथा इस प्रकार वह उनको ईमान के पूँजी से वंचित कर देता है।

أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

आदेश नहीं करता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात करते हो जिसे तुम नहीं जानते।[1]

قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ ۖ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾

(२९) आप (नराशंस) कहिये कि मेरे पोषक ने मुझे न्याय का आदेश दिया है।[2] तथा प्रत्येक सजदा के समय अपने चेहरे को सीधी दिशा में कर लो[3] तथा उस (अल्लाह) के लिये धर्म को स्वच्छ करके उसे पुकारो। उसने जैसे

---

[1]इस्लाम से पूर्व मूर्तिपूजक बैतुल्लाह (काअबा) की परिक्रमा नंगे होकर करते थे तथा कहते थे कि हम उस अवस्था के अनुसार परिक्रमा करते हैं जो उस समय थी जब हमारी माताओं ने हमें जन्मा था। कुछ कहते हैं कि वे कहते थे कि हम जो वस्त्र पहनते हैं उसमें अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करते रहते हैं, इसलिए इस वस्त्र में परिक्रमा करना उचित नहीं। अत: वह वस्त्र उतारकर परिक्रमा करते तथा स्त्रियाँ भी नंगी परिक्रमा करती थीं, केवल अपने गुप्तांग पर कोई कपड़ा अथवा चमड़ा रख लिया करती थीं। अपने इस अपमानित कर्म के लिए दो तर्क और दिये। एक तो यह कि हमने अपने पूर्वजों को इस प्रकार ही करते पाया। दूसरे यह कि अल्लाह ने हमको इसका आदेश दिया है। अल्लाह ने इसका खण्डन किया कि यह किस प्रकार हो सकता है कि अल्लाह तआला अभद्र असभ्य कार्यों का आदेश दे ? अर्थात तुम अल्लाह के ऊपर उस बात को लगाते हो जिसका उसने आदेश नहीं दिया। इस आयत में उन अनुकरणवादियों को सचेत तथा सतर्क किया गया है जो अपने पूर्वजों, महात्माओं तथा महान व्यक्तियों का पालन करते हैं, जब उन्हें भी सत्य बात बतायी जाती है, तो वह भी उसके समक्ष यही तर्क प्रस्तुत करते हैं कि हमारे बड़े भी यही करते आये हैं अथवा हमारे इमाम तथा पीर का यही आदेश है। यह वह व्यवहार है कि यहूदी अपनी यहूदियत पर, इसाई अपने ईसाईयत पर तथा परिवर्तनकारी अपने परिवर्तित रस्मों पर दृढ़ हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]न्याय का भावार्थ कुछ ने لا إله إلا الله अर्थात एकेश्वरवाद (तौहीद) लिया है।

[3]इमाम शौकानी ने इसका अर्थ यह वर्णित किया है कि "अपनी नमाज़ों में अपना मुख क़िबले की ओर कर लो, चाहे तुम किसी भी मस्जिद में हो।" तथा इमाम इब्ने कसीर ने इससे दृढ़ता अर्थात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण का भाव लिया है तथा अगले वाक्य से अल्लाह के लिये सुद्ध होना लिया है। तथा कहा है कि प्रत्येक कर्म की स्वीकृति के लिए आवश्यक है कि वह धार्मिक नियमों के अनुसार हो तथा अन्य मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए हो। आयत में इन बातों पर बल दिया गया है।

तुम को प्रारम्भ में पैदा किया उसी प्रकार पुन: जन्म लोगे ।

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَٰلَةُ ۗ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيَٰطِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा उस (अल्लाह) ने कुछ को मार्गदर्शन किया और कुछ कुपथ के पात्र बन गये, उन्होंने अल्लाह के सिवाय शैतानों (असुरों) को अपना मित्र बना लिया तथा सोचते हैं कि वह पथगामी हैं ।

يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

(३१) हे आदम के पुत्रो ! मस्जिद में जाने के प्रत्येक समय अपना वस्त्र अपना लो[1] तथा खाओ-पिओ और अपव्यय न करो । नि:सन्देह जो अपव्यय करते हैं अल्लाह उनसे प्रेम नहीं करता ।[2]

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِيٓ أَخْرَجَ لِعِبَادِهِۦ وَالطَّيِّبَٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ ۗ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْءَايَٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) (हे ईशदूत !) आप कहिये कि उस शोभा को किस ने वर्जित किया है जिसे अल्लाह ने अपने भक्तों के लिये उत्पन्न किया है तथा पवित्र जीविका को, आप कहिये कि वह भौतिक जीवन में उन लोगों के लिये है जिन्होंने विश्वास किया (तथा) विशेष रूप से

---

[1]आयत में शोभा से तात्पर्य वस्त्र है । इसका सम्बन्ध भी मूर्तिपूजकों के नंगे परिक्रमा से है, अत: उन्हें कहा गया कि वस्त्र धारण करके अल्लाह की इबादत करो ।

[2]अपव्यय (सीमा से पार होना) किसी भी विषय में यहाँ तक कि खाद्य तथा पेय में भी प्रिय नहीं माना गया है । एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जो चाहो खाओ, जो चाहो पहनो । परन्तु दो बातों से बचो अपव्यय तथा अहंकार से ।" सहीह बुख़ारी किताबुल लिबास बाब क़ौल अल्लाह तआला क़ुल मन हर्रम ज़ीनतल्लाह ......) कुछ सलफ़ का कथन है । كلوا و اشربوا ولا تسرفوا इस आधी आयत में सारी चिकित्सा पद्धति एकत्रित कर दी गयी । (इब्ने कसीर)

अन्त दिवस में उन्हीं के लिये हैं।[1] हम आयतों का इसी प्रकार विस्तृत वर्णन कर रहे हैं उनके लिये जो ज्ञान रखते हैं।

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ

(३३) आप कहिये कि मेरे पोषक ने सभी व्यक्त एवं गुप्त अशिष्ट विषय[2] को वर्जित किया है तथा पाप एवं अनुचित अतिक्रमण को [3] तथा

---

[1]मुर्तिपूजकों ने जिस प्रकार परिक्रमा के समय वस्त्र धारण करना अप्रिय माना था इसी प्रकार कुछ उचित पदार्थों को भी अल्लाह के सामिप्य के लिये वर्जित कर लिया था जैसे कि कुछ सूफ़िया (साधु) भी ऐसा ही करते हैं तथा बहुत-सी वैध वस्तुयें अपनी मूर्तियों के नाम दान कर देने हेतु अवैध मान लेते थे। अल्लाह ने कहा कि जिन पदार्थों को उसने लोगों की शोभा के लिए (उदाहरणार्थ वस्त्रादि एवं) स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ बनाये हैं उन्हें कौन निषेधित कर सकता है। इस का अभिप्राय यह है कि अल्लाह की उचित बनाई हुई वस्तुयें किसी के वर्जित करने से वर्जित नहीं हो जाती हैं, वह उचित ही रहेंगी, यह उचित एवं पवित्र वस्तुयें अल्लाह ने वास्तव में अपने भक्तों के लिये बनाई हैं। नास्तिक मूर्तिपूजक भी इन से लाभान्वित होते हैं अपितु कभी संसारिक सुख-सुविधा में वह मुसलमानों से अधिक सफल दिखाई देते हैं। किन्तु यह सामयिक तथा अस्थिर सुख है, जिस के भेद को अल्लाह ही जानता है परन्तु परलोक में यह अनुकम्पायें मुसलमानों के लिए ही होंगी क्योंकि कृतघ्नों के लिये जिस प्रकार स्वर्ग निषेधित होगा उसी प्रकार यह खाद्य तथा पेय भी निषेधित होंगे।

[2]प्रत्यक्ष कुकर्म से तात्पर्य कुछ के यहाँ वेश्या के कोठे पर जाकर व्यभिचार करना तथा गुप्त कुकर्म से तात्पर्य किसी प्रेमिका से विशेष सम्बन्ध स्थापित करना है। कुछ के निकट प्रत्यक्ष कुकर्म से तात्पर्य निकट निषेधित स्त्रियों से विवाह करना (जो वर्जित है) लिया गया है। परन्तु उचित बात तो यह है कि यह किसी एक विशेष परिस्थिति से सम्बन्धित नहीं है, अपितु सामान्य है। जैसे फिल्में, ड्रामे, नाटक टी॰ वी, वी॰सी॰आर, अभद्र-असभ्य समाचार एवं पत्र-पत्रिकायें, नृत्य, मदीरा पान, नृत्यांगनाओं की पुरुषों के समक्ष नृत्य तथा पुरुष-स्त्री मिश्रण, मेंहदी तथा विवाह के रीति रीवाज में सामान्यतया जो प्रदर्शन होता है आदि यह सभी कुकर्म हैं। أعاذنا الله منها

[3]पाप, अल्लाह की अवज्ञा का नाम है। तथा एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "पाप वह है जो तेरे सीने में खटके , तथा लोगों को इसकी सूचना हो जाने पर तू बुरा समझे।"(सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र) तथा कुछ लोग कहते हैं कि पाप वह है जिस का प्रभाव, करने वाले तक सीमित हो तथा بغي (बग़्य) वह है कि इसके प्रभाव

تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾

अल्लाह के साथ उसे मिश्रित करने को जिसका उसने कोई तर्क नहीं उतारा तथा अल्लाह पर अज्ञात बातें बोलने को।

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा प्रत्येक समुदाय का एक निर्धारित समय है[1] फिर जब उनका निश्चित समय आ जाये तो न एक पल की देर होगी न सवेर।

يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) हे आदम के पुत्रो ! यदि तुम्हारे पास तुम में से मेरे रसूल (दूत) आयें जो तुम्हारे समक्ष मेरी आयतों का वर्णन करें तो जो संयम बरतेगा तथा सुधार कर लेगा उन्हीं पर न कोई भय होगा और न दु:खी होंगे।[2]

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा जिन्होंने हमारे आदेशों को नकारा। एवं उनसे अहंकार किया वही नरकीय हैं वही उसमें सदा रहेंगे।[3]

दूसरों तक भी पहुँचे। यहाँ बग़ी के साथ अनावश्यक का अर्थ, अनावश्यक अत्याचार तथा कठोरता जैसे लोगों के अधिकारों का हनन करना, किसी का माल छीन लेना, अनावश्यक मारना-पीटना तथा बुरा-भला एवं कटुवचन कह कर अपमानित करना आदि है।

[1]निर्धारित समय से तात्पर्य वह अवसर है जो अल्लाह (परमेश्वर) प्रत्येक के परीक्षा के लिये देता है कि वह इस अवसर का लाभ उठाकर अल्लाह को प्रसन्न करने का प्रयास करता है अथवा उसके विद्रोह एवं दुष्टता में और अधिकता होती है। यह अवसर कभी आजीवन होता है अर्थात संसारिक जीवन में वह नहीं पकड़ता अपितु परलोक ही में दण्ड देगा, इन का निर्धारित समय प्रलय दिवस ही है तथा जिन को संसार में दण्डित कर देता है उन का निर्धारित समय वह है जब उन्हें पकड़ लेता है।

[2]यह उन लोगों के सुपरिणाम का वर्णन है, जो संयम तथा सत्कर्म से सुशोभित होंगे। क़ुरआन ने ईमान के साथ अधिकतर स्थान पर पुण्य के कार्यों का वर्णन अवश्य किया है, जिससे ज्ञात होता है कि अल्लाह के समक्ष वही ईमान मान्य है जिसके साथ पुण्य के कार्य भी होंगे।

[3]इसमें ईमानवालों के विपरीत उन लोगों के कुपरिणामों का वर्णन किया गया है, जो अल्लाह के आदेशों को झुठलाते हैं तथा उनके समक्ष घमण्ड करते हैं। ईमानवालों तथा

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾

(३७) उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा अथवा उस की आयतों (आदेशों) को झुठला दिया, इन को किताब से निर्धारित भाग पहुँचेगा[1] यहाँ तक कि जब उनके पास हमारे फ़रिश्ते (यमदूत) उन के प्राण निकालने आयेंगे तो कहेंगे कि वह कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाये पुकारते रहे, वे कहेंगे हम से खो गये तथा अपने काफ़िर (अधर्मी) होने को स्वयं स्वीकार कर लेंगे।

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ

(३८) वह (अल्लाह) कहेगा कि जिन्नों तथा इन्सानों के उन गिरोहों के साथ जो तुम से पूर्व गुजर गये[2] नरक में प्रवेश कर जाओ, जब कोई गिरोह प्रवेश करेगा तो दूसरे को धिक्कार

काफ़िरों दोनों के परिणाम का वर्णन करने का उद्देश्य यह है कि लोग उस व्यवहार को अपनायें जिसका परिणाम अच्छा है तथा उस व्यवहार से बचें जिसका परिणाम बुरा है।

[1]इसके विभिन्न भावार्थ वर्णन किये गये हैं। एव अर्थ कर्म, जीविका तथा आयु के किया गया है। अर्थात उनके भाग्य में जो कर्म तथा जीविका है, उसे पूरा कर लेने तथा जितनी आयु है, उसे व्यतीत कर लेने के पश्चात् अन्ततः मृत्यु को गले लगाना होगा। उसके समान यह आयत है।

﴿ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ * مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ﴾

"जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं, वह सफल नहीं होंगे, संसार का क्षणिक लाभ उठाकर, अन्ततः हमारे पास उन्हें लौटकर आना है।" (*सूरः यूनुस* -६९ ,७०)

[2]उमम, उम्मत का बहुवचन है। तात्पर्य वह वर्ग तथा समुदाय है, जो अविश्वास एवं विरोध तथा बहुदेववाद तथा अनिष्ठा में एक समान होंगें। في का अर्थ सहित भी हो सकता है अर्थात तुम से पूर्व मनुष्यों तथा जिन्नों में जो गिरोह तुम जैसे यहाँ आ चुके हैं, उनके साथ नरक में प्रवेश करो अथवा उन में सम्मिलित हो जाओ।

أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

करेगा[1] यहाँ तक कि जब उस (नरक) में सभी एकत्र हो जायेंगे [2] तो उन के अनुगामी अपने अग्रगामियों के विषय में कहेंगे[3] कि हे हमारे पालनहार, इन्हों ने ही हम को विपथ बनाया तू इन्हें नरक का दुगना दंड दे ।[4] (अल्लाह) कहेगा कि प्रत्येक के लिये दुगना है[5] परन्तु तुम नहीं जानते ।

وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ

(३९) तथा आगामी अपने अनुगामियों से कहेंगे कि हम पर तुम्हारी कोई प्रधानता नहीं, अत:

﴿لَعَنَتْ أُخْتَهَا﴾ का अर्थ है अपने समान दूसरे गुट को धिक्कारेगी। "उख्त" अरबी भाषा में बहन को कहते हैं। एक गिरोह (समुदाय) को दूसरे गिरोह (समुदाय) की बहन धर्म के आधार पर अथवा भटकाव के कारण कहा गया है। अर्थात दोनों ही एक असत्य धर्म के अनुयायी थे अथवा भटके थे अथवा नरक के साथी होने के कारण उनको एक-दूसरे की बहन कहा गया है।

[2] ادّاركوا का अर्थ है تداركُوا जब एक-दूसरे से मिलेंगे तथा एकत्रित होंगे।

[3] أخرى (पिछले) से तात्पर्य बाद में प्रवेश करने वाले तथा أُولى से तात्पर्य उनसे पूर्व प्रवेश होने वाले हैं। अथवा पिछलों से अनुकरण तथा पूर्व से नेतृत्व करने वाले मुखिया का तात्पर्य है। उनका अपराध अत्यधिक है क्योंकि वे स्वयं सत्यमार्ग से दूर रहे तथा दूसरों को भी प्रयत्न करके दूर रखा, इसलिए वह अपने अनुसरण करने वाले से पहले नरक में जायेंगे।

[4]जिस प्रकार से एक-दूसरे स्थान पर फ़रमाया गया है। नरकवासी कहेंगे।

﴿رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا * رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا﴾

"हे हमारे प्रभु! हम तो अपने प्रमुखों तथा पूर्वजों के अनुगामी हैं, अत: उन्होंने हमें सीधे मार्ग से भटका दिया, हे मेरे प्रभु! इनको दुगुना प्रकोप (यातना) दे तथा उन पर बड़ी धिक्कार कर।" (*सूर: अल-अहज़ाब*-६७,६८)

[5]अर्थात अब एक-दूसरे को धिक्कारने तथा कोसने से कोई लाभ नहीं, तुम सभी अपने-अपने स्थान पर अपराधी थे, तुम सभी दुगुने दण्ड के अधिकारी हो। नेताओं तथा अनुगामियों का यह संवाद सूर: *सबा*-३१ तथा ३२ में भी वर्णन किया गया है।

فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾

तुम भी अपने कर्मों के कारण यातना का स्वाद लो।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) नि:सन्देह जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तथा उन से अहंकार किया उनके लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे[1] तथा वे स्वर्ग में प्रवेश नहीं पायेंगे जब तक ऊँट सूई के नाके में प्रवेश न कर जाये[2] तथा हम पापियों को इसी प्रकार प्रतिकार देते हैं।

لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

(४१) उनके लिए नरक की अग्नि का बिस्तर होगा तथा उनके ऊपर उसी का ओढ़ना होगा,[3] तथा हम अत्याचारियों को ऐसा ही दण्ड देते हैं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा जो विश्वास एवं सदाचार किये हम किसी प्राण को उसकी शक्ति अनुसार ही उत्तरदायी बनाते हैं,[4] यही स्वर्गीय हैं यही उसमें सदा वास करेंगे।

---

[1]इसका भावार्थ कुछ ने कर्म, कुछ ने प्राण तथा कुछ ने विनय लिया है अर्थात उन के कर्मों अथवा प्राणों अथवा विनय के लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे अर्थात कर्म तथा विनय स्वीकार नहीं की जाती तथा प्राण धरती की ओर लौटा दिये जाते हैं जैसा कि मुसनद अहमद भाग-२, पृ॰ ३६४, ३६५) की एक हदीस से भी विदित होता है। प्रकांड विद्वान इमाम शौकानी कहते हैं तीनों भावार्थ लिये जा सकते हैं।

[2]यह असम्भव वात है। जिस प्रकार ऊँट का सुई के छिद्र से पार होना असम्भव है उसी प्रकार काफ़िरों का स्वर्ग में प्रवेश असम्भव है।

[3] غـواش शब्द غاشية का बहुवचन है, जिसका अर्थ है "ढक लेने वाली" अर्थात आग ही उनका ओढ़ना होगा अर्थात ऊपर से भी आग ढांक लेगी।

[4]यह प्रासंगिक वाक्य है जिसका उद्देश्य यह बताना है कि ईमान तथा सत्कर्म, ये ऐसी चीज़ें नहीं है जो मनुष्य की शक्ति से अधिक हों तथा मनुष्य इनको करने की शक्ति न रखता

(४३) तथा हम उनके दिलों के कपट का निवारण कर देंगे[1] उन के नीचे नदियाँ प्रवाहित होंगी। और वह कहेंगे, अल्लाह के लिये सभी प्रशंसा है जिसने हमें इस के मार्ग पर लगाया यदि वह मार्गदर्शन न कराता तो हम स्वयं मार्ग पर नहीं लगते।[2] सचमुच हमारे

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ

हो। अपितु प्रत्येक मनुष्य सरलता से इनको अपना सकता है तथा उनकी आवश्यकताओं अथवा माँगों को पूरा कर सकता है।

[1] غــل उस ईर्ष्या को कहते हैं जो हृदय में दबी हो। अल्लाह तआला स्वर्ग वालों पर यह कृपा भी करेगा कि उनके हृदय एक-दूसरे के लिए दर्पण की भाँति साफ कर देगा, किसी के विषय में किसी को कोई द्वेष अथवा घृणा नहीं रह जायेगी। कुछ ने इसका अर्थ यह निकाला है कि स्वर्ग वालों के मध्य जो पद तथा सम्मान का अन्तर होगा, उस पर एक-दूसरे से ईर्ष्या नहीं करेंगे। पहले भावार्थ की एक हदीस से पुष्टि होती है कि स्वर्ग वालों को स्वर्ग तथा नरक के मध्य पुल पर रोक लिया जायेगा तथा उनके मध्य आपस में जो कटुता होगी, एक-दूसरे को उनका बदला दे दिया जायेगा। यहाँ तक कि वे जब पूर्णरूप से शुद्ध एवं पवित्र हो जायेंगे तो उनको स्वर्ग में प्रवेश करने की आज्ञा प्रदान कर दी जायेगी (सहीह बुख़ारी किताबुल मज़ालिम) जैसे सहाबा की आपसी कटुता है जो राजनैतिक प्रतिद्वन्दता के कारण उत्पन्न हुई। आदरणीय अली (رضي الله عنه) का कथन है, "मुझे आशा है कि मैं, उस्मान तथा तल्हा एवं ज़ुबैर उन लोगों में से होंगे जिन के विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है। ﴿وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ﴾ "(इब्ने कसीर)

[2]अर्थात यह मार्गदर्शन जिससे हमें ईमान तथा सत्कर्म का जीवन प्राप्त हुआ तथा उन्हें अल्लाह के दरबार में स्वीकार करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा है तथा उसका उपकार है। यदि यह कृपा तथा उपकार अल्लाह का न होता तो हम इस स्थान तक नहीं पहुँच सकते थे। इसी भावार्थ की यह हदीस भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यह बात भली-भाँति जान लो कि तुम में से किसी का कर्म स्वर्ग में नहीं ले जायेगा, जब तक कि अल्लाह तआला की कृपा भी न होगी।" सहाबा (उनसे परमेश्वर प्रसन्न हो गया) ने पूछा, "हे ईशदूत (आप पर अल्लाह की कृपा तथा शान्ति हो) आप भी ?" आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "हाँ, मैं भी उस समय तक स्वर्ग में नहीं जाऊंगा जब तक अल्लाह की कृपा मुझे अपने दामन में न ले लेगी।" (सहीह बुख़ारी किताबुल रिक़ाक़ बाबुल क़स्द वल मदावमः अलल अमल, सहीह मुस्लिम किताबु सिफ़ तुल क़ियामः बाब लन् यद्ख़ुल अहदुल जन्नः बे अमलेही)

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَنُودُوا أَن تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

प्रभु के उपदेशक सत्य के साथ आये। तथा उन से घोषणा स्वरूप कहा जायेगा कि अपने कर्म के बदले तुम इस स्वर्ग के उत्तराधिकारी बना दिये गये।[1]

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَن قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾

(४४) तथा स्वर्गवासी नरकवसियों को पुकारेंगे कि हम ने अपने परमेश्वर के वचन को जो हमें दिया सत्य पाया तो क्या तुम से तुम्हारे परमेश्वर ने जो वायदा किया सत्य पाया।[2] वे कहेंगे हाँ, फिर एक उदघोषक उनके बीच पुकारेगा कि अल्लाह का धिक्कार अत्याचारियों पर है।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) जो अपने परमेश्वर के मार्ग से रोकना और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं तथा वे परलोक का भी इन्कार करते हैं।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْأَعْرَافِ

(४६) तथा उन दोनों के बीच एक पर्दा होगा[3]

---

[1]यह व्याख्या पिछली बात तथा वर्णित हदीस के विपरीत नहीं है। इसलिए कि पुण्य का सौभाग्य भी स्वयं अल्लाह का उपकार तथा कृपा है।

[2]यही बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बद्र के अवसर पर जब काफ़िर मारे गये तथा उन के शव एक कुऐं में फेंक दिये गये उन्हें सम्बोधित करते हुए कही, जिस पर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने कहा, "आप ऐसे लोगों को सम्बोधित कर रहे हैं जो मर चुके हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह की सौगन्ध, मैं उन्हे जो कुछ कह रहा हूँ, वह तुम से अधिक सुन रहे हैं, परन्तु अब वे उत्तर देने की शक्ति नहीं रखते।" (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्नः, बाब अरदे मक़्अदिल मय्यित मिनल जन्नते अविन्नारे तथा बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब क़त्ले अबी जहल)

[3]"इन दोनों के मध्य" से तात्पर्य स्वर्ग नरक के मध्य अथवा ईमानवालों तथा काफिरों के मध्य है। हिजाबुन (حجاب) (आड़ अथवा पट) से दीवार तात्पर्य है जिस का वर्णन सूरः हदीद में है।

﴿فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ لَّهُ بَابٌ﴾

رِجَالٌ يَّعۡرِفُوۡنَ كُلًّاۢ بِسِيۡمٰهُمۡ‌ۚ وَنَادَوۡا اَصۡحٰبَ الۡجَـنَّةِ اَنۡ سَلٰمٌ عَلَيۡكُمۡ‌ ۚ لَمۡ يَدۡخُلُوۡهَا وَهُمۡ يَطۡمَعُوۡنَ ﴿۴۶﴾

एवं "आराफ़" पर कुछ पुरुष होंगे[1] जो प्रत्येक को उनके लक्षणों से पहचान लेंगे,[2] तथा स्वर्ग-वासियों को पुकारेंगे कि तुम पर शान्ति हो, वह उस (स्वर्ग) में प्रवेश नहीं पाये होंगे तथा उसकी आशा रखते होंगे ।[3]

وَاِذَا صُرِفَتۡ اَبۡصَارُهُمۡ تِلۡقَآءَ اَصۡحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوۡا رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا مَعَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۴۷﴾

(४७) तथा जब उनकी आँखें नरकवासियों पर पड़ेंगी तो कहेंगे कि हमारे परमेश्वर हमें अत्याचारियों के साथ न करना ।

وَنَادٰٓى اَصۡحٰبُ الۡاَعۡرَافِ رِجَالًا يَّعۡرِفُوۡنَهُمۡ بِسِيۡمٰهُمۡ قَالُوۡا مَاۤ اَغۡنٰى عَنۡكُمۡ جَمۡعُكُمۡ وَمَا كُنۡتُمۡ تَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿۴۸﴾

(४८) तथा आराफ़ वाले कुछ लोगों को जिन्हें उनके लक्षणों से पहचानते होंगे पुकारेंगे कि तुम्हारी भीड़ एवं तुम्हारा अहंकार तुम्हारे काम नहीं आया ।[4]

"तो उनके मध्य एक दीवार खड़ी कर दी जायेगी, जिसमें एक द्वार होगा ।" (*सूरः अल-हदीद*-१३) यही "आराफ़" की दीवार है ।

[1]यह कौन होंगे ? उनके निर्धारण के लिए व्याख्याकारों में अत्यन्त मतभेद है । अधिकतर व्याख्याकारों का विचार है कि यह वे लोग होंगे जिनके पुण्य तथा पाप समान होंगे । उनके पुण्य नरक में जाने से तथा पाप स्वर्ग में जाने से रोकेंगे तथा इस प्रकार अल्लाह की ओर से अन्तिम निर्णय होने तक वह अधर में लटके होंगे ।

[2] سيماء (सीमाअ) का अर्थ चिन्ह हैं । स्वर्ग वालों के मुख प्रकाश की ज्योति से उज्जवल होंगे तथा किसी पर थकावट के चिन्ह नहीं होंगे एवं नरक वालों के मुख काले तथा आँखें नीली होंगी । इस प्रकार वह दोनों प्रकार के लोगों को मुख चिन्हों से पहचान लेंगे ।

[3]यहाँ. يطمعون (यतमअुन) का अर्थ कुछ ने (यअलमून) किये हैं अर्थात उनको ज्ञान होगा कि वह निकट ही स्वर्ग में प्रवेशित कर दिये जायेंगे ।

[4]ये नरक वाले लोग होंगे जिनको आराफ़ वाले उनके चिन्हों से पहचान लेंगे तथा वे अपने गुट तथा श्रेष्ठता पर जो घमण्ड करते थे, उसके उद्धरण देकर उन्हें याद दिलायेंगे कि ये वस्तुयें तुम्हारे काम न आयीं ।

أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۚ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) क्या यहीं हैं जिनके विषय में तुम बलपूर्वक शपथ ले रहे थे कि इन (स्वर्गवासियों) पर अल्लाह की कृपा [1] नहीं होगी (उन से कहा जायेगा) कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ तुम पर कोई भय नहीं और न तुम क्षुब्ध होगे।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۚ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा नरक के साथी स्वर्ग के साथियों को पुकारेंगे कि हम पर कुछ पानी डाल दो अथवा अल्लाह ने तुम्हें जो जीविका प्रदान की है उसमें से कुछ, वे कहेंगे अल्लाह ने दोनों को विश्वासहीनों के लिये निषेध कर दिया है।[2]

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنسَاهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ

(५१) जिन्होंने अपने धर्म को मनोरंजन एवं खेल बना लिया तथा भौतिक जीवन ने जिन को फुसला दिया, अतः आज हम उन्हें भूल जायेंगे।[3]

---

[1] इससे तात्पर्य ईमान वाले हैं जो संसार में निर्धन, कंगाल, असहाय तथा कमज़ोर प्रकार के लोग थे जिनका उपहास वर्णित घमण्डी लोग उड़ाया करते थे तथा कहा करते थे कि यदि ये अल्लाह के प्रिय होते तो इनका दुनिया में यही हाल होता? उसके उपरान्त और दुस्साहस करके दावा करते कि क़ियामत वाले दिन अल्लाह की कृपा हम पर होगी (जिस प्रकार से दुनिया में हो रही है) न कि इन पर। कुछ व्याख्याकार इस कथन को आराफ़ वालों के मुख से माना है। तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि जब आराफ़ वाले नरक वालों को यह कहेंगे, "तुम्हारा गुट तथा तुम्हारा अपने को श्रेष्ठ समझना तुम्हारे कुछ काम नहीं आया।" तो उस समय अल्लाह की ओर से स्वर्ग वालों की ओर संकेत करते हुए कहा जायेगा, "यह वही लोग हैं जिनके विषय में तुम सौगन्ध खा-खाकर कहते थे कि उन पर अल्लाह की कृपा नहीं होगी (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2] जिस प्रकार पूर्व में गुज़र चुका है कि खाने-पीने की सुख-सुविधायें क़ियामत के दिन केवल ईमानवालों के लिए होंगी। ﴿خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ﴾ (आयत संख्या-३२) यहाँ इसका अधिक स्पष्टीकरण स्वर्ग वालों के मुख से करा दिया गया है।

[3] हदीस में आता है, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला अपने इस प्रकार के भक्त से कहेगा, "क्या मैं ने तुझे पत्नी तथा संतान प्रदान नहीं की थी? तुझे मान-सम्मान से विभूषित नहीं किया था? क्या ऊंट-घोड़े तेरी सेवा के लिए नहीं कर दिये थे? तथा क्या

يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٥١﴾

जैसे वह इस दिन को भूल गये तथा हमारी आयतों को नकारते रहे।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा हमने उन के पास एक शास्त्र ज्ञान पर आधारित सविस्तार विवरण के साथ भेज दिया है[1] जो मार्गदर्शन एवं दया है उन के लिये जो विश्वास रखते हैं।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ

(५३) क्या वह इसके अन्तिम परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं?[2] जिस दिन इस का अन्तिम परिणाम आ जायेगा, तो जिन लोगों ने इस

तू नेतृत्व करते समय लोगों से कर नहीं लेता था? वह कहेगा, क्यों नहीं? ऐ अल्लाह यह सभी बातें सत्य हैं। अल्लाह तआला उससे पूछेगा, क्या तू मुझसे मिलने पर विश्वास रखता था? वह कहेगा नहीं। अल्लाह तआला फ़रमायेगा, जिस प्रकार तू मुझे भूला रहा, तुझे आज मैं भूल जाता हूँ" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ुहद)। क़ुरआन करीम की इस आयत से यह भी ज्ञात होता है कि धर्म को खेलकूद बनाने वाले वही लोग होते हैं जो दुनिया के छल में लीन हो जाते हैं। ऐसे लोगों के हृदय से आख़िरत की चिन्ता तथा अल्लाह का भय निकल जाता है। इसलिए वह धर्म में भी अपनी ओर से जो कुछ चाहते हैं बढ़ा लेते हैं तथा धर्म के जिस भाग को चाहते हैं कर्म शून्य कर देते हैं अथवा उन्हें खेल-कूद का रूप दे देते हैं।

[1]यह अल्लाह तआला नरक वालों के विषय में ही कह रहा है कि हम नें पूर्ण ज्ञान के आधार पर ऐसी किताब भेज दी थी, जिसमें प्रत्येक बात स्पष्ट करके वर्णन कर दिया गया था। उन लोगों ने इससे लाभ नहीं उठाया, तो उनका दुर्भाग्य, वरन् जो लोग इस पर ईमान ले आये, वह मार्गदर्शन तथा अल्लाह की कृपा से लाभान्वित हुए। अर्थात हमने तो

﴿وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا﴾

"जब तक हम रसूल भेज कर सभी तर्क पूर्ण नहीं कर देते, हम यातना नहीं देते" (*सूर: बनी इस्राईल-१५*) के अनुसार प्रबन्ध कर दिया था।

[2]तावील का अर्थ है किसी वस्तु की वास्तविकता तथा परिणाम। अर्थात अल्लाह की किताब के द्वारा वायदा तथा चेतावनी तथा स्वर्ग-नरक आदि का वर्णन कर दिया था परन्तु ये उस दुनिया का परिणाम अपनी आँखों से देखने की प्रतीक्षा में थे, तो अब वह परिणाम उनके समक्ष आ गया।

رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَل لَّنَا مِن شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٥٣﴾

से पूर्व उसे भुला दिया वह कहेंगे कि हमारे परमेश्वर के उपदेशक सत्य ले कर आये, तो क्या कोई हमारा सिफ़ारिशी है जो हमारे लिये सिफ़ारिश कर दे, अथवा हम पुन: (संसार में) भेज दिये जाते तो उसके सिवाये कर्म करते जो करते रहे, उन्होंने स्वयं को क्षति में डाल दिया तथा जो बातें मढ़ते रहे उनसे खो गईं ।[1]

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي

(५४) वस्तुत: तुम्हारा पोषक अल्लाह ही है जिस ने आकाशों एवं धरती को छ: दिन में रचा,[2] तथा फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थिर हो

---

[1]अर्थात यह जिस परिणाम की प्रतीक्षा में थे, उनके समक्ष आ जाने के पश्चात् सत्यता को स्वीकार करने अथवा पुन: दुनिया में भेजने की इच्छा तथा अन्य किसी सिफ़ारिश करने वाले की खोज, यह सब बेकार होगी । वे ईष्टदेव भी उनसे लुप्त हो जायेंगे, जिन की वह अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते थे, वह न उनकी सहायता कर सकेंगे, न सिफ़ारिश तथा न नरक की यातना से ही छुड़ा सकेंगे ।

[2]ये छ: दिन रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुद्धवार, वृहस्पतिवार तथा शुक्रवार हैं । शुक्रवार के दिन ही आदरणीय आदम को पैदा किया गया । शनिवार के दिन कहते हैं कुछ भी पैदा नहीं किया गया, इसीलिए इसे अरबी भाषा में योमुस सब्त कहा जाता है । क्योंकि सब्त का शाब्दार्थ 'काटना' है अर्थात उस दिन सृष्टि का कार्य सामाप्त कर दिया गया । फिर उस दिन से क्या तात्पर्य है ? हमारी दुनिया के दिन, जो सूर्योदय से प्रारम्भ होकर सूर्यास्त पर समाप्त हो जाता है । अथवा यह दिन हज़ार वर्षों के समान है ? जिस प्रकार अल्लाह के यहाँ दिन की गणना है, अथवा जिस प्रकार से क़ियामत के दिन के विषय में आता है । स्वभाविक रूप से दूसरी बात अधिक उचित प्रतीत होती है । क्योंकि उस समय तक तो सूर्य तथा चन्द्रमा का यह नियम ही नहीं था, आकाश तथा धरती की सृष्टि के पश्चात ही यह नियम प्रारम्भ हुआ । दूसरे यह कि यह परलोक की बात है, जिसका संसार अर्थात इस लोक से कोई सम्बन्ध नहीं है । इसलिए इस दिन की वास्तविकता तो अल्लाह ही जानता है । हम दृढ़ता से कोई बात नहीं कह सकते । क्योंकि इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला को तो अरबी भाषा के शब्द 'कुन' (كن) कह देना ही पर्याप्त है तथा वह हो जाता है, इसके अतिरिक्त उसने प्रत्येक वस्तु को विभिन्न प्रकार से उत्पन्न किया है, इसकी भी वास्तविकता अल्लाह तआला ही जानता है, फिर भी कुछ आलिमों ने उसकी एक बुद्धिमत्ता लोगों को सुविधा, सम्मान, तथा क्रमिक रूप से कार्य करने कि शिक्षा देना बताया है । والله أعلم

الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

गया,[1] वह रात्रि को दिन से ऐसे छुपा देता है, कि वह उसे तीव्र गति से आ लेती है [2] तथा सूर्य एवं चन्द्रमा तथा सितारे को रचा कि वे उस के आदेशाधीन हैं, सुन लो उसी की रचना तथा उसी का आदेश है, सर्वलोक का पोषक अति शुभ है।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝

(५५) अपने परमेश्वर को नम्रतापूर्वक एवं चुपके से भी पुकारो, वह अतिक्रमणकारियों से प्रेम नहीं करता है।

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ

(५६) तथा धरती में सुधार के पश्चात बिगाड़ न उत्पन्न करो एवं भय तथा आशा के साथ

---

[1] استواء (इस्तेवा) के अर्थ हैं 'उच्च' तथा 'स्थिर' होना तथा सलफ़ ने बिना किसी भौतिक संरचना तथा बिना किसी तुलना के यही अर्थ लिए हैं। अर्थात अल्लाह तआला अर्श पर उच्च तथा स्थिर है। परन्तु किस प्रकार, किस स्थिति में, इसे हम वर्णन नहीं कर सकते न किसी प्रकार की तुलना अथवा उपमा ही प्रस्तुत कर सकते हैं नईम बिन हम्माद का कथन है, "जिस ने भी अल्लाह की तुलना अथवा उपमा किसी सृष्टि के साथ दिया उसने भी कुफ़्र किया तथा जिसने अल्लाह की, अपने विषय में वर्णित बात का इंकार किया उस ने भी कुफ़्र किया।" तथा अल्लाह के विषय में उसकी अथवा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा वर्णन की गई बात को वर्णन करना उपमा नहीं है। इसलिए जो बातें अल्लाह तआला के विषय में धार्मिक नियमों में वर्णन मिलते हैं तथा उनकी पुष्टि होती है उन पर बिना किसी तर्क तथा बिना स्थिति जाने तथा बिना उपमा के ईमान रखना आवश्यक है। (इब्ने कसीर)

[2] حثيثا (हषीषण) का अर्थ है अत्यधिक तीव्र गति से। तथा अर्थ है कि एक के पश्चात् दूसरा तुरंत आ जाता है। अर्थात दिन का प्रकाश आता है तो रात्रि का अंधेरा शीघ्र ही समाप्त हो जाता है तथा रात्रि आती है तो दिन का प्रकाश समाप्त हो जाता है तथा दूर तथा निकट अंधेरा छा जाता है।

قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

उसकी आराधना करो, निश्चय अल्लाह की दया सदाचारियों से निकट है।[1]

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

(५७) और वही अल्लाह है जो अपनी दया से पूर्व शुभ सूचना[2] के लिये हवायें भेजता है यहाँ तक कि जब वह भारी मेघों को लाद कर लाती हैं[3] तो हम उसे किसी सूखी धरती की ओर हाँक देते हैं फिर उससे जल वर्षा करते हैं फिर उससे प्रत्येक प्रकार के फल निकालते हैं।[4] हम इसी प्रकार मृतकों को निकालेंगे ताकि तुम विचार करो।[5]

---

[1]इन आयतों में चार बातों की शिक्षा दी गयी है : १. अल्लाह (परमेश्वर) से रोकर एवं धीमे स्वर में विनय की जाये। जिस प्रकार हदीस में आता है, "ऐ लोगो ! अपने जान के ऊपर दया करो (अर्थात धीमे स्वर से विनय करो) जिसको पुकार रहे हो, वह न बधिर है तथा न अनुपस्थित, वह तुम्हारी प्रार्थनायें सुनने वाला है तथा तुम्हारे निकट है।"(सहीह बुखारी प्रार्थना पुस्तक अध्याय घाटी पर चढ़ने के समय प्रार्थना, मुस्लिम स्वर्ग पुस्तक, धीमे स्वर से जाप करने की प्रधानता का अध्याय) २. प्रार्थना में अधिकता न की जाये अर्थात अपने पद तथा शक्ति से अधिक प्रार्थना न की जाये ३. सुधार के पश्चात उपद्रव न फैलाया जाये अर्थात अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करके उपद्रव फैलाने में भाग न लिया जाये। ४. उसके प्रकोप का भय भी दिल में हो तथा उसकी कृपा की आशा भी। इस प्रकार से प्रार्थना करने वाले अच्छे व्यक्ति हैं कि अवश्य अल्लाह की कृपा उनके निकट है।

[2]इस में अल्लाह (परमेश्वर) अपने पूज्य एवं पोषक होने का अन्य तर्क दे रहा है, फिर इस से पुनर्जीवित करने का प्रमाण दे रहा है। यहाँ दया से तात्पर्य वर्षा है अर्थात वर्षा से पहले वह शीतल वायु चलाता है जो वर्षा की शुभ सूचक होती है।

[3]भारी बादल से तात्पर्य जल से परिपूर्ण मेघ है।

[4]प्रत्येक प्रकार के फल, जो रंगों, तथा स्वादों एवं सुगंध में तथा रूप-रेखा में विभिन्न होते हैं।

[5]जिस प्रकार से हम वर्षा करके प्रायः मृत धरती में जीवन उत्पन्न कर देते हैं तथा वह विभिन्न प्रकार के अनाज तथा फल पैदा करती है। उसी प्रकार क़ियामत के दिन सभी

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۚ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा स्वच्छ धरती प्रचूरता से अपने पौधे उपजाती है एवं ख़राब (भूमि) अति अल्प उपज लाती है,[1] इसी प्रकार हम लक्षणों को विभिन्न प्रकार से वर्णन करते हैं, ताकि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي

(५९) हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को उन के वर्ग के पास भेजा तो उन्होंने कहा हे मेरे वर्ग, अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय

मनुष्यों को जो मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो चुके होंगे, हम पुनर्जीवित करेंगे तथा फिर उनका निर्णय करेंगे।

[1]इसके अतिरिक्त यह उदाहरण भी हो सकता है। البلد الطيب से तात्पर्य शीघ्र समझने वाले البلد الخبيث से कुबुद्धि-भाषण तथा शिक्षा स्वीकार करने वाला दिल तथा उसके विपरीत दिल, ईमानवालों का दिल तथा अवसरवादियों का दिल अथवा पवित्र मनुष्य तथा अपवित्र मनुष्य। ईमानवाले, पवित्र मनुष्य तथा भाषण एवं शिक्षा ग्रहण करने वाला दिल वर्षा को स्वीकार करने वाली धरती के समान है, जो अल्लाह के मन्त्रों को सुन कर ईमान लाते हैं तथा पुण्य कार्य करने में और दृढ़ हो जाते हैं तथा दूसरा दिल इसके विपरीत जो ऊसर भूमि के समान है जो वर्षा का पानी स्वीकार नहीं करती अथवा स्वीकार करती है तो थोड़ा-सा जिससे उपज भी कम होती है। इसको हदीस में इस प्रकार वर्णन किया गया है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वर्णन किया है, "मुझे अल्लाह तआला ने जो ज्ञान तथा निर्देश न देकर भेजा है, उसका उदाहरण इस मूसलाधार वर्षा के समान है जो धरती पर बरसी। उसके जो भाग उपजाऊ थे, उन्होंने पानी को अपने अन्दर सोख कर घास-फूस ख़ूब उगाया (अर्थात भरपूर उपज दी), उसके कुछ भाग कठोर थे जिन्होंने पानी रोक तो लिया (अन्दर सोखा नहीं) उससे अन्य लोगों ने लाभ उठाया, स्वयं भी पिया तथा खेतों की सिंचाई भी की तथा खेती की। तथा धरती का कुछ भाग बिल्कुल चटियल था, जिसने न पानी रोका तथा न कुछ उगाया। तो यह उस व्यक्ति का उदाहरण है जिस ने अल्लाह के धर्म में कुछ ज्ञान प्राप्त किया तथा अल्लाह ने मुझे जिस चीज़ के साथ भेजा उससे उसने लाभ उठाया, तथा स्वयं भी ज्ञान प्राप्त किया तथा दूसरों को भी सिखाया तथा उदाहरण उस व्यक्ति का भी है जिसने कुछ भी नही सीखा तथा न वह मार्गदर्शन ही स्वीकार किया जिसके साथ मुझे भेजा गया।" (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म बाब फ़ज़ले मन अलेम व अल्लम)

कोई तुम्हारा उपास्य नहीं, निःसंदेह मैं तुम पर घोर दिन की यातना से डरता हूँ।	أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾
(६०) उनके वर्ग के प्रमुखों ने कहा कि हम आप को खुली कुपथा में देख रहे हैं।[1]	قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾
(६१) उन्होंने कहा हे मेरे वर्ग के लोगो ! मैं विपथ नहीं परन्तु विश्व के पोषक का प्रतिनिधि हूँ।	قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾
(६२) तुम्हें तुम्हारे स्वामी का सन्देश पहुँचाता हूँ तथा तुम्हारी भलाई कर रहा हूँ तथा अल्लाह की ओर से वह ज्ञान रखता हूँ जो ज्ञान तुम नहीं रखते।	أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾
(६३) क्या तुम्हें आश्चर्य है कि तुम्हारे पोषक की ओर से तुम्हारे वर्ग के एक पुरुष पर कोई आदेश की बात आई है ताकि तुम्हें सचेत करे, तथा तुम संयम बरतो[2] तथा ताकि तुम पर दया की जाये।	أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾

[1]शिर्क (अर्थात मिश्रणवाद) मानव मति को ऐसे विकार ग्रस्त कर देता है कि वह संमार्ग को कुमार्ग तथा कुमार्ग को संमार्ग समझने लगता है। ईशदूत नूह के वर्ग में भी यह भ्रम उत्पन्न हुआ। ईशदूत नूह जो उन्हें एकेश्वरवाद की ओर बुला रहे थे (परमेश्वर की श्रण) वह उन्हें विपथ दिख रहे थे।

[2]ईशदूत नूह (जल पलावन मनु) तथा आदम (आदिमनु) के बीच दस पीढ़ियों का अन्तर है। आदरणीय नूह से कुछ पहले तक सभी लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी चले आ रहे थे फिर सर्वप्रथम एकेश्वरवाद से विमुखता ऐसे आई कि इस वर्ग के पुनीत लोगों का निधन हो गया तो उन के श्रद्धालुओं ने उन पर पूजास्थल बनाये तथा वहाँ उन के चित्र भी लटका दिये जिसका उद्देश्य यह था कि इस प्रकार उनके स्मरण से वह भी अल्लाह की उपासना करेंगे। कुछ समय व्यतीत होने पर उन्होंने इन चित्रों की मूर्तियाँ बनाई फिर कुछ समय के पश्चात् यह मुर्तियाँ पूज्य के रूप में आ गई तथा उन की पूजा होने लगी। नूह के वर्ग के यह पाँच पुनीत वद्द, स्वाअ, यगूस, यऊक तथा नस्र देवता बन गये। ऐसी दशा में

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) तो उन्होंने उन को झुठला दिया फिर हमने नूह तथा उनके अनुयायियों को नौका में बचा लिया तथा जो हमारी आयतें (निशानियाँ) नहीं माने उन्हें डूबो दिया। वस्तुतः वह एक अंधा वर्ग था।[1]

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) तथा आद के पास उनके भाई (ईशदूत) हूद को भेजा[2] उन्होंने कहा, हे मेरे वर्ग ! अल्लाह की आराधना करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूज्य नहीं क्या तुम डरते नहीं ?

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) उन के समुदाय के विश्वासहीन प्रमुखों ने कहा, हमें तुम मूर्ख लग रहे हो,[3] वस्तुतः हम तुम को झूठों मे से समझते हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِىْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) उन्होंने कहा, हे मेरे वर्ग के लोगो ! मुझ में मूर्खता नहीं परन्तु मैं विश्व के पोषक का संदेशवाहक हूँ।

अल्लाह ने आदरणीय नूह को उन का संदेशवाहक बनाकर भेजा जिन्होंने साढ़े नौ सौ वर्ष उन्हें आमन्त्रण दिया। किन्तु कुछ लोगों के सिवाय किसी पर आप की शिक्षा का प्रभाव नहीं पड़ा। अन्ततः निष्ठों के सिवाये सब जल प्रलय में डुबा दिये गये। इस आयत में वताया जा रहा है कि नूह के वर्ग ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि इन्हीं में का एक व्यक्ति ईशदूत बन कर आया जो उन्हें अल्लाह के प्रकोप से डरा रहा है। अर्थात उनके विचार से मानव ईशदूत बनाने योग्य नहीं है।

[1]अर्थात सत्य से, सत्य को न देखते थे न अपनाने के लिए तैयार थे।

[2]यह आद वर्ग प्रथम आद थे जिनका निवास यमन की रेतीली पहाड़ियों पर था तथा अपने वल एवं शक्ति में अनुपम थे। इनकी ओर उन्हीं की जाति के एक व्यक्ति आदरणीय "हूद" ईशदूत बन कर आये।

[3]उन के विचार में उनके पूवर्जों के पूज्य को त्याग कर अद्वैत तथा एक की पूजा की बात मूर्खता थी।

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾

(६८) मैं तुम्हें अपने परमेश्वर का संदेश पहुँचाता हूँ एवं तुम्हारा ईमानदार शुभचिन्तक हूँ।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِى الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) क्या तम्हें आश्चर्य है कि तुम्हारे पोषक की ओर से कोई उपदेश की बात तुम्हीं में से एक पुरुष के पास आई है ताकि वह तुम्हें सचेत करे, तुम याद करो जब कि (अल्लाह) ने तुम्हें नूह के वर्ग के पश्चात उन के स्थान पर कर दिया तथा तुम्हारी आकृति को अधिक विस्तार दिया,[1] अत: तुम अल्लाह की अनुकम्पाओं को याद करो ताकि सफल हो जाओ।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

(७०) उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम मात्र एक अल्लाह की पूजा करें तथा अपने पूर्वजों के पूज्यों को त्याग दें।[2] अत: तुम जिस की धमकी हमें देते हो लाओ यदि तुम सत्यवादी हो।

---

[1]एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने इसके विषय में वर्णन किया है।

﴿الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ﴾

"इस जैसी शक्तिवाला समुदाय कहीं पैदा नहीं किया गया।" (*सूर: अल-फ़ज्र-८*)

अपनी इस शक्ति के घमण्ड में आकर यह कहा कि ﴿مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً﴾ "हमसे अधिक शक्तिशाली कौन है ?" अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "जिसने उन्हें पैदा किया है वह उनसे अधिक शक्तिशाली है।" (*सूर: हा॰ मीम॰ सजद:-१५*)

[2]पूर्वजों का अनुकरण प्रत्येक समय में भटकावे का कारण रहा है। आद के समुदाय वालों ने भी यही तर्क प्रस्तुत किया तथा मूर्तिपूजा छोड़कर एकेश्वरवाद (तौहीद) का मार्ग अपनाने के लिए तैयार नहीं हुए। दुर्भाग्य से मुसलमानों में भी अपने पूर्वजों के अनुकरण का रोग सामान्य रूप से है।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۭ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَاۗءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَاۗؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝

(७१) उन्होंने कहा कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर प्रकोप एवं क्रोध आ ही गया,[1] क्या तुम मुझ से कुछ ऐसे नामों के विषय में विवाद करते हो[2] जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं, जिनका कोई तर्क अल्लाह ने नहीं उतारा है। तुम प्रतीक्षा करो हम (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

(७२) तो हम ने उसे तथा उसके अनुयायियों को अपनी दया से बचा लिया तथा उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया एवं वे ईमान वाले नहीं थे।[3]

وَاِلٰي ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ

(७३) तथा समूद के पास उनके भाई सालेह को (भेजा)। उन्होंने कहा, हे मेरे वर्ग के लोगों! अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पोषक की ओर से प्रमाण आ गया। यह

---

[1] رجس का अर्थ अपवित्रता है, परन्तु यहाँ (रिज्स) رجز से बदला हुआ है जिस का अर्थ प्रकोप है, फिर यहाँ रिज्स खिन्नता तथा क्रोध के अर्थ में है। (इब्ने कसीर)

[2]इससे तात्पर्य वह नाम हैं जो उन्होंने अपने पूज्यों के रखे हुये थे जैसे सदा, समूद, हबा आदि जैसे नूह के वर्ग के पाँच देवताओं के नाम की चर्चा अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में की है। जैसे अरब के मूर्तिपूजकों के मूर्तियों के नाम लात, उज्जा, मनात तथा हुबल आदि थे, जैसे आधुनिक मिश्रणवादी आस्था एवं कर्मों में लीन लोगों के नाम रखे हुये हैं, उदाहरणार्थ "दाता गंज बख़्श", "ख़ाजा ग़रीब नवाज़", "बाबा फरीद शकर गंज", "मुश्किल कुशा" आदि जिन के पूज्य अथवा मुश्किल कुशा (संकट मोचन) होने का कोई प्रमाण उनके पास नहीं।

[3]इस समुदाय पर हवाओं का प्रकोप आया जो निरंतर सात दिन आठ रातें चलता रहा तथा आद के लोगों के शव जिन्हें अपनी शक्ति पर बड़ा गर्व था खजूर के खोखले वृक्ष की भाँति धरती पर पड़े दिखाई दे रहे थे।

لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٧٣

अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये प्रमाण है। उसे अल्लाह की धरती में खाने को छोड़ दो उसे बुराई से हाथ न लगाना कि तुम्हें दुःखद यातना पकड़ ले।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝٧٤

(७४) तथा तुम उन परिस्थितियों को याद करो जब अल्लाह ने तुमको आद (वर्ग) के पश्चात उत्तराधिकारी बनाया एवं धरती में तुम्हें निवास स्थान दिया, तुम उसकी समतल भूमि में भवनों को निर्माण करते हो।[1] तथा पर्वतों को काट कर घर बनाते हो।[2] तो अल्लाह की अनुकम्पाओं का स्मरण करो तथा धरती में उपद्रव करते न फिरो।[3]

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝٧٥

(७५) उनकी क़ौम के अहंकारी प्रमुखों ने कहा अपने निर्बलों से जो ईमान लाये थे कि क्या तुम्हें विश्वास है कि सालेह अपने परमेश्वर के भेजे हुये हैं, उन्होंने कहा कि हम उस के प्रति विश्वास रखते हैं जिस के साथ उन्हें भेजा गया है।[4]

---

[1]इसका अर्थ है कोमल धरती से मिट्टी लेकर ईंटें तैयार करते हो तथा उन ईंटों से महल तैयार करते हो। जैसे आज भी भट्टों पर इसी प्रकार मिट्टी से ईंटें तैयार की जाती हैं।

[2]यह उनकी शारीरिक शक्ति तथा शिल्पकारी का वर्णन है।

[3]अर्थात इन उपकार पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करो तथा उसकी आज्ञा पालन का मार्ग अपनाओ न कि उपकार की अवज्ञा का तथा बुरे कर्मों को करके उपद्रव फैलाओ।

[4]अर्थात जो एकेश्वर का आमन्त्रण वह लेकर आये हैं, वह चूँकि प्राकृतिक अभियाचना है, हम तो उस पर ईमान ले आये हैं। शेष रही यह बात कि सालेह वास्तव में अल्लाह के रसूल हैं ? जो उनका प्रश्न था, उससे उन ईमानवालों ने इंकार नहीं किया क्योंकि वे

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوْٓا إِنَّا بِالَّذِيٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾

(७६) अहंकारी प्रमुखों ने कहा कि तुम जिसके प्रति विश्वास करते हो हम विश्वास नहीं रखते।[1]

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَ عَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَ قَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾

(७७) अत: उन्होंने ऊँटनी का वध कर दिया एवं अपने परमेश्वर के आदेश की अवहेलना की तथा कहा कि हे सालेह, यदि तुम ईशदूत हो तो अपनी धमकी पूरी करो।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾

(७८) फिर उन्हें भूकम्प ने धर लिया [2] तथा वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾

(७९) वह (सालेह) उन से मुँह फेर कर चल दिये, तथा कहा[3] कि हे मेरे वर्ग के लोगो ! मैंने तुमको अपने परमेश्वर का आदेश पहुँचा दिया तथा तुम्हारा शुभचिंतक रहा किन्तु तुम शुभचिंतकों से प्रेम नहीं करते।

उनके अल्लाह की ओर से रसूल होने पर विवाद करना उचित नहीं समझते थे। उनके निकट उनकी रिसालत साक्षात् वास्तविक एवं सत्य थी, जैसाकि वास्तव में थी।

[1]इस उचित उत्तर के पश्चात वे घमण्ड के कारण इंकार पर अड़े रहे।

[2]यहाँ رجفة (भूकम्प) का वर्णन है। अन्य स्थान पर صيحة (गर्जन) का। इससे ज्ञात होता है कि यह दोनों प्रकार का प्रकोप उन पर आया। ऊपर से गर्जन तथा नीचे से भूकम्प। इन दोनों प्रकोपों ने उन्हें नष्ट-विनष्ट कर दिया।

[3]यह नष्ट होने के पूर्व का सम्बोधन है अथवा नष्ट होने के पश्चात्, इसी प्रकार का सम्बोधन है जिस प्रकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बद्र का युद्ध समाप्त होने के पश्चात बद्र के स्थान पर मूर्तिपूजकों की लाशों को सम्बोधित करते हुए कहा था।

(८०) तथा हम ने लूत को भेजा[1] जब कि उन्होंने अपने समुदाय से कहा कि तुम ऐसा कुकर्म करते हो, जिसे तुम से पूर्व किसी ने अखिल जगत में नहीं किया ।

وَ لُوۡطًا اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهٖۤ اَتَاۡتُوۡنَ الۡفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمۡ بِهَا مِنۡ اَحَدٍ مِّنَ الۡعٰلَمِيۡنَ ۝٨٠

(८१) तुम पुरुषों के साथ सम्भोग करते हो[2]

اِنَّكُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الرِّجَالَ شَهۡوَةً

---

[1]आदरणीय लूत आदरणीय इब्राहीम के भतीजे थे तथा आदरणीय इब्राहीम पर ईमान लाने वालों में से थे। फिर स्वयं उनको अल्लाह ने एक क्षेत्र का नबी बना कर भेजा। यह क्षेत्र जार्डन तथा बैतुल मक़्दिस के मध्य का क्षेत्र है, जिसे सदूम कहा जाता है, यह धरती हरियाली तथा उपजाऊ थी तथा यहाँ हर प्रकार के फल तथा अनाज की उपज होती थी। क़ुरआन ने इस स्थान का مؤتفكة अथवा مؤتفكات के शब्दों में वर्णन किया है। आदरणीय लूत ने सर्वप्रथम सम्भवतः अल्लाह के एक होने का आमन्त्रण दिया जो प्रत्येक नबी के आमन्त्रण की आधारशिला थी तथा सर्वप्रथम वह इसी का आमन्त्रण अपने समुदाय को देते थे । जैसाकि पिछले नबियों की घटनाओं में जिनका वर्णन अभी गुज़रा है, देखा जा सकता है । दूसरी अन्य बड़ी बुराई थी पुरुषों के साथ कुकर्म, जो लूत के समुदाय में था, उसकी बुराई तथा कुकर्म का वर्णन किया। इससे यह ज्ञात होता है कि यह एक ऐसा पाप है जिसको सर्वप्रथम इसी लूत के समुदाय ने किया, इस पाप का नाम अरबी में लवातत् पड़ गया। इसलिए उचित समझा गया कि इस समुदाय को मूल अपराध के दुष्परिणामों से सूचित किया जाये। इसके अतिरिक्त आदरणीय इब्राहीम के द्वारा एकेश्वरवाद का आमन्त्रण यहाँ पहुँच चुका होगा। बाल मैथुन के दण्ड में इमामों के मध्य मतभेद है। कुछ इमामों के निकट वही दण्ड है जो व्यभिचार का दण्ड है। अर्थात अपराधी यदि विवाहित है तो पत्थरों से मार कर मार डाला जाये, यदि अविवाहित है तो सौ कोड़े। कुछ के निकट इसका दण्ड पत्थर से मार डालना है, चाहे अपराधी कैसा भी हो। कुछ के निकट करने करवाने वाले दोनों का वध कर दिया जाये। परन्तु इमाम अबु हनीफ़ा केवल निन्दा करने के दण्ड के पक्ष में हैं, कोड़ों अथवा किसी अन्य प्रकार के दण्ड के नहीं। (तोहफ़तुल अहवज़ी भाग-५ पृष्ठ १७)

[2]अर्थात पुरुषों के पास तुम इस असभ्य कार्य के लिए मात्र सम्भोग के उद्देश्य से आते हो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा अन्य कोई उद्देश्य नहीं होता जो बुद्धि के योग्य हो। इस आधार पर वे पशुओं के समान थे जो मात्र सम्भोग के लिए एक-दूसरे पर चढ़ते हैं।

مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

स्त्रियों को छोड़ कर ।[1] बल्कि तुम तो सीमा से गुज़र गये हो ।[2]

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा उनके समुदाय से कोई उत्तर न बन पड़ा सिवाय इसके कि आपस में कहने लगे कि इन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल दो । यह लोग बड़े पवित्र महात्मा बनते हैं ।[3]

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ڮ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾

(८३) तो हम ने उसको (लूत) तथा उन के सम्बन्धियों को बचा लिया सिवाय उनकी पत्नी के कि वह उन्हीं लोगों में रही जो (प्रकोप में) रह गये थे ।[4]

---

[1]जो सहवास तथा स्वाद का उचित स्थान है । यह उनकी प्रकृति के भ्रष्ट हो जाने की ओर संकेत है, अर्थात अल्लाह तआला ने पुरुष की कामवासना की तृप्ति के लिए स्त्री के गुप्तांग को स्थान तथा उचित बताया है परन्तु अत्याचारियों ने इसको छोड़ कर पुरुषों की गुदा को उसके लिए प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया ।

[2]परन्तु अब इस अप्राकृतिक कर्म तथा अल्लाह की निर्धारित सीमा के उल्लंघन को आधुनिक लोगों ने अपना लिया है तो यह मानव जाति का मौलिक अधिकार घोषित कर दिया गया है जिससे रोकने का किसी को कोई अधिकार नहीं । अब गुदा मैथुन को वैधानिक सुरक्षा प्राप्त है तथा यह कोई अपराध नहीं रह गया है । (अल्लाह हमें इस पाप से सुरक्षित रखे)

[3]यह तो आदरणीय लूत को बस्ती से निकालने का कारण है । शेष उनकी पवित्रता का प्रदर्शन या तो वास्तविक रूप से है तथा उनका उद्देश्य यह रहा हो कि यह लोग इस बुराई से बचना चाहते हैं, इसलिए अच्छा है कि यह हमारे साथ इस बस्ती में ही न रहें । अथवा यह उपहास तथा मजाक़ के रूप में उन्होंने कहा हो ।

[4] إنها كانت من الباقين في عذاب الله अर्थात वह उन लोगों मे शेष रह गयी जिन पर अल्लाह का प्रकोप आया क्योंकि वह भी मुसलमान नहीं थी । उसका समर्थन भी अपराधियों के साथ था । कुछ ने इसका अनुवाद "मरने वालों में से" किया है परन्तु यह पूरक अर्थ हैं, वास्तविक अर्थ वही हैं ।

(८४) तथा हम ने उन के ऊपर एक नयी प्रकार की वर्षा की,[1] तो देखो तो सही कि उन अपराधियों का क्या परिणाम हुआ ?[2]

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ

(८५) तथा हम ने मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा ।[3] उन्होंने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! तुम अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य देव नहीं । तुम्हारे प्रभु की ओर से तुम्हारी ओर स्पष्ट निशानी आ चुकी है, बस तुम माप-तौल

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

---

[1]यह विशेष प्रकार की वर्षा क्या थी ? पत्थरों की वर्षा, जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया है ।

﴿وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ﴾

"हमने उन पर तह पर तह पत्थरों की वर्षा बरसायी ।" (सूर: हूद-८२)

इससे पूर्व फ़रमाया جعلنا عاليها سافلها "हमने उस बस्ती को (उलट कर) नीचे कर दिया ।"

[2]अर्थात हे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) देखिए तो सही, जो खुल कर अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करते हैं तथा पैग़म्बरों को झुठलाते हैं, उनका परिणाम क्या हुआ ?

[3]मदयन आदरणीय इब्राहीम के पुत्र अथवा पौत्र का नाम था, फिर उन्हीं के वंश से सम्बन्धित क़बीले का नाम भी मदयन तथा जिस बस्ती में वे निवास करते थे उसका नाम भी मदयन पड़ा गया । इस प्रकार इस को क़बीले तथा बस्ती दोनों के लिए बोला जाता है । यह बस्ती हिजाज़ क्षेत्र के मार्ग में मआन के निकट है । इन्हीं को क़ुरआन में अन्य स्थान पर أصحاب الأيكة (वन के निवासी) भी कहा गया है । उनकी ओर आदरणीय शुऐब नबी बनाकर भेजे गये । देखिये (सूर: *अल-शुअराअ*-१७६)

टिप्पणी : प्रत्येक नबी को उनके समुदाय का भाई कहा गया है । जिसका अर्थ उसी समुदाय तथा जाति का एक व्यक्ति है, जिसको कुछ स्थान पर رسولا منهم अथवा من أنفسهم भी कहा गया है । तथा अर्थ उन सब का यही है कि रसूल तथा नबी मनुष्यों में से ही एक मनुष्य होता है जिसे अल्लाह तआला लोगों के मार्गदर्शन के लिए चुन लेता है तथा प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा उस पर अपनी किताब तथा आदेश उतारता है ।

اَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تُفۡسِدُوۡا فِى الۡاَرۡضِ بَعۡدَ اِصۡلَاحِهَا‌ ؕ ذٰ لِكُمۡ خَيۡرٌ لَّـكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ‌ۚ ﴿۸۵﴾

पूरा-पूरा किया करो तथा लोगों को उनकी वस्तुऐं कम कर के न दो।[1] तथा सम्पूर्ण धरती पर इसके पश्चात् कि सुधार कर दिया गया उपद्रव मत फैलाओ। यह तुम्हारे लिए लाभकारी है यदि तुम ईमान ले आओ।

وَلَا تَقۡعُدُوۡا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوۡعِدُوۡنَ وَتَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ مَنۡ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبۡغُوۡنَهَا عِوَجًا‌ ۚ وَاذۡكُرُوۡۤا اِذۡ كُنۡتُمۡ قَلِيۡلًا فَكَثَّرَكُمۡ‌ ۖ وَانْظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿۸۶﴾

(८६) तथा तुम प्रत्येक मार्ग पर उन्हें धमकी देने एवं अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिये जो अल्लाह के प्रति विश्वास कर लिये न बैठा करो तथा उसमें त्रुटि की खोज करते हुए।[2] तथा स्मरण करो जब तुम थोड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें अधिक कर दिया फिर देखो कि उपद्रवियों का अन्त कैसा रहा।

---

[1]तौहीद (अद्वैत) के प्रचार के पश्चात् उस वर्ग में नाप-तौल की कमी एक बड़ा दोष था जिस से रोका गया तथा पूरा-पूरा नाप तौल कर देने की शिक्षा दी गई, यह दोष भी अति भयावह है जिस से उस समुदाय के नैतिक पतन का पता लगता है जिस में यह दोष पाया जाता है। यह अति घोर अपभोग है कि पैसे तो पूरे लिये जायें तथा चीज़ कम दी जाये। अतः *सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन* में ऐसे ही लोगों के लिए विनाश की सूचना दी गई है।

[2]अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिये उसमें त्रुटि की खोज करना प्रत्येक युग के दुराचारियों का प्रिय व्यवहार रहा है जिस का उदाहरण वर्तमान में धर्म के आधुनिकीकरण कारियों तथा पश्चिमी सभ्यता के प्रेमियों में देखा जाता है। (अल्लाह हम को उन से सुरक्षित रखे) इस के सिवाय अल्लाह के मार्ग से रोकने के और भी कई अर्थ किये गये हैं, उदाहरणार्थ लोगों को दुख देने के लिये मार्गों पर बैठना जैसा कि दुराचारियों का आचरण है, अथवा आदरणीय शुऐब की तरफ जाने के मार्गों से रोकना ताकि जो लोग उधर जायें उन्हें रोका तथा भ्रम में डाला जाये, जैसे मक्का नगर के कुरैश करते थे अथवा धर्म के मार्गों पर बैठना तथा धर्मावलम्बियों को उस से रोकना अथवा लूटमार के लिये नाकों पर बैठना ताकि राहियों को लूट लें, अथवा कुछ के समीप कर तथा चुंगी लेने के लिये मार्गों पर बैठना है। इमाम शौकानी ने कहा कि यह सभी अर्थ इस के अन्तर्गत आ सकते हैं क्योंकि यह संभव है कि वह सभी उपरोक्त दुराचार करते रहे हों (फ़तहुल क़दीर)

وَإِن كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنكُمْ ءَامَنُوا۟ بِٱلَّذِىٓ أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا۟ فَٱصْبِرُوا۟ حَتَّىٰ يَحْكُمَ ٱللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा यदि तुम में से कुछ लोगों ने उस आदेश के प्रति विश्वास किया जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ तथा कुछ ने विश्वास नहीं किया है तो थोड़ा धैर्य रखो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे तथा वह सर्वोत्तम न्यायकारी है।[1]

---

[1]यह अधर्म को सहन करने का आदेश नहीं वरन् उनके लिये धमकी तथा चेतावनी है क्योंकि अल्लाह का निर्णय सदाचारियों को दुराचारियों पर विजय तथा प्रभुत्व देने का ही होता है। यह ऐसे ही है जैसाकि दूसरे स्थान पर उसका कथन है कि

(فتربصوا إنا معكم متربصون)

"तुम प्रतिक्षा करो हम भी तुम्हारे साथ प्रतिक्षा कर रहे हैं।" (सूर: तौब:-५२)

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَٰشُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾

(८८) उनके वर्ग के घमण्डी प्रमुखों ने कहा हे शुऐब ! हम तुम्हें एवं जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं उनको अवश्य अपने नगरों से निकाल देंगे वरन् तुम फिर हमारे धर्म में आ जाओ[1] उन्होंने कहा कि जबकि हम उससे घिन करते हों ।[2]

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ

(८९) हम तो अल्लाह पर मिथ्या का आरोपण करेंगे यदि हम तुम्हारे धर्म में फिर से आ गये जबकि अल्लाह ने हमें उससे मुक्त कर दिया है[3] तथा हमारे लिये उसमें फिर से आ जाना संभव नहीं परन्तु यह कि अल्लाह चाहे जो

---

[1]इन सरदारों के घमण्ड तथा अभिमान का अनुमान कीजिए कि उन्होंने ईमान तथा एकेश्वरवाद (तौहीद) के आमन्त्रण का केवल खण्डन ही नहीं किया अपितु उससे भी बढ़ कर अल्लाह के पैग़म्बर तथा ईमान लाने वालों को चेतावनी भी दी कि या तो तुम अपने पूर्वजों के धर्म पर वापस आ जाओ वरन् हम तुम्हें यहाँ से निकाल देंगे। ईमानवालों को अपने पूर्व के धर्म पर लाने की बात कुछ सीमा तक समझ में आती है, क्योंकि उन्होंने कुफ्र को छोड़ कर ईमान का मार्ग अपनाया था, परन्तु आदरणीय शुऐब को भी पूर्वजों के समुदाय की ओर लौटने का आमन्त्रण इसलिए था कि वह उन्हें भी नबूवत व चेतावनी तथा आमन्त्रण से पूर्व अपने धर्म का अनुयायी समझते थे। यद्यपि वास्तव में यह सत्य नहीं है। अथवा अधिकतर के कारण उन की गणना भी उन्हीं में कर लिया जो पहले अपने पूर्वजों के धर्म पर थे।

[2]यह लुप्त प्रश्न का उत्तर है। जिसमें अरबी वर्णमाला का हम्ज़ा इंकार करने के लिये है तथा वाव दशा के वर्णन के लिए है। अर्थात क्या तुम हमें अपने धर्म में पुन: लाओगे- अथवा हमें अपनी नगरी से निकाल दोगे जब कि हम इस धर्म में पुनर्गमन तथा इस नगरी से निकलने में रुचि न रखते हों। अभिप्राय यह है कि तुम्हारे लिये ऐसा करना उचित नहीं कि तुम हमें दोनों में से किसी एक को स्वीकार करने पर बाध्य करो।

[3]अर्थात यदि हम पूवर्जों के धर्म की ओर लौट आयें जिससे अल्लाह तआला ने हमें मुक्त कर दिया है, तो इसका अर्थ यह होगा कि हमने ईमान तथा एकेश्वरवाद (तौहीद) का आमन्त्रण दे कर अल्लाह पर झूठ बाँधा था। अर्थ यह हुआ कि यह सम्भव नहीं है कि हमारी ओर से ऐसा हो।

رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿٨٩﴾

हमारा पोषक है ।[1] हमारे परमेश्वर ने प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की परिधि में ले रखा है, हमने अपने अल्लाह पर ही भरोसा कर लिया ।[2] हे हमारे परमेश्वर ! हमारे एवं हमारे लोगों के बीच निर्णय कर दे सत्य के साथ तथा तू सर्वोत्तम निर्णायक है ।[3]

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा उनके वर्ग के काफ़िर प्रमुखों ने कहा कि यदि तुम ने शुऐब का अनुसरण किया तो उस समय तुम नि:सन्देह क्षतिग्रस्त हो जाओगे ।[4]

---

[1]अपना संकल्प व्यक्त करने के पश्चात इस बिषय को अल्लाह की इच्छा के सुपुर्द कर दिया । अर्थात हम अपनी इच्छा से अब कुफ़्र की ओर नहीं लौट सकते । हाँ, यदि अल्लाह चाहे तो अन्य बात है । कुछ लोग कहते हैं कि यह ﴿حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ﴾ के समान असंभव के साथ संबन्धित करना है अर्थात जैसे सूई के नाके में ऊँट का प्रवेश असंभव है इसी प्रकार हमारा अपने पूवर्जों के धर्म में पुनर्गमन असंभव है ।

[2]कि वह हमें ईमान पर दृढ़ रखेगा तथा हमारे एवं अधर्म तथा अधर्मियों के मध्य आड़ बना रहेगा । हम पर अपने उपकार की वर्षा करेगा तथा अपनी यातना से सुरक्षित रखेगा ।

[3]तथा जब अल्लाह निर्णय कर लेता है तो यही होता है कि वह ईमान वालों को सुरक्षित रख कर झूठे तथा घमण्डियों का सर्वनाश कर देता है । यह मानो अल्लाह के प्रकोप की माँग है ।

[4]अपने पूर्वजों के धर्म को छोड़ना तथा माप-तौल में कमी न करना, यह उनके निकट हानिवाली बात थी । वास्तविकता यह थी कि इसमें उन्हीं का लाभ था, परन्तु संसार वालों की दृष्टि में लाभ ही सभी कुछ होता है, जो माप-तौल में डंडी मारने से उन्हें प्राप्त हो रहा था, वह ईमानवालों के दीर्घगामी लाभ के लिए उसे क्यों छोड़ते ?

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩١﴾

(९१) तो उनको भूकम्प ने आ पकड़ा, इसलिए वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये ।[1]

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٢﴾

(९२) जिन्होंने शुऐब को झुठलाया, उनकी यह स्थिति हो गयी कि जैसे उन (घरों) में कभी बसे ही नहीं थे ।[2] जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही हानि में पड़ गये ।[3]

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٩٣﴾

(९३) उस समय शुऐब उनसे मुहँ मोड़ कर चले तथा कहने लगे कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! मैंने अपने प्रभु के संदेश तुम्हें पहुंचा दिये तथा मैं ने तुम्हारी शुभ चिन्ता की, फिर मै उन काफिरों पर दुखी क्यों हूँ ?[4]

---

[1] यहाँ رَجْفَة (रजफ़ः) आया है जिसका अर्थ भूकम्प है तथा सूरः हूद आयत संख्या ९४ में صَيْحَة शब्द जिसका अर्थ "चीख़" प्रयोग हुआ है । इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि प्रकोप में यह सब हुआ ।अर्थात छाया वाले दिन प्रकोप आया, सर्वप्रथम मेघों की छाया में आग के शोले चिंगारियाँ, फिर आकाश से अति तीव्र गर्जन हुई तथा धरती में भूकम्प आया, जिसके कारण उनकी आत्माओं ने शरीर छोड़ दिया तथा अजीवित शव बन कर पक्षियों की भाँति घुटनों में मुंह देकर औंधे के औंधे पड़े रह गये ।

[2]अर्थात जिस बस्ती से यह अल्लाह के दूत तथा उनके अनुयायियों को निकालने पर अड़े थे, अल्लाह की ओर से प्रकोप होने के कारण ऐसे हो गये, जैसे वह यहाँ रहते ही न रहे हों ।

[3]अर्थात हानि में वही लोग रहे जिन्हों ने पैग़म्बरों को झुठलाया, न कि पैग़म्बर तथा उन पर ईमान लाने वाले । तथा हानि भी दोनों लोक में । संसार में अपमान की यातना का स्वाद चखा तथा परलोक में उनके लिए अत्यधिक दुखदायी कठोर यातना तैयार है ।

[4]यातना, तथा सर्वनाश के पश्चात जब वह (आदरणीय शुऐब) वहाँ से चले, तो अत्यधिक भावुक हो कर कहा । तथा साथ ही साथ यह भी कह दिया कि जब मैंने सत्य की चेतावनी का दायित्व अदा कर दिया एवं अल्लाह का संदेश उन तक पहुँचा दिया, तो अब मैं ऐसे लोगों पर अपने संवेदना का प्रदर्शन करूँ तो क्यों करूँ ? जो इसके उपरान्त अपने अविश्वास तथा अनेकेश्वरवाद पर अड़े रहे ।

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِىْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा कि वहाँ के निवासियों को हम ने रोग तथा दरिद्रता से पकड़ा न हो, ताकि वे गिड़गिड़ायें (विनती करें)।[1]

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾

(९५) फिर हमने उस दरिद्रता को सुसम्पन्न्ता से बदल दिया, यहाँ तक जब वे सम्पन्न हो गये तथा कहने लगे कि हमारे पूर्वजों को भी तंगी तथा उन्नति का सामना करना पड़ा, तो हमने सहसा उनको पकड़ लिया।[2] तथा उनको सूचना भी न थी।

---

[1] بأساء (बासाअ) का शब्दार्थ शारीरिक दुख अर्थात रोग है तथा ضرّاء (ज़र्राअ) का अर्थ निर्धनता एवं दरिद्रता है। तात्पर्य यह है कि जिस बस्ती में भी हमने संदेशवाहक भेजा, उन्होंने उसे झुठलाया, जिसके प्रत्युत्कार में हमने उन्हें रोग एवं दीनता में ग्रस्त कर दिया, जिस से उद्देश्य यह था कि यह अल्लाह की ओर पलट आयें तथा उस से विनय करें।

[2] अर्थात निर्धनता तथा रोग में ग्रस्त होने के कारण जब उन में अल्लाह की ओर ध्यान केन्द्रित करने तथा उसके मार्ग पर चलने की भावना भी उत्पन्न नहीं हुई, तो हमने उनकी निर्धनता को धन-धान्य से परिपूर्ण तथा रोग को स्वस्थ में परिवर्तित कर दिया ताकि वह उस पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त कर सकें। परन्तु इस आन्दोलन से भी उनकी जीवन शैली में परिवर्तन न आया तथा उन्होंने कहा कि यह तो सदैव से होता चला आया है कभी निर्धनता आ गयी कभी धन धान्य से परिपूर्ण हो गये। कभी रोग तो कभी स्वस्थ, कभी रंक कभी राजा अर्थात निर्धनता का प्रथम उपचार न उनके लिए सफल रहा तथा न धन-धान्य से परिपूर्णता, उनके सुधार के लिए सफल सिद्ध हुई। वह इसे रात-दिन की चाल ही समझते रहे तथा उसके पीछे कार्यरत अल्लाह की इच्छा को समझने में असफल रहे, तो फिर हमने उन्हें सहसा अपने प्रकोप के चंगुल में पकड़ लिया। इसीलिए हदीस में मुसलमानों के लिए इसके विपरीत वर्णित किया गया है कि वह वैभव तथा सुविधा प्राप्त होने पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करते हैं तथा दुख पहुँचने पर धैर्य से काम लेते हैं, इस प्रकार दोनों ही स्थिति उनके लिए कल्याणकारी तथा पुण्य का कारण बनती है। (सहीह मुस्लिम किताबुज़ जुहद बाबुल मोमिन अमरुहू कुल्लुहू ख़ैर)

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٦﴾

(९६) और यदि उन नगरों के निवासी ईमान लाते तथा संयम बरतते तो हम आकाश एवं धरती की विभूतियों के द्वार उन पर खोल देते परन्तु उन्होंने झुठलाया तो हम ने उन्हें उन के कुकर्मों के कारण घेर लिया।

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٩٧﴾

(९७) क्या फिर भी इन बस्तियों के निवासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि उन पर हमारा प्रकोप रात्रि के समय आ पड़े जिस समय वह निद्रा में हों।

أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾

(९८) तथा क्या उन बस्तियों के निवासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं? कि उन पर हमारा प्रकोप दिन चढ़े में आये जिस समय वे खेलों में व्यस्त हों।

أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾

(९९) क्या वह अल्लाह की योजना से निर्भय हो गये सो अल्लाह की योजना से क्षतिग्रस्त लोग[1] ही निर्भय होते हैं।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ أَهْلِهَا

(१००) तो क्या जो लोग धरती में उस के निवासियों के विनाश के पश्चात उत्तराधिकारी

---

[1]इन आयतों में अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम यह वर्णन किया है कि ईमान (विश्वास) तथा संयम ऐसा विषय है कि जिस बस्ती के लोग उसे अपना लें उस पर अल्लाह तआला आकाश तथा धरती के धन-सम्पत्तियों के द्वार खोल देता है अर्थात आवश्यकतानुसार आकाश से वर्षा करता है तथा धरती को उससे सिंचाई करके उपज को बढ़ाता है। परिणामस्वरूप उन्नति तथा समृद्धि होती है, परन्तु इसके विपरीत झुठलाने वाले तथा कुफ्र का मार्ग अपनाने वाले समुदाय अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी होते हैं, फिर ज्ञात नहीं होता कि रात्रि-दिन किस समय प्रकोप आ पड़े तथा खेलती-खाती इस बस्ती को एक क्षण में खण्डहर बना कर रख दे। इसलिए अल्लाह के इन प्रकोपों से निश्चिन्त नहीं होना चाहिए। इस निश्चिन्तता का परिणाम मात्र हानि के अन्य कुछ नहीं। مَكْرٌ (मकर) के भावार्थ के लिए देखिए सूर: आले इमरान आयत ५४ की व्याख्या।

أَن لَّوْ نَشَاءُ أَصَبْنَٰهُم بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾

बने हैं उन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि यदि हम चाहें तो उनके पापों के कारण उन्हें विपदा में डाल दें तथा उनके दिलों पर बन्द लगा दें फिर वे सुन न सकें ।[1]

تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا

(१०१) इन नगरों की कुछ घटनायें हम आप को बता रहे हैं तथा उन के ईशदूत उनके पास तर्कों सहित आये[2] फिर भी जिसे उन्होंने पहले नहीं माना उसे फिर मानने योग्य न हुये ।[3] इसी

---

[1]अर्थात पापों के परिणाम स्वरूप केवल प्रकोप ही नहीं आता है, दिलों पर भी ताले लग जाते हैं । फिर बड़े से बड़े प्रकोप भी उनको निश्चिन्तता की निद्रा से नहीं जगा सकते । अन्य कुछ स्थानों की भाँति अल्लाह तआला ने यहाँ भी वर्णन किया है कि जिस प्रकार हमने पूर्व के समुदायों को उनके पाप के कारण नष्ट किया, हम चाहें तो तुम्हें भी तुम्हारे कुकर्मों के परिणाम स्वरूप नष्ट कर दें । तथा दूसरी बात यह वर्णित की गयी कि सत्य की आवाज़ के लिए उनके कान बन्द हो जाते हैं । फिर चेतावनी एवं शिक्षा-दीक्षा उन के लिये व्यर्थ होकर रह जाती है ।

[2]जिस प्रकार पूर्व के पृष्ठों पर कुछ नबियों का वर्णन गुज़रा, بَيِّنات (बइय्येनात) का अर्थ तर्क, तथा युक्ति एवं चमत्कार दोनों से हैं । उद्देश्य यह है कि रसूल के द्वारा जब तक हमने अपनी निशानियाँ नहीं दिखा दीं, हमने उनको नष्ट नहीं किया । क्योंकि

﴿ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴾

"जब तक हम रसूल नहीं भेज देते प्रकोप नही उतारते ।" (सूर: बनी इस्राईल-१५)

[3]इसका एक भावार्थ यह है कि प्रतिज्ञा दिवस को जब उन से वचन लिया गया था तो ये अल्लाह के ज्ञान में ईमान लाने वाले न थे, इसलिए जब उन के पास अल्लाह के रसूल आये तो अल्लाह के ज्ञान के अनुसार वे ईमान नहीं लाये । क्योंकि उनके भाग्य में ईमान लाना नहीं था, जिसे अल्लाह ने अपने ज्ञान के अनुसार लिख दिया था । जिसको हदीस में فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरतुल लैल) से तुलना की गयी है । दूसरा भावार्थ यह है कि जब उनके पास पैग़म्बर आये, तो वह इस कारण उन पर ईमान नहीं लाये कि वह इससे पूर्व सत्य को झुठला चुके थे । अर्थात प्रारम्भ में ही जिस चीज़ को झुठला चुके थे, यही पाप उनके ईमान न लाने का कारण बन गया तथा ईमान लाने के सौभाग्य से वे वंचित हो गये, इसलिए अगले वाक्य में मोहर लागने से तुलना की गयी है ।

بِمَا كَذَّبُوا مِن قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١٠١﴾

प्रकार अल्लाह विश्वासहीनों के दिलों पर मुद्रा लगा देता है।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِم مِّنْ عَهْدٍ ۖ وَإِن وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तथा हमने उनके अधिकतर लोगों को वचन का पालन करते नहीं पाया [1] तथा हम ने उनमें से अधिकतर को अवज्ञाकारी पाया।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾

(१०३) फिर उनके पश्चात हमने (ईशदूत) मूसा को अपने लक्षणों के साथ फ़िरऔन एवं उस के प्रमुखों के पास भेजा।[2] तो उन्होंने उनका हक़ पूरा न किया। फिर देखो कि उपद्रवियों का अन्त कैसा रहा।[3]

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा मूसा ने फ़रमाया, ऐ फ़िरऔन ! मैं अखिल जगत के प्रभु की ओर से पैग़म्बर हूँ।

﴿وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ﴾

"तथा तुझे क्या ज्ञात है ये तो ऐसे (दुर्भाग्यशाली) हैं कि इन के पास निशानियाँ भी आ जायें तब भी ईमान न लायें तथा हम उनके दिलों तथा आँखों को उलट देंगें (तो) जैसे यह इस (क़ुरआन) पर पहली बार ईमान नहीं लाये वैसे फिर न लायेंगे" (सूर: अल-अनाम १०९ तथा ११०)

[1]इससे कुछ ने अल्लाह के प्रभु होने का वचन लिया है जो आत्माओं के लोक में लिया गया था, कुछ ने प्रकोप टालने के लिए पैग़म्बर से जो सन्धि करते थे, वे वचन अथवा सन्धियाँ तथा कुछ ने सामान्य वचन का तात्पर्य लिया है, जो आपस में एक-दूसरे से करते थे। और यह वचन तोड़ना, चाहे वह किसी भी प्रकार हो, भ्रष्ट कार्य है।

[2]यहाँ से आदरणीय मूसा का वर्णन प्रारम्भ हो रहा है, जो वर्णित नबियों के पश्चात आये, जो महान सम्मानित पैग़म्बर थे, जिन्हें मिस्र के फ़िरऔन तथा उसकी जनता के पास निशानियाँ तथा चमत्कार दे कर भेजा गया था।

[3]अर्थात उन्हें डुबो दिया गया जैसा कि आगे आयेगा।

حَقِيقٌ عَلَىٰٓ أَن لَّآ أَقُولَ عَلَى ٱللَّهِ إِلَّا ٱلْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿١٠٥﴾

(१०५) मेरे लिए यही योग्य है कि सत्य के सिवाय अल्लाह पर कोई बात न बोलूँ। मैं तुम्हारे प्रभु की ओर से एक बड़ी निशानी भी लाया हूँ।[1] इसलिए तू इस्राईल की संतान को मेरे साथ भेज दे।[2]

قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ بِـَٔايَةٍ فَأْتِ بِهَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) उस (फ़िरऔन) ने कहा यदि आप कोई चमत्कार लेकर आये हैं, तो उसे प्रस्तुत कीजिए यदि आप सच्चे हैं।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾

(१०७) फिर आपने अपनी छड़ी डाल दी, तो सहसा वह एव स्पष्ट अजगर सर्प बन गया।

وَنَزَعَ يَدَهُۥ فَإِذَا هِىَ بَيْضَآءُ لِلنَّٰظِرِينَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा अपना हाथ बाहर निकाला, तो वह सहसा सभी देखने वालों के समक्ष बहुत ही चमकता हुआ हो गया।[3]

قَالَ ٱلْمَلَأُ مِن قَوْمِ فِرْعَوْنَ

(१०९) फ़िरऔन के वर्ग के प्रमुखों ने कहा

---

[1]जो इस बात का प्रमाण है कि मैं वास्तव में अल्लाह की ओर से भेजा गया रसूल हूँ। इस चमत्कार और बड़ी निशानी का वर्णन भी आगे आयेगा।

[2]इस्राईल की सन्तान जिनका मूल निवास सीरिया का क्षेत्र था, आदरणीय यूसुफ़ के समय में मिस्र चली गयी थी फिर वहीं के निवासी हो गये। फ़िरऔन ने उन्हें दास बना लिया था। तथा उन पर नाना प्रकार के अत्याचार करता था जिसका विस्तृत वर्णन सूरः अल बक़रः में गुज़र चुका है तथा आगे भी आयेगा। फ़िरऔन तथा उसके दरबार के मन्त्रियों ने जब आदरणीय मूसा के आमन्त्रण को ठुकरा दिया तो आदरणीय मूसा ने दूसरी माँग की कि इस्राईल की संतान को स्वतन्त्र कर दे ताकि यह अपने मूल स्थान पर जाकर मान-सम्मान का जीवन व्यतीत करें तथा अल्लाह की इबादत करें।

[3]अर्थात अल्लाह तआला ने जो दो बड़े चमत्कार प्रदान किये थे, अपनी सच्चाई के लिए उसे प्रस्तुत कर दिया।

إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٩﴾

कि यह बड़ा ज्ञाता (निपुण) जादूगर है ।[1]

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾

(११०) वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकलना चाहता है फिर तुम लोग क्या विचार देते हो ?

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿١١١﴾

(१११) उन्होंने कहा कि आप उसे तथा उसके भाई को समय दीजिए तथा नगरों में एकत्र कर्ताओं को भेज दीजिए ।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾

(११२) कि वे सभी माहिर जादूगरों को आप के समक्ष लाकर उपस्थित करें ।[2]

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٣﴾

(११३) तथा जादूगर फ़िरऔन के पास आये और कहा कि यदि हम सफल हो गये तो क्या हमारे लिए कोई प्रतिकार है ?

---

[1]चमत्कार को देख कर ईमान लाने के बजाय फ़िरऔन के सभासदों ने उसे जादू कह दिया कि यह तो बड़ा दक्ष जादूगर है जिससे उसका उद्देश्य तुम्हारा राज्य समाप्त करना है । क्योंकि आदरणीय मूसा के समय में जादू का सामान्य प्रचलन हो रहा था, इसलिए चमत्कार को भी उन्होंने जादू समझा, जिन में लेश मात्र भी मनुष्य का अधिकार नहीं होता । शुद्ध रूप से अल्लाह की इच्छा से ही प्रदर्शित होते हैं । इस प्रकार इस विषय से फ़िरऔन के दरबारियों के लिए आदरणीय मूसा के विरुद्ध फ़िरऔन को बहकाने का अवसर प्राप्त हो गया ।

[2]आदरणीय मूसा के समय में जादूगरों को बड़ा सम्मान प्राप्त था, इसीलिए आदरणीय मूसा द्वारा प्रस्तुत चमत्कार को भी उन्होंने जादू समझा तथा जादू के द्वारा उसके काट की योजना बनायी । जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया कि फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों ने कहा, "हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि अपने जादू की शक्ति से हमें अपनी धरती से निकाल दे अत: हम भी इस जैसा जादू इसके मुकाबिले में लायेंगे, इसके लिए किसी उचित स्थान तथा समय का निर्धारण हम स्वयं करें जिसका दोनों पालन करें । आदरणीय मूसा ने कहा कि नौरोज़ का दिन तथा चाश्त का समय है, इस हिसाब से लोग एकत्रित हो जायें ।" (सूर: ताहा- ५७ से ५९)

(११४) उसने कहा हाँ, और तुम सब निकट-वर्ती लोगों में हो जाओगे ।[1]

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾

(११५) उन (जादूगरों) ने कहा कि ऐ मूसा चाहे आप डालिए अथवा हम ही डालें ।[2]

قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾

(११६) (मूसा) ने कहा कि तुम ही डालो ।[3] तो जब उन्होंने डाला तो लोगों की नज़रबन्दी कर दी तथा उन को भयभीत कर दिया तथा एक प्रकार का बड़ा जादू दिखाया ।[4]

قَالَ أَلْقُوا ۖ فَلَمَّا أَلْقَوْا سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾

---

[1]जादूगर चूँकि दुनिया पाने की इच्छा रखते थे इसलिए उन्होंने जादू का प्रशिक्षण लिया था, इसलिए अच्छा अवसर देखा कि राजा को हमारी आवश्यकता हुई है, क्यों न अवसर का लाभ उठा कर अधिक से अधिक लाभ उठायें । अत: उन्हों ने सफलता के पश्चात उसके बदले में माँग प्रस्तुत कर दी, जिस पर फ़िरऔन ने कहा कि केवल धन ही नहीं मिलेगा अपितु हमारे निकटवर्ती लोगों में सम्मिलित हो जाओगे ।

[2]जादूगरों ने यह अधिकार अपने ऊपर पूर्ण भरोसा होने के कारण दिया । वे पूर्ण विश्वास करते थे कि उनके मुक़ाबिले में मूसा का चमत्कार जिसे वे जादू ही समझते थे, कोई स्थान नहीं रखता तथा यदि मूसा को पहले अपनी कला का प्रदर्शन का अवसर दे भी दिया, तो उससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा । हम उसकी कला का तोड़ किसी प्रकार कर देंगे ।

[3]परन्तु मूसा अलैहिस्सलाम चूँकि अल्लाह के रसूल थे तथा उन्हें अल्लाह का समर्थन प्राप्त था, इसलिए उन्हें अपने अल्लाह पर पूर्ण विश्वास था । अत: उन्होंने बिना किसी चिन्ता तथा विचार के उन से कह दिया कि तुम्हें जो कुछ दिखाना हो दिखाओ । इसके अतिरिक्त इसमें यह बुद्धिमानी भी हो सकती है कि जादूगरों के द्वारा प्रस्तुत जादू का तोड़ यदि आदरणीय मूसा द्वारा प्रदर्शित होगा तो वह लोगों को अधिक प्रभावित करेगा, जिससे उनकी सच्चाई स्पष्ट हो जायेगी तथा लोगों को ईमान लाने में कठिनाई नहीं होगी ।

[4]कुछ पुरातत्व में बताया गया है कि इन जादूगरों की संख्या सत्तर हज़ार थी । प्रत्यक्ष रूप से यह संख्या अतिश्योक्ति से वंचित नहीं, जिनमें से प्रत्येक ने एक लाठी तथा एक रस्सी मैदान में फेंकी जो देखने वालों को दौड़ती प्रतीत हुई थीं । यह अर्थात उनके द्वारा प्रदर्शित बहुत बड़ा जादू था ।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾

(११७) तथा हमने मूसा को आदेश किया कि अपनी छड़ी डाल दो, फिर वह अकस्मात उन के स्वांग को निगलने लगी ।[1]

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۚ ﴿١١٨﴾

(११८) अत: सत्य प्रकट हो गया तथा उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा ।

فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ۚ ﴿١١٩﴾

(११९) अत: वह लोग इस अवसर पर हार गये और अति अपमानित होकर फिरे ।

وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۚ ﴿١٢٠﴾

(१२०) तथा जादूगर सजदे में गिर गये ।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ ﴿١٢١﴾

(१२१) कहने लगे हम ईमान लाये अखिल जगत के प्रभु पर ।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) जो मूसा तथा हारून का भी प्रभु है ।[2]

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا

(१२३) फ़िरऔन ने कहा तुम उस (मूसा) पर ईमान मेरी आज्ञा से पहले ले आए नि:संदेह यह एक षड़यन्त्र है जो तुम ने नगर में उसके

---

[1]परन्तु यह जो कुछ भी था, एक काल्पनिक, जादूगरी, तथा जादू था, जो वास्तविकता का सामना नहीं कर सकता था । अत: मूसा के लाठी डालते ही सब कुछ समाप्त हो गया तथा लाठी ने एक भयानक अजगर का रूप धारण करके सब कुछ निगल लिया ।

[2]जादूगरों ने, जो जादू की कला तथा उसकी असली वास्तविकता को जानते थे, यह देखा तो समझ गये कि मूसा ने जो कुछ यहाँ प्रस्तुत किया है, जादू नहीं है, यह वास्तव में अल्लाह के दूत हैं तथा अल्लाह की सहायता से ही यह चमत्कार प्रस्तुत किया है जिसने एक क्षण में हम सभी की कला पर पानी फेर दिया । अत: उन्हों ने मूसा पर ईमान लाने की घोषणा कर दी । इससे यह बात स्पष्ट हो गयी कि असत्य-असत्य है, चाहे उस पर कितने ही आकर्षक वस्त्र चढ़ा दिये जायें तथा सत्य-सत्य ही है, चाहे उस पर कितने ही पट डाल दिये जायें । अन्तिम विजय सत्य की होती है ।

مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾

निवासियों को उससे निकालने के लिये रच लिया है। अतः तुम्हें शीघ्र पता चल जायेगा।[1]

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) मैं तुम्हारे एक ओर का हाथ तथा दूसरे ओर की टाँग काटूँगा। फिर तुम सबको फाँसी पर लटका दूँगा।[2]

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) (उन्होंने) उत्तर दिया कि हम (मर कर) अपने प्रभु के पास ही जायेंगे।[3]

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۭ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾

(१२६) तथा तुमने हम में यही दोष तो देखा है कि हमने अपने परमेश्वर की आयतों (लक्षणों) के प्रति विश्वास कर लिया[4] जब वह हमारे पास आ गईं, हे हमारे परमेश्वर हम

---

[1]यह जो कुछ हुआ फ़िरऔन के लिए बड़ी आश्चर्यचकित विषय था, इसलिए उसे और कुछ न समझ में आयी यह कह दिया कि तुम सब आपस में मिले हुए हो तथा उसका उद्देश्य हमारे राज्य को समाप्त करना है। अच्छा, इसका परिणाम निकट भविष्य में तुम्हें ज्ञात होगा।

[2]अर्थात दायाँ पाँव तथा बायाँ हाथ अथवा बायाँ पाँव तथा दायाँ हाथ, फिर यही नहीं फाँसी पर चढ़ा कर दूसरों के लिए शिक्षा बना दूँगा।

[3]इसका भावार्थ यह है कि यदि तू हमारे साथ ऐसा व्यवहार करेगा, तो तुझे भी इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआला तुझे इस अपराध का कठोर दण्ड देगा, इसलिए कि हम सभी को मरकर उसी के पास जाना है, उसके दण्ड से कौन बच सकता है ? अर्थात फ़िरऔन को दुनिया की यातना के सापेक्ष आख़िरत की यातना से डराया गया है। दूसरा भावार्थ है कि मृत्यु तो हमें आयेगी ही इससे क्या अन्तर पड़ता है कि फाँसी के फंदे से आये अथवा किसी अन्य साधन से।

[4]अर्थात तेरे निकट हमारा यही दोष है जिससे तू हम से क्रोधित है तथा हमें दण्ड देने को है। जबकि यह कोई दोष नहीं यह तो गुण है कि जब वास्तविकता हमारे समक्ष आ गयी, तो हमने उसकी तुलना में दुनिया के सारे लाभ ठुकरा दिये तथा वास्तविकता को अपना लिया। फिर उन्होंने अपने मुख फ़िरऔन की ओर से मोड़ कर अल्लाह की ओर कर लिये तथा अल्लाह के दरबार में प्रार्थना करने लगे।

पर धैर्य बहा दे[1] तथा हमें मुसलमान ही रहते हुए मृत्यु दे ।[2]

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَآلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) तथा फ़िरऔन की जाति के प्रमुखों ने कहा कि क्या आप मूसा एवं उसकी जाति को यूं ही रहने देंगे ताकि प्रदेश में उपद्रव करें[3] तथा आप को एवं आपके देवताओं को त्याग दें ।[4] उसने कहा हम उन के पुत्रों की हत्या करेंगे तथा उनकी स्त्रियों को जीवित रहने देंगे । हम उन पर प्रभावी हैं ।[5]

قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۖ إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ

(१२८) मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह (तआला) की सहायता लो तथा धैर्य रखो यह धरती अल्लाह (तआला) की है, वह

---

[1]ताकि हम तेरे इस शत्रु की यातनाओं को सहन कर लें तथा सत्य से सम्बन्धित एवं ईमान पर दृढ़ता से स्थापित रहें ।

[2]इस सांसारिक परीक्षा से हमारे अन्दर ईमान के लिए न परिवर्तन आये न किसी अन्य विषय में हम फंस जायें ।

[3]यह प्रत्येक काल के भ्रष्टाचारियों का कार्य रहा है कि वे ईमानवालों को उपद्रवी तथा उनके ईमान के आमन्त्रण तथा एकेश्वरवाद (तौहीद) को उपद्रव से तुलना करते हैं फ़िरऔन के अनुयायियों ने भी यही किया ।

[4]फ़िरऔन को भी स्वयं को यद्यपि प्रभु होने का दावा था ﴿أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ﴾ "मैं तुम्हारा बड़ा प्रभु हूँ ।(वह कहा करता था) परन्तु दूसरे छोटे-छोटे देवता भी थे जिन के द्वारा लोग फ़िरऔन की निकटता प्राप्त करते थे ।

[5]हमारे इस प्रबन्ध में यह रुकावट नहीं डाल सकते । पुत्रों की हत्या का यह कार्य क्रम पुनः फ़िरऔन के अनुयायियों के कहने से बनाया गया । इससे पूर्व भी जब मूसा अलैहिस्सलाम का जन्म नहीं हुआ था, इस्राईल की सन्तानों के नवजात शिशु की हत्या करना प्रारम्भ कर दिया था । मूसा के जन्म के पश्चात अल्लाह ने उनको बचाने का प्रबन्ध किया कि मूसा को स्वयं फ़िरऔन के महल में पहुँचा दिया तथा उसकी गोद में पालन-पोषण करवाया ।

يُورِثُهَا مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٨﴾

अपने भक्तों में से जिसे चाहता है स्वामित्व प्रदान कर देता है तथा अन्तिम सफलता उन्हीं की होती है जो अल्लाह से डरते हैं।[1]

قَالُوا أُوذِينَا مِن قَبْلِ أَن تَأْتِيَنَا وَمِن بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٢٩﴾

(१२९) उन्होंने कहा कि आप के आने से पूर्व भी[2] हमें कष्ट दिया गया तथा आप के आगमन के पश्चात भी।[3] उन्होंने कहा कि शीघ्र ही अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं का विनाश कर देगा तथा इस धरती का स्वामित्व तुम को देगा फिर यह देखेगा कि तुम्हारा आचरण कैसा है ?[4]

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) तथा हमने फ़िरऔन वालों को सूखे एवं फलों की कमी द्वारा घेर लिया ताकि वह शिक्षा प्राप्त कर लें।[5]

---

[1]जब फ़िरऔन की ओर से पुन: अत्याचार प्रारम्भ हुआ तो आदरणीय मूसा ने अपनी जाति के लोगों को अल्लाह की सहायता प्राप्त करने तथा धैर्य रखने की शिक्षा दी कि यदि तुम सत्य मार्ग पर रहे तो अन्ततः धरती का राज्य तुम्हें ही प्राप्त होगा।

[2]यह संकेत उन अत्याचारों की ओर है, जो मूसा के जन्म से पूर्व उन पर होते रहे।

[3]जादूगरों की घटना के पश्चात अत्याचार का यह नया दौर प्रारम्भ हुआ, जो मूसा अलैहिस्सलाम के आने के पश्चात प्रारम्भ हुआ।

[4]आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम ने सांत्वना दी कि घबराओ नहीं, तुम्हारे शत्रु शीघ्र ही नष्ट कर दिये जायेंगे, तथा धरती पर स्वामित्व तुम्हें प्राप्त होगा। फिर तुम्हारी परीक्षा का एक नया दौर प्रारम्भ होगा। अभी तो कष्टों तथा कठिनाई से परीक्षा ली जा रही है, फिर तुम्हें पुरस्कृत तथा कृपा की वर्षा करके तथा स्वामित्व प्रदान कर के तुम्हारी परीक्षा ली जायेगी।

[5]फ़िरऔन की सन्तान से तात्पर्य फ़िरऔन के अनुयायी हैं। तथा सेनीन (سِنِين) से अकाल अथवा सूखा अर्थात वर्षा की कमी तथा वृक्षों में कीड़े लग जाने के कारण पैदावार में कमी है। इस परीक्षा से उद्देश्य यह था कि शायद वह इस अत्याचार तथा घमण्ड से रुक जायें जिसमें वे लिप्त हैं।

فَإِذَا جَاءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَٰذِهِ ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُ ۗ أَلَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِندَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾

(१३१) यदि उनके पास भलाई आती है तो कहते हैं कि यह हमारे लिए होना ही चाहिए तथा यदि विपदा आती है तो मूसा तथा उनके अनुयायियों से अपशगुन लेते हैं[1] सुन लो उन का अपशगुन अल्लाह के पास है[2] किन्तु उन में अधिकतर लोग नहीं जानते।

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

(१३२) तथा उन्होंने कहा, कि हमारे पास जो भी निशानी हम पर जादू चलाने के लिये लाओ हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे।[3]

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ

(१३३) फिर हमने उन पर तूफ़ान तथा टिड्डियाँ एवं जूयें तथा मेढक एवं रक्त भेजा

---

[1] حَسَنَة (हसन:) से तात्पर्य अनाज तथा फलों की बहुतायत तथा سَيِّئَة का अर्थ है बुराई, जिससे तात्पर्य हसन: के विपरीत अकाल, सूखा तथा पैदावार में कमी है حَسَنَة (हसन:) की सम्पूर्ण विशेषता स्वयं ले लेते कि यह हमारे प्रयत्नों का परिणाम है तथा विपदा का कारण आदरणीय मूसा तथा उनके अनुयायियों को बताते कि यह तुम लोगों के अशुभ प्रभाव हमारे देश पर पड़ रहे हैं।

[2] طائر का अर्थ है "उड़ने वाला" अर्थात पक्षी। क्यों कि वे लोग पक्षी के दायें तथा बायें उड़ने से शुभ तथा अशुभ लिया करते थे। इसलिए यह शब्द पूर्ण रूप से 'फ़ालनामा' के लिए प्रयोग होने लगा तथा यहाँ यह इसी अर्थ में प्रयोग हुआ है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अच्छाई अथवा बुराई, खुशहाली अथवा अकाल उन्हें जो पहुंचता है, उसके कारण अल्लाह तआला की ओर से हैं, मूसा तथा उनके अनुयायियों की ओर से नहीं हैं। ﴿طَائِرُهُمْ عِندَ اللَّهِ﴾ का अर्थ होगा कि अपशगुन का कारण अल्लाह के ज्ञान में है तथा वह उनका कुफ़्र तथा अवहेलना है न कि कुछ अन्य अथवा अल्लाह की ओर से है तथा इसका कारण उनका कुफ़्र है।

[3] यह उसी कुफ़्र तथा झुठलाने का प्रदर्शन है जिसमें वे ग्रसित हुए थे तथा चमत्कार तथा अल्लाह की निशानियों को अब भी जादूगरी कहते तथा कहलवाते थे।

وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ

अलग अलग निशानियाँ[1] फिर उन्होंने अहंकार किया तथा वह पापी लोग थे।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

(१३४) तथा जब उन पर कोई प्रकोप आता तो कहते कि हे मूसा हमारे लिये अपने परमेश्वर से उस वचन के द्वारा जो आप को दिया है प्रार्थना कर दीजिये, यदि आप ने हम से प्रकोप दूर कर दिया तो हम अवश्य आप पर ईमान ले आयेंगे तथा आपके साथ इस्राईल के पुत्रों को भेज देंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ

(१३५) फिर जब हम उन से उस प्रकोप को एक विशेष समय तक कि उस तक उनको

---

[1]तूफ़ान से तात्पर्य है बाढ़, अत्यधिक वर्षा, जिससे हर वस्तु डूब गयी अथवा मृतकों की अधिक संख्या है। जिससे प्रत्येक घर में दुख के बादल छा गये। جراد (जराद) टिड्डी को कहते हैं। टिड्डी दल का आक्रमण फसलों की बरबादी का सूचक है तथा इसके लिए प्रसिद्ध है। ये टिड्डियाँ उन की फसलों तथा फलों को खाकर चट कर जातीं। قُمَّل (कुम्मल) से तात्पर्य जूँ जो मनुष्य के शरीर तथा कपड़ों तथा बालों में हो जाती हैं अथवा घुन का कीड़ा जो अनाज में लग जाता है, तो उसके अधिकतर भाग को समाप्त देता है। जूँ से मनुष्य को घृणा भी होती है तथा उसकी अधिकता से अत्यधिक कठिनाई भी, तथा जब यह प्रकोप के रूप में हो तो उसकी कठिनाई का अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार घुन का प्रकोप भी अर्थिक स्थिति को खोखला कर देने के लिए पर्याप्त है। ضفادع अरबी भाषा में ضفدع (दिफदअ:) का बहुवचन है। यह मेंढक को कहते हैं, जो पानी, धरती तथा झोपडियों के छप्परों में रहता है। यह मेंढ़क उनके भोजन मे, शैय्या पर, रखे हुए अनाजों में अर्थात प्रत्येक स्थान पर तथा प्रत्येक ओर मेंढ़क ही मेंढ़क हो गये, जिससे उनका खाना-पीना सोना तथा विश्राम करना कठिन हो गया। دَمٌ (दम) का अर्थ रक्त है जिसका तात्पर्य है कि पानी का रक्त बन जाना, इस प्रकार पानी पीना उनके लिए असम्भव हो गया। कुछ ने रक्त का तात्पर्य नकसीर का रोग लिया है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति की नाक से रक्त प्रवाहित हो गया। آيات مُفَصَّلات यह स्पष्ट तथा भिन्न-भिन्न चमत्कार थे, जो समय-समय से उनके पास आये।

هُمْ بَالِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنكُثُونَ ﴿١٣٥﴾

पहुँचना था, हटा देते, तो वे तुरंत वचन भंग करने लगते ।[1]

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٣٦﴾

(१३६) फिर हमने उन से बदला लिया अर्थात उनको समुद्र में डूबो दिया, इस कारण कि वे हमारी निशानियों को झुठलाते थे तथा उनसे अत्यन्त असावधानी बरतते थे ।[2]

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا ۖ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ

(१३७) तथा हमने उन लोगों को जो अति निर्बल गिने जाते थे[3] उस धरती के पूर्व एवं पश्चिम का अधिपति बना दिया जिसमें हमने विभूतियाँ रखी हैं ।[4] तथा आपके पोषक का

---

[1]अर्थात एक प्रकोप आता तो उससे तंग आकर मूसा के पास आते, उनकी प्रार्थना से वह टल जाता तो ईमान लाने के बजाय, फिर उस कुफ्र तथा शिर्क (बहुदेववाद) में दृढ़ रहते । फिर दूसरा प्रकोप आ जाता, तो फिर इसी प्रकार करते, इस प्रकार कुछ-कुछ समय के अन्तर पर उन पर पाँच प्रकार के प्रकोप आये । परन्तु उनके हृदय में जो गर्व तथा मस्तिष्क में जो घमण्ड था, वह सत्य के मार्ग पर आने के लिए उनके पैर में बेड़ी बना रहा तथा इतनी स्पष्ट निशानियाँ देखने के उपरान्त भी वह ईमान की दौलत से वंचित ही रहे ।

[2]इतनी बड़ी-बड़ी निशानियों के उपरान्त वह ईमान लाने तथा अचेत निद्रा से सचेत होने को तैयार नहीं हुए । अन्ततः उन्हें समुद्र में डूबो दिया गया, जिसका विवरण क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों में विद्यमान है ।

[3]अर्थात इस्राईल की सन्तान को जिन्हें फ़िरऔन ने दास बना रखा था । इस कारण वास्तव में वे मिस्र में कमजोर समझे जाते थे क्योंकि वे पराजित तथा दास थे । परन्तु जब अल्लाह ने चाहा तो उसी पराजित तथा दास जाति को धरती का उत्तराधिकारी बना दिया । ﴿وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ﴾ (सूरः आले इमरान:२६)

[4]धरती से तात्पर्य सीरिया का क्षेत्र फ़िलस्तीन है, जहाँ अल्लाह तआला ने अमालक़: के पश्चात इस्राईल की सन्तान को विजय प्रदान की । सीरिया में इस्राईल की सन्तान आदरणीय मूसा तथा हारून के देहान्त के पश्चात उस समय गये जब आदरणीय यूशआ बिन नून ने अमालक: को पराजित करके इस्राईल की सन्तान के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया । तथा धरती के उस भाग में अल्लाह की कृपा रही, अर्थात सीरिया

بَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ بِمَا صَبَرُواْۖ وَدَمَّرۡنَا مَا كَانَ يَصۡنَعُ فِرۡعَوۡنُ وَقَوۡمُهُۥ وَمَا كَانُواْ يَعۡرِشُونَ ﴿١٣٧﴾

शुभ वचन बनी इस्राईल के विषय में उनकी सहनशीलता के कारण पूरा हो गया[1] तथा हमने फ़िरऔन एवं उसके निर्मित उद्योगों को तथा जो ऊँचे भवन निर्माण करते थे सब को तहस-नहस कर दिया।[2]

وَجَٰوَزۡنَا بِبَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ٱلۡبَحۡرَ فَأَتَوۡاْ عَلَىٰ قَوۡمٖ يَعۡكُفُونَ عَلَىٰٓ أَصۡنَامٖ لَّهُمۡۚ قَالُواْ يَٰمُوسَى

(१३८) तथा हम ने बनू इस्राईल (इस्राईल के पुत्रों) को समुद्र के पार उतार दिया। फिर उनका एक जाति पर गुज़र हुआ जो अपने कुछ बुतों (प्रतिमाओं) से लगे बैठे थे। कहने

के क्षेत्र में जो अधिकतर नबियों का निवास स्थान तथा समाधि स्थली रहा, तथा भौतिक सुख सम्पन्नता एवं खुशहाली में भी श्रेष्ठ रहा है। अर्थात भौतिक तथा अलौकिक दोनों प्रकार की विभूतियों से वह धरती माला-माल रही है। मशारिक़ अरवी भाषा में मशरिक़ का तथा मग़ारिब मग़रिब का बहुवचन है। यद्यपि पूर्व तथा पश्चिम एक-एक ही हैं। बहुवचन से तात्पर्य समृद्धिशाली धरती के पूर्वी तथा पश्चिमी भाग हैं अर्थात पूर्व तथा पश्चिम दिशा।

[1]यह वचन वही है जो आदरणीय मूसा के मुख से इससे पूर्व आयत संख्या १२८ तथा १२९ में किया गया है। तथा सूर: क़सस में भी

﴿ وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى ٱلَّذِينَ ٱسۡتُضۡعِفُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَنَجۡعَلَهُمۡ أَئِمَّةٗ وَنَجۡعَلَهُمُ ٱلۡوَٰرِثِينَ ۞ وَنُمَكِّنَ لَهُمۡ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَنُرِيَ فِرۡعَوۡنَ وَهَٰمَٰنَ وَجُنُودَهُمَا مِنۡهُم مَّا كَانُواْ يَحۡذَرُونَ ﴾

"हम चाहते हैं कि उन पर उपकार करें जो धरती में कमजोर समझे जाते हैं तथा उनको नेतृत्व प्रदान करें तथा राज्य का उत्तराधिकारी बनायें तथा राज्य में उन्हें शक्ति तथा समृद्धि प्रदान करें तथा फ़िरऔन एवं हामान तथा उनकी सेना को वह राज दिखा दें जिससे वे डरते हैं।" (सूर: अल-क़सस-५ तथा ६)

तथा यह कृपा और उपकार उस धैर्य के कारण हुआ जिसका प्रदर्शन उन्होंने फ़िरऔन के अत्याचार को सहन करके किया।

[2]उद्योग से तात्पर्य कल-कारखाने, भवन तथा हथियार आदि हैं तथा يَعۡرِشُونَ "जो वह ऊँचा उठाते थे" से तात्पर्य ऊँचे-ऊँचे भवन भी हो सकते हैं। तथा अंगूरों आदि की लतायें भी जो वह छप्परों पर चढ़ाते थे। अर्थ यह हुआ कि उनके शहरों के ऊँचे-ऊँचे भवन, उद्योग, हथियार तथा अन्य सामान भी नष्ट कर दिया तथा उनके बाग़ भी।

لگے कि हे मूसा ! हमारे लिये भी एक ऐसा ही पूज्य निर्धारित कर दीजिए जैसे उनके यह देवता हैं आप ने फ़रमाया वास्तव में तुम लोगों में बड़ी मूर्खता है ।[1]

اجْعَلْ لَنَا إِلَٰهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾

(१३९) यह लोग जिन कार्य में लगे हुए हैं वह नाश कर दिया जायेगा तथा उनका यह काम मात्र निर्मूल है ।[2]

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ مُتَبَّرٌ مَا هُمْ فِيهِ وَبَاطِلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾

(१४०) फ़रमाया कि क्या अल्लाह (परमेश्वर) के सिवाय और किसी को तुम्हारा पूज्य निर्धारित कर दूँ, यद्यपि उसने समस्त विश्व वासियों पर तुम्हें प्रधानता दी है ।[3]

قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَٰهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤٠﴾

(१४१) तथा वह समय याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के अनुयायियों से बचा लिया जो तुम्हें कड़ी यातनायें देते थे, तुम्हारे पुत्रों को हत कर देते थे तथा तुम्हारी नारियों को

وَإِذْ أَنْجَيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ يُقَتِّلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ

---

[1]इससे बड़ी अज्ञानता तथा मूर्खता और क्या होगी कि जिस अल्लाह ने उन्हें फ़िरऔन जैसे बड़े शत्रु से न केवल स्वतंत्रता प्रदान करायी अपितु उनकी आँखों के समक्ष उसे उसकी सेना के साथ डूबो दिया तथा उन्हें चमत्कारिक रूप से समुद्र पार करा दी । वे समुद्र के पार करते ही अल्लाह को भूल कर स्वयं बनाये गये देवता खोजने लगे । कहते हैं यह मूर्तियाँ गाय के आकृति की थीं, जो पत्थर की बनी थीं ।

[2]अर्थात इन मूर्तिपूजकों के व्यवहार ने तुम्हें भी धोखे में रख दिया है, उनके भाग्य में विनाश तथा उनके कर्म व्यर्थ तथा हानिकारक हैं ।

[3]क्या जिस अल्लाह ने तुम पर इतने उपकार किये तथा अखिल जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की, उसे छोड़कर मैं तुम्हारे लिए पत्थर से निर्मित मूर्तियाँ खोजूँ ? अर्थात यह कृतघ्नता तथा अनुपकार मैं कैसे कर सकता हूँ ? अगली आयतों में कुछ अन्य उपकारों की चर्चा है ।

مِّنۡ رَّبِّكُمۡ عَظِيۡمٌ ﴿١٤١﴾

जीवित छोड़ देते थे तथा इसमें तुम्हारे पालन-हार की ओर से भारी परीक्षा थी।[1]

وَوٰعَدۡنَا مُوۡسٰى ثَلٰثِيۡنَ لَيۡلَةً وَّاَتۡمَمۡنٰهَا بِعَشۡرٍ فَتَمَّ مِيۡقَاتُ رَبِّهٖۤ اَرۡبَعِيۡنَ لَيۡلَةً ۚ وَقَالَ مُوۡسٰى لِاَخِيۡهِ هٰرُوۡنَ اخۡلُفۡنِىۡ فِىۡ قَوۡمِىۡ وَاَصۡلِحۡ وَلَا تَتَّبِعۡ سَبِيۡلَ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿١٤٢﴾

(१४२) तथा हम ने मूसा को तीस रात्रि का वचन दिया तथा दस रात्रि अधिक से उसको पूरा किया इस प्रकार उनके पोषक का समय पूरा चालीस रात्रि का हो गया[2] तथा मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे (जाने के) पश्चात इनकी (समुदाय को) व्यवस्था करना एवं सुधार करते रहना तथा उपद्रवी लोगों के मार्ग का अनुसरण न करना।[3]

وَلَمَّا جَآءَ مُوۡسٰى لِمِيۡقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِىۡۤ اَنۡظُرۡ اِلَيۡكَ ؕ قَالَ لَنۡ تَرٰٮنِىۡ وَلٰـكِنِ انْظُرۡ اِلَى الۡجَبَلِ فَاِنِ اسۡتَقَرَّ

(१४३) तथा जब मूसा हमारे समय पर आये और उनके पोषक ने उनसे बातें की तो उन्होंने विनय किया कि हे मेरे पोषक ! मुझे अपना दर्शन करा दे मैं तुझे एक पल देख लूँ आदेश हुआ कि तुम मुझको कदापि नहीं देख

[1]यह वही परीक्षायें हैं जिनकी चर्चा सूर: अल-बक़र: में आ चुकी है तथा सूर: इब्राहीम में भी आयेगी।

[2]फिरऔन तथा उसकी सेना को डूबो कर नष्ट कर देने के पश्चात यह आवश्यकता प्रतीत हुई कि इस्राईल की सन्तान को मार्गदर्शन तथा निर्देश के लिए कोई किताब उन्हें प्रदान की जाये। अत: अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा को तूर पर्वत पर तीस रात्रि के लिए बुलाया जिसमें दस रात्रि को बढ़ाकर चालीस कर दिया गया। आदरणीय मूसा ने जाते समय, आदरणीय हारून को जो उनके भाई थे तथा नबी भी अपना उत्तरदायी नियुक्त किया ताकि वह इस्राईल की संतान को मार्गदर्शन तथा सुधार का कार्य करते रहें तथा उन्हें हर प्रकार के उपद्रव अथवा षडयन्त्र से बचायें। इस आयत में यही वर्णन किया गया है।

[3]आदरणीय हारून स्वयं नबी थे सुधार करना उनके उत्तरदायित्व में सम्मिलित था, आदरणीय मूसा ने मात्र चेतावनी तथा सावधानी के लिये यह शिक्षायें दीं यहाँ मिकात से तात्पर्य निर्धारित समय है।

مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَانِي ۚ فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَىٰ صَعِقًا ۚ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَانَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤٣﴾

सकोगे ।[1] परन्तु तुम इस पर्वत की ओर देखते रहो । यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रहा तो तुम भी मुझे देख सकोगे, फिर उन के पोषक ने जब उस पर प्रकाश किया तो तजल्ली (प्रकाश-आभा) ने उसे खंडित कर दिया एवं मूसा मूर्छित होकर गिर पड़े[2] फिर जब सचेत हुये तो कहा कि नि:संदेह आप पवित्र हैं मैं आप से क्षमा-याचना करता हूँ तथा मैं सर्वप्रथम इस पर विश्वास करता हूँ ।[3]

---

[1]जब मूसा तूर पर गये तथा अल्लाह से सीधे बात की तो उनके दिल में अल्लाह का दर्शन करने की भावना उत्पन्न हुई तथा अपनी इस भावना को ﴿رَبِّ أَرِنِي﴾ कह कर व्यक्त किया "तू मुझे अपना दर्शन करा दे", उत्तर मिला ﴿لَن تَرَانِي﴾ तू मुझे नहीं देख सकता," मुअतजिला (एक पथभ्रष्ट समुदाय) ने इस से तर्क देते हुये कहा कि لَنْ शब्द सदा इंकार के लिये आता है इस लिये अल्लाह का दर्शन न आलोक (लोक) में संभव है न परलोक में । किन्तु यह विचार सहीह हदीसों के विपरीत है । लगातार सही विश्वस्त हदीसों से प्रमाणित है कि परलोक में ईमान वाले अल्लाह का दर्शन करेंगे तथा स्वर्ग में भी अल्लाह के दर्शन से सम्मानित होंगे, सभी अहले सुन्नत का यही विश्वास है तथा इस दर्शन के नकार का संबन्ध मात्र इस संसार (लोक) से है । कोई मानवी आँख संसार में अल्लाह के दर्शन का सामर्थ्य नहीं रखती, किन्तु परलोक में अल्लाह इन आँखों में इतनी शक्ति उत्पन्न कर देगा कि वह परम अल्लाह के प्रकाश को सहन कर सके ।

[2]अर्थात वह पर्वत भी प्रभु की ज्योति को सहन न कर सका तथा मूसा मूर्छित हो कर गिर पड़े । हदीस में आता है कि क़ियामत वाले दिन सभी लोग मूर्छित होंगे (यह मूर्छा इमाम इब्ने कसीर के अनुसार प्रलय के मैदान में उस समय होगी जब अल्लाह तआला निर्णय करने के लिये प्रकट होगा ।) तथा जब चेतना आयेगी तो मैं सर्वप्रथम उस समय चेतना शक्ति प्राप्त करने वालों में हूँगा, मैं देखूँगा कि आदरणीय मूसा अर्श का स्तम्भ पकड़े खड़े हैं, मुझे यह ज्ञात नहीं कि वह मुझ से पूर्व चेतना में आये अथवा उन्हें तूर पर्वत की मूर्छा के परिणाम स्वरूप प्रलय की मूर्छा से पृथक रखा गया (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-आराफ़ सहीह मुस्लिम बाब फ़ज़ाएले मूसा अलैहिस्सलाम)

[3]तेरी महानता तथा श्रेष्ठता का एवं इस बात का कि मैं तेरा शक्तिहीन भक़्त हूँ, दुनिया में तेरे दर्शन की शक्ति भी नहीं है ।

(१४४) आदेश हुआ कि, हे मूसा ! मैंने अपने दूतत्व एवं अपने साथ वार्तालाप से अन्य लोगों पर तुम्हें विशेषता दी है। तो जो कुछ मैं ने तुमको प्रदान किया है उसे ग्रहण करो एवं कृतज्ञता करो।[1]

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

(१४५) और हमने कुछ पट्टिकाओं पर प्रत्येक प्रकार की शिक्षायें तथा प्रत्येक वस्तु का विवरण उन को लिख कर दिया,[2] तुम उनको पूरी शक्ति से पकड़ लो, तथा अपनी जाति को आदेश करो कि उन के उत्तम आदेशों पर कार्यरत हों,[3] अब अति शीघ्र तुम लोगों को उन अवज्ञाकारियों का स्थान दिखाता हूँ।[4]

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۚ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾

(१४६) मैं ऐसे लोगों को अपनी आयतों से विमुख ही रखूगाँ जो संसार में अभिमान करते हैं जिसका उन्हें कोई अधिकार नहीं यदि वह सभी निशानियाँ (लक्षण) देख भी लें

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ

---

[1]यह अल्लाह तआला से वार्ता का दूसरा अवसर था जिससे आदरणीय मूसा को सम्मानित किया गया। इससे पूर्व जब आग लेने गये थे, तो अल्लाह तआला से वार्तालाप हुई थी तथा दूतत्व प्रदान किया गया था।

[2]अर्थात तौरात पट्टिकाओं के रूप में प्रदान की गयी थी जिसमें उनके लिए धर्मिक आदेश थे, कहने तथा करने के एवं शिक्षा-दीक्षा का पूर्ण विवरण था।

[3]अर्थात छूट की खोज में न रहो, जैसा कि आलसियों की दशा होती है।

[4]دار (दार) से तात्पर्य या तो परिणाम अर्थात विनाश है अथवा इससे तात्पर्य यह है कि दुराचारियों के देश पर तुम्हें राज दूँगा तथा इस से तात्पर्य सीरिया देश है जिस पर उस समय अमालिका का राज्य था जो अल्लाह के अवज्ञाकारी थे।

وَإِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَإِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝١٤٦

तब भी उन पर विश्वास नहीं करेंगे ।[1] तथा यदि वे सत्य मार्ग का दर्शन कर लें तो उसे अपना मार्ग न बनायें, और यदि वे कुमार्ग को देख लें तो उसको अपना मार्ग बना लें ।[2] यह इस कारण है कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तथा उनसे अचेत रहे ।[3]

---

[1]गर्व का अर्थ है कि अल्लाह की आयतों तथा आदेशों की तुलना में अपने आपको श्रेष्ठ समझना तथा अन्य लोगों को हीन समझना । यह गर्व मनुष्य को शोभा नहीं देता है, क्योंकि अल्लाह स्रष्टा है तथा वह उसकी सृष्टि । सृष्टि हो कर स्रष्टा से तुलना करना तथा उसके आदेशों की अवहेलना तथा असावधानी किसी प्रकार भी उचित नहीं है । इसलिए गर्व अल्लाह को कदापि प्रिय नहीं है । इस आयत में गर्व का परिणाम बताया गया है कि अल्लाह तआला उन्हें अपनी आयतों से दूर ही रखता है तथा फिर वे इतने दूर हो जाते हैं कि किसी भी प्रकार की निशानी उन्हें सत्य की ओर बुलाने में सफल नहीं होती । जैसा कि अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ إِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴾

"जिन पर तेरे प्रभु की बात सिद्ध हो गयी, वे ईमान नहीं लायेंगे, चाहे उनके पास हर प्रकार की निशानी आ जाये । यहाँ तक कि वे दुःखदायी यातना देख लें ।" (सूरः यूनुस-९६ तथा ९७)

[2]इसमें अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने वालों के एक और चरित्र तथा व्यवहार का वर्णन किया गया है कि मार्गदर्शन की कोई बात उनके समक्ष आये भी तो उसे नहीं मानते, परन्तु भटकने की कोई बात देखते हैं तो उसे तुरंत अपना लेते हैं । क़ुरआन करीम के इस वर्णन का दर्शन हर काल में किया जा सकता है । आज हम भी प्रत्येक स्थान एवं प्रत्येक समाज में यहाँ तक कि मुस्लिम समुदाय में भी यही कुछ देख रहे हैं कि पुण्य मुँह छिपाये फिर रहा है । तथा बुराई को हर व्यक्ति हाथ बढ़ा कर पकड़ रहा है ।

[3]यह इस बात का कारण बताया जा रहा है कि लोग पुण्य के बदले पाप तथा सत्य की अपेक्षा असत्य का मार्ग क्यों अधिक अपनाते हैं ? यह कारण है अल्लाह की आयतों को झुठलाने, तथा उनसे असावधानी एवं अवहेलना का । यह प्रत्येक समाज में सामान्य रूप से व्याप्त है ।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٧﴾

(१४७) तथा यह लोग जिन्होंने हमारी आयतों एवं प्रलय के आने को झुठलाया, उन के सब कर्म अकारथ गये। उन्हें वही यातना दी जायेगी जो ये करते थे।[1]

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِن بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۘ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٤٨﴾

(१४८) तथा मूसा के अनुयायियों ने उनके पश्चात अपने आभूषणों से एक बछड़ा बना कर देवता बना लिया जो एक ढाँचा था जिस में एक ध्वनि थी। क्या उन्होंने यह न देखा कि वह उनसे बात नहीं करता था तथा न उनको कोई मार्ग बताता था, उसको उन्होंने (देवता) बना लिया तथा बड़े अन्याय का कार्य किया।[2]

---

[1]इसमें अल्लाह की आयतों को झुठलाने तथा आखिरत को अस्वीकार करने वालों का परिणाम बताया गया है। चूँकि उनके कर्मों का आधार न्याय तथा सत्य नहीं, अपितु अत्याचार तथा असत्य है इसलिए उनके कर्म पत्र में पाप ही पाप होगा, जिसका अल्लाह तआला के यहाँ कोई मूल्य न होगा। हाँ, उनको इस पत्र का बदला वहाँ अवश्य दिया जायेगा।

[2]मूसा अलैहिस्सलाम जब चालीस रात्रियों के लिए तूर पर्वत पर गये, तो सामरी नामक व्यक्ति ने सोने के आभूषण एकत्र करके एक बछड़ा तैयार किया, जिसमें उसने जिब्रील के घोड़े के खुर की मिट्टी भी, जो उसने संभाल कर रखी हुई थी उसमें सम्मिलित कर दी, जिसमें अल्लाह तआला ने जीवन के प्रभाव रखा था, जिसके कारण बछड़ा कुछ-कुछ बैल की ध्वनि निकालता था (यद्यपि स्पष्ट वार्ता करने तथा मार्गदर्शन करने से विवश था, जैसा कि कुरआन के शब्दों से स्पष्ट होता है) इसमें मतभेद है कि वह माँस का बछड़ा बन गया, अथवा था वह सोने का ही परन्तु किसी प्रकार से उसमें वायु प्रवेश करती थी तो गाय बैल जैसी आवाज़ उसमें से निकलती। (इब्ने कसीर) इस ध्वनी के आधार पर सामरी ने इस्राईल की सन्तान को भटकाया कि तुम्हारा देवता तो यह है, मूसा भूल गये हैं तथा वह देवता की खोज में तूर पर्वत पर गये हैं। (यह घटना सूर: ताहा में आयेगी)

(१४९) तथा जब लज्जित हुए[1] एवं ज्ञात हुआ कि वास्तव में वे लोग भटकावे में पड़ गये, तो कहने लगे कि यदि हमारा पोषक हम पर कृपा न करे तथा हमारा पाप क्षमा न करे, तो हम बिल्कुल ही हानि पाने वालों में हो जायेंगे।

وَلَمَّا سُقِطَ فِيٓ أَيۡدِيهِمۡ وَرَأَوۡاْ أَنَّهُمۡ قَدۡ ضَلُّواْ قَالُواْ لَئِن لَّمۡ يَرۡحَمۡنَا رَبُّنَا وَيَغۡفِرۡ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ﴿١٤٩﴾

(१५०) तथा जब मूसा अपने सम्प्रदाय की ओर वापस आये क्रोध तथा क्षोभ में डूबे हुए तो कहा कि तुमने मेरे पश्चात यह बड़ी बुरी जानशीनी की है। क्या अपने प्रभु के आदेश से पूर्व ही तुम ने शीघ्रता की, तथा शीघ्रता से पट्टिकायें एक ओर डाल दीं। [2] तथा अपने भाई हारून का सिर पकड़ कर अपनी ओर घसीटने लगे। हारून ने कहा कि हे मेरी माँ से जन्मे ![3] इन लोगों ने मुझे कमजोर समझा

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوۡمِهِۦ غَضۡبَٰنَ أَسِفٗا قَالَ بِئۡسَمَا خَلَفۡتُمُونِي مِنۢ بَعۡدِيٓۖ أَعَجِلۡتُمۡ أَمۡرَ رَبِّكُمۡۖ وَأَلۡقَى ٱلۡأَلۡوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأۡسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُۥٓ إِلَيۡهِۚ قَالَ ٱبۡنَ أُمَّ إِنَّ ٱلۡقَوۡمَ ٱسۡتَضۡعَفُونِي وَكَادُواْ يَقۡتُلُونَنِي فَلَا

---

[1] سُقِطَ فِي أَيْدِيهِم यह एक वाक शैली है, जिसका अर्थ लज्जित होना है, यह लज्जा मूसा अलैहिस्सलाम की वापसी के पश्चात हुई जब उन्होंने आकर इस पर बुरा-भला कहा तथा डाँटा जैसा सूर: ताहा में आयेगा। यहाँ इसे इसलिए प्रथम लाया गया है कि उनकी कथनी-करनी एकत्रित हो जाये। (फ़तहुल क़दीर)

[2]जब आदरणीय मूसा ने आकर देखा कि वे बछड़े की पूजा में लगे हुए हैं, तो अत्यधिक क्रोधित हुए तथा शीघ्रता में पट्टिकायें, जो तूर पर्वत से लाये थे, इस प्रकार रखीं कि देखने वाले को प्रतीत हुआ कि उन्होंने नीचे फेंक दी हैं, जिसे क़ुरआन ने "डाल दीं" से तुलना की है फिर भी यदि फेंक दी हों, तो इसमें अनादर नहीं था क्योंकि उनका विचार पट्टिकाओं का अनादर करना नहीं था, अपितु धार्मिक मान-मर्यादा में लीन हो कर अप्रत्याशित रूप से उनसे यह कार्य हो गया।

[3]आदरणीय हारून तथा मूसा सगे भाई थे, परन्तु यहाँ आदरणीय हारून ने "माँ से जन्मे" इसलिए कहा कि इन शब्दों में प्रेम तथा कोमलता का पक्ष अधिक है।

تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥٠﴾

तथा निकट था कि मेरी हत्या कर दें।[1] तो तुम मुझ पर शत्रुओं को न हंसवाओ।[2] तथा मुझे इन अत्याचारियों की श्रेणी में न गिनो।[3]

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِأَخِيْ وَأَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٥١﴾

(१५१) (मूसा ने) कहा ऐ मेरे पोषक ! मेरी त्रुटियों को क्षमा कर तथा मेरे भाई की भी तथा हम दोनों को अपनी कृपा परिधि में सम्मिलित कर ले तथा तू कृपा करने वालों में सर्वाधिक कृपालु है।

إِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذٰلِكَ

(१५२) निःसन्देह जिन लोगों ने गौ की पूजा की है, उन पर अति शीघ्र उनके प्रभु की ओर से क्रोध तथा अपमान इस सांसारिक जीवन

[1]आदरणीय हारून ने अपना तर्क यह प्रस्तुत किया जिसके कारण वह अपने सम्प्रदाय को मिश्रणवाद (शिर्क) जैसे महापाप से रोकने में असफल रहे। एक अपनी क्षीणता तथा दूसरा इस्राईल की सन्तान का उपद्रव तथा सीमा उल्लंघन कि वे उनकी हत्या कर देने पर तैयार थे तथा उन्हें अपने जीवन रक्षा के लिए मौन रहना पड़ा, जिसकी आज्ञा अल्लाह ने ऐसे अवसरों पर प्रदान की है।

[2]मेरी ही भर्त्सना से शत्रु प्रसन्न होंगे, जबकि यह अवसर तो शत्रुओं के सिर कुचलने का तथा उनसे अपने सम्प्रदाय को बचाने का है।

[3]तथा वैसे भी विश्वास तथा कर्म के आधार पर मुझे उनकी श्रेणी में किस प्रकार सम्मिलित किया जा सकता है? मैंने न शिर्क किया न इसकी आज्ञा दी, न इस पर प्रसन्न हुआ, केवल मौन रहा तथा इसके लिए मेरे पास समुचित तर्क हैं, फिर मेरी गणना अत्याचारियों (बहुदेववादियों) के साथ किस प्रकार हो सकती है ? अतः आदरणीय मूसा ने अपने तथा अपने भाई हारून के लिए क्षमा तथा कृपा के लिए प्रार्थना की।

نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾

में ही पड़ेगा ।[1] तथा हम मिथ्यारोपियों को ऐसा ही दण्ड देते हैं ।[2]

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥٣﴾

(१५३) तथा जिन लोगों ने पाप के कार्य किये फिर वह उनके पश्चात उन से क्षमा माँग लें तथा ईमान ले आयें, तो तुम्हारा प्रभु उस क्षमा के पश्चात पाप क्षमा कर देने वाला कृपालु है ।[3]

وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾

(१५४) तथा जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ तो उन पट्टिकाओं को उठा लिया। उनके लेखों में[4] उन लोगों के लिए, जो अपने प्रभु से डरते थे, मागदर्शन के निर्देश तथा कृपा थीं ।[5]

---

[1]अल्लाह का प्रकोप यह था कि क्षमा के लिये वध आवश्यक किया गया। तथा इससे पूर्व जब तक जीवित रहे अपमान तथा निन्दा के अधिकारी रहे।

[2]तथा यह दण्ड विशेष रूप से उन्हीं के लिए नहीं है, जो भी अल्लाह पर मिथ्यारोपण करता है, उसको हम यही दण्ड देते हैं।

[3]हाँ, जिन्होंने क्षमा माँग ली, उनके लिए अल्लाह तआला क्षमावान कृपालु है, ज्ञात हुआ कि क्षमा माँगने से हर पाप क्षमा हो जाता है, परन्तु यह क्षमा शुद्ध हृदय से माँगी जाये।

[4]نُسْخَةٌ (नुस्ख:) शब्द (फुअल:) के समतुल्य कारक के अर्थ में है। यह उस मूल को भी कहते हैं जिससे अनुकृत किया जाये तथा प्रतिलिपि को भी नुस्ख: कहते हैं। यहाँ नुस्ख: से तात्पर्य या तो वे मूल पट्टिकायें हैं, जिन पर तौरात लिखी गयी थी, अथवा इससे तात्पर्य वह दूसरा नुस्ख: हो जो पट्टिकायें जोर से फेंकने के कारण टूट जाने के पश्चात अनुकृत करके तैयार किया गया था। फिर भी उचित बात पहली ही लगती है। क्योंकि आगे चल कर आता है कि आदरणीय मूसा ने उन "पट्टिकाओ को उठा लिया।" जिस से ज्ञात होता है कि पट्टिकायें टूटी नहीं थीं, अतएव इसका मुख्य उद्देश्य "विषय" हैं, जो अनुवाद में लिया गया है।

[5]तौरात को भी, क़ुरआन की भाँति, उन्हीं लोगों के लिए मार्गदर्शन तथा कृपा कहा गया है जो अल्लाह से डरते हैं, क्योंकि मुख्य लाभ आकाश शास्त्रों का उन्हीं लोगों को होता

وَاخْتَارَ مُوسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾

(१५५) तथा मूसा ने सत्तर व्यक्ति अपने सम्प्रदाय में से हमारे निर्धारित समय के लिए घोषित किये, तो जब उनको भूकम्प ने आ पकड़ा ।[1] तो (मूसा) विनती करने लगे कि हे हमारे प्रभु ! यदि तुझ को यह स्वीकार होता तो इससे पूर्व ही इनको तथा मुझ को नाश कर देता, क्या तू हम में से कुछ मूर्खों के कारण सबको नाश कर देगा ? यह घटना केवल तेरी ओर से एक परीक्षा है। ऐसी परीक्षाओं से जिसे तू चाहे भटकावे में डाल दे तथा जिसको चाहे मार्ग दर्शन दे दे। तू ही हमारा संरक्षक है, अब हमें क्षमा कर तथा कृपा कर तथा तू क्षमा करने वालों में सर्वोत्तम क्षमावान है ।[2]

है । दूसरे लोग तो चूँकि अपने कानों को सत्य सुनने से, आँखों को सत्यता देखने से वन्द किये होते हैं, इसलिए वह कृपा स्रोत से सामान्य रूप से लाभ उठाने से वंचित ही रहते हैं ।

[1]इन सत्तर व्यक्तियों का विस्तृत विवरण अगली टिप्पणी में आ रहा है। यहाँ यह वतलाया जा रहा है कि आदरणीय मूसा ने अपने सम्प्रदाय में से सत्तर व्यक्तियों का चयन किया, तथा उन्हें तूर पर्वत पर ले गये, जहाँ यातना के रूप में उन्हें मार दिया गया, जिस पर आदरणीय मूसा ने कहा ....

[2]इस्राईल की सन्तान में ये सत्तर व्यक्ति कौन थे? इसमें व्याख्याकारों का मतभेद है एक मत यह है कि जब आदरणीय मूसा ने तौरात के आदेश उन्हें सुनाया तो उन्होंने कहा कि हम कैसे विश्वास कर लें कि यह किताब वास्तव में अल्लाह की ओर से उतारी गयी है ? हम तो जब तक स्वयं अल्लाह तआला को वार्तालाप करते न सुन लें, इसे नहीं मानेंगे । अतः उन्होंने सत्तर महात्माओं का चयन किया तथा उन्हें तूर पर्वत पर ले गये। वहाँ अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा से वार्ता की, जिसे उन लोगों ने सुना। परन्तु वहाँ उन लोगों ने एक नई माँग रख दी कि हम जब तक अल्लाह तआला को अपनी आँख से न देख लेंगे ईमान नहीं लायेंगे। दूसरा मत यह है कि ये सत्तर व्यक्ति वह हैं, जो पूरे समुदाय की ओर से बछड़े की पूजा के महापाप से क्षमा-याचना के लिए तूर पर्वत पर

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٦﴾

(१५६) तथा हम लोगों के नाम दुनिया में भी भलाई (पुण्य) लिख दे तथा परलोक में भी। हम तेरी ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं।[1] अल्लाह (तआला) कहता है कि मैं अपना प्रकोप उसी पर घटित करता हूँ, जिस पर चाहता हूँ। तथा मेरी कृपा की परिधि में प्रत्येक वस्तु है।[2] तो वह कृपा उन लोगों के नाम अवश्य लिखूँगा, जो अल्लाह से डरते हैं तथा ज़कात (धर्मदान)

ले जाये गये थे तथा वहाँ जाकर उन्होंने अल्लाह तआला को देखने की इच्छा व्यक्त की। तीसरा मत यह है कि ये सत्तर व्यक्ति वे हैं, जिन्होंने इस्राईल की सन्तान को बछड़े की पूजा करते देखा, परन्तु उन्होंने इससे मना नहीं किया। चौथा मत यह है कि ये सत्तर व्यक्ति वे हैं, जिन्हें अल्लाह तआला के आदेश पर तूर पर्वत पर ले जाने के लिए चुना गया था। वहाँ जाकर उन्होंने अल्लाह से प्रार्थनायें कीं। जिनमें एक प्रार्थना यह भी थी कि "हे अल्लाह! हमें तू वह कुछ प्रदान कर, जो इससे पूर्व किसी को प्रदान नहीं किया तथा न भविष्य में किसी को प्रदान करेगा।" अल्लाह तआला को यह प्रार्थना प्रिय नहीं लगी, जिसके कारण भूकम्प आया तथा वे लोग उसमें मर गये। अधिकतर व्याख्याकार दूसरे मत के पक्ष में हैं तथा उसे उन्होंने वही घटना बताया है जो सूरः अल-बक़रः की आयत संख्या-५६ में आयी है, जहाँ उन पर बिजली की कड़क से मृत्यु होने का कारण वर्णित किया गया है। तथा यहाँ भूकम्प से मृत्यु का वर्णन है। इसके समर्थन में यह कहा गया है कि सम्भव है कि दोनों ही प्रकोप हुए हों अर्थात ऊपर से बिजली की कड़क तथा नीचे से भूकम्प। अतएव आदरणीय मूसा की उस विनय निवेदन के पश्चात कि यदि उनको मरना ही था तो उससे पूर्व उस समय मारता जब ये बछड़े की पूजा करते थे, अल्लाह तआला ने उन्हें पुनः जीवित कर दिया।

[1]अर्थात क्षमा माँगते हैं।

[2]यह उसकी अपार कृपा ही तो है कि जिसके कारण अच्छे-बुरे, ईमानवाले तथा काफ़िर दोनों ही उसकी कृपा से लाभान्वित हो रहे हैं। हदीस में आता है, "अल्लाह तआला की दया के सौ भाग हैं यह उसकी दया का ही भाग है कि जिससे सृष्टि एक-दूसरे पर दया करती है तथा नरभक्षी पशु अपने बच्चों पर दया-प्रेम करते हैं तथा उसने अपनी दया के निन्नावे भाग अपने पास रखे हैं।" (सहीह मुस्लिम संख्या २१०८ तथा इब्ने माजः संख्या ४२९३)

देते हैं तथा जो हमारी आयतों के प्रति ईमान रखते हैं।

(१५७) जो लोग ऐसे अभिज्ञ ईशदूत (सांसारिक गुरुओं द्वारा शिक्षा न प्राप्त की हो) नबी का अनुकरण करते हैं, जिनको वह लोग अपने पास तौरात तथा इंजील में लिखा हुआ पाते हैं।[1] वह उनको पुण्य के कार्यों का आदेश करते हैं तथा पाप के कार्यों से रोकते हैं।[2] तथा पवित्र पदार्थों को वैध (प्रयोग करने योग्य) बताते हैं तथा अपवित्र (अशुद्ध) पदार्थों को निषेध (प्रयोग करने से रोकना) बताते हैं तथ उन लोगों पर जो भार एवं गले के फंदे थे[3] उन को दूर करते हैं। इसलिए जो लोग

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ؗ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا

[1]यह आयत भी इस बात को स्पष्ट करने के लिए परम आवश्यक विशेषता रखती है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाये बिना पारलौकिक मोक्ष सम्भव नहीं तथा उचित एवं स्वीकार्य ईमान वही है जिसका विस्तृत वर्णन मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किया है। इस आयत से भी "सर्व धर्म संभाव" की जड़ कटती है।

[2]भला वह है जिसे धर्म विधान ने भला कहा तथा बुरा वह है जिसे धर्म विधान ने अनुचित किया है।

[3]ये भार तथा फंदे वे हैं जो पिछले धर्मों के नियमों में थे कि जैसे प्राण के बदले प्राण अनिवार्य था दियत (खून का मूल्य जो मृतकों के उत्तराधिकारियों द्वारा माँगा जाये जो देने भी हों अथवा क्षमा नहीं था) अथवा जिस वस्त्र को अपवित्र चीज़ लग जाती, उसका त्याग करना आवश्यक था, इस्लामी धार्मिक नियम ने इसे केवल धोने का उपदेश दिया। जिस प्रकार हत्या के बदले में रक्त का मूल्य माँगने तथा क्षमा करने की अनुमति प्रदान की है आदि। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि, "मुझे सरल एकेश्वरवादी धर्म के साथ भेजा गया है।" (मुसनद अहमद भाग ५, पृ॰ २६६, भाग ६, पृ॰ ११६ तथा २३३) परन्तु दुर्भाग्य से इस समुदाय ने अपनी ओर से रीति-रीवाज का बोझ अपने ऊपर लाद लिया है तथा अज्ञानता का फंदा अपने गले का आभूषण बना लिया है, जिससे विवाह तथा शोक दोनों यातना बन गये हैं।

النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾	इस नबी पर ईमान लाते हैं तथा उनका समर्थन करते हैं एवं उनकी सहायता करते हैं तथा उस प्रकाश का अनुकरण करते हैं, जो उनके साथ भेजा गया है। ऐसे लोग पूर्ण सफलता प्राप्त करने वाले हैं।[1]
قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا ِۨ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ	(१५८) (आप) कह दीजिए कि हे लोगो ! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का भेजा हुआ हूँ जिसका राज्य सभी आकाशों तथा धरती में है, उसके अतिरिक्त कोई भी इबादत के योग्य नहीं, वही जीवन प्रदान करता है तथा वही मृत्यु प्रदान करता है। इसलिए अल्लाह के प्रति तथा उसके अभिज्ञ दूत के प्रति

---

[1]इन अन्तिम शब्दों से भी यही स्पष्ट होता है कि सफल वही लोग हैं जो परम आदरणीय मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वाले तथा अनुकरण करने वाले होंगे। जो मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान नहीं लायेंगे वे सफल नहीं, हानि उठाने वाले तथा असफल होंगे। इसके अतिरिक्त सफलता से भी परलोक की सफलता का तात्पर्य है। यह सम्भव है कि कोई समुदाय जो मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान न रखता हो तथा उसे सांसारिक वैभव तथा आनन्द की बाहुल्यता प्राप्त हो। जिस प्रकार इस समय पाश्चात्य देश तथा यूरोपीय एवं अन्य समुदायों की दशा है कि वे ईसाई, यहूदी, नास्तिक अथवा मूर्तिपूजक होने के उपरान्त भी भौतिक उन्नति एवं वैभव में श्रेष्ठ हैं। परन्तु उन की यह उन्नति अस्थाई तथा परीक्षा के लिए है। यह उनकी आख़ीरत की सफलता का प्रमाण नहीं है। इसी प्रकार واتّبعوا النور الذي أنزل معه से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सूर: अल-मायदा की आयत संख्या-१५ में प्रकाश का तात्पर्य क़ुरआन मजीद ही है। (जैसाकि वहाँ भी स्पष्ट किया गया था) क्यों कि जो प्रकाश आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के साथ उतारा गया, वह क़ुरआन मजीद ही है। इसलिए इस प्रकाश से स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तात्पर्य नहीं है। परन्तु यह अलग बात है कि आप की विशेषताओं में से एक विशेषता प्रकाश भी है। जिससे नास्तिकता, कुफ़्र एवं बहुदेववाद के अंधेरे दूर हुए। परन्तु आपकी प्रकाशमयी विशेषता होने के कारण आपका نورٌ مِن نور الله होना सिद्ध नहीं हो सकता। जिस प्रकार से धर्म में आधुनिकीकरण करने वाले यह सिद्ध करते हैं।

الَّذِیۡ یُؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوۡهُ لَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ ﴿۱۵۸﴾

विश्वास करो । जो कि अल्लाह पर तथा उसके आदेश पर ईमान रखते हैं तथा उनका अनुसरण करो ताकि तुम सत्य मार्ग पर आ जाओ ।[1]

وَمِنۡ قَوۡمِ مُوۡسٰۤى اُمَّةٌ یَّهۡدُوۡنَ بِالۡحَقِّ وَبِهٖ یَعۡدِلُوۡنَ ﴿۱۵۹﴾

(१५९) तथा मूसा के समुदाय में एक वर्ग ऐसा भी है जो सत्य के अनुरूप ही निर्देश करता है तथा उसके अनुरूप न्याय करता है ।[2]

وَقَطَّعۡنٰهُمُ اثۡنَتَیۡ عَشۡرَةَ اَسۡبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوۡحَیۡنَاۤ اِلٰى مُوۡسٰۤى

(१६०) तथा हम ने उनको बारह परिवारों में बाँट कर सब का अलग-अलग समुदाय

---

[1]यह आयत भी मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूतत्व के विश्वव्यापी होने का खुला प्रमाण है। इसमें अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह आदेश दिया है कि कह दीजिए कि हे अखिल जगत के मनुष्यों ! मैं सभी की ओर अल्लाह का दूत बना कर भेजा गया हूँ। इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त मानव जाति के मोक्ष दाता तथा ईशदूत हैं। अब न मोक्ष तथा मार्गदर्शन ईसाइयत में है और न यहूदियत में एवं न किसी अन्य धर्म में केवल इस्लाम में है। इस आयत में तथा इससे पूर्व आयत में आपको अनभिज्ञ नबी कहा गया है। यह आपकी प्रमुख विशेषता है । उम्मी (اُمّی) का अर्थ है अशिक्षित अथवा अनपढ़। अर्थात आपने किसी गुरु से अथवा शिक्षक से किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त नहीं की। परन्तु इसके उपरान्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो क़ुरआन करीम प्रस्तुत किया उसकी विशेषता तथा भाषा के समक्ष संसार भर के भाषणकर्ता तथा भाषा विशेषज्ञों ने घुटने टेक दिये तथा आपने जो शिक्षायें प्रस्तुत कीं उनकी यर्थाता तथा वास्तविकता को समस्त संसार स्वीकार करता है, जो इस बात का प्रमाण है कि आप वास्तव में अल्लाह के सच्चे दूत हैं, वरन् एक अनपढ़ न ऐसा क़ुरआन प्रस्तुत कर सकता है तथा न ऐसी शिक्षायें वर्णन कर सकता है, जो न्याय का श्रेष्ठ नमूना है तथा मानवता की सफलता एवं उन्नति के लिए अनिवार्य है। उन्हें अपनाये बिना संसार वास्तविक सुख शांति एवं कुशलता से आलिंगित नहीं हो सकता ।

[2]इससे तात्पर्य वही कुछ लोग हैं जो मुसलमान हो गये थे। अब्दुल्लाह बिन सलाम, आदि رضي الله عنهم

إِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ
بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ
اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۭ قَدْ عَلِمَ
كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۭ وَظَلَّلْنَا
عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ
الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۭ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ
مَا رَزَقْنٰكُمْ ۭ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾

निर्धारित कर दिया ।[1] तथा हमने मूसा को आदेश दिया जबकि उनके समुदाय ने उनसे पानी मांगा कि अपनी छड़ी को अमुक पत्थर पर मारो, फिर तुरन्त उसमें से बारह स्रोत बह निकले । प्रत्येक व्यक्ति ने अपने पानी पीने का स्थान जान लिया। तथा हमने उन पर बादलों की छाया की, तथा उनको तुरंजबीन तथा बटेरें पहुँचायीं कि खाओ पवित्र स्वादिष्ट वस्तुयें जो कि हमने तुम को प्रदान की हैं । तथा उन्होंने हमारा कोई हानि नहीं किया परन्तु अपनी ही हानि करते थे ।

وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ
الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ
وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ۭ
سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾

(१६१) तथा जब उनको आदेश दिया गया कि तुम लोग उस बस्ती में जाकर रहो तथा खाओ उससे जिस स्थान पर तुम रूचि रखो तथा मुख से यह कहते जाना कि क्षमा माँगते हैं तथा झुक-झुक कर द्वार से प्रवेश करना । हम तुम्हारी त्रुटियाँ क्षमा कर देंगे। जो सदाचार करेंगे उनको इससे अधिक प्रदान करेंगे ।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا
غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا

(१६२) तो बदल डाला उन अत्याचारियों ने एक कथन को जो विरुद्ध था उस कथन के जिसका उन्हें आदेश दिया गया था। इस पर हम

---

[1] أسباط बहुवचन है سِبْط का तथा इसका अर्थ पौत्र है। यहाँ अस्बात वंशों के लिए प्रयोग किया गया है। अर्थात आदरणीय याक़ूब के बारह पुत्रों से बारह वंश धरती पर बने। प्रत्येक वंश पर अल्लाह तआला ने एक-एक निरीक्षक भी नियुक्त किया था तथा कह दिया था ﴿وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا﴾ (सूर: अल-मायद:-१२) यहाँ अल्लाह तआला उन बारह समुदायों के कुछ-कुछ विशेषताओं में परस्पर विभेद होने के कारण उनके अलग-अलग समुदाय होने की चर्चा उपकार जताने हेतु कर रहा है।

عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾

ने आकाश से एक आपदा भेजी इस कारण कि वे अत्याचार किया करते थे |[1]

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذَٰلِكَ نَبْلُوهُم بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٣﴾

(१६३) तथा आप उन लोगों से[2] उस नागरिकों[3] का जो समुद्र के निकट बसे थे उस समय की दशा पूछिये जब कि वह शनिवार के दिन के विषय में सीमा लांघ रहे थे, जब कि उनके शनिवार के दिन उनको मछलियाँ प्रत्यक्ष हो-हो कर उनके समक्ष आतीं थीं | तथा जब शनिवार का दिन न होता, तो उनके समक्ष न आती थीं | हम उनकी इस प्रकार परीक्षा ले रहे थे | इस कारण से कि वे आदेशों की अवहेलना करते थे |[4]

---

[1]आयत संख्या १६० से १६२ तक जो बातें वर्णित की गयी हैं यह वे हैं जो प्रथम भाग के सूर: अल बक़र: के प्रारम्भ में वर्णित की गयी हैं | वहाँ उन की विस्तृत व्याख्या देख ली जाये |

[2] وَسْـَٔلْهُم में هُم सर्वनाम है, जिसका संकेत यहूदियों की ओर है अर्थात 'उनसे पूछिये' इससे यहूदियों को यह बताने का भी उद्देश्य है कि इसका ज्ञान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी है, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सत्यता का प्रमाण है क्योंकि अल्लाह की ओर से प्रकाशना (वह्यी) के बिना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस घटना का ज्ञान होना असम्भव है |

[3]उस बस्ती के निर्धारण में मतभेद है, कोई उसका नाम ईला, कोई तबरीया, कोई ईलिया तथा कोई सीरिया की कोई बस्ती जो समुद्र के निकट थी, बतलाता है | व्याख्याकारों का अधिकतर झुकाव ईला की ओर है जो मदयन तथा तूर पर्वत के मध्य कुलज़ुम सागर के किनारे पर आबाद थी |

[4]حِيتَان शब्द حوت शब्द का बहुवचन है | जिसका अर्थ है मछली | شُرَّعًا शब्द شارع शब्द का बहुवचन है | अर्थ है जल तल पर उभर-उभर कर आने वालियाँ | यह यहूदियों की उस घटना की ओर संकेत है, जिसमें उन्हें शनिवार के दिन मछली के शिकार से रोक दिया गया था | परन्तु परीक्षा के रूप में शनिवार के दिन मछलियाँ जल-तल पर उभर-उभर कर उन्हें शिकार करने के लिए आमन्त्रित करतीं | तथा जब यह दिन समाप्त हो

(१६४) तथा जबकि उनमें से एक गुट ने यह कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों उपदेश देते हो ? जिनको अल्लाह पूर्ण रूप से विनाश करने वाला है। अथवा उनको कठोर दण्ड देने वाला है।[1] उन्होंने उत्तर दिया कि तुम्हारे पोषक के समक्ष याचना करने के लिए तथा इसलिए कि संभवत: ये डर जायें।

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾

(१६५) तो जब वह उसको भूल गये जिस का स्मरण उनको दिलाया जाता रहा।[2] तो हमने

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا

जाता तो उस प्रकार न आतीं। अन्तत: यहूदियों ने एक बहाना निकाल कर अल्लाह के आदेश की अवहेलना की कि गड्ढे खोद लिए ताकि मछलियाँ उसमें फंसी रहें तथा जब शनिवार का दिन समाप्त हो जाता, तो उनको पकड़ लेते।

[1]इस गुट से तात्पर्य सत्कर्मियों का वह गुट है, जो ऐसे बहाने नहीं बनाता था तथा अन्य लोगों को समझा-समझा कर उनके सुधार से निराश भी हो गया था। इस प्रकार उनमें कुछ लोग ऐसे भी समझाने वाले थे जो उन्हें शिक्षा देते तथा इस कार्य से रोकते थे। सत्कर्मियों का यह गुट उन्हें यह कहता कि ऐसे लोगों को समझाने-बुझाने से क्या लाभ जिनके भाग्य में विनाश तथा अल्लाह की यातना है। अथवा इस गुट से तात्पर्य वही उल्लघंनकारी तथा अवज्ञाकारी लोग हैं, जब उन्हें समझाने वाले लोग शिक्षा देते तो कहते कि जब तुम्हारे विचार से विनाश तथा अल्लाह की यातना हमारा भाग्य है, तो फिर हमें क्यों शिक्षा-दीक्षा देते हो ? तो वे उत्तर देते कि एक तो अपने प्रभु के समक्ष क्षमा प्रस्तुत करने के लिए ताकि हम तो अल्लाह की पकड़ से सुरक्षित रहें क्योंकि अल्लाह के आदेशों की अवहेलना होते देखना तथा उससे लोगों को न रोकना भी अपराध है, जिसके कारण अल्लाह तआला पकड़ सकता है। दूसरा लाभ यह है कि शायद यह लोग अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने से रुक जायें। पहली व्याख्या से तीन गुट हुए १. अवज्ञाकारी तथा शिकार करनेवाला गुट २. वह गुट जिसने बिल्कुल एकान्त धारण कर लिया था, न वह अवज्ञाकारियो में से था न रोकने वालों में से ३. वह गुट जो अवज्ञाकारी न था तथा बिल्कुल एकान्त धारण भी नहीं किया था। अपितु अवज्ञाकारियों को रोकता भी था। दूसरी व्याख्या के आधार पर दो गुट हुए एक अवज्ञाकारियों का गुट दूसरा रोकने वालों का गुट।

[2]अर्थात शिक्षा-दीक्षा की उन्होंने कोई चिन्ता नहीं की तथा अवज्ञाकरिता पर अड़े रहे।

الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوٓءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾

उन लोगों को तो बचा लिया जो उन को बुरी बातों से रोकते थे तथा उन लोगों को जो अत्याचार करते थे एक कड़ी यातना में पकड़ लिया। इस कारण कि वे आज्ञा का उल्लघंन करते थे।[1]

فَلَمَّا عَتَوْا عَن مَّا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾

(१६६) अर्थात जब वह जिस काम से मना किया गया था उसमें सीमा को पार कर गये, तो हमने उनको कह दिया कि तुम अपमानित बन्दर बन जाओ।[2]

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَن يَسُومُهُمْ سُوٓءَ الْعَذَابِ ۗ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ

(१६७) तथा वह समय याद रखना चाहिए कि आपके पालक ने बता दिया कि वह इन (यहूदियों) पर प्रलय तक ऐसे व्यक्ति को अधिकृत रखेगा जो इन लोगों को कठोर दण्ड द्वारा दुख पहुँचाता रहेगा।[3] निःसंदेह आपका

---

[1]अर्थात वे अत्याचारी भी थे, अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना करके उन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किया तथा उन्हें नरक का ईंधन बना लिया तथा उपद्रवी भी कि अल्लाह के आदेशों की अवहेलना को अपना आचरण तथा कर्म बना लिया।

[2]عَتَوا का अर्थ है जो ईश्वरीय आदेशों के उल्लंघन में सीमा पार कर गये। व्याख्याकारों में इस बात पर मतभेद है कि मोक्ष प्राप्त करने वाले केवल वही व्यक्ति थे, जो मना करते थे तथा शेष दोनों अल्लाह की यातना के भोगी हुए ? अथवा पकड़ में आने वाले केवल अवहेलना करने वाले थे ? तथा शेष दो गुट मोक्ष प्राप्त करने वाले थे। इमाम इब्ने कसीर ने दूसरे मत को प्रमुखता दी है।

[3]تأذّن-إيذان शब्द का अर्थ إعلام शब्द के समतुल्य है, जिसका अर्थ घोषणा है (सूचित कर देना, जता देना) अर्थात वह समय भी स्मरण करो जब आप के पोषक ने इन यहूदियों को भली-भाँति सूचित कर दिया था। لَيَبْعَثَنَّ शब्द में अरबी का अक्षर "लाम" बल देने के लिये है जो सौगन्ध के अर्थ का लाभ देता है। अर्थात सौगन्ध खाकर अत्यधिक प्रभावित ढ़ंग से अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि वह इन लोगों पर प्रलय तक ऐसे लोगों को प्रभावित रखेगा, जो इनको कठोर यातनाओं में ग्रसित रखेंगे। अत: यहूदियों का इतिहास इसी अपमान निन्दा तथा दासता एवं अधीनता का इतिहास है जिसकी सूचना अल्लाह तआला ने इस आयत में दी है। इस्राईल की वर्तमान सरकार क़ुरआन की

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾

पोषक अतिशीघ्र दण्ड देता है तथा नि:संदेह वह वास्तव में अत्यधिक क्षमाशील तथा कृपालु है।[1]

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۖ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾

(१६८) तथा हमने संसार में उनके (विभिन्न) गुट कर दिये। कुछ उनमें पुनीत थे तथा कुछ अन्य आचरण के थे एवं हम उनको सम्पन्नता तथा दरिद्रता के द्वारा उनकी परीक्षा लेते रहे कि संभवत: वे लौट जायें।[2]

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ

(१६९) फिर उनके पश्चात ऐसे लोग उनके कपूत हुए।[3] कि धर्मशास्त्र को उनसे प्राप्त किया। वह इस तुच्छ संसार का थोड़ा-सा भी धन ले लेते हैं।[4] तथा कहते हैं कि हमें अवश्य मोक्ष प्राप्त हो जायेगी।[5] यद्यपि उनके

वर्णित यथार्थता के विपरीत नहीं है इस लिये की क़ुरआन के वर्णित अनिवंधन وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ की द्योतक है जो क़ुरआनी यथार्थता के विपरीत नहीं अपितु उस की समर्थक है। (विस्तार के लिए देखिए सूर: अले इमरान -११२ की व्यख्या)

[1]अर्थात यदि उनमें से कोई क्षमा माँग कर मुसलमान हो जायेगा, तो वह इस अपमान तथा घोर यातना से बच जायेगा।

[2]इसमें यहूदियों के विभिन्न गुटों में विभाजित हो जाने एवं उनमें कुछ के पुनीत होने की चर्चा है। तथा उनकी दोनों प्रकार से परीक्षा लेने का वर्णन है कि संभवत: वह अपनी करतूतों से रुक जायें तथा अल्लाह की ओर पलट आयें।

[3]خَلَف (लाम पर ज़बर के साथ) सपूत को خَلْف (लाम के लिप्त होने पर) कुपूत के अर्थों में प्रयोग होता है।

[4]أدنى, دُنُوٌّ (निकट) से लिया गया है अर्थात निकट का धन उगाहते हैं, जिसका तात्पर्य दुनिया है अथवा यह دَنَاءَةٌ से लिया गया है,जिससे अभिप्राय तुच्छ, हीन तथा गिरा पड़ा धन है। दोनों का उद्देश्य उनकी माया मोह को दर्शाता है।

[5]अर्थात माया मोह के उपरान्त भी मोक्ष की कामना करते हैं। जैसे आजकल के मुसलमानों की दशा है।

مِّثْلُهُ يَأْخُذُوهُ ۚ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِم مِّيثَاقُ الْكِتَابِ أَن لَّا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۗ وَالدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾

पास वैसा ही धन-द्रव्य आने लगे तो उसे भी ले लेंगे। क्या उनसे इस शास्त्र के इस विषय का वचन नहीं लिया गया ? कि अल्लाह की ओर सत्य कथन के अतिरिक्त अन्य कथन को सम्बन्धित न करें ?[1] तथा उन्होंने इस शास्त्र में जो कुछ था उसको पढ़ लिया।[2] तथा परलोक गृह उन लोगों के लिए उत्तम है जो अल्लाह का भय रखते हैं, फिर क्या तुम नहीं समझते।

وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾

(१७०) तथा जो लोग धर्मशास्त्र पर अडिग हैं तथा नमाज़ की स्थापना करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो स्वयं का सुधार कर लें प्रत्युपकार व्यर्थ न करेंगें।[3]

---

[1]इसके उपरान्त भी यह झूठी बातें अल्लाह तआला से सम्बन्धित करने से नहीं चुकते। उदाहरणार्थ उपरोक्त मोक्ष की बात।

[2]इसका एक दूसरा भावार्थ मिटाना भी हो सकता है जैसे دَرَست الرِّيح الآثار (वायु ने चिन्ह मिटा डाले) अर्थात धर्मशास्त्र की बातों को मिटा डाला अर्थात तदानुसार कर्म नहीं किया।

[3]इन लोगों में से जो अल्लाह के मार्ग को अपना लें, शास्त्र को सुदृढ़ता से थाम लें, जिससे तात्पर्य मूल तौरात है तथा जिस के अनुसार कर्म करते हुए मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि) वसल्लम के दूतत्व पर विश्वास रखें, नमाज़ आदि को दृढ़ता से पढ़ते रहें, तो अल्लाह तआला ऐसे सुधार करने वालों के पुण्य को अकारथ न करेगा। इसमें उन शास्त्रधारियों (सम्बोधित विषय का सम्बन्ध विशेष रूप से यहूदियों से है) का वर्णन है, जो अल्लाह के भय, किताब पर दृढ़ता से पालन करना, तथा नमाज़ को निश्चित समय पर निरन्तर पढ़ना। अत: उनके लिए परलोक की शुभसूचना है। इसका अर्थ यह हैं कि वे मुसलमान हो जायें तथा मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान ले आयें। क्योंकि अखिल जगत के लिए अब अन्तिम ईशदूत परम आदरणीय मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये बिना मोक्ष सम्भव नहीं।

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾

(१७१) तथा वह समय भी स्मरणीय है, जब हम ने पर्वत को छत्री के समान उनके ऊपर लटका दिया और उनको विश्वास हो गया कि अब उन पर गिरा तथा कहा कि हम ने जो शास्त्र तुम को दिया है उसे सुदृढ़ता से स्वीकार करो तथा याद रखो जो आदेश इसमें हैं, उससे सम्भावना है कि तुम अल्लाह से डरने लगो ।[1]

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۛ شَهِدْنَا ۛ أَن تَقُولُوا

(१७२) तथा जब आप के पोषक ने आदम की सन्तान की पीठों से उनकी सन्तान को निकाला तथा उनसे उन ही के सम्बन्ध में वचन लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सब ने उत्तर दिया, क्यों नहीं, हम सभी साक्षी हैं,[2]

---

[1]यह उस समय की घटना है जब आदरणीय मूसा उनके पास तौरात लाये तथा उसके आदेश उनको सुनाये । तो उन्हों ने अपने व्यवहार के अनुसार उन के अनुसार कार्य करना अस्वीकार किया तथा अवहेलना की । जिसके कारण अल्लाह तआला ने उनके सिर पर पर्वत ला खड़ा किया कि तुम पर गिरा कर कुचल दिया जायेगा, जिससे डर कर उन्होंने वचन दिया कि तौरात के अनुसार कार्य करेंगे । कुछ कहते हैं कि यह घटना रफ़आ पर्वत की है जो उनकी माँग के कारण घटित हुई । जब उन्होंने कहा कि हम तौरात के नियमों के अनुसार कार्य तब करेंगे जब हमारे सिरों पर पर्वत उठा कर दिखायी दे । परन्तु पहली बात अधिक उचित लगती है । والله أعلم, यहाँ मात्र पर्वत का वर्णन है । परन्तु इससे पूर्व सूर: अल-बक़र: आयत संख्या ६३ तथा आयत संख्या ९३ में, दो स्थानों पर इस घटना का वर्णन आया है । वहाँ इसका नाम स्पष्ट रूप से तूर पर्वत बताया गया है ।

[2]यह عَهْدِ أَلَسْتُ वचन कहलाता है जो أَلَسْتُ بِرَبِّكُم से बनाया गया योग है । यह वचन आदरणीय आदम की सृष्टि के उपरान्त उनके पीछे होने वाली संतान से लिया गया था । इसका विस्तृत विवरण एक सहीह हदीस में इस प्रकार आताा है कि, "अरफ़ा वाले दिन 'नोमान' नामी स्थान पर अल्लाह तआला ने आदम की सन्तानों से वचन लिया । इस प्रकार कि आदम की पीठ से उनकी पैदा होने वाली सन्तानों को निकाला गया तथा उनको अपने समक्ष फैला दिया तथा उनसे पूछा कि क्या मैं तुम्हारा प्रभु नहीं हूँ ?

يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَافِلِينَ ﴿١٧٢﴾

ताकि तुम लोग प्रलय के दिन यह न कहो कि हम तो इससे मात्र अनजान थे।

أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ بَعْدِهِمْ ۖ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾

(१७३) अथवा यह कहो कि सर्व प्रथम मिश्रण (शिर्क) तो हमारे पूर्वजों ने किया तथा हम उन के पश्चात उनके वंश में हुए, तो क्या उन कुकर्मियों के कुकर्मो पर तू हमें विनाश में झोंक देगा।[1]

सभी ने उत्तर दिया بَلَىٰ، شَهِدْنَا (क्यों नहीं, हम सब साक्षी हैं)। (मुसनद अहमद भाग १, पृष्ठ २७२, तथा अल-हाकिम भाग २, पृष्ठ संख्या ५४४ एवं इसको सहीह कहा है और इमाम ज़हबी उनसे सहमत हैं) इमाम शौकानी इस हदीस के विषय में लिखते हैं "इसके प्रमाण में कोई कमी नहीं है" (फ़तहुल क़दीर) इसके अतिरिक्त इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि "यह 'सृष्टि लोक' कहलाता है इसकी यही व्याख्या ठीक तथा उचित एवं सत्य है, जिससे हटकर किसी अन्य भाव की ओर जाना उचित नहीं क्योंकि यह प्रमाणित हदीस है तथा इसके सम्बन्ध सहाबा से सिद्ध हैं तथा इसे किसी अन्य भावार्थ में लेना उचित नहीं है।" अत: अल्लाह के रब्ब होने की गवाही प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति में समावेशित है। इस विषय को रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार वर्णन किया है, कि "प्रत्येक शिशु प्रकृति पर जन्म लेता है, परन्तु उसके माता-पिता उसे यहूदी, ईसाई अथवा अग्निपूजक बना देते हैं। जिस प्रकार जानवर का बच्चा पूर्ण रूप से पैदा होता है, उस का नाक कान कटा नहीं होता।" (सहीह बुख़ारी किताबुल जनायेज़ तथा सहीह मुस्लिम किताबुल क़द्र) तथा सहीह मुस्लिम का शब्द है। अल्लाह तआला फ़रमाता है, "मैंने अपने भक्तों को हनीफ़ (अल्लाह की ओर एकाग्रता से लीन होने वाला) पैदा किया है परन्तु शैतान उनको इनके प्राकृतिक धर्म से विचलित कर देता है।" अल-हदीस (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्नः) यह प्रकृति अथवा प्राकृतिक धर्म ही एकेश्वरवाद (तौहीद) है तथा उसके द्वारा उतारा धर्म विधान है जो अब इस्लाम के रूप में सुरक्षित तथा विद्यमान है।

[1]अर्थात हमने तुमसे यह वचन तथा अपने स्वामित्व की गवाही इसलिए ली थी ताकि तुम यह तर्क प्रस्तुत न कर सको कि हम तो अनजान थे अथवा हमारे पूर्वज बहुदेव उपासना (शिर्क) करते चले आये थे। यह तर्क प्रलय के दिन अल्लाह के न्यायालय में मान्य नहीं होगा।

(१७४) तथा हम इसी प्रकार आयतों को स्वच्छता पूर्वक वर्णन कर देते हैं ताकि वे वापस आ जायें।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾

(१७५) तथा उन लोगों को उस व्यक्ति की दशा पढ़ कर सुनाईये कि जिसको हमने अपनी निशानियाँ प्रदान कीं, फिर वह उनसे बिल्कुल निकल गया, फिर शैतान उसके पीछे लग गया, इस प्रकार वह भटके हुए लोगों में सम्मिलित हो गया।[1]

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾

(१७६) तथा यदि हम चाहते तो उसको इन निशानियों के कारण उच्च पद पर आसीन कर देते, परन्तु वह तो संसार के माया मोह में पड़ गया एवं अपनी इच्छाओं के अनुसरण करने लगा तो उसकी दशा कुत्ते के समान हो गयी कि यदि तुम उस पर आक्रमण करो तब भी हाँफे अथवा उस को छोड़ दो तब भी हाँफे।[2] यही दशा उन लोगों की है जिन्होंने

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۗ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ

---

[1]व्याख्याकारों ने इसे एक निश्चित व्यक्ति से सम्बन्धित माना है जिसे ईश्वरीय ग्रन्थ का ज्ञान प्राप्त था परन्तु वह संसार एवं शैतान का अनुयायी बन कर पथभ्रष्ट हो गया। किन्तु उसके निर्धारण के संदर्भ में कोई प्रमाण नहीं अत: उसके निर्धारण की कोई आवश्यकता भी नहीं है।

[2] لَهَثٌ थकान अथवा पियास के कारण जीभ निकालने को कहते हैं। कुत्ते का यही स्वभाव होता है कि उसे डांटो-डपटो अथवा उसकी दशा पर छोड़ दो दोनों परिस्थितियों में यह भौंकने से नहीं रुकता, इसी प्रकार इसका यह भी स्वभाव है कि वह पेट भर खाये हो अथवा भूखा, स्वस्थ हो अथवा रोगी, थका हुआ हो अथवा चुस्त, प्रत्येक अवस्था में जीभ निकाले हाँफता रहता है। यही दशा ऐसे व्यक्ति की है उसे शिक्षा-दीक्षा दो अथवा न दो, उसकी दशा एक ही रहेगी तथा संसारिक धन-दौलत के लिए लार टपकती रहेगी।

فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٧٦﴾

हमारी निशानियों को झुठलाया। अत: आप इस दशा का वर्णन कर दीजिए, संभवत: वह लोग कुछ सोचें।[1]

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾

(१७७) उन लोगों की दशा भी बुरी दशा है।[2] जो हमारी आयतों को मिथ्या मानते हैं। तथा अपनी हानि करते हैं।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾

(१७८) जिसको अल्लाह तआला स्वयं मार्ग दर्शन देता है वही संमार्ग पर होता है। तथा जिन्हें अल्लाह कुपथ कर दे वही क्षतिग्रस्त हैं।[3]

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٧٩﴾

(१७९) तथा हमने ऐसे बहुत से जिन्न तथा मनुष्य नरक के लिए पैदा किये हैं।[4] जिनके दिल ऐसे हैं, जिनसे नहीं समझते तथा जिन की आंखें ऐसी हैं, जिनसे नहीं देखते, एवं जिनके कान ऐसे हैं जिनसे नहीं सुनते। यह लोग चौपाये (पशु) की भांति हैं, बल्कि उन से भी अधिक भटके हुए हैं।[5] यही लोग विमुख हैं।

---

[1]तथा इस प्रकार के व्यक्ति से शिक्षा लेकर भटकने से बचें तथा सत्य को अपनायें।

[2]مَثَلًا शब्द विशेषक है। मूल वाक्य इस प्रकार होगा ﴿سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا﴾

[3]यह अल्लाह तआला के उस विधान का वर्णन है जिसकी चर्चा एवं व्याख्या दो, तीन बार की जा चुकी है।

[4]इसका सम्बन्ध भाग्य से है। अर्थात प्रत्येक मानव एवं दानव भूलोक में जाकर क्या करेगा ? इसका ज्ञान अल्लाह तआला को था, उसके अनुसार उसने लिख रखा है। यहाँ उन्हीं नरकियों की चर्चा है। जिन्हें अल्लाह के ज्ञान से नरक वाले ही काम करने थे। आगे उसको कुछ और स्पष्ट कर दिया गया है कि जिन लोगों के अन्दर ये दोष उसी रूप में हों, जिनका वर्णन यहाँ किया है, तो समझ लो उनका परिणाम बुरा है।

[5]अर्थात हृदय, आँख तथा कान अल्लाह तआला ने इसलिए प्रदान की हैं कि मनुष्य इनसे लाभ उठाते हुए अपने प्रभु को समझे, उसके निशानियों को देखे तथा सत्य बात को

(१८०) तथा शुभ नाम अल्लाह के लिए ही हैं, इसलिए इन नामों से अल्लाह ही को नामांकित किया करो ।[1] तथा ऐसे लोगों से सम्बन्ध भी न रखो जो उसके नामों में टेढ़ापन करते हैं ।[2]

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ

ध्यानपूर्वक सुने । परन्तु जो व्यक्ति इन चीजों से यह कार्य नहीं लेता, वह उनसे लाभान्वित न होने के कारण पशुओं के समान है, अपितु उनसे भी अधिक भटका हुआ है । इसलिए की पशु फिर भी कुछ अपने लाभ-हानि की समझ रखते हैं । क्योंकि वे लाभदायक चीजों से लाभ उठाते हैं तथा हानिकारक पदार्थों से दूर रहते हैं । परन्तु अल्लाह तआला के मार्गदर्शन से विमुख व्यक्ति के अन्दर तो यह समझ भी नहीं होती कि उसके लिए लाभकारी वस्तुऐं कौन-सी हैं तथा हानिकारक कौन-सी । इसीलिए अगले वाक्य में उन्हें असावधान कहा गया है ।

[1] حُسْنٰى अरबी भाषा में أَحْسَن का स्त्रीलिंग है । अल्लाह के इन अच्छे नामों से तात्पर्य अल्लाह के वे नाम हैं जिनसे उसकी विभिन्न विशेषता, उसकी श्रेष्ठता तथा प्रभुत्व एवं उसका सामर्थ्य एवं शक्ति का प्रकाशन होता है । सहीहैन की हदीस में इनकी संख्या ९९ (निन्नावे) बतायी गयी है । तथा फ़रमाया गया,"जो इनकी गणना करेगा, स्वर्ग में जायेगा, अल्लाह तआला विषम है विषमता प्रेमी है ।" (बुख़ारी किताबुद दावात बाब लिल्लाहे मेअत ईस्म, मुस्लिम किताबुल ज़िक्र बाब अस्माये अल्लाह तआला व फ़ज़्ले मन अहसाहा) गणना करने का अर्थ यही प्रतीत होता है कि उनके द्वारा प्रार्थना की जाये । कुछ कथनों में इन ९९ नामों का वर्णन किया गया है, परन्तु यह कथन अस्पष्ट हैं तथा विद्वानों ने इसे प्रवेशित माना है अर्थात कथाकारों ने बढ़ाया है । वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस का भाग नहीं है । इसके अतिरिक्त आलिमों ने यह भी स्पष्ट किया है कि अल्लाह तआला के नामों की संख्या मात्र ९९ नहीं है, अपितु इससे भी अधिक है । (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर) एक और बात स्पष्ट करता चलूं कि अल्लाह तआला का अपना नाम जिसे हिन्दी व्याकरण में जाति वाचक संज्ञा कहेंगे मात्र "अल्लाह" है इसके अतिरिक्त सभी उपरोक्त गौणिक हैं ।

[2] إِلْحَاد (इल्हाद) का अर्थ है किसी एक ओर टेढ़ा हो जाना । इसी शब्द से لَحْدٌ (लहद) शब्द बना है, जो उस क़ब्र को कहते हैं, जो एक ओर बनायी जाती है । धर्म में इल्हाद का मार्ग अपनाने का अर्थ है कुटिलता तथा कुमार्ग अपनाना । अल्लाह तआला के नामों में इल्हाद तीन प्रकार से हो सकता है । १. अल्लाह तआला के नामों में परिर्वतन कर दिया जाये, जैसे मूर्तिपूजकों ने किया । जैसे अल्लाह के नामों में से "अज़ीज़" से "उज़्ज़ा" तथा "मन्नान" से "मनात" मूर्तियों के नाम बना लिये, २. अथवा अल्लाह के नामों में अपनी ओर से बढ़ा देना, जिसका आदेश अल्लाह ने नहीं दिया, ३. अथवा इसके नामों में कमी कर दी जाये । जैसे उसे किसी एक ही नाम से पुकारा जाये दूसरे विशेषता वाले

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑱ उन लोगों को उनके किये का दण्ड अवश्य मिलेगा।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ⑱ (१८१) तथा हमारे प्राणि वर्ग में एक समुदाय ऐसा भी है जो सत्यानुसार निर्देश करते हैं एवं तदानुसार न्याय करते हैं।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ⑱ (१८२) तथा जो लोग हमारी आयतों (चिन्हों) को झुठलाते हैं हम उनको धीरे-धीरे (पकड़ में) ऐसे लिये जा रहे हैं कि उनको पता भी नही।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۗ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ⑱ (१८३) तथा उनको अवसर देता हूँ। निःसंदेह मेरा उपाय बड़ा सुनियोजित है।[1]

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۗ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ⑱ (१८४) क्या उन लोगों ने इस बात पर विचार नहीं किया कि उनके साथ को तनिक भी उन्माद नहीं, वह तो केवल एक स्पष्ट डराने वाले हैं।[2]

नामों से पुकारने को बुरा समझा जाये। (फ़तहुल क़दीर) अल्लाह के नाम में इल्हाद का एक रूप यह भी है कि उनमें कष्ट, कल्पना, समानता एवं बेकारी का भाव लिया जाये (ऐसरुत्तफ़ासीर) जैसा कि कुमार्ग समुदायों का चलन रहा है। अल्लाह तआला ने आदेश दिया है इन लोगों से बच कर रहो।

[1]यह वही अवसर है जो अल्लाह तआला परीक्षा के लिए व्यक्तियों तथा वर्गों को देता है फिर जब उसे पकड़ना चाहता है तो कोई बचाने में समर्थ नहीं हो सकता क्योंकि उसका उपाये गंभीर है।

[2]"صاحب" (साहिब) से तात्पर्य अन्तिम ईशदूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जिनको मिश्रणवादी कभी जादूगर कभी पागल (نعوذ بالله) कहते थे अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह तुम्हारे विचार न करने का परिणाम है। वह तो हमारा पैग़म्बर है, जो हमारे आदेश पहुँचाने वाला तथा उनसे असावधान रहने वालों तथा अवहेलना करने वालों को डराने वाला है।

أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾

(१८५) तथा क्या उन लोगों ने विचार नहीं किया आकाशों तथा धरती लोक में एवं अन्य वस्तुओं में, जो अल्लाह ने पैदा की हैं तथा इस बात में कि सम्भव है कि उनकी मृत्यु निकट ही आ पहुँची हो।[1] फिर (क़ुरआन) के पश्चात कौन सी-बात पर ये लोग ईमान लायेंगे ?[2]

مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٦﴾

(१८६) जिसको अल्लाह (तआला) भटका दे उसे कोई मार्ग पर नहीं ला सकता। तथा अल्लाह (तआला) उनको उनके कुमार्ग में भ्रमित छोड़ देता है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي ۖ لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ۚ

(१८७) यह लोग आप से क़ियामत के[3] सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं कि वह कब घटित होगी।[4] (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान केवल मेरे

---

[1]अर्थ यह है कि उन वस्तुओं पर भी यदि ये विचार करें तो निश्चित ही ये अल्लाह पर ईमान ले आयें, उसके रसूल की पुष्टि तथा उसे अनुकरण का मार्ग अपना लें तथा उन्होंने अल्लाह के साझीदार बन रखे हैं, उन्हें छोड़ दें तथा इस बात से डरें कि उन्हें इस अवस्था में मृत्यु आ जाये कि वे कुफ़्र में हों।

[2]हदीस से यहाँ तात्पर्य क़ुरआन मजीद है अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सचेत करने तथा शुभसूचना देने एवं क़ुरआन करीम के पश्चात भी यदि यह ईमान न लायें तो इनसे बढ़कर उनको डराने वाली चीज़ अन्य क्या होगी जो अल्लाह की ओर से उतरे तथा फिर यह उस पर ईमान लायें ?

[3]ساعة (साअ:) का अर्थ है (क्षण अथवा पल) प्रलय को साअ: इसलिए कहा गया है कि यह सहसा इस प्रकार आ जायेगी कि यह सारी सृष्टि एक पल में नष्ट भ्रष्ट हो जायेगी अथवा हिसाब की शीघ्रता के आधार पर प्रलय के समय को साअत से तुलना की गयी है।

[4]أرسى يرسي का अर्थ निर्धारण अथवा घटित होना है अर्थात यह प्रलय कब आयेगी अथवा घटित होगी ?

ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۗ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾

प्रभु के पास ही है।[1] इसको इसके समय पर सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई अन्य प्रदर्शित न करेगा। वह आकाशों तथा धरती की बहुत बड़ी (घटना) होगी।[2] वह तुम पर सहसा आ पड़ेगी। वह आप से इस प्रकार पूछते हैं।[3] जैसाकि आप उसकी खोज कर चुके हैं। (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान विशेष रूप से अल्लाह ही के पास है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۗ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۛ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾

(१८८) (आप) कह दीजिए कि स्वयं मैं अपने विशेष के लिए किसी लाभ का अधिकार नहीं रखता तथा न किसी हानि का। परन्तु इतना ही जितना कि अल्लाह ने चाहा हो। तथा यदि मैं परोक्ष की बातें जानता होता तो मैं बहुत से लाभ प्राप्त कर लेता, तथा कोई हानि मुझे नहीं पहुँचती।[4] मैं तो मात्र डराने

---

[1]अर्थात इसका निश्चित ज्ञान न किसी फ़रिश्ते को है, न किसी ईशदूत को है, अल्लाह के अतिरिक्त यह ज्ञान किसी के पास नहीं, वही उस को समय पर घटित करेगा।

[2]इसका एक अन्य अर्थ यह है कि इसका ज्ञान आकाश तथा धरती के लिए भारी है, क्योंकि वह गुप्त है तथा गुप्त चीज़ दिलों पर भारी होती है।

[3]حفي (हफीय्युन) कहते हैं पीछे पड़ कर प्रश्न करने वाले को तथा खोजबीन करने वाले को। अर्थात यह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रलय के विषय में इस प्रकार प्रश्न करते हैं जैसा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने प्रभु के पीछे पड़कर इस विषय में अवश्य ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

[4]यह आयत इस बात के लिए कितनी स्पष्ट है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्तर्यामी नहीं। अन्तर्यामी केवल अल्लाह तआला स्वयं है। परन्तु अत्याचार तथा अज्ञान की सीमा से आगे है कि इसके उपरान्त धर्म में आधुनिकीकरण वाले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अन्तर्यामी सिद्ध करने का असफल प्रयत्न करते हैं। यद्यपि कुछ युद्धों में आपके पवित्र दाँत भी आहत हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

वाला तथा शुभसूचक हूँ, उन लोगों के लिए जो विश्वास (आस्था) रखते हैं।

(१८९) वह अल्लाह तआला ऐसा है कि जिस ने तुम्हें मात्र एक व्यक्ति से पैदा किया।[1] तथा उसी से उसका जोड़ा बनाया।[2] ताकि वह अपने उस जोड़े से संतोष प्राप्त करे।[3]

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ

का मुख मंडल भी घायल हुआ, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह समुदाय किस प्रकार उन्नति करेगा कि जिसने अपने नबी के सिर को घायल कर दिया (हदीस की किताबों में यह घटना तथा निम्नलिखित घटनायें भी लिखीं हैं) आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) पर आक्षेप लगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूर्ण एक माह तक अत्यधिक व्याकुल तथा अत्यधिक दुखी रहे। एक यहूदी औरत ने आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को निमन्त्रण दिया तथा खाने में विष मिला दिया, जिसे आप ने भी चखा तथा सहाबा ने भी यहाँ तक कि कुछ सहाबा की विष के कारण मृत्यु हो गयी। तथा स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सम्पूर्ण आयु इस विष का प्रभाव प्रतीत करते रहे। ये तथा इसी प्रकार की अन्य घटनायें जिनसे स्पष्ट होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अज्ञान वश दुख पहुँचा, हानि उठानी पड़ी, जिससे क़ुरआन के द्वारा कथित बात सत्य सिद्ध होती है कि, "यदि मैं अन्तर्यामी होता तो मुझे कोई हानि न पहुँचती।"

[1]आदरणीय आदम से। इसीलिए उनको प्रथम मनु तथा 'मानव पिता' कहा जाता है।

[2]इससे तात्पर्य आदरणीय हव्वा हैं, जो आदरणीय आदम की पत्नी बनीं। उनकी उत्पत्ति आदरणीय आदम से हुई, जिस प्रकार से مِنها के सर्वनाम से, जो एक वचन प्रकट करता है स्पष्ट है। (विस्तार के किए देखिए सूर: निसा आयत संख्या १ की व्याख्या)

[3]अर्थात एक-दूसरे से सुख शान्ति प्राप्त करे इसलिए कि एक वर्ग अपने ही वर्ग से अधिक निकट तथा प्रेम कर सकता है, जो शान्ति प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। घनिष्टता के बिना यह सम्भव ही नहीं है। अन्य स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता है

﴿ وَمِنْ ءَايَٰتِهِۦٓ أَنْ خَلَقَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَٰجًا لِّتَسْكُنُوٓا۟ إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُم مَّوَدَّةً وَرَحْمَةً ﴾

"अल्लाह की निशानियों में से यह भी हैं कि उसने तुम्हारे लिए तुम ही में से (अथवा तुम्हारे वर्ग ही में से) जोड़े पैदा किये ताकि तुम उन से शान्ति प्राप्त करो तथा तुम्हारे मध्य उसने प्यार व प्रेम उत्पन्न कर दिया।" (सूर: रूम-२१)

अर्थात अल्लाह तआला ने पुरुष तथा स्त्री दोनों में एक-दूसरे के लिए जो आकर्षण तथा भावना रखी है। प्रकृति की यह देन वह जोड़ा बन कर पूरा करते हैं तथा एक-दूसरे से

بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾

फिर पति ने पत्नी से समीपता की,[1] तो उसे गर्भ रह गया, हल्का-सा। फिर वह उसको लेकर चलती फिरती रही।[2] जब वह भार का आभास करने लगी, तो पति-पत्नी दोनों अल्लाह से जो उनका मालिक है प्रार्थना करने लगे कि यदि तूने हम को स्वस्थ संतान प्रदान कर दी तो हम अति कृतज्ञा करेंगे।[3]

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى

(१९०) तो जब अल्लाह ने दोनों को स्वस्थ शिशु प्रदान किया तो अल्लाह के प्रदान में वह दोनों अल्लाह का साझी ठहराने लगे।[4]

घनिष्ठता तथा प्रेम प्राप्त करते हैं। अत: यह सत्य है कि जो आपसी प्रेम पति-पत्नी के मध्य होता है, वह दुनिया के अन्य किसी सम्बन्ध में नहीं होता।

[1]अर्थात यह मानव वंश इस प्रकार बढ़ा तथा आगे चल कर जब उनमें के एक साथी अर्थात पति-पत्नी ने एक-दूसरे से निकटता प्राप्त की। تَغَشّٰىهَا का अर्थ 'पत्नी के संग सम्भोग करना' है। अर्थात सभोग करने के लिए ढांका।

[2]अर्थात गर्भ के आरम्भिक दिनों में यहाँ तक कि वीर्य से रूधिर की ग्रन्थियाँ बनने तक तथा रूधिर ग्रन्थियों से भ्रूण बनने तक, गर्भ हल्का ही रहता है, प्रतीत भी नहीं होता है तथा स्त्री को कोई कठिनाई नहीं होती।

[3]भारी हो जाने से तात्पर्य, जब बच्चा गर्भ में बड़ा हो जाता है, तो ज्यों-ज्यों जन्म का समय निकट आता जाता है, माता-पिता के हृदय में भय तथा शंका उत्पन्न होती जाती है। (विशेषरूप से जब स्त्री को स्त्री रोग हो) तो मनुष्य की प्रकृति है कि भय के कारण अल्लाह की ओर अकर्षित होते है। अत: वे दोनों अल्लाह से प्रार्थना करते हैं तथा कृतज्ञता व्यक्त करने का वचन देते हैं।

[4]साझीदार बना देने से तात्पर्य या तो बच्चे का नाम ऐसा रखना है, जैसे इमाम बख्श, पीरांदत्ता, अब्दुशम्स बन्द:अली आदि, जिससे यह स्पष्ट होता है कि बच्चा अमुक महात्मा अमुक सन्त के (نعوذ بالله) कृपा दृष्टि का परिणाम है अथवा अपने इस विश्वास को प्रकट करे कि हम तो अमुक सन्त महात्मा अथवा अमुक क़ब्र पर गये थे जिसके परिणाम से बच्चा पैदा हुआ। अथवा किसी मृतक के नाम का प्रसाद, भोग, नजर व नियाज आदि कराये अथवा बच्चे को किसी क़ब्र पर ले जाकर माथा टेकाये कि उनकी

اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾

अत: अल्लाह पवित्र है उनके मिश्रण करने से।

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾

(१९१) क्या ऐसों को साझीदार ठहराते हैं, जो किसी वस्तु को न बना सकें, स्वयं उनको ही बनाया गया हो।

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾

(१९२) तथा वह उनको किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकते, और वे स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकते।

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾

(१९३) तथा यदि तुम कोई बात बताने को उनको पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें।[1] तुम्हारे लगाव से दोनों बातें समान हैं चाहे तुम उनको पुकारो अथवा मौन रहो।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ

(१९४) वास्तव में तुम अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते (उपासना करते) हो वह भी तुम ही जैसे दास हैं।[2] तो तुम उनको पुकारो

कृपा से बच्चा प्राप्त हुआ। यह सभी अवस्थायें अल्लाह का साझीदार बनाने की हैं। जो दुर्भाग्य से मुसलमानों में भी सामान्य रूप से व्याप्त है। अगली आयत में अल्लाह तआला शिर्क का खण्डन कर रहा है।

[1]अथवा तुम्हारी बातों के अनुसार कर्म नहीं करेंगे। एक अन्य भावार्थ इसका यह भी है कि यदि तुम उनसे ज्ञान तथा मार्गदर्शन माँगो, तो वह तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, न तुम्हें कोई उत्तर ही देंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात जब वह जीवित थे अपितु अब तो तुम उनसे अधिक योग्य हो। अब वह देख नहीं सकते, तुम देख सकते हो वह सुन नहीं सकते, तुम सुनते हो। वह किसी की बात समझ नहीं सकते, तुम समझते हो। वह उत्तर नहीं दे सकते, तुम देते हो। इससे ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजक जिनकी मूर्तियाँ बना कर पूजते थे, वह भी पहले अल्लाह के भक्त थे अर्थात मनुष्य ही थे। जैसे आदरणीय नूह के समुदाय की पाँच मूर्तियों के विषय में सहीह बुख़ारी में सविस्तार स्पष्ट है कि वह अल्लाह के परम भक्त थे।

فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٩٤﴾

फिर उनको चाहिए कि वह तुम्हारा कहना कर दें, यदि तुम सच्चे हो ।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنظِرُونِ ﴿١٩٥﴾

(१९५) क्या उनके पैर हैं जिनसे वे चलते हों अथवा उनके हाथ हैं जिससे किसी चीज़ को थाम सकें अथवा उनकी आँखें हैं जिनसे देखते हों, अथवा उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हैं ।[1] (आप) कह दीजिए कि तुम अपने सभी साझीदारों को बुला लो, फिर मुझे (हानि पहुँचाने की) उपाय करो, फिर मुझे तनिक अवसर न दो ।[2]

إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٦﴾

(१९६) निःसंदेह मेरा सहायक अल्लाह ही है, जिसने यह धर्मशास्त्र (पवित्र क़ुरआन) उतारा तथा वह सदाचारी भक्तों की सहायता करता है ।

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ ﴿١٩٧﴾

(१९७) तथा तुम जिन लोगों को, अल्लाह को छोड़ कर, पुकारते (उपासना करते) हो वह तुम्हारी कुछ सहायता नहीं कर सकते तथा न वह अपनी सहायता कर सकते हैं ।[3]

---

[1]अर्थात अब इनमें से कोई शक्ति भी उनमें नहीं है, मरने के साथ ही देखने, सुनने समझने तथा चलने की शक्ति समाप्त हो गयी अब उन से सम्बन्धित या तो पत्थर अथवा लकड़ी की स्वयं बनायी हुई मूर्तियाँ हैं, अथवा गुम्बद, कुब्बे तथा आस्ताने हैं जो उनकी क़ब्रों पर बना लिये गये हैं । इस प्रकार धर्म के नाम पर अधर्म का प्रचार-प्रसार हो रहा है ।

[2]अर्थात यदि तुम अपने वादे में सच्चे हो कि यह तुम्हारी सहायता करेंगे, तो इनसे कहो कि मेरे विरुद्ध षडयन्त्र रचायें ।

[3]जो अपनी सहायता आप करने में सक्षम न हो, वे भला अन्यों की सहायता क्या करेंगे ।

जो खुद मोहताज होवे दूसरे का : भला उससे मदद का माँगना क्या ।

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۖ وَتَرَاهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾

(१९८) तथा यदि उनको कोई बात बताने को पुकारो तो उसको न सुनें।[1] तथा उनको आप देखते हैं कि वह आपको देख रहे हैं तथा वह कुछ भी नहीं देखते।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾

(१९९) आप क्षमा का मार्ग अपनायें।[2] पुण्य के कार्य की शिक्षा दें।[3] तथा अशिक्षितों से अलग रहें।[4]

---

[1]इसका यही भावार्थ है जो आयत संख्या १९३ का है।

[2]कुछ आलिमों ने इसका अर्थ यह किया है (خُذْ مَا عَفَا لَكَ مِنْ أَمْوَالِهِمْ) أي : مَا فَضَلَ अर्थात "जो आवश्यकता से अधिक धन हो, वह ले लो।" तथा यह ज़कात की अनिवार्यता से पूर्व का आदेश है। (फ़तहुल बारी, भाग ८, पृष्ट ३०५)। परन्तु अन्य व्याख्याकारों ने इससे नैतिक निर्देश अर्थात क्षमा करना तात्पर्य लिया है तथा इमाम जरीर तथा इमाम बुख़ारी आदि ने इसी को प्राथमिकता दी है। अत: इमाम बुख़ारी ने इसके पक्ष में आदरणीय उमर (رضي الله عنه) की एक घटना का वर्णन किया है। उयेन: बिन हिस्न आदरणीय उमर (رضي الله عنه) की सेवा में उपस्थित हुए तथा आकर उन पर टिप्पणी करने लगे कि आप हमें न तो पूरा धन प्रदान करते हैं तथा न हमारे मध्य न्याय करते हैं, जिस पर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) क्रोधित हुए यह परिस्थित देख कर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) के सलाहकार हुर बिन क़ैस ने (जो उयैन: के भतीजे थे) आदरणीय उमर (رضي الله عنه) से कहा कि अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को आदेश दिया था। ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ﴾ "क्षमा का मार्ग अपनाईये तथा पुण्य का उपदेश दीजिए एवं अज्ञानियों से बचिये। तथा यह भी अज्ञानियों में से है।" जिस पर अदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने क्षमा कर दिया। "तथा आदरणीय उमर (رضي الله عنه) अल्लाह की किताब का आदेश सुनकर तुरन्त माथा टेक देते थे।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-आराफ़) इसका समर्थन इन हदीसों से भी होता है, जिन में अत्याचार के बदले क्षमा कर देने, कष्टों के बदले कृपा तथा बुराई के बदले भलाई एवं उपकार करने पर बल दिया गया है।

[3]عُرْف (उर्फ़) से तात्पर्य مَعروف (मारूफ़) अर्थात पुण्य है।

[4]अर्थात जब आप पुण्य के कार्य करने के आदेश देने को पूर्ण रूप से इस प्रकार समाप्त कर लें कि अब उनके पास कोई तर्क न हो तथा उसके उपरान्त भी न मानें तो, उनसे मुख मोड़ लें तथा उनके झगड़ो, तथा मूर्खताओं का उत्तर न दें।

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠٠﴾

(२००) तथा यदि आपको कोई शंका शैतान की ओर से आने लगे तो अल्लाह की शरण माँग लिया कीजिए ।[1] नि:सन्देह वह अत्यधिक सुनने वाला तथा अत्यधिक जानने वाला है ।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطَٰنِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾

(२०१) नि:संदेह जो लोग अल्लाह से डरते हैं, जब उनको कोई शंका शैतान की ओर से आ जाती है, तो वह याद में लग जाते हैं । अत: सहसा उनकी आंखें खुल जाती हैं ।[2]

وَإِخْوَٰنُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾

(२०२) तथा जो शैतानों के अनुगामी हैं वह उनको विपदा में खींचे लिए जाते है फिर वे नहीं रुकते ।[3]

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِم بِـَٔايَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰٓ إِلَيَّ مِن رَّبِّي ۚ هَٰذَا

(२०३) तथा जब आप कोई चमत्कार उनके समक्ष प्रस्तुत नहीं करते तो वह लोग कहते हैं कि आप यह चमत्कार क्यों न लाये ।[4] (आप) फ़रमा दीजिए कि मैं उसका पालन करता हूँ

---

[1]तथा इस समय यदि शैतान आपको उत्तेजित करने का प्रयत्न करे, तो अल्लाह की शरण माँगे ।

[2]इसमें अल्लाह से भय रखने वालों के विषय में बताया गया है कि वे शैतान से सावधान रहते हैं । طائف अथवा طَيفٌ उस मानसिक विचारों को कहते हैं जो दिल में आये अथवा स्वप्न में आये । यहाँ उसे शैतान के द्वारा डाली गयी शंकाओं के लिए प्रयोग हुआ है, क्योंकि शैतान के द्वारा शंकाऐं भी मानसिक विचारों में ही उत्पन्न होते हैं । (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात शैतान काफ़िरों को भटकाने की ओर खींच ले जाता है, फिर वह काफ़िर (भटकावे की ओर जाने में) अथवा शैतान उनको ले जाने में आनाकानी नहीं करता है । अर्थात لا يُقصرون क्रिया के कर्ता अधर्मी भी बन सकते हैं तथा "शैतान" भी ।

[4]तात्पर्य ऐसा चमत्कार है जो उनके कहने पर उनकी इच्छानुसार प्रदर्शित किया जाये जैसे उनकी कुछ माँगों की सूर: बनी इस्राईल आयत ९० से ९३ तक में चर्चा की गयी है ।

بَصَآئِرُ مِن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠٣﴾

जो मुझ पर मेरे प्रभु की ओर से आदेश भेजा गया है। यह मानो तुम्हारे पोषक की ओर से बहुत से तर्क हैं एवं निर्देश तथा कृपा उन लोगों के लिये जो विश्वास रखते हैं।[1]

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٠٤﴾

(२०४) तथा जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो एवं मौन साध लो आशा है कि तुम पर कृपा हो।[2]

---

[1] لولا اجتبيتها का अर्थ है कि तू अपने पास से ही क्यों नहीं बना लाता। इसके उत्तर में फ़रमाया गया) कि आप कह दें, चमत्कार प्रस्तुत करना मेरे वश में नहीं है। मैं तो अल्लाह की प्रकाशनाओं (वह्यी) का पालन करने वाला हूँ। हाँ, यदि यह क़ुरआन जो मेरे पास आया है, यह स्वयं ही एक बहुत बड़ा चमत्कार है। इसमें तुम्हारे प्रभु की ओर से निर्देश (सूचनायें तथा शुभ सन्देश) तथा मार्गदर्शन एवं कृपा है यदि कोई ईमानवाला हो।

[2] यहाँ काफ़िरों को कहा जा रहा है जो क़ुरआन के पढ़ते समय शोर करते थे तथा अपने साथियों से कहते थे :

﴿لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا﴾

"यह क़ुरआन मत सुनो तथा शोर करो।" (सूरः हा॰ मीम॰ सजदः-२६)

उन से कहा जा रहा है कि इसके बजाय यदि ध्यानपूर्वक सुनो तथा शान्त रहो, तो शायद अल्लाह तआला तुम्हें मार्गदर्शन प्रदान कर दे। इस प्रकार तुम अल्लाह की कृपा के अधिकारी बन जाओ।

कुछ विद्वान इसे सामान्य रूप से लेते हैं अर्थात जब भी क़ुरआन पढ़ा जाये चाहे नमाज़ हो अथवा नमाज़ न हो सबको शान्त हो कर सुनने का आदेश है। इस सामान्य आदेश से भाव निकाल कर जोर से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में मुक़तदी (नमाज़ में इमाम के अतिरिक्त सभी नमाजियों को कहते हैं) के सूरः फ़ातिहा पढ़ने को भी क़ुरआन के इस आदेश के विरुद्ध मानते हैं। जब कि उच्च स्वर से पढ़ी जाने वाली नमाजों में इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा पढ़नें के लिए आदेश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सहीह हदीसों से सिद्ध है, जैसाकि इसके मक्की होने से भी सिद्ध होता है। परन्तु यदि इसे सामान्य रूप से मान भी लिया जाये, तब भी इस सामान्य से मुक़तदियों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाल दिया। तथा इस प्रकार इस आयत के सामान्य होने के उपरान्त भी उच्च स्वर से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में मुक़तदियों को सूरः

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٢٠٥﴾

(२०५) तथा हे, मानव, अपने मन में विनीत एवं भयभीत होकर अपने पोषक को स्मरण करता रह प्रातः एवं संध्या काल में उच्च स्वर से आवाज़ को कम करके तथा अचेतों की गणना में न होना।

اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ع ﴿٢٠٦﴾ السجدة

(२०६) निःसंदेह जो तेरे पोषक के समीप हैं वे उसकी इबादत से अहंकार नहीं करते। तथा उसकी पवित्रता का वर्णन करते तथा उसको सजदा करते हैं।

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ

सूरतुल अंफ़ाल-८

सूरः अंफाल मदीना में उतरी तथा इसकी पचहत्तर आयतें एवं दस रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है

फ़ातिहा अवश्य पढ़नी होगी। क्योंकि क़ुरआन के इस सामान्य आदेश से मुक़तदियों की छूट के लिए सहीह हदीस तथा ठोस हदीसों से सिद्ध होता है। जिस प्रकार क़ुरआन की अन्य सामान्य रूप से आदेशित आयतों में कुछ को छूट प्राप्त है उसी प्रकार इस आयत को भी मान्यता प्राप्त है। जैसे ﴿الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا﴾ (सूरः नूर-२) के सामान्य आदेश से ऐसे विवाहित व्याभिचारी निष्कासित हैं, तथा السارق و السارقة के सामान्य आदेश से ऐसे चोर निष्कासित हैं जिसने चौथाई दीनार से कम मूल्य की चीज़ चोरी की हो अथवा चोरी की हुई चीज सुरक्षा में न रखी हो आदि। इसी प्रकार ﴿فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا﴾ के सामान्य आदेश से मुक़तदी निष्कासित होंगे। तथा उनके लिए उच्च स्वर में पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में भी सूरः फ़ातिहा पढ़ना आवश्यक होगा क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर बल दिया है (जैसाकि सूरः फ़ातिहः की व्याख्या में यह हदीसें वर्णन की गयी हैं)।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۭ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۠ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ①

(१) ये लोग आप से युद्ध में प्राप्त माल के विषय में पूछते हैं ।[1] आप कह दीजिए कि वे युद्ध से प्राप्त माल अल्लाह के हैं तथा रसूल के हैं ।[2] इसलिए तुम अल्लाह से डरो तथा अपने आपसी सम्बन्धों को सुधारो तथा अल्लाह तआला एवं उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो, यदि तुम ईमानवाले हो ।[3]

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ②

(२) बस ईमान वाले ही ऐसे होते हैं कि जब अल्लाह (तआला) का वर्णन होता है, तो उन के हृदय भयभीत हो जाते हैं । तथा जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनायी जाती है, तो वे आयतें उनके ईमान को और अधिक कर

---

[1]أنفال शब्द نفل शब्द का बहुवचन है, जिसका अर्थ है अधिक । ये उस माल-सामग्री को कहा जाता है जो काफ़िरों के साथ युद्ध में हाथ लगे, इसे अंफाल इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह उन चीज़ों में से है जो पूर्व के समुदायों के लिए निषेध थीं । अर्थात यह मुसलमानों के लिए एक अधिक वस्तु मान्य की गयी है अथवा इसलिए कि ये धर्मयुद्ध के प्रतिफल से (जो परलोक में मिलेगा) एक अधिक चीज़ है, जो कई बार दुनिया ही में मिल जाती है ।

[2]अर्थात इसका निर्णय करने के अधिकारी हैं । अल्लाह के रसूल, अल्लाह के आदेश से इसे विभाजित करेंगे, न कि तुम आपस में जिस प्रकार चाहो विभाजित कर लो ।

[3]इसका अर्थ यह हुआ कि वर्णित तीनों बातों के अनुसार कर्म किये बिना ईमान पूर्ण नहीं । इससे अल्लाह का भय (तक़्वा), आपस में सम्बन्धों का सुधार, तथा अल्लाह तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन की विशेषता को स्पष्ट किया गया है । विशेष रूप से युद्ध में प्राप्त सामग्री के बँटवारे में इन तीनों बातों को ध्यान में रखना अनिवार्य है । क्योंकि माल के बंटवारे में आपसी सम्बन्धों के बिगड़ने का अधिक भ्रम रहता है, इसलिये आपसी सम्बन्ध के सुधारने पर बल दिया गया है । हेराफेरी, तथा विश्वासघात की सम्भावना रहती है इसलिए अल्लाह के भय का आदेश दिया गया है । इसके उपरान्त भी कोई कमी रह जाये तो उसका समाधान अल्लाह तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण पर आधारित है ।

देती हैं। तथा वह लोग अपने प्रभु पर भरोसा करते हैं।[1]

---

[1]इन आयतों में ईमानवालों के चार गुण बताये गये हैं। १. यह अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा का पालन करते हैं, न कि केवल अल्लाह का अर्थात क़ुरआन का, २. अल्लाह का वर्णन सुन कर उसकी शक्ति तथा महिमा से प्रभावित होकर दिल काँप उठते हैं, ३. क़ुरआन पढ़नें से उनके ईमान में बढ़ोत्तरी होती है, ४. वे अपने प्रभु पर भरोसा करते हैं। तवक्कुल का अर्थ है कि प्राप्त साधनों को अपनाने के उपरान्त अल्लाह पर भरोसा करते हैं। अर्थात प्राप्त साधन से मुँह नहीं मोड़ते क्योंकि उनको अपनाने का अल्लाह ने आदेश दिया है, परन्तु प्राप्त साधनों को ही सब कुछ नहीं समझ लेते अपितु उनको यह पूर्ण विश्वास होता है कि वास्तविक रूप से करने वाला अल्लाह ही है, इसलिए जब तक अल्लाह की इच्छा नहीं होगी, यह प्राप्त साधन कुछ नहीं कर सकते तथा इस विश्वास तथा भरोसे के आधार पर फिर भी अल्लाह की सहायता तथा कृपा प्राप्त करने के लिए एक क्षण के लिए भी असावधान नहीं होते। आगे इनके अन्य गुणों का वर्णन है तथा इन गुणों से अलंकृत लोगों के लिए अल्लाह की ओर से सच्चे मुसलमान होने का प्रामण पत्र तथा मोक्ष एवं कृपा तथा पाक रोज़ी की शुभ सूचना है। (अल्लाह तआला हमें भी उनमें सम्मिलित कर ले)

बद्र के युद्ध का दृश्य : बद्र का युद्ध सन् २ हिजरी में काफ़िरों के साथ मुसलमानों का प्रथम युद्ध था। इसके अतिरिक्त यह बिना किसी योजना तथा तैयारी के अचानक हुआ। इसके अतिरिक्त बिना साधन-सामग्री के कारण कुछ मुसलमान बौद्धिक रूप से इसके लिए तैयार भी नहीं थे। सारांश में उसका दृश्य इस प्रकार है कि आदरणीय अबू सुफ़ियान (जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे) के नेतृत्व में एक व्यापारिक काफ़िला सीरिया से मक्का जा रहा था, चूँकि मुसलमानों की भी बहुत-सी माल-सामग्री मक्के में हिजरत के कारण रह गयी थी अथवा काफ़िरों ने छीन लिया था। इसके अतिरिक्त काफ़िरों की शक्ति तथा अभिमान को तोड़ना भी समय की माँग थी। इन सभी बातों के कारण रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस काफ़िले पर आक्रमण करने की योजना बनायी तथा मुसलमान इस विचार से मदीने से चल पड़े। अबू सुफ़ियान को भी इस बात की सूचना मिल गयी। अत: उन्होंने अपना मार्ग बदल दिया तथा मक्के में सूचना भेजवा दी, जिसके कारण अबूजहल एक सेना लेकर अपने काफ़िले की सुरक्षा के लिए निकल पड़ा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात की सूचना मिली, तो यह बात सहाबा के समक्ष रख दी तथा अल्लाह का वायदा भी बतलाया कि इन दोनों (व्यापारिक काफ़िला तथा सेना) में से एक तुम्हें अवश्य प्राप्त होगी फिर भी कुछ सहाबा ने असमंजस्य का प्रर्दशन किया तथा व्यापारिक काफ़िले का पीछा करने की राय दी, जब कि अन्य सभी सहाबा ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

(३) जो कि नमाज़ नियमित रूप से पढ़ते हैं तथा हमने जो कुछ उनको दिया है वे उस में से व्यय करते हैं।	الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَوٰةَ وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ۝٣
(४) सच्चे ईमानवाले यही लोग हैं, उनके लिए बड़े पद हैं, उनके प्रभु के पास तथा मोक्ष एवं सम्मान की जीविका है।	أُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُمْ دَرَجَٰتٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝٤
(५) जैसाकि आपके प्रभु ने आप के घर से सत्य के साथ आपको निकाला,[1] तथा मुसलमानों का एक गुट इसको भारी समझता था।[2]	كَمَآ أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَٰرِهُونَ ۝٥
(६) वह स्पष्ट हो जाने के पश्चात[3] सत्य के विषय में आप से झगड़ा कर रहे थे जैसेकि वह मृत्यु की ओर हाँके जा रहे हों तथा (उसे) देख रहे हों।[4]	يُجَٰدِلُونَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنظُرُونَ ۝٦

साथ युद्ध में लड़ने के लिए पूर्ण समर्थन का विश्वास दिलाया। इसी कारण यह आयतें उतरी।

[1]अर्थात जिस प्रकार युद्ध में प्राप्त माल-सामग्री के बँटवारे की समस्या मुसलमानों के मध्य मतभेद का कारण बनी हुई थी फिर उसे अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हवाले कर दी गयी थी, तो उसी में मुसलमानों की भलाई थी उसी प्रकार आपका मदीने से निकलना, तथा फिर आगे चल कर व्यापारिक क़ाफ़िले के बजाय क़ुरैश की सेना से मुठभेड़ हो जाना, यद्यपि कुछ आज्ञाकारियों को उचित न लगा था, परन्तु इसमें भी मुसलमानों का अन्ततः लाभ था।

[2]यह अप्रसन्नता क़ुरैश की सेना से लड़ने के विषय में थी, जिसको कुछ लोगों ही ने प्रकट किया तथा इस का कारण भी साधन विहीन होना था।

[3]अर्थात यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि क़ाफ़िला तो बच कर निकल गया है तथा अब क़ुरैश की सेना ही सामने है, जिससे लड़ाई टलना असम्भव है।

[4]यह बिना साधन-सामग्री की अवस्था में लड़ने के कारण से कुछ मुसलमानों की जो अवस्था थी, इसका प्रदर्शन है।

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ﴿٧﴾

(७) तथा तुम लोग उस समय को याद करो कि जब कि अल्लाह तुम से उन दो गुटों में से एक का वायदा करता था कि वह तुम्हारे हाथ आ जायेगा ।[1] तथा तुम इस आशा में थे कि बिना हथियारों वाला गुट तुम्हारे हाथ आ जाये ।[2] तथा अल्लाह तआला को स्वीकार था कि अपने आदेश से सत्य का सत्य होना सिद्ध कर दे तथा उन काफ़िरों की जड़ काट दे ।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨﴾

(८) ताकि सत्य का सत्य होना एवं असत्य का असत्य होना सिद्ध कर दे, चाहे ये अपराधी लोग पसन्द न करें ।[3]

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ﴿٩﴾

(९) उस समय को याद करो जब कि तुम अपने पालक से विनती कर रहे थे, फिर अल्लाह तआला ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम को एक हज़ार फ़रिश्तों से सहायता दूँगा जो निरन्तर चले आयेंगे ।[4]

---

[1]अर्थात या तो व्यापारिक क़ाफ़िला तुम्हें मिल जायेगा, जिससे तुम्हें लड़ाई के बिना अत्यधिक माल-सामग्री मिल जायेगी, दूसरी अवस्था में कुरैश की सेना से तुम्हारा मुक़ाबिला होगा तथा तुम्हारी विजय होगी तथा युद्ध से प्राप्त माल-सामग्री मिलेगी ।

[2]अर्थात व्यापारिक क़ाफ़िला, ताकि बिना लड़े माल हाथ लग जाये ।

[3]परन्तु अल्लाह इसके विपरीत यह चाहता है कि कुरैश की सेना से तुम्हारा युद्ध हो, ताकि काफ़िरों की शक्ति तथा गर्व को धक्का पहुँचे, चाहे यह बात अपराधियों (मूर्तिपूजकों) के लिए अप्रिय ही हो ।

[4]इस युद्ध में मुसलमानों की संख्या ३१३ थी, जब कि काफ़िर उनके तीन गुने (अर्थात) लगभग एक हज़ार थे, फिर मुसलमान निहत्थे थे तथा अस्त्र-शस्त्र हीन थे, जबकि काफ़िरों के पास अस्त्र-शस्त्रों की अधिकता थी । इन परिस्थितियों में मुसलमानों को सहारा केवल अल्लाह ही की शक्ति का था, जिससे वे विनम्र निवेदन एवं विनती कर रहे थे, स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक खेमें में आग्रह पूर्ण विनय

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾

(१०) तथा अल्लाह (तआला) ने यह सहायता मात्र इस कारण की कि शुभ सूचना हो तथा तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये। तथा विजय मात्र अल्लाह की ओर से है।[1] जो कि अत्यधिक शक्तिशाली विवेकशील है।

اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰي قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾

(११) उस समय को याद करो, जबकि (अल्लाह तआला) तुम पर ओंघाई अच्छादित कर रहा था, अपनी ओर से शान्ति प्रदान करने के लिए।[2] तथा तुम पर आकाश से पानी वर्षा रहा था कि इस पानी द्वारा तुम को पवित्र कर दे तथा तुमसे शैतानी शंकाओं को दूर कर दे।[3]

पूर्वक प्रार्थना में लीन थे सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी)। अत: अल्लाह तआला ने प्रार्थनायें स्वीकार कीं तथा एक हज़ार फ़रिश्ते एक-दूसरे के पीछे निरन्तर मुसलमानों की सहायता केलिए आ गये।

[1]अर्थात फ़रिश्तों का उतारना तो केवल शुभ सूचना तथा तुम्हारे दिलों की शान्ति के लिए था, अपितु मूल सहायता तो अल्लाह की ओर से थी। जो फ़रिश्तों के बिना भी तुम्हारी सहायता कर सकता था, फिर भी इससे यह समझना भी उचित नहीं कि फ़रिश्तों ने युद्ध में भाग नहीं लिया। हदीसों से ज्ञात होता है कि युद्ध में फ़रिश्तों ने भाग लिया तथा कई काफ़िरों का वध भी किया, (देखिए सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मग़ाज़ी व फ़ज़ायेल अस्सहाबा)

[2]ओहद के युद्ध की भाँति बद्र के युद्ध में भी अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर ऊँघ प्रभावशाली कर दिया, जिससे उनके दिलों के भार हल्के हो गये तथा संतोष एवं शान्ति की एक विशेष अवस्था उन पर प्रभावी हो गया।

[3]तीसरा उपहार यह किया कि वर्षा कर दिया, जिससे एक तो रेत में आवागमन सरल हो गया दूसरे वज़ू तथा पवित्रता में सरलता हो गयी। तीसरे इस से शैतानी शंकाओं का खण्डन कर दिया, जो वह ईमानवालों के दिलों में डाल रहा था कि तुम अल्लाह के अच्छे बन्दे होते हुए भी पानी से दूर हो, दूसरे अपवित्रता की अवस्था में तुम लड़ोगे तो कैसे अल्लाह की कृपा तथा दया तुम्हें प्राप्त होगी ? तीसरे तुम प्यासे हो, जबकि तुम्हारे शत्रुओं के पास पानी है इत्यादि।

तथा तुम्हारे दिलों को दृढ़ कर दे तथा तुम्हारे पाँव जमा दे ।[1]

(१२) उस समय को याद करो, जब कि आप का प्रभु फ़रिश्तों को आदेश दे रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, इसलिए तुम ईमान वालों का साहस बढ़ाओ । मैं अभी काफ़िरों के दिलों में भय डालता हूँ ।[2] इसलिए तुम गर्दनों पर मारो और उनके जोड़-जोड़ पर चोट लगाओ ।[3]

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾

(१३) यह इस बात का दण्ड है कि उन्होंने अल्लाह का तथा उसके रसूल का विरोध किया तथा जो अल्लाह का तथा उसके रसूल का विरोध करता है, तो अल्लाह तआला कड़ा दण्ड देने वाला है ।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾

(१४) तो यह दण्ड का स्वाद चखो तथा ध्यान रहे कि काफ़िरों के लिए नरक की यातना निर्धारित ही है ।

ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

---

[1]यह चौथा उपहार है जिसने दिलों में दृढ़ता प्रदान की ।

[2]यह अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के द्वारा तथा विशेष रूप से अपनी ओर से जिस-जिस प्रकार मुसलमानों की बद्र में सहायता की, उसका वर्णन है ।

[3]بَنَان (बनान) का अर्थ हाथों तथा पैरों की उँगलियों के पोर हैं । अर्थात किनारे, यह किनारे काट दिये जायें तो स्पष्ट है कि वे विवश हो जायेंगे । इस प्रकार वह हाथ से तलवार चलाने तथा पैरों से भागने योग्य नहीं रहेंगे ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا لَقِيتُمُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ ٱلْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾

(१५) हे ईमान वालो ! जब तुम काफ़िरों से सुठभेड़ करो तो उन से पीठ मत फेरना ।[1]

وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُۥٓ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَمَأْوَىٰهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

(१६) तथा जो व्यक्ति उन से उस अवसर पर पीठ फेरेगा, परन्तु यदि कोई लड़ाई के लिए पैंतरा बदलता हो अथवा जो अपने गुट की ओर शरण लेने आता हो, (वह अलग है)[2] शेष अन्य जो ऐसा करेगा वह अल्लाह के क्रोध को पायेगा । तथा उसका ठिकाना नरक होगी तथा वह बहुत ही बुरा स्थान है ।[3]

---

[1]زحفًا (जहफन) शब्द का अर्थ है एक-दूसरे के सामने होना तथा संघर्ष करना । अर्थात मुसलमान तथा काफ़िर जब सम्मुख हो कर लाम बन्दी करें तो पीठ फेर कर भागने की आज्ञा नहीं है । एक हदीस में है«اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ»"सात विनाशकारी से बचो ।" इन सात में से एक «وَالتَّوَلِّي يومَ الزَّحْفِ». "लड़ाई के दिन पीठ फेर जाना है ।" (सहीह बुख़ारी संख्या २७६६ किताबुल वसाया, मुस्लिम किताबुल ईमान)

[2]पिछली आयत में पीठ फेरने से जो मना किया गया है । दो अवस्थायें इससे विलग हैं । एक تحرّف की, दूसरी تحيّز की । تحرّف का अर्थ है एक ओर फिर जाना । "अर्थात युद्ध में यौद्धिक योजना के अनुसार अथवा शत्रु को धोखे में डालने के विचार से लड़ता-लड़ता एक ओर फिर जाये, जिससे शत्रु यह समझे कि यह पराजित होकर भाग रहा है, परन्तु फिर एक क्षण में चाल बदल कर सहसा शत्रु पर आक्रमण कर दे । यह पीठ दिखाना नहीं है, अपितु यह यौद्धिक योजना है, जो कई बार आवश्यक तथा लाभकारी होता है ।" تحيّز का अर्थ है मिलना तथा शरण लेना । कोई सैनिक लड़ता-लड़ता अकेला रह जाये, तो वह किसी प्रयोजन से युद्ध के मैदान में एक किनारे हो जाये ताकि वह अपने गुट की शरण प्राप्त कर सके तथा उसकी सहायता से पुनः आक्रमण करे । यह दोनों अवस्थायें उचित हैं । तथा धार्मिक रूप से मान्य हैं ।

[3]अर्थात उपरोक्त दोनों दशा के सिवाय यदि कोई सैनिक समर भूमि से मुख मोड़ेगा, उसके लिए यह कठोर चेतावनी आयी है ।

(१७) तो तुमने उन्हें हत नहीं किये, परन्तु अल्लाह तआला ने उन्हें हत किया ।[1] तथा आप ने (धूल की मुट्ठी) नहीं फेंकी, परन्तु अल्लाह तआला ने फेंकी ।[2] तथा ताकि मुसलमानों कोअपनी ओर से उनकी प्रयास का अत्यधिक फल प्रदान करे[3] नि:सन्देह अल्लाह तआला अत्यधिक सुनने वाला अत्यधिक जानने वाला है ।

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝١٧

(१८) (एक बात तो) यह हुई (दूसरी बात है) कि अल्लाह तआला को काफ़िरों की योजनाओं को विफल करना था ।[4]

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٨

---

[1]अर्थात बद्र के युद्ध का यह सारा विवरण तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत कर दिया गया है तथा जिस-जिस प्रकार से अल्लाह ने तुम्हारी सहायता की है, उसके स्पष्टीकरण के पश्चात तुम यह न समझ लेना कि काफ़िरों का वध, यह तुम्हारा कारनामा है । नहीं, अपितु यह अल्लाह ही की सहायता का परिणाम है, जिसके कारण तुम्हें यह शक्ति प्राप्त हुई । इसलिए वास्तव में उनका वध करने वाला अल्लाह तआला है ।

[2]बद्र के युद्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कंकरियों को मुट्ठी में भर कर काफ़िरों की ओर फेंका था, जिसे एक तो अल्लाह तआला ने काफ़िरों के मुँह तथा आँखों तक पहुँचा दिया । दूसरे उसमें यह गुण उत्पन्न कर दिया कि जिसके कारण उनकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया तथा उन्हें कुछ नहीं दिखायी देता था, यह चमत्कार भी, जो उस समय अल्लाह की सहायता से प्रकट हुआ, मुसलमानों की सफलता में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ । अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि हे पैग़म्बर ! कंकरियाँ नि:संदेह तुम ने फेंकी थी, परन्तु उसमें गुण हम ने उत्पन्न किये थे, यदि हम इसमें यह गुण उत्पन्न न करते, तो यह कंकरियाँ क्या कर सकती थीं ? इसलिए वास्तव में यह भी हमारा ही कार्य था, न कि आप का ।

[3]بلاء (बलाअन) यहाँ उपकार के अर्थ में प्रयोग हुआ है । अर्थात अल्लाह का यह समर्थन व कृपा अल्लाह का उपकार है, जो ईमानवालों पर हुआ ।

[4]दूसरा उद्देश्य इसका काफ़िरों की योजनाओं को निर्बल करना तथा उनकी शक्ति एवं गर्व को तोड़ना था ।

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ ۖ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٩﴾

(१९) यदि तुम लोग निर्णय चाहते हो, तो वह निर्णय तुम्हारे समक्ष विधान है।[1] तथा यदि रुक जाओ तो यह तुम्हारे लिए अति श्रेष्ठ है, तथा यदि तुम फिर भी वही कार्य करोगे, तो हम भी फिर वही कार्य करेंगे तथा तुम्हारा समुदाय तुम्हारे तनिक काम नहीं आयेगा। चाहे कितनी अधिक संख्या हो। तथा वास्तविक बात यह है कि अल्लाह तआला ईमानवालों के साथ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢٠﴾

(२०) हे ईमान वालो ! अल्लाह का तथा उस के रसूल (संदेशवाहक) का कहना मानो तथा उस (का कहना मानने) से मुख न फेरो सुनते जानते हुए।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾

(२१) तथा तुम उन लोगों के समान न होना, जो दावा तो करते हैं कि हमने सुन लिया हालाँकि वह सुनते (सुनाते) कुछ नहीं।[2]

---

[1]अबूजहल आदि कुरैश की सेना का नेतृत्व करने वालों ने मक्के से निकलते समय यह प्रार्थना की थी, "हे अल्लाह ! हम में से जो तेरा अधिक अवज्ञाकारी तथा संबंध विच्छेदक हो, कल तू उसे नष्ट कर दे।" अपने विचार से वे मुसलमानों को अवज्ञाकारी समझते थे, इसलिए इस प्रकार की प्रार्थना की। अब जब अल्लाह तआला ने मुसलमानों को विजय का सौभाग्य प्रदान किया, तो अल्लाह तआला काफ़िरों से फ़रमा रहा है कि तुम विजय अर्थात सत्य-असत्य के मध्य निर्णय की प्रार्थना कर रहे थे, तो वह निर्णय सामने आ चुका है, इसलिए अब तुम अधर्म का मार्ग छोड़ दो, तो तुम्हारे लिए लाभकारी है, तथा यदि पुनः मुसलमानों का सामना करने आओगे, तो हम भी पुनः उनकी सहायता करेंगे तथा तुम्हारा समूह संख्या में अधिक होते हुए भी तुम्हारे काम न आ सकेगा।

[2]अर्थात सुन लेने के उपरान्त उसके अनुसार कर्म न करना यह काफ़िरों का तरीका है, तुम इस नीति से बचो। अगली ही आयत में ऐसे लोगों को मूक, बधिर, अज्ञानी तथा दुराचारी बताया गया है। دَوَابّ बहुवचन है دابّة का, जो धरती पर चलने-फिरने वाले

(२२) नि:संदेह अत्यधिक बुरे प्राणी वर्ग अल्लाह तआला के निकट वे लोग हैं जो बधिर हैं मूक हैं जो कि तनिक भी नहीं समझते ।[1]

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٢٢﴾

(२३) तथा यदि अल्लाह (तआला) उनमें कोई गुण देखता, तो उनको सुनने की शक्ति प्रदान करता ।[2] तथा यदि उनको अब सुना दे तो अवश्य मुँह फेरेंगे, विमुख होते हुए ।[3]

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ ۖ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوا وَّهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

(२४) हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह तथा रसूल के आदेशों का पालन करो, जब कि रसूल तुमको तुम्हारे जीवनप्रद विषय की ओर बुलाते

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

प्राणी हैं वह دابة हैं । तात्पर्य प्राणी वर्ग है अर्थात यह सबसे बुरे हैं जो सत्य के विषय में बधिर, मूक तथा अज्ञानी हैं ।

[1]इसी बात को क़ुरआन करीम में अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है ।

﴿ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴾

"उनके दिल हैं, परन्तु उससे समझते नहीं, उनको आँखें हैं, परन्तु उससे देखते नहीं, तथा उनके कान हैं, परन्तु उससे सुनते नहीं, यह चौपाये की भाँति हैं, अपितु उनसे भी अधिक भटके हुए, ये लोग (अल्लाह से) अनजान हैं ।" (सूर: अल- आराफ -१७९)

[2]अर्थात उनके सुनने की शक्ति को लाभकारी करके उन्हें ठीक समझ प्रदान कर देता, जिससे वे सत्य को स्वीकार कर लेते तथा उसे अपना लेते परन्तु चूँकि उनके अन्दर भलाई अर्थात सत्य की खोज नहीं है, इसलिए वह ठीक समझ से भी वंचित हैं ।

[3]पहले सुनने से तात्पर्य लाभकारी सुनना है । इस दूसरे सुनने से प्राकृतिक रूप से सुनने की शक्ति है । अर्थात यदि अल्लाह तआला उन्हें सत्य बात सुना भी देता, तो चूँकि उनके हृदय में सत्य जानने की खोज ही नहीं, इसलिए वे निरंतर इससे मुँह फेरते रहेंगे ।

يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

हों,[1] तथा याद रखो कि अल्लाह तआला मनुष्य के तथा उसके दिल के मध्य आड़ बन जाता है ।[2] तथा निःसंदेह तुम्हें अल्लाह ही के पास एकत्रित होना है ।

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً

(२५) तथा तुम ऐसी आपदा से बचो कि जो विशेष रूप से उन ही लोगों पर घटित न

---

[1] لِمَا يُحْيِيكُم ऐसी वस्तुओं की ओर जिससे तुम्हें जीवन मिले । कुछ ने इससे धर्मयुद्ध का भाव लिया है कि इसमें तुम्हारा जीवन साधन है । कुछ ने क़ुरआन के आदेश, परिकलन तथा धार्मिक नियम भाव निकाला है । जिनमें धर्मयुद्ध भी आता है अर्थ यह कि केवल अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञा पालन करो, तथा उसके अनुसार कार्य करो, इसमें तुम्हारा जीवन है ।

[2]अर्थात मृत्यु देकर जिसका स्वाद प्रत्येक जीवधारी को चखना है । इसका अर्थ यह है कि इससे पूर्व कि तुम्हें मृत्यु आ जाये अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात मान लो तथा उसके अनुसार कर्म करो । कुछ ने कहा है कि अल्लाह तआला मनुष्य के दिल के जिस प्रकार निकट है, इसमें उसे तुलनात्मक रूप से वर्णन किया गया है । तथा अर्थ यह है कि वह दिलों के भेदों को जानता है, उससे कोई बात छिपी नहीं । इमाम इब्ने जरीर ने इसका भावार्थ यह वर्णित किया है कि वह अपने भक्तों के दिलों पर पूर्ण रूप से प्रभाव रखता है तथा जब चाहता है उनके तथा उनके दिलों के मध्य खड़ा हो जाता है । यहाँ तक कि मनुष्य उसकी इच्छा के बिना किसी चीज़ को प्राप्त नहीं कर सकता । कुछ ने बद्र के युद्ध से सम्बन्धित कहा है कि मुसलमान शत्रुओं की संख्या के कारण भयभीत थे, तो अल्लाह तआला ने उनके दिलों के मध्य खड़े होकर उनके भय को शान्ति में बदल दिया । इमाम शौकानी कहते हैं कि आयत के यह सभी भावार्थ हो सकते हैं । (फ़तहुल क़दीर) इमाम इब्ने जरीर के कथन की पुष्टि उन हदीसों से होती है जिनमें धर्म के मार्ग पर दृढ़ता से रहने की प्रार्थना करने पर बल दिया गया है । जैसे एक हदीस में रसलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "आदम की संतान के दिल, एक दिल की भाँति कृपालु की दो उँगलियों के मध्य है उन्हें जिस प्रकार चाहता है फेरता रहता है ।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह प्रार्थना की . «اللَّهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوبِ، صَرِّفْ قُلُوبَنَا إِلَىٰ طَاعَتِكَ» "ऐ दिलों के फेरने वाले ! हमारे दिलों को अपनी आज्ञापालन की ओर फेर दे ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल क़दर बाब तसरीफ़ अल्लाह तआला अल कुलूब कैफ़ शाआअ) कुछ कथनों में ثَبِّتْ قلبي على دينك है (त्रिमजी अबवाबुल क़द्र) ।

होगी जो तुम में से उन पापों के दोषी हैं ।[1] तथा यह जान रखो कि अल्लाह तआला अति घोर दण्ड देने वाला है ।

وَاعْلَمُوٓا أَنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

(२६) तथा उस स्थिति को याद करो, जब कि तुम धरती पर थोड़े थे, निर्बल माने जाते थे । इस भय में रहते थे कि तुम को लोग नोच खसोट न लें, तो अल्लाह ने तुम्हें निवास के लिए स्थान दिया तथा तुमको अपनी सहायता से शक्ति प्रदान की तथा तुम को स्वच्छ खाद्य प्रदान किये, ताकि तुम कृतज्ञता करो ।[2]

وَاذْكُرُوٓا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२७) हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह तथा रसूल (के अधिकार) का हनन न करो तथा अपनी सुरक्षित वस्तुओं में विश्वासघात न करो ।[3] तथा तुम जानते हो ।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوٓا أَمٰنٰتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

---

[1]इससे तात्पर्य या तो भक्तों का एक-दूसरे पर अधिकार है, जो बिना किसी प्रकार के सामान्य तथा विशेष की छूट के अत्याचार करते हैं अथवा वे सामान्य प्रकोप हैं, जो वर्षा की अधिकता, अथवा बाढ़ आदि धरती तथा आकाश की विपदा के रूप में घटित होते हैं तथा पुण्य तथा पाप दोनों के करने वाले समान रूप से प्रभावित होते हैं । अथवा कुछ हदीसों में पुण्य के कार्यों का आदेश देना तथा पाप के कर्मों से रोकने को छोड़ देने से जिन प्रकोप की चेतावनी का वर्णन किया गया है, वह तात्पर्य है ।

[2]इससे मक्की जीवन की कठिनाईयों तथा भय का वर्णन तथा उसके उपरान्त मदीने के जीवन में सुख-शान्ति तथा समृद्धि जो अल्लाह की कृपा से प्राप्त हुई, उसका वर्णन है ।

[3]अल्लाह तआला तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अधिकारों में विश्वासघात का तात्पर्य यह है कि प्रत्यक्ष रूप से तो अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि के आज्ञाकारी बन कर रहें, एकान्त में उसके विपरीत कार्य करें । विश्वासघात यह भी है कि किसी अनिवार्य कार्य को छोड़ दे तथा निषेधित कार्य को करे । तथा ﴿وَتَخُوْنُوٓا أَمٰنٰتِكُمْ﴾ का अर्थ है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के पास कोई वस्तु सुरक्षा के विचार से रखाये, उसमें विश्वासघात न करे । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी अमानत की सुरक्षा

وَاعْلَمُوٓا أَنَّمَآ أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُۥٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा तुम इस बात को जान रखो, कि तुम्हारा धन तथा तुम्हारी सन्तान एक परीक्षा के लिए हैं ।[1] (तथा इस बात को भी जान रखो) कि अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा प्रत्युपकार है ।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوٓا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَل لَّكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّـَٔاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

(२९) हे ईमानवालो ! यदि तुम अल्लाह से डरते रहोगे, तो अल्लाह (तआला) तुम्हें एक निर्णय की चीज़ प्रदान करेगा । तथा तुम से तुम्हारे पाप दूर करेगा तथा तुमको क्षमा कर देगा तथा अल्लाह (तआला) महाकृपालु है ।[2]

पर बल दिया गया है । हदीसों में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अधिकतर भाषणों में अवश्य फ़रमाते :

«لاَ إِيمَانَ لِمَنْ لا أَمَانَةَ لَهُ، وَلاَ دِينَ لِمَنْ لاَ عَهْدَ لَهُ».

"उसका ईमान नहीं जिससे अमानत सुरक्षित नहीं, तथा उसका धर्म नहीं, जिसको वचन पूरा करने की दृढ़ता का आभास नहीं ।" (मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ १३९ तथा हदीस के विशेषज्ञ अलबानी ने कहा कि "यह स्वच्छ हदीस है ।"

[1]धन एवं सन्तान का प्रेम ही किसी व्यक्ति को सामान्य रूप से विश्वासघात करने पर तथा अल्लाह एवं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा भंग करने पर विवश करता है । इसलिए इनको आपत्ति (परीक्षा) कहा गया है अर्थात इसके द्वारा मनुष्य की परीक्षा ली जाती है कि उनके प्रेम के साथ विश्वास तथा आज्ञापालन की माँग को पूरा करता है अथवा नहीं ? यदि वह पूरा करता है, तो समझ लो वह अपनी परीक्षा में सफल हो गया । उसके दूसरे रूप अर्थात विपरीत में असफल । इस अवस्था में यह धन तथा सन्तान उसके लिए अल्लाह की यातना को भोगने का कारण बन जायेंगे ।

[2]अल्लाह का भय (तक़्वा) का अर्थ यह है कि अल्लाह के आदेशों की अवहेलना तथा निषेधित कार्यों से बचना । तथा फ़ुरक़ान के कई अर्थ वर्णन किये गये हैं । जैसे ऐसी वस्तु जिसके द्वारा सत्य तथा असत्य के मध्य भेद किया जा सके । अर्थ यह है कि अल्लाह के भय (तक़्वा) के कारण हृदय दृढ़, दूर दृष्टि तथा सत्य का मार्ग प्रशस्त हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य प्रत्येक ऐसे अवसर पर, जब जन सामान्य शंका तथा संदेह की वादियों में भटक रहा होता है, उसे सीधे मार्ग का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है । इसके

(३०) तथा उस घटना का भी वर्णन कीजिए, जबकि काफ़िर लोग आपके विषय में षड़यन्त्र कर रहे थे कि आप को बंदी बना लें अथवा आपकी हत्या कर दें अथवा आपको देश निकाला दे दें ।[1] तथा वह अपना षड़यन्त्र रच रहे थे तथा अल्लाह तआला अपनी योजना बना रहा था तथा अल्लाह तआला सर्वोत्तम नियोजक है ।[2]

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ⑳

(३१) तथा जब उनके समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जातीं हैं तो कहते हैं कि हमने सुन लिया, यदि हम चाहें तो हम भी इसके समान कह दें , यह तो कुछ भी नहीं मात्र पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं ।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ㉑

अतिरिक्त विजय, कृपा, मोक्ष तथा मुक्ति भी इसके अर्थ किये गये हैं तथा सभी अर्थों का तात्पर्य हो सकता है । क्योंकि तक़्वा से अवश्य यह सारे लाभ प्राप्त होते हैं । बल्कि इसके साथ पापों से छुटकारा, अन्तिम मोक्ष, तथा महान कृपा प्राप्त होती है ।

[1]यह उस षडयन्त्र का वर्णन है जो मक्का के मूर्तिपूजक नेताओं ने एक रात्रि दारुल नदवा में तैयार किया था । अन्त में यह निर्धारित किया गया कि प्रत्येक जाति के युवकों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या करने के लिए नियुक्त किया जाय, ताकि किसी एक की हत्या के बदले में हत्या न की जा सके बल्कि धन देकर जान छूट जाये ।

[2]अत: इस षड़यन्त्र की पूर्ति के लिए मूर्ति पुजारी युवक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर के बाहर एक रात्रि इस प्रतीक्षा में खड़े रहे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से बाहर निकलें तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या कर दें । अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस षडयन्त्र की सूचना दे दी तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घर से बाहर निकलते समय मिट्टी की एक मुट्ठी ली तथा उनके सिरों पर डालते हुए निकल गये, किसी को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकलने का पता भी नहीं चला, यहां तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुरक्षित सौर नामक गुफ़ा में पहुँच गये । यह काफ़िरों के मुकाबिले में अल्लाह की योजना थी जिससे अच्छी योजना कोई नहीं बना सकता । (मकर के अर्थ के लिए देखें सूर: आले इमरान की आयत संख्या ५४ की व्याख्या)

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा जबकि उन लोगों ने कहा, हे अल्लाह ! यदि यह क़ुरआन वास्तव में आप की ओर से है, तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा, अथवा हम पर कोई कष्टदायक प्रकोप घटित कर दे।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा अल्लाह (तआला) ऐसा न करेगा कि उनमें आपके होते हुए उनको यातना दे। तथा अल्लाह (तआला) उनको यातना न देगा [1] इस अवस्था में कि यह क्षमा-याचना भी करते हों।[2]

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा उनमें क्या बात है कि उनको अल्लाह (तआला) दण्ड न दे यद्यपि कि वे लोगों को मस्जिदे हराम से रोकते हैं जबकि वह लोग इस मस्जिद के संरक्षक नहीं, उसके संरक्षक अल्लाह की आज्ञापालकों के सिवाय कोई नहीं, परन्तु उनमें अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।[3]

---

[1]अर्थात ईशदूतों की उपस्थिति में समुदायों पर प्रकोप नहीं होता, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति भी उन लोगों की सुरक्षा एवं शान्ति से रहने का कारण था।

[2]इससे तात्पर्य है कि वे भविष्य में मुसलमान होकर क्षमा-याचना करेंगे अथवा परिक्रमा करते समय मूर्तिपूजक«غُفْرَانَكَ رَبَّنَا! غُفْرَانَكَ»कहा करते थे (हमारे पालनहार हमें क्षमा कर दे)

[3]अर्थात वे मूर्तिपूजक अपने आप को मस्जिदे हराम (ख़ानये काअबा) का संरक्षक समझते थे, इस के कारण जिसको चाहते थे परिक्रमा की अज्ञा देते थे जिसको चाहते थे नहीं देते थे। अत: वह मुसलमानों को भी मस्जिदे हराम में आने से रोकते थे, जबकि वास्तविकता यह थी कि वे संरक्षक नहीं थे। تَحَكُّمًا अन्याय पूर्वक बने हुए थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, उसके संरक्षक तो अल्लाह से भय रखने वाले व्यक्ति ही बन

(३५) तथा उनकी नमाज़ कआबा: के निकट केवल यह थी, सीटियाँ बजाना तथा तालियाँ बजाना[1] तो अपने कुफ़्र के कारण इस यातना का स्वाद चखो।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

(३६) नि:संदेह यह विश्वासहीन लोग अपना धन इसलिए व्यय कर रहे हैं कि अल्लाह के मार्ग से रोकें, तो ये लोग अपना धन व्यय करते ही रहेंगे, फिर वह धन उनके लिए पश्चाताप का कारण बन कर रह जायेंगे, फिर पराजित हो जायेंगे। तथा काफ़िरों को नरक की ओर एकत्रित किया जायेगा।[2]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

सकते हैं, न कि मूर्तिपूजक। इस आयत में जिस यातना का वर्णन है, उसका तात्पर्य मक्का विजय है, जो मक्का के मूर्तिपूजकों के लिए एक कठोर यातना की स्थिति रखता है। इससे पूर्व की आयत में जिस यातना को मना किया गया है, जो पैग़म्बरों की उपस्थिति अथवा क्षमा-याचना करते रहने के कारण नहीं आता, उससे तात्पर्य नष्ट-भ्रष्ट करने वाला प्रकोप तथा सम्पूर्ण विनाश है। शिक्षा देने के लिए तथा चेतावनी के लिए छोटे-छोटे प्रकोप इसमें सम्मिलित नहीं हैं।

[1]मूर्तिपूजक जिस प्रकार अल्लाह के घर (ख़ानये काअबा) की नंगे होकर परिक्रमा करते थे, उसी प्रकार परिक्रमा करते समय मुख में उंगलिया डाल कर सीटियाँ बजाते थे तथा तालियाँ बजाते थे। इसको भी यह आराधना और पुण्य का कार्य समझते थे। जिस प्रकार आज भी अशिक्षित सूफ़ी मस्जिदों तथा आस्तानों पर नाचते हैं। ढ़ोल पीटते तथा धमालें डालते हैं। यही हमारी नमाज़ तथा आराधना है। नाच-नाच कर अपने यार (अल्लाह) को मना लेंगे। (نعوذ بالله من هذه الخرافات)

[2]जब बद्र में मक्का के क़ुरैश की पराजय हुई तथा उन के पराजित लोग वहाँ पहुँच गये। इधर अबू सुफ़ियान भी अपना व्यापारिक क़ाफ़िला लेकर पहुँच चुके थे, तो कुछ लोग जिनके पिता व पुत्र अथवा भाई इस युद्ध में मारे गये थे, अबू सुफ़ियान तथा जिनकी उस व्यापारिक क़ाफ़िले में भागीदारी थी, उनके पास गये और प्रार्थना की कि इस माल का प्रयोग मुसलमानों के विरुद्ध करें। मुसलमानों ने हमें अत्यधिक हानि पहुँचायी है, इसलिए उनसे बदला लेने के लिए युद्ध करना आवश्यक है। अल्लाह तआला ने इस आयत में इसी प्रकार के लोगों अथवा इसी प्रकार का कार्य करने वालों

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٣٧﴾

(३७) इसलिए कि अल्लाह (तआला) अपवित्रों को पवित्रों से अलग कर दे।[1] तथा अपवित्रों को एक-दूसरे से मिला दे, फिर उन सबको इकट्ठा करे, फिर उन सब को नरक में डाल दे। ऐसे लोग पूर्ण रूप से हानि में हैं।

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا

(३८) (आप) अविश्वसियों से कह दीजए कि यदि यह लोग रुक जायें तो इनके सारे पाप जो पहले कर चुके हैं, क्षमा कर दिये जायेंगे।[2]

के विषय में फ़रमाया है कि नि:संदेह यह अल्लाह के मार्ग से लोगों के रोकने के लिए अपना माल व्यय कर लें, परन्तु उनके भाग्य में केवल पश्चाताप तथा पराजय के अतिरिक्त कुछ भी नहीं आयेगा तथा परलोक में उनका ठिकाना नरक होगी।

[1]यह अलगाव आख़िरत में होगा कि आज्ञाकारियों को अवज्ञाकारियों से अलग कर दिया जायेगा, जैसाकि फ़रमाया,

﴿وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ﴾

"हे मुजरिमों ! आज अलग हो जाओ।" (सूर: यासीन-५९)

अर्थात पुण्यात्माओं से तथा अपराधियों एवं मिश्रणवादियों तथा अवज्ञाकारियों को एकत्रित करके सब को नरक में डाल दिया जायेगा। अथवा फिर इसका संबन्ध दुनिया से है। अक्षर "लाम" का प्रयोग सम्बन्ध बताने के लिए है। अर्थात काफ़िर अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिए जो धन व्यय कर रहे हैं, हम उनको ऐसा करने का अवसर प्रदान करेंगे, ताकि इसके द्वारा अल्लाह तआला अपवित्र को पवित्र से काफ़िरों को ईमानवालों से एवं स्वार्थियों को नि:स्वार्थियों से अलग कर दे। इस आधार पर आयत का अनुवाद होगा। काफ़िरों के द्वारा हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे, वह तुम से लड़ेंगे तथा हम उन्हें उनके माल भी लड़ाई में व्यय करने की शक्ति देंगे ताकि अपवित्र, पवित्र से विलग हो जाये फिर उन काफ़िरों को परस्पर मिला देगा अर्थात सब को एकत्रित कर देगा। (इब्ने कसीर)

[2]रुक जाने का अर्थ मुसलमान हो जाना है जिस प्रकार हदीस में भी है, "जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार करके पुण्य का मार्ग अपना लिया, उससे उसके पापों की पूछ-ताछ नहीं होगी, जो उसने अज्ञानकाल में किये होंगे तथा जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार करके भी बुराई न छोड़ी, उससे पूर्व तथा पश्चात सभी कर्मों का हिसाब होगा।" (सहीह बुख़ारी

فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

तथा यदि अपनी वही रीति रखेंगे तो पूर्व के (विश्वासहीनों के) लिए नियम लागू हो चुका है ।[1]

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣٩﴾

(३९) तथा तुम उन से उस समय तक संघर्ष करो कि उनकी आस्था में बिगाड़ न रहे[2] तथा धर्म अल्लाह ही का हो जाय ।[3] फिर यदि यह रुक जायें, तो अल्लाह (तआला) उनके कर्मों को ख़ूब देखता है ।[4]

وَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा यदि मुँह फेरें,[5] तो विश्वास रखें कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा मित्र है ।[6] वह उत्तम मित्र तथा उत्तम सहाय है ।[7]

बाब इस्तेताबतिल मुर्तद्दीन, मुस्लिम किताबुल ईमान बाब हल यूआख़ज़ बे आमाल अल-जाहिलीया:) एक अन्य हदीस में है

«الإِسْلَامُ يَجُبُّ مَا قَبْلَهُ».

"इस्लाम पूर्व के पापों को मिटा देता है ।" (मुसनद अहमद भाग ४, पृ.१९९)

[1]अर्थात यदि वे अपने अविश्वास एवं द्वेष पर अडिग रहे तो शीघ्र अथवा देर से यातनाओं के भोगी बनकर रहेंगे ।

[2]फ़ित्ना से तात्पर्य है शिर्क (मिश्रणवाद) अर्थात उस समय तक धर्मयुद्ध जारी रखो जब तक मिश्रणवाद समाप्त न हो जाये ।

[3]अर्थात एकेश्वरवाद (तौहीद) का ध्वज पूरे विश्व में लहरा जाये ।

[4]अर्थात तुम्हारे लिए उनका ऊपरी इस्लाम ही बस है अन्त:करण का विषय अल्लाह को समर्पित कर दो क्योंकि उसे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सब का ज्ञान है ।

[5]अर्थात इस्लाम स्वीकार न करें तथा अविश्वास एवं तुम्हारे विरोध पर अडिग रहें ।

[6]अर्थात तुम्हारे शत्रुओं पर तुम्हारा सहायक, समर्थक एवं संरक्षक है ।

[7]अत: सफल भी वही होगा जिसका स्वामी (रक्षक) अल्लाह हो तथा प्रभावी भी वही होगा जिसका सहायक वही हो ।

(४१) तथा जान लो कि तुम जिस प्रकार का जो भी युद्ध का धन[1] (परिहार) प्राप्त करो उसमें से पाँचवाँ भाग तो अल्लाह एवं ईशदूत तथा समीपवर्तियों एवं अनाथों तथा निर्धनों एवं यात्रियों[2] के लिये है, यदि तुम ने अल्लाह के प्रति ईमान रखा है तथा उसके प्रति जो

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا

---

[1]ग़नीमत (परिहार) से तात्पर्य वह धन है जो संग्राम में काफ़िरों को पराजित करके प्राप्त किया जाता है। पूर्व समुदाय में यह रीति थी कि लड़ाई की समाप्ती के पश्चात परिहार को एकत्रित किया जाता तथा आकाश से अग्नि आकर उसे जला कर भस्म कर देती किन्तु मुसलमानों के लिये परिहार वैधानिक बना दिया गया तथा जो धन बिना लड़ाई, संधि अथवा कर द्वारा प्राप्त हो उसे "फ़ैय" कहा जाता है कभी ग़नीमत को भी "फ़ैय" कहा जाता है, مِن شَيْءٍ से अभिप्राय है जो कुछ भी हो अर्थात तनिक अथवा अधिक मूल्यवान अथवा साधारण सब को एकत्रित कर नियमानुसार वितरण किया जायेगा। किसी सैनिक को वितरण से पूर्व अपने पास रखने की अनुमति नहीं।

[2]अल्लाह का शब्द मात्र शुभ के लिए अथवा इसलिये है कि प्रत्येक वस्तु का वास्तविक मालिक तो वही है तथा आदेश भी उसी का चलता है। तात्पर्य अल्लाह तथा रसूल के भाग से एक ही है, अर्थात सारे माल को पाँच भागों में विभाजित करके चार भाग तो उन विजयी सैनिकों को बाँट दिये जायेंगे जिन्होंने युद्ध में भाग लिया हो। उन में भी पैदल को एक भाग तथा सवार को तीन गुना भाग मिलेगा। पाँचवां भाग जिसे अरबी भाषा में ख़ुम्स कहते हैं। कहा जाता है कि इसके पुन: पाँच भाग किये जायेंगे एक भाग रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात सार्वजनिक सेवा में व्यय किया जायेगा) जैसाकि स्वयं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी यह भाग मुसलमानों पर ही व्यय करते थे, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया भी है

«وَالْخُمُسُ مَرْدُودٌ عَلَيْكُمْ».

"अर्थात मेरा जो पाँचवाँ भाग है, वह भी मुसलमानों की समस्या समाधान पर व्यय होता है।" (सुनने नसाई, इस हदीस को अलबानी ने सहीह नसाई में प्रमाणित माना है, अल-निसाई ३८५८, तथा मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ ३१९)

दूसरा भाग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकटतम सम्बन्धियों का, फिर अनाथ, निर्धन तथा यात्रियों का। कहा जाता है कि यह ख़ुम्स आवश्यकतानुसार व्यय किया जायेगा।

يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾

हम ने अपने भक्त पर उस दिन उतारा है जो सत्य-असत्य[1] के बीच विलगाव का[2] था जिस दिन दोनों सेनायें भिड़ गई थीं,[3] तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर सर्वशक्तिमान है।

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ ۚ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ

(४२) जबकि तुम समीप के किनारे पर तथा वे दूर के किनारे पर थे,[4] तथा यात्रीगण तुम से (बहुत) नीचे थे,[5] यदि तुम परस्पर वचन देते तो निर्धारित समय पर पहुँचने में विभेद कर जाते,[6] किन्तु अल्लाह को एक काम कर

---

[1]इस उतरने से तात्पर्य फ़रिश्तों का तथा अल्लाह की आयतों (चमत्कारों आदि) का उतरना जो बद्र के युद्ध में हुआ।

[2]बद्र का युद्ध १७ रमज़ानुल मुबारक २ हिजरी को हुआ। उस दिन को यौमुल फ़ुरक़ान इसलिए कहा गया कि यह काफ़िरों तथा मुसलमानों के मध्य प्रथम युद्ध था तथा मुसलमानों को विजय तथा प्रभाव प्रदान करके यह सिद्ध कर दिया कि इस्लाम सत्य है तथा कुफ़्र एवं शिर्क (बहुदेववाद) असत्य है।

[3]अर्थात मुसलमानों तथा काफ़िरों की सेनायें।

[4]दुनिया शब्द अरवी भाषा का है, इसका उद्‌गम दूतत्व (دُنُوٌّ) से है जिसका अर्थ है निकट तात्पर्य है वह किनारा जो मदीना नगर की ओर था जिस ओर मुसलमान थे। قصوى कुस्वा कहते हैं दूर को, काफ़िर दूसरे किनारे पर थे जो मदीना नगर से दूर था।

[5]इससे तात्पर्य वह व्यापारिक क़ाफ़िला था जो आदरणीय अबु सुफ़ियान के नेतृत्व में सीरिया से वापस मक्का की ओर जा रहा था तथा जिसे प्राप्त करने के लिए ही वास्तव में मुसलमान इस ओर आये थे। यह पर्वत से बहुत दूर पश्चिम की ओर घाटी में था, जवकि बद्र जहाँ युद्ध हुआ वह ऊँचाई पर था

[6]अर्थात यदि युद्ध के लिए योजनानुसार दिन-तिथि की एक दूसरे के साथ वायदा होता अथवा घोषणा होती, तो सम्भव था कि कोई भी पक्ष बिना युद्ध के पराजय स्वीकार कर लेता, परन्तु इस युद्ध का होना अल्लाह ने लिख रखा था, इसलिए ऐसे कारण उत्पन्न कर दिये गये कि बिना किसी घोषणा के दोनों पक्ष आमने-सामने एक-दूसरे के विरुद्ध पंक्तिवद्ध हो गये।

لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۙ﴿۴۲﴾

ही डलाना था जो निर्धारित हो चुका था ताकि जो नाश हो वह तर्क पर (अर्थात निश्चय जानकर) नाश हो एवं जो जीवित रह जाये वह भी तर्क पर (सत्य पहचान कर) जीवित रहे तथा अल्लाह भली-भाँति सुनने वाला जानने वाला है।[1]

اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ؕ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۴۳﴾

(४३) जब कि तुझे तेरे सपने में अल्लाह ने उन की संख्या कम दिखाई, यदि उन की अधिकता दिखाता तो तुम कायर बन जाते तथा इस विषय में परस्पर मतभेद करते किन्तु अल्लाह ने बचा लिया, निश्चय वह अन्तर्यामी है।[2]

وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا

(४४) तथा जब कि उसने मिलने के समय उन्हें तुम्हारी दृष्टि में बहुत कम दिखाया तथा तुम्हें उनकी दृष्टि में कम दिखाया।[3]

---

[1]यह कारण है अल्लाह के उस भाग्य लेख का जिसके आधार पर बद्र में दोनों पक्ष एकत्रित हुए। ताकि जो ईमान पर जीवित रहे तो वह इस प्रमाण के साथ जीवित रहे तथा उसे दृढ़ विश्वास हो कि इस्लाम सत्य है क्योंकि सत्यता को वह बद्र में देख चुका है, तथा जो अधर्म की अवस्था में मरे तो वह भी इस प्रमाण के साथ मरे कि उसका मार्ग भटका हुआ था क्योंकि यह स्पष्ट हो चुका।

[2]अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वप्न में मूर्तिपूजकों की संख्या कम दिखायी तथा वही संख्या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा के सामने वर्णन कर दी, जिससे उनके साहस बढ़ गये। यदि इसके विपरीत काफ़िरों की संख्या अधिक दिखायी जाती तो सहाबा के दिलों में कायरता उत्पन्न होती तथा आपसी मतभेद उत्पन्न होने की सम्भावना थी। परन्तु अल्लाह ने इन दोनों परिस्थितियों से मुसलमानों को बचा लिया।

[3]ताकि वह काफ़िर भी तुम से भयभीत होकर पीछे न हटें। प्रथम घटना स्वप्न की थी तथा यह दिखाना ठीक युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व था, जैसाकि क़ुरआन के शब्दों से स्पष्ट होता है। फिर भी यह घटना युद्ध प्रारम्भ होने के पूर्व की है। परन्तु जब युद्ध प्रारम्भ

كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾

ताकि अल्लाह (तआला) उस कार्य को अन्त तक पहुँचा दे, जो करना ही था।[1] तथा सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे जाते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) हे ईमानवालो ! जब तुम किसी (विरोधी) सेना से भिड़ जाओ, तो अड़ जाओ तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।[2]

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوا ۚ

(४६) तथा अल्लाह की एवं उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते रहो, आपस में मतभेद मत रखो, वरन् कायर हो जाओगे तथा तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी तथा धैर्य और

हो गया, तो काफ़िरों को मुसलमान अपने से दुगुना दिखायी पड़ रहे थे। जैसा कि सूर: आले इमरान की आयत संख्या १३ से ज्ञात होता है बद्र में अधिक दिखाने का तात्पर्य यह था कि मुसलमानों की अधिक संख्या देख कर काफ़िरों के दिलों में मुसलमानों का भय उत्पन्न हो जिसके कारण उनमें कायरता उत्पन्न हो। इसके विपरीत प्रारम्भ में कम संख्या दिखाने का उद्देश्य यह था कि वे युद्ध से मुह न फेर लें।

[1]इस सभी का उद्देश्य यही था कि अल्लाह तआला ने जो निर्णय कर दिया था, वह पूर्ण हो जाये, इसलिए उसने इसके कारण उत्पन्न कर दिये।

[2]अव मुसलमानों को युद्ध के वे नियम बताये जा रहे हैं, जो शत्रु से युद्ध करते समय ध्यान में रखना आवश्यक है सर्वप्रथम बात, दृढ़ता तथा साहस रखना है क्योंकि इसके विना युद्ध के मैदान में ठहरना ही सम्भव नहीं है, तथापि इस से पुन: आक्रमण करने के लिए अथवा अपनी सेना में मिलने के लिये पीठ दिखाना अलग है क्योंकि कभी पुन: आक्रमण करने के लिए भी पीछे हटना अनिवार्य होता है जिसका वर्णन इससे पूर्व किया जा चुका है। दूसरा निर्देश यह है कि अल्लाह को अधिकता से याद करो ताकि यदि मुसलमान थोड़े भी हों तो अधिक याद करने के कारण अल्लाह भी उनकी ओर आकर्षित रहे तथा यदि मुसलमान अधिक हों, तो अधिक याद करने के कारण मुसलमानों में गर्व तथा घमंड उत्पन्न न हो। बल्कि वास्तविक ध्यान अल्लाह की सहायता पर ही रहे।

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّٰبِرِينَ ۝٤٦

विश्वास रखो, निःसंदेह अल्लाह तआला सहनशील, धैर्यवानों के साथ है ।[1]

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَٰرِهِم بَطَرًا وَرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝٤٧

(४७) तथा उन लोगों जैसे न बनो, जो गर्व करते हुए, तथा लोगों में अभिमान करते हुए अपने घरों से चले तथा अल्लाह के मार्ग से रोकते थे ।[2] जो कुछ वह कर रहे हैं, अल्लाह उसे घेर लेने वाला है ।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَٰنُ أَعْمَٰلَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ ۖ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ

(४८) तथा जब कि उनके कर्मों को शैतान उन्हें सुशोभित दिखा रहा था तथा कह रहा था कि मनुष्यों में से कोई भी आज तुम पर प्रभावशाली नहीं हो सकता मैं स्वयं तुम्हारा समर्थक हूँ, परन्तु जब दोनों गुट प्रकट हुए,

---

[1]तीसरा निर्देश अल्लाह तथा उसके रसूल की आज्ञापालन है । स्पष्ट बात है कि इस कठोर स्थिति में अल्लाह तथा उसके रसूल की अवहेलना कितनी भयानक हो सकती है । इसलिए एक मुसलमान को प्रत्येक समय अल्लाह तथा उसके रसूल की आज्ञा पालन आवश्यक है । फिर भी रण क्षेत्र में इसकी विशेषता और बढ़ जाती है । तथा इस अवसर पर थोड़ी सी अवज्ञा अल्लाह की सहायता से वंचित कर सकती है । चौथी बात आपस में मतभेद एवं संघर्ष मत करो, इससे तुम कायर बन जाओगे तथा हवा उखड़ जायेगी । तथा पाँचवाँ निर्देश धैर्य रखो । अर्थात युद्ध में कितनी ही कठिन परिस्थिति आ जाये तथा युद्ध में तीव्रता आ जाये तब भी धैर्य न छोड़ो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी एक हदीस में फ़रमाया,

"लोगो ! शत्रु से मुठभेड़ की कामना न करो तथा अल्लाह से शान्ति की कामना करो । फिर भी यदि शत्रु से सामना करने का अवसर आ जाये, तो धैर्य रखो (अर्थात दृढ़ता से लड़ो) तथा जान लो कि स्वर्ग तलवार की छाया के नीचे है ।"(सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद) अध्याय जब ईशदूत अपराहन लड़ाई आरम्भ न करते तो सूर्य ढलने तक लड़ाई में विलम्ब करते ।

[2]मक्का के मिश्रणवादी जब अपने यात्रीगण की सुरक्षा तथा युद्ध की इच्छा से निकले, तो बड़े गर्व तथा घमण्ड से निकले, मुसलमानों को इस प्रकार के काफ़िरों के कर्मों से रोका गया ।

وَقَالَ اِنِّىْ بَرِىْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّىْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّىْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾

तो अपनी ऐड़ियों के बल पीछे पलट गया तथा कहने लगा कि मैं तो तुम से अलग हूँ। मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे।[1] मैं अल्लाह से डरता हूँ।[2] तथा अल्लाह (तआला) कठोर यातना वाला है।[3]

اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَاۗءِ دِيْنُهُمْ ۭ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَي اللّٰهِ

(४९) जब कि मुनाफ़िक (द्वयवादी) लोग कह रहे थे तथा वह भी जिनके दिलों में रोग था।[4] कि उन्हें तो उनके धर्म ने धोके में डाल दिया है।[5] और जो भी अल्लाह पर भरोसा करे तो

---

[1]मूर्तिपूजक जब मक्का से निकले तो उन्हें अपने विरोधी क़बीले बनी किनान से यह भय था कि वे पीछे से उन्हें हानि न पहुँचायें। अत: शैतान सुराका बिन मालिक के रूप में आया, जो बनी बक्र बिन किनान के मुखिया थे, तथा उन्होंने न केवल विजय की ही भविष्यवाणी की अपितु अपने पूर्ण समर्थन का विश्वास दिलाया। परन्तु जब फ़रिश्तों को उसने देखा तो उसे अल्लाह की सहायता दृष्टिगोचर हुई, तो एड़ियों के बल भाग खड़ा हुआ।

[2]अल्लाह का भय उसके दिल में क्या होना था ? परन्तु उसे पूर्ण विश्वास हो गया था कि अल्लाह की विशेष सहायता मुसलमानों के साथ है। मूर्तिपूजक उनके सम्मुख नहीं ठहर सकेंगे।

[3]सम्भव है कि यह शैतान के कथन का भाग हो तथा यह भी सम्भव है कि यह अल्लाह तआला की ओर से वाक्य की पुनरावृति हो।

[4]इससे तात्पर्य या तो वह मुसलमान हैं, जो नये-नये मुसलमान हुए थे तथा मुसलमानों की सफलता पर उन्हें संदेह था, अथवा इससे तात्पर्य मूर्तिपूजक हैं तथा यह भी सम्भव है कि मदीने के निवासी यहूदी तात्पर्य हों।

[5]अर्थात उनकी संख्या तो देखो तथा संसाधन की जो दशा है, वह भी स्पष्ट है। परन्तु वह मुक़बिला करने चलें हैं मक्का के मूर्तिपूजकों से, जो संख्या में कहीं अधिक हैं तथा हर प्रकार के अस्त्र-शस्त्र से तथा साधन से भरपूर हैं। लगता है कि उनके धर्म ने उनको धोखे में डाल दिया है। तथा यह मोटी सी बात भी उनकी समझ में नहीं आ रही है।

فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾

अल्लाह तआला नि:संदेह प्रभावशाली तथा विज्ञाता है ।[1]

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा काश कि तू देखता जबकि यमदूत विश्वासहीनों की प्राण निकालते हैं, उनके मुख तथा कमर पर मार मारते हैं (तथा कहते हैं) तुम जलने की यातना का स्वाद चखो ।[2]

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾

(५१) यह उन कर्मों के कारण जो तुम्हारे हाथों ने पूर्व ही भेज रखा है, नि:संदेह अल्लाह (तआला) अपने भक्तों पर तनिक अत्याचार नहीं करता ।[3]

---

[1]अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "भौतिक वादियों को उन ईमानवालों के साहस तथा विश्वास का क्या अनुमान हो सकता है जिनकी पूर्ण आस्था अल्लाह में है, जो प्रभावशाली भी है अर्थात अपने आश्रितों को अल्लाह असहाय नहीं छोड़ता तथा विज्ञाता है उस के प्रत्येक कर्म में कूटनीति होती है, जिसके बोध से मनुष्य की समझ विवश है ।"

[2]कुछ व्याख्याकारों ने इसे बद्र के युद्ध में हत मूर्तिपूजकों के विषय में बताया है। आदरणीय इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि जब मूर्तिपूजक मुसलमानों की ओर आते तो मुसलमान उन्के मुखों पर तलवारें मारते, जिससे बचने के लिए वे पीठ फेर कर भागते, तो फ़रिश्ते उनके पिछले भाग पर तलवार मारते। परन्तु यह साधारण आयत है कि जो प्रत्येक काफ़िर तथा मूर्तिपूजक को सम्मिलित किये हुए है। तथा अर्थ है कि मृत्यु के समय फ़रिश्ते उनके मुख तथा पीठ के उर्धव भाग पर मारते हैं, जिस प्रकार सूर: अल-अनाम में भी फ़रमाया गया है कि

﴿وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُوا أَيْدِيهِمْ﴾

"फ़रिश्ते उन्हें मारने के लिए हाथ बढ़ाते हैं ।"(सूर: अल-अनाम-९३)

तथा कुछ के निकट फ़रिश्तों की यह मार प्रलय के दिन नरक की ओर ले जाते समय होगी तथा नरक का अधिकारी कहेगा कि अब "तुम डाह की यातना का स्वाद चखो ।"

[3]यह चोट तथा यातना तुम्हारे कर्मों के परिणाम स्वरूप है, वरन् अल्लाह अपने भक्तों पर अत्याचार तथा अन्याय करने वाला नहीं है, अपितु वह तो न्यायकारी हर प्रकार के

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

(५२) फ़िरऔन के अनुयायियों की दशा के समान तथा उनके पूर्वजों के,[1] कि उन्होंने अल्लाह की आयतों के प्रति अविश्वास किया तो अल्लाह ने उनके पापों के कारण उन्हें पकड़ लिया। अल्लाह (तआला) नि:संदेह शक्तिशाली तथा गंभीर यातना वाला है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٣﴾

(५३) ये इसलिए कि अल्लाह (तआला) ऐसा नहीं कि किसी समुदाय पर कोई कृपा कर के फिर बदल दे, जब तक कि वह स्वयं अपनी उस स्थिति को न बदल दें, जो कि उनकी अपनी थी।[2] तथा यह कि अल्लाह तआला सुनने वाला जानने वाला है।

अत्याचार तथा अन्याय से पवित्र है। हदीस क़ुदसी में भी है (हदीस क़ुदसी वह है जो प्रकाशना का भाग न हो परन्तु मुसलमानों के लिए आवश्यक हो उसे अल्लाह तआला आदरणीय जिब्रील के द्वारा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बतायें)। अल्लाह तआला फ़रमाता है :

"हे मेरे भक्तो ! मैं ने अपने ऊपर अत्याचार निषेध कर लिया है तथा मैंने उसे तुम्हारे मध्य भी निषेध किया है। अतएव तुम एक-दूसरे पर अत्याचार न करो। हे मेरे भक्तो ! ये तुम्हारे ही कर्म हैं जिनकी गणना मैंने कर रखी है। अत: जो अपने कर्मों में भलाई पाये तो अल्लाह की महीमा का वर्णन करे तथा जो इसके विपरीत पाये, वह स्वयं अपने ही को बुरा कहे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र बाब तहरीमुज़ जुल्म)

[1] دأب दाब का अर्थ है आदत (व्यवहार) अक्षर काफ़ उपमा के लिए है। अर्थात उन मूर्तिपूजकों की आदत अथवा हाल अथवा व्यवहार ही ऐसा था कि अल्लाह के पैग़म्बरों को झुठलाते, उसी प्रकार जिस प्रकार फ़िरऔन तथा उसके पूर्व के झूठ बोलने वालों की आदत अथवा हाल था।

[2] इसका अर्थ यह है कि जब तक कोई समुदाय कृतघ्नता का मार्ग अपना कर तथा अल्लाह तआला द्वारा निर्देशित निषेधों से मुख मोड़ कर अपनी दशाओं एवं व्यवहारों को बदल नहीं लेती अल्लाह तआला उस पर अपने सुख-सुविधाओं एवं कृपा के द्वार बन्द नहीं करता। अन्य शब्दों में अल्लाह तआला पापों के कारण अपनी कृपायें समाप्त कर

(५४) फ़िरऔन के वर्ग तथा उनके पूर्व के जनों के समतुल्य कि उन्होंने अपने पोषक की बातों को झुठलाया तो हम ने उनके पापों के कारण उन्हें ध्वस्त कर दिया और फ़िरऔन वालों को डुबो दिया तथा यह सभी अत्याचारी थे।[1]

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

(५५) सभी जीवों से बुरे अल्लाह के निकट वह हैं जो कुफ़्र करें फिर वह ईमान न लायें।[2]

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾

(५६) जिनसे आपने वचन लिया, फिर भी वे अपना वचन हर बार तोड़ते हैं तथा कदापि संयम नहीं बरतते।[3]

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾

देता है तथा अल्लाह तआला की कृपा का पात्र होने के लिए आवश्यक है कि पापों से बचा जाय। अर्थात परिवर्तन से तात्पर्य है कि समुदाय पापों को त्याग कर अल्लाह की आज्ञा का पालन करने लगे।

[1]यह इसी बात पर पुन: बल दिया गया है, जो पूर्व गुजर चुकी है। परन्तु इसमें विनाश की अवस्था का वर्णन अधिक है कि उन्हें डुबो दिया गया। इसके अतिरिक्त यह स्पष्ट कर दिया गया कि अल्लाह ने उनको डूबो कर अत्याचार नहीं किया, अपितु ये स्वयं ही अपने प्राणों पर अत्याचार कर रहे थे। अल्लाह तो किसी पर अत्याचार नहीं करता। ﴿وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ﴾ (सूर: हाम मीम सज्द: ४६)

[2]شرّ النــاس (लोगों में सबसे बुरे) कहने की जगह شرّ الدّاوب कहा गया है। जो भाषा के आधार पर मनुष्य तथा चौपाये जीवों आदि सब के लिए प्रयोग होता है। लेकिन समान्यरूप से चौपायों के लिए प्रयोग होता है। अर्थात काफ़िरों का सम्बन्ध मनुष्यों से नहीं कृतघ्नता कर के पशु अपितु पशुओं से भी बुरे पशु बन गये।

[3]यह काफ़िरों ही के एक व्यवहार का वर्णन है कि हर बार वचन तोड़ने का कार्य करते हैं तथा उसके परिणाम से तनिक भी भयभीत नहीं होते। कुछ लोगों ने इससे यहूदियों के वंश बनू कुरैज़ा का भावार्थ लिया है, जिनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह सन्धि थी कि वे मूर्तिपूजकों की सहायता नहीं करेंगे, परन्तु उन्होंने इसे नहीं निभाया।

فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِم مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

(५७) अत: जब कभी तू उन पर लड़ाई में प्रभावी हो जाओ तो उन्हें ऐसी मार मारो कि उनके अनुगामी भी भाग खड़े हों।[1] सम्भवत: वह शिक्षा प्राप्त कर लें।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा यदि तुझे किसी समुदाय से विश्वासघात का भय हो तो समानता की अवस्था में उन की सन्धि तोड़ दे।[2] अल्लाह विश्वासघातियों को प्रिय नहीं रखता।[3]

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾

(५९) तथा काफ़िर यह विचार न करें कि वे भाग निकले, नि:संदेह वे विवश नहीं कर सकते।

---

[1] شَرِّدْ بِهِم का अर्थ है कि उनको ऐसी मार मारो कि जिससे उनके समर्थकों तथा साथियों में भगदड़ मच जाये, यहाँ तक कि वह आपकी ओर इस सम्भावना से मुख ही न करें कि कहीं उनका भी वही परिणाम न हो जो उनके अग्रगामियों का हुआ।

[2]विश्वासघात से तात्पर्य है जिस समुदाय से सन्धि हुई उससे यह भय कि वह सन्धि भंग कर दे। तथा على سواء (समानता की अवस्था में) का अर्थ है कि उन्हें उचित रूप से सूचित कर दो कि भविष्य में हमारे तुम्हारे मध्य कोई सन्धि नहीं। ताकि दोनों पक्ष अपनी-अपनी सुरक्षा के स्वयं उत्तरदायी हों, कोई एक पक्ष अज्ञान वश तथा धोखे में मारा न जाये।

[3]अर्थात यह सन्धि भंग यदि मुसलमानों की ओर से भी हो, तो भी यह विश्वासघात है, अर्थात जिसे अल्लाह तआला प्रेम नहीं करता। आदरणीय मुआविया (رضي الله عنه) तथा रूमियों के मध्य सन्धि थी । जब सन्धि की अवधि समाप्त होने के निकट आयी तो आदरणीय मुआविया (رضي الله عنه) ने रूम की धरती के निकट अपनी सेनायें एकत्रित करनी प्रारम्भ कर दीं उद्देश्य यह था कि सन्धि की अवधि समाप्त होते ही रूमियों पर आक्रमण कर दिया जाय। एक सहाबी अम्र बिन अबस: के ज्ञान में आदरणीय मुआविया की यह तैयारियाँ आईं तो इसे विश्वाघात कहा तथा ईशदूत (उन पर परमेश्वर की दया एवं शान्ति हो) का एक कथन प्रस्तुत करके उसे संधि भंग बताया, जिस पर आदरणीय मुआविया (رضي الله عنه) ने अपनी सेनाऐं वापस बुला लीं। (मुसनद अहमद भाग ५, पृ०१११, अबू दाऊद किताबुल जिहाद)

(६०) तथा उनसे (लड़ने के) लिये अपने सामर्थ्य भर शक्ति तैयार करो तथा घोड़े तैयार रखने की भी,[1] कि उस से तुम अल्लाह के शत्रुओं को भयभीत कर सको तथा उनके अतिरिक्त अन्यों को भी, जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें भली-भाँति जान रहा है, तथा जो कुछ भी अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दिया जायेगा तथा तुम्हारे अधिकारों का हनन नहीं किया जायेगा।

وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾

(६१) तथा यदि वे सन्धि की ओर झुकें, तो तू भी सन्धि की ओर झुक जा तथा अल्लाह पर भरोसा रख।[2] नि:संदेह वह सुनने वाला जानने वाला है।

وَإِن جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

---

[1] قوة की व्याख्या नबी करीम के कथनानुसार वाण चलाना है, (सहीह मुस्लिम किताबुल इमार: तथा अन्य हदीस की पुस्तकें) क्योंकि उस समय यह बहुत बड़ा युद्ध का हथियार था तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण शिक्षा थी, जिस प्रकार घोड़े युद्ध के लिए अति आवश्यक थे, जैसाकि इस आयत से भी स्पष्ट होता है परन्तु अब तीर चलाने तथा घोड़े की युद्ध में इतनी आवश्यकता तथा महत्व नहीं रहा। इसलिए ﴿وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم﴾ के अधीन आज कल के आधुनिक हथियार आते हैं (जैसे- मिजाईल, टैंक, बम, तथा युद्ध के विमान तथा पोत तथा युद्ध के लिए पनडुब्बियाँ आदि) जिनकी तैयारी आवश्यक है।

[2]अर्थात यदि परिस्थितियाँ युद्ध की अपेक्षा शान्ति के पक्ष में हों तथा शत्रु भी सन्धि करना चाहे तो सन्धि कर लेना कोई अनुचित नहीं। यदि सन्धि से शत्रु का उद्देश्य छल तथा धोखा देना हो तो भी चिन्ता की आवश्यकता नहीं, अल्लाह पर भरोसा रखो, नि:संदेह अल्लाह शत्रु के छल तथा षड़यन्त्र से भी सुरक्षित रखेगा, तथा वह आप के लिए पर्याप्त है। परन्तु सन्धि की यह आज्ञा उस परिस्थिति में है जब मुसलमानों की शक्ति क्षीण हो तथा सन्धि में इस्लाम तथा मुसलमानों का लाभ हो परन्तु जब परिस्थिति इसके विपरीत हो, मुसलमान शक्ति तथा साधन में श्रेष्ठ हों तथा काफ़िरों की शक्ति क्षीण हो तथा अपमानित हो तो इस परिस्थिति में सन्धि के बजाय काफ़िरों की शक्ति तथा गर्व को तोड़ना आवश्यक है। (सूर: मोहम्मद-३५) ﴿وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ﴾ (सूर: अल-अंफाल-३९)

وَإِنْ يُرِيدُوٓا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ الَّذِيٓ أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِۦ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा यदि वे तुझसे विश्वासघात करना चाहेंगे. । तो अल्लाह तुझे बस है, उसी ने अपनी सहायता से तथा ईमानवालों से तेरा समर्थन कराया है।

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّآ أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُۥ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٣﴾

(६३) तथा उन के दिलों में परस्पर प्रेम भी उसी ने उत्पन्न किया है। यदि आप धरती की सभी वस्तुऐं व्यय कर देते तो भी उनके दिलों में प्रेम की भावना नहीं उत्पन्न कर सकते थे[1] परन्तु अल्लाह ही ने उनके दिलों

---

[1]इन आयतों में अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ईमानवालों पर जो उपकार किये उनमें से एक बड़े उपकार का वर्णन किया है वह यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईमानवालों के द्वारा सहायता की, वे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दाहिने हाथ तथा रक्षक एवं सहायक बन गये। ईमानवालों पर यह उपकार किया कि इससे पूर्व जो उनमें दुश्मनी थी, उसे प्रेम में परिवर्तित कर दिया। पहले वे एक दूसरे के रक्त के प्यासे थे, परन्तु अब परस्पर मोहित हो गये। पहले उन में हार्दिक शत्रुता थी, परन्तु अब आपस में प्रेमी तथा मित्र बन गये, सदियों पुराने वैमनस्य को इस प्रकार समाप्त कर, आपसी प्रेम भाव उत्पन्न कर देना, यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा थी, तथा उसकी सामर्थ्य तथा इच्छा का प्रभाव था अन्यथा यह ऐसा कार्य था कि संसार भर के कोष व्यय करके भी यह अमूल्य रत्न प्राप्त न होता। अल्लाह तआला ने अपने इस उपकार को सूर: आले इमरान की आयत संख्या १०३ में फ़रमाया है ﴿إِذْ كُنتُمْ أَعْدَآءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ﴾ तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हुनैन के परिहार के विभाजित के अवसर पर अन्सार को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया, "हे अन्सार के गुट ! क्या यह सत्य नहीं कि तुम भटके हुए थे, अल्लाह ने मेरे माध्यम से तुम्हें मार्गदर्शन प्रदान किया, तुम निर्धन थे अल्लाह ने तुम्हें मेरे माध्यम से खुशहाली प्रदान की तथा तुम एक-दूसरे से पृथक-पृथक थे, अल्लाह ने मेरे माध्यम से तुम्हें आपस में जोड़ दिया।" नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम जो भी बात कहते अन्सार उसके उत्तर में यही कहते «اللهُ وَرَسُولُهُ أَمَنُّ». ("अल्लाह तथा उसके रसूल के उपकार इससे कहीं अधिक हैं।" (सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब गज़वतुत तायेफ़ सहीह मुस्लिम किताबुल ज़कात बाब ऐताऊल मुअल्लिफते कुलूबुहुम अलल इस्लाम)

में प्रेम डाल दिया निःसन्देह वह प्रभावी विज्ञाता है।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४)[*] हे नबी (ईशदूत) आप तथा आप के अनुयायी मुसलमानों को अल्लाह बस है।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ۭ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) हे ईशदूत ! मुसलमानों को जिहाद (धर्मयुद्ध) का प्रलोभन दो।[1] यदि तुम में से बीस धैर्यवान भी होंगे, तो भी दो सौ पर प्रभावी रहेंगे। तथा यदि तुम में से एक सौ होंगे तो एक हज़ार काफ़िरों पर प्रभावी रहेंगे।[2] इस कारण कि वे अज्ञानी लोग हैं।

اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۭ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ

(६६) अच्छा अब अल्लाह तुम्हारा बोझ हल्का करता है, वह भली-भाँति जानता है कि तुम में निर्बलता है, तो यदि तुम में से एक सौ धैर्यवान होंगे, तो वे दो सौ पर प्रभावी रहेंगे

---

[1] تحریض तहरीद का अर्थात प्रलोभन देने में अति करना अर्थात उत्तेजित करना एवं भड़काना है अतः तदानुसार ईशदूत युद्ध से पूर्व सहाबा को जिहाद (धर्मयुद्ध) का प्रलोभन देते थे तथा उस के महत्व की चर्चा करते जैसा कि "बद्र" के अवसर पर जब मूर्तिपूजक अपनी भारी संख्या तथा भरपूर संसाधनों के साथ रणक्षेत्र में उपस्थित हो गये तो आप ने फ़रमाया "ऐसी स्वर्ग में प्रवेश के लिये तैयार हो जाओ जिस का विस्तार आकाशों एवं धरती के समतुल्य है।" एक सहाबी उमैर पुत्र हमाम ने कहा आकाशों एवं धरती की चौड़ाई के बराबर ? आप ने फ़रमाया "हाँ" इस पर उन्होंने बख़, बख़ कहा अर्थात प्रसन्नता व्यक्त की तथा यह आशा व्यक्त की मैं भी स्वर्गगामियों में रहूँगा, आप ने फ़रमाया, तुम स्वर्गगामियों में होगे। फिर अपनी तलवार की खोल तोड़ दी और कुछ खजूरें निकाल कर खाने लगे। फिर शेष फेंक दी तथा कहा इन के खाने तक जीवित रहा तो यह लम्बी आयु होगी फिर आगे बढ़े एवं साहस दिखाने लगे यहाँ तक कि शहीद (बलिदान) हो गये। (सहीह मुस्लिम किताबुल इमारः अध्याय स्वर्ग का प्रमाण शहीद हेतु)

[2]यह मुसलमानों के लिए शुभ सूचना है कि तुम्हारे दृढ़ता से लड़ने वाले २० सैनिक दो सौ पर तथा सौ एक हज़ार पर प्रभावी रहेंगे।

तथा यदि तुम में से एक हज़ार होंगे तो, वह अल्लाह के आदेश से दो हज़ार पर प्रभावी रहेंगे।[1] तथा अल्लाह (तआला) धैर्यवानों के साथ है।[2]

وَإِن يَكُن مِّنكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوٓا۟ أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿٦٦﴾

(६७) नबी के हाथ में बन्दी नहीं चाहिए, जब तक कि देश में हिंसक युद्ध न हो जाये। तुम तो दुनिया के धन चाहते हो तथा अल्लाह का विचार परलोक का है।[3] तथा अल्लाह तआला प्रभावशाली विज्ञाता है।

مَا كَانَ لِنَبِىٍّ أَن يَكُونَ لَهُۥٓ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِى ٱلْأَرْضِ ۚ تُرِيدُونَ عَرَضَ ٱلدُّنْيَا وَٱللَّهُ يُرِيدُ ٱلْءَاخِرَةَ ۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾

---

[1]पिछला आदेश सहाबा पर भारी हुआ, क्योंकि इसका अर्थ था, एक मुसलमान दस काफ़िरों के लिए बीस दो सौ के लिए तथा एक सौ एक हज़ार के लिए पर्याप्त है। तथा काफ़िरों के सापेक्ष मुसलमानों की इतनी संख्या हो तो धर्मयुद्ध अनिवार्य तथा इससे बचना अनुचित है। अत: अल्लाह तआला ने कमी करके एक और दस के अनुपात को एक और दो का अनुपात कर दिया। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-अंफाल) अब इस अनुपात पर धर्म युद्ध आवश्यक तथा इससे कम पर अनावश्यक है।

[2]यह कह कर धैर्य एवं साहस से लड़ने के महत्व पर बल दिया कि अल्लाह की सहायता के लिये इस का तत्वाधान आवश्यक है।

[3]बद्र के रण में सत्तर मूर्तिपूजक हत हुये एवं इसी संख्या में बंदी बनाये गये। यह इस्लाम एवं अधर्म के बीच प्रथम रण था, अत: बंदियों के विषय में क्या नीति हो इस संदर्भ में आदेश पूर्ण रूपेण स्पष्ट न थे अत: ईशदूत ने इस विषय में परामर्श लिया कि उन्हें हत किया जाये अथवा प्रतिशोध में धन लेकर मुक्त कर दिया जाये। उचित की परिधि में दोनों का ही अवकाश था अत: दोनों विचारधीन आईं किन्तु कुछ अवसर पर उचितोचित से अलग स्थितियों तथा समय अनुसार अधिक उत्तम नीति अपनाने की आवश्यकता होती है, यहाँ भी आवश्यकता अति उत्तम नीति अपनाने की थी किन्तु उचित को देखते हुए न्यूनतम नीति अपनाई गई जिस पर अल्लाह का क्रोध उतरा। परामर्श में आदरणीय उमर आदि का विचार था कि अधर्म के प्रभाव को तथा गर्व को तोड़ने के लिये आवश्यक है कि इन बन्दियों को हत कर दिया जाये क्योंकि यह अधर्म एवं अधर्मियों के प्रमुख हैं यह स्वतंत्र होकर मुसलमानों के विरुद्ध अधिक षड़यन्त्र रचेंगे जब कि आदरणीय अबू बक्र आदि का विचार इस के विपरीत यह था कि प्रतिशोध में धन लेकर उन्हें मुक्त कर दिया जाये तथा उस धन से आगामी युद्ध की तैयारी की

(६८) यदि पहले से ही अल्लाह की ओर से बात लिखी न होती[1] तो जो कुछ तुमने लिया है, उसके विषय में तुम्हें कोई घोर यातना होती।

لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾

(६९) अत: जो वैध एवं पवित्र धन लड़ाई से प्राप्त करो उसे खाओ।[2] तथा अल्लाह से डरते रहो, नि:संदेह अल्लाह तआला अत्यधिक करूणामयी तथा कृपालु है।

فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾

(७०) हे नबी ! अपने हाथ के नीचे के बन्दियों से कह दो कि यदि अल्लाह तआला तुम्हारे

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ

जाये। ईशदूत ने इसी विचार को उचित समझा जिस पर यह आयत उतरीं जिनसे तात्पर्य यह है कि यदि देश में अधर्म का प्रभाव हो (जैसाकि उस समय अरब देश में था) तो अधर्मियों का रक्तपात करके अधर्म की शक्ति को तोड़ना आवश्यक है। इस बिन्दू को त्याग कर तुम ने धन लिया है तो तुम ने उत्तम की जगह न्यूनतम की नीति अपनाई जो तुम्हारी भूल है अन्त में जब अधर्म का बल टूट गया तो मुसलमानों के राज्य प्रमुख को अधिकार दे दिया गया कि बंदियों को चाहे तो हत कर दे अथवा धन लेकर मुक्त करे या मुसलमान बंदियों से बदल ले तथा परिस्थितियों के अनुसार दास बना ले इन सभी की अनुमति है।

[1]इसमें व्याख्याकारों में मतभेद है कि यह लिखी हुई बात क्या थी ? कुछ ने कहा कि इस से तात्पर्य युद्ध में प्राप्त धन-सामग्री को अवर्जित करने का आदेश है अर्थात चूँकि यह भाग्य लेख लिखी थी कि मुसलमानों को युद्ध में प्राप्त धन-सामग्री अवर्जित होगी। इसलिए तुम ने फ़िदया ले कर उचित कार्य किया। यदि ऐसा न होता तो फ़िदया लेने के कारण तुम्हें अत्यधिक प्रकोप सहन करना पड़ता। कुछ ने बद्र में शहीद होने वालों की क्षमा-याचना इस से तात्पर्य लिया है। कुछ ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति को प्रकोप न आने का कारण तात्पर्य लिये हैं आदि (विस्तार पूर्वक जानकारी के लिए देखें फ़तहुल क़दीर)

[2]इसमें युद्ध में प्राप्त माल-सामग्री को उचित तथा पवित्र ठहराकर फ़िदया को उचित होना बताया गया है जिससे इस बात का समर्थन होता है कि “लिखी हुई बात” शायद इससे तात्पर्य युद्ध में प्राप्त धन-सामग्री है।

فِىْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

दिलों में पुण्य विचार देखेगा,[1] तो जो कुछ तुमसे लिया गया है, उससे अच्छा तुम्हें प्रदान करेगा ।[2] तथा फिर पाप भी क्षमा कर देगा तथा अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है।

وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

(७१) तथा यदि वे तुझ से विश्वासघात का विचार करेंगे, तो यह तो इससे पूर्व स्वयं अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। अन्ततः उसने उन्हें पकड़वा दिया ।[3] तथा अल्लाह तआला ज्ञान वाला हिक्मत वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا

(७२) जो लोग (इस्लाम) धर्म के प्रति ईमान लाये एवं हिजरत (प्रस्थान) कर गये तथा अपने धन, प्राण से अल्लाह के मार्ग में जिहाद (धर्मयुद्ध) किये ।[4] एवं जिन लोगों ने उन को शरण तथा सहायता दी,[5] यह सब परस्पर

---

[1]अर्थात ईमान तथा इस्लाम स्वीकार कर लेने का विचार तथा उसे स्वीकार करने की भावना है।

[2]अर्थात जो फ़िदया तुमसे लिया गया है इससे अच्छा अल्लाह तआला तुम्हें इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात प्रदान करेगा। अतः ऐसा ही हुआ। अब्बास (رضي الله عنه) आदि जो उनके क़ैदियों में से थे, मुसलमान हो गये, तो उसके पश्चात अल्लाह ने उन्हें सांसारिक धन वैभव भी अधिक प्रदान किया।

[3]अर्थात मुख से इस्लाम स्वीकार कर लें परन्तु उद्देश्य धोखा देना हो, तो इससे पूर्व उन्होंने अविश्वास तथा मिश्रण (शिर्क) कर के क्या प्राप्त किया ? यही कि वह मुसलमानों के बन्दी बन गये, इसलिए यदि भविष्य में भी अनेकेश्वरवाद के मार्ग पर स्थिर रहे तो इससे अत्यधिक अपमान के सिवाय कुछ और नहीं मिलेगा।

[4]ये "सहाबा" मुहाजेरीन (जो मक्का नगरी त्याग कर मदीना आये) कहलाते हैं, जो महानता में सहाबा में सर्वश्रेष्ठ हैं।

[5]ये अन्सार कहलाते हैं (ये मदीना के मूल निवासी हैं) ये श्रेष्ठता के दूसरे स्थान पर हैं।

أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾

एक-दूसरे के मित्र हैं।[1] तथा जो ईमान लाये किन्तु हिजरत (प्रवास) नहीं किया तुम से उनकी तनिक भी मित्रता नहीं जब तक कि वह हिजरत (देश त्याग) न करें।[2] हाँ यदि वह धर्म के विषय में तुमसे सहायता माँगें, तो तुम पर सहायता देना आवश्यक है।[3] सिवाये उन लोगों के कि तुम्हारे तथा उनके बीच संप्रतिज्ञा है।[4] तथा जो भी तुम कर रहे हो अल्लाह भली प्रकार देख रहा है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٣﴾

(७३) तथा विश्वासहीन परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं, यदि तुम ने ऐसा न किया तो देश में आतंक होगा तथा घोर उत्पात उत्पन्न हो जायेगा।[5]

---

[1]अर्थात एक-दूसरे के सहायक तथा पक्षधर हैं। तथा कुछ ने कहा कि परस्पर के उत्तराधिकारी हैं जैसा कि हिजरत के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक-एक मुहाजिर तथा एक-एक अंसार के मध्य भाई चारा करा दिया था। यहाँ तक कि वे एक-दूसरे के उत्तराधिकारी भी बनते थे। (बाद में उत्तराधिकारी का आदेश निरस्त कर दिया गया)

[2]यह सहाबा की तीसरी श्रेणी है जो मुहाजिर तथा अंसार के अतिरिक्त हैं। ये मुसलमान होने के पश्चात अपने ही क्षेत्र तथा जाति में रहते थे। इसलिए फ़रमाया कि तुम्हारे पक्ष अथवा उत्तराधिकार के वे अधिकारी नहीं।

[3]मूर्तिपूजकों के विरुद्ध सहायता मांगे तो फिर उनकी सहायता करनी आवश्यक है।

[4]हाँ यदि वह तुम से ऐसे समुदाय के विरूद्ध सहायता माँगे जिस के तथा तुम्हारे मध्य संधि एवं युद्ध न करने की संप्रतिज्ञा हो तो फिर मुसलमानों की सहायता की अपेक्षा संविदा का पालन आवश्यक है।

[5]अर्थात जिस प्रकार अधर्मी परस्पर मित्र एवं पक्षधर हैं उसी प्रकार यदि तुम भी ईमान के आधार पर परस्पर पक्षपात तथा कृतघ्नों से सम्बन्ध विच्छेद न रखा तो, फिर बड़ा उपद्रव होगा। और वह यह कि ईमानवालों तथा काफ़िरों में आपसी मेल-मिलाप से

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٤﴾

(७४) जो लोग ईमान लाये तथा प्रवास किये एवं अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध किये तथा जिन्होंने आश्रय दिया तथा सहायता पहुँचायी। यही लोग सच्चे ईमानवाले हैं, उनके लिए क्षमा तथा ससम्मान जीविका है।[1]

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ ۚ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾

(७५) तथा जो लोग इसके पश्चात ईमान लाये तथा प्रवास किये तथा तुम्हारे साथ होकर धर्मयुद्ध किये। तो यह लोग भी तुम में से ही हैं।[2] तथा जाति सम्बन्धी वाले उनमें से परस्पर एक-दूसरे के अधिक समीपवर्ती हैं अल्लाह के आदेश में,[3] निःसंदेह अल्लाह सर्वज्ञ है।

धर्म के सम्बन्ध में शंका तथा आलस्य उत्पन्न होगा। कुछ ने ﴿بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ﴾ से उत्तराधिकारी होना भाव निकाला है तथा अर्थ यह है कि एक मुसलमान काफ़िर का तथा काफ़िर मुसलमान का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता। जैसाकि हदीस में इसको अधिक स्पष्ट रूप से समझाया गया है। यदि तुम उत्तराधिकार में कुफ़्र तथा ईमान पर ध्यान न देकर मात्र जाति संबन्ध को समक्ष रखोगे, तो इससे बड़ा उत्पात तथा अशांति पैदा होगी।

[1]यह उपरोक्त मुहाजेरीन तथा अंसार के दो गुटों की चर्चा है, जिसका वर्णन पहले गुज़र चुका है। यहाँ पुनः वर्णन उनकी प्रधानता व्यक्त करने के लिए है। जब कि उनकी पूर्व चर्चा परस्पर सहायता एवं पक्षपात की अनिवार्यता के वर्णन के लिए थी।

[2]यह एक चौथे गुट की चर्चा है, जो श्रेष्ठता में पहले दो गुटो के पश्चात तथा तीसरे गुट, जिन्होंने हिजरत नहीं की थी से प्रथम है।

[3]भाईचारे तथा शपथ के आधार पर उत्तराधिकार में जो भागीदार बनते थे। इस आयत में उसे निरस्त कर दिया गया है अब उत्तराधिकारी वही होगा जो जिसका वंशीय अथवा ससुराली सम्बन्ध होगा। अल्लाह की किताब अथवा अल्लाह के आदेश से तात्पर्य है कि 'सुरक्षित पुस्तक' में मूल आदेश यही था। परन्तु भाईचारे के आधार पर अस्थाई रूप से एक-दूसरे को उत्तराधिकारी बना दिया गया था, जो अब आवश्यकता समाप्त हो जाने के पश्चात अनावश्यक हो गया तथा मूल आदेश लागू कर दिया गया।

सूरतुत्तौब:-९

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ

सूर: तौब:* मदीने में उतरी तथा इसमें एक सौ उनत्तीस आयतें एव सोलह रुकूअ हैं।

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١

(१) (यह) अल्लाह एवं उसके रसूल (दूत) की ओर से विमुक्ति की घोषणा है[1] उन मिश्रण-वादियों के संबन्ध में जिन से तुम ने संप्रतिज्ञा (मुआहद:) की है।

فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ

(२) अत: (हे मिश्रणवादियो !) तुम देश में चार महीने यातायात कर लो[2] तथा जान लो

(*) **नामकरण के कारण :-** इसके व्याख्याकारों ने कई नामों का वर्णन किया है, परन्तु अधिक प्रसिद्ध दो नाम हैं प्रथम 'तौबा' इस लिए कि इसमें ईमानवालों की तौबा स्वीकार होने का वर्णन है। द्वितीय नाम 'बराअत' है। इसलिए कि इसमें मूर्तिपूजकों से सन्धि से मुक्ति की घोषणा की गयी है। यह क़ुरआन मजीद की एक ही सूर: है जिसके प्रारम्भ में बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम नहीं लिखा है इसके भी विभिन्न कारण भाष्य पुस्तकों में लिखे हुए हैं। परन्तु अधिक उचित बात यह लगती है कि सूर: अंफ़ाल तथा सूर: तौबा इन दोनों के विषय में समानता पायी जाती है अत: यह सूर: अंफ़ाल की पूरक अथवा शेष है। यह सात बड़ी सूरतों में से सातवीं बड़ी सूर: है, जिन्हें सबआ तिवाल कहा जाता है।

[1]मक्का विजय के पश्चात ९ हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अबू बक्र, आदरणीय अली (رضي الله عنهما) तथा अन्य कुछ सहचरों को यह आयतें तथा आदेश दे कर भेजा ताकि वह मक्के में उनको जन-सामान्य के समक्ष घोषित कर दें। उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार घोषणा कर दी कि कोई व्यक्ति अब (काबा) की नंगी परिक्रमा नहीं कर सकेगा। बल्कि अगले वर्ष से किसी मूर्तिपूजक को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के हज की आज्ञा नहीं प्रदान की जायेगी। (सहीह बुख़ारी संख्या १३६९, मुस्लिम संख्या ९८३)

[2]यह मुक्ति की घोषणा उन मूर्तिपूजकों के लिए थी जिन से बिना अवधि की सन्धियाँ थीं अथवा चार महीने से कम की थीं अथवा जिनसे चार महीने अथवा उससे अधिक की तो थीं, परन्तु उनकी ओर से सन्धि के नियमों का पालन नहीं हो रहा था। उन सभी को चार महीने की अवधि तक मक्का में निवास का समय दे दिया गया। इसका अर्थ यह था कि यदि यह चार महीने के अन्दर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें, तो उन्हें यहाँ रहने

وَاعْلَمُوٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ②

कि तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते तथा अल्लाह विश्वासहीनों को निरादर करने वाला है।[1]

وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ۭ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۭ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ ③

(३) अल्लाह एवं उस के रसूल (दूत) की ओर से महा हज के दिन [2] स्पष्ट घोषणा है कि अल्लाह मिश्रणवादियों से असंतुष्ट है तथा उसका दूत भी, यदि अब भी तुम क्षमा-याचना कर लो तो तुम्हारे लिये उत्तम है तथा यदि तुम मुख फेरो तो जान लो कि तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकोगे तथा विश्वासहीनों (काफिरों) को घोर यातना का शुभ समाचार दे दो।

की आज्ञा होगी अन्यथा उनके लिये यह आवश्यक होगा कि वे अरब महाद्वीप से निकाल जायें। यदि इन दोनों नियमों में से वे कोई भी नहीं अपनाते हैं, तो उनकी गणना उन काफ़िरों में होगी जिनसे लड़ना मुसलमानों के लिए आवश्यक होगा, ताकि अरब महाद्वीप अनेकेश्वरवाद तथा मूर्तिपूजा से पवित्र हो जाये।

[1]अर्थात यह समय इसलिए नही दिया जा रहा है कि इस समय तुम्हारे विरुद्ध कार्यवाही सम्भव नहीं है, अपितु इसका उद्देश्य भी तुम्हारी भलाई तथा लाभ है, जो तौबा करके मुसलमान होना चाहे, तो वह मुसलमान हो जाये। वरन् याद रखो कि तुम्हारे लिए अल्लाह ने अपने विवेक से भाग्य में लिख दिया है, उसे तुम टाल नहीं सकते तथा अल्लाह की ओर से उतारे गये अपमान तथा अनादर से तुम बच नहीं सकते।

[2]सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम तथा अन्य सहीह हदीस की किताबों से सिद्ध है कि हज अकबर के दिन से तात्पर्य योमुन्नहर (अर्थात १० ज़िलहिज्जा) का दिन है। (त्रिमिज़ी संख्या ९५७ बुख़ारी संख्या ४६५५, मुस्लिम संख्या ९८२) उसी दिन मिना के स्थान पर मुक्ति की घोषणा की गयी। १० ज़िलहिज्जा को हज अकबर इसलिए कहा जाता है कि इस दिन हज की सबसे अधिक तथा विशेष धार्मिक रीतियों को अदा किया जाता है। तथा जन मानस उमरे को हज असग़र कहा करते थे। इसलिए उमरे से श्रेष्ठ करने के लिए हज को महा हज (अकबर) कहा गया। लोगों में जो यह प्रसिद्ध है कि शुक्रवार को आये वह हज अकबर है, निराधार है।

إِلَّا الَّذِينَ عَٰهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ④

(४) परन्तु वह मिश्रणवादी जिन से तुमने संविदा कर लिया है तथा उन्होंने तुम्हें तनिक भी हानि नहीं पहुंचाई तथा तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता नहीं की तो तुम भी संविदा की अवधि उनके साथ पूरी करो। नि:सन्देह अल्लाह परहेज़गारों से प्रेम करता है।[1]

فَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ

(५) फिर प्रतिष्ठित महीनों[2] के व्यतीत होते ही मूर्तिपूजकों को जहाँ पाओ वध करो।[3]

---

[1]मूर्तिपूजकों की यह चौथी श्रेणी है इनसे जितनी अवधि की सन्धि थी उन्हें उतने समय रहने की आज्ञा दी गई। क्योंकि उन्होंने सन्धि के नियमों का पालन किया तथा उसके विरुद्ध कोई कार्य नहीं किया, इसलिए मुसलमानों के लिए भी उसके पालन को आवश्यक कहा गया।

[2]इन प्रतिष्ठित महीनों से तात्पर्य क्या है ? इसमें मतभेद है। एक विचार तो यह है कि इससे तात्पर्य वही चार महीने हैं जो सम्मानित हैं। अर्थात मुहर्रम, रजब, ज़ीकाद: तथा ज़िलहिज्जा: । तथा विमुक्ति की घोषणा १० ज़िलहिज़्जा को की गयी। इस आधार पर यह हुआ कि जैसे उन्हें केवल पचास दिन का समय दिया गया। क्योंकि सम्मानित महीनों के व्यतीत होने के पश्चात मूर्तिपूजकों को पकड़ कर वध करने की आज्ञा दे दी गयी थी। परन्तु इमाम इब्ने कसीर के अनुसार यहाँ निषेधित महीने नहीं हैं। अपितु १० ज़िलहिज़्जा से १० रबीउस्सानी तक के चार महीने तात्पर्य हैं। उन्हें सम्मानित महीने इसलिए कहा गया है कि विमुक्ति की घोषणा के आधार पर इन चार महीनों में उन मूर्तिपूजकों से लड़ने तथा उनके विरुद्ध किसी भी कार्यवाही की आज्ञा नहीं थी। मुक्ति की घोषणा के आाधार पर यह तर्क अधिक उचित प्रतीत होता है।

[3]कुछ व्याख्याकारों ने इस आदेश को सामान्य माना है अर्थात हरम के क्षेत्र अथवा उसके बाहर के क्षेत्र में जहाँ भी पाओ मारो। तथा कुछ व्याख्याकारों ने सूर: बक़र: की यह आयत वर्णन किया है।

﴿ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِن قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ﴾

"मस्जिदे हराम के निकट उनसे न लड़ो। यहाँ तक कि वे स्वयं तुम से न लड़ें, यदि वे लड़ें तो तुम्हें भी उनसे लड़ने की आज्ञा है।" (सूर: अल-बक़र:-१९१)

इस आयत से विशेष निर्धारण करके केवल हरम की सीमा से बाहर के क्षेत्र में वध करने की आज्ञा प्रदान की गयी है। (इब्ने कसीर)

فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوْا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤

उन्हें बन्दी बनाओ ।[1] उनका घेराव करो तथा उनके ताक में हर घाटी में जा बैठो ।[2] परन्तु यदि वे क्षमा-याचना कर लें तथा नमाज़ स्थाई रूप से निरन्तर पढ़ने लगें तथा ज़कात अदा करने लगें, तो तुम उनका मार्ग छोड़ दो ।[3] निःसंदेह अल्लाह तआला क्षमा-शील कृपालु है ।

وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهٗ ۚ

(६) यदि मिश्रणवदियों में से कोई तुझसे शरण माँगे तो, तू उसे शरण प्रदान कर दे यहाँ तक कि वह अल्लाह का कथन सुन ले फिर उसे उसके शान्ति स्थान तक पहुँचा दे ।[4] यह इस

---

[1]अर्थात उन्हें बन्दी बना लो अथवा वध कर दो ।

[2]अर्थात इस बात पर बस न करो कि वह जहाँ मिलें कार्यवाही करो बल्कि जहाँ-जहाँ उनके सुरक्षा स्थान दुर्ग अथवा शरणागार हों, वहाँ-वहाँ उनकी ताक में रहो । यहाँ तक कि तुम्हारी आज्ञा के बिना उनके लिए आवागमन सम्भव न रहे ।

[3]अर्थात उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही न की जाये क्योंकि वे मुसलमान हो गये हैं । अर्थात इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात नमाज़ निरन्तर पढ़ना तथा ज़कात देना अनिवार्य है, यदि कोई व्यक्ति इनमें से कोई एक कर्त्तव्य छोड़ देता है, तो वह मुसलमान नहीं समझा जायेगा । जिस प्रकार आदरणीय अबू बक्र (رضي الله عنه) ने ज़कात अदा न करने वालों के विरुद्ध इसी आयत से अर्थ प्रमाणित पाया तथा फ़रमाया:

(واللهِ لأُقَاتِلَنَّ مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ الصَّلٰوةِ والزَّكَاةِ)

"अल्लाह की सौगन्ध मैं उन लोगों से अवश्य लड़ूँगा जो नमाज़ तथा ज़कात के मध्य अन्तर करेंगे अर्थात नमाज़ को पढ़ें परन्तु ज़कात अदा करने से भागें ।" (बुख़ारी व मुस्लिम बहवाला मिश्कात किताबुज़ ज़कात फ़सले सालिस)

[4]इस आयत में उपरोक्त विरोधी मूर्तिपूजकों के सम्बन्ध में एक छूट प्रदान की गयी है कि यदि कोई मूर्तिपूजक शरण माँगे तो उसे शरण प्रदान कर दो अर्थात उसे अपनी सुरक्षा में सुरक्षित रखो ताकि कोई अन्य मुसलमान उसे मार न सके । ताकि उसे

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ ۝

लिए कि वह लोग अज्ञानी हैं ।[1]

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝

(७) मूर्तिपूजकों का वचन अल्लाह तथा उस के रसूल के निकट कैसे रह सकता है, सिवाय उनके जिन से संविदा तुम ने मस्जिदे हराम के पास किया है ।[2] तो जब तक वे लोग तुम से सन्धि निभायें, तुम भी उन से वचन का निर्वाह करो । अल्लाह (तआला) परहेज़गार लोगों से प्रेम करता है ।[3]

كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ

(८) उनके वचनों का क्या भरोसा, उनको यदि तुम पर प्रभुत्व मिल जाये तो न ये सम्बन्ध का विचार करें न सन्धि वचन का ।[4] अपने

अल्लाह की बातें सुनने तथा इस्लाम धर्म स्वीकार करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाये । परन्तु यदि अल्लाह की बातें सुनने के पश्चात भी वह इस्लाम धर्म नहीं स्वीकार करता है, तो उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दो । अर्थात अपनी सुरक्षा का कर्त्तव्य अन्तिम क्षण तक निभाना है । जब तक वह अपनी सुरक्षित स्थान तक नहीं पहुँच जाता उसकी सुरक्षा का दायित्व तुम्हारे ऊपर है ।

[1]अर्थात शरणार्थियों को शरण की छूट इसलिए प्रदान की गयी है क्योंकि यह लोग अज्ञानी हैं सम्भव है अल्लाह तथा उसके रसूल की बातें उनके ज्ञान में आयें तथा मुसलमानों का आचरण तथा व्यवहार वह देखें, तो इस्लाम धर्म स्वीकार करके परलोक की यातना से बच जायें । जिस प्रकार हुदैबिया की सन्धि के पश्चात बहुत से काफ़िर मदीना आते-जाते रहे, तो मुसलमानों के व्यवहार तथा आचरण को देख कर इस्लाम धर्म को समझने में बहुत सहायता मिली तथा बहुत से लोग मुसलमान हो गये ।

[2]यह नकारात्मक प्रश्न है, अर्थात जिन मूर्तिपूजकों से तुम्हारी सन्धि है, उनके अतिरिक्त अब किसी से सन्धि शेष नही रही है ।

[3]अर्थात वचन निभाना, अल्लाह के समक्ष प्रिय बात है । इसलिए सम्बन्ध में सावधानी आवश्यक है ।

[4] كَيْف (कैफ़) का अर्थ है 'कैसे' यह प्रश्न भी अस्वीकृति को बल देने के लिए प्रयोग हुआ है إِلّ (इल्ल) का अर्थ नाता (सम्बन्ध) तथा ذمّة (ज़िम्म:) का अर्थ वचन हैं अर्थात उन मूर्तिपूजकों की बातों का क्या भरोसा ? जबकि उनकी दशा यह है कि यदि ये तुम

يُرْضُوْنَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَٰسِقُونَ ⑧

मुख से ये तुम्हें परिचा रहे हैं परन्तु इनके हृदय नहीं मानते और उनमें से अधिकतर तो (दुराचारी) फ़ासिक़ हैं ।

اشْتَرَوْا بِآيَٰتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑨

(९) उन्होंने अल्लाह की आयतों को अति कम मूल्य में बेच दिया तथा उसके मार्ग से रोका। अत्यधिक बुरा है जो यह कर रहे हैं।

لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ⑩

(१०) यह तो किसी मुसलमान के पक्ष में किसी सम्बन्ध का अथवा सन्धि का कदापि चिन्ता नहीं करते, यह हैं ही अतिक्रमणकारी।[1]

فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَآتَوُا الزَّكَوٰةَ فَإِخْوَٰنُكُمْ فِي الدِّينِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْآيَٰتِ لِقَوْمٍ

(११) अब भी यदि ये क्षमा-याचना (पश्चाताप) कर लें तथा नमाज़ निरन्तर पढ़ने लगें तथा ज़कात देते रहें, तो तुम्हारे धर्म भाई हैं।[2]

पर विजयी हों तो किसी सम्बन्ध अथवा वचन की कोई चिन्ता नहीं करेंगे। कुछ व्याख्याकारों का मत है कि प्रथम कैफ़ का अर्थ मूर्तिपूजक तथा द्वितीय का अर्थ यहूदी हैं क्योंकि उनकी विशेषता वर्णन की गयी है कि वे अल्लाह की आयतों को तुच्छ मूल्य पर विक्रय कर देते हैं। तथा यह दुर्गुण यहूदियों का ही रहा है।

[1]बार-बार स्पष्टीकरण का उद्देश्य मूर्तिपूजकों तथा यहूदियों की इस्लाम धर्म से शत्रुता तथा उनके दिलों में बसे द्वेष भावों को प्रदर्शित करना है।

[2]नमाज़, तौहीद (एकेश्वरवाद में विश्वास) तथा रिसालत के स्वीकार करने के पश्चात, इस्लाम का सबसे श्रेष्ठ तथा विशेष मूल स्तम्भ है, जो अल्लाह का अधिकार है, उसमें अल्लाह की उपासना के विभिन्न रूप हैं। इसमें हाथ बाँधकर खड़ा होना है, दण्डवत तथा माथा टेकना है, प्रार्थना तथा अर्चना है, अल्लाह की श्रेष्ठता तथा प्रताप का तथा अपनी निर्बलता तथा विवशता का प्रदर्शन है। उपासना की यह सारी विधियाँ तथा रूप मात्र अल्लाह के लिए योग्य हैं। नमाज़ के पश्चात द्वितीय कर्त्तव्य ज़कात अदा करना है जिसमें वंदनीय पथ होने के साथ-साथ दूसरे मनुष्यों के प्रति उनके मौलिक अधिकार भी सम्मिलित हैं। ज़कात से समाज तथा उसकी जाति के निर्धन अनाथ, अपंग, असहाय, लोग लाभ उठाते हैं इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनों में भी तौहीद की गवाही देने के पश्चात उन्हीं दो बातों को अधिक स्पष्ट रूप एवं विशेषता से वर्णित किया गया है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मुझे आदेश दिया गया है कि मै लोगों से युद्ध करूँ, यहाँ तक कि वे इस बात की

يَعْلَمُونَ ⑪

हम तो जानकारों के लिए अपनी आयतों को सविस्तार वर्णन कर रहे हैं।

وَإِنْ نَّكَثُوٓا أَيْمَانَهُمْ مِّنْ بَعْدِ
عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ
فَقَاتِلُوٓا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ إِنَّهُمْ
لَآ أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ⑫

(१२) यदि ये लोग प्रतिज्ञा तथा वचन के पश्चात भी अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दें तथा तुम्हारे धर्म की निन्दा भी करें, तो तुम भी उन अधर्मियों के प्रमुखों से भिड़ जाओ। उनकी सौगन्ध कोई वस्तु नहीं, संभव है कि इस प्रकार वह रुक जायें।[1]

أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوٓا
أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ
الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ

(१३) तुम उन लोगों के सिर कुचलने के लिए क्यों तैयार नहीं होते।[2] जिन्होंने अपनी प्रतिज्ञाओं को तोड़ दिया तथा (अन्तिम)

गवाही दें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तथा मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के संदेशवाहक हैं। तथा नमाज़ स्थापित करें तथा ज़कात दें।" (सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान बाब फइन ताबू व अक़ामुस्सलात, मुस्लिम किताबुल ईमान बाबुल अमरे बिक़ितालिन्नास......) आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद का कथन है (وَمَنْ لَّمْ يُزَكِّ فَلَا صَلَاةَ لَهُ) 'जिसने ज़कात नहीं दी, उसकी नमाज़ भी नहीं होती।'

[1]أَيمان (ऐमान) (यमीन) का बहुवचन है, जिसका अर्थ 'सौगन्ध है'। أئمة (अइम्मा) إمام (इमाम) का बहुवचन है। अर्थ मुखिया, नेता है। अर्थ यह है कि यदि ये लोग वचन तोड़ दें, तथा धर्म को कलंकित करने का प्रयत्न करें, तो प्रत्यक्ष रूप से यह सौगन्ध भी खायें तो उनका कोई भरोसा नहीं। काफ़िरों के इन नेताओं से युद्ध करो। सम्भव है कि वे इस प्रकार अपने कुफ़्र से रुक जायें। इससे कुछ लोगों ने यह अर्थ निकाला है कि यदि इस्लामी राज्य में निवास करने वाले मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य धर्मों का अनुयायी यदि वचन अथवा सन्धि को नहीं तोड़ता परन्तु केवल इस्लाम धर्म को कलंकित करता है तो उसका वध नहीं किया जायेगा। क्योंकि क़ुरआन ने उनसे युद्ध करने के लिए दो चीज़ें वर्णित की हैं, इसलिए जब तक दोनों चीज़ों को वे नहीं करेंगे वे वध कर डलाने के अधिकारी नहीं होंगे परन्तु इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई तथा अन्य इमामों का मत है कि धर्म को कलंकित करने का प्रयत्न ही वचन तोड़ने के समान है इसलिए उनके निकट वे दोनों चीज़ें आ जाती हैं, अत: इस शरणार्थी का वध उचित है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]ألا का प्रयोग उत्तेजित करने के लिए किया जाता है, अल्लाह तआला मुसलमानों को धर्मयुद्ध के लिये प्रलोभन दे रहा है।

مَرَّةٍ ؕ اَتَخۡشَوۡنَهُمۡ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنۡ تَخۡشَوۡهُ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۳﴾

ईशदूत (नराशंस) को देश से निकाल देने की सोच में हैं।[1] तथा स्वय ही प्रथम बार उन्होंने तुम से छेड़ की है।[2] क्या तुम उनसे डरते हो ? अल्लाह ही को सबसे अधिक अधिकार है कि तुम उससे डर रखो यदि तुम ईमान वाले हो।

قَاتِلُوۡهُمۡ يُعَذِّبۡهُمُ اللّٰهُ بِاَيۡدِيۡكُمۡ وَيُخۡزِهِمۡ وَيَنۡصُرۡكُمۡ عَلَيۡهِمۡ وَيَشۡفِ صُدُوۡرَ قَوۡمٍ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۴﴾

(१४) उनसे तुम युद्ध करो, अल्लाह तआला तुम्हारे हाथों उनको यातना देगा, उन्हें अपमानित तथा निरादर करेगा, तुम्हें उन पर सहायता देगा तथा मुसलमानों के दिलों को ठन्डा करेगा।

وَيُذۡهِبۡ غَيۡظَ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ وَيَتُوۡبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ ؕ

(१५) तथा उनके दिलों के दुख तथा क्रोध को दूर करेगा,[3] तथा वह जिसकी ओर चाहता है

---

[1]इससे तात्पर्य दारुननदवा है जिसमें मक्का के प्रमुखों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देश निकाला देने, बन्दी बनाने अथवा हत्या करने के प्रस्ताव पर विचार किया।

[2]इससे तात्पर्य बद्र के युद्ध में मक्का के मूर्तिपूजकों का व्यवहार है कि वे अपने व्यापारिक क़ाफ़िले की सुरक्षा के लिए गये। परन्तु इसके उपरान्त कि उन्होंने देख लिया कि क़ाफ़िला बच कर निकल गया है, वह बद्र के स्थान पर मुसलमानों से लड़ने की तैयारी तथा छेड़खानी करते रहे, जिसके परिणामस्वरूप अन्त में युद्ध होकर ही रहा। अथवा इससे तात्पर्य क़बीला बनी बक्र की वह सहायता है जो क़ुरैश ने उनकी की, जब कि उन्होंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सन्धि किये हुए क़बीला पर चढ़ाई की थी, जब कि क़ुरैश की यह सहायता सन्धि के विरुद्ध थी।

[3]अर्थात जब यह मुसलमान कमज़ोर थे, तो यह मूर्तिपूजक उन पर अत्याचार करते थे, जिसके कारण मुसलमानों के हृदय उन से अत्यधिक दुखी तथा घायल थे। जब मुसलमानों के हाथों वह मारे जायेंगे तथा अनादर तथा अपमान उनके भाग्य में आयेगी, तो प्राकृतिक बात है कि इससे उत्पीड़ित एवं दुखी मुसलमानों के दिलों को ठंढक मिलेगी तथा मानसिक क्रोध का निवारण होगा।

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑮

दया से आकर्षित होता है, तथा अल्लाह तआला ज्ञाता एवं विवेकी है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑯

(१६) क्या तुम यह समझ बैठे हो कि तुम छोड़ दिये जाओगे?[1] यद्यपि कि अल्लाह (तआला) ने तुम में से उन्हें श्रेष्ठ नहीं किया है जो धर्मयुद्ध के सैनिक हैं।[2] तथा जिन्होंने अल्लाह के तथा उसके रसूल के एवं ईमानवालों के अतिरिक्त किसी को मित्र नहीं बनाया।[3] और अल्लाह (तआला) भली-भाँति जानने वाला है जो तुम कर रहे हो।[4]

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۗ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ

(१७) असम्भव है कि मूर्तिपूजक अल्लाह की मस्जिद को आबाद करें, जबकि हाल यह है कि यह अपने अविश्वास के स्वयं साक्षी हैं।[5]

---

[1]अर्थात बिना किसी परीक्षा के।

[2]जैसे कि धर्मयुद्ध के द्वारा परीक्षा ली गयी।

[3]وَلِيجَة (वलीजः) घनिष्ठ तथा हार्दिक मित्र को कहते हैं। मुसलमानों को चूँकि अल्लाह तथा उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के शत्रुओं से प्रेम करने तथा मित्रता पूर्ण सम्बन्ध रखने से भी रोका गया था, अतः यह भी परीक्षा का एक साधन था, जिससे निःस्वार्थी ईमानवालों को अन्यों से अलग किया गया।

[4]अर्थ यह है कि अल्लाह को तो पहले ही हर वस्तु का ज्ञान है, परन्तु धर्मयुद्ध में बुद्धिमत्ता यह है कि इससे स्वार्थी तथा निःस्वार्थी आज्ञाकारी तथा अवज्ञाकारी भक्त स्पष्ट हो जाते हैं, जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति देख तथा पहचान लेता है।

[5]مساجد الله से तात्पर्य मस्जिदे हराम है। बहुवचन शब्द इसलिए प्रयोग किया गया है कि दुनिया की सभी मस्जिदों का यह केन्द्र (क़िबला) है। अथवा अरबों में एक वचन के लिए बहुवचन का प्रयोग भी उचित कहा जाता है। अर्थ यह है कि अल्लाह के घर (अर्थात मस्जिदे हराम) का निर्माण करना अथवा बसाना मुसलमानों का काम है, न कि उनका जो कुफ़्र तथा शिर्क करते हैं। तथा उसको स्वीकार भी करते हैं। जैसे कि वे तलबिया में (धर्मघोष) कहा करते थे «لَبَّيْكَ! لاَ شَرِيْكَ لَكَ، إِلاَّ شَرِيْكًا هُوَ لَكَ، تَمْلِكُهُ وَمَا مَلَكَ»

أَعْمَالُهُمْ ۚ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ⑰

उनके कर्म नष्ट तथा बेकार हैं, तथा वे स्थाई रूप से नरकवासी हैं ।[1]

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ ۖ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَن يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ⑱

(१८) अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करते हैं, जो अल्लाह पर तथा प्रलय के दिन पर ईमान रखते हों । नमाज़ निरन्तर पढ़ते हों, ज़कात देते हों, और अल्लाह के अतिरिक्त किसी से न डरते हों, सम्भव है कि यही लोग नि:संदेह मार्गदर्शन प्राप्त हैं ।[2]

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوُونَ

(१९) क्या तुम ने हाजियों को पानी पिला देना तथा मस्जिदे हराम की सेवा करना उस के समान कर दिया है जो अल्लाह पर तथा प्रलय के दिन पर ईमान लाये तथा अल्लाह के मार्ग में धर्म युद्ध किया, यह अल्लाह के

(सहीह मुस्लिम बाबुत तलबीय:) अथवा इससे तात्पर्य वह स्वीकार्य है जो प्रत्येक धर्मावलम्बी करता है कि मैं यहूदी, ईसाई, साबई अथवा मूर्तिपूजक हूँ । (फ़तहुल क़दीर)

[1]अर्थात उनके वे कर्म जो देखने में पुण्य लगते हैं, जैसे खाना-ए-काअबा की परिक्रमा, उमरा तथा हाजियों की सेवा आदि । परन्तु ईमान के बिना वह ऐसे वृक्ष के समान हैं जो बिना छाया तथा बिना फल के हो अथवा वे उन फूलों के समान हैं जिनमें सुगन्ध नहीं है ।

[2]जिस प्रकार हदीस में भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« إِذَا رَأَيْتُمُ الرَّجُلَ يَعْتَادُ الْمَسْجِدَ، فَاشْهَدُوا لَهُ بِالإِيمَانِ » .

"जब तुम देखो कि कोई मस्जिद में नियमित रूप से आता है, तो तुम उसके ईमान की गवाही दो ।" (त्रिमिज़ी तफ़सीर सूर: तौब:)

क़ुरआन करीम में यहाँ पर भी अल्लाह पर ईमान तथा आख़िरत पर ईमान के पश्चात जिन कर्मों का वर्णन किया गया है वह नमाज़ ज़कात तथा अल्लाह से डरना है जिससे नमाज़, ज़कात तथा तक़्वा (अल्लाह के डर) का महत्व प्रकाशित है ।

عِندَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑲

निकट समान नहीं[1] तथा अल्लाह (तआला) अन्यायियों को मार्ग नहीं दिखाता है ।[2]

---

[1]मूर्तिपूजक हाजियों को पानी पिलाने तथा मस्जिदे हराम के देख भाल करने का जो कार्य करते थे उस पर उन्हें बड़ा गर्व था तथा इसके सापेक्ष वे ईमान तथा धर्मयुद्ध को कोई विशेषता नहीं देते थे। जिसकी विशेषता मुसलमानों में थी। अल्लाह ने फ़रमाया क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने तथा मस्जिदे हराम का प्रवन्ध करने को अल्लाह पर ईमान तथा अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध के समान समझते हो ? याद रखो, अल्लाह के निकट ये समान नहीं हैं। अपितु मूर्तिपूजक का कोई भी कर्म स्वीकार नहीं चाहे वह पुण्य के रूप में ही हो जैसाकि इससे पूर्व की आयत के वाक्य حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ में स्पष्ट किया जा चुका है। कुछ कथनों में इसके उतरने का कारण मुसलमानों की आपस की बातचीत है कि एक रोज कुछ मुसलमान मिम्बरे नववी के निकट एकत्रित थे, उन में से एक ने कहा कि इस्लाम लाने के पश्चात मेरे निकट सबसे श्रेष्ठ कर्म हाजियों को पानी पिलाना है, दूसरे ने कहा मस्जिदे हराम आवाद करना, तीसरे ने कहा बल्कि अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करना इस सभी से श्रेष्ठ है, जो तुम ने वर्णन किये हैं। आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने जब उनमें आपस में यह बात करते हुए सुना तो डाँटा तथा फ़रमाया कि मिम्बरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट आवाजें ऊँची करके मत बात करो । यह शुक्रवार का दिन था। हदीस को कहने वाले आदरणीय नौमान विन बशीर (رضي الله عنه) कहते हैं कि मैं शुक्रवार की नमाज के पश्चात नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा अपनी आपस की इस बातचीत के विषय में पूछा । जिस पर यह आयत उतरी। (सहीह मुस्लिम किताबुल इमार: बाब फ़ज़लिल जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह) जिसमें जैसाकि यह स्पष्ट कर दिया गया है कि अल्लाह पर ईमान, आख़िरत पर ईमान, तथा अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध सर्वश्रेष्ठ तथा विशेषता वाले कर्म हैं। वार्तालाप के माध्यम से वास्तविक विशेषता तथा श्रेष्ठता तो धर्मयुद्ध का वर्णन करना था, परन्तु अल्लाह पर ईमान के विना किसी प्रकार के कर्म स्वीकार नहीं किये जाते, इसलिए सर्वप्रथम अल्लाह पर ईमान का वर्णन किया गया। अत: इससे यह ज्ञात हुआ कि इसके उतरने का कारण केवल मूर्तिपूजकों के कुकर्मों के कारण ही नहीं, अपितु इसके अतिरिक्त स्वयं मुसलमानों का अपनी-अपनी ओर से किसी कर्म को किसी कर्म पर अधिक श्रेष्ठता देने का कारण था, जबकि यह काम शरीअत वाले अर्थात ईशदूत का है न कि मुसलमानों का। मुसलमानों का कार्य तो प्रत्येक उस बात के अनुसार कर्म करना है जो अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से उन्हें बतायीं जायें ।

[2]अर्थात ये लोग चाहे जैसे भी दावा करें वास्तव में अत्याचारी हैं अर्थात मूर्तिपूजक हैं, इसलिए कि शिर्क सब से बड़ा अत्याचार है। इस अत्याचार के कारण ही वे अल्लाह के

الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِندَ اللَّهِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾

(२०) जो लोग ईमान लाये, हिजरत की, अल्लाह के मार्ग में अपने माल तथा अपने प्राण से धर्मयुद्ध किया वह अल्लाह के समक्ष अत्यधिक सम्मानित हैं, तथा यही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं ।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُم بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَنَّاتٍ لَّهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ﴿٢١﴾

(२१) उनका पोषक उन्हें अपनी कृपा एवं अनुग्रह तथा ऐसी स्वर्गों की शुभ सूचना देता है जिनमें उनके लिये स्थाई सुख है ।

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٢﴾

(२२) वहाँ ये नित्य रहेंगे, अल्लाह के पास निःसन्देह बहुत बड़े बदले हैं ।[1]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) हे ईमानवालों ! अपने पिताओं और अपने भाईयों को मित्र न बनाओ, यदि वह कुफ्र को इस्लाम से अधिक प्रिय समझें । तुममें से जो भी उनसे प्रेम रखेगा वह पूर्ण पापी अत्याचारी है ।[2]

मार्गदर्शन से वंचित हैं इसलिए उनकी तथा मुसलमानों की जिनको अल्लाह का मार्गदर्शन प्राप्त है, आपस में कोई तुलना ही नहीं ।

[1]इन आयतों में उन ईमानवालों की प्रधानता की चर्चा की गयी है जिन्होंने प्रवास किया तथा अपने तन-मन-धन से धर्मयुद्ध में भाग लिया । फ़रमाया कि अल्लाह के यहाँ उन्हीं का पद श्रेष्ठ है तथा यही सफल हैं, यह अल्लाह की कृपा तथा प्रसन्नता एवं स्थाई पुरस्कार के पात्र हैं, न कि वे जो स्वयं अपने मुहँ मियाँ मिट्ठू बनते हैं तथा अपने पूर्वजों के रीति रिवाजों को ही अल्लाह पर ईमान की तुलना में प्रिय रखते हैं ।

[2]यह वही विषय है जिसकी पवित्र क़ुरआन में विभिन्न स्थानों में चर्चा की गई है । (देखिये सूर: आले इमरान आयत-२८ से ११८ तक, सूर: मायद: आयत ५१ तथा सूर: मुजादिल:-२२) यहाँ धर्मयुद्ध तथा देश त्याग के विषय में भी चूँकि इसकी विशेषता स्पष्ट है, इसलिए इसका वर्णन यहाँ भी किया गया है । अर्थात धर्मयुद्ध तथा हिजरत में तुम्हारे पिताओं तथा भाईयों का प्रेम आड़े न आये, क्योंकि यदि वे अब भी काफ़िर हैं,

قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٤﴾

(२४) (आप) कह दीजिए कि यदि तुम्हारे पिता, तथा तुम्हारे पुत्र एवं तुम्हारे भाई तथा तुम्हारी पत्नियाँ तथां तुम्हारे वंश तथा अर्जित धन तथा वह व्यापार जिसकी कमी से तुम डरते हो तथा वे आवास जिन्हें तुम प्रिय रखते हो (यदि) यह तुम्हें अल्लाह एवं उसके रसूल तथा अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध से प्रियवर हैं, तो तुम प्रतिक्षा करो कि अल्लाह तआला अपनी यातना को ले आए। अल्लाह तआला भ्रष्टाचारियों को मार्ग नहीं दिखाता है।[1]

तो तेरे मित्र हो ही नहीं सकते, अपितु वे तो तुम्हारे शत्रु हैं। यदि तुम उनसे प्रेम पूर्ण सम्बन्ध रखोगे, तो याद रखो तुम भी अत्याचारी कहलाओगे।

[1]इस आयत में भी विगत विषय का बड़े प्रबल रूप से वर्णन किया गया है। عشيرة बहुवचन संज्ञा है वह निकटतम सम्बन्धी जिनके साथ मनुष्य दैनिक जीवन व्यतीत करता है अर्थात परिवार, वंश। اقتراف (इक़्तेराफ़) कमाई के अर्थ के लिये आता है। تجارة (तिजारत), व्यापार के क्रय-विक्रय को कहते हैं जिसका उद्देश्य लाभ की प्राप्ति होती हो। كساد (कसाद) मन्दी को कहते हैं अर्थात बिक्री की वस्तु उपस्थित हो परन्तु ग्राहक न हो अथवा उस वस्तु का समय निकल गया हो। जिसके कारण लोगों को उसकी आवश्यकता न हो। दोनों परिस्थितियाँ मन्दी की हैं। مساكن (मसाकिन) मस्कन का बहुवचन है। इससे तात्पर्य वे घर हैं जिनमें निवास कर मनुष्य ऋतुओं की तीव्रता तथा घटना से बचने, सम्मान पूर्वक रहने-सहने तथा अपने परिवार की सुरक्षा के लिए निर्माण करता हैं, ये सभी वस्तुऐं अपने-अपने स्थान पर आवश्यक हैं, तथा इनकी उपयोगिता तथा विशेषता भी अति आवश्यक तथा मनुष्य को इन सभी वस्तुओं से हार्दिक प्रेम एक प्राकृतिक बात है। (जो निन्दनीय नहीं) परन्तु यदि यह प्रेम अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम से अधिक तथा अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करने में रुकावट बन जाये, तो यह बात अल्लाह को अति अप्रिय है। तथा उसकी अप्रसन्नता का कारण बनती है तथा यह वह अवज्ञा अथवा अवहेलना है जिसके कारण मनुष्य अल्लाह के मार्गदर्शन से वंचित हो सकता है। जिस प्रकार कि अन्तिम शब्दों में चेतावनी से स्पष्ट होता है। हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इस विषय को बड़े स्पष्ट शब्दों में वर्णन किया है। जैसे एक अवसर पर आदरणीय

(२५) निःसंदेह अल्लाह तआला ने तुम्हें बहुत से रण क्षेत्रों में विजय प्रदान की है। तथा हुनैन के युद्ध के दिन भी, जबकि तुम्हें अपनी अधिक संख्या पर गर्व था, परन्तु इसने तुम्हें कोई लाभ नहीं दिया, अपितु धरती अपने विस्तार के उपरान्त भी तुम्हारे लिए संकीर्ण हो गयी, फिर तुम पीठ फेर कर मुड़ गये।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِیْ مَوَاطِنَ كَثِیْرَةٍ ۙ وَّ یَوْمَ حُنَیْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَیْـًٔا وَّ ضَاقَتْ عَلَیْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّیْتُمْ مُّدْبِرِیْنَ ﴿۲۵﴾

(२६) फिर अल्लाह ने अपनी ओर से शान्ति अपने नबी पर तथा ईमानवालों पर उतारी तथा अपनी वह सेना भेजी, जिन्हें तुम देख नहीं रहे थे तथा काफ़िरों को पूरा दण्ड दिया। और इन काफ़िरों का यही बदला था।

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِیْنَتَهٗ عَلٰی رَسُوْلِهٖ وَ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ وَ اَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَ عَذَّبَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۲۶﴾

उमर (رضي الله عنه) ने कहा, "हे रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! मुझे आप अपने अतिरिक्त, प्रत्येक वस्तु से अधिक प्रिय हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जब तक मैं उसकी अपनी जान से अधिक प्रिय न हो जाऊँ, उस समय तक वह ईमानवाला नहीं।" आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने कहा, "परन्तु अब अल्लाह की सौगन्ध आप मुझे अपनी जान से भी अधिक प्रिय हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "हे उमर ! अब तुम मोमिन हो।" (सहीह बुख़ारी किताबुल ऐमान वन्नुज़ुर बाब कैफ़ कान यमिनुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक अन्य कथन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथों में मेरा प्राण है, तुम में से कोई व्यक्ति उस समय तक मुसलमान नहीं, जब तक मैं उस को उसके पिता से, उसकी सन्तान से तथा सभी लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान बाब हुब्बिर्रसूले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिनल ईमान, तथा मुस्लिम किताबुल ईमान) तथा एक अन्य हदीस (ईशदूत के कथन) में धर्म युद्ध के महत्व की चर्चा करते हुये आप ने कहा कि जब तुम निश्चित समय के लिये वस्तु उधार देकर उसे कम मूल्य पर क्रय करना अपना व्यवहार बना लोगे तथा बैलों की पूँछ पकड़ कर खेती करने पर प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हो जाओगे तथा धर्मयुद्ध छोड़ बैठोगे तो अल्लाह तुम पर ऐसा अपमान आच्छादित कर देगा जिससे तुम उस समय तक न निकल सकोगे जब तक अपने धर्म की ओर न लौटोगे। (अबू दाऊद, किताबुल बुयूअ बाबुन्नहय अनिल इनः मुसनद अहमद, भाग २, पृ॰ ४२)

(२७) फिर उसके पश्चात भी जिसे चाहे अल्लाह (तआला) क्षमा करे।[1] अल्लाह ही क्षमावान तथा कृपालु है।

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنۢ بَعۡدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَن يَشَآءُۗ وَاللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٞ ﴿٢٧﴾

---

[1]हुनैन मक्का तथा तायफ़ नगरों के बीच एक घाटी का नाम है यहाँ हवाज़िन तथा सक़ीफ़ के दो क़बीले रहते थे, जो अपनी धनुष विद्या में प्रसिद्ध थे। यह मुसलमानों के विरुद्ध लड़ने की तैयारी कर रहे थे कि इसकी सूचना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बारह हज़ार मुसलमानों की सेना लेकर इन क़बीलों से युद्ध करने के लिए हुनैन की घाटी में गये, यह मक्का विजय के १८ अथवा १९ दिन के पश्चात शव्वाल की घटना है। उपरोक्त वर्णित क़बीले ने पूर्ण तैयारी कर रखी थी तथा विभिन्न सुरक्षित स्थानों पर तीर चलाने वालों को निर्धारित कर दिया था। इधर मुसलमानों में भी यह भावना उत्पन्न हो चुकी थी कि आज कम से कम संख्या की कमी के कारण हम पराजित नहीं होंगे। अर्थात अल्लाह तआला की सहायता के बजाय अपनी अधिक संख्या पर भरोसा अधिक हो गया। अल्लाह तआला को यह गर्व तथा विचार प्रिय नहीं लगा। परिणाम स्वरूप जब हवाज़िन के धनुर्धारियों ने विभिन्न स्थानों से मुसलमानों की सेना पर अचानक तीर चलाना प्रारम्भ कर दिया। तो यह असंभावित तथा तीरों की बौछार से मुसलमानों के पैर उखड़ गये तथा वे भाग खड़े हुए। मैदान में केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम तथा सौ के लगभग मुसलमान रह गये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुसलमानों को पुकार रहे थे, "अल्लाह के भक्तो ! मेरे पास आओ, मैं अल्लाह का रसूल हूँ।" कभी यह वाक्य पढ़ते أنا النبي لا كذب أنا ابن عبدالمطلب फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अब्बास (رضي الله عنه) (जिनकी आवाज़ अति तीव्र थी) को आदेश दिया कि मुसलमानों को एकत्रित करने के लिए आवाज़ दें। अत: उनकी आवाज़ सुन कर मुसलमान अति लज्जित हुए तथा पुन: मैदान में आ गये तथा पुन: इस प्रकार दृढ़ता से लड़े कि अल्लाह ने विजय प्रदान की, अल्लाह तआला की भी सहायता इस प्रकार प्राप्त हुई कि एक तो उनके हृदय को शान्ति प्रदान की, जिससे उनके दिलों से शत्रु का भय दूर हो गया। दूसरे फ़रिश्ते भी उतरे इस युद्ध में मुसलमानों ने छ: हज़ार काफ़िरों को बन्दी बनाया जिन्हें बाद में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने पर छोड़ दिया गया तथा बहुत अधिक सामग्री युद्ध में प्राप्त हुई। युद्ध के पश्चात उनके बहुत से सरदार भी मुसलमान हो गये। यहाँ तीन आयतों में अल्लाह तआला ने इस घटना को संक्षिप्त रूप से वर्णन किया है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِنَّمَا ٱلْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا۟ ٱلْمَسْجِدَ ٱلْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَٰذَا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦٓ إِن شَآءَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾

(२८) हे ईमानवालो ! अवश्य मूर्तिपूजक अपवित्र हैं ।[1] वह इस वर्ष के पश्चात मस्जिदे हराम के निकट भी न आने पायें ।[2] यदि तुम्हें निर्धनता का भय है, तो अल्लाह तुम्हें अपनी कृपा से धनवान बना देगा यदि चाहे ।[3] नि:सन्देह अल्लाह ज्ञानी तथा विवेकशील है ।

قَٰتِلُوا۟ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَلَا بِٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ

(२९) उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर तथा प्रलय पर विश्वास नहीं रखते, जो अल्लाह

---

[1]मूर्तिपूजकों के अपवित्र तथा अशुद्ध होने का तात्पर्य आस्था, विश्वास तथा कर्मों की अपवित्रता है । कुछ के निकट मूर्तिपूजक बाह्य तथा आन्तरिक दोनो रूप में अपवित्र हैं क्योंकि वे शौच (सफ़ाई, स्वच्छता तथा पवित्रता) का इस प्रकार प्रबन्ध नहीं करते, जिसका आदेश धार्मिक नियमों ने दिया है ।

[2]यह वही आदेश है जो ९ हिजरी में मुक्ति की घोषणा के समय किया गया था । जिसका विवरण पूर्व में गुज़र चुका है । यह निषेध कुछ के निकट केवल मस्जिदे हराम के लिए है । वरन् आवश्यकतानुसार मूर्तिपूजक अन्य मस्जिदों में प्रवेश कर सकते हैं । जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुमामा बिन उसाल को मस्जिदे नबवी के एक स्तम्भ से बाँध कर रखा था । यहाँ तक कि अल्लाह ने उनके दिल में इस्लाम तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रेम डाल दिया तथा वह मुसलमान हो गये । इसके अतिरिक्त अधिकतर आलिमों के निकट यहाँ मस्जिदे हराम से तात्पर्य सम्पूर्ण हरम है । अर्थात हरम की सीमा में मूर्तिपूजकों का प्रवेश वर्जित है । कुछ तत्वों के आधार पर आदेश से उन ग़ैर मुस्लिमों तथा सेवक को जो मुस्लिम राज्य में निवास करते है पृथक किया गया है । इसी प्रकार आदरणीय उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने इससे अर्थ निकालते हुए अपने राज्यकाल में यहूदी तथा ईसाईयों को भी मस्जिद में प्रवेश से निषेधाज्ञा लागू किया था । (इब्ने कसीर)

[3]मूर्तिपूजकों को रोकने के उपरान्त कुछ मुसलमानों के दिलों में यह विचार आया कि हज के अवसर पर जो व्यापार के द्वारा लाभ होता था, वह अब न होगा । अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि, इस व्यापार में कमी से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है । अल्लाह तआला अपनी कृपा से निकट भविष्य में तुम्हें धनवान कर देगा । अत: विजय के कारण धन तथा सामग्री अधिक मात्रा में प्राप्त हुई । फिर धीरे-धीरे सारा अरब मुसलमान हो गया । इस प्रकार पुन: हज ऋतु में हाजियों की संख्या उसी प्रकार हो गयी, अपितु उससे कहीं अधिक हो गयी तथा नित्य यह संख्या बढ़ती ही जा रही है ।

مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُولُهٗ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُونَ ﴿٢٩﴾

तथा उसके रसूल के द्वारा निषेधित वस्तु को वर्जित नहीं समझते, न सत्य धर्म को स्वीकार करते हैं उन लोगों में से जिन्हें किताब प्रदान की गयी है, यहाँ तक कि वह अपमानित होकर अपने हाथों से सुरक्षा कर अदा करें।[1]

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللّٰهِ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِـُٔونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ أَنّٰى يُؤْفَكُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह का पुत्र है और इसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह का पुत्र है। यह कथन केवल उनके मुख की बात है। पूर्व के विश्वासहीनों के कथन का यह भी समानता करने लगे हैं। अल्लाह इनका नाश करे यह कहाँ फिरे जा रहे हैं ?

اِتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّنْ دُونِ اللّٰهِ

(३१) उन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने विद्वानों तथा धर्माचारियों को रब्ब (पोषक) बनाया है,[2] तथा मरियम के पुत्र मसीह को।

---

[1]मिश्रणवादियों से लड़ने के आदेश के पश्चात यहूदियों तथा ईसाईयों से लड़ने का आदेश दिया जा रहा है। यदि वे इस्लाम धर्म स्वीकार करें अथवा सुरक्षा कर दे कर मुसलमानों की शरण में रहना स्वीकार कर लें। सुरक्षा कर को "जिज़य: " कहते हैं। यह उनके लिए है जो गैर मुस्लिम हैं, परन्तु इस्लामी राज्य में रह रहे हों। यह एक वार्षिक निर्धारित कर है। इस कर के अदा करने के पश्चात उनके धन, मान-सम्मान, जीवन की सुरक्षा का दायित्व मुस्लिम राज्य पर आ जाता है यहूदी तथा ईसाई इसके अतिरिक्त की वे अल्लाह तथा आख़िरत के दिन पर ईमान रखते थे, उनके विषय में कहा गया है कि वे अल्लाह तथा अन्त दिवस पर ईमान नहीं रखते थे इससे यह विदित होता है कि जब तक मनुष्य उस प्रकार का ईमान न रखे जिस प्रकार अल्लाह ने अपने पैग़म्बरों (दूतों) के द्वारा बतलाया है, उस समय तक उसका अल्लाह पर ईमान विश्वासनीय न होगा। तथा यह भी स्पष्ट है कि उन के अल्लाह पर ईमान को विश्वास के अयोग्य इसलिए कहा गया कि यहूदी तथा ईसाईयों ने आदरणीय उज़ैर तथा आदरणीय मसीह को अल्लाह का पुत्र तथा पूज्य का विश्वास गढ़ लिया था, जैसा कि अगली आयत में उनके इस विश्वास को स्पष्ट किया गया है।

[2]इसकी व्याख्या आदरणीय अदी पुत्र हातिम के द्वारा वर्णित हदीस से स्पष्ट है, वह कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह आयत सुनकर पूछा कि

وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

यद्यपि कि उन्हें एक अकेले अल्लाह ही की उपासना का आदेश दिया गया था। जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, वह उनके मिश्रण करने से पवित्र है।

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) वह अल्लाह की ज्योति को अपने मुखों से बुझा देना चाहते हैं। तथा अल्लाह इंकार करता है किन्तु यह कि अपनी ज्योति को पूर्ण करे यद्यपि अधर्मी लोग अप्रसन्न हों।[1]

यहूदियों तथा ईसाईयों ने अपने विद्वानों की कभी पूजा नहीं की, फिर यह क्यों कहा गया कि, उन्होंने उनको स्वामी बना लिया ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यह ठीक है कि, उन्होंने उनकी पूजा कभी नहीं की, परन्तु यह बात सत्य है कि उनके विद्वानों ने जिस वस्तु को उचित कहा उसको उचित तथा जिसको अनुचित कहा उसको अनुचित समझा। यही उनकी पूजा है।" (सहीह त्रिमिज़ी लिल अलबानी संख्या २४७१) क्योंकि वर्जित तथा मान्य करने का अधिकार केवल अल्लाह को है। यही अधिकार यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य के अन्दर स्वीकार करता है, तो वह व्यक्ति उसकी पूजा करता है। इस आयत में उन लोगों को बड़ी चेतावनी है, जो अपने नेताओं तथा विचारकों के वैध तथा अवैध को मान्यता देते हैं। उनके कथन के समक्ष क़ुरआन की आयतों तथा हदीसों को भी स्वीकार करने को तैयार नहीं होते।

[1]अर्थात अल्लाह ने ईशदूत (आप पर परमेश्वर का दया एवं शान्ति हो) को जो प्रकाश तथा सत्य धर्म दे कर भेजा है। यहूदी तथा इसाई एवं मूर्तिपूजक चाहते हैं कि उसे विवाद तथा लांछन से मिटा दें, तो उनकी तुलना उस जैसी है जो अपनी फूँक से सूर्य की किरण तथा चन्द्रमा के प्रकाश को बुझाने का प्रयत्न करे। तो जिस प्रकार यह असम्भव है, उसी प्रकार जो सत्य धर्म अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम को देकर भेजा है, उसको मिटाना भी असम्भव है। वह सभी धर्मों पर विजयी होकर रहेगा। जैसाकि अगली आयत में अल्लाह ने फ़रमाया। काफ़िर का शाब्दिक अर्थ है छिपाने वाला। इसी कारण रात्रि को भी काफ़िर कहते हैं क्योंकि वह सभी वस्तुओं को अपने अंधकार में छिपा लेती है। कृषक को भी काफिर कहते हैं क्योंकि वह अनाज के दाने को धरती में छिपा देता है। अत: काफ़िर भी अल्लाह के प्रकाश को छिपाना चाहते हैं अथवा अपने दिलों में कुफ्र तथा षड़यन्त्र तथा मुसलमानों एवं इस्लाम के विरुद्ध द्वेष तथा ईर्ष्या को छिपाये हुए हैं। इसलिए उन्हें काफ़िर कहा जाता है।

هُوَ الَّذِيٓ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰى وَدِيۡنِ الۡحَقِّ لِيُظۡهِرَهٗ عَلَى الدِّيۡنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوۡ كَرِهَ الۡمُشۡرِكُوۡنَ ۝

(३३) उसी ने अपने दूत (नराशंस) को सत्य मार्ग तथा सत्य धर्म के साथ भेजा कि उसे अन्य सभी धर्मों पर प्रभावी कर दे।[1] यद्यपि मिश्रणवादी बुरा मानें।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِنَّ كَثِيۡرًا مِّنَ الۡاَحۡبَارِ وَالرُّهۡبَانِ لَيَاۡكُلُوۡنَ اَمۡوَالَ النَّاسِ بِالۡبَاطِلِ وَيَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيۡنَ يَكۡنِزُوۡنَ الذَّهَبَ وَالۡفِضَّةَ وَلَا يُنۡفِقُوۡنَهَا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرۡهُمۡ بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ۝

(३४) हे ईमानवालो ! अधिकतर पन्डित एवं पुजारी लोगों का धन अनृत से खा जाते हैं तथा अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं।[2] एवं जो लोग सोने चाँदी का कोष रखते हैं तथा अल्लाह के मार्ग में व्यय नहीं करते उन्हें दुखद यातना का समाचार सुना दो।[3]

---

[1]तर्क तथा युक्ति के आधार पर यह प्रभुत्व हर समय प्राप्त है। परन्तु जब मुसलमानों ने धर्म के आदेशानुसार कर्म किया तो उन्हें सांसारिक प्रभुत्व प्राप्त हुआ। तथा अब भी मुसलमान अपने धर्म के अनुसार कार्य करने लगें तो उनका प्रभाव अवश्य सम्भावी है। इसलिए कि अल्लाह का वायदा है कि अल्लाह के मानने वाले ही प्रभावशाली तथा विजयी होंगे। शर्त यह है कि मुसलमान अल्लाह वाले बन जायें।

[2]أحبار (अहबार) حبر (हिबर) का बहुवचन है। यह ऐसे व्यक्ति को कहते हैं, जो बात को बड़ी सुन्दरतापूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की विधि जानता हो। सुन्दर तथा आकर्षित वस्त्र को ثوب محبَّر कहते हैं। तात्पर्य यहूदियों के विद्वना हैं رهبان (रूहबान) راهِب (राहिब) का बहुवचन है, जिसकी उत्पत्ति رهبة (रुहब:) से है इससे तात्पर्य इसाईयों के पन्डित हैं। कुछ के निकट इसाईयों के महात्मा हैं, विद्वानों के लिए इनके यहाँ قِسّيسين (क़िस्सीसीन) का शब्द है। ये दोनों ही अल्लाह के कथनों में परिवर्तन करके लोगों की इच्छाओं के अनुसार नियम बनाते हैं इस प्रकार लोगों कोअल्लाह के मार्ग से रोकते हैं। दूसरे इस प्रकार लोगों से माल ऐंठते हैं, जो उनके लिए अनुचित तथा अवैध था। दुर्भाग्य से मुसलमानों के विद्वानों में भी कुछ की यही दशा है। तथा इस प्रकार नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी सत्य होती है जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था «لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ». (सहीह बुख़ारी किताबुल ऐतेसाम में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फ़रमान अध्याय का शीर्षक है) "तुम पूर्व के समुदायों के रीति-रिवाज के अनुयायी अवश्य बनोगे।"

[3]आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं कि यह ज़कात के आदेश से पूर्व का आदेश है। ज़कात के आदेश के पश्चात ज़कात द्वारा लोगों के माल की शुद्धता का साधन बताया है। इसलिए विद्वानों का कहना है कि जिस धन से ज़कात अदा कर दी

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ وَ ظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) जिस दिन उस कोष को नरक की अग्नि में तपाया जायेगा फिर उससे उनके माथे तथा पार्श्व तथा पीठें दागी जायेंगी (उनसे कहा जायेगा) यह है जिसे तुमने अपने लिए कोष बना कर रखा था, तो अपने कोषों का स्वाद चखो।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڏ

(३६) महीनों की गणना अल्लाह के निकट अल्लाह के ग्रन्थ में बारह की है, उसी दिन से जब से आकाशों तथा धरती को उसने पैदा किया है। उनमें से चार सम्मान तथा आदर के हैं।[1] यही शुद्ध धर्म है।[2] तुम इन महीनों

जाये वह कोष नहीं है तथा जिससे जकात न दी जाय वह कोष है, जिस पर क़ुरआन की यह चेतावनी आयी है। अत: सहीह हदीस में है कि जो व्यक्ति अपने माल की जकात नहीं निकालता प्रलय के दिन उसके धन की अग्नि पट्टिकायें बनायी जायेंगी, जिससे उसके दोनों बाज़ूओं को, माथा को तथा कमर को जलाया जायेगा। यह दिन पचास हज़ार वर्ष का होगा तथा लोगों का निर्णय होने तक उसका यही हाल रहेगा, उसके पश्चात उसे स्वर्ग अथवा नरक में ले जाया जायेगा। (सहीह मुस्लिम किताबुज़्ज़कात) यह बिगड़े विद्वान तथा सूफ़ियों के पश्चात बिगड़े हुए धनवान हैं, तीनों पक्ष जनता में बिगाड़ के सबसे अधिक जिम्मेदार हैं। اللهم احفظنا منهم

[1] فِي كِتَابِ اللّٰهِ से तात्पर्य 'लौहे महफ़ूज़' (सुरक्षित पुस्तक) है अर्थात अल्लाह तआला के अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर लिखी है। अर्थात उत्पत्ति के आरम्भ से ही अल्लाह तआला ने बारह महीने निर्धारित कर दिये हैं, जिनमें से चार निषेधित हैं, जिनमें विशेष रूप से युद्ध तथा लड़ाई निषेध है। इसी बात को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार वर्णन किया है कि, युग घूम घाम कर फिर उसी अवस्था में लौट आया है, जिस अवस्था में उस समय था, जब अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की सृष्टि की थी। वर्ष बारह महीनों का है, जिनमें से चार सम्मानित हैं, तीन निरन्तर ज़िलक़ाअद:, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम तथा चौथा रजब जो जमादिल आख़िर तथा शाबान के मध्यमें है। (सहीह बुख़ारी संख्या ४४०६ तथा सहीह मुस्लिम संख्या १३०५) युग उसी अवस्था में आ गया का तात्पर्य यह है कि अरब के मूर्तिपूजक महीनों आगे पीछे उसी प्रकार से करते थे जिस प्रकार आजकल हिन्दू धर्म में पंडित करते हैं, जिसका विस्तृत वर्णन आगे आयेगा यह उसका अन्त है।

[2] अर्थात उन महीनों का उसी क्रम में होना, जो अल्लाह ने रखा है तथा जिनमें चार सम्मानित हैं। तथा यही गणित सही और संख्या पूर्ण है।

فَلَا تَظۡلِمُوا۟ فِيهِنَّ أَنفُسَكُمۡ وَقَٰتِلُوا۟ ٱلۡمُشۡرِكِينَ كَآفَّةً كَمَا يُقَٰتِلُونَكُمۡ كَآفَّةًۚ وَٱعۡلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلۡمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾

में अपने प्राणों पर अत्याचार न करो।[1] तथा तुम सभी मूर्तिपूजकों से धर्मयुद्ध करो, जैसेकि वे तुम सभी से लड़ते हैं।[2] तथा जान रखो कि अल्लाह तआला परहेज़गारों के साथ है।

إِنَّمَا ٱلنَّسِيٓءُ زِيَادَةٌ فِي ٱلۡكُفۡرِۖ يُضَلُّ بِهِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ يُحِلُّونَهُۥ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُۥ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوا۟ عِدَّةَ مَا حَرَّمَ ٱللَّهُ فَيُحِلُّوا۟ مَا حَرَّمَ ٱللَّهُۚ زُيِّنَ لَهُمۡ سُوٓءُ أَعۡمَٰلِهِمۡۗ وَٱللَّهُ

(३७) महीनों का आगे पीछे कर देना कुफ़्र का परिवर्धन है।[3] उससे वह विपथ किये जाते हैं जो विश्वासहीन हैं। एक वर्ष को अवर्जित कर लेते हैं तथा एक वर्ष को आदरणीय बना लेते हैं कि अल्लाह ने जो निषेध रखा है उसकी गणना में तो समानता कर लें।[4] फिर जिसे निषेध किया है उसे

---

[1]अर्थात इन महीनों में रक्तपात करके उनका निरादर तथा अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करके।

[2]परन्तु सम्मानित महीनों के व्यतीत होने के पश्चात। किन्तु यदि वह लड़ने पर बाध्य कर दें तो फिर सम्मानित महीनों में तुम्हारे लिए लड़ना भी उचित होगा।

[3]"نَسِيٓءُ" (नसीउन) के अर्थ 'पीछे करने के' हैं। अरबों में भी सम्मानित महीनों में लूटमार, रक्तपात तथा युद्ध को अप्रिय समझा जाता था। परन्तु निरन्तर तीन महीनों का आदर करना रक्तपात से रुके रहना, उनके लिए कठिन था। इसलिए उसका समाधान उन्होंने यह निकाल रखा था कि जिस सम्मानित महीने में वे रक्तपात करना चाहते, वह कर लेते तथा यह घोषणा कर देते कि इस सम्मानित महीने के बदले अमुक महीना सम्मानित होगा। जैसे मोहर्रम के महीने का आदर समाप्त करके सफर के महीने को सम्मानित घोषित कर देते। इस प्रकार आदर वाले महीनों में परिवर्तन तथा हेर फेर का परिवर्धन लिया करते थे। इसको 'नसी' कहा जाता था। अल्लाह तआला ने उसके विषय में फ़रमाया कि यह अधर्म का परिवर्धन है क्योंकि इस अदल-बदल से उद्देश्य लड़ाई-झगड़ा, रक्तपात तथा सांसारिक लाभ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उसके समापन की घोषणा इस प्रकार की कि युग घूम-घूमा के अपनी वास्तविक अवस्था में आ गया। अर्थात अब भविष्य में इसका क्रम इसी प्रकार रहेगा, जिस प्रकार उत्पत्ति के प्रारम्भ से चला आ रहा है।

[4]अर्थात एक महीने का आदर समाप्त करके उसके स्थान पर दूसरे महीने को आदरणीय घोषित कर देने से उनका उद्देश्य यह होता था कि अल्लाह तआला ने जो चार आदर

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

वैधानिक बना लें, उनके कुकर्म उन्हें सत्कर्म दिखा दिये गये हैं तथा अल्लाह काफ़िरों को मार्गदर्शन नहीं देता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٣٨﴾

(३८) हे ईमानवालो ! तुम्हें क्या हो गया है ? कि जब तुम से कहा जाता है कि चलो अल्लाह के मार्ग में प्रस्थान करो तो तुम धरती पकड़ लेते हो क्या तुम परलोक के बदले दुनिया के जीवन पर ही रीझ गये हो। सुनो ! दुनिया का जीवन परलोक की तुलना में अति तुच्छ है।

اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾

(३९) यदि तुमने प्रस्थान न किया, तो अल्लाह (तआला) तुम्हें दुखदायी दण्ड देगा तथा तुम्हारे अतिरिक्त अन्य लोगों को बदल लायेगा, तुम अल्लाह (तआला) को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते।[1] तथा अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है।

वाले महीने रखे हैं, उनकी गणना पूरी कर दी जाये, अर्थात गणना पूरी करने में अल्लाह तआला का पक्ष करते थे, परन्तु अल्लाह तआला ने रक्तपात, युद्ध तथा लड़ाई-झगड़े से जो मना किया था, उसकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी, बल्कि उन्हीं अत्याचारी प्रवृत्तियों के कारण ही उनके क्रम में फेर बदल करते थे।

[1]रोम के ईसाई राजा हरकूलिस के विषय में यह सूचना मिली कि वह मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहा है। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इसके लिए तैयारी का आदेश दे दिया। यह शव्वाल ९ हिजरी की घटना है। ग्रीष्म ऋतु थी तथा लम्बी यात्रा थी। कुछ मुसलमानों तथा अवसरवादियों को यह आदेश भारी लगा जिसका वर्णन इस आयत में किया गया है। तथा उन्हें सचेत तथा सावधान किया गया है। यह तबूक का युद्ध कहलाता है, जो वास्तव में नहीं हुआ। २० दिन मुसलमान सीरिया के निकट तबूक के स्थान पर प्रतीक्षा करके वापस आ गये। इसको कठिनाईयों का युद्ध कहा जाता है। क्योंकि इस लम्बी यात्रा में इस सेना को अधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था। اثَّاقَلْتُمْ अर्थात आलस्य करने तथा पीछे रहना चाहते हो। इसका प्रदर्शन कुछ लोगों की ओर से हुआ, परन्तु इसको सम्बोधित सभी से कर दिया गया। (फ़तहुल क़दीर)

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾

(४०) यदि तुम उसकी (ईशदूत मुहम्मद) सहायता न करो तो अल्लाह ही ने उसकी सहायता की उस समय जब अधर्मियों ने उसे (देश से) निकाल दिया था। दो में से दूसरा जबकि वह दोनों गुफ़ा में थे जब यह अपने साथी से कह रहे थे कि चिन्ता न करो अल्लाह हमारे साथ है।[1] तब अल्लाह ही ने अपनी ओर से शान्ति उतार कर उन सेनाओं से उसकी सहायता की जिन्हें तुम ने देखा भी नहीं।[2] उसने काफ़िरों की बात नीची कर दी तथा उच्च एवं श्रेष्ठ तो अल्लाह का ही कथन है।[3] अल्लाह (तआला) प्रभावशाली तथा विवेकी है।

---

[1]धर्मयुद्ध से पीछे रहने वालों अथवा उससे प्राण छुड़ाने वालों से कहा जा रहा है कि यदि तुम सहायता नही करते हो, तो अल्लाह को तुम्हारे सहायता की आवश्यकता भी नहीं है। अल्लाह तआला ने अपने संदेशवाहक की उस समय भी सहायता की, जब उसने गुफ़ा में शरण ली थी तथा अपने साथी (आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक) से कहा था, "चिन्ता न करो अल्लाह हमारे साथ है।" इस की विस्तृत हदीस आती है। आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं, जब हम लोग गुफ़ा में थे, तो मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहा "यदि इन मूर्तिपूजकों ने (जो हमारी खोज में हैं) अपने पैरों की ओर देखा, तो हमें देख लेंगे।" परम आदरणीय नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

« يَا أَبَا بَكْرٍ! مَا ظَنُّكَ بِاثْنَيْنِ اللَّهُ ثَالِثُهُمَا »

"हे अबू बक्र ! तुम्हारा उन दो के विषय में क्या विचार है जिसका तीसरा अल्लाह है।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: तौब:)

[2]य सहायता की वे दो परिस्थितियाँ वर्णन की हैं जिन से अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सहायता की गयी। एक हृदय की शान्ति तथा दूसरी फ़रिश्तों का समर्थन।

[3]काफ़िरों के कथन से शिर्क तथा अल्लाह के कथन से तौहीद (एकेश्वरवाद) का तात्पर्य है। जिस प्रकार एक हदीस में वर्णन किया गया है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

(४१) निकल खड़े हो जाओ हल्के-फुल्के हो तो भी तथा भारी-भरकम हो तो भी,[1] तथा अल्लाह के मार्ग में अपने तन-मन-धन से धर्मयुद्ध करो, यही तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम में ज्ञान हो।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ

(४२) यदि शीघ्र प्राप्त होने वाली धन-सामग्री होती[2] तथा हल्की-सी यात्रा होती तो ये अवश्य आप के पीछे हो लेते।[3] परन्तु उन पर तो दूरी तथा दूरी के कष्ट पड़ गये। तथा अब तो ये अल्लाह की सौगन्ध खायेंगे कि यदि हम में शक्ति तथा सामर्थ्य होता तो

वसल्लम से पूछा गया। "एक व्यक्ति वीरता के प्रदर्शन के लिए लड़ता है, एक अपने जाति के सम्मान तथा आदर के लिए लड़ता है, तथा एक अन्य देखावे अथवा छल-कपट के लिए लड़ता है। इसमें से अल्लाह के मार्ग में लड़ने वाला कौन है ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जो इसलिए लड़ता है कि अल्लाह का कथन सर्वोच्च हो जाये, वह अल्लाह के मार्ग में लड़ता है।" (सहीह बुखारी किताबुल इल्म व मुस्लिम किताबुल इमार :)

[1]इसके विभिन्न भावार्थ वर्णन किये जाते हैं। व्यक्तिगत रूप से अथवा सामूहिक रूप से, प्रसन्नता से अथवा अप्रसन्नता से, निर्धन हो अथवा धनवान हो, युवक हो अथवा वृद्ध हो, पैदल हो अथवा सवार हो, विवाहित हो अथवा अविवाहित हो, वह प्रस्थान करने वालों में से हो अथवा रह जाने वालों में। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि आयत का प्रभाव सभी क्षेत्र पर हो सकता है क्योंकि आयत का अर्थ यह है कि तुम प्रस्थान करो, चाहे आवागमन तुम्हारे लिए बोझ हो अथवा हल्का। तथा इस भावार्थ में वर्णित सभी भावार्थ आ जाते हैं।

[2]यहाँ से उन लोगों का वर्णन हो रहा है जिन्होंने कारण बता कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आज्ञा ले ली थी। जब कि वास्तव में उनके पास कोई कारण नहीं था। عَرَض से तात्पर्य जो सांसारिक लाभ सामने आयें, अर्थ है युद्ध में प्राप्त धन सामग्री।

[3]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ धर्मयुद्ध में सम्मिलित होते, परन्तु लम्बी यात्रा ने उन्हें बहाने बनाने पर विवश कर दिया।

اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٤٢

हम अवश्य आप के साथ निकलते, यह अपने प्राणों को स्वयं ही विनाश की ओर डाल रहे हैं ।[1] इनके झूठे होने का सत्य ज्ञान अल्लाह को है ।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٤٣

(४३) अल्लाह तुझे क्षमा कर दे, तूने उन्हें क्यों आज्ञा दे दी, बिना इसके कि तेरे समक्ष सत्यवादी लोग स्पष्ट रूप से प्रकट हो जायें तथा तू झूठे लोगों को भी जान ले ।[2]

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝٤٤

(४४) अल्लाह पर तथा क़ियामत (प्रलय) के दिन पर ईमान तथा विश्वास रखने वाले तो माल से तथा जान से धर्मयुद्ध करने से रुके रहने की कभी भी तुझ से अनुमति नहीं माँगेंगे[3] और अल्लाह तआला सदाचारियों को भली-भाँति जानता है ।

---

[1]अर्थात झूठी सौगन्ध खाकर। क्योंकि झूठी सौगन्ध खाना महापाप है ।

[2]यह नवी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा जा रहा है कि धर्मयुद्ध में सम्मिलित न होने के लिए आज्ञा मांगने वालों को तूने क्यों बिना मालूम किये कि इसके पास ठोस कारण भी हैं या नहीं ? आज्ञा दे दी । परन्तु इस चेतावनी में भी प्रेम के पक्ष का वर्चस्व है, इसलिए कि इस भूल पर क्षमा का स्पष्टीकरण पहले कर दिया गया । याद रहे कि यह चेतावनी इसलिए कि आज्ञा देने में शीघ्रता की गयी तथा पूर्ण रूप से मालूम करने की आवश्यकता नही समझी गयी । वरन् खोज करने के पश्चात आवश्यक लोगों को आज्ञा प्रदान करने की आप को आज्ञा थी जैसा कि फ़रमाया गया ।

﴿ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ ﴾

"जब यह लोग तुझ से अपने कुछ कर्मों के कारण आज्ञा मांगें, तो जिसको तू चाहे आज्ञा प्रदान कर दे ।"(सूरः अल-नूर-६२)

"जिसको चाहे" का अर्थ यह है कि जिसके पास उचित कारण हो, उसे आज्ञा प्रदान करने का अधिकार तुझे प्राप्त है ।

[3]यह मात्र शुद्ध ईमानदारों के व्यवहार का वर्णन है, बल्कि उनका तो आचरण एवं व्यवहार ही ऐसा है कि वह धर्मयुद्ध में आगे बढ़-चढ़कर अधिक प्रसन्नता के साथ भाग लेते हैं ।

(४५) यह आज्ञा तो तुझ से वही माँगते हैं, जिन्हें न अल्लाह पर ईमान है, न आख़िरत के दिन पर विश्वास है, जिनके दिल सन्देह में पड़े हुए है तथा यह अपने सन्देह ही में उद्विग्न हैं ।[1]

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾

(४६) यदि उनका विचार [धर्मयुद्ध (जिहाद) पर] निकलने का होता, तो वह इस (यात्रा) के लिए संसाधन की तैयारी रखते ।[2] परन्तु अल्लाह को उनका उठना प्रिय नहीं था,

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَٰكِن كَرِهَ اللَّهُ انبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٤٦﴾

---

[1]यह उन मुनफ़िक़ों (अवसरवादियों) का वर्णन है, जिन्होंने झूठे बहाने बना कर रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से धर्मयुद्ध में भाग न लेने की आज्ञा प्राप्त कर ली थी । उनके विषय में कहा गया है कि ये अल्लाह पर तथा आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते । इसका अर्थ यह है कि इस ईमान के अभाव ने उनको धर्मयुद्ध में भाग न लेने पर विवश किया है । यदि ईमान इनके दिलों में सुदृढ़ होता तो न तो यह धर्मयुद्ध से भागते तथा न इनको शंका तथा संदेह ने घेरा होता ।

टिप्पणी:- ध्यान रहे कि इस धर्मयुद्ध में भाग लेने के विषय में मुसलमानों की चार श्रेणियाँ थीं :

प्रथम वह मुसलमान जो बिना किसी सोच-विचार के तैयार हो गये, द्वितीय वे जिन्हें प्रारम्भ में कुछ उनके हृदय में विचलन उत्पन्न हुआ, परन्तु फिर उस विचलन से निकल आये, तृतीय वे जो कुछ वृद्धावस्था, रोग अथवा सवारी एवं यात्रा का खर्च उठाने में वास्तव मे योग्य नहीं थे । तथा जिन्हें स्वयं अल्लाह तआला ने भाग न लेने की आज्ञा प्रदान कर दी थी (उनका वर्णन आयत संख्या ९१ तथा ९२ में है) तथा चतुर्थ श्रेणी में वे जो मात्र आलस्य के कारण भाग न ले सके । तथा जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस आये तो उन्होंने अपना पाप स्वीकार करके अपने आपको तौबा तथा दण्ड के लिए प्रस्तुत किया । इसके अतिरिक्त शेष सभी मुनाफ़िक (भ्रष्टाचारी) तथा उनके गुप्तचर थे । यहाँ मुसलमानों के प्रथम गिरोह तथा भ्रष्टाचारी (मुनाफ़िक़ों) का वर्णन है मुसलमानों की शेष तीन श्रेणियों का वर्णन आगे आयेगा ।

[2]यह उन्हीं मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) के विषय में कहा जा रहा है जिन्होंने झूठ बोल कर आज्ञा प्राप्त कर ली थी कि यदि वे धर्मयुद्ध में जाने का विचार रखते तो अवश्य जाने का प्रबन्ध करते ।

इसलिए उन्हें कुछ करने से रोक दिया।[1] तथा कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे ही रहो।[2]

لَوْخَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَّلَا أَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝

(४७) यदि यह तुम में मिल कर निकलते भी तो तुम्हारे लिए उपद्रव के अतिरिक्त अन्य कोई चीज़ न बढ़ाते।[3] बल्कि तुम्हारे मध्य खूब घोड़े दौड़ाते तथा तुम में मतभेद डालने की खोज में रहते।[4] उनके मानने वाले स्वयं तुम में उपस्थित हैं।[5] तथा अल्लाह तआला अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ

(४८) ये तो इससे पूर्व भी मतभेद उत्पन्न करने की खोज में रहे हैं तथा तेरे लिए कार्यों

---

[1] فَثَبَّطَهُمْ के अर्थ हैं उनको रोक दिया अर्थात पीछे रहना उनके लिए प्रिय बना दिया गया, अत: वह सुस्त हो गये तथा मुसलमानों के साथ नहीं निकले। (ऐसरूत्तफ़ासीर) अर्थ यह है कि अल्लाह के ज्ञान में उनके कुविचार तथा षड़यन्त्र थे, इसलिए अल्लाह के भाग्य का लिखा हुआ यही था कि वह न जायें।

[2] यह या तो अल्लाह की उसी इच्छा के अनुरूप है जो भाग्य में लिखा हुआ था। अथवा अप्रसन्नता तथा क्रोध के कारण रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से कहा गया है कि अच्छा ठीक है तुम स्त्रियों, बच्चों, रोगियों, तथा वृद्धों की श्रेणी में सम्मिलित होकर उनके समान घरों में बैठे रहो।

[3] यह मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) यदि इस्लामी सेना में सम्मिलित होते तो अपने त्रुटिपूर्ण विचार तथा परामर्श से मुसलमानों में उपद्रव ही का कारण बनते।

[4] إِيضَاع का अर्थ होता है, अपनी सवारी तेज़ी से दौड़ाना। अर्थ यह है कि अपवाद आदि के द्वारा तुम्हारे अन्दर उपद्रव उत्पन्न करने में कोई कमी न रखते तथा उपद्रव का अर्थ एकता में फूट डालना तथा उनके मध्य द्वेष तथा घृणा उत्पन्न कर देना है।

[5] इससे ज्ञात होता है कि मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) के लिए गुप्तचर का कार्य करने वाले कुछ लोग मुसलमानों के साथ सेना में उपस्थित थे, जो मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) को मुसलमानों की सूचनायें पहुँचाया करते थे।

وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿٤٨﴾

को उलट-पुलट करते रहे हैं, यहाँ तक कि सत्य आ पहुँचा तथा अल्लाह का आदेश प्रभावी हो गया।[1] इसके उपरान्त कि वे अप्रसन्नता में ही रहे।[2]

وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ ائْذَن لِّي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) उन में से कोई तो कहता है कि मुझे आज्ञा दे दीजिए मुझे विपदा में न डालिए, सचेत रहो कि वह तो भेद में पड़ चुके हैं तथा निःसंदेह नरक काफ़िरों को घेर लेने वाली है।[3]

---

[1]इसीलिए उसने भूत तथा भविष्य की बातें तुम्हें सूचित कर दीं तथा यह भी बतला दिया कि जो मुनाफ़िक़ (भ्रष्टाचारी लोग) साथ नहीं गये, तो तुम्हारे पक्ष में अच्छा ही हुआ, यदि वे जाते तो ये-ये ख़राबियाँ उत्पन्न होतीं।

[2]अर्थात ये मुनाफ़िक़ (भ्रष्टाचारी) तो जब से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना नगर में आये हैं, तभी से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध षड़यन्त्र करने तथा सम्बन्धों को बिगाड़ने में तत्पर रहे हैं यहाँ तक कि बद्र में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को विजय प्रदान की, जो इनके लिए अत्यधिक अप्रिय थी, इसी प्रकार ओहद के युद्ध के अवसर पर भी इन मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) ने मार्ग से ही वापस होकर कठिनाई उत्पन्न करने की तथा उसके पश्चात सभी अवसरों पर बिगाड़ का प्रयत्न करते रहे। यहाँ तक कि मक्का विजय हो गया तथा अधिकतर अरब मुसलमान हो गये, जिस पर वे दुख से अपने हाथ मल रहे हैं।

[3]"मुझे फितने (भेद) में न डालिए।" इसका एक अर्थ तो यह होगा यदि आप मुझे आज्ञा नहीं देंगे तो मुझे बिना आज्ञा रुकने पर अत्यधिक पाप होगा, इस आधार पर भेद 'पाप' के अर्थ में होगा। अर्थात मुझे पाप में न डालिए। दूसरा अर्थ भेद का विनाश है अर्थात मुझे साथ ले जाकर विनाश में न डालिए। कहा जाता है कि जद बिन क़ैस ने निवेदन किया कि मुझे साथ न ले जायें। रोम की स्त्रियों को देख कर मैं धैर्य न रख सकूंगा। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुख फेर लिया और आज्ञा दे दी। उसके पश्चात आयत उतरी अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "भेद में तो वह गिर चुके हैं।" अर्थात धर्मयुद्ध में पीछे रहना तथा उससे प्राण चुराना, स्वयं एक भेद तथा महापाप है। जिसमें ये सम्मिलित हैं तथा मरने के पश्चात नरक की अग्नि उनको घेर लेने वाली है, जिससे भागने का कोई मार्ग उनके लिए न होगा।

(५०) आपको यदि कोई भलाई प्राप्त हो जाये, तो उन्हें बुरा लगता है तथा कोई बुराई पहुँच जाये तो कहते हैं, हमने तो अपनी बात पूर्व ही से ठीक कर ली थी, फिर तो बड़े इतराते हुए लौटते हैं।[1]

إِن تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِن تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِن قَبْلُ وَيَتَوَلَّوا وَّهُمْ فَرِحُونَ ﴿٥٠﴾

(५१) (आप) कह दीजिए कि हमें सिवाय अल्लाह के हमारे पक्ष में लिखे हुए के कोई चीज़ पहुँच ही नहीं सकती, वह हमारा मालिक है, तथा (आप कह दीजिए) ईमानवालों को अल्लाह ही पर पूर्ण भरोसा करना चाहिए।[2]

قُل لَّن يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

(५२) कह दीजिये कि तुम हमारे विषय में जिस की प्रतीक्षा में हो, वह दो भलाईयों में से एक है,[3] तथा हम तुम्हारे पक्ष में इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि या तो अल्लाह (तआला) तुम्हें अपने पास से कोई दंड दे अथवा हमारे

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَن يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِندِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوا

---

[1]सम्बन्धित कथन के आधार पर حسنة से यहाँ सफलता तथा लाभ एवं سيئة से असफ़लता, पराजय तथा इसी प्रकार की हानियाँ जो युद्ध में होती हैं, तात्पर्य है इसमें उनके आन्तरिक बुराईयों का प्रदर्शन है। जो मुनाफ़िक़ों (भ्रष्टाचारियों) के दिलों में था। इसलिए कि कष्ट पर प्रसन्न होना तथा भलाई प्राप्त होने पर दुख तथा कष्ट का आभास करना शत्रुता के कारणों को प्रदर्शित करता है।

[2]यह मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) के उत्तर में मुसलमानों के धैर्य, दृढ़ता तथा साहस के लिए कहा जा रहा है। क्योंकि जब मनुष्य को यह ज्ञात हो कि अल्लाह की ओर से भाग्य में लिखा हुआ प्रत्येक अवस्था में होना है तथा जो भी कठिनाई तथा भलाई हमें पहुंचती है, उसी अल्लाह द्वारा लिखित भाग्य का भाग है। तो मनुष्य के लिए कठिनाई का सहन करना सरल तथा उसका साहस बढ़ जाता है।

[3]अर्थात सफलता अथवा शहादत, इन दोनों में से जो भी हमें प्राप्त हो हमारे लिए भलाई है।

إِنَّا مَعَكُم مُّتَرَبِّصُونَ ﴿٥٢﴾

हाथों से ।[1] बस एक ओर तुम प्रतीक्षा करो, दूसरी ओर हम तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

قُلْ أَنفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّن يُتَقَبَّلَ مِنكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) कह दीजिए कि तुम इच्छा अथवा अनिच्छा किसी प्रकार भी ख़र्च करो स्वीकार तो कदापि नहीं किया जायेगा ।[2] निःसंदेह तुम अवज्ञाकारी लोग हो ।

وَمَا مَنَعَهُمْ أَن تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) कोई कारण उनके ख़र्च को अस्वीकार होने का इसके अतिरिक्त नहीं कि ये अल्लाह तथा उसके रसूल के अवज्ञाकारी हैं तथा बड़े आलस्य से नमाज़ में आते हैं तथा बुरे दिल से ख़र्च करते हैं ।[3]

---

[1]अर्थात हम तुम्हारे लिए दो बुराईयों में से एक बुराई की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि या तो आकाश से अल्लाह तआला तुम पर प्रकोप उतारे जिससे तुम नष्ट हो जाओ अथवा हमारे हाथों से ही अल्लाह तआला तुम्हें (वध करने, अथवा बन्दी बनाने आदि प्रकार की) दण्ड दिलवाये । वह दोनों बातों का सामर्थ्य रखता है ।

[2]أنفقوا आदेश है परन्तु यहाँ इस वाक्य का अर्थ यह है कि यदि तुम ख़र्च करोगे तो स्वीकार नहीं किया जायेगा । अथवा यह सूचक वाक्य के अर्थ में है । अर्थ यह है कि दोनों बातें समान हैं, ख़र्च करो अथवा न करो । अपनी इच्छा से अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करोगे तो भी अस्वीकार है । क्योंकि स्वीकर करने की प्रथम शर्त ईमान है और वही तुम्हारे अन्दर नहीं हैं तथा अप्रसन्नता से ख़र्च किया हुआ माल अल्लाह के यहाँ वैसे ही ठुकराया हुआ है, क्योंकि वहाँ उचित उद्देश्य नहीं उपस्थित है, जो स्वीकार करने के लिए आवश्यक है । यह आयत भी इसी प्रकार है जिस प्रकार यह है ।

﴿اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ﴾

"आप इनके लिए क्षमा माँगें अथवा न माँगें ।" (सूरः अल-तौबः-८०)

अर्थात दोनों बातें समान हैं ।

[3]इसमें उनके दान के अस्वीकार किये जाने के तीन कारण बताये गये हैं । प्रथम उनका अविश्वास तथा अवैज्ञा, द्वितीय नमाज़ में आलस्य । इसलिए कि वह इस पर न पुण्य की

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ ٱللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم بِهَا فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَٰفِرُونَ ﴿٥٥﴾

(५५) अत: आपको उन के धन तथा सन्तान आश्चर्य में न डाल दें।[1] अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें दुनिया के जीवन में ही दंड दे।[2] तथा उनके अविश्वास की ही अवस्था में उनके प्राण निकल जायें।[3]

आशा रखते हैं तथा न उनको उसके दण्ड का कोई भय है क्योंकि आशा तथा भय, यह भी ईमान का लक्षण है, जिससे यह वंचित हैं। तथा तृतीय अनिच्छा से खर्च करना, तथा जिस कार्य में दिल की प्रसन्नता न हो, वह स्वीकार किस प्रकार हो सकता है ? अत: ये तीनों कारण ऐसे हैं कि इनमें एक-एक कारण भी कर्म के अस्वीकार के लिए पर्याप्त है। यदि ये तीनों कारण जहाँ एकत्रित हों, तो उस ठुकराये हुए कर्म को अल्लाह के दरबार में किस प्रकार स्वीकृति प्राप्त हो सकती है।

[1]इसलिए कि यह सब परीक्षा के रूप में हैं। जिस प्रकार फ़रमाया :

﴿وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ﴾

"तथा कई प्रकार के लोगों को जो हमने संसारिक जीवन में सुख- सुविधा की वस्तुओं से परिपूर्ण किया है, ताकि उनकी परीक्षा लें, उनकी ओर न देखो।" (सूर: ताहा-१३१)

तथा फ़रमाया :

﴿أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِۦ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ ۞ نُسَارِعُ لَهُمْ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ﴾

"क्या यह लोग विचार करते है ? कि जो हम संसार में उनको धन तथा पुत्र से सहायता देते हैं (तो उस से) उनकी भलाई में हम शीघ्रता कर रहे हैं ? (नहीं) अपितु यह समझते ही नहीं।" (सूर: अल-मोमिनून-५५तथा ५६)

[2]इमाम इब्ने कसीर तथा इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इससे ज़कात तथा अल्लाह के मार्ग में दान करना तात्पर्य निकाला है। अर्थात इन मुनफ़िकों (अवसरवादियों) से ज़कात तथा दान तो (जो वह मुसलमान प्रदर्शित करने के लिए देते हैं) दुनिया में स्वीकार किये जायें ताकि इस प्रकार से उन्हें दुनिया में धन की मार भी दी जाये।

[3]अन्त में उनकी मृत्यु अधर्म की अवस्था में होगी इसलिए कि वे अल्लाह के पैग़म्बर को सच्चे दिल से स्वीकार करने को तैयार ही नहीं तथा अपने अविश्वास तथा द्वयवाद पर ही अडिग तथा दृढ़ हैं।

(५६) तथा ये अल्लाह की सौगन्ध खा-खा कर कहते हैं कि ये तुम्हारे गुट के लोग हैं, यद्यपि कि वे वास्तव में तुम्हारे नहीं, बात केवल इतनी है कि ये कायर लोग हैं ।[1]	وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُم مِّنكُمْ وَلَٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ﴿٥٦﴾
(५७) यदि ये कोई सुरक्षित स्थान अथवा कोई गुफ़ा अथवा कोई भी सिर छिपाने का स्थान पा लें तो अभी उस ओर लगाम तोड़ कर उल्टे भाग छूटें ।[2]	لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغَارَاتٍ أَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ﴿٥٧﴾
(५८) उनमें वे भी हैं जो दान के माल के बंटवारे के विषय में आप पर लांछन रखते हैं ।[3] यदि उसमें से उनको मिल जाये तो प्रसन्न हैं तथा यदि उसमें से न मिला तो तुरन्त ही बिगड़ खड़े होते हैं ।[4]	وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِن لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿٥٨﴾

---

[1]इस डर तथा भय के कारण मिथ्या शपथ ग्रहण करके यह सिद्ध करना चाहते हैं कि हम भी तुम में से ही हैं ।

[2]अर्थात अति तीव्र गति से दौड़ कर वे उन सुरक्षित स्थानों में चले जायें, इसलिए तुम से इनका जितना भी सम्बन्ध है वह प्रेम तथा नि:स्वार्थ का नहीं, द्वेष, ईर्ष्या तथा घृणा पर है ।

[3]यह उनकी एक अन्य बहुत बड़े दोष का वर्णन है कि वह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रशस्त व्यक्तित्व को (نعوذ بالله) दान तथा युद्ध में प्राप्त सामग्री के बंटवारे में अन्यायकारी बताते । जिस प्रकार इब्ने जिलखुवैसर: के विषय में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार बाँट रहे थे कि उसने कहा, "न्याय से काम लीजिए ।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अफसोस है तुझ पर, यदि मैं ही न्याय न करूँगा, तो फिर अन्य कौन करेगा ? " अल हदीस (सहीह बुखारी संख्या ६१६३ तथा सहीह मुस्लिम संख्या ७४४)

[4]अर्थात इस प्रकार का अभियोग लगाने का उद्देश्य मात्र धन का लाभ प्राप्त करना था कि इस प्रकार उन से भय के कारण उन्हें अधिक धन मिल जायेगा, अथवा वे अधिकारी हों अथवा न हों परन्तु भाग उन्हें अवश्य मिल जायेगा ।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ﴿٥٩﴾

(५९) यदि ये लोग अल्लाह तथा उसके रसूल के दिये हुए पर प्रसन्न रहते तथा कह देते कि अल्लाह हमें पर्याप्त है, अल्लाह हमें अपनी कृपा से देगा तथा उसका रसूल भी। हम तो अल्लाह ही से आशा रखने वाले हैं।

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦٠﴾

(६०) दान केवल भिक्षुकों[1] के लिए हैं तथा निर्धनों के लिए तथा उनके कार्यकर्ताओं के लिए तथा उनके लिए जिनके दिल परचाये जा रहे हों तथा दास मुक्ति एवं ऋणी लोगों के लिए तथा अल्लाह के मार्ग में तथा यात्रियों के लिए,[2] अनिवार्य है अल्लाह की ओर से तथा अल्लाह ज्ञान वाला विवेककारी है।

---

[1]इस आयत में उस अभियोग का द्वार बन्द करने के लिए दान पाने योग्य लोगों का वर्णन किया जा रहा है। दान से तात्पर्य यहाँ अनिवार्य दान अर्थात ज़कात है। आयत का प्रारम्भ إنّما से किया गया है, जो सीमित रूप करने का अर्थ देता है। तथा الصدقات में अरबी भाषा का अक्षर (अलिफ़ लाम) वस्तु की साधारणता के लिए है। अर्थात धन दान इन्हीं आठ प्रकारों में सीमित है; जिनकी चर्चा आयत में है। इनके अतिरिक्त ज़कात का धन किसी अन्य प्रयोग में लाना उचित नहीं। विद्वानों में इस बात पर मतभेद है कि इन आठों प्रकार को देना आवश्यक है अथवा इन में से जिस प्रकार के लिए अति आवश्यक हो उन में से एक अथवा अन्य को जिस पर इमाम अथवा विभाजनकारी उचित तथा आवश्यक समझे आवश्यकतानुसार ख़र्च करे। इमाम शाफ़ई आदि पहले मत के पक्ष में हैं कि ज़कात की राशि को बिना किसी सोच-विचार के आठ भागों में विभाजित करनी होगी, फिर आठों स्थान पर थोड़ी-थोड़ी ख़र्च की जाये तथा इमाम मालिक एवं इमाम अबू हनीफ़ा आदि दूसरे मत के पक्ष में हैं कि आवश्यकता तथा हित का ध्यान रखना आवश्यक है, जिस कार्य पर ख़र्च करने की आवश्यकता अधिक हो तथा परिस्थिति के अनुसार जितनी उनकी आवश्यकता हो उतनी ज़कात की राशि उन पर व्यय की जायेगी, चाहे दूसरे कार्यों के लिए राशि बचे अथवा न बचे इस विचार में जो औचित्य है वह प्रथम विचार में नहीं है।

[2]इन आठ प्रयोजनों पर ख़र्च करने का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। (१,२) भिखारी तथा निर्धन लगभग निकट ही निकट है तथा एक अर्थ दूसरे से मिलता-जुलता है अर्थात

निर्धन को भिखारी तथा भिखारी को निर्धन कह ही लिया जाता है। इसलिए इनकी अलग-अलग परिभाषा पर बहुत मतभेद है। परन्तु दोनों के भावार्थ में यह बात तो स्पष्ट है कि जिनको आवश्यकता है तथा अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए आवश्यक धन तथा साधन से वंचित हैं। उनको भिखारी तथा निर्धन कहा जाता है। निर्धन की परिभाषा के लिए हदीस आती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "निर्धन वह नहीं है जो एक-एक, दो-दो निवाला अथवा खजूर के लिए घर-घर फिरता है, अपितु निर्धन वह है कि जिसके पास इतना धन भी न हो कि वह अपनी आवश्यकता पूरी कर ले, न अपने मुख पर इस प्रकार के आभास भी उत्पन्न होने दे कि लोग उसे निर्धन तथा आवश्यकता के योग्य समझ कर दान करें तथा न दूसरों के समक्ष हाथ फैलाये।" (सहीह बुख़ारी किताबुज़ ज़कात) हदीस में इस प्रकार निर्धन, वर्णित व्यक्ति ही को बनाया गया है। वरन् आदरणीय इब्ने अब्बास आदि से निर्धन की यह परिभाषा बतायी जाती है, कि जो हाथ फैलाने वाला हो, घूम-फिर कर अन्य लोगों के पीछे पड़कर माँगता हो तथा भिखारी वह है जो निर्धन होने के उपरान्त छल करने से बचे तथा लोगों से किसी वस्तु का प्रश्न न करे। (इब्ने कसीर) (३) कार्यकर्ता से तात्पर्य सरकारी कर्मचारी हैं, जो ज़कात व दान की राशि वसूल करते हैं तथा बाँटते हैं तथा उसका लेखा-जोखा रखते हैं। (४) आकर्षित हृदय एक तो वह काफ़िर हैं जो थोड़ा-थोड़ा इस्लाम की ओर आकर्षित होते हों तथा उनकी सहायता करने पर यह आशा हो कि वह मुसलमान हो जायेंगे। दूसरे नये मुसलमान हैं जिनको इस्लाम पर दृढ़ता से स्थित रहने के लिए सहायता की आवश्यकता हो। तीसरे वे लोग भी हैं जिनकी सहायता करने से यह आशा हो कि वह अपने क्षेत्र के लोगों को मुसलमानों पर आक्रमण करने से रोकेंगे तथा इस प्रकार वह निकटवर्ती कमज़ोर मुसलमानों की रक्षा करेंगे। यह और इस प्रकार की अन्य अवस्थायें हृदय आकर्षित करने की हैं, जिन पर ज़कात की राशि ख़र्च की जा सकती है। चाहे वर्णित लोग धनवान ही हों। कुछ लोगों के अनुसार यह प्रयोग समाप्त हो गया है परन्तु यह बात ठीक नहीं है। परिस्थितियाँ तथा समय के अनुसार हर काल में इस कर्त्तव्य पर ज़कात की राशि ख़र्च करना उचित है। (५) गर्दनें स्वतन्त्र कराने के लिए। कुछ विद्वानों ने केवल सम्बन्धित दास को लिया है। तथा अन्य विद्वानों ने सम्बन्धित तथा असम्बन्धित दोनों प्रकार के दास लिए हैं, इमाम शौकानी ने इसी विचार को प्रधानता दी है। (६) ऋणी से एक तो उन ऋणियों का तात्पर्य हैं जो अपने परिवार को जीवन-यापन तथा जीवन की आवश्यकता की पूर्ति करते-करते दूसरे लोगों के ऋण से दब गये हों तथा उनके पास नगद राशि भी नहीं है तथा ऐसा सामान भी नहीं है जिसे बेचकर वे उस ऋण को चुका सकें। दूसरे वे ज़िम्मेदार लोग जिन्होंने किसी अन्य की ज़मानत दी हो तथा फिर वह उसकी अदायगी के ज़िम्मेदार बना दिये गये हों, अथवा किसी की फ़सल नष्ट हो गयी हो, अथवा व्यापार में हानि हो गयी हो तथा इस कारण ऋणी हो गया हों। इन सभी लोगों को

وَمِنْهُمُ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أُذُنٌ ۚ قُلْ أُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ ۚ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦١﴾

(६१) तथा उनमें से वे भी हैं जो पैग़म्बर (संदेशवाहक) को कष्ट देते हैं तथा कहते हैं कि हल्के कान का है। (आप) कह दीजिए कि वह कान तुम्हारी भलाई के लिए हैं।[1] वह अल्लाह पर ईमान रखता है तथा मुसलमानों की बातों का विश्वास करता है तथा तुम में से जो ईमानवाले हैं यह उनके लिए कृपा है, और रसूलुल्लाह (अल्लाह के दूत) को जो लोग कष्ट देते हैं उनके लिए दुखदायी यातना है।

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيُرْضُوكُمْ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَن يُرْضُوهُ إِن كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾

(६२) वे मात्र तुम्हें प्रसन्न करने के लिए तुम्हारे समक्ष अल्लाह की सौगंध खा जाते हैं हालाँकि यदि यह ईमानदार होते तो अल्लाह तथा उसके रसूल प्रसन्न किये जाने के अधिक अधिकारी थे।

ज़कात की राशि से सहायता करना उचित है। (७) अल्लाह के मार्ग से तात्पर्य धर्मयुद्ध है अर्थात युद्ध की सामग्री तथा आवश्यकताओं एवं मुजाहिद (चाहे वह मालदार ही हो) पर ज़कात की राशि ख़र्च करनी उचित है। तथा हदीसों में आता है कि हज तथा उमर: भी अल्लाह के मार्ग में ही आता है। इसी प्रकार कुछ विद्वानों के निकट तबलीग़ (निमन्त्रण) तथा आमन्त्रण भी अल्लाह के मार्ग में सम्मिलित है क्योंकि इसका भी उद्देश्य अल्लाह के कथन को जन-जन तक पहुँचाना है। (८) मार्ग के लोगों से तात्पर्य यात्री हैं। अर्थात कोई भी व्यक्ति यात्रा के समय सहायता का पात्र हो गया हो, तो चाहे वह अपने देश में धनवान ही हो, उसकी सहायता ज़कात की राशि से की जा सकती है।

[1]यहाँ से पुन: मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) की चर्चा हो रही है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध एक लांछन यह उन्होंने लगाया कि यह कान का कच्चा (अथवा हल्का) है। अर्थ यह है कि यह हर व्यक्ति की बात सुन लेता है (अर्थात यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज्ञान तथा कृपा एवं क्षमा करने के गुणों से उन्हें धोखा हुआ)। अल्लाह ने फ़रमाया कि नहीं, हमारा पैग़म्बर उपद्रव तथा अशान्ति की कोई बात नहीं सुनता, जो भी सुनता है, तुम्हारा उसमें हित, पुण्य तथा भलाई है।

(६३) क्या ये नहीं जानते कि जो भी अल्लाह का तथा उसके रसूल का विरोध करेगा उस के लिए निःसंदेह नरक की अग्नि है, जिसमें वे सदैव रहने वाले हैं, यह बहुत बड़ा अपमान है।

أَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّهُۥ مَن يُحَادِدِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَأَنَّ لَهُۥ نَارَ جَهَنَّمَ خَٰلِدًا فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ ٱلْخِزْىُ ٱلْعَظِيمُ ﴿٦٣﴾

(६४) अवसरवादियों को (हर समय) यह भय लगा रहता है कि कहीं (मुसलमानों) पर कोई आयत न उतरे, जो उनके दिलों की बातें उन्हें बता दे। कह दीजिए कि तुम उपहास उड़ाते रहो। निःसंदेह अल्लाह तआला उसे व्यक्त करने वाला है जिससे तुम भयभीत हो।

يَحْذَرُ ٱلْمُنَٰفِقُونَ أَن تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُم بِمَا فِى قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ ٱسْتَهْزِءُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾

(६५) यदि आप उनसे पूछें तो साफ कह देंगे कि हम तो यूँ ही आपस में हँस-बोल रहे थे। कह दीजिए कि अल्लाह, उसकी आयतें तथा उसका रसूल ही तुम्हारी हंसी उपहास के लिए शेष रह गये हैं ?[1]

وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِٱللَّهِ وَءَايَٰتِهِۦ وَرَسُولِهِۦ كُنتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦٥﴾

[1] मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) अल्लाह की आयतों का उपहास उड़ाते थे, ईमानवालों का अपमान करते, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में अपशब्द का प्रयोग करने में संकोच न करते, जिसकी सूचना किसी प्रकार से ईमानवालों तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हो जाती, परन्तु यदि उन से पूछा जाता तो साफ़ मुकर जाते तथा कहते कि हम तो आपस में इसी प्रकार हंसी-मज़ाक़ कर रहे थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "हंसी-मज़ाक़ के लिए तुम्हारे समक्ष अल्लाह तथा उसकी आयतें एवं उसका रसूल ही रह गया है ?" अर्थ यह कि यदि तम्हारा उद्देश्य आपस में हंसी-मज़ाक़ का होता तो उसमें अल्लाह, उसकी आयतें तथा रसूल मध्य में क्यों आते ? ये निःसन्देह उस द्वेष तथा ईर्ष्या का संकेत है, जो अल्लाह की आयतों तथा हमारे पैग़म्बर के विरुद्ध तुम्हारे दिलों में स्थित है।

(६६) तुम बहाने न बनाओ, निःसंदेह तुम अपने ईमान लाने के पश्चात बेईमान हो गये ।[1] यदि हम तुम में से कुछ लोगों से अनदेखी भी कर लें,[2] तो कुछ लोगों को उनके अपराध का कठोर दण्ड भी देंगे ।[3]

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَاۗىِٕفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾

(६७) सभी मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) पुरुष तथा स्त्री आपस में एक ही हैं ।[4] ये बुरी बातों का आदेश देते हैं तथा भली बातों से रोकते हैं तथा अपनी मुट्ठी बन्द रखते हैं ।[5] ये अल्लाह को भूल

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا اللّٰهَ

---

[1]अर्थात तुम जो ईमान प्रदर्शित करते रहे हो अल्लाह तथा उसके रसूल के उपहास के पश्चात उसका कोई महत्व नहीं । प्रथम तो वह भी भ्रष्टाचार पर ही आधारित था । फिर भी उसी के कारण तुम्हारी गणना मुसलमानों में होती थी, परन्तु अब उसका भी स्थान समाप्त हो गया ।

[2]इससे तात्पर्य ऐसे लोग हैं, जिन्हें अपनी त्रुटि का आभास हो गया तथा उन्होंने क्षमा-याचना कर ली एवं निःस्वार्थी मुसलमान बन गये ।

[3]यह वे लोग हैं जिन्हें तौबा का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ तथा अधर्म एवं भ्रष्टाचार में लिप्त रहे । इसीलिए उस यातना का कारण भी बता दिया गया है कि वे अपराधी हैं ।

[4]स्वार्थी जो सौगन्ध खाकर मुसलमानों को विश्वास दिलाया करते थे कि "हम तुम ही में से हैं" अल्लाह तआला ने इसका खण्डन किया कि ईमानवालों से उनका क्या सम्बन्ध ? परन्तु यह सभी अवसरवादी चाहे पुरुष हों अथवा स्त्रियाँ एक ही हैं अर्थात कुफ़्र तथा भ्रष्टाचार में एक, दूसरे से बढ़-चढ़ कर हैं । आगे उनके दुर्गुणों को व्यक्त किया जा रहा है । जो ईमानवालों के गुणों के ठीक प्रतिकूल तथा विपरीत हैं ।

[5]इससे तात्पर्य कंजूसी है अर्थात ईमानवालों का गुण अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करना है तथा पाखण्डी का इसके विपरीत कंजूसी । अर्थात अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने में संकोच करना है ।

فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٦٧﴾

गये, अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया।[1] निःसंदेह मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) ही भ्रष्टाचारी हैं।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٦٨﴾

(६८) अल्लाह तआला इन मुनाफ़िक़ (अवसर-वादी) पुरुषों स्त्रियों तथा काफ़िरों से नरक की अग्नि का वायदा कर चुका है, जहाँ ये सदा रहेंगे, वही उनके लिए पर्याप्त है, उन पर अल्लाह की धिक्कार है। तथा उन के लिए स्थाई यातना है।

كَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُم بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ

(६९) तुम से पूर्वजनों[2] के समान जो तुम से बलवान तथा धन संतान में अत्यधिक थे तो वह अपना धार्मिक भाग बरत गये फिर तुम ने भी अपना भाग बरत लिया।[3] जैसे तुम से

---

[1]अर्थात अल्लाह भी उनसे ऐसा ही व्यवहार करेगा कि जैसे कि उसने उन्हें भुला दिया। इस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ الْيَوْمَ نَنسَاكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ﴾

"आज हम तुम्हें उसी प्रकार भुला देंगे, जिस प्रकार तुम हमारी मुलाकात के इस दिन को भुलाये हुए थे।" (सूर: अल-जासिय:-३४)

अर्थ यह है कि जिस प्रकार संसार में उन्होंने अल्लाह के आदेश को छोड़े रखा, क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआला अपनी दया तथा कृपा से वंचित रखेगा। अत: نسيان (निस्यान) का सम्बन्ध अल्लाह तआला की ओर ज्ञान शास्त्र में नियमों के अनुसार समानता के रूप से है। अपितु अल्लाह तआला भूलने के दोष से पवित्र है, अर्थात उसकी यह विशेषता है कि वह किसी भी प्रकार से नहीं भूलता।

[2]अर्थात तुम्हारा हाल भी कर्मों तथा परिणामों के आधार पर पूर्व के समुदायों के काफ़िरों जैसा ही है। अब अनुपस्थिति के बजाय, मुनाफ़िक़ों को सम्बोधित किया जा रहा है।

[3]خلاق का अन्य अनुवाद सांसारिक भाग भी किया गया है। अर्थात तुम्हारे भाग्य में दुनिया का जितना भाग लिख दिया गया है, उसे बरत लो, जिस प्रकार से तुम से पूर्व के लोगों ने अपना भाग बरता। तथा फिर मरण अथवा यातना से आलिंगित हो गये।

ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ بِخَلَـٰقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَٱلَّذِى خَاضُوٓا۟ ۚ أُو۟لَـٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَـٰلُهُمْ فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْـَٔاخِرَةِ ۖ وَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَـٰسِرُونَ ﴿٦٩﴾

पूर्व लोग अपने भाग से लाभान्वित हुये थे तथा तुम ने भी उसी प्रकार ठट्ठा वाला गप किया जैसे उन्होंने किया था ।[1] उनके कार्य लोक-परलोक में नष्ट हो गये तथा यही लोग क्षतिग्रस्त हैं ।[2]

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَٰهِيمَ وَأَصْحَـٰبِ مَدْيَنَ وَٱلْمُؤْتَفِكَـٰتِ ۚ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم

(७०) क्या उन्हें अपने से पूर्व के लोगों के समाचार नहीं पहुँचे । नूह तथा आद एवं समूद के समुदाय तथा इब्राहीम के समुदाय एवं मदयन के निवासी और (उलट-पुलट कर दी गयी बस्तियों के) लोगों के,[3] उनके

---

[1]अर्थात अल्लाह की आयतों तथा अल्लाह के पैग़म्बरों को झुठलाने के लिए। अथवा अन्य भावार्थ यह है कि दुनिया के साधनों तथा आनन्द एवं खेल-कूद में जिस प्रकार मग्न रहे, तुम्हारी भी यही दशा है। आयत में पूर्व के लोगों से तात्पर्य अहले किताब अर्थात यहूदी तथा ईसाई हैं। जैसे एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथों में मेरा प्राण है, तुम अपने से पूर्व के लोगों का अनुसरण अवश्य करोगे। पंजा से पंजा, बाँह से बाँह तथा हाथ से हाथ, यहाँ तक कि यदि वह किसी गोह की बिल में घुसे हैं तो तुम भी अवश्य घुसोगे।" लोगों ने पूछा, "क्या इससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तात्पर्य अहले किताब हैं" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अन्य कौन ?" (सहीह बुख़ारी)

[2]أولئك से तात्पर्य वह लोग हैं जो उपरोक्त दोषों तथा दुर्गुणों से युक्त होते हैं। जिस प्रकार वे हानि युक्त तथा असफल रहे तुम भी उसी प्रकार रहोगे। यद्यपि शक्ति में वह तुम से अधिक शक्तिशाली तथा धन तथा सन्तान में भी अधिक थे। उसके उपरान्त भी अल्लाह के प्रकोप से सुरक्षित न रह सके, तो तुम जो उनसे प्रत्येक क्षेत्र में कम हो, किस प्रकार अल्लाह की पकड़ से बच सकते हो।

[3]यहाँ उन छ: समुदायों का वर्णन किया गया है, जिनका स्थान सीरिया देश रहा है। यह अरब क्षेत्र के निकट है तथा उनकी कुछ बातें शायद उन्होंने अपने पूर्वजों से सुनी भी हों। नूह का समुदाय जो जल प्रलय में डूबो दिया गया, आद का समुदाय जो सामर्थ्य तथा शक्ति में श्रेष्ठ होने के उपरान्त, तेज हवाओं के झोंकों से नष्ट कर दिये गये। समूद का समुदाय, जिसे आकाश की चीख ने नष्ट कर दिया। इब्राहीम के समुदाय जिसके राजा नमरूद बिन किनआन बिन कोश को मच्छर से मरवा दिया गया। मदयन के

بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

पास रसूल (ईशदूत) दलीलें लेकर पहुँचे,[1] तो अल्लाह तआला ऐसा न था कि उन पर अत्याचार करे, अपितु उन्होंने स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार किया।[2]

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ

(७१) मुसलमान पुरुष व स्त्री एक-दूसरे के (पक्षपाती सहायक तथा) मित्र हैं[3] वे भलाईयों

निवासी (आदरणीय शुऐब का समुदाय) जिन्हें चीख, भूकम्प तथा बादलों की छाया के प्रकोप से नष्ट किया गया। तथा उल्टे-पल्टे गये लोग, इससे तात्पर्य लूत का समुदाय है, जिनकी बस्ती का नाम "सदूम" था। ائتكاف का अर्थ है उलट-पलट देना। उन पर एक तो आकाश से पत्थर बरसाये गये, दूसरे उनकी बस्ती को ऊपर उठा कर नीचे फेंका गया, जिससे पूरी बस्ती ऊपर तले हो गयी। इस आधार पर उन उल्टे-पल्टे लोगों को "असहाब मुतफ़िक़ात" कहा जाता है।

[1]इन सभी समुदायों के पास उनके पैग़म्बर, जो उन्हीं के समुदाय का एक पुरुष होता था, आये। परन्तु उन्होंने उनकी बातों को कोई महत्व ही नहीं दिया। अपितु झुठलाने तथा द्वेष का मार्ग अपनाया, जिसका परिणाम अन्त में अल्लाह के प्रकोप के रूप में सामने आया।

[2]अर्थात यह प्रकोप उनके निरन्तर अत्याचार का प्रतिफल है। अकारण अल्लाह के प्रकोप का शिकार नहीं हुए।

[3]मुनफ़िक़ों (द्वयवादियों) के दुर्गुणो की तुलना में मुसलमानों के सदगुणों की चर्चा हो रही है। प्रथम विशेषता : वे एक-दूसरे के मित्र, सहायक तथा दुख के साथी हैं जिस प्रकार हदीस में है।

« اَلْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا ».

"मोमिन मोमिन के लिए एक दीवार की तरह है जिसकी एक ईंट दूसरी ईंट की मज़बुती का साधन है।" (सहीह/बुख़ारी किताबुस्सलात बाब तश्बीकिल असाबेअ फ़िल मस्जिदे व गैरेही, मुस्लिम बाब तराहुमुल मोमिनीन)

दूसरी हदीस में आया है।

« مَثَلُ الْمُؤْمِنِينَ فِي تَوَادِّهِمْ، وتَرَاحُمِهِمْ، كَمَثَلِ الْجَسَدِ الْوَاحِدِ إِذَا اشْتَكَى مِنْهُ عُضْوٌ، تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالْحُمَّى وَالسَّهَرِ ».

بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُولَٰئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

का आदेश देते हैं तथा बुराईयों से रोकते हैं,[1] नमाज़ें नियमित रूप से पढ़ते हैं, ज़कात अदा करते हैं, अल्लाह तथा उसके रसूल की बात मानते हैं,[2] यही लोग हैं जिन पर अल्लाह (तआला) अतिशीघ्र कृपा करेगा, नि:संदेह अल्लाह विवेकी प्रभावी है।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ

(७२) इन ईमानदार पुरुषों तथा स्त्रियों से अल्लाह (तआला) ने उन स्वर्गों का वायदा किया है जिनके नीचे नहरें बह रहीं हैं, जहाँ वे सदैव रहने वाले हैं तथा उन स्वच्छ पवित्र भवन का,[3] जो उन अनन्त स्वर्ग में हैं, तथा

"मोमिन का उदाहरण आपस में एक-दूसरे के साथ प्रेम करने तथा कृपा करने में एक शरीर की भाँति है कि जब शरीर के एक अंग को दर्द होता है तो सारे शरीर को बुखार हो जाता है तथा सजग रहता है।" (सहीह मुस्लिम बाब मज़कूर तथा अल्बुखारी किताबुल आदाब बाब रहमतुन्नास वल बहाएम)

[1]यह ईमानवालों का दूसरा विशेष गुण है معروف (मारूफ़) वह है जिसे धर्म विधान ने मारूफ़ (अर्थात नेकी, पुण्य तथा भलाई) कहा है مُنكر (मुनकर) वह है जिसे धर्म विधान ने मुनकर (अर्थात बुरा) माना है न कि वह जिसे लोग अच्छा या बुरा कहें।

[2]नमाज़ अल्लाह के अधिकारों में परम आराधना है तथा ज़कात अन्य लोगों के अधिकार के आधार पर विशेष स्थान रखती है, इसी कारण इन दोनों का विशेष रूप से वर्णन करके कहा गया है कि वह प्रत्येक विषय में अल्लाह तथा उसके रसूल के आदेशों का पालन करते हैं।

[3]जो मोती तथा याक़ूत (पुलक) से तैयार किये गये होंगे عدن के कई अर्थ किये गये हैं एक अर्थ सदैव का है।

ذَٰلِكَ هُوَ ٱلْفَوْزُ ٱلْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾

अल्लाह की प्रसन्नता सब से महान है,[1] यही बहुत बड़ी सफलता है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ جَٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾

(७३) हे नबी ! काफ़िरों तथा पाखंडियों से धर्मयुद्ध करते रहो ।[2] तथा उन पर कड़ाई करो ।[3] उनका मूल स्थान नरक है, जो अत्यधिक बुरा स्थान है ।[4]

---

[1]हदीस (रसूल का कथन) में भी आता है कि स्वर्ग की सभी प्रदानों के बाद स्वर्ग वासियों को सर्वोत्तम प्रदान अल्लाह की प्रसन्नता के रूप में मिलेगा। (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम किताबुल रिकाक तथा किताबुल जन्नः)

[2]इस आयत में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों तथा अवसर-वादियों से धर्मयुद्ध तथा उन पर कड़ाई करने का आदेश दिया जा रहा है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात इससे सम्बन्धित आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुयायी है । काफ़िरों के साथ द्वयवादियों से भी जो धर्मयुद्ध करने का आदेश है, इसके विषय में मतभेद है। एक मत तो यही है कि यदि अवसरवादी का द्वयवाद तथा भ्रष्टता स्पष्ट हो जाये, तो उनसे भी उसी प्रकार धर्मयुद्ध किया जाये, जिस प्रकार काफ़िरों के साथ किया जाता है । दूसरा मत यह है कि अवसरवादियों से धर्मयुद्ध करना यह है कि उन्हें शिक्षा, भाषण तथा मुख से समझाया जाये। अथवा वे सभ्यता के विरुद्ध अपराध करें तो उनको दंडित किया जाये। तीसरा मत यह है कि धर्मयुद्ध का आदेश काफ़िरों से सम्बन्धित है तथा कठोरता करना पाखंडियों के लिए। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि इन मतों में आपस में कोई भेद तथा विरोध नहीं, इसलिए समय तथा परिस्थितियों के अनुसार इनमें से किसी भी मत के आधार पर कार्य करना चाहिए।

[3] غِلْظَة का विलोम رَأْفَة है, जिसका अर्थ कोमलता तथा प्रेम करने के हैं। इस आधार से غِلْظَة का अर्थ कड़ाई तथा बलपूर्वक शत्रुओं के विरुद्ध कार्यवाही है। मात्र मुख के कड़े भाषण का तात्पर्य नहीं है। इसलिए कि वह तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदव्यवहार के ही विरुद्ध है, उसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं न कर सकते थे न अल्लाह तआला की ओर से ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदेश मिल सकता था।

[4]धर्मयुद्ध तथा कठोरता के आदेश का सम्बन्ध संसार से है। आख़िरत में उनके लिए नरक है जो सबसे बुरा स्थान है।

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا ۖ وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۚ وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا

(७४) ये अल्लाह की सौगन्ध खा कर कहते हैं कि उन्होंने नहीं कहा, यद्यपि कि नि:संदेह कुफ्र का शब्द इनके मुख से निकल चुका है। तथा ये अपने इस्लाम के उपरान्त भी नास्तिक हो गये हैं।[1] तथा इन्होंने उस कार्य का निश्चय भी किया है जिसे प्राप्त न कर सके।[2] ये केवल इसी बात का बदला ले रहे हैं कि उन्हें अल्लाह ने अपनी कृपा से तथा इसके रसूल ने धनवान कर दिया।[3] यदि यह अब

---

[1]व्याख्याकारों ने इसकी व्याख्या में विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया है, जिनमें अवसरवादियों ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में अपशब्द कहे, जिसे मुसलमानों ने सुन लिया तथा आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बताया, परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूछने पर साफ मुकर गये, अपितु सौगन्ध तक खा लिया कि उन्होंने ऐसी बातें नहीं कीं। जिस पर यह आयत उतरी। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में अपमान करना कुफ्र है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में अपशब्द कहने वाला मुसलमान नहीं रह सकता।

[2]इसके विषय में भी कुछ घटनाओं का वर्णन मिलता है जैसे तबूक से वापसी के समय अवसरवादियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध षड़यन्त्र रचा जिसमें वे सफल नहीं हो सके कि दस-बारह अवसरवादी एक घाटी में आप के पीछे लग गये जहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शेष सेना से अलग लगभग अकेले गुज़र रहे थे। उनकी योजना यह थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आक्रमण करके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का काम तमाम कर देंगे। इसकी सूचना प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह ने दे दी, जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना बचाव कर लिया।

[3]मुसलमानों की हिजरत के पश्चात मदीना नगर को केन्द्रीय अस्तित्व प्राप्त हो गया, जिसके कारण वहाँ व्यापार की भी उन्नति हुई, तथा मदीना के निवासियों की आर्थिक परिस्थितियों में प्रगति हुई। मदीना के द्रयवादियों को भी इससे लाभ हुआ। अल्लाह तआला इस आयत में यही फ़रमा रहे हैं कि क्या उन लोगों को इस बात की अप्रसन्नता है कि अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से धनवान बना दिया है ? अर्थात यह

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾

भी क्षमा-याचना कर लें तो यह इनके पक्ष में अच्छा है तथा यदि मुहँ मोड़े रहें, तो अल्लाह (तआला) उन्हें लोक-परलोक में दुखदायी यातना देगा । तथा समस्त धरती में उनका कोई पक्षधर तथा सहाय न खड़ा होगा।

وَمِنْهُمْ مَنْ عَاهَدَ اللَّهَ لَئِنْ آتَانَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾

(७५) इनमें वह भी हैं जिन्होंने अल्लाह से वायदा किया था कि यदि वह हमें अपनी कृपा से धन प्रदान करेगा तो हम अवश्य सत्कार करेंगे तथा पूर्ण रूप से पुनीतों में हो जायेंगे।

فَلَمَّا آتَاهُمْ مِنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٧٦﴾

(७६) परन्तु जब अल्लाह ने अपनी कृपा से उन्हें दिया तो यह उसमें कंजूसी करने लगे तथा टाल-मटोल करके मुख मोड़ लिया।[1]

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾

(७७) तो इसके दंडस्वरूप अल्लाह ने उनके दिलों में द्वयवाद डाल दिया, अल्लाह से मिलने के दिनों तक । क्योंकि उन्होंने अल्लाह से किये हुए वायदे का विरोध किया तथा झूठ बोलते रहे।

अप्रसन्नता तथा क्रोध वाली बातें तो नहीं हैं, अपितु उनको तो अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करना चाहिए कि उसने उन्हें निर्धनता से निकाल कर सुसम्पन्न बना दिया।

नोट:- अल्लाह तआला के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन इस लिए है कि इस उन्नति का स्पष्ट कारण तथा साधन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही बने थे, वरन् वास्तव में धनवान बनाने वाला तो अल्लाह ही था। इसी लिए आयत में من فضلـــه में एक वचन सर्वनाम है कि अल्लाह ने अपनी कृपा से उसे धनवान कर दिया।

[1]इस आयत को कुछ व्याख्याकार एक सहाबी आदरणीय साअलबा बिन हातिब अन्सारी के विषय में बताते हैं परन्तु प्रमाण के आधार पर यह सही नही है। सही बात यह है कि इसमें भी अवसरवादियों के एक अन्य कर्म का वर्णन किया गया है।

(७८) क्या वे यह नहीं जानते कि अल्लाह (तआला) को उनके दिल का भेद तथा उनकी कानाफूसी सब ज्ञात है तथा अल्लाह (तआला) सभी गुप्त बातों का जानकार है ?[1]

أَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَىٰهُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ عَلَّٰمُ ٱلْغُيُوبِ ﴿٧٨﴾

(७९) जो लोग उन मुसलमानों पर आक्षेप लगाते हैं, जो दिल खोलकर दान करते हैं तथा उन लोगों पर जिनको अपने परिश्रम के सिवाय कुछ प्राप्त ही नहीं, तो ये उनका उपहास करते हैं।[2] अल्लाह भी उनसे उपहास करता है।[3] और उन्हीं के लिए दुखदायी यातना है।

ٱلَّذِينَ يَلْمِزُونَ ٱلْمُطَّوِّعِينَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ فِى ٱلصَّدَقَٰتِ وَٱلَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ ٱللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٩﴾

---

[1]इसमें उन अवसरवदियों के लिए कड़ी चेतावनी है जो अल्लाह तआला से वायदा करते हैं फिर उसकी चिन्ता नहीं करते। जैसे कि वे यह समझते हैं कि अल्लाह उनकी गुप्त बातों तथा भेदों को नहीं जानता। यद्यपि कि अल्लाह सभी कुछ जानता है, क्योंकि वह तो अर्न्तयामी है। सभी अप्रत्यक्ष बातों को जानता है।

[2]الْمُطَّوِّعِين का अर्थ है जो आवश्यक दान के अतिरिक्त स्वेच्छा से अल्लाह के मार्ग में अधिक ख़र्च करते हैं جُهْد का अर्थ परिश्रम तथा प्रयत्न है। अर्थात वे लोग जो धनवान तो नहीं हैं, परन्तु इसके उपरान्त भी अपनी परिश्रम तथा प्रयास की कमाई के थोड़ी होने के उपरान्त भी कुछ धन अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं। आयत में पाखण्डियों के एक अन्य अत्यन्त कुरूप कर्म का वर्णन है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम युद्ध आदि के अवसर पर मुसलमानों से चन्दे के लिए अपील करते तो मुसलमान आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अपील पर अपने सामर्थ्य के अनुसार उसमें भाग लेते। किसी के पास अधिक माल होता, वह अधिक दान देता, जिसके पास थोड़ा होता, वह थोड़ा देता। पाखण्डी दोनों प्रकार के मुसलमानों की आलोचना करते। अधिक देने वालों के विषय में कहते कि यह दिखावा है तथा अभिमान है तथा थोड़ा देने वालों को कहते कि तेरे इस माल से क्या बनेगा? अथवा अल्लाह तआला तेरे इस दान से निस्पृह है। (सहीह बुख़ारी-१४१५ तथा मुस्लिम-७०६) इस प्रकार वे मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाते।

[3]अर्थात ईमानवालों से उपहास करने का प्रतिफल उन्हें इस प्रकार देता है कि उन्हें अपमानित तथा निरादर करता है। यह साहित्य शास्त्र का नियम है कि किसी अर्थ के लिये वही शब्द प्रयोग कर दिया जाता है जो पहले आया हो इस विधि को अरबी भाषा

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾

(८०) आप इनके लिए क्षमा-याचना करें अथवा न करो। यदि आप सत्तर बार भी इनके लिए क्षमा-याचना करें तो भी अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा।[1] ये इसलिए कि उन्होंने अल्लाह तथा उसके रसूल के प्रति कुफ़्र किया है।[2] और ऐसे भ्रष्टाचारियों को कृपालु अल्लाह मार्गदर्शन नहीं देता।[3]

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا

(८१) पीछे रह जाने वाले लोग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरुद्ध अपने

में "मुशाकलत" कहा जाता है, जैसे यहाँ उपहास के प्रतिफल के लिये उपहास (इस्तेहज़ा) का शब्द प्रयोग कर दिया गया है। अथवा यह शाप है अल्लाह तआला उनसे भी इसी प्रकार उपहास करेगा। जिस प्रकार ये मुसलमानों के साथ उपहास करते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[1]सत्तर की संख्या अतिश्योक्ति तथा अधिकता के लिए है, कि चाहे जितना अधिक उन की दोष मुक्ति के लिए विनती करें, अल्लाह तआला उनको कदापि क्षमा नहीं करेगा। यह अर्थ नहीं कि यदि सत्तर से अधिक बार दोष मुक्ति के लिए विनय की गयी तो उनको क्षमा कर दिया जायेगा।

[2]यह क्षमा से वंचित करने का कारण बता दिया गया है, ताकि लोग किसी की सिफ़ारिश की आशा में न रहें वरन् ईमान तथा पुण्य कर्म की दौलत लेकर अल्लाह के सदन में उपस्थित हों। यदि प्रलय सामग्री किसी के पास नहीं होगी तो ऐसे नास्तिकों तथा अवज्ञाकारियों की कोई सिफ़ारिश भी नहीं करेगा, इसलिए कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों के लिए सिफ़ारिश की आज्ञा ही प्रदान नहीं करेगा।

[3]इस मार्गदर्शन से तात्पर्य वह मार्गदर्शन है, जो मनुष्य को लक्ष्य (ईमान) तक पहुँचा देता है अन्यथा मार्गदर्शन का वास्तविक अर्थ मार्ग दिखा देना है। इसका प्रबन्ध तो संसार में प्रत्येक मुसलमान तथा काफ़िर के लिए कर दिया गया है

﴿ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ﴾

"तथा हमने उस (मानवगण को) संमार्ग दिखा दिया है या तो कृतज्ञ हो अथवा कृतघ्न बने।" (सूर: अल-दहर)

﴿ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ﴾

"हमने उस (मानव) को (भलाई, बुराई) के दोनों मार्ग दिखा दिये हैं।" (सूर: अल-बलद-१०)

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۗ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ۚ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾

बैठे रह जाने पर प्रसन्न हैं ।[1] उन्होंने अल्लाह के मार्ग में अपने धन तथा अपने प्राण से धर्मयुद्ध करना अप्रिय रखा तथा उन्होंने कह दिया कि इस गरमी में न निकलो । कह दीजिए कि नरक की अग्नि अत्यधिक गरम है, काश कि वे समझते होते ।[2]

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) अत: उन्हें चाहिए कि बहुत कम हँसें तथा अधिक रोयें,[3] बदले में उसके जो ये करते थे ।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۗ

(८३) तो यदि अल्लाह तआला आप को उनके किसी गुट[4] कि ओर लौटा कर वापस ले आये फिर ये आप से युद्ध के मैदान में निकलने की आज्ञा माँगें,[5] तो आप कह दीजिए कि तुम मेरे साथ कदापि नहीं चल सकते तथा न मेरे

---

[1]यह उन द्वयवादियों की चर्चा है जो तबूक में नहीं गये थे तथा झूठे कारण बता कर रुकने की अनुमति ले ली । خِلاف का अर्थ है, पीछे अथवा विरोध अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जाने के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे अथवा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोध में मदीना मे बैठे रहे ।

[2]अर्थात यदि इनको ज्ञात होता कि नरक की अग्नि कि गर्मी के समक्ष दुनिया की गर्मी कोई महत्व नहीं रखती, तो वे कभी भी पीछे न रहते । हदीस में वर्णित है कि दुनिया की यह अग्नि नरक की अग्नि का ७०वाँ भाग है । अर्थात नरक की अग्नि की गर्मी संसार की अग्नि की गर्मी से ६९ गुणा अधिक है । (सहीह बुख़ारी, बदउल ख़ल्क) اللهم احفظنا منها

[3]अर्थ यह है कि ये हँसेंगे थोड़ा तथा रोयेंगे अधिक ।

[4]इससे तात्पर्य द्वयवादियों का गुट है । अर्थात यदि अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तबूक से मदीने वापस ले आये, जहाँ ये पीछे रह जाने वाले मुनाफ़िक़ीन भी हैं ।

[5]अर्थात किसी अन्य युद्ध के लिए, साथ जाने के लिए इच्छा व्यक्त करें ।

إِنَّكُمْ رَضِيتُم بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ﴿٨٣﴾

साथ शत्रु से लड़ाई कर सकते हो। तुमने प्रथम बार ही बैठे रहने को प्रिय समझा था,[1] तो तुम पीछे रह जाने वालों में ही बैठे रहो।[2]

وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ ۖ إِنَّهُمْ

(८४) तथा इनमें से कोई मर जाये तो उसकी अर्थी पर नमाज़ आप कदापि न पढ़ें तथा न उसकी क़ब्र (समाधि) पर खड़े हों।[3] यह

---

[1]ये भविष्य में साथ न ले जाने का कारण है कि तुम प्रथम बार साथ नहीं गये, अत: अब तुम इस योग्य नहीं कि तुम्हें किसी युद्ध में साथ ले जाया जाये।

[2]अर्थात अब तुम्हारी दशा यही है कि तुम स्त्रियों, बच्चों तथा वृद्धों के साथ बैठे रहो, जो युद्ध करने के बजाय घर में ही बैठे रहते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह निर्देश इसलिए दिया गया है ताकि उनके उस दुख तथा क्षोभ एवं पश्चाताप में और तीव्रता आये, जो उन्हें पीछे रह जाने के कारण से था। (यदि था)

[3]यह आयत यद्यपि द्वयवादियों के प्रमुख अब्दुल्लाह बिन उबैय के विषय में उतरी है। परन्तु इसका आदेश सामान्य है। प्रत्येक व्यक्ति जिसकी मृत्यु कुफ़्र तथा द्वयवाद की स्थिति में हुई हो, वह उसमें सम्मिलित है। इसके उतरने का कारण यह है कि अब्दुल्लाह बिन उबैय की मृत्यु हुई, तो उसके पुत्र अब्दुल्लाह (जो मुसलमान तथा अपने पिता के समनाम थे) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा कहा कि एक तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (प्रसाद स्वरूप) अपनी कमीज़ प्रदान कर दें ताकि इसमें मैं अपने पिता का कफ़न (शव वस्त्र) बना दूँ। दूसरे यह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ा दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कमीज़ प्रदान की तथा नमाज़ पढ़ाने के लिए भी गये। आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसे लोगों की नमाज़ पढ़ाने से रोका है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस के पक्ष में दोष मुक्ति की प्रार्थना क्यों करते हैं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे अधिकार दिया है अर्थात रोका नहीं है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि यदि तू सत्तर बार भी उनके दोष मुक्ति के लिए प्रार्थना करेगा तो अल्लाह तआला उन्हें क्षमा न करेगा, तो मैं उनके लिए सत्तर बार से अधिक दोष मुक्ति की प्रार्थना कर लूँगा।" अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ा दी जिस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतार कर भविष्य में मुनाफ़िक़ों के पक्ष में दोष मुक्ति की प्रार्थना पूर्णत: निषेध

(८७) यह तो घर में रहने वाली स्त्रियों का साथ देने पर रीझ गये तथा उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी अब वह कुछ समझ-बूझ नहीं रखते ।[1]

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾

(८८) परन्तु स्वयं रसूल (ईशदूत) तथा उसके साथ के ईमानवाले अपने धनों एवं प्राणों से धर्मयुद्ध (जिहाद) करते हैं, उन्हीं के लिए भलाई है तथा यही लोग सफलता पाने वाले हैं ।

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ز وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८९) इन्हीं के लिए अल्लाह (तआला) ने वह स्वर्ग तैयार कीं हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें वह नित्यवासी होंगे । यही बहुत बड़ी सफलता है ।[2]

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾

(९०) गँवारों में से बहाना बनाने वाले लोग उपस्थित हुए कि उन्हें अनुमति दी जाये तथा वह बैठे रहें जिन्होंने अल्लाह से तथा उसके

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

चाहिए था, क्योंकि उनके पास अल्लाह का प्रदान किया हुआ सभी कुछ था । قاعدين का तात्पर्य कुछ मजबूरी के कारण घर में बैठे रहने वाले आदि हैं, जैसाकि अगली आयत में उनको خوالف से तुलना किया गया है, जो خالفة का बहुवचन है अर्थात "पीछे रहने वाली स्त्रियाँ ।"

[1]दिलों पर मोहर (मुद्रा) लग जाना, यह निरन्तर पाप करने के कारण होता है जिसका स्पष्टीकरण पहले किया जा चुका है, इसके उपरान्त मनुष्य सोचने-समझने की शक्ति से वंचित हो जाता है ।

[2]उन पाखण्डियों के विपरीत ईमानवालों का व्यवहार यह है कि वह अपने तन-मन-धन से अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करते हैं, अल्लाह के मार्ग में उन्हें अपने प्राणों की चिन्ता भी नहीं है तथा न धन की । उनके निकट अल्लाह का आदेश सर्वोपरि है उन्हीं के लिए भलाई है अर्थात परलोक की भलाई तथा स्वर्ग का सुख । तथा कुछ के निकट लोक-परलोक दोनों स्थानों का लाभ, तथा यही लोग सफल तथा उच्च पदों पर आसीन होने के योग्य होंगे ।

سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٠﴾

रसूल से झूठी बातें बनायीं थीं। अब तो उनमें जितने भी काफ़िर है उन्हें दुखदायी यातना पहुँच कर रहेगी।[1]

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِن سَبِيلٍ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩١﴾

(९१) निर्बलों एवं रोगियों पर तथा उन पर जो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते कोई दोष नहीं जब तक वह अल्लाह तथा उसके रसूल (दूत) के हितैषी हों। ऐसे पुण्यकारों पर कोई मार्ग नहीं तथा अल्लाह क्षमावान दयालु है।[2]

---

[1]इन مُعذّرين के विषय में व्याख्याकारों में मतभेद है। कुछ के निकट नगर से दूर रहने वाले वह ग्रामीण थे जिन्होंने झूठे कारण बता कर आज्ञा प्राप्त कर ली थी। दूसरे उनमें वे भी थे जिन्होंने आकर कारण बताना भी उचित न समझा तथा बैठे रहे। इस प्रकार इस आयत में पाखण्डियों के दो गुटों का वर्णन है। مِنهُم से झूठे कारण प्रस्तुत करने वाले तथा बैठे रह जाने वाले दोनों ही गुटों का वर्णन है अन्य व्याख्याकारों ने معذّرون से तात्पर्य ऐसे ग्रामीण मुसलमान लिए हैं, जिन्होंने उचित कारण प्रस्तुत करके आज्ञा प्राप्त की थी। और معذّرون उनके निकट वास्तव में مُعتذرون हैं। अरबी का अक्षर 'त' को अक्षर जाल में संधि कर दी गई है। तथा معتذر का अर्थ है, वास्तविक कारण रखने वाले। इस आधार पर आयत के अगले वाक्य में पाखण्डियों का वर्णन है। तथा आयत में दो गुटों का वर्णन है पहले वाक्य में उन मुसलमानों का जिनके पास वास्तव में कारण थे तथा दूसरे पाखण्डी, जो बिना कारण बताये बैठे रहे तथा आयत के अन्त में जो चेतावनी है, इसी दूसरे गुट के लिए है। والله أعلم

[2]इस आयत में उन लोगों का वर्णन है जो वास्तव में विवश थे तथा उनका कारण भी स्पष्ट था। जैसाकि १. निर्बल तथा कमज़ोर अर्थात बूढ़े तथा अंधे अथवा लंगड़े आदि मजबूर इसी परिधि में आते हैं। कुछ ने उनको रोगियों में सम्मिलित किया है २. रोगी ३. जिनके पास धर्मयुद्ध के ख़र्च उठाने की शक्ति नहीं थी तथा बैतुल माल (धार्मिक कोष) में भी उनके खर्च उठाने की शक्ति न थी। अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हित से तात्पर्य है, धर्मयुद्ध की उनके दिलों में तड़प, मुजाहिदीन (धर्मयुद्ध के सैनिकों) से प्रेम रखते हैं तथा अल्लाह एवं उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करते हैं। ऐसे मोहसिनीन (परोपकारी) यदि धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने के अयोग्य हों तो उन पर कोई पाप नहीं।

(९२) तथा न उन पर जो आप के पास आते हैं कि आप उन्हें सवारी का प्रबन्ध कर दें तो आप उत्तर देते हैं कि मैं तुम्हारे वाहन के लिये कुछ नहीं पाता तो वह दु:ख से अश्रु बहाते लौट जाते हैं कि उन्हें ख़र्च करने के लिए कुछ भी प्राप्त नहीं ।[1]

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ص تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾

(९३) निश्चय उन पर मार्ग (इल्जाम) है जो धनी रह कर भी आप से अनुमती माँगते हैं। यह नारियों के साथ रह जाने पर प्रसन्न हैं एवं अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है जिस के कारण वह अज्ञान हो गये हैं ।[2]

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ج رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ لا وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

---

[1]यह मुसलमानों के एक गुट का वर्णन है, जिनके पास अपनी सवारियाँ भी नहीं थीं तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उन्हें सवारियाँ उपलब्ध कराने में असमर्थता व्यक्त की जिस पर उन्हें इतना दुख हुआ कि आँखों से आँसू निकल पड़े। رضي الله عنهم अर्थात नि:स्वार्थी मुसलमान, जो किसी भी प्रकार से उचित कारण रखते थे ।अल्लाह तआला ने जो प्रत्येक प्रत्यक्ष तथा छिपी बातों का जानने वाला है, उनको धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने से अलग कर दिया। बल्कि हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन असमर्थ लोगों के विषय में धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने वाले लोगों से फ़रमाया कि, "तुम्हारे पीछे मदीने में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि तुम जिस घाटी को तय करते हो, तथा जिस मार्ग पर चलते हो, तुम्हारे साथ वह बदला पाने में समान रूप से सम्मिलित हैं।" सहाबा कराम ने पूछा, यह किस प्रकार हो सकता है, जब कि वे मदीने में बैठे हैं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया « حَبَسَهُمُ الْعُذْرُ ». "कारण ने उन्हें वहाँ रोक दिया है।" (सहीह/बुख़ारी जिहाद तथा सहीह मुस्लिम संख्या-१५१८)

[2]ये पाखण्डी हैं जिनका वर्णन आयत संख्या ८६ तथा ८७ में गुजर चुका है। यहाँ पुन: उनका वर्णन नि:स्वार्थ मुसलमानों की तुलना में हुआ है। خوالف बहुवचन خالفة का है (पीछे रहने वाली) तात्पर्य स्त्रियाँ, बच्चे, असमर्थ तथा अत्यधिक रोग से पीड़ित एवं वृद्ध हैं, जो युद्ध में सम्मिलित होने से असमर्थ हैं। لا يعلمون का अर्थ है वे नहीं जानते कि पीछे रहना कितना बड़ा अपराध है, वरन् संभवत: वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पीछे न रहते।

(९४) वे तुमसे बहाने बनायेंगे जब तुम उनके पास जाओगे, (हे नबी) कह दो कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारे (करतूतों) से सूचित कर दिया है, तथा अल्लाह एवं उसके रसूल (संदेशवाहक) तुम्हारे कर्म देख लेंगे फिर तुम परोक्ष एवं प्रत्यक्ष के जानकार के पास लौटाये जाओगे फिर वह तुम्हें सूचित कर देगा जो तुम कर रहे थे।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُل لَّا تَعْتَذِرُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

(९५) हाँ वह तुम्हारे समक्ष अल्लाह की शपथ ले लेंगे जब तुम उनके पास वापस जाओगे ताकि तुम उनको उनकी दशा पर छोड़ दो, अत: तुम उन्हें उनकी स्थिति पर छोड़ दो, वस्तुत: वह अत्यन्त अपवित्र हैं तथा उनका स्थान नरक है उनके करतूतों के बदले जो किया करते थे।

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ إِنَّهُمْ رِجْسٌ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾

(९६) यह तुम्हारे निकट इसलिये शपथ लेंगे कि तुम उनसे प्रसन्न हो जाओ तो यदि तुम उनसे प्रसन्न हो भी जाओ तो अल्लाह ऐसे दुराचारियों से प्रसन्न नहीं होता।[1]

يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۖ فَإِن تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾

---

[1]इन तीन आयतों में उन द्वयवादियों (मुनाफिकों) का वर्णन है जो तबूक के युद्ध के समय मुसलमानों के साथ नहीं गये थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों के सुरक्षित वापस आने पर अपने बहाने प्रस्तुत करके उनकी दृष्टि में वफ़ादार बनना चाहते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब तुम उनके पास आओगे तो यह बहाने बनायेंगे। उनसे कह दो कि मेरे समक्ष कारण बताने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी वास्तविक स्थिति से हमें सूचित कर दिया है। अब तुम्हारे झूठे बहानों पर हम विश्वास किस प्रकार कर सकते हैं ? परन्तु उन बहानों की वास्तविकता निकट भविष्य में खुल जायेगी, तुम्हारे कर्म से जिसे अल्लाह तआला देख रहा है तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी दृष्टि उस पर है तुम्हारे कारणों

(९७) असभ्य ग्रामीण लोग कुफ़्र तथा उन्माद में बहुत ही कठोर हैं,[1] तथा उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको इन आदेशों का ज्ञान न हो, जो अल्लाह ने अपने रसूल पर

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾

का स्वंय पर्दा उठ जायेगा। तथा यदि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों को फिर भी धोखा तथा छल देने में सफल हो गये तो अन्त में वह एक समय तो आयेगा ही, जब तुम ऐसी शक्ति के दरबार में उपस्थित किये जाओगे जो छिपी और स्पष्ट सभी बातों को जानने वाला है। उसे तो तुम कदापि धोखा नहीं दे सकते वह अल्लाह तआला तुम्हारे सभी कच्चे-चिट्ठे को तुम्हारे सामने खोलकर रख देगा। दूसरी आयत में फ़रमाया कि तुम्हारे लौटने पर सौगन्ध खायेंगे ताकि तुम उन्हें क्षमा कर दो। परन्तु तुम उन को उनके हाल पर छोड़ दो। ये लोग अपने विश्वास तथा कर्म के अनुसार अशुद्ध हैं, उन्होंने जो कुछ किया है इसका बदला नरक ही है। तीसरी आयत में फ़रमाया कि ये तुम्हें प्रसन्न करने के लिये सौगन्ध खायेंगे। परन्तु इन मूर्खों को यह नहीं ज्ञात है कि यदि तुम इन से प्रसन्न भी हो जाओ, तो उन्होंने जिस फिस्क अर्थात अल्लाह की आज्ञापालन से मुँह मोड़कर भागने का मार्ग अपनाया है, उसके कारण अल्लाह तआला उनसे किस प्रकार प्रसन्न हो सकता है ?

[1]उपरोक्त आयतों में उन द्वयवादियों का वर्णन था जो मदीना नगर के निवासी थे तथा कुछ पाखण्डी वे भी थे, जो मदीना नगर के निकटवर्ती गाँवों के निवासी थे। उसे अरबी भाषा में أعراب कहा जाता है जो أعرابي का बहुबचन है। नगरवासियों के व्यवहार एवं चरित्र की अपेक्षा जिस प्रकार उनमें अभद्रता तथा कठोरता पायी जाती थी उसी प्रकार उनमें जो काफिर तथा पाखण्डी थे वह कुफ़्र तथा पाखण्ड में नगरवासियों से अधिक कठोर तथा धार्मिक आदेशों से अधिक अनभिज्ञ थे। इस आयत में उन्हीं का वर्णन तथा उनके इसी व्यवहार का स्पष्टीकरण है। कुछ हदीसों से भी उनके व्यवहार पर प्रकाश पड़ता है। जैसे एक समय कुछ अरब ग्रामीण लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा उन्होंनें पूछा (أَتُقَبِّلُونَ صِبْيَانَكُمْ) "क्या तुम अपने बच्चों का चुम्बन करते हो ?" सहाबा ने कहा "हाँ" उन्होंने कहा, "अल्लाह की सौगन्ध हम तो चुम्बन नहीं करते" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर फ़रमाया "यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों से प्रेम तथा दया की भावना निकाल दिया है, तो उसमें मेरा क्या अधिकार ?" (सहीह बुख़ारी किताबुल अदब बाब रहमतुल वलदे व तकबीलुहु व मुआनकतहू, सहीह मुस्लिम किताबुल फ़जायल बाब रहमतुहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अस्सिबयान वल अयाल)।

उतारे हैं[1] तथा अल्लाह अत्यधिक ज्ञान वाला अत्यधिक विवेक वाला है।

(९८) तथा उन ग्रामीणों में से कुछ ऐसे हैं[2] कि जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको दण्ड समझते हैं।[3] तथा तुम (मुसलमानों) के लिये बुरे दिन की प्रतीक्षा में रहते हैं।[4] बुरा समय उन पर ही पड़नें वाला है,[5] तथा अल्लाह सुननेवाला तथा जाननेवाला है।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾

(९९) तथा कुछ ग्रामीणों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर तथा क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं तथा जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह की निकटता तथा रसूल का आशीर्वाद प्राप्त करने का साधन बनाते हैं।[6] याद रखो

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ

---

[1]इसका कारण यह है कि चूंकि वे नगर से दूर रहते हैं तथा अल्लाह तथा रसूल की बातें सुनने का अवसर उनको नहीं मिलता।

[2]अब इन ग्रामीणों के दो प्रकार बताये जा रहे हैं। यह प्रथम प्रकार है।

[3] غُرْمٌ आर्थिक दण्ड को कहते हैं अर्थात ऐसा व्यय जो अप्रसन्नता के साथ बाध्य होकर किया जाये।

[4] دائـرةٌ का बहुबचन دَوائِرُ है। सांसारिक घटनाचक्र अर्थात कठिनाईयाँ तथा कष्ट। अर्थात वे प्रतीक्षा में रहते हैं कि मुसलमान सांसारिक घटनाचक्र की कठिनाइयों तथा दुखों के शिकार हों।

[5]यह श्राप अर्थात विधेय है कि सांसारिक घटनाचक्र की कठिनाइयाँ तथा दुख उन्हीं पर पड़े क्योंकि वही इस के योग्य हैं।

[6]ये अरब ग्रामीणों का दूसरा प्रकार है जिनको अल्लाह ने शहरी क्षेत्र से दूर रहने के उपरान्त, अल्लाह तथा आख़िरत के दिन पर ईमान लाने का सौभाग्य प्रदान किया। तथा इस ईमान के कारण उनसे वह गँवारपन भी दूर कर दिया जो ग्रामीण जीवन के कारण ग्रामीणों में सामान्य रूप से पाया जाता है। अतः वह अल्लाह के मार्ग में खर्च हुए माल को दण्ड समझने के बजाय अल्लाह की निकटता तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

اللهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٩﴾

कि उनका यह ख़र्च करना निस्सन्देह उनके लिए निकटता का साधन है, उनको अल्लाह अवश्य अपनी कृपा में प्रवेश देगा।[1] अल्लाह तआला अति क्षमाशील कृपानिधि है।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللهُ

(१००) तथा जो मोहाजिर (मक्का से मदीना आये हुए लोग) तथा अंसार (मदीना के मूल निवासी) आदिम तथा प्रथम हैं तथा जितने लोग निःस्वार्थ रूप से उन के अनुयायी हैं,[2]

वसल्लम का आशीर्वाद लेने का साधन समझते हैं। यह संकेत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस व्यवहार की ओर जो दान देने वालों के लिये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का था। अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पक्ष में पुण्य प्रदान के लिये अल्लाह से प्रार्थना करते। जिस प्रकार हदीस में आता है कि एक दान लाने वाले के लिये आपने प्रार्थना की। «اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ آلِ أَبِيْ أَوْفَىٰ» (सहीह बुख़ारी संख्या ४१६६, सहीह मुस्लिम संख्या ७५६) "ऐ अल्लाह ! अबी औफा की संतान पर दया कर।"

[1]यह शुभ सूचना है कि अल्लाह की निकटता उन्हें प्राप्त है तथा अल्लाह की कृपा के वे पात्र हैं।

[2]इसमें तीन गुटों का वर्णन है। एक मोहाजिरों का, जिन्होंने धर्म के लिये अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर मक्का तथा अन्य क्षेत्रों से स्थानान्तरण किया तथा सब कुछ छोड़-छाड़ कर मदीना आ गये। दूसरे अंसार जो मदीना के निवासी थे। उन्होंने प्रत्येक अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता तथा सुरक्षा की तथा मदीने आने वाले मोहाजिरों की भी अत्यधिक सहायता तथा सम्मान किया। तथा अपना सब कुछ उनकी सेवा में प्रस्तुत कर दिया। यहाँ दोनों गुटों के पहल करने वालों का वर्णन है, अर्थात दोनों गुटों में जो इस्लाम धर्म स्वीकार करने में सबसे प्रथम रहे। इसकी परिभाषा में मतभेद है। कुछ के निकट प्रथम पहल करने वाले वे हैं जिन्होंने दोनों क़िबलों की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ी अर्थात क़िबला परिवर्तन के पूर्व मुसलमान होने वाले मोहाजिर तथा अंसार। कुछ के निकट वे सहाबी हैं जो हुदैबिया में बैअते रिज़वान में उपस्थित थे। कुछ के निकट बद्र के युद्ध वाले हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं ये सारे ही हो सकते हैं। तीसरा गुट वह है जो इन मोहाजिरों तथा अंसार के सदव्यवहार तथा उपकार के साथ अनुयायी हैं। इस गुट से तात्पर्य कुछ के निकट परिभाषित ताबईन हैं जिन्होने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हुआ तथा वे सब अल्लाह से प्रसन्न हुए तथा अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ का प्रबन्ध कर रखा है जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे,[1] यह बड़ी सफलता है ।

عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾

(१०१) तथा कुछ तुम्हारे आसपास के ग्रामीणों में से एवं मदीना के निवासियों में ऐसे अवसरवादी हैं जो द्वयवाद पर अड़े हुए हैं,[2]

وَمِمَّنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنَٰفِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ

वसल्लम को नहीं देखा परन्तु उन्हें सहाबा की निकटता एवं साथ्यता का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा कुछ के निकट इससे तात्पर्य सामान्य मुसलमान हैं अर्थात क़ियामत तक जितने भी अंसार तथा मोहाजिर से प्रेम रखने वाले तथा उनके पदचिन्हों पर चलने वाले मुसलमान हैं, वे उसमें सम्मिलित हैं । इसमें परिभाषित ताबईन भी सम्मिलित हो जाते हैं ।

[1]अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न हो गया का अर्थ है अल्लाह तआला ने उनके पुण्य स्वीकार कर लिये, उनके मनुष्य होने के कारण जो त्रुटियाँ हुईं क्षमा कर दिया तथा वह उनपर क्रोधित नहीं। क्योंकि यदि ऐसा न होता तो उनके लिये स्वर्ग के सुखों की शुभ सूचना क्यों दी जाती ? जो इसी आयत में दी गयी है। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि अल्लाह की प्रसन्नता सामयिक अथवा अस्थाई नहीं, अपितु स्थाई है। यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात सहाबा कराम को धर्मभ्रष्ट हो जाना था। (जैसा कि एक झूठे गुट का विश्वाश है) तो अल्लाह तआला उन्हें स्वर्ग के सुखों की शुभ सूचना से सम्मानित न करता । इससे यह भी ज्ञात हुआ कि जब अल्लाह ने उनकी सारी त्रुटियाँ क्षमा कर दीं तो अब आलोचना तथा टिप्पणी के रूप में उनकी कमियों का वर्णन करना किसी मुसलमान को शोभा नहीं देता। इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात हुआ कि उनका प्रेम तथा अनुकरण अल्लाह की प्रसन्नता का साधन है तथा उनसे द्वेष तथा वैर एवं ईर्ष्या रखना अल्लाह की प्रसन्नता से वंचित होने का कारण है।

[2] مَرَدَ तथा تَمرُّد का अर्थ है कोमलता, चिकनाहट तथा नंगा। अत: उस शाखा को जिसमें पत्ता न हो। जिस घोड़े के बाल न हों, जिस लड़के के मुख पर बाल न हों, इन सबको أمرد कहा जाता है तथा शीशे को صَرْحٌ مُمَرَّدٌ أي مجرد कहा जाता है। مردوا على النفاق का अर्थ होगा تجردوا على النفاق जैसाकि उन्होंने द्वयवाद के लिये अपने आपको शुद्ध रूप से अर्पित कर दिया है अर्थात इस पर उनका प्रबल तथा निरन्तर कार्य करना है।

نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۖ سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾

आप उनको नहीं जानते ।[1] उनको हम जानते हैं हम उन को दोहरा दण्ड देंगे ।[2] फिर वे बहुत बड़ी यातना की ओर भेजे जायेंगे ।

وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तथा कुछ अन्य लोग हैं जो अपनी त्रुटियों को स्वीकार करते हैं,[3] जिन्होंने मिश्रित कर्म किये थे । कुछ अच्छे तथा कुछ बुरे ।[4] अल्लाह से आशा है कि उन की क्षमा स्वीकार करे ।[5] नि:संदेह अल्लाह अत्यधिक क्षमाशील एवं अत्यधिक कृपालु है ।

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ

(१०३) आप उनके मालों में से दान ले लीजिये, जिसके द्वारा आप उनको शुद्ध एवं पवित्र कर दें तथा उनके लिए प्रार्थना कीजिए ।[6] नि:सन्देह

---

[1]कितने स्पष्ट शब्दों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परोक्षज्ञ होने का खण्डन है । काश अहले बिदअत (धर्म में अधुनीकीकरण करने वाले) को क़ुरआन समझने का सौभाग्य प्राप्त हो ।

[2]इससे तात्पर्य कुछ के निकट दुनिया का अपमान तथा निरादर तथा फिर आख़िरत की यातना है तथा कुछ के निकट दुनिया में ही दोहरा दण्ड है ।

[3]ये वे नि:स्वार्थी मुसलमान हैं जो बिना कारण के मात्र आलस्य के कारण तबूक में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नहीं गये तथा बाद में उन्हें अपनी त्रुटि का आभास हो गया तथा पाप को स्वीकार कर लिया ।

[4]भले से तात्पर्य वह पुण्य कार्य हैं जो धर्मयुद्ध में पीछे रह जाने के पूर्व वे करते रहे हैं, जिनमें विभिन्न धर्मयुद्ध में सम्मिलित होना भी है तथा कुछ "बुरे" से तात्पर्य यही तबूक के अवसर पर उनका पीछे रहना है ।

[5]अल्लाह तआला की ओर से आशा विश्वास का लाभ प्रदान करती है अर्थात अल्लाह तआला ने उनकी ओर आकर्षित होकर उनके पाप स्वीकार करने को तौबा के समतुल्य मानकर उन्हें क्षमा कर दिया ।

[6]यह सामान्य आदेश है । दान से तात्पर्य अनिवार्य दान अर्थात ज़कात भी हो सकती है तथा ऐच्छिक दान भी है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित किया जा रहा

آपकी प्रार्थना उनके लिए शान्ति संतोष का साधन है तथा अल्लाह (तआला) भली प्रकार सुनता है, भली-भाँति जानता है।

إِنَّ صَلَوٰتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٣﴾

(१०४) क्या उनको यह ज्ञान नहीं कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा (तौबा) स्वीकार करता है तथा वही दान को अंगीकार करता है।[1] तथा यह कि अल्लाह ही तौबा स्वीकार करनें में तथा कृपा करने में परिपूर्ण है।

أَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ ٱلتَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِۦ وَيَأْخُذُ ٱلصَّدَقَٰتِ وَأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

(१०५) तथा कह दीजिए कि तुम कर्म किये जाओ तुम्हारे कर्म अल्लाह स्वयं देख लेगा तथा उसका रसूल तथा ईमानवाले (भी देख लेंगे) तथा अवश्य तुमको ऐसे के पास जाना

وَقُلِ ٱعْمَلُوا۟ فَسَيَرَى ٱللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُۥ وَٱلْمُؤْمِنُونَ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عَٰلِمِ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ

कि उसके द्वारा आप मुसलमानों को शुद्धि तथा उनके मन को पवित्र करें। जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ज़कात तथा सामान्य दान मनुष्य के मन तथा धन की स्वच्छता तथा पवित्रता का साधन है। इसके अतिरिक्त अरबी भाषा में दान को "सदक़ा" इसलिए कहा जाता है कि यह देने वाले के ईमान की सदाक़त अर्थात सादिक़ (सच्चा) होने पर प्रमाण है। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि सदक़ा लेने वाले को दान देने वाले के पक्ष में शुभ की प्रार्थना करनी चाहिए। जिस प्रकार यहाँ पर अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रार्थना करने का आदेश दिया है। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके अनुसार प्रार्थना करते थे। इस आदेश के अनुसार सामान्य रूप से यह निष्कर्ष भी निकाला गया है कि ज़कात वसूल करने का अधिकार उस समय के इमाम को है। यदि कोई इससे इंकार करे तो आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ तथा सहाबा कराम के कर्मों के अनुसार एवं प्रकाश में उसके विरूद्ध धर्मयुद्ध आवश्यक है। (इब्ने कसीर)

[1]दान स्वीकार करता है का अर्थ (यदि वह उचित कमायी से हो) यह है कि उसे बढ़ाता है। जिस प्रकार हदीस में आया है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "अल्लाह तआला तुम्हारे दान की इस प्रकार पालन-पोषण करता है जिस प्रकार तुम में से कोई व्यक्ति अपने घोड़े के बच्चे का पालन-पोषण करता है, यहाँ तक कि एक खजूर के समान दान (बढ़-बढ़कर) ओहुद पर्वत के समान हो जाता है।" (सहीह बुख़ारी किताबुज़ ज़कात, तथा मुस्लिम किताबुज़ ज़कात)

फ़युनब्बिउकुम बिमा कुन्तुम तअ़मलून

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

लेंगे) तथा अवश्य तुमको ऐसे के पास जाना है जो सभी छिपी तथा खुली बातों का जानने वाला है। अत: वह तुमको तुम्हारे सब किये हुए को बतला देगा।[1]

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

(१०६) तथा कुछ अन्य लोग हैं जिनका मामला अल्लाह के आदेश आने तक स्थगित है।[2] या तो उन को दण्ड देगा[3] अथवा उन की तौबा (पश्चाताप) स्वीकार कर लेगा।[4] तथा अल्लाह अत्यधिक जानने वाला है अत्यधिक विवेकी है।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًۢا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ۭ وَلَيَحْلِفُنَّ

(१०७) तथा कुछ ऐसे हैं जिन्होंने इन उद्देश्यों से मस्जिद बनायी है कि हानि पहुँचायें तथा कुफ़्र अर्धम की बातें करें तथा ईमानवालों में फूट डालें तथा उस व्यक्ति के ठहरने का प्रबन्ध करें जो इसके पूर्व से अल्लाह तथा

[1]देखने से तात्पर्य देखना एवं ज्ञान है। अर्थात तुम्हारे करतूतों को अल्लाह तआला ही नहीं देखता, अपितु उनका ज्ञान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों को भी (वह्यी के द्वारा) हो जाता है। (यह पाखण्डियों ही के विषय में कहा जा रहा है) इस विषय पर आयत पूर्व में भी गुज़र चुकी है। यहाँ ईमान वालों को भी सम्मिलित कर लिया गया है, जिनको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वताने से ज्ञान हो जाता है।

[2]तबूक के युद्ध में पीछे रह जाने वालों में एक तो पाखण्डी लोग थे, दूसरे वे जो अकारण ही पीछे रह गये थे। तथा उन्होंने अपनी त्रुटि को स्वीकार कर लिया था, परन्तु उन्हें क्षमा नहीं किया गया था। इस आयत में उन्हीं का वर्णन है जिनका मामला स्थगित कर दिया था। यह तीन व्यक्ति थे जिनकी चर्चा आगे आयेगी।

[3]यदि वह अपनी त्रुटि पर अडिग रहे।

[4]यदि वह शुद्ध तौबा कर लेंगे।

إِنْ أَرَدْنَآ إِلَّا ٱلْحُسْنَىٰ ۖ وَٱللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ۝

उसके रसूल का विरोधी है[1] तथा सौगन्ध खा जायेंगे कि मात्र भलाई के अतिरिक्त हमारा कोई उद्देश्य नहीं, अल्लाह गवाह है कि वे पूर्णरूप से झूठे हैं।[2]

لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى ٱلتَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن

(१०८) आप उसमें कभी खड़े न हों,[3] परन्तु जिस मस्जिद की आधारशिला प्रथम दिन से ही संयम पर रखी गयी हो, वह इस योग्य है

---

[1]इसमें पाखण्डियों के अत्यन्त कुरुप व्यवहार का वर्णन है कि उन्होंने एक मस्जिद बनवायी तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह बताया कि वर्षा, शीत तथा इस प्रकार के अवसरों पर रोगियों तथा कमज़ोरों को दूर जाने में कष्ट होता है। उनकी सुविधा के लिये हमने मस्जिद बनायी है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ चलकर नमाज़ पढ़े ताकि शुभ प्राप्त हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस समय तबूक के लिए पूर्णरूप से तैयार थे। आप ने वापसी में नमाज़ पढ़ने का वायदा किया। परन्तु वापसी में वह्यी (प्रकाशना) द्वारा अल्लाह तआला ने पाखण्डियों के वास्तविक उद्देश्य को खोल दिया कि इससे वह मुसलमानों को हानि पहुँचाकर कुफ़्र का प्रचार-प्रसार करना, मुसलमानों के मध्य मतभेद उत्पन्न करना तथा अल्लाह एवं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शत्रुओं के लिए निवास स्थान उपलब्ध कराना चाहते हैं।

[2]अर्थात झूठी सौगन्ध खाकर वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को धोखा देना चाहते थे परन्तु अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके छल-कपट से बचा लिया तथा फ़रमाया कि उनके विचार शुद्ध नहीं हैं तथा जो कुछ प्रकट कर रहे हैं उसमें झूठे हैं।

[3]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहाँ जाकर जो नमाज़ पढ़ने का वायदा किया है उसके अनुसार वहाँ जाकर नमाज़ न पढ़ें। अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न केवल यह कि न वहाँ नमाज़ पढ़ी, बल्कि अपने कुछ साथियों को भेजकर मस्जिद गिरा दी तथा उसे नष्ट कर डाला। इससे धर्मगुरूओं नें निष्कर्ष निकाला है कि जो मस्जिद अल्लाह की इबादत के बजाय मुसलमानों के मध्य मतभेद उत्पन्न करने के लिए बनायी जाये वह मस्जिद दरार है, उसको गिरा दिया जाये ताकि मुसलमानों में भेद तथा बिखराव न उत्पन्न हो।

تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

कि आप उसमें खड़े हों।[1] इसमें ऐसे मनुष्य हैं कि वे अत्यधिक पवित्र होने को प्रिय समझते हैं।[2] तथा अल्लाह तआला अत्यधिक पवित्र रहने वालों को प्रिय रखता है।

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) फिर क्या ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ है जिसने अपने भवन की आधारशिला अल्लाह से डरने पर तथा अल्लाह की प्रसन्नता पर रखी हो अथवा वह व्यक्ति कि जिसने अपने भवन की आधारशिला घाटी के किनारे पर जोकि गिरने ही को हो रखी हो, फिर वह उसे लेकर नरक की आग में गिर पड़े ?[3] तथा अल्लाह तआला ऐसे अत्याचारियों को समझ ही नहीं देता।

---

[1]इससे तात्पर्य कौन-सी मस्जिद है ? इसमें मतभेद है। कुछ ने मस्जिदे "कुबा" तथा कुछ ने मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहा है। सलफ़ का एक गुट दोनों के पक्ष में रहा है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि आयत से यदि मस्जिदे कुबा तात्पर्य है तो कुछ हदीसों में मस्जिद नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ﴿أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ﴾ का कृतार्थ सिद्ध किया गया है। तथा इन दोनों में कोई मतभेद नहीं। इसलिये कि यदि मस्जिदे कुबा के अन्दर यह गुण है कि प्रथम दिन से ही इसकी आधार शिला तक़्वा पर रखी गयी है, तो मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो प्रथम प्रकरण से ही इस गुण से विभूषित है तथा उसके अनुरूप है।

[2]हदीस में आता है कि इससे तात्पर्य कुबा के निवासी हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी पवित्रता की प्रशंसा की है, तुम क्या करते हो ? उन्होंने कहा कि हम ढेले प्रयोग करने के साथ-साथ पानी भी प्रयोग करते हैं। (इब्ने कसीर) इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि यह आयत इस बात का प्रमाण है कि ऐसी प्राचीन मस्जिद में नमाज़ पढ़ना उत्तम है, जो अल्लाह मात्र की इबादत के उद्देश्य से निर्मित की गयी हो। इसके अतिरिक्त महापुरूषों के ऐसे गिरोह के साथ नमाज़ पढ़ना उत्तम है जो पूर्ण वज़ू करने तथा पवित्रता तथा शुद्धता का ठीक प्रकार से प्रयोजन करने वाले हों।

[3]इसमें ईमानवालों तथा पाखण्डियों के कर्मों के उदाहरण दिये गये हैं। ईमानवालों का कर्म अल्लाह के भय पर तथा उसकी प्रसन्नता के लिए होता है, जबकि पाखण्डियों का

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَن تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾

(११०) उनका यह भवन जिसे उन्होंने बनाया है सदा उन के दिलों में दुविधा के आधार पर (काँटा बनकर) खटकता रहेगा, परन्तु यह कि उनके दिल ही खंड-खंड हो जायें,[1] तथा अल्लाह ज्ञानी एवं हिक्मत वाला है।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي

(१११) निःसंदेह अल्लाह ने मुसलमानों से उनके प्राणों तथा धनों को स्वर्ग के बदले[2] ख़रीद लिया है, वह अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं जिसमें हत करते एवं हत होते हैं, उस पर सत्य वचन है तौरात तथा इंजील एवं क़ुरआन में। तथा अल्लाह से अधिक अपने वचन का पालन कौन कर सकता है?[3] अतः तुम अपने इस विक्रय पर जो कर लिये हो

कर्म पाखण्ड तथा उपद्रव पर आधारित होता है जो धरती के उस क्षेत्र के भाँति है जिसके नीचे से घाटी का पानी बहता है तथा मिट्टी को साथ बहा ले जाता है, वह क्षेत्र नीचे से खोखला हो जाता है जिस पर कोई भी निर्माण किया जाये वह गिर पड़ेगा। इन पाखण्डियों का मस्जिद बनाने का कार्य भी ऐसा ही है, जो उन्हें नरक में साथ ले गिरेगा।

[1]दिल खण्ड-खण्ड हो जाये का अर्थ है मृत्यु आ जाये। अर्थात मृत्यु तक यह भवन उनके दिलों में अन्य शंका तथा भेद उत्पन्न करने का साधन बना रहेगा। जिस प्रकार बछड़े के पुजारियों में बछड़े का प्रेम रच-बस गया था।

[2]यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा व दया का वर्णन है कि उसने ईमान वालों को उनके प्राण तथा धन के बदले जो उन्होंने अल्लाह के मार्ग में ख़र्च किये, स्वर्ग प्रदान कर दिये, जबकि यह प्राण तथा धन भी उसी का प्रदान किया हुआ है। फिर मूल्य अथवा बदला भी जो प्रदान किये अर्थात स्वर्ग वह अत्यन्त बहुमूल्य है।

[3]यह उसी सौदे का पुनरावृत्ति है कि अल्लाह तआला ने यह सच्चा वायदा पिछली किताबों में भी एवं क़ुरआन में भी किया है, और अल्लाह से अधिक वचन को पूरा करने वाला कौन हो सकता है?

بَايَعْتُم بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾

प्रफुल्ल हो जाओ,[1] और यह बड़ी सफलता है।

التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

(११२) वे ऐसे हैं जो तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, (ईश्वर का) महिमागान करने वाले, रोज़ा (व्रत) रखने वाले, (अथवा सत्य मार्ग पर यात्रा करने वाले) रूकुअ तथा सजदा करने वाले अच्छी बातों की शिक्षा देने वाले तथा बुरी बातों से रोकने वाले तथा अल्लाह के नियमों को ध्यान में रखने वाले हैं।[2] तथा ऐसे ईमानवालों को शुभसूचना सुना दीजिए।[3]

---

[1]यह मुसलमानों को कहा जा रहा है, परन्तु वह खुशी उसी समय मनायी जा सकती है जब मुसलमानों को भी यह सौदा स्विकार हो। अर्थात अल्लाह के मार्ग में प्राण तथा माल के बलिदान से उन्हें पीछे नहीं हटना है।

[2]यह इन्हीं ईमानवालों की अन्य विशेषताओं का वर्णन निरन्तर हो रहा है जिनके प्राणों तथा माल का सौदा अल्लाह ने कर लिया है। वे तौबा करने वाले अर्थात पापों तथा दोषों से। समयबद्ध रूप से अपने प्रभु की इबादत करने वाले, मुख से अल्लाह की महिमा तथा गुणों का वर्णन करने वाले तथा अन्य उन गुणों से युक्त हैं जो आयत में वर्णित हैं। سياحة से तात्पर्य अधिकतर व्याख्याकारों ने रोज़ा (व्रत) लिया है तथा इसी को इब्ने कसीर ने अत्यधिक उचित तथा अत्यधिक प्रसिद्ध कथन कहा है। तथा कुछ ने धर्मयुद्ध तात्पर्य लिया है। परन्तु इससे धरती का भर्मण तात्पर्य नहीं है जिस प्रकार कि कुछ लोगों ने समझा है। इसी प्रकार अल्लाह की इबादत (उपासना) के लिए पर्वतों की चोटियां, गुफ़ाओं तथा निर्जन स्थानों में जाकर डेरा लगा लेना भी इससे तात्पर्य नहीं है। इसलिए कि यह त्याग तथा बैराग का एक भाग है जो इस्लाम में नहीं है। परन्तु उपद्रव के समय अपने धर्म की रक्षा के लिये नगरों तथा आबादियों को त्याग कर जंगलों तथा वनों में जाकर रहने की अनुमति हदीस में दी गयी है। (सहीह बुखारी किताबुल ईमान, बाब मिनद्दीन अल फ़िरार मिनल फ़ेतन व किताबुल फ़ेतन बाबुत तअर्रूब, अइस्सुकना मअल आराब फ़िल फ़ितन:)

[3]अर्थ यह है कि पूर्ण ईमानवाला वह है जो कथनी-करनी में इस्लाम की शिक्षाओं का सुन्दर उदाहरण हो तथा उन वस्तुओं से बचने वाला हो जिनसे अल्लाह ने रोक दिया है

(११३) पैग़म्बर तथा अन्य मुसलमानों को आज्ञा नहीं कि मूर्तिपूजकों के लिए क्षमा की प्रार्थना करें यद्यपि वे सम्बन्धी ही हों, इस आदेश के स्पष्ट होने के पश्चात कि ये लोग नरक में जायेंगे ।[1]

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾

(११४) तथा इब्राहीम का अपने पिता के लिए मोक्ष की प्रार्थना करना वह मात्र वचन के

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ

तथा अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने वाला नहीं अपितु उनका रक्षक हो । ऐसे ही पूर्ण ईमानवाले शुभसूचना के अधिकारी हैं । यह वही बात है जिसे क़ुरआन में آمنوا و عملوا الصالحـــات के शब्दों में बार-बार वर्णन किया गया है । यहाँ पुण्य के कार्यों का कुछ विस्तृत वर्णन कर दिया गया है ।

[1]इसकी व्याख्या सहीह बुख़ारी में इस प्रकार की गयी है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रिय चाचा अबू तालिब का अन्तिम समय आ गया तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास गये जबकि उनके पास अबू जहल तथा अब्दुल्लाह बिन अबी उमैय्या भी बैठे हुए थे । आपने फ़रमाया "चाचा لا إله إلا الله पढ़ लें ताकि मैं अल्लाह के सामने आप के लिए तर्क प्रस्तुत कर सकूँ ।" अबू जहल तथा अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या ने कहा "हे अबू तालिब क्या अब्दुल मुत्तलिब के धर्म से मुख मोड़ोगे ? (अर्थात मरते समय यह क्या करने लगे ? यहाँ तक कि इसी अवस्था में उनकी मृत्यु हो गयी)" नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जब तक अल्लाह तआला की ओर से मुझे रोक नहीं दिया जायेगा, मैं आप के लिए क्षमा-याचना करता रहूँगा" जिस पर यह आयत उतरी जिसमें मूर्ति-पूजकों के लिए मोक्ष की प्रार्थना से रोक दिया गया । (सहीह बुख़ारी किताबुत तफ़सीर, सूर: तौब:) सूर: कसस की आयत ५६ إنـك لا تهـدي من أحبـبت भी इसी सम्बन्ध में उतरी । मुसनद अहमद के एक कथन में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी माता के लिए मोक्ष की प्रार्थना करने की आज्ञा माँगी, जिस पर यह आयत उतरी । (मुसनद अहमद भाग ५, पृष्ठ ३५५) तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मूर्तिपूजक समुदाय के लिए प्रार्थना की थी «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ» "हे अल्लाह मेरा समुदाय अज्ञानी है इस को क्षमा कर दे ।" यह आयत के विपरीत नहीं है । इसलिए कि इसका अर्थ उनके मार्ग दर्शन की प्रार्थना है । अर्थात वे मेरे पद तथा गरिमा से अनभिज्ञ हैं । इसे मार्गदर्शन प्रदान कर ताकि मोक्ष के पात्र हो जायें । तथा जीवित काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के लिए मार्ग दर्शन की प्रार्थना उचित है ।

إِلَّا عَن مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾

कारण था, जो उन्होंने उसे दिया था। फिर जब उन पर यह बात स्पष्ट हो गयी कि वह अल्लाह का शत्रु है, तो वह उससे असम्बन्धित मात्र हो गये,[1] वास्तव में इब्राहीम बड़े कोमल दिल सहनशील थे।[2]

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा अल्लाह ऐसा नहीं करता कि किसी समुदाय को मार्गदर्शन देने के पश्चात भटका दे जब तक उन बातों को साफ-साफ न बता दे जिनसे वे बचें।[3] नि:सन्देह अल्लाह हर वस्तु को भली-भाँति जानता है।

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾

(११६) नि:सन्देह अल्लाह ही का राज्य है आकाशों तथा धरती में। वही जिलाता तथा मारता है, तथा तुम्हारा अल्लाह के अतिरिक्त न कोई मित्र है न कोई सहायता करने वाला है।

---

[1]आदरणीय इब्राहीम पर भी जब यह बात स्पष्ट हुई कि मेरा पिता अल्लाह का शत्रु है तथा नरक में जाने वाला है, तो उन्होंने उससे अलगाव कर लिया तथा उसके पश्चात मोक्ष की प्रार्थना नहीं की।

[2]तथा प्रारम्भ में अपने पिता के लिए मोक्ष की प्रार्थना भी अपने इसी मृदल एवं सयंमी स्वभाव के कारण से थी।

[3]जब अल्लाह तआला ने मूर्तिपूजकों के पक्ष में क्षमादान करने की प्रार्थना से रोका तो कुछ सहाबा को जिन्होंने ऐसा किया था, यह शंका उत्पन्न हुई कि कहीं उन्होंने गुमराही का कार्य तो नहीं किया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला जब तक बचने वाले कार्यों का स्पष्टीकरण नहीं कर देता उस समय तक उस पर पकड़ भी नहीं करता, तथा न उसे भटकाव सिद्ध करता है। परन्तु जब उन कार्यों से नहीं बचता जिनसे रोका जा चुका है, तो फिर अल्लाह तआला उसे विपथ कर देता है। इसलिए जिन लोगों ने इससे पूर्व अपने मृतक सम्बन्धियों के लिए क्षमा की प्रार्थनायें की हैं उनकी पकड़ न होगी, क्योंकि उन्हें नियम का उस समय ज्ञान ही नहीं था।

(११७) अल्लाह (तआला) ने पैग़म्बर (ईशदूत) की दशा पर ध्यान दिया तथा मोहाजिरों एवं अंसार की दशा पर भी जिन्होंने ऐसी तंगी के समय पैग़म्बर का साथ दिया[1] उसके पश्चात कि उनमें से एक गुट के दिल डाँवाडोल होने लगे थे [2] फिर अल्लाह ने उनकी दशा पर दया की। नि:सन्देह अल्लाह (तआला) उन सब पर अत्यधिक दयालु एवं कृपालु है।

لَقَدْ تَابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٧﴾

(११८) तथा तीन व्यक्तियों की स्थिति पर भी जिनका मामला स्थागित कर दिया गया था।[3]

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ۭ

---

[1]तबूक के युद्ध की यात्रा को कठिनाई (कष्ट) का समय कहा गया है। इसलिए कि एक तो कड़ी धूप का समय था, दूसरे फसलें तैयार थीं, तीसरे यात्रा लम्बी थी तथा चौथे साधन की कमी थी। इसलिये इसे جيش العسرة (कठिनाई की यात्रा अथवा सेना) कहा जाता है। तौबा के लिये आवश्यक नहीं कि पहले पाप अथवा त्रुटिपूर्ण कार्य हों। इसके विना भी सम्मान प्राप्त करने के लिये तथा अनजाने में हो जाने वाली त्रुटियों के लिये तौबा होती है। यहाँ मोहाजिरों तथा अंसार के इस पहले गुट की तौबा इसी भाव में है, जो विना किसी आनाकानी के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर धर्मयुद्ध के लिये तैयार हो गये।

[2]यह उस दूसरे गुट का वर्णन है जिसे उपरोक्त कारणों से प्रारम्भ में आलस्य हुआ। परन्तु फिर शीघ्र ही वह इस अवस्था से निकल आया तथा प्रसन्नता से धर्मयुद्ध में सम्मिलित हुआ। दिलों में आनाकानी से तात्पर्य धर्म के विषय में किसी प्रकार का कम्पन आनाकानी अथवा शंका नहीं है, अपितु वर्णित सांसारिक कारणों के आधार पर धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने में जो दुविधा तथा आलस्य था वह तात्पर्य है।

[3] خُلِّفُوا का वही अर्थ है जो مُرجَون का है अर्थात जिनका मामला स्थगित कर दिया गया था तथा पचास दिन के पश्चात उनकी तौबा स्वीकार हुई। यह तीन सहाबा थे काअब बिन मालिक, मुरारः बिन रबिअ तथा हिलाल बिन उमैय्या। यह पक्के मुसलमान थे। इससे पूर्व प्रत्येक धर्मयुद्ध में सम्मिलित होते रहे। इस तबूक के धर्मयुद्ध में आलस्य के कारण सम्मिलत नहीं हो सके। बाद में उन्हें अपनी ग़लती का आभास हुआ। सोचा एक त्रुटि (पीछे रहने की) तो हो ही गयी है। परन्तु पाखण्डियों के समान अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष झूठा तर्क न प्रस्तुत करेंगे। अतः

حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾

यहाँ तक कि जब धरती अपने विस्तार के उपरान्त भी उनके लिए संकुचित होने लगी तथा वे स्वयं अपने अस्तित्व से तंग आ गये ।[1] तथा उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से कहीं शरण नहीं मिल सकती सिवाय इसके कि उसकी ओर पलटा जाये, फिर उनकी दशा पर दया की ताकि वे भविष्य में भी तौबा कर सकें ।[2] निःसन्देह अल्लाह तआला अत्यधिक दयावान अत्यधिक दयालु है ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

(११९) ऐ ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) से डरो तथा सच्चों के साथ रहो ।[3]

उपस्थित होकर अपनी त्रुटि को स्पष्टरूप से अंगीकार कर लिया तथा उसके दण्ड के लिये अपने आप को प्रस्तुत कर दिया । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके मामले को अल्लाह पर छोड़ दिया कि वह उनके विषय में कोई आदेश उतारेगा । फिर भी उस अवधि में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा कराम को इन तीनों से सम्बन्ध रखने यहाँ तक की बातचीत तक करने से रोक दिया तथा चालीस रातों के पश्चात उन्हें आदेश दिया गया कि वह अपनी पत्नियों से भी दूर रहें । अतः पत्नियों से भी वियोग हो गया तथा दस दिन व्यतीत होने के पश्चात तौबा स्वीकार कर ली गयी तथा वर्णित आयत उतरी । इस घटना की विस्तृत जानकारी आदरणीय काब बिन मालिक के कथनानुसार हदीस में विद्यमान है । देखिये (सहीह बुखारी किताबुल मग़ाज़ी बाब ग़ज़वः तबूक, मुस्लिम किताबुत तौबः बाब हदीस तोबते काअब बिन मालिक)

[1]यह उन दिनों का वर्णन है जिससे सामाजिक बहिष्कार के कारण उन्हें गुज़रना पड़ा ।

[2]अर्थात पचास दिन के पश्चात अल्लाह तआला ने उनकी विनय तथा तौबा (क्षमा-याचना) स्वीकार की ।

[3]सत्यता के कारण ही अल्लाह तआला ने इन तीन सहाबियों की त्रुटियों को न केवल क्षमा ही किया अपितु उनकी तौबा को क़ुरआन की आयत बनाकर उतारा رضي الله عنهم و رضوا عنه इसलिये ईमानवालों को आदेश दिया गया कि अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो । इसका अर्थ यह है कि जिसके दिल के अन्दर तक़वा (अर्थात अल्लाह का भय) होगा, वह सच्चा होगा तथा जो झूठा होगा समझ लो कि उसका दिल तक़वा से

(१२०) मदीना तथा उसके पड़ोस के ग्राम-वासियों के लिए उचित न था कि रसूलुल्लाह का साथ छोड़कर पीछे रह जायें[1] तथा न यह कि अपने प्राण को उनके प्राण से अधिक प्रिय समझें,[2] यह इस कारण से कि[3] उनको अल्लाह के मार्ग में जो प्यास लगी तथा जो थकान पहुँची एवं जो भूख लगी तथा जो चलना चले, जो काफ़िरों के लिए क्रोध का

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَّتَخَلَّفُوا عَنْ رَّسُولِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ

शून्य है। इसीलिये हदीस में आता है कि ईमानवालों से कुछ अन्य त्रुटियाँ तो हो सकती हैं, परन्तु वह झूठा नहीं हो सकता।

[1]तबूक के युद्ध के लिये सामान्य रूप से घोषणा कर दी गयी थी, इसलिये विवश, बूढ़े तथा अन्य धार्मिक कारण रखने वालों के सिवाय सभी के लिये इसमें सम्मिलित होना आवश्यक था, परन्तु फिर भी जो मदीनावासी तथा मदीने के निकटवर्ती क्षेत्रों के निवासी धर्मयुद्ध में सम्मिलत नहीं हुए अल्लाह तआला उन्हीं को सावधान करते तथा चेतावनी देते हुये कह रहा है कि उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पीछे नहीं रहना चाहिए था।

[2]अर्थात यह उनके लिये शोभा नहीं देता कि स्वंय अपने प्राणों की सुरक्षा कर लें तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्राणों की सुरक्षा का उन्हें ध्यान भी न हो, अपितु उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहकर अपने से अधिक उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए।

[3] ذلك से पीछे न रहने का कारण बताया है कि उन्हें इसलिये पीछे नहीं रहना चाहिए कि अल्लाह के मार्ग में उन्हें जो प्यास, थकावट, भूख पहुँचेगी अथवा ऐसा कार्य जिससे काफ़िरों का क्रोध बढ़े, इसी प्रकार शत्रुओं के आदमियों को हत करना अथवा बन्दी बनाना, यह सभी कार्य पुण्य कर्म लिखे जायेंगे अर्थात पुण्य का कार्य केवल यही नहीं कि कोई मस्जिद में अथवा किसी एक कोने में बैठकर ऐच्छिक से नमाज़ पढ़े, क़ुरआन पढ़े, अल्लाह को याद करे आदि बल्कि धर्मयुद्ध में घटित होने वाली कठिनाईयाँ तथा दुखों यहाँ तक कि वह योजनाएँ जिनसे शत्रुओं के हृदय में भय उत्पन्न हो अथवा उत्तेजित हों, इनमें से प्रत्येक कार्य अल्लाह के समक्ष पुण्य के कर्मों में लिखा जायेगा। इसलिये मात्र इबादत की अभिलाषा में भी धर्मयुद्ध से बचना उचित नहीं है तब तो विना कारणों के ही मनुष्य धर्मयुद्ध से दूर क्यों ?

وَلَا يَطَـُٔونَ مَوۡطِئٗا يَغِيظُ ٱلۡكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنۡ عَدُوّٖ نَّيۡلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِۦ عَمَلٞ صَٰلِحٌۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجۡرَ ٱلۡمُحۡسِنِينَ ١٢٠

कारण हुआ हो,[1] तथा शत्रुओं की जो कुछ सूचना ली,[2] उन सब पर उनके नाम (एक-एक) पुण्य कार्य लिखा गया। नि:सन्देह अल्लाह तआला नि:स्वार्थियों का बदला नष्ट नहीं करता।

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةٗ صَغِيرَةٗ وَلَا كَبِيرَةٗ وَلَا يَقۡطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمۡ لِيَجۡزِيَهُمُ ٱللَّهُ أَحۡسَنَ مَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ١٢١

(१२१) तथा जो भी छोटा तथा बड़ा उन्होंने ख़र्च किया तथा जितने मैदान उनको पार करने पड़े,[3] यह सब भी उनके नाम लिखा गया ताकि अल्लाह (तआला) उनके कामों का अच्छे से अच्छा प्रतिफल प्रदान करे।

وَمَا كَانَ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ لِيَنفِرُواْ كَآفَّةٗۚ فَلَوۡلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرۡقَةٖ مِّنۡهُمۡ طَآئِفَةٞ لِّيَتَفَقَّهُواْ فِي ٱلدِّينِ وَلِيُنذِرُواْ قَوۡمَهُمۡ إِذَا رَجَعُوٓاْ

(१२२) तथा मुसलमानों को यह न चाहिए कि सब के सब निकल खड़े हों, तो ऐसा क्यों न किया जाये कि उनके प्रत्येक बड़े गुट से छोटा गुट जाया करे ताकि वे धर्म को समझ-बूझकर प्राप्त करें तथा ताकि यह

---

[1] इससे तात्पर्य पैदल अथवा घोड़ों आदि पर सवार होकर ऐसे क्षेत्रों से गुज़रना है कि उनके कदमों की चापों तथा घोड़ों के टापों से शत्रुओं के दिल काँप जायें तथा उनमें क्रोध की अग्नि भड़क उठे।

[2] ولا ينالون من عدوٍ نيلا (शत्रु से कोई वस्तु लेते हैं अथवा उनका समाचार लेते हैं) से तात्पर्य उनके आदमियों को मारते तथा बन्दी बनाते हैं, उन्हें पराजित करते हैं तथा परिहार प्राप्त करते हैं।

[3] पर्वतों के मध्य मैदान तथा पानी के निकास के मार्ग को घाटी कहते हैं। तात्पर्य यहाँ साधारण घाटियाँ तथा क्षेत्र हैं। अर्थात अल्लाह तआला के मार्ग में कम अथवा अधिक जितना भी ख़र्च करोगे, इसी प्रकार जितने भी मैदान तथा क्षेत्र पार करोगे (अर्थात धर्मयुद्ध में छोटी अथवा लम्बी यात्रा करोगे) यह सब पुण्य तुम्हारे कर्मपत्र में अंकित होंगे, जिन पर अल्लाह तआला अच्छे से अच्छा बदला प्रदान करेगा।

لوگ अपने समुदाय को जबकि वह उनके पास आयें, डरायें ताकि वे डर जायें ।[1]

إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

(१२३) ऐ ईमानवालो ! उन काफ़िरों से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास हैं ।[2] तथा उनको

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ قَٰتِلُوا۟ ٱلَّذِينَ

---

[1]कुछ व्याख्याकारों के निकट इसका भी सम्बन्ध धर्मयुद्ध के आदेश से है। तथा अर्थ यह है कि पिछली आयतों में पीछे रहने वालों के लिये कड़ी चेतावनी तथा फटकार का वर्णन किया गया तो सहाबा कराम अति सर्तक हो गये तथा जब भी धर्मयुद्ध की बात आती तो सबके सब सम्मिलित होने का प्रयत्न करते। आयत में उन्हें आदेश दिया जा रहा है कि प्रत्येक धर्मयुद्ध इस प्रकार का नहीं होता कि प्रत्येक व्यक्ति का साथ लेना आवश्यक हो (जैसा कि तबूक में आवश्यक था) अपितु एक ही गुट का सम्मिलित होना पर्याप्त है । उनके निकट ليتفقهوا से संबोधित पीछे रह जाने वाला गिरोह है। अर्थात एक गिरोह धर्मयुद्ध पर चला जाये وتبقى طائفة (यह लुप्त होगा) तथा एक गिरोह पीछे रहे जो धर्म शिक्षा प्राप्त करे तथा जब मुजाहिदीन (धर्मयुद्ध के सैनिक) वापस आयें तो उन्हें भी धर्म के नियमों से परिचित कराके अल्लाह से डरायें। दूसरी व्याख्या इसकी यह है कि इस आयत का सम्बन्ध धर्मयुद्ध से नहीं है, बल्कि इसमें धर्म की शिक्षा प्राप्त करने की महत्ता का वर्णन है, उसके प्रोत्साहन तथा मार्ग का स्पष्टीकरण है तथा वह यह है कि प्रत्येक बड़ा गुट अथवा क़बीले में से कुछ लोग धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिये अपना घर-बार छोड़ें तथा मदरसों तथा धार्मिक शिक्षा केन्द्रों पर जाकर उसे प्राप्त करें तथा फिर वापस आकर अपने समाज के समक्ष भाषण तथा दीक्षा दें धर्म में تفقه प्राप्त करने का अर्थ आदेश एवं मनाही के नियमों की शिक्षा प्राप्त करना है ताकि अल्लाह के आदेश का पालन कर सके तथा वातावरण की बुराई से बचते रहे तथा अपने समाज के लोगों को भलाई का आदेश दे तथा बुराई से रोके।

[2]इसमें काफ़िरों से लड़ने के एक महत्वपूर्ण नियम का वर्णन किया गया है कि الأول فالأول तथा الأقرب فالأقرب के अनुसार काफ़िरों से धर्मयुद्ध करना है जैसाकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रथम अरब द्वीप के अंदर निवास करने वाले मूर्तिपूजकों से युद्ध किया जब उनसे छूटे तो अल्लाह तआला ने मक्का, तायफ़, यमन, यमामा, हिज्र, ख़ैबर, हदरमुत आदि स्थानों पर मुसलमानों का अधिपत्य जमा दिया तथा अरब के सारे क़बीले झुंड के झुंड इस्लाम धर्म में प्रवेश करने लगे तो फिर अहले किताब से युद्ध प्रारम्भ किया तथा ९ हिजरी में रोम वासियों से युद्ध करके तबूक की ओर प्रस्थान किया, जो अरब महाद्वीप के निकट है। इसी के आधार पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के पश्चात खुलफ़ाये राशदीन ने रोम के ईसाईयों से युद्ध किया तथा ईरान के अग्नि पूजकों से युद्ध किया।

يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

तुम्हारे अन्दर कठोरता पाना चाहिए ।[1] तथा यह विश्वास करो कि अल्लाह तआला तक़्वा (संयम) वालों के साथ है ।

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) तथा जब कोई सूर: उतारी जाती है तो कुछ (द्वयवादी) कहते हैं कि इस सूर: ने तुम में से किसके ईमान को बढ़ाया है ।[2] तो जो लोग ईमानदार हैं इस सूर: ने उनके ईमान में प्रगति प्रदान की है तथा वे प्रसन्न हो रहे हैं ।[3]

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) तथा जिनके दिलों में रोग है, इस सूर: ने उनमें उनकी मलीनता के साथ और मलीनता बढ़ा दी है तथा वे कुफ़्र की अवस्था ही में मर गये ।[4]

---

[1]अर्थात काफ़िरों के लिये मुसलमानों के दिलों में किसी प्रकार की कोमलता नहीं होनी चाहिये । कठोरता होनी चाहिए, जैसाकि "أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ" में सहाबा के गुणों का वर्णन है। इसी प्रकार *सूर: अल-मायद:*, ५४ में ईमानवालों के गुण हैं "أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ"।

[2]इस सूर: में पाखण्डियों के जिन कर्मों का पर्दा उठाया गया है, ये आयतें उनका परिशिष्ट एवं पूरक हैं । इसमें बताया जा रहा है कि जब उनकी अनुपस्थिति में कोई सूर: अथवा उसका कोई भाग उतरता तथा उनके ज्ञान में बात आती, तो वे उपहास तथा परिहास के रूप में एक-दूसरे से कहते कि इससे तुममें से किस के ईमान में अधिकता हुई ।

[3]अल्लाह तआला ने फ़रमाया, जो भी सूर: उतरती है उससे ईमानवालों के ईमान में अवश्य अधिकता होती है तथा वे अपने ईमान की उन्नति पर प्रसन्न होते हैं । यह आयत भी इस बात का प्रमाण है कि ईमान में कमी तथा अधिकता होती है जिस प्रकार कि मुहद्देसीन का मत है ।

[4]रोग से तात्पर्य द्वयवाद तथा अल्लाह की आयतों के विषय में शंका तथा संदेह है । फ़रमाया "परन्तु यह सूर: पाखण्डियों को उनके पाखण्ड तथा दुष्टता में अधिकता करती है तथा वह अपने कुफ़्र तथा मिथ्याचार में इस प्रकार दृढ़ हो जाते हैं कि उन्हें तौबा का

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

(१२६) तथा क्या उनको नहीं दिखायी देता कि यह लोग प्रत्येक वर्ष एक बार अथवा दो बार किसी न किसी आपत्ति में डाले जाते हैं, फिर भी न प्रायश्चित करते हैं न शिक्षा ग्रहण करते हैं ।[1]

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَاكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) तथा जब कोई सूर: उतारी जाती है तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि तुमको कोई देखता तो नहीं फिर चल देते हैं ।[2] अल्लाह (तआला) ने उनका दिल मोड़ दिया है, इस कारण कि वे नासमझ लोग हैं ।[3]

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ

(१२८) तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर (ईशदूत) का आगमन हुआ है जो तुम्हारी ही जाति से

तौबा का सौभाग्य नहीं होता तथा कुफ्र (अर्धम) पर ही उनका अन्त हो जाता है ।" जिस प्रकार अल्लाह तआला ने अन्य स्थान पर फ़रमाया, "हम क़ुरआन में ऐसी बातें उतारते हैं जो ईमानवालों के लिये स्वास्थवर्धक तथा कृपा है । परन्तु अल्लाह तआला उनसे अत्याचारियों की हानि में बढ़ोत्तरी ही करता है ।" (*सूर: बनी इस्राईल-८२*) यह जैसे कि उनके दुर्भाग्य की चरम सीमा है कि जिससे लोगों के दिल मार्गदर्शन पाते हैं वही बातें उनके अपमान, अनादर, हानि तथा अन्त का कारण बनती हैं । जिस प्रकार से किसी भी व्यक्ति की पाचन क्रिया बिगड़ जाये तो वह भोजन जिससे अन्य लोग शक्ति तथा स्वाद प्राप्त करते हैं, उसके रोग में और भी बिगाड़ तथा खराबी का कारण बनता है ।

[1] يُفتنون का अर्थ है, परीक्षा ली जाती है । आपत्ति से तात्पर्य या तो आकाशीय प्रकोप है । जैसे अकाल आदि (परन्तु यह दूर है) अथवा शारीरिक रोग तथा दुख हैं अथवा युद्ध हैं जिनमें सम्मिलित होने के अवसर पर उनकी परीक्षा होती है ।

[2] अर्थात उनकी उपस्थिति में सूर: उतरती जिसमें पाखण्डियों के दुराचारों एवं षड़यन्त्रों की ओर संकेत होता तो फिर यह देखकर कि मुसलमान उन्हें देख तो नहीं रहे हैं, चुपचाप खिसक जाते हैं ।

[3] अर्थात अल्लाह की आयतों पर मनन-चिंतन तथा विचार न करने के कारण अल्लाह तआला ने उनके दिलों को पुण्य तथा भलाई के कार्यों से फेर दिया है ।

عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٨﴾

हैं,[1] जिनको तुम्हारी हानि की बातें अत्यन्त भारी लगती हैं,[2] जो तुम्हारे लाभ के बड़े इच्छुक रहते हैं,[3] ईमान वालों के लिए अत्यन्त ही करूणाकारी कोमल हृदय हैं ।[4]

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

(१२९) फिर यदि मुख मोड़ें[5] तो (आप) कह दीजिए कि मेरे लिए अल्लाह बस है,[6] उसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं । मैंने उसी

---

[1]सूर: के अन्त में मुसलमानों पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रूप में जो महान उपकार किया गया है उसका वर्णन किया जा रहा है । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रथम विशेषता यह वर्णन की जा रही है कि वह तुम्हारी जाति से हैं अर्थात पुरूष के रूप में हैं (वह दिव्य प्रकाश अथवा अन्य कुछ नहीं) जैसाकि दुर्आस्था के शिकार लोग जनता को इस प्रकार के गौरख धन्धे में फसाते हैं ।

[2] عَنِتٌ ऐसी वस्तुऐं जिनसे मनुष्य को दुख हो, इसमें साँसारिक दुख तथा आख़िरत की यातनायें दोनों आ जाती हैं । इस पैग़म्बर पर तुम्हारी हर प्रकार की कठिनाई तथा कष्ट दुखदायी होती हैं । इसीलिये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मैं सरल धर्म एकेश्वरवाद प्रदान करके भेजा गया हूँ ।" (मुसनद अहमद भाग ५, पृष्ठ २६६, भाग ६, पृष्ठ २३३) एक अन्य हदीस में फ़रमाया «إِنَّ هٰذَا الدِّينَ يُسْرٌ» (सहीह बुखारी किताबुल ईमान) यह धर्म सरल है ।

[3]तुम्हारे मार्गदर्शन तथा तुम्हारे साँसारिक तथा पारलौकिक लाभ की कामना करने वाले हैं । तुम्हारा नरक में जाना प्रिय नहीं समझते । इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मैं तुम्हें तुम्हारी पीठ पकड़-पकड़ कर खींचता हूँ, परन्तु तुम मुझसे दामन छुड़ाकर स्वंय ही नरक की आग में प्रवेश करते हो ।" (सहीह बुख़ारी किताबुर्रिकाक़ बाबुल इन्तेहाये मिनल मआसी)

[4]यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चौथी विशेषता का वर्णन किया गया है । यह सभी विशेषतायें आपके उच्च व्यवहार तथा नम्र स्वभाव की सूचक है । नि:सन्देह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अत्यन्त सुशील हैं । सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।

[5]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लाये धार्मिक नियम तथा शान्ति-धर्म से ।

[6]जो कुफ़्र तथा मुख मोड़ने वालों के पाखण्ड तथा षडयंत्र से मुझे बचा लेगा ।

पर भरोसा किया तथा वह विशाल अर्श (सिंहासन) का मालिक (स्वामी) है ।[1]

وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾

सूरतु यूनुस-१०

سُورَةُ يُونُسَ

सूरः यूनुस मक्के में उतरी[2] तथा इसकी एक सौ नौ आयतें हैं तथा ग्यारह रूकुअ हैं ।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) अलिफ॰ लाम॰ रा॰ । यह तत्वज्ञान भरी किताब की आयतें हैं ।[3]

الٓرۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾

(२) क्या उन लोगों को इस बात से आश्चर्य हुआ[4] कि हमने उनमें से एक व्यक्ति के पास

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا

---

[1]आदरणीय अबूद दरदा फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति यह आयत حسبي الله प्रातः तथा सायंकाल सात-सात बार पढ़ लेगा, अल्लाह तआला उसकी चिंताओं (चिन्ता तथा कठिनाई) को पर्याप्त हो जायेगा (सुनन अबू दाऊद संख्या ५०८१)

[2]सूरः यूनुस मक्की है, परन्तु इसकी दो आयतें तथा कुछ ने तीन आयतें मदनी बतायी हैं (फ़तहुल क़दीर)

[3] الحكيم। किताब अर्थात क़ुरआन मजीद का विशेषण है । इसका एक तो वही अर्थ है जो अनुवाद में प्रयोग किया गया है । इसके अन्य भी कई अर्थ किये गये हैं । जैसे المُحْكَم अर्थात हलाल तथा हराम एवं नियम तथा आदेश में दृढ़ है । حَكِيم का अर्थ حاكم (अधिकारी) के, अर्थात मतभेद में लोगों के मध्य निर्णय करने वाली किताब (सूरः *अल-बकरः*, २३) حَكِيم का अर्थ محكوم فيه अर्थात अल्लाह तआला ने इसमें न्याय के साथ निर्णय किये हैं ।

[4]प्रश्न आश्चर्य को नकारने के लिये है, जिसमें निन्दा का भाव भी सम्मिलित है । अर्थात इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने मनुष्यों में से ही एक व्यक्ति को आदेश (प्रकाशना) तथा रिसालत के लिये चुन लिया, क्योंकि उनके अपने सहजाति होने के कारण वह उचित अर्थों में उनका मार्ग दर्शन कर सकता है । यदि वह किसी अन्य जाति से होता तो फ़रिश्ता अथवा जिन्न होता तथा दोनों ही परिस्थितियों में रिसालत (संदेश पहुंचाने) का मूल उद्देश्य समाप्त हो जाता, इसलिए कि मनुष्य उससे

वह्यी (प्रकाशना) भेज दी कि सभी मानवगण को डराइये तथा जो ईमान ले आये उनको यह शुभ सूचना सुना दीजिए कि उनके प्रभु के पास उन को पूरा प्रतिफल एवं सम्मान मिलेगा [1] काफ़िरों ने कहा कि यह व्यक्ति नि:सन्देह स्पष्ट जादूगर (तांत्रिक) है ।[2]

إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِندَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾

(३) नि:सन्देह तुम्हारा पोषक ही है जिसने छ: दिनों में आकाशों तथा धरती को पैदा कर दिया फिर अर्श पर स्थिर हुआ ।[3] वह प्रत्येक कार्य का प्रयोजन करता है।[4] उसकी आज्ञा के बिना उसके पास कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं,[5] ऐसा अल्लाह तुम्हारा

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۖ مَا مِن شَفِيعٍ إِلَّا مِن بَعْدِ إِذْنِهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ

लगाव रखने के बजाय भय का आभास करते। दूसरे, इनके लिए उसको देखना भी संभव न होता। तथा यदि हम किसी जिन्न अथवा फ़रिश्ते को मनुष्य के शरीर में भेज देते, तो फिर वही आरोप होता कि यह तो हमारी तरह का ही मनुष्य है। इसलिये इनके इस आश्चर्य में कोई सार्थकता नहीं है।

[1] ﴿قَدَمَ صِدْقٍ﴾ का अर्थ उच्च पद, अच्छा बदला तथा पुण्य का कार्य है, जो एक ईमानवाला आगे भेजता है।

[2] काफ़िरों को जब नकारने के लिये कोई अन्य बात न सूझती तो यह कहकर भाग निकलते कि यह तो जादूगर है। نعوذ بالله

[3] इसकी व्याख्या के लिये देखें *सूर: अल-आराफ़* आयत संख्या ५४ की व्याख्या ।

[4] अर्थात आकाश तथा धरती की सृष्टि करके उसने उसे यूँ ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि सारी सृष्टि का नियंत्रण एवं संचालन इस प्रकार कर रहा है कि कभी किसी का आपस में टकराव नहीं हुआ, प्रत्येक वस्तु उसके निर्देशानुसार अपने-अपने कार्य में व्यस्त है।

[5] मूर्तिपूजक तथा काफ़िर जो मूलरूप से सम्बोधित थे, उनका विश्वास था कि ये मूर्तियाँ जिनकी वे पूजा करते थे, अल्लाह के समक्ष उनकी सिफ़ारिश करेंगी तथा उनको अल्लाह की यातना से मुक्त करा देंगी। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, वहाँ अल्लाह की आज्ञा के बिना किसी को सिफ़ारिश करने की अनुमति ही नहीं होगी, तथा यह आज्ञा भी

स्वामी है, तो तुम उस की इबादत करो ।[1] क्या तुम फिर भी शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝٣

(४) तुम सबको अल्लाह ही के पास जाना है, अल्लाह ने सच्चा वादा कर रखा है । नि:सन्देह वही प्रथम बार पैदा करता है फिर वही पुन: पैदा करेगा ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाये तथा उन्होंने पुण्य के कार्य किये, न्याय के साथ बदला दे तथा जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए खौलता हुआ पानी पीने को मिलेगा तथा कष्टदायी यातना होगी उनके कुफ़्र के कारण ।[2]

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ إِنَّهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝٤

(५) वह (अल्लाह तआला) ऐसा है जिसने सूर्य को प्रकाशमान बनाया तथा चन्द्रमा को ज्योतिर्मय बनाया ।[3] तथा उसके लिए स्थान

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ

उन लोगों के लिए होगी जिनको अल्लाह तआला प्रिय समझेगा । ﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ﴾ (सूर: अल-अम्बिया,२८) "لا تغني شفاعتهم شيئا إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشاء و يرضى" (सूर: अन-नज्म, २६)

[1]अर्थात ऐसा अल्लाह जो सृष्टि का स्रष्टा भी है तथा उसका नियोजक एवं संचालक भी इसके अतिरिक्त सभी अधिकारों का पूर्ण मालिक है, वही इस योग्य है कि उसकी इबादत (आराधना) की जाये ।

[2]इस आयत में प्रलय के आने, अल्लाह के समक्ष सभी के एकत्रित होने, बदले तथा दण्ड का वर्णन है । यह विषय क़ुरआन करीम में विभिन्न शैली से विभिन्न स्थान पर वर्णन हुआ है ।

[3] ضياءً का समार्थी ضوء है । सबंध्य यहाँ लोप है । ذات ضياء و القمر ذا نور सूर्य को चमकने वाला तथा चन्द्रमा को प्रकाश वाला बनाया । अथवा फिर उन्हें अतिश्योक्ति पर आधारित किया जावे जैसाकि यह स्वंय प्रकाश एवं कान्ति हैं । आकाश तथा धरती की सृष्टि तथा उनके नियोजित होने के वर्णन के पश्चात उदाहरण स्वरूप कुछ अन्य वस्तुओं का वर्णन किया जा रहा है, जिसका सम्बन्ध सृष्टि नियोजन से है, जिसमें सूर्य तथा चन्द्रमा का महत्वपूर्ण स्थान है । सूर्य की गर्मी, ताप तथा उसका प्रकाश कितना

(गंतव्य) निर्धारित किये ताकि तुम वर्षों की गणना कर सको तथा गणना (हिसाब) को जान लो।[1] अल्लाह तआला ने ये सभी वस्तुऐं व्यर्थ नहीं पैदा कीं। वह यह प्रमाण उन्हें साफ़ बता रहा है जो बुद्धि रखते हैं।

لِتَعۡلَمُوۡا عَدَدَ السِّنِيۡنَ وَالۡحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالۡحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّعۡلَمُوۡنَ ۝

(६) नि:सन्देह रात-दिन के एक-दूसरे के बाद आने में तथा अल्लाह तआला ने आकाश तथा धरती में जो कुछ पैदा कर रखा है, उन सब में उन लोगों के लिए प्रमाण हैं जो अल्लाह का डर रखते हैं।

اِنَّ فِىۡ اخۡتِلَافِ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّتَّقُوۡنَ ۝

आवश्यक है, उसे हर बुद्धि रखने वाला व्यक्ति जानता है। इसी प्रकार चन्द्रमा के प्रकाश से जो आनन्द तथा लाभ है उसे वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। वैज्ञानिकों का विचार है कि सूर्य का प्रकाश स्वयं उसका है तथा चन्द्रमा का प्रकाश दूसरे से है, अर्थात सूर्य से प्राप्त है। (फ़तहुल कदीर)

[1]अर्थात हमने चन्द्रमा का गंतव्य निर्धारित कर दिया है। इन स्थानों से तात्पर्य वह दूरी है जो वह एक रात तथा एक दिन में अपनी निर्धारित गति के साथ पूरी करता है। यह २८ गंतव्य हैं। प्रत्येक रात को एक स्थान पर पहुँचता है, जिसमें कभी त्रुटि नहीं होती। पहली अवस्था में वह क्षीण तथा पतला दिखाई पड़ता है, फिर निरन्तर बड़ा होता चला जाता है, यहाँ तक चौदहवीं रात्रि अथवा चौदहवीं अवस्था में पूर्ण चन्द्रमा हो जाता है। इसके पश्चात फिर वह सिकुड़ने लगता है तथा पतला होने लगता है। यहाँ तक कि अन्त में एक अथवा दो रात्रि गुप्त रहता है। तथा पुन: सोम बनकर उदित होता है। इसका यह लाभ बताया गया है कि तुम वर्षों की गणना तथा हिसाब जान सको। अर्थात चन्द्रमा की इन स्थितियों तथा गति से महीने तथा वर्ष बनते हैं, जिनसे तुम्हें हर चीज़ का हिसाब करने में सुविधा होती है। अर्थात वर्ष १२ महीना का तथा महीना २९ अथवा ३० दिन का। एक दिन चौबीस घंटे अर्थात रात्रि तथा दिन का। जो बराबर दिन रात में १२-१२ घंटे तथा सर्दी एवं गर्मी में क्षीण तथा बड़े होते हैं। इसके अतिरिक्त साँसारिक लाभ तथा व्यापार ही इन अवस्थाओं से सम्बन्धित नहीं धार्मिक लाभ भी इससे प्राप्त होते हैं। इसी चन्द्रोदय से हज, रमजान के रोज़े, सम्मानित महीने तथा अन्य इबादतों का निर्धारण होता है जिनका प्रायोजन ईमानवाला करता है।

(७) जिन लोगों को हमारे पास आने का विश्वास नहीं है, तथा वह साँसारिक जीवन पर प्रसन्न हो गये हैं तथा उसमें जी लगा बैठे हैं तथा जो लोग हमारी आयतों से विमुख हैं।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ ءَايَٰتِنَا غَٰفِلُونَ ⑦

(८) ऐसे लोगों का ठिकाना (स्थान) उनके कर्मों के कारण नरक है।

أُولَٰٓئِكَ مَأْوَىٰهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ⑧

(९) नि:सन्देह जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने पुण्य कार्य किये उनका पालनहार उनको ईमान वाले होने के कारण (उनके लक्ष्य तक) पहुँचा देगा,[1] सुख के बाग़ों में जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी।

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُم بِإِيمَٰنِهِمْ تَجْرِى مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَٰرُ فِى جَنَّٰتِ النَّعِيمِ ⑨

(१०) वहाँ उनके मुख से यह बात निकलेगी 'सुब्हानल्लाह'[2] तथा उनका आपसी सलाम (अभिवादन) यह होगा 'अस्सलामु अलैकुम'[3]

دَعْوَىٰهُمْ فِيهَا سُبْحَٰنَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَٰمٌ وَءَاخِرُ

---

[1]इसका एक अन्य अनुवाद यह किया गया है कि संसार में ईमान के कारण प्रलय के दिन अल्लाह तआला उनके लिये पुल सिरात से गुज़रना सरल कर देगा, कुछ के निकट यह अल्लाह तआला से सहायता प्राप्त करने के लिये है तथा अनुवाद यह होगा कि अल्लाह तआला प्रलय के दिन उनके लिये एक दिव्य ज्योति उपलब्ध करेगा जिसके प्रकाश में वे चलेंगे जैसाकि सूर: हदीद में इसका वर्णन आता है।

[2]अर्थात स्वर्ग में जाने वाले हर क्षण अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा में लीन होंगे। जिस प्रकार हदीस में आता है : "स्वर्ग के निवासियों के मुख से अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा इस प्रकार निकलेगी जिस प्रकार साँस निकलती है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्न: व सिफ़ति नईमेहा, बाबुन फ़ी सिफ़ातिल जन्न: व अहलेहा व तस्बीहेहिम फ़ीहा बुकरतन व अशीया) अर्थात जिस प्रकार निरन्तर साँस का अन्दर आना तथा बाहर जाना रहता है, उसी प्रकार स्वर्ग वालों के मुख पर बिना किसी प्रयोजन के अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा के गुणगान रहेंगे।

[3]अर्थात एक-दूसरे को इस प्रकार सलाम करेंगे, इसी प्रकार फ़रिश्ते भी उन्हें सलाम करेंगे।

तथा उनकी अन्तिम बात यह होगी कि सारी प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिए हैं जो अखिल जगत का पालनहार है।

دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ⑩

(११) तथा यदि अल्लाह लोगों को तुरंत हानि पहुँचा देता जैसे लोग तुरंत लाभ चाहते हैं तो उनका वचन कभी का पूरा हो चुका होता।[1] तो हम उन लोगों को जिन्हें हमारे पास आने का विश्वास नहीं है उनके हाल पर छोड़ देते हैं कि वे अपनी उदण्डता में भटकते रहें।

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۭ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۗءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ⑪

(१२) तथा जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है, तो हमको पुकारता है लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी। फिर जब हम उसके कष्ट

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَاۗىِٕمًا ۚ فَلَمَّا

---

[1]इसका एक अर्थ यह है कि जिस प्रकार मनुष्य पुण्य को प्राप्त करने में शीघ्रता करता है, उसी प्रकार अशुभ (यातना) को प्राप्त करने में भी शीघ्रता करता है, अल्लाह के पैग़म्बरों (ईशदूतों) से कहता है यदि तुम सच्चे हो तो वह यातना लेकर आओ जिससे तमु डराते हो। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि उनकी इस माँग के अनुसार हम शीघ्र यातना भेज देते, तो कभी के यह मृत्यु तथा विनाश का स्वाद चख चुके होते। परन्तु हम उनको समय देकर पूर्ण अवसर प्रदान करते हैं। दूसरा अर्थ यह है कि जिस प्रकार मनुष्य अपने लिये पुण्य तथा भलाई की प्रार्थनाऐं करता है, जिन्हें हम स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार जब मनुष्य क्रोध अथवा कष्ट में होता है, तो अपने लिये तथा अपनी संतान आदि के लिये शाप की प्रार्थना करता है, जिन्हें हम इसलिये अनदेखा कर देते हैं कि यह मुख से विनाश माँग रहा है, परन्तु दिल में उसका ऐसा विचार नहीं है। परन्तु यदि हम मनुष्य के शाप की माँग के अनुसार उन्हें तुरन्त विनाश में डाल दें, तो फिर शीघ्र ही यह लोग मृत्यु का स्वाद चख लें, इसीलिये हदीस में आता है : "तुम अपनी संतान के लिये तथा अपने माल-व्यापार के लिये अपशब्द मत निकाला करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे अपशब्द उस क्षण को प्राप्त कर लें, जिस समय अल्लाह की ओर से प्रार्थनाऐं स्वीकार की जाती हैं। अतः वह तुम्हारे अपशब्द स्वीकार कर ले।" (सुनन अबी दाऊद, किताबुल वित्र, बाबुन नहये अन यदअऊल इन्सान अला अहलेही व मालेही, तथा मुस्लिम किताबुल ज़ुहद, फ़ी हदीस जाबिर अत-तवील)

كَشَفۡنَا عَنۡهُ ضُرَّهُۥ مَرَّ كَأَن لَّمۡ يَدۡعُنَآ إِلَىٰ ضُرّٖ مَّسَّهُۥۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلۡمُسۡرِفِينَ مَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ⑫

को दूर कर देते हैं, तो वह ऐसा हो जाता है कि जैसे उसने अपने कष्ट के लिए जो उसे पहुँचा था कभी हमें पुकारा ही नहीं था।[1] इन सीमा उल्लंघन करने वालों के कर्म को उनके लिए उसी प्रकार प्रिय प्रतीत होने वाला बना दिया गया है।[2]

وَلَقَدۡ أَهۡلَكۡنَا ٱلۡقُرُونَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَمَّا ظَلَمُواْ وَجَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُم بِٱلۡبَيِّنَٰتِ وَمَا كَانُواْ لِيُؤۡمِنُواْۚ كَذَٰلِكَ نَجۡزِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلۡمُجۡرِمِينَ ⑬

(१३) तथा हमने तुमसे पूर्व बहुत से ऐसे गिरोहों को नष्ट कर दिया जबकि उन्होंने अत्याचार किया, यद्यपि उनके पास उनके पैग़म्बर भी निशानियाँ लेकर आये तथा वे कब ऐसे थे कि ईमान ले आते ? हम

---

[1]यह मनुष्य की उस अवस्था का वर्णन है जो मनुष्य के बहुमत की करनी है। बल्कि वहुत से अल्लाह के मानने वाले भी इस आलस्य का कार्य सामान्य रूप से करते हैं कि दुख के समय अत्यधिक अल्लाह-अल्लाह हो रहा है, प्रार्थनायें की जा रही हैं, तौबा तथा क्षमा-याचना का प्रयोजन हो रहा है। परन्तु जब अल्लाह तआला दुख का वह कठोर समय निकाल देता है, तो फिर अल्लाह के दरबार में विनय एवं प्रार्थना से भी अनजान हो जाते हैं तथा अल्लाह ने उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करके जिस कठिनाईयों से स्वतन्त्रता दिलायी उस पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करने का भी सौभाग्य उनको नहीं होता।

[2]यह कर्मों की शोभा परीक्षा एवं अवसर के अनुरूप अल्लाह की ओर से भी हो सकती है, शंकाओं के द्वारा शैतान की ओर से भी हो सकती है तथा मनुष्य के उस इन्द्रीय की ओर से भी हो सकती है, जो मनुष्य को बुराई करने पर तैयार करता है। ﴿إِنَّ ٱلنَّفۡسَ لَأَمَّارَةُۢ بِٱلسُّوٓءِ﴾ (सूर: यूसुफ़, ५३) फिर भी इसके शिकार वही लोग होते हैं जो सीमा पार कर जाते हैं। यहाँ अर्थ यह हुआ कि उनके लिये प्रार्थना से मुँह मोड़ना, अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करने में आलस्य तथा इच्छाओं तथा इन्द्रियों के साथ कर्म सुशोभित कर दिया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

अपराधी लोगों को इसी प्रकार दण्ड दिया करते हैं ।[1]

(१४) फिर उनके पश्चात हमने संसार में उनके स्थान पर तुमको बसाया,[2] ताकि हम देख लें कि तुम कैसे कार्य करते हो ।

ثُمَّ جَعَلْنَٰكُمْ خَلَٰٓئِفَ فِى ٱلْأَرْضِ مِنۢ بَعْدِهِمْ لِنَنظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

(१५) तथा जब उनके समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं [3] जो बिल्कुल स्पष्ट हैं, तो यह लोग जिनको हमारे पास आने का विश्वास नहीं है, इस प्रकार कहते हैं कि इसके अतिरिक्त अन्य क़ुरआन लाईये[4] अथवा इसमें कुछ परिर्वतन कर दीजिए, (आप सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम) यह कह दीजिए कि मुझे यह अधिकार नहीं कि अपनी ओर से उसमें परिवर्तन कर दूँ,[5] बस मैं तो उसी का पालन करूँगा जो मेरे पास वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा मेरे पास आयी है । यदि मैं अपने प्रभु

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَاتُنَا بَيِّنَٰتٍ ۙ قَالَ ٱلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَآءَنَا ٱئْتِ بِقُرْءَانٍ غَيْرِ هَٰذَآ أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِىٓ أَنْ أُبَدِّلَهُۥ مِن تِلْقَآئِ نَفْسِىٓ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ ۖ إِنِّىٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّى عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

[1]यह मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है कि पूर्व के समुदायों की भाँति तुम भी विनाश का सामना कर सकते हो ।

[2] خلائف बहुबचन है خليفة का । इसके अर्थ हैं, जो विगत समुदायों का स्थान ले अथवा एक समुदाय जो दूसरे की जगह ले ।

[3]अर्थात जो अल्लाह के पूज्य तथा एक होने का प्रमाण है ।

[4]अर्थ यह है कि या तो इस पवित्र क़ुरआन के स्थान पर दूसरा लायें अथवा फिर इसमें हमारी इच्छानुसार परिवर्तन करें ।

[5]अर्थात मुझसे दोनों ही बातें सम्भव नहीं, क्योंकि मुझे इसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की भी शक्ति नहीं ।

की अवज्ञा करूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना का भय रखता हूँ ।[1]

(१६) (आप) कह दीजिए कि यदि अल्लाह ने चाहा होता तो न तो मैं तुमको वह पढ़कर सुनाता तथा न अल्लाह (तआला) तुमको उसकी सूचना देता,[2] क्योंकि इससे पूर्व तो मैं एक दीर्घ आयु तक तुम में रह चुका हूँ । फिर क्या तुम समझ नहीं रखते ?[3]

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾

(१७) तो उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे अथवा उसकी आयतों को मिथ्या कहे, निश्चय ऐसे अपराधी कभी सफल नहीं होंगे ।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾

(१८) तथा ये लोग अल्लाह को छोड़ कर[4] ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

---

[1]यह उस पर अधिक बल दिया गया है । मैं तो मात्र उसी का अनुयायी हूँ जो अल्लाह की ओर से मुझपर उतारा गया है । इसमें किसी प्रकार की कमी अथवा बढ़ोत्तरी मैं करूँगा तो उस महान दिन की यातना से मैं सुरक्षित नहीं रह सकता ।

[2]अर्थात सम्पूर्ण मामला अल्लाह की इच्छा पर आधारित है, वह चाहता तो मैं पढ़कर नहीं सुनाता, न तुम्हें इसकी कोई सूचना होती । कुछ ने इसका अर्थ यह किया है कि मेरे मुख से वह तुम्हें इस क़ुरआन के विषय में कुछ नहीं बतलाता ।

[3]तथा तुम भी जानते हो कि नबूअत की घोषणा से पूर्व तुम्हारे साथ चालीस वर्ष मैंने व्यतीत किये हैं । क्या मैंने किसी गुरू से कुछ सीखा ? इसी प्रकार तुम मेरे सच्चे होने तथा माल को सुरक्षित रखने वाला समझते रहे हो । क्या अब यह सम्भव है कि मैं अल्लाह पर झूठ गढ़ना प्रारम्भ कर दूँ ? इन दोनों बातों का यह अर्थ है कि यह क़ुरआन अल्लाह ही का उतारा हुआ है, न मैंने किसी से सुना अथवा सीख कर इसे वर्णन किया है तथा न यों ही झूठ इसे अल्लाह से सम्बन्धित कर दिया है ।

[4]अर्थात अल्लाह की उपासना की सीमा पार करके न कि अल्लाह की इबादत को त्याग कर । क्योंकि मूर्तिपूजक अल्लाह की भी इबादत करते थे और अन्यों को भी ।

مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

हानि पहुँचा सकें तथा न उनको लाभ पहुँचा सकें [1] तथा कहते हैं कि ये अल्लाह के समक्ष हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं।[2] (आप) कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को ऐसे विषय की सूचना देते हो जिसे वह नहीं जानता आकाशों में तथा न धरती में।[3] वह पवित्र तथा सर्वश्रेष्ठ है उन लोगों के शिर्क (अनेकेश्वरवाद) से।[4]

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ

(१९) तथा सभी लोग एक ही उम्मत (समुदाय-धर्म) के थे, फिर उन्होंने मतभेद उत्पन्न किये [5] तथा यदि एक बात न होती जो आपके प्रभु

---

[1]जबकि पूजनीय की गरिमा यह होती है कि वह अपने आज्ञाकारियों को प्रतिफल तथा अवज्ञाकारियों को दण्ड देने में सामर्थ्य हो।

[2]अर्थात उनकी सिफ़ारिश से अल्लाह हमारी आवश्यकतायें पूरी कर देता है। हमारी विगड़ी बना देता है अथवा हमारे शत्रु की बनी हुई को बिगाड़ देता है। अर्थात मूर्तिपूजक भी अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी पूजा करते थे उनको लाभ-हानि में पूर्ण रूप से निश्चित नहीं समझते थे। बल्कि अपने तथा अल्लाह के मध्य माध्यम तथा सिफ़ारिश करने वाला समझते थे।

[3]अर्थात अल्लाह को तो इस बात का ज्ञान नहीं कि उसका कोई साझीदार भी है अथवा उसके दरबार में सिफ़ारिश करने वाले भी होगें ? इस प्रकार यह मूर्तिपूजक अल्लाह को सूचना देते हैं कि तुझे यदि सूचना नहीं परन्तु हम तुझे बताते हैं कि तेरे साझीदार भी हैं और सिफ़ारिश करने वाले भी हैं जो अपने श्रृद्धालुओं की सिफ़ारिश करेंगे।

[4]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मूर्तिपूजकों की यह बात निराधार है, अल्लाह तआला इन सभी बातों से पवित्र तथा श्रेष्ठ है।

[5]अर्थात यह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) लोगों की अपनी उपज है। वरन् पहले इसका कोई स्तित्व नहीं था। सभी लोग एक ही धर्म तथा एक ही मार्ग पर थे जो इस्लाम है जिसमें एकेश्वरवाद को मूल स्थान प्राप्त है। आदरणीय नूह तक लोग इसी मार्ग एकेश्वरवाद पर चलते रहे। फिर उनमें मतभेद हो गया तथा कुछ लोगों ने अल्लाह के साथ अन्य को भी देवता, चिन्ताहारक तथा कष्टनिवारक समझना प्रारम्भ कर दिया।

مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ⑲

की ओर से निर्धारित की जा चुकी है, तो जिस चीज़ में यह लोग मतभेद कर रहे हैं उनका पूर्ण रूप से निर्णय हो चुका होता ।[1]

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ⑳

(२०) तथा ये लोग यह कहते हैं कि उन पर कोई चमत्कार क्यों नहीं उतरा ?[2] (तो आप) कह दीजिए कि परोक्ष का ज्ञान मात्र अल्लाह को है,[3] तो तुम भी प्रतीक्षा में रहो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हूँ ।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ

(२१) तथा जब हम लोगों को दुख पहुँचने के पश्चात सुख का स्वाद चखाते हैं,[4] तो वह तुरंत हमारी आयतों के विषय में धूर्तता करने

---

[1]अर्थात यदि अल्लाह का यह निर्णय न होता कि सभी बातों के बताने से पूर्व किसी को यातना नहीं देना है, उसी प्रकार उसने सृष्टि के लिये भी एक निर्धारित समय का निर्धारण न किया होता तो निःसन्देह उनके मध्य मतभेद का निर्णय तथा ईमानवालों को आज्ञाकारी तथा काफ़िरों को यातना तथा कष्ट में लिप्त कर चुका होता ।

[2]इससे तात्पर्य कोई बड़ा तथा खुला चमत्कार है । जैसे समूद के समुदाय के लिये ऊँटनी का प्रकट होना । उनके लिये सफ़ा पर्वत को स्वर्ण का अथवा मक्के के पर्वतों को समाप्त कर उनके स्थान पर नहरें तथा बाग़ बनाने का अथवा अन्य इस प्रकार का कोई चमत्कार प्रकट करके दिखाया जाये ।

[3]अर्थात यदि अल्लाह तआला चाहे तो उनकी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार प्रदर्शित कर सकता है । परन्तु उसके पश्चात भी यदि वे ईमान नहीं लाये तो फिर अल्लाह का नियम यह है कि ऐसे समुदाय को तुरन्त समाप्त कर देता है । इसलिये इस बात का ज्ञान केवल उसी को है कि किसी समुदाय के लिये उसकी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार प्रदर्शन करना, उसके पक्ष में अच्छा है अथवा नहीं ? तथा उसी प्रकार इसका भी ज्ञान केवल उसी को है कि उनके इच्छित चमत्कार यदि उनको न दिखाये गये तो उन्हें कितना समय दिया जायेगा ? इसीलिये आगे कहा गया कि तुम भी प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ ।

[4]दुख के पश्चात सुख का अर्थ है निर्धनता, सूखा तथा दुख एवं आपत्ति के पश्चात जीविका का बाहुल्य, जीवन हेतु सामग्री की अधिकता आदि ।

لگتے हैं ।[1] (आप) कह दीजिए कि अल्लाह प्रयोजन में तुमसे अधिक तीव्र है ।[2] निःसन्देह हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे छलकपट को लिख रहे हैं ।

فِيٓ ءَايَاتِنَا ۚ قُلِ ٱللَّهُ أَسۡرَعُ مَكۡرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكۡتُبُونَ مَا تَمۡكُرُونَ ﴿٢١﴾

(२२) वह (अल्लाह) ऐसा है जो तुम्हें जल तथा थल में यात्रा कराता है ।[3] यहाँ तक कि जब तुम नाव में होते हो, तथा वे नवकाऐं लोगों को अनुकूल वायु के द्वारा लेकर चलती है तथा वे लोग उनसे प्रफुल्ल होते हैं, उन पर एक प्रचन्ड वायु का झोंका आता है तथा प्रत्येक ओर से लहरें उठती हैं तथा वे समझते हैं कि (बुरे) आ घिरे, [4] (उस समय)

هُوَ ٱلَّذِي يُسَيِّرُكُمۡ فِي ٱلۡبَرِّ وَٱلۡبَحۡرِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا كُنتُمۡ فِي ٱلۡفُلۡكِ وَجَرَيۡنَ بِهِم بِرِيحٖ طَيِّبَةٖ وَفَرِحُواْ بِهَا جَآءَتۡهَا رِيحٌ عَاصِفٞ وَجَآءَهُمُ ٱلۡمَوۡجُ مِن كُلِّ مَكَانٖ وَظَنُّوٓاْ أَنَّهُمۡ أُحِيطَ بِهِمۡ ۙ دَعَوُاْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ ۚ

---

[1]इसका अर्थ यह है कि वे हमारे इन प्रदानों का सम्मान तथा उनपर अल्लाह के कृतज्ञ नहीं होते अपितु कुफ़्र तथा शिर्क करने लगते हैं अर्थात यह उनका वह बुरा उपाय है जिसे अल्लाह के प्रदानों की तुलना में अपनाते हैं ।

[2]अर्थात अल्लाह का उपाय इससे कहीं अधिक तीव्र है, जो वे अपनाते हैं । तथा वह यह है कि वह उनको पकड़ने का सामर्थ्य रखता है, वह जब चाहे उन को पकड़ सकता है, तुरंत भी तथा उसका उपाय देर का हो तो बाद में भी । मकर مكر अरबी भाषा में उपाय तथा कूटनीति को कहते हैं, जो अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी । यहाँ अल्लाह के दण्ड तथा पकड़ को मकर مكر कहा गया है ।

[3] يسيركم वह तुम्हें चलाता अथवा चलने-फिरने का सामर्थ्य प्रदान करता है । "थल में" अर्थात उसने तुम्हें पग दिया जिनसे तुम चलते हो, सवारियाँ उपलब्ध कीं, जिन पर सवार होकर दूर स्थान की यात्रा करते हो । तथा "जल में" अर्थात अल्लाह (तआला) ने तुम्हें नवकाएँ तथा पोत बनाने का गुण तथा समझ प्रदान किया, तुमने उन्हें निर्मित किया तथा उनके द्वारा समुद्र में दूर तक यात्रा करते हो ।

[4] أحيط بهم का अर्थ है, जिस प्रकार से शत्रु किसी समुदाय अथवा नगर का घेरा अर्थात नाकेबन्दी कर लेता है तथा फिर वे शत्रु की दया तथा कृपा पर होते हैं, उसी प्रकार जब वे तीब्र वायु के थपेड़ों तथा भंवर में घिर जाते हैं तथा मृत्यु उनके समक्ष नृत्य कर रही होती है ।

لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾

सभी शुद्ध विश्वास तथा आस्था के साथ अल्लाह ही को पुकारते हैं[1] कि यदि तू इससे बचा ले तो हम अवश्य (तेरे) कृतज्ञ बन जायेंगे।

---

[1]अर्थात फिर वे प्रार्थना में अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का सम्मिश्रण नहीं करते जिस प्रकार सामान्य अवस्था में करते हैं। सामान्य अवस्था में वे कहते हैं कि ये महात्मा भी अल्लाह के प्रिय भक्त हैं, इन्हें भी अल्लाह ने कुछ अधिकार दे रखा है तथा उन्हीं के द्वारा हम अल्लाह की निकटता प्राप्त करने की खोज में हैं। परन्तु जब इस प्रकार की कठिनाईयों में घिर जाते हैं, तो सभी राक्षसी तर्क भूल जाते हैं तथा केवल अल्लाह ही याद रह जाता है तथा फिर उसी को पुकारते हैं। इससे एक बात विदित होती है कि मनुष्य की प्रकृति में एक अल्लाह की ओर आकर्षित होने की भावना रखी गयी है। मनुष्य समाज से प्रभावित होकर इस प्रकृति अथवा भावना को दबा देता है, परन्तु कष्ट के समय यह भावना उभर आती है तथा यह प्रकृति प्रकट होती है जिससे ज्ञात हुआ कि एकेश्वरवाद मनुष्य की अन्तरात्मा की पुकार है तथा मूल वस्तु है, जिससे मनुष्य को मुख नहीं मोड़ना चाहिए। क्योंकि इससे मुख मोड़ना प्रकृति से मुँह मोड़ना है जो स्पष्टतया भटकाव है। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि मूर्तिपूजक जब इस प्रकार के कष्ट में घिर जाते तो अपने स्वीकृत देवताओं के बजाय केवल एक अल्लाह को पुकारते थे। अत: आदरणीय इकरमा बिन अबी जहल के विषय में आता है कि जब मक्का विजय हुआ तो ये वहाँ से भाग गये। बाहर किसी स्थान पर नाव पर सवार हुए, तो नाव तूफ़ान के घेरे में आ गयी, जिस पर मल्लाह ने नाव में सवार लोगों से कहा कि आज एक अल्लाह से प्रार्थना करो, तुम्हें उसके अतिरिक्त इस तूफ़ान से कोई मुक्ति दिलाने वाला नहीं। आदरणीय इकरमा कहते हैं कि मैंने सोचा यदि समुद्र में मुक्ति दिलाने वाला एक अल्लाह ही है, तो धरती में भी मुक्ति दिलाने वाला अवश्य ही वही है। तथा यही बात मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कहते हैं। अत: उन्होंने निर्णय कर लिया यदि मैं यहाँ से जीवित बच गया तो मक्का वापस जाकर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लूँगा। अत: ये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा मुसलमान हो गये رضي الله عنه (सुनन नसाई, अबू दाऊद संख्या २६८३, तथा अलबानी के वर्णनानुसार 'सहीह' संख्या १७२३) परन्तु दुर्भाग्य से मुसलमानों में जनता इस प्रकार के शिर्क में फंसी हुई है कि संकट के समय में भी अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को पुकारती है। मरे हुए महात्माओं को संकटहारी समझती है तथा उन्ही को सहायता के लिए पुकारती है। فإنا لله و إنا إليه راجعون अफ़सोस !

(२३) फिर जब अल्लाह (तआला) उनको बचा लेता है, तो तुरंत ही वह धरती में अनर्थ उपद्रव करने लगते हैं ।[1] हे लोगो ! यह तुम्हारी उदण्डता तुम्हारे लिए दुखदायी होने वाली है,[2] साँसारिक जीवन के (कुछ) लाभ हैं, फिर तुमको हमारे पास आना है । फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुम को बता देंगे ।

فَلَمَّآ أَنجَىٰهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ ۗ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰٓ أَنفُسِكُم ۖ مَّتَٰعَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

(२४) साँसारिक जीवन की दशा ऐसी है, जैसे हमने आकाश से पानी बरसाया, फिर उस से धरती की वनस्पति जिनको मनुष्य तथा पशु खाते हैं, खूब हरी-भरी होकर निकली । यहाँ तक जब वह धरती अपनी शोभा का पूरा भाग ले चुकी तथा उसका अत्यन्त सौन्दर्य हो गया तथा उसके मालिकों ने समझा कि अब हम इस पर पूर्ण रूपेण अधिकारी हो चुके तो दिन में अथवा रात में उस पर हमारी ओर से कोई आदेश (दुर्घटना) आ गया, तो हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया [3] कि जैसे कल

إِنَّمَا مَثَلُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنزَلْنَٰهُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ فَٱخْتَلَطَ بِهِۦ نَبَاتُ ٱلْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ ٱلنَّاسُ وَٱلْأَنْعَٰمُ حَتَّىٰٓ إِذَآ أَخَذَتِ ٱلْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَٱزَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَآ أَنَّهُمْ قَٰدِرُونَ عَلَيْهَآ أَتَىٰهَآ أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَٰهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنَ بِٱلْأَمْسِ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ

---

[1]यह मनुष्य की उसी कृतघ्नता के व्यवहार का वर्णन है, जिसका वर्णन अभी आयत संख्या १२ में गुजर चुका है तथा क़ुरआन में भी अन्य विभिन्न स्थानों पर अल्लाह ने इसका वर्णन किया है ।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम यह कृतघ्नता तथा उदण्डता कर लो चार दिन के जीवन का आनन्द लेकर । अन्ततः तुम्हें हमारे ही पास आना है, फिर हम तुम्हें, जो कुछ तुम करते रहे होगे बतायेंगे अर्थात उसका दण्ड देंगे ।

[3] حَصِيدًا का अर्थ है مَحصودًا अर्थात ऐसी खेती जिसे काटकर एक ओर रख दिया गया हो तथा खेत साफ हो गया हो । साँसारिक जीवन को इस प्रकार खेती से उपमा देकर इसके अस्थायित्व तथा सामयिकता को प्रदर्शित किया गया है कि खेती भी वर्षा के पानी से फलती-फूलती है तथा बढ़ती है । परन्तु उसे भी काटकर विनाश के घाट उतार दिया जाता है ।

لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

यहाँ थी ही नहीं। हम इसी प्रकार निशानियों का सविस्तार वर्णन करते हैं ऐसे लोगों के लिए जो विचार करते हैं।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा अल्लाह (तआला) शान्त स्थान की ओर तुम को बुलाता है तथा जिसको चाहता है संमार्ग दर्शाता है।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) जिन लोगों ने पुण्य किया है उनके लिए भलाई है तथा कुछ अधिक भी[1] तथा उनके मुख पर न कालिमा छायेगी तथा न अपमान, ये लोग स्वर्ग में रहने वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ ۭ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ

(२७) तथा जिन लोगों ने बुरे कर्म किये उनको बुराई का दण्ड समान मिलेगा[2] तथा उन पर अपमान छा जायेगा, उनको अल्लाह (तआला) से कोई बचा न पायेगा।[3] जैसे कि उनके मुख

---

[1] زيادة का कई अर्थ लिया गया है, परन्तु हदीस में इसकी व्याख्या अल्लाह के दर्शन से की गयी है, जो स्वर्ग वालों को स्वर्ग तथा स्वर्ग के सुख प्रदान के पश्चात प्रदान किया जायेगा। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब इस्बाते रूयतिल मोमिनीन फ़िल आख़िरते लेरब्बेहिम)

[2] पूर्व की आयत में स्वर्ग में निवास करने वाले लोगों का वर्णन था, उसमें बताया गया था कि उन्हें इन पुण्य कार्यों का बदला कई-कई गुना मिलेगा तथा फिर इससे अधिक अल्लाह के दर्शन से सम्मानित होंगे। इस आयत में बताया जा रहा है कि बुराई का बदला बुराई के बराबर ही मिलेगा। سيّئات का तात्पर्य कुफ़्र (अर्धम) तथा शिर्क तथा अन्य बुराईयाँ हैं।

[3] जिस प्रकार ईमान वालों को बचाने वाला अल्लाह तआला होगा, वह उस दिन उन्हें अपनी विशेष कृपा प्रदान करेगा, इसके अतिरिक्त उनके लिये अल्लाह तआला अपने विशेष भक्तों को सिफ़ारिश की आज्ञा प्रदान करेगा, जिनकी सिफ़ारिश वह स्वीकार करेगा।

أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ۚ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢٧﴾

पर अंधेरी रात के पर्त लपेट दिये गये हैं ।[1] ये लोग नरक में रहने वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे ।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا۟ مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ ۖ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُم مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा वह दिन भी स्मरणीय है, जिस दिन हम उन सभी को एकत्रित करेंगे ।[2] फिर मूर्तिपूजकों से कहेंगे कि तुम तथा तुम्हारे साझीदार अपने स्थान पर ठहरो ।[3] फिर हम उनमें आपस में फूट डाल देंगे,[4] तथा उनके

---

[1]यह अतिश्योक्ति है कि उनके मुख इतने काले होंगे । इसके विपरीत ईमानवालों के मुख कोमल तथा प्रकाश युक्त होंगे । जिस प्रकार सूर: *आले इमरान* आयत संख्या १०६ में है ﴿ يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ﴾ तथा (सूर: *अबस*, ३८-४१) तथा सूर: *कियाम:* में है ।

[2] جميعاً से तात्पर्य आदि से अन्त तक के सभी धरती वासी मनुष्य तथा जिन्नात हैं, सबको अल्लाह तआला एकत्र करेगा । जिस प्रकार कि अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَحَشَرْنَٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴾

"हम उन सभी को एकत्रित करेंगे, किसी एक को भी न छोड़ेंगे ।"(सूर: *कहफ़*, ४७)

[3]उनकी अपेक्षा ईमानवालों को दूसरी ओर कर दिया जायेगा । अर्थात ईमानवालों तथा शिर्क एवं कुफ़्र करने वालों को पृथक-पृथक एक-दूसरे से अलग कर दिया जायेगा । जैसे फ़रमाया :

﴿ وَامْتَٰزُوا۟ الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴾

"ऐ अपराधियो ! आज तुम (एक-दूसरे से) अलग हो जाओ ।" (सूर: *यासीन*, ५९)

﴿ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ﴾

"उस दिन लोग गुटों में बट जायेंगे ।" (सूर: *रोम*, ४३)

अर्थात दो गुटों में । أي يصيرون صدعين (इब्ने कसीर)

[4]अर्थात संसार में उनका आपस में जो विशेष सम्बन्ध था, वह समाप्त कर दिया जायेगा तथा वे एक-दूसरे के शत्रु बन जायेंगे तथा उनके देवता इस बात ही को नकार देंगे कि ये लोग उनकी पूजा किया करते थे, उनको सहायता के लिये पुकारते थे, उनके नाम का प्रसाद-भोग लगाते थे ।

वे साझीदार कहेंगे कि तुम हमारी इबादत (पूजा) नहीं करते थे।

فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ﴿٢٩﴾

(२९) तो हमारे तुम्हारे मध्य अल्लाह पर्याप्त है गवाह के रूप में कि हमको तुम्हारी इबादत की सूचना भी न थी।[1]

هُنَالِكَ تَبْلُوا كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ وَرُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) उस स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्व किये गये कार्यों का परीक्षण कर लेगा,[2] तथा ये लोग अल्लाह की ओर जो उनका वास्तविक मालिक है, लौटाये जायेंगे तथा जो कुछ झूठ (ईष्टदेव) बना रखे थे, सभी उन से खो जायेंगे।[3]

---

[1]यह अस्वीकार का कारण है कि हमें तो कुछ पता ही नहीं, तुम क्या कुछ किया करते थे तथा हम झूठ बोल रहे हों तो हमारे मध्य अल्लाह तआला गवाह है तथा वह पर्याप्त है, उस की गवाही के पश्चात किसी अन्य साक्षी की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती। यह आयत इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मूर्तिपूजक जिनको सहायता के लिये पुकारते थे, वह मात्र पत्थर की मूर्तियाँ नहीं थीं (ज़िस प्रकार आजकल क़ब्रपूजक अपनी क़ब्रपूजा को उचित सिद्ध करने के लिए कहते हैं कि इस प्रकार की आयतें तो मूर्तियों के लिये हैं) अपितु वह बुद्धि तथा ज्ञान रखने वाले लोग ही होते थे जिनके मरने के पश्चात लोग उनकी मूर्तियाँ बनाकर पूजना प्रारम्भ कर देते थे। जिस प्रकार आदरणीय नूह के समुदाय के कर्मों से भी सिद्ध होता है जिसका विस्तृत वर्णन सहीह बुख़ारी में लिखा है। दूसरे यह भी ज्ञात हुआ कि मरने के पश्चात मनुष्य कितना भी बड़ा महात्मा क्यों न हों, यहाँ तक कि नबी तथा रसूल हो। उसे दुनिया की स्थिति का ज्ञान नहीं होता, उसके अनुयायी तथा श्रद्धालु उसे सहायता के लिये पुकारते हैं, उसके नाम का प्रसाद-भोग चढ़ाते हैं, उसकी क़ब्र पर मेले-ठेले का आयोजन होता है, परन्तु वह अंजान होता है तथा इन सभी बातों का इंकार ऐसे लोग क़ियामत (प्रलय) वाले दिन करेंगे। यही बात सूरः *अहक़ाफ़* आयत संख्या ५ तथा ६ में वर्णित की गयी है।

[2]अथवा स्वाद चख लेगा।

[3]अर्थात कोई देवता तथा कष्टनिवारक वहाँ काम नहीं आयेगा। कोई किसी की कठिनाई दूर करने का सामर्थ्य न रखेगा।

(३१) (आप) कहिए कि वह कौन है, जो तुमको आकाश तथा धरती से जीविका पहुँचाता है अथवा वह कौन है जो कानों तथा आँखों पर पूर्ण अधिकार रखता है तथा वह कौन है जो जीवधारी को निर्जीव से निकालता है तथा निर्जीव से सजीव को निकालता है तथा वह कौन है जो सभी कार्यों का संचालन करता है ? अवश्य वह यही कहेंगे कि अल्लाह ।[1] तो उनसे कहिए कि फिर डरते क्यों नहीं ?

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝

(३२) तो यह है अल्लाह (तआला) जो तुम्हारा सत्य प्रभु है । फिर सत्य के पश्चात अन्य क्या रह गया सिवाय भटकावे के, फिर कहाँ भटके जाते हो ?[2]

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝

(३३) इसी प्रकार आप के प्रभु की यह बात कि यह ईमान न लायेंगे, सभी अवज्ञाकारी लोगों के विषय में में सिद्ध हो चुकी है ।[3]

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

---

[1]इस आयत से भी स्पष्ट होता है कि मूर्तिपूजक अल्लाह के प्रभुत्व, सृजन, स्वामित्व तथा उसको प्रत्येक कार्य का हल करने वाला स्वीकार करते थे । परन्तु उसके उपरान्त चूँकि वह उसकी उपासना में दूसरों को साझीदार ठहराते थे, इसीलिये अल्लाह ने उन्हें नरक का ईंधन बताया । आजकल के ईमान के दावेदार भी इसी उपासना-एकेश्वरवाद के इंकार करने वाले हैं ।

[2]अर्थात पोषक तथा पूज्य तो यही है, जिसके सम्बन्ध में तुम्हें स्वयं स्वीकार है कि प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा तथा स्वामी एवं संयोजक वही है । फिर इस इबादत के योग्य को छोड़कर जो तुम अन्य को देवता बनाये फिरते हो वह भटकावे के अतिरिक्त क्या है तुम्हारी समझ में यह बात क्यों नही आती ? तुम कहाँ फिरे जाते हो ?

[3]अर्थात जिस प्रकार मूर्तिपूजक सारी बातों को स्वीकार कर लेने के उपरान्त अपनी मूर्तिपूजा पर स्थिर हैं तथा उसे त्यागने के लिये तैयार नहीं, इसी प्रकार तेरे प्रभु की यह बात सिद्ध हो गयी कि यह ईमान नहीं लाने वाले हैं । क्योंकि यह दोषपूर्ण मार्ग

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) (आप इस प्रकार) कहिए कि क्या तुम्हारे साझीदारों में क़ोई ऐसा है जो प्रथम बार भी पैदा करे फिर पुन: पैदा करे ? (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है फिर वही पुन: भी पैदा करेगा। फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो ?[1]

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ۚ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ۗ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) (आप) कहिए कि तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है कि सत्य का मार्ग बताता हो ? (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही सत्य का मार्ग बताता है।[2] तो फिर जो शक्ति सत्य बात का मार्ग बतलाती हो, वह अधिक अनुसरण एवं पालन के योग्य है अथवा वह व्यक्ति जिसको बिना बताये स्वयं ही मार्ग न

छोड़कर सत्य मार्ग पर चलने के लिये तैयार नहीं हैं, तो मार्गदर्शन तथा ईमान उन्हें किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ? यह वही बात है जिसे अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है।

﴿وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ﴾,

"परन्तु प्रकोप की बात काफ़िरों पर सिद्ध हो गयी।"(सूर: *अज़्ज़ुमर,७१*)

[1]मूर्तिपूजकों के मूर्तिपूजन के खोखलापन को स्पष्ट करने के लिये उनसे पूछा जा रहा है कि बताओ जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार बताते हो, क्या उन्होंने इस सृष्टि को प्रथम बार पैदा किया है ? अथवा पुन: उसे पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं ? नहीं, नि:सन्देह नहीं, प्रथम बार पैदा करने वाला भी अल्लाह ही है तथा पुन: दोबारा वही क़ियामत (प्रलय) के दिन सभी को जीवित करेगा, तो तुम प्रकाश का मार्ग छोड़कर कहाँ फिरे जा रहे हो ?

[2]अर्थात भटके हुए यात्रियों का मार्ग बताने वाला तथा दिलों को भटकावे से सत्य की ओर फेरनेवाला भी अल्लाह तआला ही है। उनके साझीदारों में कोई ऐसा नहीं जो इस कार्य को कर सके।

दिखायी दे ?[1] तो तुम को क्या हो गया है, तुम कैसे निर्णय करते हो ?[2]

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा उनमें से अधिकतर लोग निराधार (अनुमानित) विचारों पर चल रहे हैं। निःसन्देह निर्मूल (अनुमानित) विचार सत्य (की पहचान) में तनिक भी काम नहीं दे सकता।[3] ये जो कुछ कर रहे हैं निःसन्देह अल्लाह सब कुछ जानता है।[4]

وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ

(३७) तथा यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह (की प्रकाशना) के सिवाय (स्वयं ही) गढ़ लिया गया हो, अपितु यह तो (उन किताबों) की प्रमाण पुस्तक है, जो इसके पूर्व

---

[1]फिर अनुसरण योग्य कौन है? वह व्यक्ति जो देखता, सुनता तथा लोगों को सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है? अथवा जो अंधा तथा बहरा होने के कारण स्वयं मार्ग पर चल भी नहीं सकता, जब तक कि अन्य लोग उसे मार्ग पर न डाल दें अथवा हाथ पकड़कर न ले जायें?

[2]अर्थात तुम्हारी बुद्धि को क्या हो गया है ? तुम किस प्रकार अल्लाह तथा उसकी सृष्टि को उसके समान ठहरा रहे हो ? तथा अल्लाह के साथ अन्यों को भी इबादत में साझीदार बना रहे हो ? जबकि इन प्रमाणों की माँग है कि केवल इसी एक अल्लाह को इबादत (आराधना) के योग्य माना जाये तथा सभी प्रकार की इबादतें उसी के लिए विशेष रूप से मानी जायें।

[3]परन्तु बात यह है कि लोग निराधार बातों पर चलने वाले हैं, यद्यपि जानते हैं कि प्रमाणों के सापेक्ष अन्ध विश्वास, अनूमान तथा कल्पना एवं विचार का कोई महत्व नहीं, क़ुरआन में ظن विश्वास तथा अनूमान दोनों अर्थों में प्रयोग हुआ है। यहाँ दूसरा अर्थ लिया गया है।

[4]अर्थात इस हटधर्मी का दण्ड वह देगा कि प्रमाण न रखने के उपरान्त यह मात्र अंधविश्वास तथा कुविचारों के पीछे लगे रहे तथा बुद्धि एवं समझ से तनिक काम नहीं लिया।

لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٧

(उतर) चुकी है,[1] तथा पुस्तक (आवश्यक नियमों) का विस्तृत वर्णन है।[2] इसमें कोई बात सन्देह[3] की नहीं कि अखिल जगत के प्रभु की ओर से है।[4]

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٣٨

(३८) क्या यह लोग इस प्रकार कहते हैं कि आपने उसको गढ़ लिया है? (आप) कह दीजिए कि तो फिर तुम इसके समान एक ही सूर: लाओ तथा अल्लाह के अतिरिक्त जिन-जिन को बुला सको उनको बुला लो यदि तुम सत्यवादी हो।[5]

---

[1]जो इस बात का प्रमाण है कि क़ुरआन गढ़ा हुआ नहीं है, बल्कि उस शक्ति का उतारा हुआ है जिसने पूर्व की किताबें भी उतारीं।

[2]अर्थात हराम एवं हलाल तथा उचित एवं अनुचित का विस्तृत वर्णन करने वाला।

[3]उसकी शिक्षाओं में, उसकी वर्णित कथाओं तथा घटनाओं में तथा भविष्य में होने वाली घटनाओं के विषय में।

[4]यह सब बातें स्पष्ट करती हैं कि ये अखिल जगत के प्रभु ही की ओर से उतारी गयी है जो "भूत का ज्ञाता" भी है तथा "भविष्य का ज्ञाता" भी।

[5]इन सभी यर्थाथ तथा प्रमाण के उपरान्त भी यदि तुम्हारा यही दावा है कि यह क़ुरआन मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का गढ़ा हुआ है, तो वह भी तुम्हारी ही तरह का एक मनुष्य है, तुम्हारी भाषा भी उसकी ही तरह अरबी है। वह तो एक है, तुम यदि अपने दावे में सच्चे हो तो तुम संसार भर के साहित्यकारों, ज्ञानियों, वाक पटुता में दक्ष तथा वैज्ञानिकों एवं लेखकों को एकत्र कर लो तथा इस क़ुरआन की एक छोटी सी छोटी सूर: के समान प्रस्तुत कर दो। क़ुरआन करीम का यह चैलेंज आज तक उत्तर न पा सका, जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यह क़ुरआन किसी व्यक्ति का कल्पित तथा बनाया हुआ नहीं है, बल्कि वास्तव में अल्लाह का कथन है जो परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरा है।

(३९) अपितु वे ऐसी चीज़ को झुठलाने लगे जिसको अपने ज्ञान की परिधि में नहीं लाये[1] तथा अभी उनको इसका अन्तिम परिणाम नहीं मिला ।[2] जो लोग उनसे पूर्व हुए हैं उसी प्रकार उन्होंने भी झुठलाया था, तो देख लीजिए कि उन अत्याचारियों का अन्त कैसा हुआ ?[3]

بَلۡ كَذَّبُواْ بِمَا لَمۡ يُحِيطُواْ بِعِلۡمِهِۦ وَلَمَّا يَأۡتِهِمۡ تَأۡوِيلُهُۥۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِهِمۡۖ فَٱنظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلظَّٰلِمِينَ ٣٩

(४०) तथा उनमें से कुछ ऐसे हैं जो इस पर ईमान ले आयेंगे तथा कुछ ऐसे हैं कि उस पर ईमान न लायेंगे । तथा आप का प्रभु भ्रष्टाचारियों को भलि-भाँति जानता है ।[4]

وَمِنۡهُم مَّن يُؤۡمِنُ بِهِۦ وَمِنۡهُم مَّن لَّا يُؤۡمِنُ بِهِۦۚ وَرَبُّكَ أَعۡلَمُ بِٱلۡمُفۡسِدِينَ ٤٠

---

[1]अर्थात क़ुरआन में चिन्तन तथा उसके अर्थों पर विचार किये बिना, उसको झुठलाने पर तुल गये ।

[2]अर्थात क़ुरआन ने जो पूर्व की घटनायें तथा भविष्य की संभावनाओं का वर्णन किया है उसकी पूर्ण सत्यता एवं वास्तविकता भी उन पर स्पष्ट नहीं हुई, उसके बिना ही झुठलाना प्रारम्भ कर दिया अथवा दूसरा भावार्थ यह है कि उन्होंने क़ुरआन पर उचित चिन्तन किये बिना ही उसे झुठलाया, यद्यपि वह सहीह अर्थों में उस पर प्रयत्न करते तथा उन बातों पर विचार करते जो इसके अल्लाह के कथन होनें का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, तो निस्सन्देह उसकी समझ तथा अर्थ के द्वार उनके लिये खुल जाते इस अवस्था में تأويل का अर्थ, क़ुरआन करीम की प्रस्तुति एवं रहस्य तथा मार्मिकता एवं अर्थ के स्पष्ट हो जाने के होंगे ।

[3]ये उन काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों को चेतावनी देकर सावधान किया जा रहा है कि तुमसे पूर्व के समुदायों ने भी अल्लाह की आयतों को झुठलाया तो देख लो उनका क्या परिणाम हुआ ? यदि तुम इसे झुठलाने से न रूके तो तुम्हारा भी परिणाम इससे भिन्न न होगा ।

[4]वह भली-भाँति जानता है कि मार्गदर्शन का अधिकारी कौन है, उसे मार्गदर्शन प्रदान कर देता है, तथा भटकावे का कौन अधिकारी है, उसके लिये भटकावे का द्वार पूर्णरूप से खोल देता है । वह न्याय करने वाला है, उसके किसी कार्य में लेशमात्र भी अत्याचार

وَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل لِّي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۖ أَنتُم بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٤١﴾

(४१) तथा यदि वे आप को झुठलाते रहें तो यह कह दीजिए कि मेरा किया हुआ मुझको मिलेगा तथा तुम्हारा किया हुआ तुमको मिलेगा। तुम मेरे किये हुए के उत्तरदायी नहीं हो और मैं तुम्हारे किये हुए का उत्तरदायी नहीं हूँ।[1]

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा उनमें कुछ ऐसे हैं जो आपकी ओर कान लगा कर सुनते हैं। क्या आप बहरों को सुनाते हैं चाहे उनको बुद्धि भी न हो ?[2]

وَمِنْهُم مَّن يَنظُرُ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنتَ

(४३) तथा उनमें कुछ ऐसे हैं कि आपको देख रहे हैं। फिर क्या आप अंधों को मार्ग

नहीं। जो जिस बात के योग्य होता है, उसके अनुसार वह वस्तु उसको प्रदान कर देता है।

[1]अर्थात हर प्रकार के समझाने तथा प्रमाण प्रस्तुत करने के पश्चात भी यदि वह झुठलाना न बन्द करे, तो फिर आप यह कह दें, अर्थ यह है कि मेरा कार्य मात्र आमन्त्रण देना तथा सचेत करना है, तो वह मैं कर चुका हूँ। अब न तुम मेरे कर्मों के उत्तरदायी हो, न मैं तुम्हारे कर्मों का, सबको अल्लाह के दरबार में प्रस्तुत होना है, वहाँ प्रत्येक व्यक्ति से उसके अच्छे तथा बुरे कर्मों की पूछताछ होगी। यह वही बात है जो ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ * لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ﴾ में है तथा आदरणीय इब्राहीम ने इन शब्दों में कही थी।

﴿إِنَّا بُرَآءُ مِنكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ﴾

"नि:सन्देह हम तुमसे अलग हैं तथा जिसकी तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते हो उनसे, हम तुम्हारे (मत) को नकारने वाले हैं।" (सूर: *अल-मुमतहेनः*, ४)

[2]अर्थात देखावे के लिये क़ुरआन तो सुनते हैं, परन्तु सुनने का अर्थ मार्ग-प्रदर्शन प्राप्त करना नहीं, इसलिये उसी प्रकार कोई लाभ नहीं होता, जिस प्रकार एक बहरे को लाभ नहीं होता। विशेष रूप से जब बहरा बुद्धि न रखता हो। क्योंकि बुद्धिमान बहरा फिर भी संकेत से कुछ समझ लेता है परन्तु उस की तुलना अबोध बहरे के समान है जो बिल्कुल ही बहरा है।

दिखाना चाहते हैं चाहे उनकी दृष्टि भी न हो ?[1]

تَهۡدِي ٱلۡعُمۡيَ وَلَوۡ كَانُواْ لَا يُبۡصِرُونَ ﴿٤٣﴾

(४४) यह विश्वस्त बात है कि अल्लाह लोगों पर तनिक भी अत्याचार नहीं करता परन्तु लोग स्वयं ही अपने आप पर अत्याचार करते हैं।[2]

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَظۡلِمُ ٱلنَّاسَ شَيۡـٔٗا وَلَٰكِنَّ ٱلنَّاسَ أَنفُسَهُمۡ يَظۡلِمُونَ ﴿٤٤﴾

(४५) तथा उनको वह दिन याद दिलाइए जिसमें अल्लाह उनको (अपनी सेवा में) इस अवस्था में एकत्रित करेगा (कि उन्हें लगेगा) कि (संसार में) सारे दिन का एक आध क्षण रहे हों[3] तथा आपस में एक-दूसरे को पहचाननें को खड़े

وَيَوۡمَ يَحۡشُرُهُمۡ كَأَن لَّمۡ يَلۡبَثُوٓاْ إِلَّا سَاعَةٗ مِّنَ ٱلنَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيۡنَهُمۡۚ قَدۡ خَسِرَ ٱلَّذِينَ كَذَّبُواْ بِلِقَآءِ ٱللَّهِ وَمَا كَانُواْ مُهۡتَدِينَ ﴿٤٥﴾

---

[1]इसी प्रकार कुछ लोग आप की ओर देखते हैं, परन्तु उद्देश्य उनका भी चूँकि कुछ और होता है, इसलिये उन्हें भी उसी प्रकार कोई लाभ नहीं होता, जिस प्रकार से एक अंधे को नहीं होता । विशेष रूप से वह अंधा जो दृष्टि के साथ-साथ समझ से भी वंचित हो। क्योंकि कुछ अंधे हृदय की दृष्टि रखते हैं, वह आँखों की ज्योति से वंचित होने के उपरान्त, बहुत कुछ समझ लेते हैं। परन्तु उनकी तुलना ऐसे ही है, जैसे कोई अंधा हो जो हृदय की दृष्टि ज्योति से भी वंचित हो। उद्देश्य इन सब बातों के द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सांत्वना है। जिस प्रकार एक वैद्य तथा चिकित्सक को जब यह ज्ञात हो जाये कि रोगी उपचार कराने के लिये तैयार नहीं है तथा वह मेरे निर्देश तथा चिकित्सा की चिन्ता नहीं करता तो वह उसे अनदेखी कर देता है तथा वह उस पर अपना समय नष्ट करना नहीं चाहता।

[2]अर्थात अल्लाह तआला ने उन्हें सारी चीज़ें प्रदान की हैं, आँखें भी दी हैं जिनसे देख सकते हैं, कान दिये हैं जिससे सुन सकते है, बुद्धि तथा समझ दी है जिनसे सत्य तथा असत्य एवं झूठ तथा सच मे मध्य अंतर कर सकते हैं। परन्तु इन शक्तियों का यदि उचित प्रयोग करके सत्य का मार्ग नहीं अपनाते तो फिर ये स्वयं ही अपने आप पर अत्याचार कर रहे हैं। अल्लाह तआला ने उन पर कोई अत्याचार नहीं किया।

[3]अर्थात प्रलय की कठिनाईयाँ देखकर संसार के सारे स्वाद भूल जायेंगे तथा संसार का जीवन उन्हें ऐसा प्रतीत होगा कि जैसे कि वे दुनिया में एक-आध क्षण ही रहे हैं।

हों ।[1] वास्तव में हानि में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुठलाया तथा वे मार्गदर्शन पाने वाले नहीं थे ।

(४६) तथा हम जिसका उनसे वादा कर रहे हैं उसमें से कुछ तनिक सा आपको दिखला दें अथवा (उनके प्रकट होने से पूर्व) हम आप को मौत दे दें, तो हमारे पास तो उनको आना ही है । फिर अल्लाह उनके सभी कर्मों का साक्षी है ।[2]

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

(४७) तथा प्रत्येक समुदाय के लिए एक रसूल (संदेशवाहक) है, फिर जब उनका रसूल

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ

---

[1]प्रलय में विभिन्न अवस्थायें होंगी, जिन्हें क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है । एक समय ऐसा होगा कि एक-दूसरे को पहचानेंगे, कुछ अवसर ऐसे आयेंगे कि आपस में एक-दूसरे पर भटकावे का दोषारोपण करेंगे । कुछ अवसरों पर ऐसा भयभीत होंगे कि

﴿ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ﴾

"आपस में एक दूसरे के सम्बन्धों का न पता होगा तथा न एक-दूसरे को पूछेंगे ।" (*सूरः अल-मोमिनून, १०१*)

[2]इस आयत में अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि हम उन काफ़िरों के विषय में जो वायदा कर रहे हैं यदि उन्होंने कुफ़्र (अर्धम) तथा मूर्तिपूजा को प्रचलित रखा तो उन पर भी उसी प्रकार अल्लाह का प्रकोप आ सकता है, जिस प्रकार से पूर्व के समुदायों पर आया, इनमें से कुछ यदि आप के जीवन में भेज दें तो यह भी सम्भव है, जिससे आपकी आँखे ठंडी होंगी । परन्तु यदि आप इससे पूर्व ही संसार से उठा लिये गये, तब भी कोई बात नहीं, इन काफ़िरों को अन्त में हमारे पास ही आना है । इनके सारे कर्मों तथा हाल की हमें सूचना है वहाँ ये हमारी यातनाओं से किस प्रकार बच सकेंगे ? अर्थात संसार में सम्भव है कि हमारे विशेष रहस्य के कारण यातना से बच जायें, परन्तु आख़िरत में तो उनके लिये हमारी यातनाओं से बचना सम्भव नहीं होगा क्योंकि प्रलय आने का उद्देश्य ही यही है कि वहाँ आज्ञापालकों को उनके आज्ञापालन का फल तथा अवहेलना करने वालों को उनकी अवज्ञा का दण्ड दिया जाये ।

رَسُوۡلُهُمۡ قُضِىَ بَيۡنَهُمۡ بِالۡقِسۡطِ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ۝

आ चुकता है उनका निर्णय न्याय के साथ किया जाता है ।[1] तथा उस पर अत्याचार नहीं किया जाता ।

وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا الۡوَعۡدُ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ۝

(४८) तथा यह लोग कहते हैं कि यह वचन कब होगा यदि तुम सच्चे हो ?

قُلۡ لَّاۤ اَمۡلِكُ لِنَفۡسِىۡ ضَرًّا وَّلَا نَفۡعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ‌ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ‌ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمۡ

(४९) (आप) कह दीजिए कि मैं स्वयं अपने लिए तो किसी लाभ तथा किसी हानि का अधिकार रखता ही नहीं परन्तु जितना अल्लाह की इच्छा हो । प्रत्येक समुदाय के लिए एक निर्धारित समय है । जब उनका वह निर्धारित

---

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि प्रत्येक समुदाय में हम रसूल भेजते रहे । तथा जब रसूल अपना सचेत करने तथा संदेश पहुँचाने का कर्तव्य पूर्ण कर देता तो फिर हम उनके मध्य न्याय के साथ निर्णय कर देते । अर्थात पैग़म्बर तथा उन पर ईमान ले आने वालों को बचा लेते तथा दूसरों को नष्ट कर देते । क्योंकि :

﴿وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيۡنَ حَتّٰى نَبۡعَثَ رَسُوۡلًا﴾

"तथा हमारी रीति नहीं कि संदेशवाहक भेजने के पूर्व ही दण्ड देने लगें ।" (सूर: *बनी इस्राईल,* १५)

तथा इस निर्णय में उन पर कोई अत्याचार नहीं होता था । क्योंकि अत्याचार तो तब होता जब बिना पाप के उन पर प्रकोप भेज दिया जाता अथवा बिना सर्तक किये उन्हें घेर लिया जाता । (फ़तहुल कदीर) दूसरा भावार्थ यह वर्णन किया गया है कि इसका सम्बन्ध क़ियामत (प्रलय) से है अर्थात क़ियामत के दिन सभी समुदाय जब अल्लाह के दरवार में प्रस्तुत होंगे, तो उस समुदाय में भेजा गया रसूल भी साथ होगा । सभी के कर्मपत्र भी होंगे तथा फ़रिश्ते भी गवाह के रूप में प्रस्तुत होंगे । तथा इस प्रकार हर समुदाय तथा उसके रसूल के मध्य न्यायपूर्वक निर्णय किया जायेगा । तथा हदीस में आता है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समुदाय का निर्णय सर्वप्रथम होगा । जैसाकि फ़रमाया: "हम यद्यपि सबसे पश्चात आने वाले हैं परन्तु क़ियामत को सबसे आगे होंगे, तथा सम्पूर्ण सृष्टि से पूर्व हमारा निर्णय किया जायेगा ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल जुमुअ: बाब हिदायति हाज़ेहिल उम्म: ले यौमिल जुमुअ:) (तफ़सीर इब्ने कसीर) ।

فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝٤٩

समय आ पहुँचता है, तो एक क्षण न पीछे हट सकते हैं तथा न आगे खिसक सकते हैं ।[1]

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُهُۥ بَيَٰتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ ٱلْمُجْرِمُونَ ۝٥٠

(५०) (आप) कह दीजिए कि यह तो बताओ कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप रात को आ पड़े अथवा दिन को, तो प्रकोप में कौन सी ऐसी वस्तु है कि अपराधी लोग उसको शीघ्र माँग रहे हैं ।[2]

---

[1]यह मूर्तिपूजकों के अल्लाह के प्रकोप की माँग पर कहा जा रहा है कि मैं तो अपने स्वयं के लाभ-हानि का अधिकार नहीं रखता, तो क्योंकर मैं दूसरों को लाभ अथवा हानि पहुँचा सकूँ ? हाँ, यह सारा अधिकार अल्लाह ही के हाथ में है तथा वह अपनी इच्छानुसार ही किसी को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का निर्णय करता है । इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने प्रत्येक समुदाय के लिये एक समय निर्धारित किया हुआ है, इस निर्धारित समय तक अवसर देता है । परन्तु जब वह समय आ जाता है तो फिर वह एक क्षण पीछे हो सकते हैं न आगे खिसक सकते हैं ।

टिप्पणी : यहाँ यह बात अति आवश्यक है कि जब सर्वोत्तम पुरुष रसूलों के प्रमुख मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक को किसी को लाभ-हानि पहुँचाने पर वश नहीं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात के लोगों में कौन-सा व्यक्ति ऐसा हो सकता है जो किसी की आवश्यकता की पूर्ति कर दे तथा कष्ट निवारण पर वश रखता हो ? इस प्रकार स्वयं अल्लाह के पैग़म्बर से सहायता माँगना, उनसे विनती करना "या रसूलुल्लाह अलमदद" तथा "أغثني يا رسول الله" आदि शब्द से पुकारना अथवा ध्यान लगाना किसी भी प्रकार उचित नहीं क्योंकि यह क़ुरआन की इस आयत तथा इसी प्रकार की अन्य स्पष्ट शिक्षाओं के विरूद्ध है बल्कि यह शिर्क की परिधि में आता है ।

[2]अर्थात प्रकोप तो अत्यन्त अप्रिय वस्तु है जिससे दिल घृणा करते हैं तथा इच्छायें अस्वीकार करती हैं, फिर यह उसमें क्या अच्छाई देखते हैं कि उसे शीघ्र लाने की माँग करते हैं ?

أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ ءَامَنتُم بِهِۦٓۚ ءَآلْـَٔـٰنَ وَقَدْ كُنتُم بِهِۦ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾

(५१) क्या फिर जब वह आ ही पड़ेगा तब उस पर ईमान लाओगे, हाँ अब मान लिया[1] जब कि तुम उसकी शीघ्रता मचा रहे थे।

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ ذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

(५२) फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा कि अब स्थाई यातना का स्वाद चखो। तुमको तो तुम्हारे किये का ही बदला मिला है।

وَيَسْتَنۢبِـُٔونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِى وَرَبِّىٓ إِنَّهُۥ لَحَقٌّ ۖ وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा वे आप से पूछते हैं कि क्या वह (प्रकोप) वास्तविक बात है?[2] (आप) कह दीजिए कि हाँ, सौगन्ध है मेरे प्रभु की कि वह वास्तविक बात है तथा तुम अल्लाह को किसी प्रकार भी विवश नहीं कर सकते।

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِى ٱلْأَرْضِ لَٱفْتَدَتْ بِهِۦ ۗ وَأَسَرُّوا۟ ٱلنَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا۟ ٱلْعَذَابَ ۖ وَقُضِىَ بَيْنَهُم بِٱلْقِسْطِ ۚ وَهُمْ

(५४) तथा यदि प्रत्येक प्राण जिसने अत्याचार (मिश्रण) किया है, के पास इतना हो कि सम्पूर्ण धरती भर जाये तब भी उसको देकर अपना प्राण बचाने लगे।[3] तथा जब प्रकोप देख लेगें तो लज्जा को छिपाये रखेंगे तथा

---

[1]परन्तु प्रकोप आने के पश्चात मानने का क्या लाभ ?

[2]अर्थात यह पूछते हैं कि पुर्नजन्म, प्रलय तथा उनका फिर जीवित हो जाना सत्य है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ पैग़म्बर ! इनसे कह दीजिये कि तुम्हारा मिट्टी होकर मिट्टी में मिल जाना, अल्लाह तआला को पुन: जीवित करने से नहीं रोक सकता। इसलिये यह अवश्य होकर रहेगा। इमाम इब्नें कसीर फ़रमाते हैं कि इस आयत के संदर्भ में क़ुरआन में अन्य केवल दो आयतें हैं कि जिनमें अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को आदेश दिया है कि वह सौगन्ध खाकर क़ियामत (प्रलय) के आने की घोषणा करें। एक सूर: सबा आयत संख्या ३ तथा दूसरी सूर: *तग़ाबुन* आयत संख्या ७

[3]अर्थात यदि संसार भर का कोष देकर यातना से मुक्त हो जायें तो देने के लिये तैयार होगा। परन्तु वहाँ किसी के पास होगा ही क्या ? अर्थात यातना से छुटकारा पाने का कोई मार्ग न होगा।

لَا يُظْلَمُونَ ⑭

उनका निर्णय न्याय के साथ होगा। और उन पर अत्याचार न होगा।

أَلَآ إِنَّ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۗ أَلَآ إِنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑮

(५५) याद रखो कि जितनी वस्तुऐं आकाशों तथा धरती में हैं, सभी अल्लाह के स्वामित्व में हैं। याद रखो कि अल्लाह का वादा सच्चा है परन्तु बहुत से लोग ज्ञान ही नहीं रखते।

هُوَ يُحْىِۦ وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ⑯

(५६) वही प्राण डालता है वही प्राण निकालता है तथा तुम सब उसी के पास लाये जाओगे।[1]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا

(५७) हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की ओर से एक ऐसी वस्तु आयी है जो शिक्षाप्रद है।[2] तथा दिलों में जो (रोग) है उनके लिए

---

[1]इन आयतों में आकाश तथा धरती के मध्य प्रत्येक वस्तु पर अल्लाह तआला का स्वामित्व, अल्लाह के वायदे का सत्य होना, जीवन-मृत्यु पर उसका अधिकार तथा उसके दरबार में सब की उपस्थिति का वर्णन है, जिससे उद्देश्य पूर्व बातों की पुष्टि तथा सहमति है कि जो शक्ति इतने अधिकारों की मालिक है, उसकी पकड़ से बच निकलकर कोई कहाँ जा सकता है ? तथा उसने लेखा-जोखा के लिये जो दिन निर्धारित किया है, उसे कौन टाल सकता है ? नि:सन्देह अल्लाह का वायदा सत्य है, वह एक दिन अवश्य आयेगा तथा प्रत्येक अच्छे-बुरे को उसके कर्मों के अनुसार पुण्य तथा दण्ड दिया जायेगा।

[2]अर्थात जो क़ुरआन को दिल लगा कर पढ़े तथा उसके अर्थ तथा भाव पर विचार करे, उसके लिये क़ुरआन शिक्षा है। शिक्षा एवं उपदेश का मूल अर्थ है पूर्व तथा पश्चात के परिणाम को याद दिलाना, चाहे डराने के द्वारा हो अथवा प्रलोभन द्वारा। तथा वक्ता की तुलना चिकित्सक जैसी है जो रोगी को उन सब बातों से रोकता है जो उसके शरीर तथा स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। उसी प्रकार क़ुरआन भी प्रलोभन देकर तथा भय दिलाकर शिक्षा तथा उपदेश देता है तथा उन परिणामों से सावधान करता है जिनका अल्लाह की अवज्ञा की परिस्थिति में सामना करना होगा तथा उन कार्यों से रोकता है जिन से मनुष्य का परलोक का जीवन नष्ट हो सकता है।

निवारण है।[1] तथा मार्गदर्शन करने वाला है तथा कृपा है ईमान वालों के लिए।[2]

فِي الصُّدُورِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

(५८) (आप) कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के उपहार तथा कृपा पर प्रसन्न होना चाहिए।[3] वह उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ है जिसको वह एकत्रित कर रहे हैं।

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝

(५९) (आप) कहिए कि ये तो बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो जीविका भेजी थी, फिर तुमने उसका कुछ भाग हराम तथा कुछ हलाल कर लिया।[4] (आप) पूछिए कि क्या

قُلْ أَرَأَيْتُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ لَكُم مِّن رِّزْقٍ فَجَعَلْتُم مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ آللَّهُ أَذِنَ

---

[1]अर्थात दिलों में एकेश्वरवाद (तौहीद) तथा ऋषित्व (रिसालत) एवं सत्य विश्वास के विषय में जो संदेह तथा शंका उत्पन्न होती है, उनका निवारण तथा अविश्वास एवं द्वयवाद की अपवित्रता तथा दोष को स्वच्छ करता है।

[2]यह क़ुरआन ईमानवालों के लिये मार्गदर्शन तथा कृपा का साधन है, वैसे तो यह क़ुरआन अखिल मानव जगत के लिये मार्गदर्शन तथा कृपा का साधन है, परन्तु उससे लाभान्वित केवल ईमानवाले होते हैं, इसलिये यहाँ उन्हीं के लिये केवल मार्गदर्शन तथा कृपा का साधन कहा गया है। इस विषय को क़ुरआन करीम में सूरः *बनी इस्राईल* आयत संख्या ८२ तथा सूरः *अलिफ़॰ लाम॰ मीम सजदः* आयत संख्या ४४ में भी वर्णन किया गया है (इसके अतिरिक्त هُدًى للمتقين की व्याख्या देखिए)

[3]खुशी उस अवस्था का नाम है जो किसी प्रिय वस्तु की प्राप्ति पर मनुष्य अपने हृदय में संवेदन करता है। ईमानवालों से कहा जा रहा है कि यह क़ुरआन अल्लाह की विशेष कृपा तथा उसकी दया है, इस पर ईमानवालों को प्रसन्न होना चाहिए अर्थात उनके दिलों में हर्ष तथा आन्नद होना चाहिए। उसका अर्थ यह नहीं है कि प्रसन्नता व्यक्त करने के लिये सभा तथा जुलूसों का, दीप जलाने का तथा इसी प्रकार के अन्य निरर्थक तथा अपव्यय का काम करो। जैसाकि आजकल के धार्मिक आधुनिकीकरण वाले इस आयत से 'जश्ने ईद मीलाद' तथा इसकी कुरीति का औचित्य सिद्ध करते हैं।

[4]इससे तात्पर्य वही कुछ पशुओं का हराम करना है जो मूर्तिपूजक अपनी मूर्तियों के नाम से छोड़ दिया करते थे, जिसका विस्तृत वर्णन सूरः *अल-अनआम* में गुज़र चुका है।

تَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ۝٥٩

तुमको अल्लाह ने आदेश दिया था अथवा अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो ?

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝٦٠

(६०) तथा जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं उनका क़ियामत (प्रलय) के विषय में क्या विचार है ?[1] वास्तव में लोगों पर अल्लाह तआला का बड़ा ही उपकार है ।[2] परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते ।[3]

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِن قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝٦١

(६१) तथा आप किसी अवस्था में हों तथा इन अवस्थाओं में आप कहीं से क़ुरआन पढ़ते हों तथा तुम लोग जो कार्य भी करते हो हमको सभी की सूचना रहती है जब तुम उस कार्य में व्यस्थ रहते हो तथा आपके प्रभु से कोई वस्तु कण बराबर लुप्त नहीं, न धरती में न आकाश में तथा न कोई वस्तु उससे छोटी और न कोई बड़ी, परन्तु यह सब खुली किताब में है ।[4]

---

[1]अर्थात क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उनसे क्या व्यवहार करेगा ।

[2]कि वह मनुष्यों की दुनिया में तुरंत पकड़ नहीं करता । बल्कि उसके लिये एक दिन निर्धारित कर रखा है । अर्थ यह है कि वह दुनिया का सुख मुसलमान तथा काफ़िर सभी को अंतर किये बिना देता है । अथवा जो चीज़ें मनुष्यों के लिये लाभकारी तथा आवश्यक हैं, उन्हें उचित तथा वैध बनाया है, उन्हें हराम नहीं किया ।

[3]अर्थात् अल्लाह के प्रदान किये हुए सुखों की कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते, अथवा उसकी हलाल की हुई वस्तुओं को हराम कर लेते हैं ।

[4]इस आयत में अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ईमानवालों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वह सारी सृष्टि के हाल से परिचित है तथा हर पल प्रत्येक क्षण मनुष्यों पर उसकी दृष्टि है । धरती एवं आकाश की कोई वस्तु उससे छिपी हुई नही है । यह वही विषय है जो *सूर: अल-अनआम* आयत संख्या ५९ में गुज़र चुका है कि "उसी के पास परोक्ष के कोष हैं, जिन्हें वही जानता है । उसे वन तथा जल की

(६२) याद रखो कि अल्लाह के मित्रों पर[1] न कोई भय है न वे दुखी होते हैं ।[2]

أَلَآ إِنَّ أَوۡلِيَآءَ ٱللَّهِ لَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُونَ ٦٢

सब वस्तुओं का ज्ञान है, तथा कोई पत्ता नहीं झड़ता परन्तु वह उसको जानता है, तथा धरती के अधरों में कोई दाना तथा कोई हरी एवं सूखी वस्तु नहीं है, परन्तु 'किताबे मोबीन' में (लिखी हुई) है ।" उसी प्रकार सूर: अल-अनआम की आयत संख्या ३८ तथा सूर: हूद की आयत संख्या ६ में भी इस विषय का वर्णन किया गया है । जब वास्तविकता यह है कि वह आकाश तथा धरती में उपस्थित वस्तुओं की गति को जानता है, तो वह मनुष्य तथा जिन्नों की गति तथा कर्मों से क्योंकर अनजान रह सकता है, जो अल्लाह की इबादत करने के लिये बनाये तथा भेजे गये हैं ?

[1]अवज्ञाकारियों के पश्चात अल्लाह तआला अपने आज्ञाकारियों की चर्चा कर रहा है तथा वह हैं औलिया अल्लाह, (अल्लाह के मित्र) । 'औलिया' बहुवचन है 'वली' शब्द का जिसका शाब्दिक अर्थ 'निकटवर्ती' है । इस आधार पर "औलिया अल्लाह" का अर्थ होगा वे सच्चे तथा नि:स्वार्थी ईमानवाले जिन्होंने अल्लाह की आज्ञापालन कर तथा निषेधित कार्यों से बचकर अल्लाह की निकटता प्राप्त कर ली । इसीलिये अल्लाह तआला ने स्वयं अगली आयत में उनकी प्रशंसा इन शब्दों में की है, "जो ईमान लाये तथा जिन्होंने अल्लाह का भय दिल में रखा ।" तथा ईमान एवं अल्लाह का भय ही अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का आधार तथा प्रमुख साधन है । इस आधार पर हर अल्लाह का भय रखने वाला ईमानदार अल्लाह का वली है । लोग वली होने के लिये चमत्कार दिखाना आवश्यक समझते हैं तथा फिर वे अपने बनाये हुए वलियों के झूठे-सच्चे चमत्कारों का प्रचार करते हैं, यह विचार पूर्णत: दोषपूर्ण है । चमत्कार तथा वली का न चोली-दामन का साथ है न इसके लिये आवश्यक प्रतिबन्ध । यह अलग बात है कि किसी से चमत्कार प्रदर्शित हो जाये तो अल्लाह की इच्छा है, इसमें उस महात्मा की इच्छा सम्मिलित नहीं है । परन्तु किसी अल्लाह से भय करने वाले मोमिन तथा सुन्नत के पालन करने वाले से चमत्कार का प्रदर्शन हो अथवा न हो उसके वली होने में कोई सन्देह नहीं ।

[2]भय का सम्बन्ध भविष्य से है तथा दुख का भूतकाल से । अर्थ यह है कि यदि जीवन अल्लाह के भय में व्यतीत किया होता है । इसलिये क़ियामत की भयानकता का भय इतना उन्हें नहीं होगा जिस प्रकार दूसरों को होगा । बल्कि वे अपने ईमान तथा अल्लाह के भय के कारण अल्लाह की दया तथा विशेष कृपा के अभिलाषी तथा उसके साथ अच्छे विचार रखने वाले होंगे । इसी प्रकार दुनिया में वे जो कुछ छोड़ गये होंगे अथवा दुनिया के स्वाद उन्हें नहीं प्राप्त हुए होंगे उन पर उन्हें कोई दुख नहीं होगा । एक अन्य अर्थ यह भी है कि दुनिया में जो इच्छित वस्तु उन्हें नहीं मिली, उस पर वे

(६३) ये वे लोग हैं जो ईमान लाये तथा (पाप से) संयम बरतते हैं।

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६४) उनके लिए साँसारिक जीवन में भी[1] तथा परलोक में भी शुभ सूचना है, अल्लाह तआला की बातों में कुछ परिवर्तन नहीं हुआ करता। यह बड़ी सफलता है।

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾

(६५) तथा आपको उनकी बातें दुख में न डालें, सार्वभौमिक प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है।

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۭ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾

(६६) याद रखो कि जितना कुछ आकाशों में हैं तथा जितने धरती में हैं यह सब अल्लाह के ही हैं तथा जो लोग अल्लाह को छोड़कर अन्य साझीदारों को पुकारते हैं किस वस्तु का पालन कर रहे है। मात्र कल्पित विचारों का पालन कर रहे हैं तथा मात्र अनुमानित बातें कर रहे हैं।[2]

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ ۭ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَاۗءَ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾

दुख का प्रदर्शन नहीं करते, क्योंकि वह जानते हैं कि यह सब कुछ अल्लाह के निर्णय एवं भाग्य की देन है। जिससे उनके दिलों में दुख तथा मैल उत्पन्न नहीं होता, अपितु उनके दिल अल्लाह के निर्णय पर प्रसन्न तथा शान्त रहते हैं।

[1]दुनिया में शुभसूचना से तात्पर्य पुण्य के कार्य हैं अथवा वह शुभसूचना कि जो मृत्यु के समय फ़रिश्ते एक ईमानवाले को देते हैं, जैसाकि क़ुरआन तथा हदीस से सिद्ध है।

[2]अर्थात अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराना किसी तर्क के आधार पर नहीं। बल्कि एक वैचारिक मन्थन, तथा कल्पना एवं अनुमान की देन है। आज यदि मनुष्य अपनी बुद्धि तथा समझ को उचित रूप से प्रयोग करे तो नि:सन्देह उसपर यह स्पष्ट हो सकता है कि अल्लाह का कोई साझीदार नहीं। तथा जिस प्रकार वह आकाश तथा धरती को पैदा करने में अकेला है कोई उसका साझीदार नहीं, तो फिर इबादत में अन्य उसका साझीदार किस प्रकार हो सकते हैं ?

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी ताकि तुम उसमें विश्राम करो तथा दिन भी इस रूप से बनाया कि देखने भालने का साधन है, वस्तुत: इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِىُّ ؕ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) वे कहते हैं कि अल्लाह संतान रखता है। वह इससे पवित्र है! वह तो किसी का आश्रित नहीं।[1] उसी का स्वामित्व है, जो कुछ आकाशों में है तथा जो कुछ धरती में है।[2] तुम्हारे पास इस पर कोई प्रमाण नहीं। क्या अल्लाह पर ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम ज्ञान नहीं रखते।

---

[1]तथा जो सबसे निस्पृह हो, उसे सन्तान की भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि संतान तो सहारे के लिये होती है तथा जब उसे सहारे की आवश्यकता नहीं तो उसे सन्तान की क्या आवश्यकता?

[2]जब आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु उसी की है तो प्रत्येक उसके प्राधीन एवं दास हुए। फिर उसे सन्तान की क्या आवश्यकता? सन्तान की आवश्यकता उसे होती है, जिसे कुछ सहायता तथा सहारे की आवश्यकता हो। तथा जिसका आदेश आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु पर चलता हो, उसे क्या आवश्यकता उत्पन्न हो सकती है? इसके अतिरिक्त सन्तान की आवश्यकता की रुचि उसे होती है जो अपने पश्चात अपने स्वामित्व का उत्तराधिकारी बनाना चाहता हो। तथा अल्लाह तआला तो अनन्त है इसलिये अल्लाह के लिये सन्तान ठहराना इतना बड़ा अपराध है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۞ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴾

"इस बात से कि वे कहते हैं कृपालु की संतान है, निकट है कि आकाश फट जाये, धरती चिर जाये तथा पर्वत कण-कण हो जाये।"(सूर: *मरियम*-९०,९१)

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

(६९) (आप) कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोपण करते हैं[1] वे सफल न होंगे ।[2]

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) (यह) संसार में थोड़ा सा सुख है फिर हमारे पास उनको आना है फिर हम उनको उनके कुफ़्र (अविश्वास) के बदले कठोर दण्ड चखायेंगे ।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ

(७१) तथा आप उनको नूह की कथा पढ़कर सुनाइए जबकि उन्होंने अपने समुदाय से कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो यदि तुमको मेरा रहना तथा अल्लाह के आदेशों की शिक्षा देना भारी लगता है तो मेरा तो अल्लाह ही पर भरोसा है । तुम अपनी योजना अपने साथियों

---

[1] افـــتراء (इफ़्तरा) का अर्थ है झूठी बातें कहना । फिर उसको झूठ कहना बल देने के लिये है ।

[2] इससे स्पष्ट है कि सफलता से तात्पर्य परलोक की सफलता अर्थात अल्लाह के क्रोध तथा उसकी यातना से बचना है । मात्र दुनिया का अस्थाई सुख सफलता नहीं । जैसाकि बहुत से लोग अधर्मियों के अस्थाई सुख-सुविधा से त्रुटि तथा शंका एवं संदेह में पड़ जाते हैं । इसलिये अगली आयत में फ़रमाया : "ये दुनिया में थोड़ा सा सुख भोग लें फिर अन्त में हमारे ही पास आना है ।" अर्थात यह दुनिया का सुख परलोक के सुखों की अपेक्षा अत्यन्त तुच्छ है । इसके पश्चात उन्हें अत्यन्त कठोर यातना भोगना पड़ेगा । इसलिए इस बात को अच्छे प्रकार से समझ लेना चाहिये कि काफ़िरों, मूर्तिपूजकों तथा अल्लाह के अवज्ञाकारियों का साँसारिक सुख तथा वैभव इस बात का प्रमाण नहीं है कि ये समुदाय सफल हैं तथा अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न है, यह भौतिक सफलतायें उनके निरन्तर प्रयत्नों का परिणाम हैं, जो प्रत्यक्ष कारणों के अनुसार प्रत्येक उस समुदाय को प्राप्त हो सकता है जो साधनों को व्यवहार में लाते हुए उसी प्रकार परिश्रम करेगा, चाहे वह ईमानवाला हो अथवा काफ़िर । इसके अतिरिक्त यह अस्थाई सफलतायें अल्लाह के निर्धारित नियम तथा अवसर प्रदान करने का परिणाम भी हो सकता है । जिसका स्पष्टीकरण हम इससे पूर्व कई स्थानों पर कर चुके हैं ।

के साथ सुदृढ़ कर लो ।[1] फिर तुम्हारी योजना तुम्हारे लिए घूटन का कारण न होनी चाहिए ।[2] फिर मेरे साथ घटित कर दो तथा मुझे अवसर न दो ।

عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾

(७२) फिर भी यदि तुम मुख मोड़ते जाओ तो मैंने तुमसे कोई बदला तो नहीं माँगा,[3] मेरा बदला तो केवल अल्लाह ही देगा तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं मुसलमानों में से रहूँ ।[4]

فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾

(७३) तो वे लोग उनको झुठलाते रहे,[5] फिर हमने उनको तथा जो उनके साथ नाव में सवार थे उनको मुक्ति प्रदान किया तथा उनको

فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا

---

[1]अर्थात जिनको तुमने अल्लाह का साझीदार बना रखा है, उनकी सहायता भी प्राप्त कर लो । (यदि वे तुम्हारे विचार के अनुसार तुम्हारी सहायता कर सकते हैं)

[2] غُمَّةً का अन्य अर्थ है अस्पष्ट तथा छिपा हुआ होना । अर्थात मेरे विरूद्ध तुम्हारा प्रयत्न स्पष्ट तथा साफ़ होना चाहिए ।

[3]कि जिसके कारण तुम यह आरोप लगा सको कि नबूअत के दावे से उसका उद्देश्य धन-दौलत एकत्रित करना है ।

[4]आदरणीय नूह के इस कथन से भी ज्ञात हुआ कि सभी नबियों का धर्म इस्लाम ही रहा है यद्यपि धार्मिक नियम भिन्न-भिन्न तथा विधियाँ उनकी अलग रहीं । जैसाकि आयत सूरः *अल-मायदः*, ४८ से स्पष्ट है । ﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا﴾ [المائدة:٤٨] ' परन्तु धर्म सभी का इस्लाम था, देखिये *सूरः अल-बकरः*- १३१ तथा १३२, सूरः यूसुफ़-१०१, *सूरः अन्नम्ल-९१, सूरः यूनुस-८४, सूरः अल-आराफ़*-१२६, *सूरः नम्ल*-४४, *सूरः अल-मायदः*-४४,१११ एवं *सूरः अल-अनआम*-१६२ तथा १६३ ।

[5]अर्थात नूह के समुदाय वालों ने सभी प्रकार के शिक्षा एवं उपदेश के उपरान्त भी झुठलाने का मार्ग नहीं छोड़ा, अतः अल्लाह तआला ने आदरणीय नूह तथा उन पर ईमान लाने वालों को एक नाव में सवार कराके बचा लिया तथा शेष सभी को, यहाँ तक की आदरणीय नूह के एक पुत्र को भी डुबा दिया ।

ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا بِـَٔايَـٰتِنَا ۚ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَـٰقِبَةُ ٱلْمُنذَرِينَ ﴿٧٣﴾

उत्तराधिकारी बनाया[1] तथा जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो दिया। तो देखना चाहिए क्या परिणाम हुआ उन लोगों का जो डराये जा चुके थे।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَآءُوهُم بِٱلْبَيِّنَـٰتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِۦ مِن قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ ٱلْمُعْتَدِينَ ﴿٧٤﴾

(७४) फिर उनके (नूह) के पश्चात हमने अन्य रसूलों को उनके समुदाय की ओर भेजा, तो वे उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आये।[2] पर जिस चीज़ को उन्होंने प्रथम समय में झूठा कह दिया, यह न हुआ कि फिर उस पर ईमान ले आते।[3] हम इसी प्रकार सीमा उल्लघंन करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।[4]

---

[1]अर्थात धरती में उन बचने वालों को पूर्व के लोगों का उत्तराधिकारी बनाया। फिर मनुष्यों का आगामी वंश उन्हीं लोगों विशेष रूप से आदरणीय नूह के तीन पुत्रों से चला, इसीलिये आदरणीय नूह को दूसरा आदम (द्वितीय मनु) कहा जाता है।

[2]अर्थात ऐसे लक्षण तथा चमत्कार ले कर आये जो इस बात को प्रमाणित करते थे कि वास्तव में यह अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, जन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन तथा निर्देश देने के लिये भेजा है।

[3]परन्तु इन समुदायों ने रसूलों की बात नहीं मानीं, मात्र इसलिये कि जब पहले-पहल ये रसूल उनके पास आये तो तुरन्त बिना किसी विचार-विमर्श के उनको नकार दिया, यह पहली बार का इंकार उनके लिये स्थाई पर्दा बन गया। तथा वे यही सोचते रह गये कि हम तो पहले नकार चुके हैं, अब इसको स्वीकार करना क्यों ? परिणाम स्वरूप ईमान से वंचित रहे।

[4]अर्थात जिस प्रकार इन पूर्व के समुदायों पर उनके अविश्वास तथा झुठलाने के कारण मुहरें लगती रही हैं, उसी प्रकार भविष्य में भी जो समुदाय रसूलों को झुठलायेगा तथा अल्लाह की निशानियों को झुठलाने का मार्ग अपनायेगा, उनके दिलों पर भी सील लगती रहेगी तथा वे संमार्ग से उसी प्रकार वंचित रहेंगे जिस प्रकार पूर्व के समुदाय वंचित रहे।

(७५) फिर हमने उन (पैग़म्बरों) के पश्चात मूसा तथा हारून को फ़िरऔन[1] तथा उसके प्रमुखों के पास अपने चमत्कार देकर भेजा।[2] तो उन्होंने अभिमान किया तथा वे लोग अपराधी समुदाय थे।[3]

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنۢ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَٰرُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهِۦ بِـَٔايَٰتِنَا فَٱسْتَكْبَرُوا۟ وَكَانُوا۟ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾

(७६) फिर जब उनको हमारे पास से सत्य (प्रमाण) पहुँचा तो वे लोग कहने लगे कि निःसन्देह यह खुला जादू है।[4]

فَلَمَّا جَآءَهُمُ ٱلْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوٓا۟ إِنَّ هَٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٦﴾

(७७) मूसा ने कहा कि क्या तुम इस सत्य के सम्बन्ध में जबकि वह तुम्हारे पास आ पहुँचा है, ऐसी बात कहते हो, क्या यह जादू है, जब कि जादूगर सफल नहीं होते ?[5]

قَالَ مُوسَىٰٓ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَٰذَا وَلَا يُفْلِحُ ٱلسَّٰحِرُونَ ﴿٧٧﴾

---

[1]रसूलों का सामान्य वर्णन करने के पश्चात आदरणीय मूसा तथा हारून का वर्णन किया जा रहा है, यद्यपि रसूलों के मध्य वह भी आ जाते हैं, परन्तु उनकी गणना गणमान्य रसूलों में होती है, इसलिये विशेषरूप से उनका अलग वर्णन किया।

[2]आदरणीय मूसा के ये चमत्कार विशेष रूप से नौ दिव्य निशानियाँ, जिनका वर्णन अल्लाह ने सूर: *बनी इस्राईल* आयत १०१ में किया है, प्रसिद्ध हैं।

[3]अर्थात वे चूँकि बड़े-बड़े अपराध तथा पापों में लीन थे, इसलिये उन्होंने अल्लाह के भेजे हुए रसूलों को भी झुठलाया। क्योंकि एक पाप दूसरे पाप का साध्य बनता है। तथा पापों का निरंतर करते जाना बड़े-बड़े पापों को करने का दुस्साहस उत्पन्न कर देता है।

[4]जब अस्वीकार करने के लिये उचित तर्क अथवा प्रमाण नहीं मिलता, तो उससे छुटकारा प्राप्त करने के लिये कह देते हैं कि यह जादू है।

[5]आदरणीय मूसा ने कहा कि तनिक विचार तो करो। सत्य के आमन्त्रण तथा उचित बात को तुम लोग जादू कहते हो, भला यह जादू है ? जादूगर तो सफल ही नहीं होते। अर्थात इच्छित उद्देश्य प्राप्त करने तथा अप्रिय परिणाम से बचने में वे असफल ही रहते हैं। तथा मैं तो अल्लाह का रसूल हूँ, मुझे अल्लाह की सहायता प्राप्त है तथा उसकी ओर से मुझे चमत्कार तथा दिव्य निशानियाँ प्रदान की गयी हैं, मुझे जादू तथा जादूगरी

قَالُوٓا۟ أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ ءَابَآءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا ٱلْكِبْرِيَآءُ فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾

(७८) वह लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हमको उस मार्ग से हटा दो जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया है, तथा तुम दोनों को दुनिया में बड़ापन मिल जाये,[1] तथा हम तुम दोनों को कभी नहीं मानेंगे।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ٱئْتُونِى بِكُلِّ سَٰحِرٍ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾

(७९) तथा फ़िरऔन ने कहा कि मेरे पास सभी दक्ष जादूगरों को लाओ।

فَلَمَّا جَآءَ ٱلسَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰٓ أَلْقُوا۟ مَآ أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٨٠﴾

(८०) फिर जब जादूगर आये तो मूसा ने उनसे कहा कि डालो जो कुछ तुम डालने वाले है।

فَلَمَّآ أَلْقَوْا۟ قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهِ ٱلسِّحْرُ إِنَّ ٱللَّهَ سَيُبْطِلُهُۥٓ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾

(८१) तो जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा कि यह जो कुछ तुम लाये हो जादू है। निश्चित बात है कि अल्लाह इसको अभी नष्ट किये देता है,[2] अल्लाह ऐसे भ्रष्टाचारियों का कार्य

की क्या आवश्यकता है ? तथा अल्लाह के प्रदान किये हुए चमत्कार के समक्ष इसका क्या स्थान है ?

[1]यह न मानने वालों के अन्य कुतर्क हैं, जो तर्क से विवश हो कर प्रस्तुत करते हैं। एक यह कि तुम हमें हमारे पूर्वजों के मार्ग से हटाना चाहते हो, दूसरे यह कि हमें मान-मर्यादा तथा राज्य प्राप्त है, उसे छीनकर स्वयं अधिकार करना चाहते हो। इसलिये हम तो कभी भी तुम पर ईमान नहीं लायेंगे। अर्थात पूर्वजों का अनुकरण तथा सांसारिक राज्य एवं मान-मर्यादा ने उन्हें ईमान लाने से रोके रखा। उसके पश्चात आगे वही कथा है कि फ़िरऔन ने दक्ष जादूगरों को बुलाया तथा आदरणीय मूसा एवं जादूगरों का मुकाबला हुआ, जिस प्रकार सूर: *आराफ़* में गुज़रा तथा सूर: *ताहा* में भी इसका कुछ विवरण आयेगा।

[2]अत: ऐसा ही हुआ। भला झूठ भी सत्य के सामने सफल हो सकता है ? जादूगरों ने, चाहे वह अपने कला में कितने ही दक्ष थे, जो कुछ प्रस्तुत किया वह जादू ही था तथा नज़रबन्दी की कला ही थी तथा जब आदरणीय मूसा ने अल्लाह के आदेश पर छड़ी फेंकी तो उसने सारे जादूगरों की जादूगरी को एक क्षण में समाप्त कर दिया।

बनने नहीं देता ।[1]

(८२) तथा अल्लाह तआला सत्य प्रमाण को अपने कथनानुसार स्पष्ट[2] कर देता है, चाहे अपराधी को कितना ही बुरा लगे ।

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८३) फिर मूसा पर उनके समुदाय वालों में से केवल कुछ ही ईमान लाये,[3] वह भी फ़िरऔन तथा अपने अधिकारियों से डरते-डरते कि कहीं उनको दुख न पहुँचाये, [4] तथा वास्तव

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ۭ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ

---

[1]तथा यह जादूगर भी भ्रष्टाचारी थे। जिन्होंने मात्र धन कमाने के लिये यह कला सीख रखी थी तथा जादू की कला दिखाकर लोगों को मूर्ख बनाते थे, अल्लाह तआला उनके इस भ्रष्टाचारों को किस प्रकार सुसज्जित बना सकता था ?

[2]अथवा कथन से तात्पर्य वह तर्क तथा युक्तियाँ हैं, जो अल्लाह तआला अपनी किताबों में उतारता रहा है, जो पैग़म्बरों को उसने प्रदान किया था। अथवा वे चमत्कार हैं, जो अल्लाह तआला के आदेश से नबियों के हाथों प्रदर्शित हुए अथवा अल्लाह का वह आदेश है जो शब्द كُنْ (कुन) द्वारा करता है।

[3] قومه के अक्षर ـه के सम्बन्ध में व्याख्याकारों में मतभेद है। कुछ ने इसे आदरणीय मूसा की ओर संकेत किया है क्योंकि आयत में सर्वनाम से पूर्व उन्हीं का नाम (वर्णन) आया है। अर्थात मूसा के समुदाय से थोड़े से लोग ईमान लाये। परन्तु इमाम इब्ने कसीर आदि ने इसका संकेत फ़िरऔन की ओर किया है अर्थात फ़िरऔन के समुदाय में से थोड़े से लोग ईमान लाये। उनका तर्क यह है कि इस्राईल की सन्तान के लोग तो एक रसूल तथा छुटकारा दिलाने वाले की प्रतीक्षा में थे जो आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम के रूप में उन्हें मिल गये तथा इस आधार पर इस्राईल का वंश (सिवाय कारून के) उन पर ईमान रखते थे। इसलिये उचित बात यही है कि ﴿ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ﴾ से तात्पर्य फ़िरऔन के समुदाय से थोड़े से लोग हैं, जो आदरणीय मूसा पर ईमान लाये। उन्हीं में से उनकी पत्नी (आदरणीया) आसिया भी हैं।

[4]कुरआन करीम की यह व्याख्या भी इस बात की द्योतक है कि ईमान लाने वाले थोड़े से लोग फ़िरऔन के समुदाय में से थे, क्योंकि उन्हीं को फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों तथा अधिकारियों से कष्ट पहुँचाये जाने का भय था, इस्राईल की संतान वैसे फ़िरऔन की दासता तथा अधीनता का अपमान एक लम्बे समय से सहन कर रहे थे।

لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾

में फ़िरऔन उस देश में उच्च (शक्तिवाला) था, तथा यह भी बात थी कि वह सीमा से बाहर हो जाता था।[1]

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِن كُنتُمْ آمَنتُم بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा मूसा ने कहा, हे मेरे समुदाय के लोगो ! यदि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, यदि तुम मुसलमान (आज्ञापालक) हो।[2]

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾

(८५) तो उन्होंने कहा कि हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया। हे हमारे प्रभु ! हमको इन अत्याचारी समुदाय का भोगी न बना।

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾

(८६) तथा हमको अपनी कृपा से इन काफ़िर लोगों से मुक्ति प्रदान कर।[3]

परन्तु मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, न उन्हें इसके कारण से अधिक कष्ट का भय था।

[1]तथा ईमानवाले उस के उसी अत्याचार तथा क्रूरता के व्यवहार से भयभीत थे।

[2]इस्राईल की संतान फ़िरऔन की ओर से जिस अनादर एवं अपमान का शिकार थी आदरणीय मूसा के आने के पश्चात भी उसमें कमी नहीं आयी, इसलिये वे अधिक परेशान थे, अपितु आदरणीय मूसा से उन्होंने यहाँ तक कह दिया, ऐ मूसा ! जिस प्रकार तेरे आने से पूर्व हम फ़िरऔन तथा उसके समुदाय की ओर से ढाये जा रहे दुखों में पड़े थे, तेरे आने के पश्चात भी हमारा यही हाल है जिस पर आदरणीय मूसा ने उन्हें उत्तर दिया कि आशा है कि मेरा प्रभु शीघ्र ही तुम्हारे शत्रु को नष्ट कर देगा। परन्तु उसके लिये आवश्यक है कि तुम केवल एक अल्लाह से सहायता चाहो तथा धैर्य का दामन न छोड़ो। (देखिये *सूर: अल-आराफ़*, आयत १२८ तथा १२९) यहाँ भी आदरणीय मूसा ने उन्हें बलपूर्वक कहा कि यदि तुम अल्लाह के सच्चे आज्ञाकारी हो, तो उसी पर भरोसा करो।

[3]अल्लाह पर भरोसा करने के साथ-साथ उन्होंने अल्लाह के दरबार में प्रार्थनायें भी कीं। तथा अवश्य ईमानवालों के लिये यह एक बहुत बड़ा हथियार भी है तथा सहारा भी।

(८७) तथा हमनें मूसा तथा उनके भाई की ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि तुम दोनों अपने इन लोगों के लिए मिस्र में घर स्थापित रखो तथा तुम सब उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने का स्थान निर्धारित कर लो ।[1] तथा निरन्तर नमाज़ पढ़ो तथा आप ईमानवालों को शुभ सूचना दे दें ।

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَن تَبَوَّآ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا وَٱجْعَلُوا۟ بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ ۗ وَبَشِّرِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾

(८८) तथा मूसा ने विनती की हे मेरे प्रभु ! तूने फ़िरऔन तथा उसके पदाधिकारियों को शोभा तथा प्रत्येक प्रकार के धन सांसारिक जीवन में प्रदान किये । हे हमारे प्रभु ! (इसलिए प्रदान किये हैं) कि वे तेरे मार्ग से भटकावें । हे हमारे प्रभु ! उनके धनों को ध्वस्त कर दे तथा उनके दिलों को कठोर कर दे,[2] ताकि यह ईमान न लाने पायें यहाँ तक कि दुखदायी यातनाओं को देख लें ।[3]

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَآ إِنَّكَ ءَاتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهُۥ زِينَةً وَأَمْوَٰلًا فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ رَبَّنَا لِيُضِلُّوا۟ عَن سَبِيلِكَ ۖ رَبَّنَا ٱطْمِسْ عَلَىٰٓ أَمْوَٰلِهِمْ وَٱشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا۟ حَتَّىٰ يَرَوُا۟ ٱلْعَذَابَ ٱلْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾

---

[1]इसका अर्थ यह है कि अपने घरों को ही मस्जिदें बना लो तथा उनके मुख अपने क़िबले (बैतुल मुक़द्दस) की ओर कर लो ताकि तुम्हें इबादत करने के लिये चर्च आदि में जाने की आवश्यकता ही न रहे, जहाँ तुम्हें फ़िरऔन के कर्मचारियों के अत्याचार एवं क्रूरता का भय रहता है ।

[2]जब मूसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि फ़िरऔन तथा उसके समुदाय पर शिक्षा एवं उपदेश का भी कोई प्रभाव नहीं हुआ तथा इस प्रकार के चमत्कार देखकर भी उनके अंदर कोई परिवर्तन नहीं आया, तो फिर उनको शाप दिया, जिसे अल्लाह तआला ने वर्णित किया है ।

[3]अर्थात यदि वे ईमान लायें भी तो प्रकोप देखकर ही ईमान लायें जो उनके लिये लाभकारी न होगा । यहाँ मस्तिष्क में यह शंका नहीं उत्पन्न होनी चाहिये कि पैग़म्बर तो मार्गदर्शन के लिये प्रार्थना करते हैं न कि नष्ट हो जाने का श्राप । इसलिये कि आमंत्रण तथा चेतावनी तथा हर प्रकार के साधन के प्रयोग कर लेने के पश्चात यह

(८९) (अल्लाह तआला ने) कहा कि तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी तुम सीधे मार्ग पर रहो ।[1] तथा उन लोगों के मार्ग पर न चलना जो अज्ञानी है ।[2]

قَالَ قَدْ أُجِيبَت دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعَآنِّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

(९०) तथा हमने इस्राइल की सन्तान को समुद्र से पार कर दिया ।[3] फिर उनके पीछे-पीछे फ़िरऔन अपनी सेना के साथ अत्याचार तथा क्रूरता के उद्देश्य से चला, यहाँ तक कि

وَجَٰوَزْنَا بِبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُۥ بَغْيًا وَعَدْوًا ۖ حَتَّىٰٓ إِذَآ أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ

स्पष्ट हो जाये कि अब ईमान लाने की कोई आशा शेष नहीं रही है, तो फिर अन्तिम उपाय यही रह जाता है कि इस समुदाय का मामला अल्लाह को अर्पित कर दिया जाये । यह जैसे अल्लाह की इच्छा ही होती है जो पैग़म्बर के मुख से अकस्मात् निकल जाती है । जिस प्रकार आदरणीय नूह ने भी साढ़े नौ सौ वर्ष चेतावनी देने के पश्चात अन्ततः अपने समुदाय को श्राप ही दिया ।

﴿ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى ٱلْأَرْضِ مِنَ ٱلْكَٰفِرِينَ دَيَّارًا ﴾

"हे प्रभु ! धरती पर एक भी काफ़िर को बसा न रहने दे ।" (सूरः नूह-२६)

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि अपने श्राप पर स्थिर रहना, चाहे उसके प्रदर्शित होने में देर हो जाये । क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना अवश्य स्वीकार कर ली गयी है परन्तु उसको कार्यान्वयन हम कब करेंगे यह मात्र हमारी इच्छा तथा योजनाओं पर आधारित है । अतः कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि इस श्राप के चालीस वर्ष पश्चात फ़िरऔन तथा उसका समुदाय नष्ट किया गया तथा श्राप के अनुसार जब फ़िरऔन डूबने लगा, उस समय उसने ईमान लाने की घोषणा की, जिसका उसे कोई लाभ नहीं हुआ । दूसरा अर्थ उसका यह है कि तुम अपने प्रचार तथा इस्राईल के वंश को मार्ग दर्शाने तथा सीधा मार्ग दिखाने एवं उनको फ़िरऔन की दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न जारी रखो ।

[2]अर्थात जो लोग अल्लाह के व्यवहार, उसके नियम, तथा उसके हितों व भेदों को नहीं जानते, तुम उनकी तरह न होना, अपितु अब प्रतीक्षा तथा धैर्य करो, अल्लाह तआला अपने ज्ञान तथा योजनानुसार शीघ्र अथवा देर से अवश्य अपना वायदा पूरा करेगा । क्योंकि वह वायदा के विरूद्ध नहीं करता ।

[3]अर्थात समुद्र को फाड़कर मार्ग बना दिया (जिस प्रकार *सूरः अल-बकरः* आयत ५० में गुज़रा तथा अन्य विवरण *सूरः शोअरा* में आयेगा) तथा तुम्हें एक किनारे से दूसरे किनारे पर पहुँचा दिया ।

जब डूबने लगा,[1] तो कहने लगा, मैं ईमान लाता हूँ कि जिस पर इस्राईल की सन्तान ईमान लायी हैं, कोई उसके सिवाय पूजने योग्य नहीं तथा मैं मुसलमानों में से हूँ।

قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۰﴾

(९१) (उत्तर दिया गया कि) अब ईमान लाता है ? तथा पहले अवज्ञा करता रहा तथा भ्रष्टाचारियों में सम्मिलित रहा।[2]

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَیْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۹۱﴾

(९२) तो आज हम तेरे शव को छोड़ देंगे ताकि तू उन लोगों के लिए शिक्षा का चिन्ह हो जाये जो तेरे पश्चात हैं।[3] तथा वस्तुत: अधिकाँश लोग हमारे प्रमाण-चिन्हों से विमुख हैं।

فَالْیَوْمَ نُنَجِّیْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰیَةً ؕ وَ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰیٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۲﴾

(९३) तथा हमने इस्राईल की सन्तान को अति उत्तम रहने का ठिकाना दिया तथा हमने उन्हें स्वादिष्ट वस्तुऐं भोजन के लिए प्रदान कीं तो उन्होंने मतभेद नहीं किया यहाँ तक कि उनके

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰی

---

[1]अर्थात अल्लाह के आदेश पर चमत्कारिक रूप से बने हुए जलीय मार्ग पर, जिस पर चलकर मूसा तथा उसके समुदाय ने समुद्र पार किया था, फ़िरऔन तथा उसकी सेना भी समुद्र पार करने के विचार से चलना प्रारम्भ किया। उद्देश्य यह था कि मूसा इस्राईल की संतान को, जो मेरी दासता से स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से रातों-रात ले आया, तो उसे पुन: बन्दी बना लिया जाये। जब फ़िरऔन तथा उसकी सेना उस समुद्र मार्ग में प्रवेश कर गया, तो अल्लाह ने समुद्र को पूर्व की भाँति बहने का आदेश दे दिया। परिणाम स्वरूप फ़िरऔन सहित सब के सब समुद्र में डूब गये।

[2]अल्लाह की ओर से उत्तर दिया गया कि अब ईमान का कोई लाभ नहीं होगा क्योंकि जब ईमान लाने का समय था, उस समय तो अवहेलना, अवज्ञाकारी तथा भ्रष्टाचार में लिप्त रहे।

[3]जब फ़िरऔन डूब गया तो उसकी मृत्यु का बहुत से लोगों को विश्वास नहीं आता था। अल्लाह तआला ने समुद्र को आदेश दिया, उसने उसकी लाश किनारे पर फेंक दिया, जिसको फिर सबने देखा। प्रसिद्ध है कि आज भी यह लाश मिस्र के अजायबघर में सुरक्षित है। والله أعلم بالصواب

جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾

पास ज्ञान पहुँच गया।[1] निश्चित बात है कि आपका प्रभु उनके मध्य क़ियामत के दिन उन बातों में निर्णय कर देगा जिन बातों में वे मतभेद करते थे।

فَإِنْ كُنْتَ فِىْ شَكٍّ مِّمَّآ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) फिर यदि आप उसकी ओर से शंका में हों जिसको हमने आप की ओर भेजा है, तो आप उन लोगों से पूछिए, जो आप से पूर्व की किताबों को पढ़ते हैं। निःसन्देह आप के पास आप के प्रभु की ओर से सच्ची किताब आयी है। आप कदापि सन्देह करनें वालों में से न हों।[2]

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾

(९५) तथा न उन लोगों में से हों, जिन्होंने अल्लाह (तआला) की आयतों को झुठलाया, तो आप घाटे पाने वालों में से हो जायें।[3]

---

[1]अर्थात एक तो अल्लाह की कृतज्ञता करने के बजाय, आपस में मतभेद प्रारम्भ कर दिया, फिर यह मतभेद भी अज्ञानता तथा मूर्खता के कारण नहीं किया, अपितु ज्ञान आ जाने के पश्चात किया। जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यह मतभेद मात्र बैर तथा घमंड के आधार पर था।

[2]यह सम्बोधन या तो जन सामान्य के लिये है अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम से मुसलमानों को शिक्षा दी जा रही है। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह्यी (प्रकाशना) के विषय में संदेह हो ही नहीं सकता था। "जो किताब पढ़ते हैं, उनसे पूछ लें" का अर्थ है कि क़ुरआन मजीद से पूर्व की आकाशीय पुस्तकें (तौरात तथा इंजील आदि)। अर्थात जिन के पास यह किताबें उपलब्ध हैं, उनसे इस क़ुरआन के विषय में ज्ञात करें क्योंकि उनमें इसका लक्षण तथा अन्तिम पैग़म्बर (ईशदूत) के गुणों का वर्णन किया गया है।

[3]यह भी वास्तव में मुसलमानों को ही समझाया जा रहा है कि झुठलाने का मार्ग हानि तथा विनाश का मार्ग है।

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾

(९६) नि:सन्देह जिन लोगों के विषय में आप के प्रभु की बातें सिद्ध हो चुकी हैं, वे ईमान न लायेंगे।

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾

(९७) चाहे उसके पास सभी तर्क पहुँच जायें, जब तक वे दुखदायी यातना को न देख लें।[1]

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ

(९८) अत: कोई बस्ती ईमान नहीं लायी कि ईमान लाना उनके लिए लाभकारी होता, सिवाय यूनुस के समुदाय के।[2] जब वे ईमान ले आये,

---

[1]ये वही लोग हैं जो अधर्म तथा अल्लाह की अवज्ञा में इतने डूब चुके होते हैं कि उन पर किसी शिक्षा-दीक्षा का प्रभाव नहीं पड़ता, तथा कोई तर्क उनके लिये प्रभावी नहीं होता। इसीलिये कि अवहेलना तथा अवज्ञाकारिता के कारण सत्य को स्वीकार करने के प्राकृतिक गुण तथा विशेषता को वे समाप्त कर चुके होते हैं, उनकी आँखें यदि खुलती हैं तो उस समय जब अल्लाह का प्रकोप उनके सिर पर आ जाता है, तब वह ईमान अल्लाह के दरबार में स्वीकार नहीं होता।

﴿ فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ﴾

"जब वे हमारा प्रकोप देख चुके (उस समय) उनके ईमान ने उन्हें कोई लाभ नहीं दिया।"(*सूर: अल-मोमिन, ८५*)

[2] لَوْلَا यह उत्तेजित के लिये هَلَّا के अर्थ में है, अर्थात जिन बस्तियों को हमने विनाश किया, उनमें से कोई एक बस्ती ऐसी क्यों न हुई, जो ऐसा ईमान लाती जो उनके लिये लाभकारी होता। हाँ, केवल यूनुस का समुदाय ऐसा हुआ है कि जब वह ईमान ले आयी तो अल्लाह ने उससे प्रकोप दूर कर दिया। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि जब यूनुस अलैहिस्सलाम ने देखा कि उनकी चेतावनी तथा धार्मिक शिक्षा का प्रभाव उनके समुदाय पर नहीं हो रहा है, तो उन्होंने अपने समुदाय में घोषणा कर दी कि अमुक-अमुक दिन तुम पर प्रकोप आ जायेगा तथा स्वयं वहाँ से निकल गये। जब प्रकोप मेघ के रूप में उन पर उमड आया तो वह बच्चे, स्त्रियाँ यहाँ तक कि पशुओं को लेकर एक मैदान में एकत्रित हो गये तथा अल्लाह के दरबार में विनम्र विनती, तौबा, क्षमा-याचना प्रारम्भ कर दिया। अल्लाह तआला ने उनकी तौबा स्वीकार करके उनके ऊपर से प्रकोप टाल दिया। आदरणीय यूनुस आने-जाने वाले यात्रियों से अपने समुदाय का समाचार पूछते रहते थे, उन्हें जब पता चला कि अल्लाह तआला ने उनके समुदाय के ऊपर से प्रकोप टाल दिया है, तो उन्हें अपने झुठलाने के पश्चात अपने उस समुदाय में वापस जाना अच्छा नहीं लगा, बल्कि उनसे अप्रसन्न होकर किसी अन्य

لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

तो हमने अपमान की यातना साँसारिक जीवन में उनसे हटा दी तथा उनको एक (निश्चित) समय तक सुख भोगने (का अवसर) दिया।[1]

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِى الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

(९९) यदि आप का प्रभु चाहता तो समस्त धरती के सभी लोग ईमान ले आते,[2] तो क्या आप लोगों को बाध्य कर सकते हैं यहाँ तक कि वह मोमिन ही हो जायें ?

ओर चल दिये, जिस पर वह नाव की घटना घटित हुई (जिसका विस्तृत वर्णन अपने स्थान पर आयेगा)। (फ़तहुल क़दीर) परन्तु व्याख्याकारों का इस बात के मध्य मतभेद है कि यूनुस का समुदाय ईमान कब लाया ? प्रकोप देख कर लाया, जबकि ईमान लाना लाभकारी नहीं होता। परन्तु अल्लाह तआला ने उसे अपने इस नियम से अलग करके उस के ईमान को स्वीकार कर लिया। अथवा अभी प्रकोप नहीं आया था अर्थात वह अवस्था नहीं आयी थी कि जब ईमान लाना लाभकारी नहीं होता, परन्तु क़ुरआन करीम ने यूनुस के समुदाय को اِلَّا के शब्द के साथ जो अलग किया है वह प्रथम व्याख्या की पुष्टि करता है।

[1]क़ुरआन ने साँसारिक प्रकोप को हटाने का वर्णन तो किया है, परलोक की यातना के विषय में कोई वर्णन नहीं किया, इसलिये कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि उनसे परलोक की यातना समाप्त नहीं की गयी। परन्तु जब क़ुरआन ने यह स्पष्ट कर दिया कि साँसारिक प्रकोप ईमान लाने के कारण टाला गया था, तो फिर परलोक की यातना का वर्णन करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती है। क्योंकि परलोक की यातना का निर्णय ईमान तथा ईमान न होने के आधार पर ही होना है। यदि ईमान लाने के पश्चात यूनुस का समुदाय अपने ईमान पर स्थिर रहा होगा (जिसका वर्णन यहाँ नहीं है) तो निःसंदेह वह परलोक की यातना से सुरक्षित रहेंगे। परन्तु अन्य परिस्थिति में प्रकोप से सुरक्षा केवल दुनिया की सीमा तक होगी।

[2]परन्तु अल्लाह ने ऐसा नहीं चाहा, क्योंकि यह उसकी योजना तथा इच्छा के विपरीत है, जिसको पूर्णरूप से वही जानता है। यह इसलिये फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीव्र इच्छा होती थी कि सब मुसलमान हो जायें, अल्लाह तआला ने फ़रमाया : यह नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह की इच्छा सर्वोच्च ज्ञान तथा श्रेष्ठतम रहस्य पर आधारित है, उसकी यह माँग नहीं। इसलिये आगे फ़रमाया कि आप लोगों को बलपूर्वक ईमान लाने पर कैसे बाध्य कर सकते हैं ? जबकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)के अन्दर न इसकी शक्ति है न उसके आप उत्तरदायी हैं।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾

(१००) यद्यपि किसी का ईमान लाना अल्लाह की आज्ञा के बिना सम्भव नहीं। तथा अल्लाह (तआला) निर्बोध लोगों पर अशुद्धि थोप देता है।[1]

قُلِ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي الْآيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾

(१०१) आप कह दीजिए कि तुम विचार करो कि क्या-क्या वस्तुऐं आकाशों तथा धरती में हैं तथा जो लोग ईमान नहीं लाते उनको तर्क तथा चेतावनी कोई लाभ नहीं पहुँचाते।

فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तो क्या वे लोग केवल उन लोगों की सी घटनाओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो उनसे पूर्व गुजर चुके हैं, (आप) कह दीजिए कि ठीक है तो तुम प्रतीक्षा में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ।[2]

ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

(१०३) फिर हम अपने पैग़म्बरों को तथा ईमानवालों को बचा लेते थे, इसी प्रकार हमारे अधिकार में है कि हम ईमान वालों को छुटकारा दिया करते हैं।

---

[1]अशुद्धता से तात्पर्य यातना अथवा कुफ़्र (अविश्वास) है। अर्थात जो लोग अल्लाह की निशानियों पर विचार नहीं करते, वे कुफ़्र (अधर्म) में ही लिप्त रहते हैं तथा इस प्रकार यातना के अधिकारी हो जाते हैं।

[2]अर्थात जिन लोगों पर किसी तर्क तथा चेतावनी का प्रभाव नहीं होता, इसलिये वे ईमान नहीं लाते। क्या इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि उनके साथ भी वही इतिहास की पुनरावृत्ति की जाये, जो उनसे पूर्व के समुदायों पर गुज़र चुका है। अर्थात ईमानवालों को बचाकर (जैसाकि अगली आयत में स्पष्टीकरण है) शेष सभी को नष्ट कर दिया जाता था। यदि इस बात की प्रतीक्षा है तो ठीक है, तुम भी प्रतीक्षा करो, मैं भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِن كُنتُمْ فِى شَكٍّ مِّن دِينِى فَلَآ أَعْبُدُ ٱلَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَلَٰكِنْ أَعْبُدُ ٱللَّهَ ٱلَّذِى يَتَوَفَّىٰكُمْ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٤﴾

(१०४) (आप) कह दीजिए[1] कि ऐ लोगो! यदि तुम मेरे धर्म की ओर से शंका में हो, तो मैं उन देवताओं की उपासना नहीं करता, जिनकी तुम अल्लाह को छोड़कर पूजा करते हो।[2] परन्तु हाँ, उस अल्लाह की इबादत करता हूँ, जो तुम्हारे प्राण निकालता है।[3] तथा मुझको आदेश हुआ है कि मैं ईमानवालों में से हूँ।

وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٥﴾

(१०५) तथा यह कि एकाग्र होकर अपना चेहरा इस धर्म की ओर[4] कर लेना तथा कभी मूर्तिपूजकों में से न बनना।

وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِن فَعَلْتَ

(१०६) तथा अल्लाह को छोड़कर कभी ऐसी चीज़ की इबादत न करना, जो तुझको न कोई लाभ पहुँचा सके तथा न कोई हानि पहुँचा

---

[1]इस आयत में अल्लाह तआला अपने अन्तिम पैग़म्बर परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदेश दे रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन सामान्य पर स्पष्ट कर दें कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग तथा मूर्तिपूजकों के मार्ग एक-दूसरे से भिन्न है।

[2]अर्थात यदि तुम मेरे धर्म के विषय में सन्देह करते हो जिसमें मात्र एक अल्लाह की इबादत है तथा यही धर्म सत्य है, न कि अन्य कोई, तो याद रखो कि मैं कभी भी इन देवताओं की किसी भी अवस्था में पूजा नहीं करूँगा, जिसकी तुम करते हो।

[3]अर्थात जीवन-मृत्यु उसी के हाथ में है, इसलिये जब वह चाहे तुम्हें मार सकता है क्योंकि मनुष्यों के प्राण उसी के हाथ में हैं।

[4]हनीफ़ का अर्थ है एकाग्रता, अर्थात प्रत्येक अन्य धर्म छोड़कर केवल इस्लाम धर्म धारण करना तथा प्रत्येक ओर से मुँह मोड़कर केवल एक अल्लाह की ओर एकाग्रता से आकर्षित होना। सबसे विच्छेद एवं अल्लाह से सम्बंध रखना।

सके । फिर यदि ऐसा किया, तो तुम उस अवस्था में अत्याचारियों में से हो जाओगे ।[1]

فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّٰلِمِينَ ۝١٠٦

(१०७) तथा यदि तुमको अल्लाह कोई दुख पहुँचाये तो सिवाय उसके कोई अन्य उसको दूर करने वाला नहीं है तथा यदि वह तुम्हें कोई सुख पहुँचाना चाहे, तो उसकी कृपा को कोई हटाने वाला नहीं,[2] वह अपनी कृपा अपने भक्तों में से जिस पर चाहे विस्तार कर दे तथा वह अति कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है ।

وَإِن يَمْسَسْكَ ٱللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهِۦ ۚ يُصِيبُ بِهِۦ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۚ وَهُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ۝١٠٧

(१०८) (आप) कह दीजिए ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की ओर से सत्य पहुँच चुका है ।[3] इसलिए जो व्यक्ति सीधे मार्ग पर आ जाये, तो वह अपने लिए सीधे मार्ग पर

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنِ ٱهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِى لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ

[1]अर्थात यदि अल्लाह को छोड़कर ऐसे देवताओं को आप पुकारेंगे जो किसी को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का सामर्थ्य नहीं रखते, तो यह अत्याचार होगा । अत्याचार का अर्थ है وَضْعُ الشيء في غير محله किसी वस्तु को उसके मूल स्थान से हटाकर किसी अन्य स्थान पर रख देना । इबादत चूँकि केवल उस अल्लाह का अधिकार है, जिसने सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया है तथा जीवन के सभी साधन वही उपलब्ध कराता है, तो इस इबादत के अधिकारी शक्ति को छोड़कर किसी अन्य की पूजा-उपासना करना, जैसाकि इबादत का अत्यधिक त्रुटिपूर्ण प्रयोग है । इसलिये शिर्क को घोर अत्याचार कहा गया है । यहाँ भी यद्यपि सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है, परन्तु वास्तविक संबोधन मानव जाति तथा मुसलमानों को है ।

[2]पुण्य को यहाँ कृपा से इसलिये वर्णन किया गया है कि अल्लाह तआला अपने भक्तों के साथ जो भलाई का मामला करता है, कर्मों के आधार पर यद्यपि भक्त उसके अधिकारी नहीं होते, परन्तु यह मात्र उसकी कृपा है कि वह कर्मों की अनदेखी करते हुए मनुष्यों पर कृपा तथा दया करता है ।

[3]सत्य से तात्पर्य इस्लाम धर्म तथा कुरआन है, जिसमें अल्लाह के एक होने तथा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना अनिवार्य है ।

فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ﴿١٠٨﴾

आयेगा,[1] तथा जो व्यक्ति मार्ग से भटक गया, तो उसका भटकना उसी पर पड़ेगा ।[2] तथा मैं तुम पर प्रभारी नहीं बनाया गया ।[3]

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) तथा आप उसका पालन करते रहिएजो कुछ वह्यी (आदेश) आपके पास भेजी जाती है तथा धैर्य रखिए,[4] यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे तथा वह सभी निर्णायकों से श्रेष्ठ निर्णायक है ।[5]

---

[1]अर्थात इस का लाभ उसी को होगा जो क़ियामत के दिन अल्लाह की यातना से बच जायेगा ।

[2]अर्थात उसकी हानि तथा दण्ड उसी पर पड़ेगा जो प्रलय के दिन नरक की आग में जलेगा अर्थात यदि कोई संमार्ग अपनायेगा, तो उससे ऐसा नहीं कि अल्लाह की शक्ति बढ़ जायेगी, तथा यदि कोई इंकार तथा भटकाव का मार्ग अपनायेगा, तो उससे अल्लाह के राज्य तथा शक्ति में अंतर हो जाये । अर्थात ईमान तथा सत्य का प्रलोभन तथा अधर्म एवं गुमराही से बचने पर बल देना दोनों ही का उद्देश्य मानव जाति की भलाई तथा हित है, इस में अल्लाह का अपना कोई स्वार्थ नहीं है ।

[3]अर्थात मेरा दायित्व यह नहीं कि तुम्हें मुसलमान बना दूँ अपितु मैं तो केवल भासक, शुभसूचक, तथा प्रचारक एवं निवेदक हूँ । मेरा कार्य केवल ईमानवालों को शुभसूचना देना, अवज्ञाकारियों को अल्लाह की उस पकड़ से डराना तथा अल्लाह के आदेश की ओर आमन्त्रित करके सचेत करना है । कोई इस आमन्त्रण को स्वीकार करके ईमान लाता है तो ठीक है, कोई नहीं स्वीकार करता तो मैं उसका उत्तरदायी नहीं हूँ कि बलपूर्वक करा के छोड़ूँ ।

[4]अल्लाह तआला जिस चीज़ की वह्यी (प्रकाशना) करे उसे दृढ़ता से पकड़ लें, जिसका आदेश करे उसे करें तथा जिससे रोके उससे रुक जायें तथा किसी बात में आलस्य न करें । तथा वह्यी (प्रकाशना) का पालन तथा कार्यान्वयन करने में जो कठिनाईयाँ आयें, विरोधियों की ओर से जो कष्ट पहुँचाये जायें तथा सचेत करने तथा आमन्त्रित करने के मार्ग में जिन कठिनाईयों से गुज़रना पड़े उन पर धैर्य रखें तथा दृढ़ता से सब का सामना करें ।

[5]क्योंकि उसका ज्ञान भी पूर्ण है, उसकी शक्ति तथा सामर्थ्य भी विस्तृत है तथा उसकी कृपा भी सामान्य है । इसलिये उससे अधिक उचित निर्णय करने वाला अन्य कौन हो सकता है ?

सूरतु हूद-११

سُورَةُ هُودٍ

सूर हूद* मक्का में उतरी तथा इसकी एक सौ तेईस आयतें तथा दस रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है।

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۝١

(१) अलिफ़॰ लाम॰ रा॰ यह एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें सुदृढ़ की गयी हैं [1]फिर सविस्तार वर्णन की गयी हैं।[2] एक विवेकी पूर्णज्ञान वाले की ओर से।[3]

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ

(२) यह कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत (उपासना) न करो, मैं तुम को

---

*इस सूर: में भी उन समुदायों का वर्णन है जिन्होंने अल्लाह की निशानी तथा पैग़म्बरों को झुठलाया, जिसके कारण अल्लाह के प्रकोप का निशाना बने तथा इतिहास के पृष्ठों से त्रुटिपूर्ण शब्दों की भाँति मिटा दिये गये, अथवा इतिहास के पृष्ठों में शिक्षा का नमूना बनकर वर्तमान बनी हुई हैं। इसीलिए हदीस में है कि आदरणीय अबू बकर सिद्दीक (رضي الله عنه) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या बात है आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बूढ़े से दिखायी देते हैं ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि मुझे सूर: हूद, वाक़िअ:, अम्मयतसाअलून तथा इज़ा अश्शम्सु कूवेरत आदि ने बूढ़ा कर दिया है। (त्रिमिज़ी संख्या ३२९७, सहीह त्रिमज़ी अलबानी ३\११३)

[1]अर्थात शब्द तथा शैली में इतनी सुदृढ़ तथा पक्की है कि उनके क्रम तथा अर्थ में कोई त्रुटि नहीं।

[2]फिर इसमें आदेश तथा नियम, उपदेश तथा कथाएँ, विश्वास तथा ईमान, चरित्र एवं सम्मान जिस प्रकार स्पष्ट रूप से तथा विस्तार से वर्णन किये गया हैं, पूर्व की किताबों में उसकी तुलना प्रस्तुत करनें में असमर्थ हैं।

[3]अर्थात अपने कथन में ज्ञानी है, इसलिए उसकी ओर से उतारी हुई बातें ज्ञान से खाली नहीं हैं तथा वह सूचित भी है अर्थात सभी विषय तथा उनके परिणाम से अवगत है। इसलिए उसकी बातों पर कर्म करने से ही मनुष्य दुष्परिणाम से बच सकता है।

مِّنۡهُ نَذِيۡرٌ وَّبَشِيۡرٌ ۝٢

अल्लाह की ओर से डराने वाला तथा शुभसूचना देने वाला हूँ।

وَّاَنِ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّكُمۡ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَيۡهِ يُمَتِّعۡكُمۡ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤۡتِ كُلَّ ذِىۡ فَضۡلٍ فَضۡلَهٗ‌ ؕ وَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ كَبِيۡرٍ ۝٣

(३) तथा यह कि तुम लोग अपने पाप अपने प्रभु से क्षमा कराओ, फिर उसी की ओर ध्यान-मग्न हो जाओ, वह तुम को निर्धारित समय तक सुख-सुविधा देगा[1] तथा प्रत्येक अधिक अच्छे कार्य करने वाले को अधिक पुण्य देगा। तथा यदि तुम लोग मुख मोड़ते रहे, तो मुझको तुम्हारे लिए एक महान दिन[2] की यातना की चिन्ता है।

اِلَى اللّٰهِ مَرۡجِعُكُمۡ‌ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝٤

(४) तुमको अल्लाह ही के पास जाना है तथा वह प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है।

اَلَاۤ اِنَّهُمۡ يَثۡنُوۡنَ صُدُوۡرَهُمۡ لِيَسۡتَخۡفُوۡا مِنۡهُ‌ ؕ اَلَا حِيۡنَ

(५) याद रखो वह लोग अपनी छातियों को दोहरा किये देते हैं ताकि अपनी बातें (अल्लाह से) छिपा सकें[3] याद रखो कि वह

---

[1]यहाँ उस साँसारिक संसाधनों को जिसको कुरआन ने सामान्य रूप से "गर्व का साधन" धोखे का सामान कहा है, यहाँ इसे "सुख सामग्री" कहा गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि जो परलोक से निश्चिन्त होकर साँसारिक सुख से लाभ प्राप्त करेगा उसके लिए यह धोखे का साधन है, क्योंकि उसके पश्चात उसे दुष्परिणाम भोगना है तथा जो परलोक की तैयारी के साथ-साथ उससे लाभ उठायेगा, उसके लिये क्षणिक जीवन सामग्री सुख सामग्री है, क्योंकि उसने उसको अल्लाह के आदेश के अनुसार प्रयोग किया है।

[2]बड़े दिन से तात्पर्य क़ियामत का दिन है।

[3]इसके उतरने की विशेषता में व्याख्याकारों का मतभेद है। अतः इसके भावार्थ में भी मतभेद है। फिर भी सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः हूद में वर्णित अवतरण की विशेषता से ज्ञात होता है कि यह उन मुसलमानों के विषय में उतरी है जो शर्म के प्रभाव से प्रभावित होने के कारण शौच तथा पत्नी के साथ सम्भोग के समय निर्वस्त्र होना प्रिय नहीं समझते थे कि अल्लाह तआला हमें देख रहा है, इसलिए ऐसे अवसरों पर वह गुप्तांगों को छिपाने के लिए अपनी छातियों को दोहरा कर लेते थे। अल्लाह तआला ने

يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ إِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

लोग जिस समय अपने वस्त्र लपेटते हैं वह उस समय भी सब कुछ जानता है, जो कुछ छिपाते (चुपके-चुपके बातें करते) हैं तथा जो कुछ स्पष्ट (बातें) करते हैं। निःसन्देह वह दिलों के अन्दर की बातें जानता है।

फ़रमाया कि रात्रि के अंधेरे में जब वे बिस्तरों पर अपने आपको कपड़ों से ढाँक लेते थे, तो उस समय भी वह (अल्लाह) उनको देखता तथा उनकी छुपी तथा प्रकट बातों को जानता है। अर्थ यह है कि लज्जा एवं भय का भाव अपने स्थान पर अत्यन्त प्रशंसनीय है परन्तु इसमें इतनी अधिकता भी उचित नहीं इसलिए कि जिस शक्ति (अल्लाह) के भय से वे ऐसा करते हैं, उससे तो फिर भी नहीं छुप सकते, तो फिर इस प्रकार के कष्ट के क्या लाभ ?

(६) धरती पर चलते-फिरते जितने भी जीवधारी हैं सभी की जीविका अल्लाह (तआला) पर है[1] वही उनके रहने का स्थान भी जानता है तथा उनको अर्पित किये जाने का स्थान[2] भी, सभी कुछ खुली किताब में विद्यमान है।

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِى الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ۝٦

(७) तथा अल्लाह ही वह है जिस ने छ: दिन में आकाशों तथा धरती को उत्पन्न किया तथा उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था,[3] ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में अच्छे कर्म वाला कौन है ?[4] यदि आप उनसे कहें कि

وَهُوَ الَّذِى خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُۥ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِنۢ بَعْدِ الْمَوْتِ

---

[1]अर्थात वह प्रभारी तथा उत्तरदायी है। धरती पर चलने वाला प्रत्येक जीव मानव हो अथवा जिन्न, पशु हो अथवा पक्षी, छोटा हो अथवा बड़ा, जलीय हो अथवा थलीय, प्रत्येक के लिए उसकी श्रेणी तथा जाति की आवश्यकतानुसार वह भोजन का प्रबंध करता है।

[2] مستقر तथा مستودع के भावार्थ में मतभेद है। कुछ के निकट वह स्थान जहाँ चल-फिर कर पहुँचने पर रुक जाये مستقر (मुस्तक़र) कहते हैं तथा जिसको स्थाई निवास बनाये वह مستودع है। कुछ के निकट माता का गर्भाशय (मुस्तकर) तथा पिता की पीठ (मुस्तौदआ) है तथा कुछ के निकट जीवन काल में मानव तथा पशु जहाँ निवास करे, वह उसका (मुस्तकर) है तथा जहाँ मरने के पश्चात गाड़ दिया गया हो वह (मुस्तौदआ) है (तफ़सीर इब्ने कसीर) इमाम शौकानी कहते हैं "मुस्तकर" का तात्पर्य माता का गर्भाशय तथा "मुस्तौदआ" से धरती का वह भाग है जिस में वह गाड़ा गया हो तथा इमाम हाकिम के एक कथनानुसार इसी को प्राथमिकता दी है। अन्ततः जो भी अर्थ लिया जाये, आयत का भावार्थ स्पष्ट है कि चूँकि अल्लाह तआला को प्रत्येक के (मुस्तकर) तथा (मुस्तौदआ) का ज्ञान है, इसलिये वह प्रत्येक को भोजन पहुँचाने का सामर्थ्य रखता है तथा ज़िम्मेदार है तथा वह अपना कर्तव्य पूरा करता है।

[3]यही बात सहीह हदीस से भी सिद्ध होती है। अतः एक हदीस में आता है "अल्लाह तआला ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति से पचास हज़ार वर्ष पूर्व जीवों का भाग्य लिखा, उस समय उस का अर्श पानी पर था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, अन्य देखिये सहीह बुख़ारी, बदउल ख़ल्क़)

[4]अर्थात ये आकाश तथा धरती यूँ ही व्यर्थ बिना उद्देश्य के नहीं बनाये गये, बल्कि उसका उद्देश्य मानव तथा दानव की परीक्षा लेना है कि कौन अच्छे कर्म करता है ?

لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑦

तुम लोग मरने के पश्चात् फिर जीवित किये जाओगे, तो काफ़िर (अधर्मी) उत्तर देंगे कि ये तो केवल खुला जादू ही है।

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰٓ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُۥٓ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ⑧

(८) तथा यदि हम उन से यातना को कुछ समय तक के लिये निलम्बित कर दें, तो यह अवश्य पुकार उठेंगे कि यातना को कौन-सी चीज़ रोके हुई है। सुनो ! जिस दिन वह उनके निकट आयेगा, फिर उनसे टलने वाला नहीं, फिर तो जिसका उपहास कर रहे थे, वह उन्हीं पर उलट पड़ेगा।[1]

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُۥ لَيَـُٔوسٌ كَفُورٌ ⑨

(९) तथा यदि हम मानव को किसी सुख का स्वाद चखा कर फिर उसे उस से ले लें तो वह अत्यधिक निराश तथा अत्यधिक कृतघ्न बन जाता है।[2]

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّـَٔاتُ

(१०) तथा यदि हम उसे कोई सुख पहुँचायें, उस कठिनाई के पश्चात् जो उसे पहुँच चुकी थी तो वह कहने लगता है कि बस बुराईयाँ

टिप्पणी : अल्लाह तआला ने यहाँ यह नहीं कहा कि कौन अधिक कर्म करता है अपितु कहा कि कौन अधिक अच्छे कर्म करता है इसलिये कि अच्छा कर्म वही होता है, जोअल्लाह की प्रसन्नता के लिये किया जाये, तथा दूसरा सुन्नत के अनुसार हो। इन दो प्रतिबन्धों में से एक भी न रह जाये, तो वह अच्छा कर्म नहीं रहेगा, फिर वह चाहे जितना अधिक क्यों न हो, अल्लाह के यहाँ उस का कोई मूल्य नहीं है।

[1]यहाँ शीघ्र माँग करने को "उपहास" कहा गया है क्योंकि वह शीघ्रता की माँग उपहास के लिये ही होती थी। अतः उद्देश्य यह समझाना है कि अल्लाह (तआला) की ओर से देरी पर मनुष्य को असावधान नहीं रहना चाहिये, उसकी पकड़ किसी भी समय हो सकती है।

[2]मानव जाति में सामान्यतः जो दुर्गुण पाये जाते हैं इस में तथा अगली आयत में उन का वर्णन है। निराशा का सम्बंध भविष्य से है तथा कृतघ्नता का भूत तथा वर्तमान से।

عَنِّيْ ۭ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۝۱۰

मुझ से जाती रहीं,[1] निःसन्देह वह बड़ा ही प्रसन्न होकर गर्व करने लगता है।[2]

اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝۱۱

(११) उनके सिवाय जो धैर्य रखते हैं तथा पुण्य कार्यों में लगे रहते है। उन्हीं लोगों के लिये क्षमा भी है तथा बहुत बड़ा प्रत्युप्कार भी।[3]

---

[1]अर्थात समझता है कि कठिनाईयों का काल समाप्त हो गया है, अब उसे कोई कठिनाई नहीं आयेगी।

समुदाय के विभिन्न भावार्थ : आयत संख्या ८ में "उम्मत" शब्द आया है। यह क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न अर्थों में प्रयोग हुआ है। أمة शब्द أم से बना है जिसका अर्थ निश्चय करने के हैं। यहाँ इसका अर्थ 'उस समय' तथा अवधि के हैं, जो यातना के लिये निश्चित है (फ़तहुल क़दीर) सूर: *यूसुफ़* की आयत संख्या ४५ ﴿ وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ ﴾ में भी यही अर्थ है। इसके अतिरिक्त जिन अर्थों में इसका प्रयोग हुआ है, उनमें एक इमाम तथा अगुवा है। जैसे ﴿ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً ﴾ (*अन्नहल*-१२०) नियम तथा धर्म है, जैसे ﴿ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَاۗءَنَا عَلٰٓي اُمَّةٍ ﴾ (*अल-ज़ुखरूफ़*-२३) पार्टी तथा गुट है जैसे ﴿ وَلَمَّا وَرَدَ مَاۗءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ ﴾ (सूर: *अल-क़सस*-२३) ﴿ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓي اُمَّةٌ ﴾ (सूर: *अल-आराफ़*-१५९) आदि। वह विशेष समुदाय अथवा सम्प्रदाय है, जिसकी ओर कोई रसूल भेजा गया हो। ﴿ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ﴾ (सूर: *यूनुस*-४७) इसको आमंत्रित समुदाय भी कहते हैं। तथा उसी प्रकार पैग़म्बर पर ईमान लाने वालों को भी उम्मत (समुदाय) अथवा अनुयायी समुदाय अथवा आज्ञाकारी समुदाय कहा जाता है। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात जो कुछ उसके पास है, उस पर इतराता तथा दूसरों पर गर्व तथा अहकार दिखाता है परन्तु इन दुर्गुणों से ईमान वाले तथा पुनीत लोग अलग हैं, जैसाकि अगली आयत से स्पष्ट है।

[3]अर्थात ईमानवाले सुख-सुविधा हो अथवा तंगी तथा दुख, दोनों अवस्थाओं में अल्लाह के आदेशों के अधीन काम करते हैं। जैसाकि हदीस में आता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सौगन्ध खाकर कहा, "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके नियन्त्रण में मेरे प्राण हैं, अल्लाह तआला ईमानवालों के लिये जो भी निर्णय करता है, उसमें उसके लिये भलाई का पक्ष होता है। यदि उसको सुख प्राप्त होता है, तो वह अल्लाह का कृतज्ञ होता है जो उसके लिये अच्छा है (अर्थात प्रतिफल का कारण) है तथा यदि कोई दुख पहुँचता है तो धैर्य रखता है, वह भी उसके लिये अच्छा (अर्थात प्रतिफल तथा पुण्य का कारण) है यह विशेषता एक ईमानवाले के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ोहद, बाबुल मोमिन अमरुहू कुल्लुहु ख़ैर) तथा एक अन्य हदीस में फ़रमाया:

(१२) तो शायद कि आप उस वह्यी (प्रकाशना) के किसी भाग को छोड़ देने वाले हैं, जो आप की ओर उतारी जाती है तथा उससे आपका हृदय संकुचित है, केवल उनकी इस बात पर कि इस पर कोई कोष क्यों नही उतरा ? अथवा इस के साथ कोई फ़रिश्ता ही आता, सुन लीजिये ! आप तो केव़ल डराने वाले ही हैं[1] तथा हर चीज़ का संरक्षक केवल अल्लाह तआला है।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوحَىٰٓ إِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهِۦ صَدْرُكَ أَن يَقُولُوا۟ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ كَنزٌ أَوْ جَآءَ مَعَهُۥ مَلَكٌ ۚ إِنَّمَآ أَنتَ نَذِيرٌ ۚ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٢﴾

(१३) क्या ये कहते हैं कि इस क़ुरआन को उसी ने गढ़ा है। उत्तर दीजिये कि फिर तुम भी इस के समान दस सूरः गढ़ी हुई ले आओ

أَمْ يَقُولُونَ ٱفْتَرَىٰهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا۟ بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِۦ مُفْتَرَيَٰتٍ وَٱدْعُوا۟

"मोमिन को जो भी दुख-दर्द तथा कठिनाई पहुँचती है, यहाँ तक कि उसे काँटा चुभ जाता है, तो अल्लाह तआला उस के कारण उस की त्रुटियों को क्षमा कर देता है।" (मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ ४) *सूरः मआरिज* की आयतों संख्या १९ तथा २२ में भी इस विषय का वर्णन है।

[1]मूर्तिपूजक नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कहा करते थे कि उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरता, अथवा उस की ओर कोई कोष क्यों नहीं उतार दिया जाता ? (*सूरः अल-फ़ुरक़ान-८*) एक अन्य स्थान पर कहा गया है "हमें ज्ञान है कि यह लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विषय में जो बातें कहते हैं, उन से आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दुखी होते हैं।" (*सूरः अल-हिज्र-९८*) इस आयत में उन्हीं बातों के सम्बन्ध में कहा जा रहा है कि शायद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दुखी होते हों, सम्भव है आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वह उन्हें सुनाना अप्रिय समझें। परन्तु आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इन बातों से निश्चिंत होकर, उन को अल्लाह की वह्यी (प्रकाशना) सुनायें, उन्हें प्रिय हो अथवा अप्रिय, वे स्वीकार करें अथवा अस्वीकार। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कर्तव्य केवल सर्तक करना तथा चेतावनी है, वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) प्रत्येक अवस्था में किये जायें।

مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ⑬

तथा अल्लाह के अतिरिक्त जिसे चाहो अपने साथ सम्मिलित भी कर लो यदि तुम सच्चे हो ।[1]

فَإِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ⑭

(१४) फिर यदि वे तुम्हारी इस बात को स्वीकार न करें, तो तुम निश्चित रूप से जान लो कि यह क़ुरआन अल्लाह के ज्ञान के साथ उतारा गया है। तथा यह कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तो क्या तुम मुसलमान होते हो ?[2]

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ

(१५) जो व्यक्ति सांसारिक जीवन तथा उसकी शोभा पर रीझा हुआ हो, हम ऐसों को उनके

---

[1]इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं कि पहले अल्लाह तआला ने चुनौती दी कि यदि तुम इस दावे में सच्चे हो कि यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का गढ़ा हुआ क़ुरआन है, तो इस के समान प्रस्तुत कर के दिखा दो, तथा तुम जिसकी चाहो, सहायता प्राप्त कर लो, परन्तु तुम कभी भी ऐसा न कर सकोगे। फ़रमाया :

﴿ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴾

"कह दीजिये ! यदि कुल मानव तथा दानव मिलकर ऐसा क़ुरआन लाना चाहें तो इस के समान नहीं ला सकेंगे यद्यपि वह परस्पर में सहायक बन जायें।"(सूर: *बनी इस्राईल-८८*)

इस के पश्चात् अल्लाह तआला ने यह चुनौती दिया कि पूरा क़ुरआन बनाकर प्रस्तुत नहीं कर सकते, तो दस सूरतें ही बना कर प्रस्तुत करो। जैसाकि इस स्थान पर है। फिर तृतीय स्थान पर चुनौती दिया कि चलो एक ही सूर: बना कर प्रस्तुत करो जैसाकि सूर: यूनुस की आयत संख्या ३१ तथा सूर: *अल-बकर:* के प्रारम्भ में कहा गया है (तफ़सीर इब्ने कसीर *सूर: यूनुस* प्रस्तुत आयत के अर्न्तगत) तथा इस आधार पर अन्तिम चुनौती यह हो सकती है कि इस जैसी एक बात ही बना कर प्रस्तुत करो।

﴿ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴾ (*सूर: अल-तूर-३४*) परन्तु आयतों के उतरने के क्रम चुनौती के इस क्रम को समर्थन नहीं देता। والله أعلم بالصواب

[2]अर्थात क्या इस के पश्चात भी कि तुम इस चुनौती का उत्तर देने में असमर्थ हो, यह मानने के लिये, कि यह क़ुरआन अल्लाह ही का उतारा हुआ है, तैयार नहीं हो तथा न मुसलमान होने के लिये तैयार हो ?

فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ⑮

सभी कर्म (का बदला) यहीं पूर्णरूप से पहुँचा देते हैं तथा यहाँ उन्हें कोई कमी नहीं की जाती।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑯

(१६) हाँ, यही वे लोग हैं जिन के लिये परलोक में आग के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं तथा जो कुछ उन्होंने यहाँ किया होगा वहाँ सब व्यर्थ है तथा जो कुछ उन के कर्म थे वह सब नाश होने वाले हैं।[1]

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ

(१७) वह जो अपने पालनहार की ओर से एक तर्क पर हो तथा उस के साथ अल्लाह की ओर से गवाह हो तथा उस से पूर्व मूसा की किताब (गवाह हो) जो पथ-प्रदर्शक तथा दया है (अन्यों के समान हो सकता है ?)[2] यही

---

[1]इन दो आयतों के विषय में कुछ का विचार है कि इस में पाखण्डी लोगों की चर्चा है, कुछ के निकट इस से तात्पर्य यहूदी तथा इसाई हैं तथा कुछ के निकट इस में दुनिया के अभिलाषी लोगों का वर्णन है। क्योंकि अवसरवादी भी जो अच्छे कर्म करते हैं, अल्लाह तआला उन का बदला उन्हें दुनिया में दे देता है, आख़िरत में उनके लिये दण्ड के सिवाय कुछ न होगा। इस विषय को क़ुरआन मजीद में सूरः बनी इस्राईल आयत १८ तथा २१ एवं सूरः शूरा आयत २० में वर्णन किया गया है।

[2]निवर्तियों तथा काफ़िरों के सापेक्ष स्वाभावयुक्त लोगों तथा ईमान वालों का वर्णन किया जा रहा है। "अपने प्रभु की ओर से तर्क" से तात्पर्य वह प्रकृति है जिस पर अल्लाह तआला ने मानव को पैदा किया तथा वह है एक अल्लाह को मानना तथा उसी की इबादत (वंदना)। जिस प्रकार कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है, "प्रत्येक बच्चा प्रकृति पर जन्म लेता है, परन्तु उसके पीछे उसके माता-पिता उसे यहूदी, इसाई अथवा अग्निपूजक बना देते हैं .....।" (सहीह बुख़ारी किताबुल जनायेज़ तथा सहीह मुस्लिम किताबुल क़द्र) يتلوه का अर्थ है उसके पीछे अर्थात उसके साथ अल्लाह की ओर से एक गवाह भी हो, गवाह से तात्पर्य क़ुरआन अथवा मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं, जो उस सत्य प्रकृति की ओर आमंत्रित तथा उसकी ओर संकेत करते हैं। तथा इससे पूर्व मूसा की किताब तौरात जो पथ प्रदर्शक थी तथा कृपा का कारण भी थी।

مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ⑰

लोग हैं जो उस पर ईमान रखते हैं ।[1] तथा सभी गुटों में से जो भी इसका इंकारी हो, उसके अन्तिम वायदे का स्थान नरक है,[2] फिर तू उसमें किसी प्रकार के संदेह में न हो, नि:संदेह यह तेरे प्रभु की ओर से साक्षात सत्य है, परन्तु अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं होते ।[3]

अर्थात यह मूसा की किताब भी क़ुरआन पर ईमान लाने का मार्ग दिखाती है । अर्थ यह है कि एक व्यक्ति वह है जो इंकार करता है तथा काफ़िर है तथा उसकी तुलना में एक अन्य व्यक्ति है जो अल्लाह की ओर से आये तर्क पर स्थिर है, उस पर एक गवाह (क़ुरआन अथवा इस्लाम के पैग़म्बर) भी हैं, उसी प्रकार उससे पूर्व उतरने वाली किताब तौरात से भी उसके लिये मार्ग दर्शन का प्रबन्ध है । तथा वह ईमान ले आता है, क्या यह दोनों व्यक्ति समान हो सकते हैं ? अर्थात यह दोनों व्यक्ति समान नहीं हो सकते । क्योंकि एक ईमान वाला है दूसरा काफ़िर । एक प्रत्येक प्रकार के प्रमाणों से विभूषित है तथा दूसरा बिल्कुल शून्य है ।

[1]जिनके अंदर पूर्वोक्त विशेषतायें पायी जायेंगी, वह पवित्र क़ुरआन तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लायेंगे ।

[2]सभी गुटों से तात्पर्य सम्पूर्ण धरती पर पाये जाने वाले धर्म हैं, यहूदी, इसाई, अग्निपूजक, बौद्धधर्म, मूर्तिपूजक, काफ़िर तथा अन्य, जो भी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तथा क़ुरआन पर ईमान नहीं लायेगा, उसका निवास नरक है । यह वही विषय है जिसे इस हदीस में वर्णित किया गया है "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके नियन्त्रण में मेरा प्राण है, इस समुदाय के जिस यहूदी अथवा इसाई ने भी मेरी नबूअत के विषय में सुना तथा फिर मुझ पर ईमान नहीं लाया, वह नरक में जायेगा ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान बाब वजूबुल ईमान विरिसालते नबियेना मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इला जमीइन्नासे) यह विषय इससे पूर्व सूर: अल-बक़र: आयत संख्या ६२ तथा सूर: निसा आयत संख्या १५० तथा १५२ में भी गुज़र चुका है ।

[3]यह वही विषय है जो क़ुरआन मजीद के अनेक स्थानों पर वर्णित किया गया है ।

﴿ وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ﴾

"तेरी इच्छा के उपरान्त अधिकतर लोग ईमान नहीं लायेंगे ।" (सूर: यूसुफ़-१०३)

(१८) तथा उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे ।[1] ये लोग अपने पालनहार के समक्ष प्रस्तुत किये जायेंगे तथा सारे गवाह कहेंगे कि ये वह लोग हैं जिन्होंने अपने पालनहार पर झूठ बाँधा, सावधान ! अल्लाह की धिक्कार है अत्याचारियों पर ।[2]

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾

(१९) जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं तथा उसमें त्रुटि की खोज कर लेते हैं ।[3] यही वह लोग हैं जो परलोक का इंकार करते हैं ।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿١٩﴾

(२०) न ये लोग संसार में अल्लाह को पराजित कर सके तथा न उनका कोई पक्षधर अल्लाह के सिवाय हुआ, उनके लिये यातना दुगुनी की

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۘ يُضَاعَفُ لَهُمُ

﴿ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴾

"इब्लीस ने अपना विचार सच्चा कर दिखाया, ईमान वालों के एक गुट के अतिरिक्त, सब उसके अनुयायी बन गये ।"(*सूर: सबा-२०*)

[1]अर्थात जिनको अल्लाह तआला ने सृष्टि में उपभोग करने का तथा आख़िरत में सिफ़ारिश करने का अधिकार नहीं दिया है, उनके विषय में यह कहा जाये कि अल्लाह ने उन्हें यह अधिकार दिया है ।

[2]हदीस में इस की व्याख्या इस प्रकार आती है कि क़ियामत (प्रलय) के दिन अल्लाह तआला एक ईमान वाले से उसके पापों को स्वीकार करायेगा कि तुझे ज्ञात है कि तूने अमुक पाप किया था, अमुक भी किया था, वह ईमान वाला कहेगा हाँ ठीक है । अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि मैंने उन पापों पर दुनिया में भी पर्दा डाल रखा था, जा आज भी उन्हें क्षमा करता हूँ । परन्तु अन्य लोग अथवा काफ़िरों का मामला ऐसा होगा कि उन्हें गवाहों के समक्ष पुकारा जायेगा तथा गवाह यह गवाही देंगे कि यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने प्रभु पर झूठ बाँधा था । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: हूद)

[3]अर्थात लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिये उसमें त्रुटियाँ खोजते हैं तथा लोगों को उससे भड़काते हैं ।

الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾

जायेगी, न ये सुनने की शक्ति रखते थे तथा न ये देखते ही थे ।[1]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾

(२१) यही हैं जिन्होंने अपनी हानि आप कर लिया तथा जिन से अपना बाँधा हुआ झूठ खो गया ।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) नि:संदेह यही लोग आख़िरत (परलोक) में क्षतिग्रस्त होंगे ।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) नि:संदेह जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने कार्य भी पुण्य के किये तथा अपने पालनहार की ओर झुकते रहे, वही स्वर्ग में जाने वाले हैं, जहाँ वे सदैव रहने वाले हैं ।

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ

(२४) इन दोनों गुटों का उदाहरण अंधे-बहरे तथा देखने-सुनने वाले जैसा है ।[2] क्या यह

---

[1]अर्थात उनका सत्य से मुख मोड़ना तथा द्वेष उस चरम सीमा पर पहुँचा हुआ था कि ये उसे देखने तथा सुनने की शक्ति नहीं रखते थे । अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह ने उनको कान तथा आँखें तो दी थीं परन्तु उन्होंने उनसे सत्य बात न सुनी, न देखी । अर्थात

﴿فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُم مِّن شَيْءٍ﴾

"न उनके कानों ने उन्हें कोई लाभ पहुँचाया, न उनकी आँखों तथा दिलों ने । क्योंकि सत्य सुनने से बहरे तथा सत्य देखने से अंधे बने रहे ।" (सूर: *अल-अहक़ाफ-२६*)

जिस प्रकार कि वह नरक में प्रवेश करते हुए कहेंगे ।

﴿لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ﴾

"यदि हम सुनते तथा समझ से काम लेते तो आज नरक में न जाते ।"(सूर: *अल-मुल्क-१०*)

[2]पूर्व की आयतों में ईमान वालों, काफ़िरों तथा भाग्यवानों एवं हतभागों दोनों का वर्णन किया गया है । अब इस में दोनों की अवस्था का वर्णन करके दोनों की वास्तविकता को स्पष्ट किया जा रहा है । कहा, एक का उदाहरण अंधे तथा बहरे की तरह है तथा दूसरे

يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۚ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

दोनों तुलना में समान हैं ? क्या फिर भी तुम शिक्षा प्राप्त नहीं करते ?

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۙ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा निःसंदेह हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उसके समुदाय की ओर रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा कि मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से सचेत कर देने वाला हूँ।

اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾

(२६) कि तुम केवल अल्लाह की इबादत ही किया करो,[1] मुझे तो तुम पर दुखदायी दिन

की तुलना देखने तथा सुनने वाले की तरह है। काफ़िर दुनियाँ में सत्य का सौंदर्य देखने से वंचित तथा आख़िरत (परलोक) में मोक्ष के मार्ग से दूर, उसी प्रकार सत्य का तर्क सुनने से वंचित रहता है, इसीलिये ऐसी बातों से वंचित रहता है, जो उसके लिये लाभकारी हों। इसके विपरीत ईमानवाले, समझदार, सत्यदर्शी तथा सत्य तथा अनृत (असत्य) के मध्य विवेककारी होते हैं। अतः वह सत्य तथा पुण्य का अनुसरण करते हैं, तर्क को सुनते हैं तथा उसके द्वारा शंका का निवारण करते तथा अनृत से दूर रहते हैं। क्या ये दोनों समान हो सकते हैं ? प्रश्न नकारने के लिये है। अर्थात दोनों समान नहीं हो सकते। जैसे अन्य स्थान पर कहा गया है :

﴿ لَا يَسْتَوِىٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴾

"स्वर्ग में जाने वाले तथा नरक में जाने वाले समान नहीं हो सकते, स्वर्ग में तो जाने वाले सफल होने वाले हैं।" (सूरः *अल-हश्र*-२०)

एक अन्य स्थान पर इसे इस प्रकार वर्णित किया गया है,

"अंधा तथा आँख वाला समान नहीं। अंधकार तथा प्रकाश, छाया तथा धूप समान नहीं, जीवित तथा मृत समान नहीं।" (सूरः *फ़ातिर*-१९ से २२)

[1]यह वही एकेश्वरवाद का आमंत्रण है जो प्रत्येक नबी ने आकर अपने-अपने समुदाय को दिया। जिस प्रकार कहा :

﴿ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴾

"जो पैग़म्बर हमनें आप से पूर्व भेजे, उनकी ओर वह्यी (प्रकाशना) की कि मेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, बस मेरी ही इबादत करो।"(सूरः *अल-अम्बिया*-२५)

की यातना का भय है।[1]

(२७) उसके समुदाये के काफ़िरों के मुखियाओं ने उत्तर दिया कि हम तो तुझे अपने समान मनुष्य ही देखते हैं,[2] तथा तेरे अनुयायी को भी देखते हैं कि स्पष्ट रूप से सिवाय नीच[3] लोगों के[4] अन्य कोई नहीं (जो तुम्हारा अनुसरण कर

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ

---

[1]अर्थात यदि मुझ पर ईमान नहीं लाये तथा उस एकेश्वरवाद के आमन्त्रण को नहीं स्वीकार किया तो अल्लाह की यातना से नहीं बच सकोगे।

[2]यह वही संदेह है जिसकी व्याख्या कई स्थानों पर की जा चुकी है कि काफ़िरों के निकट मानवता के साथ नबूअत तथा रिसालत का संयोग बड़ा विचित्र था, जिस प्रकार आजकल धार्मिक आधुनिकीकरण करने वालों को भी विचित्र लगता है तथा वे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मानव होने का इंकार करते हैं।

[3]सत्य के इतिहास में यह बात भी हर काल में सामने आती रही है कि प्रारम्भ में इस को अपनाने वाले सदैव वे लोग होते हैं जिन्हें समाज में हीन तथा निर्बल समझा जाता था तथा धनवान तथा वैभवशाली गुट इससे वंचित रहता। यहाँ तक कि ये चीज़ पैग़म्बरों के अनुयायियों का लक्षण बन गई। अत: जब रोम के बादशाह हरकुलस ने आदरणीय अबू सुफ़ियान (जो अभी तक ईमान नहीं लाये थे) से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में बात पूछी तो उस में उनसे एक बात यह भी पूछी कि उसके अनुयायियों में समाज के सम्मानित व्यक्ति हैं अथवा कमज़ोर लोग ? तो आदरणीय सुफ़ियान ने उत्तर में कहा, "कमज़ोर लोग" जिस पर हरकुलस ने कहा "रसूलों के अनुयायी यही लोग होते हैं।" (सहीह बुख़ारी हदीस संख्या-७) क़ुरआन करीम में भी स्पष्टीकरण किया गया है कि सामर्थ्यवान लोग ही सर्वप्रथम पैग़म्बरों को झुठलाते रहे हैं। (सूर: ज़ुखरूफ़-२३) तथा यह ईमान वालों की सांसारिक परिस्थिति थी जिसके कारण काफ़िर लोग उन्हें हीन समझते थे, वरन् वास्तविकता तो यह है कि सत्य के अनुयायी सम्मानित तथा प्रतिष्ठित हैं, चाहे वह धन-सम्पत्ति में कम हों तथा सत्य के निर्वती नीच तथा निरादर हैं चाहे वे सांसारिक रूप से धनवान ही हों।

[4]ईमान वाले चूंकि अल्लाह तथा रसूल के आदेशों के सापेक्ष अपनी बुद्धि तथा विचार एवं तर्क का प्रयोग नहीं करते, इसलिये असत्य के अनुयायी यह समझते हैं कि यह मोटी बुद्धि वाले हैं कि अल्लाह का रसूल इन्हें जिस ओर मोड़ देता है, ये मुड़ जाते हैं, जिस चीज़ से रोक देता है, रूक जाते हैं। यह भी ईमान वालों की बड़ी विशेषता है, बल्कि ईमान की आवश्यक माँग है। परन्तु काफ़िरों तथा असत्यवादियों के निकट यह विशेषता भी 'दोष' है।

وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾

रहे हैं) हम तो तुम्हारी किसी प्रकार की श्रेष्ठता अपने ऊपर नहीं देख रहे, बल्कि हम तो तुझे झूठा समझ रहे हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ۗ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) नूह ने कहा, ऐ मेरे समुदाय वालो! मुझे बताओ तो यदि मैं अपने प्रभु की ओर से मिली निशानी पर हुआ तथा मुझे उसने अपने पास की (कोई उत्तम) कृपा प्रदान की हो,[1] फिर वह तुम्हारी आँखों में न समाई,[2] तो क्या बलपूर्वक उसे तुम्हारे गले में डाल दूँ जबकि तुम उसे नहीं चाहते हो।[3]

وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۗ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) हे मेरे समुदाय वालो! मैं इसके बदले तुम से कोई धन नहीं माँगता।[4] मेरा प्रतिकार तो केवल अल्लाह तआला के पास है। न मैं ईमानवालों को अपने पास से निकाल सकता हूँ,[5] उन्हें अपने प्रभु से मिलना है, परन्तु मैं

---

[1] بينة से तात्पर्य ईमान तथा विश्वास है तथा कृपा से नबूअत। जिस से अल्लाह तआला ने नूह को विभूषित किया था।

[2] अर्थात तुम उसको देखने से अंधे हो गये। अतः तुमने उसका आदर किया न अपनाने के लिये तैयार हुए, अपितु उसको झुठलाने तथा खण्डन करने में लग गये।

[3] जब यह बात है तो सत्य का प्रदर्शन तथा कृपा तुम्हारे भाग्य में किस प्रकार आ सकती है?

[4] ताकि तुम्हारे मन में यह शंका न उत्पन्न हो जाये कि इस नबूअत के दावे से उसका उद्देश्य सांसारिक धन एकत्रित करना है। मैं तो यह कार्य केवल अल्लाह के आदेश से तथा उसकी प्रसन्नता के लिये कर रहा हूँ, वही मुझे इस का बदला अर्थात फल देगा।

[5] इस से ज्ञात होता है कि नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय के प्रमुखों ने भी समाज में कमज़ोर समझे जाने वाले ईमान वालों को आदरणीय नूह से अपनी सभा अथवा अपनी निकटता से दूर करने की माँग की होगी, जिस प्रकार मक्का के सरदारों ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस प्रकार की माँग की थी, जिस पर अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम की यह आयतें उतारी थी।

देखता हूँ कि तुम लोग मूर्खता कर रहे हो ।[1]

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝

(३०) तथा ऐ मेरे समुदाय के लोगो ! यदि मैं ईमान वालों को अपने पास से निकाल दूँ, तो अल्लाह की तुलना में मेरी सहायता कौन कर सकता है ।[2] क्या तुम कुछ भी सोच-विचार नहीं करते ?

وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ښ

(३१) तथा मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के कोष हैं, (सुनो) मैं परोक्ष का ज्ञान भी नहीं रखता, न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, न मेरा यह कथन है कि जिन पर तुम्हारी दृष्टि अपमान से पड़ रही है उन्हें अल्लाह (तआला) कोई उत्तम वस्तु देगा ही

﴿ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ ﴾

"हे पैग़म्बर ! उन लोगों को अपने से दूर मत करना जो प्रातः तथा सायं अपने प्रभु को पुकारते हैं ।" (सूरः *अल-अनाम-५२*)

﴿ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ﴾

"अपने आप को उन लोगों के साथ जोड़े रखिये जो अपने प्रभु को प्रातः एवं सायं पुकारते हैं, अपने प्रभु की प्रसन्नता चाहते हैं, आपकी आँखें उनसे हट कर किसी अन्य की ओर न जायें ।" (सूरः *अल-कहफ़-२८*)

[1]अर्थात अल्लाह तथा रसूल के अनुयायियों को तुच्छ समझना तथा फिर उन्हें नबी की निकटता से दूर करने की माँग करना, यह तुम्हारी मूर्खता है । ये लोग तो इस योग्य हैं कि उन्हें सिर-आँखें पर बिठाया जाये न कि दूर से धिक्कारा जाये ।

[2]अर्थात ऐसे लोगों को अपने से दूर करना, अल्लाह के क्रोध तथा अप्रसन्नता का कारण है ।

نہیں ।[1] उनके दिल में जो कुछ है अल्लाह भली-भाँति जानता है, यदि मैं ऐसा कहूँ तो नि:संदेह मेरी भी गणना अत्याचारियों में हो जायेगी ।[2]

إِنِّىٓ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٣١﴾

(३२) (समुदाय के लोगों ने) कहा : ऐ नूह ! तू हम से विवाद तथा अत्यधिक विवाद कर चुका ।[3] अब तो तू जिस चीज़ से हमें डरा रहा है, वही हमारे पास ले आ यदि तू सच्चा है ।[4]

قَالُوا۟ يَٰنُوحُ قَدْ جَٰدَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدَٰلَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٣٢﴾

(३३) उत्तर दिया कि उसे भी अल्लाह (तआला) ही लायेगा यदि वह चाहे तथा हाँ, तुम उसे विवश नहीं कर सकते ।[5]

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ ٱللَّهُ إِن شَآءَ وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾

(३४) तुम्हें मेरी शुभचिन्ता कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकती, चाहे मैं जितना ही

وَلَا يَنفَعُكُمْ نُصْحِىٓ إِنْ أَرَدتُّ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِن كَانَ ٱللَّهُ

---

[1]बल्कि अल्लाह तआला ने तो उन्हें ईमान के रूप में सर्वश्रेष्ठ पुण्य प्रदान कर रखा है तथा जिसके आधार पर वे आख़िरत (परलोक) में भी स्वर्ग की सुख-सुविधाओं का आनन्द लेंगे तथा दुनिया में भी यदि अल्लाह तआला चाहेगा तो उच्च पद प्रदान करेगा । अर्थात तुम्हारा इन को तुच्छ समझना इन के लिये हानिकारक नहीं है, परन्तु तुम ही अल्लाह के समक्ष अपराधी होगे कि अल्लाह के पुनीत भक्तों को जिनको अल्लाह के दरबार में उच्च स्थान प्राप्त है, तुम नीच तथा अछूत समझते हो ।

[2]क्योंकि मैं उन के विषय में ऐसी बात कहूँ जिसका मुझे ज्ञान नहीं, केवल अल्लाह जानता है, तो यह अत्याचार है ।

[3]परन्तु इसके उपरान्त हम ईमान नहीं लाये ।

[4]यह वही मूर्खता है जिस को भटके हुए समुदाय करते आये हैं कि वे अपने पैग़म्बर से कहते रहे यदि तू सच्चा है तो हम पर प्रकोप उतारकर हमें नष्ट करवा दे । यदि उन में बुद्धि होती तो वे कहते कि यदि तू सच्चा है तथा वास्तव में अल्लाह का रसूल है, तो हमारे लिये भी दुआ कर कि अल्लाह तआला हमारे हृदय भी खोल दे ताकि हम इसे अपना लें ।

[5]अर्थात प्रकोप का आना पूर्णरूप से अल्लाह की इच्छा पर आधारित है, यह नहीं कि जब मैं चाहूँ तुम पर प्रकोप आ जाये । परन्तु जब अल्लाह प्रकोप का निर्णय कर लेगा अथवा भेज देगा, तो फिर उस को रोकने वाला कोई नहीं है ।

يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۟ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ؕ

तुम्हारा शुभचिंतक क्यों न हूँ, यदि अल्लाह की इच्छा तुम्हें भटकाने की हो।[1] वही तुम सब का प्रभु है[2] तथा उसी की ओर लौट कर जाओगे।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ۟

(३५) क्या ये कहते हैं कि उसे स्वयं उसी ने गढ़ लिया है? तो उत्तर दो कि यदि मैंने उसे गढ़ लिया हो तो मेरा पाप मुझ पर है तथा मैं उन पापों से अलग हूँ। जिनको तुम कर रहे हो।[3]

وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا

(३६) तथा नूह की ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी गयी कि तेरे समुदाय में जो भी ईमान ला

---

[1] إِغْـــواء शब्द إضلال शब्द के अर्थों मे प्रयोग हुआ है, जिस का अर्थ है "गुमराह करना"। अर्थात तुम्हारा कुफ़ तथा झुठलाना यदि उस स्थान तक पहुँच चुका है, जहाँ से किसी व्यक्ति का पलटना तथा प्रकाश प्राप्त करना असंभव है, तो उसी अवस्था को अल्लाह तआला की ओर से 'मोहर लगा देना' कहा जाता है, जिस के पश्चात् मार्गदर्शन प्राप्त करने की कोई आशा शेष नहीं रह जाती है। अर्थ यह है कि यदि तुम भी उस भयानक मोड़ तक पहुँच चुके हो, तो फिर तुम्हारी भलाई करना चाहूँ अर्थात मार्ग पर लाने की और अधिक प्रयत्न करूँ, तो यह प्रयत्न तथा भलाई तुम्हारे लिये लाभकारी नहीं, क्योंकि तुम भटकावे की अन्तिम चरम सीमा पर पहुँच चुके हो।

[2] मार्गदर्शन तथा भटकाना भी उसी के हाथ में है तथा तुम्हें उसी की ओर पलट कर जाना है, जहाँ वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला देगा। पुनीत कार्य करने वालों को प्रतिफल तथा बुरों को बुराई का दण्ड देगा।

[3] कुछ व्याख्याकारों के निकट यह वार्तालाप नूह के समुदाय के लोगों तथा आदरणीय नूह के मध्य हुई तथा कुछ के विचार से यह प्रासंगिक वाक्य के रूप में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मक्का के मूर्तिपूजकों के मध्य होने वाली वार्तालाप है। अर्थ यह है कि यदि यह कुरआन मेरा गढ़ा हुआ है तथा मैं अल्लाह की ओर सम्बन्धित करने में झूठा हूँ, तो यह मेरा अपराध है, इस का दण्ड मैं ही भोगूंगा। परन्तु तुम जो कर रहे हो, जिस से मैं असम्बन्धित हूँ, उस का भी तुम्हें पता है? इसका दुष्परिणाम तो मुझ पर नहीं, तुम पर ही पड़ेगा, उस की भी तुम्हें कुछ चिन्ता है।

चुके उन के सिवाय अब कोई ईमान लायेगा ही नहीं, फिर तो उनके कर्मों पर दुखी न हो।[1]

تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

(३७) तथा एक नाव हमारी आँखों के सामने तथा हमारी वह्यी (प्रकाशना) से तैयार कर[2] तथा अत्याचारियों के विषय में हमसे कोई बात न कर, वे पानी में डूबो दिये जाने वाले हैं।[3]

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾

(३८) वह (नूह) नाव बनाने लगे। उसके समुदाय के जो भी गुट के लोग उसके निकट से गुज़रते वे उसका उपहास उड़ाते।[4] वह कहते यदि तुम हमारा उपहास उड़ाते हो तो

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّن قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا

---

[1]यह उस समय कहा गया जब नूह के समुदाय ने आपदा की माँग की तथा आदरणीय नूह ने अल्लाह से प्रार्थना की कि ऐ प्रभु! धरती पर एक काफ़िर भी बसने वाला न रहने दे। अल्लाह ने फ़रमाया : अब अन्य कोई ईमान नहीं लायेगा, तू उन पर दुखी न हो।

[2]"हमारी आँखों के समक्ष" का अर्थ है "हमारी देख-भाल में" परन्तु यह आयत अल्लाह तआला के लिये आँख होने के गुण को बताती है जिस पर आस्था अनिवार्य है। तथा "हमारी वह्यी (प्रकाशना) से" का अर्थ उसकी लम्बाई-चौड़ाई आदि की जो अवस्था हम ने बतलायी है, उस प्रकार उसे बना। इस स्थान पर कुछ व्याख्याकारों ने नाव की लम्बाई-चौड़ाई, उस के तलों तथा किस प्रकार की लकड़ी तथा अन्य सामान उस में प्रयोग किया गया, उस का विस्तृत वर्णन किया है, जो स्पष्ट है, कि किसी प्रमाणिता पर आधारित नहीं है। उसका सही विस्तृत ज्ञान केवल अल्लाह ही को है।

[3]कुछ ने इस से तात्पर्य आदरणीय नूह के पुत्र तथा पत्नी को लिया है, जो ईमान नहीं लाये थे तथा डूबने वालों में से थे। कुछ ने इस से डूबने वाला सम्पूर्ण समुदाय लिया है तथा अर्थ यह है कि इन के लिये अवसर देने की माँग न करना क्योंकि अब उन के विनाश का समय आ गया है अथवा यह अर्थ है कि उन के विनाश के लिये शीघ्रता न करें, निर्धारित समय में यह सब डूब जायेंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[4]उदाहरणार्थ कहते ऐ नूह ! नबूअत करते-करते अब बढ़ई का काम प्रारम्भ कर दिया। अथवा ऐ नूह ! थल में नाव किस लिये बना रहे हो ?

نَسْخَرُ مِنكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾

हम भी तुम पर एक दिन हँसेंगे जैसे तुम उपहास कर रहे हो।

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾

(३९) तुम्हें अति शीघ्र ज्ञात हो जायेगा कि किस पर प्रकोप आना है, जो उसे अपमानित करे तथा उस पर स्थाई दण्ड[1] उतर जाये।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ

(४०) यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया तथा तन्दूर उबलने लगा।[2] हम ने कहा कि इस नाव में हर प्रकार के जोड़े दोहरे सवार करा ले।[3] तथा अपने घर के लोगों को भी, सिवाय उनके जिन पर पूर्व से बात पड़ चुकी है।[4] तथा

---

[1]इस से तात्पर्य नरक की स्थाई यातना है, जो सांसारिक प्रकोप के पश्चात उन के लिये तैयार है।

[2]इस से कुछ ने रोटी पकाने वाला तन्दूर, कुछ ने निर्धारित स्थान जैसे ऐनुलवर्दः तथा कुछ ने धरती का तल लिया है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसी अन्तिम अर्थ को प्राथमिकता दी है अर्थात सम्पूर्ण धरती स्रोतों की तरह उबल पड़ी, ऊपर से आकाश की वर्षा ने शेष बची कमी को पूर्ण कर दिया।

[3]इससे तात्पर्य स्त्री तथा पुरूष अर्थात नर तथा मादा है। इस प्रकार प्रत्येक जीवधारी का युगल नाव में रख लिया गया तथा कुछ कहते हैं कि वनस्पति भी रखी गयी थी।

[4]अर्थात जिनको डूबना अल्लाह के लिखे हुए भाग्य के अनुरुप है। इस से तात्पर्य सामान्य काफ़िर हैं अथवा यह नष्ट होने वालों के अतिरिक्त से हैं अर्थात अपने घर वालों को भी नाव में सवार करा लें अतिरिक्त उन के जिन पर अल्लाह की बात स्पष्ट कर दी गयी है अर्थात एक पुत्र (कन्आन अथवा (याम) तथा आदरणीय नूह की पत्नी (वायलः) ये दोनों काफ़िर थे, इन को नाव में बिठाने से निषिद्ध कर दिया गया।

وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝

सभी ईमान वालों को भी,[1] उसके साथ ईमान लाने वाले बहुत ही कम थे ।[2]

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

(४१) तथा नूह ने कहा कि इस नाव में बैठ जाओ अल्लाह ही के नाम से इसका चलना तथा ठहरना है,[3] निःसंदेह मेरा पालनहार अत्यधिक क्षमाशील एवं अत्यधिक कृपालु है।

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۟ وَنَادٰى نُوْحُ ۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ

(४२) तथा वह नाव उन्हें पर्वतों जैसी लहरों में लेकर जा रही थी।[4] तथा नूह ने अपने पुत्र

---

[1]अर्थात सब ईमानवालों को नाव में सवार करा ले।

[2]कुछ ने उनकी संख्या (स्त्री तथा पुरूष सहित) ८० तथा कुछ ने इस से भी कम बतायी है। इन में आदरणीय नूह के तीन पुत्र जो ईमान लाने वालों में सम्मिलित थे। साम, हाम, तथा याफ़िस तथा उनकी पत्नियाँ तथा चौथी पत्नी याम की थी, जो काफ़िर था परन्तु उसकी पत्नी मुसलमान होने के कारण नाव में सवार थी।

[3]अर्थात अल्लाह ही के नाम से उसका जल की सतह पर चलना तथा उसी के नाम पर रूकना है। इससे एक उद्देश्य ईमान वालों को सांत्वना देना तथा साहस देना था कि किसी प्रकार के भय के बिना नाव में सवार हो जाओ, अल्लाह ही इस नाव का रक्षक तथा निरीक्षक है, उसी के आदेश से चलेगी तथा उसी के आदेश से ठहरेगी। जिस प्रकार अल्लाह तआला ने अन्य स्थान पर फ़रमाया : कि ऐ नूह ! जब तुम तथा तेरे साथी नाव में आराम से बैठ जायें तो कहो -

﴿ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴾

"सभी प्रशंसायें अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें अत्याचारी लोगों से मोक्ष प्रदान किया तथा कहो कि हे मेरे प्रभु ! मुझे सुरक्षित उतारना, तू ही उत्तम उतारने वाला है।" (*सूर: अल-मोमिनून-२८,२९*)

कुछ आलिमों ने नाव तथा सवारी में बैठते समय بسم الله مجريها و مُرسٰها का पढ़ना उचित माना है। परन्तु हदीस से ﴿ سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۝ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴾ का पढ़ना सिद्ध है।

[4]अर्थात जब धरती पर पानी था, यहाँ तक कि पर्वत भी डूबे हुए थे यह नाव आदरणीय नूह तथा उनके साथियों को अपने अंदर सुरक्षित लिये अल्लाह के आदेश से तथा उस की

مَعْزِلٍ يَٰبُنَيَّ ٱرْكَب مَّعَنَا وَلَا تَكُن مَّعَ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٤٢﴾

को जो एक किनारे पर था पुकार कर कहा, ऐ मेरे प्यारे बच्चे ! हमारे साथ सवार हो जा तथा काफ़िरों में सम्मिलित न रह ।[1]

قَالَ سَـَٔاوِىٓ إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِمُنِى مِنَ ٱلْمَآءِ ۚ قَالَ لَا عَاصِمَ ٱلْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ ٱللَّهِ إِلَّا مَن رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا ٱلْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ ٱلْمُغْرَقِينَ ﴿٤٣﴾

(४३) उसने उत्तर दिया कि मैं तो किसी ऊँचे पर्वत की शरण में आ जाऊँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा ।[2] नूह ने कहा आज अल्लाह के आदेश से बचाने वाला कोई नहीं वही केवल बचेंगे जिन पर अल्लाह की कृपा हुई। उसी समय उनके मध्य लहर आ गयी तथा वह डूबने वालों में हो गया ।[3]

وَقِيلَ يَٰٓأَرْضُ ٱبْلَعِى مَآءَكِ وَيَٰسَمَآءُ أَقْلِعِى وَغِيضَ ٱلْمَآءُ وَقُضِىَ

(४४) तथा कह दिया गया कि ऐ धरती ! अपने पानी को निगल जा, [4] तथा ऐ आकाश ! बस

सुरक्षा में पर्वत की भाँति चल रही थी। वरन् इतने तूफ़ान वाले पानी में नाव का क्या महत्व होता है ? इसीलिये अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने इसे अभार के रूप में वर्णन किया है।

﴿ إِنَّا لَمَّا طَغَا ٱلْمَآءُ حَمَلْنَٰكُمْ فِى ٱلْجَارِيَةِ * لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَآ أُذُنٌ وَٰعِيَةٌ ﴾

"जब पानी में बाढ़ आ गई तो उस समय हमने तुम्हें नाव पर चढ़ा लिया, ताकि उसे तुम्हारे लिये शिक्षाप्रद और यादगार बना दें तथा याद रखने वाले कान उसे याद रखें ।" *(सूर: अल-हाक़्क़:-११,१२)*

[1]यह आदरणीय नूह का चौथा पुत्र था जिस की उपाधि 'कन्आन' तथा नाम 'याम' था, उस से आदरणीय नूह ने निवेदन किया कि मुसलमान हो जा, तथा काफ़िरों के साथ सम्मिलित होकर डूबने वालों में न हो।

[2]उस का विचार था कि किसी ऊंचे पर्वत की शिखर पर चढ़कर मैं शरण ले लूँगा, वहाँ पानी कैसे पहुँचेगा ?

[3]पिता-पुत्र के मध्य यह वार्ता हो ही रही थी कि एक तूफ़ानी धारा ने उसे अपने लपेट में ले लिया।

[4]निगलने का प्रयोग पशु के लिये होता है कि वह अपने मुख का कौर निगल जाता है। यहाँ पानी के सूखने को निगल जाने से तुलना करने में इस मार्मिकता का ज्ञान होता है कि पानी धार-धार नहीं सूखा, अपितु अल्लाह तआला के आदेश से धरती ने तत्क्षण अपने अंदर सारा पानी इस प्रकार निगल लिया जिस प्रकार पशु कौर निगल जाता है।

الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

कर थम जा, उसी समय पानी सुखा दिया गया तथा कार्य पूर्ण कर दिया गया।[1] तथा नाव जूदी नामक पर्वत[2] पर जा लगी, तथा कहा गया कि अन्याय करने वालों पर धिक्कार उतरे।[3]

وَنَادَىٰ نُوحٌ رَّبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنتَ أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ

(४५) तथा नूह ने अपने प्रभु को पुकारा तथा कहा कि ऐ मेरे प्रभु ! मेरा पुत्र तो मेरे परिवार वालों मे से है। नि:संदेह तेरा वायदा पूर्णरूप से सत्य है तथा तू सभी अधिपतियों से श्रेष्ठ अधिपति है।[4]

قَالَ يَا نُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلْنِ

(४६) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया ऐ नूह ! नि:संदेह वह तेरे परिवार से नहीं है,[5] उस के कर्म बिल्कुल अप्रिय हैं,[6] तुझे कदापि वह

---

[1]अर्थात सभी काफ़िरों को डूबो दिया गया।

[2]जूदी पर्वत का नाम है, जो कुछ लोगों के कथनानुसार ईराक के नगर मूसल के निकट है, आदरणीय नूह का समुदाय भी इसी के निकट आबाद था।

[3] بعد यह विनाश तथा अल्लाह के धिक्कार के अर्थ में प्रयोग हुआ है तथा क़ुरआन करीम में विशेष रूप से अल्लाह के क्रोध का कारण बनने वाले समुदायों के लिये कई स्थान पर प्रयोग हुआ है।

[4]आदरणीय नूह ने संभवत: अपने पिता प्रेम की भावना से प्रेरित होकर अल्लाह के दरबार में प्रार्थना की तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि उन्हें यह सम्भावना थी कि संभवत: यह मुसलमान हो जायेगा, इसलिये उस के विषय में यह प्रार्थना की।

[5]आदरणीय नूह ने अपनी वंशीय निकटता के कारण उसे अपना पुत्र कहा था। परन्तु अल्लाह तआला ने ईमान के आधार पर धर्म की निकटता के नियमानुसार इस बात को नकारा कि वह तेरे परिवार से है इसलिए कि एक नबी का मूल परिवार तो वही है जो उस पर ईमान लाये, चाहे वह कोई भी हो। तथा यदि ईमान न लाये, तो चाहे वह नबी का पिता हो, पुत्र हो, अथवा पत्नी। वह नबी के परिवार का सदस्य नहीं।

[6]यह अल्लाह तआला ने उसके कारण का वर्णन किया है। इस से ज्ञात हुआ कि जिस के पास ईमान तथा पुण्य कर्म नहीं होगा, उसे अल्लाह की यातना से अल्लाह का पैग़म्बर

مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعِظُكَ أَن تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ

वस्तु नहीं मांगनी चाहिये जिसका तुझे तनिक भी ज्ञान न हो,[1] मैं तुझे शिक्षा देता हूँ कि तू अशिक्षितों में से अपनी गणना कराने से रूक जा ।[2]

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُن مِّنَ الْخَاسِرِينَ

(४७) नूह ने कहा ऐ मेरे प्रभु ! मैं तेरी ही शरण चाहता हूँ, इस बात से कि तुझसे वह माँगू जिसका मुझे ज्ञान ही न हो । यदि तू मुझे क्षमा नहीं करेगा तथा तू मुझ पर दया न करेगा तो मैं हानि उठाने वालों में हो जाऊँगा ।[3]

قِيلَ يَا نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِّمَّن مَّعَكَ ۚ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ

(४८) कहा गया कि हे नूह ! हमारी ओर से सुरक्षा तथा उन विभूतियों के साथ उतर[4] जो तुझ पर है तथा तेरे साथ के बहुत से समुदायों पर ।[5]तथा बहुत से वे समुदाय होंगे जिन्हें

भी बचाने का सामर्थ्य नहीं रखता । आजकल लोग पीरों, फ़क़ीरों तथा गद्दी नशीनों (पुजारियों) से सम्बन्ध होने को ही मोक्ष के लिये पर्याप्त मानते हैं तथा पुण्य के कार्य करने की आवश्यकता नहीं समझते । यद्यपि जब पुण्य के कार्य के बिना नबी के साथ वंशीय सम्बंध भी काम नहीं आता, तो ये सम्बंध क्या काम आयेंगे ?

[1]इससे ज्ञात हुआ कि नबी को परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, उसको उतना ही ज्ञान होता है, जितना वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला उसे प्रदान करता है । यदि आदरणीय नूह को पूर्व ज्ञान होता कि उनकी प्रार्थना स्वीकार न होगी, तो निःसंदेह वह उस से बचते ।

[2]यह अल्लाह तआला की ओर से आदरणीय नूह को शिक्षा है, जिसका उद्देश्य उन को उस उच्च स्थान पर आसीन करना है, जो कर्मी ज्ञानियों के लिये अल्लाह के सदन में है ।

[3]जब आदरणीय नूह यह जान गये कि उनका प्रश्न घटना के अनुसार नहीं था, तो तुरन्त उससे क्षमा माँग ली तथा अल्लाह तआला की कृपा तथा दया के प्रार्थी हो गये ।

[4]यह उतरना नाव से अथवा उस पर्वत से है, जिस पर नाव जा कर ठहर गयी थी ।

[5]इससे तात्पर्य वह गुट हैं जो आदरणीय नूह के साथ नाव में सवार थे अथवा भविष्य में होने वाले वे गुट हैं जो उनके वंश से होने वाले थे । अगले वाक्य के अनुसार यही दूसरा भावार्थ अधिक उचित है ।

يَمَسُّهُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾

हम लाभ तो अवश्य पहुँचायेंगे, परन्तु फिर उन्हें हमारी ओर से दुखदायी यातना भी पहुँचेगी ।[1]

تِلْكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۖ مَا كُنتَ تَعْلَمُهَا أَنتَ وَلَا قَوْمُكَ مِن قَبْلِ هَٰذَا ۖ فَاصْبِرْ ۖ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) यह समाचार परोक्ष के समाचारों में से है जिनकी वह्यी (प्रकाशना) हम आप की ओर करते हैं, इन्हें इससे पूर्व न आप जानते थे तथा न आप का सुमदाय [2] इसलिये आप धैर्य धारण करें विश्वास कीजिये कि परिणाम संयमियों के लिये ही है ।[3]

---

[1]ये वह गुट हैं जो नाव में बच जाने वालों के वंश से क़ियामत (प्रलय) तक होंगे । अर्थ यह है कि उन काफ़िरों को दुनियाँ का क्षणिक जीवन व्यतीत करने के लिये हम दुनियाँ की सुख-सुविधा अवश्य देंगे परन्तु वे अन्त में दुखदायी यातना भी भोगेंगे ।

[2]यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बोधन है तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से परोक्ष ज्ञान को नकारा जा रहा है कि यह परोक्ष की बातें हैं जिनसे हम आपको सूचित कर रहे हैं, वरन् आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तथा आप का समुदाय उनसे अनभिज्ञ था ।

[3]अर्थात आप का समुदाय जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को झुठला रहा है तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को दुख पहुँचा रहा है, उस पर धैर्य से काम लें, इसलिये कि हम आप की सहायता करने वाले हैं, तथा सुपरिणाम आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों के लिये ही है, जो संयम के गुण से युक्त हैं । (आक़िबत) संसार तथा परलोक के सुफल को कहते हैं । इस में अल्लाह से डरने वालों के लिये शुभ सूचना है कि प्रारम्भ में उन्हें चाहे कितने भी कठिनाईयों का सामना करना पड़े, परन्तु अल्लाह तआला की सहायता एवं सुफल के वही अधिकारी हैं । जिस प्रकार से अन्य स्थान पर कहा :

﴿إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ﴾

"अवश्य हम अपने रसूलों की और विश्वास करने वालों की सहायता इस लोक के जीवन में भी करेंगे तथा उस दिन भी जब साक्षी लोग खड़े होंगे ।" (सूर: *अल-मोमिन,* ५१)

﴿وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۞ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ۞ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ﴾

"हमारा वादा पहले ही अपने रसूलों के लिए हो चुका है कि वह सफल होंगे तथा हमारी सेना ही विजेता रहेगी ।" (सूर: *अल-साफ़्फ़ात,*१७१ से १७३)

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा आद सुमदाय की ओर उनके भाई हूद को हमने भेजा,[1] उसने कहा मेरे समुदाय के लोगो ! अल्लाह ही की इबादत करो, उस के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तुम तो केवल आक्षेप लगा रहे हो ।[2]

يَٰقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾

(५१) मेरे समुदाय के लोगो ! मैं तुम से इस का कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता, मेरा बदला उसके ऊपर है जिसने मुझे पैदा किया है, तो क्या फिर भी तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ।[3]

وَيَٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा हे मेरे समुदाय के लोगो ! तुम अपने प्रभु से अपने पापों की क्षमा माँगो तथा उसके सदन में तौबा करो ताकि वह वर्षा वाले बादल तुम पर भेज दे तथा तुम्हारी शक्ति में और वृद्धि करे,[4] तथा तुम

---

[1]भाई से तात्पर्य उन्हीं के समुदाय का एक सदस्य ।

[2]अर्थात अल्लाह के साथ अन्यों को साझीदार ठहरा कर तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ रहे हो ।

[3]तथा ये नहीं समझते कि जो बिना पारिश्रमिक तथा लालच के तुम्हें अल्लाह की ओर बुला रहा है, वह तुम्हारा शुभचिन्तक है । आयत में يا قوم से आहवान की एक विधि का ज्ञान होता है, अर्थात हे काफिरो, हे मूर्तिपूजको कहने के स्थान पर हे मेरे समुदाय से सम्बोधित किया गया है ।

[4]आदरणीय हूद ने क्षमा-याचना की शिक्षा अपने वर्ग अर्थात अपने समुदाय को दी तथा उसके वे लाभ बताये, जो क्षमा-याचना करने वाली जाति को प्राप्त होते हैं । जिस प्रकार से क़ुरआन करीम में अन्य स्थानों पर ये लाभ वर्णित किये गये हैं (देखिये सूर: नूह-११) तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है :

« مَنْ لَزِمَ الِاسْتِغْفَارَ جَعَلَ اللهُ لَهُ مِنْ كُلِّ هَمٍّ فَرَجًا، وَمِنْ كُلِّ ضِيقٍ مَخْرَجًا، وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ »

पापी होकर मुख न मोड़ो ।[1]

(५३) (उन्होंने कहा) हे हूद ! तू हमारे पास कोई लक्षण तो लाया नहीं तथा हम केवल तेरे कहने से अपने देवताओं को छोड़ने वाले नहीं तथा न हम तुझ पर ईमान लाने वाले हैं ।[2]

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾

(५४) अपितु हम तो यही कहते हैं कि तू हमारे किसी देवता के बुरे झपेटे में आ गया है ।[3] उसने उत्तर दिया कि मैं अल्लाह को साक्षी बनाता हूँ तथा तुम भी साक्षी रहो

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾

"जो निरन्तर क्षमा-याचना करता है, अल्लाह तआला उसे प्रत्येक चिन्ता से मुक्ति तथा प्रत्येक तंगी से निकलने का कोई मार्ग बना देता है तथा उसको जीविका ऐसे स्थान से देता है जो उसके विचार में भी नहीं होती ।"(अबू दाऊद किताबुल वित्र बाब फ़िल इस्तिग्फ़ार संख्या १५१८, तथा इब्ने माजः संख्या ३८१९)

[1]अर्थात मैं जो तुम्हें आमन्त्रण दे रहा हूँ, उससे मुख न फेरो तथा अपने इंकार पर अडिग न रहो । ऐसा करोगे तो अल्लाह के सदन में अपराधी तथा पापी बनकर प्रस्तुत होगे ।

[2]एक नबी युक्तियों तथा तर्कों की पूरी शक्ति अपने साथ रखता है, परन्तु अंधों को वे दिखायी नहीं देते । हूद के समुदाय ने इसी दृढ़ता का प्रदर्शन करते हुए कहा कि हम बिना किसी तर्क के मात्र तेरे कहने पर अपने देवताओं को किस प्रकार छोड़ दें ?

[3]अर्थात तू जो हमारे देवताओं का अपमान तथा अनादर करता है कि वे कुछ नहीं कर सकते, लगता है कि हमारे देवताओं में से किसी ने इसी अनादर के कारण तुझे कुछ कर दिया है । तथा तू सनक गया है । जैसे आजकल के नाम के मुसलमान भी इसी प्रकार की शंकाओं के शिकार हैं, जब उन्हें कहा जाता है कि ये मृत व्यक्ति तथा महात्मा कुछ नहीं कर सकते, तो कहते हैं कि ये उन का अनादर है तथा भय है कि इस प्रकार के अपमान करने वालों को ध्वस्त कर दें ।

कि मैं तो अल्लाह के अतिरिक्त उन सब से अलग हूँ, जिन्हें तुम साझीदार बना रहे हो ।[1]

مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾

(५५) अच्छा तुम सब मिलकर मेरे विरूद्ध बुराई कर लो तथा मुझे कदापि अवसर भी न दो ।[2]

اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۭ مَا مِنْ دَاۗبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾

(५६) मेरा भरोसा केवल अल्लाह तआला पर ही है, जो मेरा प्रभु तथा तुम सब का प्रभु है, जितने भी चलने-फिरने वाले हैं सबका मस्तक वही थामे हुए है ।[3] निश्चय ही मेरा प्रभु बिल्कुल सीधे मार्ग पर है ।[4]

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَيَسْتَخْلِفُ

(५७) फिर भी तुम मुख फेरते हो तो फेरो, मैं तो तुम्हें वह सन्देश पहुँचा चुका, जो देकर मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया था ।[5] मेरा प्रभु तुम्हारे

---

[1]अर्थात मैं उन सभी मूर्तियों तथा देवताओं को नहीं मानता तथा तुम्हारा यह विश्वास कि उन्होंने मुझे कुछ कर दिया है, पूर्णरूप से अनुचित है, उनके अन्दर यह सामर्थ्य ही नहीं कि किसी को लाभ अथवा हानि पहुँचा सकें ।

[2]तथा यदि तम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं है, अपितु तुम अपने इस दावे में सच्चे हो कि ये मूर्तियाँ कुछ कर सकती हैं तो लो ! मैं उपस्थिति हूँ तुम तथा तुम्हारे देवता मिलकर मेरे विरूद्ध कुछ करके दिखाओ । और इस से नबी के उस शैली का बोध होता है कि वह कितना ज्ञानी होता है कि उसे अपने सत्य पर होने का विश्वास होता है ।

[3]अर्थात जिस शक्ति के हाथ में प्रत्येक वस्तु का अधिकार तथा नियन्त्रण है, वह वही शक्ति है, जो मेरा तथा तुम्हारा प्रभु है, मेरा भरोसा उसी पर है । उद्देश्य इन शब्दों से आदरणीय हूद अलैहिस्सलाम का यह है कि जिनको तुमने अल्लाह का साझीदार बना रखा है, उन पर भी अल्लाह ही का नियन्त्रण है, अल्लाह तआला उन के साथ जो चाहे कर सकता है, वे किसी का कुछ नहीं कर सकते ।

[4]अर्थात वह जो एकेश्वरवाद का आमन्त्रण दे रहा है, नि:संदेह यह आमन्त्रण ही सीधा मार्ग है, इसी पर चलकर मोक्ष तथा सफलता प्राप्त की जा सकती है तथा इस सीधे मार्ग से फिरना तथा विचलित होना विनाश का कारण है ।

[5]अर्थात उसके पश्चात मेरा कर्तव्य समाप्त तथा तुम पर तर्क पूर्ण हो गया ।

رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝

स्थान पर अन्य लोगों को कर देगा तथा तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे,[1] नि:संदेह मेरा प्रभु हर वस्तु का रक्षक है ।[2]

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝

(५८) तथा जब हमारा आदेश आ पहुँचा, तो हम ने हूद को तथा उसके मुसलमान साथियों को अपनी विशेष कृपा से मुक्ति प्रदान की तथा हम ने उन सब को घोर (कड़ी) यातना से बचा लिया ।[3]

وَتِلْكَ عَادٌ ۟ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝

(५९) यह था आद का समुदाय, जिन्होंने अपने प्रभु की आयतों को नकार दिया तथा उसके रसूलों की अवज्ञा की[4] तथा प्रत्येक दुष्ट अवज्ञा-

---

[1]अर्थात तुम्हें नाश करके तुम्हारी भूमि तथा सम्पत्ति का दूसरों को स्वामी बना दे, तो वह ऐसा करने का सामर्थ्य रखता है तथा तुम उस का कुछ नहीं बिगाड़ सकते । बल्कि वह अपनी इच्छा तथा विवेक के अनुसार ऐसा करता रहता है ।

[2]नि:संदेह वह मुझे तुम्हारे धोखे तथा षड्यन्त्र से सुरक्षित भी रखेगा तथा शैतानी चालों से बचायेगा । इस के अतिरिक्त प्रत्येक अच्छे तथा बुरे को उनके कर्मों के अनुसार अच्छा-बुरा फल भी देगा ।

[3]कड़ी यातना से तात्पर्य वही प्रचंड वायु का प्रकोप है, जिस के द्वारा आदरणीय हूद के समुदाय 'आद' को ध्वस्त कर दिया गया तथा जिस से आदरणीय हूद तथा उन पर ईमान लाने वालों को बचा लिया गया ।

[4]'आद' की ओर केवल एक नबी आदरणीय हूद ही भेजे गये थे । परन्तु यहाँ अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन्होंने रसूलों की अवज्ञा की । इस से या तो यह तात्पर्य हो कि एक रसूल को झुठलाना यह हुआ जैसे कि सभी को झुठलाया है । क्योंकि सभी रसूलों पर ईमान लाना अनिवार्य है । अथवा यह अर्थ है कि यह समाज अपने कुफ़्र तथा इंकार में इतनी बढ़ गयी थी कि यदि आदरणीय हूद के पश्चात कई रसूल भी भेजते तो यह समुदाय सब को झुठलाता । तथा इससे कदापि यह आशा नही थी कि वह किसी भी रसूल पर ईमान ले आता । अथवा संभव है कि और भी नबी भेजे गये हों तथा उस समुदाय ने प्रत्येक को झुठलाया हो ।

कारियों के आदेशों का पालन किया ।[1]

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा संसार में भी उनके पीछे धिक्कार लगा दिया गया तथा क़ियामत (प्रलय) के दिन भी ।[2] देख लो आद के समुदाय ने अपने प्रभु से कुफ़्र (इंकार) किया, हूद के समुदाय आद पर धिक्कार हो ।[3]

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا

(६१) तथा समूद के समुदाय की ओर उनके भाई स्वालेह को भेजा ।[4] उसने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! तुम अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नही[5] उसी ने तुम्हें धरती से पैदा किया

---

[1]अर्थात अल्लाह के पैग़म्बरों को तो झुठलाया परन्तु जो लोग अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करते थे, उन का इस समुदाय ने अनुसरण किया ।

[2]धिक्कार का अर्थ है अल्लाह की कृपा से दूरी, पुण्य के कार्यों से वंचित तथा लोगों की ओर से धिक्कार तथा विलगाव । संसार में यह धिक्कार इस प्रकार कि ईमानवालों में इन का वर्णन सदैव धिक्कार तथा विलगाव के रूप में होगा तथा क़ियामत (प्रलय) मे इस प्रकार कि वहाँ सभी के सामने अपमानित तथा अनादर का सामना करेंगे तथा अल्लाह की यातना में फसेंगे ।

[3] "بُعْدً" का यह शब्द धिक्कार तथा विनाश के अर्थ के लिये है, जैसाकि इस से पूर्व भी स्पष्ट किया जा चुका है ।

[4] وَإِلَىٰ ثَمُودَ आधारित है पूर्व पर अर्थात وَأَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ हमनें समूद की ओर भेजा । यह समुदाय तबूक तथा मदीना के मध्य मदाएन स्वालेह (अर्थात हिजर) में निवास करता था तथा यह समुदाय आद के पश्चात् हुआ । आदरणीय स्वालेह को यहाँ भी समूद का भाई कहा गया है, जिस से तात्पर्य उन्हीं के वंश तथा जाति का एक सदस्य है ।

[5]आदरणीय स्वालेह ने भी अपने समुदाय को सर्वप्रथम एकेश्वरवाद का आमन्त्रण दिया, जिस प्रकार सभी नबियों का नियम रहा है ।

فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوٓا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ﴿٦١﴾

है [1] तथा उसी ने तुम्हें इस धरती पर बसाया है ।[2] अतः तुम उस से क्षमा माँगो तथा उसकी ओर ध्यान करो। निःसंदेह मेरा प्रभु प्रार्थनाओं का स्वीकार करने वाला निकट है।

قَالُوا يَٰصَٰلِحُ قَدْ كُنتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَآ ۖ أَتَنْهَىٰنَآ أَن نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ ءَابَآؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَآ إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿٦٢﴾

(६२) उन्होंने कहा ऐ स्वालेह ! इस से पूर्व हम तुम से बहुत-सी आशायें लगाये हुए थे, क्या तू हमें उनकी पूजा-अर्चना से रोकता है, जिन की पूजा-अर्चना हमारे पूर्वज करते चले आये, हमें तो इस धर्म में सन्देह है, जिस की ओर तू हमें बुला रहा है, हम तो चकित हैं।[3]

قَالَ يَٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَءَاتَىٰنِي مِنْهُ رَحْمَةً فَمَن يَنصُرُنِي مِنَ ٱللَّهِ

(६३) उसने उत्तर दिया कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! तनिक बताओ तो यदि मैं अपने प्रभु की ओर से किसी ख़ास तर्क पर हुआ। तथा उसने मुझे अपने पास से कृपा प्रदान की हो।[4]

---

[1]अर्थात प्रारम्भ में तुम्हें धरती से पैदा किया, वह इस प्रकार कि तुम्हारे परम पिता आदम की उत्पत्ति मिट्टी से हुई तथा सभी मुनष्य आदम के वंश में पैदा हुए, इस प्रकार सभी मनुष्यों की उत्पत्ति धरती से हुई। अथवा इस का अर्थ है कि तुम जो कुछ खाते-पीते हो, सब धरती से पैदा होता है तथा उसी भोज्य पदार्थ से वीर्य बनता है, जो माता के गर्भाशय में जाकर मनुष्य के अस्तित्व का कारण बनता है।

[2]अर्थात तुम में धरती को बसाने तथा आबाद करने की शक्ति तथा गुण उत्पन्न किये, जिस से तुम रहने के लिये मकानों का निर्माण करते हो, भोजन के लिये कृषि करते हो तथा अन्य जीवन सामग्री को उपलब्ध कराने के लिये उद्योग तथा कला से काम लेते हो।

[3]अर्थात पैग़म्बर अपने समुदाय में चूँकि चरित्र, आचरण न्याय तथा सत्यता में श्रेष्ठ होता है, इसलिये समुदाय की उस से शुभ आशायें सम्बन्धित होती हैं। इसी कारण आदरणीय स्वालेह के समुदाय ने भी उन से यह कहा। परन्तु एकेश्वरवाद का आमन्त्रण देते ही उन की आशाओं का यह केन्द्र उनकी आँखों का काँटा बन गया तथा उस धर्म में शंका का प्रदर्शन किया जिसकी ओर आदरणीय स्वालेह उन्हें बुला रहे थे अर्थात एकेश्वरवादी धर्म का।

[4] بَيِّنَة से तात्पर्य वह ईमान तथा विश्वास है, जो अल्लाह तआला पैग़म्बरों को प्रदान करता है तथा कृपा से नबूअत। जैसाकि पहले व्याख्या की जा चुकी है।

فَمَا تَزِيدُونَنِي غَيْرَ تَخْسِيرٍ ﴿٦٣﴾ إِنْ عَصَيْتُهُ

फिर यदि मैंने उसकी अवज्ञा की,[1] तो कौन है जो उसके समक्ष मेरी सहायता करे ? तुम तो मेरी हानि ही में वृद्धि कर रहे हो ।[2]

وَيَا قَوْمِ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ﴿٦٤﴾

(६४) तथा ऐ मेरे समुदाय वालो ! यह अल्लाह की भेजी हुई ऊँटनी है, जो तुम्हारे लिये एक चमत्कार है, अब तुम इसे अल्लाह की धरती पर खाती हुई छोड़ दो तथा उसे किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाओ, अन्यथा शीघ्र ही तुम्हें यातना पकड़ लेगी ।[3]

فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ﴿٦٥﴾

(६५) फिर भी उन लोगों ने उस ऊँटनी के पैर काट कर (मार डाला) । इस पर स्वालेह ने कहा कि अच्छा तो तुम अपने घरों में तीन दिन तक रह लो, यह वायदा झूठा नहीं है ।[4]

---

[1]अवज्ञा से तात्पर्य यह है कि यदि मैं तुम्हें सत्य की ओर तथा एक अल्लाह की इबादत की ओर बुलाना छोड़ दूँ, जैसाकि तुम चाहते हो ।

[2]अर्थात यदि मैं ऐसा करूँ तो तुम मुझे कोई लाभ नहीं पहुँचा सकते, परन्तु इस प्रकार तुम मेरी हानि में वृद्धि करोगे ।

[3]यह वही ऊँटनी है जो अल्लाह तआला ने उन की माँग पर उनकी आँखों के सामने एक पर्वत अथवा चट्टान से निकाली । इसीलिये उसे 'अल्लाह की ऊँटनी' कहा गया है क्योंकि वह मात्र अल्लाह के आदेश से चमत्कारिक रूप से अस्वभाविक विधि से प्रकट हुई थी । उस के लिये उन्हें निर्देशित कर दिया गया था कि इसे कष्ट न पहुँचाओ, वरन् तुम अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ जाओगे ।

[4]परन्तु वे अत्याचारी इस विशिष्ट चमत्कार के प्रदर्शित होने के उपरान्त भी न केवल ईमान ही नहीं लाये, अपितु अल्लाह के निर्देशों की भी अवहेलना करके उसे मार डाला, जिस के पश्चात् उन्हें तीन दिन का समय दे दिया गया कि तीन दिन के उपरान्त तुम्हें अल्लाह के प्रकोप के द्वारा नष्ट कर दिया जायेगा ।

(६६) फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा,[1] हम ने स्वालेह तथा उन पर ईमान लाने वालों को अपनी कृपा से उस से भी बचा लिया तथा उस दिन के अपमान से भी। नि:संदेह तुम्हारा प्रभु शक्तिशाली तथा प्रभावशाली है।

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَٰلِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿٦٦﴾

(६७) तथा अत्याचारों को बड़ी तीब्र कड़क ने आ दबोचा,[2] फिर तो वह अपने घरों में मुँह के बल मरे पड़े हुए रह गये।[3]

وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٦٧﴾

(६८) इस प्रकार कि जैसे वे वहाँ कभी आबाद न थे।[4] सावधान रहो कि समूद के समुदाय ने अपने प्रभु से कुफ्र किया। सुन लो, उन समूद वालों पर धिक्कार है।

كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا إِنَّ ثَمُودَا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّثَمُودَ ﴿٦٨﴾

(६९) तथा हमारे भेजे हुए संदेशवाहक इब्राहीम के पास शुभसूचना लेकर पहुँचे[5] तथा सलाम

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ

---

[1]इससे तात्पर्य वही प्रकोप है जो वचनानुसार चौथे दिन आया तथा आदरणीय स्वालेह तथा उन पर ईमान लाने वालों के अतिरिक्त सभी को मार दिया गया।

[2]यह प्रकोप चीख़ तथा तीब्र कड़क के रूप में आया, कुछ के निकट यह आदरणीय जिब्रील की चीख थी तथा कुछ के निकट आकाश से आयी थी जिससे उनके दिल क्षिन्न-भिन्न हो गये तथा वे मर गये, उस के पश्चात् अथवा उसके साथ भूकम्प भी आया, जिस ने सब कुछ ऊपर-नीचे कर दिया। जैसाकि *सूर: आराफ़*-७८ के शब्द हैं।

[3]जिस प्रकार पक्षी मरने के पश्चात् धरती पर मिट्टी के साथ पड़ा होता है, उसी प्रकार यह मर कर मुँह के बल धरती पर पड़े हुए थे।

[4]उन की बस्ती अथवा ये लोग अथवा ये दोनों ही, इस प्रकार मिटा दिये गये कि उनका नामोनिशान शेष न रह गया, जैसे कि वे कभी वहाँ बसे भी नहीं थे।

[5]यह वास्तव में आदरणीय लूत तथा उनके समुदाय की घटना का एक भाग है। आदरणीय लूत आदरणीय इब्राहीम के चाचा के पुत्र थे। आदरणीय लूत की बस्ती 'मृत्यु सागर' के दक्षिण-पूर्व में थी जबकि आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़िलिस्तीन में निवास कर रहे थे। जब आदरणीय लूत के समुदाय को समाप्त करने का निर्णय ले लिया गया तो उनकी

بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ۝

कहा [1] उन्होंने भी सलाम का उत्तर दिया [2] तथा बिना किसी देर के गाय का भूना हुआ बच्चा ले आये।[3]

فَلَمَّا رَآٰ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ۝

(७०) अब जो देखा कि उन के तो हाथ भी उसकी ओर नहीं पहुँच रहे, तो उन्हें अनजान पाकर दिल ही दिल में उनसे भयभीत होने लगे।[4] उन्होंने कहा डरो नहीं, हम तो लूत के समुदाय की ओर भेजे हुए आये हैं।[5]

ओर फ़रिश्ते भेजे गये। ये फ़रिश्ते लूत के समुदाय की ओर जाते समय मार्ग में आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास ठहरे तथा उन्हें पुत्र की शुभसूचना दी।

[1]अर्थात سلمنا عليك سلاما "हम आपको सलाम करते हैं।"

[2]जिस प्रकार प्रथम सलाम एक लुप्त क्रिया के साथ जबर की स्थिति में था उसी प्रकार سلام यह उद्देश्य अथवा विधेय के कारण पेश की स्थिति में है। वाक्य होगा। أمركم سلام – عليكم سلام

[3]आदरणीय इब्राहीम अतिथियों का अत्यधिक सत्कार करते थे। वह यह नहीं समझ सके कि यह फ़रिश्ते हैं, जो मानव के रूप में आये हैं तथा खाते-पीते नहीं हैं बल्कि उन्होंने उन्हें अतिथि समझा तथा तुरन्त अतिथियों की सेवा-सत्कार के लिये बछड़े का भुना हुआ माँस उन की सेवा में प्रस्तुत किया। इससे यह भी पता चलता है कि अतिथि से पूछने की आवश्यकता नहीं बल्कि जो उपलब्ध हो सेवा में प्रस्तुत कर दिया जाये।

[4]आदरणीय इब्राहीम ने जब देखा कि उन के हाथ खाने की वस्तुओं की ओर नहीं बढ़ रहे हैं तो उन्हें भय प्रतीत हुआ। कहते हैं कि उन के यहाँ यह बात प्रसिद्ध थी कि आया हुआ अतिथि यदि भोजन का लाभ न उठाये, तो समझा जाता था कि आने वाला अतिथि अच्छे विचार से नहीं आया है। इस से यह भी ज्ञात हुआ कि अल्लाह के पैग़म्बरों को परोक्ष का ज्ञान नहीं होता। यदि इब्राहीम अलैहिस्सलाम परोक्ष के जानने वाले होते, तो बछड़े का भुना हुआ माँस भी न लाते तथा उन से भयभीत भी न होते।

[5]इस भय का फ़रिश्तों ने आभास किया, या तो उन लक्षणों से जो ऐसे अवसरों पर मनुष्य के मुख पर प्रदर्शित होते हैं अथवा अपनी वार्तालाप में आदरणीय इब्राहीम ने इसका चर्चा किया, जैसाकि अन्य स्थान पर स्पष्टीकरण है ﴿اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ﴾ "हमें तो तुम से भय लगता है।" (*सूरः अल-हिज्र*,५२) अतः फ़रिश्तों ने कहा डरो नहीं, आप जो समझ रहे हैं,

(७१) तथा उसकी पत्नी जो खड़ी हुई थी वह हँस दी,[1] तो हम ने उसे इसहाक़ की तथा उसके पश्चात् याक़ूब की शुभसूचना दी।

وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾

(७२) वह कहने लगी वाह ! मेरे यहाँ संतान हो सकती है, मैं स्वयं बुढ़िया तथा मेरे पति भी अति दीर्घ आयु के हैं, यह निःसंदेह अत्यधिक आश्चर्य की बात है।[2]

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾

(७३) (फ़रिश्तों ने) कहा कि क्या तू अल्लाह के सामर्थ्य से आश्चर्य कर रही है,[3] तुम पर हे इस घर के लोगों ! अल्लाह की कृपा तथा उस की विभूतियाँ उतरे,[4] निःसंदेह अल्लाह ही के लिये सारी प्रशंसायें तथा महिमा है।

قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾

हम वह नहीं हैं, बल्कि हम अल्लाह के फ़रिश्ते हैं तथा हम लूत के समुदाय की ओर जा रहे हैं।

[1]आदरणीय इब्राहीम की पत्नी क्यों हँसी ? कुछ लोग कहते हैं कि लूत के समुदाय के उपद्रव से वह भी अवगत थी, उन के विनाश की सूचना पाकर वह भी प्रसन्न हुई। कुछ कहते हैं कि इस लिये हँसी आयी कि देखो आकाश से उनके विनाश का निर्णय हो चुका है तथा यह समुदाय अब भी निश्चिंत है। तथा कुछ कहते हैं कि इस हँसने का सम्बन्ध उस शुभसूचना से है, जो फ़रिश्तों ने इस बूढ़े जोड़े को दी।

[2]यह पत्नी आदरणीय सारह थीं, जो स्वयं भी बूढ़ी थीं तथा उनके पति आदरणीय इब्राहीम भी बूढ़े थे, इसलिये आश्चर्य एक स्वाभाविक बात थी, जिसे उन्होंने व्यक्त किया।

[3]यह प्रश्न नकारात्मक है। अर्थात तू अल्लाह तआला के न्याय तथा निर्णय पर किस प्रकार आश्चर्य का प्रदर्शन करती हो, जबकि उसके लिये कोई कार्य कठिन नहीं। तथा उसे सामयिक साधनों की आवश्यकता नहीं। वह तो जो चाहे, उस के केवल शब्द (कुन) (हो जा) से प्रदर्शन अस्तित्व में आ जाता है।

[4]आदरणीय इब्राहीम की पत्नी को यहाँ पर फ़रिश्तों ने أهل بيت (अहले बैत) (घर वाले) कहा है तथा उन्हें पुल्लिंग बहुवचन عليكم से सम्बोधित किया है। जिस से एक बात तो यह सिद्ध हो गई कि 'अहले बैत' में किसी भी व्यक्ति की पत्नी सर्वप्रथम सम्मिलित होती

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَٰهِيمَ ٱلرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ ٱلْبُشْرَىٰ يُجَٰدِلُنَا فِى قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾

(७४) जब इब्राहीम का भय समाप्त हो गया तथा उसे शुभसूचना भी पहुँच चुकी तो हम से लूत के समुदाय के विषय में कहने सुनने लगे ।[1]

إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّٰهٌ مُّنِيبٌ ﴿٧٥﴾

(७५) नि:संदेह इब्राहीम अत्यधिक धैर्यवान तथा कोमल हृदय तथा अल्लाह की ओर झुकने वाले थे ।

يَٰٓإِبْرَٰهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَآ ۖ إِنَّهُۥ قَدْ جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ ءَاتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾

(७६) हे इब्राहीम ! इस विचार को त्याग दो, आपके प्रभु का आदेश आ पहुँचा है, तथा उन पर न लौटायी जाने वाली यातना अवश्य आने वाली है ।[2]

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِىٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते लूत के पास पहुँचे तो वह उनके कारण अत्यधिक दुखी हो गये तथा दिल ही दिल में दुखी होने लगे तथा कहने लगे कि आज का दिन अत्यधिक दुखों का दिन है ।[3]

है । दूसरी यह कि अहले बैत के लिए पुल्लिंग बहुवचन का प्रयोग करना भी उचित है । जैसाकि *सूर: अहज़ाब* आयत संख्या ३३ में अल्लाह तआला ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों को भी अहले बैत कहा है तथा उन्हें पुरूषवाचक बहुवचन सर्वनाम से सम्बोधित भी किया है ।

[1]इस वार्तालाप से तात्पर्य यह है कि आदरणीय इब्राहीम ने फ़रिश्तों से कहा कि जिस वस्ती को ध्वस्त करने तुम जा रहे हो, उसी में आदरणीय लूत भी उपस्थिति हैं । जिस पर फ़रिश्तों ने उत्तर दिया "हम जानते हैं कि लूत भी वहीं रहते हैं । परन्तु हम उन को तथा उन के परिवार को सिवाय उन की पत्नी के बचा लेंगे ।" (*सूर: अल-अनकबूत*, ३२)

[2]यह फ़रिश्तों ने आदरणीय इब्राहीम से कहा कि अब इस वार्तालाप से कोई लाभ नहीं, उसे छोड़िये ! अल्लाह का वह आदेश (विनाश का) आ चुका है, जो अल्लाह के यहाँ भाग्य में था । तथा अब यह प्रकोप न किसी की वार्तालाप से रूकेगा, न किसी प्रार्थना से टलेगा ।

[3]आदरणीय लूत की इस अत्यधिक व्याकुलता का कारण व्याख्याकारों ने यहाँ लिखा है कि यह फ़रिश्ते बिना दाढ़ी-मूँछ के नवयुवक के रूप में आये थे जिससे आदरणीय लूत ने

(७८) तथा उस का समुदाय उस की ओर दौड़ता हुआ, आया वह तो पहले ही से कुकर्मों में लीन था ।[1]लूत ने कहा कि ऐ मेरे समुदाय के लोगो ! ये हैं मेरी पुत्रियाँ जो तुम्हारे लिये अत्यधिक पवित्र हैं ।[2] अल्लाह से डरो तथा मुझे मेरे अतिथियों के विषय में अपमानित न करो । क्या तुम में एक भी भला आदमी नहीं है ।[3]

وَجَآءَهٗ قَوۡمُهٗ يُهۡرَعُوۡنَ اِلَيۡهِ ؕ وَمِنۡ قَبۡلُ كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوۡمِ هٰٓؤُلَاۤءِ بَنَاتِىۡ هُنَّ اَطۡهَرُ لَـكُمۡ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخۡزُوۡنِ فِىۡ ضَيۡفِىۡ ؕ اَلَيۡسَ مِنۡكُمۡ رَجُلٌ رَّشِيۡدٌ ۝

(७९) उन्होंने उत्तर दिया कि तू भली-भाँति जानता है कि हमें तो तेरी पुत्रियों पर कोई

قَالُوۡا لَقَدۡ عَلِمۡتَ مَا لَنَا فِىۡ بَنٰتِكَ مِنۡ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ

अपने समुदाय के दुराचार के कारण भय का आभास किया । क्योंकि उन को यह ज्ञात नहीं था कि आने वाले ये नवयुवक अतिथि नहीं हैं, अपितु अल्लाह की ओर से भेजे हुए फ़रिश्ते हैं, जो इस समुदाय को विनाश करने के लिये ही आये हैं ।

[1]जब बाल मैथुन के इन रोगियों को पता चला कि कुछ सुन्दर युवक लूत के घर आये हैं तो दौड़े हुए आये तथा उन्हें अपने साथ ले जाने के लिये बाध्य करने लगे ताकि वे अपनी काम वासना की पूर्ति करें ।

[2]अर्थात यदि तुम्हें काम वासना की संतृप्ति करनी है, तो उस के लिये मेरी अपनी पुत्रियाँ हैं, जिन से तुम विवाह करके अपना उद्देश्य पूरा कर लो । यह तुम्हारे लिये हर प्रकार से श्रेष्ठ हैं । कुछ ने कहा कि पुत्रियाँ से तात्पर्य समाज की सामान्य स्त्रियाँ हैं, तथा उन्हें अपनी पुत्रियाँ इसलिये कहा गया कि पैग़म्बर अपने समुदाय के पिता समान होता है । अर्थ यह है कि इस काम वासना के लिये स्त्रियाँ हैं, उनसे विवाह करो तथा अपना उद्देश्य पूर्ण करो । (इब्ने कसीर)

[3]अर्थात मेरे घर आये अतिथियों के साथ दुर्व्यवहार एवं बल प्रयोग करके मुझे अपमानित न करो । क्या तुम में से एक भी व्यक्ति समझदार नहीं है जो अतिथि सत्कार के नियमों को समझे ? तथा तुम्हारे बुरे उद्देश्य से तुम्हें रोक सके ? आदरणीय लूत ने यह सारी बातें इस आधार पर कीं कि उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि ये वास्तव में फ़रिश्ते हैं, वह उन्हें नव आगन्तुक तथा यात्री ही समझते रहे । इसलिये उचित रूप से उनकी सुरक्षा को अपने आदर तथा सम्मान के लिये आवश्यक समझते रहे । यदि उनको ज्ञात हो जाता अथवा परोक्ष का ज्ञान होता, तो स्पष्ट बात है कि उन को यह व्याकुलता कदापि प्रतीत न होती, जो उन्हें हुई तथा जिस का दृश्य यहाँ क़ुरआन मजीद में खींचा गया है ।

لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ۝٧٩

अधिकार ही नहीं तथा तू हमारी मूल इच्छा से भली-भाँति परिचित है।[1]

قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۝٨٠

(८०) लूत ने कहा कि काश कि मुझ में तुम से लड़ने की शक्ति होती अथवा मैं किसी सुदृढ़ शरण में होता।[2]

قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ

(८१) अब फ़रिश्तों ने कहा हे लूत ! हम तेरे प्रभु के भेजे हुए हैं, असंभव है ये तुझ तक पहुँच जायें, बस तू अपने घरवालों को लेकर कुछ रात रहते निकल खड़ा हो। तुम में से

---

[1]अर्थात एक उचित तथा स्वाभाविक नियम को उन्होंने बिल्कुल रद्द कर दिया तथा अस्वाभाविकता एवं असभ्यता पर बल दिया, जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वह समुदाय अपनी असभ्यता के कुकर्म में कितना बढ़ गया था तथा किस प्रकार अंधा हो गया था।

[2]शक्ति से अपने बाहुबल तथा अपने संसाधन की शक्ति तथा संतान की शक्ति तात्पर्य है तथा सुदृढ़ शरण से परिवार, क़बीला अथवा इसी प्रकार का कोई सुदृढ़ सहारा तात्पर्य है। अर्थात अति विवशता की अवस्था में कामना कर रहे हैं कि काश मेरे पास अपनी कोई शक्ति होती अथवा क़िसी परिवार अथवा क़बीले की शरण अथवा सहायता मुझे प्राप्त होती तो आज अतिथियों के कारण यह अपमान तथा अनादर न होता, मैं इन कुकर्मियों से निपट लेता तथा अतिथियों की सुरक्षा कर लेता। आदरणीय लूत की यह कामना, अल्लाह तआला पर भरोसा के विरूद्ध नहीं है। अपितु प्रत्यक्ष साधन के अनुकूल है। तथा अल्लाह तआला पर भरोसा का उचित अर्थ भी यही है कि पहले सभी स्पष्ट कारणों तथा साधनों का प्रयोग में लाया जाये तथा फिर अल्लाह पर भरोसा किया जाये। यह भरोसे का गलत अर्थ है कि हाथ-पैर तोड़कर बैठ जाओ तथा कहो कि हमारा भरोसा अल्लाह पर है। इसलिए आदरणीय लूत ने जो कुछ कहा, प्रत्यक्ष साधनों के आधार पर पूर्णरूप से उचित कहा। जिससे यह बात ज्ञात होती है कि अल्लाह का पैग़म्बर जिस प्रकार परोक्ष का जानने वाला नहीं होता, उसी प्रकार वह पूर्ण अधिकार वाला भी नहीं होता (जैसाकि आजकल लोगों ने यह विश्वास गढ़ लिया है)। यदि नबी दुनियाँ में अधिकार पूर्ण होते तो निःसंदेह आदरणीय लूत अपनी निस्सहाय स्थिति का तथा इस कामना का प्रदर्शन न करते जो उन्होंने वर्णित शब्दों में की।

أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتَكَ ۖ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ ۚ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۚ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾

किसी को मुड़कर भी नहीं देखना चाहिये, सिवाय तेरी पत्नी के, इसलिये कि उसे भी वही पहुँचने वाला है, जो सब को पहुँचेगा, नि:संदेह उनके वायदे का समय प्रात: का है, क्या प्रात: अति निकट नहीं ?[1]

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ﴿٨٢﴾

(८२) फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, हमने उस बस्ती को उलट-पलट कर दिया। ऊपर का भाग नीचे कर दिया तथा उन पर कंकड़ीले पत्थरों की वर्षा की जो तह पर तह थे।

مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۖ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾

(८३) तेरे प्रभु की ओर से चिन्हित थे तथा वे उन अत्याचारियों से तनिक भी दूर न थे।[2]

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ

(८४) तथा हमने मदयन वालों की ओर [3] उन के भाई शुऐब को भेजा, उस ने कहा हे मेरे समुदाय के लोगो ! अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं,तथा तुम नाप-तौल में भी कमी न करो।[4] मैं तुम्हें

---

[1]जब फ़रिश्तों ने आदरणीय लूत की विवशता तथा उनके समुदाय की दुष्टता को देखा तो बोले, ऐ लूत ! घबराने की आवश्यकता नहीं है, हम तक तो क्या अब ये तुझ तक भी नहीं पहुँच सकते। अब रात्रि के एक भाग में अपनी पत्नी के सिवाय अपने घरवालों को लेकर यहाँ से निकल जा। प्रात: होते ही इस बस्ती को ध्वस्त कर दिया जायेगा।

[2]इस आयत में هِيَ का सम्बंध कुछ व्याख्याकारों के निकट चिन्हित कंकड़ीले पत्थर से है जो उन पर बरसाये गये तथा कुछ के निकट इसका सम्बन्ध उन बस्तियों से है जो ध्वस्त कर दी गयीं तथा जो सीरिया तथा मदीना के मध्य थीं तथा अत्याचारियों से तात्पर्य मक्का के मूर्तिपूजक तथा अन्य झूठे हैं। उद्देश्य उनको डराना है कि तुम्हारा परिणाम भी वैसा हो सकता है जिस का विगत समुदायों को सामना करना पड़ा।

[3]मदयन के शोध के लिये देखिये *सूर: अल-आराफ़* आयत संख्या ८५ की व्याख्या।

[4]एकेश्वरवाद का आमंत्रण देने के पश्चात् उस समुदाय में जो खुली चारित्रक ख़राबी नाप-तौल में कमी की थी, उस से उन्हें रोका। उन का यह व्यवहार था कि यदि कोई

सम्पन्न देख रहा हूँ[1] तथा मुझे तुम पर घेरने वाले दिन के प्रकोप का भय भी है ।[2]

وَإِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٖ مُّحِيطٖ ۝٨٤

(८५) ऐ मेरे समुदाय के लोगो ! नाप-तौल न्यायपूर्वक पूरा-पूरा करो, लोगों को उनकी वस्तुएं कम न दो,[3] तथा धरती में उपद्रव तथा आतंक न मचाओ ।[4]

وَيَٰقَوۡمِ أَوۡفُواْ ٱلۡمِكۡيَالَ وَٱلۡمِيزَانَ بِٱلۡقِسۡطِۖ وَلَا تَبۡخَسُواْ ٱلنَّاسَ أَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تَعۡثَوۡاْ فِي ٱلۡأَرۡضِ مُفۡسِدِينَ ۝٨٥

(८६) अल्लाह तआला का हलाल किया हुआ शेष लाभ तुम्हारे लिये बहुत ही उत्तम है यदि

بَقِيَّتُ ٱللَّهِ خَيۡرٞ لَّكُمۡ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَۚ وَمَآ أَنَا۠

उन के पास कोई वस्तु विक्रय करने के लिये आता तो उस से अधिक वस्तु ले लेते तथा यदि कोई ग्राहक ख़रीदने आता तो उस से नाप-तौल में कमी करते ।

[1]यह उस मना करने का कारण है कि जब तुम पर अल्लाह की कृपा बनी हुई है तथा उसने सम्पन्नता तथा धन-धान्य से परिपूर्ण किया है तो फिर तुम में यह दुराचार क्यों है ?

[2]यह दूसरा कारण है यदि तुम अपने उस व्यवहार से न रूके, तो फिर संभव है कि क़ियामत के दिन की यातना से तुम न बच सकोगे । घेरने वाले दिन से तात्पर्य प्रलय का दिन है कि उस दिन कोई पापी अल्लाह की पकड़ से न बच सकेगा, न भाग कर कहीं छिप सकेगा ।

[3]अब बलपूर्वक न्याय के साथ उन्हें पूरा-पूरा तौलने-नापने का आदेश दिया जा रहा है तथा लोगों को वस्तुएँ कम करके देने से रोका जा रहा है । क्योंकि अल्लाह के समक्ष यह भी महा अपराध है तथा अल्लाह तआला ने एक पूरी सूर: में इस अपराध के लक्षण दोष तथा उसके पारलौकिक दण्डों का वर्णन किया है ।

﴿ وَيۡلٞ لِّلۡمُطَفِّفِينَ ۞ ٱلَّذِينَ إِذَا ٱكۡتَالُواْ عَلَى ٱلنَّاسِ يَسۡتَوۡفُونَ ۞ وَإِذَا كَالُوهُمۡ أَو وَّزَنُوهُمۡ يُخۡسِرُونَ ﴾

"मुतफ़्फ़ेफ़ीन अर्थात नाप-तौल में घटा-बढ़ा करने वालों के लिये विनाश है । ये वे लोग हैं जो लोगों से जब कोई वस्तु लेते हैं, तो पूरी लेते हैं तथा जब दूसरों को नाप अथवा तौल कर देते हैं, तो कम कर के देते हैं ।" (*सूर: मुतफ़्फ़ेफ़ीन*)

[4]अल्लाह की अवज्ञा से, विशेषरूप से जिन का सम्बन्ध व्यक्ति के अधिकार से हो, जैसे यहाँ नाप-तौल में कमी तथा अधिकता में है, धरती पर अवश्य बिगाड़ तथा उपद्रव उत्पन्न होता है, जिस से उन्हें रोका गया है ।

عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾

तुम ईमानदार हो।[1] मैं कोई तुम्हारा संरक्षक (तथा अधिकारी) नहीं हूँ।[2]

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ۭ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾

(८७) उन्होंने उत्तर दिया कि हे शुऐब ! क्या तेरी सलात[3] तुझे यही आदेश देती है कि हम अपने पूर्वजों के देवताओं को छोड़ दें तथा हम अपने माल में जो कुछ करना चाहे उस का करना भी छोड़ दें।[4] तू तो अति सम्मानित तथा सतकर्मी है।[5]

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰي بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ

(८८) कहा कि ऐ मेरे समुदाय ! देखो तो यदि मैं अपने प्रभु की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण लिए हुए हूँ तथा उसने अपने पास से उत्तम

---

[1] بقيت الله से तात्पर्य वह लाभ है जो नाप-तौल में किसी प्रकार की कमी किये बिना ईमानदारी के साथ सौंदा देने के पश्चात् प्राप्त होता है। यह चूँकि हलाल तथा पवित्र है तथा पुण्य एवं शुभ भी इसी में है, इसलिये अल्लाह का शेष कहा गया है।

[2]अर्थात मैं तुम्हें केवल सावधान तथा सतर्क कर सकता हूँ तथा वह अल्लाह के आदेश से कर रहा हूँ। परन्तु बुराईयों से तुम्हें रोक दूँ अथवा उस पर दण्ड दूँ, यह मेरे अधिकार में नहीं है। इन दोनों बातों का अधिकार केवल अल्लाह को है।

[3] صَلٰوةٌ से तात्पर्य इबादत, धर्म अथवा क़ुरआन पढ़ना है।

[4]इससे तात्पर्य कुछ व्याख्याकारों के निकट ज़कात तथा दान है, जिन का आदेश प्रत्येक दैवी धर्मों में दिया गया है। अल्लाह के आदेश से ज़कात तथा दान का निकालना, अल्लाह के अवज्ञाकारियों को कष्टदायक होता है तथा वह समझते हैं कि जब हम अपने परिश्रम तथा योग्यता से माल कमाते हैं, तो उस को ख़र्च करने अथवा न करने पर हम पर प्रतिबन्ध क्यों हो ? तथा उस का एक निर्धारित भाग निकालने पर हमें बाध्य क्यों किया जाये ? इसी प्रकार से कमाई तथा व्यापार में वैध तथा अवैध एवम् उचित तथा अनुचित का प्रतिबन्ध भी ऐसे लोगों को अत्यन्त कष्टपद्र लगता है। सम्भव है कि नाप-तौल में कमी से रोकने को भी उन्होंने अपने अर्थ-उपभोग में हस्तक्षेप समझा हो। तथा इन शब्दों में उसे अस्वीकार किया हो। दोनों ही भावार्थ इस के उचित हैं।

[5]आदरणीय शुऐब के लिये ये शब्द उन्होंने उपहास के रूप में प्रयोग किये।

إِلَىٰ مَآ أَنْهَىٰكُمْ عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيقِيٓ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾

जीविका दे रखी है,[1] मेरी कदापि यह इच्छा नहीं कि तुम्हारा विरोध करके स्वयं उस वस्तु की ओर झुक जाऊँ जिससे तुम्हें रोक रहा हूँ,[2] मेरा विचार तो अपनी शक्ति भर सुधार करने का ही है।[3] तथा मेरी सन्मति अल्लाह ही की सहायता से है,[4] उसी पर मेरा भरोसा है तथा उसी की ओर मैं आकर्षित हूँ।

وَيَٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيٓ أَن يُصِيبَكُم مِّثْلُ مَآ أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَٰلِحٍ ۚ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنكُم بِبَعِيدٍ ﴿٨٩﴾

(८९) तथा ऐ मेरे समुदाय (के लोगो) ! कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरे विरोध में आकर उन यातनाओं के पात्र हो जाओ, जो नूह के समुदाय तथा हूद के समुदाय एवं स्वालेह के समुदाय को आयीं।[5] तथा लूत का समुदाय तो तुम से तनिक दूर नहीं।

وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوٓا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा तुम अपने प्रभु से क्षमा-याचना करो तथा उसकी ओर झुक जाओ, विश्वास करो कि मेरा प्रभु अत्यधिक कृपालु एवं अत्यधिक प्रेम करने वाला है।

---

[1]उत्तम जीविका का दूसरा अर्थ नबूअत भी वर्णन किया गया है।

[2]अर्थात जिस काम से मैं तुम्हें रोकूँ, तुम से छिपकर, वह मैं स्वयं करूँ, ऐसा नहीं हो सकता।

[3]मैं तुम्हें जिस कार्य के करने अथवा जिससे रूकने का आदेश देता हूँ, इससे उद्देश्य अपनी शक्ति भर तुम्हारा सुधार ही है।

[4]अर्थात सत्य तक पहुँचने का जो मेरा लक्ष्य है, वह अल्लाह की इच्छा से संभव है, इसलिये सभी मामलों में मेरा भरोसा उसी पर है तथा उसी की ओर मैं ध्यान केन्द्रित करता हूँ।

[5]अर्थात उन का स्थान तुम से दूर नहीं, अथवा उस कारण मैं तुम से दूर नहीं, जो उन के ऊपर प्रकोप का कारण बना।

(९१) उन्होंने कहा हे शुऐब ! तेरी अधिकाँश बातें हमारी समझ में नहीं आतीं,[1] तथा हम तो तुझे अपने अंदर बहुत निर्बल पाते हैं ।[2] यदि तेरे क़बीले का आदर न होता तो हम तो तुझे पथराव कर देते,[3] तथा हम तुझे कोई सम्मानित व्यक्ति नहीं समझते[4] ।

قَالُوا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرٰكَ فِينَا ضَعِيفًا ۖ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۖ وَمَآ أَنتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ﴿٩١﴾

(९२) उन्होंने उत्तर दिया कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! क्या तुम्हारे निकट मेरे क़बीले के लोग अल्लाह से भी अधिक सम्मानित हैं कि तुम ने उसे पीठ के पीछे डाल दिया है ।[5]

قَالَ يٰقَوْمِ أَرَهْطِىٓ أَعَزُّ عَلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۖ إِنَّ رَبِّى بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٩٢﴾

---

[1]यह या तो उन्होंने उपहास स्वरूप तथा अपमान के लिये कहा, जबकि बातें द्विवोध नहीं थीं । इस अवस्था में वोध का इंकार अवास्तविक होगा अथवा उनका उद्देश्य उन बातों के समझने से विवशता व्यक्त करना है जिनका सम्बंध परोक्ष से है, जैसे मरने के पश्चात् जीवित होना, क़ियामत के निर्णय तथा न्याय, स्वर्ग-नरक आदि । इस आधार पर समझ से असमर्थता वास्तविक होगी ।

[2]यह निर्बलता शारीरिक आधार पर थी, जैसा कि कुछ का विचार है कि आदरणीय शुऐब की दृष्टि कमज़ोर थी अथवा वह क्षीण तथा शारीरिक रूप से कमज़ोर थे अथवा इस आधार पर उन्हें कमज़ोर कहा कि वह स्वयं भी विरोधियों का अकेले सामना करने की शक्ति नहीं रखते थे ।

[3]आदरणीय शुऐब का वंश कहा जाता है कि उनका सहायक नहीं था, परन्तु वह क़बीला कुफ़्र (अधर्म) तथा शिर्क में अपने समुदाय के साथ था, इसलिये अपना सहधर्मी होने के कारण उस जाति का आदर, अन्ततः आदरणीय शुऐब के साथ कड़ा व्यवहार तथा उन्हें हानि पहुँचाने में बाधक था ।

[4]परन्तु चूँकि तेरे क़बीले का सम्मान किसी भी प्रकार से हमारे दिलों में है, इसलिये हम तुम्हें छोड़ रहे हैं ।

[5]कि तुम मुझे मेरी जाति के कारण क्षमाकर रहे हो । परन्तु जिस अल्लाह ने मुझे नबूअत के सम्मान से विभूषित किया है, उसका कोई सम्मान तथा पद की गरिमा का कोई आदर तुम्हारे दिलों में नहीं है तथा तुमने उसे पीठ के पीछे डाल दिया है । यहाँ आदरणीय शुऐब ने ﴿أَعَزُّ عَلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ﴾ (अल्लाह से अधिक आदरणीय) कहा जिससे यह बताना उद्देश्य है

नि:संदेह मेरा प्रभु जो कुछ तुम कर रहे हो सबको घेरे हुए है।

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾

(९३) तथा ऐ सामुदायिक (भाईयो) ! अब तुम अपने स्थान पर कार्य किये जाओ, मैं भी कार्य कर रहा हूँ, तुम्हें निकट में ज्ञात हो जायेगा कि किस के पास वह यातना आती है जो उसे अपमानित कर दे तथा कौन है जो झूठा है ? तुम प्रतीक्षा करो तथा मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।[1]

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۙ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा जब हमारा आदेश (प्रकोप) आ पहुँचा, हमने शुऐब को तथा उनके साथ सभी ईमानवालों को अपनी विशेष कृपा से मुक्ति प्रदान की तथा अत्याचारियों को कड़ी ध्वनि की यातना ने आ दबोचा,[2] जिस से वह अपने घरों में औंधे पड़े हुए शेष हो गये।

कि नबी का उपहास वास्तव में अल्लाह का उपहास है। इसलिये कि नबी अल्लाह का दूत होता है। तथा इसी आधार पर अब सत्यवादी आलिमों (धर्मज्ञानियों) का अपमान तथा उनकी हीनाई यह अल्लाह के धर्म का अपमान तथा उसकी हीनाई है, इसलिये कि वे अल्लाह के धर्म के प्रतिनिधि हैं। واتخذتموه में सर्वनाम का संकेत अल्लाह की ओर है तथा अर्थ यह है कि अल्लाह के उस मामले को जिसे लेकर उस ने मुझे भेजा है, उसे तुम ने अपमानित कर दिया है तथा उस की तुम ने कोई चिन्ता नहीं की।

[1]जब उन्होंने देखा कि यह समुदाय अपने कुफ़्र (अविश्वास) तथा अनेकेश्वरवाद पर अडिग है तथा शिक्षा-दीक्षा का भी कोई प्रभाव नहीं हो रहा तो कहा अच्छा तुम अपने मार्ग पर चलते रहो, निकट में ही तुम्हें सत्य-असत्य का तथा इस बात का कि अपमानित करने वाला प्रकोप का अधिकारी कौन है ? ज्ञान हो जायेगा।

[2]इसी चीख़-चिंघाड़ से उन के दिल खन्ड-खन्ड हो गये तथा वे मर गये, उस के पश्चात् भूकम्प भी आया, जैसाकि *सूरः आराफ़*-९१ तथा *सूरः अनकबूत*-३७ में है।

كَأَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ﴿٩٥﴾

(९५) जैसेकि वह उन घरों में कभी बसे ही न थे, सावधान रहो, मदयन के लिये भी वैसी ही दूरी[1] हो जैसी दूरी समूद की हुई।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٩٦﴾

(९६) तथा निश्चय ही हम ने मूसा को अपनी आयतों तथा ज्योर्तिमय प्रमाणों के साथ भेजा था।[2]

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ﴿٩٧﴾

(९७) फ़िरऔन तथा उसके मुखियाओं की ओर[3] ओर, फिर भी उन लोगों ने फ़िरऔन के आदेशों का पालन किया तथा फ़िरऔन का कोई आदेश उचित तथा ठीक था ही नहीं।[4]

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْرَدَهُمُ

(९८) वह तो क़ियामत (प्रलय) के दिन अपनी जाति का अगुवा बनकर उन सब को नरक

---

[1]अर्थात धिक्कार, फटकार, अल्लाह की कृपा से वंचित तथा दूरी।

[2]'आयात' से कुछ के निकट धर्मशास्त्र (तौरात) तथा 'सुलतानिम मोबीन' से चमत्कार तात्पर्य है तथा कुछ के निकट 'आयात' से 'नौ निशानियाँ' तथा 'सुलतानिम मोबीन' (ज्योर्तिमय प्रमाण) से छड़ी तात्पर्य है। छड़ी यद्यपि 'नौ निशानियों' में सम्मिलित है, परन्तु यह चमत्कार चूँकि अत्यधिक भव्य था, इसलिये विशेषरूप से वर्णन किया गया है।

[3] مَلَأ समुदाय के सम्मानित तथा श्रेष्ठ लोगों को कहा जाता है। (इसकी व्याख्या पहले गुज़र चुकी है) फ़िरऔन के साथ, उसके सदन के सम्मानित लोगों का नाम इसलिये लिया गया है कि समुदाय के सम्मानित ही हर बात के उत्तरदायी होते थे तथा समुदाय उन्हीं के पीछे चलता था। यदि ये आदरणीय मूसा पर ईमान ले आते तो नि:संदेह फ़िरऔन का सारा समुदाय ईमान ले आता।

[4] رَشِيد का अर्थ निर्देशित है। अर्थात बात तो आदरणीय मूसा की दीक्षा तथा निर्देशन की थी, परन्तु उसे उन लोगों ने रद्द कर दिया तथा फ़िरऔन की बात, जो दीक्षा तथा निर्देशन से दूर थी, उस का उन्होंने अनुकरण किया।

النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾

में जा खड़ा करेगा,[1] वह अत्यधिक बुरा घाट है[2] जिस पर ला खड़े किये जायेंगे ।

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ﴿٩٩﴾

(९९) तथा उन पर इस लोक में भी धिक्कार हुई तथा क़ियामत के दिन भी[3] कितना बुरा पुरस्कार है जो दिया गया ।[4]

ذَٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَىٰ نَقُصُّهُ عَلَيْكَ ۖ مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾

(१००) बस्तियों के यह कुछ समाचार जो हम तेरे समक्ष वर्णन कर रहे हैं, उन में से कुछ विद्यमान हैं तथा कुछ पूर्णतः ध्वस्त हो गयी हैं ।[5]

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِنْ ظَلَمُوا

(१०१) तथा हम ने उन पर कोई अत्याचार नहीं किया,[6] अपितु स्वयं ही उन्होंने अपने ही

---

[1]अर्थात फ़िरऔन जिस प्रकार दुनिया में उसका अगुवा तथा मुखिया था, क़ियामत के दिन भी यह आगे-आगे ही होगा तथा अपने समुदाय को अपने नेतृत्व में नरक में लेकर जायेगा ।

[2] ورد पानी के घाट को कहते हैं, जहाँ प्यासे जाकर अपनी प्यास बुझाते हैं। परन्तु यहाँ नरक को ورد कहा गया है । مورود वह स्थान अथवा घाट अर्थात नरक जिस में लोग ले जाये जायेंगे अर्थात स्थान भी बुरा तथा जाने वाले भी बुरे ।

[3] لعنة से तात्पर्य धिक्कार तथा अल्लाह की दया से दूरी तथा वंचित होना है, जैसाकि दुनिया में भी वह अल्लाह की कृपा से वंचित तथा आख़िरत (परलोक) में भी उससे वंचित ही रहेंगे, यदि ईमान न लाये ।

[4] رفد परितोषिक तथा उपहार को कहा जाता है । यहाँ धिक्कार को رفد, कहा गया है । इसीलिये इसे बुरा उपहार कहा गया है । مرفود से तात्पर्य वह उपहार है जो किसी को दिया जाये । यह الرفد पर बल देने के लिये है ।

[5] قائم से तात्पर्य वह बस्तियाँ, जो अपनी छतों पर स्थित हैं । तथा حصيد - محصود के अर्थों में प्रयोग हुआ है, जिससे तात्पर्य वह बस्तियाँ जो कटी हुई खेतियों के समान ध्वस्त हो गयीं । अर्थात जिन पूर्वोक्त बस्तियों (नगरों) की कथा की चर्चा हम कर रहे हैं उनमें से कुछ तो अब भी विद्यमान हैं जिन के अवशेष शिक्षा प्राप्ति करने के चिन्ह हैं तथा कुछ ध्वस्त हो गईं जिन का नाम इतिहास के पन्नों में शेष रह गया है ।

[6]उन को प्रकोप तथा विनाश में डालकर ।

أَنفُسَهُمْ فَمَآ أَغْنَتْ عَنْهُمْ ءَالِهَتُهُمُ ٱلَّتِى يَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مِن شَىْءٍ لَّمَّا جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ﴿١٠١﴾

ऊपर अत्याचार किया,[1] तथा उन्हें उन के देवताओं नें कोई लाभ नहीं पहुँचाया, जिन्हें वे अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते थे, जबकि तेरे प्रभु का आदेश आ पहुँचा, अपितु उन्होंने उनकी हानि ही बढ़ा दी।[2]

وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَآ أَخَذَ ٱلْقُرَىٰ وَهِىَ ظَٰلِمَةٌ ۚ إِنَّ أَخْذَهُۥٓ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तथा तेरे प्रभु की पकड़ का यही नियम है, जबकि वह बस्तियों में रहने वाले अत्याचारियों को पकड़ता है, निःसंदेह उस की पकड़ दुखदायी एवं अत्यन्त कड़ी है।[3]

إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ ٱلْءَاخِرَةِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ

(१०३) निःसंदेह इस में[4] उन लोगों के लिये शिक्षाप्रद चिन्ह है, जो क़ियामत (प्रलय) की यातना से डरते हैं। वह दिन जिस में सब

---

[1]अधर्म तथा अवज्ञाकारिता करके।

[2]जबकि उनका विश्वाश यह था कि ये उन्हें हानि से बचायेंगे तथा लाभ पहुँचायेंगे। परन्तु जब अल्लाह का प्रकोप आया तो स्पष्ट हो गया कि उन का यह अंध-विश्वास था तथा यह बात सिद्ध हो गयी कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई किसी को लाभ-हानि पहुँचाने का सामर्थ्य नहीं रखता।

[3]अर्थात जिस प्रकार अल्लाह ने प्राचीन बस्तियों को ध्वस्त कर दिया, भविष्य में भी वह अत्याचारियों को इसी प्रकार पकड़ने का सामर्थ्य रखता है। हदीस में आता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« إِنَّ اللهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ، حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ ».

“अल्लाह तआला निःसंदेह अत्याचारियों को अवसर देता है। परन्तु जब उस की पकड़ करने पर आता है, तो फिर उसी प्रकार सहसा करता है कि फिर अवसर नहीं देता।”

फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत (मंत्र) पढ़ी (सहीह बुख़ारी, किताबुल तफ़सीर, सूरः-हूद, मुस्लिम किताबुल बिर्रे वस्सिलः, बाबु तहरीमिज़्ज़ुल्मे)

[4]अर्थात अल्लाह की पकड़ में अथवा उन घटनाओं में जो शिक्षा एवं उपदेश के लिये वर्णन की गयी हैं।

لَّهُ النَّاسُ وَذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ﴿١٠٣﴾

लोग एकत्रित किये जायेंगे तथा वह, वह दिन है जिस में सब उपस्थिति किये जायेंगे ।[1]

وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مَّعْدُودٍ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा उसे हम जो देर करते हैं, वह केवल एक निर्धारित समय तक के लिये है ।[2]

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ﴿١٠٥﴾

(१०५) जिस दिन वह आ जायेगी किसी को साहस न होगा कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई बात भी कर ले,[3] तो उनमें से कोई दुर्भाग्यशाली होगा तथा कोई भाग्यशाली ।

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ﴿١٠٦﴾

(१०६) परन्तु जो दुर्भाग्यशाली हुए वे नरक में होंगे, वहाँ उनकी धीमी तथा ऊँची ध्वनि होगी ।

---

[1]अर्थात आदि से अन्त तक के सभी लोग एकत्र होंगे । कोई शेष नहीं रहेगा ।

[2]अर्थात क्रियामत (प्रलय) के दिन में देरी का कारण यह है कि अल्लाह तआला उस के लिये एक दिन निर्धारित किये हुआ है । जब वह निर्धारित समय आ जायेगा तो एक क्षण की देरी न होगी ।

[3]वार्तालाप न करने से तात्पर्य, किसी को अल्लाह तआला से तर्क-वितर्क की अथवा सिफ़ारिश करने का साहस नहीं होगा । इसके अतिरिक्त कि वह अनुमति प्रदान करे । सिफ़ारिश (अभिस्तावना) की एक विस्तृत हदीस में है । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« ولاَ يَتَكَلَّمُ يَوْمَئِذٍ إِلاَّ الرُّسُلُ، وَدَعْوَى الرُّسُلِ يَوْمَئِذٍ؛ اللَّهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ ».

"उस दिन नबियों के सिवाय किसी को वार्तालाप का साहस न होगा तथा नबियों के मुख पर उस दिन भी केवल यही होगा कि ऐ अल्लाह ! हमें बचा लें ।"(सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान, बाब फ़ज़लिस्सुजूद, तथा मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबु मारिफ़त तरीक़िर्रूय:)

(१०७) वे वहीं सदैव रहने वाले हैं, जब तक आकाश तथा धरती स्थापित रहें,[1] सिवाय उस समय के जो तुम्हारे प्रभु की इच्छा हो ।[2] निःसंदेह तेरा प्रभु जो कुछ चाहे कर डालता है ।

خَٰلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ ٱلسَّمَٰوَٰتُ وَٱلْأَرْضُ إِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٠٧﴾

---

[1]इन शब्दों से कुछ लोगों में यह भ्रम हुआ है कि काफ़िरों के लिये नरक की यातना स्थाई नहीं है, अपितु एक समय तक है अर्थात जब तक धरती तथा आकाश का अस्तित्व रहेगा । परन्तु यह बात सही नहीं है क्योंकि यहाँ ما دامت السموات و الأرض अरब वासियों के दैनिक बोलचाल तथा मुहाविरे के अनुसार उतरा है । अरबों की यह आदत थी कि जब किसी वस्तु का स्थायित्व निर्धारित करने का उद्देश्य होता था तो कहते थे هذا دائمٌ دوام السموات و الأرض (यह वस्तु उसी प्रकार नित्य रहेगी जिस प्रकार आकाश तथा धरती नित्य है । इस वाक शैली को क़ुरआन करीम में प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ यह है कि काफ़िर तथा मूर्तिपूजक नरक में सदैव रहेंगे जिसको क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर خالدين فيها أبداً के शब्दों में वर्णन किया गया है । एक अन्य अर्थ यह भी वर्णन किया गया है कि आकाश तथा धरती से तात्पर्य संसार के आकाश तथा धरती नहीं जो ध्वस्त हो जायेंगे, परन्तु परलोक के आकाश तथा धरती हैं जो इससे भिन्न होंगे, जैसाकि क़ुरआन करीम में इसका वर्णन है ।

﴿ يَوْمَ تُبَدَّلُ ٱلْأَرْضُ غَيْرَ ٱلْأَرْضِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ ﴾

"उस दिन यह धरती अन्य धरती से बदल दी जायेगी तथा आकाश भी (बदल दिये जायेंगे)"(*सूरः इब्राहीम-४८*)

तथा आख़िरत (परलोक) के यह धरती तथा आकाश स्वर्ग तथा नरक की भाँति सदैव रहेंगे । इस आयत में यही आकाश तथा धरती तात्पर्य है, न कि संसार के धरती तथा आकाश, जो ध्वस्त हो जायेंगे । (इब्ने कसीर) इन दोनों भावार्थों में से कोई भी भावार्थ ले लिया जाये, आयत का भावार्थ स्पष्ट हो जाता है तथा वह भ्रम उत्पन्न नहीं होता, जो वर्णित हुआ है । इमाम शौकानी ने इसके अन्य कई भावार्थ वर्णन किये हैं, जिन्हें ज्ञान वाले देख सकते हैं (फ़तहुल क़दीर)

[2]इस अनिवर्धत के भी कई भावार्थ वर्णन किये गये हैं । उनमें सर्वाधिक सही भावार्थ यही है कि यह निबंधन उन पापियों के लिये है जो एकेश्वरवादी तथा ईमानवाले होंगे । इस आधार पर इस से पूर्व की आयत में شقيٌّ का शब्द साधारणतः अर्थात काफ़िर तथा अवज्ञाकारी दोनों को सम्मिलित होंगे तथा إلا ماشاء ربك से अवज्ञाकारी ईमानवाले अलग हो जायेंगे । तथा ماشاء में مَا शब्द مَن के अर्थ में है ।

وَأَمَّا الَّذِينَ سُعِدُوا فَفِي الْجَنَّةِ خَٰلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَٰوَٰتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۖ عَطَاءً غَيْرَ مَجْذُوذٍ ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा जो भाग्यशाली किये गये, वे स्वर्ग में होंगे जहाँ वे सदैव रहेंगे जब तक आकाश तथा धरती शेष रहे, परन्तु जो तेरा प्रभु चाहे ।[1] यह असीम वरदान है ।[2]

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَٰؤُلَاءِ ۚ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُم مِّن قَبْلُ ۚ وَإِنَّا لَمُوَفُّوهُمْ نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنقُوصٍ ﴿١٠٩﴾

(१०९) इसलिये आप उन चीज़ों से शंका व सन्देह में न रहें, जिन्हें ये लोग पूज रहे हैं, उनकी पूजा तो इस प्रकार है, जिस प्रकार इनके पूर्वजों की इससे पूर्व थी। हम उन सब को पूरा-पूरा भाग बिना कमी के देनें वाले ही हैं ।[3]

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ

(११०) निःसंदेह हमने मूसा को किताब प्रदान की । फिर उस में मतभेद किया गया ।[4] यदि पहले ही आप के प्रभु की बात लागू न हो गई होती तो निश्चय ही उनका निर्णय कर दिया

---

[1]यह निबंधन भी अवज्ञाकारी ईमानवालों के लिये है। अर्थात अन्य स्वर्ग में जाने वालों की भाँति ये अवज्ञाकारी ईमानवाले भी सदैव स्वर्ग में नहीं रहे होंगे। बल्कि प्रारम्भ में कुछ समय नरक में व्यतीत करेंगे, उस के पश्चात् नबियों तथा ईमानवालों की सिफ़ारिश से नरक से निकालकर स्वर्ग में डाल दिये जायेंगे, जैसाकि सहीह हदीस से यह बातें सिद्ध हैं।

[2] غَيْرَ مَجْذُوذٍ का अर्थ है अनन्त असीम कृपा। इस वाक्य से यह स्पष्ट होता है कि जिन पापियों को नरक से निकाल कर स्वर्ग में डाला जायेगा, यह प्रवेश अस्थाई नहीं, स्थाई होगा, तथा सभी स्वर्गवासी सदैव अल्लाह की प्रदान एवम् अनुकम्पाओं का आनन्द लेते रहेंगे उस मे कोई टूट न होगी।

[3]इससे तात्पर्य वह प्रकोप है जिसके वे अधिकारी होंगे, इसमें कोई कमी नहीं की जायेगी।

[4]अर्थात किसी ने इस किताब को माना किसी ने नहीं माना। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि पूर्व के नबियों के साथ भी यही व्यवहार होता आया है, कुछ लोग उन पर ईमान लाने वाले होते तथा कुछ अन्य झुठलाने वाले होते। इसलिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने इस झुठलाये जाने की चिन्ता न करें।

जाता,[1] उन्हें तो इस में शंका लग रही है (ये तो दुविधा में हैं)।

وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١١٠﴾

(१११) तथा वस्तुत: उन में से प्रत्येक को (जब उनके समक्ष जायेगा तो) आप का प्रभु उसे उसके कर्मों का पूरा प्रतिकार प्रदान करेगा। निश्चय वे जो कुछ कर रहे हैं उनसे वे अवगत हैं।

وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾

(११२) बस आप अडिग रहिये जैसाकि आपको आदेश दिया गया है तथा वे लोग भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा-याचना) कर चुके हैं। सावधान ! तुम सीमा से न बढ़ना,[2] अल्लाह तुम्हारे सारे कर्मों को देख रहा है।

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَن تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾

(११३) तथा देखो अत्याचारियों की ओर कदापि न झुकना वरन् तुम्हें भी अग्नि की लौ लग जायेगी[3] तथा अल्लाह के अतिरिक्त

وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ

---

[1]इससे तात्पर्य यह है कि यदि अल्लाह तआला ने पूर्व से ही उन के लिये यातना का दिन निर्धारित न कर लिया होता, तो वह उन्हें तुरन्त नाश कर डालता।

[2]इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ईमानवालों को एक तो दृढ़ रहने की शिक्षा दी जा रही है, जो शत्रु का सामना करने के लिये एक बहुत बड़ा हथियार है। अन्य طغيانٌ अर्थात بَغيٌ (सीमा उल्लघंन) से रोका गया है, जो ईमानवालों के लिये नैतिक शक्ति तथा उत्तम कर्म के लिये अति आवश्यक है। यहाँ तक कि यह उल्लंघन शत्रु के साथ मामला करते समय भी उचित नहीं है।

[3]इसका अर्थ यह है कि अत्याचारियों के साथ कोमलता तथा प्रशंसा करके उनसे सहायता न लो। इससे उनको यह आभास होगा कि जैसे तुम उनकी अन्य बातों को भी प्रिय समझते हो। इस प्रकार यह तुम्हारा एक बड़ा अपराध बन जायेगा, जो तुम्हें भी उनके साथ नरक की अग्नि का अधिकारी बना सकता है। इससे अत्याचारी राज्य अधिकारियों के साथ सम्बन्ध बनाने को भी निषेध करने का अर्थ निकलता है। किन्तु जो कि जनहित

اللهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُونَ ﴿١١٣﴾

अन्य तुम्हारी सहायता करने वाला न खड़ा हो सकेगा तथा न तुम्हें सहायता दी जायेगी।

وَأَقِمِ الصَّلَوٰةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّـَٔاتِ ۚ ذَٰلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذَّٰكِرِينَ ﴿١١٤﴾

(११४) तथा दिन के दोनों किनारों में नमाज़ स्थापित रख तथा रात्रि की कई घड़ियों में भी,[1] निःसंदेह पुण्य बुराईयों को दूर कर देते हैं।[2] यह शिक्षा है शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये।

में हो अथवा धार्मिक लाभ प्राप्ति के लिए हो। ऐसी अवस्था में दिल से घृणा रखते हुए उन से सम्बन्ध रखने की आज्ञा होगी। जैसा कि कुछ हदीसों से स्पष्ट है।

[1]'दोनों किनारों' से तात्पर्य कुछ ने भोर तथा मग़रिब (सूर्यास्त), कुछ ने मात्र इशा (रात्रि) तथा कुछ ने मग़रिब (सूर्यास्त) तथा इशा दोनों का समय लिया है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि संभव है कि यह आयत मेराज से पूर्व उतरी हो, जिस में पाँच नमाज़ें अनिवार्य की गयीं। क्योंकि इससे पूर्व केवल दो ही नमाज़ें अनिवार्य थीं एक सूर्योदय से पूर्व तथा एक सूर्यास्त से पूर्व तथा रात्रि के पिछले भाग में तहज्जुद की नमाज़। फिर तहज्जुद की नमाज साधारण मुसलमानों से क्षमा कर दी गई। फिर उस तहज्जुद नमाज़ की अनिवार्यता कुछ के कथन अनुसार आप से भी समाप्त कर दी गई। (इब्ने कसीर)

[2]जिस प्रकार की हदीसों में भी इसका विस्तार से वर्णन किया गया है। जैसे "पाँच नमाज़ें, जुमअः (शुक्रवार) से जुमअः (शुक्रवार) तक तथा रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक, इनके मध्य होने वाले पापों को दूर कर देने वाले हैं, यदि महापाप से बचा जाये" (सहीह मुस्लिम किताबुल तहारः.....) एक अन्य हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

> "बताओ ! यदि तुम में किसी के द्वार के सामने एक बड़ी नहर बहती हो, वह प्रत्येक दिन उस में पाँच बार स्नान करता हो, क्या उसके शरीर पर उस के पश्चात् मैल-कुचैल शेष रह जायेगी।" सहाबा (आपके सहचरों) ने उत्तर दिया, "नहीं" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :
>
> इसी प्रकार पाँच नमाज़ें हैं, उनके द्वारा अल्लाह तआला पापों तथा त्रुटियों को मिटा देता है। (सहीह बुख़ारी किताबुल मवाकीत, बाबुस्सलवातिल ख़मसे कफ्फ़ारतुन (तथा) मुस्लिम किताबुल मसाजिद बाबुल मश्ये इलस्सलाते तुमहा बिहिल ख़ताया व तुरफ़अ बिहिद दरजात)

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा आप धैर्य रखिये निःसंदेह अल्लाह (तआला) सदाचारियों का फल नष्ट नहीं करता।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنجَيْنَا مِنْهُمْ ۗ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾

(११६) तो क्यों न तुम से पहले के युग के लोगों में से ऐसे परोपकारी लोग हुए जो धरती में उपद्रव फैलाने से रोकते, अतिरिक्त उन कुछ के जिन्हें हमने उनमें से मुक्ति प्रदान की थी।[1] अत्याचारी लोग तो उस वस्तु के पीछे पड़ गये, जिस में उन्हें सम्पन्नता दी गई थी और वे पापी थे।[2]

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ﴿١١٧﴾

(११७) आपका प्रभु ऐसा नहीं कि किसी बस्ती को अत्याचार से ध्वस्त कर दे जबकि वहाँ के लोग सदाचारी हों।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾

(११८) यदि आप का प्रभु चाहता तो सब लोगों को एक मार्ग पर एक समुदाय कर देता। वे तो सदैव विरोध करने वाले ही रहेंगे।

إِلَّا مَن رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ

(११९) सिवाय उनके जिन पर आपका पालनहार दया करे, उन्हें तो इसीलिये पैदा किया है,[3] तथा

---

[1]अर्थात पूर्व के समुदायों में ऐसे भले लोग क्यों न हुए जो उपद्रवियों तथा दुराचारियों को उपद्रव तथा दुराचार से रोकते ? फिर कहा कि ऐसे लोग हुए तो सही, परन्तु बहुत थोड़े। जिन्हें हमने उस समय छोड़ दिया, जब अन्यों को प्रकोप के द्वारा ध्वस्त कर दिया।

[2]अर्थात ये अत्याचारी अपने अत्याचार पर अडिग रहे तथा अपने गर्व में मस्त रहे। यहाँ तक कि उन को प्रकोप ने आकर धर लिया।

[3]'इसीलिये' का अर्थ कुछ विद्वानों ने मतभेद तथा कुछ ने कृपा लिया है। दोनों परिस्थितियों में भावार्थ यह होगा कि हमने मनुष्य को परीक्षा के लिये पैदा किया है। जो सत्य धर्म से मतभेद का मार्ग अपनायेगा, वह परीक्षा में असफल तथा जो उसको अपना लेगा, वह सफल तथा अल्लाह की कृपा का अधिकारी होगा।

جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

आपके प्रभु की यह बात पूरी है कि मैं नरक को जिन्नों तथा इन्सानों सब से भर दूँगा।[1]

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ فِي هَٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) तथा रसूलों की सब स्थितियाँ हम आप के समक्ष आप के दिल के सन्तोष के लिए वर्णन कर रहे हैं। आप के पास इस सूर: (अंश) में भी सत्य पहुँच चुका, जो शिक्षा तथा उपदेश है, ईमान वालों के लिए।

وَقُل لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَامِلُونَ ﴿١٢١﴾

(१२१) तथा ईमान न लाने वालों से कह दीजिये कि तुम लोग अपने स्तर से कर्म किये जाओ, हम भी कर्मों में लीन हैं।

وَانتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) तथा तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।[2]

---

[1]अर्थात अल्लाह के बनाये भाग्य तथा निर्णय में यह बात स्थित है कि कुछ लोग स्वर्ग तथा कुछ नरक के अधिकारी होंगे तथा स्वर्ग एवं नरक को जिन्नों और इन्सानों से भर दिया जायेगा, जैसाकि हदीस (रसूल के कथन) में है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"स्वर्ग तथा नरक ने परस्पर विवाद किया, स्वर्ग ने कहा कि क्या कारण है कि मुझ में निर्बल तथा समाज के नीच, पतित लोग होंगे, नरक ने कहा कि मुझ में बड़े-बड़े अत्याचारी तथा अहंकारी लोग होंगे। अल्लाह ने स्वर्ग से कहा कि तू मेरी दया की सूचक है तेरे द्वारा मैं जिस पर चाहूँ अपनी दया करूँ, तथा नरक से अल्लाह ने फ़रमाया तू मेरी यातना की द्योतक है तेरे द्वारा मैं जिस को चाहूँ यातना दूँ। अल्लाह स्वर्ग तथा नरक दोनों को भर देगा, स्वर्ग में नित्य उस की दया होगी यहाँ तक कि वह ऐसी सृष्टि उत्पन्न करेगा जो स्वर्ग के शेष क्षेत्र में निवास करेगी तथा नरक नरकवासियों की अधिकता के उपरान्त भी هَلْ مِنْ مَزِيدٍ (क्या और भी हैं) पुकारती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह उसमें अपने पग रख देगा, जिस पर नरक पुकारेगी «قَطْ قَطْ، وَعِزَّتِكَ!» बस, बस तेरी मर्यादा तथा प्रताप की शपथ (सहीह बुख़ारी किताबुत् तौहीद, बाबो माजाअ फ़ी कौलिहि तआला إن رحمة الله قريب من المحسنين तथा तफ़सीर सूर: क़ाफ़-मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबुन्नार यदख़ुलुहल जब्बारून वल्जन्नते यदख़ुलुह ज्जोअफ़ा)।

[2]अर्थात शीघ्र ही तुम्हें पता चल जायेगा कि सफलता किस के भाग्य में आती है तथा यह भी ज्ञात हो जायेगा कि अत्याचारी लोग सफल नहीं होंगे। अत: यह वचन शीघ्र ही पूर्ण

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾

(१२३) तथा आकाशों एवं धरती का परोक्ष ज्ञान अल्लाह (तआला) को ही है, तथा सारे कार्यों की प्रत्यागता भी उसी की ओर है। अत: तुझे उसी की इबादत करनी चाहिए तथा उसी पर भरोसा रखना चाहिये एवं तुम जो कुछ करते हो उससे अल्लाह (तआला) अनजान नहीं।

सूरतु यूसुफ़-१२

سُوْرَةُ يُوْسُفَ

सूर: यूसुफ़ मक्का में अवतरित हुई तथा इस की एक सौ ग्यारह आयतें एवं बारह रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾

(१) अलिफ़॰ लाम॰ रा॰, यह दिव्य प्रकाश वाली पुस्तक की आयतें हैं।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾

(२) नि:संदेह हम ने इसे अरबी क़ुरआन उतारा है कि तुम समझ सको।[1]

हुआ तथा अल्लाह तआला ने मुसलमानों को विजयी किया तथा सम्पूर्ण अरब महाद्वीप इस्लाम के अधीनस्थ हो गया।

[1]आकाशीय किताबों को उतारने का उद्देश्य लोगों को मार्गदर्शन एवं निर्देशन देना है तथा यह लक्ष्य तभी प्राप्त हो सकता है, जब वह किताब उस भाषा में हो जिस को वे समझ सके, इसलिये सभी आकाशीय किताबें उस समुदाय की अपनी भाषा में उतारी गयीं, जिस समुदाय के मार्गदर्शन के लिये वह उतारी गई थीं। क़ुरआन करीम के प्रथम सम्बोधित लोग अरबवासी थे, इसलिये क़ुरआन भी अरबी भाषा में उतारा गया। इस के अतिरिक्त अरबी भाषा अपनी व्याख्या, प्रभाव तथा शब्दार्थों के वर्णन के आधार पर संसार की अन्य भाषाओं से श्रेष्ठ भाषा है। इसीलिये अल्लाह तआला ने इस श्रेष्ठ किताब (क़ुरआन मजीद) को श्रेष्ठ भाषा (अरबी) में श्रेष्ठ रसूल (परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर श्रेष्ठ फ़रिश्ते (जिब्रील) के द्वारा अवतरित किया तथा मक्का नगर जहाँ इस का आरम्भ हुआ, संसार के श्रेष्ठतम नगरों में श्रेष्ठ नगर है तथा जिस महीनें में इस का अवतरण शुभारम्भ हुआ, वह भी श्रेष्ठ महीना रमज़ान का है।

(३) हम आपके समक्ष सर्वश्रेष्ठ वर्णन[1] प्रस्तुत करते हैं, इस कारण कि हमने आपकी ओर यह क़ुरआन वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा उतारा है तथा निश्चय इससे पूर्व आप अनजानों में से थे।[2]

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ هَٰذَا الْقُرْآنَ وَإِن كُنتَ مِن قَبْلِهِۦ لَمِنَ الْغَٰفِلِينَ ﴿٣﴾

(४) जबकि यूसुफ़ [3] ने अपने पिता से बताया कि पिताजी मैंने ग्यारह सितारों को तथा सूर्य-

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَٰٓأَبَتِ إِنِّى رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ

---

[1] "قَصَص" यह धातु है। अर्थ है किसी वस्तु का अनुगमण, अभिप्राय एक रमणीय घटना है। "قِصَّة" मात्र कहानी अथवा कल्पित कथा को नहीं कहा जाता है, बल्कि पूर्व में व्यतीत घटना के वर्णन को (अर्थात उस के पीछे लगने को) क़िस्सा कहा जाता है। यह विगत समाचारों का सत्य तथा वास्तविक वर्णन है तथा उस घटना में ईर्ष्या-द्वेष का परिणाम, अल्लाह की सहायता का चमत्कार, अहंवाद की चंचलता तथा दुराचार का परिणाम तथा अन्य मानवी स्थितियों एवं घटनाओं का मनोरम वर्णन तथा बड़े शिक्षाप्रद पक्ष हैं, इसलिये क़ुरआन ने इसे श्रेष्ठतम सर्वोत्तम कथा कहा है।

[2]क़ुरआन करीम के इन शब्दों से भी स्पष्ट होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को परोक्ष का ज्ञान नहीं था, वरन् अल्लाह तआला आपको अनजान न कहता। दूसरी बात यह विदित हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे नबी हैं क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्यी (प्रकाशना) द्वारा ही इस सत्यकथा का वर्णन किया गया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न किसी के शिष्य थे, कि किसी गुरू से सीख कर वर्णन कर देते, तथा न किसी अन्य से ही ऐसा सम्बन्ध था कि जिस से सुनकर इतिहास की यह घटना उसके विशेष खण्डों के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रसारित कर देते। यह नि:संदेह अल्लाह तआला ही ने वह्यी (प्रकाशना) द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा है, जैसाकि इस स्थान पर स्पष्ट किया गया है।

[3]अर्थात हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने समुदाय के समक्ष यूसुफ़ की कथा का वर्णन करो, जब उसने अपने पिता से कहा। पिता आदरणीय याक़ूब थे, जैसाकि अन्य स्थान पर वर्णन है तथा हदीस में भी इस वंशावली को उल्लेख किया गया है, अलकरीम इब्नुल करीम इब्नुल करीम इब्नुल करीम यूसुफ़ बिन (पुत्र) याक़ूब बिन (पुत्र) इसहाक़ बिन इब्राहीम (मुसनद अहमद भाग २, पृष्ठ ९६)

وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝٤

चन्द्रमा को[1] देखा कि वे सभी मुझे दण्डवत् कर रहे हैं।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٥

(५) (याक़ूब अलैहिस्सलाम ने) कहा कि हे मेरे प्यारे पुत्र ! अपने इस स्वप्न की चर्चा अपने भाईयों से न करना। ऐसा न हो कि वे तेरे साथ कोई छल करें, [2] शैतान तो मनुष्य का खुला शत्रु है।[3]

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ

(६) तथा इसी प्रकार [4] तेरा प्रभु तुझे निर्वाचित करेगा तथा तुझे मामला बात समझने (अर्थात स्वप्न-फल बताने) की भी शिक्षा देगा तथा

---

[1]कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि यह ग्यारह सितारों से तात्पर्य आदरणीय यूसुफ़ के भाई हैं जो ग्यारह ही थे तथा चन्द्रमा तथा सूर्य से तात्पर्य माता-पिता हैं तथा स्वप्न-फल चालीस वर्ष पश्चात उस समय सामने आया जब ये सभी भाई अपने माता-पिता के साथ मिस्र गये तथा वहाँ आदरणीय यूसुफ़ के समक्ष झुक गये। जैसाकि इसका विवरण सूर: के अन्त में आयेगा।

[2]आदरणीय याक़ूब ने स्वप्न से यह अनुमान लगा लिया कि उन का यह पुत्र मर्यादित पुरूष होगा, इसलिये उन्हें भय हुआ कि उस की इस प्रतिष्ठा का अनुमान लगाकर उस के अन्य भाई उसे कोई हानि न पहुँचाये, इस कारण उन्होंने इस स्वप्न की चर्चा करने से रोक दिया।

[3]यह भाईयों के छल-कपट के कारण की चर्चा कर दी कि शैतान मनुष्य का आदि से ही शत्रु है। इसलिये वह मनुष्यों को भटकाने, बहकाने तथा उन्हें ईर्ष्या तथा द्वेष में लीन रहने के लिये हर समय प्रेरित करता रहता है तथा घात में रहता है। अत: यह शैतान के लिये सुअवसर था कि आदरणीय यूसुफ़ के विरूद्ध भाईयों के दिलों में द्वेष तथा ईर्ष्या की अग्नि भड़का दे। जैसाकि वास्तव में उस ने बाद में ऐसा ही किया तथा आदरणीय याक़ूब का अनुमान सत्य सिद्ध हुआ।

[4]अर्थात जिस प्रकार तेरे प्रभु ने सर्वश्रेष्ठ स्वप्न दिखाने के लिये चुन लिया, उसी प्रकार तेरा प्रभु तुझे सम्मान भी प्रदान करेगा तथा स्वप्नों के फल सिखायेगा। تأويل الأحاديث का मूल अर्थ बातों की तह तक पहुँचना है। यहाँ इस से तात्पर्य स्वप्न-फल है।

وَعَلَىٰٓ اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ۭاِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

अपनी अनुकम्पा तुझे पूर्णरूप से प्रदान करेगा,[1] तथा याक़ूब के परिवार को भी[2] जैसाकि उस ने इससे पूर्व तेरे दो पूर्वजों अर्थात इब्राहीम तथा इसहाक़ को भी भरपूर कृपा प्रदान की, नि:संदेह तेरा प्रभु बड़े ज्ञान वाला तथा अत्यधिक विवेक वाला है ।

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۝

(७) नि:संदेह यूसुफ़ तथा उस के भाईयों में प्रश्न करने वालों के लिये बड़ी निशानियाँ हैं ।[3]

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۭاِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِۨ ۝

(८) जबकि उन्होंने कहा कि यूसुफ़ तथा उसका भाई [4] हमारे पिता को हमसे अत्यधिक प्रिय हैं यद्यपि हम लोग शक्तिशाली पक्ष हैं,[5] कोई सन्देह नहीं कि हमारे पिता स्पष्ट ग़लती पर हैं ।[6]

---

[1]इससे तात्पर्य नबूअत है, जो आदरणीय यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को प्रदान की गयी, अथवा वे पुरस्कार हैं जिन के मिश्र में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अधिकारी बने ।

[2]इस से तात्पर्य आदरणीय यूसुफ़ के भाई, उन की संतान आदि हैं, जो बाद में अल्लाह के पुरस्कार के अधिकारी बने ।

[3]अर्थात इस घटना में अल्लाह तआला के विशाल सामर्थ्य तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत की सच्चाई की बड़ी निशानियाँ हैं । कुछ व्याख्याकारों ने यहाँ उन भाईयों के नाम तथा विवरण भी बताये हैं ।

[4]"उस का भाई" से तात्पर्य बिनयामीन है ।

[5]अर्थात हम दस भाई शक्तिशाली पक्ष तथा बहुसंख्यक हैं, जबकि यूसुफ़ तथा बिनयामीन (जिन की माता अथवा मातायें अलग थीं) केवल दो हैं, इस के पश्चात् भी पिता की आँखों के तारे एवं हृदय की शान्ति हैं ।

[6]यहाँ ضَلَال से तात्पर्य वह त्रुटि है, जो उनके विचार में पिता का यूसुफ़ तथा बिनयामीन से अत्यधिक प्रेम था ।

اقْتُلُوا يُوسُفَ أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ⑨

(९) यूसुफ़ की हत्या कर दो अथवा उसे (अज्ञात) स्थान पर पहुँचा दो, ताकि तुम्हारे पिता का ध्यान तुम्हारी ओर ही हो जाये। उसके पश्चात् तुम भले हो जाना।[1]

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ⑩

(१०) उन में से एक ने कहा कि यूसुफ़ की हत्या तो न करो, अपितु किसी अज्ञात कुऐं की तली में डाल आओ[2] कि उसे कोई यात्रियों का गिरोह उठा ले जाये, यदि तुम्हें करना ही है तो इस प्रकार करो।[3]

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ⑪

(११) (उन्होंने) कहा कि हे पिता ! अन्ततः आप यूसुफ़ के विषय में हम पर विश्वास क्यों नहीं करते, हम तो उस के शुभचिन्तक हैं।[4]

---

[1]इस से तात्पर्य क्षमा-याचना है अर्थात कुऐं में डालकर अथवा हत्या करके अल्लाह से उस पाप की क्षमा माँग लेंगे।

[2] جُبٌّ कुऐं को तथा غَيَابَةٌ उसकी तली तथा गहराई को कहते हैं। कुआँ वैसे भी गहरा ही होता है तथा उसमें गिरी हुई वस्तु किसी को दिखायी नहीं देती। जब उस के साथ कुऐं की गहराई का भी वर्णन किया तो जैसेकि अतिश्योक्ति का प्रदर्शन किया।

[3]अर्थात आने-जाने वाले नवागन्तुक यात्री, जब पानी की खोज में कुऐं के निकट आयेंगे तो सम्भव है कि किसी के ज्ञान में आ जाये कि कुऐं में कोई मनुष्य गिरा हुआ है तथा वह उसे निकालकर अपने साथ ले जायें। यह विचार एक भाई ने प्रेम भावना से प्रस्तुत किया। हत्या की तुलना में यह प्रस्ताव वास्तव में प्रेम भावना ही का पक्ष है। भाईयों की ईर्ष्या तथा द्वेष की अग्नि इतनी भड़की हुई थी कि उस ने यह प्रस्ताव डरते-डरते प्रस्तुत किया कि यदि तुम्हें कुछ करना ही है, तो यह कार्य इस प्रकार कर लो।

[4]इस से ज्ञात होता है कि इससे पूर्व भी यूसुफ़ के भाईयों ने यूसुफ़ को ले जाने का प्रयत्न किया होगा तथा पिता ने अस्वीकार कर दिया होगा।

(१२) कल आप उसे अवश्य हम लोगों के साथ भेज दीजिये कि खूब खाये-पिये तथा खेले [1] उसकी सुरक्षा के हम उत्तरदायी हैं।

أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهُ لَحَٰفِظُونَ ﴿١٢﴾

(१३) (याक़ूब ने) कहा कि उसे तुम्हारा ले जाना मेरे लिये अति दुखद होगा, मुझे यह भी भय लगा रहेगा कि तुम्हारी असावधानी में उसे भेड़िया खा जाये।

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِيٓ أَن تَذْهَبُوا۟ بِهِۦ وَأَخَافُ أَن يَأْكُلَهُ ٱلذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَٰفِلُونَ ﴿١٣﴾

(१४) उन्होंने उत्तर दिया कि हम जैसे बड़े शक्तिशाली गिरोह की उपस्थिति में भी यदि उसे भेड़िया खा जाये तो हम बिल्कुल विवश हुए।[2]

قَالُوا۟ لَئِنْ أَكَلَهُ ٱلذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّآ إِذًا لَّخَٰسِرُونَ ﴿١٤﴾

(१५) फिर जब उसे ले चले तथा सभी ने मिल कर ठान लिया कि उसे सुनसान गहरे कुऐं की तह में फेंक दें, हमने यूसुफ़ की ओर वह्यी (प्रकाशना) की कि निःसंदेह (समय आ रहा है) कि तू उन्हें इस बात की सूचना उस अवस्था में देगा कि वे जानते ही न हों।[3]

فَلَمَّا ذَهَبُوا۟ بِهِۦ وَأَجْمَعُوٓا۟ أَن يَجْعَلُوهُ فِى غَيَٰبَتِ ٱلْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُم بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾

---

[1]खेल-कूद की ओर आकर्षण, मनुष्य की प्रकृति में सम्मिलित है। इसीलिये उचित खेल-कूद पर अल्लाह तआला ने किसी युग में भी प्रतिबन्ध नहीं लगाया। इस्लाम में भी इन की आज्ञा है परन्तु प्रतिबन्धित। अर्थात ऐसे खेल-कूद की आज्ञा है, जो उचित हैं जिन में धार्मिक नियमों द्वारा निषेध न हों अथवा निषेधित तक पहुँचने का साधन न बनें। अतः आदरणीय याक़ूब ने भी खेल-कूद की सीमा तक मना नहीं किया। परन्तु यह शंका व्यक्त की कि तुम लोग खेल-कूद में लीन हो जाओ तथा उसे भेड़िया खा जाये। क्योंकि खुले मैदान तथा रेगिस्तानों में वहाँ भेड़िये सामान्य रूप से पाये जाते थे।

[2]यह पिता को विश्वास दिलाया जा रहा है कि यह किस प्रकार हो सकता है कि हम इतने भाईयों की उपस्थिति में भेड़िया यूसुफ़ को खा जाये।

[3]क़ुरआन करीम अति संक्षेप में घटना का वर्णन कर रहा है। अर्थ यह है कि जब अपने पूर्व योजना के अनुसार उन्होंने यूसुफ़ को कुऐं में फेंक दिया, तो अल्लाह तआला ने

(१६) तथा रात्रि (एशा) के समय (वे सब) अपने पिता के पास रोते हुए पहुँचे।

وَجَآءُوٓ أَبَاهُمْ عِشَآءً يَبْكُونَ ﴿١٦﴾

(१७) तथा कहने लगे कि प्रिय पिताजी! हम आपस में दौड़ में लग गये तथा यूसुफ़ को सामान के पास छोड़ दिया तो भेड़िया उसे खा गया, आप तो हमारी बात पर विश्वास करने वाले नहीं चाहे हम पूरे सच्चे ही हों।[1]

قَالُوا يَٰٓأَبَانَآ إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِندَ مَتَٰعِنَا فَأَكَلَهُ ٱلذِّئْبُ ۖ وَمَآ أَنتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَٰدِقِينَ ﴿١٧﴾

(१८) तथा यूसुफ़ के कुर्ते को झूठे रक्त से भिगा कर लाये थे। (पिता ने) कहा, (इस प्रकार नहीं) बल्कि तुम ने अपने मन से ही एक बात बना ली है। अब धैर्य ही श्रेष्ठ है,[2] तथा

وَجَآءُو عَلَىٰ قَمِيصِهِۦ بِدَمٍ كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَٱللَّهُ ٱلْمُسْتَعَانُ

आदरणीय यूसुफ़ को सांत्वना दी तथा साहस रखने के लिये वह्यी (प्रकाशना) की कि चिन्ता की आवश्यकता नहीं है, हम तेरी सुरक्षा ही नहीं करेंगे अपितु ऐसे उच्च स्थान पर तुझे आसीन करेंगे कि ये भाई भीख का प्याला तेरे समक्ष ले कर आयेंगे तथा फिर तू उन्हें बता देगा कि तुम ने अपने एक भाई के साथ इस प्रकार निष्ठुरता की थी जिसे सुन कर वह चकित तथा लज्जित होंगे। आदरणीय यूसुफ़ यद्यपि उस समय बालक थे, परन्तु जो बालक नबूअत से विभूषित होने वाले होते हैं, उन पर बचपन में ही वह्यी (प्रकाशना) आ जाती है, जैसे आदरणीय ईसा तथा यह्या आदि पर आयी।

[1]अर्थात यदि हम आप के लिये विश्वस्त तथा सत्यवादी होते तब भी आप यूसुफ़ के मामले में हमारी बात न मानते, अब तो वैसे ही हमारी स्थिति संदिग्ध व्यक्ति जैसी है, अब आप किस प्रकार हमारी बात मानेंगे।

[2]कहते हैं कि एक बकरी का बच्चा काट कर उस के रक्त से यूसुफ़ की कमीज़ भिगा ली तथा यह भूल गये कि यदि भेड़िया यूसुफ़ को खाता तो कमीज़ भी फाड़ता, कमीज़ फटी ही नहीं थी, जिस को देखकर और साथ ही आदरणीय यूसुफ़ के स्वप्न तथा नबूअत की शक्ति से अनुमान लगा कर आदरणीय याक़ूब ने कहा कि यह घटना इस प्रकार घटित नहीं हुई है, जैसे तुम वर्णन कर रहे हो, अपितु यह तुम्हारी मनगढ़त है। फिर भी जो होना था हो चुका था, आदरणीय याक़ूब उस के विवरण से अनजान थे, इसलिये केवल धैर्य के सिवाय कोई चारा न था तथा अल्लाह की सहायता के अतिरिक्त कोई सहारा न था।

عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾

तुम्हारी बनायी हुई बातों पर अल्लाह ही से सहायता की प्रार्थना है ।[1]

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَا بُشْرَىٰ هَٰذَا غُلَامٌ ۚ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा एक यात्री का गिरोह आया तथा उन्होंने अपने पानी लाने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल लटका दिया। कहने लगा वाह-वाह ! प्रसन्नता की बात है, यह तो एक बालक है ।[2] उन्होंने उसे व्यापार का धन समझकर छिपा दिया[3] तथा अल्लाह (तआला)

---

[1]द्वयवादियों ने आदरणीय आयेशा पर जब आक्षेप लगाया तो उन्होंने भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रश्न तथा कथन का यही उत्तर दिया था।

«وَاللهِ لاَ أَجِدُ لِي وَلاَ لَكُمْ مَثَلاً إِلاَّ أَبَا يُوسُفَ، ﴿فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ﴾».

"अल्लाह की सौगन्ध मैं स्वयं तथा आप लोगों के लिये वही उदाहरण पाती हूँ जिससे यूसुफ़ के पिता याक़ूब को दो चार होना पड़ा था तथा उन्होंने فَصَبْرٌ جَمِيلٌ (धैर्य रखना अत्योत्तम है) कह कर धैर्य तथा सहनशीलता का मार्ग अपनाया था ।"(सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: यूसुफ़)

अर्थात मेरे लिये भी धैर्य एवं सहनशीलता के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं।

[2] وارد (वारिद) उस व्यक्ति को कहते हैं जो यात्रियों के गिरोह के लिये पानी आदि का प्रवन्ध करने के उद्देश्य से आगे-आगे चलता है ताकि उचित स्थान देखकर यात्रियों को ठहराया जा सके । यह वारिद (यात्रियों के लिये पानी का प्रबन्ध करने वाला) जब कुऐं पर आया तथा अपना डोल नीचे लटकाया तो आदरणीय यूसुफ़ ने उस की डोरी पकड़ ली। वारिद (जल-प्रबन्धक) ने एक सुन्दर बच्चे को देखा तो ऊपर खीच लिया तथा अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

[3] بضاعة व्यापार के सामान को कहते हैं أَسَرُّوهُ का कर्ता कौन है ? अर्थात आदरणीय यूसुफ़ को व्यापार सामग्री समझकर छिपा लेने वाला कौन है ? इसमें मतभेद है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने यूसुफ़ के भाईयों को कर्ता बताया है। इसका अर्थ यह है कि जब डोल के साथ यूसुफ़ भी कुऐं से बाहर निकले तो वहाँ यह भाई उपस्थिति थे, फिर भी उन्होंने वास्तविकता को छिपाये रखा, यह नहीं कहा कि यह हमारा भाई है तथा आदरणीय यूसुफ़ ने भी हत्या के डर से अपना भाई होना व्यक्त नहीं किया, बल्कि भाईयों ने उन्हें बिकाऊ

उससे सूचित था जो वे कर रहे थे ।[1]

(२०) तथा उन्होंने [2] उसे बहुत ही कम मूल्य गिनती के कुछ दिरहमों पर बेच डाला, वे तो यूसुफ़ के विषय में अत्यधिक रूचिहीन थे ।[3]

وَشَرَوۡهُ بِثَمَنٍۭ بَخۡسٍ دَرَٰهِمَ مَعۡدُودَةٍ وَكَانُواْ فِيهِ مِنَ ٱلزَّٰهِدِينَ ۝٢٠

कहा तो वे चुप रहे और अपना बिकना पसंद किया। अतः इस जल-प्रबंधक ने अपनी यात्रा के साथियों को यह शुभसूचना सुनाई कि एक बालक बिक रहा है। परन्तु यह बात घटनाक्रम से मेल नहीं खाती है। इन के विपरीत इमाम शौकानी ने أَسَرُّوهُ का कर्ता जल-प्रबंधक तथा उस की यात्रा के साथियों को कहा है क्योंकि उन्होंने यह प्रकट नहीं किया कि यह बालक कुऐं से निकला है, क्योंकि सभी यात्रियों का भाग 'व्यापारिक सामग्री' में हो जाता, बल्कि यात्रियों को उन्होंने जाकर यह बताया कि कुऐं के मालिकों ने यह बच्चा उनको सौंप दिया है ताकि इसे वे मिस्र जाकर बेच दें। परन्तु समीपवर्ती बात यह है कि यात्रियों ने बच्चे को 'व्यापार सामग्री' बनाकर छिपा लिया कि कहीं उसके निकट-सम्बंधी उसकी खोज में न आ जायें तथा इस प्रकार लेने के देने पड़ जायें, क्योंकि बच्चा होना तथा कुऐं में पाया जाना, इस बात का संकेत है कि वह किसी निकटवर्ती क्षेत्र का रहने वाला है तथा खेलते-कूदते आ गिरा है।

[1]अर्थात यूसुफ़ के साथ यह जो कुछ हो रहा था, अल्लाह तआला को उस का ज्ञान था। परन्तु अल्लाह तआला ने यह सब कुछ इसलिये होने दिया ताकि भाग्य का लिखा पूरा हो। इसके अतिरिक्त इस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये संकेत है अर्थात अल्लाह अपने पैग़म्बर को बता रहा है कि आप के समुदाय के लोग अवश्य दुख दे रहे हैं तथा मैं उस से रोकने का सामर्थ्य भी रखता हूँ। परन्तु मैं उसी प्रकार उन्हें अवसर दे रहा हूँ जिस प्रकार यूसुफ़ के भाईयों को अवसर दिया था। तथा अन्त में मैंने यूसुफ़ को मिस्र के राजसिंहासन पर आसीन करा दिया, तथा उस के भाईयों को उस के दरबार में तुच्छ तथा निस्सहाय करके खड़ा कर दिया। हे पैग़म्बर ! एक समय आयेगा कि आप भी सफल होंगे तथा ये कुरैश के सरदार आप की आँखों के संकेत तथा होठों के हिलने की प्रतीक्षा में रहेंगे। अतः मक्का विजय के अवसर पर यह समय शीघ्र ही आ गया।

[2]भाईयों ने अथवा दूसरी व्याख्या के अनुसार व्यापारिक यात्रा के यात्रियों ने बेचा।

[3]क्योंकि गिरी पड़ी वस्तु मनुष्य को बिना किसी परिश्रम के मिल जाती है, इसलिये वह चाहे कितनी भी बहुमूल्य हो, उस का सही मूल्य तथा आदर-सम्मान मनुष्य पर प्रकट नहीं होता।

(२१) मिस्रवासियों में से जिस ने उसे ख़रीदा था उस ने अपनी पत्नी[1] से कहा कि इसे आदर तथा सम्मान के साथ रखो, बहुत संभव है कि यह हमें लाभ पहुँचाये अथवा हम इसे अपना पुत्र ही बना लें, इस प्रकार हमने (मिस्र की) धरती पर यूसुफ़ के पाँव जमाये।[2] कि हम उसे स्वप्न के फलों कुछ का ज्ञान सीखा दें। अल्लाह अपनी इच्छाओं की पूर्ति में सामर्थ्य रखता है, परन्तु अधिकतर लोग अनजान होते हैं।

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِن مِّصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾

(२२) तथा जब (यूसुफ़) पूर्ण यौवन को पहुँच गये, हमने उसे निर्णय की शक्ति तथा ज्ञान दे दिया।[3] हम भलाई करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

(२३) तथा उस स्त्री ने जिस के घर यूसुफ़ थे यूसुफ़ को फुसलाना प्रारम्भ किया कि वह अपने मन की सुरक्षा करना छोड़ दे। तथा द्वार बन्द करके कहने लगी लो आ जाओ। (यूसुफ़ ने) कहा, अल्लाह बचाये ! वह मेरा प्रभु है, मुझे

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَن نَّفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾

---

[1]कहा जाता है कि उस समय मिस्र के राज-सिंहासन पर रय्यान बिन वलीद आसीन था, तथा यह अज़ीज़ जिस ने यूसुफ़ को ख़रीदा था, उस का वित्त मंत्री था, उस की पत्नी का नाम कुछ ने राईल तथा कुछ ने ज़ुलेख़ा बतलाया है। والله أعلم

[2]अर्थात जिस प्रकार हम ने यूसुफ़ को कुऐं तथा अत्याचारी भाईयों से मुक्ति दी, उसी प्रकार यूसुफ़ को हम ने मिस्र की धरती में एक उचित स्थान प्रदान किया।

[3]अर्थात नबूअत अथवा नबूअत से पूर्व की बुद्धिमानी तथा निर्णय की शक्ति।

उसने अति उत्तम प्रकार से रखा है। अन्याय करने वालों का भला नहीं होता।[1]

(२४) तथा उस स्त्री ने यूसुफ़ की इच्छा किया तथा यूसुफ़ उसकी इच्छा करते,[2] यदि वह अपने प्रभु का प्रतीक देख न लेते।[3] इसी प्रकार हुआ, इसलिये कि हम उससे बुराई तथा

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ أَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ

[1]यहाँ से आदरणीय यूसुफ़ की एक नई परीक्षा प्रारम्भ हुई। मिस्री अज़ीज़ की पत्नी, जिस को उस के पति ने विशेषरूप से कहा था कि यूसुफ़ को आदर-सम्मान के साथ रखे, वह आदरणीय यूसुफ़ की सुन्दरता पर मोहित हो गयी, तथा उन्हें पाप की प्रेरणा देने लगी, जिसे आदरणीय यूसुफ़ ने ठुकरा दिया।

[2]यह अनुवाद अधिकतर व्याख्याकारों की व्याख्या के अनुसार है। तथा जिन लोगों ने لَوْلَا के साथ जोड़कर यह अर्थ बताया है कि यूसुफ़ ने इच्छा ही नहीं की, इन व्याख्याकारों ने उसे अरबी भाषा शैली के विरूद्ध बताया है। तथा यह अर्थ लिखा है कि इच्छा तो यूसुफ़ ने भी कर ली थी, परन्तु एक तो यह स्वयं नहीं था, बल्कि मिस्री अज़ीज़ की पत्नी का प्रलोभन तथा दबाव उस में सम्मिलित था। दूसरे यह कि पाप की इच्छा करना पवित्रता के विरूद्ध नहीं है अपितु उस के अनुसार कर्म करना पवित्रता के विरूद्ध है (फ़तहुल क़दीर, इब्ने कसीर) परन्तु शोधकर्ता व्याख्याकारों ने यह अर्थ वर्णित किये हैं कि यूसुफ़ भी उस की इच्छा कर लेते यदि अपने प्रभु की निशानी न देखे होते। अर्थात उन्होंने अपने प्रभु की निशानी देख रखी थी। इसलिये मिस्री अज़ीज़ की पत्नी की इच्छा ही नहीं की। बल्कि पाप की प्रेरणा मिलते ही पुकार उठे مَعاذ الله, परन्तु इच्छा न करने का यह अर्थ नहीं है कि मन में उत्तेजना ही नहीं उत्पन्न हुई। उत्तेजना उत्पन्न हो जाना अलग बात है तथा इच्छा करना अलग बात है। तथा वास्तविक बात यह है कि यदि किसी के पास काम उत्तेजना ही न उत्पन्न हो तो ऐसे व्यक्ति का पाप से बचना कोई कमाल नहीं। कमाल तो तब है कि जब मन में काम उत्तेजना उत्पन्न हो तथा फिर मनुष्य उस पर नियंत्रण करे तथा पाप से बच जाये। आदरणीय यूसुफ़ ने इसी चरम सीमा पर धैर्य तथा नियंत्रण का अनूठा नमूना प्रस्तुत किया।

[3]यहाँ प्रथम व्याख्या के आधार पर لَوْلَا का उत्तर नहीं दिया गया है। لَفَعل مَا هَمَّ بِه लुप्त है अर्थात यदि यूसुफ़ प्रभु की निशानी नहीं देखते तो जो इच्छा की थी, कर डालते। यह प्रतीक क्या था ? इसमें विभिन्न कथन हैं। अर्थ यह है कि प्रभु की ओर से कोई ऐसी वस्तु आप को दिखाई गयी कि उसे देखकर आप मनोकामना को दबाने तथा रोकने में सफल हो गये। अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों की इसी प्रकार सुरक्षा करता है।

निर्लज्जा दूर कर दें।[1] निःसंदेह वह हमारे चयन किये हुए भक्तों मे से था।

إِنَّهُۥ مِنْ عِبَادِنَا ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾

(२५) तथा दोनों द्वार की ओर दौड़े[2] उस स्त्री ने यूसुफ़ का वस्त्र (कुर्ता) पीछे से खींच कर फाड़ दिया तथा उस स्त्री का पति दोनों को द्वार के निकट ही मिल गया, तो कहने लगी जो व्यक्ति तेरी पत्नी के साथ बुरी इच्छा रखे बस उसका दण्ड यही है कि उसे बन्दी बना लिया जाये अथवा अन्य कोई घोर यातना दी जाये।[3]

وَٱسْتَبَقَا ٱلْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُۥ مِن دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا ٱلْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوٓءًا إِلَّآ أَن يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

(२६) (यूसुफ़ ने) कहा, यह स्त्री ही मुझे बहला फुसला कर (मेरी मनोकामना की सुरक्षा से असावधान करना) चाहती थी,[4] तथा स्त्री की जाति के एक व्यक्ति ने गवाही दी[5] कि

قَالَ هِىَ رَٰوَدَتْنِى عَن نَّفْسِى ۚ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَآ إِن كَانَ قَمِيصُهُۥ قُدَّ مِن قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿٢٦﴾

---

[1]अर्थात जिस प्रकार हमने यूसुफ़ को युक्ति दिखाकर, बुराई की इच्छा से उसे बचा लिया, उसी प्रकार हम ने उसे हर मामले में दुराचार तथा निर्लज्जता की बातों से दूर रखने का प्रवन्ध किया। क्योंकि वह हमारे चयनित भक्तों में से था।

[2]जब आदरणीय यूसुफ़ ने देखा कि वह स्त्री बुराई के कर्म करने पर बाध्य कर रही है, तो वह बाहर निकलने के लिये द्वार की ओर भागे, यूसुफ़ को पकड़ने के लिये स्त्री उन के पीछे दौड़ी, इस प्रकार दोनों द्वार की ओर लपके तथा दौड़े।

[3]अर्थात पति को देखते ही स्वयं निर्दोष बन गयी तथा सारा दोष यूसुफ़ पर लगा दिया तथा अपराधी बना कर के उनके लिये दण्ड भी निर्धारित कर दिया। यद्यपि वास्तविकता इस के विपरीत थी, अपराधिनी स्वयं थी जबकि आदरणीय यूसुफ़ निर्दोष थे तथा इस बुराई से बचने के इच्छुक तथा इस से बचने के लिये प्रयत्नशील रहा करते थे।

[4]आदरणीय यूसुफ़ ने जब यह देखा कि यह स्त्री सारे दोष उन्हीं पर आरोपित कर रही है, तो वास्तविकता स्पष्ट कर दी तथा कहा कि मुझे बुराई के लिये बाध्य तो यही करती रही है। मैं इस से बचने के लिये बाहर द्वार की ओर भागता हुआ आया हूँ।

[5]यह उन्हीं के परिवार का कोई बुद्धिमान व्यक्ति था जिस ने यह निर्णय दिया। निर्णय को यहाँ साक्ष्य के शब्द से वर्णन किया गया है, क्योंकि समस्या अभी जानकारी प्राप्त करने की थी। नवजात शिशु की साक्ष्य वाली बात प्रमाणित कथनों से सिद्ध नहीं। सहीहैन की

यदि उसका कुर्ता आगे से फटा हो तो स्त्री सच्ची है तथा यूसुफ़ झूठ बोलने वालों मे से है।

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा यदि उसका कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है, तो स्त्री झूठी है तथा यूसुफ़ सच्चों में से है।

فَلَمَّا رَأَىٰ قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

(२८) पति ने जो देखा कि कुर्ता पीछे से फटा है तो यह स्पष्ट कह दिया कि यह तो तुम स्त्रियों की चाल है, निःसंदेह तुम्हारे हथकंडे भारी हैं।[1]

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ﴿٢٩﴾

(२९) यूसुफ़, अब इस बात को भूल जाओ,[2] तथा (हे स्त्री)! अपने पापों से क्षमा माँग, निःसंदेह तू पापियों में से है।[3]

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा नगर की स्त्रियों में चर्चा होने लगी कि अज़ीज़ की पत्नी अपने (युवक) दास को अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिये बहलाने-फुसलाने में लगी रहती है, उस के दिल में यूसुफ़ का प्रेम संचित है, हमारी समझ से तो वह स्पष्ट ग़लती पर है।[4]

हदीस से तीन नवजात शिशुओं के बात करने की हदीस है, जिन में यह चौथा नहीं है, जिस का वर्णन इस स्थान पर किया जाता है।

[1]यह अज़ीज़े मिस्र का क़थन है जो उस ने अपनी पत्नी की कुचरित्रता को देखकर स्त्रियों के विषय में कहा। यह न अल्लाह का कथन है तथा न यह प्रत्येक स्त्री के विषय में उचित है। इसलिये इसे प्रत्येक स्त्री पर आरोपण करके तथा इस आधार पर स्त्री को छल-कपट की मूर्ति बताना, क़ुरआन का कदापि उद्देश्य नहीं है। जैसाकि कुछ लोग इस वाक्य के आधार पर इस विषय में विचार व्यक्त करते हैं।

[2]अर्थात इस का प्रचार न करो।

[3]इससे ज्ञात होता है कि अज़ीज़ मिस्र पर आदरणीय यूसुफ़ की सत्यता प्रकट हो गयी थी।

[4]जिस प्रकार सुगन्ध को बन्द करके छुपाया नहीं जा सकता, प्रेम का मामला भी ऐसा ही है। यद्यपि अज़ीज़े मिस्र ने आदरणीय यूसुफ़ को इसे भूल जाने ले लिये कहा तथा

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾

(३१) उसने जब उनकी इस छलपूर्ण पिशुनता को सुना तो उन्हें आमंत्रित किया,[1] तथा उन के लिये एक सभा का आयोजन किया,[2] तथा उन में से प्रत्येक को एक छुरी दे दी। तथा कहा कि हे यूसुफ़ इनके समक्ष चले आओ [3] उन स्त्रियों ने जब उसे देखा तो अति महान जाना तथा अपने हाथ काट लिये, [4] तथा मुख से निकल गया कि पाकी अल्लाह के लिये है

नि:संदेह आप के मुख से उस का कभी वर्णन भी नहीं आया होगा, फिर भी यह घटना जगल की आग की तरह नगर में फैल गयी तथा मिस्री स्त्रियों में इस का चर्चा सामान्य रूप से होने लगा, स्त्रियाँ आश्चर्य चकित थीं कि यदि प्रेम करना था तो किसी सुन्दर आकर्षक पुरूष से करती, यह क्या कि अपने ही दास पर मर मिटी, यह तो उस की बहुत बड़ी मूर्खता है।

[1]मिस्री स्त्रियों की पिशुनता की बातों तथा व्यंग एवं कटाक्ष को छल कहा गया है। जिस का कारण कुछ व्याख्याकारों ने यह वर्णन किया है कि उन स्त्रियों को भी यूसुफ़ की सुन्दरता के विषय में सूचनायें मिल रही थीं। अत: साक्षात् सुन्दरता को देखना चाहती थीं। अत: वह अपने छल (षडयंत्र) में सफल हो गयीं। अज़ीज की पत्नी ने यह बतलाने के लिये कि जिस पर मैं मोहित हुई हूँ वह एक दास अथवा जनसामान्य नहीं है, अपितु उस को देखकर अपना दिल व जान हार जाना कोई अनहोनी बात नहीं, उन स्त्रियों के लिए भोज का प्रवन्ध किया तथा उन्हें भोज का निमंत्रण भेजा।

[2]अर्थात उन के लिये ऐसा आसन का प्रबंध किया जहाँ तकिये लगे थे, जैसाकि आजकल भी अरबों में ऐसा आसन सामान्य रूप से मिलता है यहाँ तक कि होटलों तथा भोजनालयों में भी इस का प्रबंध है।

[3]अर्थात आदरणीय यूसुफ़ को उस समय तक छिपाये रखा। जब सभी स्त्रियों ने हाथों में छूरियाँ पकड़ लीं तो अज़ीज़ की पत्नी (जुलेख़ा) ने आदरणीय यूसुफ़ को सभा में उपस्थिति होने का आदेश दिया।

[4]अर्थात यूसुफ़ का सौन्दर्य देखकर एक तो उनकी श्रेष्ठता तथा प्रतिष्ठा को स्वीकार किया तथा दूसरे उन पर ऐसी वेसुध तथा मुग्ध हो गई कि छुरियाँ अपने हाथों पर चला लीं, जिससे उन के हाथ कट कर रक्त रंजित हो गये। हदीस में आता है कि आदरणीय यूसुफ़ को आधी सुन्दरता प्रदान की गयी है। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबुल इसराअ)

यह मनुष्य कदापि नहीं, यह तो नि:संदेह कोई बहुत बड़ा फ़रिश्ता है।[1]

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِنْ لَمْ يَفْعَلْ مَا آمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿٣٢﴾

(३२) (उस समय मिस्र के अज़ीज़ की पत्नी ने) कहा कि यही है जिन के विषय में तुम मुझे बुरा भला कह रहीं थीं।[2] मैंने हर प्रकार से इससे अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहा, परन्तु यह बेदाग़ बचा रहा, तथा जो कुछ मैं इस से कह रही हूँ, यदि यह न करेगा तो नि:संदेह यह बन्दी बना दिया जायेगा तथा निश्चय यह अत्यधिक अपमानित होगा।[3]

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي

(३३) (यूसुफ़ ने) कहा कि ऐ मेरे प्रभु ! जिस बात की ओर यह स्त्रियाँ मुझे बुला रही हैं, उस से तो कारागार मुझे अत्यधिक प्रिय है,

---

[1]इस का यह अर्थ नहीं कि फ़रिश्ते मनुष्य से रूप-रेखा में अच्छे अथवा श्रेष्ठ हैं। क्योंकि फ़रिश्तों को मनुष्यों ने देखा ही नही है। इस के अतिरिक्त मनुष्यों के लिये स्वयं अल्लाह ने क़ुरआन में स्पष्ट किया है कि हमने उसे सर्वोत्तम रूप में पैदा किया है। इन स्त्रियों ने मनुष्य के रूप को इसलिये नगण्य किया कि उन्होंने सुन्दरता का रूप जो मनुष्य के रूप में देखा उन की दृष्टि ने कभी नहीं देखा था। तथा उन्होंने फ़रिश्तों से तुलना इसलिये की कि जन सामान्य यही समझता है कि फ़रिश्ते गुण तथा रूप के अनुसार ऐसा रूप रखते हैं जो मनुष्य के रूप से उच्च है। इससे यह ज्ञात होता है कि नबियों के असाधारण विशेषताओं तथा गुणों के कारण उन्हें मानव जाति से निकाल कर दिव्य प्रकाश वाली प्राणी में रख देना प्रत्येक युग के ऐसे लोगों का कार्य रहा है, जो नबूअत तथा उस के पद से अनभिज्ञ होते हैं।

[2]जब अज़ीज़ की पत्नी ने देखा कि उस की चाल सफल रही है तथा स्त्रियाँ यूसुफ़ की सुन्दरता के प्रकाश से मुग्ध हो गयी हैं, तो कहने लगी कि इस की एक झलक से तुम्हारी यह दशा हो गयी है तो क्या तुम अब भी मुझे इस के प्रेम में पड़े रहने को बुरा कहोगी ? यही वह दास है जिस के विषय में तुम मुझे धिक्कारती हो।

[3]स्त्रियों को मुग्ध होती देखकर उस का साहस और बढ़ा तथा बेशर्म तथा लज्जा रहित होकर उस ने अपनी बुरी इच्छा को एक बार पुनः व्यक्त किया।

كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾

यदि तूने उन के छल मुझ से दूर न किया तो मैं इन की ओर आकर्षित हो जाऊँगा, तथा बिल्कुल मूर्खों में सम्मिलित हो जाऊँगा ।[1]

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾

(३४) उस के प्रभु ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली तथा उन स्त्रियों के छल से उसे बचा लिया । नि:संदेह वह सुनने वाला तथा जानने वाला है ।

ثُمَّ بَدَا لَهُم مِّن بَعْدِ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ لَيَسْجُنُنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٥﴾

(३५) फिर उन सभी लक्षणों के देख लेने के पश्चात् उन्हें यही भला लगा कि यूसुफ़ को कुछ समय के लिये कारागार में रखें ।[2]

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيَانِ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا ۖ وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْزًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा उस के साथ ही दो अन्य नवयुवक कारागार में आये । उन में से एक ने कहा कि मैंने स्वप्न में अपने आप को मदिरा निचोड़ते हुए देखा है, तथा दूसरे ने कहा कि मैंने अपने आप को देखा है कि मैं अपने सिर पर रोटी उठाये हुए हूँ, जिसे पक्षी खा रहे हैं हमें आप

---

[1]आदरणीय यूसुफ़ ने यह प्रार्थना अपने दिल में की, क्योंकि एक ईमानवाले के लिये प्रार्थना भी एक हथियार है । हदीस में आता है सात आदमियों को अल्लाह तआला अर्श की छाया प्रदान करेगा । उन में से एक वह व्यक्ति है जिसे एक ऐसी स्त्री पाप के लिये आमान्त्रित करे जो सुन्दर भी हो तथा उच्च पद पर आसीन भी हो । परन्तु वह उस के उत्तर में यह कह दे कि मैं तो "अल्लाह से डरता हूँ ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल आज़ान बाबु मन जलस फ़िल मस्जिद यन्तजिरूस्सलात व फ़ज़लुल मस्जिद तथा सहीह मुस्लिम किताबुज्ज़कात बाबु फ़ज़ल एखफा इअस्सदक:)

[2]सत्यता तथा पवित्रता स्पष्ट हो जाने के पश्चात् भी यूसुफ़ को कारागार में डालने का यही कारण उन के समक्ष हो सकता था कि मिस्री अज़ीज़ आदरणीय यूसुफ़ को अपनी पत्नी से दूर रखना चाहता होगा ताकि पुन: वह यूसुफ़ को अपनी चाल में फंसानें का प्रयत्न न करे, जैसाकि उस का ऐसा विचार था ।

इसका फल बतायें, हमें तो आप गुणी व्यक्ति प्रतीत होते हैं।[1]

(३७) (यूसुफ़ ने) कहा तुम्हें जो खाना दिया जाता है उस के तुम्हारे पास पहुँचने से पूर्व ही मैं तुम्हें उसका फल बता दूँगा। यह सब कुछ उस ज्ञान का परिणाम है जो मुझे मेरे प्रभु ने सिखाया है।[2] मैंने उन लोगों का धर्म छोड़ दिया है, जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते तथा आख़िरत को भी अस्वीकार करते हैं।[3]

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهِ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۚ ذَٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۚ إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٧﴾

(३८) मैं अपने पिता तथा पूर्वजों के धर्म का अनुयायी हूँ अर्थात इब्राहीम, इसहाक़ एवं याक़ूब के धर्म का,[4] हमें कदापि यह स्वीकार नहीं कि

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَا

[1]यह दोनों नवयुवक राज दरबार से सम्बन्ध रखते थे। एक शराब पिलाने पर नियुक्त था, दूसरा रोटी बनाता था। किसी कारण से उन्हें कारागार में डाल दिया गया था। आदरणीय यूसुफ़ अल्लाह के पैग़म्बर थे, धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ इबादत, तपस्या, संयम, सत्यता तथा चरित्र एवं कर्म में अन्य बन्दियों से श्रेष्ठ थे। इस के अतिरिक्त स्वप्नों के फलों का ज्ञान अल्लाह ने प्रदान कर रखा था। इन दोनों ने स्वप्न देखा तो प्राकृतिक रूप से वे आदरणीय यूसुफ़ के पास आये तथा कहा कि आप हमें अच्छे लोगों में से दिखायी दे रहे हैं। हमें हमारे स्वप्नों का फल बताईये। محسن का एक अर्थ कुछ ने यह भी किया है कि आप स्वप्नों का फल अच्छा बताते हैं।

[2]अर्थात मैं जो फल बताऊंगा वह भविष्यवेत्ताओं तथा ज्योतिष्यों के विचार तथा अनुमान पर आधारित नहीं होगी जिस में त्रुटि तथा उचित दोनों की सम्भावना होती है। बल्कि मेरा स्वप्न फल निश्चित ज्ञान पर आधारित होगा, जो अल्लाह की ओर से मुझे प्रदान किया गया है, जिस में त्रुटि होने की कोई भी सम्भावना नहीं है।

[3]यह अन्तर्ज्ञान तथा अल्लाह द्वारा प्रदान किया हुआ ज्ञान का कारण बताया जा रहा है कि मैंने उन लोगों का धर्म त्याग दिया है, जो अल्लाह तथा आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, उस के परिणाम स्वरूप अल्लाह की कृपा मुझ पर हुई।

[4]पूर्वज को भी पिता कहा गया है क्योंकि वे भी पिता ही हैं। फिर क्रम में भी पितामह (इब्राहीम) फिर निकटवर्ती दादा (इसहाक़) एवं फिर पिता (याक़ूब) का वर्णन किया। अर्थात प्रथमतः, प्रथम मूल, फिर द्वितीय मूल एवं फिर तृतीय मूल का वर्णन किया।

أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

हम अल्लाह तआला के साथ किसी को भी साझीदार बनायें,[1] हम पर तथा अन्य सभी लोगों पर अल्लाह (तआला) की यह विशेष कृपा है, परन्तु अधिकतर लोग कृतघ्न होते हैं।

يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَأَرْبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

(३९) ऐ मेरे कारागार के साथियो![2] क्या विभिन्न प्रकार के कई देवता श्रेष्ठ हैं[3] अथवा एक अल्लाह सर्वशक्तिमान ?

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءً سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۚ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

(४०) उसके अतिरिक्त जिनकी पूजा तुम कर रहे हो, वे सब नाम ही के हैं, जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने स्वयं गढ़ लिया है। अल्लाह तआला ने इनका कोई प्रमाण नहीं उतारा,[4] निर्णय देना अल्लाह (तआला) ही का कार्य है, उस का आदेश है कि तुम सभी उसके अतिरिक्त किसी की इबादत (वंदना) न करो।

---

[1]यह वही एकेश्वरवाद का आमन्त्रण तथा मूर्तिपूजन का खण्डन है, जो प्रत्येक नबी की मूल तथा प्रथम शिक्षा तथा आमन्त्रण होता था।

[2]कारागार के साथी इसलिये कहा कि यह सब एक अवधि से कारागार में बंद चले आ रहे थे।

[3]यह विभेद अस्तित्व, गुणों तथा संख्या के आधार पर है। अर्थात वह प्रभु, जो अस्तित्व में एक-दूसरे से भिन्न तथा गुणों में एक-दूसरे से अलग तथा संख्या में भी अनेक हों ये श्रेष्ठ हैं अथवा वह अल्लाह, जो अस्तित्व एवं गुणों में एक है जिस के न कोई बराबर है न साझीदार तथा वह सब पर प्रभावशाली तथा शासक है ?

[4]इसका एक अर्थ तो यह है कि उसका नाम देवता तुमने स्वयं रखा है, जबकि न वे देवता हैं न उनके विषय में अल्लाह की ओर से कोई प्रमाण ही उतरा है। दूसरा अर्थ यह है कि उन देवताओं के जो विभिन्न नाम तुमने रखे हैं, जैसे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, गंज बख़्श, शकरगंज आदि। यह सब तेरे अपने बनाये हुए हैं। उन का कोई प्रमाण अल्लाह ने नहीं उतारा।

यही धर्म सत्य है,[1] परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।[2]

(४१) ऐ मेरे कारागार के साथियो![3] तुम दोनों में से एक तो अपने राजा को मदिरा पान कराने के लिये नियुक्त हो जायेगा,[4] परन्तु दूसरे को फांसी दी जायेगी तथा पक्षी उसका सिर नोच-नोच कर खायेंगे ।[5] तुम दोनों जिसके विषय में पूछ रहे थे, उसका निर्णय हो गया ।[6]

يَٰصَٰحِبَيِ ٱلسِّجۡنِ أَمَّآ أَحَدُكُمَا فَيَسۡقِي رَبَّهُۥ خَمۡرٗاۖ وَأَمَّا ٱلۡأٓخَرُ فَيُصۡلَبُ فَتَأۡكُلُ ٱلطَّيۡرُ مِن رَّأۡسِهِۦۚ قُضِيَ ٱلۡأَمۡرُ ٱلَّذِي فِيهِ تَسۡتَفۡتِيَانِ ﴿٤١﴾

---

[1]यही धर्म, जिस की ओर मैं तुम्हें बुला रहा हूँ, जिस में एक अल्लाह की इबादत है, सत्य तथा स्थाई है, जिसका आदेश अल्लाह ने दिया है।

[2] जिस के कारण अधिकतर लोग शिर्क करते हैं।

﴿ وَمَا يُؤۡمِنُ أَكۡثَرُهُم بِٱللَّهِ إِلَّا وَهُم مُّشۡرِكُونَ ﴾

"उनमें अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के उपरान्त भी शिर्क करने वाले ही हैं।" (*सूर: यूसुफ़*-१०६)

तथा फ़रमाया :

﴿ وَمَآ أَكۡثَرُ ٱلنَّاسِ وَلَوۡ حَرَصۡتَ بِمُؤۡمِنِينَ ﴾

"हे पैग़म्बर ! तेरी इच्छा के उपरान्त अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।"(*सूर: यूसफ़*-१०३)

[3]एकेश्वरवाद का प्रवचन देने के पश्चात अब आदरणीय यूसुफ़ उन के द्वारा वर्णित स्वप्नों के फलों का वर्णन कर रहे हैं।

[4]यह वह व्यक्ति है जिस ने स्वप्न में अपने को अंगूर का रस तैयार करते देखा था। फिर भी आपने दोनों में से किसी एक को निर्धारित करके नहीं बताया कि मरने वाला पहले ही दुख तथा चिन्ता में घिर जाये।

[5]यह वह व्यक्ति है जिस ने स्वप्न में अपने सिर पर रोटी रखे देखा था।

[6]अर्थात अल्लाह के द्वारा लिखे भाग्य में पहले ही से लिखा था तथा जो फल मैंने बताया है यह अन्ततः पूरा होकर रहेगा। जैसाकि हदीस में है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِندَ رَبِّكَ فَأَنسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा जिस के सम्बन्ध में यूसुफ़ का विचार था कि उन दोनों में से यह छूट जायेगा, उस से कहा कि अपने राजा से मेरी चर्चा भी कर देना, फिर उसे शैतान ने राजा से वर्णन करना भुला दिया तथा यूसुफ़ ने कई वर्ष कारागार में काटे ।[1]

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَىٰ سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ ۖ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِن كُنتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा राजा ने कहा कि मैंने स्वप्न देखा है कि सात मोटी-ताज़ी गायें हैं, जिनको सात दुबली-क्षीण सी गायें खा रही हैं तथा सात बालियाँ हैं हरी-भरी तथा सात अन्य बिल्कुल सूखी हुई । हे सभासदो ! मेरे इस स्वप्न का फल बताओ यदि तुम स्वप्न का फल बता सकते हो ।

قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَالِمِينَ ﴿٤٤﴾

(४४) उन्होंने उत्तर दिया कि यह तो उड़ते हुए व्यग्र स्वप्न हैं तथा इस प्रकार के व्यग्र स्वप्न के फल जानने वाले हम नहीं ।[2]

"स्वप्न जब तक उसका फल न निकाल लिया जाये, पक्षी के पैर पर है । जब फल निकाल लिया जाये तो घटित हो जाता है ।" (मुसनद अहमद, उदघृत इब्ने कसीर)

[1] بِضْعٌ का शब्द तीन से लेकर नौ तक के अंकों को कहा जाता है । वहब बिन मुनब्बह का कथन है कि आदरणीय अय्यूब परीक्षा में तथा यूसुफ़ कारागार में सात वर्ष रहे तथा बुख़्तनसर का प्रकोप भी सात वर्ष रहा । और कुछ के निकट बारह वर्ष तथा कुछ के निकट चौदह वर्ष कारागार में रहे ।

[2] أضغاث बहुवचन है ضغث का, जिसका अर्थ 'घास के गट्ठर' है । أحلام ، حلم (अर्थ स्वप्न) का बहुवचन है । أضغاث أحلام का अर्थ होगा 'चिन्तापूर्ण स्वप्न' अथवा 'व्यग्रचित स्वप्न', जिनका कोई फल न हो । यह स्वप्न उस राजा को आया मिस्री अज़ीज़ जिस का मंत्री था । अल्लाह तआला को इस स्वप्न के द्वारा यूसुफ़ को कारागार से निकालना था । अत: राजा के भविष्यवेत्ताओं, तथा ज्योंतिषियों ने इस विलक्षण स्वप्न का फल बताने में अपनी असमर्थता व्यक्त की । कुछ कहते हैं कि ज्योंतिषियों के इस कथन का अर्थ साधारणत: स्वप्न फल बताने के ज्ञान का खण्डन है तथा कुछ कहते हैं कि वे स्वप्न फल बताने के

(४५) तथा उन बंदियों में से छूटे हुए को एक समय के पश्चात् याद आ गया तथा कहने लगा मैं तुम्हें इस का फल बतला दूँगा, मुझे जाने की आज्ञा प्रदान कीजिए।[1]

وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُم بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ﴿٤٥﴾

(४६) हे यूसुफ़ ! हे अति सत्यवादी यूसुफ़ ! आप हमें इस स्वप्न का फल बताइए कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली (अस्वस्थ) गायें खा रही हैं तथा सात बिल्कुल हरी बालियाँ है तथा सात ही अन्य भी बिल्कुल सूखी हैं, ताकि मैं वापस जाकर उन लोगों से कहूँ कि वे सभी जान लें।

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ لَّعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾

(४७) (यूसुफ़ ने) उत्तर दिया कि तुम सात वर्ष निरन्तर नियमबद्ध होकर अन्न बोना तथा उसे काटकर बालियों सहित ही रहने देना, अपने भोजन के लिये थोड़ी-सी मात्रा के सिवाय।

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا فَمَا حَصَدتُّمْ فَذَرُوهُ فِي سُنبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾

(४८) उस के पश्चात् सात वर्ष अत्यन्त अकाल के आयेंगे, वे उस अन्न को खा जायेंगे, जो तुम ने उन के लिये भण्डार कर रखा था,[2] सिवाय

ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ

ज्ञान से अनजान नहीं थे न इस को उन्होंने नकारा, उन्होंने केवल इस स्वप्न का फल बताने में असमर्थता व्यक्त की।

[1]यह कारागार से छूटने वाला एक साथी था, जिस से आदरणीय यूसुफ़ ने कहा था कि अपने मालिक से मेरा वर्णन करना ताकि मेरे छूटने की व्यवस्था हो जाये। उसे अचानक याद आया तथा उस ने कहा कि मुझे समय दो मैं तुम्हें आकर इसका फल बतलाता हूँ। अत: वह निकलकर सीधे यूसुफ़ के पास पहुँचा तथा स्वप्न का विवरण सुनाया तथा उसका फल पूछा।

[2]अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ को 'स्वप्न फल' का ज्ञान भी प्रदान किया था। इसलिये वह इस स्वप्न की तह तक शीघ्र पहुँच गये। उन्होंने पुष्ट-स्वस्थ गायों से तात्पर्य सात वर्ष ऐसे लिये जिन में अधिक उपज होगी तथा सात दुर्बल गायों से उस के विपरीत सात वर्ष सूखा अकाल के। इसी प्रकार सात हरी बालियों से तात्पर्य लिया कि धरती अधिक पैदावार देगी तथा सात सूखी बालियों से अर्थ यह लिया कि इन सात वर्षों

إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾

उस के जो थोड़े से तुम रोक रखते हो ।[1]

ثُمَّ يَأْتِي مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) फिर इस के पश्चात् जो वर्ष आयेगा उस में लोगों पर बहुत वर्षा होगी और उस में (अंगूर का रस भी) बहुत निचोड़ेंगे ।[2]

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِۦ ۖ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الَّٰتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा राजा ने कहा कि उसे (यूसुफ़) को मेरे पास लाओ ।[3] जब संदेशवाहक उसके (यूसुफ़ के) पास पहुँचा तो उन्होंने कहा कि अपने राजा के पास वापस जाओ तथा उनसे पूछो कि उन स्त्रियों की वास्तविक घटना क्या है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे ।[4] उनके छल को उचितरूप से जानने वाला मेरा प्रभु ही है ।

में धरती पर उपज नहीं होगी । तथा फिर उसके लिये प्रयोजन भी बताया कि सात वर्ष तुम निरन्तर कृषि करो तथा जो अनाज हो उसे काटकर बालियों सहित रखो ताकि उनमें अनाज अधिक सुरक्षित रहे, फिर जब सात वर्ष अकाल के आयेंगे तो यह अनाज तुम्हारे काम आयेगा, जिस का भण्डार तुम अब करोगे ।

[1] مما تحصنون से तात्पर्य बीज के लिये सुरक्षित दाने हैं, जो पुन: बोये जाते हैं ।

[2]अर्थात अकाल के सात वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् खूब वर्षा होगी, जिसके परिणाम स्वरूप खूब पैदावार होगी तथा तुम अंगूरों से उस का रस निकालोगे, ज़ैतून का तेल निकालोगे तथा पशुओं के दूध निकालोगे । स्वप्न के इस फल से स्वप्न का कितना सुन्दर सम्बन्ध है, जिस को केवल वही समझ सकता है, जिसे अल्लाह तआला ऐसी उचित योग्यता, प्रबोध तथा ज्ञान प्रदान करे जो अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ को प्रदान किया था ।

[3]अर्थ यह है कि जब वह व्यक्ति स्वप्न का फल ज्ञात करके राजा के पास गया तथा उसे बताया, तो वह उस फल से तथा आदरणीय यूसुफ़ की बतायी हुई योजना से अत्यधिक प्रभावित हुआ तथा उस ने अनुमान लगाया कि वह व्यक्ति, जिसे दीर्घकाल से कारागार में रखा गया है, विशेष ज्ञान, महानता एवं उत्तम प्रतिभा का व्यक्ति है । अत: राजा ने उन्हें दरबार में प्रस्तुत करने का आदेश दिया ।

[4]आदरणीय यूसुफ़ ने देखा कि राजा अब कृपा करना चाहता है, तो उन्होंने इस प्रकार मात्र शाही कृपा से कारागार से निकलना नहीं चाहा, बल्कि अपने चरित्र की उच्चता तथा पवित्रता के सिद्ध करने को प्राथमिकता दी ताकि दुनियाँ के समक्ष आप के चरित्र का सौन्दर्य तथा उच्चता प्रष्ट हो जाये । क्योंकि अल्लाह की ओर से आह्वान करने वाले के लिये ये सत्यता तथा पवित्रता एवं सुचरित्रता अति आवश्यक है ।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدتُّنَّ يُوسُفَ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ قُلْنَ حَـٰشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِن سُوٓءٍ ۚ قَالَتِ ٱمْرَأَتُ ٱلْعَزِيزِ ٱلْـَٔـٰنَ حَصْحَصَ ٱلْحَقُّ أَنَا۠ رَٰوَدتُّهُۥ عَن نَّفْسِهِۦ وَإِنَّهُۥ لَمِنَ ٱلصَّـٰدِقِينَ ﴿٥١﴾

(५१) (राजा ने) पूछा, ऐ स्त्रियो ! उस समय की सत्य घटना क्या है, जब तुम छल करके यूसुफ़ को उस की हार्दिक इच्छा से भटकाना चाहती थीं, उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया कि (अल्लाह जानता है) हम ने यूसुफ़ में कोई बुराई नहीं पायी,[1] फिर तो अज़ीज़ की पत्नी भी बोल उठी कि अब तो सच्ची बात स्पष्ट हो गई है। मैंने ही उसे बहकाने का प्रयत्न किया था उसकी हार्दिक इच्छा से, तथा नि:संदेह वह सत्यवादियों मे से है।[2]

ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّى لَمْ أَخُنْهُ بِٱلْغَيْبِ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى كَيْدَ ٱلْخَآئِنِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) (यूसुफ़ ने कहा) यह इस कारण कि (अज़ीज़) को ज्ञात हो जाये कि मैंने उसके साथ विश्वासघात नहीं किया[3] तथा यह भी कि अल्लाह छली एवं कपटियों की चाल नहीं चलने देता।[4]

---

[1]राजा द्वारा पूछे जाने पर सभी स्त्रियों ने यूसुफ़ की पवित्रता को स्वीकार किया।

[2]अब अज़ीज़ की पत्नी (जुलेख़ा) के लिये भी यह स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं शेष नहीं रहा कि यूसुफ़ निर्दोष है तथा यह चाल मेरी ही ओर से हुई थी, इस फ़रिश्ता जैसे आदमी का इस ग़लती से कोई सम्बन्ध नहीं।

[3]जब कारागार में आदरणीय यूसुफ़ को यह सारा वृतान्त सुनाया गया, तो उसे सुनकर यूसुफ़ ने कहा तथा कुछ कहते हैं कि राजा के पास जाकर उन्होंने यह कहा तथा कुछ व्याख्याकारों के निकट यह भी अज़ीज़ की पत्नी (जुलेख़ा) का ही कथन है तथा अर्थ यह है कि यूसुफ़ की अनुपस्थिति में भी उसे अनुचित रूप से दोषी करके विश्वासघात नहीं करती हूँ बल्कि ईमानदारी की माँगों को अपने सामने रखते हुए अपनी ग़लती स्वीकार करती हूँ। अथवा यह अर्थ है कि मैं ने अपने पति के साथ विश्वासघात नहीं किया तथा किसी महापाप में नहीं पड़ी। इमाम इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है।

[4]कि वह सदैव अपने छल-कपट में सफल ही रहें। बल्कि उन का प्रभाव अस्थाई तथा सीमित होता है अन्त में विजय सत्य एवं सत्यवादियों की होती है, यद्यपि सत्यमार्गियों को अस्थाई रूप से परीक्षा के मार्ग से गुज़रना पड़े।

(५३) तथा मैं अपनी इन्द्रियों की पवित्रता का वर्णन नहीं करती ।[1] निःसंदेह मन तो बुराई की प्रेरणा देने वाला ही है, [2] परन्तु यह कि मेरा प्रभु ही अपनी दया करे।[3] निश्चय ही मेरा पालनहार क्षमाशील कृपानिधि है।

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِىٓ ۚ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّىٓ ۚ إِنَّ رَبِّى غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾

(५४) तथा राजा ने कहा उसे मेरे समक्ष लाओ कि मैं उसे अपने निजी कार्यों के लिये नियुक्त कर लूँ।[4] फिर जब उससे वार्तालाप करने लगा तो कहने लगा कि आप हमारे यहाँ आज से सम्मानित तथा विश्वस्त हैं।[5]

وَقَالَ ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِى بِهِۦٓ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِى ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُۥ قَالَ إِنَّكَ ٱلْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾

[1]इसे यदि आदरणीय यूसुफ़ का कथन स्वीकार कर लिया जाये तो विन्नमता के रूप में है, अन्यथा स्पष्ट रूप से प्रकट है कि उनकी पवित्रता हर प्रकार से सिद्ध हो चुकी थी। तथा यदि मिस्र के मंत्री की पत्नी का कथन है (जैसाकि इमाम इब्ने कसीर का विचार है) तो यह वास्तविकता पर आधारित है क्योंकि उसने अपने पाप तथा यूसुफ़ के बहलाने-फुसलाने को स्वीकार कर लिया।

[2]यह उसने अपनी त्रुटियों की कष्ट कल्पना अथवा उसका कारण बताया है कि मनुष्य का मन ही ऐसा है कि उसे बुराई के लिये उभारता तथा उकसाता है।

[3]इन्द्रियों के छल से वही सुरक्षित रहता है जिस पर अल्लाह तआला की कृपा हो। जिस प्रकार कि आदरणीय यूसुफ़ को अल्लाह तआला ने बचा लिया।

[4]जब राजा (रय्यान पुत्र वलीद) पर यूसुफ़ के ज्ञान तथा गुणों के साथ उसके आचरण की महत्ता तथा पवित्रता स्पष्ट हो गयी, तो उसने आदेश दिया कि उन्हें मेरे समक्ष प्रस्तुत करो, मैं उन्हें अपने लिये चयन करता हूँ अर्थात अपना निकटवर्ती तथा विशेष सलाहकार नियुक्त करना चाहता हूँ।

[5] مَكِينٌ (मकीन) का अर्थ है पदाधिकारी أَمِينٌ (अमीन), राज्य का भेद जानने वाला।

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۖ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾

(५५) (यूसुफ़ ने) कहा कि आप मुझे देश के कोष पर नियुक्त कर दीजिये।[1] मैं रक्षक तथा जानने वाला हूँ।[2]

وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ ۚ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَاءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

(५६) तथा इस प्रकार हमने यूसुफ़ को देश की बागडोर दे दी कि वह जहाँ चाहे रहे-सहे।[3] हम जिसे चाहें अपनी कृपा पहुँचा देते हैं। हम पुण्य करने वालों के कर्मों का फल नष्ट नहीं करते।[4]

---

[1] خَزَائِنُ (ख़ज़ाएन) बहुवचन है خِزَانَةٌ (ख़ज़ाना) का। ख़ज़ाना का अर्थ है 'कोष' अर्थात ऐसे स्थान को कहते हैं जहाँ वस्तुऐं सुरक्षित रखी जाती हैं। धरती के कोष से तात्पर्य वे भण्डार हैं जहाँ अनाज एकत्रित किया जाता था। इसकी व्यस्था अपने हाथ में लेने की इच्छा इसलिये व्यक्त की कि निकट भविष्य में (स्वप्न के फल को देखते हुए) जो सूखे के वर्ष आने वाले थे, उससे निपटने के लिये विशेष प्रबन्ध किये जा सकें तथा अनाज की पर्याप्त मात्रा सुरक्षित रखी जा सके। सामान्य अवस्था में यद्यपि पद तथा पदवी की इच्छा उचित नहीं है, परन्तु आदरणीय यूसुफ़ के इस व्यवहार से ज्ञात होता है कि विशेष अवस्था में यदि कोई व्यक्ति यह समझता है कि राष्ट्र तथा देश के सामने जो कठिनाईयाँ हैं उनसे निपटने में मनुष्य में उत्तम योग्यताऐं हों तथा वह अन्य लोगों में न हो, तो वह अपनी योग्यता के अनुसार पद तथा पदवी की माँग कर सकता है। इसके अतिरिक्त आदरणीय यूसुफ़ ने पद तथा पदवी की कामना नहीं की। परन्तु जब मिस्र के राजा ने स्वयं प्रस्तुत किया तो फिर ऐसे पद की इच्छा व्यक्त की जिसमें उन्होंने देश तथा राष्ट्र की सेवा के पक्ष को अधिक प्रत्यक्ष देखा।

[2] حَفِيظٌ मैं उसकी उस प्रकार सुरक्षा करूँगा कि उसका कोई अपव्यय नहीं करूँगा, عَلِيمٌ उसको एकत्रित करने तथा व्यय करने एवं उसके रखने तथा निकालने का उत्तम ज्ञान रखता हूँ।

[3]अर्थात हमने यूसुफ़ को धरती पर ऐसी शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान किया कि राजा वही आदेश करता जो आदरणीय यूसुफ़ करते, तथा मिस्र की धरती में इस प्रकार अधिकार चलाते जिस प्रकार मनुष्य अपने घर पर चलाता है तथा जहाँ चाहते वहाँ रहते, सम्पूर्ण मिस्र उनके आधीन था।

[4]यह जैसे कि बदला था उनके धैर्य का जो भाईयों की क्रूरता तथा अत्याचार पर उन्होंने रखा तथा उस सुदृढ़ता का जो ज़ुलेखा के पाप के निमन्त्रण के समक्ष प्रयोग किया तथा

(५७) तथा निःसंदेह ईमानदारों तथा परहेजगारों का पारलौकिक बदला अति उत्तम है।

وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

(५८) तथा युसुफ़ के भाई आये एवं यूसुफ के पास गये, तो उसने उन्हें पहचान लिया तथा उन्होंने उसे नहीं पहचाना।[1]

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٥٨﴾

(५९) तथा जब उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा कि तुम मेरे पास अपने उस भाई को लाना जो तुम्हारे पिता से है, क्या तुमने नहीं देखा कि मैं नाप भी पूरा कर देता हूँ

وَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ لَّكُم مِّنْ أَبِيكُمْ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا

उस पूर्ण दृढ़ता का जो कारागार के जीवनकाल में अपनाये रखा। आदरणीय यूसुफ़ का पद वही था जिस पर पूर्व मिस्री अजीज़ आसीन था जिसकी पत्नी ने आदरणीय यूसुफ़ को बहकाने का असफल प्रयत्न किया था। कुछ लोग कहते हैं कि राजा आदरणीय यूसुफ़ की शिक्षा-दीक्षा के कारण मुसलमान हो गया था। इसी प्रकार कुछ लोग कहते हैं कि मिस्री अज़ीज़ जिसका नाम 'इत्फ़ीर' था उसकी मृत्यु हो गई थी तो उसके पश्चात जुलेख़ा का विवाह आदरणीय यूसुफ़ से हो गया तथा दो पुत्र भी हुए, एक का नाम अफ़राईम तथा दूसरे का नाम मीशा था, अफ़राईम ही यूशअ बिन नून तथा आदरणीय अय्यूब की पत्नी 'रहमत' के पिता थे (तफ़सीर इब्ने कसीर) परन्तु यह बात किसी प्रमाणित कथन से सिद्ध नहीं होती, इसलिये विवाह वाली बात उचित प्रतीत नहीं होती है। इसके अतिरिक्त उस स्त्री से जिसका आचरण का प्रदर्शन हुआ, उसके होते हुए एक नबी के परिवार से सम्बन्ध, अत्यधिक अनुचित बात लगती है।

[1]यह उस समय की घटना है जब समृद्धि के सात वर्ष समाप्त होकर अकाल प्रारम्भ हो गया, जिसने मिस्र देश के अधिकांश क्षेत्र को पीड़ित कर दिया, यहाँ तक कि कनआन तक भी इसका प्रभाव पहुँचा, जहाँ आदरणीय याक़ूब तथा आदरणीय यूसुफ़ के भाई निवास करते थे। आदरणीय यूसुफ़ ने इससे निपटने के लिये जो सुव्यवस्था की थी, वे सार्थक हुई तथा प्रत्येक ओर से लोग आदरणीय यूसुफ़ से अनाज लेने के लिये आ रहे थे। आदरणीय यूसुफ़ की प्रसिद्धि कनआन तक भी पहुँची कि मिस्र का राजा इस प्रकार अनाज बिक्री कर रहा है। अतः पिता के आदेश पर यूसुफ़ के भाई भी घर की पूँजी लेकर अनाज प्राप्ति के लिये राजदरबार में पहुँचे, जहाँ आदरणीय यूसुफ़ विराजमान थे, जिन्हें ये भाई तो न पहचान सके, परन्तु यूसुफ़ ने अपने भाईयों को पहचान लिया।

خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٥٩﴾

तथा मैं हूँ भी उत्तम प्रकार से अतिथि सत्कार करने वालों में ।[1]

فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِي وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٠﴾

(६०) परन्तु यदि तुम उसे मेरे पास लेकर न आये तो मेरी ओर से तुम्हें कोई नाप नहीं मिलेगा बल्कि तुम मेरे निकट भी न आ सकोगे ।[2]

قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ﴿٦١﴾

(६१) उन्होंने कहा ठीक है हम उसके पिता से इस विषय में फुसलाकर पूरा प्रयास करेंगे ।[3]

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا

(६२) तथा अपने सेवकों से कहा कि [4] उनका धन उन्हीं की बोरियों में रख दो[5] कि जब लौट

---

[1]आदरणीय यूसुफ़ ने अनजान बनकर जब अपने भाईयों से बातें पूछीं, तो उन्होंने जहाँ अन्य सब कुछ बताया यह भी बता दिया कि हम दस भाई यहाँ उपस्थित हैं । परन्तु हमारे दो सौतेले भाई (अर्थात दूसरी माता से) अन्य भी हैं, उनमें से एक जंगल में मर गया तथा उसके दूसरे भाई को पिता ने अपनी सान्तवना के लिये अपने पास रखा है, उसे हमारे साथ नहीं भेजा । जिस पर आदरणीय यूसुफ़ ने कहा कि भविष्य में उसे भी साथ लेकर आना । देखते नहीं कि मैं नाप भी पूरा देता हूँ तथा अतिथि सत्कार तथा सेवा भी भली प्रकार करता हूँ ।

[2]प्रलोभन के साथ यह चेतावनी भी है कि यदि ग्यारहवें भाई को साथ न लाये, तो न तुम्हें अनाज मिलेगा न मेरी ओर से यह सेवा-सत्कार का प्रबन्ध होगा ।

[3]अर्थात हम अपने पिता से उस भाई को लाने की माँग करेंगे तथा हमें विश्वास है कि हम उसमें सफल होंगे ।

[4] فتيان (फ़ित्यान) का अर्थ है नवयुवक जिससे तात्पर्य है नौकर, सेवक तथा दास, जो राजदरवार में नियुक्त थे ।

[5]इससे तात्पर्य वह पूँजी है जो यूसुफ़ के भाई अनाज ख़रीदने के लिये अपने साथ लाये थे । رحال (रेहाल) से तात्पर्य उनका सामान जो यात्रा के लिये बाँधे गये थे । पूँजी गुप्तरूप से उनके यात्रा के सामान में रख दो कि सम्भव है पुन: आने के लिये और पूँजी न हो, तो यही पूँजी लेकर आ जायें । कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि भाईयों से अनाज का मूल्य लेना उन्होंने पसन्द नहीं किया, इसलिये पूँजी वापस रखवा दी ।

انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾

कर अपने परिवार में जायेंगे तथा धन को पहचान लें, तो अति संभव है कि यह फिर आयें।

فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) जब ये लोग लौटकर अपने पिता के पास गये तो कहने लगे हम से तो अनाज का नाप रोक लिया गया।[1] अब आप हमारे साथ भाई को भेजिये कि हम नाप भर कर लायें हम उसकी रक्षा के उत्तरदायी हैं।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ۭ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۠ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) (याक़ूब ने) कहा कि क्या मैं इसके विषय में तुम्हारा वैसे ही विश्वास कर लूँ जैसे इस से पूर्व उसके भाई के विषय में विश्वास किया ?[2] बस अल्लाह तआला ही अति उत्तम रक्षक है तथा वह सभी दयावानों से अत्यधिक दयावान है।[3]

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ۭ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ۭ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا

(६५) तथा जब उन्होंने अपना सामान खोला तो अपना धन विद्यमान पाया जो उनकी ओर लौटा दिया गया था। कहने लगे हमारे पिताजी ! हमें अन्य क्या चाहिये ?[4] यह हमारा धन

---

[1]अर्थ यह है कि भविष्य में अनाज बिनयामीन के भेजने के साथ प्रतिबन्धित है। यदि यह साथ न जायेगा तो अनाज नहीं मिलेगा। इसलिये इसे अवश्य साथ भेजें ताकि हमें पुन: इसी प्रकार अनाज मिल सके, जिस प्रकार से इस बार मिला है। तथा इस प्रकार का भय न करें जिस प्रकार यूसुफ़ को भेजते हुए किया था। हम उसकी रक्षा करेंगे।

[2]अर्थात तुमने यूसुफ़ को भी साथ ले जाते समय इसी प्रकार संरक्षण का वचन दिया था, परन्तु जो कुछ हुआ, वह सामने है। अब तुम्हारा किस प्रकार विश्वास करूँ ?

[3]फिर भी चूँकि अनाज की अत्यधिक आवश्यकता थी, इसलिये भय के उपरान्त भी बिनयामीन को साथ भेजने से इंकार उचित नहीं समझा तथा अल्लाह पर भरोसा करके उसे भेजने के लिये तैयार हो गये।

[4]अर्थात राजा के इस प्रकार के सदव्यवहार के उपरान्त कि उसने हमारी सेवा तथा सत्कार भी भली प्रकार किया तथा हमारी पूँजी भी वापस कर दी अन्य हमें क्या चाहिए ?

रुद्दत इलैना, व नमीरु अह्लना व नह्फ़ज़ु अख़ाना व नज़्दादु कैल बईरिन ज़ालिक कैलुंय्यसीर (६५)

رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَ نَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ۭ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾

हमें लौटा दिया गया है, तथा हम अपने परिवार के लिये अन्न ला देंगे तथा अपने भाई की सुरक्षा रखेंगे तथा एक ऊँट का नाप अधिक लायेंगे।[1] यह नाप तो अधिक सरल है।[2]

قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰي مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

(६६) (याक़ूब ने) कहा कि मैं तो उसे कदापि तुम्हारे साथ न भेजूँगा जब तक तुम अल्लाह को बीच में रखकर मुझे वचन न दो कि तुम उसे मेरे पास पहुँचा दोगे अतिरिक्त इसके कि तुम सब बन्दी बना लिये जाओ।[3] जब उन्होंने पक्का वचन दिया तो उन्होंने कहा कि हम जो कुछ कहते हैं अल्लाह उसका संरक्षक है।

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ

(६७) तथा (याक़ूब ने) कहा कि ऐ मेरे बच्चो! तुम सब एक द्वार से न जाना बल्कि कई द्वारों से अलग-अलग रूप से प्रवेश करना।[4]

---

[1]क्योंकि प्रति व्यक्ति ऊँट जितना बोझ उठा सकता था अनाज दिया जाता था, बिनयामीन के कारण एक ऊँट की भरती अधिक मिलती।

[2]इसका एक अभिप्राय तो यह है कि राजा के लिये एक ऊँट का भार कोई कठिन कार्य नहीं है, सरल है। दूसरा भावार्थ यह है कि ذلك का संकेत उस अनाज की ओर है, जो साथ लाये थे तथा يَسِيرٌ का अर्थ थोड़ी मात्रा है अर्थात हम जो अनाज लाये हैं वह थोड़ी मात्रा में है, बिनयामीन के जाने से हमें अधिक अनाज मिल जायेगा, तो अच्छी ही बात है, हमारी आवश्यकता अधिक सुचारू रूप से पूर्ण हो जायेगी।

[3]अर्थात तुम्हें सामूहिक कठिनाई आ पड़े अथवा तुम सब मर जाओ अथवा बन्दी बना लिये जाओ, जिससे छुटने में पर तुम असमर्थ हो, तो अन्य बात है, उस स्थिति में तुम क्षम्य होगे।

[4]जब बिनयामीन सहित ग्यारह भाई मिस्र जाने लगे, तो यह निर्देश दिया, क्योंकि एक ही पिता के ग्यारह पुत्र जो शरीरिक ऊँचाई एवं आकार में भी श्रेष्ठ हों, जब एक साथ एक ही स्थान अथवा एक साथ कहीं से गुज़रें तो सामान्यतः उन्हें लोग आश्चर्य तथा ईर्ष्या से देखते हैं तथा यही बात नज़र लगने का कारण बनती है। अतः उन्हें बुरी दृष्टि से बचने

مُّتَفَرِّقَةٍ ۖ وَمَا أُغْنِي عَنكُم مِّنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ ۖ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾

मैं अल्लाह की ओर से आयी हुई किसी चीज़ को तुम से टाल नहीं सकता। आदेश केवल अल्लाह ही का चलता है।[1] मेरा पूर्ण विश्वास उसी पर है तथा प्रत्येक भरोसा करने वाले को उसी पर भरोसा करना चाहिये।

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُم مَّا كَانَ يُغْنِي عَنْهُم مِّنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ وَإِنَّهُ

(६८) तथा जब वे उन्हीं मार्गों से जिनका आदेश उनके पिता ने दिया था गये। कुछ न था कि अल्लाह ने जो बात निर्धारित कर दी है वह उन्हें उससे तनिक भी बचा ले। हाँ याक़ूब ने अपने अन्त:करण के भय को पूरा किया।[2]

के लिये उपाय के रूप में यह निर्देश दिये। नज़र लग जाना सत्य है, जैसाकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी सहीह हदीस में सिद्ध है। जैसे العين حق "नजर लग जाना सत्य है" (सहीह बुख़ारी किताबुल तिब्ब, बाबुल ऐन हक़्क़ुन तथा सहीह मुस्लिम किताबुस्सलाम बाबुल तिब्बे वलमरजे वलरुकी) तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बुरी दृष्टि से बचने के लिये यह विनती के वाक्य अपने समुदाय को बताये हैं। जैसे कहा कि जब तुम्हें कोई वस्तु अच्छी लगे तो بارك الله कहो (मुअत्ता इमाम मालिक बाबुलवदुअे मिनल ऐन ताअलीक़ाते मिशकात अलबानी संख्या १२८६) जिसकी नज़र लगे उसको कहा जाये कि स्नान करे तथा उसके स्नान का यह पानी उस व्यक्ति के सिर तथा शरीर पर डाला जाये जिसको नज़र लगी हो (वर्णित संकेत) इसी प्रकार ﴿مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ﴾ पढना क़ुरआन से सिद्ध है। (सूर: कहफ़-३९) ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾ तथा ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ नज़र के लिये पढ़कर फूंकना चाहिये (जामेअ तिर्मिजी अबवाबुल त्तिब्बे, बाब माजाअ फ़िररुक्य: बिल मुअव्वजतैन)

[1]अर्थात यह निर्देश प्रत्यक्ष साधनों तथा बचाव एवं उपाय के रूप में है जिसके प्रयोग का मानव को आदेश दिया गया है परन्तु इससे अल्लाह तआला के लिखे भाग्य में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। उसी के भाग्य लेखानुसार वह घटित होगा।

[2]अर्थात इस उपाय से अल्लाह के भाग्यलेखा को टाला नहीं जा सकता था। परन्तु आदरणीय याक़ूब ने जो (नज़र लग जाने का) भय था, उसके कारण उन्होंने ऐसा कहा।

لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

निःसंदेह वह हमारे सिखाये उस ज्ञान का ज्ञानी था, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।[1]

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) तथा ये सब जब यूसुफ़ के पास पहुँच गये, तो उसने अपने भाई को अपने निकट बिठा लिया तथा कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ। अब तक ये जो कुछ करते रहे उसकी कुछ चिन्ता न कर ।[2]

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾

(७०) फिर जब उनका सामान तैयार कर दिया तो अपने भाई के सामान में अपना पानी पीने का प्याला[3] रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा हे यात्री दल ![4] तुम लोग तो चोर हो ।[5]

---

[1]अर्थात यह उपाय अल्लाह की वह्यी (प्रकाशना) के प्रकाश में थी तथा यह विश्वास भी कि حذر (बचाव व्यवस्था) भाग्य को नहीं बदल सकती, अल्लाह तआला के सिखलाये हुए ज्ञान पर आधारित थी, जिससे अधिकतर लोग अनजान हैं।

[2]कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि दो-दो व्यक्तियों को एक-एक कमरे में ठहराया गया। इस प्रकार बिनयामीन अकेले रह गये, तो यूसुफ़ ने उन्हें अकेले एक कमरे में रखा तथा फिर एकान्त में उनसे बातें कीं तथा उन्हें पूर्व की बातें याद दिलाकर कहा कि उन भाईयों ने मेरे साथ जो कुछ किया, उस पर दुख न कर। कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि बिनयामीन को रोकने के लिये जो बहाना प्रयोग करना था, उससे भी उन्हें परिचित करा दिया था ताकि वह दुखी न हों।

[3]कहा जाता है कि यह سقاية (पानी पीने का बर्तन) स्वर्ण अथवा चाँदी का था, पानी पीने के अतिरिक्त अनाज नापने का भी कार्य उससे लिया जाता था। उसे गुप्त रूप से बिनयामीन के सामान में रख दिया गया।

[4]'العير' वास्तव में उन ऊँटों, गधों अथवा खच्चर को कहा जाता है, जिन पर अनाज लाद कर ले जाया जाता है। यहाँ तात्पर्य أصحاب العير अर्थात यात्रा वाले यात्री हैं।

[5]चोरी का यह सम्बन्ध अपने स्थान पर उचित था क्योंकि पुकारने वाला सेवक आदरणीय यूसुफ़ की सोची-समझी योजना से अवगत नहीं था, इसका अर्थ यह है कि तुम्हारा हाल तो चोरों जैसा है कि राजा का प्याला, राजा की इच्छा के बिना तुम्हारे सामान के अन्दर है।

قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾

(७१) उन्होंने उनकी ओर मुँह फेर कर कहा कि तुम्हारी क्या वस्तु खो गयी है ?

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾

(७२) उत्तर दिया कि राजकीय प्याला खो गया है जो उसे ले आये उसे एक ऊँट के बोझ का अन्न मिलेगा। उस वचन का मैं प्रतिभूत (ज़मानतदार) हूँ।[1]

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

(७३) उन्होंने कहा, अल्लाह की सौगन्ध ! तुम्हें भली-भाँति ज्ञात है कि हम देश में आशान्ति उत्पन्न करने के लिये नहीं आये तथा न हम चोर हैं।[2]

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾

(७४) उन्होंने कहा अच्छा चोरी का क्या दण्ड है यदि तुम झूठे हो।[3]

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ

(७५) उत्तर दिया कि इसका दण्ड यही है कि जिसके सामान में से पाया जाये वही उसका

---

[1]अर्थात मैं इस बात की ज़मानत देता हूँ कि खोज से पूर्व जो व्यक्ति यह पीने का शाही कटोरा हमको समर्पित कर देगा, तो उसे उपहार अथवा मज़दूरी के रूप में इतना अनाज दिया जायेगा जो एक ऊँट उठा सके।

[2]यूसुफ़ के भाई इस योजना से अनभिज्ञ थे जो आदरणीय यूसुफ़ ने बना रखी थी। इसलिये सौगन्ध खाकर उन्होंने अपने चोर होने का तथा धरती पर आतंक उत्पन्न करने से इंकार किया।

[3]अर्थात यदि तुम्हारे सामान से वह शाही कटोरा मिल गया तो फिर उसका क्या दण्ड होगा ?

बदला है ।[1] हम तो अत्याचारियों को यही दण्ड दिया करते हैं ।[2]

نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

(७६) फिर (यूसुफ़ ने) सामान में खोज प्रारम्भ कर दी अपने भाई के सामान की खोज से पूर्व। फिर उसने पीने के प्याले को अपने भाई के सामान (थैले) से निकाला।[3] हमने यूसुफ़ के लिये इसी प्रकार यह साधन बनाया ।[4] उस राजा के प्रावधान के अनुसार यह अपने भाई को न ले सकता था,[5] परन्तु यह कि अल्लाह को अंगीकार हो। हम जिसका

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِىْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾

---

[1]अर्थात चोर को कुछ समय के लिये उस व्यक्ति के हवाले कर दिया जाता था, जिसकी उसने चोरी की होती थी। यह आदरणीय याक़ूब के धर्म विधान में दण्ड था, जिसके अनुसार यूसुफ़ के भाईयों ने यह दण्ड निर्धारित किया।

[2]यह कथन भी यूसुफ़ के भाईयों का है। कुछ व्याख्याकारों के निकट यह कथन यूसुफ़ के निकटवर्ती अधिकारियों का है कि उन्होंने कहा कि हम अत्याचारियों (अपराधियों) को इसी प्रकार ही दण्ड देते हैं परन्तु आयत का अगला भाग कि "राजा के धर्म में वह अपने भाई को बन्दी न बना सकते थे" इस कथन का खण्डन करता है।

[3]पहले भाईयों के सामान को देखा, अन्त में बिनयामीन का सामान देखा ताकि उन्हें यह सन्देह न हो कि यह सोची समझी योजना है।

[4]अर्थात हमने वह्यी (प्रकाशना) द्वारा यूसुफ को यह उपाय समझाया। इससे ज्ञात होता है कि किसी उचित उद्देश्य के लिये ऐसा मार्ग अपनाना जिसकी प्रदर्शित अवस्था बहाने तथा योजना की हो, उचित है, यदि वह विधि किसी धार्मिक नियम के विरूद्ध न हो (फ़तहुल क़दीर)

[5]अर्थात राजा का मिस्र में जो कानून तथा नियम प्रचलित था, उसके अनुसार बिनयामीन को रोकना सम्भव नहीं था। इसलिये उन्होंने यात्रियों ही से पूछा कि बताओ ! इस अपराध का क्या दण्ड हो ?

चाहें पद उच्च कर दें ।[1] प्रत्येक ज्ञानी के ऊपर एक प्रज्ञ विद्यमान है ।[2]

قَالُوٓا۟ إِن يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَّهُۥ مِن قَبْلُ ۚ فَأَسَرَّهَا يُوسُفُ فِى نَفْسِهِۦ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ أَنتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۖ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ﴿٧٧﴾

(७७) उन्होंने कहा कि यदि उसने चोरी की, तो (आश्चर्य की बात नहीं) इसका भाई भी पहले चोरी कर चुका है ।[3] यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में रख ली, तथा उनके समक्ष बिल्कुल व्यक्त नहीं किया । कहा कि तुम बुरे स्थान में हो,[4] तथा जो तुम वर्णन कर रहे हो उसे अल्लाह भली-भाँति जानता है ।

قَالُوا۟ يَٰٓأَيُّهَا ٱلْعَزِيزُ إِنَّ لَهُۥٓ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا

(७८) उन्होंने कहा कि हे मिस्री अज़ीज़ ।[5] इसके पिता वयोवृद्ध व्यक्ति हैं । आप इस के

---

[1]जिस प्रकार यूसुफ़ का पद हमने उच्च किया ।

[2]अर्थात प्रत्येक ज्ञानी से बढ़कर कोई न कोई ज्ञानी होता है, इसलिये कोई ज्ञानी इस गर्व में न रहे कि मैं ही अपने समय का श्रेष्ठ ज्ञानी हूँ । तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि इसका अर्थ है कि प्रत्येक ज्ञानी के ऊपर सर्वज्ञाता अल्लाह तआला है ।

[3]यह उन्होंने अपनी पवित्रता तथा सज्जनता को प्रदर्शित करने के लिये कहा, क्योंकि यूसुफ़ तथा बिनयामीन उनके सगे भाई नहीं थे, सौतेले थे । कुछ व्याख्याकारों ने यूसुफ़ की चोरी के लिये दो गुप्त बातें उदघृत की हैं, जो कोई प्रमाणित कथन पर आधारित नहीं है । उचित बात यही ज्ञात होती है कि उन्होंने अपने को तो अत्यधिक प्रतिष्ठित तथा सुचरित्र सिद्ध किया तथा यूसुफ़ तथा बिनयामीन को तुच्छ चरित्र का तथा मिथ्या बोलते हुए उन्हें चोर तथा बेईमान सिद्ध करने का प्रयत्न किया ।

[4]आदरणीय यूसुफ़ के इस कथन से भी ज्ञात होता है कि उन्होंने यूसुफ़ से चोरी को सम्बन्धित करके स्पष्टरूप से असत्य कथन का कार्य किया ।

[5]आदरणीय यूसुफ़ को मिस्री अज़ीज़ इसलिये कहा गया कि उस समय सारे वास्तविक अधिकार आदरणीय यूसुफ़ के पास थे, राजा नाम मात्र के लिये ही राजाधिराज था ।

مَكَانَهُ ۚ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٧٨﴾

बदले हम में से किसी को ले लीजिये। हम देखते हैं कि आप बड़े उपकारी व्यक्ति हैं।[1]

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَن نَّأْخُذَ إِلَّا مَن وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِندَهُ إِنَّا إِذًا لَّظَالِمُونَ ﴿٧٩﴾

(७९) (यूसुफ़ ने) कहा कि हमने जिसके पास अपनी वस्तु पाई है उसके अतिरिक्त अन्य को बन्दी बनाने से अल्लाह की शरण चाहते हैं। ऐसा करने से हम नि:संदेह अन्याय करने वाले हो जायेंगे।[2]

فَلَمَّا اسْتَيْأَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا ۖ قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُم مَّوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ وَمِن قَبْلُ مَا فَرَّطتُمْ فِي يُوسُفَ ۖ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٠﴾

(८०) जब यह उससे निराश होगये तो एकान्त में बैठकर विचार-विमर्श करने लगे।[3] उनमें जो सबसे बड़ा था उसने कहा कि तुम्हें ज्ञात नहीं कि तुम्हारे पिता ने तुमसे अल्लाह को मध्य रखकर दृढ़ प्रतिज्ञा तथा वचन लिया है तथा इससे पूर्व तुम यूसुफ़ के विषय में अपराध कर चुके हो। अब तो मैं इस धरती से न हटूँगा जब तक पिता स्वयं

---

[1]पिता तो अवश्य वृद्ध थे, परन्तु यहाँ उनका मुख्य उद्देश्य बिनयामीन को छुड़ाना था। उनके विचार में वही यूसुफ़ वाली बात रही कि हमें पुन: बिनयामीन के बिना पिता के पास न जाना पड़े तथा पिता हमसे कहें कि तुमने मेरे बिनयामीन को भी यूसुफ़ की भाँति खो दिया। इसलिये यूसुफ़ के उपकारों को वर्णन करके यह बात की कि वह शायद यह उपकार भी कर दें कि बिनयामीन को छोड़ दें तथा उसके स्थान पर किसी अन्य भाई को रख लें।

[2]यह उत्तर इसलिये दिया कि आदरणीय यूसुफ़ का मूल उद्देश्य तो बिनयामीन को ही रोकना था।

[3]क्योंकि बिनयामीन को छोड़कर जाना उनके लिए अत्यन्त कठिन था, वे पिता को मुख दिखाने योग्य न रहे थे। इसलिये आपस में विचार-विमर्श करने लगे कि अब क्या किया जाये?

मुझे आज्ञा न दें ।[1] अथवा अल्लाह तआला मेरी इस समस्या का निर्णय कर दे, वह सर्वश्रेष्ठ निर्णायक है ।[2]

(८१) तुम सब पिताजी की सेवा में वापस जाओ तथा कहो कि हे पिताजी ! आपके पुत्र ने चोरी की तथा हमने वही गवाही दी थी जो हम जानते थे ।[3] हम कुछ अप्रत्यक्ष की सुरक्षा करने वाले तो न थे ।[4]

اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾

(८२) तथा आप उन नगरवासियों से पूछ लें, जहाँ हम थे तथा उन यात्रियों से भी पूछ लें

وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ

---

[1]उस बड़े भाई ने इस परिस्थिति में पिता का सामना करने की अपने में शक्ति तथा क्षमता नही पायी तो स्पष्ट कह दिया कि मैं तो यहाँ से उस समय तक नहीं जाऊँगा जब तक स्वयं पिताजी खोज करके मेरे निर्दोष होने का विश्वास न कर लें तथा मुझे आने की आज्ञा न दें ।

[2]अल्लाह मेरी समस्या हल कर दे का अर्थ है कि किसी प्रकार (मिस्री अज़ीज़) बिनयामीन को छोड़ दे तथा मेरे साथ जाने की आज्ञा दे दे अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह तआला मुझे इतनी शक्ति दे कि मैं बिनयामीन को तलवार अथवा शक्ति से मुक्त कराकर अपने साथ ले जाऊँ ।

[3]अर्थात हमने जो वचन दिया था कि बिनयामीन को सकुशल वापस लौटाकर ले आयेंगे, तो यह हमने अपने ज्ञान के आधार पर किया था, तदुपरान्त जो घटना घटित हुई तथा जिसके कारण बिनयामीन को हमें छोड़ना पड़ा, यह हमारे बुद्धि तथा विचार में भी न था। दूसरा अर्थ यह है कि हमने चोरी का जो दण्ड वर्णित किया था कि चोर को ही चोरी के बदले में रख लिया जाये, तो यह दण्ड हमने अपने ही ज्ञान के आधार पर निर्धारित की थी, इसमें किसी प्रकार के कुविचार नहीं मिश्रित थे, परन्तु यह घटना थी कि जब सामान में ढूँढ़ा गया तो चुराया गया कटोरा बिनयामीन के सामान में से निकल आया।

[4]अर्थात भविष्य में घटित होने वाली घटना से हम अनजान थे ।

وَإِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

जिनके साथ हम आये हैं तथा नि:संदेह हम पूर्णरूप से सच्चे हैं ।[1]

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۖ عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَّأْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ۚ إِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾

(८३) (याक़ूब ने) कहा यह तो नहीं बल्कि तुमने अपनी ओर से बात बना ली,[2] अत: धैर्य ही उत्तम है । हो सकता है कि अल्लाह (तआला) उन सबको मेरे पास ही पहुँचा दे ।[3] वह ही ज्ञान तथा विज्ञानी है ।

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓأَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा फिर उन से मुँह फेर लिया और कहा हाय यूसुफ़ ![4] उनकी आँखें दुख-शोक के कारण से सफेद हो गयी थीं ।[5] तथा वह दुख शोक को सहन किये हुए थे ।

---

[1]नगर से तात्पर्य मिस्र है जहाँ वे अनाज लेने गये थे, अभिप्राय मिस्रवासी हैं । इसी प्रकार والعير से तात्पर्य أصحاب العير अर्थात यात्रा के साथी हैं । आप मिस्र जाकर मिस्रवासियों से तथा उन यात्रियों से जिनके साथ यात्रा करके हम आये हैं, पूछ लें कि जो कुछ हम वर्णन कर रहे हैं, वह सत्य है, इसमें असत्य का कोई मिश्रण नहीं है ।

[2]आदरणीय याक़ूब वास्तविक दशा से पूर्णत: अनभिज्ञ थे तथा अल्लाह ने भी वह्यी (प्रकाशना) द्वारा वास्तविक स्थिति नहीं बतायी । इसलिये वह यही समझे कि मेरे इन पुत्रों ने जिस प्रकार इससे पूर्व यूसुफ़ के विषय में बात गढ़कर वर्णन की थी, अब पुन: उसी प्रकार उन्होंने अपनी ओर से बात बना ली है । बिनयामीन के साथ उन्होंने क्या किया उसका निश्चित ज्ञान आदरणीय याक़ूब के पास नहीं था, परन्तु यूसुफ़ की घटना के आधार पर अनुमान करते हुए उनकी ओर से आदरणीय याक़ूब के हृदय में शंका एवं संदेह उचित था ।

[3]अब पुन: धैर्य के अतिरिक्त कोई मार्ग न था । फिर भी धैर्य के साथ आशा का दामन भी नहीं छोड़ा । جميعا से तात्पर्य यूसुफ़ बिनयामीन तथा बड़ा पुत्र है जो लज्जा के कारण वहीं मिस्र में रूक गया था कि या तो पिताजी मुझे इसी दशा में आने की आज्ञा दें अथवा मैं किसी प्रकार बिनयामीन को अपने साथ लेकर आऊँगा ।

[4]अर्थात इस नये दुख ने यूसुफ़ की जुदाई के पुराने दुख को भी नया कर दिया ।

[5]अर्थात आँखों की कालिमा दुख के कारण सफेदी में परिवर्तित हो गयी थी ।

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

(८५) (पुत्रों ने) कहा अल्लाह की सौगन्ध ! आप सदैव यूसुफ़ के स्मरण में ही लीन रहेंगे यहाँ तक कि घुल जायेंगे अथवा मर जायेंगे ।[1]

قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

(८६) उन्होंने कहा कि मैं तो अपनी विपता तथा दुख की गुहार अल्लाह से कर रहा हूँ। मुझे अल्लाह की ओर से उन बातों का ज्ञान प्राप्त है, जिनसे तुम अनजान हो ।[2]

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾

(८७) मेरे प्यारे पुत्रो ! तुम जाओ तथा यूसुफ़ और उसके भाई की भली प्रकार खोज करो ।[3] तथा अल्लाह की कृपा से निराश न हो। निःसंदेह अल्लाह की कृपा से वही निराश होते हैं जो काफ़िर होते हैं ।[4]

---

[1] حَرَض उस शारीरिक विकार अथवा मानसिक निर्बलता को कहते हैं, जो बुढ़ापे प्रेम अथवा निरन्तर दुख के कारण मनुष्य को हो जाती है, यूसुफ़ के वर्णन से भाईयों की द्वेष अग्नि भड़क उठी, तथा अपने पिता को यह कहा।

[2] इससे तात्पर्य तो वह स्वप्न है जिसके विषय में उन्हें पूर्ण विश्वास था कि अवश्य साकार होगा तथा वे यूसुफ़ के समक्ष दण्डवत होंगे अथवा उनका यह विश्वास था कि यूसुफ़ जीवित हैं तथा उनसे जीवन में अवश्य मिलन होगा।

[3] अत: उसी विश्वास से प्रेरित होकर उन्होंने अपने पुत्रों को यह आदेश दिया।

[4] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने वर्णन किया।

﴿ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖۤ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴾

"भटके हुए लोग ही अल्लाह की दया से निराश होते हैं।" (सूर: अल-हिज्र ,५६)

इसका अर्थ यह है कि ईमानवालों को कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य तथा संयम का तथा अल्लाह की असीम कृपा की आशाओं का दामन नहीं छोड़ना चाहिये।

(८८) फिर ये लोग जब यूसुफ़[1] के पास पहुँचे तो कहने लगे कि हे अज़ीज़ ! हम तथा हमारा परिवार अत्यधिक कठिनाई में है। हम थोड़े से तुच्छ धन लाये हैं।[2] परन्तु आप हमें पूरे अन्न का नाप दे दीजिये,[3] तथा हम पर दान कीजिये[4] अल्लाह तआला दान करने वालों को बदला देता है।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَٰٓأَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَٰعَةٍ مُّزْجَىٰةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَآ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾

(८९) (यूसुफ़ ने) कहा जानते भी हो कि तुमने यूसुफ़ तथा उसके भाई के साथ अपनी अज्ञानतावश क्या-क्या किया ?[5]

قَالَ هَلْ عَلِمْتُم مَّا فَعَلْتُم بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنتُمْ جَٰهِلُونَ ﴿٨٩﴾

(९०) उन्होंने कहा क्या (वास्तव में) तू ही यूसुफ़ है।[6] उत्तर दिया हाँ, मैं ही यूसुफ़ हूँ।

قَالُوٓا أَءِنَّكَ لَأَنتَ يُوسُفُ ۖ قَالَ أَنَا۠

---

[1]यह तीसरी बार उनका मिस्र आना था।

[2]अर्थात अनाज लेने के लिये हम जो मूल्य लेकर आये हैं वह अत्यन्त तुच्छ है तथा थोड़ा है।

[3]अर्थात हमारी छोटी पूँजी को न देखें, हमें उसके बदले में पूरा नाप दें।

[4]अर्थात हमारी कम पूँजी स्वीकार करके हम पर उपकार तथा दान करें। तथा कुछ व्याख्याकारों ने इसका अर्थ लिखा है कि हमारे भाई बिनयामीन को स्वतंत्र करके हम पर उपकार करें।

[5]जब उन्होंने अत्यन्त नम्रतापूर्वक भाव से दान-पुण्य अथवा भाई के स्वतन्त्रता की अपील की तो साथ ही पिता की वृद्धावस्था, स्वास्थ की क्षीणता तथा पुत्र की जुदाई का भी वर्णन किया, जिससे यूसुफ़ का दिल भर आया, आँखें छलक उठीं, तथा वास्ताविकता प्रदर्शित करने के लिये बाध्य हो गये। फिर भी भाईयों की क्रूरता के वर्णन के साथ ही नम्र चरित्र का भी प्रदर्शन किया कि यह कार्य तुमने ऐसी अवस्था में किया जब तुम अशिक्षित तथा बुद्धिहीन थे।

[6]भाईयों ने जब मिस्री अधिकारी के मुख से उस यूसुफ़ का वर्णन सुना, जिसे उन्होंने बाल्यकाल मे कनआन के एक अंधेरे कुएं में फेंक दिया था, तो वे आश्चर्य में पड़ गये तथा ध्यानपूर्वक देखने के लिये बाध्य भी हो गये कि कहीं हम से सम्बोधक राजा, यूसुफ़

يُوسُفُ وَهٰذَآ اَخِىۡ‌ قَدۡ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيۡنَا‌ؕ اِنَّهٗ مَنۡ يَّتَّقِ وَيَصۡبِرۡ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيۡعُ اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ۝٩٠

तथा यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर कृपा तथा दया की। बात यह है कि जो भी परहेज़गारी तथा धैर्य से रहे, तो अल्लाह (तआला) किसी पुण्य करने वाले का बदला नष्ट नहीं करता है।[1]

قَالُوۡا تَاللّٰهِ لَقَدۡ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيۡنَا وَاِنۡ كُنَّا لَخٰطِـئِيۡنَ ۝٩١

(९१) उन्होंने कहा, अल्लाह की सौगन्ध कि अल्लाह ने तुझे हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है तथा यह भी सत्य है कि हम अपराधी हैं।[2]

قَالَ لَا تَثۡرِيۡبَ عَلَيۡكُمُ الۡيَوۡمَ‌ؕ يَغۡفِرُ اللّٰهُ لَـكُمۡ‌ وَهُوَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ ۝٩٢

(९२) उत्तर दिया, आज तुम पर कोई आरोप नहीं है।[3] अल्लाह तुम्हें क्षमा करे वह सभी दयावानों में दयानिधि है।

اِذۡهَبُوۡا بِقَمِيۡصِىۡ هٰذَا فَاَلۡقُوۡهُ عَلٰى وَجۡهِ اَبِىۡ يَاۡتِ بَصِيۡرًا‌ۚ

(९३) मेरा यह कुर्ता तुम ले जाओ तथा मेरे पिता के मुख पर डाल दो कि वह देखने लगें[4]

तो नहीं ? वरन् यूसुफ़ की घटना का ज्ञान उन्हें किस प्रकार हो सकता है ? अत: उन्होंने प्रश्न किया कि क्या तू यूसुफ़ ही तो नहीं ?

[1]प्रश्नोत्तर में स्वीकार के साथ अल्लाह के उपकार का वर्णन तथा धैर्य एवं संयम के अच्छे परिणाम का भी वर्णन करके बता दिया कि तुमने मुझे मार डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी। परन्तु यह अल्लाह तआला की दया तथा उपकार है कि उसने न केवल कुऐं से निकाला, अपितु मिस्र का राज्य भी प्रदान किया तथा यह फल है उस धैर्य तथा अल्लाह से भय करने का जिसकी सन्मति अल्लाह ने मुझे प्रदान की।

[2]भाईयों ने जब यूसुफ़ की यह प्रतिष्ठा देखी तो अपनी त्रुटियों तथा दोषों को स्वीकार कर लिया।

[3]आदरणीय यूसुफ़ ने भी ईशदूतत्व की गरिमा दिखाते हुए क्षमा करके कहा कि जो हुआ सो हो गया। आज तुम्हारी कोई भर्त्सना अथवा निन्दा नहीं की जायेगी। मक्का विजय के दिन रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उन काफ़िरों तथा क़ुरैश के प्रमुखों को, जो आप के खून के प्यासे थे तथा आप को नाना प्रकार के कष्ट दिये थे, इन्ही शब्दों को कहकर उन्हें क्षमा कर दिया था। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

[4]कमीज़ के मुख पर पड़ने से आंखों की ज्योति का आ जाना, एक विचित्रता तथा चमत्कार के रूप में था।

وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ۝٩٣

तथा आ जायें एवं अपने पूरे परिवार को मेरे पास ले आओ ।[1]

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَن تُفَنِّدُونِ ۝٩٤

(९४) तथा जब ये यात्री दल विदा हुआ तो उनके पिता ने कहा कि मुझे यूसुफ़ की सुगन्ध आ रही है, यदि तुम मुझे निर्बोध न समझो ।[2]

قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ۝٩٥

(९५) वे कहने लगे कि अल्लाह की सौगन्ध, आप तो अपनी उसी पुरानी त्रुटि[3] पर स्थिर हैं ।

فَلَمَّا أَن جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ قَالَ

(९६) जब शुभसूचना देने वाले ने पहुँचकर उनके मुख पर कुर्ता डाला उसी क्षण वह पुनः देखने लगे ।[4] कहा कि क्या मैं तुमसे न

---

[1]यह यूसुफ़ ने अपने पूरे परिवार को मिस्र आने का आमंत्रण दिया ।

[2]उधर वह कमीज़ लेकर यात्री मिस्र से चले तथा इधर आदरणीय याक़ूब को अल्लाह तआला की ओर से अद्‌भुत प्रकार से आदरणीय यूसुफ़ की सुगन्ध आने लग गयी । यह जैसे इस बात की घोषणा थी कि अल्लाह के पैग़म्बर (ईशदूत) को भी, जब तक अल्लाह तआला की ओर से व्यवस्था तथा सूचना न पहुँचे, तो पैग़म्बर अनजान होता है, चाहे पुत्र अपने नगर के किसी कुऐं में ही क्यों न हो ? तथा जब अल्लाह प्रबन्ध कर दे, तो मिस्र जैसे दूरस्थ क्षेत्र से भी पुत्र की सुगन्ध आ जाती है ।

[3] ضلال से तात्पर्य प्रेम तथा प्यार की मुग्धता है, जो आदरणीय याक़ूब को अपने पुत्र युसुफ़ के साथ थी । पुत्र कहने लगे, अभी तक आप उसी पुरानी (त्रुटि) पर अर्थात यूसुफ़ के प्रेम में लीन हैं इतना दीर्घकाल समाप्त होने के पश्चात भी आपके हृदय से यूसुफ़ का प्रेम न निकला ।

[4]अर्थात जब वह शुभसूचना देने वाला आ गया तथा आकर वह कमीज़ आदरणीय याक़ूब के मुख पर डाल दी, तो उसे चमत्कारिक रूप से उनकी नयन ज्योति फिर से वापस आ गयी ।

أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

कहा करता था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते ।[1]

قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ﴿٩٧﴾

(९७) उन्होंने कहा हे पिता ! आप हमारे पापों की क्षमा याचना कीजिये, नि:संदेह हम अपराधी हैं ।

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾

(९८) कहा, अच्छा मैं शीघ्र ही तुम्हारे लिये अपने प्रभु से क्षमा की प्रार्थना करूँगा ।[2] वह अत्यधिक क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त कृपालु है ।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ﴿٩٩﴾

(९९) जब ये पूर्ण परिवार यूसुफ़ के पास पहुँच गया तो यूसुफ़ ने अपने माता-पिता को अपने निकट स्थान दिया ।[3] तथा कहा कि अल्लाह को स्वीकार है तो आप सब सुख-शाँति से मिस्र में आ जाओ ।

وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا

(१००) तथा अपने सिंहासन पर अपने माता-पिता[4] को उच्च स्थान पर बिठाया तथा सब

---

[1]क्योंकि मेरे पास ज्ञान का एक साधन वह्यी (प्रकाशना) भी है, जो तुममें से किसी के पास नहीं है। इस वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों को हालात से आवश्यकतानुसार तथा कारणवश अवगत करता रहता है ।

[2]तुरन्त क्षमा-याचना न करके क्षमा-याचना का वचन दिया। उद्देश्य यह था कि रात्रि के अन्तिम पहर में, जो अल्लाह के विशेष भक्तों का अल्लाह की इबादत करने का विशेष समय होता है, अल्लाह से उनकी क्षमा के लिये प्रार्थना करूँगा ।

[3]अर्थात आदर-सम्मान के साथ उन्हें अपने निकट स्थान दिया तथा उनका बहुत सत्कार किया ।

[4]कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि यह सौतेली माता तथा सगी मौसी थीं, क्योंकि यूसुफ़ की माता का बिनयामीन के जन्म के पश्चात देहान्त हो गया था, आदरणीय याक़ूब ने उनके देहान्त के पश्चात उनकी बहन के साथ विवाह कर लिया था। यही

لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا
تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ
جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۭ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ
اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَاۗءَ بِكُمْ
مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ
الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۭ اِنَّ
رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ
الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ١٠٠

उसके समक्ष दण्डवत हो गये[1] तथा तब कहा कि पिताजी ! यह मेरे प्रथम स्वप्न का फल है [2] मेरे प्रभु ने उसे साकार कर दिखाया। उस ने मेरे साथ बड़ा उपकार किया जबकि मुझे कारागार [3] से निकाला तथा आप लोगों को रेगिस्तान (मरूस्थल) से[4] ले आया, उस भेद के पश्चात जो शैतान ने मुझ में तथा मेरे भाईयों में डाल दिया था। [5] मेरा प्रभु जो चाहे उसके लिए अच्छी व्यवस्था करने वाला है तथा सर्वज्ञाता विज्ञानी है।

मौसी (ख़ाला) अब आदरणीय याक़ूब के साथ मिस्र गयी थीं (फ़तहुल क़दीर) परन्तु इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इसके विपरीत यह कहा है कि यूसुफ़ की माता का देहान्त नहीं हुआ था तथा वही सगी माता साथ थीं। (इब्ने कसीर)

[1]कुछ ने इसका अनुवाद यह किया है कि मान-सम्मान के लिये यूसुफ़ के समक्ष झुक गये परन्तु وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا के शब्द बताते हैं कि वे धरती पर यूसुफ़ के समक्ष माथा रख दिये। यह सिजद: (दण्डवत) माथा टेकने के अर्थों में है फिर भी यह सजद: सम्मान के लिये है, वंदना के रूप में नहीं तथा सम्मान सूचक सजद: आदरणीय याक़ूब के धर्म-विधान में वैध था। इस्लाम में शिर्क (मिश्रण) को रोकने के लिये आदर-मान हेतु सजद: करना अवैध कर दिया गया, तथा अब सम्मान स्वरूप सजदा भी किसी को करना वर्जित है।

[2]अर्थात आदरणीय यूसुफ़ ने जो स्वप्न देखा था इतनी परीक्षाओं को पार करने के पश्चात अन्तत: उसका यह फल सामने आया कि अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ को राजसिंहासन पर बैठाया तथा माता-पिता सहित सभी भाईयों ने उनको दण्डवत किया।

[3]अल्लाह के उपकार में कुऐं से निकलने की चर्चा नहीं किया ताकि भाई लज्जित न हों। यह नबूअत (ईशदूत) का आचरण है।

[4]मिस्र जैसे विकसित क्षेत्र की अपेक्षा किनआन का स्थान एक मरूस्थल का सा था इसी लिये उसे بَدْوٌ शब्द से वर्णित किया।

[5]यह भी एक दयापूर्ण आचरण का नमूना है कि भाईयों पर तनिक भी आक्षेप न लगाये तथा शैतान को इस कार्यवाही का कारण ठहराया।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِىْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِىْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۣ اَنْتَ وَلِيّٖ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾

(१०१) हे मेरे प्रभु ! तूने मुझे राज्य प्रदान किया[1] तथा मुझे स्वप्नों के फल का ज्ञान दिया[2] हे आकाशों तथा धरती के उत्पन्न करने वाले ! तू ही दुनियाँ तथा आख़िरत में मेरा संरक्षक तथा सहायक है, तू मुझे मुसलमान की अवस्था में मार तथा पुण्य करने वालों में सम्मिलित कर दे ।[3]

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) यह परोक्ष की सूचनाओं में से है जिस की हम आपकी ओर वह्यी (प्रकाशना) कर रहे हैं । तो आप उनके पास न थे जबकि उन्होंने अपनी बात ठान ली थी तथा वे छल तथा कपट करने लगे थे ।[4]

---

[1]अर्थात मिस्र का राज्य प्रदान किया जैसाकि विस्तृत वर्णन हो चुका है ।

[2]आदरणीय यूसुफ़ अल्लाह के पैग़म्बर थे, जिन पर अल्लाह की ओर से प्रकाशना अवतरण होती तथा विशेष तथा मुख्य बातों का ज्ञान उनको दिया जाता था । अत: इस नबूअत के ज्ञान के प्रकाश में पैग़म्बर स्वप्नों का फल भी ठीक-ठीक निकाल लेते थे । फिर भी स्वप्न फल निकालने की यह योग्यता अल्लाह (परमेश्वर) अब भी किसी को प्रदान कर देता है ।

[3]अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ पर जो उपकार किये उन्हें याद करके तथा अल्लाह तआला के अन्य गुणों का वर्णन करके प्रार्थना कर रहे हैं कि जब मुझे मृत्यु (मौत) आये तो इस्लाम की अवस्था में आये तथा मुझे सज्जन (पुनीत) पुरूषों के साथ मिला दे । इससे तात्पर्य आदरणीय यूसुफ़ के पूर्वज आदरणीय इब्राहीम तथा इसहाक़ आदि हैं, कुछ लोगों को इस प्रार्थना से यह शंका उत्पन्न हुई कि आदरणीय यूसुफ़ ने मृत्यु की प्रार्थना की यद्यपि यह मृत्यु की प्रार्थना नहीं है, अन्तिम क्षण तक इस्लाम पर दृढ़ रहने की प्रार्थना है ।

[4]अर्थात यूसुफ़ के साथ, जबकि उन्हें कुऐं में फेंक आये अथवा तात्पर्य आदरणीय याक़ूब है अर्थात उनको यह कह कर कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया है तथा यह उसकी कमीज़ है, जो रक्तरंजित है उनके साथ छल किया गया । अल्लाह तआला ने इस स्थान पर इस बात का खण्डन किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को परोक्ष का ज्ञान था । परन्तु यह खण्डन साधारण ज्ञान की नही है क्योंकि अल्लाह तआला ने आपको

(१०३) यद्यपि आप लाख चाहें अधिकतर लोग ईमानदार न होंगे ।[1]

وَمَآ أَكۡثَرُ ٱلنَّاسِ وَلَوۡ حَرَصۡتَ بِمُؤۡمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

(१०४) तथा आप उनसे उस पर कोई मज़दूरी नहीं माँग रहे हैं ।[2] यह तो समस्त संसार के लिये शिक्षा ही शिक्षा है ।[3]

وَمَا تَسۡـَٔلُهُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ أَجۡرٍۚ إِنۡ هُوَ إِلَّا ذِكۡرٞ لِّلۡعَٰلَمِينَ ﴿١٠٤﴾

(१०५) तथा आकाशों तथा धरती में बहुत से प्रतीक हैं, जिनसे ये मुँह फेर कर निकल

وَكَأَيِّن مِّنۡ ءَايَةٖ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ يَمُرُّونَ عَلَيۡهَا وَهُمۡ

प्रकाशना के द्वारा अवगत करा दिया । यह खण्डन प्रत्यक्ष दर्शन का है कि उस समय आप वहाँ उपस्थित नहीं थे । इसी प्रकार ऐसे लोगों से आपका सम्बन्ध तथा सम्पर्क नहीं रहा है जिनसे आप ने सुना हो । यह केवल अल्लाह तआला ही है जिसने आपको इस अनदेखी घटना की सूचना दी है, जो इस बात का प्रमाण है कि आप अल्लाह के सच्चे नबी हैं तथा अल्लाह तआला की ओर से आप पर प्रकाशना अवतरित होती है । अल्लाह तआला ने अन्य भी कई स्थानों पर इसी प्रकार अर्न्तज्ञानी तथा परोक्षज्ञ होने का खण्डन किया है । जैसे देखिये *सूरः आले इमरान*-७ तथा ४४, *अल-कसस*-४५ तथा ४६, *सूरः स्वाद*- ६९ तथा ७० ।

[1]अर्थात अल्लाह तआला आप को पूर्व कालिक घटनाओं से अवगत करा रहा है ताकि लोग उनसे शिक्षा लें तथा अल्लाह के पैग़म्बरों (ईशदूतों) के मार्ग का अनुसरण करें तथा सफलता के अधिकारी बन जायें । परन्तु इसके उपरान्त भी लोगों की अधिकतर संख्या ईमान लाने वाली नहीं है क्योंकि वे विगत के समुदायों की घटनायें सुनते तो हैं, परन्तु शिक्षा प्राप्त करने के लिये नहीं, केवल मनोरंजन तथा आनंद के लिये । इसलिये वे ईमान से वंचित रहते हैं ।

[2]कि जिस से उनको यह शंका हो कि यह नबूअत का दावा तो केवल धन एकत्रित करने का बहाना है ।

[3]ताकि लोग इससे शिक्षा प्राप्त करें तथा अपना यह लोक तथा परलोक सजा लें । अब दुनियाँ के लोग इससे आँखें फेरे रखें तथा इससे शिक्षा न प्राप्त करें तो लोगों की त्रुटि है तथा उनका दुर्भाग्य है, क़ुरआन तो वास्तव में दुनियाँ वालों के लिये संमार्ग तथा शिक्षा ही के लिये आया है ।

عَنۡهَا مُعۡرِضُونَ ﴿١٠٥﴾

जाते हैं ।[1]

وَمَا يُؤۡمِنُ أَكۡثَرُهُم بِاللَّهِ إِلَّا وَهُم مُّشۡرِكُونَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) तथा उनमें से अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के उपरान्त भी मुशरिक ही हैं ।[2]

أَفَأَمِنُوٓاْ أَن تَأۡتِيَهُمۡ غَٰشِيَةٞ مِّنۡ عَذَابِ اللَّهِ أَوۡ تَأۡتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةٗ وَهُمۡ لَا يَشۡعُرُونَ ﴿١٠٧﴾

(१०७) क्या वे इस बात से निर्भय हो गये हैं कि उनके पास अल्लाह के प्रकोपों में से कोई सामान्य प्रकोप आ जाये अथवा उन पर सहसा क़ियामत टूट पड़े तथा वे अचेत हों।

قُلۡ هَٰذِهِۦ سَبِيلِيٓ أَدۡعُوٓاْ إِلَى اللَّهِۚ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا۠ وَمَنِ اتَّبَعَنِيۖ وَسُبۡحَٰنَ اللَّهِ وَمَآ أَنَا۠ مِنَ الۡمُشۡرِكِينَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) (आप) कह दीजिये,मेरा यही मार्ग है । मैं तथा मेरे अनुयायी अल्लाह की ओर बुला रहे हैं, पूर्ण विश्वास तथा निश्चता के उपरान्त[3] तथा अल्लाह पवित्र

---

[1]आकाश तथा धरती की उत्पत्ति तथा उनमें असंख्य वस्तुओं का अस्तित्व, इस बात का प्रमाण है कि एक स्रष्टा तथा रचयिता है जिसने इन वस्तुओं को बनाया है तथा एक नियोजक वही है जो उनका ऐसा प्रबन्ध कर रहा है कि आदिकाल से यह प्रबन्ध चल रहा है परन्तु इन में कभी आपस में टकराव तथा दुर्घटना नहीं हुई है। परन्तु लोग इन चीज़ों को देखते हुए यूँ ही चले जाते हैं इन पर विचार नहीं करते तथा न उनसे प्रभु का परिचय प्राप्त करते हैं।

[2]यह वह वास्तविकता है जिसे क़ुरआन ने विभिन्न स्थानों पर बड़ी स्पष्टता के साथ वर्णन किया है कि ये मूर्तिपूजक यह स्वीकार करते हैं कि आकाश तथा धरती का स्रष्टा, स्वामी पोषक तथा संचालक केवल अल्लाह तआला ही है। परन्तु इसके उपरान्त इबादत में अल्लाह के साथ अन्यों को भी सम्मिलित कर लेते हैं तथा इस प्रकार अधिकतर लोग मुशरिक (बहुदेववादी) हैं। अर्थात प्रत्येक युग के लोग तौहीद उपासना (पूजा) को मानने के लिये तैयार नहीं होते हैं। आज के समाधि पूजकों का शिर्क भी यही है कि वह क़ब्रों में गड़े महापरूषों को पूजा गुणों का अधिकारी समझकर उन्हें सहायता के लिये पुकारते भी हैं तथा इबादत की कई रीतियाँ भी अपनाते हैं।

[3]अर्थात यह तौहीद (एकेश्वरवाद) का मार्ग ही मेरा मार्ग है, बल्कि प्रत्येक पैग़म्बरों का यही मार्ग रहा है, इसी की ओर मैं तथा मेरे अनुयायी दृढ़ विश्वास के साथ तथा धार्मिक नियमों के प्रमाणों के साथ लोगों को बुलाते हैं।

है[1] तथा मैं मूर्तिपूजकों (मिश्रणवादियों) में नहीं।

(१०९) तथा आप से पूर्व हमने बस्ती वालों में जितने भी रसूल भेजे हैं सब पुरूष ही थे, जिनकी ओर हम वह्यी (प्रकाशना) उतारते गये।[2] क्या धरती पर चल-फिर कर उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पूर्व के लोग का कैसा परिणाम हुआ ? निःसंदेह आख़िरत का घर परहेज़गारों (संयम बरतने वालों) के लिये अति उत्तम है, क्या तुम फिर भी नहीं समझते ?

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡقُرٰىؕ اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡؕ وَلَدَارُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ اتَّقَوۡاؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۰۹﴾

(११०) यहाँ तक कि जब रसूल निराश होने लगे[3] तथा समुदाय के लोग यह विचार करने लगे कि उन्हें झूठ कहा गया।[4] तुरन्त हमारी

حَتّٰۤى اِذَا اسۡتَيۡـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ قَدۡ كُذِبُوۡا جَآءَهُمۡ

[1]अर्थात मैं शुद्धता तथा पवित्रता का वर्णन कर रहा हूँ, इस बात से कि उसका कोई साझीदार, समतुल्य, प्रतिमा अथवा मंत्री तथा सलाहकार अथवा सन्तान तथा पत्नी हो। वह इन सभी वस्तुओं से पवित्र है।

[2]यह आयत इस बात का प्रमाण है कि सभी नबी पुरूष हुए हैं, स्त्रियों से किसी को भी नबूअत का पद नहीं मिला, इसी प्रकार उनका सम्बन्ध नगरों से था, उनमें से कोई भी ग्रामीण (ग्रामवासियों) में से न था। क्योंकि ग्रामीण तथा देहाती नगरवासियों की अपेक्षा स्वाभाविक रूप से कठोर तथा व्यवहार में कटु होते हैं तथा नगरवासी उनकी अपेक्षा कोमल, सरल तथा सभ्य होते हैं तथा यह विशेषतायें नबूअत के लिये आवश्यक हैं।

[3]यह निराशा अपने समुदाय के ईमान न लाने से हुई।

[4]अर्थात इन पैग़म्बरों के अनुयायियों के हृदय में यह शंका उत्पन्न होंने लगी कि उनसे यूँ ही यातना का झूठा वायदा किया गया है, यातना शायद आयेगी ही नहीं। ध्यान रहे कि मात्र इस प्रकार की शंका का उत्पन्न होना ईमान के विरूद्ध नहीं है। कुछ ने ظنوا का कर्ता समुदाय अर्थात काफ़िर लोगों को कहा है अर्थात काफ़िर लोग यातना की चेतावनी पर पहले तो भयभीत हुए परन्तु जब अधिक देर होने लगी तो विचार किया कि यातना तो आती नहीं है (जैसाकि पैग़म्बर की ओर से दावा हो रहा है) तथा न आता दिखाई पड़ रहा है, प्रतीत होता है कि नबियों से भी यूँ ही झूठा वायदा किया गया है। तात्पर्य नबी

نَصۡرُنَا فَنُجِّيَ مَن نَّشَآءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأۡسُنَا عَنِ ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡمُجۡرِمِينَ ﴿١١٠﴾

सहायता उन्हें आ पहुँची[1] जिसे हमने चाहा उसे मुक्ति प्रदान की।[2] बात यह है कि हमारा प्रकोप पापियों से वापस नहीं किया जाता।

لَقَدۡ كَانَ فِي قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٞ لِّأُوْلِي ٱلۡأَلۡبَٰبِۗ مَا كَانَ حَدِيثٗا يُفۡتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصۡدِيقَ ٱلَّذِي بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَتَفۡصِيلَ كُلِّ شَيۡءٖ وَهُدٗى وَرَحۡمَةٗ لِّقَوۡمٖ يُؤۡمِنُونَ ﴿١١١﴾

(१११) इनकी कथाओं में बुद्धिमानों के लिये नि:संदेह शिक्षा तथा चेतावनी है, यह क़ुरआन झूठ बनायी हुई बातें नहीं, बल्कि यह युक्ति-शास्त्र है, उन किताबों के लिये जो इससे पूर्व की हैं। तथा प्रत्येक वस्तु का सविस्तार वर्णन एवं मार्गदर्शन तथा कृपा है ईमान वालों के लिये।[3]

करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना देना है कि आपके समुदाय पर यातना में जो देरी हो रही है, उससे घबराने की आवश्यकता नहीं है। प्राचीन काल के समुदायों पर भी यातना में देरी की गयी थी तथा अल्लाह की ओर से उसकी चाहत तथा ज्ञानानुसार उन्हें अत्यधिक समय प्रदान किया गया। यहाँ तक कि रसूल अपने समुदाय के ईमान से निराश हो गये तथा लोग यह विचार करने लगे कि शायद उन्हें यातना का यूँ ही झूठ कह दिया गया है।

[1]जब उनकी निराशा इस भयानक शंका तथा संदेह तक पहुँच गयी तो तुरन्त हमारी सहायता उनके पास पहुँच गयी तथा उनके दिलों से शंका के काँटे निकल गये। इसमें वास्तव में अल्लाह तआला की उस अवसर देने की नीति का वर्णन है, जो वह अवज्ञाकारियों को देता है, यहाँ तक कि इस विषय में वह अपने पैग़म्बर की इच्छा के विपरीत भी अधिक से अधिक समय प्रदान करता है, शीघ्रता नहीं करता, यहाँ तक कि कई बार पैग़म्बरों के अनुयायी भी यातना से निराश होकर यह समझने लगते हैं कि उनसे यूँ ही मिथ्यावचन किया गया है।

[2]यह मुक्ति प्राप्त करने वाले ईमान वाले ही होते थे।

[3]अर्थात यह क़ुरआन जिस में यह यूसुफ़ की कथा तथा अन्य समुदायों की घटनाओं का वर्णन है, कोई गढ़ा हुआ नही है। बल्कि यह पूर्व की किताबों की पुष्टि करने वाला तथा उसमें धर्म के विषयों सभी आवश्यक बातों का विस्तृत वर्णन है तथा ईमानवालों के लिये संमार्ग तथा कृपा है।

सूरतु-रांद-१३

سُوۡرَةُ الرَّعۡدِ

सूर: अल-राअद मदीने में उतरी तथा इस में तैंतालीस आयतें एवं छ: रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝

(१) अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ रा॰। ये क़ुरआन की आयतें हैं तथा जो कुछ आपकी ओर आपके प्रभु की ओर से उतारा गया है सब सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते (विश्वास नहीं करते)।

الٓمّٓرٰ ۚ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ ؕ وَالَّذِىۡۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ مِنۡ رَّبِّكَ الۡحَـقُّ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝١

(२) अल्लाह वह है जिसने आकाशों को बिना स्तम्भ के ऊँचा कर रखा है कि तुम उसे देख रहे हो। फिर वह अर्श पर स्थिर है,[1] उसी ने सूर्य तथा चन्द्रमा को आधीन बना रखा है। प्रत्येक एक निर्धारित समय तक चल रहा है।[2] वही कार्य की व्यवस्था करता है, वह

اَللّٰهُ الَّذِىۡ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيۡرِ عَمَدٍ تَرَوۡنَهَا ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ وَسَخَّرَ الشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجۡرِىۡ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ يُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لَعَلَّكُمۡ

---

[1]"इस्तवा अलल अर्श" का भावार्थ इससे पूर्व वर्णन हो चुका है कि इससे तात्पर्य अल्लाह तआला का अर्श पर स्थिर होना है। मोहद्देसीन (हदीसों के ज्ञानियों) का यही पथ है। वह इसका विस्तृत कल्पना नहीं करते, जैसे कुछ अन्य गिरोह इसमें तथा प्रभु के अन्य गुणों में कष्ट कल्पना करते हैं। परन्तु मोहद्देसीन कहते हैं कि इस अवस्था का वर्णन नहीं किया जा सकता है तथा न इसे किसी वस्तु के साथ उपमा दी जा सकती है। (*अल-शूरा*)

[2]इसका एक अर्थ यह भी है कि एक निर्धारित समय तक अर्थात क़ियामत तक अल्लाह के आदेश से चलते रहेंगे। जैसाकि कहा है।

﴿ وَالشَّمۡسُ تَجۡرِىۡ لِمُسۡتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقۡدِيۡرُ الۡعَزِيۡزِ الۡعَلِيۡمِ ﴾

"तथा सूर्य अपने स्थिर होने के समय तक चल रहा है।" (*सूर: यासीन*-३८)

दूसरा अर्थ यह है कि चन्द्रमा तथा सूर्य दोनों अपने-अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहते हैं, सूर्य अपने चक्र एक वर्ष में तथा चन्द्रमा एक महीने में पूरा कर लेता है। जिस प्रकार कहा।

بِلِقَآءِ رَبِّكُمۡ تُوقِنُونَ ۞

अपनी निशानियाँ खोल-खोल कर वर्णन कर रहा है कि तुम अपने प्रभु से मिलने का विश्वास कर लो।

وَهُوَ ٱلَّذِي مَدَّ ٱلۡأَرۡضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَٰسِيَ وَأَنۡهَٰرٗاۖ وَمِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ جَعَلَ فِيهَا زَوۡجَيۡنِ

(३) तथा उसी ने धरती को फैला कर बिछा दिया तथा उसमें पर्वत तथा नदियाँ उत्पन्न कर दी हैं,[1] तथा उसमें हर प्रकार के फलों के जोड़े दोहरे-दोहरे पैदा किये हैं।[2] वह रात्रि

﴿وَٱلۡقَمَرَ قَدَّرۡنَٰهُ مَنَازِلَ﴾

"तथा हमने चन्द्रमा के अनेक स्थान निर्धारित किये हैं।" *(सूर: यासीन-३९)*

सात बड़े ग्रह-समूह हैं, जिनमें से दो सूर्य तथा चन्द्रमा हैं। यहाँ केवल इन दो का वर्णन किया है क्योंकि यही दो सबसे विशाल तथा महत्वपूर्ण हैं। जब यह दोनों भी अल्लाह के आदेश के अधीन हैं तो दूसरे ग्रह उससे अधिक अधीन हैं। तथा जब यह अल्लाह के आदेश के अधीन हैं तो यह देवता अथवा पूजनीय नहीं हो सकते, पूजा के योग्य तो वही है जिसने उनको अधीन बना रखा है इसलिए कहा।

﴿لَا تَسۡجُدُواْ لِلشَّمۡسِ وَلَا لِلۡقَمَرِ وَٱسۡجُدُواْۤ لِلَّهِ ٱلَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمۡ إِيَّاهُ تَعۡبُدُونَ﴾

"सूर्य तथा चन्द्रमा के समक्ष शीश न झुकाओ उस अल्लाह के समक्ष शीश झुकाओ जिसने उन्हें उत्पन्न किया यदि तुम केवल उसकी इबादत करना चाहते हो।" (सूर: *हा॰मीम॰ सजद:-३८*)

﴿وَٱلشَّمۡسَ وَٱلۡقَمَرَ وَٱلنُّجُومَ مُسَخَّرَٰتِۭ بِأَمۡرِهِۦٓ﴾

"सूर्य, चन्द्रमा तथा तारे, सब उसके आदेश के अधीन हैं।" (सूर: *अल-आराफ़,* ५४)

[1]धरती की लम्बाई-चौड़ाई का अनुमान भी जनसामान्य के लिये कठिन है तथा उच्च तथा विशाल पर्वतों के द्वारा धरती में जैसे कील गाड़ी गयी हैं। नदियों, नालों तथा स्रोतों की ऐसी श्रृंखला स्थापित किया कि जिससे मनुष्य स्वयं भी लाभान्वित होते हैं तथा अपने खेतों की सिंचाई भी करते हैं, जिनसे विभिन्न प्रकार के अनाज तथा फल पैदा होते हैं, जिनके आकार-प्रकार भी भिन्न होते हैं तथा स्वाद में भिन्न होते हैं।

[2]इसका एक अर्थ यह है नर तथा मादा दोनों बनाये जैसाकि आधुनिक अविष्कारों ने इसकी पुष्टि कर दी है। दूसरा अर्थ (जोड़े-जोड़े का) यह है कि मीठा-खट्टा, ठंड-गर्म, श्याम-श्वेत तथा स्वादिष्ट-कटुस्वाद इसी प्रकार एक-दूसरे से भिन्न तथा विपरीत प्रकार का पैदा किया।

اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ③

से दिन को छिपाता है। निश्चय ही विचार एवं चिन्तन करने वालों के लिये उसमें बहुत-सी निशानियाँ (लक्षण) हैं।

وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجَاوِرَاتٌ وَجَنَّاتٌ مِّنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ④

(४) तथा धरती में विभिन्न प्रकार के टुकड़े एक-दूसरे से मिले-जुले हैं।[1] तथा अंगूरों के बाग़ हैं तथा खेत हैं एवं खजूरों के वृक्ष हैं। शाखाओं वाले तथा कुछ ऐसे हैं[2] जो शाखाओं वाले नहीं, सब एक ही पानी से सींचे जाते हैं। फिर भी हम को एक पर फलों में श्रेष्ठता देते हैं।[3] इसमें बुद्धिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَإِن تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ الْأَغْلَالُ

(५) तथा यदि तुझे आश्चर्य हो तो वास्तव में उनका यह कहना आश्चर्यजनक है कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम नया जन्म लेंगे।[4] यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने प्रभु से कुफ्र किया। तथा यही हैं जिनकी

---

[1] متجاورات एक-दूसरे के निकट तथा सामान्तर अर्थात धरती का एक क्षेत्र विकसित तथा उपजाऊ है, अत्यधिक पैदावार देता है। उसके साथ ही ऊसर भूमि है, जिसमें किसी प्रकार की भी पैदावार नहीं होती।

[2] صنوان का एक अर्थ मिले हुए तथा غير صنوان के अलग-अलग किये गये हैं। दूसरा अर्थ صنوان एक वृक्ष जिसकी कई शाखायें तथा तने हों, जैसे अनार, इंजीर तथा कुछ खजूरें। तथा غير صنوان जो इस प्रकार का न हो अपितु एक ही तने वाला हो।

[3] अर्थात धरती भी एक, पानी, वायु भी एक। परन्तु फल तथा अनाज विभिन्न प्रकार के तथा उनके स्वाद एवं बनावट भी एक-दूसरे से भिन्न।

[4] अर्थात जिस शक्ति ने प्रथम बार जन्म दिया, उसके लिये पुन: उस वस्तु का बनाना कोई कठिन कार्य नहीं। परन्तु यह काफ़िर विचित्र बात कहते हैं कि पुन: हम किस प्रकार पैदा किये जायेंगे?

فِىٓ أَعْنَاقِهِمْ ۖ وَأُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ⑤

गर्दनों में फंदे होंगे। तथा यही हैं जो नरक में रहने वाले हैं जो उसमें सदैव रहेंगे।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِٱلسَّيِّئَةِ قَبْلَ ٱلْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِمُ ٱلْمَثُلَٰتُ ۗ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلَىٰ ظُلْمِهِمْ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ⑥

(६) तथा जो तुझसे दण्ड की माँग में शीघ्रता कर रहे हैं सुख से पूर्व ही, निश्चय उनसे पूर्व (उदाहरण स्वरूप) यातनायें आ चुकी हैं।[1] तथा निःसंदेह तेरा प्रभु क्षमावान है, लोगों के अनायास अत्याचार का भी।[2] तथा यह भी निश्चित बात है कि तेरा प्रभु कठोर दण्ड देने वाला भी है।[3]

---

[1]अर्थात अल्लाह के प्रकोप से समुदाय तथा आबादियों की बर्बादी के कई उदाहरण पूर्व में गुज़र चुके हैं, इसके उपरान्त ये प्रकोप शीघ्र माँगते हैं ? यह काफ़िरों के उत्तर में कहा गया जो कहते थे कि हे पैग़म्बर ! यदि तू सच्चा है तो वह प्रकोप हम पर ले आ, जिससे तू हमें डराता रहता है।

[2]अर्थात लोगों के अत्याचार तथा अवज्ञा के उपरान्त भी वह प्रकोप में शीघ्रता नहीं करता, अपितु समय देता है कई बार इतनी देर कर देता है कि निर्णय क़ियामत पर छोड़ देता है। यह उसकी दया तथा कृपा एवं करूणा का परिणाम है। यदि वह तुरन्त पकड़ लेने तथा यातना देने पर आ जाये तो इस पूरी धरती पर एक मनुष्य शेष न रहे।

﴿وَلَوْ يُؤَاخِذُ ٱللَّهُ ٱلنَّاسَ بِمَا كَسَبُوا۟ مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن دَآبَّةٍ﴾

"यदि अल्लाह तआला लोगों को उनके कर्म के कारण पकड़ने लगे तो धरती पर एक भी जीव न छोड़े।" (*सूर: फ़ातिर-४५*)

[3]यह अल्लाह के दूसरे गुण का वर्णन है ताकि मनुष्य एक ही ओर दृष्टि न रखे। दूसरी ओर भी देखता रहे। क्योंकि एक ही ओर तथा एक ही कोण से निरन्तर देखते रहने से बहुत-सी वस्तुयें अदृश्य रह जाती हैं। इसलिये क़ुरआन करीम में जहाँ अल्लाह की दया, कृपा तथा क्षमा का वर्णन होता है, तो साथ ही साथ उसकी दूसरी विशेषता, प्रभुत्व प्रचण्डता तथा शक्ति का वर्णन भी मिलता है। जैसाकि यहाँ भी है ताकि आशा तथा भय दोनों भाव समक्ष रहें, क्योंकि यदि आशा ही आशा सामने रहे तो मनुष्य अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने के लिये निडर हो जाता है तथा यदि भय ही भय हर समय दिल तथा मस्तिष्क में छाया रहे, तो अल्लाह की कृपा से निराश हो जाता है तथा दोनों ही

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۗ إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرٌ ۖ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ⑦

(७) तथा काफ़िर (कृतघ्न) कहते हैं कि उस पर उसके प्रभु की ओर से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों नहीं उतारी गयी। बात यह है कि आप तो केवल सचेत करने वाले हैं[1] तथा प्रत्येक समुदाय के लिये मार्गदर्शन करने वाला है।[2]

बातें उचित नहीं हैं तथा मनुष्य के विनाश का कारण बन सकती हैं। इसीलिये कहा जाता है।

«الإيمَانُ بَينَ الْخَوفِ وَالرَّجَاءِ»

"ईमान भय तथा आशा के मध्य है।"

अर्थात दोनों ही बातों के मध्य संतुलन तथा समानता का नाम ईमान है। मनुष्य अल्लाह के प्रकोप से निर्भय हो तथा न उसकी कृपा से निराश हो। इस विषय के लिये देखें *सूर: अल-अनाम*-४७, *सूर: अल-आराफ़*-१६७, *सूर: अल-हिज्र*-४९ तथा ५० आदि आयतें।

[1]प्रत्येक नबी को अल्लाह तआला हालात तथा आवश्यकतानुसार तथा अपनी नीति तथा विवेक के आधार पर कुछ निशानियाँ तथा चमत्कार प्रदान करता है। परन्तु काफ़िर अपनी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार के अभिलाषी रहे हैं। जैसे मक्का के काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहते सफ़ा नामक पर्वत को सोना का बना दिया जाये अथवा पर्वतों के स्थान पर स्रोत तथा नदियाँ बहने लगें आदि-आदि। जब उनकी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार न दिखलाया जाता तो कहते कि इस पर कोई निशानी, चमत्कार क्यों न अवतरित किया गया ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

> "हे पैग़म्बर ! तेरा काम केवल आमंत्रण तथा सतर्क कर देना है। वह तू करता रह। कोई स्वीकार करे न करे उससे तुझे कोई मतलब नहीं, इसलिये कि मार्ग पर चला देना यह हमारा काम है। तेरा काम मार्ग दिखाना है, उस मार्ग पर चला देना, यह तेरा नहीं, हमारा काम है।"

[2]अर्थात प्रत्येक समुदाय के मार्गदर्शन के लिये अल्लाह तआला ने मार्गदर्शक अवश्य भेजा है। यह अलग बात है कि समुदायों ने यह मार्ग अपनाया अथवा नहीं अपनाया। परन्तु सीधे मार्ग का दर्शन करने के लिये संदेशवाहक प्रत्येक समुदाय के अंदर अवश्य आया।

﴿وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ﴾

"प्रत्येक समुदाय में एक पथ दर्शक अवश्य आया है।" (*सूर: फ़ातिर*-२४)

(८) मादा अपने गर्भ में जो कुछ रखती है, उसे अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है ।[1] तथा पेट (गर्भाशय) का घटना-बढ़ना भी ।[2] प्रत्येक वस्तु उसके पास अनुमानित है ।[3]

اَللّٰهُ يَعۡلَمُ مَا تَحۡمِلُ كُلُّ اُنۡثٰى وَمَا تَغِيۡضُ الۡاَرۡحَامُ وَمَا تَزۡدَادُ‌ؕ وَكُلُّ شَىۡءٍ عِنۡدَهٗ بِمِقۡدَارٍ ۸

(९) गुप्त तथा खुली बातों का वह ज्ञान रखने वाला है, सबसे बड़ा तथा सबसे उच्च तथा उत्तम है ।

عٰلِمُ الۡغَيۡبِ وَالشَّهَادَةِ الۡكَبِيۡرُ الۡمُتَعَالِ ۹

(१०) तुम में से किसी का अपनी बात छुपा कर कहना तथा उच्च स्वर में उसे कहना तथा जो रात्रि को छिपा हो तथा जो दिन में चल रहा हो, सब अल्लाह पर समान हैं ।

سَوَآءٌ مِّنۡكُمۡ مَّنۡ اَسَرَّ الۡقَوۡلَ وَمَنۡ جَهَرَ بِهٖ وَمَنۡ هُوَ مُسۡتَخۡفٍۢ بِالَّيۡلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۱۰

(११) उस के रक्षक[4] मनुष्य के आगे पीछे नियुक्त हैं, जो अल्लाह के आदेश से उसकी रक्षा करते हैं । किसी समुदाय की अवस्था अल्लाह (तआला) नहीं बदलता जब तक कि वे स्वयं न बदलें, जो उन के हृदय[5] में है ।

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهٖ يَحۡفَظُوۡنَهٗ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوۡمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوۡا مَا بِاَنۡفُسِهِمۡ‌ؕ وَاِذَآ

---

[1]माता के गर्भ में क्या है ? नर है अथवा मादा, सुन्दर है अथवा कुरूप, सपूत अथवा कुपूत, दीर्घ आयु अथवा अल्प आयु ? सभी बातें केवल अल्लाह तआला ही जानता है ।

[2]इससे तात्पर्य गर्भ की अवधि है जो सामान्यत: नौ माह होता है, परन्तु घटती तथा बढ़ती भी है, किसी समय यह दस माह तथा किसी समय सात-आठ माह हो जाती है, इसका भी ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं ।

[3]अर्थात किसी का जीवनकाल कितना है ? उसे भोजन का कितना भाग मिलेगा ? इसका पूरा अनुमान अल्लाह को है ।

[4] معقبات बहुवचन है معقبة का । एक-दूसरे के पीछे आने वाले अर्थात फ़रिश्ते हैं, जो वारी-वारी एक-दूसरे के पश्चात आते हैं । दिन के फ़रिश्ते जाते हैं तो रात के फ़रिश्ते आ जाते हैं । शाम के जाते हैं तो दिन के आ जाते हैं ।

[5]इसकी व्याख्या के लिये देखें *सूर: अंफ़ाल-५३* की व्याख्या ।

أَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ⑪

अल्लाह (तआला) जब किसी समुदाय को दण्ड देने का निर्णय कर लेता है, तो वह बदला नहीं करता तथा अतिरिक्त उसके कोई भी उनका संरक्षक भी नहीं।

هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّیُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ⑫

(१२) वह अल्लाह ही है जो तुम्हें विद्युत की चमक डराने तथा आशा दिलाने के लिये[1] दिखाता है तथा भारी बादलों को पैदा करता है।[2]

وَیُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ ۚ وَیُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ یَّشَآءُ وَهُمْ یُجَادِلُوْنَ فِی اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِیْدُ الْمِحَالِ ⑬

(१३) तथा गर्जन उसकी प्रशंसा तथा महिमा का वर्णन करती है तथा फ़रिश्ते भी उसके भय से,[3] वही आकाश से बिजली गिराता है तथा जिस पर चाहता है, उस पर डालता है।[4] काफ़िर अल्लाह के विषय में लड़-झगड़ रहे हैं तथा अल्लाह सर्वशक्तिशाली है।[5]

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا یَسْتَجِیْبُوْنَ لَهُمْ

(१४) उसी को पुकारना सत्य है,[6] जो लोग अन्यों को उसके अतिरिक्त पुकारते हैं वे

---

[1]जिससे राहगीर यात्री डरते हैं तथा घरों में रहने वाले किसान तथा कृषक उसके आर्शीर्वाद तथा लाभ की आशा रखते हैं।

[2]भारी बादलों से तात्पर्य वह बादल जिनमें वर्षा का पानी होता है।

[3]जैसा अन्य स्थान पर कहा।

﴿ وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ ﴾

"प्रत्येक वस्तु अल्लाह की महिमा का वर्णन करती है।" (सूर: *बनी इस्राईल*-४४)

[4] अर्थात इसके द्वारा जिसे चाहता है नाश कर डालता है।

[5] مِحَال का अर्थ शक्ति, पूछ-ताछ तथा प्रगाढ़ आदि के किये गये हैं। अर्थात वह अत्यन्त शक्तिशाली, अत्यधिक पूछ करने वाला तथा प्रगाढ़ विचार वाला है।

[6]अर्थात भय तथा आशा के समय उसी एक अल्लाह को पुकारना उचित है क्योंकि वही सभी की पुकार सुनता तथा स्वीकार करता है अथवा आमन्त्रण, इबादत (वंदना) के अर्थ

بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ ۚ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿١٤﴾

उनकी किसी पुकार का उत्तर नहीं देते, जैसे कोई व्यक्ति अपने हाथ पानी की ओर फैलाये हुए हो कि उसके मुख में पड़ जाये, जबकि वह पानी उसके मुख में पहुँचने वाला नहीं ।[1] उन भ्रष्टाचारियों की जितनी पुकार है सभी भ्रष्ट है ।[2]

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۩ ﴿١٥﴾

(१५) तथा अल्लाह ही के लिये आकाशों तथा धरती के सभी जीव प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता से सिजदः (दण्डवत) करते हैं तथा उनकी छाया भी प्रात: एवं संध्या ।[3]

में है । उसी की इबादत सत्य एवं उचित है, उसके अतिरिक्त कोई इबादत (वन्दना) के योग्य नहीं, क्योंकि सृष्टि का स्रष्टा, स्वामी तथा चलाने वाला केवल वही है, इसलिये इबादत भी केवल उसी का अधिकार है ।

[1]अर्थात जो अल्लाह को छोड़कर अन्यों को सहायता के लिये पुकारते हैं, उनकी तुलना ऐसी है जैसे कोई व्यक्ति दूर से पानी की ओर अपनी हथेलियाँ फैलाकर पानी से कहे कि तू मेरे मुँह तक आ जा, स्पष्ट है कि पानी अचल है, उसे पता नहीं कि हथेलियाँ फैलाने वाले की आवश्यकता क्या है ? तथा न उसे यह पता है कि वह मुझे अपने मुख तक पहुँचने की माँग कर रहा है । तथा न उसमें यह शक्ति है कि अपने स्थान से चलकर उसके हाथ अथवा मुख तक पहुँच जाये । इसी प्रकार ये मूर्तिपूजक, अल्लाह के अतिरिक्त जिनको पुकारते हैं, उन्हें न यह पता है कि कोई उन्हें पुकार रहा है तथा उसकी अमुक आवश्यकता है । तथा न उस आवश्यकता की पूर्ति की उनमें शक्ति ही है ।

[2]तथा व्यर्थ भी है । क्योंकि उससे उनको कोई लाभ नहीं होगा ।

[3]इसमें अल्लाह तआला की महिमा एवं शक्ति का वर्णन है कि प्रत्येक वस्तु पर उसका अधिकार है तथा प्रत्येक वस्तु उसके अधीन तथा उसके समक्ष नतमस्तक है, चाहे ईमानवालों की तरह प्रसन्नता से करें अथवा मूर्तिपूजकों की भाँति अप्रसन्नता से । तथा उनकी छाया भी प्रात:-सायं दण्डवत होती हैं । जैसे अन्य स्थान पर कहा ।

﴿ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴾

"क्या उन्होंने नही देखा कि अल्लाह ने जो वस्तु भी उत्पन्न की हैं उनकी छाया दाहिने तथा बायें से अल्लाह को दण्डवत करती हुई ढलती हैं तथा वे विनम्रता करती हैं ।" (सूर: अन-नहल-४८)

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۭ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ڏ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ڬ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۭ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ⑯

(१६) (आप) पूछिये कि आकाशों तथा धरती का पालनहार कौन है ? कह दीजिये अल्लाह ।[1] कह दीजिये क्यों तुम फिर भी इस के अतिरिक्त अन्यों को सहायक बना रहे हो जो स्वयं अपने प्राण के भी भले-बुरे का अधिकार नहीं रखते ।[2] कह दीजिये क्या अंधा तथा आँखों वाला समान हो सकता है ? अथवा क्या अंधकार तथा प्रकाश समान हो सकता है ?[3] क्या जिन्हें ये अल्लाह का साझीदार बना रहे हैं उन्होंने भी अल्लाह की तरह उत्पत्ति की है कि उनके देखने में उत्पत्ति संदिग्ध हो गई ?

इस दण्डवत की स्थिति क्या है ? यह अल्लाह भली-भाँति जानता है अथवा दूसरा भावार्थ इसका यह है कि काफ़िर सहित सभी सृष्टि अल्लाह के आदेशों के अधीन है, किसी में उसके उल्लंघन की शक्ति नहीं अल्लाह तआला किसी को स्वास्थ दे, रोग दे, धनवान कर दे अथवा निर्धन बना दे, जीवन दे अथवा मृत्यु । इन उत्पत्ति के नियमों में किसी काफ़िर को भी इंकार की शक्ति नहीं ।

[1]यहाँ तो पैग़म्बरों के मुख से स्वीकार है । परन्तु क़ुरआन के अन्य स्थानों से स्पष्ट है कि मूर्तिपूजकों का उत्तर भी यही होता था ।

[2]अर्थात जब तुम्हें स्वीकार तथा मान्य है कि आकाश तथा धरती का मालिक (प्रभु) अल्लाह है, जो सभी अधिकारों का बिना किसी साझीदार के अकेला मालिक है, तो फिर तुम उसे छोड़कर ऐसों को अपना मित्र तथा पक्षधर क्यों समझते हो जो स्वयं अपने लिये लाभ-हानि का अधिकार नहीं रखते ।

[3]अर्थात जिस प्रकार अंधा तथा आँख वाला समान नहीं हो सकते, उसी प्रकार एकेश्वरवादी तथा अनेकश्वरवादी समान नहीं हो सकते । इसलिये एक अल्लाह के पुजारी का हृदय एकेश्वरवाद की ज्योति से पूर्ण है, जबकि अनेकों के पुजारी उससे वंचित हैं एकेश्वरवादी की आँखें हैं, वह एकेश्वरवाद का प्रकाश देखता है तथा अनेकों के पुजारी को यह एकेश्वरवाद का प्रकाश दिखायी नहीं पड़ता, इसलिये वह अंधा है । इसी प्रकार जिस प्रकार अंधकार तथा प्रकाश समान नहीं हो सकते । एक अल्लाह का पुजारी जिसका हृदय दिव्य ज्योति से परिपूर्ण है, तथा एक मूर्तिपूजक (अनेकश्वरवादी) अज्ञान तथा अंधविश्वास के अंधेरों में भटक रहा है, समान नहीं हो सकते ।

कह दीजिये कि केवल अल्लाह ही सभी वस्तुओं का उत्पत्ति कर्ता है वह अकेला है,[1] तथा सर्वशक्तिमान है।

(१७) उसी ने आकाश से वर्षा की फिर अपनी अपनी शक्ति अनुसार नाले बह निकले।[2] फिर जल के धारे ने ऊपर चढ़कर झाग को उठा लिया।[3] तथा उस वस्तु में भी जिसको अग्नि में डाल कर तपाते हैं आभूषण अथवा सामान के लिये उसी प्रकार के झाग हैं।[4] इसी प्रकार अल्लाह तआला सत्य-असत्य को स्पष्ट करने का उदाहरण देता है।[5] अब झाग

أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنفَعُ

---

[1]अर्थात ऐसी बात नहीं है कि यह किसी शंका के शिकार हो गये हों अपितु यह बात मानते हैं कि प्रत्येक वस्तु का रचयिता केवल तथा मात्र अल्लाह ही है।

[2] بِقَدَرِهَا (विस्तारानुसार) का अर्थ है नाले अर्थात घाटी (दो पर्वतों के मध्य का स्थान) संकरी हो तो कम पानी तथा विस्तृत हो तो अधिक पानी उठाती है। अर्थात क़ुरआन के उतरने को जो मार्गदर्शन तथा वर्णन का संकलन है, वर्षा होने से उपमा दी है। इसलिये कि क़ुरआन का लाभ भी वर्षा के लाभ की भाँति सामान्य है। तथा घाटियों की उपमा दी है दिल के साथ। इसलिये की घाटियों (नालों) में पानी जाकर रुकता है, जिस प्रकार क़ुरआन तथा ईमान ईमानवालों के दिलों में स्थिर होता है।

[3]उस झाग से जो पानी के ऊपर आ जाता है तथा जो घुल जाता है तथा हवायें जिसे उड़ा ले जाती हैं, कुफ़्र तात्पर्य है, जो झाग की तरह उड़ जाने वाला तथा समाप्त हो जाने वाला है।

[4]यह दूसरा उदाहरण है कि ताँबा, पीतल, सीसा अथवा स्वर्ण चाँदी के आभूषण अथवा सामान बनाने के लिये आग में तपाया जाता है, तो उस पर भी झाग आता है। इस झाग से तात्पर्य मैल-कुचैल है जो इन धातुओं के अंदर होती है। आग में तपाने से झाग के रूप में ऊपर आ जाता है फिर यह झाग भी देखते-देखते समाप्त हो जाता है तथा धात असली रूप में शेष रह जाती है।

[5]अर्थात जब सत्य तथा असत्य का आपस में सामना तथा टकराव होता है, तो असत्य को उसी प्रकार स्थाईत्व तथा स्थिरता नहीं मिलता जिस प्रकार से बाढ़ की धारा का झाग

النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾

व्यर्थ होकर चला जाता है ।[1] परन्तु जो लोगों को लाभ पहुँचाने वाली वस्तुऐं हैं, वह धरती में ठहरी रहती हैं ।[2] अल्लाह (तआला) इसी प्रकार उदाहरण दिया करता है ।[3]

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾

(१८) जिन लोगों ने अपने प्रभु के आदेशों का पालन किया उनके लिये भलाई है तथा जिन लोगों ने उसके आदेश का पालन न किया यदि उनके लिये धरती में जो कुछ है सब कुछ हो, तथा उसके साथ वैसा ही अन्य भी हो, तो वह सब कुछ अपने बदले में दे दें ।[4] यही हैं जिनके लिये बुरा हिसाब है,[5] तथा

पानी के साथ धातुओं का झाग, जिनको आग में तपाया जाता है, धातुओं के साथ शेष नहीं रहता। बल्कि समाप्त तथा नष्ट हो जाता है।

[1]अर्थात इससे कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि झाग, पानी अथवा धातु के साथ शेष नहीं बचता अपितु धीरे-धीरे बैठ जाता है अथवा हवायें उसे उड़ा ले जाती हैं। असत्य की तुलना भी झाग की ही तरह है।

[2]अर्थात पानी, तथा स्वर्ण, चाँदी, तांबा, पीतल आदि ये चीज़ें शेष रहती हैं जिन से लोग लाभान्वित होते हैं। उसी प्रकार सत्य शेष रहता है जिसके अस्तित्व को भी विनाश नहीं तथा जिसका लाभ भी स्थाई है।

[3]अर्थात बात को समझाने तथा मस्तिष्क में रखने के लिये उपमायें तथा उदाहरणों का वर्णन होता है, जैसे यहाँ दो उदाहरण वर्णन किये गये तथा उसी प्रकार सूर: *अल-बकर:* के प्रारम्भ में पाखण्डियों के लिये उदाहरणों का वर्णन है। इसी प्रकार सूर: *नूर*-३९ तथा ४० में काफ़िरों के लिये दो उपमायें हैं तथा हदीसों में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उदाहरणों के द्वारा लोगों को बहुत सी बातें समझायीं। (विस्तृत जानकारी के लिये देखें तफ़सीर इब्ने कसीर)

[4]यह विषय इससे पूर्व भी दो तीन स्थानों पर गुज़र चुका है।

[5]क्योंकि उनसे प्रत्येक छोटे-बड़े कर्मों का हिसाब लिया जायेगा तथा उनका मामला (जिससे हिसाब में प्रति प्रश्न की गयी उसका बच निकलना कठिन होगा, उसे दण्ड मिलकर ही रहेगा) का समतुल्य होगा। इसलिये आगे फ़रमाया उनका ठिकाना नरक है।

उनका ठिकाना नरक है, जो बहुत बुरा स्थान है।

(१९) क्या वह व्यक्ति जो यह ज्ञान रखता हो कि जो आपकी ओर आपके प्रभु की ओर से उतारा गया है, वह सत्य है, उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो अंधा हो।[1] शिक्षा तो वही स्वीकार करते हैं, जो बुद्धिमान हों।[2]

أَفَمَن يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾

(२०) जो अल्लाह को दिये गये वचन को पूरा करते हैं।[3] तथा वचन भंग नहीं करते।[4]

الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ﴿٢٠﴾

(२१) तथा अल्लाह (तआला) ने जिन वस्तुओं को जोड़ने का आदेश दिया है, वह उसे जोड़ते हैं।[5] तथा वे अपने प्रभु से डरते हैं तथा हिसाब की कठोरता का डर रखते हैं।

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾

---

[1]अर्थात एक वह व्यक्ति जो क़ुरआन की यर्थातता तथा सत्यता पर विश्वास रखता हो, तथा दूसरा अंधा हो अर्थात उसे क़ुरआन की सत्यता पर संदेह हो, क्या ये दोनों समान हो सकते हैं ? प्रश्न, नकारात्मक है अर्थात ये दोनों उसी प्रकार समान नहीं हो सकते जिस प्रकार झाग तथा पानी अथवा स्वर्ण, ताँबा तथा उसकी मैल-कुचैल समान नहीं हो सकते।

[2]अर्थात जिसके पास स्वच्छ दिल तथा उचित बुद्धि न हो तथा जिन्होंने अपने दिलों को पापों का मुर्चा लगा रखा हो तथा अपनी बुद्धि भ्रष्ट कर ली हो, वह इस क़ुरआन से शिक्षा प्राप्त ही नहीं कर सकते।

[3]यह बुद्धिमानों के गुणों का वर्णन हो रहा है। अल्लाह के वचन से तात्पर्य, उसके आदेश (आज्ञा तथा निषेध) हैं, जिनका वे पालन करते हैं। अथवा वह वचन है, जो वचन عَهْدِ السْت कहलाता है, जिसका विस्तृत वर्णन *सूरः आराफ़* में आ चुका है।

[4]इससे तात्पर्य वह परस्पर संधि तथा वचन हैं, जो मनुष्य आपस में एक-दूसरे से करते हैं अथवा वह जो उनके तथा उनके प्रभु के मध्य हैं।

[5]अर्थात सम्बन्धों तथा नातों को तोड़ते नहीं अपितु उनको जोड़ते हैं तथा आपस में सम्बन्ध का पालन करते हैं।

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा वे अपने प्रभु की प्रसन्नता के लिये धैर्य रखते हैं ।[1] तथा नमाज़ों को निरन्तर स्थापित रखते हैं ।[2] तथा जो कुछ हमनें उन्हें दे रखा है उसे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से ख़र्च करते हैं ।[3] तथा बुराई को भी भलाई से टालते हैं,[4] उन्हीं के लिये पारलौकिक निवास स्थान है ।[5]

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ

(२३) सदैव रहने के बाग़[6] जहाँ ये स्वयं जायेंगे तथा उनके पूर्वजों तथा पत्नियों एवं सन्तान में से भी जो पुण्य कार्य करने वाले

---

[1]अल्लाह की अवज्ञा तथा पापों से बचते हैं । यह धैर्य का एक प्रकार है । कठिनाईयों एवं दुखों में धैर्य रखते हैं । यह दूसरा प्रकार है ।

[2]उनकी सीमाओं तथा प्रतिबन्ध, मन तथा चित्त से लीन एवं निर्धारित नियमानुसार ।

[3]अर्थात जहाँ-जहाँ जब-जब व्यय करने की आवश्यकता पड़ती है, अपनों तथा बेगानों में तथा छिपाकर एवं प्रत्यक्ष रूप से व्यय करते हैं ।

[4]अर्थात उनके साथ कोई बुराई करता है, तो वे उसका उत्तर अच्छाई से देते हैं, अथवा क्षमा तथा भुला देने एवं अत्यन्त सहनशीलता से काम लेते हैं । जिस प्रकार से अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴾

"बुराई का उत्तर इस प्रकार दो जो अच्छा हो (यदि तुम ऐसा करोगे) तो वह व्यक्ति जो तुम्हारा शत्रु है, ऐसा हो जायेगा जैसे कि तुम्हारा घनिष्ठ मित्र है ।"
(सूर: हा॰मीम॰सजद:-३४)

[5]अर्थात जो इन उत्तम चरित्रों का पालन करने तथा वर्णित विशेषताओं से युक्त होंगे, उनके लिये परलोक में घर है ।

[6]अदन का अर्थ है स्थायी अर्थात सदैव रहने वाले बाग ।

عَلَيۡهِم مِّن كُلِّ بَابٖ ﴿٢٣﴾

होंगे,[1] उनके निकट फ़रिश्ते प्रत्येक द्वार से आयेंगे।

سَلَٰمٌ عَلَيۡكُم بِمَا صَبَرۡتُمۡۚ فَنِعۡمَ عُقۡبَى ٱلدَّارِ ﴿٢٤﴾

(२४) (कहेंगे कि) तुम पर सलामती (शान्ति) हो, धैर्य के बदले, क्या ही अच्छा बदला है इस पारलौकिक घर का।

وَٱلَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهۡدَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعۡدِ مِيثَٰقِهِۦ وَيَقۡطَعُونَ مَآ أَمَرَ ٱللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَيُفۡسِدُونَ فِي ٱلۡأَرۡضِ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱللَّعۡنَةُ وَلَهُمۡ سُوٓءُ ٱلدَّارِ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा जो लोग अल्लाह के वचन को उस की सुदृढ़ता के पश्चात तोड़ देते हैं तथा जिन वस्तुओं के जोड़ने का अल्लाह का आदेश है उन्हें तोड़ देते हैं, तथा धरती में उपद्रव फैलाते हैं, उन के लिए धिक्कार है तथा उन के लिए बुरा घर है।[2]

---

[1]अर्थात इस प्रकार सद्व्यवहार सम्बन्धियों को आपस में एकत्रित कर देगा, ताकि एक-दूसरे का दर्शन करके नेत्र शीतलता प्राप्त हो, यहाँ तक कि नीच श्रेणी के स्वर्गवासी को भी उच्च श्रेणी प्रदान कर देगा ताकि वे अपने सम्बन्धियों के साथ एकत्रित हो जाये, कहा।

﴿ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَٱتَّبَعَتۡهُمۡ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَٰنٍ أَلۡحَقۡنَا بِهِمۡ ذُرِّيَّتَهُمۡ وَمَآ أَلَتۡنَٰهُم مِّنۡ عَمَلِهِم مِّن شَيۡءٖۚ ﴾

"तथा वे लोग जो ईमान लाये तथा उनकी सन्तान ने ईमान के साथ उनका अनुसरण किया तो हम मिला देंगे उनके साथ उनकी संतान को तथा उनके कर्मों से हम कुछ घटायेंगे नहीं।" (*सूरः अल-तूर-२१*)

इससे जहाँ यह ज्ञात होता है कि चरित्रवान सम्बन्धियों को अल्लाह तआला, स्वर्ग में एकत्रित करेगा, वहीं यह भी ज्ञात हुआ कि यदि किसी के पास ईमान तथा सत्कर्म की पूँजी नहीं होगी, तो वह स्वर्ग में नहीं जायेगा, चाहे उसके अन्य अति निकट सम्बन्धी स्वर्ग में चले गये हों। क्योंकि स्वर्ग में प्रवेश वंश तथा परिवार के आधार पर नहीं, ईमान तथा कर्म के आधार पर होगा।

« مَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ ».

"जिसे उसका कर्म पीछे छोड़ गया, उसका वंश उसे आगे नहीं बढ़ायेगा।"(सहीह मुस्लिम किताबुल जिक्र वदआ, ब्राब फ़ज़लिल इज़्तेमाओ अला तिलावतिल क़ुरआन)

[2]यह सत्कर्मियों के साथ कुकर्मियों के परिणाम का वर्णन कर दिया ताकि मनुष्य इस परिणाम से बचने का प्रयत्न करे।

(२६) अल्लाह (तआला) जिसकी जीविका चाहता है बढ़ाता है तथा घटाता है।[1] ये तो दुनिया के जीवन में मुग्ध हो गये।[2] यद्यपि कि दुनिया परलोक की तुलना में अत्यधिक तुच्छ पूँजी है।[3]

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۤءُ وَيَقْدِرُ ۭ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۝

(२७) काफ़िर कहते हैं कि उस पर कोई निशानी (चमत्कार) क्यों उतारी नहीं गयी ? उत्तर दीजिये कि जिसे अल्लाह भटकाना चाहे कर देता है तथा जो उसकी ओर झुके उसे मार्ग दिखा देता है।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۤءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝

---

[1]जब काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के लिये यह कहा कि उनके लिए बुरा घर है तो मन में यह संदेह उत्पन्न हो सकता है कि संसार में तो उन्हें हर प्रकार का सुख प्राप्त है। उसके खण्डन के लिये कहा कि सांसारिक साधन तथा व्यवसाय की कमी अथवा अधिकता यह अल्लाह के अधिकार में है वह अपनी इच्छा से तथा किसी कारणवश (जिसको केवल वही जानता है) किसी को अधिक तथा किसी को कम देता है। जीविका की अधिकता, इस बात का प्रमाण नहीं कि अल्लाह तआला उससे प्रसन्न है तथा कमी का अर्थ यह नहीं कि अल्लाह तआला उस पर क्रोधित है।

[2]किसी को यदि दुनिया का धन अधिक मिल रहा है, जबकि वह अल्लाह का अवज्ञाकारी है, तो यह प्रसन्न तथा निश्चिन्त होने का स्थान नहीं, क्योंकि यह अवसर है। पता नहीं कब यह अवधि समाप्त हो जाये तथा अल्लाह की पकड़ में जकड़ लिया जाये।

[3]हदीस में आता है कि दुनिया का मूल्य परलोक की अपेक्षा इस प्रकार है, जैसे कोई व्यक्ति अपनी उंगली समुद्र में डिबो कर निकाले, तो देखे कि समुद्र के जल की अपेक्षा उसकी उंगली में कितना पानी आया ? (सहीह मुस्लिम किताबुलजन्न:, बाबु फ़नाइद्दुनिया व बयानुल हश्र यौमल क़ियाम:) एक अन्य हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र बकरी के एक मरे बच्चे के पास से हुआ, तो उसे देखकर आप ने फ़रमाया :

"अल्लाह की सौगन्ध, संसार अल्लाह के निकट इससे भी अधिक तुच्छ है जितना यह मरा बच्चा अपने स्वामियों के निकट उस समय तुच्छ था, जब उन्होंने उसे फेंका।" (सहीह मुस्लिम किताबुज्ज़ुहदे वर्रक़ाक़)

(२८) जो लोग ईमान लाये उनके हृदय अल्लाह को स्मरण करने से शान्ति प्राप्त करते हैं। याद रखो कि अल्लाह के स्मरण से ही हृदय को शान्ति प्राप्त होती है।[1]

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾

(२९) जो लोग ईमान लाये तथा जिन्होंने पुण्य के कार्य भी किये उनके लिये खुशहाली है।[2] तथा सर्वश्रेष्ठ स्थान है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ﴿٢٩﴾

(३०) उसी प्रकार हमने आपको उस समुदाय में भेजा है,[3] जिससे पूर्व बहुत से समुदाय गुज़र चुके हैं कि आप उन्हें हमारी ओर से जो वह्यी (प्रकाशना) आप पर उतरी है, पढ़कर सुनाइए, यह अल्लाह कृपालु के नकारने वाले हैं।[4] (आप) कह दीजिये कि मेरा प्रभु तो वही

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَٰنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

---

[1]अल्लाह के वर्णन से तात्पर्य उसके एकेश्वरवाद का वर्णन है, जिससे मूर्तिपूजकों के दिलों में संकोच उत्पन्न हो जाता है, अथवा उसकी इबादत, क़ुरआन पढ़ना, ऐच्छिक प्रार्थनायें, विनती तथा ध्यान लगाना है, जो ईमानवालों के दिलों का भोजन है अथवा उसके आदेशों एवं निर्देशों का अनुगमन तथा पालन करना है, जिसके बिना ईमानवाले तथा अल्लाह से डरने वाले बेक़रार रहते हैं।

[2] طُوبَىٰ के विभिन्न अर्थ बताये गये हैं। जैसे पुण्य, पवित्र, चमत्कार, प्रतिस्पर्धा, स्वर्ग में विशेष वृक्ष अथवा निर्धारित स्थान आदि। भावार्थ सभी का एक है अर्थात स्वर्ग में उत्तम स्थान तथा उसकी सुख-सुविधा।

[3]जिस प्रकार हमने आपको सचेत करने वाले रसूल के रूप में भेजा है, उसी प्रकार आप से पूर्व के समुदायों में रसूल भेजे थे, उनको भी इसी प्रकार झुठलाया गया था जिस प्रकार आपको किया गया तथा जिस प्रकार झुठलाने के परिणाम स्वरूप वे समुदाय नाश कर दिये गये, इन्हें भी उस परिणाम से निश्चिन्त नहीं रहना चाहिये।

[4]मक्का के मूर्तिपूजक '*रहमान*' (कृपानिधि) शब्द से बहुत भड़कते थे, *हुदैबिया* की संधि के अवसर पर जब *बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम* के शब्द लिखे गये, तो उन्होंने कहा कि '*रहमान*' (कृपानिधि) तथा *रहीम* (दयालु) क्या है ? हम नहीं जानते। (इब्ने कसीर)

وَإِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾

है, उसके अतिरिक्त वस्तुत: कोई भी इबादत के योग्य नहीं,[1] उसी के ऊपर मेरा भरोसा है। तथा उसी की ओर मेरा आकर्षण है।

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَىٰ ۗ بَل لِّلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۗ أَفَلَمْ يَيْأَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿٣١﴾

(३१) तथा यदि (मान लिया जाये कि) क़ुरआन के द्वारा पर्वत चला दिये जाते अथवा धरती खन्ड-खन्ड कर दी जाती अथवा मृतकों से बाते करा दी जातीं (फिर भी वह ईमान न लाते) बात यह है कि सब कार्य अल्लाह के हाथ में है।[2] तो क्या ईमान वालों का इस बात पर दिल नहीं जमता कि यदि अल्लाह तआला चाहे तो सभी लोगों को मार्गदर्शन दे दे। काफ़िर को तो उनके कुफ़्र के बदले सदैव ही कोई न कोई कठोर यातना पहुँचती रहेगी अथवा उनके मकानों के आस-पास उतरती रहेगी[3]

---

[1]अर्थात रहमान मेरा वह प्रभु है जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

[2]इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि प्रत्येक आकाशीय पुस्तक को क़ुरआन कहा जाता है, जिस प्रकार एक हदीस में आता है कि आदरणीय दाऊद पशुओं को तैयार करने का आदेश देते तथा इतनी देर में एक बार क़ुरआन पढ़ लेते (सहीह बुख़ारी किताबुल अंबिया) यहाँ स्पष्ट बात है कि क़ुरआन से तात्पर्य ज़बूर है। आयत का अर्थ यह है कि यदि पूर्व में कोई आकाशीय पुस्तक ऐसी अवतरित हुई होती जिसे सुनक़र पर्वत चलने लगते अथवा धरती की दूरी तय हो जाती अथवा मरे हुए लोग बोल उठते तो क़ुरआन करीम में यह विशेषता इससे भी उत्तम रूप में विद्यमान होती क्योंकि यह चमत्कार तथा भाषा शैली में पूर्व की सभी पुस्तकों से उच्च है। तथा कुछ ने इसका भावार्थ यह वर्णन किया है कि यदि इस क़ुरआन के द्वारा यह चमत्कार प्रकट होते, तब भी ये काफ़िर ईमान न लाते, क्योंकि ईमान लाना अथवा न लाना यह अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है, चमत्कारों पर नहीं। इसीलिये फ़रमाया सभी कार्य अल्लाह के हाथ में है।

[3]जो उनके देखने अथवा ज्ञान में अवश्य आयेगी ताकि वह शिक्षा ग्रहण कर सकें।

यहाँ तक कि अल्लाह का वचन आ पहुँचे।[1] नि:संदेह अल्लाह तआला वचन भंग नही करता।

(३२) तथा नि:संदेह आप से पूर्व के पैग़म्बरों के साथ उपहास किया गया था तथा मैंने भी क़ाफ़िरों को ढील दी थी फिर उन्हें पकड़ लिया था, तो मेरा प्रकोप कैसा रहा ?[2]

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾

(३३) अथवा वह अल्लाह जो ख़बर लेने वाला है प्रत्येक व्यक्ति का उसके किये हुए कर्म पर[3] उन लोगों ने अल्लाह के साझीदार ठहराये हैं, कह दीजिये तनिक उनके नाम तो लो,[4] क्या

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ

---

[1]अथवा क़ियामत (प्रलय) आ जाये अथवा मुसलमानों को पूर्ण विजय तथा अधिकार प्राप्त हो जाये।

[2]हदीस में आता है।

« إِنَّ اللهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ »

"अल्लाह तआला अत्याचारियों को अवसर दिये जाता है, यहाँ तक कि जब उसे पकड़ता है तो फिर छोड़ता नहीं।"

इसके पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह क़ुरआन की आयत पढ़ी।

﴿ وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾ ﴾

"इसी प्रकार तेरे प्रभु की पकड़ है जब वह अत्याचार करने वाली बस्तियों को पकड़ता है। नि:संदेह उसकी पकड़ अत्यन्त कड़ी एवं कठोर है।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: हूद तथा सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे, बाब तहरिमिज्ज़ुलम)

[3]यहाँ इसका उत्तर लिप्त है। अर्थात क्या वह इन झूठे देवताओं के समान हो सकता है, जिनकी ये पूजा करते हैं, जो किसी को लाभ पहुँचाने अथवा न हानि पहुँचाने की शक्ति रखते हैं, न वे देखते हैं तथा न वे बुद्धि तथा समझ रखते हैं।

[4]अर्थात हमें भी बताओ कि उन्हें पहचान सकें इसलिये कि उनकी कोई वास्तविकता ही नहीं है। इसलिये आगे कहा। क्या तुम अल्लाह को वह बातें बताते हो, जो वह धरती में

فِي الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

तुम अल्लाह को वह बातें बताते हो, जो वह धरती पर जानता ही नहीं, अथवा केवल ऊपरी-ऊपरी बातें बना रहे हो,[1] बात वास्तविक यह है कि कुफ्र करने वालों के लिए उनके छल भले ही सुझाये गये हैं।[2] तथा वे सत्य मार्ग से रोक दिये गये हैं, तथा जिसे अल्लाह भटका दे उसे मार्ग दिखाने वाला कोई नहीं।[3]

जानता ही नहीं, अर्थात उनका अस्तित्व ही नहीं। इसलिये कि यदि धरती में उनका अस्तित्व होता तो अल्लाह तआला के ज्ञान में अवश्य होता, उससे कोई बात छिपी नहीं है।

[1]यहाँ ظاهر (जाहिर) कल्पना के अर्थ में है अर्थात यह केवल उनकी काल्पनिक बातें हैं। अर्थ यह है कि तुम इन मूर्तियों की पूजा इस कल्पना से करते हो कि ये लाभ-हानि पहुँचा सकती हैं तथा तुमने उनके नाम भी देवता रखे हुए हैं। यद्यपि ये नाम तुम्हारे तथा तुम्हारे पूर्वजों के रखे हुए हैं, जिनका कोई प्रमाण अल्लाह ने अवतरित नहीं किया। ये केवल कल्पना तथा मनमानी करते हैं। (*सूर: अल-नज्म*-२३)

[2]छल से तात्पर्य, उनके वे पथभ्रष्ट विश्वास का कर्म है, जिनमें शैतान ने उनको फंसा रखा है, शैतान ने पथभ्रष्टता पर भी आकर्षित आवरण चढ़ा रखा है।

[3]जिस प्रकार अन्य स्थान पर है।

﴿وَمَن يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَن تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا﴾

"जिस को अल्लाह भटकाने का विचार कर ले तो तू अल्लाह से, उसके लिये कुछ अधिकार नहीं रखता।" (*सूर: अल-मायद:*-४१)

तथा फरमाया :

﴿إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ﴾

"यदि तुम उनके मार्गदर्शन की इच्छा रखते हो तो (याद रखो) अल्लाह तआला उसे मार्गदर्शन नहीं प्रदान करता जिसे वह पथ भ्रष्ट करता है तथा उनकी कोई सहायता नहीं होगी।" (*सूर: अल-नहल*-३७)

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾

(३४) उनके लिये साँसारिक जीवन में भी दुख है ।[1] तथा आख़िरत (परलोक) की यातना तो अत्यधिक कठोर है ।[2] तथा उन्हें अल्लाह के क्रोध से बचाने वाला कोई नहीं ।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اُكُلُهَا دَاۗىِٕمٌ وَّظِلُّهَا ۭ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ڰ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

(३५) उस स्वर्ग की विशेषता जिसका वचन परहेज़गारों को दिया गया है यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं। उसके फल सदैव रहने वाले हैं तथा उसकी छाया भी। यह है प्रतिफल परहेज़गारों (जितेन्द्रियों) का,[3] तथा काफ़िरों का परिणाम नरक है।

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ

(३६) तथा जिन्हें हमने किताब प्रदान की है,[4] वे तो जो कुछ आप पर उतारा जाता है, उस

---

[1]इससे तात्पर्य हत्या तथा बन्दी बनाना है जो मुसलमानों के साथ युद्ध में उन काफ़िरों के भाग में आती है।

[2]जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी لِعَان करने वाले जोड़े से कहा था।

«إِنَّ عَذَابَ الدُّنْيَا أَهْوَنُ مِنْ عَذَابِ الآخِرَةِ».

"साँसारिक यातना परलोक की यातना से अत्यधिक सहज है।"(सहीह मुस्लिम किताबुल लेआन)

इसके अतिरिक्त साँसारिक यातना (जैसा कुछ तथा जितनी कुछ भी हो) अस्थाई तथा साम्यिक है तथा परलोक की यातना स्थाई है, उसमें कमी अथवा अन्त नहीं। इसके अतिरिक्त नरक की अग्नि साँसारिक अग्नि से उनहत्तर गुना अधिक गर्म है। तथा इसी प्रकार अन्य वस्तुऐं हैं। इसलिये यातना की तीब्रता में क्या सन्देह हो सकता है।

[3]काफ़िरों के दुष्परिणाम के उपरान्त ईमानवालों के अति उत्तम परिणाम का भी वर्णन कर दिया गया ताकि स्वर्ग की प्राप्ति के लिये अभिलाषा तथा रूचि उत्पन्न हो, इस स्थान पर इमाम इब्ने कसीर ने स्वर्ग की सुख-सुविधाओं तथा उनकी विशेष महत्ता पर आधारित हदीसों का वर्णन किया है, जिन्हें वहाँ देख लिया जाये।

[4]इससे तात्पर्य मुसलमान हैं तथा अर्थ है जो क़ुरआन के आदेशानुसार कर्म करते हैं।

مَن يُنكِرُ بَعْضَهُۥ ۚ قُلْ إِنَّمَآ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ ٱللَّهَ وَلَآ أُشْرِكَ بِهِۦٓ ۚ إِلَيْهِ أَدْعُوا۟ وَإِلَيْهِ مَـَٔابِ ﴿٣٦﴾

से प्रसन्न होते हैं[1] तथा अन्य सम्प्रदाय उस की कुछ बातों को अस्वीकार करते हैं।[2] आप घोषणा कर दीजिये कि मुझे तो केवल यही आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ तथा उसके साथ साझीदार न बनाऊँ, मैं उसी की ओर आमंत्रित कर रहा हूँ तथा उसी की ओर मेरा आकर्षित होना है।

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَـٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۚ وَلَئِنِ ٱتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُم بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ ٱلْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ ٱللَّهِ مِن وَلِىٍّ وَلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा इसी प्रकार हमने इस क़ुरआन को अरबी भाषा का आदेश उतारा है।[3] तथा यदि आप ने उनकी इच्छाओं[4] का अनुगमण किया इसके उपरान्त की आप के पास ज्ञान आ चुका है[5] तो अल्लाह (की यातनाओं) से

---

[1]अर्थात क़ुरआन की सत्यता के प्रमाण तथा साक्ष्य देखकर और प्रसन्न होते हैं।

[2]इससे तात्पर्य यहूदी, इसाई, काफ़िर तथा मूर्तिपूजक हैं। कुछ के निकट पुस्तक से तात्पर्य तौरात तथा इंजील है, इनमें से जो मुसलमान हुए, वे प्रसन्न होते हैं तथा अस्वीकार करने वाले वे यहूदी तथा इसाई हैं जो मुसलमान नहीं हुए।

[3]अर्थात जिस प्रकार से आप के पूर्व के रसूलों पर भी स्थानीय भाषा में पुस्तकें अवतरित की गयीं उसी प्रकार आप पर क़ुरआन हमने अरबी भाषा में उतारा है, इसलिए कि आपके प्रथम सम्बोधित अरबी लोग हैं, जो केवल अरबी भाषा ही जानते हैं। यदि यह क़ुरआन किसी अन्य भाषा में अवतरित होता तो यह इनकी समझ से ऊपर होता तथा मार्गदर्शन प्राप्त करने में इनके लिये बहाना हो जाता। हमनें क़ुरआन को अरबी भाषा में अवतरित करके यह बहाना भी दूर कर दिया।

[4]इससे तात्पर्य अहले किताब की कुछ आकांक्षायें हैं जिनको वह चाहते थे कि अल्लाह के अन्तिम रसूल अपनायें जैसे बैतुल मोकद्दस को स्थाई "क़िबला" बनाये रखना तथा उनके अंधविश्वासों का विरोध न करना आदि।

[5]इससे तात्पर्य वह ज्ञान है जो वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया गया है, जिसमें अहले किताब के अंधविश्वासों की वास्तविकता भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर प्रकट कर दी गयी।

आपका न पक्षधर मिलेगा तथा न रक्षा करने वाला |[1]

(३८) तथा हम आपसे पूर्व भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं तथा हमने उन सब को पत्नी तथा सन्तान वाला बनाया था |[2] किसी रसूल से नहीं हो सकता कि कोई निशानी बिना अल्लाह की आज्ञा के ले आये |[3] हर निर्धारित वचन की एक लिखित है |[4]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾

---

[1]यह वास्तव में मुसलमानों के धार्मिक ज्ञान रखने वालों को चेतावनी है कि वे संसार के अस्थाई लाभ के लिये क़ुरआन तथा हदीस के स्पष्ट आदेशों की तुलना में लोगों की भावनाओं के पीछे न लगें, यदि वह ऐसा करेंगे तो उन्हें अल्लाह की यातना से बचाने वाला कोई नहीं होगा |

[2]अर्थात आप सहित जितने भी रसूल तथा नबी आये, सभी मानव पुरूष थे, जिनका परिवार तथा वंश था तथा पत्नी एवं सन्तान थी, वे फ़रिश्ते न थे तथा न मनुष्य के रूप में कोई ज्योति से उत्पन्न सृष्टि थे | अपितु मनुष्य की श्रेणी से ही थे | क्योंकि यदि फ़रिश्ते होते तो मनुष्य के लिये उनसे निकट होना तथा लगाव रख पाना संभव नही था | जिससे उनके भेजने का मुख्य उद्देश्य ही समाप्त हो जाता तथा यदि वे फ़रिश्ते मनुष्य के रूप में होते, तो संसार में उनका न परिवार तथा वंश होता तथा न उनकी पत्नी तथा सन्तान होती | जिससे ज्ञात होता है कि सभी नबी श्रेणी के आधार पर मनुष्य ही थे, मनुष्य के रूप में फ़रिश्ते अथवा कोई ज्योति से उत्पन्न सृष्टि नहीं थे |

[3]अर्थात चमत्कार को प्रदर्शित करना रसूलों के वश में नहीं है कि जब उनसे माँग की जाये तो वह उसको प्रदर्शित कर दें | अपितु पूर्णत: अल्लाह ही के वश में है, वह अपनी इच्छा तथा ज्ञान के अनुसार निर्णय करता है कि चमत्कार की आवश्यकता है अथवा नहीं ? तथा यदि है तो किस प्रकार दिखाया जाये ?

[4]अर्थात अल्लाह तआला ने जिस बात का भी वायदा किया है, उसका एक समय निर्धारित है, उस निर्धारित समय पर वह अवश्य व्यक्त होगा, क्योंकि अल्लाह का वचन भंग नही होता | तथा कुछ विद्वान कहते हैं कि वाक्य में प्रथम अर्थ को बाद में कर दिया गया है | मूल वाक्य لِكُلِّ كتاب أجـــلٌ है | तथा अर्थ है कि प्रत्येक विषय, जिसे अल्लाह ने लिख रखा है, उसका एक निर्धारित समय है | अर्थात मामला काफ़िर की इच्छा तथा आकांक्षा पर नहीं बल्कि केवल अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है |

(३९) अल्लाह जो चाहे निरस्त कर दे तथा जो चाहे सुरक्षित रखे, सुरक्षित पुस्तक (लौहे महफ़ूज़) उसी के पास है ।[1]

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝

(४०) तथा उन से किये हुए वचनों में से कोई यदि हम आपको दिखा दें अथवा आपको

وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا

---

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि वह जिस आदेश को चाहे निरस्त कर दे तथा जिसे चाहे शेष रखे । दूसरा अर्थ यह कि उसने जो भाग्य में लिख रखा है, उसमें वह परिवर्तन करता रहता है, उसके पास सुरक्षित पुस्तक है जिसकी पुष्टि कुछ हदीसों से होती है । जैसे एक हदीस में आता है कि

"मनुष्य पापों के कारण जीविका से वंचित कर दिया जाता है, प्रार्थना से भाग्य बदल जाता है तथा संबन्धियों के साथ सद्भाव से आयु में वृद्धि होती है ।" (मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ २७७)

कुछ सहाबियों (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों) से यह प्रार्थना उदघृत है ।

«اللَّهُمَّ إِنْ كُنتَ كَتَبْتَنَا أَشْقِيَاءَ فَامْحُنَا وَاكْتُبْنَا سُعَدَاءَ، وَإِنْ كُنتَ كَتَبْتَنَا سُعَدَاءَ فَأَثْبِتْنَا، فَإِنَّكَ تَمْحُو مَا تَشَاءُ وَتُثْبِتُ وَعِنْدَكَ أُمُّ الْكِتَابِ».

आदरणीय उमर से सम्बन्धित यह कथन है कि काबा की परिक्रमा के समय रोते हुए यह दुआ पढ़ते । (इब्ने कसीर)

"ऐ अल्लाह ! यदि तूने मुझ पर दुर्भाग्य तथा पाप लिख दिया है तो उसे मिटा दे, इसलिये कि तू जो चाहे मिटा दे तथा जो चाहे शेष रखे, तेरे पास ही सुरक्षित पुस्तक है, बस तू दुर्भाग्य को सौभाग्य में तथा क्षमा में बदल दे ।"

इस भाव पर यह आलोचना हो सकती है कि हदीस में तो यह आता है ।

«جَفَّ الْقَلَمُ بما هُوَ كَائِنٌ».

"जो कुछ होने वाला है, क़लम उसे लिखकर सूख चुका है ।" (सहीह बुख़ारी संख्या ५०७६)

इसका उत्तर यह है कि उसका यह परिवर्तन भी भाग्य में लिखे हुए निर्णय के आधार पर है । (फ़तहुल क़दीर)

हम मृत्यु प्रदान कर दें, तो आप पर केवल पहुँचा देना ही है। हिसाब तो हमें लेना है।

عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾

(४१) क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं ?[1] अल्लाह आदेश करता है तथा कोई उसके आदेश को पीछे डालने वाला नहीं,[2] वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

(४२) तथा उनसे पूर्व के लोगों ने भी अपने छल-कपट में कमी न की थी परन्तु सभी व्यवस्था अल्लाह ही की हैं,[3] जो व्यक्ति कुछ कर रहा है अल्लाह के ज्ञान में है।[4] काफ़िरों को अभी ज्ञात हो जायेगा कि उस लोक (परलोक) का बदला किस के लिये है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفَّارُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

(४३) तथा यह काफ़िर कहते हैं कि आप अल्लाह के रसूल नहीं। (आप) उत्तर दीजिये कि मुझ में तथा तुम में अल्लाह गवाही देने

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي

---

[1]अर्थात अरब की धरती मूर्तिपूजकों के लिये क्षण-क्षण संकुचित हो रही है तथा इस्लाम का प्रभाव तथा उत्थान हो रहा है।

[2] अर्थात कोई भी अल्लाह के आदेशों को रद नहीं कर सकता।

[3]अर्थात मक्का के मूर्तिपूजकों से पूर्व भी लोग रसूलों के साथ छल-कपट करते रहे हैं, परन्तु अल्लाह की योजना के आगे उनका कोई छल तथा कपट सफल नहीं हो पाया, उसी प्रकार भविष्य में भी उनका कोई छल तथा कपट अल्लाह की योजनाओं के समक्ष सफल नहीं होगा।

[4]वह उसके अनुसार प्रत्युपकार तथा दण्ड देगा, अच्छे कर्म करने वालों को उसका अच्छा बदला तथा कुकर्मियों को उनके कुकर्मों का दण्ड।

وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِندَهُ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝٤٣

वाला पर्याप्त है ।[1] तथा वह जिसके पास किताब का ज्ञान है ।[2]

सूरतु इब्राहीम-१४

سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ

सूरः *इब्राहीम* मक्का में उतरी तथा इसकी बावन आयतें हैं तथा सात रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह कृपालु तथा दयालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

الٓرٰ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

(१) अलिफ़॰लाम॰रा॰ यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक हमने आपकी ओर उतारी है कि आप लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर लायें[3] उनके

---

[1]अतः वह जानता है कि मैं उसका सच्चा रसूल तथा उसके संदेश का आमन्त्रण देने वाला हूँ तथा तुम झूठे हो।

[2] किताब से तात्पर्य वास्तविक पुस्तक है तथा तात्पर्य तौरात तथा इंजील का ज्ञान है। अर्थात अहले किताब में वे लोग जो मुसलमान हो गये हैं जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, सलमान फ़ारसी तथा तमीम दारी इत्यादि अर्थात यह भी जानते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। अरब के मूर्तिपूजक विशेष समस्याओं में अहले किताब से मंत्रणा करते तथा उनसे पूछते थे, अल्लाह तआला ने उनको मार्गदर्शन प्रदान किया कि अहले किताब जानते हैं, उनसे तुम पूछ लो। कुछ विद्वान कहते हैं कि किताब से तात्पर्य कुरआन है तथा किताब का ज्ञान रखने वाले मुसलमान हैं। तथा कुछ विद्वानों ने किताब से तात्पर्य सुरक्षित पुस्तक लिया है। अर्थात जिसके पास सुरक्षित पुस्तक का ज्ञान है अर्थात अल्लाह तआला। परन्तु प्रथम भावार्थ अधिक उपयुक्त है।

[3] जिस प्रकार अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ﴾

"वही शक्ति जो अपने भक्ति पर स्पष्ट निशानियाँ अवतरित करती है ताकि वह तुम्हें अंधेरों से प्रकाश की ओर निकाल लाये।" (सूरः *अल-हदीद-९*)

بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ①

प्रभु के आदेश से,[1] शक्तिमान प्रशंसित अल्लाह के मार्ग की ओर।

اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ②

(२) जिस अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है। तथा काफ़िरों (कृतघ्नों) के लिये घोर यातना की विपत्ति है।

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ③

(३) जो आख़िरत (परलोक) की तुलना में साँसारिक जीवन का मोह करते हैं तथा अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं तथा उसमें टेढ़ापन उत्पन्न करना चाहते हैं।[2] यही लोग परले दर्जे की गुमराही (पथभ्रष्टता) में हैं।[3]

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلُّ

(४) तथा हमने प्रत्येक नबी (संदेशवाहक) को उसकी सामुदायिक (राष्ट्रीय) भाषा में ही भेजा है ताकि उनके समक्ष स्पष्टरूप से वर्णन कर

﴿اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ﴾

"अल्लाह तआला ईमानवालों का मित्र है, वह उन्हें अंधकार से निकालकर प्रकाश की ओर लाता है।" (*सूर: अल-बकर:-२५७*)

[1]अर्थात पैग़म्बर (ईशदूत) का कार्य प्रकाश का मार्ग दिखाना है, यदि कोई उसे अपना लेता है, तो यह केवल अल्लाह के आदेश तथा इच्छा से होता है क्योंकि मूल मार्गदर्शक वही है। उसकी इच्छा यदि न हो तो पैग़म्बर चाहे जितनी शिक्षा-दीक्षा दे, लोग प्रकाश का मार्ग अपनाने के लिए तैयार नहीं होते, जिसके कई उदाहरण पूर्व के नबियों में हैं तथा स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी तीब्र इच्छा के उपरान्त अपने प्रिय चाचा अबू तालिब को मुसलमान न कर सके।

[2]इसका एक अर्थ तो यह हुआ कि इस्लाम की शिक्षाओं में लोगों में बुरी धारणा उत्पन्न करने के लिये त्रुटियाँ निकालने का प्रयत्न करते हैं तथा उसे कुरूप बनाकर प्रस्तुत करते हैं। दूसरा अर्थ यह है कि अपनी आकांक्षाओं के अनुसार इसमें परिवर्तन करना चाहते हैं।

[3]इसलिये कि उनमें वर्णित विभिन्न दोष एकत्रित हो गये हैं। जैसे परलोक की अपेक्षा दुनिया को महत्व देना, अल्लाह के मार्ग से लोगों को रोकना तथा इस्लाम धर्म में त्रुटि खोजना।

اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

दे ।[1] अब अल्लाह जिसे चाहे भटका दे, तथा जिसे चाहे मार्ग दिखा दे, वह प्रभावशाली तथा विज्ञानी है ।[2]

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝

(५) (याद करो जब कि) हमने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि तू अपने समुदाय को अंधकार से प्रकाश में निकाल,[3] तथा उन्हें अल्लाह के उपकार याद दिला ।[4] इसमें निशानियाँ हैं प्रत्येक धैर्यवान के लिये ।[5]

---

[1]फिर जब अल्लाह तआला ने दुनिया वालों पर यह उपकार किया कि उनके मार्गदर्शन के लिए किताबें अवतरित कीं तथा रसूल भेजे, तो इस उपकार को इस प्रकार पूर्ण किया कि प्रत्येक रसूल को सामुदायिक (जातीय) भाषा में भेजा ताकि किसी को प्रकाश के मार्ग को समझने में कठिनाई न हो ।

[2]परन्तु इस वर्णन तथा व्याख्या के उपरान्त मार्गदर्शन उसी को प्राप्त होगा जिसको अल्लाह चाहे ।

[3]अर्थात जिस प्रकार हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमने आपको अपने समुदाय की ओर भेजा तथा किताब अवतरित की, ताकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने समुदाय को कुफ़्र तथा मूर्तिपूजा के अंधकार से निकाल कर ईमान के प्रकाश की ओर लायें, उसी प्रकार मूसा को भी हमने चमत्कार तथा तर्क प्रदान करके उनके समुदाय की ओर भेजा ताकि वह उन्हें कुफ़्र तथा अज्ञान के अंधकार से निकालकर ईमान का प्रकाश प्रदान करें । "*आयात*" से तात्पर्य चमत्कार हैं जो मूसा अलैहिस्सलाम को प्रदान किये गये थे अथवा वे नौ चमत्कार जिनका वर्णन *सूर: बनी इस्राईल* में किया गया है ।

[4] أيـام الله से तात्पर्य अल्लाह के वे उपकार हैं जो इस्राईल की संतान पर किये गये जिनका विस्तृत वर्णन पूर्व में कई बार आ चुका है । अथवा وقائع ايام घटनाओं के अर्थ में है अर्थात वे घटनायें उनको याद दिला जिनसे ये गुज़र चुके हैं, जिनमें अल्लाह तआला के विशेष उपकार हुए जिनमें से कुछ का वर्णन यहाँ पर आ रहा है ।

[5]धैर्य तथा कृतज्ञता ये दो प्रमुख गुण हैं तथा ईमान का आधार इन्ही पर है । इसलिये यहाँ पर इन दो का वर्णन किया गया है दोनों अतिश्योक्ति के रूप में हैं । صبّار अत्यधिक धैर्य रखने वाला, شكـور अत्यधिक कृतज्ञता प्रकट करने वाला । तथा धैर्य को कृतज्ञता के पहले रखा गया है । इसलिये कि شكـر (कृतज्ञता) धैर्य का ही फल है । हदीस में

(६) तथा जिस समय मूसा ने अपने समुदाय से कहा कि अल्लाह के वे उपकार याद करो जो उसने तुम पर किये हैं, जबकि उसने तुम्हें फ़िरऔन के साथियों से मुक्त किया जो तुम्हें बहुत दुख पहुँचाते थे। तुम्हारे पुत्रों की हत्या करते थे तथा तुम्हारी पुत्रियों को जीवित छोड़ते थे, इसमें तुम्हारे प्रभु की ओर से तुम पर बड़ा उपकार था।[1]

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٦﴾

(७) तथा जब तुम्हारे प्रभु ने तुम्हें सावधान कर दिया,[2] कि यदि तुम कृतज्ञता व्यक्त करोगे तो निःसंदेह मैं तुम्हें अधिक प्रदान करूँगा।[3] तथा यदि तुम कृतघ्न होगे, तो निश्चय मेरा प्रकोप कठोर है।[4]

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ ۖ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ﴿٧﴾

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मोमिन का मामला भी विचित्र है। अल्लाह तआला इसके लिये जिस बात का भी निर्णय कर ले, वह उसके पक्ष में अच्छा होता है, यदि उसे दुख पहुँचे तथा वह धैर्य रखे तो यह भी उसके पक्ष में श्रेष्ठ है तथा यदि उसे कोई प्रसन्नता प्राप्त हो, वह उस पर अल्लाह का आभारी हो तो यह भी उसके पक्ष में उत्तम है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ोहद बाब "अल-मोमिन अम्रोहु कुल्लहु ख़ैर ")

[1]अर्थात जिस प्रकार यह बहुत बड़ी परीक्षा थी, उससे मुक्ति अल्लाह का बहुत बड़ा उपकार था। इसीलिये कुछ अनुवादकों ने بلاء का अनुवाद परीक्षा तथा कुछ ने उपकार किया है।

[2] تـأذن का अर्थ أعلمكم بوعده لكم उसने अपने वायदे के साथ तुम्हें सर्तक तथा सचेत कर दिया है। तथा यह भी सम्भव है कि यह सौगन्ध के अर्थ में हो अर्थात जब तुम्हारे प्रभु ने अपनी मान-मर्यादा तथा महिमा की सौगन्ध खाकर कहा। (इब्ने कसीर)

[3]अल्लाह की कृपा पर कृतज्ञ होने पर और अधिक कृपाएं प्रदान करता है।

[4]इसका अर्थ यह हुआ कि कृतघ्नता अल्लाह को अत्यधिक अप्रिय है, जिस पर उसने कठोर (कड़ी) यातना की चेतावनी दी है। इसलिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी

(८) तथा मूसा ने कहा कि यदि तुम सब तथा धरती पर निवास करने वाले सभी लोग अल्लाह की कृतघ्नता करें, तो भी अल्लाह महान तथा प्रशंसा वाला है ।[1]

وَقَالَ مُوسَىٰٓ إِن تَكْفُرُوٓا۟ أَنتُمْ وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ ٱللَّهَ لَغَنِىٌّ حَمِيدٌ ⑧

(९) क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पूर्व के लोगों के समाचार नहीं आये ? अर्थात नूह के समुदाय का एवं आद तथा समूद का, तथा

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا۟ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ

फ़रमाया कि स्त्रियों की बहुमत अपने पतियों की कृतघ्नता के कारण नरक में जायेंगी। (मुस्लिम, किताबु सलातिल ईदैन का आरम्भ)

[1]अभिप्राय यह है कि मनुष्य अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करेगा तो उसमें उसी का लाभ है। कृतघ्नता व्यक्त करेगा तो अल्लाह की उसमें क्या हानि है ? वह तो निस्पृह है। अखिल जगत उसका कृतघ्न हो जाये तो उसका क्या बिगड़ेगा ? जिस प्रकार हदीस कुदसी में आता है अल्लाह तआला फ़रमाता है :

«يَاعِبَادِي! لَو أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنسَكُمْ وَجِنَّكُمْ، كَانُوا عَلَىٰ أَتْقَىٰ قَلْبِ رَجُلٍ مِّنكُمْ، مَازَادَ ذٰلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا، يَاعِبَادِي! لَو أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَىٰ أَفْجَرِ قَلْبِ رَجُلٍ مِّنكُمْ مَا نَقَصَ ذٰلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا، يَاعِبَادِي! لَو أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنسَكُمْ وَجِنَّكُمْ قَامُوا فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ، فَسَأَلُونِي فَأَعْطَيْتُ كُلَّ إِنسَانٍ مَسْأَلَتَهُ، مَا نَقَصَ ذٰلِكَ مِنْ مُلْكِي شيئًا، إِلَّا كَمَا يُنقِصُ الْمِخْيَطُ إِذَا أُدْخِلَ فِي الْبَحْرِ».

"हे मेरे भक्तो ! यदि तुम्हारे आदि तथा अन्त एवं उसी प्रकार सभी मनुष्य तथा जिन्न उस एक मनुष्य के दिल के भाँति हो जायें जो तुममें से अधिक अल्लाह से डरने वाला तथा परहेज़गार हो (अर्थात कोई भी अवहेलना करने वाला न हो) तो उससे मेरे राज्य में विस्तार न होगा। ऐ मेरे भक्तो ! यदि तुम्हारे आदि तथा अन्त तथा मनुष्य एवं जिन्न उस एक मनुष्य के दिल की भाँति हो जायें जो तुममें सबसे बड़ा अवज्ञाकारी तथा कुकर्मी हो तो उससे मेरे राज्य में कोई कमी नहीं होगी। हे मेरे भक्तो ! यदि तुम्हारे आदि तथा अन्त तथा मनुष्य एवं जिन्न सभी एक मैदान में एकत्रित हो जायें तथा मुझसे प्रश्न करें, तथा मैं प्रत्येक व्यक्ति को उसके प्रश्न के अनुसार प्रदान कर दूँ तो उससे मेरे कोष में तथा राज्य में इतनी ही कमी होगी जितनी सुई को समुद्र में डुबोने पर निकालने से समुद्र के जल में होती है।" فَسُبْحانه و تعالى الغني الحميد (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे बाब तहरीमिज़ ज़ुल्मे)

وَالَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا ٱللَّهُ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَرَدُّوٓا۟ أَيْدِيَهُمْ فِىٓ أَفْوَٰهِهِمْ وَقَالُوٓا۟ إِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ وَإِنَّا لَفِى شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَآ إِلَيْهِ مُرِيبٍ ⑨

उनके पश्चात वालों का जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता, उनके पास उनके रसूल चमत्कार लाये, परन्तु वे अपने हाथ अपने मुख में फेर ले गये [1] तथा स्पष्ट रूप से कह दिया कि जो कुछ तुम्हें देकर भेजा गया है, हम उसे नही मानते हैं तथा जिस चीज़ की ओर तुम हमें आमन्त्रित कर रहे हो हमें तो उसमें बहुत बड़ी शंका है (हमें विश्वास नहीं)।[2]

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِى ٱللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوٓا۟ إِنْ أَنتُمْ

(१०) उनके रसूलों ने उन से कहा कि क्या अल्लाह (जो सत्य है) उसके विषय में संदेह है, जो आकाशों तथा धरती का उत्पन्न करने वाला है, वह तो तुम्हें इसलिये बुला रहा है ताकि वह तुम्हारे सारे पाप क्षमा कर दे,[3]

---

[1]व्याख्याकारों ने इसके विभिन्न अर्थों का वर्णन किया है। १- जैसे उन्होंने अपने हाथ अपने मुँह में रख लिये तथा कहा कि हमारा तो केवल एक ही उत्तर है कि हम तुम्हारी रिसालत को अस्वीकार करते हैं। २- उन्हें अपनी उंगलियों से अपने मुख की ओर संकेत कर के कहा कि सावधान रहो तथा ये जो संदेश लेकर आये हैं उन की ओर आकर्षित न हो। ३- उन्होंने अपने हाथ मुँह पर उपहास तथा आश्चर्य से रख लिये जिस प्रकार से एक व्यक्ति हँसी दबाने के लिये ऐसा करता है। ४- उन्होंने अपने हाथ रसूलों के मुख पर रख कर कहा चुप रहो। ५- क्रोध तथा जलन के कारण अपने हाथ अपने मुख में ले लिये। जिस प्रकार पाखण्डियों के विषय में अन्य स्थान पर आता है।

﴿ عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ﴾

"वह तुम पर उंगलियाँ क्रोध तथा जलन से काटते हैं।" (*सूरः आले इमरान*-११९)

इमाम शौकानी तथा तबरी ने इसी अन्तिम अर्थ को प्राथमिकता प्रदान की है।

[2] مريب अर्थात ऐसा संदेह कि जिससे मन अत्यधिक व्याकुलता तथा दुविधा में घिर जाये।

[3]अर्थात तुम्हें अल्लाह के विषय मे संदेह है जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है। इसके अतिरिक्त वह ईमान तथा एकेश्वर की ओर आमन्त्रित भी केवल इसलिये कर रहा

إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖ تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ⑩

तथा एक निर्धारित समय तक तुम्हें अवसर प्रदान करे, उन्होंने कहा कि तुम तो हम जैसे ही मनुष्य हो,[1] तुम चाहते हो कि हमको उन देवताओं की पूजा से रोक दो जिनकी पूजा हमारे पूर्वज करते रहे ।[2] अच्छा तो कोई हमारे समक्ष स्पष्ट युक्ति प्रस्तुत करो ।[3]

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ

(११) उनके पैग़म्बरों ने उनसे कहा कि यह तो सत्य है कि हम तुम जैसे मनुष्य हैं। परन्तु अल्लाह (तआला) अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है अपनी कृपा करता है।[4] अल्लाह के आदेश के बिना हमारी शक्ति नहीं

है कि तुम्हें पाप से शुद्ध कर दे। इसके विपरीत भी तुम उस धरती व आकाश के स्रष्टा को मानने के लिये तैयार नहीं तथा उसके आमंत्रण से तुम्हें इंकार है ?

[1]ये वही संदेह है जो काफ़िरों को उत्पन्न होता रहा कि मनुष्य होकर किस प्रकार कोई अल्लाह की प्रकाशना (वह्यी) तथा नबूअत एवं रिसालत के योग्य हो सकता है।

[2]यह दूसरी रूकावट (विघ्न) है कि हम उन देवताओं की उपासना किस प्रकार छोड़ दें जिनकी उपासना हमारे पूर्वज करते आये हैं ? जबकि तुम्हारा उद्देश्य हमें उनकी उपासना से रोक कर एक ईश्वर की इबादत (वंदना) पर लगाना है।

[3]निशानियाँ तथा चमत्कार प्रत्येक नबी के साथ होते थे, इससे तात्पर्य ऐसी युक्ति अथवा चमत्कार है, जिसे देखने की उनकी इच्छा होती थी, जैसे मक्का के मूर्तिपूजकों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विभिन्न प्रकार के चमत्कारों को दिखाने की माँग की थी, जिसका वर्णन *सूर: बनी इस्राईल* में आयेगा।

[4]रसूलों ने पहले संदेहों का उत्तर दिया कि नि:संदेह हम तुम जैसे मनुष्य ही हैं। परन्तु तुम्हारा यह समझना त्रुटिपूर्ण है कि मनुष्य रसूल नहीं हो सकता। अल्लाह तआला मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिये मनुष्यों में से ही कुछ मनुष्यों को प्रकाशना (वह्यी) तथा रिसालत के लिये चुन लेता है तथा तुम सभी में से यह उपकार अल्लाह ने हम पर किया है।

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑪

कि हम कोई चमत्कार तुम्हें ला दिखायें ।[1] तथा ईमानदारों को केवल अल्लाह (तआला) पर भरोसा रखना चाहिये ।[2]

وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ۭ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰي مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ⑫

(१२) तथा अन्ततः क्या कारण है कि हम अल्लाह (तआला) पर भरोसा न रखें, जबकि उसी ने हमें हमारा मार्ग दिखाया है। तथा जो दुख तुम हमें दोगे हम उन पर अवश्य धैर्य ही रखेंगे। भरोसा करने वालों को यही योग्य है कि अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये ।[3]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۭ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ⑬

(१३) तथा काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुम्हें देश से निकाल देंगे अथवा तुम फिर से हमारे धर्म में लौट आओ, तो उनके प्रभु ने उनकी ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि हम उन अत्याचारियों का ही नाश कर देंगे ।[4]

---

[1]उनकी इच्छानुसार चमत्कार के संदर्भ में रसूलों ने उत्तर दिया कि चमत्कार दिखाना हमारे वश में नहीं यह मात्र अल्लाह के वश में है।

[2]यहाँ ईमानवालों से तात्पर्य प्रथम तो स्वयं नबी हैं अर्थात हमें पूर्ण भरोसा अल्लाह ही पर करना चाहिये। जैसाकि आगे फ़रमाया :

"आख़िर क्या कारण है कि हम अल्लाह पर भरोसा न रखें ?"

[3]कि वही काफ़िरों के षडयन्त्र तथा कुविचार से बचाने वाला है। यह अर्थ भी हो सकता है कि हमसे चमत्कारों की माँग न करो, अल्लाह पर भरोसा करो, उसकी इच्छा होगी तो चमत्कार प्रदर्शित कर देगा, अपितु नहीं।

[4]जैसे अन्य कई स्थानों पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِىْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

(१४) तथा उसके पश्चात हम स्वयं तुम्हें धरती पर बसायेंगे |[1] यह है उनके लिये जो मेरे समक्ष खड़े होने से भय रखें तथा मेरी चेतावनी से भयभीत रहें |[2]

﴿ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۞ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ۞ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴾

"तथा पूर्व ही हो चुका हमारा आदेश अपने भक्तों के पक्ष में जो रसूल है, नि:संदेह वे विजयी तथा सफल होंगे तथा हमारी सेना भी प्रभावशाली होगी |" (सूर: *अस्साफ़्फ़ात*-१७१ से १७३ तक)

﴿ كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ﴾

"अल्लाह ने यह बात लिख दी है कि मैं तथा मेरे रसूल ही प्रभावशाली होंगे |" (सूर: *अल-मुजादिल:*-२१)

[1]यह विषय भी अल्लाह ने कई स्थान पर वर्णित किया है | जैसे,

﴿ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴾

"हमने लिख दिया ज़बूर में शिक्षाओं के पश्चात कि अन्तत:धरती के उत्तराधिकारी मेरे सत्कर्मी भक्त होंगे |" (सूर: *अल-अंबिया*-१०५)

अन्य जानकारी के लिये देखिये सूर: *अल-आराफ़*-१२८ तथा १३७ | अत: इसके अनुसार अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बड़े दुखी हृदय से मक्के से निकलना पड़ा तथा कुछ ही वर्षों के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्के में विजेता के रूप में प्रवेश किया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्के से निकलने पर बाध्य करने वाले अत्याचारी सिर झुकाये खड़े आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नयनों के संकेत की प्रतीक्षा में थे | परन्तु आपने महान चरित्र का प्रदर्शन करते हुए لا تثريب عليكم اليوم कहकर सबको क्षमा कर दिया |

[2] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ۞ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴾

"जो अपने प्रभु के समक्ष खड़ा होने से डर गया तथा अपने मन को इच्छाओं से रोके रखा | नि:संदेह स्वर्ग ही उसका ठिकाना है |" (सूर: *अल-नाज़िआत*-४०,४१)

(१५) तथा उन्होंने निर्णय माँगा,[1] तथा सभी उद्दण्ड अड़ियल लोग असफल हो गये।

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿١٥﴾

(१६) उसके समक्ष नरक है जहाँ उन्हें पीव का पानी पिलाया जायेगा।[2]

مِّن وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ صَدِيدٍ ﴿١٦﴾

(१७) जिसे कष्ट से घूँट-घूँट पियेगा। फिर भी उसे गले से उतार न सकेगा तथा उसे प्रत्येक स्थान से मृत्यु आती दिखायी देगी परन्तु

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ

﴿ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴾

"जो अपने प्रभु के समक्ष खड़े होने से डर गया, उसके लिए दो स्वर्ग हैं।" (*सूर: अर-रहमान-४६*)

[1]इसके कर्ता अत्याचारी काफ़िर भी हो सकते हैं कि उन्होंने अन्ततः अल्लाह से निर्णय की माँग की। अर्थात यदि यह रसूल सच्चे हैं तो हे अल्लाह अपने निर्णय के अनुसार हमें नष्ट कर दे, जैसे मक्का के मूर्तिपूजकों ने कहा।

﴿ اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِندِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴾

"ऐ अल्लाह यदि यह क़ुरआन आपकी ओर से अवश्य है तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा अथवा हम पर कोई कष्टदायक प्रकोप उतार दे।" (*सूर: अंफ़ाल-३२*)

अथवा जिस प्रकार बद्र के युद्ध के अवसर पर मक्का के मूर्तिपूजकों ने यह इच्छा व्यक्त की थी जिसका वर्णन अल्लाह ने *सूर: अंफ़ाल* -१९ में किया है। अथवा क्रिया के कर्ता रसूल हों जिन्होंने अल्लाह से विजय तथा सफलता के लिये दुआऐं कीं, जिन्हें अल्लाह ने स्वीकार की।

[2] صديد पीव अथवा वह रक्त है जो नरक में जाने वालों के माँस तथा खालों से बहा होगा। कुछ हदीसों में इसे «عُصَارَةُ أهلِ النَّارِ» (मुसनद अहमद भाग ५, पृष्ठ १७१) (नरक वासियों के शरीर से निचोड़ा हुआ) तथा कुछ हदीसों में है कि यह इतना गर्म तथा उबलता हुआ होगा कि उनके मुख के निकट पहुँचते ही उनके चेहरे की खाल झुलस कर गिर पड़ेगी तथा एक घूंट पीते ही पेट की आँतें गुहय द्वार से निकल पड़ेंगी। أعاذنا الله منه

بِمَيِّتٍ ۖ وَمِنْ وَرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾

वह मरने वाला नहीं।[1] फिर उसके पीछे कड़ी यातना है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ۖ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾

(१८) उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अपने पालनहार से कुफ्र किया उनके कर्म उस राख के समतुल्य हैं, जिस पर तीव्र वायु आँधी वाले दिन चले।[2] जो भी उन्होंने किया उसमें से किसी वस्तु पर समर्थ न होंगे, यही दूर का भटकाव है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾

(१९) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने आकाशों को तथा धरती को सर्वश्रेष्ठ प्रबन्ध से पैदा किया है। यदि वह चाहे तो तुम सबका विनाश कर दे तथा नई सृष्टि ले आये।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा अल्लाह पर यह कार्य कुछ भी कठिन नहीं।[3]

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ

(२१) तथा सब के सब अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे।[4] उस समय कमज़ोर लोग घमन्ड

---

[1] अर्थात नाना प्रकार तथा विभिन्न प्रकार की यातनाओं का स्वाद चख कर वे मृत्यु की कामना करेंगे। परन्तु मृत्यु वहाँ कहाँ ? वहाँ तो उसी प्रकार स्थाई रूप से यातना होगी।

[2] क़ियामत (प्रलय) के दिन काफ़िरों के कर्मों का भी यही परिणाम होगा कि उसका कोई सुफल तथा पुण्य उन्हें नहीं मिलेगा।

[3] अर्थात यदि तुम अवज्ञा तथा अवहेलना करने से न रूके तो अल्लाह तआला इसका सामर्थ्य रखता है कि वह तुम्हें ध्वस्त करके, तुम्हारे स्थान पर नई सृष्टि उत्पन्न कर दे। यही विषय अल्लाह ने *सूरः फ़ातिर* -१५ से १७ तक, *सूरः मोहम्मद*-३८, *सूरः अल-मायदः*-५४ तथा *सूरः निसा*-१३३ में भी वर्णन किया है।

[4] अर्थात सभी महशर के मैदान (निर्णय वाले दिन जहाँ सभी एकत्रित होंगे) में अल्लाह के समक्ष होंगे, कोई कहीं छिप नही सकेगा।

تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِن شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدَانَا اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ ۖ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجَزِعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِن مَّحِيصٍ ﴿٢١﴾

वालों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे अधीनस्थ थे, तो क्या तुम अल्लाह की यातनाओं से कुछ यातनायें हम से दूर कर सकने वाले हो, वे उत्तर देंगे कि यदि अल्लाह हमें मार्गदर्शन देता तो हम भी तुम्हें मार्गदर्शन देते, अब तो हम पर व्यग्रता तथा धैर्य रखना दोनों समान है, हमारे लिये कोई छुटकारा नहीं ।[1]

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدتُّكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ

(२२) जब कार्य का निर्णय कर दिया जायेगा तो शैतान कहेगा[2] कि अल्लाह ने तो तुम्हें सत्य वचन दिया था तथा मैंने तुम को जो वचन दिया उसका उल्लंघन किया,[3] मेरा

---

[1]कुछ विद्वान कहते हैं कि नरकवासी आपस में कहेंगे कि स्वर्गवालों को स्वर्ग इसलिये मिला कि वे अल्लाह के समक्ष रोते तथा गिड़गिड़ाते थे, आओ हम भी अल्लाह के समक्ष वेदना से रोयें-धोयें, अतएवं वे रोयेंगे तथा अत्यधिक विलाप करेंगे। परन्तु उसका कोई लाभ न होगा, फिर कहेंगे कि स्वर्ग वालों को स्वर्ग उनके धैर्य तथा संयम के कारण मिला, चलो हम भी धैर्य धारण करें, फिर वे धैर्य का भरपूर प्रदर्शन करेंगे, परन्तु उसका भी कोई लाभ न होगा तब उस समय कहेंगे कि हम धैर्य रखें अथवा वेदना के साथ रोयें गिड़गिड़ायें, अब छुटकारे का कोई अवसर नहीं है। यह उनकी आपसी बातचीत नरक के अन्दर होगी। क़ुरआन करीम में इसको अन्य भी कई स्थान पर वर्णन किया गया है जैसे सूरः *मोमिन*-४७ तथा ४८, सूरः *आराफ़*-३८ तथा ३९, सूरः *अल-अहज़ाब* ६६ से ६८ तक, इसके अतिरिक्त वे आपस में झगड़ेंगे तथा एक-दूसरे पर भटकाने का आक्षेप लगायेंगे। इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं कि झगड़ा महशर के मैदान में होगा। इसका अधिक विस्तृत वर्णन अल्लाह तआला ने सूरः *सबा*- ३१ से ३३ तक में किया है।

[2]अर्थात ईमान वाले स्वर्ग में तथा काफ़िर एवं मूर्तिपूजक नरक में चले जायेंगे, तो शैतान नरक वासियों से कहेगा।

[3]अल्लाह ने जो वचन अपने पैग़म्बरों के द्वारा दिया था कि मोक्ष मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाने में है, वे सत्य थे, उनकी तुलना में मेरे वचन तो पूर्ण छल तथा कपट थे। जिस प्रकार अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴾

لِيَ عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا أَن دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۖ فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوا أَنفُسَكُم ۖ مَّا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنتُم بِمُصْرِخِيَّ ۖ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِن قَبْلُ ۗ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

कोई दबाव तुम पर तो था ही नहीं [1] हाँ,मैंने तुम्हें पुकारा तथा तुमने मेरी मान ली,[2] अब तुम मुझ पर अभियोग न लगाओ, बल्कि स्वयं अपने आप को धिक्कारो,[3] न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता, तथा न तुम मेरी गुहार को पहुँचने वाले,[4] मैं तो (प्रारम्भ से) मानता ही नहीं कि तुम मुझे इससे पूर्व अल्लाह का साझीदार समझते रहे ।[5] निःसंदेह अत्याचारियों के लिये दुखदायी यातनायें हैं ।[6]

"शैतान उनसे वायदे करता तथा आशायें दिलाता है परन्तु शैतान के ये वायदे मात्र छल हैं ।" (*सूरः अल-निसा-१२०*)

[1]दूसरा यह कि मेरी बातों में कोई सत्यता तथा युक्ति नहीं होती थी, न मेरा कोई दबाव तुम पर था।

[2]हाँ मात्र आमन्त्रण तथा संदेश था, तुमने मेरी तर्कहीन बातों को तो स्वीकार कर लिया तथा पैग़म्बरों के तर्क तथा प्रमाण संगत बातों का खण्डन कर अस्वीकार कर दिया।

[3]इसलिये सब दोष तुम्हारा स्वयं का है, तुमने बुद्धि तथा विवेक से काम न लिया, स्पष्ट निशानियों को तुमने अपेक्षा कर दी, तथा खोखले दावों के पीछे लगे रहे, जिसके पीछे कोई प्रमाण नहीं था।

[4]अर्थात न मैं तुम्हें उस यातना से निकलवा सकता हूँ, जिसमें तुम घिरे हुए हो तथा न तुम मुझे उस क्रोध तथा आक्रोश से बचा सकते हो, जो अल्लाह की ओर से मुझ पर है।

[5]मुझे यह बात भी अस्वीकार है कि मैं अल्लाह का साझीदार हूँ, यदि तुम मुझे अथवा किसी अन्य को अल्लाह का साझीदार बनाते रहे तो यह तुम्हारी अपनी त्रुटि तथा अज्ञानता थी, जिस अल्लाह ने सारी सृष्टि की उत्पत्ति की थी तथा उसको नियोजित भी वही करता रहा, भला उसका साझीदार कौन हो सकता था ?

[6]कुछ विद्वान कहते हैं कि यह वाक्य भी शैतान का है तथा यह उसके भाषण का परिशिष्ट है। कुछ विद्वान कहते हैं कि शैतान का भाषण مِن قبل पर समाप्त हो गया। यह अल्लाह तआला का कथन है।

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ
تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा जो लोग ईमान लाये और पुण्य के कार्य किये वे उन स्वर्गों में प्रवेश किये जायेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे, अपने प्रभु के आदेश से,[1] जहाँ उनका स्वागत सलाम ही सलाम से होगा ।[2]

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا
كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ
أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا
فِي السَّمَاءِ ﴿٢٤﴾

(२४) क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) ने पवित्र बात का उदाहरण एक पवित्र वृक्ष जैसा वर्णन किया जिसकी जड़ मज़बूत है तथा जिसकी शाखायें आकाश में हैं ।

تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۗ
وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) जो अपने प्रभु के आदेश से प्रत्येक समय अपने फल लाता है ।[3] तथा अल्लाह (तआला) लोगों के समक्ष उदाहरणों का वर्णन करता है ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें ।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ
خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِن فَوْقِ

(२६) तथा दूषित बात की तुलना गन्दे वृक्ष जैसी है, जो धरती के कुछ ही ऊपर से

---

[1]यह कुकर्मियों तथा काफ़िरों की तुलना में सत्यकर्मियों तथा ईमान वालों का वर्णन है । इनका वर्णन उनके साथ इसलिये किया गया है कि ताकि लोगों के अन्दर ईमान के कार्य अपनाने की रूचि तथा लोभ उत्पन्न हो ।

[2]अर्थात आपस में उनका उपहार एक-दूसरे को सलाम करना होगा । इसके अतिरिक्त फ़रिश्ते भी प्रत्येक द्वार से प्रवेश करके उन्हें सलाम करेंगे ।

[3]इसका अभिप्राय यह है कि ईमानवालों का उदाहरण उस वृक्ष जैसा है, जो गर्मी तथा सर्दी प्रत्येक ऋतु में फल देता है । इसी प्रकार ईमानवालों के पुण्य के कार्य रात्रि-दिन के प्रत्येक क्षण में आकाश की ओर ले जाये जाते हैं, "***पवित्र वाक्य***" से इस्लाम अथवा لا إلــه إلا الله तथा पवित्र वृक्ष से खजूर का वृक्ष तात्पर्य है जैसाकि हदीस से सिद्ध है । (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म बाबुल फ़हम फ़िलइल्म तथा सहीह मुस्लिम किताबु सिफ़तिल कियाम: बाब मिस्लुल मोमिन मिस्लुल नख़्ल:)

الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝٢٦

उखाड़ लिया गया। उसे कुछ स्थिरता तो है नहीं।[1]

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۚ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۝٢٧

(२७) ईमानवालों को अल्लाह (तआला) पक्की बात के साथ स्थिर रखता है, साँसारिक जीवन में भी तथा परलोक में भी।[2] हाँ अन्यायी व्यक्तियों को अल्लाह (तआला) भटका देता है, तथा अल्लाह जो चाहे कर डाले।

---

[1]"बुरे वाक्य" से तात्पर्य कुफ्र तथा 'बुरे वृक्ष' से इन्द्रायन का वृक्ष तात्पर्य है जिसकी जड़ धरती के ऊपर ही होती है तथा तनिक संकेत से उखड़ जाती है अर्थात काफ़िर के कर्म का कोई मूल्य नहीं है। न वे आकाश पर जाते हैं तथा न अल्लाह के दरबार में स्वीकार होते हैं।

[2]इसकी व्याख्या हदीस में इस प्रकार आती है कि मृत्यु के पश्चात कब्र में जब मुसलमान से प्रश्न किया जाता है, तो वह उत्तर में इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं तथा मोहम्मद (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) अल्लाह के रसूल हैं। बस यही अर्थ है अल्लाह के इस कथन يُثَبِّتُ الله الذين آمنوا का (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: इब्राहीम तथा सहीह मुस्लिम किताबुल जन्न: व सिफ़ाते नआीमेहा वाब अरद मक़अदिल मय्यते अलैहि व इस्बातु अज़ाबुल क़ब्रे) एक अन्य हदीस में है कि "जब मुसलमान को क़ब्र (समाधि) में रख दिया जाता है तथा उसके साथी चले जाते हैं तथा वह उनके जूतों की आहट सुनता है, उसके पश्चात उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं। तथा उसे उठाकर पूछते हैं कि उस व्यक्ति के विषय में तेरा क्या विचार है, यदि वह ईमानवाला होता है, तो उत्तर देता है कि वह अल्लाह के भक्त तथा उसके रसूल हैं। फ़रिश्ते उसे नरक का स्थान दिखाते हैं तथा कहते हैं कि अल्लाह ने इसके स्थान पर तेरे लिए स्वर्ग में स्थान बना दिया है। इस प्रकार वह दोनों ठिकाने देखता है तथा उसकी क़ब्र सत्तर हाथ विस्तृत कर दी जाती है तथा उसकी क़ब्र को क़ियामत तक के लिये ईश्वरीय पुरस्कार से भर दिया जाता है। (सहीह मुस्लिम उपरोक्त वर्णित अध्याय (बाब)। एक हदीस में है, उससे पूछा जाता है «مَنْ رَبُّكَ ؟ مَا دِينُكَ ؟ مَنْ نَبِيُّكَ ؟» तेरा प्रभु कौन है ? तेरा धर्म क्या है ? तेरा नबी कौन है ? तो अल्लाह तआला उसे सीधा मार्ग प्रदान करता है तथा वह उत्तर देता है ربيَّ الله (मेरा प्रभु अल्लाह है) و ديني الإسلام (मेरा धर्म इस्लाम है), و نَبِيِّ مُحمدٌ (तथा मेरे नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं) (तफ़सीर इब्ने कसीर)

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ بَدَّلُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ كُفۡرًا وَّاَحَلُّوۡا قَوۡمَهُمۡ دَارَ الۡبَوَارِ ﴿٢٨﴾

(२८) क्या आपने उनकी ओर दृष्टि नहीं डाली, जिन्होंने अल्लाह के उपकार के बदले कृतघ्नता व्यक्त की तथा अपने समुदाय को विनाश के घर में ला उतारा ।[1]

جَهَنَّمَ ۚ يَصۡلَوۡنَهَا ؕ وَبِئۡسَ الۡقَرَارُ ﴿٢٩﴾

(२९) अर्थात नरक में जिसमें यह सब जायेंगे, जो बुरा ठिकाना है ।

وَجَعَلُوۡا لِلّٰهِ اَنۡدَادًا لِّيُضِلُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ؕ قُلۡ تَمَتَّعُوۡا فَاِنَّ مَصِيۡرَكُمۡ اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा उन्होंने अल्लाह के समान बना लिये कि लोगों को अल्लाह के मार्ग से भटकायें । (आप) कह दीजिये कि ठीक है आनन्द उड़ा लो तुम्हारा स्थान तो अन्त में नरक ही है ।[2]

قُلۡ لِّعِبَادِىَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا يُقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِىَ

(३१) मेरे ईमान वाले भक्तों से कह दीजिये कि नमाज़ को स्थापित रखें तथा जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है, उसमें से कुछ छिपाकर तथा खुल करके ख़र्च करते रहें, इससे पूर्व की वह

---

[1]इसकी व्याख्या सहीह बुख़ारी में है कि इससे तात्पर्य मक्का के काफ़िर हैं (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: इब्राहीम*) जिन्होंने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का विरोध करके बद्र के युद्ध में मुसलमानों से लड़ा कर अपने लोगों की हत्या करवा डाली थी । परन्तु अपने भावार्थ के आधार पर यह सामान्य है तथा अर्थ यह होगा कि परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने समस्त संसार के लिये दया तथा लोगों के लिये ईश्वरीय पुरस्कार बनाकर भेजा, तो जिसने उस वरदान का सम्मान किया, उसे स्वीकार किया, उस ने कृतज्ञता निभाया तथा वह स्वर्ग में जाने वाला (स्वर्गीय) हो गया तथा जिसने उस पुरस्कार का अपमान किया खण्डन किया तथा विरोध किया, वह नरकीय हो गया ।

[2]यह धमकी तथा चेतावनी है कि दुनिया में तुम जो चाहो कर लो, परन्तु कब तक ? अन्ततः तुम्हारा ठिकाना नरक है ।

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَٰلٌ ﴿٣١﴾

दिन आ जाये जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा न मित्रता एवं प्रेम ।[1]

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِۦ مِنَ الثَّمَرَٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِۦ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَٰرَ ﴿٣٢﴾

(३२) अल्लाह वह है जिसने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है तथा आकाशों से वर्षा करके उसके द्वारा तुम्हारी जीविका के लिये फल निकाले हैं तथा नावों को तुम्हारे वश में कर दिया है कि नदियों में उसके आदेश से चलें फिरें। उसी ने नदियाँ तथा नहरें तुम्हारे वश में कर दी हैं ।[2]

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۖ

(३३) उसी ने तुम्हारे लिये सूर्य तथा चन्द्रमा को अधीन कर दिया है कि बराबर ही चल

---

[1]नमाज़ स्थापित करने का अर्थ है कि उसे अपने समय पर तथा नियमानुसार एवं ध्यान तथा विनम्र होकर अदा किया जाये जिस प्रकार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की "*सुन्नत*" है । "*इंफाक*" का अभिप्राय है ज़कात अदा करना, निकट सम्बन्धियों के साथ दया भाव प्रकट किया जाये तथा अन्य निर्धनों पर उपकार किया जाये। यह नहीं कि अपनी आवश्यकताओं तथा अपने ऊपर खूब व्यय किया जाये तथा अल्लाह के बतलाये हुए स्थानों पर व्यय करने से बचा जाये। क़ियामत का दिन ऐसा होगा जहाँ न ख़रीद-बेच सम्भव होगा न कोई मित्रता ही किसी के काम आयेगी।

[2]अल्लाह तआला ने जीवधारियों पर जो उपकार किये, उनमें से कुछ का वर्णन किया जा रहा है। फ़रमाया आकाश को छत तथा धरती को बिस्तर बनाया। तथा आकाश से वर्षा करके विभिन्न प्रकार के वृक्ष तथा फसलें उगायीं जिनमें स्वाद तथा बल के लिये फल भी हैं तथा नाना प्रकार के अन्न भी, जिनके रंग-रूप एक-दूसरे से भिन्न हैं तथा स्वाद एवं सुगंन्ध तथा लाभ भी भिन्न हैं। नाव तथा जहाज़ को सेवा के लिये लगा दिया कि वे तीव्र धाराओं को चीरकर उनमें चलते हैं। मनुष्यों को भी एक देश से दूसरे देश पहुँचाते हैं तथा व्यापार की सामग्री भी एक स्थान से दूसरी जगह स्थानान्तरित करते हैं। धरती तथा पर्वतों से स्रोत तथा नदियाँ निकालीं ताकि तुम भी पी सको तथा अपने खेतों की सिंचाई करो।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾

रहे हैं ।[1] तथा रात-दिन को भी तुम्हारे कार्य में लगा रखा है ।[2]

وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۗ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۗ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा उसी ने तुम्हें तुम्हारी मुँह माँगी सभी वस्तुओं में से दे रखा है ।[3] यदि तुम अल्लाह के उपकार, अनुग्रह गिनना चाहो तो उन्हें पूरा गिन भी नहीं सकते,[4] निःसंदेह मनुष्य बड़ा अन्यायी तथा कृतघ्न है ।[5]

---

[1]अर्थात निरन्तर चलते रहते हैं, कभी रात को भी नहीं ठहरते तथा न दिन को । इसके अतिरिक्त एक-दूसरे के पीछे चलते हैं, परन्तु कभी भी उनमें आपसी टकराव तथा टक्कर नहीं होती ।

[2]रात-दिन उनका आपसी अन्तर जारी रहता है । कभी रात-दिन का कुछ भाग लेकर लम्बी हो जाती है तथा कभी दिन-रात का कुछ भाग लेकर लम्बा हो जाता है । तथा यह क्रम जगत के आदि से चल रहा है, इसमें बाल बराबर अन्तर नहीं आया ।

[3]अर्थात उसने तुम्हारी आवश्यकता की सभी वस्तुएं उपलब्ध करायीं, जो तुम उससे माँगते हो । तथा कुछ विद्वान कहते हैं कि जिसे तुम माँगते हो उसे भी वह देता है तथा जिसे नहीं माँगते, परन्तु उसे ज्ञात है कि तुम्हें उसकी आवश्यकता है, वह भी देता है । अर्थात तुम्हारी जीविका की सभी सुविधायें उपलब्ध कराता है ।

[4]अर्थात अल्लाह के उपकार अंगणित हैं, उन्हें कोई गिन नहीं सकता । फिर कैसे हो सकता है कि कोई उन उपकारों के प्रति कृतज्ञता कर सके । एक हदीस में आदरणीय दाऊद अलैहिस्सलाम का कथन वर्णन किया गया है । उन्होंने कहा, "हे पालनहार ! मैं तेरी कृतज्ञता किस प्रकार अदा करूँ ? जबकि कृतज्ञता करना स्वयं तेरी ओर से उपकार है ।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

> "ऐ दाऊद ! अब तूने मेरी कृतज्ञता अदा कर दी जब तूने यह स्वीकार कर लिया कि हे अल्लाह ! मैं तेरे उपकार की कृतज्ञता अदा करने से भी असमर्थ हूँ ।" (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[5]अल्लाह के उपकारों पर अनुगृहीत होनें में आलस्य के कारण मनुष्य अपने स्वयं के साथ अत्याचार तथा अन्याय करता है । विशेष रूप से काफ़िर जो पूर्णरूप से ही अल्लाह से विमुख हैं ।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

(३५) (इब्राहीम की यह प्रार्थना भी याद करो) जब इब्राहीम ने कहा हे मेरे प्रभु ! इस नगर को शान्ति वाला बना दे ।[1] तथा मुझे एवं मेरी सन्तान को मूर्तिपूजा से सुरक्षित रख ।

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾

(३६) हे मेरे प्रभु ! उन्होंने बहुत से लोगों को मार्ग से भटका दिया है ।[2] अब मेरा अनुयायी मेरा है तथा जो अवज्ञा करे तो तू बहुत ही क्षमा तथा दया करने वाला है ।

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

(३७) हे मेरे प्रभु ! मैंने अपनी कुछ सन्तान[3] इस बंजर वन में तेरे पवित्र घर के निकट बसायी है । हे मेरे प्रभु ! यह इसलिये कि वे

---

[1]"इस नगर" से तात्पर्य मक्का है । अन्य दुआओं (प्रार्थनाओं) से पूर्व यह दुआ की कि इसे शान्ति मय बना दे इसलिये कि शान्ति होगी तो लोग अन्य उपकारों से भी सही रूप से लाभान्वित हो सकेंगे । वरन् शान्ति के बिना सभी सुख-सुविधाओं के उपरान्त भय, आतंक की छाया मनुष्य को व्यग्र एवं व्याकुल रखती है । जैसे कि आजकल के सामान्य समाज की दशा है अतिरिक्त सऊदी अरब के । वहाँ इस दुआ के प्रभाव से तथा इस्लामी नियमों के लागू होने के कारण, आज भी शान्ति का एक उदाहरण विद्यमान है ।

यहाँ अल्लाह के पुरस्कारों के अन्तर्गत इसे वर्णन करके संकेत कर दिया कि कुरैश जहाँ अल्लाह के अन्य पुरस्कार से अपेक्षित हैं इस विशेष अनुकम्पा से भी अनजान हैं, कि उसने उन्हें मक्का जैसे शान्ति वाले नगर का वासी बनाया ।

[2]भटकाने का सम्बन्ध उन पत्थर की मूर्तियों से सम्बन्धित किया जिनको मूर्तिपूजक पूजते थे, इसके उपरान्त कि वे निबोध हैं, क्योंकि वे भटकावे का कारण थीं तथा हैं ।

[3] مِنْ ذُرِّيَّتِيْ में مِنْ 'कुछ' के लिये है अर्थात कुछ सन्तानें । कहते हैं कि आदरणीय इब्राहीम के आठ पुत्र विभिन्न पत्नियों से थे, जिनमें से केवल आदरणीय इस्माईल को यहाँ बसाया । (फ़तहुल क़दीर)

فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُم مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾

नमाज़ स्थापित करें[1] अत: तू कुछ लोगों[2] के दिलों को उनकी ओर आकर्षित कर दे।[3] तथा उन्हें फलों की जीविका प्रदान कर ताकि ये कृतज्ञता व्यक्त करें।

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِن شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٣٨﴾

(३८) हे हमारे प्रभु ! तू भली-भाँति जानता है जो हम छिपायें तथा जो व्यक्त करें। धरती तथा आकाश की कोई वस्तु अल्लाह से छिपी नहीं।[4]

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾

(३९) अल्लाह की प्रशंसा है, जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल तथा इसहाक़ प्रदान किये, नि:संदेह मेरा प्रभु (अल्लाह) प्रार्थनाओं को सुनने वाला है।

---

[1]इबादतों (आराधनाओं) में से केवल नमाज़ की चर्चा किया, जिससे नमाज़ का महत्व स्पष्ट होता है।

[2]यहाँ भी مِنْ 'कुछ' के लिये है। कि कुछ लोग, तात्पर्य इससे मुसलमान हैं। अत: देख लीजिये कि किस प्रकार दुनियाँ भर के मुसलमान मक्का में एकत्रित होते हैं तथा हज के सिवाय पूरे वर्ष भर यह क्रम निरन्तर बना रहता है। यदि आदरणीय इब्राहीम أفئدة الناس (लोगों के दिलों) कहते तो इसाई, यहूदी, अग्निपूजक तथा अन्य सभी लोग मक्का पहुँचते। مِن الناس के مِن ने इस दुआ को मुसलमानों तक सीमित कर दिया। (इब्ने कसीर)

[3]इस दुआ का प्रभाव भी देख लिया जाये कि मक्का जैसी निर्जल धरती पर जहाँ कोई फलदार वृक्ष नहीं, संसार भर के फल अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं तथा हज के अवसर पर भी जब कि लाखों अधिक लोग वहाँ पहुँच जाते हैं फल के प्राचुर्य में कोई कमीं नहीं आती।

कहा जाता है कि यह दुआ खाना-ए-काअ़बा के निर्माण के पश्चात माँगी, जबकि प्रथम दुआ (शान्ति मय बना दे) उस समय माँगी जब अपनी पत्नी तथा नवजात शिशु इस्माईल को अल्लाह तआला के आदेश पर वहाँ छोड़कर चले गये। (इब्ने कसीर)

[4]तात्पर्य यह है कि मेरी दुआ का उद्देश्य तू भली-भाँति जानता है, इस नगर वालों के लिये दुआ से मूल उद्देश्य तेरी प्रसन्नता है तू तो प्रत्येक वस्तु की वास्तविकता को भली-भाँति जानता है। आकाश तथा धरती की कोई वस्तु तुझसे छिपी नहीं।

(४०) हे मेरे प्रभु ! मुझे नमाज़ का पाबन्द रख तथा मेरी सन्तान को भी,[1] हे मेरे प्रभु ! मेरी प्रार्थना स्वीकार कर |

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَوٰةِ وَمِن ذُرِّيَّتِي ۚ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٤٠﴾

(४१) हे हमारे प्रभु ! मुझे क्षमा प्रदान कर तथा मेरे माता-पिता को भी क्षमा कर दे |[2] तथा अन्य ईमानवालों को भी क्षमा कर, जिस दिन हिसाब होने लगे |

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

(४२) अन्यायियों के कर्मों से अल्लाह को अनजान न समझ, वह तो उन्हें उस दिन तक अवसर दिये हुए है, जिस दिन आँखें फटी रह जायेंगी |[3]

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿٤٢﴾

---

[1]अपने साथ अपनी संतान के लिये भी दुआ माँगी | जैसे इससे पूर्व भी अपने साथ अपनी सन्तान के लिए भी यह दुआ माँगी कि उन्हें पत्थर की मूर्तियों को पूजने से बचा कर रखना | जिससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह के धर्म की ओर निमंत्रण देने वालों को अपने घर वालों के मार्गदर्शन तथा उनकी धर्मिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण की ओर से कभी निश्चिन्त नहीं होना चाहिए | जैसाकि अल्लाह तआला ने अपने अन्तिम पैग़म्बर (ईशदूत) परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी आदेश दिया |

﴿وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ﴾

"अपने समीपवर्ती सम्बन्धियों को डराइये" (*सूर: अल-शो'अरा:२१४*)

[2]आदरणीय इब्राहीम नें यह दुआ उस समय की जब कि अभी उन पर अपने पिता का अल्लाह का शत्रु होना विदित नहीं हुआ था, जब यह स्पष्ट हो गया कि मेरा पिता अल्लाह का शत्रु है तो उससे अपने को अलग कर लिया | इसलिये कि मूर्तिपूजक के लिये मोक्ष तथा क्षमा की दुआ करना उचित नहीं, चाहे वह कितना घनिष्ठ अथवा निकटवर्ती ही क्यों न हो ?

[3]अर्थात क़ियामत की भयानकता के कारण | यदि संसार में अल्लाह ने किसी को अधिक अवसर प्रदान कर दिया तथा उनके मरने तक उसकी पकड़ नहीं की तो क़ियामत के दिन अल्लाह के हिसाब-किताब से वह न बच सकेगा, जो काफ़िरों के लिये इतना भयानक होगा कि आँखें फटी की फटी रह जायेंगी |

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَ اَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿۴۳﴾

(४३) वे अपने सिर उठाये दौड़ भाग कर रहे होंगे[1] स्वयं अपनी ओर भी उनकी दृष्टि न लौटेगी तथा उनके दिल उड़े तथा गिरे हुए (शून्य) होंगे ।[2]

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۙ﴿۴۴﴾

(४४) तथा लोगों को उस दिन से सर्तक कर दे जब कि उनके निकट प्रकोप आ जायेगा तथा अत्याचारी कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! हमें बहुत थोड़े निकट के समय तक का ही अवसर प्रदान कर दे कि हम तेरा निमन्त्रण मान लें तथा तेरे पैग़म्बरों के अनुसरण में लग जायें । क्या तुम उससे पूर्व भी सौगन्ध नहीं खा रहे थे कि तुम्हारे लिये दुनिया से टलना ही नहीं ।[3]

وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾

(४५) तथा क्या तुम उन लोगों के घरों में रहते-सहते न थे जिन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किया तथा क्या तुम पर वह मामला खुला नहीं कि हमनें उनके साथ कैसा

---

[1] مُهْطِعِيْنَ तेज़ी से दौड़ रहे होंगे अन्य स्थान पर फरमाया :

﴿ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ﴾

"बुलाने वाले की ओर दौड़ेगे ।" (*सूरः अल-क़मर-८*)

مقنعي رءوسهم "आश्चर्य से उनके सिर उठे हुए होंगे ।"

[2]जो भयानकता वे देखेंगे तथा जो चिन्ता तथा भय अपने विषय में उन्हें होगा, उनके कारण उनकी आँखें एक क्षण के लिये भी नहीं झुकेंगी तथा भय की अधिकता के कारण उनके दिल गिरे हुए तथा शून्य होंगे ।

[3]अर्थात संसार में तुम सौगन्ध खाकर कहा करते थे कि कोई हिसाब-किताब तथा स्वर्ग-नरक नहीं तथा पुन: किसको जीवित होना है ।

कुछ किया ? हमने तो तुम्हारे समझाने को बहुत से उदाहरणों का वर्णन कर दिया ।[1]

(४६) तथा यह अपने चाल चल रहे हैं तथा अल्लाह को उन की सभी चालों का ज्ञान है ।[2] उनकी चालें ऐसी न थीं कि उनसे पर्वत अपने स्थान से टल जायें ।[3]

وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۭ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝

(४७) आप यह कदापि विचार न करें कि अल्लाह अपने नबियों से वचन के विरूद्ध

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝

---

[1]अर्थात शिक्षा ग्रहण करने के लिये हमने तो उन विगत समुदायों की घटनाओं का वर्णन कर दिये है, जिनके घरों में अब तुम निवास करते हो तथा उनके खण्डहर भी तुम्हें विचार तथा चिन्तन का आमन्त्रण दे रहे हैं । यदि तुम उनसे शिक्षा ग्रहण न करो तथा उनके परिणाम से बचने का प्रयत्न न करो, तो तुम्हारी इच्छा । फिर तुम भी उसी परिणाम के लिये तैयार रहो ।

[2]यह वाक्य अवस्था का वाचक है कि हमने उनके साथ जो किया वह किया जबकि उन्होंने अनृत को सिद्ध तथा सत्य के खण्डन के लिये विभिन्न प्रकार के बहाने तथा छल किये तथा अल्लाह को उन सभी चालों का ज्ञान है अर्थात उसके पास लिखा है जिसका वह उनको बदला देगा ।

[3]क्योंकि यदि पर्वत विचलित हुए होते तो अपने स्थान पर न होते, जबकि सभी पर्वत मालायें अपने स्थान पर हैं । यह इंकार के लिये है । दूसरा अर्थ إن مخففة من المثقلة के लिये गये हैं अर्थात नि:संदेह उनके छल तो इतने बड़े थे कि पर्वत भी अपने स्थान से विचलित हो जाते । यह तो अल्लाह तआला ही है जिसने उनके छलों को सफल नहीं होने दिया (जैसाकि मूर्तिपूजकों के मूर्तिपूजन के विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۝ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴾

"निकट है कि आकाश फट पड़े धरती में दरार पड़ जाये तथा पर्वत कण-कण हो जाये इस बात पर कि उन्होंने कहा अल्लाह दयालु की सन्तान है ।" (सूर: *मरियम*-९० तथा ९१)

करेगा ।[1] अल्लाह अत्यन्त प्रभावशाली तथा बदला लेने वाला है ।[2]

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝٤٨

(४८) जिस दिन धरती इस धरती के अतिरिक्त अन्य ही बदल दी जायेगी तथा आकाशों को भी, [3]तथा सभी के सभी एक अल्लाह प्रभावशील के सम्मुख होंगे ।

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْأَصْفَادِ ۝٤٩

(४९) तथा आप उस दिन पापियों को देखेंगे कि जंजीरों में मिले-जुले एक स्थान पर जकड़े होंगे ।

---

[1]अर्थात अल्लाह ने अपने रसूलों से संसार तथा परलोक में सहायता करने की जो प्रतिज्ञा की है वह नि:सदेह सत्य है, उससे वचन का विरोध संभव नहीं ।

[2]अर्थात अपने मित्रों के लिये अपने शत्रुओं से बदला लेने वाला है ।

[3]इमाम शौकानी का मत है कि आयत में दोनों सम्भावनायें हैं कि यह परिवर्तन विशेषताओं के आधार से हो अथवा अस्तित्व के आधार पर । अर्थात इस आकाश तथा धरती के गुण बदल जायेंगे अथवा वैसे ही अस्तित्व बदल जायेगा, न यह धरती रहेगी, न यह आकाश । धरती भी कोई अन्य होगी तथा आकाश भी कोई अन्य । हदीस में आता हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ أَرْضٍ بَيْضَاءَ عَفْرَاءَ، كَقُرْصَةِ النَّقِيِّ لَيْسَ فِيهَا عَلَمٌ لأَحَدٍ».

"क़ियामत के दिन लोग सफेद भूरी धरती पर एकत्रित होंगे, जो मैदा की रोटी की भाँति होगी । उसमें किसी का कोई झंड़ा (अथवा प्रतीक के रूप में चिन्ह) नहीं होगा ।" (सहीह मुस्लिम सिफ़तुल कियाम: बावुन फ़िल बअ्से वन्नोशूर)

आदरणीया आयशा ने पूछा कि जब यह आकाश धरती वदल दिये जायेंगे, तो फिर लोग उस दिन कहाँ होंगे ? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : सिरात पर अर्थात "*पुल सिरात*" पर । "लोग उस दिन पुल सिरात के निकट अंधेरे में होंगे ।" (सहीह मुस्लिम कितावुल हैज़ बाब बयान सिफ़ते मनीयिर्रजुले)

(५०) उनके वस्त्र गन्धक के होंगे[1] तथा अग्नि उनके मुख पर आच्छादित होगी ।

سَرَابِيلُهُم مِّن قَطِرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾

(५१) यह इसलिये कि अल्लाह (तआला) प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये हुए कर्मों का बदला दे । नि:संदेह अल्लाह (तआला) को हिसाब लेते देर नहीं लगेगी ।

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

(५२) यह क़ुरआन [2] सभी लोगों के लिए सूचना पत्र है कि इसके द्वारा वे सर्तक कर दिये जायें तथा पूर्णरूप से ज्ञात कर लें कि अल्लाह एक ही इबादत योग्य है तथा ताकि बुद्धिमान लोग सोच समझ लें ।

هَٰذَا بَلَاغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنذَرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

सूरतुल हिज्र-१५

سُورَةُ الْحِجْرِ

सूर: अल-हिज्र मक्का में उतरी तथा इसकी निन्नानवे आयतें हैं तथा छ: रूकूअ हैं ।

अल्लाह तआला अत्यन्त कृपालु तथा दयालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) अलिफ़॰लाम॰रा॰, यह (अल्लाह की) किताब की आयतें हैं तथा खुले एवं प्रकाशमान क़ुरआन की ।[3]

الر ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُّبِينٍ ﴿١﴾

---

[1]जो आग से तुरन्त भड़क उठती है । इसके अतिरिक्त आग ने उनके मुख को भी ढांक रखा होगा ।

[2]यह संकेत क़ुरआन की ओर है अथवा पिछले वृतान्त की ओर जो "ولا تحسبن الله غافلا" से वर्णन किया गया है ।

[3]किताब तथा क़ुरआन मोबीन से तात्पर्य क़ुरआन करीम ही है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित हुआ ।

(२) वह भी समय होगा जब काफ़िर अपने मुसलमान होने की कामना करेंगे ।[1]	رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٢﴾
(३) आप उन्हें खाता, लाभ उठाता तथा (झूठी) आशाओं में लीन होता छोड़ दें, वह स्वयं अभी जान लेंगे ।[2]	ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾
(४) तथा किसी बस्ती को हमने ध्वस्त नहीं किया, परन्तु यह कि उसके लिए निर्धारित लेख था ।	وَمَا أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤﴾
(५) कोई गुट अपनी मृत्यु से न आगे बढ़ता है, न पीछे रहता है ।[3]	مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٥﴾
(६) तथा उन्होंने कहा कि हे वह व्यक्ति ! जिसके ऊपर क़ुरआन उतारा गया है, निःसंदेह तू तो कोई दीवाना है ।	وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ﴿٦﴾

---

[1]यह कामना कब करेंगे ? मृत्यु के समय, जब फ़रिश्ते उन्हें नरक की आग दिखाते हैं अथवा जब नरक में चले जायेंगे अथवा उस समय जब पापी ईमानवालों को कुछ समय नरक में रखकर उसके पश्चात उन्हें वहाँ से निकाला जायेगा अथवा महशर के मैदान में, जहाँ हिसाब-किताब हो रहा होगा तथा काफ़िर देखेंगे कि मुसलमान स्वर्ग में जा रहे हैं, तो कामना करेंगे कि यदि वे भी मुसलमान होते । رُبَّمَا का अर्थ वास्तव में तो अधिकता है परन्तु कभी-कमी के लिये भी प्रयोग होता है । कुछ विद्वान कहते हैं कि उनकी यह कामना प्रत्येक अवसर पर होती रहेगी, परन्तु उसका उन्हें कोई लाभ न होगा ।

[2]यह धमकी तथा फटकार है कि ये काफ़िर (अधर्मी) तथा मूर्तिपूजक (बहुदेववादी) अपने कुफ़्र तथा मूर्तिपूजन से न रूकें तो उन्हें छोड़ दीजिये, यह सांसारिक सुखों का भोग कर लें तथा अपनी आशाओं की पूर्ति कर लें । निकट भविष्य में उन्हें अपने कुफ़्र तथा मूर्तिपूजन का परिणाम ज्ञात हो जायेगा ।

[3]जिस बस्ती को भी अवज्ञा के कारण ध्वस्त करते हैं, तो शीघ्र ही नहीं करते, बल्कि हमने एक समय निर्धारित कर रखा है, उस समय तक उस बस्ती वालों को अवसर प्रदान किया जाता है, परन्तु जब वह निर्धारित समय आ जाता है, तो उन्हें नष्ट कर दिया जाता है फिर वह उससे आगे अथवा पीछे नहीं होते ।

لَوْمَا تَأْتِينَا بِالْمَلَٰٓئِكَةِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ⑦

(७) यदि तू सच्चा ही है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नही लाता ?[1]

مَا نُنَزِّلُ الْمَلَٰٓئِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوٓا إِذًا مُّنظَرِينَ ⑧

(८) हम फ़रिश्तों को सत्य के साथ ही उतारते हैं तथा उस समय वे अवसर दिये गये नहीं होते ।[2]

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ⑨

(९) नि:संदेह हमने ही इस क़ुरआन को उतारा है तथा हम ही इसके रक्षक हैं ।[3]

---

[1]यह काफ़िरों के कुफ्र तथा वैर का वर्णन है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दीवाना कहते तथा कहते कि यदि तू (हे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सच्चा है तो अपने अल्लाह से कह कि वह फ़रिश्ते हमारे पास भेजे ताकि वे तेरी रिसालत की पुष्टि करें अथवा हमें नष्ट कर दें ।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते हम सत्य के साथ ही भेजते हैं अर्थात जब हमारी नीति तथा इच्छा यातना भेजने की होती है, तो फिर फ़रिश्ते धरती पर उतरते हैं । तथा फिर वे अवसर नहीं दिये जाते तुरन्त नाश कर दिये जाते हैं ।

[3]अर्थात उसको युग के हस्तक्षेप से तथा परिवर्तन एवं बदलने से सुरक्षित रखना हमारा काम है । अत: क़ुरआन आज तक उसी प्रकार सुरक्षित है, जिस प्रकार अवतरित हुआ था, भटके हुए गुट अपने-अपने विचारों के आधार पर इसके अर्थ में तो परिवर्तन करते रहे हैं तथा आज भी करते हैं, परन्तु पूर्व की आकाशीय पुस्तकों की भाँति शाब्दिक परिवर्तन अथवा कमी एवं अधिकता से सुरक्षित है । इसके अतिरिक्त प्रत्येक समय में सत्यवादियों के एक गुट ने इस अर्थ परिवर्तन का विरोध किया है, तथा उन अर्थ में परिवर्तन करने वालों के मुख से पर्दा हटाकर असली मुख समाज के समक्ष प्रस्तुत करता रहा है तथा आज भी वह इस मैंदान में सक्रिय है । इसके अतिरिक्त क़ुरआन के लिये ذِكْر(शिक्षा) का शब्द प्रयोग किया गया है, जिससे ज्ञात होता है कि क़ुरआन संसार वालों के लिए ذِكْر (सर्तक करने तथा शिक्षाप्रद होने) के पक्ष को, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के प्रकाशमयी चित्रों तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनों को भी सुरक्षित करके, क़ियामत तक के लिए शेष रखा गया है । अत: क़ुरआन करीम तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के द्वारा लोगों को इस्लाम का आमंत्रण देने का मार्ग सदैव के लिए खुला हुआ है । यह सम्मान तथा सुरक्षा का स्थान पूर्व की आकाशीय पुस्तकों तथा रसूलों को प्राप्त नहीं हुआ ।

(१०) तथा हमने आप से पूर्व के समुदायों में भी अपने रसूल (निरन्तर) भेजे।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٠

(११) तथा (लेकिन) जो भी रसूल (संदेशवाहक) आता, उस का वे उपहास उड़ाते ।[1]

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١١

(१२) पापियों के दिलों में हम इसी प्रकार यही रचा दिया करते हैं ।[2]

كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٢

(१३) वे इस पर ईमान नहीं लाते तथा नि:संदेह विगत लोगों का आचरण (व्यतीत) हुआ है ।[3]

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣

(१४) तथा यदि हम उन पर आकाश का द्वार खोल भी दें तथा ये वहाँ चढ़ने लग जायें।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝١٤

(१५) जब भी वे यही कहेंगे कि हमें दृष्टिबंध कर दिया गया है, बल्कि हम लोगों पर जादू करदिया गया है ।[4]

لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝١٥

---

[1]यह जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि केवल आप ही को झुठलाया नहीं गया, प्रत्येक रसूल के साथ उसके समुदाय ने यही व्यवहार किया है।

[2]अर्थात यह कुफ्र तथा रसूलों का उपहास हम अपराधियों के दिलों में डाल देते हैं अथवा बसा देते हैं, यह सम्बन्ध अल्लाह तआला ने अपनी ओर इसलिए किया कि प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा अल्लाह तआला ही है। यद्यपि उनका यह कर्म उनके निरन्तर व्यवहार के परिणाम स्वरूप अल्लाह की इच्छा से उत्पन्न हुआ हो।

[3]अर्थात उनके नष्ट करने का वही साधन है, जो अल्लाह ने पूर्व से ही निर्धारित कर रखा है कि झुठलाने तथा उपहास उड़ाने के पश्चात समुदायों को नष्ट करता रहा है।

[4]अर्थात उनका कुफ्र तथा वैर उस सीमा तक बढ़ा हुआ है कि फ़रिश्तों का अवतरित होना तो एक ओर, यदि स्वयं उनके लिए आकाश के द्वार खोल दिये जायें तथा ये उन द्वारों से आकाश पर आयें-जायें तब भी उनको अपनी आँखों पर विश्वास नहीं आयेगा तथा रसूलों को नहीं मानेंगे, बल्कि यह कहेंगे कि हमारी नज़रबन्दी कर दी गयी है अथवा हम पर

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ

(१६) तथा नि:संदेह हमने आकाश में ग्रहों बनाये हैं,[1] तथा देखने वालों के लिए इसे शोभामान किया है।

وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ

(१७) तथा उसे प्रत्येक धिक्कारे शैतान से सुरक्षित रखा है।[2]

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ

(१८) हाँ, जो चोरी छुपे सुनने का प्रयत्न करे

जादू कर दिया गया है, जिसके कारण हम ऐसा आभास कर रहे हैं कि हम आकाश पर आ जा रहे हैं। जबकि ऐसा नहीं है।

[1] بُـروج बहुवचन है بُرج का, जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अथवा प्रकाशित होने के हैं। इसी से تـبرج है जो स्त्री के श्रृंगार प्रदर्शन के अर्थ में प्रयोग होता है। यहाँ आकाश के तारों-ग्रहों को بروج कहा गया है क्योंकि वह भी उच्च तथा प्रत्यक्ष होते हैं। कुछ विद्वान यह कहते हैं कि بروج से तात्पर्य सूर्य तथा चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहों की वे कलायें हैं, जो उनके लिए निर्धारित है तथा ये १२ हैं, कुम्भ, मेष, कर्क, मकर, मिथुन, सिंह, तुला, मंगल, शनि, वृश्चिक, वृष तथा कन्या। अरब के लोग इन ग्रहों की कलाओं तथा उनके द्वारा ऋतु की स्थिति ज्ञात करते थे। इसमें कोई आपत्ति नहीं। (लेकिन) उनके द्वारा अनहोनी, होने वाली घटनाओं के ज्ञान का दावा करना, जैसेकि आजकल भी अशिक्षितों में इसका विशेष प्रचलन है। तथा लोगों के भाग्य को उनके द्वारा देखा तथा समझा जाता है, यद्यपि इनका सम्बन्ध संसार में होने वाली घटनाओं से नहीं होता, जो कुछ भी होता है, वह अल्लाह के आदेश से होता है। अल्लाह तआला ने उन ग्रहों का वर्णन अपने सामर्थ्य तथा अनुपम कारीगरी के रूप में किया है। इसके अतिरिक्त यह भी स्पष्ट किया है कि ये आकाश कि शोभा भी हैं।

[2] مرجوم ، رجيم के अर्थ में है पत्थर मारना। शैतान को रजीम इसलिए कहा गया है कि यह जब भी आकाश की ओर जाने का प्रयत्न करता है, तो आकाश से 'शहाब साक़िब' (उल्का) उस पर टूट कर गिर पड़ते हैं। फिर रजीम धिक्कारे तथा बुरे के अर्थ में भी प्रयोग होता है, क्योंकि जिसे पत्थरों से मारा जाता है, उसे प्रत्येक ओर से धिक्कारा तथा बुरा भी कहा जाता है। यहाँ अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है कि हमने आकाशों की सुरक्षा की है प्रत्येक शैतान रजीम से, अर्थात इन सितारों के द्वारा क्योंकि ये शैतान को मारते हैं तथा उसे भागने पर विवश कर देते हैं।

شِهَابٌ مُّبِينٌ ⑱ उसके पीछे प्रज्वलित (खुला) शोला लगता है ।[1]

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَٰهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَٰسِيَ وَأَنۢبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ⑲ (१९). तथा धरती को हमने फैला दिया है तथा उस पर पर्वत डाल रखे हैं । तथा उसमें हम ने प्रत्येक चीज़ निश्चित मात्रा में उगा दी है ।[2]

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَٰيِشَ وَمَن لَّسْتُمْ لَهُۥ بِرَٰزِقِينَ ⑳ (२०) तथा उसी में हमने तुम्हारी जीविकायें बना दी हैं,[3] तथा जिन्हें तुम जीविका देने वाले नहीं हो ।[4]

وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا عِندَنَا (२१) तथा जितनी भी वस्तुयें हैं, सबका कोष

---

[1]इसका अर्थ यह है कि शैतान आकाशों पर बातें सुनने के लिए जाते हैं, जिन पर 'शहाब साक़िब' (उल्का) टूट कर गिरते हैं, जिनसे कुछ तो जल जाते हैं तथा कुछ बच जाते हैं तथा कुछ सुन आते हैं । हदीस में इसकी व्याख्या इस प्रकार आयी है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं : "जब अल्लाह तआला आकाश पर कोई निर्णय करता है, तो फ़रिश्ते उसे सुनकर अपने पंख अथवा बाँह फड़फड़ाते हैं (भक्ति तथा विवशता को प्रदर्शित करने के लिए) जैसेकि वह किसी चट्टान पर जंजीर की आवाज़ (ध्वनि) है । फिर जब फ़रिश्तों के दिलों से अल्लाह का भय दूर होता है, तो वे एक-दूसरे से पूछते हैं, तुम्हारे प्रभु ने क्या कहा ? वे कहते हैं, उसने जो कहा सत्य कहा तथा वह उच्च एवं महान है । (उसके पश्चात अल्लाह का वह निर्णय ऊपर से नीचे तक एक के पश्चात दूसरे को सुनाया जाता है) इस अवसर पर शैतान चोरी-छिपे बातें सुन लेते हैं । तथा यह चोरी-छिपे सुनने वाले शैतान थोड़ी-थोड़ी दूरी पर एक-दूसरे के ऊपर होते हैं तथा वह एक आध बात सुनकर अपने मित्र ज्योतिषी तथा तान्त्रिकों के कान में फूंक देते हैं, वह उसके साथ सौ झूठ मिला कर लोगों से बताते हैं । (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-हिज्र)

[2] موزونٌ का अर्थ ज्ञात अथवा अनुमान से अर्थात आवश्यकतानुसार ।

[3] معايش बहुवचन है معيشة का । अर्थात धरती में तुम्हारे जीवन निर्वाह तथा जीविका के लिए अनगिनत वस्तुयें तथा साधन पैदा कर दिये ।

[4]इससे तात्पर्य नौकर-चाकर, दास तथा पशु हैं । अर्थात पशुओं को तुम्हारे अधीन कर दिया जिन पर तुम यात्रा करते हो, सामान भी लाद कर ले जाते हो तथा उनका बध करके खा भी जाते हो । दास-दासियाँ हैं जिनसे तुम सेवा का कार्य लेते हो । ये यद्यपि तुम्हारे अधीन हैं । तथा उनके खाने का प्रबन्ध भी तुम करते हो, परन्तु वास्तव में उनकी जीविका पैदा करने वाला अल्लाह तआला है, तुम नहीं हो । तुम यह न समझना की तुम उनकी जीविका देने वाले हो, यदि तुम उनको भोजन न दोगे तो वह भूख से मर जायेंगे ।

خَزَآئِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢١﴾

हमारे पास है,[1] तथा हम प्रत्येक चीज को उसके निर्धारित मात्रा में उतारते हैं।

وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा हम बोझल हवायें[2] भेजते हैं, फिर आकाश से वर्षा करके तुम्हें पिलाते हैं, और तुम उसका भण्डार करने वाले नहीं हो।[3]

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा हम ही जिलाते तथा मारते हैं तथा (अन्ततः) हम ही उत्तराधिकारी हैं।

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा तुममें से आगे बढ़ने वाले तथा पीछे हटने वाले भी हमारे ज्ञान में हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा आपका प्रभु सब लोगों को एकत्रित करेगा, निःसंदेह वह बड़ा विज्ञानी बड़े ज्ञान वाला है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा वस्तुतः हमने मनुष्य को खनखनाती (सूखी) मिट्टी से, जो कि सड़े हुए गारे की थी,

---

[1]कुछ विद्वानों ने خزائن से तात्पर्य वर्षा लिया है क्योंकि वर्षा ही पैदावार का साधन है, परन्तु अधिक उचित बात यह है कि इससे तात्पर्य सभी सम्भावित कोष हैं, जिन्हें अल्लाह तआला अपनी इच्छानुसार तथा योजना के आधार पर नास्तित्व से स्तित्व में लाता रहता है।

[2]वायु को बोझल इसलिए कहा गया है कि यह उन बादलों को उठाती हैं जिनमें पानी होता है। जिस प्रकार لقحة गर्भवती ऊँटनी को कहा जाता है, जो गर्भ में बच्चा उठाये होती है।

[3]अर्थात यह पानी जो हम उतारते हैं, उसे तुम एकत्रित करके रखने का सामर्थ्य नहीं रखते। यह हमारी शक्ति तथा कृपा है कि हम उस पानी को स्रोतों, कुओं तथा नदियों के द्वारा सुरक्षित रखते हैं। वरन हम चाहें तो पानी का तल इतना नीचा कर दें कि स्रोतों तथा कुँओं से पानी लेना तुम्हारे लिए असम्भव हो जाये। जिस प्रकार कई बार अल्लाह तआला कुछ स्थानों पर अपनी शक्ति का नमूना प्रदर्शित करता है।

पैदा किया है ।[1]

(२७) तथा उससे पूर्व जिन्नात को हमने लौ (ज्वाला) वाली अग्नि[2] से पैदा किया।

وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾

(२८) तथा जब तेरे प्रभु ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं एक मनुष्य को काली सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा करने वाला हूँ।

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾

(२९) तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूँ तथा उसमें अपनी आत्मा फूँक दूँ तो तुम सब उसके लिए मस्तक झुका देना।[3]

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٢٩﴾

(३०) अतः सभी फ़रिश्तों ने सबके सब ने माथा टेक दिया।

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾

---

[1]मिट्टी की विभिन्न अवस्थाओं के विभिन्न नाम हैं। सूखी मिट्टी تراب भीगी हुई, طين गूँधी हुई दुर्गन्धित, حمإ مسنون यह ﴿حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ﴾ सूखकर खनखन बोलने लगे तो صلصال तथा जब उसे अग्नि में पका लिया जाये तो فخار (ठीकरी) कहलाती है। यहाँ अल्लाह तआला ने मनुष्य की उत्पत्ति का जिस प्रकार वर्णन किया है इससे ज्ञात होता है कि आदम मिट्टी का पुतला حمإ مسنون (गूँधी हुई सड़ी हुई बदबूदार) मिट्टी से बनाया गया, जब वह सूखकर खनखन करने लगा (अर्थात صلصال) हो गया तो उसमें आत्मा फूँकी गयी, इसी صلصال को क़ुरआन में अन्य स्थान पर كالفخار (فخار के समान) कहा गया है।

﴿خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ﴾ [الرحمن: ١٤]

"पैदा किया मनुष्य को खनखनाती मिट्टी से जैसे ठीकरा।" (सूरः *अर्रहमान*-१४)

[2] جنّ को جن इसलिए कहा जाता है कि वह आँखों से दिखाई नहीं देते। *सूरः रहमान* में जिन्नात की उत्पत्ति مارج مّن نار से बताई गयी है तथा सहीह मुस्लिम की एक हदीस में यही कहा गया है "خُلقت الملائكة من نور و خلق الجانّ من نار و خلق آدم مما وصف لكم" (किताबुज़ ज़ोहद बाब फी अहादीसि मुतफ़र्रिक़:) इस आधार पर लौ वाली अग्नि अथवा अग्नि के शोले का एक ही अर्थ होगा।

[3]दण्डवत (सजदा) का यह आदेश सम्मान स्वरूप था, इबादत के रूप में नहीं तथा चूँकि यह अल्लाह का आदेश था इसलिए इसके मान्य होने में कोई संदेह नहीं। परन्तु अब इस्लामी धार्मिक नियम में किसी को सम्मान स्वरूप भी दण्डवत करना उचित नहीं।

إِلَّآ إِبۡلِيسَ أَبَىٰٓ أَن يَكُونَ مَعَ ٱلسَّٰجِدِينَ ٣١

(३१) परन्तु इबलीस, कि उसने सजदा करने वालों में सम्मिलित होने से इंकार कर दिया।

قَالَ يَٰٓإِبۡلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ ٱلسَّٰجِدِينَ ٣٢

(३२) (अल्लाह तआला ने) कहा, हे इबलीस ! तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करने वालों में सम्मिलित न हुआ ?

قَالَ لَمۡ أَكُن لِّأَسۡجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقۡتَهُۥ مِن صَلۡصَٰلٖ مِّنۡ حَمَإٖ مَّسۡنُونٖ ٣٣

(३३) वह बोला कि मैं ऐसा नहीं कि इस मनुष्य को सजदा करूँ जिसे तूने काली तथा सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा किया है।[1]

قَالَ فَٱخۡرُجۡ مِنۡهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٞ ٣٤

(३४) कहा कि अब तू स्वर्ग से निकल जा क्योंकि तू धिक्कारा हुआ है।

وَإِنَّ عَلَيۡكَ ٱللَّعۡنَةَ إِلَىٰ يَوۡمِ ٱلدِّينِ ٣٥

(३५) तथा तुझ पर मेरी धिक्कार है क़ियामत के दिन तक।

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرۡنِيٓ إِلَىٰ يَوۡمِ يُبۡعَثُونَ ٣٦

(३६) कहने लगा हे मेरे प्रभु ! मुझे उस दिन तक अवसर प्रदान कर कि लोग पुन: उठा खड़े किये जायें।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ ٱلۡمُنظَرِينَ ٣٧

(३७) कहा कि (ठीक है) तू उनमें से है, जिन्हें अवसर दिया गया है।

إِلَىٰ يَوۡمِ ٱلۡوَقۡتِ ٱلۡمَعۡلُومِ ٣٨

(३८) निर्धारित दिन के समय तक का।

قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغۡوَيۡتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ

(३९) (शैतान ने) कहा कि हे मेरे प्रभु ! तूने मुझे भटकाया है, मुझे भी सौगन्ध है कि मैं भी

---

[1]शैतान ने अस्वीकार करने का कारण आदरणीय आदम का मिट्टी तथा मनुष्य होना बताया। जिसका अर्थ यह हुआ कि मनुष्य को उसके मनुष्य होने के कारण हीन समझना यह शैतान का (दर्शन) विचार है, जो सत्यवादियों का विश्वास नहीं हो सकता। इसलिए सत्यवादी नबियों के मनुष्य होने को अस्वीकार नहीं करते, इसलिए कि उनके मनुष्य होने को क़ुरआन करीम ने स्वयं अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में वर्णित किया है, इसके अतिरिक्त उनके मनुष्य होने से उनके मान तथा सम्मान में कोई अंतर नहीं पड़ता।

धरती में उनके लिए मोह उत्पन्न करूँगा तथा उन सबको भटकाऊँगा ।	لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾
(४०) अतिरिक्त तेरे उन भक्तों के जो चयन कर लिये गये हैं ।	إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾
(४१) कहा कि हाँ यही मुझ तक पहुँचने का सीधा मार्ग है ।[1]	قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾
(४२) मेरे भक्तों पर तेरा कोई प्रभाव नहीं,[2] परन्तु हाँ जो भटके हुए लोग तेरा अनुकरण करें ।	إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾
(४३) तथा निःसंदेह उन सबके वचन का स्थान नरक है ।[3]	وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾
(४४) जिसके सात द्वार हैं । प्रत्येक द्वार के लिए उनका एक भाग बँटा हुआ है ।[4]	لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

---

[1]अर्थात तुम सबको अन्ततः मेरे पास ही लौट कर आना है, जिसने मेरा तथा मेरे रसूलों का अनुसरण किया होगा, उसे अच्छा बदला दूँगा तथा जो शैतान का अनुकरण करता रहा होगा उसे कड़ा दण्ड दूँगा, जो नरक के रूप में तैयार है ।

[2]अर्थात मेरे सदाचारी भक्तों पर तेरा कोई दाँव नहीं चलेगा । इसका यह अर्थ नहीं कि उनसे कोई पाप नहीं होगा, अपितु इसका अर्थ यह है कि उनसे ऐसा पाप न होगा जिसके पश्चात वे लज्जित तथा क्षमा न माँगें क्योंकि वही पाप मनुष्यों के विनाश का कारण है कि जिसके पश्चात मनुष्य में लज्जा तथा अल्लाह से क्षमा माँगने की भावना जागृत न हो । ऐसे पाप के पश्चात ही मनुष्य पाप पर पाप किये चला जाता है, तथा अन्त में स्थाई विनाश तथा बर्बादी उसका दुर्भाग्य बन जाता है । तथा ईमानवालों का गुण यह है कि पाप की पुनरावृत्ति नहीं करते, अपतु तुरन्त क्षमा माँगकर भविष्य में उससे वचने का प्रयत्न करते हैं ।

[3]अर्थात जितने भी तेरे अनुयायी होंगे सब नरक के ईंधन बनेंगे ।

[4]अर्थात प्रत्येक द्वार विशेष प्रकार के लोगों के लिए निर्धारित होंगे । जैसे एक द्वार मूर्तिपूजकों के लिए, एक नास्तिकों के लिए, एक काफ़िरों के लिए, एक व्यभिचारियों, ब्याज खाने वालों, चोरों तथा डाकूओं के लिए आदि । अथवा सात द्वारों से तात्पर्य सात तह

(४५) निःसंदेह परहेज़गार लोग बागों तथा स्रोतों में होंगे ।[1]

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾

(४६) (उनसे कहा जायेगा) सुरक्षा एवं शान्ति के साथ उसमें प्रवेश कर जाओ ।[2]

ادْخُلُوهَا بِسَلَٰمٍ ءَامِنِينَ ﴿٤٦﴾

(४७) तथा उनके दिलों में जो कुछ भी आक्रोश तथा कटुता थी हम सब कुछ निकाल देंगे ।[3] वे भाई-भाई बने हुए एक-दूसरे के सम्मुख सिंहासन पर बैठे होंगे ।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَٰنًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَٰبِلِينَ ﴿٤٧﴾

(४८) न तो वहाँ उन्हें कोई दुख स्पर्श कर सकता है तथा न वह वहाँ से कभी निकाले जायेंगे ।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

तथा कक्ष हैं । पहला तह अथवा कक्ष नरक है, दूसरा अग्नि, फिर तीव्र अग्नि, फिर भभकती आग, फिर नरक की आग का निचला भाग, फिर तन्दूर की तरह भून देने वाली आग, फिर पाताल की आग । सबसे ऊपर वाले भाग में वे एकेश्वरवादी लोग होंगे जिनसे छोटे-छोटे पाप हुए होंगे तथा जिन्हें कुछ समय दण्ड देने के उपरान्त निकाल दिया जायेगा अथवा सिफ़ारिश पर निकाल दिया जायेगा । दूसरे में यहूदी, तीसरे में इसाई, चौथे में नास्तिक, पाँचवें में अंधविश्वासी (अग्निपूजक), छठें में मूर्तिपूजक तथा सातवें में पाखण्डी होंगे । सबसे ऊपर वाले कक्ष का नाम नरक है, उसके पश्चात इसी क्रम से नाम हैं । (फ़तहुल क़दीर)

[1]नरक तथा नरकवासियों के पश्चात स्वर्ग तथा स्वर्ग में जाने वालों का वर्णन है ताकि स्वर्ग में जाने की रुचि हो, अल्लाह से डरने वालों से तात्पर्य मूर्तिपूजा से बचने वाले एकेश्वरवादी हैं तथा कुछ विद्वानों के निकट वह ईमानवाले हैं जो सभी बुराईयों से बचते हैं । جنات से तात्पर्य बाग़ तथा عيون से तात्पर्य नदियाँ हैं । ये बाग़ तथा नदियाँ सभी अल्लाह से डरने वालों के लिए संयुक्त रूप से होंगी अथवा प्रत्येक के लिए अलग-अलग बाग़ तथा नदियाँ होंगी अथवा एक-एक बाग़ तथा नदी होगी ।

[2]सुरक्षा प्रत्येक प्रकार की विपत्ति से तथा शान्ति प्रत्येक प्रकार के भय से । अथवा यह अर्थ है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को अथवा फ़रिश्ते स्वर्ग वालों के लिए सुरक्षित रहने की दुआ देंगे अथवा अल्लाह की ओर से उनके लिए शान्ति तथा सुरक्षा की घोषणा होगी ।

[3]संसार में उनके मध्य जो भी ईर्ष्या, द्वेष तथा कटुता के भाव होंगे, वे उनके हृदय से निकाल दिये जायेंगे तथा एक-दूसरे के विषय में उनके दिल दर्पण की भाँति साफ़ होंगे ।

نَبِّئْ عِبَادِيٓ أَنِّيٓ أَنَا ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

(४९) मेरे भक्तों को सूचित कर दो कि मैं बहुत क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त कृपालु हूँ।

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ ٱلْعَذَابُ ٱلْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा साथ ही मेरी यातनायें भी अत्यन्त दुखदायी हैं।

وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَٰهِيمَ ﴿٥١﴾

(५१) तथा उन्हें इब्राहीम के अतिथियों का (भी) हाल सुना दो।

إِذْ دَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَقَالُوا۟ سَلَٰمًا قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾

(५२) कि जब उन्होंने उसके पास आकर सलाम किया, तो उसने कहा कि हमको तो तुमसे भय लगता है।[1]

قَالُوا۟ لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾

(५३) उन्होंने कहा भय न करो, हम तुझे एक सुबोध वाणी वाले पुत्र की शुभ सूचना देते हैं।

قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰٓ أَن مَّسَّنِيَ ٱلْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) कहा क्या इस बुढ़ापे के छू लेने के पश्चात तुम मुझे शुभ सूचना देते हो ! ये शुभ-सूचना तुम कैसे दे रहे हो ?

قَالُوا۟ بَشَّرْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ ٱلْقَٰنِطِينَ ﴿٥٥﴾

(५५) उन्होने कहा, हम आपको पूर्णत: सत्य, शुभ-सूचना सुनाते हैं। आप निराश लोगों में सम्मिलित न हों।

---

[1]आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इन फ़रिश्तों से भय इसलिए हुआ कि उन्होंने आदरणीय इब्राहीम का तैयार किया भुना हुआ बछड़े का माँस नहीं खाया, जैसाकि सूर: हूद में वर्णन हो चुका है। इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह तआला के महान सम्मानित पैग़म्बर को भी (गुप्त बातों) परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, यदि उन्हें परोक्ष का ज्ञान होता तो आदरणीय इब्राहीम समझ जाते कि आने वाले मेहमान (अतिथि) फ़रिश्ते हैं तथा उनके लिए भोजन तैयार करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि फ़रिश्ते को मनुष्यों की भाँति खाने-पीने की आवश्यकता नहीं है।

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّاۗلُّوْنَ ۝٥٦

(५६) कहा अपने प्रभु की कृपा से निराश तो केवल (भटके तथा) बहके हुए लोग ही होते हैं ।[1]

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝٥٧

(५७) पूछा कि हे अल्लाह के भेजे हुए (फ़रिश्तो) ! तुम्हारा ऐसा क्या विशेष कार्य है ?[2]

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝٥٨ۙ

(५८) उन्होंने उत्तर दिया कि हम पापी लोगों की ओर भेजे गये हैं ।

اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ۭ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٥٩ۙ

(५९) परन्तु लूत का परिवार कि हम उन सबको अवश्य बचा लेंगे ।

اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٦٠ۧ

(६०) सिवाय लूत की पत्नी के कि हमने उसे रुकने तथा शेष रह जाने वालों में निर्धारित कर दिया है ।

فَلَمَّا جَاۗءَ اٰلَ لُوْطِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ۝٦١ۙ

(६१) जब भेजे हुए फ़रिश्ते लूत परिवार के पास पहुँचे ।

قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝٦٢

(६२) तो लूत ने कहा तुम लोग तो कुछ अपरिचित से प्रतीत होते हो ।[3]

---

[1]अर्थात संतान पैदा होने के समाचार पर मैं आश्चर्य तथा असम्भव होने का प्रदर्शन कर रहा हूँ तो केवल अपने बुढ़ापे के कारण कर रहा हूँ । यह बात नहीं कि मैं अपने प्रभु की कृपा से निराश हूँ । प्रभु की कृपा से निराश तो केवल भटके हुए लोग होते हैं ।

[2]आदरणीय इब्राहीम ने इन फ़रिश्तों की बातचीत से यह अनुमान लगाया कि यह केवल संतान की शुभसूचना देने ही नहीं आये हैं, बल्कि उनके आगमन का मूल कारण कुछ और है । अत: उन्होंने पूछा ।

[3]यह फ़रिश्ते सुन्दर तथा नवयुवकों के रूप में आये थे तथा आदरणीय लूत के लिए बिल्कुल अन्जान थे, इसलिए उन्होंने उनसे अनभिज्ञता तथा अपरिचितता का प्रदर्शन किया ।

(६३) उन्होंने कहा (नहीं) अपितु हम तेरे पास वह चीज़ लाये हैं, जिसमें ये लोग संदेह कर रहे थे ।[1]

قَالُوا بَلْ جِئْنَٰكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾

(६४) तथा हम तो तेरे पास (स्पष्ट) सत्य लेकर आये हैं तथा हम हैं भी पूर्ण सत्यवादी ।[2]

وَأَتَيْنَٰكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَٰدِقُونَ ﴿٦٤﴾

(६५) अब तू अपने परिवार सहित इस रात के किसी भाग में चल दे, तू स्वयं उनके पीछे रहना,[3] (तथा सावधान) ! तुम में से कोई भी मुड़कर न देखे तथा जहाँ का आदेश तुम्हें किया जा रहा है, वहाँ चले जाना ।

فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَٰرَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ﴿٦٥﴾

(६६) तथा हमने उसकी ओर इस बात का निर्णय कर दिया कि प्रातः होते-होते उन सबकी जड़े काट दी जायेंगी ।[4]

وَقَضَيْنَآ إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ﴿٦٦﴾

(६७) तथा शहरी लोग ख़ुशियाँ मनाते हुए आये ।[5]

وَجَآءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾

---

[1] अर्थात अल्लाह का प्रकोप जिसमें तेरे समुदाय को संदेह है कि वह आ भी सकता है ।

[2] इस स्पष्ट सत्य से भी तात्पर्य प्रकोप है, जिसके लिए वे भेजे गये थे, इसलिए उन्होंने यह कहा कि हम हैं भी अत्यन्त सच्चे । अर्थात प्रकोप की जो बात हम कह रहे हैं इसमें सच्चे हैं । अब इस समुदाय के विनाश का समय अत्यन्त निकट आ पहुँचा है ।

[3] ताकि कोई ईमानवाला पीछे न रहे, तू उनको आगे करता रहे ।

[4] अर्थात लूत को प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा इस निर्णय से सूचित कर दिया गया कि प्रातः होने से पूर्व इन लोगों की जड़ें काट दी जायेंगी अथवा دابر से तात्पर्य वह अन्तिम मनुष्य है जो शेष रह जायेगा, फरमाया : वह भी प्रातः होने तक नष्ट कर दिया जायेगा ।

[5] इधर तो आदरणीय लूत के घर में समुदाय के विनाश का निर्णय हो रहा था । उधर लूत के समुदाय वालों को पता चला कि लूत के घर में सुन्दर नवयुवक अतिथि आये हैं, तो अपनी समलैंगिक दुराचार के कारण बड़े प्रसन्न हुए तथा प्रसन्न होकर आदरणीय लूत के घर आये तथा उनसे माँग की कि उन नवयुवकों को उनके हवाले कर दिया जाये ताकि वे उनके साथ दुराचार करके अपनी कामवासना शान्त कर सकें ।

(६८) (लूत ने) कहा ये लोग मेरे अतिथि हैं तुम मुझे अपमानित न करो ।[1]

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيۡفِىۡ فَلَا تَفۡضَحُوۡنِۙ‏ ﴿٦٨﴾

(६९) तथा अल्लाह (तआला) से डरो एवं मुझे अपमानित न करो ।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخۡزُوۡنِ‏ ﴿٦٩﴾

(७०) वे बोले कि क्या हमने तुम्हें संसार भर (की ठीकेदारी) लेने से मना नहीं कर रखा ?[2]

قَالُوۡۤا اَوَلَمۡ نَـنۡهَكَ عَنِ الۡعٰلَمِيۡنَ‏ ﴿٧٠﴾

(७१) (लूत ने) कहा यदि तुम्हें करना ही है, तो ये मेरी पुत्रियाँ उपस्थित हैं ।[3]

قَالَ هٰٓؤُلَۤاءِ بَنٰتِىۡۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ فٰعِلِيۡنَؕ‏ ﴿٧١﴾

(७२) तेरी आयु की सौगन्ध ! वे तो अपने नशे में फिर रहे थे ।[4]

لَعَمۡرُكَ اِنَّهُمۡ لَفِىۡ سَكۡرَتِهِمۡ يَعۡمَهُوۡنَ‏ ﴿٧٢﴾

---

[1]आदरणीय लूत ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया कि वे अतिथि हैं उन्हें मैं किस प्रकार तुम्हारे हवाले कर सकता हूँ, इसमें तो मेरा अपमान है ।

[2]उन्होंने दुराग्रह तथा दुर्व्यवहार का प्रदर्शन करते हुए कहा कि हे लूत ! तू इन अजनवी मेहमानों का क्या लगता है ? तथा उनका पक्ष क्यों लेता है ? क्या हमने तुझे मना नहीं किया कि अजनवियों का पक्ष न लिया कर, अथवा उनको अपना अतिथि न वनाया कर ? यह सारी वातचीत उस समय हुई जव कि आदरणीय लूत को यह ज्ञात नहीं था कि ये अजनवी अतिथि अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं तथा वे इसी दुश्चरित्र समुदाय को ध्वस्त करने के लिए आये हैं, जो इन फ़रिश्तों के साथ दुराचार करने के लिए दृढ़ थे, जैसाकि सूर: हूद में वर्णन आ चुका है । यहाँ उनके फ़रिश्ते होने का वर्णन पहले आ गया है ।

[3]अर्थात तुम उनसे विवाह कर लो अथवा अपने समुदाय की स्त्रियों को पुत्रियाँ कहा, अर्थात तुम स्त्रियों के साथ विवाह करो अथवा जो विवाहित हैं उन्हें कामवासना की तृप्ति अपनी पत्नियों से करनी चाहिए ।

[4]अल्लाह तआला नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्वोधित कर, उनके जीवन की सौगन्ध खा रहा है, जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गरिमा तथा सम्मान का स्पष्टीकरण हो रहा है, परन्तु अन्य किसी के लिए अल्लाह के अतिरिक्त अन्य किसी की सौगन्ध खाना उचित नहीं है । अल्लाह तआला तो पूर्ण स्वामी है, वह जिसकी चाहे सौगन्ध खाये, उससे कौन पूछने वाला है ? अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस प्रकार शराव के नशे में धुत्त मनुष्य की वुद्धि विकृत हो जाती है, उसी प्रकार यह अपनी वुराई

(७३) फिर सूर्योदय होते-होते उन्हें एक कड़ी आवाज़ ने पकड़ लिया ।[1]

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

(७४) अन्ततः हमने उस (नगर) को ऊपर नीचे कर दिया[2] तथा उन लोगों पर कंकड़ वाले पत्थर[3] बरसाये ।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾

(७५) निःसंदेह हर एक शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए[4] इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं ।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾

(७६) और यह बस्ती ऐसे मार्ग पर है, जिस पर निरन्तर यातायात होती रहती है ।[5]

وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾

तथा भटकावे में इतने मस्त थे कि आदरणीय लूत की इतनी उचित बात भी उनकी समझ में नहीं आ पायी ।

[1]एक चिंघाड़ ने जबकि सूर्योदय हो चुका था, उनका अन्त कर दिया । कुछ विद्वान कहते हैं कि यह तीव्र आवाज़ आदरणीय जिब्रील की थी ।

[2]कहा जाता है कि उनकी बस्तियों को धरती से उठाकर ऊपर आकाश पर ले जाया गया तथा वहाँ से उनको उल्टा करके धरती पर फेंक दिया गया । इस प्रकार ऊपर का भाग नीचे तथा नीचे का भाग ऊपर कर दिया गया, तथा कहा जाता है कि इससे तात्पर्य मात्र उस बस्ती की छतों सहित धरती में धंसा देना है ।

[3]इसके पश्चात खिंगर के रूप में विशेष प्रकार के पत्थर बरसाये गये । इस प्रकार उन्हें तीन प्रकार के प्रकोपों से पीड़ित कर शिक्षाप्रद-चिन्ह के रूप में बना दिया गया ।

[4]गूढ़ दृष्टि से परीक्षण करने तथा सोच-विचार करने वालों को متوسمين कहा गया है । मोतवस्सेमीन के लिए उस घटना में शिक्षा के पहलू तथा लक्षण हैं ।

[5]तात्पर्य मुख्य मार्ग है । अर्थात लूत के समुदाय की बस्तियाँ मदीने से सीरिया जाते समय मार्ग में पड़ती हैं । प्रत्येक यात्री को उन्हीं मार्ग से होकर गुज़रना पड़ता है । कहते हैं ये पाँच बस्तियाँ थीं-सदूम, (यह केन्द्रीय बस्ती थी) साअबः, सावः, असरः तथा दूमा । कहा जाता है कि आदरणीय जिब्रील ने उन्हें बाँह पर उठाया तथा आकाश पर चढ़ गये, यहाँ तक कि आकाश वालों ने उनके कुत्तों के भोंकने तथा मुर्गों के बोलने की आवाज़ें सुनीं तथा फिर उन्हें धरती पर दे मारा । (इब्ने कसीर) परन्तु इस बात का कोई प्रमाण नहीं है ।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा इसमें ईमानवालों के लिए बड़ी निशानी है।

وَإِن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾

(७८) तथा ऐक: बस्ती के रहने वाले भी बड़े अत्याचारी थे।[1]

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٧٩﴾

(७९) जिनसे अन्त में हमने बदला ले ही लिया। ये दोनों नगर खुले (सामान्य) मार्ग पर हैं।[2]

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया।[3]

وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾

(८१) तथा उन्हें हमने अपनी निशानियाँ प्रदान की थीं, परन्तु फिर भी वे उनसे गर्दन मोड़ने

---

[1] أيكة घने वृक्ष को कहते हैं। इस बस्ती में घने वृक्ष होंगे। इसलिए उन्हें أصحاب الأيكة (वन अथवा जंगल वाले) कहा गया है। तात्पर्य उससे शुऐब का समुदाय है तथा उनका काल आदरणीय लूत के पश्चात का है तथा उनका क्षेत्र मदीना तथा सीरिया के मध्य लूत के समुदाय की बस्तियों के निकट था। इसे मदयन कहा जाता है, जो आदरणीय इब्राहीम के पुत्र अथवा पौत्र का नाम था तथा उन्हीं के नाम पर बस्ती का नाम पड़ गया था। उनका अत्याचार यह था कि अल्लाह के साथ साझीदार बनाते थे, लूट उनका कर्म था, तथा कम तौलना तथा नापना उनका व्यवहार था। उन पर जब प्रकोप आया तो एक बादल की घटा ने छा लिया फिर कड़क तथा भूकम्प ने उन्हें ध्वस्त कर दिया।

[2] إمام مبين का अर्थ भी मुख्य मार्ग है, जहाँ से रात-दिन गुजरते हैं। दोनों नगरों से तात्पर्य लूत के समुदाय की बस्ती तथा शुऐब के समुदाय का निवास स्थान मदयन तात्पर्य है। ये दोनों एक-दूसरे के निकट ही थे।

[3] حجر आदरणीय स्वालेह के समुदाय समूद की बस्तियों का नाम था। उन्हें أصحاب الحجر कहा गया है। यह बस्ती मदीना तथा तबूक के मध्य थी। उन्होंने अपने पैग़म्बर आदरणीय स्वालेह को झुठलाया, परन्तु यहाँ अल्लाह तआला ने फ़रमाया : "उन्होंने पैग़म्बरों को झुठलाया।" यह इसलिए है कि एक पैग़म्बर का झुठलाना वैसे ही है जैसे सारे पैग़म्बरों को झुठलाया।

वाले ही रहे ।[1]

(८२) तथा ये लोग अपने घर पर्वतों से काट-काट कर बना लिया करते थे बिना भय के ।[2]

وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٨٢﴾

(८३) अन्त में उन्हें भी प्रात: होते-होते कड़ी चीख़ (ध्वनि) ने आ दबोचा ।[3]

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٨٣﴾

(८४) अत: उनके किसी उपाय तथा कर्म ने उन्हें कोई लाभ न दिया ।

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾

(८५) तथा हमने आकाशों तथा धरती को एवं उनके मध्य की सभी चीज़ों को सत्य के साथ ही रचा है ।[4] तथा क़ियामत अवश्य-अवश्य आने वाली है, बस तू सभ्यता तथा अच्छाई से सहन कर ले ।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ ۖ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ﴿٨٥﴾

---

[1]इन निशानियों में वह ऊँटनी भी थी, जो उनके कहने पर एक चट्टान से चमत्कार स्वरूप निकली थी, परन्तु अत्याचारियों ने उसे भी मार डाला ।

[2]अर्थात बिना किसी भय अथवा संकोच के पर्वतों को शिल्प विद्या द्वारा काट लिया करते थे । ९ हिजरी में तबूक जाते समय जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस बस्ती से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर पर कपड़ा लपेट लिया था, अपनी सवारी की गति तेज़ कर दी तथा सहाबा से फ़रमाया कि रोते हुए तथा अल्लाह के प्रकोप से भयभीत होते हुए इस बस्ती से गुज़रो । (इब्ने कसीर) सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम में संख्या ४३३ तथा २२८५ में वर्णित है ।

[3]आदरणीय स्वालेह ने उनसे कहा कि तीन दिन पश्चात तुम पर प्रकोप आयेगा, अत: चौथे दिन उन पर प्रकोप आ गया ।

[4]सत्य से तात्पर्य वे लाभ तथा हित हैं जो आकाश तथा धरती की रचना का उद्देश्य है । अथवा सत्य से तात्पर्य सत्कर्मी को उसके सत्कर्म का बदला तथा कुकर्मियों को उनके कुकर्म का दण्ड देना है । जिस प्रकार एक अन्य स्थान पर फ़रमाया : अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों में है तथा जो धरती में है ताकि वह बुरों को उनकी बुराईयों तथा सत्कर्मियों को उनके सत्कर्म का बदला दे । (सूर: *अल-नजम-*३१)

(८६) निःसंदेह तेरा प्रभु ही पैदा करने वाला तथा जानने वाला है।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾

(८७) तथा निःसंदेह हमने आपको सात आयतें दे रखी हैं[1] जो दुहराई जाती हैं। तथा महान क़ुरआन भी दे रखा है।

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ﴿٨٧﴾

(८८) आप कदापि अपनी आँखें इस बात की ओर न दौड़ायें[2] जिसे हमने उनमें से कई प्रकार के लोगों को प्रदान की है, न उन पर आप शोक करें तथा ईमानवालों के लिए अपनी बाँह झुकाये रहें।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

(८९) तथा कह दीजिए कि मैं स्पष्टरूप से डराने वाला हूँ।

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾

---

[1] سبع مثاني से तात्पर्य क्या है? इसमें व्याख्याकारों में मतभेद है। उचित बात तो यह है कि इससे तात्पर्य *सूरः फ़ातिहा* है। यह सात आयतें हैं तथा जो प्रत्येक नमाज़ की प्रत्येक रकअत में पढ़ी जाती हैं (मसानी का अर्थ पुनरावृत्ति के किये गये हैं) हदीस से भी इसकी पुष्टि होती है। अतः एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ यह "सबअ मसानी तथा क़ुरआन अज़ीम है जो मैं दिया गया हूँ।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूरः अल-हिज्र*) एक अन्य हदीस में फ़रमाया «أُمُّ الْقُرْآنِ هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ». (उपरोक्त संदर्भ) *सूरः फ़ातिहा* क़ुरआन का एक भाग है इस लिए क़ुरआन अज़ीम का वर्णन भी साथ ही किया गया है।

[2] अर्थात हमने *सूरः फ़ातिहा* तथा क़ुरआन अज़ीम जैसे प्रदानों से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्मानित किया है, इसलिए दुनिया तथा उसकी शोभा एवं उन विभिन्न प्रकार के दुनिया वालों की ओर न देखें जिनको नश्वर दुनिया की अस्थाई वस्तुयें हमने दी हैं तथा वह जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाते हैं इस पर दुखी न हों तथा ईमानवालों के लिए अपनी बाँह झुकाये रखें। अर्थात उनके लिए नम्रता तथा प्रेम भाव अपनायें। इस लोकोक्ति की यर्थाता यह है कि जब पक्षी अपने बच्चों को अपनी प्रेमछाया में लेता है, तो उनको अपने बाँह अर्थात पंखों में ले लेता है। इस प्रकार यह शब्दों का योग (समस्त) नम्रता, प्रेम एवं प्यार का भाव अपनाने के भावार्थ में प्रयोग होता है।

(९०) जैसाकि हमने उन भाग खण्ड करने वालों पर उतारा ।[1]

كَمَآ أَنزَلْنَا عَلَى ٱلْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾

(९१) जिन्होंने इस क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये ।

ٱلَّذِينَ جَعَلُوا۟ ٱلْقُرْءَانَ عِضِينَ ﴿٩١﴾

(९२) सौगन्ध है तेरे प्रभु की हम उन सबसे अवश्य पूछ करेंगे ।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾

(९३) हर उस चीज़ की जो वह करते थे ।

عَمَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

(९४) बस आप[2] इस आदेश को जो आपको किया जा रहा है खोलकर सुना दीजिए तथा मुशरिकों (मिश्रणवादियों) से मुँह फेर लीजिए ।

فَٱصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

---

[1]कुछ व्याख्याकारों के निकट أنزلنا का कर्म कारक العذاب लुप्त है । अर्थ यह है कि मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ प्रकोप से । जैसे इस प्रकोप के जो مُقتسمين पर अवतरित हुआ । مقتسمين कौन हैं ? जिन्होंने अल्लाह की किताब को टुकड़े-टुकड़े कर दिया । कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे कुरैश का समुदाय अभिप्राय है जिन्होंने अल्लाह की किताब को विभाजित कर दिया, इसके कुछ भाग को कविता, कुछ भाग को जादू, कुछ को अंधविश्वास तथा कुछ को पूर्वजों की कथायें बताया । कुछ विद्वान कहते हैं مقتسمين से अहले किताब तथा क़ुरआन से तात्पर्य तौरात तथा इंजील हैं । उन्होंने इन आकाशीय पुस्तकों को विभिन्न भागों में विभाजित कर दिया था । कुछ विद्वान कहते हैं कि यह आदरणीय स्वालेह का समुदाय है, जिन्होंने आपस में सौगन्ध खायी थी कि स्वालेह तथा उनके परिवार वालों की रात्रि के अंधेरे में हत्या कर डालेंगे ।

﴿ تَقَاسَمُوا۟ بِٱللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُۥ وَأَهْلَهُۥ ﴾ [النمل:٤٩]

"उन्होंने अल्लाह की सौगन्ध खाई कि रात ही को हम स्वालेह तथा उसके परिवार वालों पर छापा मारेंगे ।" (*सूर: अन-नमल-४९*)

तथा आकाशीय पुस्तक को टुकड़े-टुकड़े कर डाला । عِضين का एक अर्थ यह भी किया गया है कि इसकी कुछ बातों पर ईमान रखना तथा कुछ के साथ इंकार करना ।

[2] اصدع का अर्थ स्पष्ट करके वर्णन करना, इस आयत के अवतरित होने से पूर्व आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छुपकर धर्म का प्रचार करते थे, इसके पश्चात आप

(९५) आप से जो लोग उपहास करते हैं उनके (दण्ड) के लिए हम पर्याप्त हैं।

إِنَّا كَفَيْنَٰكَ ٱلْمُسْتَهْزِءِينَ ﴿٩٥﴾

(९६) जो अल्लाह के साथ अन्य देवता (पूज्य) बनाते हैं, उन्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा।

ٱلَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

(९७) तथा हमें भली-भाँति ज्ञात है कि उनकी बातों से आपका दिल संकुचित होता है।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

(९८) आप अपने प्रभु की महिमा तथा प्रशंसा का वर्णन करते रहें। तथा शीश (सिर) झुकाने वालों में सम्मिलित हो जायें।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٩٨﴾

(९९) तथा अपने प्रभु की इबादत करते रहें यहाँ तक कि आपको मृत्यु आ जाये।[1]

وَٱعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ ٱلْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

सूरतुन-नहल-१६

سُورَةُ النَّحْلِ

सूरः नहल मक्का में उतरी तथा इसकी एक सौ अटठाईस आयतें और सोलह रूकअ हैं।

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

(१) अल्लाह (तआला) का आदेश आ पहुँचा, अब

أَتَىٰٓ أَمْرُ ٱللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्टरूप से धर्म का प्रचार-प्रसार करना प्रारम्भ कर दिया। (फ़तहुल क़दीर)

[1]मुशरेकीन जो अल्लाह की पूजा एवं गुणों में अन्य को साझी बनाते हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जादूगर, दीवाना, भविष्यवेत्ता आदि कहते जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मानवी प्रकृति के कारण दुखी हो जाते, अल्लाह तआला ने सांत्वना देते हुए फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की प्रशंसा तथा गुणगान करें, नमाज़ पढ़ें तथा अपने प्रभु की इबादत करें, इससे आपको हार्दिक शान्ति भी प्राप्त होगी तथा अल्लाह की सहायता भी प्राप्त होगी। दण्डवत (सजदा से यहाँ नमाज़ तथा यक़ीन से मृत्यु तात्पर्य है।

سُبۡحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ①

इसकी शीघ्रता न मचाओ[1], सारी पवित्रता उसके लिए है वह श्रेष्ठतम है उन सबसे जिन्हें ये अल्लाह के निकट साझा बतलाते हैं।

يُنَزِّلُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةَ بِٱلرُّوحِ مِنۡ أَمۡرِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦٓ أَنۡ أَنذِرُوٓاْ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱتَّقُونِ ②

(२) वही फ़रिश्तों को अपनी प्रकाशना (वह्यी)[2] देकर अपने आदेश द्वारा अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है,[3] उतारता है कि तुम लोगों को सचेत कर दो कि मेरे अतिरिक्त अन्य कोई पूजने योग्य नहीं, अतः तुम मुझसे डरो।

---

[1]इससे तात्पर्य क़ियामत है, अर्थात वह क़ियामत निकट आ गयी है, जिसे तुम दूर समझते थे, तो शीघ्रता न मचाओ, अथवा वह प्रकोप तात्पर्य है, जिसकी मूर्तिपूजक माँग करते थे। उसे भविष्यकाल के बजाये भूतकाल में वर्णन किया है, क्योंकि उसका आना निश्चित है।

[2] روح से तात्पर्य प्रकाशना (वह्यी) है, जैसाकि क़ुरआन मजीद में अन्य स्थान पर है।

﴿وَكَذَٰلِكَ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ رُوحًا مِّنۡ أَمۡرِنَاۚ مَا كُنتَ تَدۡرِي مَا ٱلۡكِتَٰبُ وَلَا ٱلۡإِيمَٰنُ﴾

"इसी प्रकार हमने आपकी ओर अपने आदेश से प्रकाशना (वह्यी) की, इससे पूर्व आपको ज्ञान नहीं था कि किताब क्या है तथा ईमान क्या है" (*सूरः अश्-शूरा-* ५२)

[3]तात्पर्य नबी हैं जिन पर प्रकाशना (वह्यी) अवतरित हुई। जिस प्रकार अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ٱللَّهُ أَعۡلَمُ حَيۡثُ يَجۡعَلُ رِسَالَتَهُۥ﴾

"अल्लाह भली-भाँति जानता है कि वह कहाँ अपनी रिसालत रखे।" (सूर *अल-अनाम-*१२४)

﴿يُلۡقِي ٱلرُّوحَ مِنۡ أَمۡرِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦ لِيُنذِرَ يَوۡمَ ٱلتَّلَاقِ﴾

"वह अपने आदेश से अपने भक्तों में जिस पर चाहता है प्रकाशना (वह्यी) अवतरित करता है ताकि वे मिलन वाले दिन (क़यामत के दिन) से लोगों को डरायें।" (*सूरः अल-मोमिन-*१५)

(३) उसी ने आकाशों तथा धरती को सत्यता के साथ उत्पन्न किया,[1] वह उससे स्वच्छ है जो मुशरिक (मिश्रणवादी) करते हैं।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ③

(४) उस ने मनुष्यों को वीर्य से पैदा किया फिर वह स्पष्ट झगड़ालू बन बैठा।[2]

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ④

(५) उसी ने पशु पैदा किये, जिनमें तुम्हारे लिए गर्मी के वस्त्र हैं, तथा अन्य भी बहुत-से लाभ हैं,[3] तथा कुछ तुम्हारे भोजन के काम आते हैं।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ⑤

(६) तथा उनमें तुम्हारी शोभा भी है, जब चराकर लाओ तब भी और जब चराने ले जाओ तब भी।[4]

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ⑥

---

[1]अर्थात मात्र आनन्द, आमोद-प्रमोद एवं खेल-कूद के लिए नहीं बनाया, अपितु एक उद्देश्य है तथा वह है उपहार तथा दण्ड, जैसाकि विस्तार से अभी गुज़र चुका है।

[2]अर्थात एक निर्जीव वस्तु से जो एक जीवधारी के अन्दर से निकलती है, जिसे वीर्य कहा जाता है। उसे विभिन्न अवस्थाओं से गुज़ार कर एक पूर्ण रूप प्रदान करता है, फिर उसमें अल्लाह तआला आत्मा फूँकता है तथा माता के गर्भ से निकालकर संसार में लाता है, जिसमें वह जीवन व्यतीत करता है, परन्तु जब उसे समझ आती है तो उसी प्रभु के मामले में झगड़ता है, उसको अस्वीकार करता अथवा उसके साथ साझीदार ठहराता है।

[3]इस (अनुग्रह) के साथ अन्य अनुग्रह का वर्णन किया कि चौपाये (ऊँट, गाय तथा बकरियाँ) भी उसी ने पैदा किये, जिनके बालों से तुम ऊन तथा गर्म कपड़े तैयार करके गर्मी प्राप्त करते हो। इसी प्रकार उनसे अन्य लाभ प्राप्त करते हो, जैसे उनसे दूध प्राप्त करते हो, उन पर सवारी करते तथा सामान लादते हो, उनके द्वारा हल चलाते तथा खेतों की सिंचाई करते हो आदि।

[4] تريحون का अर्थ है जब शाम को चराकर घर वापस लाओ, تسرحون जब प्रातः चराने के लिए ले जाओ, इन दोनों समयों में यह लोगों की दृष्टि में आते हैं जिससे तुम्हारे सौन्दर्य तथा सुन्दरता में बढ़ोत्तरी होती है। इन दोनों समयों के अतिरिक्त वे दृष्टि से ओझल रहते हैं अथवा बाड़ों में बन्द रहते हैं।

(७) तथा वह तुम्हारे बोझ उन नगरों तक उठाकर ले जाते हैं, जहाँ तुम बिना आधे प्राण किये पहुँच नहीं सकते थे। नि:संदेह तुम्हारा प्रभु बड़ा ही करूणाकारी तथा अत्यन्त कृपालु है।

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝

(८) तथा घोड़ों को, खच्चरों को, गधों को (उसने पैदा किया) ताकि तुम उनको याता-यात के साधन के रूप में प्रयोग में ले आओ तथा वे शोभा का साधन भी हैं।[1] अन्य भी वह

وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

[1]अर्थात उनको पैदा करने का मूल उद्देश्य एवं लाभ तो उन पर सवारी करना है, फिर भी यह शोभा हेतु भी हैं। घोड़े, खच्चर, तथा गधों का अलग से वर्णन करने से कुछ विचारकों ने अर्थ निकाला है कि घोड़ा भी उसी प्रकार निषेध (हराम) है जिस प्रकार गधा तथा खच्चर। इसके अतिरिक्त खाने वाले पशुओं का वर्णन पूर्व में आ चुका है। इसलिए इस आयत में जिन तीन पशुओं का वर्णन है, यह केवल वाहन (सवारी) के लिए है। परन्तु यह अर्थ इसलिए उचित नहीं क्योंकि हदीस में घोड़ा खाने का औचित्य प्रमाणित है। आदरणीय जाबिर (رضي الله عنه) का कथन है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घोड़ों का माँस खाने की आज्ञा दी है। «أَذِنَ فِي لُحُومِ الْخَيْلِ».(सहीह बुख़ारी किताबुल ज़बाएह बाबु लुहूमिल ख़ैले तथा सहीह मुस्लिम किताबुस सैदे बाब फ़ी अकले लुहूमिल ख़ैले)। इसके अतिरिक्त सहाबा कराम ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति में ख़ैबर तथा मदीने में घोड़े को बध करके उसका माँस पकाया तथा खाया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना नहीं किया। (देखिये सहीह मुस्लिम उपरोक्त वर्णित अध्याय में तथा मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ ३५६, अबू दाऊद किताबुल अतएम:, बाब फ़ी अकले लुहूमिल ख़ैले)। इसलिए अधिकाँश आलिम, तथा सलफ़ तथा उनके पश्चात के अधिकाँश घोड़े के माँस का उचित (हलाल) होने के पक्ष में हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर) यहाँ घोड़े का वर्णन सवारी के विषय में इसलिए किया गया है कि इसका अधिकतर प्रयोग इसी उद्देश्य से है, वह सम्पूर्ण संसार में इतना मूल्यवान है कि इसका भोजन के रूप में प्रयोग अत्यधिक कठिन है। भेड़, बकरी की भाँति इसका बध नहीं किया जाता। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि इसको बिना किसी प्रमाण के अनुचित (हराम) ठहरा दिया जाये।

ऐसी वस्तुएँ पैदा करता है जिनका तुम्हें ज्ञान भी नहीं ।[1]

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩﴾

(९) तथा अल्लाह पर सीधा मार्ग बता देना है ।[2] तथा कुछ टेढ़े मार्ग हैं । तथा यदि वह चाहता तो तुम सबको सीधे मार्ग पर लगा देता ।[3]

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ﴿١٠﴾

(१०) वही तुम्हारे लाभ के लिए आकाश से वर्षा करता है, जिसे तुम पीते भी हो तथा उसी से उगे हुए वृक्षों को तुम अपने पशुओं को चराते हो ।

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١١﴾

(११) इसी से वह तुम्हारे लिए खेती एवं जैतून तथा खजूर और अंगूर एवं हर प्रकार के फल उगाता है । नि:संदेह विचार करने वाले लोगों के लिए तो इसमें बड़ी निशानियाँ हैं ।[4]

---

[1]धरती के निचले भाग में, इसी प्रकार समुद्र में, तथा निर्जल मरूस्थल में तथा वनों में अल्लाह तआला जीवधारी उत्पन्न करता है, जिनका ज्ञान अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी को नहीं तथा उसी में मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तुयें भी आ जाती हैं, जो अल्लाह तआला की प्रदान की हुई बुद्धि तथा विचार को प्रयोग करते हुए उसी की उत्पन्न की हुई विभिन्न वस्तुओं को विभिन्न प्रकार से जोड़कर निर्मित करता है, जैसे बस, कार, रेलगाड़ी, जहाज़ तथा वायुयान एवं इसी प्रकार की असंख्य वस्तुएँ तथा जो भविष्य में भी आती रहेंगी ।

[2]इसका एक अर्थ है "तथा अल्लाह ही पर है सीधा मार्ग ।" अर्थात उसका वर्णन करना । अत: उसने उसे वर्णित कर दिया तथा प्रकाश तथा अंधकार दोनों को स्पष्ट कर दिया, इसीलिए आगे कहा कि कुछ मार्ग टेढ़े हैं अर्थात भटकाने वाले हैं ।

[3]परन्तु इसमें चूँकि दबाव होता तथा मनुष्य की परीक्षा न होती, इसलिए अल्लाह ने अपनी इच्छा से सभी को बाध्य नहीं किया । अपितु दोनों मार्गों के विषय में बता कर मनुष्य को अपनी इच्छा तथा अधिकार की स्वतन्त्रता प्रदान कर दी ।

[4]इसमें वर्षा के वे लाभ वर्णित किये गये हैं, जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति देखता तथा अनुभव करता है, यह किसी को बताने की आवश्यकता नहीं, इसके अतिरिक्त इनका वर्णन पहले भी आ चुका है ।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۙ﴿۱۲﴾

(१२) तथा उसी ने रात-दिन तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है तथा सितारे भी उसी के आदेश के अधीन हैं। नि:संदेह इसमें बुद्धि वालों के लिए कई प्रकार की निशानियाँ विद्यमान हैं।[1]

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾

(१३) तथा अन्य भी (नाना प्रकार की) वस्तुएँ विभिन्न रंग-रूप की उसने तुम्हारे लिए धरती में फैला रखी हैं। नि:संदेह शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिए इसमें बड़ी भारी निशानियाँ हैं।[2]

وَهُوَ الَّذِىْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۴﴾

(१४) तथा नदियाँ भी उसी ने तुम्हारे वश में कर दी हैं कि तुम इसमें से निकला हुआ ताज़ा माँस खाओ तथा उसमें से अपने पहनने के लिए आभूषण निकाल सको। और तुम देखोगे कि नवकायें इसमें पानी चीरती हुई (चलती) हैं तथा इसलिए भी कि तुम उस की कृपा की खोज करो तथा हो सकता है कि तुम कृतज्ञता भी व्यक्त करो।[3]

---

[1]किस प्रकार रात तथा दिन छोटे तथा बड़े होते हैं, चन्द्रमा तथा सूर्य किस प्रकार अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं तथा उनमें कोई अन्तर नहीं उत्पन्न होता, सितारे किस प्रकार आकाश की शोभा हैं तथा रात के अन्धेरों में खोये हुए लोगों तथा यात्रियों के लिए पथ प्रदर्शक हैं। ये सब अल्लाह तआला के पूर्ण सामर्थ्य तथा विस्तृत राज्य के प्रमाण हैं।

[2]अर्थात धरती में अल्लाह ने जो खनिज, वनस्पति, निर्जीव तथा जीवधारी एवं उनसे होने वाले लाभ तथा विशेषता उत्पन्न किये हैं, उनमें भी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए निशानियाँ हैं।

[3]इसमें समुद्र की तीब्र धाराओं को मनुष्य के अधीन कर देने के वर्णन के साथ, उसके तीन लाभ भी वर्णित किये गये हैं। एक यह कि उससे मछली के रूप में ताज़ा माँस

وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾

(१५) तथा उसने धरती पर पर्वत गाड़ दिये हैं ताकि तुम्हें लेकर न हिले ।[1] तथा नदियाँ एवं मार्ग बना दिये ताकि तुम लक्ष्य तक पहुँचो ।[2]

وَعَلَامَاتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾

(१६) अन्य भी बहुत-सी निशानियाँ (निर्धारित की) । तथा सितारों से भी लोग मार्ग प्राप्त करते हैं ।

أَفَمَن يَخْلُقُ كَمَن لَّا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾

(१७) तो क्या वह जो पैदा करे उस जैसा है जो पैदा नहीं कर सकता ? क्या तुम कदापि नहीं सोंचते ?[3]

खाते हो (तथा मछली मरी भी हो तब भी हलाल है । यहाँ तक कि एहराम की अवस्था में भी उसका शिकार हलाल है) दूसरे उससे तुम मोती, सीपियाँ, (जवाहरात) निकालते हो । तीसरे इसमें तुम नाव तथा जहाज़ चलाते हो, जिनके द्वारा तुम एक देश से दूसरे देश जाते हो, व्यापारिक सामग्रियाँ भी लाते ले जाते हो, जिससे तुम्हें अल्लाह की अनुकम्पा प्राप्त होती है, जिस पर तुम्हें अल्लाह का कृतज्ञ होना चाहिए ।

[1]यह पर्वतों का लाभ वर्णन किया जा रहा है । तथा अल्लाह का एक महान उपकार भी, क्योंकि यदि धरती हिलती रहती तो धरती पर निवास करना ही असम्भव होता । इसका अनुमान उन भूकम्पों से लगाया जा सकता है जो क्षणिक अथवा कुछ देर के लिए आते हैं, परन्तु किस प्रकार ऊँची-ऊँची भवनों को धराशायी करके नगरों को खण्डहर में परिवर्तित कर देते हैं ।

[2]नदियों का क्रम भी विचित्र है, कहाँ से वे प्रारम्भ होती हैं तथा कहाँ-कहाँ, दायें-बायें, उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम प्रत्येक दिशा को सींचती हैं । इसी प्रकार मार्ग बनाये, जिसके द्वारा तुम अपने लक्ष्य तक पहुँचते हो ।

[3]इन सभी अनुकम्पाओं तथा उपकारों के वर्णन से एकेश्वर के महत्व को स्पष्ट तथा प्रदर्शित किया कि अल्लाह तो इन सभी वस्तुओं का स्रष्टा है, परन्तु उसको छोड़कर जिनकी तुम पूजा करते हो, उन्होंने भी कुछ उत्पन्न किया है ? नहीं, अपितु वे तो स्वयं अल्लाह की सृष्टि हैं । तो फिर किस प्रकार स्रष्टा एवं सृष्टि समान हो सकते हैं ? जबकि तुमने स्वयं उन्हें ईष्टदेव बनाकर अल्लाह के समान साझी ठहरा रखा है । क्या तुम तनिक भी विचार नहीं करते ?

(१८) तथा यदि तुम अल्लाह की अनुकम्पाओं की गणना करना चाहो, तो तुम उसे नहीं कर सकते। निःसंदेह अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है।

وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٨﴾

(१९) तथा जो कुछ तुम छिपाओ अथवा व्यक्त करो, अल्लाह सब कुछ जानता है।[1]

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾

(२०) तथा जिन-जिन को ये लोग अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त पुकारते हैं, वे किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते, अपितु वे स्वयं पैदा किये हुए हैं।[2]

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿٢٠﴾

(२१) मृत हैं जीवित नहीं,[3] उन्हें तो यह भी ज्ञात नहीं कि कब उठाये जायेंगे।[4]

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٢١﴾

(२२) तुम सभी का पूज्य मात्र अल्लाह (तआला) अकेला है तथा परलोक (आख़िरत) पर ईमान

إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُم

---

[1]तथा इसके अनुसार वह क़यामत के दिन फल तथा दण्ड देगा। सत्कर्मियों को सत्कर्म का बदला मिलेगा तथा कुकर्मियों को कुकर्म का दण्ड।

[2]इसमें एक वस्तु की अधिकता है अर्थात विशेष गुण (रचयिता होने) के इंकार के साथ न्यूनता अर्थात कमी (रचयिता न होने) को प्रमाणित करना। (फ़तहुल क़दीर)

[3]मृत से तात्पर्य वह पाषाण (पत्थर) भी हैं जो निर्जीव तथा निर्बोध हैं तथा मरे हुए महात्मा भी हैं। क्योंकि मरने के पश्चात उठाया जाना (जिसका उन्हें ज्ञान नहीं) वह तो निर्जीव के अतिरिक्त महात्मा पर सत्य सिद्ध हो सकता है। उनको केवल मृत नही कहा, अपितु और अधिक स्पष्ट कर दिया कि, "वह जीवित नही हैं।" इससे क़ब्र पूजन करने वालों का भी स्पष्ट खण्डन होता है, जो कहते हैं कि क़ब्र में गड़े मृत नहीं जीवित हैं तथा हम जीवितों को ही पुकारते हैं। अल्लाह तआला के इस कथन से ज्ञात हुआ कि मृत्यु हो जाने के पश्चात सांसारिक जीवन किसी को नहीं प्राप्त हो सकता, न संसार से उनका कोई सम्बन्ध शेष रहता है।

[4]फिर उनसे लाभ की तथा पुण्य व प्रतिफल की आशा कैसे की जा सकती है।

مُّنكِرَةٌ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾

न रखने वालों के दिल भ्रष्ट (निवर्ती) हैं तथा वे स्वयं गर्व से परिपूर्ण हैं ।[1]

لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾

(२३) निःसंदेह अल्लाह (तआला) हर उस वस्तु को जिसको वे छिपाते हैं तथा जिसे व्यक्त करते हैं, भली-भाँति जानता है। वह अभिमानियों को प्रिय नहीं रखता ।[2]

وَإِذَا قِيلَ لَهُم مَّاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा उनसे जब पूछा जाता है कि तुम्हारे प्रभु ने क्या उतारा है, तो उत्तर देते हैं कि पूर्वजों की कथायें हैं ।[3]

---

[1]अर्थात एक पूज्य को मानना नास्तिकों तथा अनेकेश्वर-वादियों के लिए अत्यन्त कठिन है। वह कहते हैं।

﴿أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ﴾

"उसने सभी पूजनीयों को एक ही पूज्य कर दिया है यह तो अत्यन्त विचित्र बात है।" (सूरः साद-५)

अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ﴾

"जब एक अल्लाह का वर्णन किया जाता है तो आख़िरत को नकारने वालों के दिल संकुचित हो जाते हैं तथा जब अल्लाह के अतिरिक्त अन्य देवताओं का वर्णन किया जाता है, तो प्रसन्न होते हैं।" (सूरः अज़्-ज़ुमर-४५)

[2] استكبار का अर्थ होता है कि अपने आपको बड़ा समझते हुए सत्य तथा उचित बात को अस्वीकार कर देना तथा अन्य व्यक्तियों को तुच्छ एवं हीन समझना। كبر की यही परिभाषा हदीस में भी वर्णन की गयी है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब तहरीमिल किब्रे व बयानेहि) यह घमंड तथा अहंकार अल्लाह को अति अप्रिय है। हदीस में है कि वह व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जायेगा जिसके हृदय में लेश मात्र भी घंमड होगा। (उपरोक्त संदर्भ)

[3]अर्थात विमुखता तथा उपहास का प्रदर्शन करते हुए ये झूठे उत्तर देते हैं कि अल्लाह तआला ने तो कुछ नहीं उतारा तथा यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमें जो पढ़कर सुनाता है, वह तो पूर्व कालिक कथायें हैं, जो कहीं से सुनकर वर्णन करता है।

(२५) (इसी का परिणाम होगा) कि क़ियामत के दिन ये लोग अपने पूर्ण बोझ के साथ ही उनके बोझ के भी भागीदार होंगे जिन्हें अज्ञानवश भटकाते रहे। देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं।[1]

لِيَحْمِلُوٓا۟ أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾

(२६) उनसे पूर्व के लोगों ने भी छल किया था। (अन्त में) अल्लाह ने उनके (षड़यन्त्र के) घरों को जड़ों से उखाड़ दिया तथा उनके (सिरों पर) छतें ऊपर से[2] गिर पड़ीं तथा उनके पास प्रकोप वहाँ से आ गया जहाँ का उन्हें ध्यान तथा विचार भी न था।[3]

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَٰنَهُم مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَىٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

---

[1]अर्थात उनके मुख से यह बात अल्लाह तआला ने निकलवायी ताकि वे लोग अपने बोझों के अतिरिक्त अन्यों का भी बोझ उठायें। जिस प्रकार से हदीस में है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जिसने लोगों को संमार्ग की ओर बुलाया, तो उस व्यक्ति को उन सभी व्यक्तियों का भी बदला मिलेगा जो उसके आमन्त्रण पर सत्य का मार्ग अपनायेंगे तथा जिसने भटकावे की ओर बुलाया, तो उसको उन सभी लोगों के पाप का भार भी उठाना पड़ेगा, जो उसके प्रयत्न पर भटके।" (अबू दाऊद किताबुस सुन्न: बाबु लोजूमिस्स सुन्न:)

[2]कुछ व्याख्याकार इस्राईली कथाओं के आधार पर कहते हैं कि इससे तात्पर्य नमरूद अथवा बुख़्त नस्सर है, जो किसी प्रकार आकाश की ओर चढ़कर अल्लाह के विरूद्ध षड़यन्त्र किया, परन्तु वे विफल होकर वापस आ गये तथा कुछ व्याख्याकारों के निकट एक उदाहरण है जिससे यह बताना उद्देश्य है कि अल्लाह के साथ कुफ़्र तथा साझी बनाने वालों के कर्म इसी प्रकार विफल होंगे, जिस प्रकार किसी के घर की नींव हिल जाये, तथा वे छत सहित गिर पड़े। परन्तु अधिक उचित बात यह है कि इसका उद्देश्य उन समुदायों के परिणाम की ओर संकेत करना है, जिन समुदायों ने पैग़म्बरों को निरन्तर झुठलाया तथा अन्त में अल्लाह के प्रकोप के भोगी होकर अपने घरों सहित ध्वस्त हो गये। जैसे आद का समुदाय तथा लूत का समुदाय आदि।

[3]जिस प्रकार से अन्य स्थान पर है।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۷﴾

(२७) फिर क़ियामत के दिन भी अल्लाह (तआला) उन्हें अपमानित करेगा तथा कहेगा कि मेरे वे साझीदार कहाँ हैं जिनके विषय में तुम लड़ते-झगड़ते थे ।[1] जिन्हें ज्ञान दिया गया था वे उत्तर देंगे[2] कि आज तो काफ़िरों को अपमान तथा बुराई चिमट गयी ।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى

(२८) वह जो अपने प्राणों पर अत्याचार करते हैं, फ़रिश्ते जब उनके प्राण निकालने लगते हैं तो उस समय वे संधि की बात डालते हैं कि हम बुराई नहीं करते थे ।[3] क्यों नहीं ? अल्लाह

"तो अल्लाह (का प्रकोप) उनके पास ऐसे स्थान से आया जहाँ से उन्होंने कभी सोचा भी न था ।" (सूर: *अल-हश्र-२*)

[1]अर्थात यह तो वे प्रकोप थे जो उन पर संसार में आये तथा क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उन्हें इस प्रकार अपमानित तथा निरादर करेगा कि उनसे पूछेगा, तुम्हारे वे भागीदार कहाँ हैं, जो तुमने मेरे लिए बना रखे थे तथा जिनके कारण तुम ईमानवालों से लड़ते-झगड़ते थे ।

[2] अर्थात जिनको धर्म का ज्ञान था, वे धर्म पर दृढ़ थे वे उत्तर देंगे ।

[3]यह मूर्तिपूजक अत्याचारियों की मृत्यु के समय की अवस्था का वर्णन है । जब फ़रिश्ते उनकी (प्राण) आत्मायें निकालते हैं तो वे संधि की बात डालते हैं अर्थात सुनने, मानने तथा लाचारी का प्रदर्शन करते हुए कहते हैं कि हम तो बुराई नहीं करते थे । जिस प्रकार प्रलय के मैदान में अल्लाह के समक्ष भी झूठी सौगन्ध खायेंगे तथा कहेंगे ।

﴿ وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴾

"अल्लाह की सौगन्ध हम मुशरिक (मिश्रणवादी) नहीं थे ।" (सूर: *अल-अनाम*-२३)

अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ ﴾

"जिस दिन अल्लाह तआला उन सबको जीवित कर (अपने समक्ष एकत्रित करेगा) तो अल्लाह के समक्ष भी ये इसी प्रकार (झूठी) सौगन्ध खायेंगे, जिस प्रकार तुम्हारे समक्ष सौगन्ध खाते हैं ।" (सूर: *अल-मुजादिल:*-१८)

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌۢ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

(तआला) भली-भाँति जानने वाला है, जो कुछ तुम करते थे ।[1]

فَادْخُلُوٓا۟ أَبْوَٰبَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۖ فَلَبِئْسَ مَثْوَى ٱلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾

(२९) तो अब तुम सदा के लिए नरक के द्वारों (से नरक) में प्रवेश करो,[2] तो क्या ही बुरा स्थान है अहंकार करने वालों का ।

وَقِيلَ لِلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ مَاذَآ أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا۟ خَيْرًا ۗ لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا۟ فِى هَٰذِهِ ٱلدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَلَدَارُ ٱلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ ۚ وَلَنِعْمَ دَارُ ٱلْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा सदाचारियों से प्रश्न किया जाता है कि तुम्हारे पालनहार ने क्या अवतरित किया है । तो वह उत्तर देते हैं कि अच्छे से अच्छा । जिन लोगों ने सत्कर्म किये उन के लिए इस लोक में भलाई है, तथा वस्तुतः परलोक का घर तो अत्योत्तम है, तथा क्या ही उत्तम सदाचारियों का घर है ।

جَنَّٰتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ ۖ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَآءُونَ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْزِى ٱللَّهُ ٱلْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾

(३१) सदा रहने वाले बाग़ में वे जायेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जो वह माँग करेंगे वहाँ उनके लिए उपस्थित होंगी, सदाचारियों को अल्लाह ऐसे ही प्रतिफल प्रदान करता है ।

ٱلَّذِينَ تَتَوَفَّىٰهُمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ طَيِّبِينَ ۙ يَقُولُونَ سَلَٰمٌ عَلَيْكُمُ

(३२) वे जिनके प्राण फ़रिश्ते ऐसी अवस्था में निकालते हैं कि वह स्वच्छ पवित्र हों कहते हैं कि तुम्हारे लिये शान्ति ही शान्ति है, अपने

---

[1]फ़रिश्ते उत्तर देंगे क्यों नहीं ? अर्थात तुम झूठ बोलते हो। तुम्हारी तो पूरी आयु ही बुराईयों में व्यतीत हुई है। तथा अल्लाह के पास तुम्हारे सभी कर्मों का लेख सुरक्षित है, तुम्हारे इस नकारने से क्या बनेगा ?

[2]इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि उनकी मृत्यु के पश्चात तुरन्त उनकी आत्मायें नरक में चली जाती हैं, तथा उनके शव समाधि (क़ब्र) में रहते हैं जहाँ अल्लाह अपने सामर्थ्य से शरीर तथा आत्मा में दूरी होते हुए भी एक प्रकार का लगाव पैदा करके यातना देता है तथा प्रातः, संध्या उन पर आग प्रस्तुत की जाती है। फिर जब प्रलय स्थापित होगा उनकी आत्मा उनके शरीरों में पुनः आ जायेंगी तथा वे सदा के लिए नरक में डाल दिये जायेंगे।

उन कर्मों के बदले स्वर्ग में जाओ जो तुम कर रहे थे ।[1]

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝٣٢

(३३) क्या यह इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जायें अथवा तेरे प्रभु का आदेश आ जाये ? [2] ऐसा ही उन लोगों ने भी किया जो इन से पूर्व थे ।[3] उन पर अल्लाह (तआला) ने कोई अत्याचार नहीं किया ।[4] अपितु वह स्वयं अपने प्राणों पर अत्याचार करते रहे ।[5]

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَٰئِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝٣٣

(३४) तो उनके कुकर्मों का कुफल उन्हें मिल गया तथा जिसका उपहास उड़ाते थे, उसने उन को घेर लिया ।[6]

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝٣٤

---

[1]इन आयतों में अत्याचारी मूर्तिपूजकों की तुलना में ईमानवालों के आचरण एवं उनके शुभ अन्त (परिणाम) का वर्णन किया गया है ।

[2]अर्थात क्या वह भी उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब फ़रिश्ते उनकी आत्मायें निकालेंगे अथवा प्रभु का आदेश (अर्थात प्रकोप अथवा क़ियामत) आ जाये ।

[3]अर्थात इस प्रकार की दुष्टता तथा अवज्ञा, उनसे पूर्व के लोगों ने भी अपनायी, जिसके कारण वे अल्लाह के क्रोध के अधिकारी बने ।

[4]इसलिए कि अल्लाह ने उनके लिए कोई बहाना ही शेष नहीं छोड़ा । रसूलों को भेजकर तथा किताबें अवतरित करके उन पर तर्क को पूर्ण कर दिया ।

[5]अर्थात रसूलों का विरोध तथा उनको झुठलाकर स्वयं ही उन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया ।

[6]अर्थात जब रसूल उनसे कहते कि यदि तुम उन पर ईमान नहीं लाओगे तो अल्लाह का प्रकोप आ जायेगा, तो ये उपहास स्वरूप कहते कि जा अपने अल्लाह से कह दे कि वह प्रकोप भेजकर हमें नाश कर दे । अतः उस प्रकोप ने उन्हें घेर लिया जिसका वह उपहास करते थे, फिर उससे बचाव का कोई मार्ग उनके पास नहीं रहा ।

(३५) तथा मिश्रणवादियों (मुशरिकों) ने कहा यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज उसके अतिरिक्त अन्य की पूजा न करते न उसके आदेश के बिना किसी वस्तु को हराम करते । यही कर्म उनसे पूर्व के लोगों का रहा । तो रसूलों पर तो केवल स्पष्टतया संदेश पहुँचा देना है ।[1]

وَ قَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْشَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾

(३६) तथा हमने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजे कि (लोगो) ! केवल अल्लाह की उपासना (इबादत) करो तथा राक्षसों (उसके अतिरिक्त सभी मिथ्या पूज्यों) से बचो । तो कुछ लोगों

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ

[1]इस आयत में अल्लाह तआला ने मुशरिकों के एक भ्रम तथा भ्रान्ति का निवारण किय है, वे कहते थे कि हम जो अल्लाह को छोड़कर अन्यों की पूजा करते हैं अथवा उसके आदेश के बिना ही कुछ वस्तुओं को वर्जित (हराम) कर लेते हैं, यदि हमारी यह बातें अनुचित हैं तो अल्लाह तआला अपने सामर्थ्य से हमें उनसे रोक क्यों नहीं देता ? वह यदि चाहे तो हम इन कार्यों को कर ही नहीं सकते । यदि वह नहीं रोकता तो इसका अर्थ यह है कि हम जो कुछ कर रहे हैं, उसकी इच्छानुसार है । अल्लाह तआला ने उनके इस भ्रम का निवारण, "रसूलों का कार्य केवल पहुँचा देना है" कहकर कर दिया । अर्थ यह है कि तुम्हारा यह भ्रम उचित नहीं है । अल्लाह तआला ने तो तुम्हें इन मिश्रण के कार्यों से अति कड़ाई से रोका है । इसलिए प्रत्येक समुदाय में वह रसूल भेजता तथा किताबें अवतरित करता रहा है । तथा प्रत्येक नबी ने आकर सर्वप्रथम अपने समुदाय को शिर्क ही से बचाने का प्रयत्न किया है । इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि अल्लाह तआला कदापि यह नहीं चाहता कि लोग शिर्क करें क्योंकि यदि उसे प्रिय होता तो इनके खण्डन के लिए वह रसूल क्यों भेजता ? परन्तु इसके उपरान्त भी तुमने रसूलों को झुठलाकर शिर्क का मार्ग अपनाया तथा अल्लाह ने अपनी उत्पत्ति नीति के कारण बल पूर्वक तथा दबाव से नहीं रोका, तो यह उसके विवेक तथा नीति का एक भाग है जिसके अन्तर्गत उसने मनुष्यों को अपनी इच्छा के अनुरूप चलने की स्वतन्त्रता प्रदान कर रखी है । क्योंकि इसके बिना उनकी परीक्षा सम्भव नहीं थी । हमारे रसूल हमारा संदेश पहुँचाकर यही समझाते रहे कि इस स्वतन्त्रता का दुरूपयोग न करो, अपितु उसे अल्लाह की प्रसन्नता के अनुरूप प्रयोग करो । हमारे रसूल यही कुछ कर सकते थे, जो उन्होंने किया । तथा तुमने शिर्क करके उसका दुरूपयोग किया जिसका दण्ड स्थाई यातना है ।

وَمِنْهُم مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَٰلَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾

को अल्लाह ने मार्गदर्शन प्रदान किया तथा कुछ पर कुमार्गता सिद्ध हो गई।[1] अब तुम स्वयं धरती पर भ्रमण करके देख लो कि झुठलाने वालों का फल कैसा हुआ।

إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٣٧﴾

(३७) यद्यपि आप उनके मार्गदर्शन के इच्छुक रहे हैं किन्तु अल्लाह (तआला) उसे मार्ग-दर्शन नहीं देता है, जिसे भटका दे तथा न कोई उनका सहायक होता है।[2]

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा वे लोग बहुत बड़ी-बड़ी सौगन्ध खाकर कहते हैं कि मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) जीवित नहीं करेगा।[3] क्यों नहीं, (अवश्य जीवित करेगा) यह तो उसका सत्य अनिवार्य वचन है, परन्तु अधिकतर लोग अज्ञानता कर रहे हैं।[4]

---

[1]वर्णित शंका के समाधान के लिए और अधिक फ़रमाया कि हमने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजा तथा यह संदेश उनके द्वारा पहुँचाया कि मात्र एक अल्लाह की इबादत करो। परन्तु जिन पर भटकाव सिद्ध हो चुका था उन्होंने इसकी चिन्ता ही नहीं की।

[2]इसमें अल्लाह फ़रमा रहा है : हे पैग़म्बर ! तेरी इच्छा तो यही है कि यह सभी मार्गदर्शन का मार्ग अपना लें, परन्तु अल्लाह के नियमों के अधीन जो भटक गये हैं, उनको प्रकाश के मार्ग पर तू नहीं ला सकता। यह तो अपने अन्तिम परिणाम को पहुँचकर रहेंगे, जहाँ इनकी कोई सहायता न करेगा।

[3]क्योंकि मिट्टी में मिल जाने के पश्चात उनका पुनः जीवित होना, उन्हें दूर तथा असम्भव प्रतीत होता था। इसीलिए रसूल जब मृत्यु के पश्चात पुनः खड़े होने की बात कहता है, तो उसे झुठलाते हैं, उसको स्वीकार नहीं करते, अपितु इसके विपरीत पुनः जीवित न होने पर सौगन्ध खाते हैं, सौगन्ध भी बलपूर्वक एवं पूर्ण विश्वास के साथ।

[4]इसी अज्ञानता तथा मूर्खता के कारण रसूलों का विरोध करते तथा झुठलाते हुए कुफ़्र के समुद्र में डूब जाते हैं।

(३९) इसलिए भी कि ये लोग जिस बात में मतभेद करते थे, उसे अल्लाह (तआला) साफ वर्णन कर दे तथा इसलिए भी कि काफिर स्वयं अपना झूठा होना जान लें ।[1]

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾

(४०) हम जब किसी चीज़ की इच्छा करते हैं तो केवल हमारा इतना कह देना होता है कि हो जा बस वह हो जाती है ।[2]

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

(४१) तथा जिन लोगों ने अत्याचार सहन करने के पश्चात अल्लाह के मार्ग में देश छोड़ा है[3]

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ

---

[1]यह प्रलय (क़ियामत) आने के कारण तथा रहस्य का वर्णन हो रहा है कि उस दिन अल्लाह तआला उन बातों पर निर्णय करेगा जिन पर ये लोग आपस में मतभेद रखते थे तथा सत्यवादियों तथा अल्लाह से डरने वालों कोअच्छा फल तथा अधर्मी तथा अवज्ञाकारियों को उनके कुकर्मों का दण्ड देगा। इसके अतिरिक्त उस दिन काफ़िरों पर भी यह स्पष्ट हो जायेगा कि वह क़ियामत के न आने पर जो सौगन्ध खाते थे, उनमें वे झूठे थे।

[2]अर्थात लोगों के विचार से प्रलय (क़ियामत) का होना कितना भी कठिन अथवा असम्भव हो परन्तु अल्लाह के लिए तो कोई कठिन नहीं, उसे धरती तथा आकाश ध्वस्त करने के लिए मज़दूरों, इंजीनियरों तथा मिस्त्रियों तथा अन्य संसाधन की आवश्यकता नहीं। उसे तो मात्र शब्द كن (कुन) कहना है, उसके शब्द كن (कुन) से पलक झपकते क़ियामत व्याप्त हो जायेगी।

﴿ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ﴾

"क़ियामत का मामला पलक झपकते अथवा उससे भी कम अवधि में घटित हो जायेगा।" (सूर: अल-नहल-७७)

[3]हिजरत का अर्थ है कि अल्लाह के धर्म के लिए, अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपना देश, अपने सम्बन्धी तथा मित्र एवं साथियों को छोड़कर ऐसे क्षेत्र में चला जाना, जहाँ सरलतापूर्वक अल्लाह का कार्य किया जा सके। इस आयत में मुहाजिरों की विशेषता का वर्णन किया गया है। यह आयत सामान्य है जो सभी मुहाजिरों को सम्मिलित करती है तथा यह भी सम्भव है कि यह उन मुहाजिरों के विषय में अवतरित हुई हो, जो अपने समुदाय के कष्ट देने से पीड़ित होकर इथोपिया स्थानान्तरित हो गये थे।

हम उन्हें सर्वश्रेष्ठ स्थान संसार में प्रदान करेंगे,[1] तथा आख़िरत का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है,[2] काश ! लोग इससे परिचित होते ।

مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

(४२) वे जिन्होंने धैर्य धारण किया तथा अपने प्रभु पर ही भरोसा करते रहे ।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

(४३) तथा आप से पूर्व भी हम मानव पुरूष को ही भेजते रहे जिनकी ओर प्रकाशना (वह्यी) उतारा करते थे । यदि तुम नहीं जानते, तो विद्वानों से पूछ लो ।[3]

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۚ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

उनकी संख्या स्त्रियों सहित एक सौ अथवा उससे अधिक थी, जिसमें आदरणीय उस्मान ग़नी तथा उनकी पत्नी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुत्री रूक़ैय्या भी थीं ।

[1]इससे पवित्र जीविका एवं कुछ विद्वानों ने 'मदीना' तात्पर्य लिया है, जो मुसलमानों का केन्द्र बना । इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों कथनों में प्रतिकूलता नहीं है । इसलिए कि जिन लोगों ने अपने व्यापार तथा घर छोड़कर स्थानान्तरण (हिजरत) किया था अल्लाह तआला ने संसार में ही उनका बदला प्रदान कर दिया । 'पवित्र जीविका' भी दी तथा सम्पूर्ण अरब पर उन्हें प्रभुत्व तथा अधिकार प्रदान किया ।

[2]आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने जब मुहाजिरों तथा अन्सार का भत्ता निर्धारित किया तो प्रत्येक मुहाजिर को भत्ता देते समय कहा "هذا ما وعدك الله في الدنيا" "यह वह है जिसका अल्लाह ने दुनिया में वचन दिया है ।" "وما ادخر لك في الآخرة أفضل" "तथा परलोक में तेरे लिए जो भण्डार है, वह इससे कहीं श्रेष्ठ है ।" (इब्ने कसीर)

[3] أهل الذكر से तात्पर्य अहले किताब हैं, जो पिछले नबियों तथा उनके इतिहास से परिचित थे । अर्थ यह है कि हमने जितने भी रसूल भेजे वे मनुष्य ही थे, इसीलिए मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी यदि मनुष्य हैं, तो यह कोई नई बात नहीं कि तुम उनके मनुष्यत्व के कारण उनकी रिसालत को अस्वीकार कर दो । यदि संदेह हो तो तुम अहले किताब से पूछ लो कि पूर्व कालिक सभी नबी मनुष्य थे अथवा फ़रिश्ते, यदि वे फ़रिश्ते थे तो निःसंदेह अस्वीकार कर देना, यदि वे भी सभी मनुष्य थे तो फिर मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का मात्र मनुष्य होने के कारण इंकार क्यों ?

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝

(४४) निशानियों तथा किताबों के साथ। यह स्मृति (पुस्तक) हमने आपकी ओर उतारी है कि लोगों की ओर जो उतारा गया है आप उसे स्पष्टरूप से वर्णन कर दें। शायद कि वे सोच विचार करें।

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

(४५) बुरा छल-कपट करने वाले क्या इस बात से निर्भय हो गये हैं कि अल्लाह (तआला) उन्हें धरती में धंसा दे अथवा उनके पास ऐसे स्थान से प्रकोप आ जाये, जहाँ का उन्हें संदेह एवं विचार भी न हो।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝

(४६) अथवा उनको चलते-फिरते पकड़ ले,[1] यह किसी प्रकार से भी अल्लाह (तआला) को विवश नहीं कर सकते।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

(४७) अथवा उन्हें डरा-धमका कर पकड़ ले।[2] फिर निःसंदेह तुम्हारा प्रभु अत्यन्त करूणाकारी तथा अत्यन्त कृपालु है।[3]

---

[1]इसके विभिन्न भावार्थ हो सकते हैं। जैसे १- जब तुम व्यापार तथा व्यवसाय के लिए यात्रा पर जाओ, २- जब तुम व्यवसाय की उन्नति के लिए विभिन्न साधन तथा रीति अपनाओ ३- अथवा, रात्रि को विश्राम करने के लिए बिस्तर पर जाओ। यह تقلب के विभिन्न भावार्थ हैं। अल्लाह तआला जब चाहे इन अवस्थाओं में भी तुम्हारी पकड़ कर सकता है।

[2] تخوف का यह अर्थ भी हो सकता है कि पूर्व से ही हृदय में यातना तथा पकड़ का भय हो। जिस प्रकार कई बार मनुष्य कोई महापाप कर बैठता है, तो भय का आभास करता है कि कहीं अल्लाह मेरी पकड़ न कर ले, अतः कई बार इस प्रकार भी पकड़ होती है।

[3]कि वह पापों पर तुरन्त पकड़ नहीं करता, बल्कि अवसर प्रदान करता है तथा उस अवसर से अधिकतर लोगों को तो क्षमा-याचना तथा विनती का सौभाग्य भी प्राप्त हो जाता है।

(४८) क्या उन्होंने अल्लाह की सृष्टि में से किसी को भी नहीं देखा कि उसकी छाया दायें-बायें झुक-झुक कर अल्लाह (तआला) के समक्ष दण्डवत (सजदा) करती हैं तथा विवशता का प्रदर्शन करती हैं।[1]

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾

(४९) तथा नि:संदेह आकाशों तथा धरती के सभी जीवधारी तथा सभी फ़रिश्ते अल्लाह (तआला) के समक्ष दण्डवत (सजदा) करते हैं तथा तनिक भी गर्व नहीं करते।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

(५०) तथा अपने प्रभु से जो उनके ऊपर है भयभीत (कम्पित) रहते है[2] तथा जो आदेश मिल जाये उसके पालन करने में लगे रहते हैं।[3]

يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۩ ﴿٥٠﴾ سجدة

(५१) तथा अल्लाह (तआला) कह चुका है कि दो पूज्य न बनाओ। पूज्य तो वही मात्र अकेला है।[4] बस तुम सब केवल मेरा ही डर रखो।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾

---

[1]अल्लाह तआला की महिमा तथा महानता एवं उसकी गरिमा की महिमा का वर्णन है कि प्रत्येक वस्तु उसके समक्ष दण्डवत (सजदा) में तथा अधीन है, निर्जीव हों अथवा जीवधारी अथवा जिन्न एवं मनुषय तथा फ़रिश्ते प्रत्येक वस्तु जिसकी छाया दाहिने बायें झुकती है, तो वह सुबह शाम अपनी छाया के सहित अल्लाह को दण्डवत करती है। इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि जब सूर्य ढलता है, तो प्रत्येक वस्तु अल्लाह के समक्ष दण्डवत हो जाती है।

[2]अल्लाह के भय से कंपित तथा भयभीत रहती है।

[3]अल्लाह के आदेशों की अवहेलना नहीं करते, बल्कि जिसका आदेश दिया जाता है पालन करते हैं, जिससे मना किया जाता है, उससे दूर रहते हैं।

[4]क्योंकि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य है ही नहीं। यदि आकाश तथा धरती के दो अथवा अन्य ईष्टदेव होते तो संसार की यह सारी व्यवस्था स्थिर रह ही नहीं सकती थी, बिगाड़ तथा विनाश का शिकार हो चुकी होती। ﴿لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا﴾ (सूर: *अल-अंबिया*-२२) इसलिए ثنويت (दो उपास्यों) का विश्वास जिसके (अग्निपूजक) मानने

(५२) तथा आकाशों में तथा धरती में जो कुछ है, सब उसी का है तथा उसी की इबादत सदैव अनिवार्य है,[1] क्या फिर भी तुम उस के अतिरिक्त अन्यों से डरते हो ?

وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ۭ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾

(५३) तथा तुम्हारे पास जितनी भी सामग्री हैं, सब उसी की प्रदान की हुई हैं,[2] अब भी जब तुम्हें कोई कठिनाई आ जाये, तो उसी की ओर प्रार्थना तथा विनती करते हो।[3]

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔـرُوْنَ ﴿٥٣﴾

(५४) तथा जहाँ उसने वह कठिनाई तुम से दूर कर दी, तुम में से कुछ लोग अपने प्रभु के साथ साझीदार बनाने लगते हैं।

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾

वाले रहे हैं अथवा تعدد إله (अनेकश्वरवादी) का विश्वास, जिसके अधिकतर मूर्तिपूजक मानने वाले रहे हैं यह सब असत्य हैं। जब सृष्टि का स्रष्टा एक है तथा वही बिना किसी की साझेदारी के सृष्टि को व्यवस्थित कर रहा है, तो पूज्य भी केवल वही है, जो अकेला है। दो अथवा दो से अधिक नहीं हैं।

[1]उसी की उपासना (इबादत) तथा आज्ञापालन स्थाई तथा अनिवार्य है। واصبٌ का अर्थ 'सदैव' के हैं। "उनके लिए यातना है सदैव के लिए" (सूर: *अल-साफ़्फ़ात*-९) तथा इसका वही अर्थ है जो अन्य स्थान पर वर्णन किया गया है।

﴿فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۞ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ﴾

"तो अल्लाह की इबादत करो, उसी के लिए दीन को विशेष करते हुए, सावधान ! उसी के लिए विशेषरूप से भक्ति है।" (सूर: *अल-ज़ुमर*-२,३)

[2]जब सभी सुख सुविधा अल्लाह ही देता है तो फिर उपासना (इबादत) अन्य की क्यों ?

[3]इसका अर्थ यह है कि अल्लाह के एक होने का विश्वास हृदय की गहराईयों में स्थित है, जो उस समय उभर कर सामने आ जाता है, जब प्रत्येक ओर से निराशा के बादल गहरे हो जाते हैं।

(५५) कि हमारे प्रदान की हुई अनुकम्पाओं पर कृतघ्नता व्यक्त करें ।[1] (ठीक है) कुछ लाभ उठा लो अन्त में तुम्हें ज्ञात हो ही जायेगा ।[2]

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

(५६) तथा जिसे जानते बूझते भी नहीं, उस का भाग हमारी प्रदान की हुई वस्तुओं में निर्धारित करते हैं ।[3] अल्लाह की सौगन्ध ! तुम्हारे इस आक्षेप का प्रश्न तुमसे अवश्य ही किया जायेगा ।[4]

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۗ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾

[1]परन्तु मनुष्य भी कितना कृतघ्न है कि कष्ट (रोग, दरिद्रता तथा हानि आदि) के दूर होते ही, वह पुन: प्रभु के साथ शिर्क करने लगता है ।

[2]यह उसी प्रकार ही है जैसे इससे पूर्व फ़रमाया था ।

﴿قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ﴾

"क्षणिक जीवन में लाभ उठा लो, अन्ततः तुम्हारा ठिकाना नरक है ।" (सूरः *इब्राहीम*-३०)

[3]अर्थात जिनको ये हितकारक संकटहारी तथा पूज्य समझते हैं वे पत्थर की मूर्तियाँ हैं, जिनकी वास्तविकता का उन्हें ज्ञान ही नहीं । उसी प्रकार क़ब्रों के गड़े हुए लोगों की वास्तविकता भी कोई नहीं जानता कि उनके साथ वहाँ क्या घटित हो रहा है ? वे अल्लाह के प्रिय की सूची में हैं अथवा किसी अन्य में ? इन बातों को कोई नहीं जानता परन्तु इन अत्याचारी लोगों ने उनकी वास्तविकता से अनभिज्ञ होते हुए भी, उन्हें अल्लाह का साझीदार बना रखा है । तथा अल्लाह के दिये हुए माल में से उनके लिए भी (भोग-प्रसाद के रूप में) भाग निर्धारित करते हैं, बल्कि अल्लाह का भाग रह जाये तो कोई चिन्ता नहीं, उनके भाग में कमी नहीं करते । जैसाकि सूरः *अल अनआम*-१३६ में वर्णन किया गया है ।

[4]तुम जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो कि उसका साझी अथवा उसके कई साझीदार हैं, उसके विषय में क़ियामत के दिन तुम से पूछा जायेगा ।

(५७) तथा वह पवित्र अल्लाह (तआला) के लिए लड़कियाँ निर्धारित करते हैं तथा अपने लिए वह जो अपनी इच्छानुसार हो ।[1]

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَانَهُ ۙ وَلَهُم مَّا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾

(५८) तथा उनमें से जब किसी को लड़की होने की सूचना दी जाये तो उसका मुख काला हो जाता है तथा दिल ही दिल में घुटने लगता है ।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾

(५९) इस बुरी सूचना के कारण लोगों से छिपा-छिपा फिरता है । सोचता है क्या इस अपमान को लिये ही रहे अथवा इसे मिट्टी में दबा दे । आह ! क्या ही बुरे निर्णय करते हैं ?[2]

يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾

---

[1]अरब के कुछ क़बीले (ख़ुजाआ तथा किनाना) फ़रिश्तों की पूजा करते थे तथा कहते थे कि ये अल्लाह की पुत्रियाँ हैं, अर्थात एक अत्याचार तो यह किया कि अल्लाह की संतान बनायी, जबकि उसकी कोई संतान नहीं । फिर संतान भी स्त्रीलिंग, जिसे वे अपने लिए अप्रिय समझते अल्लाह के लिए वह पसन्द किया । जैसाकि अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ۞ تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ﴾

"क्या तुम्हारे लिए पुत्र तथा उसके लिए पुत्रियाँ ? यह तो बड़ा भद्दा बटवारा है ।" (सूर: *अल-नज्म*-२१,२२)

यहाँ यह कहा कि तुम तो यह कामना करते हो कि पुत्र हों कोई पुत्री न हो ।

[2]अर्थात पुत्री का जन्म सुनकर उनकी यह दशा होती है जो वर्णित हुई, तथा अल्लाह के लिए पुत्रियाँ चयन करते हैं । कैसा अनुचित निर्णय है ? यहाँ यह न समझा जाये कि अल्लाह तआला भी लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को तुच्छ समझता है । नहीं, अल्लाह के समक्ष लड़का-लड़की में कोई अन्तर नहीं । न लिंग के आधार पर किसी की हीनता तथा श्रेष्ठता का विचार उसके यहाँ है । यहाँ तो केवल अरबों के इस अन्याय तथा पूर्णरूप से अनुचित व्यवहार का स्पष्टीकरण उद्देश्य है, जो उन्होंने अल्लाह के साथ किया है । जबकि अल्लाह की महिमा तथा श्रेष्ठता को वे भी स्वीकार करते थे । जिसका तर्कपूर्ण परिणाम यह था कि जो वस्तु ये अपने लिए प्रिय नहीं रखते, अल्लाह के लिए भी वह निर्धारित न करते, परन्तु उन्होंने इसके विपरीत किया । यहाँ केवल उसी अन्याय का स्पष्टीकरण किया गया है ।

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾

(६०) परलोक (आख़िरत) पर ईमान न रखने वालों का ही बुरा उदाहरण है,[1] अल्लाह के लिए तो अति उच्च महिमा है, वह बड़ा प्रभावशाली तथा विवेकी है ।[2]

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ

(६१) तथा यदि लोगों के पाप पर अल्लाह उनकी पकड़ करता, तो धरती पर एक भी जीव न बचता,[3] परन्तु वह तो उन्हें एक निर्धारित समय तक ढील देता है,[4] फिर जब उनका

---

[1]अर्थात काफ़िरों के जो घोर कुकर्म वर्णन किये गये हैं उन्हीं के लिए बुरा उदाहरण अथवा दुर्गुण है अर्थात अज्ञान तथा कुफ़्र का दुर्गुण । अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह की पत्नी तथा संतान जो ये निर्धारित करते हैं, यह बुरा उदाहरण है, जो आख़िरत को नकारने वाले अल्लाह के लिए वर्णन करते हैं ।

[2]अर्थात उसका प्रत्येक गुण सृष्टि की तुलना में श्रेष्ठतम तथा महान है । जैसे उसका ज्ञान विस्तृत है, उसका सामर्थ्य असीम है, उसकी दया तथा प्रदान अनुपम है । و على هـذا القيـاس अथवा यह अर्थ है कि वह सामर्थ्यवान है, स्रष्टा है, जीविका प्रदान करने वाला है तथा देखने सुनने वाला है आदि (फ़तहुल क़दीर) । अथवा बुरा उदाहरण का अर्थ कमी, आलस्य है तथा مثل أعلى का अर्थ पूर्ण सामर्थ्य, प्रत्येक रूप से अल्लाह के लिए है । (इब्ने कसीर)

[3]यह उसका धैर्य है तथा उसके विवेक एवं ज्ञान का परिणाम है कि वह अपनी अवहेलना देखता है परन्तु फिर भी वह अपनी जीविका प्रदान करना न रोकता है तथा न तुरन्त पकड़ करता है । यदि वह कुकर्म करने के साथ ही पकड़ करना प्रारम्भ कर दे तो अत्याचार, पाप तथा कुफ़्र एवं शिर्क इतने अधिक हैं कि धरती पर कोई जीवधारी शेष न रहे, क्योंकि जब बुराई चारों ओर फैल जाये तो फिर प्रकोप भी चारों ओर होगा जिससे सत्कर्मी भी नाश कर दिये जाते हैं । परन्तु परलोक में अल्लाह की ओर से वे (सत्कर्मी) सम्मानित होंगे, जैसाकि हदीस में स्पष्टीकरण आता है । (देखिये सहीह बुख़ारी संख्या २११८ तथा मुस्लिम संख्या २२०६ तथा २२१०)

[4]यह उस विवेक का वर्णन है जिसकें अधीन वह एक निर्धारित समय तक अवसर देता है ताकि उनके लिए कोई तर्क शेष न रहे । दूसरे, उनकी संतानों में से कुछ ईमानदार निकल आयें ।

لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٦١﴾

वह समय आ जाता है, तो वह एक क्षण पीछे नहीं रह सकते तथा न आगे बढ़ सकते हैं।

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُم مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा वह अपने लिए जो अप्रिय समझते हैं, उसे अल्लाह के लिए सिद्ध करते हैं,[1] तथा उनकी जीभें असत्य बातों का वर्णन करती हैं कि उनके लिए श्रेष्ठता है।[2] (नहीं-नहीं) वास्तव में उनके लिए अग्नि है तथा ये नरकवासियों के अग्रणी हैं।[3]

تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ

(६३) अल्लाह की सौगन्ध ! हमने तुझसे पूर्व के समुदायों की ओर भी (अपने रसूल) भेजे परन्तु शैतान ने उनके कुकर्मों को उनकी दृष्टि में उचित ठहराया,[4] वह शैतान आज भी

---

[1]अर्थात पुत्रियाँ, यह पुनरावृत्ति विशेष बल के लिए है।

[2]यह उनके दूसरे दुर्गुण का वर्णन है कि वे अल्लाह के साथ अन्याय का मामला करते हैं, परन्तु उनके मुख ये झूठ बोलते हैं कि उनका अन्त अच्छा है, उनके लिए भलाईयाँ हैं तथा दुनिया - की भाँति उनकी आख़िरत भी अच्छी होगी। जब कि ऐसा नहीं, न यह सम्भव ही है।

[3]अर्थात नि:संदेह उनका अन्त अच्छा नहीं है तथा वह है नरक की अग्नि। जिसमें वे नरक में जाने वालों का नेतृत्व करेंगे। فرط का यही अर्थ हदीस से भी सिद्ध है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : «أَنَا فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ». (सहीह/बुख़ारी संख्या ६५८४ तथा मुस्लिम संख्या १७९३) "मैं हौज़े कौसर पर तुम्हारा नेतृत्व करूँगा।" एक अन्य अर्थ مُفرطـون का यह किया गया है कि उन्हें नरक में डालकर भूला दिया जायेगा।

[4]जिसके कारण उन्होंने भी रसूलों को झुठलाया जिस प्रकार हे पैग़म्बर मक्का के कुरैश तुझे झुठला रहे हैं।

وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

उनका मित्र बना हुआ है।[1] तथा उनके लिए दुखदायी यातना है।

وَمَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ ۙ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾

(६४) इस किताब को हमने आप पर इसलिए उतारा है कि आप हर उस बात को व्यक्त कर दें जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं।[2] और यह ईमानवालों के लिए मार्गदर्शन तथा कृपा है।

وَاللَّهُ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٥﴾

(६५) तथा अल्लाह (तआला) आकाशों से वर्षा करके उससे धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देता है। निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो सुनें।

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِّلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾

(६६) तथा तुम्हारे लिए तो[3] पशुओं में भी बड़ी शिक्षा है कि हम तुम्हें उसके पेट में जो कुछ है, उसी में से गोबर तथा रक्त के मध्य से शुद्ध दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए सहजता से पचता है।[4]

---

[1] اليوم से तात्पर्य सांसारिक समय है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है, अथवा इससे तात्पर्य आख़िरत है कि वहाँ भी यह इनका साथी होगा। अथवा وليهم में هم का संकेत मक्का के काफ़िरों की ओर है। अथवा यही शैतान जिसने पिछले समुदायों को भटकाया, आज वह इन मक्का के काफ़िरों का मित्र है तथा उन्हें रिसालत को झुठलाने के लिए बाध्य कर रहा है।

[2] इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह पदवी वर्णन की जा रही है कि आस्था तथा धार्मिक नियमों के सम्बन्ध में यहूदी तथा इसाई के मध्य, उसी प्रकार अंधविश्वासियों तथा मूर्तिपूजकों के मध्य तथा अन्य धर्मों के अनुयायियों के मध्य जो आपसी मतभेद हैं, उनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार करें कि सत्य तथा असत्य स्पष्ट हो जाये ताकि लोग सत्य को अपना कर असत्य से बचें।

[3] أَنعام (चौपाये, पशु) से ऊँट, गाय, बकरी (तथा भेड़ एवं दुम्बा) तात्पर्य हैं।

[4] यह चौपाये जो कुछ खाते हैं, आमाशय में जाता है, उसी भोजन से दूध, रक्त, गोबर तथा मूत्र बनता है। रक्त नसों में तथा दूध थनों में, उसी प्रकार गोबर तथा मूत्र अपने

وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

(६७) तथा खजूर एवं अंगूर के वृक्षों के फलों से तुम मदिरा बना लेते हो तथा उत्तम जीविका सामग्री भी। जो लोग बुद्धि रखते हैं, उनके लिए तो इसमें भी बहुत बड़ी निशानी है।

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा आपके प्रभु ने मधुमक्खी को यह समझ दिया[1] कि पर्वतों में, वृक्षों में तथा लोगों की बनायी हुई ऊँची-ऊँची टट्टियों में अपने घर (छत्ते) बना।

ثُمَّ كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ

(६९) तथा हर प्रकार के फल खा, तथा अपने (पालनहार) के सरल मार्गों पर चलती फिरती रह, उनके पेट से (पीने वाला पदार्थ) पेयद्रव निकलता है,[2] जिसके रंग भिन्न हैं[3] तथा जिसमें लोगों के लिए स्वास्थ्यवर्धक है,[4]

अपने निकास स्थान में स्थानान्तरित हो जाता है तथा दूध में न तो रक्त का रंग होता है तथा न गोबर एवं मूत्र की दुर्गन्ध। सफेद, स्वच्छ दूध बाहर आता है, जो अत्यन्त सरलता से गले के नीचे उतर जाता है।

[1]प्रकाशना (वह्यी) से तात्पर्य वह बोध तथा वह समझ-बूझ है, जो अल्लाह तआला ने अपनी स्वाभाविक आवश्यकता की पूर्ति के लिए जीवों को प्रदान की है।

[2]मधुमक्खी प्रथम पर्वतों पर, वृक्षों पर, तथा ऊँचे भवनों में अपना छत्ता इस प्रकार बनाती है कि उसमें कोई छिद्र अथवा दरार नहीं रहता। फिर वह बाग़ों, वनों घाटियों एवं पर्वतों में घूमती फिरती है तथा हर प्रकार के फलों का रस अपने पेट में एकत्रित करती है तथा फिर उन्हीं मार्गों से जहाँ से गुज़रती है वापस लौटती है तथा अपने छत्ते में आकर बैठ जाती है, जहाँ उसके मुख से मधु निकलता है, जिसे क़ुरआन ने पेय द्रव कहा है अर्थात स्वास्थवर्धक पेय द्रव।

[3]कोई लाल, कोई सफेद, कोई नीला तथा कोई बंसती रंग का। जिस प्रकार फलों तथा खेतों से वह भोजन प्राप्त करती हैं, उसी प्रकार उसका रंग तथा स्वाद भी भिन्न होता है।

[4] شفاء जाति वाचक संज्ञा महत्व दिखाने के लिए है अर्थात बहुत से रोगों के लिए मधु स्वास्थवर्धक है। यह नहीं कि प्रत्येक रोग का इलाज है। वैद्यों तथा चिकित्सकों ने भी

لِلنَّاسِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٦٩﴾

चिन्तन तथा विचार करने वालों के लिए इसमें भी बहुत बड़ी निशानी (लक्षण) है।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۚ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٧٠﴾

(७०) तथा अल्लाह (तआला) ने ही तुम सबको जन्म दिया है, वही फिर तुम्हें मृत्यु देगा, तथा तुममें ऐसे भी हैं जो बहुत बुरी आयु की ओर लौटाये जाते हैं कि बहुत कुछ जानने के पश्चात भी न जानें।[1] निःसंदेह अल्लाह (तआला) जानने वाला तथा सामर्थ्यवान है।

وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا

(७१) तथा अल्लाह (तआला) ने ही तुम में से एक को दूसरे पर जीविका में अधिकता प्रदान कर रखी है, परन्तु जिन्हें अधिक प्रदान किया

मधु को स्वास्थवर्धक प्राकृतिक द्रव के रूप में माना है। परन्तु विशेष रोगों के लिए न कि प्रत्येक रोग के लिए। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिष्ठान एवं मधु रूचिकर थे। (सहीह बुख़ारी किताबुल अशरिब: बाबु शराबिल हलवाए वल असले) एक अन्य कथन में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन वस्तुओं में स्वास्थ है सिंघी लगवाने में, मधु के पीने में तथा आग से दागने में। परन्तु मैं अपने अनुयायियों को आग से दागने से मना करता हूँ। (सहीह बुख़ारी बाबुद दवाए विल असले)। हदीस में एक घटना का वर्णन मिलता है। उदरामय (दस्त) के रोग में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मधु प्रयोग करने की सलाह दी जिससे उदरामय बढ़ गया, आकर बतलाया गया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पुनः मधु पीने की सलाह दी जिससे और अधिक उदरामय आने लगा तथा घर वालों ने समझा कि शायद रोग बढ़ गया है। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीसरी बार भी फ़रमाया अल्लाह सच्चा है तथा तेरे भाई का पेट झूठा है। जा, तथा उसको मधु पिला। अतः तीसरी बार में वह पूर्ण स्वस्थ हो गया। (सहीह बुख़ारी बाबु दवाइल मबतून तथा सहीह मुस्लिम किताबुस सलाम)

[1]जब मनुष्य प्राकृतिक आयु से बढ़ जाता है, तो फिर उसकी बुद्धि भी कमज़ोर हो जाती है तथा कई बार बुद्धि समाप्त हो जाती है तथा वह बच्चे के समान हो जाता है। यही वृद्धावस्था है जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शरण माँगी है।

بِرَآدِّیْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ۭ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾

गया है, वह अपनी जीविका को अपने अधीन दास को नहीं देते कि वह और ये उसमें समान हो जायें,[1] तो क्या ये लोग अल्लाह के उपकारों को अस्वीकार कर रहे हैं ?[2]

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुममें से ही तुम्हारी पत्नियाँ पैदा कीं तथा तुम्हारी पत्नियों से तुम्हारे पुत्र तथा पौत्र पैदा किये तथा तुम्हें अच्छी-अच्छी वस्तुऐं खाने के लिए प्रदान कीं । तो क्या फिर भी लोग असत्य पर ईमान लायेंगे ?[3] तथा अल्लाह तआला के उपहारों की कृतघ्नता करेंगे ?

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾

(७३) तथा वे अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त उनकी पूजा करते हैं, जो आकाशों तथा धरती से उन्हें कुछ भी तो जीवन साधन नहीं दे सकते तथा न कुछ शक्ति रखते हैं ।[4]

---

[1]अर्थात जब तुम अपने दासों को इतना धन तथा सांसारिक सुख साधन नहीं देते कि वे तुम्हारे समान हो जायें तो अल्लाह तआला कब प्रिय समझेगा कि तुम कुछ लोगों को, जो अल्लाह के भक्त तथा दास हैं अल्लाह के साझीदार तथा समान बना दो ।

[2]कि अल्लाह के दिये हुए धन में से अन्य देवताओं का भोग-प्रसाद निकालते हो तथा इस प्रकार उसकी अनुकम्पा की कृतघ्नता करते हो ।

[3]अर्थात अल्लाह तआला अपने इन उपहारों का वर्णन करके जो आयत में वर्णित हैं, प्रश्न कर रहा है कि सब कुछ देने वाला तो अल्लाह है, परन्तु ये उसे छोड़कर अन्यों की पूजा करते हैं तथा अन्यों का कहना मानते हैं ।

[4]अर्थात अल्लाह को छोड़कर पूजा भी ऐसे लोगों की करते हैं जिनके पास किसी बात का अधिकार नहीं है ।

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾

(७४) तो अल्लाह (तआला) के लिए समतुल्य न बनाओ,[1] अल्लाह (तआला) भलीभाँति जानता है तथा तुम नहीं जानते।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) अल्लाह (तआला) एक उदाहरण का वर्णन कर रहा है कि एक दास है अन्य के स्वामित्व का, जो किसी बात का अधिकार नहीं रखता तथा एक अन्य व्यक्ति है जिसे हमने अपने पास से समुचित धन दे रखा है, जिसमें से वह छुपे तथा खुले रूप से ख़र्च करता है। क्या ये सब समान हो सकते हैं?[2] अल्लाह (तआला)

---

[1]जिस प्रकार से मुशरेकीन उदाहरण देते हैं कि जिस प्रकार राजा से मिलना हो अथवा उससे कोई काम हो तो कोई सीधे राजा से नहीं सम्पर्क स्थापित कर सकता, उसे सर्वप्रथम राजा के निकटवर्ती से सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है। तब जाकर कहीं उसका राजा से सम्पर्क होता है। उसी प्रकार अल्लाह का मान तथा महिमा अपरमपार है। उस तक पहुँचने के लिए हम इन देवताओं को साधन बनाते हैं अथवा महात्मा का माध्यम पकड़ते हैं। अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया कि तुम अल्लाह को अपने जैसा न समझो न इस प्रकार के उदाहरण दो। इसलिए कि वह तो एक है उसकी कोई उपमा ही नहीं है। फिर राजा न छिपी बातों को जानता है न अन्तर्यामी, न सब कुछ देखने वाला तथा न भली प्रकार सुनने वाला कि वह बिना किसी साधन के जनता की दशा तथा आवश्यकताओं को जान जाये। जबकि अल्लाह तआला प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, स्पष्ट-अस्पष्ट, दर्शी-अदर्शी हर प्रकार की वस्तु का ज्ञान रखने वाला है तथा प्रत्येक की विनती सुनने का सामर्थ्य रखता है। भला एक मनुष्य राजा की अल्लाह के साथ क्या तुलना तथा उदाहरण?

[2]कुछ विद्वान कहते हैं कि यह दास तथा स्वतन्त्र का उदाहरण है कि प्रथम व्यक्ति दास तथा द्वितीय स्वतन्त्र है। ये दोनों समान नहीं हो सकते। कुछ कहते हैं कि यह ईमान वालों तथा काफ़िरों की तुलना है। प्रथम काफ़िर तथा द्वितीय ईमान वाला है। ये समान नहीं। कुछ कहते हैं कि यह अल्लाह तआला तथा झूठे देवताओं की तुलना है। प्रथम से तात्पर्य झूठे देवता तथा द्वितीय से अल्लाह है। ये दोनों समान नहीं हो सकते। अर्थ यही है कि एक दास तथा स्वतन्त्र, इसके उपरान्त कि दोनों मनुष्य हैं, दोनों अल्लाह की सृष्टि हैं तथा अन्य भी बहुत-सी बातें दोनों के मध्य समान हैं इसके उपरान्त मान, सम्मान मर्यादा तथा आदर में दोनों को समान नहीं समझते। तो

ही के लिए सारी प्रशंसा है, बल्कि उनमें के अधिकतर नहीं जानते।

(७६) तथा अल्लाह (तआला) एक अन्य उदाहरण वर्णन करता है[1] दो व्यक्तियों की जिन में से एक गूँगा है तथा किसी वस्तु पर अधिकार नहीं रखता, बल्कि वह अपने स्वामी पर बोझ है, कहीं भी उसे भेजे वह कोई भलाई नहीं लाता, क्या यह तथा वह जो न्याय का आदेश देता है[2] तथा है भी सीधे मार्ग पर, समान हो सकते हैं ?

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيۡنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبۡكَمُ لَا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوۡلٰٮهُۙ اَيۡنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاۡتِ بِخَيۡرٍ‌ؕ هَلۡ يَسۡتَوِىۡ هُوَ ۙ وَمَنۡ يَّاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ‌ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ۝

(७७) तथा आकाशों तथा धरती का परोक्ष केवल अल्लाह ही को ज्ञात है।[3] तथा क़ियामत की बात तो ऐसी ही है, जैसे आँख का झपकना, बल्कि इससे भी अधिक निकट। निःसंदेह

وَ لِلّٰهِ غَيۡبُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ‌ؕ وَمَاۤ اَمۡرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمۡحِ الۡبَصَرِ اَوۡ هُوَ اَقۡرَبُ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

अल्लाह तआला तथा पत्थर की एक मूर्ति अथवा एक क़ब्र की ढेरी, ये दोनों किस प्रकार समान हो सकते हैं ?

[1]यह एक अन्य उदाहरण है जो पहले से अधिक स्पष्ट है।

[2]तथा हर कार्य करने का सामर्थ्य रखता है क्योंकि हर बात बोलता तथा समझता है तथा है भी सीधे मार्ग पर अर्थात प्राकृतिक धर्म तथा सुचरित्र पर। अर्थात अधिकता एवं कमी से पवित्र। जिस प्रकार से ये दोनों समान नहीं, उसी प्रकार अल्लाह तआला तथा वे वस्तुएँ जिनको लोग अल्लाह का साझीदार ठहराते हैं, समान नहीं हो सकते।

[3]अर्थात आकाश तथा धरती में जो वस्तुएँ अप्रत्यक्ष हैं तथा वे असंख्य हैं तथा उन्हीं में क़ियामत का ज्ञान है उनका ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं। इसलिए इबादत के योग्य एक अल्लाह है न कि वे मूर्तियाँ अथवा मृत धर्मात्मा व्यक्ति जिनको किसी वस्तु का ज्ञान नहीं न वे किसी को लाभ-हानि पहुँचाने का सामर्थ्य रखते हैं।

شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝٧٧

अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है ।[1]

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨

(७८) तथा अल्लाह (तआला) ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भ से निकाला है कि उस समय तुम कुछ भी नहीं जानते थे,[2] उसी ने तुम्हारे कान तथा आँखें तथा दिल बनाये[3] कि तुम कृतज्ञता व्यक्त कर सको ।[4]

---

[1]अर्थात उसके सामर्थ्य का प्रमाण है कि यह विस्तृत विशाल सृष्टि उसके आदेश से पलक झपकने में बल्कि उससे भी कम समय में प्रलय तथा समाप्त हो जायेगी । यह बात अतिश्योक्ति के रूप में नहीं बल्कि यह एक वास्तविक घटना है क्योंकि उसका सामर्थ्य असीम है जिसका हम अनुमान भी नहीं कर सकते, उसके एक शब्द कुन كن से वह सब कुछ हो जाता है जो वह चाहता है । तो यह क़ियामत भी उसके كن कुन कहने से हो जायेगी ।

[2] شَيْـًٔا जाति वाचक है, तुम कुछ नहीं जानते थे, न शुभ-अशुभ को, न लाभ हानि को ।

[3]ताकि कानों द्वारा तुम स्वर सुनो, आँखों के द्वारा वस्तुओं को देखो तथा हृदय अर्थात बुद्धि (क्योंकि बुद्धि का केन्द्र हृदय है) दी, जिससे वस्तुओं के मध्य अन्तर कर सको तथा लाभ-हानि पहचान सको, ज्यों-ज्यों मनुष्य बड़ा होता जाता है, उसकी शक्ति तथा बुद्धि में वृद्धि होती जाती है यहाँ तक कि जब मनुष्य समझ तथा वयस्क आयु को पहुँचता है, तो उसकी क्षमता भी शक्तिशाली हो जाती है, यहाँ तक कि फिर पूर्णता की सीमा को पहुँच जाती है ।

[4]अर्थात यह क्षमता तथा शक्ति अल्लाह तआला ने इसलिए प्रदान की हैं कि मनुष्य इन अंगों-प्रत्यंगों को इस प्रकार प्रयोग करे कि जिससे अल्लाह तआला प्रसन्न हो जाये । उनसे अल्लाह की इबादत तथा आज्ञा पालन करे । यही अल्लाह के उन उपहारों की व्यवहारिक कृतज्ञता है । हदीस में आता है, मेरा भक्त जिन वस्तुओं के द्वारा मेरी निकटता प्राप्त करता है उनमें सबसे अधिक प्रिय वस्तुयें वह हैं जो मैंने उस पर अनिवार्य की हैं । इसके अतिरिक्त ऐच्छिक इबादत के द्वारा भी वह मेरी अधिक निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करता है यहाँ तक कि मैं उससे प्रेम करने लग जाता हूँ । तथा जब मैं उससे प्रेम करने लग जाता हूँ तो मैं उसका कान हो जाता हूँ जिससे वह सुनता है, आँख हो जाता हूँ जिससे वह देखता है, हाथ हो जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है, पैर बन जाता हूँ जिससे वह चलता है तथा यदि वह मुझसे प्रश्न करता है तो मैं उसे प्रदान करता हूँ

(७९) क्या उन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो आज्ञा के अधीन बँधे हुए आकाश में हैं, जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं थामे हुए है ।[1] निःसंदेह इसमें ईमान लाने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं ।

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَٰتٍ فِي جَوِّ السَّمَاءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾

(८०) तथा अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों में निवास स्थान बना दिया है, और उसी ने तुम्हारे लिये पशुओं की खालों के घर बना दिये हैं, जिन्हें तुम हल्का पाते होअपने प्रस्थान के दिन तथा अपने पड़ाव के दिन भी,[2] तथा उनके ऊन, रोयें तथा बालों से भी उसने बहुत-सी वस्तुएँ तथा एक निर्धारित समय तक के लिए लाभ की वस्तुएँ बना दीं ।[3]

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٨٠﴾

तथा मुझसे किसी वस्तु से मुक्ति चाहता है तो मैं उसे शरण देता हूँ । (सहीह बुख़ारी किताबुर रिक़ाक़ बाबुत तवाज़ुअ) इस हदीस का ग़लत भाव लेकर कुछ लोग महात्माओं को अल्लाह की शक्ति धारणकर्त्ता बना देते हैं । यद्यपि कि हदीस का स्पष्ट अर्थ यह है कि जब भक्त अपनी इबादत तथा आज्ञा पालन को शुद्ध रूप से अल्लाह ही के लिए कर लेता है,तो उसका प्रत्येक कार्य अल्लाह की प्रसन्नता के लिए होता है, अपने कानों से वही बात सुनता है तथा अपनी आँखों से वही वस्तु देखता है जिसकी अल्लाह ने आज्ञा प्रदान की है, जिस वस्तु को हाथ से पकड़ता है तथा पैरों से चलकर उस ओर जाता है, तो वह वही वस्तु होती है जिसको धार्मिक नियमों ने मान्यता दी हो । वह उनको अल्लाह की अवज्ञा के लिए प्रयोग नहीं करता केवल आज्ञा पालन में प्रयोग करता है ।

[1]यह अल्लाह तआला ही है जिसने पक्षियों को इस प्रकार उड़ने की तथा हवाओं को उन्हें अपने ऊपर उठाये रखने की शक्ति प्रदान की ।

[2]अर्थात चमड़े के खेमें जिन्हें तुम यात्राओं में सरलतापूर्वक उठाये फिरते हो, तथा जहाँ आवश्यक पड़ती है तान कर ऋतु की तीब्रता से अपने को सुरक्षित कर लेते हो ।

[3] أصواف बहुवचन है صوفٌ का । भेड़ का ऊन । أوبارٌ बहुवचन है وبرٌ का, ऊँट के बाल, أشعار बहुवचन है شَعَرٌ का, भेड़ तथा बकरी के बाल । इनसे नाना प्रकार की वस्तुएँ

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَّجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُم بَأْسَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾

(८१) तथा अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई वस्तुओं में से छाया बनायी है।[1] तथा उसी ने तुम्हारे लिए पर्वतों में गुफ़ा बनायी हैं तथा उसी ने तुम्हारे लिए वस्त्र बनाये हैं जो तुम्हें गर्मी से सुरक्षित रखें तथा ऐसे कवच भी जो तुम्हें युद्ध के समय काम आयें।[2] वह इसी प्रकार अपने पूरे-पूरे उपहार प्रदान कर रहा है कि तुम आज्ञा पालक बन जाओ।

فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٨٢﴾

(८२) फिर भी यदि ये मुख मोड़े रहें, तो आप पर केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।

يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٣﴾

(८३) ये अल्लाह के उपहार जानते-पहचानते हुए भी उनको नकार रहे हैं, बल्कि उनमें से अधिकतर कृतघ्न हैं।[3]

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ

(८४) तथा जिस दिन हम हर समुदाय में से गवाह खड़ा करेंगे फिर काफ़िरों को न तो

बनती हैं, जिनसे मनुष्य को धन अर्जित होता है तथा उनसे एक समय तक लाभ भी उठाया जाता है।

[1]अर्थात वृक्ष जिनसे छाया प्राप्त करते हो।

[2]अर्थात ऊन तथा रूई के कुर्ते-कमीज़ तथा अन्य वस्त्र जो सामान्यत: पहनने में आते हैं तथा लोहे की कवच तथा मुकुट जो युद्ध में पहना जाता है।

[3]अर्थात इस बात को जानते तथा समझते हैं कि ये सारी सुख-सुविधायें उत्पन्न करने वाला तथा उनका प्रयोग में लाने की क्षमता प्रदान करने वाला केवल अल्लाह तआला ही है, फिर भी अल्लाह को नहीं मानते तथा अधिकतर कृतघ्न होते हैं। अर्थात अल्लाह को छोड़कर अन्यों की पूजा करते हैं।

يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾

आज्ञा दी जायेगी तथा न क्षमा-याचना करने को कहा जायेगा ।[1]

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा जब ये अत्याचारी लोग यातना देख लेंगे, फिर न तो उनसे हल्की की जायेगी तथा न वे ढील दिये जायेंगे ।[2]

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ ۖ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾

(८६) तथा जब मिश्रणवादी अपने भागीदारों को देख लेंगे, तो कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! यही हमारे साझीदार हैं, जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारा करते थे । फिर वे उनको उत्तर देंगे कि तुम पूरे ही झूठे हो ।[3]

---

[1]अर्थात प्रत्येक अनुयायियों के गुट पर उस अनुयायी गुट का पैग़म्बर गवाही देगा कि उन्हें अल्लाह का संदेश पहुँचा दिया गया था । परन्तु उन्होंने उसकी चिन्ता नहीं की । इन काफ़िरों को कारण बताने का समय भी नहीं दिया जायेगा, क्योंकि वास्तव में उनके पास कोई कारण अथवा तर्क होगा ही नहीं । न उनसे पलटने तथा यातना दूर करने की माँग की जायेगी । क्योंकि इसकी आवश्यकता उस समय आती है जब किसी को अवसर देने का विकल्प हो । لا يُستَعتبون के एक अन्य अर्थ यह किये गये हैं कि उन्हें अपने प्रभु को प्रसन्न करने का अवसर नहीं प्रदान किया जायेगा क्योंकि वह समय उनको संसार में दिया जा चुका है जो कर्मशाला है । परलोक तो कर्मशाला नहीं, वह तो प्रतिकार का घर है, वहाँ तो उस चीज़ का बदला मिलेगा, जो मनुष्य संसार से करके गया होगा, वहाँ कुछ करने का अवसर किसी को नहीं मिलेगा ।

[2]हल्का न करने का अर्थ, मध्य में कोई विराम नहीं होगा, यातना निरन्तर बिना किसी प्रकार के विलम्ब के होगी । तथा न ढील ही दी जायेगी अर्थात उन्हें तुरन्त कसकर पकड़ लिया जायेगा तथा जंजीरों से जकड़कर नरक में फेंक दिया जायेगा अथवा क्षमा माँगने का अवसर भी प्रदान नहीं किया जायेगा । क्योंकि परलोक कर्मस्थली नहीं बदला प्राप्त करने का स्थान है ।

[3]झूठे देवताओं की पूजा करने वाले अपने दावे में झूठे तो नहीं होंगे परन्तु वे देवी-देवता जिनको ये अल्लाह का साझीदार बताते थे, कहेंगे ये झूठे हैं । यह या तो साझीदारी को नकारना है अर्थात हमें अल्लाह तआला का साझीदार बनाने में ये झूठे हैं, भला अल्लाह का साझीदार कौन हो सकता है ? अथवा इसलिए उन्हें झूठा बतायेंगे कि

وَ اَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ِالسَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा उस दिन वे सब (विवश होकर) अल्लाह. के सामने आज्ञाकारी होना स्वीकार करेंगे तथा जो आक्षेप लगाया करते थे, वह सब उनसे खो जायेंगे।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) जिन्होनें अधर्म (कुफ्र) किया तथा अल्लाह के मार्ग से रोका हम उन्हें प्रकोप पर प्रकोप बढ़ाते जायेंगे, [1] यह प्रतिकार होगा उनके उपद्रव उत्पन्न करने का।

वे उनकी पूजा से कदापि अनभिज्ञ थे। जिस प्रकार कुरआन करीम ने विभिन्न स्थानों पर इस बात का वर्णन किया है।

﴿ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴾

"हमारे तथा तुम्हारे मध्य अल्लाह ही पर्याप्त गवाह है कि हम इस बात से अनभिज्ञ थे कि तुम हमारी पूजा करते थे।" (*सूर: यूनुस*-२९)

अन्य स्थान पर भी देखिये *सूर: अल-अहक़ाफ़* आयत ५ तथा ६, *सूर: मरियम*-८१ तथा ८२, *सूर: अल-अनकबूत*-२५, *सूर: अल कहफ़*-५२ आदि। एक यह अर्थ भी हो सकता है कि हमने तुम्हें अपनी पूजा करने के लिए कभी नहीं कहा था, इसलिए तुम ही झूठे हो। यह देवी-देवता यदि पत्थर तथा वृक्ष होंगे तो अल्लाह तआला उन्हें बोलने की शक्ति प्रदान करेगा, जिन्नात तथा शैतान होंगे तो कोई शंका ही नहीं है तथा यदि अल्लाह के पुण्यात्मा व्यक्ति होंगे, जिस प्रकार से लोग पुण्यात्मा व्यक्तियों, महात्मा एवं अल्लाह की निकटता प्राप्त लोगों को पुकारते हैं, उनके नाम का भोग तथा प्रसाद चढ़ाते हैं तथा उनकी कब्रों पर जाकर उनका उसी प्रकार मान-सम्मान करते हैं जिस प्रकार ईष्टदेव का, भय तथा आशा के भाव के साथ किया जाता है। तो अल्लाह तआला उनको हश्र के मैदान में मुक्ति प्रदान कर देगा तथा उनकी पूजा करने वालों को नरक में डाल दिया जायेगा। जैसाकि आदरणीय ईसा से अल्लाह तआला का प्रश्न तथा उनका उत्तर *सूर: मायद:* के अन्त में वर्णित है।

[1]जिस प्रकार स्वर्ग में ईमान वालों के विभिन्न पद होंगे, उसी प्रकार नरक में काफ़िरों की यातना में भिन्नता होगी। जो भटके हुए होने के साथ अन्य लोगों को भटकाने का कारण बने होंगे, उनकी यातना अन्यों की अपेक्षा तीव्र होगी।

(८९) तथा जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय में उन्हीं में से उनके ऊपर गवाह खड़ा करेंगे तथा तुझे उन सब पर गवाह बनाकर लायेंगे ।[1] तथा हमने तुझ पर यह किताब उतारी है जिसमें हर बात का स्वच्छ वर्णन है[2] तथा मार्गदर्शन एवं कृपा तथा शुभसूचना है मुसलमानों के लिए ।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

(९०) निःसंदेह अल्लाह (तआला) न्याय का, भलाई का तथा निकट सम्बन्धियों के साथ सदव्यवहार करने का आदेश देता है तथा निर्लज्जता के कार्यों तथा दुराचारों एवं अत्याचार तथा क्रूरता से रोकता है।[3] वह

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

---

[1]अर्थात प्रत्येक नबी अपने अनुयायियों पर गवाही देगा तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायी नबियों के विषय में गवाही देंगे कि ये सच्चे हैं, उन्होंने निःसंदेह तेरा सन्देश पहुँचा दिया था। (सहीह बुखारी तफ़सीर सूरः निसा)

[2]किताब से तात्पर्य अल्लाह की किताब तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की व्याख्या अर्थात हदीस है। अपनी हदीसों को भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की किताब कहा है । जैसाकि उसैफ़ की कथा आदि में है। (देखिये सहीह बुखारी किताबुल मुहारेबीन बाब हल यामुरू इमाम रजुलन फ़यज़रेबुल हद ग़ायबन अन्ह, किताबुस सलात बाबु ज़िक्रुल बैये वश शेराअे अलल मिम्बर फ़िल मस्जिद) तथा प्रत्येक वस्तु का अर्थ है भूत तथा भविष्य की वे सूचनायें, जिनका ज्ञान आवश्यक एवं लाभदायक है। उसी प्रकार मान्य तथा निषेध का विवरण तथा वे बातें जिन का धर्म एवं संसार तथा व्यवसाय एवं जीविका के सम्बन्ध में मनुष्य बाध्य है। क़ुरआन तथा हदीस दोनों में यह सब बातें स्पष्ट कर दी गयी हैं।

[3]न्याय का साधारण अर्थ निष्पक्ष निर्णय करना है अर्थात अपनों-बेगानों सबके साथ न्याय किया जाये। किसी के साथ शत्रुता तथा बैर अथवा प्रेम तथा सम्बन्ध के कारण न्याय के नियमों का उल्लंघन न हो। एक अन्य अर्थ संतुलन है अर्थात किसी मामले में अधिकता अथवा कमी न की जाये। यहाँ तक कि धर्म के विषय में भी। क्योंकि धर्म में अत्यधिकता अतिश्योक्ति है, जो अत्यधिक निन्दनीय है तथा कमी, धर्म के कार्य में आलस्य है यह भी अप्रिय है। उपकार का एक अर्थ सदव्यवहार, क्षमा है। दूसरा अर्थ

स्वयं तुमको शिक्षा दे रहा है, ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो।

(९१) तथा अल्लाह से किये हुए वचन को पूरा करो, जबकि तुम आपस में वचन तथा अनुबन्ध करो तथा सौगन्धों को उनकी दृढ़ता के पश्चात मत तोड़ो, जबकि तुम अल्लाह (तआला)

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدتُّمْ وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ

आधिक्य के है अर्थात देय अधिकार से अधिक देना अथवा अनिवार्य कर्म से अधिक कर्म करना ।जैसे किसी की मज़दूरी सौ रूपये तय की है, परन्तु देते समय दस-बीस रूपये अधिक देना क्योंकि निर्धारित मज़दूरी सौ रूपये थी जो मज़दूर का वास्तविक अधिकार है तथा यह न्याय है। दस-बीस रूपये अधिक देना यह उपकार है। न्याय से समाज में शान्ति स्थापित होती है, परन्तु उपकार से अधिक प्रेमभाव तथा अपनापन उत्पन्न होता है। तथा अनिवार्य कर्म के पूर्णरूप से करने के उपरान्त ऐच्छिक कर्म का प्रबन्ध करना, आवश्यक कर्म से अधिक कर्म है जिससे अल्लाह तआला की विशेष निकटता प्राप्त होती है। उपकार का एक तीसरा अर्थ है पवित्र कर्म तथा इबादत की सुन्दरता। जिसको हदीस में «أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ». (अल्लाह की इबादत इस प्रकार करो कि जैसे तुम उसे देख रहे हो) कहा गया है إيتاء ذي القربى (सम्बन्धियों के अधिकारों को अदा करना अर्थात उनकी सहायता करना) इसे हदीस में सम्बन्ध का जोड़ना कहा गया है तथा इस पर अत्यधिक बल हदीस में दिया गया है। न्याय, तथा उपकार के वर्णन के पश्चात इसका अलग से वर्णन यह भी सम्बन्ध के जोड़ने के महत्व को स्पष्ट कर रहा है। فحشاء से तात्पर्य निर्लज्जता के कर्म हैं। आजकल निर्लज्जता इतना सामान्य हो गयी है कि उसका नाम संस्कृति, उन्नति तथा कला पड़ गया है अथवा "मनोरंजन" के नाम पर उसका औचित्य मान लिया गया है। परन्तु मात्र सुन्दर आवरण से किसी वस्तु की वास्तविकता नहीं बदली जा सकती, इसी प्रकार इस्लामी धार्मिक नियमों में बलात्कार तथा उसके साधन, नाच, गाने, नग्नता तथा फैशन को, स्त्री-पुरूष के निर्लज्जता पूर्ण मिश्रण तथा मिश्रित समाज तथा अन्य इसी प्रकार के कुकर्मों को निर्लज्जता कहा गया है, इनका कितना ही अच्छा नाम रख लिया जाये, पाश्चात्य देश से आयातित कुकर्म मान्यता नहीं प्राप्त कर सकते। مُنكر हर वह कार्य है जिसे धार्मिक मियमों से अप्रिय घोषित कर दिया गया है ।तथा بغيٌ का अर्थ अत्याचार तथा क्रूरता करना है। एक हदीस में बताया गया है कि सम्बन्ध विच्छेद तथा بغي ये दोनों अपराध अल्लाह को इतने अप्रिय हैं कि अल्लाह तआला की ओर से (परलोक के अतिरिक्त) दुनिया में भी उनके शीघ्र दण्ड की सम्भावना का भय रहता है। (इब्ने माजः किताबुज़ जोहद बाबुल बग़्ये)

-को अपना उत्तरदायी ठहरा चुके हो।[1] तुम जो कुछ करते हो अल्लाह तआला उसे भली-भाँति जानता है।

عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾

(९२) तथा उस (स्त्री) की भाँति न हो जाना कि जिसने अपना सूत मज़बूत कातने के उपरान्त टुकड़े-टुकड़े तोड़ दिया,[2] कि तुम अपनी सौगन्धों को आपस में छल-कपट का कारण बनाओ[3] इसलिए कि एक गुट दूसरे गुट से ऊँचा हो जाये।[4] बात केवल यही है कि इस वचन से अल्लाह तुम्हारी परीक्षा ले रहा है। नि:संदेह अल्लाह तआला तुम्हारे लिए

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا ۚ تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾

---

[1]शपथ एक तो वह है जो किसी संधि अथवा वचन के समय, उसे पक्का करने के लिए खायी जाती है। दूसरी शपथ वह है जो मनुष्य अपने रूप से किसी समय भी ले लेता है कि अमुक कार्य करूँगा अथवा नहीं करूँगा। यहाँ आयत में प्रथम वर्णित शपथ का तात्पर्य है कि तुमने सौगन्ध खायी है। क्योंकि द्वितीय वर्णित सौगन्ध के विषय में हदीस में आदेश दिया गया है कि कोई व्यक्ति किसी कार्य के लिए भी सौगन्ध खा ले, फिर देखे कि अधिक पुण्य दूसरे कर्म में है (अर्थात सौगन्ध के विरूद्ध करने में है) तो वह पुण्य का कार्य करे तथा सौगन्ध को तोड़कर उसका कफ्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करे (सहीह मुस्लिम संख्या १२७२) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यवहार भी यही था। (सहीह बुख़ारी संख्या ६६२३ तथा मुस्लिम संख्या १२६९)

[2]शपथ द्वारा दिया गया वचन को तोड़ देना ऐसा ही है जैसे कोई स्त्री सूत कातने के पश्चात उसे स्वयं ही टुकड़े-टुकड़े कर डाले। यह उपमा है।

[3]अर्थात धोखा, छल-कपट का साधन बनाओ।

[4] أربى का अर्थ अधिक है अर्थात जब तुम देखो कि तुम अधिक हो गये तो अपनी अधिक संख्या के गर्व में सौगन्ध तोड़ दो, जबकि सौगन्ध तथा सन्धि के समय वह गुट कमज़ोर था, परन्तु कमज़ोरी के उपरान्त भी वह निश्चिन्त था कि सन्धि के कारण हमें हानि नहीं पहुँचायी जायेगी। परन्तु तुम विश्वासघात तथा सन्धि को तोड़कर हानि पहुँचाओ। अज्ञान काल में चरित्रहीनता के कारण इस प्रकार सन्धि विच्छेद सामान्य रूप से व्याप्त था। मुसलमानों को इस चरित्रहीनता से रोका गया।

क़ियामत के दिन हर उस वस्तु को स्पष्ट करके वर्णन कर देगा, जिसमें तुम मतभेद कर रहे थे।

(९३) तथा यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो तुम सबको एक मत बना देता परन्तु वह जिसे चाहे भटका देता है तथा जिसे चाहे मार्गदर्शन देता है। निःसंदेह तुम जो कुछ कर रहे हो उसकी पूछताछ की जाने वाली है।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

(९४) तथा तुम अपनी सौगन्धों को आपस के छल-कपट का साधन न बनाओ। फिर तो तुम्हारे पग अपनी स्थिरता के पश्चात डगमगा जायेंगे तथा तुम्हें कठोर दण्ड चखना पड़ जायेगा क्योंकि तुमने अल्लाह के मार्ग से रोक दिया तथा अत्यधिक घोर यातना दी जायेगी।[1]

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْۗءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝

(९५) तथा तुम अल्लाह के वादे को तुच्छ मूल्य के बदले न बेच दिया करो। याद रखो, अल्लाह

وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ

---

[1]मुसलमानों को पुनः उपरोक्त वचन भंग करने से रोका गया है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे इस नैतिक पतन के कारण किसी के पग डगमगा जाये तथा काफ़िर तुम्हारा यह व्यवहार देखकर इस्लाम धर्म धारण करने से रूक जाये तथा इस प्रकार तुम लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकने के अपराधी तथा दण्ड के अधिकारी बन जाओ। कुछ व्याख्याकारों ने أَيْمَانٌ [यमीन (सौगन्ध) के अर्थ में] का बहुवचन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बैयअत (अर्थात वचन देना) तात्पर्य लिया है। अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की (*बैयअत*) अर्थात आप से किये वचन को तोड़कर फिर धर्म से न फिरना क्योंकि तुम्हारे धर्म परिवर्तन को देखकर अन्य भी इस्लाम धर्म धारण करने से रूक जायेंगे तथा इस प्रकार तुम दुगुनी यातना के अधिकारी बन जाओगे। (फ़तहुल क़दीर)

تَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٩٥

के पास की वस्तु ही तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम में ज्ञान हो।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝٩٦

(९६) तुम्हारे पास जो कुछ है सब नाशवान है तथा अल्लाह के पास जो कुछ है स्थाई रहने वाला है। तथा धैर्य रखने वालों को हम अच्छे कर्मों का उत्तम बदला अवश्य प्रदान करेंगे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝٩٧

(९७) जो व्यक्ति पुण्य के कार्य करे नर हो अथवा नारी, और वह ईमानवाला हो तो हम उसे नि:संदेह सर्वोत्तम जीवन प्रदान करेंगे।[1] तथा उनके पुण्य के कार्यों का उत्तम बदला भी उन्हें अवश्य देंगे।

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝٩٨

(९८) क़ुरआन पढ़ते समय धिक्कारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण माँगा करो।[2]

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝٩٩

(९९) ईमानवालों तथा अपने प्रभु पर भरोसा रखने वालों पर उसका कदापि ज़ोर नही चलता।

---

[1]पवित्र जीवन से तात्पर्य सांसारिक जीवन है, इसलिए कि परलोक के जीवन का वर्णन अगले वाक्य में है तथा अर्थ यह है कि सदाचारी मुसलमान को सत्य संयमशील जीवन व्यतीत करने तथा अल्लाह की इबादत तथा आज्ञापालन एवं भक्ति तथा संतोष में जो स्वाद तथा मिठास प्रतीत होता है, वह एक काफ़िर तथा अवज्ञाकारी को दुनिया भर के सुख-सुविधाओं के उपरान्त भी प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह एक व्यग्रता तथा अशान्ति का शिकार रहता है।

﴿ وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا ﴾

"जो मेरी याद से विमुख हुआ, उसका निर्वाह संकीर्ण होगा।" (सूर: *ताहा*-१२४)

[2]सम्बोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है परन्तु सम्बोधित सम्पूर्ण मुसलमान हैं। अर्थात क़ुरआन पढ़ने के प्रारम्भ में (أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ) पढ़ा जाये।

(१००) हाँ, उसका प्रभाव उन पर अवश्य है जो उससे मित्रता करें तथा उसे अल्लाह का साझीदार बनायें।	إِنَّمَا سُلْطَٰنُهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُۥ وَٱلَّذِينَ هُم بِهِۦ مُشْرِكُونَ ۝١٠٠
(१०१) तथा जब हम किसी आयत के स्थान पर अन्य आयत बदल देते हैं तथा जो कुछ अल्लाह (तआला) उतारता है, उसे वह भली-भाँति जानता है, तो यह कहते हैं कि तू तो आक्षेप लगाने वाला है। बात यह है कि उनमें से अधिकतर जानते ही नहीं।[1]	وَإِذَا بَدَّلْنَآ ءَايَةً مَّكَانَ ءَايَةٍ ۙ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوٓا۟ إِنَّمَآ أَنتَ مُفْتَرٍۭ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝١٠١
(१०२) आप कह दीजिए कि उसे आपके पालन-हार की ओर से जिब्रील सत्य के साथ लेकर आये हैं,[2] ताकि ईमान वालों को अल्लाह	قُلْ نَزَّلَهُۥ رُوحُ ٱلْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِٱلْحَقِّ لِيُثَبِّتَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟

---

[1]अर्थात एक आदेश निरस्त करके उसके स्थान पर दूसरा आदेश अवतरित करते हैं। जिसका भेद तथा कारण अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है तथा उसके अनुसार आदेशों में फेरबदल करता है, तो काफ़िर कहते हैं कि यह कथन हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरा अपना गढ़ा हुआ है क्योंकि अल्लाह तआला ऐसा नहीं कर सकता। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उनके अधिकतर लोग अज्ञानी हैं, इसलिए यह निरस्त करने का कारण तथा भेद क्या जानें (और अधिक जानकारी के लिए देखिए *सूरः अल-बक़रः* आयत १०६ की व्याख्या)

[2]अर्थात यह क़ुरआन मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बनाया हुआ नहीं है। अपितु इसे आदरणीय जिब्रील जैसे महान फ़रिश्ते ने सत्यता के साथ प्रभु की ओर से उतारा है। जैसे अन्य स्थान पर है।

﴿ نَزَلَ بِهِ ٱلرُّوحُ ٱلْأَمِينُ ۝ عَلَىٰ قَلْبِكَ ﴾

"उसे सत्यात्मा (जिब्रील) ने तेरे हृदय पर उतारा है।" (*सूरः अल-शुअरा*-१९३,१९४)

(तआला) स्थिरता प्रदान करे[1] तथा मुसलमानों के लिए मार्गदर्शन तथा शुभसूचना हो जाये।[2]

وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾

(१०३) तथा हमें भली-भाँति ज्ञात है जो काफ़िर कहते हैं कि उसे तो एक आदमी सिखाता है[3] उसकी भाषा जिसकी ओर यह संबन्धित कर रहे हैं अजमी (स्वच्छ अरबी भाषा नहीं) है। तथा यह क़ुरआन तो स्वच्छ अरबी भाषा में है।[4]

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾

(१०४) जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं रखते, उन्हें अल्लाह की ओर

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ

---

[1]इसलिए कि वे कहते हैं कि निरस्त तथा परिवर्तित दोनों ही प्रभु की ओर से हैं। इसके अतिरिक्त, निरस्तता के कारण एवं रहस्य भी जब उनके सामने आते हैं, तो उनके अन्दर और अधिक स्थायित्व एवं ईमान में दृढ़ता आती है।

[2]तथा यह क़ुरआन मुसलमानों के लिए मार्गदर्शन एवं शुभसूचना का साधन है क्योंकि क़ुरआन भी वर्षा के समान है, जिससे धरती का कुछ भाग अत्यधिक हरा-भरा होता है तथा कुछ में काँटें एवं सूखी घास के अतिरिक्त कुछ नहीं उगता। ईमानवालों का हृदय पवित्र एवं उज्ज्वल है, जो क़ुरआन की महिमा से तथा ईमान के प्रकाश से प्रकाशित होता है तथा काफ़िर का हृदय ऊसर भूमि की तरह है, जो कुफ्र एवं मार्गभ्रष्टता (गुमराही) के अंधकार से परिपूर्ण है, जहाँ क़ुरआन की ज्योति का भी प्रभाव नहीं होता।

[3]कुछ दास थे जो तौरात तथा इंजील से अवगत थे, पहले वे यहूदी अथवा इसाई थे, फिर मुसलमान हो गये उनकी भाषा भी अस्वच्छ थी, मक्का के मूर्तिपूजक कहते थे कि अमुक दास मोहम्मद को क़ुरआन सिखाता है।

[4]अल्लाह तआला ने उत्तर में कहा कि यह जिस व्यक्ति, अथवा व्यक्तियों का नाम लेते हैं वह तो अरबी भाषा भी उचित ढंग से नहीं बोल सकते, जबकि क़ुरआन तो ऐसी स्वच्छ अरबी भाषा में है जो प्रभावशाली, हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक वर्णन में अतुलनीय है तथा चैलेंज के उपरान्त भी इसके समान एक अंश भी बनाकर प्रस्तुत नहीं कर सकते। अरबी भाषा में उस व्यक्ति को अजमी (गूँगा) कहते थे जो स्वच्छ एवं सरल भाषा बोलने योग्य नहीं होता था तथा ग़ैर अरबी भाषी को भी अजमी कहा जाता है कि अजमी भाषाओं में प्रवाह तथा प्रभाव में अरबी भाषा की तुलना नहीं कर सकतीं।

عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾

से भी मार्गदर्शन प्राप्त नहीं होता तथा उनके लिए दुखदायी यातना है।

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٠٥﴾

(१०५) मिथ्या आरोप तो वही लगाते हैं जिन्हें अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं होता। और यही लोग झूठे हैं।[1]

مَن كَفَرَ بِاللَّهِ مِن بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِن مَّن شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾

(१०६) जो व्यक्ति अपने ईमान के पश्चात अल्लाह से कुफ्र करे उसके सिवाय जिसे बाध्य किया जाये तथा उसका दिल ईमान पर स्थिर हो,[2] परन्तु जो लोग खुले दिल से कुफ्र करें, तो उन पर अल्लाह का क्रोध है तथा उन्हीं के लिए बहुत बड़ी यातना है।[3]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ

(१०७) यह इसलिए कि उन्होंने साँसारिक जीवन को पारलौकिक जीवन से प्रियतर समझा।

---

[1]तथा हमारा पैग़म्बर ईमानदारों का प्रमुख तथा उनका अगुवा है, वह किस प्रकार अल्लाह पर झूठ बाँध सकता है कि यह किताब अल्लाह की ओर से उस पर अवतरित न हुई हो तथा वह झूठ ही कह दे कि यह किताब मुझ पर अल्लाह की ओर से अवतरित हुई है। इसलिए झूठा हमारा पैग़म्बर नहीं, वे स्वयं झूठे हैं जो क़ुरआन के अल्लाह की ओर से अवतरित होने को स्वीकार नहीं करते।

[2]ज्ञानियों की इस बात पर सहमति है कि जिस व्यक्ति को कुफ्र के लिए बाध्य किया जाये तथा वह प्राण रक्षा के लिए कर्म तथा वचन से कुफ्र करे, जबकि उसका हृदय ईमान पर दृढ़ है, तो वह काफ़िर नहीं होगा, न उसकी पत्नी उससे अलग होगी तथा न उस पर अन्य कुफ्र के आदेश लागू किये जायेंगे। क़ुर्तबी का यह कथन है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह धर्म त्याग का दण्ड है कि वह अल्लाह के क्रोध तथा घोर यातना के अधिकारी होंगे तथा उसका साँसारिक दण्ड हत्या है। जैसाकि हदीस में है (अन्य जानकारी के लिए देखिए *सूरः बक़रः* आयत २१७ तथा २५६ की व्याख्या)

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٠٧

नि:संदेह अल्लाह (तआला) काफ़िर लोगों का मार्गदर्शन नहीं करता ।[1]

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۚ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝١٠٨

(१०८) यह वे लोग हैं जिनके दिलों पर तथा जिनके कानों एवं जिनकी आँखो पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है तथा यही लोग अचेत हैं ।[2]

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝١٠٩

(१०९) कोई संदेह नहीं कि यही लोग आख़िरत में अधिक हानि उठाने वाले हैं ।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١١٠

(११०) जिन लोगों ने परीक्षा में डाले जाने के पश्चात (धार्मिक कारणों से) स्थानान्तरण किया फिर धर्मयुद्ध किया एवं धैर्य का प्रदर्शन किया । नि:संदेह तेरा प्रभु इन बातों के पश्चात उन्हें क्षमा करने वाला तथा कृपा करने वाला है ।[3]

---

[1]यह ईमान के पश्चात कुफ्र का मार्ग अपनाने (अधर्मी हो जाने) का कारण है कि उन्हें एक तो दुनिया से प्रेम है । दूसरे अल्लाह के दरबार में यह मार्गदर्शन के योग्य ही नहीं हैं ।

[2]तो ये शिक्षा-दीक्षा की बातें सुनते हैं न उन्हें समझते हैं तथा न वे निशानियाँ (लक्षण) देखते हैं जो उन्हे सत्य की ओर ले जाने वाली हैं बल्कि वे ऐसे अवचेतन में घिरे हुए हैं जिसने प्रकाश के मार्ग उनके लिए बन्द कर दिये हैं ।

[3]यह मक्के के उन मुसलमानों का वर्णन है जो कमज़ोर थे तथा इस्लाम धर्म धारण करने के कारण काफ़िरों के अत्याचार तथा क्रूरता का निशाना बने रहे । अन्तत: उन्हें स्थानान्तरण का आदेश दिया गया तो वे अपने सगे सम्बन्धियों, देश तथा धरती एवं माल तथा भूमि सब कुछ छोड़कर इथोपिया अथवा मदीना चले गये, फिर जब काफ़िरों के साथ युद्ध का अवसर आया तो वीरता पूर्ण लड़ने के लिए धर्मयुद्ध में पूर्णरूप से भाग लिया तथा फिर उस मार्ग की कठिनाईयों एवं दुखों को धैर्य के साथ सहन किया । इन सभी बातों के पश्चात नि:संदेह उनके लिए तुम्हारा प्रभु दयालु एवं कृपालु है अर्थात प्रभु की दया एवं कृपा की प्राप्ति के लिए ईमान तथा पुण्य के कर्म का होना आवश्यक है । जैसाकि वर्णित मुहाजिरों ने ईमान तथा कर्म का सर्वोत्तम प्रदर्शन किया, तो प्रभु की दया एवं कृपा से वे सफल हुए ।

(१११) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए लड़ता-झगड़ता आयेगा[1] तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का पूरा बदला दिया जायेगा तथा लोगों पर कदापि अत्याचार न किया जायेगा ।[2]

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَن نَّفْسِهَا وَتُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١١١﴾

(११२) तथा अल्लाह (तआला) उस बस्ती का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो पूर्ण सुख-शान्ति से थी, उसकी जीविका उसके पास सम्पन्नता के साथ प्रत्येक मार्ग से चली आ रही थी। फिर उसने अल्लाह (तआला) के अनुकम्पाओं का इंकार किया, तो अल्लाह (तआला) ने उसे भूख तथा भय का स्वाद चखा दिया, जो बदला था उनके करतूतों का ।[3]

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّن كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾

---

[1]अर्थात कोई अन्य किसी की सहायता के लिए नहीं आयेगा न पिता, न भाई,न पुत्र, न पत्नी, न कोई अन्य। बल्कि एक-दूसरे से भागेंगे। भाई-भाई से, पुत्र माता-पिता से, पति-पत्नी से भागेगा। प्रत्येक व्यक्ति को केवल अपनी ही चिन्ता होगी जो उसे दूसरे से निश्चिन्त कर देगी।

[2]अर्थात पुण्य के फल में कमी कर दी जाये तथा बुराई का प्रतिकार बढ़ा दिया जाये ऐसा नहीं होगा, किसी पर तनिक भी अत्याचार न होगा। बुराई का केवल उतना ही बदला मिलेगा, जितना होगा। परन्तु पुण्य का बदला अल्लाह तआला ख़ूब बढ़ा-चढ़ाकर कर देगा तथा यह उसके उपकार एवं दया का प्रदर्शन होगा जो क़ियामत के दिन ईमान वालों के लिए होगा।

[3]अधिकतर व्याख्याकारों ने इस ग्राम से तात्पर्य मक्का लिया है। अर्थात इसमें मक्का तथा मक्कावासियों का वर्णन किया गया है तथा यह उस समय हुआ जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए शाप की प्रार्थना की।

«اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ، وَاجْعَلْهَا عَلَيْهِمْ سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ»

"हे अल्लाह ! मुदर (क़बीले) पर अपनी पकड़ कड़ी कर तथा उन पर अकाल को उस प्रकार से डाल जिस प्रकार से आदरणीय यूसुफ़ के समय में मिस्र में हुआ। (सहीह बुख़ारी संख्या ४८२१, सहीह मुस्लिम संख्या २१५६)"

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾

(११३) तथा उनके पास उन्हीं में से रसूल पहुँचा, फिर भी उन्होंने उसे झुठलाया, तो उन्हें प्रकोप ने आ पकड़ा [1] तथा वे थे भी अत्याचारी ।

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾

(११४) जो कुछ उचित (हलाल) तथा पवित्र जीविका अल्लाह ने तुम्हें प्रदान कर रखा है, उसे खाओ तथा अल्लाह के अनुकम्पा की कृतज्ञता व्यक्त करो, यदि तुम उसी की इबादत करते हो ।[2]

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهِلَّ

(११५) तुम पर केवल मृत तथा रक्त एवं सूअर का माँस तथा जिस चीज़ पर अल्लाह के सिवाय अन्य का नाम लिया जाये हराम (निषेध) है, [3]

अत: अल्लाह तआला ने मक्के की शान्ति को भय में तथा सम्पन्नता को भुखमरी में बदल दिया । यहाँ तक कि उनका यह हाल हो गया कि हड्डियाँ तथा वृक्षों के पत्ते खाकर जीवन निर्वाह करना पड़ा । तथा कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि यह अनिश्चित ग्राम है तथा उदाहरण के रूप में यह बात कही गई है कि उपकार को अस्वीकार करने वालों का यही हाल होगा, वे जहाँ भी हों तथा जब भी हों । इसके इस सामान्य भावार्थ से अधिकाँश व्याख्याकारों को भी इंकार नहीं है, यद्यपि इस अवतरण का कारण उनके निकट विशेष है ।

[1]इस यातना से तात्पर्य वही यातना, भय तथा भूख है जिसका वर्णन इससे पूर्व की आयत में है अथवा इससे तात्पर्य काफ़िरों की वह हत्या है जो बद्र के युद्ध में मुसलमानों के हाथों हुई ।

[2]इसका अर्थ यह हुआ कि वैध तथा पवित्र वस्तुओं को छोड़कर निषेधित तथा अपवित्र वस्तुओं का प्रयोग तथा अल्लाह को छोड़कर किसी अन्य की इबादत करना, यह अल्लाह के उपकारों की कृतघ्नता है ।

[3]यह आयत इससे पूर्व तीन बार गुज़र चुकी है । *सूर: अल-बकर:*-१७३, *सूर: अल-मायद:*-३, तथा *सूर: अल-अनआम*-१४५ में । यह चौथा स्थान है जहाँ अल्लाह तआला ने पुन: वर्णन किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस आयत में जिन चार निषेधित वस्तुओं का वर्णन है, उनसे अल्लाह तआला मुसलमानों को अति बलपूर्वक बचाना चाहता है । इसकी आवश्यक व्याख्या पूर्व में की जा चुकी है । फिर भी इसमें ﴿وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ﴾ (जिस वस्तु पर अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का नाम पुकारा जाये) जो

चौथा प्रकार है इसके भावार्थ में तर्क, कल्पना एवं व्याख्या करके शिर्क के लिए चोर दरवाज़ा खोजे जाते हैं। इसलिए उसकी कुछ और व्याख्या प्रस्तुत है।

जो पशु अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को अर्पित किया जाये, उसके विभिन्न प्रकार हैं। एक प्रकार यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की निकटता तथा प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए उसकी बलि दी जाये तथा बलि चढ़ाते समय उसी देवता, मूर्ति अथवा महात्मा का नाम लिया जाये, जिसको प्रसन्न करने का उद्देश्य हो। दूसरा प्रकार यह है कि उद्देश्य तो अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की प्रसन्नता हो परन्तु बलि अल्लाह के नाम पर दी जाये, जिस प्रकार समाधियों के पुजारियों में यह कार्य सामान्य रूप से है। वह पशुओं को महात्माओं के नाम से नामांकित करते हैं। जैसे यह बकरा अमुक पीर का है, यह गाय अमुक पीर की है, यह पशु ग्यारहवीं के लिए अर्थात शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी के लिए है आदि। तथा उनकी बलि बिस्मिल्लाह पढ़कर ही देते हैं, इसलिए वे कहते हैं कि पहली प्रकार अवश्य निषेधित है, परन्तु यह दूसरी प्रकार निषेधित नहीं, बल्कि मान्य है क्योंकि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी के नाम पर बलि नहीं दिया गया है और इस प्रकार शिर्क का मार्ग खोला गया है। जबकि विचारकों ने इस दूसरी प्रकार को भी निषेधित कहा है। इसलिए कि यह भी ﴿وَمَآ أُهِلَّ لِغَيْرِ ٱللَّهِ بِهِۦ﴾ में सम्मिलित है, अतः बैदावी की व्याख्या में है "हर वह पशु जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का नाम पुकारा जाये, निषेध है, यद्यपि बलि देते समय उस पर अल्लाह ही का नाम लिया गया हो। इसलिए धर्मज्ञानी सहमत हैं कि मुसलमान यदि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की निकटता प्राप्त करने के लिए पशु की बलि देगा तो वह विधर्मी हो जायेगा तथा उसकी बलि विधर्मी की बलि होगी।" तथा हनफ़ी विचार की प्रख्यात पुस्तक 'दुर्रे मुख़्तार' में है, "किसी अधिकारी तथा उसी प्रकार किसी उच्च अधिकारी के आगमन पर (उसकी मेहमानी के लिए नहीं अपितु उसे खुश करने अथवा उसके सम्मान स्वरूप) पशु की बलि दी जाये, तो वह निषेधित होगा, इसलिए कि वह "وما أهل لغير الله به" में आ गया, यद्यपि उस पर अल्लाह ही का नाम लिया गया हो तथा अल्लामा शामी ने इस पर बल दिया है।" (किताबुल ज़बाएह प्राचीन प्रकाशन १२७७ हिजरी, पृष्ठ २२७ फ़तावा शामी भाग ५, पृष्ठ २०३, मेमनीयः प्रकाशन मिस्र) परन्तु कुछ विचारक इस दूसरे प्रकार को "وما أهل لغير الله به" का अर्थ तथा इसमें सम्मिलित नहीं समझते तथा अल्लाह के सिवाय अन्य की निकटता प्राप्त करने के कारण इसे निषेधित समझते हैं। अर्थात निषेध होने में कोई मतभेद नहीं। केवल तर्क तथा प्रमाण प्रस्तुत करने के ढंग में मतभेद है। इसके अतिरिक्त यह दूसरा प्रकार ﴿وَمَا ذُبِحَ عَلَى ٱلنُّصُبِ﴾ (जो मूर्तियों के निकट अथवा स्थानों पर बलि चढ़ायी जायें) में भी सम्मिलित है। जिसे *सूरः अल-मायदः* में निषेधित में वर्णन किया गया है। तथा हदीसों से भी ज्ञात होता है कि आस्ताना, दरबारों, मन्दिरों तथा दैवी स्थानों पर बलि चढ़ाये गये पशु निषेध हैं, इसलिए कि वहाँ बलि चढ़ाने का अथवा बाँटने का उद्देश्य अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की निकटता प्राप्त करनी है।

لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾	फिर भी यदि कोई व्यक्ति विवश कर दिया जाये न वह अत्याचारी हो एवं न अतिकारी हो, तो निःसंदेह अल्लाह क्षमा करने वाला तथा कृपा करने वाला है।
وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾	(११६) तथा किसी चीज़ को अपने मुख से झूठ ही न कह दिया करो कि यह उचित (हलाल) है तथा यह निषेध (हराम) है कि अल्लाह पर मिथ्यारोपण कर दो,[1] निःसंदेह अल्लाह (तआला) पर मिथ्यारोपण करने वाले सफलता से वंचित ही रहते हैं।
مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾	(११७) उन्हें अति तुच्छ लाभ प्राप्त होता है तथा उनके लिए ही कष्टदायी यातनायें हैं।
وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا	(११८) तथा यहूदियों पर जो कुछ हमने निषेध किया था, उसे हम पहले ही से आप को सुना

एक हदीस में है, एक व्यक्ति ने आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि मैंने मन्नत मानी है कि बवाना के स्थान पर मैं ऊँट की बलि चढ़ाऊँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि क्या वहाँ अज्ञान काल की मूर्तियों में से कोई मूर्ति थी जिसकी पूजा की जाती थी? लोगों ने बताया नहीं, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि वहाँ उनके धार्मिक उत्सव में से कोई उत्सव तो नहीं मनाया जाता था? लोगों ने उसका भी न में उत्तर दिया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रश्नकर्त्ता को मन्नत पूरी करने की अनुमति दी। (अबू दाऊद किताबुल ऐमान वन्नज़ूर, बाब मायूमर, बिहि मिन वफ़ाइन्नज़्र) इससे ज्ञात हुआ कि मूर्तियों के हटाये जाने के पश्चात भी निर्वासित आस्तानों पर जाकर पशुओं की बलि चढ़ाना निषेध है, तो उसका क्या कहना जबकि उन आस्तानों, दरबारों, मन्दिरों तथा दैवी स्थलों पर जाकर बलि चढ़ाये जायें जो पूजा-पाठ, भोग-प्रसाद के लिए सामान्य घोषित स्थल हैं।

[1]यह संकेत है उन पशुओं की ओर जो वह मूर्तियों के नाम अर्पित करके उनको अपने लिए निषेध कर लेते थे। जैसे बहीरः, साएबः, वसीलः एवम् हाम आदि। (देखिये सूरः *अल-मायदः*-१०३ तथा सूरः *अल-अनाम*-१३९ से १४०, तक की व्याख्या)

مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾

चुके हैं,[1] हमने उन पर अत्याचार नहीं किया, अपितु वे स्वयं अपने प्राणों पर अत्याचार करते रहे।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾

(११९) जो कोई अज्ञानतावश बुरे कर्म करे, फिर उसके पश्चात तौबा (क्षमा-याचना) कर ले तथा सुधार भी कर ले तो फिर आपका प्रभु नि:संदेह बड़ा क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त दयालु है।

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ۗ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) नि:संदेह इब्राहीम अगुवा[2] एवं अल्लाह तआला के आज्ञापालन करने वाले एकाग्र नि:स्वार्थ थे। तथा वह मिश्रणवादियों में से न थे।

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ۗ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾

(१२१) अल्लाह तआला के प्रदान किये हुए उपहारों के कृतज्ञ थे, अल्लाह (तआला) ने उन्हें निर्वाचित कर लिया था तथा उन्हें मार्गदर्शन दे दिया था।

وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) तथा हमने उन्हें दुनिया में भी अच्छाई दी, तथा नि:संदेह वह आख़िरत में भी नेक लोगों में से हैं।

ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَمَا كَانَ

(१२३) फिर हमने आप की ओर प्रकाशना (वह्यी) भेजी कि आप इब्राहीम हनीफ़ के मत

---

[1]देखिये सूर: *अल-अनाम*-१४६ की व्याख्या, इसके अतिरिक्त सूर: *अल-निसा*-१६० में भी इस का वर्णन है।

[2]'उम्मत' का अर्थ मुखिया तथा अगुवा भी है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है तथा उम्मत का अर्थ अनुयायी भी है। इस आधार पर आदरणीय इब्राहीम का अस्तित्व एक उम्मत के बराबर था। (उम्मत के अर्थ के लिए सूर: हूद-८ की व्याख्या देखिये)

مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٣﴾

का अनुसरण करें ।[1] और वह मिश्रणवादियों (अनेकेश्वर के पुजारियों) में न थे ।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) शनिवार के दिन (के महत्व) को तो केवल उन लोगों के लिए ही आवश्यक किया गया था, जिन्होंने उसमें मतभेद किया था,[2] बात यह है कि आपका प्रभु स्वयं ही उनमें उनके मतभेद का निर्णय क़ियामत के दिन करेगा ।

---

[1]'मिल्लत' का अर्थ है, ऐसा धर्म जिसे अल्लाह तआला ने अपने किसी नबी के द्वारा लोगों के लिए उचित तथा अनिवार्य किया है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसके उपरान्त कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सभी नबियों सहित आदम की संतान के सरदार हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इब्राहीम के धार्मिक नियमों का अनुसरण करने के लिए कहा गया है, जिससे आदरणीय इब्राहीम के महत्व एवं विशेषता की पुष्टि होती है । वैसे मौलिक रूप से सभी नबियों के धार्मिक नियम एवं मत एक ही रहे हैं, जिसमें रिसालत के साथ अद्वैत तथा आख़िरत को आधार भूत स्थान प्राप्त है ।

[2]इस मतभेद का रूप क्या है ? इसकी व्याख्या में मतभेद है । कुछ कहते हैं कि आदरणीय मूसा ने उनके लिए शुक्रवार का दिन निर्धारित किया था, परन्तु इस्राईल की संतान ने उनका विरोध किया तथा शनिवार का दिन आदर तथा इबादत के लिए चयन किया । अल्लाह तआला ने फ़रमाया मूसा ! उन्होंने जो दिन चयन किया है, वही दिन रहने दो । कुछ कहते हैं कि अल्लाह तआला ने उन्हें आदेश दिया था कि सम्मान के लिए सप्ताह में कोई एक दिन निर्धारित कर लो जिसके निर्धारण में उनमें आपस में मतभेद हुआ । परन्तु यहूदियों ने अपने विचार से शनिवार का दिन तथा ईसाईयों ने रविवार का दिन निर्धारित कर लिया । तथा शुक्रवार का दिन अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए विशेष कर दिया । तथा कुछ कहते हैं कि ईसाईयों ने रविवार का दिन यहूदियों के विरोध भावना से अपने लिए निर्धारित किया था, इसी प्रकार इबादत के लिए उन्होंने अपने को यहूदियों से अलग रखने के लिए बैतुल मोकद्दस के पूर्वी भाग को क़िबला के रूप में प्रयोग किया । शुक्रवार का दिन अल्लाह तआला के अपनी ओर से मुसलमानों के लिए निर्धारित करने का वर्णन हदीस में विद्यमान है । (देखिये सहीह बुख़ारी किताबुल जुमा, बाब हिदायत हाज़ेहिल उम्मत, लेयोमिल जुमुअः, तथा सहीह मुस्लिम वर्णित अध्याय)

(१२५) अपने प्रभु की ओर लोगों को विवेक तथा उत्तम शिक्षा के साथ बुलायें तथा उनसे भली प्रकार से बात करें,[1] नि:संदेह आप का प्रभु अपने मार्ग से भटकने वालों को भी भली-भाँति जानता है तथा वह मार्ग पर चलने वालों से भी पूर्ण रूप से परिचित है।[2]

ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَجَادِلْهُم بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٥﴾

(१२६) तथा यदि बदला लो भी तो बिल्कुल उतना ही जितना दुख तुम्हें पहुँचाया गया हो, तथा यदि धैर्य रखो तो नि:संदेह धैर्यवानों के लिए यही उत्तम है।[3]

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُم بِهِ ۖ وَلَئِن صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ﴿١٢٦﴾

(१२७) आप धैर्य रखें बिना अल्लाह की कृपा से आप धैर्य रख ही नहीं सकते तथा उनकी अवस्था से दुखी न हों तथा जो छल-कपट यह करते हैं, उनसे संकुचित न हो।[4]

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٧﴾

(१२८) विश्वास करो कि अल्लाह (तआला) परहेज़गारों तथा पुण्य कार्य करने वालों के साथ है।

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ ﴿١٢٨﴾

---

[1]इसमें धर्म प्रचार एवं प्रसार के नियम वर्णित किये गये हैं जो हिक्मत, सत्य भाषण, प्रेम तथा विनम्रता पर आधारित हैं। उत्तम विवाद, तर्क-वितर्क तथा कड़ाई एवं कटुता से बचते हुए कोमल तथा प्रेमपूर्ण भाव का प्रयोग करना है।

[2]अर्थात आप का कार्य वर्णित नियमों के अनुसार शिक्षा-दीक्षा देना है, सत्य मार्ग पर चला देना, यह केवल अल्लाह के अधिकार में है तथा वह जानता है कि मार्गदर्शन प्राप्त करने वाला कौन है तथा कौन नहीं ?

[3]इसमें यद्यपि बदला लेने की आज्ञा है परन्तु अति नहीं, वरन यह स्वयं अत्याचार हो जायेगा, फिर भी क्षमा कर देने तथा धैर्य का मार्ग अपनाने को अधिक श्रेष्ठ बताया गया है।

[4]इसलिए कि अल्लाह तआला उनके षडयन्त्रों के विरोध में ईमान वालों तथा अल्लाह से भय रखने वालों एवं सत्कर्मियों के संग है तथा जिसके साथ अल्लाह हो, उसे दुनिया वालों की चाल हानि नहीं पहुँचा सकती जैसाकि इसके पूर्व की आयत में है।

सूरतु बनी इस्राईल-१७

سُوْرَةُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

सूर: वनी इस्राईल* मक्के में उतरी तथा इसकी एक सौ ग्यारह आयतें तथा वारह रूकूअ हैं।

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) पवित्र है[1] वह (अल्लाह तआला) जो अपने भक्त [2] को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا

---

*यह सूर: मक्के में अवतरित हुई। इसलिए इसे मक्की कहते हैं। इस सूर: का दूसरा नाम *अल-इस्रा* भी है। इसलिए कि इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्रा (रात्रि के समय मस्जिदे अक्सा ले जाने) का वर्णन है। सहीह बुख़ारी में है कि आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद स्वयं सुनकर कहते हैं कि *सूर: कहफ़, मरियम* तथा *बनी इस्राईल* यह प्रथम कालीन में से हैं। (तफ़सीर *सूर: बनी इस्राईल*) عتيق का बहुवचन है عتاق (प्राचीन) तथा تلاد भी تالد का बहुवचन है। तालिद प्राचीन धन को कहते हैं। अर्थ यह है कि तीन सूरतें उन प्राचीन सूरतो में से हैं जो मक्का में प्रथम काल में अवतरित हुईं। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रत्येक रात्रि को *सूर: बनी इस्राईल* तथा *सूर: जुमर* का पाठ करते थे। (मुसनद अहमद भाग ६, पृष्ठ ६८ तथा १२२, तिर्मिज़ी संख्या २९२ -३४० तथा अलबानी ने इसे सही कहा है। सहीह: संख्या ६४१, भाग २)

[2] سبحان، سبح يسبح का रूप है। अर्थ है أنزه الله تنزيها अर्थात मैं अल्लाह को प्रत्येक दोष से पवित्र तथा शुद्ध मानता हूँ। सामान्य रूप से इसका प्रयोग ऐसे अवसरों पर होता है जब किसी महान विषय का वर्णन हो। अर्थ यह होता है कि लोगों के निकट प्रत्यक्ष साधन के आधार पर यह घटना कितनी भी असम्भव हो, अल्लाह के लिए कोई कठिन नहीं। इसलिए कि वह किसी साधन के लिए बाध्य नहीं वह तो शब्द कुन (كن) से पलक झपकते में जो चाहे कर सकता है। साधन मनुष्य के लिए हैं। अल्लाह तआला इन बंधनों तथा न्यूनता से पवित्र है।

[2] إسـراء का अर्थ होता है रात्रि के समय ले जाना। आगे ليلا (रात्रि) इसलिए वर्णन किया गया ताकि रात्रि की अल्पता स्पष्ट हो जाये, इसीलिए वह जातिवाचक संज्ञा है। अर्थात रात्रि के एक भाग अथवा थोड़े से भाग में। अर्थात चालीस रात्रि की यह यात्रा, पूर्ण रात्रि में भी नहीं, अपितु रात्रि के एक थोड़े से भाग में पूरी हुई।

ٱلَّذِي بَٰرَكْنَا حَوْلَهُۥ لِنُرِيَهُۥ مِنْ ءَايَٰتِنَآ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ①

अकसा [1] तक ले गया जिसके निकटवर्ती क्षेत्रों में हमने बरकतें (विभूतियाँ) प्रदान कर रखी हैं,[2] इसलिए कि हम उसे अपने सामर्थ्य के कुछ प्रतीक दिखायें।[3] निःसंदेह अल्लाह (तआला) ही भली-भाँति सुनने देखने वाला है।

---

[1] أقصى दूर को कहते हैं। बैतुल मक़दिस, जो अल-कुदस अथवा इलिया (प्राचीन नाम) नगर में है तथा फ़िलिस्तीन में स्थित है, मक्का से अल-कुदस तक की यात्रा ४० दिन की है, इस आधार पर मस्जिदे हराम की तुलना में बैतुल मक़दिस को मस्जिदे अक्सा (दूर की मस्जिद) कहा गया है।

[2]यह क्षेत्र प्राकृतिक नदियों तथा फलों की अधिकता तथा नबियों की धरती है जहाँ उनका निवास स्थान तथा समाधि स्थल होने के कारण श्रेष्ठ है, इसलिए इसे शुभस्थली कहा गया है।

[3]इस यात्रा का यह उद्देश्य है ताकि हम अपने इस भक्त को विचित्रता तथा बड़ी निशानियाँ दिखायें। जिनमें से एक निशानी तथा चमत्कार यह यात्रा भी है कि इतनी लम्बी यात्रा रात्रि के एक छोटे से भाग में हो गयी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो मेराज हुई अर्थात आकाशों पर ले जाया गया, वहाँ विभिन्न आकाशों पर अंबिया अलैहिस्सलाम से मिलन हुआ तथा "*सिदरतुल मुन्तहा*" पर, जो अर्श से नीचे सातवें आकाश पर है, अल्लाह तआला ने प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा नमाज़ तथा अन्य कुछ वस्तुएँ प्रदान कीं जिसका विस्तृत वर्णन सहीह हदीसों में हुआ है तथा सहाबा एवं ताबईन से लेकर आज तक मुसलमान समुदाय के सभी ज्ञानी तथा विचारक इस बात को मानते चले आये हैं कि यह मेराज शारीरिक रूप में सचेत अवस्था में हुई है। यह स्वप्न अथवा आत्मिक यात्रा तथा दर्शन नहीं है, बल्कि प्रत्यक्ष दर्शन है, जो अल्लाह ने अपने पूर्ण सामर्थ्य से अपने पैग़म्बर को कराया है। इस मेराज के दो भाग हैं। प्रथम भाग इस्रा कहलाता है, जिसका वर्णन यहाँ किया गया है तथा जो मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा तक की यात्रा के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पहुँचने के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सभी नबियों की इमामत की। बैतुल मक़दिस से फिर आपको आकाशों पर ले जाया गया। यह इस यात्रा का द्वितीय भाग है जिसे मेराज कहा जाता है। इस का कुछ वर्णन *सूरः नज्म* में किया गया है तथा शेष विस्तृत जानकारी हदीसों में वर्णित की गयी हैं। सामान्य रूप से इस पूरी यात्रा को मेराज से ही सम्बोधित किया जाता है। मेराज सीढ़ी को कहते हैं, यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख से निकले हुए शब्द «عُرِجَ بِي إِلَى السَّمَاءِ». (मुझे आकाश पर ले जाया गया अथवा चढ़ाया गया) से लिया गया है। क्योंकि इस यात्रा का द्वितीय भाग प्रथम से अत्यधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए मेराज का

وَاٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ وَجَعَلۡنٰهُ هُدًى لِّبَنِىۡۤ اِسۡرَاۤءِيۡلَ اَلَّا تَتَّخِذُوۡا مِنۡ دُوۡنِىۡ وَكِيۡلًا ؕ‏ ﴿۲﴾

(२) तथा हम ने मूसा को किताब प्रदान की तथा उसे इस्राईल की संतान के लिए मार्ग-दर्शन बना दिया, कि तुम मेरे अतिरिक्त किसी अन्य को कार्यक्षम न बनाना।

ذُرِّيَّةَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوۡحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبۡدًا شَكُوۡرًا‏ ﴿۳﴾

(३) हे उन लोगों की संतान! जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था, वह हमारा अत्यधिक कृतज्ञ भक्त था।[1]

وَقَضَيۡنَاۤ اِلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَاۤءِيۡلَ فِى الۡكِتٰبِ لَتُفۡسِدُنَّ فِى الۡاَرۡضِ مَرَّتَيۡنِ وَلَتَعۡلُنَّ عُلُوًّا كَبِيۡرًا‏ ﴿۴﴾

(४) तथा हमने इस्राईल की संतान के लिए उनकी किताब में स्पष्ट निर्णय कर दिया था कि तुम धरती पर दो बार उपद्रव उत्पन्न करोगे तथा तुम अत्यधिक अत्याचार करोगे।

فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ اُوۡلٰٮهُمَا بَعَثۡنَا عَلَيۡكُمۡ عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِىۡ بَاۡسٍ شَدِيۡدٍ فَجَاسُوۡا

(५) इन दोनों वादों में से प्रथम के आते ही हम ने तुम्हारे समक्ष अपने भक्तों को उठा खड़ा किया, जो बड़े लड़ाकू थे। फिर वह तुम्हारे

शब्द ही अधिक प्रसिद्ध हुआ। इसकी तिथि में मतभेद है, फिर भी इस पर सहमति है कि यह हिजरत से पूर्व की घटना है। कुछ कहते हैं कि एक वर्ष पूर्व की तथा कुछ कहते हैं कि कई वर्ष पूर्व की यह घटना घटित हुई। इसी प्रकार मास तथा तिथि में भी मतभेद है, कोई रबीउल अव्वल १७ अथवा २७, कोई रजब की २७ तथा कुछ कोई अन्य मास तथा इसकी तिथि बताते हैं।

[1]नूह के समय के तूफ़ान (जल-प्रलय) के पश्चात मनुष्य का वंश नूह के उन पुत्रों के वंश से है जो नूह की नाव में सवार हुए थे तथा तूफ़ान से बच गये थे। इसलिए इस्राईल की संतान को सम्बोधित करते हुए कहा गया कि तुम्हारे पिता नूह अल्लाह का अति कृतज्ञ भक्त था। तुम भी अपने पिता की तरह कृतज्ञता का मार्ग अपनाओ तथा हमने जो मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रसूल बनाकर भेजा है, उनको अस्वीकार करके कृतघ्नता न करो।

خِلَلَ الدِّيَارِ ۚ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ۝

घरों के अन्दर तक फैल गये। तथा अल्लाह का वचन पूरा होना ही था।[1]

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُم بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ۝

(६) फिर हम ने उन पर तुम्हारा प्रभाव दे कर (तुम्हारा दिन) फेर दिया तथा धन एवं संतान से तुम्हारी सहायता की तथा तुम्हें बड़े जत्थे वाला कर दिया।[2]

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ۝

(७) यदि तुम ने अच्छे कार्य किये तो स्वयं अपने लाभ के लिए, तथा यदि तुमने बुराईयाँ कीं, तो भी स्वयं अपने ही लिए, फिर जब दूसरा वादा आया तो (हम ने दूसरे भक्तों को भेज दिया) ताकि वे तुम्हारा मुख बिगाड़ दें तथा प्रथम बार की भाँति फिर उसी मस्जिद में घुस जायें। तथा जिस-जिस वस्तु पर अधिकार पायें तोड़-फोड़ कर जड़ से उखाड़ दें।[3]

---

[1]यह संकेत उस अपमान तथा नाश की ओर है जो बाबुल के राजाधिराज बोख़्त नस्सर के हाथों आदरणीय मसीह के लगभग छ: सौ वर्ष पूर्व यहूदियों पर योरूशलम में घटित हुआ। उसने नि:संकोच यहूदियों का नरसंहार किया तथा एक बड़ी संख्या को दास बना लिया तथा यह उस समय हुआ जब उन्होंने अल्लाह के नबी आदरणीय शअया की हत्या अथवा आदरणीय अरमिया अलैहिस्सलाम को बन्दी बनाया तथा तौरात के आदेशों का उल्लंघन किया तथा पाप करके धरती में आतंक मचा कर अपराधी बने। कुछ कहते हैं कि बोख़्त नस्सर के बजाय जालूत को अल्लाह तआला ने दण्ड स्वरूप उन पर डाला, जिस ने उन पर अत्याचार तथा क्रूरता के पहाड़ तोड़े यहाँ तक कि तालूत के नेतृत्व में आदरणीय दाऊद ने जालूत का वध किया।

[2]अर्थात बोख़्त नस्सर अथवा जालूत के वध के पश्चात हमने तुम्हें पुन: धन-धान्य, पुत्रों तथा सम्मान से अलंकृत किया, जबकि यह सारी वस्तुयें तुमसे छिन चुकी थीं। तथा तुम्हें पुन: अधिक जनसंख्या वाला तथा शक्तिशाली बना दिया।

[3]यह दूसरी बार उन्होंने उपद्रव उत्पन्न किया कि आदरणीय ज़करिया की हत्या कर दी तथा आदरणीय ईसा की हत्या करने की योजना बनाते रहे जिन्हें अल्लाह तआला ने जीवित आकाश पर उठा कर उनसे बचा लिया। इसके परिणाम स्वरूप पुन: रोम के राजा टाईटस को

(८) आशा है कि तुम्हारा प्रभु तुम पर दया करे। हाँ, यदि तुम फिर भी वही करने लगे तो हम भी पुन: ऐसा ही करेंगे।[1] तथा हम ने नकारने वालों के लिए बन्दीगृह नरक को बना रखा है।[2]

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝٨

(९) नि:संदेह यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है जो सबसे सीधा है तथा ईमानदार पुनीतों को जो पुण्य के कर्म करते हैं, इस बात की शुभसूचना देता है कि उनके लिए अति उत्तम बदला (प्रतिफल) है।

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۝٩

(१०) तथा वह लोग जो आख़िरत पर विश्वास नहीं करते, उनके लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٠

अल्लाह ने उन पर प्रभुत्व दे दिया, उसने योरूशलम पर आक्रमण करके उनके कटे शरीर की दीवार बना दी तथा बहुत से लोगों को बन्दी वना लिया, उनका माल लूट लिया, धार्मिक पुस्तकों को पैरों तले रौंदा तथा बैतुल मक़्दिस तथा सुलैमान के धर्मस्थान को गिरा दिया, उन्हें सदैव के लिए बैतुल मक़्दिस से देश निकाला दे दिया। तथा इस प्रकार उनके अपमान तथा अनादर के अन्य साधन उत्पन्न किये। यह विनाश ७० ई॰ में उन पर आया।

[1]यह उन्हें चेतावनी दी गयी कि यदि तुमने सुधार कर लिया तो अल्लाह की कृपा के पात्र वनोगे जिसका अर्थ इस लोक तथा परलोक में सम्मान तथा सफलता है, तथा यदि पुन: अल्लाह की कृतघ्नता का मार्ग अपनाकर धरती पर उपद्रव उत्पन्न किया, तो फिर तुम्हें उसी प्रकार अपमानित तथा तिरस्कार से दो-चार कर देंगे जैसे इस से पूर्व दो बार हम तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार कर चुके हैं। अतएव ऐसा ही हुआ, यह यहूदी अपने व्यवहार को न बदल सके तथा वही व्यवहार मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के साथ दुहराया जो मूसा तथा ईसा की रिसालत के साथ कर चुके थे जिसके कारण यह यहूदी तीसरी बार मुसलमानों के हाथों अपमानित हुए तथा अनादर के साथ उन्हें मदीना तथा ख़ैबर से निकलना पड़ा।

[2]अर्थात इस दुनिया के अपमान के पश्चात परलोक में नरक का दण्ड तथा उसकी यातना अतिरिक्त है जो उन्हें वहाँ भुगतनी है।

وَيَدْعُ الْإِنسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنسَانُ عَجُولًا ⑪

(११) तथा मनुष्य बुराई की प्रार्थनायें करने लगता है, पूर्णतः उसकी अपनी भलाई की प्रार्थनाओं के समान, मनुष्य बड़ा ही उतावला है ।[1]

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ ۖ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ⑫

(१२) तथा हमने रात तथा दिन को (अपने सामर्थ्य के) लक्षण बनाये हैं, रात्रि के प्रतीक को हमने प्रकाशहीन कर दिया तथा दिन की निशानी को प्रकाशमान दिखाने वाली बनाया है ताकि तुम अपने प्रभु की कृपा की खोज कर सको तथा इसलिए भी कि वर्षों की गणना तथा हिसाब जान सको [2] तथा प्रत्येक विषय का हम ने सविस्तार वर्णन कर दिया है ।[3]

---

[1]मनुष्य चूँकि उतावला तथा निरूत्साही है, इसलिए जब उसे दुख पहुँचता है तो अपनी विनाश की कामना इस प्रकार करता है जिस प्रकार सुख के लिए अपने प्रभु से प्रार्थना करता है । यह तो प्रभु की कृपा तथा दया है कि उसके श्राप को स्वीकार नहीं करता। यही विषय *सूरः यूनुस* आयत ११ में आ चुका है।

[2]अर्थात रात्रि को प्रकाशहीन अर्थात अंधकारमय कर दिया ताकि तुम विश्राम कर सको तथा तुम्हारे दिन भर की थकान दूर हो जाये तथा दिन को प्रकाश प्रदान किया ताकि तुम जीविका आर्जन के लिए अपने प्रभु की कृपा क़ी खोज करो। इसके अतिरिक्त रात्रि-दिन का एक अन्य लाभ यह है कि इस प्रकार सप्ताह, मास, तथा वर्षों की गणना तुम कर सको, इस गणना के असंख्य लाभ हैं। यदि रात्रि के पश्चात दिन तथा दिन के पश्चात रात्रि न आती बल्कि सदैव रात्रि ही रात्रि रहती अथवा दिन ही दिन रहता, तो तुम्हें विश्राम तथा शांति एवं व्यवसाय का अवसर न मिलता तथा इसी प्रकार मास तथा वर्षों की गणना भी असम्भव रहती।

[3]अर्थात मनुष्य के लिए धर्म तथा संसार की आवश्यक बातें खोलकर वर्णन कर दी हैं, ताकि उनसे मनुष्य लाभ उठायें, अपनी दुनिया भी सुखमय करें तथा आख़िरत की भी चिन्ता तथा उसके लिए तैयारी करें।

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾

(१३) तथा हम ने प्रत्येक मनुष्य की बुराई-भलाई को उसके गले डाल दिया है[1] तथा प्रलय के दिन हम उसके कर्मपत्र को निकालेंगे, जिसे वह अपने ऊपर खुला हुआ पा लेगा।

اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾

(१४) लो स्वयं ही अपना कर्मपत्र आप पढ़ लो ।आज तो तू आप ही अपना स्वयं निर्णय करने को पर्याप्त है।

مَّنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

(१५) जो संमार्ग प्राप्त करता है, वह स्वयं अपने भले के लिए मार्ग प्राप्त करता है तथा जो पथभ्रष्ट हो जाये उसका बोझ उसी के ऊपर है, कोई बोझ वाला किसी अन्य का बोझ अपने ऊपर न लादेगा[2] तथा हमारा नियम ही नहीं कि रसूल भेजने से पूर्व ही प्रकोप भेजें।[3]

---

[1] طائر का अर्थ पक्षी है तथा عنق का अर्थ गर्दन है। इमाम इब्ने कसीर ने तायेर से तात्पर्य मनुष्य के कर्म लिये हैं। في عنقه का अर्थ है, उसके अच्छे अथवा बुरे कर्म, जिस पर उसको अच्छा अथवा बुरा बदला दिया जायेगा, गले के हार की भाँति उनके साथ होंगे। अर्थात उसका प्रत्येक कर्म लिखा जा रहा है अल्लाह के यहाँ उसका पूरा लेखा सुरक्षित होगा। क़ियामत के दिन उसके आधार पर निर्णय किया जायेगा। तथा इमाम शौकानी ने तायेर से तात्पर्य मनुष्य का भाग्य लिया है जिसे अल्लाह ने अपने ज्ञानानुसार लिख दिया है, जिसे सौभाग्यशाली तथा अल्लाह का अवज्ञाकारी होना था, वह भी उसके ज्ञान में था, यही भाग्य (सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य) प्रत्येक मनुष्य के साथ गले के हार की भाँति लगा हुआ है। उसी के अनुरूप उसके कर्म होंगे तथा क़ियामत के दिन उसी के अनुसार निर्णय होंगे।

[2] हाँ जो भटके हुए तथा भटकाने वाले भी होंगे, उन्हें अपने भटकाव के बोझ के साथ, उनके पाप का भी बोझ (बिना उनके पाप में कमी किये) उठाना पड़ेगा, जो उनके प्रयत्नों से भटके हुए होंगे। जैसाकि क़ुरआन के अन्य स्थानों तथा हदीसों से स्पष्ट है। यह वास्तव में उन्हीं के पापों का भार होगा जो अन्यों को भटकाकर उन्होंने कमाया।

[3] कुछ व्याख्याकारों ने इससे केवल सांसारिक यातना का भावार्थ लिया है। अर्थात आख़िरत की यातना से बच न सकेंगे। परन्तु क़ुरआन करीम के अन्य स्थानों से स्पष्ट है कि अल्लाह तआला लोगों से पूछेगा कि क्या तुम्हारे पास रसूल नहीं आये थे ? जिस पर वे

وَإِذَآ أَرَدْنَآ أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا۟ فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا ٱلْقَوْلُ فَدَمَّرْنَٰهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾

(१६) तथा जब हम किसी बस्ती के विनाश की इच्छा कर लेते हैं, तो वहाँ के सम्पन्न लोगों को कुछ आदेश देते हैं तथा वे उस बस्ती में स्पष्ट रूप से अवहेलना करने लगते हैं, तो उन पर (प्रकोप का) निर्णय लागू हो जाता है तथा फिर हम उसे उलट-पलट कर देते हैं।[1]

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ ٱلْقُرُونِ مِنۢ بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِۦ

(१७) तथा हमने नूह के पश्चात भी बहुत से समुदाय नष्ट किये[2] तथा तेरा प्रभु अपने

सकारात्मक उत्तर देंगे, जिससे यह प्रतीत होता है कि रसूलों को भेजने तथा धर्मशास्त्र उतारे बिना वह किसी को प्रकोप नहीं देगा फिर भी इसका निर्णय कि किस समुदाय अथवा किस व्यक्ति तक उसका संदेश नहीं पहुँचा, क़ियामत के दिन वह स्वयं ही कर देगा। वहाँ निःसंदेह किसी पर अत्याचार नहीं होगा। इसी प्रकार बहरा, पागल, बुद्धिहीन तथा अज्ञान काल के मृत लोगों की समस्या है, उनके विषय में कुछ कथनों में आता है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उनकी ओर फ़रिश्ते भेजेगा तथा वह उन्हें कहेंगे कि नरक में चले जाओ, यदि वे अल्लाह के इस आदेश को मानकर नरक में प्रवेश कर लेंगे, तो नरक उनके लिए फूलों की सेज बन जायेगा, दूसरी अवस्था में उन्हें घसीटकर नरक में डाल दिया जायेगा। (मुसनद अहमद भाग ४ पृष्ठ २४ तथा इब्ने हिब्बान भाग ९ पृष्ठ २२६ अल्लामा अलबानी ने सहीहुल जामे अस्सगीर संख्या ८८१ में इसका वर्णन किया है) मुसलमानों के बच्चे तो स्वर्ग में जायेंगे ही परन्तु काफ़िरों के छोटे बच्चों के विषय में मतभेद है कोई विलम्ब का, कोई स्वर्ग में जाने का, तथा कुछ नरक में जाने को मानते हैं। इमाभ इब्ने कसीर ने कहा हश्र के मैदान में उनकी परीक्षा ली जायेगी, इमाम इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है तथा कहा है कि इससे विरोधी कथन का खण्डन भी हो जाता है। (विस्तार के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर देखिये) परन्तु सहीह बुख़ारी के कथन से ज्ञात होता है कि मूर्तिपूजकों के बच्चे भी स्वर्ग में जायेंगे। (सहीह बुख़ारी ३:२५१, १२:३४८)

[1]इसमें यह नियम वर्णित किये गये हैं, जिसके आधार पर समुदायों के विनाश का निर्णय किया जाता है, तथा वह यह कि उनका धनाड्य समाज अल्लाह के आदेशों की अवहेलना प्रारम्भ कर देता है। तथा उन्हीं का अनुकरण फिर अन्य लोग करते हैं, इस प्रकार उस समुदाय में अल्लाह की अवहेलना सामान्य हो जाती है तथा वह यातना के अधिकारी घोषित कर दिये जाते हैं।

[2]वह भी इसी विनाश के नियमानुसार नाश हुए।

خَبِيْرًا بَصِيْرًا ﴿١٧﴾

भक्तों के पापों से भली प्रकार परिचित एवं भली-भाँति देखने वाला है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٨﴾

(१८) जिसकी इच्छा केवल इस शीघ्रता वाली दुनिया की ही हो, उसे हम यहाँ जितना जिसके लिए चाहें शीघ्रता से प्रदान कर देते हैं। अन्त में उसके लिए हम नरक निर्धारित कर देते हैं जहाँ वह निन्दित धिक्कारा हुआ प्रवेश करेगा।[1]

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा जिसकी इच्छा परलोक की हो तथा जैसा प्रयत्न होना चाहिए वह करता भी हो तथा वह ईमान के साथ भी हो, फिर तो यही लोग हैं जिनके प्रयत्न को अल्लाह के यहाँ पूरा सम्मान किया जायेगा।[2]

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۭ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿٢٠﴾

(२०) प्रत्येक को हम देते हैं, इन्हें भी तथा उन्हें भी, तेरे प्रभु के उपकार में से, तेरे पालनहार का उपकार रुका हुआ नहीं है।[3]

---

[1]अर्थात प्रत्येक संसार के लोभी को दुनिया नहीं मिलती, केवल उसको मिलती है, जिसको हम चाहें, फिर उसको भी दुनिया उतनी नहीं मिलती जितने की वह कामना करता है, बल्कि उतनी ही मिलती है जितनी हम उसके लिए निर्णय कर देते हैं, परन्तु इस मार्ग मोह का परिणाम नरक की स्थाई यातना तथा उसका अपमान है।

[2]अल्लाह तआला के यहाँ सम्मान के लिए तीन बातों का वर्णन किया गया है। १- परलोक की चिन्ता अर्थात शुद्धता तथा अल्लाह की प्रसन्नता। २- ऐसा प्रयत्न जो उसके योग्य हो अर्थात सुन्नत के अनुसार। ३- ईमान, क्योंकि इसके बिना कोई भी कर्म ध्येय नहीं। अर्थात कर्म की स्वीकृति के लिए ईमान के साथ शुद्धता (एकेश्वरवाद) तथा सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसार होना आवश्यक है।

[3]अर्थात दुनिया की जीविका तथा उसकी सुख-सुविधायें बिना किसी अंतर के मुसलमान तथा काफ़िर, दुनिया की कामना करने वाले तथा परलोक की चिन्ता करने वाले सबको देते हैं। अल्लाह के उपकार किसी से भी रोके नही जाते।

أَنظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾

(२१) देख ले, उनमें एक को एक पर किस प्रकार विशेषता प्रदान कर रखी है तथा परलोक (आख़िरत) तो पदों के अनुसार अति उत्तम है तथा सम्मान के अनुसार भी अति उत्तम है ।[1]

لَّا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخْذُولًا ﴿٢٢﴾

(२२) अल्लाह के साथ किसी अन्य को पूज्य न बना कि अन्ततः तू निन्दित निस्सहाय होकर बैठ रहेगा ।

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِندَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُل لَّهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُل لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ﴿٢٣﴾

(२३) तथा तेरा प्रभु खुला आदेश दे चुका है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी अन्य की आराधना (इबादत) न करना तथा माता-पिता के साथ उपकार करना । यदि तेरी उपस्थिति में इनमें से एक अथवा ये दोनों वृद्धावस्था को पहुँच जायें, तो उनको 'ऊफ़' तक न कहना, उन्हें डाँटना नहीं, बल्कि उनके साथ सम्मान तथा आदर से बातचीत करना ।[2]

---

[1]फिर भी दुनिया की यह वस्तुयें किसी को कम, किसी को अधिक मिलती हैं, अल्लाह तआला अपनी इच्छा एवं ज्ञानानुसार यह जीविका विभाजित करता है । परन्तु आख़िरत में श्रेणियों का यह अन्तर अधिक स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष होगा तथा वह इस प्रकार कि ईमान वाले स्वर्ग में तथा काफ़िर लोग नरक में जायेंगे ।

[2]इस आयत में महाकृपालु अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के पश्चात द्वितीय चरण में माता-पिता के साथ सदव्यवहार का आदेश दिया है, जिससे माता-पिता के आज्ञापालन, उनकी सेवा तथा उनके आदर-सत्कार का महत्व स्पष्ट होता है । महा पालनहार अल्लाह के प्रतिपालन की माँग पूरा करने के साथ छोटे पोषक माता-पिता के आज्ञापालन की माँग को भी पूरा करना है । हदीसों में भी इसके महत्व तथा विशेषता को अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में उजागर किया गया है, फिर वृद्धावस्था में विशेष रूप से उनके समक्ष 'उफ़' शब्द तक कहने से रोका गया है तथा उन्हें डाँटने से मना किया गया है, क्योंकि वृद्धावस्था में माता-पिता कमज़ोर, असहाय तथा लाचार हो जाते हैं, जबकि संतान जवान तथा जीविका साधन पर अधिकृत हो जाती है । इसके अतिरिक्त जवानी-दीवानी की भावना

(२४) तथा नम्रता एवं प्रेम के साथ उनके सामने सत्कार के हाथ फैलायें रखना [1] तथा प्रार्थना करते रहना कि हे मेरे प्रभु ! इन पर ऐसी ही दया करना, जैसाकि इन्होंने मेरे बाल्यकाल में मेरा पालन-पोषण किया है।

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾

(२५) जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे तुम्हारा प्रभु भली-भाँति जानता है, यदि तुम सदाचारी हो, तो वह क्षमा-याचना करने वालों को क्षमा करने वाला है।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۚ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿٢٥﴾

(२६) तथा सम्बन्धियों का, एवं निर्धनों का, तथा यात्रियों का अधिकार अदा करते रहो [2] तथा अनर्थ तथा अपव्यय से बचो।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٦﴾

एवं बुढ़ापे के सीत तथा गर्म दुखी अनुभव में मुठभेड़ होती है। इन परिस्थितियों में माता-पिता के आदर-सत्कार के नियमों पर ध्यान देना अत्यधिक कठिन विषय होता है। फिर भी अल्लाह के दरबार में सम्मानित एवं सफल वही होगा जो इन नियमों का पालन करेगा।

[1]पक्षी जब अपने बच्चों को अपनी प्रेम छाया में लेता है, तो उनके लिए अपने पंख नीचे गिरा देता है, अर्थात तू भी अपने माता-पिता के साथ इसी प्रकार अच्छा एवं प्रेम पूर्ण व्यवहार कर तथा उनकी इसी प्रकार पालन-पोषण कर जिस प्रकार उन्होंने बचपन में तेरा किया अथवा यह अर्थ हैं कि जब पक्षी उड़ने अथवा ऊँचा उठने का प्रयत्न करता है, तो अपने पंख फैला लेता है तथा जब नीचे उतरता है तो पँख को नीचे कर लेता है। इस आधार पर बाँहें नीचे करने का अर्थ माता-पिता के समक्ष सत्कार तथा नम्रता व्यक्त करने के होंगे।

[2]कुरआन करीम के इन शब्दों से ज्ञात हुआ कि निर्धन निकट सम्बन्धियों, निर्धनों तथा किसी प्रकार की आवश्यकता वाले यात्रियों की सहायता करके उनपर उपकार जताना नहीं चाहिए, क्योंकि यह उपकार नहीं बल्कि माल का वह भाग है जो अल्लाह तआला ने धनवानों के धन में वर्णित व्यक्तियों का रखा है। यदि धनवान यह धन अदा नहीं करेगा तो अल्लाह के समक्ष अपराधी होगा। अर्थात यह अधिकार को अदा करना है, न कि किसी पर उपकार। इसके अतिरिक्त निकट सम्बन्धियों का वर्णन करने से उन की प्राथमिकता एवं

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوٓا إِخْوَانَ الشَّيَـٰطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَـٰنُ لِرَبِّهِۦ كَفُورًا ﴿٢٧﴾

(२७) अपव्यय करने वाले शैतानों के भाई हैं तथा शैतान अपने प्रभु का अत्यधिक कृतघ्न है।[1]

وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ٱبْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُل لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾

(२८) तथा यदि तुझे उनसे मुख फेर लेना पड़े अपने प्रभु की इस कृपा की खोज में जिस की तू आशा रखता है, तो भी तुझे चाहिए कि भली प्रकार तथा कोमलता से उन्हें समझा दे।[2]

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ ٱلْبَسْطِ

(२९) तथा अपना हाथ अपनी गर्दन से बँधा हुआ न रख तथा न उसे पूर्णरूप से खोल दे

अधिकार भी स्पष्ट होता है। निकट सम्बन्धियों के अधिकारों को अदा करना तथा उनके साथ सदव्यवहार करने को सम्बन्ध जोड़ना कहा जाता है, जिसका इस्लाम में बड़ा महत्व है।

[1] تبذيرٌ का मूल धातु (बीज बोना) بذرٌ है। जिस प्रकार खेत में बीज बोते समय यह नहीं देखा जाता कि यह उचित स्थान पर पड़ रहा है अथवा उससे इधर-उधर। बल्कि किसान बीज बोता चला जाता है। تبذيرٌ (अपव्यय) भी यही है कि मनुष्य अपना धन बीज की भाँति उड़ाता फिरे तथा व्यय करने में धार्मिक नियमों का भी उल्लंघन करे तथा कुछ कहते हैं कि 'तबज़ीर' का अर्थ है अनुचित स्थान पर व्यय करना चाहे थोड़ा ही हो। हमारे विचार से दोनों ही बातें 'तबज़ीर' में आ जाती हैं। तथा यह इतना बुरा कर्म है कि इसके करने वाले को शैतान के समान कहा गया है तथा शैतान के अनुरूपता से बचना चाहिए, चाहे वह किसी एक ही प्रकार का हो, मनुष्य के लिए बचना आवश्यक है। फिर शैतान को كفورٌ (अत्यधिक कृतघ्न) कहकर और अधिक बचने पर बल दिया गया है कि यदि तुम शैतान के अनुरूप अपनाओगे तो तुम भी उसकी भाँति كفورٌ घोषित कर दिये जाओगे। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात धन की शक्ति की कमी के कारण, जिसके दूर होने की तथा जीविका में वृद्धि की तुम अपने प्रभु से आशा रखते हो। यदि तुझे निर्धन सम्बन्धियों तथा निर्धनों से बचना अर्थात असमर्थता व्यक्त करना पड़े तो, बड़ी नम्रता तथा कोमलता से असमर्थता व्यक्त कर, अर्थात उत्तर भी दिया जाये तो नम्रता तथा प्रेम की भाषा में न कि कटु वचन तथा दुर्व्यवहार के साथ, जैसाकि सामान्यतः लोग निर्धनों तथा भिखारियों के साथ व्यवहार करते हैं।

فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾

कि फिर धिक्कारा हुआ तथा पछताया हुआ बैठ जाये ।[1]

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾

(३०) नि:संदेह तेरा प्रभु जिसके लिए चाहे जीविका का विस्तार कर देता है तथा जिसके लिए चाहे तंग कर देता है ।[2] नि:संदेह वह अपने भक्तों से सूचित है एवं सूक्ष्मता से देखने वाला है ।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۚ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا كَبِيرًا ﴿٣١﴾

(३१) तथा निर्धनता के भय से अपनी संतानों को न मार डालो ! उनको तथा तुमको हम ही जीविका प्रदान करते हैं । नि:संदेह उनकी हत्या करना महापाप है ।[3]

---

[1]पूर्व की आयत में नकारात्मक उत्तर देने के नियम एवं व्यवहार का वर्णन किया गया है । अब माल ख़र्च करने के नियमों का वर्णन किया जा रहा है तथा वह यह कि मनुष्य को न कंजूसी करना चाहिए कि अपने परिवार की आवश्यकताओं पर भी न व्यय करे तथा न अपव्यय ही करे कि अपनी शक्ति तथा आय देखे बिना बे रोक-टोक व्यय करता रहे । कंजूसी का परिणाम यह होगा कि मनुष्य धिक्कार तथा निन्दा का पात्र घोषित किया जायेगा तथा अपव्यय के परिणाम स्वरूप محسور (थका हारा तथा पछताने वाला) محسور उस पशु को कहते हैं, जो चल-चलकर थक चुका हो तथा चलने से विवश हो चुका हो । अपव्यय करने वाला भी अन्त में ख़र्च करके ख़ाली हाथ होकर बैठ जाता है । अपने हाथों को अपनी गर्दनों से बाँधे हुए न रख का भावार्थ कंजूसी से बचना है तथा "न उसे नितांत ही खोल दे " यह अपव्यय से बचना है ।

[2]इसमें ईमानवालों के लिये साँत्वना है कि उनके पास जीविका उपार्जन के साधनों की अधिकता नहीं तो इसका अर्थ यह नहीं है कि अल्लाह के सदन में उनका स्थान नहीं है, बल्कि यह जीविका की अधिकता अथवा कमी का सम्बन्ध अल्लाह के उस भेद तथा निर्णय से है, जिसे केवल वही जानता है । वह अपने शत्रुओं को धनवान बना दे तथा अपनों को इतना ही दे कि जिससे वे कठिनाई से अपना निर्वाह कर सकें । यह उसकी इच्छा है । जिसको वह अधिक दे, वह उसका प्रिय नहीं तथा आवश्यकतानुसार जीविकाधारी उसका अप्रिय नहीं ।

[3]यह आयत *सूर: अनआम*-१५१ में भी आ चुकी है । हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिर्क के पश्चात जिसे महापाप घोषित किया है वह यही है कि :

(३२) तथा सावधान ! व्यभिचार के निकट भी न जाना क्योंकि वह घोर निर्लज्जता है तथा अत्यधिक बुरा मार्ग है ।[1]

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۗ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝

(३३) तथा किसी जीव को जिसका मारना अल्लाह ने निषेध कर दिया है कदापि अवैध हत्या न करना ।[2] तथा जो व्यक्ति निर्दोष मार डाला जाये हमने उसके उत्तराधिकारी को अधिकार दे रखा है, परन्तु उसे चाहिए कि

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّى الْقَتْلِ ۗ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝

«أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ خَشْيَةَ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ».

"कि तू अपनी संतान को इस भय से मार डालो कि वह तेरे साथ खायेगी ।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: बक़र:, किताबुल अदब, सहीह मुस्लिम किताबुत तौहीद बाब फला तजअलू लिल्लाहे अनदादा)

वर्तमान युग में संतान की हत्या का पाप अत्यन्त नियोजित ढंग से परिवार नियोजन के आकर्षक नाम से सम्पूर्ण संसार में हो रहा है। तथा पुरूष लोग अच्छी "शिक्षा तथा प्रशिक्षण" के नाम पर तथा स्त्रियाँ अपनी "सुन्दरता" की रक्षा के लिए साधारणत: यह अपराध कर रही हैं।

[1]इस्लाम में चूँकि व्यभिचार अतिघोर महापाप तथा अपराध है, इतना घोर कि यदि कोई विवाहित पुरूष तथा स्त्री इसे करे तो समाज में जीवित रहने का अधिकार ही नहीं है। फिर उसे तलवार के एक वार से मार डालना ही बस नहीं है अपितु आदेश है कि पत्थर मार-मार कर उसके जीवन का अन्त कर दिया जाये ताकि वह समाज के लिए शिक्षा का प्रतीक बन जाये। इसलिए यहाँ कहा गया कि व्यभिचार के निकट न जाओ अर्थात उसके कारण तथा साधन से ही बचकर रहो, जैसे पराई नारियों को देखना, उनसे मिलना तथा बात करने का साधन बनाना, इसी प्रकार स्त्रियों का बन संवर कर बिना पर्दा घर से बाहर निकलना आदि इन सभी बातों से बचना आवश्यक है ताकि इस निर्लज्जता से बचा जा सके।

[2]अधिकार के साथ हत करने का अर्थ हत्यारे का प्रतिहत्या में हत करना है, जिसको मानव समाज के जीवन तथा सुख-शान्ति का कारण बताया गया है। इसी प्रकार विवाहित व्यभिचारी तथा विधर्मी के हत करने का आदेश दिया गया है।

मार डालने में अति न करे, नि:संदेह उसकी सहायता की गयी है।[1]

(३४) तथा अनाथ के धन के निकट न जाओ सिवाय उस विधि के जो अति उत्तम हो यहाँ तक कि वह अपनी व्यस्कावस्था को पहुँच जाये[2] तथा वचन पूरे करो क्योंकि वचन के विषय में पूछ होगी।[3]

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٤﴾

(३५) तथा जब नापने लगो तो पूरे नाप से नापो तथा सीधी तराज़ू से तौलो। यही उत्तम है[4] तथा इसका परिणाम भी अति उत्तम है।

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٣٥﴾

---

[1]अर्थात हत के उत्तराधिकारियों को यह अधिकार अथवा प्रभुत्व अथवा शक्ति प्रदान की गयी है कि वह हत्यारे को न्यायधीश के धार्मिक निर्णय के बाद प्रतिहत्या में हत कर दें अथवा उससे धन ले लें अथवा क्षमा कर दें। तथा यदि हत ही करके प्रतिहत्या लेना है तो उसमें अति न करें कि एक के बदले दो अथवा तीन चार को मार डालें अथवा उसके अंग काटकर कुचल डालें अथवा यातना दे देकर मारें, हत का उत्तराधिकारी सहायता प्राप्त है अर्थात न्यायाधीशों तथा अधिकारियों को उसकी सहायता करने पर बल दिया गया है, इस लिए इस पर अल्लाह का कृतज्ञ होना चाहिए, न यह कि अति करके अल्लाह का कृतघ्न हो।

[2]किसी का प्राण अनुचित रूप से बर्बाद करने से मना करने के पश्चात धन के अपव्यय से रोका जा रहा है तथा इसमें अनाथ का धन विशेष महत्व रखता है। इसलिए कहा कि अनाथ के व्यस्क होने तक उसके धन को इस प्रकार से प्रयोग करो, जिसमें उसका लाभ हो। यह न हो कि बिना सोचे-विचारे ऐसे कार्य में लगा दो कि वह विनाश अथवा हानि में जाये अथवा युवावस्था तक पहुँचने से पूर्व ही तुम उसे समाप्त कर दो।

[3]वचन से वह संधियाँ भी तात्पर्य हैं जो अल्लाह तथा उसके भक्त के मध्य है तथा वह भी जो लोग आपस में एक-दूसरे से करते हैं। दोनों प्रकार के वचन का पालन करना आवश्यक है तथा वचन भंग करने पर पकड़ होगी।

[4]प्रतिफल तथा प्रतिकार के आधार पर उत्तम है। इसके अतिरिक्त लोगों के अन्दर विश्वास उत्पन्न करने में भी नाप-तौल में ईमानदारी लाभकारी है।

(३६) तथा जिस बात की तुझे सूचना ही न हो, उसके पीछे मत पड़ |[1] क्योंकि कान तथा आँख एवं दिल इनमें से प्रत्येक से पूछताछ की जाने वाली है |[2]

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝

(३७) तथा धरती पर अकड़ कर न चलो, क्योंकि न तू धरती को चीर सकता है तथा न लम्बाई में पर्वतों को पहुँच सकता है |[3]

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝

(३८) यह सब कार्यों की बुराई तेरे पालनहार के समीप अति अप्रिय हैं |[4]

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ۝

(३९) यह भी उस प्रकाशना (वह्यी) में से है जिसे तेरे पालनहार ने तेरी ओर सुनीति से उतारी है, अत: अल्लाह के साथ किसी अन्य को पूज्य न बनाना कि धिक्कार कर तथा अपमानित करके नरक में डाल दिया जाये |

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝

---

[1] قَفَا يَقْفُو का अर्थ है पीछे लगना | अर्थात जिस बात का ज्ञान नहीं उसके पीछे मत लगो, अर्थात कुविचार न रखो, किसी की खोज में न रहो, इसी प्रकार जिस बात का ज्ञान नहीं उसका अनुसरण न करो |

[2]अर्थात जिस वस्तु के पीछे तुम पड़ोगे उसके सम्बन्ध में कान से प्रश्न किया जायेगा कि क्या उसने सुना था, आँख से प्रश्न होगा कि क्या उसने देखा था तथा हृदय से प्रश्न होगा कि क्या उसने जाना था | क्योंकि यही तीन ज्ञान के साधन हैं | अर्थात इन अंगों को अल्लाह तआला प्रलय के दिन बोलने की शक्ति प्रदान करेगा तथा उनसे पूछा जायेगा |

[3]इतराकर तथा अकड़कर चलना, अल्लाह तआला को अत्यंत अप्रिय है | क़ारून को इसीलिए उस के घर तथा कोष सहित धरती में धँसा दिया (सूर: *अल-कसस*-८१) हदीस में आता है, "एक व्यक्ति दो चादरें पहनकर अकड़ कर चल रहा था कि उसको धरती में धँसा दिया गया तथा वह क़ियामत तक धँसता चला जायेगा |" (सहीह मुस्लिम किताबुल लिबास, बाब तहरीमुत तबख़्तुरे फ़िल मश्य मअ एजाबिहि बिसियाबिहि) अल्लाह तआला को नम्रता तथा विनम्रता प्रिय है |

[4]अर्थात जो बातें वर्णित हुई, उनमें से जो बुरी हैं, जिन से मना किया गया है, वह अप्रिय हैं |

(४०) क्या पुत्रों के लिए अल्लाह ने तुम्हें निर्वाचित कर लिया है तथा स्वयं अपने लिए फ़रिश्तो को पुत्रियाँ बना लिया ? नि:संदेह तुम बहुत बड़ा बोल बोल रहे हो।

أَفَأَصْفَىٰكُمْ رَبُّكُم بِٱلْبَنِينَ وَٱتَّخَذَ مِنَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنَٰثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ۝٤٠

(४१) तथा हमने तो इस क़ुरआन में हर प्रकार से वर्णन कर दिया[1] कि लोग समझ जायें। परन्तु इस पर भी उनकी घृणा ही अधिक होती है।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِى هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ لِيَذَّكَّرُوا۟ وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝٤١

(४२) कह दीजिए कि यदि अल्लाह के साथ अन्य देवता (पूज्य) भी होते जैसाकि ये लोग कहते हैं, तो अवश्य वह अब तक अर्श के स्वामी की ओर मार्ग खोज लेते।[2]

قُل لَّوْ كَانَ مَعَهُۥٓ ءَالِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا لَّٱبْتَغَوْا۟ إِلَىٰ ذِى ٱلْعَرْشِ سَبِيلًا ۝٤٢

(४३) जो कुछ ये कहते हैं, उससे वह पवित्र एवं महान, अति दूर एवं अत्यधिक उच्च हैं।[3]

سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝٤٣

---

[1]नाना प्रकार से अर्थ है, भाषण तथा शिक्षा, तर्क तथा युक्ति, प्रलोभन तथा चेतावनी, तथा उदाहरण एवं घटनायें हर प्रकार से बार-बार समझाया गया है ताकि वे समझ जायें, परन्तु वह कुफ़्र तथा मूर्तिपूजा में इस प्रकार फंसे हुए हैं कि वह सत्य के निकट होने के बजाय उससे अधिक दूर हो गये हैं। इसलिए कि वह यह समझते हैं कि यह क़ुरआन जादू, ज्योतिष तथा कविता है, फिर वह इस क़ुरआन से किस प्रकार मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।

[2]इसका एक अर्थ तो यह है कि जिस प्रकार एक राजा दूसरे राजा पर आक्रमण करके विजय प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार यह देवता भी अल्लाह पर अधिकार प्राप्त करने का मार्ग खोज निकालते। तथा अब तक ऐसा नहीं हुआ, जब कि उन देवताओं को पूजते युग बीत गये, तो इसका अभिप्राय यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। कोई स्वाधीन शक्ति ही नहीं, कोई लाभ तथा हानि पहुँचाने वाला नहीं। दूसरा अर्थ यह है कि वह अब तक अल्लाह की निकटता प्राप्त कर चुके होते तथा यह मूर्तिपूजक जो विश्वास रखते हैं कि उनके द्वारा वह अल्लाह की निकटता प्राप्त करते हैं, उन्हें भी वह अल्लाह के निकट कर चुके होते।

[3]अर्थात वास्तविकता यह है कि यह लोग अल्लाह के विषय में जो कहते हैं कि उसके साझीदार हैं। अल्लाह तआला इन सब बातों से शुद्ध तथा अत्यन्त महान है।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٤﴾

(४४) सातों आकाश तथा धरती एवं जो कुछ उनमें है उसी की महिमागान करती है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो पवित्रता तथा महानता के साथ उसे याद न करती हो। हाँ, यह सत्य है कि तुम उसका महिमागान समझ नहीं सकते।[1] वह बड़ा सहनशील तथा क्षमा करने वाला है।

---

[1]अर्थात सब उसी के आज्ञाकारी तथा अपनी-अपनी शैली में उसकी महिमा तथा गुणों का वर्णन करते हैं यद्यपि हम उनकी महिमा तथा गुणों के वर्णन को न समझ सकें। इसकी पुष्टि क़ुरआन की अन्य आयतों से भी होती है। जैसे : आदरणीय दाऊद के विषय में आता है।

﴿ إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴾

"हमने पर्वतों को दाऊद के अधीन कर दिया, बस वे संध्या तथा प्रात: उसके साथ अल्लाह की महिमा (शुद्धता) का वर्णन करते हैं।" (सूर: साद-१८)

कुछ पत्थरों के विषय में अल्लाह तआला ने सूर: अल-बकर:-७४ में फ़रमाया :

﴿ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ﴾

"तथा कुछ अल्लाह तआला के भय से गिर पड़ते हैं।"

"कुछ सहाबा वर्णन करते हैं कि वह रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ भोजन कर रहे थे कि उन्होंने भोज्य पदार्थ से अल्लाह की महिमागान करने की ध्वनि सुनी" (सहीह बुख़ारी किताबुल मनाक़िब संख्या ३५७९)। एक अन्य हदीस से सिद्ध है कि चीवँटियाँ अल्लाह की महिमागान करती हैं। (सहीह बुख़ारी संख्या ३०१९ तथा सहीह मुस्लिम संख्या १७५९)। इसी प्रकार जिस तनों की टेक लगा कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भाषण दिया करते थे, जब लकड़ी का मंच (बैठने तथा खड़ा होने का स्थान) बन गया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस स्थान को छोड़ दिया तो बच्चे की तरह उससे रोने की आवाज़ आती थी (सहीह बुख़ारी संख्या ३५८३)। मक्के में एक पत्थर था जो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया करता था (सहीह मुस्लिम संख्या १७८२)। इन आयतों तथा सहीह हदीसों से स्पष्ट है कि जड़ पदार्थ तथा बनस्पति के अन्दर एक विशेष प्रकार का संवेदन विद्यमान है, जिसे यद्यपि हम न समझ सकें, परन्तु वे उस संवेदन के आधार पर अल्लाह की महिमा का वर्णन करते हैं। कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे तात्पर्य सांकेतिक महिमा है अर्थात ये वस्तुयें इस बात का संकेत हैं कि समस्त विश्व का रचयिता तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह ही है।

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٤٥﴾

(४५) तथा तू जब क़ुरआन पढ़ता है, हम तेरे तथा उन लोगों के मध्य जो परलोक के प्रति (आख़िरत) पर विश्वास नहीं रखते एक गुप्त आवरण (पर्दा) डाल देते हैं ।[1]

وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٤٦﴾

(४६) तथा उनके दिलों पर हमने पर्दे डाल दिये हैं कि वह उसे समझें तथा उनके कानों में बोझ, तथा जब तू केवल अल्लाह ही का वर्णन उसकी एकता के साथ इस क़ुरआन में करता है, तो वे मुख फेर कर पीठ मोड़कर भाग खड़े होते हैं ।[2]

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٤٧﴾

(४७) जिस उद्देश्य से वे उसे सुनते हैं उनके विचारों से हम भली-भाँति परिचित हैं, जब ये आपकी ओर कान लगाये हुए होते हैं, तब भी तथा जब ये विचार-विमर्श करते हैं तब भी, जबकि यह अत्याचारी कहते हैं कि तुम

وَفِي كُلِّ شَيْءٍ لَهُ آيَةٌ * تَدُلُّ عَلَىٰ أَنَّهُ وَاحِدٌ

"प्रत्येक वस्तु इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह तआला एक है ।"

परन्तु उचित बात प्रथम ही है कि महिमानगान अपने वास्तविक अर्थ में है ।

[1] ساتر ، مستور के अर्थ में है । इसका अर्थ विघ्न तथा आवरण है । अथवा مستور عن الأبصار (आँखों से ओझल) अंततः वह उसे देखते नहीं । इसके साथ उनके तथा मार्गदर्शन के मध्य पर्दा पड़ा है ।

[2] كنان ، أكنة (किनान) का बहुवचन है, ऐसा पर्दा जो दिलों पर पड़ जाये । وقر कानों में ऐसा बोझ जो क़ुरआन के सुनने में बाधित हो । अर्थ यह हुआ कि उनके दिल क़ुरआन के समझने योग्य नहीं तथा कान क़ुरआन सुन कर मार्गदर्शन प्राप्त करने योग्य नहीं हैं । तथा अल्लाह की एकता से तो उन्हें इतनी घृणा है कि उसे सुनकर भाग खड़े होते हैं, इन कार्यों का सम्बन्ध अल्लाह से इन्हे पैदा करने के कारण है । वरन् मार्गदर्शन से वंचित होना उनके इंकार तथा घृणा ही का परिणाम था ।

उसके अनुसरण में लगे हुए हो जिस पर जादू कर दिया गया है ।[1]

(४८) देखें तो सही, वे आपके लिए क्या-क्या उदाहरण देते हैं, अत: वे बहक रहे हैं। अब तो मार्ग पाना उनके वश में नहीं रहा ।[2]

انْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾

(४९) उन्होनें कहा कि क्या जब हम अस्थियाँ तथा धूल हो जायेंगे तो क्या हम नये जन्म में पुन: उठाकर खड़े कर दिये जायेंगे ।

وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٤٩﴾

(५०) उत्तर दीजिए कि तुम पत्थर बन जाओ अथवा लोहा ।[3]

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ﴿٥٠﴾

(५१) अथवा कोई ऐसी वस्तु जो तुम्हारे दिलों में बहुत ही महान प्रतीत होती हो[4] फिर वह पूछें कि कौन है जो पुन: हमारा जीवन लौटाये ? (आप) उत्तर दें कि वही (अल्लाह) जिसने तुम्हें प्रथम बार जन्म दिया, इस पर वे अपने सिर हिला-हिलाकर[5] आपसे पूछेंगे

أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۚ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا ۖ قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ ۖ قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ﴿٥١﴾

---

[1]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह जादू से पीड़ित समझते हैं तथा यह समझते हुए क़ुरआन सुनते तथा आपस में कानाफूसी करते हैं, इसलिए मार्गदर्शन से वंचित ही रहते हैं।

[2]कभी जादूगर, कभी जादू से पीड़ित कभी पागल तथा कभी ज्योतिषी कहते हैं, अत: इस प्रकार भटक रहे हैं। मार्गदर्शन उन्हें किस प्रकार मिले ?

[3]जो मिट्टी तथा हड्डी से भी अधिक कठोर है तथा जिसमें जीवन के चिन्ह उत्पन्न करना अधिक जटिल है।

[4]अर्थात उससे भी कड़ी वस्तु जो तुम्हारे ज्ञान में हो, वह बन जाओ तथा फिर पूछो कि कौन जीवित करेगा ?

[5] أنغض يُنغض का अर्थ है सिर हिलाना। अर्थात उपहास स्वरूप सिर हिलाकर वह कहेंगे कि यह पुर्नजीवन कब होगा ?

कि अच्छा यह होगा कब ? तो (आप) उत्तर दें कि क्या आश्चर्य कि वह निकट ही आ लगी हो ।[1]

(५२) जिस दिन वह तुम्हें बुलायेगा[2] तुम उसकी प्रशंसा करते हुए आज्ञा पालन करोगे तथा अनुमान करोगे कि तुम्हारा रहना अति अल्प है ।[3]

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٥٢﴾

(५३) तथा मेरे भक्तों से कह दीजिए कि वह बहुत ही अच्छी बात अपने मुख से निकाला

وَقُل لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ

---

[1] قريب का अर्थ है होने वाली वस्तु كل ما هو آت فهو قريب "प्रत्येक घटने वाली वस्तु समीप है ।" तथा عسى भी क़ुरआन में निश्चय तथा अवश्य होने के अर्थ में प्रयोग हुआ है अर्थात क़ियामत का होना निश्चित तथा आवश्यक है ।

[2] 'बुलायेगा' का अर्थ है क़ब्रों (समाधियों) से जीवित करके सदन में उपस्थिति करेगा, तुम उसकी महिमा का वर्णन करते हुए आदेश का पालन करोगे अथवा उसे पहचानते हुए उसके समक्ष उपस्थित हो जाओगे ।

[3] वहाँ यह दुनिया का जीवन अति अल्प प्रतीत होगा ।

﴿ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ﴾

"जब क़ियामत को देख लेंगे, तो साँसारिक जीवन ऐसा लगेगा कि जैसे एक संध्या अथवा एक प्रातः रहे हैं ।" (*सूरः अल-नाज़िआत-४६*)

इसी विषय कोअन्य स्थानों पर भी वर्णन किया गया है । जैसे *सूरः ताहा*-१०२ तथा १०४, *सूरः अल-रूम-५५*, *सूरः अल-मोमिनून*-११२ तथा ११४ । कुछ विद्वान कहते हैं कि प्रथम फूँक होगी तो मरे हुए लोग जीवित हो जायेंगे । फिर दूसरी फूँक (नाद) पर हश्र के मैंदान में हिसाब-किताब के लिए एकत्रित होंगे, दोनों फूँक (नाद) के मध्य की अवधि में उन्हें कोई यातना नहीं दी जायेगी, वे सो जायेंगे । दूसरी फूँक पर उठेंगे तो कहेंगे, "अफ़सोस हमें हमारी निद्रा से किसने उठाया है ?" (*सूरः यासीन*-५२) (फ़तहुल क़दीर) पहली बात अधिक ठीक है ।

إِنَّ الشَّيْطَٰنَ كَانَ لِلْإِنسَٰنِ عَدُوًّا مُّبِينًا ﴿٥٣﴾

करें [1] क्योंकि शैतान आपस में फूट डलवाता है ।[2] निःसंदेह शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है ।

رَّبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ إِن يَشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِن يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿٥٤﴾

(५४) तुम्हारा पोषक तुम्हारी अपेक्षा तुमसे अत्यधिक जानने वाला है, वह यदि चाहे तो तुम पर दया कर दे, चाहे तुम्हें दण्ड दे ।[3] हमने आपको उनका उत्तरदायी बनाकर नहीं भेजा ।[4]

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَن فِى السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّۦنَ

(५५) तथा आकाशों एवं धरती में जो कुछ भी है आपका प्रभु सबको भली-भाँति जानता है । हमने कुछ पैग़म्बरों को कुछ पर श्रेष्ठता

---

[1]अर्थात आपस में बातचीत करते समय भाषा के प्रयोग में सावधानी रखें, अच्छे शब्द बोलें, इसी प्रकार काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों एवं अहले किताब को सम्बोधित करने की आवश्यकता पड़ जाये तो उनसे भी प्रेमपूर्वक एवं मृदल शब्दों में बातचीत करें ।

[2]भाषा की ज़रा-सी चूक से शैतान, जो तुम्हारा खुला तथा आदि से शत्रु है, तुम्हारे मध्य आपस में उपद्रव करवा सकता है अथवा काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के दिलों में तुम्हारे लिए अधिक द्वेष तथा घृणा उत्पन्न कर सकता है । हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "तुम में से कोई व्यक्ति अपने भाई (मुसलमान) की ओर हथियार के साथ संकेत न करे, इसलिए कि वह नहीं जानता कि शैतान शायद उसके हाथ से वह हथियार चलवा दे । (तथा वह उस मुसलमान भाई को जा लगे, जिससे उसकी मृत्यु हो जाये) तो वह नरक के गढ़े में जा गिरे ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल फ़ेतन बाब मन हमल अलैन स्सेलाह फलैस मिन्ना, सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे बाबुन नहये मिनल इशारते बिस-सेलाह)

[3]यदि सम्बोधन मूर्तिपूजकों से हो तो कृपा का अर्थ इस्लाम धर्म धारण करने का सौभाग्य के होगा तथा यातना से तात्पर्य मूर्तिपूजा करते ही मौत है, जिसके कारण वे यातना के अधिकारी होंगे तथा यदि सम्बोधन ईमान वालों से हो तो कृपा का अर्थ होगा कि वह काफ़िरों से तुम्हारी सुरक्षा करेगा तथा यातना का अर्थ है काफ़िरों का मुसलमानों पर प्रभुत्व तथा अधिपत्य ।

[4]कि आप उन्हें अवश्य कुफ़्र के दलदल से निकालें अथवा उनके कुफ़्र पर दृढ़ रहने पर आप से पूछताछ हो ।

عَلٰى بَعْضٍ وَّ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾

तथा प्रतिष्ठा प्रदान की है ।[1] तथा दाऊद को जबूर हमने ही प्रदान की है ।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾

(५६) कह दीजिये कि (अल्लाह के) अतिरिक्त जिन्हें तुम [देवता (वंदनीय)] समझ रहे हो, उन्हें पुकारो परन्तु न तो वह तुमसे किसी दुख को दूर कर सकते हैं न परिवर्तित कर सकते हैं ।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾

(५७) जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे स्वयं अपने पालनहार के सामीप्य की खोज में रहते हैं कि उनमें से कौन अधिक निकट हो जाये, वे स्वयं उसकी कृपा की आशा रखते हैं तथा उसकी यातना से भयभीत रहते हैं,[2] (बात भी यही है) कि तेरे प्रभु की यातना डरने की चीज है ।

---

[1]यह विषय ﴿تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ﴾ में भी गुज़र चुका है । यहाँ पुन: मक्का के काफ़िरों के उत्तर में इस विषय की पुनरावृत्ति हुई है जो कहते थे कि क्या अल्लाह को रिसालत के लिए यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही मिला था ? अल्लाह तआला ने उत्तर दिया कि किसी को रिसालत के लिए चयन करना तथा किसी एक नबी को दूसरे पर श्रेष्ठता देना, यह अल्लाह के ही अधिकार में है ।

[2]प्रस्तुत आयत में من دون الله से तात्पर्य फ़रिश्तों तथा महात्माओं के वे चित्र तथा मूर्तियाँ हैं जिनकी वे पूजा करते थे अथवा आदरणीय उज़ैर तथा मसीह हैं जिन्हें यहूदी तथा इसाई अल्लाह का पुत्र कहते तथा उन्हें दैवी गुणों से युक्त मानते थे अथवा वे जिन्नात हैं जो मुसलमान हो गये थे तथा मूर्तिपूजक उनकी पूजा करते थे । इसलिए कि इस आयत में बताया जा रहा है कि वे स्वयं भी अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करते तथा उसकी कृपा की कामना करते तथा उसकी यातना से भयभीत हैं तथा यह गुण जड़ पदार्थों (पत्थरों) में नहीं हो सकता । इस आयत से स्पष्ट हो जाता है कि من دون الله (अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी पूजा की जाती रही है) वे केवल पत्थर की मूर्तियाँ ही नहीं थीं, अल्लाह के वे भक्त भी थे जिन में से कुछ फ़रिश्ते, कुछ पुण्यात्मा, कुछ नबी तथा कुछ जिन्नात थे । अल्लाह तआला ने सब के विषय में फ़रमाया कि वह कुछ नहीं कर सकते, न किसी के दुख का निवारण कर सकते हैं, न किसी की परिस्थितियाँ बदल सकते हैं । "अपने प्रभु की निकटता प्राप्त करने की धुन में रहते हैं ।" का अर्थ सत्यकर्म से अल्लाह की निकटता खोजते हैं । यही माध्यम है जिसे क़ुरआन में वर्णन किया गया है,

(५८) तथा जितनी भी बस्तियाँ हैं हम क़ियामत के दिन से पूर्व या तो उन्हें ध्वस्त कर देने वाले हैं अथवा अत्यधिक घोर दण्ड देने वाले हैं। यह तो किताब में लिखा जा चुका है।[1]

وَإِن مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾

(५९) तथा हमें निशानियाँ (चमत्कार) उतारने से रोक केवल इसी की है कि अगले लोग इन्हें झुठला चुके हैं।[2] हमने समूद को प्रतीक के रूप में ऊँटनी दी परन्तु उन्होंने उस पर

وَمَا مَنَعَنَا أَن نُّرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَن كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۚ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ

वह नहीं है जिसे क़ब्र पूजक वर्णन करते हैं कि मरे हुए व्यक्तियों के नाम का भोग-प्रसाद (नज़र-नियाज़) दो, उनके क़ब्रों पर चादर चढ़ाओ तथा मेले लगाओ एवं उनसे सहायता की प्रार्थना तथा गुहार करो। यह माध्यम नहीं, यह तो उनकी पूजा है जो शिर्क है। अल्लाह तआला प्रत्येक मुसलमान को इससे सुरक्षित रखे। (आमीन)

[1]किताब से तात्पर्य 'सुरक्षित पुस्तक' (लौहे महफ़ूज़) है। अर्थ यह है कि अल्लाह तआला की ओर से यह बात निश्चित है, जो 'सुरक्षित पुस्तक' में लिखी हुई है कि हम काफ़िरों की प्रत्येक बस्ती को या तो मृत्यु द्वारा नष्ट कर देंगे तथा बस्ती से तात्पर्य नगरवासी हैं तथा विनाश का कारण उनका कुफ़्र तथा मूर्तिपूजन एवं अत्याचार तथा दुष्टता है। इसके अतिरिक्त यह विनाश क़ियामत से पूर्व घटित होगा, वरन् क़ियामत के दिन तो प्रत्येक बस्ती ही विलीन तथा विनाश का शिकार हो जायेगी।

[2]यह आयत उस समय अवतरित हुई जिस समय मक्का के काफ़िरों ने यह माँग की कि सफ़ा के पर्वत को स्वर्ण बना दिया जाये अथवा मक्का के पर्वत अपने स्थान से हटा दिये जायें ताकि वहाँ खेती की जा सके, जिस पर अल्लाह तआला ने जिब्रील के माध्यम से संदेश भेजा कि उनकी माँग हम पूरा करने को तैयार हैं, परन्तु यदि उसके पश्चात भी वह ईमान न लाये तो फिर उनका विनाश निश्चित है। फिर उन्हें अवसर नहीं दिया जायेगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इसी बात को उचित समझा कि इनकी माँगें पूरी न की जाये ताकि वह निश्चित विनाश से बच जायें। (मुसनद अहमद भाग १ पृष्ठ २५८) इस आयत में भी अल्लाह तआला ने यही विषय वर्णन किया है कि उनकी इच्छा अनुसार हमें निशानियाँ अवतरित करने में कोई कठिनाई नहीं है। परन्तु हम इससे इसलिए बच रहे हैं कि पूर्व के समुदायों ने भी अपनी इच्छा के अनुसार निशानियाँ माँगी थीं, जो उन्हें दिखायी गयीं, परन्तु उसके उपरान्त भी उन्होंने झुठलाया तथा ईमान न लाये, जिसके परिणाम स्वरूप वे नाश कर दिये गये।

وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيٰتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ۝

अत्याचार किया।[1] हम तो लोगों को केवल सतर्क करने के लिए प्रतीक भेजते हैं।

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي أَرَيْنٰكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۚ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۝

(६०) तथा याद करो जबकि हमने आप से कह दिया कि आपके प्रभु ने लोगों को घेर लिया है।[2] जो दर्शन आपको दिखायी थी, वह लोगों के लिए स्पष्ट परीक्षा ही थी तथा उसी प्रकार वह वृक्ष भी जिससे क़ुरआन में घृणा का प्रदर्शन किया गया है।[3] हम उन्हें सतर्क कर रहे हैं परन्तु यह उन्हें और अधिक दुष्टता में बढ़ा रहा है।[4]

---

[1]समूद के समुदाय को उदाहरण स्वरूप वर्णन किया क्योंकि इच्छानुसार पत्थर की चट्टान से ऊँटनी प्रगट की गयी थी परन्तु उन अत्याचारियों ने ईमान लाने के बजाय, उस ऊँटनी ही को मार डाला, जिसके कारण तीन दिन पश्चात प्रकोप आ गया।

[2]अर्थात लोग अल्लाह के प्रभाव एवं इच्छा के अधीन हैं, तथा जो अल्लाह चाहेगा वही होगा न कि वह जो वह चाहेंगे, अथवा तात्पर्य मक्कावासी हैं कि वे अल्लाह के आदेशाधीन हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निश्चिन्त रिसालत का प्रचार-प्रसार कीजिए, वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुरक्षा करेंगे। अथवा बद्र की युद्ध तथा मक्का विजय के अवसर पर जिस प्रकार अल्लाह ने मक्का के मूर्तिपूजकों को अपमानजनक पराजय से दो चार किया, उसको स्पष्ट किया जा रहा है।

[3]सहाबा तथा ताबईन ने इस रूया (दर्शन) की व्याख्या प्रत्यक्ष दर्शन से की है तथा तात्पर्य इससे मेराज की घटना है जो बहुत से क्षीण लोगों के लिए भटकावे का कारण बन गया तथा वे विधर्मी हो गये। तथा वृक्ष से तात्पर्य जक़्क़ूम (नरकीय) का वृक्ष है, जिसको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात नरक में देखा। الملعونة से तात्पर्य खाने वालों पर अर्थात नरकवासियों पर धिक्कार। जैसे अन्य स्थान पर है।

﴿ إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴾

"नरकीय वृक्ष (ज़क़्क़ूम) पापियों का खाना है।" (सूर: दुख़ान-४३,४४)

[4]अर्थात काफ़िरों के दिलों में जो द्वेष तथा ईर्ष्या है, उसके कारण निशानियाँ देखकर ईमान लाने के बजाय उनकी उग्रता तथा व्याकुलता में अत्यधिक वृद्धि होती है।

(६१) तथा जब हमने फ़रिश्तों को आदेश दिया कि आदम को दण्डवत् (सजदा) करो तो इब्लीस के अतिरिक्त सब ने किया। उसने कहा कि क्या मैं उसे दण्डवत् करूँ जिसे तूने मिट्टी से बनाया है।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ قَالَ ءَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ﴿٦١﴾

(६२) अच्छा देख ले, उसे तूने मुझ पर श्रेष्ठता तो दी है, परन्तु यदि तूने मुझे क़ियामत तक अवसर दिया तो मैं इसकी संतान को अति अल्प लोगों के सिवाय अपने वश में कर लूँगा।[1]

قَالَ أَرَءَيْتَكَ هَٰذَا ٱلَّذِى كَرَّمْتَ عَلَىَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُۥٓ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٢﴾

(६३) आदेश हुआ कि जा, उनमें से जो भी तेरा अनुयायी हो जायेगा तो तुम सबका दण्ड नरक है, जो पूर्ण प्रतिकार है।

قَالَ ٱذْهَبْ فَمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُورًا ﴿٦٣﴾

(६४) उन में से तू जिसे भी अपनी बात से बहका सके बहका ले[2] तथा उन पर अपने सवार तथा पैदल चढ़ा ला,[3] तथा उनके माल तथा संतान में से अपना भी साझा लगा[4]

وَٱسْتَفْزِزْ مَنِ ٱسْتَطَعْتَ مِنْهُم بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِم بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِى ٱلْأَمْوَٰلِ

---

[1]अर्थात उस पर अधिकार प्राप्त कर लूँगा तथा उसे जिस प्रकार चाहूँगा विपथ कर लूँगा। परन्तु कुछ लोग मेरे छल तथा दाँव से बच जायेंगे। आदम तथा इब्लीस की यह कथा इससे पूर्व *सूरः अल-बक़रः*, *सूरः अल-आराफ़* तथा *सूरः अल-हिज्र* में आ चुकी है। यहाँ चौथी बार इसे वर्णन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त *सूरः अल-कहफ़*, *सूरः ताहा*, *सूरः* साद में भी इसका वर्णन आयेगा।

[2]ध्वनि से तात्पर्य आकर्षक नैवेद्य अथवा गीत-संगीत एवं आनन्द-मनोरंजन के यंत्र हैं जिनके द्वारा शैतान अधिकतर लोगों को भटका रहा है।

[3]उन सेनाओं से तात्पर्य मनुष्यों तथा जिन्नों की वे सवार तथा पैदल सेना है, जो शैतान के शिष्य तथा उसकी जाल के शिकार हैं एवं शैतान ही की भाँति मनुष्यों को भटकाते हैं अथवा तात्पर्य है प्रत्येक सम्भावित साधन जो शैतान भटकाने के लिए प्रयोग करता है।

[4]माल में शैतान की भागीदारी का अर्थ है अनुचित साधनों से धन उपार्जन तथा अपव्यय करना है तथा इसी प्रकार पशुओं को मूर्तियों के नाम पर दान करना, जैसे बहीरः तथा

तथा उन्हें (मिथ्या) वचन दे ले ।[1] उनसे जितने भी वचन (वादे) शैतान के होते हैं, सब के सब पूर्णत: धोखा हैं ।[2]	وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٦٤﴾
(६५) मेरे सत्य भक्तों पर तेरा कोई अधिकार तथा वश नहीं ।[3] तथा तेरा पालनहार बड़ा कार्यक्षम पर्याप्त है ।[4]	اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾
(६६) तुम्हारा पालनहार वह है जो तुम्हारे लिये नदी में नौकायें चलाता है ताकि तुम उसके उपकार की खोज करो । वह तुम्हारे ऊपर अत्यधिक कृपालु है ।[5]	رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٦٦﴾

सायेब: आदि । तथा संतान में भागीदारी का अर्थ है व्यभिचार, गुरूप्रसाद, कृष्णदास, आदि नाम रखना, इस्लामी नियमों के विपरीत उनको शिक्षा-दीक्षा देना कि वे दुर्व्यवहारी तथा कुचरित्र बनें, उनको निर्धनता के भय से जीवित गाड़ देना अथवा हत कर देना, गर्भपात कराना सतान को अंधविश्वासी, यहूदी तथा इसाई आदि बनाना तथा बिना सुन्नत से सिद्ध प्रार्थनाओं को पढ़े पत्नी से संभोग करना आदि है । इन सभी परिस्थितियों में शैतान की भागीदारी हो जाती है ।

[1]कि कोई स्वर्ग-नरक नहीं है, अथवा मरने के पश्चात पुन: जीवित नहीं होंगे आदि ।

[2]अभिमान (धोखा) का अर्थ होता है अनुचित कार्य को इस प्रकार अलंकृति किया जाये कि वह अच्छा तथा उचित लगे ।

[3]भक्तों का स्वयं से सम्बन्धित करना, यह सम्मान तथा आदर स्वरूप है जिससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह के विशेष भक्तों को शैतान भटकाने में असफल रहता है ।

[4]अर्थात जो सही अर्थों में अल्लाह का भक्त बन जाता है, उसी पर भरोसा तथा विश्वास करता है तो अल्लाह भी उसका मित्र तथा कार्यक्षम बन जाता है ।

[5]यह उसका उपकार तथा कृपा ही है कि उसने समुद्र को मनुष्य के नियन्त्रण में कर दिया है तथा वह उस पर नाव तथा जलयान चलाकर एक देश से दूसरे देश भ्रमण करते हैं तथा व्यापार करते हैं ।

(६७) तथा समुद्र में विपत्ति पहुँचते ही जिन्हें तुम पुकारते थे, सब भूल जाते हैं, केवल वही (अल्लाह) शेष रह जाता है। फिर जब वह तुम्हें थल की ओर सुरक्षित ले आता है, तो तुम मुख फेर लेते हो। मनुष्य अत्यधिक कृतघ्न है।[1]

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَن تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْإِنسَانُ كَفُورًا ﴿٦٧﴾

(६८) तो क्या तुम इससे निर्भय हो गये कि तुम्हें थल के किसी भाग में (ले जाकर धरती में) धँसा दे अथवा तुम पर पथराव की आँधी भेज दे।[2] फिर तुम अपने लिए किसी साथी को न पा सको।

أَفَأَمِنتُمْ أَن يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ﴿٦٨﴾

(६९) क्या तुम इस बात से निर्भय हो गये हो कि (अल्लाह तआला) पुनः तुम्हें नदी की यात्रा में ले आये तथा तुम पर प्रचण्ड वायु के झोंके भेज दे तथा तुम्हारे कुफ्र के कारण तुम्हें डुबा दे। फिर तुम अपने लिए हम पर उसका दावा (पीछा) करने वाला किसी को न पाओगे।[3]

أَمْ أَمِنتُمْ أَن يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿٦٩﴾

---

[1]यह विषय पूर्व में भी कई स्थानों पर गुज़र चुका है।

[2]अर्थात समुद्र से निकलने के पश्चात तुम जो अल्लाह को भूल जाते हो, तो क्या तुम जानते नहीं कि वह थल में भी तुम्हें पकड़ सकता है, तुम्हें वह धरती में धँसा सकता है अथवा पत्थरों की वर्षा करके तुम्हें ध्वस्त कर सकता है जिस प्रकार कुछ विगत् समुदायों को उसने इसी प्रकार ध्वस्त कर दिया।

[3] قاصِفٌ ऐसी तीव्र एवं उग्र समुद्री वायु को कहते हैं जो नावों को तोड़ दे तथा उन्हें डुबो दे। تَبِيعًا प्रतिशोध लेने वाला पीछा करने वाला अर्थात तुम्हारे डूब जाने के पश्चात हम से पूछे कि तूने हमारे भक्तों को क्यों डुबाया? अर्थ यह है कि एक बार समुद्र से निकलने के पश्चात क्या तुम्हें पुनः समुद्र में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी? तथा वहाँ आपदा में नहीं डाल सकता?

(७०) तथा नि:संदेह हमने आदम की सन्तान को बड़ा सम्मान दिया [1] तथा उन्हें थल एवं जल की सवारियाँ दीं। [2] तथा उन्हें पवित्र वस्तुओं से जीविका प्रदान की [3] तथा अपनी बहुत सी सृष्टि पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की।[4]

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِىٓ ءَادَمَ وَحَمَلْنَٰهُمْ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ وَرَزَقْنَٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَفَضَّلْنَٰهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۝

(७१) जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय को उसके अगुवा के सहित बुलायेंगे।[5] फिर जिनका भी

يَوْمَ نَدْعُوا۟ كُلَّ أُنَاسٍۭ بِإِمَٰمِهِمْ

[1]यह मान तथा सम्मान मनुष्य के रूप में सभी को प्राप्त है चाहे ईमान वाला हो अथवा काफ़िर क्योंकि यह सम्मान अन्य सृष्टि जीव तथा जड़ पदार्थ एवं बनस्पति आदि के सापेक्ष है। तथा यह सम्मान विभिन्न रूप से है। जिस प्रकार रंग-रूप, शरीर, स्वरूप एवं आकार- प्रकार अल्लाह तआला ने मनुष्य को प्रदान किया है वह किसी अन्य सृष्टि को प्राप्त नहीं। जो बुद्धि मनुष्य को प्रदान की पशु आदि उससे वंचित हैं। इसके अतिरिक्त वह इसी बुद्धि से उचित, अनुचित, लाभकारी, हानिकारक, सुन्दर तथा कुरूप में निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है। इसी बुद्धि द्वारा वह अल्लाह की अन्य सृष्टि से लाभ उठाता है तथा उन्हें अपने अधीन रखता है। इसी बुद्धि तथा समझ से वह ऐसे भवनों का निर्माण करता है,ऐसे वस्त्रों की खोज करता है तथा ऐसी वस्तुओं का उत्पादन करता है, जो उसे गर्मी के वायु के ताप से तथा सर्दी की शीत से तथा ऋतुओं की अन्य कठिनाइयों से सुरक्षित रखती हैं। इसके अतिरिक्त सृष्टि की सभी वस्तुओं को अल्लाह तआला ने मनुष्य की सेवा पर लगा रखा है। चन्द्रमा, सूर्य, वायु, जल तथा अन्य अनगिनत वस्तुयें हैं जिनसे मनुष्य लाभान्वित हो रहा है।

[2]थल में वह घोड़ों, खच्चरों, गधों, ऊँटों तथा अपनी निर्मित सवारियों (रेलगाड़ी, बसों, वायुयान, साइकिल, मोटर आदि) पर सवार होता है तथा इसी प्रकार समुद्र में नाव एवं जहाज़ हैं जिन पर वह सवार होता तथा सामान लाता ले जाता है।

[3]मनुष्य के खाने के लिए जो अनाज, मेवे तथा फल उसने उपजाये हैं उनमें जो जो स्वाद तथा शक्ति रखी हैं। विभिन्न प्रकार तथा जाति के यह भोजन, यह स्वाद तथा स्वादिष्ट फल तथा शक्तिप्रद तथा हर्षवर्धक मिश्रित तथा पेय एवं माजून तथा खमीरें मनुष्यों के अतिरिक्त किस अन्य सृष्टि को प्राप्त हैं ?

[4]पूर्वोक्त विवरण से मनुष्य की बहुत-सी सृष्टि पर श्रेष्ठता एवं उच्चता स्पष्ट होती है।

[5]इमाम का अर्थ मुखिया, नेता तथा प्रतिनिधि है, यहाँ इससे क्या तात्पर्य है ? इसमें मतभेद है। कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे तात्पर्य पैग़म्बर हैं अर्थात प्रत्येक समुदाय को

فَمَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ فَأُوْلَٰٓئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧١﴾

कर्मपत्र दाहिने हाथ में दे दिया गया, वह तो (प्रसन्नता से) अपना कर्मपत्र पढ़ने लगेंगे। तथा धागे के समान (कण बराबर) भी अत्याचार न किये जायेंगे।[1]

وَمَن كَانَ فِي هَٰذِهِۦٓ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي ٱلْءَاخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٧٢﴾

(७२) तथा जो कोई इस लोक में अंधा रहा, वह परलोक (आख़िरत) में भी अंधा तथा मार्ग से बहुत ही भटका हुआ रहेगा।[2]

وَإِن كَادُواْ لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ ٱلَّذِيٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهُۥۖ وَإِذًا لَّٱتَّخَذُوكَ خَلِيلًا ﴿٧٣﴾

(७३) तथा ये लोग आपको उस प्रकाशना (वह्यी) से, जो हमने आप पर उतारी है, बहका देना चाह रहे थे कि आप इसके अतिरिक्त कुछ अन्य बातें ही हमारे नाम से बना लें, तब तो आप को ये लोग अपना संरक्षक तथा मित्र बना लेते।

وَلَوْلَآ أَن ثَبَّتْنَٰكَ لَقَدْ كِدتَّ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيلًا ﴿٧٤﴾

(७४) तथा यदि हम आपको स्थिर (अडिग) न रखते तो अधिक सम्भव था कि उनकी ओर

उसके पैग़म्बर के नाम से पुकारा जायेगा। कुछ कहते हैं कि इस से आकाशीय पुस्तकें तात्पर्य हैं जो नबियों के साथ अवतरित होती रहीं अर्थात हे तौरात वालो ! हे इंजील वालो तथा हे क़ुरआन वालो आदि कह के पुकारा जायेगा कुछ कहते हैं कि यहाँ 'इमाम' से तात्पर्य कर्मपत्र हैं अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को जब बुलाया जायेगा। तो उसका कर्मपत्र उसके हाथ में होगा तथा उसके अनुसार उसका निर्णय किया जायेगा। इसी विचार को इमाम शौकानी तथा इमाम इब्ने कसीर ने वरीयता दिया है।

[1] فتيلٌ उस झिल्ली अथवा धागे को कहते हैं, जो खजूर की गुठली में होता है अर्थात कण बराबर भी अत्याचार न होगा।

[2] أعمى (अंधा) से तात्पर्य हृदय का अंधा है अर्थात जो दुनिया में सत्य देखने तथा समझने एवं उसे स्वीकार करने से वंचित रहा, वह आख़िरत में अंधा और प्रभु की विशेष कृपा तथा उपकार से वंचित रहेगा।

कुछ न कुछ झुक ही जाते ।[1]

(७५) फिर तो हम भी आपको दुगनी यातना संसार की देते तथा दुगनी ही मृत्यु की[2] फिर आप तो अपने लिए हमारे आगे किसी को भी सहायक न पाते ।

إِذًا لَّأَذَقْنَٰكَ ضِعْفَ ٱلْحَيَوٰةِ وَضِعْفَ ٱلْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ۝٧٥

(७६) तथा ये तो आप के पग इस धरती से उखाड़ने ही लगे थे कि आपको इससे निकाल दें,[3] फिर ये भी आपके पश्चात बहुत कम ठहर पाते ।[4]

وَإِن كَادُوا۟ لَيَسْتَفِزُّونَكَ مِنَ ٱلْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا ۖ وَإِذًا لَّا يَلْبَثُونَ خِلَٰفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۝٧٦

(७७) ऐसा ही नियम उनका था, जो आपसे पूर्व रसूल (संदेशवाहक) हमने भेजे ।[5] तथा आप

سُنَّةَ مَن قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِن رُّسُلِنَا ۖ وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۝٧٧

---

[1]इसमें उस पवित्रता (निष्पाप) का वर्णन है जो अल्लाह की ओर से नबियों को प्राप्त होती है । इससे यह ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजक यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते थे परन्तु अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचाया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तनिक भी उनकी ओर नहीं झुके ।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि दण्ड पद एवं गरिमा के अनुसार होती है ।

[3]यह उस षड़यंत्र की ओर संकेत है, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का से निष्कासित करने के लिए मक्का के कुरैश ने तैयार किया था, जिससे अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचा लिया ।

[4]अर्थात यदि अपनी योजना अनुसार ये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का से निकाल देते तो ये भी उसके पश्चात अधिक देर न रहते अर्थात अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ जाते ।

[5]अर्थात यह प्राचीन नियम चला आ रहा है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूर्व के रसूलों के लिये भी बर्ता जाता रहा है कि जब उनके समुदाय ने उन्हें अपने देश से निकाल दिया अथवा उन्हें निकलने के लिए बाध्य कर दिया तो फिर वे समुदाय भी अल्लाह के प्रकोप से सुरक्षित नहीं रहे ।

हमारे नियमों में कभी परिवर्तन न पायेंगे ।[1]

(७८) नमाज़ स्थापित करें सूर्य ढलने से लेकर रात के अँधेरे तक[2] तथा प्रात: (फ़ज्र) का क़ुरआन पढ़ना भी । नि:संदेह प्रात: (फ़ज्र) के समय का क़ुरआन पढ़ना उपस्थित किया गया है ।[3]

أَقِمِ الصَّلَوٰةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْءَانَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْءَانَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ﴿٧٨﴾

(७९) तथा रात्रि के कुछ भाग में तहज्जुद (की नमाज़ में क़ुरआन) पढ़ा करें,[4] यह अधिकता

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ

---

[1]अत: मक्कावासियों को भी यही हुआ कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत के डेढ़ वर्ष पश्चात ही उन्हें बद्र के मैदान में अपमानजनक पराजय का मुख देखना पड़ा तथा छ: वर्ष पश्चात ८ हिजरी में मक्का ही विजय हो गया तथा इस अपमान तथा अनादर के पश्चात सिर उठाने योग्य न रहे ।

[2] دلوك का अर्थ ढलना तथा غسق का अर्थ अंधकार है । सूर्य ढलने के पश्चात ज़ोहर तथा अस्र की नमाज़ तथा रात्रि के अंधकार तक से तात्पर्य मग़रिब तथा इशा की नमाज़ें हैं तथा क़ुरआन अल-फ़ज्र से तात्पर्य फ़ज्र की नमाज़ है । क़ुरआन नमाज़ के अर्थ में है । इसको क़ुरआन की उपमा इसलिए दी गयी है कि फ़ज्र में क़ुरआन की आयतों का पाठ लम्बा होता है । इस प्रकार इस आयत में पाँचों अनिवार्य नमाज़ों का वर्णन आ जाता है जिसका विस्तृत वर्णन हदीसों में मिलता है तथा जो मुसलमानों के कर्म से भी सिद्ध है ।

[3]अर्थात उस समय फ़रिश्ते उपस्थित होते हैं, बल्कि दिन के फ़रिश्तों तथा रात्रि के फ़रिश्तों का मिलन होता है, जैसाकि हदीस में है (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: बनी इस्राईल) एक अन्य हदीस में है कि रात्रि वाले फ़रिश्ते जब अल्लाह के पास जाते हैं, तो अल्लाह तआला उनसे पूछता है, यद्यपि वह स्वयं भली-भाँति जानता है, तुम ने मेरे भक्तों को किस अवस्था में छोड़ा ? फ़रिश्ते उत्तर देते हैं कि जब हम उनके पास गये थे उस समय भी वह नमाज़ पढ़ रहे थे जब हम उनके पास से आये हैं तो उन्हें नमाज़ पढ़ते हुए छोड़कर आये हैं । (सहीह बुख़ारी किताबुल मवाक़ीत बाब फ़ज़्ले सलातील अस्रे व मुस्लिम बाबो सलाति स्सुब्हे वल अस्रे वल मुहाफ़ज़ते अलैहिमा)

[4]कुछ विद्वान कहते हैं तहज्जुद के दो प्रतिकूल अर्थ हैं, निद्रा तथा जाग्रण यहाँ इसी दूसरे अर्थ में है कि रात्रि को सोकर उठें और ऐच्छिक नमाज़ पढ़ें, कुछ कहते हैं कि हजूद का मूल अर्थ तो रात्रि के सोने के ही हैं किन्तु तफ़अउल में जाने से इसमें बचने के अर्थ उत्पन्न हो गये । जैसे تأثم का अर्थ है, वह पाप से बचा अथवा विलग रहा । इसी प्रकार

عَسَىٰٓ أَن يَبۡعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامٗا مَّحۡمُودٗا ۝٧٩

आपके लिए है,[1] शीघ्र ही आपका प्रभु आपको महमूद नाम के स्थान पर खड़ा करेगा ।[2]

وَقُل رَّبِّ أَدۡخِلۡنِي مُدۡخَلَ صِدۡقٖ وَأَخۡرِجۡنِي مُخۡرَجَ صِدۡقٖ وَٱجۡعَل لِّي مِن لَّدُنكَ سُلۡطَٰنٗا نَّصِيرٗا ۝٨٠

(८०) तथा विनय किया करें कि हे मेरे प्रभु ! मुझे जहाँ ले जा अच्छी प्रकार से ले जा तथा जहाँ से निकाल अच्छी प्रकार निकाल तथा मेरे लिए अपने पास से प्रभाव तथा सहायता निर्धारित कर दे ।[3]

तहज्जुद का अर्थ होगा सोने (निद्रा) से बचना । तथा متهجد वह होगा जो रात्रि की निद्रा से बचा तथा नमाज़ पढ़ी । अत: तहज्जुद का भावार्थ रात्रि के अन्तिम भाग में उठकर ऐच्छिक नमाज़ पढ़ना है । सारी रात्रि नमाज़ पढ़ना सुन्नत के विरूद्ध है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात्रि के प्रथम भाग में सोते तथा अन्तिम भाग में उठकर तहज्जुद पढ़ते । यही विधि सुन्नत है ।

[1]कुछ ने इसके अर्थ किये हैं, यह एक अतिरिक्त कर्तव्य है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए विशेष है, इस प्रकार वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तहज्जुद भी उसी प्रकार अनिवार्य थी, जिस प्रकार पाँच नमाज़ें अनिवार्य थीं । परन्तु मुसलमानों के लिए तहज्जुद की नमाज़ अनिवार्य नहीं । कुछ विद्वान कहते हैं कि نافلة अतिरिक्त का अर्थ यह है कि यह तहज्जुद की नमाज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पदोन्नति के लिए अतिरिक्त चीज़ है, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो निष्पाप हैं, जबकि मुसलमानों के लिए यह तथा अन्य पुण्य के कार्य बुराईयों का प्रायश्चित हैं । तथा कुछ विद्वान कहते हैं कि نافلة नफ़िल: (ऐच्छिक) ही है अर्थात न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनिवार्य थी न मुसलमानों पर, यह एक अतिरिक्त इबादत है जिसकी महिमा नि:संदेह अधिक है तथा उस समय अल्लाह अपनी इबादत से अति प्रसन्न होता है । परन्तु यह नमाज़ अनिवार्य तथा आवश्यक न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हुई थी न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों पर ही अनिवार्य है ।

[2]यह वह स्थान है जो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान करेगा तथा उस स्थान पर ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह महा अभिस्तावना (सिफ़ारिश) करेंगे जिसके पश्चात लोगों का हिसाब-किताब होगा ।

[3]कुछ विद्वान कहते हैं कि यह हिजरत के अवसर पर अवतरित हुई जबकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीने में प्रवेश करने तथा मक्का से निकलने की समस्या थी, कुछ कहते हैं कि इसका अर्थ है मुझे सत्य के साथ मृत्यु देना तथा सत्य के साथ

(८१) तथा घोषणा कर दी कि सत्य आ गया तथा असत्य विध्वस्त हो गया । निःसंदेह असत्य था भी विलय् होने योग्य ।[1]

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿٨١﴾

(८२) तथा यह क़ुरआन जो हम उतार रहे हैं ईमानवालों के लिए अत्यन्त स्वास्थ्य एवं कृपा है । हाँ, अत्याचारियों को क्षति के सिवा कोई अधिकता नहीं होती ।[2]

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۙ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾

(८३) तथा मानव पर जब भी हम अपना पुरस्कार करते हैं, तो वह मुख मोड़ लेता है तथा करवट बदल लेता है तथा जब भी उसे दुख होता है तो वह हताश हो जाता है ।[3]

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ ۖ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا ﴿٨٣﴾

(८४) कह दीजिए कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी विधि अनुसार कार्यरत है, जो पूर्ण मार्गदर्शन

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ

क़ियामत के दिन उठाना । कुछ कहते हैं कि मुझे क़ब्र में सत्य के साथ प्रवेश देना तथा क़ियामत के दिन जब क़ब्र से उठाये तो सत्य के साथ क़ब्र से निकालना आदि । इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि चूंकि यह प्रार्थना है इसलिए इसके सामान्य अर्थ में वह सब बाते आ जाती हैं ।

[1]हदीस में आता है कि मक्का विजय के पश्चात जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "*ख़ानए-काबा*" में प्रवेश किया, तो वहाँ तीन सौ साठ मूर्तियाँ थीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में छड़ी थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छड़ी की नोक से उन मूर्तियों को मारते जाते तथा ﴿جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ﴾ तथा ﴿جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ﴾ पढ़ते जाते (सहीह बुख़ारी तफ़सीर बनी इस्राईल किताबुल मज़ालिम तथा मुस्लिम बाबु इज़ालतिल असनामे मिन हौलिल कअब:)

[2]इस भावार्थ की आयत सूर: यूनुस-५७ में गुज़र चुकी है, उसकी व्याख्या देखिये ।

[3]इसमें मनुष्य की उस अवस्था एवं दशा का वर्णन है जिसमें साधारणत: सुख के तथा दुख के समय घिरता है । सुख में वह अल्लाह को भूल जाता है तथा दुख में निराश हो जाता है । परन्तु ईमान वालों की दशा दोनों परस्थितियों में इससे भिन्न है । देखिये सूर: हूद की आयत ९ से ११ तक की व्याख्या ।

पर हैं उन्हें तुम्हारा प्रभु ही भली-भाँति जानता है ।[1]

أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ﴿٨٤﴾

(८५) तथा ये लोग आप से आत्मा के विषय में प्रश्न करते हैं, (आप) उत्तर दीजिए कि आत्मा मेरे प्रभु के आदेश से है तथा तुम्हें जो ज्ञान दिया गया है वह बहुत ही अल्प है ।[2]

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ ۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٥﴾

(८६) तथा यदि हम चाहें तो जो प्रकाशना (वह्यी) आप की ओर हमने उतारी है सब ले लें,[3] फिर आप को उसके लिए हमारे समक्ष कोई भी पक्षधर न मिल सकेगा ।[4]

وَلَئِن شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِٱلَّذِىٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِۦ عَلَيْنَا وَكِيلًا ﴿٨٦﴾

---

[1]इसमें मूर्तिपूजकों के लिए धमकी तथा चेतावनी है तथा इसका वही भावार्थ है जो *सूर: हूद* की आयत १२१ तथा १२२ का है شَاكِلَة का अर्थ विचार, धर्म, विधि तथा व्यवहार एवं स्वभाव के हैं। कुछ विद्वान कहते हैं कि इसमें काफ़िर के लिए निन्दा तथा ईमानवालों के लिए प्रशंसा का पक्ष है क्योंकि इसका अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य ऐसा कर्म करता है, जो उसके उस व्यवहार तथा चरित्र पर आधारित होता है जो उसका स्वभाव एवं रीति होता है।

[2]प्राण (आत्मा) वह सुक्ष्म वस्तु है जो किसी को दिखायी नहीं देती परन्तु प्रत्येक जीवधारी की शक्ति तथा बल उसी आत्मा में निहित है। इसकी यर्थाता तथा तथ्य क्या है ? यह कोई नहीं जानता। यहूदियों ने एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके विषय में पूछा तो यह आयत अवतरित हुई (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: बनी इस्राईल* तथा सहीह मुस्लिम किताब सिफ़तिल कियाम: वल जन्न: वन नार, बाबु सोवालिल यहूदिन् नबीय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनिर रूह) आयत का अर्थ यह है कि तुम्हारा ज्ञान अल्लाह के ज्ञान के सापेक्ष तुच्छ है, तथा यह आत्मा जिसके विषय में तुम पूछ रहे हो, इसका ज्ञान तो अल्लाह ने नबियों सहित किसी को भी नहीं दिया। बस इतना समझो कि यह मेरे प्रभु का आदेश है अथवा मेरे प्रभु की महिमा में से है जिसकी वास्तविकता केवल वही जानता है।

[3]अर्थात प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा जो थोड़ा-सा ज्ञान दिया गया है यदि अल्लाह तआला चाहे तो उससे भी छीन ले अर्थात दिल से मिटा दे अथवा किताब से ही मिटा दे।

[4]जो पुन: उसी प्रकाशना (वह्यी) को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर लौटा दे।

إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ﴿٨٧﴾

(८७) अतिरिक्त आप के प्रभु की दया के।[1] निःसंदेह आप पर उसका अति उपकार है।

قُل لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَن يَأْتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾

(८८) कह दीजिए कि यदि सभी मानव तथा दानव मिलकर इस क़ुरआन के समान लाना चाहें तो उन सबसे इसके समतुल्य लाना असम्भव है, यद्यपि वे आपस में एक-दूसरे के सहायक भी बन जायें।[2]

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٨٩﴾

(८९) तथा हमने तो इस क़ुरआन में लोगों के समझने के लिए प्रत्येक रूप से सभी उदाहरण वर्णन कर दिये हैं, परन्तु अधिकतर लोग कृतघ्नता से नहीं रूकते।[3]

وَقَالُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنبُوعًا ﴿٩٠﴾

(९०) तथा उन्होंने कहा[4] कि हम आप पर कदापि ईमान लाने के नहीं, जब तक कि आप हमारे लिए धरती से जलस्रोत न निकाल दें।

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا ﴿٩١﴾

(९१) अथवा स्वयं आपके लिए कोई बाग हो खजूरों तथा अंगूरों का एवं उसके मध्य आप बहुत-सी नहरें बहती हुई निकाल कर दिखायें।

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا

(९२) अथवा आप आकाश को हम पर खंड-खंड करके गिरा दें जैसाकि आपका विचार

---

[1]कि उसने अवतरित की हुई प्रकाशना (वह्यी) को नहीं मिटाया अथवा अल्लाह की प्रकाशना (वह्यी) से आपको सम्मानित किया।

[2]पवित्र क़ुरआन मजीद से सम्बन्धित यह (चुनौती) पहले भी कई स्थानों पर गुज़र चुकी है। यह चैलेंज (चुनौती) अभी तक उत्तर की खोज में है।

[3]यह आयत इसी सूरः के प्रारम्भ में भी गुज़र चुकी है।

[4]ईमान लाने के लिए मक्का के क़ुरैशियों ने यह मांगें प्रस्तुत कीं।

كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾

है, अथवा आप स्वयं अल्लाह (तआला) को तथा फ़रिश्तों को हमारे समक्ष ला खड़ा करें।[1]

اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ ۭ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ۭ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾

(९३) अथवा आप के अपने लिए कोई स्वर्ण का घर[2] हो जाये अथवा आप आकाश पर चढ़ जायें तथा हम तो आपके चढ़ जाने का भी उस समय तक विश्वास नहीं करेंगे जब तक कि आप हम पर कोई किताब न उतार लायें, जिसे हम स्वयं पढ़ लें[3] आप उत्तर दें कि मेरा पालनहार पवित्र है, मैं तो एक मानव पुरूष हूँ जो रसूल (संदेशवाहक) बनाया गया हूँ।[4]

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا

(९४) तथा लोगों के पास मार्गदर्शन पहुँच चुकने के पश्चात ईमान से रोकने वाली केवल

---

[1]अर्थात हमारे सम्मुख आकर खड़े हो जायें तथा हम उन्हें अपनी आँखों से देखें।

[2] زخرف का वास्तविक अर्थ शोभा है। مزخرف शोभित वस्तु को कहते हैं। परन्तु यहाँ इसका अर्थ स्वर्ण है।

[3]अर्थात हममें से प्रत्येक व्यक्ति उसे साफ-साफ स्वयं पढ़ सकता हो।

[4]अर्थ यह है कि मेरे प्रभु के अन्दर तो हर प्रकार की शक्ति है, वह चाहे तो तुम्हारी माँगें क्षण भर में कुन كن शब्द से ही पूरी कर दे। परन्तु जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं तो (तुम्हारी तरह) एक मनुष्य हूँ। क्या कोई मनुष्य इन वस्तुओं का सामर्थ्य रखता है कि मुझ से इन की माँग करते हो ? हाँ, मैं इसके साथ अल्लाह का रसूल भी हूँ। परन्तु रसूल का कार्य केवल अल्लाह का संदेश पहुँचाना है,तो वह मैंने पहुँचा दिया तथा पहुँचा रहा हूँ। लोगों की माँग पर चमत्कार दिखाना यह रिसालत का भाग नहीं है। यदि अल्लाह चाहे तो रिसालत की सत्यता के लिए एक-आध चमत्कार दिखा दिया जाता है, परन्तु यदि लोगों की इच्छा पर चमत्कार दिखाना प्रारम्भ कर दिया जाये तो यह श्रृंखला कभी नहीं समाप्त होगी, प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार नया चमत्कार देखने की कामना करेगा तथा रसूल केवल इसी काम पर लगा रह जायेगा, धर्म की शिक्षा एवं आमन्त्रण देने का मूल कार्य ठप हो जायेगा। इसलिए चमत्कार का घटित होना केवल अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है, जिसका ज्ञान उसके अतिरिक्त किसी को नहीं। मैं भी उसकी इच्छा में हस्तक्षेप करने का अधिकारी नहीं।

إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَن قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٤﴾

यही वस्तु रही कि उन्होनें कहा, क्या अल्लाह ने एक मानव पुरूष को ही रसूल (अवतार) बनाकर भेजा ?[1]

قُل لَّوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَّسُولًا ﴿٩٥﴾

(९५) (आप) कह दें कि यदि धरती पर फ़रिश्ते चलते-फिरते तथा निवास करते होते, तो हम भी उनके पास किसी आकाशीय फ़रिश्ते को ही रसूल बनाकर भेजते ।[2]

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾

(९६) कह दीजिए कि मेरे तथा तुम्हारे मध्य अल्लाह का गवाह होना बस है ।[3] वह अपने भक्तों से भली-भाँति परिचित एवं भली प्रकार देखने वाला है ।

وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِهِ ۖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا ۖ مَّأْوَاهُمْ

(९७) तथा अल्लाह जिसका मार्गदर्शन कर दे वह मार्गदर्शन-प्राप्त है तथा जिसे वह मार्ग से भटका दे असम्भव है कि तू उसका मित्र उस के अतिरिक्त अन्य को पा ले ।[4] ऐसे लोगों को हम क़ियामत वाले दिन औंधे मुँह एकत्रित

---

[1]अर्थात किसी मनुष्य का रसूल होना काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के लिए अत्यन्त आश्चर्य की बात थी, वह यह बात मान नहीं रहे थे कि हमारे जैसा व्यक्ति, जो हमारी तरह चलता-फिरता है, हमारी तरह खाता-पीता है, हमारी तरह व्यक्तिगत सम्बन्धों से सम्बन्धित है, वह रसूल बन जाये । यह आश्चर्य उनके ईमान लाने में रूकावट था ।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब धरती पर मनुष्य बसते हैं, तो उनके मार्गदर्शन के लिए रसूल भी मनुष्य ही होंगे । अमानुष रसूल, मनुष्य के मार्गदर्शन का कर्तव्य पूरा नहीं कर सकता । हाँ यदि धरती पर फ़रिश्ते बसते होते तो उनके लिए रसूल भी अवश्य फ़रिश्ते होते ।

[3]अर्थात मेरे ऊपर जो धर्म का आदेश पहुँचाने का भार था वह मैंने पहुँचा दिया, इस विषय में मेरे तुम्हारे मध्य अल्लाह का साक्षी होना पर्याप्त है, क्योंकि हर चीज़ का निर्णय उसी के हाथ में है ।

[4]मेरे सतर्क करने तथा निर्देश देने से कौन ईमान लाता है, कौन नहीं, यह भी अल्लाह के अधिकार में है, मेरा कार्य केवल संदेश पहुँचाना है ।

करेंगे ।[1] जबकि वे अंधे, गूँगे तथा बहरे होंगे ।[2] उनका ठिकाना नरक होगा । जब कभी वह हल्की होने लगेगी, हम उन पर उसे और भड़का देंगे ।

جَهَنَّمُ ۖ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾

(९८) ये सब हमारी निशानियों से इंकार करने तथा यह कहने का परिणाम है कि क्या जब हम अस्थियाँ तथा कण-कण हो जायेंगे फिर हम नवजात करके उठा खड़े किये जायेंगे ।[3]

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾

(९९) क्या उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि जिस अल्लाह ने आकाश तथा धरती को पैदा किया वह उन जैसों को पैदा करने का पूर्ण सामर्थ्य रखता है ।[4] उसी ने उनके

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا

---

[1]हदीस में आता है कि सहाबा कराम (नबी के सहचर) ने आश्चर्य का प्रदर्शन किया कि औंधे मुख किस प्रकार का हश्र होगा ? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "जिस अल्लाह ने उनको पैरों से चलने की शक्ति प्रदान की है, वह इस बात का भी सामर्थ्य रखता है कि वह उनको मुख के बल चला दे ।" (सहीह बुख़ारी *सूरः अल-फ़ुरक़ान* तथा सहीह मुस्लिम सिफ़तुल क़ियामः वल जन्नः वल नार बाब युहशरूल काफ़िरो अला-वजहेही)

[2]अर्थात जिस प्रकार वह संसार में सत्य के विषय में अंधे, बहरे तथा गूँगे बने रहे, प्रलय (क़ियामत) के दिन दण्ड स्वरूप अंधे, बहरे तथा गूँगे होंगे ।

[3]अर्थात नरक का यह दण्ड उन्हें इसलिए दिया जायेगा कि उन्होंने हमारी उतारी हुई आयतों को नहीं माना तथा सृष्टि में फैली हुई निशानियों पर विचार नहीं किया, जिसके कारण उन्होंने क़ियामत तथा मृत्यु के पश्चात जीवित किये जाने पर आश्चर्य व्यक्त किया तथा कहा कि हड्डियों तथा कण-कण हो जाने के पश्चात हमें एक नया जीवन कैसे मिल सकता है ।

[4]अल्लाह तआला ने उनका उत्तर दिया कि जो अल्लाह आकाश तथा धरती का स्रष्टा है, वह उन जैसों को पैदा करने अथवा पुनः उन्हें जीवन देने का सामर्थ्य रखता है, क्योंकि यह आकाश तथा धरती की उत्पत्ति से अधिक सरल है ।

لَا رَيْبَ فِيهِ ۖ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾

लिए एक ऐसा समय निर्धारित कर रखा है, ज़ो शंका तथा संदेह से पूर्णतः शून्य है,[1] परन्तु अन्यायी लोग कृतघ्न बने बिना रहते नहीं।

قُلْ لَوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾

(१००) कह दीजिए कि (यदि मान लिया जाये) यदि तुम मेरे प्रभु की कृपाओं के कोष के स्वामी बन जाते तो तुम उस समय भी उसके व्यय हो जाने के भय से [2] उसमें कंजूसी करते तथा मनुष्य है ही संकीर्ण हृदय।

﴿ لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ ﴾

"आकाश तथा धरती की उत्पत्ति मनुष्यों की उत्पत्ति से अधिक कठिन कार्य है।" (*सूरः अल-मोमिन-५७*)

इसी विषय को अल्लाह तआला ने *सूरः अल-अहक़ाफ़*-३३ में तथा *सूरः यासीन*-८१ तथा ८२ में भी वर्णन किया है।

[1]इस निर्धारित समय से तात्पर्य मृत्यु अथवा क़ियामत है। यहाँ पूर्व वाक्य के अनुसार क़ियामत तात्पर्य लेना अधिक उचित है, अर्थात हमने उन्हें पुनः जीवित करके क़ब्रों से उठाने के लिए एक समय निर्धारित कर रखा है।

﴿ وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مَعْدُودٍ ﴾

"हम उनके मामले को एक निर्धारित समय तक के लिए टाल रहे हैं।" (*सूरः हूद*-१०४)

[2] خشية الإ نفاق का अर्थ है خشية أن ينفقوا فيفتقروا "इस भय से कि व्यय करके समाप्त कर डालेंगे, उसके पश्चात निर्धन हो जायेंगे।" यद्यपि यह अल्लाह का कोष है जो समाप्त होने वाला नहीं। परन्तु चूँकि मनुष्य संकीर्ण हृदय का सिद्ध हुआ है, इसलिए कंजूसी से काम लेता है। अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴾

"उनको यदि अल्लाह के राज्य में से कुछ भाग मिल जाये तो यह लोगों को कुछ न दें।" (*सूरः अल-निसा*- ५३)

نقير खजूर की गुठली में जो गढ़ा होता उसको कहते हैं, अर्थात तिल बराबर भी किसी को न दें। यह तो अल्लाह की कृपा है तथा उसका उपकार एवं दया है कि उसने अपने

(१०१) तथा हमने मूसा को नौ चमत्कार[1] अत्यन्त स्पष्ट प्रदान किये, तू स्वयं इस्राईल की संतान से पूछ ले कि जब वे उनके पास पहुँचे तो फ़िरऔन बोला कि हे मूसा ! मेरे विचार से तेरे ऊपर जादू कर दिया गया है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اِذْ جَاۗءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰي مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾

(१०२) (मूसा ने) उत्तर दिया कि यह तो तुझे ज्ञात हो चुका है कि आकाशों तथा धरती के प्रभु ही ने ये चमत्कार दिखाने तथा समझाने के लिए उतारे हैं, हे फ़िरऔन ! मैं तो समझ रहा हूँ कि तू निश्चय नाश कर दिया गया है।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَاۗءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَاۗىِٕرَ ۚ وَاِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿١٠٢﴾

(१०३) (अन्त में) फ़िरऔन ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि उन्हें धरती से ही उखाड़ दे तो

فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

भण्डारों के मुख लोगों के लिए खोल रखे हैं। जिस प्रकार हदीस में आता है, "अल्लाह के हाथ भरे हुए हैं। वह रात-दिन ख़र्च करता है, परन्तु उसमें कोई कमी नहीं आती। तनिक देखो तो, जब से आकाश तथा धरती उसने उत्पन्न किये हैं कितना ख़र्च किया होगा। परन्तु उसके हाथ में जो कुछ है उसमें कमी नहीं। (वह भरे हुए हैं)" (सहीह बुख़ारी, किताबुत तौहीद बाबु व कान अर्शोहु अलल्माए तथा सहीह मुस्लिम किताबुल ज़कात बाबुल हस्से अलल् नफ़क: व तबशीरूल मुनफ़िक़ बिल ख़लफ़)

[1]वे नौ चमत्कार हाथ का ज्योतिर्मय होना, लाठी का विभिन्न रूप से प्रयोग, अकाल, फलों की कमी, तूफ़ान, टिड्डी दल का आक्रमण, खटमल तथा जूँ की अधिकता होना, मेंढक तथा रक्त। इमाम हसन बसरी कहते हैं कि अकाल तथा फलों की कमी एक ही बात है तथा नवाँ चमत्कार लाठी का जादूगरों के जादू को अजगर बनकर निगल जाना है। आदरणीय मूसा को इनके अतिरिक्त भी चमत्कार प्रदान किये गये थे, जैसे लाठी का पत्थर पर मारना जिससे बारह पानी के स्रोत निकल गये थे बादलों की छाया करना, मन्न एवं सलवा आदि, परन्तु यहाँ नौ निशानियों से तात्पर्य वही नौ चमत्कार हैं जिन का प्रदर्शन फ़िरऔन तथा उसके अनुयायियों ने भी किया। इसीलिए आदरणीय इब्ने अब्बास ने समुद्र फटकर मार्ग बन जाना को भी चमत्कार में सम्मिलित किया है तथा अकाल एवं फलों के कम उत्पादन को एक ही चमत्कार माना है। तिर्मिजी के एक कथन में नौ चमत्कारों का विस्तृत वर्णन इससे भिन्न किया गया है। परन्तु प्रमाण से वह कथन क्षीण है, इसलिए नौ चमत्कार से तात्पर्य यही वर्णित चमत्कार हैं।

فَأَغْرَقْنَٰهُ وَمَن مَّعَهُۥ جَمِيعًا

हमने स्वयं उसे तथा उसके कुल साथियों को डुबो दिया।

وَقُلْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ لِبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱسْكُنُوا۟ ٱلْأَرْضَ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ ٱلْـَٔاخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا

(१०४) तथा उसके पश्चात हम ने इस्राईल के पुत्रों से कह दिया कि उस धरती[1] पर तुम रहो सहो। हाँ, जब आख़िरत का वादा आयेगा, हम तुम सब को समेट तथा लपेट कर ले आयेंगे।

وَبِٱلْحَقِّ أَنزَلْنَٰهُ وَبِٱلْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا

(१०५) तथा हमने इस (क़ुरआन) को सत्यता के साथ उतारा[2] तथा यह भी सत्य के साथ उतरा। तथा हमने आपको केवल शुभसूचना देने वाला तथा सतर्क करने वाला बनाकर भेजा है।[3]

وَقُرْءَانًا فَرَقْنَٰهُ لِتَقْرَأَهُۥ عَلَى ٱلنَّاسِ

(१०६) तथा क़ुरआन को हमने थोड़ा-थोड़ा करके इसलिए उतारा है[4] कि आप इसे समय

---

[1]जैसाकि विदित होता है, इस धरती से तात्पर्य मिस्र है जिससे फ़िरऔन ने मूसा तथा उनके अनुयायियों को निकालने का विचार किया था। परन्तु इस्राईल की संतान का इतिहास साक्षी है कि वह मिस्र से निकलने के पश्चात पुनः मिस्र नहीं गये, बल्कि चालीस वर्ष "*तीह*" के मैदान में व्यतीत कर फ़िलस्तीन में प्रवेश किया। इसका प्रमाण *सूरः अल-आराफ़* आदि में क़ुरआन के वर्णन से भी मिलता है। इसलिए उचित यही है कि इससे तात्पर्य फ़िलस्तीन की धरती है।

[2]अर्थात सुरक्षित आप तक पहुँच गया, इसमें मार्ग में कोई कमी-अधिकता तथा कोई परिवर्तन एवं मिश्रण नहीं किया गया। क्योंकि इसका लाने वाला फ़रिश्ता शक्तिशाली, ईमानदार तथा दृढ़ फ़रिश्ता माना गया है। यह वे गुण हैं जो आदरणीय जिब्रील के सम्बन्ध में क़ुरआन में वर्णित किये गये हैं।

[3] مبشر (शुभसूचक) ईमान वालों के लिए तथा نذير (त्रासक) अवज्ञाकारियों के लिए।

[4] فرقناه का एक अन्य अर्थ بيناه तथा أو ضحناه (हमने उसे खोल कर अथवा स्पष्ट रूप से वर्णित कर दिया है) भी किये गये हैं।

عَلَىٰ مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنزِيلًا ﴿١٠٦﴾

पाकर लोगों को सुनायें तथा हमने स्वयं भी इसे थोड़ा-थोड़ा करके उतारा।

قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ۚ إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾

(१०७) कह दीजिए तुम इस पर ईमान लाओ अथवा न लाओ, जिन्हें इससे पूर्व ज्ञान प्रदान किया गया है उनके पास तो जब भी इसको पढ़ा जाता है, तो वे ठुड्डियों के बल दण्डवत् (सजदा) करने लगते हैं।[1]

وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِن كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा कहते हैं कि हमारा प्रभु पवित्र है, हमारे प्रभु का वचन निःसंदेह पूर्ण होकर रहने वाला ही है।[2]

وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۩ ﴿١٠٩﴾

سجدة

(१०९) तथा वे ठुड्डियों के बल रोते हुए दण्डवत् (सजदा) स्थिति में गिर पड़ते हैं तथा यह क़ुरआन उनकी विनम्रता तथा विनय और बढ़ा देता है।[3]

---

[1]अर्थात वे विद्वान जिन्होंने क़ुरआन के अवतरित होने से पूर्व प्राचीन पुस्तकें पढ़ी हैं तथा वे प्रकाशना (वह्यी) की वास्तविकता तथा रिसालत के लक्षण से परिचित हैं वह नतमस्तक होते हैं इस बात पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कि उन्हें अन्तिम रसूल की पहचान की सन्मति दी तथा क़ुरआन एवं रिसालत पर ईमान लाने का सौभाग्य प्रदान किया।

[2]अर्थ यह है कि यह मक्का के काफ़िर जो प्रत्येक बात से अपरिचित हैं, यदि ये ईमान नहीं लाते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चिन्ता न करें इसलिए कि जो ज्ञानी हैं तथा प्रकाशना (वह्यी) तथा रिसालत की वास्तविकता से भली प्रकार परिचित हैं वे इस पर ईमान ले आये हैं, बल्कि क़ुरआन सुनकर अल्लाह के सदन में नत्मस्तक हो गये हैं तथा उसकी पवित्रता का वर्णन करते हैं तथा प्रभु के वचन पर विश्वास रखते हैं।

[3]ठुड्डियों के बल सजदे में गिर पड़ने की पुनरावृत्ति है, क्योंकि प्रथम दण्डवत् अल्लाह की महिमा तथा सम्मान के लिए कृतज्ञता के रूप में था तथा क़ुरआन सुनकर उन पर जो भय तथा भाव जागृत हुए तथा उसके प्रभाव एवं मान से जिस सीमा तक प्रभावित हुएं उसने दूसरी बार उन्हे दण्डवत् (सजदः) करने पर बाध्य कर दिया।

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾

(११०) कह दीजिए कि अल्लाह को अल्लाह कहकर पुकारो अथवा रहमान (कृपालु) कह कर। जिस नाम से भी पुकारो, सभी अच्छे नाम उसी के हैं।[1] न तो तू अपनी नमाज़ बहुत उच्च स्वर से पढ़ तथा न बिल्कुल छिपाकर, बल्कि उसके मध्य का मार्ग खोज ले।[2]

---

[1]जिस प्रकार पूर्व में गुज़र चुका है कि मक्का के मूर्तिपूजकों के लिये अल्लाह के गुणवाचक नाम 'रहमान (दयालु), अथवा 'रहीम (कृपालु) अपरिचित थे तथा कुछ कथनों में आता है कि कुछ मूर्तिपूजकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख से *'या रहमान व रहीम'* (हे दयालु तथा कृपालु) के शब्द सुने तो कहा कि हमें तो यह कहता है कि केवल एक अल्लाह को पुकारो तथा स्वयं दो देवताओं को पुकार रहा है। जिस पर यह आयत अवतरित हुई। (इब्ने कसीर)

[2]इसके अवतरित होने के विषय में आदरणीय इब्ने अब्बास वर्णन करते हैं कि मक्का में रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छुपकर रहते थे, जब अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते तो आवाज़ थोड़ी बढ़ा लेते, मूर्तिपूजक क़ुरआन को सुनकर क़ुरआन को तथा अल्लाह को अपशब्द कहते, अल्लाह तआला ने फ़रमाया : अपनी आवाज़ को इतना उच्च न करो कि मूर्तिपूजक सुन कर क़ुरआन को अपशब्द कहें तथा अपनी आवाज़ न इतनी धीमी कर लो कि सहाबा भी न सुन सकें। (सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद बाब क़ौल अल्लाह तआला अन्ज़लहु बिइल्मेही वल मलायेकतु यशहदून तथा सहीह मुस्लिम किताबुस सलातु बाबुत तवस्सुत फ़िल क़िरअत) स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घटना है कि एक रात्रि को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) की ओर से हुआ तो देखा कि वह धीमी आवाज़ से नमाज़ पढ़ रहे हैं। फिर आदरणीय उमर फारूक़ (رضي الله عنه) को भी देखने का अवसर हुआ तो वह ऊँची आवाज़ से नमाज़ पढ़ रहे थे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों से पूछा तो आदरणीय अबू बक्र ने उत्तर दिया कि मैं जिसकी महिमा का वर्णन करने में लीन था, वह मेरी आवाज़ सुन रहा था, आदरणीय उमर ने उत्तर दिया कि मेरा उद्देश्य सोतों को जगाना तथा शैतान को भगाना था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक (رضي الله عنه) से फ़रमाया कि अपनी आवाज़ थोड़ी बढ़ा लो तथा आदरणीय उमर (رضي الله عنه) से कहा अपनी आवाज़ कुछ कम रखो। (मिश्क़ात बाब सलातुल लैल, ससंदर्भ अबू दाऊद, तिर्मिज़ी) आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि यह आयत दुआ के विषय में अवतरित हुई। (बुख़ारी तथा मुस्लिम ससंदर्भ फ़तहुल क़दीर)

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿١١١﴾

(१११) तथा कह दीजिए कि सभी प्रशंसायें अल्लाह के लिए ही हैं, जो न संतान रखता है तथा न अपने राज्य में किसी को भागीदार रखता है, न वह ऐसा तुच्छ है कि उसका कोई सहायक हो तथा तू उसकी पूरी-पूरी महिमा का वर्णन करता रह।

سُورَةُ الْكَهْفِ

सूरतुल कहफ़-१८

सूर: कहफ़* मक्के में उतरी तथा इसमें एक सौ दस आयतें एवं बारह रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह कृपालु दया करने वाले के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَل لَّهُ عِوَجًا ﴿١﴾

(१) सभी प्रशंसायें उसी अल्लाह के लिए ही योग्य हैं, जिसने अपने भक्त पर यह क़ुरआन उतारा तथा उसमें कोई कमी शेष नहीं छोड़ी।[1]

---

*कहफ़ का अर्थ है गुफ़ा। इसमें गुफ़ा वालों का वर्णन है, इसलिए इसे सूर: कहफ़ कहा जाता है। इसके प्रारम्भिक दस आयतों तथा अन्तिम दस आयतों के महत्व का हदीस में वर्णन है, जो इनको याद करे तथा पढ़ेगा, वह दज्जाल के उपद्रव से सुरक्षित रहेगा (सहीह मुस्लिम फ़ज़्ल *सूर: अल-कहफ़*) जो इसका पाठ शुक्रवार के दिन करेगा अगले शुक्रवार तक उसके लिए एक विशेष प्रकार की ज्योति का प्रकाश रहेगा (मुस्तद्रक हाकिम २\३६८ तथा अलबानी ने इसे सहीह जामे सग़ीर संख्या ६४७० में सहीह कहा है)। इसके पढ़ने से घर में शान्ति तथा उन्नति होती है। एक बार एक सहाबी ने *सूर: कहफ़* पढ़ी। घर में एक पशु भी था वह बिदकना शुरू हो गया, उन्होंने ध्यान से देखा कि क्या बात है ? तो उन्हें एक बादल दिखायी दिया, जिसने उन्हें ढाँप रखा था, सहाबी ने इस घटना का वर्णन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसे पढ़ा करो। क़ुरआन पढ़ते समय शान्ति उतरती है। (सहीह बुख़ारी संख्या ४७२४, मुस्लिम संख्या ७९५)

[1]अथवा कोई कमी तथा संतुलित मार्ग से विचलन इसमें नहीं रखी गयी है, अपितु इसे सीधा मार्ग रखा गया है अथवा قيم का अर्थ भक्तों के धार्मिक सांसारिक हित का ध्यान तथा रक्षा करने वाली किताब।

قَيِّمًا لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّن لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّٰلِحَٰتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ﴿٢﴾

(२) अपितु सभी कुछ ठीक-ठाक रखा ताकि अपने पास[1] की कड़ी यातना से सतर्क कर दे तथा ईमान लाने वाले एवं पुण्य कार्य करने वालों को शुभसूचना सुना दे कि उनके लिए उत्तम बदले हैं।

مَّٰكِثِينَ فِيهِ أَبَدًا ﴿٣﴾

(३) जिसमें वे स्थाई रूप से सदैव निवास करेंगे।

وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ﴿٤﴾

(४) तथा उन लोगों को भी डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह (तआला) सन्तान रखता है।[2]

مَّا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَٰهِهِمْ ۚ إِن يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾

(५) वास्तव में न तो स्वयं उन्हें इसका ज्ञान है न उनके पूर्वजों को। यह आक्षेप[3] बड़ा बुरा है जो उनके मुख से निकल रहा है, वह केवल झूठ बक रहे हैं।

فَلَعَلَّكَ بَٰخِعٌ نَّفْسَكَ عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِمْ إِن لَّمْ يُؤْمِنُوا بِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ﴿٦﴾

(६) फिर यदि ये लोग इस बात पर[4] ईमान न लायें, तो क्या आप उनके पीछे इसी दुख में अपने प्राण की हत्या कर डालेंगे।

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً

(७) धरती पर जो कुछ [5] है हमने उसे धरती की शोभा के लिए बनाया है कि हम उनकी

---

[1] مِن لَّدُنْه जो उस अल्लाह की ओर से उद्गम अथवा अवतरित होने वाला है।

[2] जैसे यहूदियों, इसाईयों तथा कुछ मूर्तिपूजकों (फ़रिश्ते अल्लाह की पुत्रियाँ हैं) का विश्वास है।

[3] इस वाक्य से तात्पर्य यही है कि 'अल्लाह की संतान है, जो पूर्ण रूप से असत्य है।

[4] هٰذا الحديث (इस बात) से तात्पर्य क़ुरआन करीम है। काफिरों के ईमान लाने की जितनी तीव्र इच्छा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को थी तथा उनके मुख मोड़ने तथा अस्वीकार से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो अत्यधिक दुख होता था, इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इसी अवस्था तथा भाव का वर्णन है।

[5] धरती पर जो कुछ है, पशु, जीव, जड़, बनस्पति, खनिज एवं अन्य गड़े कोष, यह सब साँसारिक शोभा तथा उसकी सुन्दरता हैं।

لَهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۝٧ परीक्षा ले लें कि उनमें से कौन पुण्य के कार्यों को करने वाला है।

وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝٨ (८) तथा इस पर जो कुछ है, हम उसे एक समतल मैदान कर डालने वाले हैं।[1]

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۝٩ (९) क्या तू अपने विचार में गुफ़ा तथा शिलालेख वालों को हमारी निशानियों में से कोई अति विचित्र निशानी समझ रहा है ?[2]

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝١٠ (१०) उन नवयुवकों ने जब गुफ़ा में शरण ली तो प्रार्थना की कि हे हमारे प्रभु ! हमें अपने पास से कृपा प्रदान कर तथा हमारे कार्य में हमारे लिए मार्ग को सरल कर दे।[3]

---

[1] صعيدا साफ मैदान तथा جرزا बिल्कुल समतल, जिसमें कोई वृक्ष इत्यादि न हो। अर्थात एक समय आयेगा कि यह संसार इन सभी शोभा सहित नष्ट हो जायेगा तथा धरती एक समतल मैदान की भाँति हो जायेगी, इसके पश्चात हम पाप व पुण्य के कर्मों के आधार पर निर्णय देंगे।

[2] अर्थात यह एक मात्र बड़ी विचित्र निशानी नहीं है, बल्कि हमारी प्रत्येक निशानी विचित्र है। यह आकाश व धरती की सृष्टि तथा उसका प्रबन्ध, सूर्य तथा चन्द्रमा एवं तारामण्डल का नियन्त्रण, रात्रि-दिन का आना-जाना तथा अन्य बहुत सी निशानियाँ, क्या कम विचित्र हैं। كهف उस गुफ़ा को कहते हैं जो पर्वत में होती है। رقيم कुछ विद्वानों के निकट उस आबादी को कहते हैं जहाँ से ये नवयुवक गये थे, कुछ कहते हैं उस पर्वत का नाम है जिसमें यह गुफ़ा स्थित है। कुछ कहते हैं رقيم का प्रयोग مرقوم के अर्थ में किया गया है तथा यह एक तख़्ती है लोहे की अथवा सीसे की, जिस पर कहफ़ में सो रहे व्यक्तियों के नाम लिखे हैं। इसे رقيم इसीलिए कहा गया है कि इस पर नाम लिखे हैं। आधुनिक रिसर्च से ज्ञात हुआ कि प्रथम बात अधिक उचित है। जिस पर्वत में यह गुफ़ा स्थित है उसके निकट ही एक आबादी है जिसे अब الرقيب (अल-रक़ीब) कहा जाता है जो युग के परिवर्तन के कारण الرقيم (अल-रक़ीम) का परिवर्तित रूप है।

[3] ये वही नवयुवक हैं जिन्हें कहफ़ वाले कहा गया है (विस्तृत वर्णन आगे आयेगा) उन्होंने जब अपने धर्म की सुरक्षा के लिए गुफ़ा में शरण ली तो यह प्रार्थना की। कहफ़ वालों की इस कथा में नवयुवकों के लिए बड़ी शिक्षा है, आजकल के नवयुवकों का अधिकतर

(११) फिर हमने उनके कानों पर गणना के कई वर्षों तक उसी गुफ़ा में पर्दे डाल दिये ।[1]

فَضَرَبْنَا عَلَىٰٓ ءَاذَانِهِمْ فِى ٱلْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ﴿١١﴾

(१२) फिर हमने उन्हें उठा खड़ा कर दिया कि हम यह जान लें कि दोनों गुटों में से इस दीर्घकाल को जो उन्होंने व्यतीत किये किसने अधिक याद रखा है ?[2]

ثُمَّ بَعَثْنَٰهُمْ لِنَعْلَمَ أَىُّ ٱلْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوٓا۟ أَمَدًا ﴿١٢﴾

(१३) हम उनकी सत्य कथा तेरे समक्ष वर्णन कर रहे हैं। ये कुछ नवयुवक[3] अपने प्रभु पर

نَّحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِٱلْحَقِّ ۚ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ ءَامَنُوا۟ بِرَبِّهِمْ

समय व्यर्थ में नष्ट होता है तथा अल्लाह की ओर तनिक भी ध्यान नहीं। काश ! आज का मुसलमान नवयुवक अपने यौवन के समय में क्षमा माँग कर पैग़म्बरों का अनुकरण करता तथा अपनी पूर्ण शक्ति एवं सामर्थ्य कोअल्लाह की इबादत में लगा देता।

[1]अर्थात कानों पर पर्दा डालकर उनके कानों को बन्द कर दिया ताकि बाहर की आवाज़ से उनकी निद्रा में व्यवधान न पड़े। अर्थ यह है कि हमने उन्हें गहरी निंद्रा में सुला दिया।

[2]उन दो गुटों का अर्थ विरोध करने वाले लोग हैं। यह या तो उसी समय के लोग थे जिनके मध्य उनके विषय में मतभेद हुआ, अथवा रिसालत के समय के काफ़िर तथा ईमान वाले तात्पर्य हैं तथा कुछ कहते हैं कि ये कहफ़ वाले ही हैं उनके दो गुट बन गये थे। एक कहता था कि हम इतने समय तक सोये रहे। दूसरा उसको नकारता तथा प्रथम गुट से कम व अधिक समय बताता।

[3]अब सारांश के पश्चात विस्तृत वर्णन किया जा रहा है। ये नवयुवक कुछ विद्वान कहते हैं कि इसाई धर्म के अनुयायी थे तथा कुछ कहते हैं कि उनका समय आदरणीय ईसा से पूर्व का है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है। कहते हैं कि एक राजा था दक़ियानूस, जो लोगों को मूर्तिपूजा करने तथा उनके नाम पर भोग-प्रसाद चढ़ाने की शिक्षा देता था। अल्लाह तआला ने इन कुछ नवयुवकों के हृदय में यह बात डाल दी कि इबादत के योग्य तो एक मात्र अल्लाह ही है, जो आकाश तथा धरती का स्रष्टा है तथा अखिल जगत का प्रभु है। فتية अल्पवाचक बहुवचन है, जिससे ज्ञात होता है कि इनकी संख्या नौ अथवा उससे भी कम थी। यह अलग होकर एक स्थान पर अल्लाह अकेले की इबादत करते थे। धीरे-धीरे लोगों में उनके एकेश्वरवाद के विश्वास की चर्चा होने लगी, तो राजा तक बात पहुँची तथा उसने उन लोगों को अपने दरबार में बुलाकर उनसे पूछा, तो वहाँ उन्होंने निर्भीक अल्लाह के एकेश्वरवाद का वर्णन किया। अन्त में राजा तथा अपने समुदाय के मूर्तिपूजकों के भय से अपने धर्म की सुरक्षा के लिए आबादी

ईमान लाये थे तथा हमने उनके मार्गदर्शन में उन्नति प्रदान की थी।

وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ۝

(१४) तथा हमने उनके हृदय सुदृढ़ कर दिये थे,[1] जबकि ये उठ खड़े हुए[2] तथा कहने लगे कि हमारा प्रभु तो वही है, जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है, असम्भव है कि हम उसके अतिरिक्त किसी अन्य देवता को पुकारें। यदि ऐसा किया तो, हमने अत्यधिक अनुचित[3] बात कही।

وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ۝

(१५) यह है हमारा समुदाय जिसने उसके अतिरिक्त अन्य देवता बना रखे हैं। उनके प्रभुत्व का कोई स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं प्रस्तुत करते ? अल्लाह पर झूठ बात बाँधने वाले से अधिक अत्याचारी कौन है ?

هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ۭ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝

(१६) तथा जबकि तुम उनसे तथा अल्लाह के अतिरिक्त उनके अन्य देवताओं से अलग हो

وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا

से दूर एक पर्वत की गुफ़ा में छिप गये, जहाँ अल्लाह तआला ने उन्हें गहरी निद्रा में सुला दिया तथा वे तीन सौ नौ वर्ष वहाँ सोते रहे।

[1]अर्थात हिजरत के कारण अपने प्रिय तथा सम्बन्धियों के बिछड़ने तथा सुख-सुविधापूर्ण जीवन से वंचित होने का जो दुख उन्हें उठाना पड़ा हमने उनके हृदय को दृढ़ कर दिया ताकि वे इन दुखों को सहन कर सकें। इसके अतिरिक्त सत्य वचन का कर्तव्य साहस के साथ अदा कर सकें।

[2]इस قيام (खड़े होने) से तात्पर्य अधिकतर व्याख्याकारों के निकट वह बुलावा है जो उनका राजा के सदन में हुआ तथा राजा के समक्ष खड़े होकर उन्होंने एकेश्वरवाद पर यह भाषण दिया, कुछ कहते हैं कि नगर के बाहर आपस में ही खड़े होकर एक-दूसरे को एकेश्वरवाद की वह बात बतायी जो व्यक्तिगत रूप से अल्लाह की ओर से उनके दिलों में डाल दी गयी तथा इस प्रकार एकेश्वरवादी आपस में एकत्रित हो गये।

[3] شططًا का अर्थ झूठ अथवा सीमा उल्लंघन करना है।

गये हो, तो अब किसी गुफ़ा मे[1] जा बैठो, तुम्हारा प्रभु तुम पर अपनी दया करेगा तथा तुम्हारे कार्य में सुविधा उपलब्ध कर देगा।

اللهَ فَأْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾

(१७) तथा आप देखेंगे कि सूर्य उदय होने के समय उनकी गुफ़ा के दायीं ओर झुक जाता है तथा सूर्यास्त के समय उनकी बायीं ओर कतरा जाता है तथा वे उस गुफ़ा के विस्तृत स्थान में हैं।[2] यह अल्लाह की निशानियों में से है।[3] अल्लाह (तआला) जिसका मार्गदर्शन करे वे सत्यमार्ग पर है तथा जिसे वह भटका दे असम्भव है कि आप उसका कोई कार्यक्षम तथा मार्गदर्शक पा सकें।[4]

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

---

[1]अर्थात जब तुमने अपने समुदाय के देवताओं से अलगाव कर लिया है तो अब शारीरिक रूप से भी उनसे अलगाव कर लो। यह कहफ़ वालों ने आपस में कहा। अत: इसके पश्चात वे एक गुफ़ा में जा छुपे, जब उनके खो जाने का समाचार फैला तो खोज की गई परन्तु वे उसी प्रकार असफल रहे जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खोज में मक्का के काफ़िर सौर गुफ़ा तक पहुँच जाने के उपरान्त भी जिस में आप आदरणीय अबू बक्र (رضي الله عنه) के साथ उपस्थित थे, असफल रहे थे।

[2]अर्थात सूर्य उदय के समय दायीं दिशा को तथा अस्त के समय बायीं दिशा को कतराकर निकल जाता तथा इस प्रकार दोनों समय में उन पर धूप न पड़ती यद्यपि वह गुफ़ा में विस्तृत स्थान पर विश्राम कर रहे थे। فجوة का अर्थ है विस्तृत स्थान।

[3]अर्थात सूर्य का इस प्रकार निकल जाना कि खुला स्थान के होने के उपरान्त वहाँ धूप न पड़े, अल्लाह की निशानियों में से है।

[4]जैसे दक़्रियानूस राजा तथा उसके अनुयायी मार्गदर्शन से वंचित रहे तो कोई उन्हें मार्ग दर्शन न दे सका।

(१८) तथा आप विचार करेंगे कि वे जाग रहे हैं, यद्यपि वे सो रहे थे ।[1] तथा स्वयं हम उनको दाहिने-बायें करवटें दिलाया करते थे ।[2] उनका कुत्ता भी चौखट पर अपने हाथ फैलाये हुए था । यदि आप झाँक कर देखना चाहते तो अवश्य उल्टे पाँव भाग खड़े होते तथा उनके भय तथा त्रास से आप भर दिये जाते ।[3]

وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَهُمْ رُقُودٌ ۚ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُهُم بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ ۚ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

(१९) तथा उसी प्रकार हमने उन्हें जगाकर उठाया [4] कि आपस में पूछताछ कर लें । उन में से एक कहने वाले ने पूछा कि तुम कितनी देर ठहरे रहे ? उन्होनें उत्तर दिया एक दिन अथवा एक दिन से भी कम ।[5] कहने लगे कि तुम्हारे ठहरे रहने का पूरा ज्ञान अल्लाह

وَكَذَٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ ۚ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۖ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۚ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُم بِوَرِقِكُمْ هَٰذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ

---

[1] أيقاظ बहुवचन है يقظ का तथा رُقود बहुवचन है راقد का, वे जागते हुए इसलिए प्रतीत होते थे कि उनकी आँखें खुली हुई थीं, जिस प्रकार से जागे हुए व्यक्ति की होती है, कुछ विद्वान कहते हैं कि अधिक करवटें बदलने के कारण वे जगे हुए दिखायी देते थे ।

[2] ताकि उनके शरीर को मिट्टी न खा जाये ।

[3] यह उनकी सुरक्षा के लिए अल्लाह तआला की ओर से प्रबन्ध था ताकि कोई उनके निकट न जा सके ।

[4] अर्थात जिस प्रकार हमने उनको अपनी शक्ति से सुला दिया था, उसी प्रकार तीन सौ नौ वर्ष बाद उनको हमने उठा दिया तथा इस प्रकार उठाया कि उनके शरीर उसी प्रकार सुरक्षित थे जिस प्रकार तीन सौ नौ वर्ष पूर्व सोते समय थे । इसीलिए आपस में एक-दूसरे से उन्होंने प्रश्न किये ।

[5] अर्थात जिस समय वे गुफ़ा में गये, प्रात: काल का प्रथम चरण था तथा जिस समय जगे उस समय दिन का अन्तिम पहर था, इस आधार पर वे समझे कि शायद एक दिन अथवा उससे भी कम दिन के कुछ भाग में सोते रहे ।

(तआला) को ही है ।[1] अब तो तुम अपने में से किसी को अपनी ये चाँदी देकर नगर भेजो वह ठीक प्रकार से देखभाल ले कि नगर का कौन-सा भोजन शुद्ध है ।[2] फिर उसी में से तुम्हारे भोजन के लिए ले आये, तथा वह अति सतर्कता एवं कोमल व्यवहार करे तथा किसी को तुम्हारी सूचना न होने दे ।[3]

فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾

(२०) यदि ये (काफ़िर) तुम पर अधिकार पालेंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे अथवा पुन: तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे, तो फिर तुम कदापि सफलता नहीं पा सकोगे ।[4]

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾

(२१) तथा हमने इस प्रकार लोगों को उनकी अवस्था से अवगत कर दिया[5] कि वे जान लें

وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ

---

[1]परन्तु अधिक सोने के कारण वे बड़े असमंजस्य में थे । अन्त में विषय अल्लाह को समर्पित कर दिया गया कि वह सही अवधि जानता है ।

[2]जागने के पश्चात भोजन जो मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है, उसकी व्यवस्था करने की चिन्ता हुई ।

[3]सावधानी तथा विनम्रता पर बल इस संभावना के कारण दिया, जिसके कारण वे नगर से निकलकर निर्जन स्थान पर आये थे । उसे सावधानी रखने के लिए कहा कि कहीं उसके व्यवहार से नगरवासियों को हमारा पता न लग जाये तथा हम पर कोई नई आपत्ति न घटित हो, जैसाकि अगली आयत में है ।

[4]अर्थात आख़िरत कि जिस सफलता के लिए हमने यह दुख तथा संकट सहन किया, स्पष्ट बात है कि यदि नगरवासियों ने हमें बाध्य करके फिर पूर्वजों के धर्म की ओर लौटा दिया, तो हमारा मूल उद्देश्य ही खो जायेगा । हमारी मेहनत भी व्यर्थ जायेगी तथा हम न धर्म के होंगे न संसार के ।

[5]अर्थात जिस प्रकार हमने उन्हें सुलाया तथा जगाया, उसी प्रकार हमने लोगों को उनके बारे में परिचित कर दिया । यह परिचय इस प्रकार हुआ कि जिस समय कहफ़ वालों का एक साथी चाँदी का वह सिक्का लेकर नगर में गया जो तीन सौ नौ वर्ष के राजा

وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۖ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۖ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

कि अल्लाह का वचन पूर्णतः सत्य है तथा क़ियामत में कोई संदेह व शंका नहीं,[1] जबकि वे अपनी बात में आपस में मतभेद कर रहे थे।[2] कहने लगे इनकी गुफ़ा पर एक भवन निर्माण कर लो।[3] उनका प्रभु ही उन की दशा का अधिक ज्ञानी है।[4] जिन लोगों ने उनके विषय में प्रभाव प्राप्त किया, वे कहने

दक़ियानूस के काल का था तथा वह सिक्का एक दूकानदार को दिया, तो वह आश्चर्य-चकित रह गया, उसने पास के दुकान वाले को दिखाया, वह भी देखकर चकित रह गया, जबकि कहफ़ वालों का साथी कहता रहा कि मैं इसी नगर का वासी हूँ तथा कल ही यहाँ से गया हूँ, परन्तु इस 'कल' को तीन शताब्दियाँ व्यतीत हो चुकी थीं, लोग किस प्रकार उसकी बात को मान लेते ? लोगों को यह संदेह हुआ कि कहीं इस व्यक्ति को गड़ा हुआ धन तो नहीं प्राप्त हुआ। धीरे-धीरे यह बात राजा अथवा उसके अधिकारी तक पहुँची तथा उस साथी की सहायता से वह गुफ़ा तक पहुँचा तथा कहफ़ वालों से मिला। उसके पश्चात अल्लाह तआला ने उन्हें फिर मृत्यु दे दिया। (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात कहफ़ वालों की इस घटना से विदित होता है कि क़ियामत के घटित होने तथा मृत्यु के पश्चात खड़े किये जाने का अल्लाह का वचन सत्य है। अस्वीकार करने वालों के लिए घटना में अल्लाह की शक्ति का एक नमूना विद्यमान है।

[2] إذ या तो समय सूचक है أعثرنا का अर्थात हमने उन्हें उस समय उनके हाल से परिचित कराया, जब वे मृत्यु के पश्चात खड़े किये जाने अथवा क़ियामत के घटित होने के विषय में आपस में झगड़ रहे थे अथवा यहाँ اذكر लुप्त है अर्थात वह समय याद करो जब वह आपस में झगड़ रहे थे।

[3]ये कहने वाले कौन थे ? कुछ विद्वान कहते हैं कि उस समय के ईमान वाले थे, कुछ कहते हैं कि राजा तथा उसके साथी थे, जब आकर उन्होंने मुलाकात की तथा उसके पश्चात अल्लाह ने उन्हें फिर सुला दिया, तो राजा तथा उसके साथियों ने कहा कि इनकी सुरक्षा के लिए एक भवन बना दिया जाये।

[4]झगड़ा करने वालों को अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उनके विषय में सत्य ज्ञान अल्लाह ही को है।

लगे कि हम तो उनके आस-पास मस्जिद बना लेंगे ।[1]

(२२) कुछ लोग कहेंगे कि गुफ़ा के लोग तीन थे तथा चौथा उन का कुत्ता था । कुछ कहेंगे कि पाँच थे छठाँ उन का कुत्ता था,[2] परोक्ष के विषय में (निशाना देखे बिना) अनुमान से पत्थर चला देना,[3] कुछ कहेंगे कि वे सात हैं तथा आठवाँ उनका कुत्ता[4] है । (आप) कह दीजिए

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِم مَّا يَعْلَمُهُمْ

---

[1]यह प्रभाव प्राप्त करने वाले ईमान वाले थे अथवा काफ़िर तथा मूर्तिपूजक ? शौकानी ने प्रथम विचार को मान्यता दी है तथा इब्ने कसीर ने दूसरे विचार को । क्योंकि पुण्यकारी लोगों की क़ब्रों पर मस्जिदों का निर्माण अल्लाह को प्रिय नहीं । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَاءِهِمْ وَصَالِحِيهِمْ مَسَاجِدَ» .

"अल्लाह तआला यहूदियों तथा इसाईयों पर धिक्कार करे जिन्होंने अपने पैग़म्बरों तथा महात्माओं की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल जनायेज़ बाब मायकरह मिन इत्तेखाज़िल मस्जिदे अलल क़बूरे तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद वत्तेख़ाज़ि स्सोवरे फ़ीहा)

आदरणीय उमर (رضي الله عنه) की ख़िलाफ़त (शासन काल) में ईराक़ में आदरणीय दानियाल की क़ब्र ज्ञात हुई तो आप ने आदेश दिया कि इसे छिपाकर सामान्य क़ब्रो जैसी कर दिया जाये ताकि लोगों के ज्ञान में न आये कि अमुक क़ब्र अमुक पैग़म्बर की है । (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2]यह कहने वाले तथा उनकी विभिन्न संख्या बताने वाले रिसालत के युग के ईमान वाले तथा काफ़िर थे । विशेष रूप से अहले किताब जो आकाशीय पुस्तकों से सूचित होने तथा ज्ञान का दावा करते थे ।

[3]अर्थात ज्ञान उनमें से किसी के पास नहीं है, जिस प्रकार बिना देखे कोई पत्थर मारे, यह भी उसी प्रकार आंकलन कर रहे हैं ।

[4]अल्लाह तआला ने केवल तीन कथनों का वर्णन किया है, प्रथम दो कथनों को رجما بالغيب (आंकलन) कहकर उनका खण्डन कर दिया तथा इस तीसरे कथन का वर्णन बाद में

إِلَّا قَلِيلٌ ۚ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَآءً ظَٰهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٢﴾

कि मेरा प्रभु उनकी संख्या भली प्रकार जानने वाला है, उन्हें बहुत कम लोग जानते हैं,[1] फिर आप भी उन लोगों के विषय में केवल संक्षिप्त वार्ता ही करें।[2] तथा उन में से किसी से उनके विषय में पूछताछ भी न करें।[3]

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَاْىٍْٔ إِنِّى فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾

(२३) तथा कदापि किसी कार्य पर इस प्रकार न कहें कि मैं इसे कल करूँगा।

إِلَّا أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ ۚ وَٱذْكُر رَّبَّكَ

(२४) परन्तु साथ ही इंशा अल्लाह (अल्लाह ने चाहा तो) कह लें,[4] तथा जब भी भूलें

किया जिससे कुछ व्याख्याकारों ने यह भावार्थ निकाला है कि यह शैली इस कथन के सही होने का प्रमाण है तथा वास्तव में उनकी इतनी ही संख्या थी। (इब्ने कसीर)

[1]कुछ सहाबा से सम्बन्धित कथन है कि वे कहते थे मैं भी उन कम लोगों में से हूँ जो यह जानते हैं कि कहफ़ वालों की संख्या कितनी थी ? वह केवल सात थे जैसा कि तीसरे कथन में बताया गया है। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात केवल इन्हीं बातों पर बस करें जिनकी सूचना आपको प्रकाशना (वह्यी) द्वारा दी गयी है। अथवा संख्या के निर्धारण पर वाद-विवाद न करें, केवल यह कह दें कि इस निर्धारण का कोई प्रमाण नहीं है।

[3]अर्थात विवादकारियों से उनके विषय में कुछ न पूछें, इसलिए कि जिससे पूछा जाये, उसको पूछने वाले से अधिक ज्ञान होना चाहिए, जबकि यहाँ परिस्थिति इसके विपरीत है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तो फिर भी विश्वस्त ज्ञान का एक माध्यम प्रकाशना (वह्यी) मौजूद है जबकि अन्यों के पास आंकलन तथा अनुमान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

[4]व्याख्याकार कहते हैं कि यहूदियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तीन बातें पूछीं थीं, आत्मा की वास्तविकता क्या है तथा कहफ़ वाले तथा ज़ुलक़रनैन कौन थे ? कहते हैं कि यही प्रश्न इस सूरः के अवतरित होने के कारण बने। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं तुम्हें कल उत्तर दूँगा, परन्तु उसके पश्चात पन्द्रह दिन तक जिब्रील प्रकाशना (वह्यी) लेकर नहीं आये। फिर जब आये तो अल्लाह तआला ने إن شاء الله कहने का आदेश दिया। आयत में غد (कल) से तात्पर्य आगामी दिवस है अर्थात जब भी निकट भविष्य अथवा देर से कोई कार्य करने का विचार करो तो إن شاء الله अवश्य कहा

إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

अपने प्रभु को याद कर लिया करें[1] तथा कहते रहें कि मुझे पूरी आशा है कि मेरा प्रभु इससे भी अधिक मार्गदर्शन के निकट की बात का मार्गदर्शन करेगा ।[2]

وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा वे लोग अपनी गुफ़ा में तीन सौ वर्ष तक रहे तथा नौ वर्ष और अधिक व्यतीत किये ।[3]

قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا لَهُ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ مَا لَهُم مِّن دُونِهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ

(२६) आप कह दीजिए कि अल्लाह ही को उनके ठहरे रहने के समय का भली-भाँति ज्ञान है, आकाशों तथा धरती का अन्तर्ज्ञान मात्र उसी को है, वह क्या ही अच्छा देखने सुनने वाला है ।[4] अतिरिक्त अल्लाह के उनकी

करो । क्योंकि मनुष्य को तो पता नहीं कि वह जिस विचार को व्यक्त कर रहा है, उसको पूर्ण करने का सौभाग्य भी उसे अल्लाह की ओर से मिलना है अथवा नहीं ?

[1]अर्थात यदि बातचीत तथा वादा करते समय إن شاء الله कहना भूल जाओ, तो जिस समय याद आ जाये إن شاء الله कह लो अथवा फिर प्रभु को याद करने का अर्थ उसकी महिमा तथा प्रशंसा एवं उससे क्षमादान की प्रार्थना है ।

[2]अर्थात मैं जिसका संकल्प कर रहा हूँ, संभव है अल्लाह तआला उससे श्रेष्ठ तथा लाभकारी कार्य की ओर मेरा मार्गदर्शन करे ।

[3]अधिकतर व्याख्याकारों ने इसको अल्लाह का कथन कहा है । सूर्य की गणना से ३०० तथा चन्द्रमा की गणना से ३०९ वर्ष होते हैं । कुछ ज्ञानियों का विचार है कि यह उन लोगों का कथन है जो उनकी विभिन्न संख्या बताते थे जिसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है "अल्लाह ही को उनके ठहरे रहने का उचित ज्ञान है ।" जिसके अर्थ से वे वर्णित अवधि को नकारात्मक रूप में लेते हैं । परन्तु अधिकतर की व्याख्या के अनुसार इसका भावार्थ यह है कि अहले किताब अथवा कोई अन्य इस बतायी हुई अवधि से मतभेद करें तो आप उनसे कह दें कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह । जब उसने तीन सौ नौ वर्ष की अवधि बतायी है, तो यही ठीक है क्योंकि वही जानता है कि वह कितनी अवधि तक गुफ़ा में रहे ।

[4]यह अल्लाह के ज्ञान तथा सूचना गुण का अधिक स्पष्टीकरण है ।

فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ﴿٢٦﴾

कोई सहायता करने वाला नहीं, और अल्लाह तआला अपने आदेश में किसी को सम्मिलित नहीं करता।

وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن كِتَابِ رَبِّكَ ۖ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَن تَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾

(२७) तथा तेरी ओर जो तेरे प्रभु की किताब प्रकाशना (वह्यी) की गयी है उसे पढ़ता रह।[1] उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं, तू उसके अतिरिक्त कदापि-कदापि कोई शरण न पायेगा।[2]

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ

(२८) तथा अपने आपको उन्हीं के साथ रखा कर, जो अपने प्रभु को प्रातः तथा सायं पुकारते हैं तथा उसी के मुख (अनुग्रह) की चाहना करते हैं। सावधान! तेरी आँखें उनसे न हटने पायें[3] कि सांसारिक जीवन के वैभव के प्रयत्न

---

[1]वैसे तो यह सामान्य आदेश है कि जिस बात की भी प्रकाशना (वह्यी) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर की जाये, उसका पाठ करें तथा लोगों को इसकी शिक्षा दें। परन्तु कहफ़ वालों की कथा के अन्त में इस आदेश का तात्पर्य यह भी हो सकता है कि कहफ़ वालों के विषय में लोग जो चाहें कहते फिरें, परन्तु अल्लाह तआला ने इसके विषय में अपनी पुस्तक में जो कुछ तथा जितना कुछ वर्णन कर दिया है, वही ठीक है, वही लोगों को पढ़कर सुना दीजिए, इसके अतिरिक्त अन्य बातों पर ध्यान न दीजिए।

[2]अर्थात यदि इसके वर्णन करने में आनाकानी तथा विमुखता की, इसके वाक्यों में परिवर्तन का प्रयत्न किया, तो अल्लाह से आपको बचाने वाला कोई नहीं होगा। सम्बोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है, परन्तु मूल सम्बोधन मुसलमानों को है।

[3]यह वही आदेश है जो इससे पूर्व *सूरः अनआम* की आयत ५२ में गुज़र चुका है। तात्पर्य इनसे वे सहाबा केराम हैं जो निर्धन एवं कमज़ोर थे जिनके साथ बैठना कुरैश के धनवानों को स्वीकार न था। आदरणीय सआद बिन अबी वक़्क़ास कहते हैं कि हम छः आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, मेरे अतिरिक्त वे बिलाल, इब्ने मसऊद, एक हुज़ली तथा दो अन्य सहाबा थे। मक्का के कुरैश ने इच्छा प्रकट की कि उन लोगों को अपने पास से हटा दें ताकि हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात सुनें। नबी सल्लल्लाहु

الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَن ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

में लग जाओ ।[1] (देखो) उसका कहना न मानना जिसके दिल को हमने अपने स्मरण से विचलित कर दिया है, तथा जो अपनी मनोकामना के पीछे पड़ा हुआ है । तथा जिसका कर्म असीम हो चुका है ।[2]

وَقُلِ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَن شَاءَ فَلْيُؤْمِن وَمَن شَاءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِن يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

(२९) तथा घोषणा कर दे कि यह निरा सत्य (क़ुरआन) तुम्हारे प्रभु की ओर से है । अब जो चाहे ईमान लाये तथा जो चाहे कुफ्र करे । अत्याचारियों के लिए हमने वह आग तैयार कर रखी है जिसकी परिधि उन्हें घेर लेंगी । यदि वे आर्तनाद करेंगे तो उनकी सहायता उस पानी से की जायेगी जो तेलछट जैसा होगा जो चेहरे भून देगा, बड़ा ही बुरा पानी है, तथा बड़ा बुरा विश्राम स्थल (नरक) है ।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾

(३०) नि:संदेह जो लोग ईमान लायें तथा पुण्य का कार्य करें, तो हम किसी पुण्य करने वाले के प्रतिफल को ध्वस्त नहीं करते ।[3]

अलैहि वसल्लम के दिल में आया कि चलो शायद मेरी बात सुनने से उनके दिलों की दुनियाँ बदल जाये । परन्तु अल्लाह तआला ने कठोरता से ऐसा करने से रोक दिया । (सहीह मुस्लिम फ़ज़ायलुस सहाबा बाब फ़ज़्ले सआद बिन अबी वक़्क़ास)

[1]अर्थात इनको दूर करके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समाज में सम्मानित व्यक्तियों एवं धनवानों को अपने निकट करना चाहते हैं ?

[2] فرطا यदि إفراط से हो तो अर्थ होगा सीमा से पार तथा यदि تفريط से हो तो अर्थ होंगे कि इनके कार्य का फल हानि तथा विनाश है ।

[3]क़ुरआन के वर्णन शैली के अनुसार नरकवासियों के वर्णन के पश्चात स्वर्ग में जाने वालों का वर्णन है ताकि लोगों के अन्दर स्वर्ग प्राप्त करने की इच्छा तथा उत्सुकता उत्पन्न हो ।

(३१) उनके लिए स्थाई स्वर्ग हैं, उनके नीचे नदियाँ प्रवाहित होंगी, वहाँ ये स्वर्ण के कड़े पहनाये जायेंगे [1] तथा हरे रंग के कोमल एवं महीन तथा मोटे रेशम के वस्त्र पहनेंगे ।[2] वहाँ सिंहासन पर तकिये लगाये होंगे । क्या ही उत्तम बदला है तथा कितना उत्तम विश्रामगृह है ।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهِمُ ٱلْأَنْهَٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٔينَ فِيهَا عَلَى ٱلْأَرَآئِكِ ۚ نِعْمَ ٱلثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

(३२) तथा उन्हें उन दो व्यक्तियों का उदाहरण भी सुना दे [3] जिनमें से एक को हमने दो बाग़ अंगूरों के दे रखे थे, जिन्हें खजूरों के वृक्षों से हमने घेर रखा था ।[4] तथा दोनों के मध्य खेती पैदा कर दी थी ।[5]

وَٱضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَٰبٍ وَحَفَفْنَٰهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾

[1]क़ुरआन के अवतरित होने के समय में तथा उससे पूर्व रिवाज था कि राजा, धनवान तथा क़बीलों के मुखिया अपने हाथों में स्वर्ण के कड़े पहनते थे जिससे उनकी प्रतिष्ठा प्रदर्शित होती थी । स्वर्ग में जाने वालों को भी स्वर्ग में यह कड़े पहनायें जायेंगे ।

[2] سُندُس बारीक रेशम إستبرق मोटा रेशम । दुनियाँ में पुरूषों के लिए स्वर्ण तथा रेशमी वस्त्र निषेध हैं, जो लोग इस आदेशानुसार कर्म करेंगे, दुनियाँ में इन निषेधित वस्तुओं के प्रयोग से बचेंगे, उन्हें स्वर्ग में यह सारी वस्तुएं प्राप्त होंगी, वहाँ कोई वस्तु निषेध नहीं होगी बल्कि स्वर्ग वाले जिस वस्तु की इच्छा करेंगे वह उपस्थित होगी ।

[3]व्याख्याकारों का इसमें मतभेद है कि वे दो व्यक्ति कौन थे ? अल्लाह तआला ने समझाने के लिए उदाहरण स्वरूप उनका वर्णन किया है अथवा वास्तव में दो व्यक्ति ऐसे थे ? यदि थे तो इस्राईल के वंश में गुज़रे हैं अथवा मक्कावासी थे, इनमें से एक ईमानवाला (निष्ठ) तथा दूसरा काफ़िर (अनिष्ठ) था ।

[4]जिस प्रकार चारदीवारी से सुरक्षा की जाती है, उसी प्रकार इन बाग़ों के चारों ओर खजूर के वृक्ष थे जो बाड़े तथा चारदीवारी का काम देते थे ।

[5]अर्थात दोनों बाग़ों के मध्य खेती होती थी जिनसे अनाजों की फ़सलें प्राप्त होती थीं । इस प्रकार दोनो बाग़ अनाज तथा फ़लों का संयोग था ।

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿۳۳﴾

(३३) दोनों बाग़ अपने फल अत्यधिक लाये, और उसमें कोई कमी न की ।[1] तथा हमने उन बाग़ों के मध्य नहर प्रवाहित कर रखी थी ।[2]

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿۳۴﴾

(३४) तथा (इस प्रकार) उसके पास फल थे, एक दिन उसने बातों ही बातों में अपने साथी [3] से कहा कि मैं तुझसे अधिक धनवान हूँ तथा जत्थे[4] में भी अधिक सम्मान वाला हूँ ।

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ۙ ﴿۳۵﴾

(३५) तथा यह अपने बाग़ में गया और था अपने प्राण पर अत्याचार करने वाला, कहने लगा कि मैं विचार नहीं कर सकता कि किसी समय भी यह ध्वस्त हो जाये ।

وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿۳۶﴾

(३६) तथा न मैं क़ियामत की स्थापना को मानता हूँ तथा यदि मान भी लूँ कि मैं अपने प्रभु की ओर लौटाया भी गया तो निःसंदेह मैं (उस लौटने के स्थान को) इससे भी अधिक उत्तम पाऊँगा ।[5]

---

[1]अर्थात अपनी पैदावार में कोई कमी नहीं करते थे, बल्कि भरपूर पैदावार देते थे ।

[2]ताकि बाग़ों की सिंचाई करनें में कोई बाधा न हो, अथवा वर्षा वाले क्षेत्रों की भाँति वर्षा पर आश्रित न रहें ।

[3]अर्थात बाग़ों के मालिक ने जो काफ़िर था, अपने साथी से कहा जो ईमान वाला था ।

[4] نفر (जत्थे) से तात्पर्य सन्तान तथा नौकर एवं कर्मचारी हैं ।

[5]अर्थात वह काफ़िर अभिमान एवं गर्व में ही लिप्त नही हुआ अपितु उसकी उन्मत्तता एवं भविष्य की सुन्दर एवं लम्बी आशाओं ने उसे अल्लाह की पकड़ तथा प्रतिकार से बिल्कुल बेसुध कर दिया । इसके अतिरिक्त उसने क़ियामत को ही नकार दिया । फिर दुराग्रह का प्रदर्शन करते हुए कहा कि यदि क़ियामत हुई भी तो वहाँ भी शुभ परिणाम मेरा भाग्य होगा । जिनकी अनिष्ठता तथा दुष्टता सीमा रहित हो जाती है, वह अभिमान के नशे में

(३७) उसके साथी ने उससे बातें करते हुए कहा कि क्या तू उस (पूज्य) को नहीं मानता है जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया। फिर वीर्य से फिर तुझे पूरा इंसान (पुरूष) बना दिया।[1]

قَالَ لَهُۥ صَاحِبُهُۥ وَهُوَ يُحَاوِرُهُۥٓ أَكَفَرْتَ بِٱلَّذِى خَلَقَكَ مِن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّىٰكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾

धुत होकर ऐसे ही अहंकार का दावा करते हैं। जैसे अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّىٓ إِنَّ لِى عِندَهُۥ لَلْحُسْنَىٰ﴾

"यदि मुझे प्रभु की ओर लौटाया गया तो वहाँ भी मेरे लिए अच्छाईयाँ ही हैं।"(*सूर: हा॰मीम॰ सजद:-५०*)

﴿أَفَرَءَيْتَ ٱلَّذِى كَفَرَ بِـَٔايَٰتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا﴾

"क्या आप ने उस व्यक्ति को देखा जिसने हमारी आयतों का इंकार किया तथा दावा किया कि आखिरत में भी मुझे माल तथा सन्तान से सम्मानित किया जायेगा।" (*सूर: मरियम*-७७)

[1]उसकी यह बातें सुनकर उसके ईमान वाले साथी ने उसको शिक्षा एवं उपदेश के रूप में समझाया कि तू अपने रचयिता के साथ कुफ्र कर रहा है जिसने तुझे मिट्टी तथा पानी (वीर्य) से उत्पन्न किया। मनुष्यों के पूर्वज आदरणीय आदम चूँकि मिट्टी से बनाये गये थे, इसलिए मनुष्यों का मूल मिट्टी ही हुई। फिर निकटवर्ती कारण वह वीर्य बना जो पिता की पीठ से निकल कर माता के गर्भाशय में गया, वहाँ नौ महीने रहा, नौ माह उसकी सेवा की। फिर उसे पूरा मानव बनाकर माता के गर्भाशय से निकाला। कुछ के निकट मिट्टी से पैदा होने का अर्थ है कि मनुष्य जो भोजन खाता है वे सभी धरती से अर्थात मिट्टी से ही प्राप्त होता है, इसी भोजन से वह वीर्य बनता है जो स्त्री के गर्भाशय में जाकर मनुष्य के जन्म का माध्यम बनता है। इस प्रकार भी प्रत्येक मनुष्य का मूल मिट्टी ही है। कृतघ्न मनुष्य को उसका मूल याद दिला कर उसे उसके स्रष्टा की ओर आकर्षित किया जा रहा है कि तू अपनी यथार्तता पर विचार कर, तथा फिर प्रभु के उपकार को देख कि तुझे उसने क्या कुछ बना दिया तथा उसकी रचना में कोई उसका साझीदार तथा सहायक नहीं है, यह सब कुछ करने वाला केवल तथा मात्र वह अल्लाह तआला ही है जिसको मानने के लिए तू तैयार नहीं है। आह, यह इन्सान कितना कृतघ्न है।

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝٣٨

(३८) परन्तु मैं (तो आस्था रखता हूँ कि) वही अल्लाह मेरा प्रभु है, मैं अपने प्रभु के साथ किसी को भी साझीदार न बनाऊँगा ।[1]

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝٣٩

(३९) तथा तूने अपने बाग़ में जाते समय क्यों नहीं कहा कि अल्लाह का चाहा होने वाला है, कोई शक्ति नहीं किन्तु अल्लाह की सहायता से,[2] यद्यपि तू मुझे धन तथा संतान में कम देख रहा है ।

فَعَسٰي رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝٤٠

(४०) परन्तु अति सम्भव है कि मेरा प्रभु मुझे तेरे इस बाग़ से भी उत्तम प्रदान कर दे[3] तथा इस पर आकाशीय आपत्ति भेज दे तो यह चौरसा तथा फिसलने वाला मैदान बन जाये ।[4]

---

[1]अर्थात मैं तेरी तरह की बात नहीं करूँगा, बल्कि मैं तो अल्लाह के प्रभुत्ता तथा उसकी एकता को स्वीकार करता हूँ । इससे भी ज्ञात होता है कि दूसरा साथी मिश्रणवादी था ।

[2]अल्लाह के उपकारों की कृतज्ञता व्यक्त करने की विधि बताते हुए कहा कि बाग़ में प्रवेश करते समय गर्व तथा घमण्ड का प्रदर्शन करने के बजाय यह कहा होता ما شاء الله لا قوة إلا بالله अर्थात जो कुछ होता है अल्लाह की इच्छा से होता है, वह चाहे तो उसे शेष रखे तथा चाहे तो नाश कर दे । इसीलिए हदीस में आता है कि जिस को किसी का धन, संतान अथवा दशा अच्छी लगे तो उसे ما شاء الله لا قوة إلا بالله पढ़ना चाहिए । (तफ़सीर इब्ने कसीर ससंदर्भ मुसनद अबु यअला)

[3]दुनिया में अथवा आख़िरत में अथवा दुनियाँ तथा आख़िरत दोनों स्थानों में ।

[4] حسبان ، غفران के समरूप हिसाब से है । अर्थात ऐसा प्रकोप जो किसी के कर्मों के कारण आये । अर्थात आकाशीय प्रकोप द्वारा वह हिसाब ले । तथा यह स्थान जहाँ इस समय हरा भरा बाग़ है चिकना मैदान बन जाये ।

(४१) अथवा इसका पानी नीचे उतर जाये तथा तेरे वश में न रहे कि तू उसे ढूँढ लाये ।[1]

اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾

(४२) तथा इसके (सारे) फल घेर लिये गये [2] फिर वह अपने इस ख़र्च पर जो उसने उस पर किया था अपने हाथ मलने लगा[3] तथा वह बाग़ छप्परा सहित ध्वस्त पड़ा था ।[4] तथा (वह व्यक्ति) कह रहा था कि हाय ! मैं अपने प्रभु के साथ किसी को भी साझी न बनाता ।[5]

وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾

(४३) उसके पक्ष में कोई भी जत्था[6] न उठा कि अल्लाह से कोई उसका बचाव करता तथा न वह स्वयं ही बदला लेने वाला बन सका ।

وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾

---

[1]अथवा मध्य में जो नदी है, जो बाग़ की हरियाली तथा उपज का कारण है इसके पानी को इतनी गहराई में कर दे कि इससे पानी निकालना ही असम्भव हो जाये । तथा जहाँ पानी अधिक गहराई में चला जाये तो फिर वहाँ बड़ी-बड़ी अश्व शक्ति मोटरें तथा मशीनें भी पानी ऊपर खींच लाने में असफल रहती हैं ।

[2]यह संकेत है सत्यानाश ध्वस्त होने से अर्थात उसका सारा बाग़ नाश कर डाला गया ।

[3]अर्थात बाग़ के निर्माण तथा सुधार एवं खेती के ख़र्च पर हाथ मलने लगा, जो संकेत है उसके पश्चाताप का ।

[4]अर्थात जिन छतों तथा छप्परों पर अंगूरों की लतायें थीं, वे सभी धरती पर आ रही तथा अंगूरों की पूरी फ़सल नष्ट हो गई ।

[5]अब उसे आभास हुआ कि अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराना, उसके उपकार से लाभान्वित होकर उसके आदेश की अवहेलना करना तथा उसके समक्ष गर्व तथा घमण्ड करना किसी भी प्रकार एक मनुष्य को शोभा नहीं देता, परन्तु अब लज्जा एवं खेद का कोई लाभ नहीं था, अब पछताये क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत ।

[6]जिस जत्थे पर उसे गर्व था, वह भी उसके काम न आया न वह स्वयं ही अल्लाह की यातना से बचने का कोई प्रबन्ध कर सका ।

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ ۚ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾

(४४) यहीं से (सिद्ध है) कि अधिकार [1] उसी अल्लाह (तआला) सत्य के लिए है, वह प्रतिफल प्रदान करने तथा परिणाम के अनुसार अति उत्तम है ।[2]

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيَاحُ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾

(४५) तथा उनके लिए साँसारिक जीवन का उदाहरण भी वर्णन कर, जैसे पानी जिसे हम आकाश से उतारते हैं, उससे धरती की उपज मिली-जुली होती है, फिर अन्त में वह चूर हो जाती है जिसे हवायें उड़ाये लिए फिरती हैं । और अल्लाह (तआला) हर वस्तु पर सामर्थ्य रखता है ।[3]

---

[1] ولاية, का अर्थ है संरक्षण, अधिकार तथा सहायता, अर्थात उस स्थान पर प्रत्येक ईमान वाले तथा काफ़िर को ज्ञात हो जाता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई किसी का सहायक तथा उसकी यातना से बचाने का सामर्थ्य नहीं रखता है, यही कारण है कि फिर इस अवसर पर बड़े-बड़े दुष्ट तथा शक्तिशाली भी ईमान के प्रदर्शन पर बाध्य हो जाते हैं यद्यपि उस समय का ईमान लाभकारी तथा अंगीकार नहीं । जिस प्रकार क़ुरआन में फ़िरऔन के विषय में लिखा है कि जब वह डूबने लगा तो कहने लगा ।

﴿ آمَنتُ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴾

"मैं उस अल्लाह पर ईमान लाया जिस पर इस्राईल के पुत्र ईमान रखते हैं तथा मैं मुसलमानों में से हूँ ।" *(सूर: यूनुस-९०)*

दूसरे काफ़िरों के विषय में कहा गया जब उन्होंने प्रकोप देखा तो कहा ।

"हम एक अल्लाह पर ईमान लाये तथा जिनको हम अल्लाह का साझीदार बनाते थे, उनको अस्वीकार करते हैं ।" *(सूर: अल-मोमिन-८४)*

यदि ولاية में واو (वाव अक्षर) के नीचे ज़ेर हो तो उसका अर्थ आदेश तथा अधिकार है, जैसाकि अनुवाद में यही अर्थ प्रयोग किया गया है (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात वही अपने मित्रों को श्रेष्ठ बदला देने वाला तथा सुन्दर सुफल से सम्मानित करने वाला है ।

[3]इस आयत में दुनिया की परिवर्तनशीलता तथा अस्थिरता को खेती के एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है कि खेती में लगे हुए पौधों तथा पेड़ पर जब आकाश से वर्षा

(४६) धन तथा सन्तान तो सांसारिक जीवन की शोभा है,[1] परन्तु शेष रहने वाले पुण्य[2] तेरे पालनहार के समीप प्रतिफल के लिए तथा (भविष्य की) अच्छी आशा के लिए अति उत्तम हैं।

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾

(४७) तथा जिस दिन हम पर्वतों को चलायेंगे[3] तथा धरती को तू साफ़ खुली हुई देखेगा तथा

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ

होती है तो पानी पाकर खेती लहलहा जाती है तथा पौधे एवं वृक्ष नवजीवन से प्रफुल्लित हो जाते हैं, परन्तु फिर एक समय आता है कि खेती सूख जाती है पानी न मिलने के कारण अथवा फसल पक जाने के कारण। तो फिर हवायें उसको उड़ाये फिरती हैं। हवा का एक झोंका कभी दायीं ओर कभी बायीं ओर झुका देता है। दुनियाँ का जीवन भी हवा के एक झोंके अथवा पानी के बुलबुले अथवा खेती की तरह है, जो अपनी कुछ दिन की बहार दिखाकर विनाश के घाट उतर जाती है। तथा यह सारे कार्य उसी के हाथों से होता है, जो एक है तथा प्रत्येक वस्तु उसके अधीन है। अल्लाह तआला ने दुनिया का यह उदाहरण क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया है। जैसे *सूर: यूनुस*-२५, *सूर:-जुमर*-२१ तथा *सूर: हदीद*-५० तथा अन्य आयतें।

[1]इसमें दुनिया के उन लोभियों का खण्डन है जो दुनिया के माल तथा सामग्री, क़बीला, परिवार एवं संतान पर गर्व करते हैं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया की नश्वर संसार की ये वस्तुएँ सामयिक शोभा हैं आख़िरत में यह वस्तयें कुछ काम नहीं आयेंगी। इसीलिए इस से आगे फ़रमाया कि आख़िरत में काम आने वाले कर्म तो वह हैं जो शेष रहने वाले हैं।

[2] باقيات صالحات (शेष रहने वाले पुण्य) कौन से अथवा कौन-कौन सी बातें हैं ? किसी ने नमाज़ को, किसी ने अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा कों, किसी ने कुछ अन्य सत्कर्मों को इसका चरितार्थ माना है। परन्तु उचित यह है कि यह सामान्य है तथा सभी पुण्यों को सम्मिलित है । सभी अनिवार्य, आवश्यक, सुन्नत एवं ऐच्छिक पुण्य कर्म स्थाई एवं नित्य हैं बल्कि निषेधित कार्यों से बचना भी एक सत्कर्म है, जिस पर अल्लाह की ओर से बदले तथा पुण्य की आशा है।

[3]यह क़ियामत की भयानकता तथा बड़ी-बड़ी घटनाओं का वर्णन है। पर्वतों को चलायेंगे का अर्थ है पर्वत अपने स्थान से हट जायेंगे तथा धुनी हुई रूई की भाँति उड़ जायेंगे। ﴿وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ﴾ [القارعة:٥] अन्य स्थानों पर देखिये *सूर: तूर*-९ तथा १०, *सूर: नम्ल*-८८ तथा *सूर: ताहा*-१०५ से १०७ तक। धरती से जब पर्वत

सभी लोगों को हम एकत्रित करेंगे, उनमें से किसी को शेष न छोड़ेंगे ।[1]

مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾

(४८) तथा सब के सब तेरे प्रभु के समक्ष पंक्तियों में उपस्थित किये जायेंगे ।[2] निःसंदेह तुम हमारे समक्ष उसी प्रकार आये जिस प्रकार हमने तुम्हें प्रथम बार पैदा किया था परन्तु तुम तो इसी भ्रम में रहे कि हम कदापि तुम्हारे लिए कोई वचन का दिन निर्धारित नहीं करेंगे ।

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍۭ ؗ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

(४९) तथा कर्मपत्र आगे में रख दिये जायेंगे । फिर तू देखेगा की पापी उसके लेख से भयभीत हो रहे होंगे तथा कह रहे होंगे की हाय, हमारा नाश यह कैसा लेख है जिसने कोई छोटा-बड़ा बिना घेरे नहीं छोड़ा तथा जो कुछ उन्होंने किया था सब कुछ उपस्थित पायेंगे तथा तेरा प्रभु किसी पर अत्याचार तथा अन्याय न करेगा ।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾

(५०) तथा जब हमने फ़रिश्तों को आदेश दिया कि आदम के समक्ष दण्डवत् (सजदा)

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا

जैसी चीज़ निरस्त हो जायेगी तो भवन, वृक्ष तथा इसी प्रकार की अन्य वस्तुएं किस प्रकार अपना अस्तित्व शेष रख सकेंगी ? इसीलिए आगे कहा गया, "तू धरती को स्वच्छ खुली हुई देखेगा ।"

[1]अर्थात आदि-अन्त के छोटे-बड़े, काफ़िर, मुसलमान सभी को एकत्रित करेंगे, कोई धरती की तह में पड़ा नहीं रह जायेगा तथा न क़ब्र से निकलकर किसी अन्य स्थान पर छिप सकेगा ।

[2]इसका अर्थ है कि एक ही पंक्ति में अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे अथवा पंक्तिबद्ध होकर अल्लाह के सदन में उपस्थित होंगे ।

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝

करो, तो इब्लीस के अतिरिक्त सबने दण्डवत् किया, यह जिन्नों में से था[1] उस ने अपने प्रभु के आदेशों की अवहेलना की।[2] क्या फिर भी तुम उसे तथा उसकी संतान को मुझे छोड़ कर अपना मित्र बना रहे हो ? यद्यपि वह तुम सबका शत्रु है।[3] ऐसे अत्याचारियों का कितना बुरा बदला है।[4]

---

[1]कुरआन का यह स्पष्ट वर्णन है कि शैतान फ़रिश्ता नहीं था, फ़रिश्ता होता तो अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना करने का साहस ही न होता, क्योंकि फ़रिश्तों का गुण अल्लाह तआला ने वर्णन किया है।

﴿لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ﴾

"वह अल्लाह के आदेश की अवहेलना नहीं करते तथा वही करते हैं जिसका उन्हें आदेश दिया जाता है।" (*सूर: अल-तहरीम*-६)

इस स्थिति में यह संदेह रहता है, यदि वह फ़रिश्ता नहीं था तो फिर वह अल्लाह के आदेश से सम्बोधित ही नहीं था क्योंकि इसके सम्बोधित तो फ़रिश्ते थे, उन्हीं को नतमस्तक होने का आदेश दिया गया था। 'रूहुल मआनी' के लेखक ने कहा है कि वह फ़रिश्ता अवश्य नहीं था, परन्तु वह फ़रिश्तों के साथ रहता था तथा उन्ही में गणना होती थी, इसलिए वह भी اسجدوا لآدم के आदेश से सम्बोधित था तथा आदम के समक्ष नतमस्तक के आदेश के साथ उसको सम्बोधित किया जाना निश्चित है। अल्लाह का आदेश है : "जब मैंने तुझे आदेश दिया तो फिर तूने सजदा क्यों न किया।" (*सूर: अल-आराफ़*-१२)

[2]فِسق का अर्थ होता है निकलना, चूहा जब अपने बिल से निकलता है तो उसे अरबी भाषा में कहते है. «فَسَقَتِ الْفَأرَةُ مِنْ جُحْرِهَا» शैतान भी सम्मान तथा आदर सूचक दण्डवत (सजदा) के आदेश की अवहेलना करके प्रभु के आज्ञापालन से निकल गया।

[3]अर्थात क्या तुम्हारे लिए यह उचित है कि तुम ऐसे व्यक्ति को तथा उसके परिवार वालों को मित्र बनाओ, जो तुम्हारे पितामह आदम का शत्रु, तुम्हारा शत्रु है तथा तुम्हारे प्रभु का शत्रु है तथा अल्लाह को छोड़कर उस शैतान का अनुकरण करो ?

[4]एक अन्य अनुवाद इसका यह किया गया है "अत्याचारियों ने क्या बुरा बदला अपना लिया है।" अल्लाह के आदेशों का पालन तथा मित्रता छोड़कर शैतान का अनुसरण एवं उससे मित्रता की है जो अत्यधिक बुरा बदला है जिसे उन अत्याचारियों ने अपनाया है।

مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۖ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

(५१) मैंने उन्हें आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति के समय उपस्थित नहीं रखा था तथा न स्वयं उन की अपनी उत्पत्ति में ।[1] तथा मैं भटकाने वालों को अपना बाहु बल बनाने वाला भी नहीं ।[2]

وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

(५२) तथा जिस दिन वह कहेगा कि तुम्हारे विचार से जो मेरे साझीदार थे, उन्हें पुकारो। ये पुकारेंगे परन्तु उनमें से कोई उत्तर न देगा। तथा हम उनके मध्य विनाश का साधन बना देंगे।[3]

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

(५३) तथा पापी नरक को देखकर समझ लेंगे कि वे इसी में जाने वाले हैं, परन्तु उससे बचने का स्थान न पायेंगे।[4]

---

[1]अर्थात आकाश तथा धरती की उत्पत्ति तथा उसके उपाय, बल्कि स्वयं इन शैतानों की उत्पत्ति में मैंने उन से अथवा उन में से किसी एक से कोई सहायता नहीं ली, यह तो उस समय उपस्थित नहीं थे। फिर तुम उस शैतान तथा उसके परिवार के लोगों की पूजा अथवा अनुगमन क्यों करते हो ? जबकि यह रचित है तथा मैं उन सबका रचयिता हूँ।

[2]मान लो, यदि मैं उनको सहायक बनाता भी तो कैसे बनाता जबकि यह मेरे भक्तों को भटकाकर मेरे स्वर्ग तथा मेरे अनुग्रह से रोकते हैं।

[3] موبق का एक अर्थ पर्दे तथा आड़ के किये गये हैं। अर्थात उनके मध्य आड़ तथा दूरी कर दी जायेगी, क्योंकि उनके मध्य आपस में बैर होगा। इसके अतिरिक्त इसलिए कि हश्र की अवधि में एक-दूसरे से न मिल सकें। कुछ विद्वान कहते हैं कि यह नरक में रक्त तथा पीव की विशेष घाटी है। तथा कुछ ने इसका अनुवाद विनाश किया है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है अर्थात ये मूर्तिपूजक तथा उनके मनगढ़न्त देवता, यह एक-दूसरे को मिल ही न सकेंगे क्योंकि उनके मध्य विनाश का साधन तथा भयानक वस्तुएँ होंगी।

[4]जिस प्रकार कुछ कथनों में है कि काफ़िर अभी चालीस वर्ष की दूरी पर होगा कि विश्वास कर लेगा कि नरक उसका ठिकाना है। (मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ ७५)

(५४) तथा हमने इस क़ुरआन में हर-हर प्रकार से सभी उदाहरण लोगों के लिए वर्णन कर दिये हैं, परन्तु सभी वस्तुओं से अधिक झगड़ालू (कलह प्रिय) मानव है ।[1]

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

(५५) लोगों के पास मार्गदर्शन आ जाने के पश्चात उन्हें ईमान लाने तथा अपने प्रभु से क्षमा-याचना करने से केवल इसी बात ने रोका कि पूर्वजों का सा व्यवहार उनके साथ भी हो[2] अथवा उनके सामने प्रत्यक्ष प्रकोप आ जाये ।[3]

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

(५६) तथा हम तो अपने रसूलों को केवल इसलिए भेजते हैं कि वे शुभसूचना सुना दें तथा सावधान कर दें । काफ़िर लोग अनृत को प्रमाण बनाकर झगड़े चाहते हैं कि इससे सत्य को लड़खड़ा दें, वह मेरी आयतों (मंत्रों)

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ ۖ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي

[1]अर्थात हमने मनुष्यों को सत्यमार्ग समझाने के लिए क़ुरआन में प्रत्येक विधि का प्रयोग किया है, भाषण तथा वर्णन, उदाहरण तथा घटनाएं तथा प्रमाण एवं निशानियाँ, इसके अतिरिक्त उन्हें बार-बार विभिन्न प्रकार से वर्णन किया है, परन्तु मनुष्य अत्यधिक झगड़ालू है, इसलिए शिक्षा एवं उपदेश का उस पर न प्रभाव होता है तथा न प्रमाण एवं निशानियाँ उसके लिए प्रभावकर ।

[2]अर्थात झुठलाने की अवस्था में उन पर भी प्रकोप उसी प्रकार आये जिस प्रकार इनसे पूर्व के समुदायों पर आया ।

[3]अर्थात यह मक्कावासी ईमान लाने के लिए इन दो बातों में से किसी एक की प्रताक्षा में हैं । परन्तु इन मूर्खों को यह समझ में नहीं आता कि उसके पश्चात ईमान लाने का कोई लाभ नहीं अथवा उसके पश्चात उनको ईमान लाने का अवसर ही कब मिलेगा ?

وَمَآ أُنذِرُوا۟ هُزُوًا ﴿٥٦﴾

तथा जिस वस्तु से डराया जाये उसे उपहास में उड़ाते हैं ।[1]

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِـَٔايَـٰتِ رَبِّهِۦ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِىَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِن تَدْعُهُمْ إِلَى ٱلْهُدَىٰ فَلَن يَهْتَدُوٓا۟ إِذًا أَبَدًا ﴿٥٧﴾

(५७) तथा उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है जिसे उसके प्रभु की आयतों द्वारा शिक्षा दी जाये वह फिर भी मुख मोड़े रहे, तथा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेज रखा है उसे भूल जाये ? नि:संदेह हमने उनके दिलों पर उसकी समझ से पर्दे डाल रखे हैं तथा उनके कानों में बोझ है, यद्यपि तू उन्हें संमार्ग की ओर बुलाता रहे, परन्तु यह कभी भी मार्गदर्शन नहीं पायेंगे ।[2]

وَرَبُّكَ ٱلْغَفُورُ ذُو ٱلرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُم بِمَا كَسَبُوا۟ لَعَجَّلَ لَهُمُ ٱلْعَذَابَ ۚ بَل لَّهُم مَّوْعِدٌ

(५८) तेरा पालनहार अति क्षमावान एवं कृपानिधि है, वह यदि उनके कर्मों के दण्ड में पकड़े तो नि:संदेह उन्हें शीघ्र ही यातना करे, अपितु उनके लिए एक वायदे का समय

---

[1]तथा अल्लाह की आयतों का उपहास उड़ाना, यह झुठलाने की निम्न कोटि है। इसी प्रकार कुरीति कुचाल से सत्य को असत्य सिद्ध करने का प्रयत्न करना भी अति निन्दनीय है। कुरीति द्वारा झगड़ने का एक रूप यह है जो काफ़िर रसूलों को यह कहकर उनकी रिसालत को अस्वीकार करते रहे कि तुम तो हमारे जैसे मनुष्य ही हो। ما أنتم إلا بشر مثلنا (सूर: *यासीन*-१५) हम तुम्हें किस प्रकार रसूल मान लें ? دَحَض का मूल अर्थ फिसलने के हैं। अरबी भाषा में कहा जाता है دحضت رجله (उसका पैर फिसल गया) यहाँ से यह किसी वस्तु के पतन (टलने) तथा بطلان के अर्थ में प्रयोग होने लगा। कहते हैं « دَحَضَتْ حُجَّتُهُ دُحُوضًا» أي : بَطَلَتْ (उसका तर्क असत्य सिद्ध हो गया) इस आधार पर أدحض يدحض का अर्थ होगा असत्य करना। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात उनके इस अत्यधिक घोर अत्याचार के कारण उन्होंने प्रभु की आयतों से मुँह फेर लिया तथा अपने करतूत को भूले रहे, उनके दिलों पर ऐसे आवरण तथा उनके कानों पर ऐसे बोझ डाल दिये गये जिससे क़ुरआन का समझना, सुनना तथा उससे मार्गदर्शन प्राप्त करना उनके लिए असम्भव हो गया। उनको कितना भी सत्य की ओर बुला लो यह कभी भी सत्य का मार्ग अपनाने के लिए तैयार नहीं होंगे।

لَّن يَجِدُوا مِن دُونِهِ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾

निर्धारित है जिससे वह भागने का कदापि स्थान नहीं पायेंगे।[1]

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾

(५९) तथा ये हैं वह बस्तियाँ जिन्हें हमने उन के अत्याचार के कारण ध्वस्त कर दिया तथा उनके विनाश का एक समय हमने निर्धारित कर रखा था।[2]

---

[1]अर्थात यह तो क्षमावान पालनहार की कृपा है कि वह पाप पर तुरन्त पकड़ नहीं करता अपितु अवसर प्रदान करता है, यदि ऐसा न होता तो अपने कर्मों के कारण प्रत्येक व्यक्ति ही अल्लाह की यातनाओं के पंजों में जकड़ा रहता। परन्तु यह अवश्य है कि जब यह अवसर की अवधि समाप्त हो जाती है तथा विनाश का वह समय आ जाता है जो अल्लाह ने निर्धारित किया होता है तो भागने का कोई मार्ग तथा बचाओ की कोई विधि उनके लिए शेष नहीं रहती। مَوْئِلٌ का अर्थ है शरणागर, भागने का मार्ग।

[2]इससे तात्पर्य आद, समूद, आदरणीय शुऐब तथा आदरणीय लूत आदि के समुदाय हैं, जो हिजाज के क्षेत्र के निकट तथा उनके मार्गों में आबाद थे। उन्हें भी यद्यपि उनके अत्याचार के कारण ही नाश किया गया परन्तु विनाश से पूर्व उन्हें भी पूर्ण अवसर प्रदान किया गया तथा जब यह बात सिद्ध हो गयी कि अत्याचार तथा क्रूरता इस चरम सीमा को पहुँच गये, जहाँ से मार्गदर्शन असम्भव हो जाते हैं तथा उनसे पुण्य तथा भलाई की आशा शेष नहीं रही तो फिर उनके कर्म करने का अवसर समाप्त तथा विनाश का समय प्रारम्भ हो गया। फिर उन्हें सदैव के लिए मिटा दिया गया कि जैसे उनका अस्तित्व ही न रहा हो। अथवा दुनिया वालों के लिए शिक्षा प्राप्त करने का नमूना बना दिया गया। यह वास्तव में मक्कावासियों को समझाया जा रहा हैं कि तुम हमारे अन्तिम नबी सर्वश्रेष्ठ रसूल आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठला रहे हो, तुम यह न समझना कि तुम्हें यह जो अवसर मिल रहा है तो इसका यह अर्थ है कि तुम्हें कोई पूछने वाला नहीं है। बल्कि यह अवसर अल्लाह का नियम है, जो एक निर्धारित समय तक प्रत्येक व्यक्ति, गुट तथा समुदाय को वह प्रदान करता है। जब यह अवधि समाप्त हो जायेगी तथा तुम अपने कुफ्र तथा विरोध से नहीं रूकोगे तो फिर तुम्हारा अन्त भी उससे भिन्न नहीं होगा जो तुम से पूर्व के समुदायों का हो चुका है।

(६०) तथा जब मूसा ने अपने नवयुवक से कहा[1] कि मैं तो चलता ही रहूँगा, यहाँ तक कि दो नदियों के संगम[2] के स्थान पर पहुँचूँगा, चाहे मुझे वर्षों चलना पड़े ।[3]

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَىٰهُ لَآ أَبْرَحُ حَتَّىٰٓ أَبْلُغَ مَجْمَعَ ٱلْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِىَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

(६१) जब वे दोनों वहाँ पहुँचे जहाँ दोनों नदियों के संगम का स्थान था, वहाँ अपनी मछली भूल गये जिसने नदी में सुरंग जैसा अपना मार्ग बना लिया ।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَٱتَّخَذَ سَبِيلَهُۥ فِى ٱلْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

(६२) जब दोनों वहाँ से आगे बढ़े तो मूसा ने अपने नवयुवक से कहा कि हमारा अल्पाहार

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَىٰهُ ءَاتِنَا غَدَآءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِن سَفَرِنَا

---

[1]नवयुवक से तात्पर्य आदरणीय यूशअ बिन नून हैं जो मूसा की मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारी बने ।

[2]इस स्थान का निर्धारण किसी निश्चित प्रमाण से नहीं हो सका है फिर भी निकटता के आधार पर इससे तात्पर्य सीनाई के मरूस्थल का दक्षिणी किनारा है जहाँ अक़बा की खाड़ी तथा स्वेस की खाड़ी दोनों आकर मिलती तथा लाल सागर में जाकर विलीन हो जाती हैं । दूसरे स्थान जिनका वर्णन व्याख्याकारों ने किया है उन पर किसी प्रकार से दो सागरों के संगम का कथन सिद्ध ही नहीं होता ।

[3] حقبٌ का एक अर्थ ७० अथवा ८० वर्ष तथा दूसरा अर्थ अनिश्चित काल की अवधि है । यहाँ यही दूसरा अर्थ तात्पर्य है । अर्थात जब तक दो सागरों के संगम तक नहीं पहुँच जाऊँगा, चलता रहूँगा तथा यात्रा निरन्तर जारी रखूँगा, चाहे कितना भी समय लग जाये । आदरणीय मूसा को इस यात्रा की आवश्यकता इसलिए हुई कि उन्होंने एक अवसर पर एक प्रश्नकर्ता के उत्तर में कह दिया कि इस समय मुझसे बड़ा ज्ञानी कोई नहीं । अल्लाह तआला को उनका यह कथन पसन्द नहीं आया तथा प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा उन्हें बताया गया कि हमारा एक भक्त (ख़िज़्र) है जो तुझसे भी अधिक ज्ञानी है । आदरणीय मूसा ने पूछा कि हे अल्लाह ! उससे मुलाक़ात किस प्रकार हो सकती है ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जहाँ दो समुद्र मिलते हैं, वहीं हमारा वह भक्त होगा । इसके अतिरिक्त फ़रमाया कि मछली साथ ले जाओ, जहाँ मछली तुम्हारी टोकरी से निकलकर खो जाये तो समझ लेना कि यही स्थान है (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः *अल-कहफ़*) । अतः इस आदेश के अनुसार उन्होंने एक मछली ली तथा यात्रा प्रारम्भ कर दी ।

هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

दे, हमें तो अपनी इस यात्रा से अत्यधिक कठिनाई उठानी पड़ी।

قَالَ اَرَءَيۡتَ اِذۡ اَوَيۡنَاۤ اِلَى الصَّخۡرَةِ فَاِنِّىۡ نَسِيۡتُ الۡحُوۡتَ وَمَاۤ اَنۡسٰنِيۡهُ اِلَّا الشَّيۡطٰنُ اَنۡ اَذۡكُرَهٗ‌ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيۡلَهٗ فِى الۡبَحۡرِ ‌ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾

(६३) (उसने) उत्तर दिया कि क्या आप ने देखा भी ? जब हम पत्थर से टेक लगाकर विश्राम कर रहे थे, वहीं मैं मछली भूल गया था, वास्तव में शैतान ने मुझे भुला दिया कि मैं आप से इसकी चर्चा करूँ। उस मछली ने एक विचित्र रूप से नदी[1] में अपना मार्ग बना लिया।

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبۡغِ ‌ۖ فَارۡتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۙ ﴿٦٤﴾

(६४) (मूसा ने) कहा यही था जिसकी खोज में हम थे, तो वहीं से अपने पदचिन्हों को ढूँढते हुए वापस लौटे।[2]

فَوَجَدَا عَبۡدًا مِّنۡ عِبَادِنَاۤ اٰتَيۡنٰهُ رَحۡمَةً مِّنۡ عِنۡدِنَا وَعَلَّمۡنٰهُ

(६५) फिर हमारे भक्तों में से एक भक्त[3] को पाया, जिसे हमने अपने पास से विशेष

---

[1]अर्थात मछली जीवित होकर समुद्र में चली गयी तथ उसके लिए अल्लाह तआला ने समुद्र में सुरंग की भाँति मार्ग बना दिया। आदरणीय यूशअ ने मछली को समुद्र में जाते और मार्ग बनते हुए देखा, परन्तु आदरणीय मूसा को बताना भूल गये। यहाँ तक कि विश्राम करके वहाँ से फिर यात्रा प्रारम्भ की, उस दिन तथा उसके पश्चात रात्रि की यात्रा करके, जब दूसरे दिन आदरणीय मूसा को थकान तथा भूख का संवेदन हुआ तथा अपने नवयुवक साथी से कहा कि लाओ अल्पाहार कर लें। उसने उत्तर दिया, मछली तो जहाँ हमने पत्थर से टेक लगाकर विश्राम किया था, वहाँ जीवित होकर समुद्र में चली गयी थी तथा वहाँ विचित्र रूप से उसने अपना मार्ग बना लिया था, जिसकी मैं आपसे चर्चा करना भूल गया। तथा शैतान ने मुझे भुला दिया।

[2]आदरणीय मूसा ने कहा "अल्लाह के भक्त ! जहाँ मछली को जीवित होकर गायब होना था वहीं तो हमारा लक्ष्य था, जिसकी खोज में हम यात्रा कर रहे हैं।" अत: अब पद चिन्ह देखते हुए वापस लौटे तथा उसी दो साग़रों के संगम के स्थान पर वापस आ गये। قصصاً का अर्थ है पीछे लगना, पीछे-पीछे चलना अर्थात पद चिन्ह देखते हुए उनके पीछे-पीछे चलते रहे।

[3]उस भक्त से तात्पर्य आदरणीय ख़िज्र हैं जैसाकि सहीह हदीसों में स्पष्टीकरण है। ख़िज्र का अर्थ हरियाली है, यह एक बार धरती पर बैठे तो वह धरती का टुकड़ा नीचे से

مِنۡ لَّدُنَّا عِلۡمًا ﴿۶۵﴾

कृपा[1] प्रदान कर रखी थी तथा उसे अपने पास से विशेष[2] ज्ञान सिखा रखा था।

قَالَ لَهٗ مُوۡسٰى هَلۡ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنۡ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمۡتَ رُشۡدًا ﴿۶۶﴾

(६६) उससे मूसा ने कहा कि मैं आप का पालन करूँ कि आप मुझे उस सत्य ज्ञान को सिखा दें, जो आपको सिखाया गया है ?

قَالَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ صَبۡرًا ﴿۶۷﴾

(६७) उसने कहा आप हमारे साथ कदापि धैर्य नहीं रख सकते।

وَكَيۡفَ تَصۡبِرُ عَلٰى مَا لَمۡ تُحِطۡ بِهٖ خُبۡرًا ﴿۶۸﴾

(६८) तथा जिस वस्तु को आप ने अपने ज्ञान में[3] न लिया हो उस पर धैर्य रख भी कैसे सकते हैं ?

हरियाली बनकर लहलहाने लगा, इसी कारण उनका नाम ख़िज्र पड़ गया। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: *अल-कहफ़*)

[1]कृपा से कुछ व्याख्याकारों ने वे विशेष उपहार तात्पर्य लिये हैं, जो अल्लाह ने अपने उस विशेष भक्त को प्रदान किये तथा अधिकतर व्याख्याकारों ने इससे तात्पर्य नबूअत (ईशदूत्व) लिया है।

[2]उससे नबूअत के ज्ञान के अतिरिक्त जिससे आदरणीय मूसा भी परिचित थे, कुछ उत्पत्ति से सम्बन्धित बातों का ज्ञान है जिसे अल्लाह तआला ने केवल आदरणीय ख़िज्र को प्रदान किया था, आदरणीय मूसा के पास वह ज्ञान नहीं था। इससे भावार्थ निकालते हुए कुछ सूफ़ी (योगी) दावा करते हैं कि अल्लाह तआला कुछ लोगों को, जो नबी नहीं होते علم لدني से सुशोभित करता है, जो बिना गुरू के मात्र अल्लाह की कृपा से प्राप्त होता है तथा यह आध्यात्मिक ज्ञान धार्मिक नियमों के भिन्न एवं विरूद्ध होता है। परन्तु यह भावार्थ इसलिए उचित नहीं कि आदरणीय ख़िज्र के विषय में तो अल्लाह तआला ने स्वयं उनको विशेष ज्ञान प्रदान करने का स्पष्टीकरण कर दिया है, जबकि किसी अन्य के लिए ऐसा स्पष्टीकरण कहीं नहीं, यदि इसको सामान्य कर दिया जाये तो फिर प्रत्येक जादूगर इस प्रकार का दावा कर सकता है, इस सम्प्रदाय में यह दावे सामान्य हैं। इसलिए ऐसे दावों का कोई औचित्य नहीं।

[3]अर्थात जिसका पूर्ण ज्ञान न हो।

قَالَ سَتَجِدُنِيٓ إِن شَآءَ ٱللَّهُ صَابِرًا وَلَآ أَعۡصِي لَكَ أَمۡرًا ﴿٦٩﴾

(६९) मूसा ने उत्तर दिया कि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान पायेंगे तथा किसी बात में आपकी अवज्ञा नहीं करूँगा ।

قَالَ فَإِنِ ٱتَّبَعۡتَنِي فَلَا تَسۡـَٔلۡنِي عَن شَيۡءٍ حَتَّىٰٓ أُحۡدِثَ لَكَ مِنۡهُ ذِكۡرًا ﴿٧٠﴾

(७०) (उसने) कहा कि यदि आप मेरे साथ ही चलने की पुनराग्रह करते हैं, तो ध्यान रहे कि किसी वस्तु के सम्बन्ध में मुझ से कुछ न पूछना जब तक मैं स्वयं उसके सम्बन्ध में न बताऊँ ।

فَٱنطَلَقَا حَتَّىٰٓ إِذَا رَكِبَا فِي ٱلسَّفِينَةِ خَرَقَهَاۖ قَالَ أَخَرَقۡتَهَا لِتُغۡرِقَ أَهۡلَهَا لَقَدۡ جِئۡتَ شَيۡـًٔا إِمۡرًا ﴿٧١﴾

(७१) फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि एक नाव में सवार हुए, (ख़िज़्र ने) उसके पटरे तोड़ दिये । (मूसा ने) कहा क्या आप उसे तोड़ रहे हैं कि नाव वालों को डूबा दें, आप ने तो बड़ा अनुचित[1] काम किया ।

قَالَ أَلَمۡ أَقُلۡ إِنَّكَ لَن تَسۡتَطِيعَ مَعِيَ صَبۡرًا ﴿٧٢﴾

(७२) (ख़िज़्र ने) उत्तर दिया कि मैंने तो पहले ही तुझसे कह दिया था कि तू मेरे साथ कदापि धैर्य न रख सकेगा ।

قَالَ لَا تُؤَاخِذۡنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرۡهِقۡنِي مِنۡ أَمۡرِي عُسۡرًا ﴿٧٣﴾

(७३) (मूसा ने) उत्तर दिया कि मेरी भूल पर मुझे न पकड़िये तथा मुझे मेरे विषय में कठिनाई में न डालिये ।[2]

---

[1]आदरणीय मूसा को चूँकि इस विशेष ज्ञान की सूचना नहीं थी जिसके आधार पर ख़िज़्र ने नाव के पटरे तोड़ दिये थे, इसलिए धैर्य न रख सके तथा अपने ज्ञान तथा बुद्धि के आधार पर इसे अत्यन्त भयानक कार्य बताया । إمرا का अर्थ है الداهية العظيمة "अत्यन्त भयानक कार्य ।"

[2]अर्थात मेरे साथ कोमल व्यवहार करें कठोरता का नहीं ।

فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

(७४) फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक बालक [1] को पाया, (ख़िज़्र ने) उसे मार डाला, (मूसा ने) कहा कि क्या आप ने एक पवित्र आत्मा को बिना किसी प्रतिहत्या के मार डाला? नि:संदेह आप ने तो बड़ी बुरी बात की ।[2]

---

[1] ग़ुलाम से तात्पर्य वयस्क नवयुवक भी हो सकता है तथा अल्पवयस्क बच्चा भी ।

[2] نُكراً ، فظيعا منكرا لا يعـرف في الشـرع ऐसा बड़ा बुरा कार्य जिसका धार्मिक नियम में स्थान नहीं । कुछ ने कहा कि इसका अर्थ أنكر من الأمر الأول प्रथम कार्य (नाव के पटरे तोड़ने) से अधिक बुरा कार्य । इसलिए कि हत्या ऐसा कार्य है जिसकी क्षतिपूर्ति तथा समापन करना असम्भव है । जबकि नाव के पटरे उखाड़ देना, ऐसा कार्य है जिसकी पूर्ति तथा समापन का साधन है । कुछ ने इसके अर्थ किये हैं, प्रथम कार्य से कम, इसलिए कि एक प्राण की हत्या करना पूरी नाव में सवार यात्रियो को डुबो देने से कम है (फ़तहुल क़दीर) । परन्तु प्रथम भावार्थ ही उचित है क्योंकि आदरणीय मूसा को जिन धार्मिक नियमों का ज्ञान प्राप्त था, उसके आधार पर आदरणीय ख़िज़्र का यह कार्य किसी भी प्रकार से नियम के विरूद्ध था, जिसके आधार पर उन्होंने विरोध किया तथा उसे अत्यधिक बुरा कार्य बताया ।